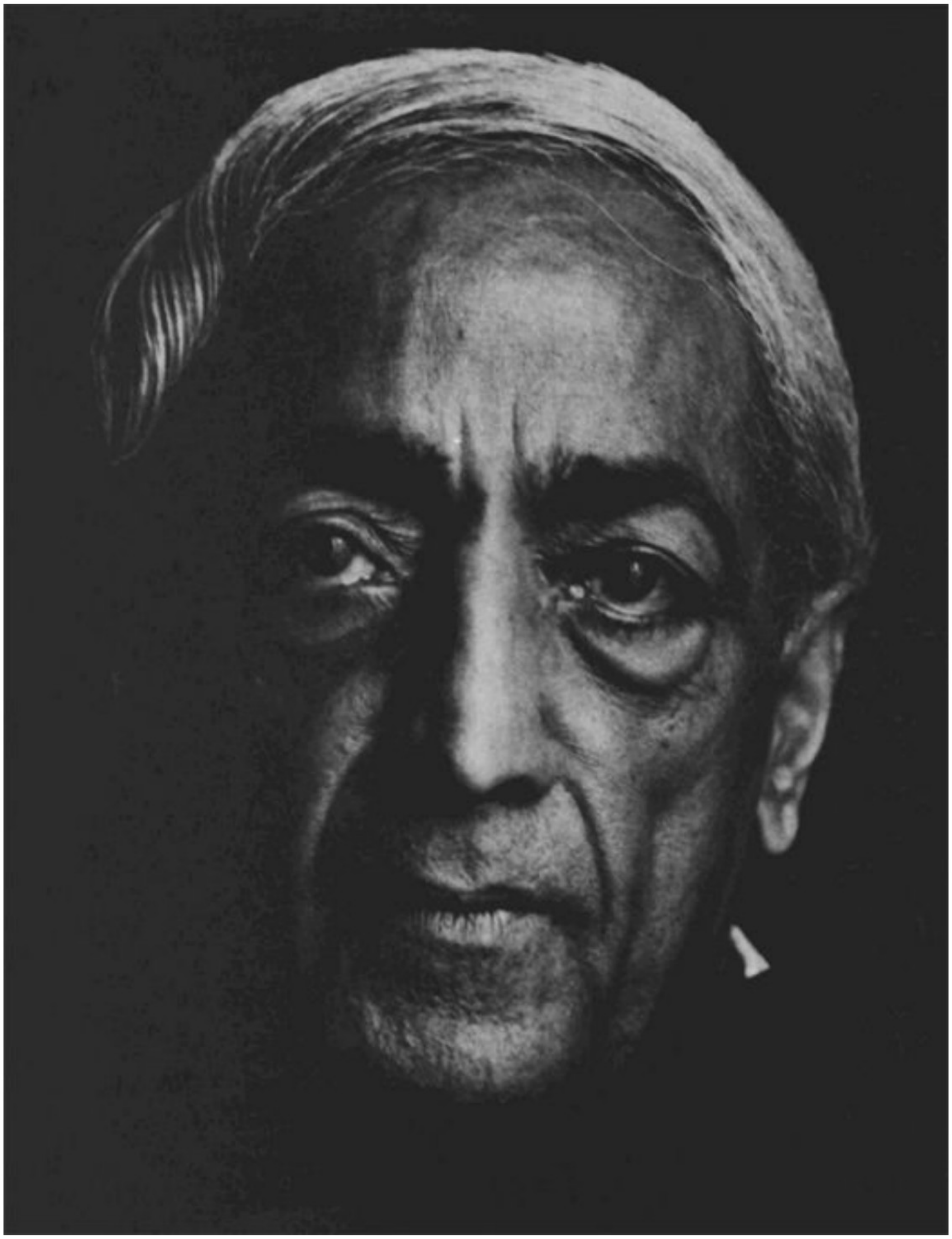
Volume XI
1958 - 1960

The Collected Works of J. KRISHNAMURTI

Crisis in Consciousness



The Collected Works of J. Krishnamurti

Volume XI

1958–1960

Crisis in Consciousness

एकत्रित कार्य खंड 11

फोटो: जे. कृष्णमूर्ति, सीए 1962, सेसिल बीटन द्वारा

वेबसाइट: www.kfa.org

अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका में छपी

आईएसबीएन 13: 9781934989449

आईएसबीएन: 1934989444 ईबुक

आईएसबीएन: 978-1-62110-136-9

अंतर्वस्तु

प्रस्तावना

जिद्दू कृष्णमूर्ति का जन्म 1895 में दक्षिण भारत में ब्राह्मण माता-पिता के यहाँ हुआ था।
चौदह वर्ष की उम्र में विश्व धर्मों की एकता पर जोर देने वाली अंतरराष्ट्रीय संस्था थियोसोफिकल सोसायटी की तत्कालीन अध्यक्ष एनी बेसेंट ने उन्हें आगामी विश्व शिक्षक घोषित किया था। श्रीमती बेसेंट ने लड़के को गोद ले लिया और उसे इंग्लैंड ले गईं, जहाँ उसे शिक्षित किया गया और उसकी आने वाली भूमिका के लिए तैयार किया गया। 1911 में कृष्णमूर्ति के प्रमुख के रूप में एक नए विश्वव्यापी संगठन का गठन किया गया था, जिसका उद्देश्य केवल अपने सदस्यों को विश्व शिक्षक के रूप में उनके आगमन के लिए तैयार करना था। 1929 में, कई वर्षों तक खुद पर और अपने ऊपर थोपी गई नियति पर सवाल उठाने के बाद, कृष्णमूर्ति ने यह कहते हुए इस संगठन को भंग कर दिया:

सत्य एक पथहीन भूमि है, और आप उस तक किसी भी रास्ते, किसी भी धर्म, किसी भी संप्रदाय के माध्यम से नहीं पहुंच सकते। सत्य, असीम, बिना शर्त, किसी भी रास्ते से अगम्य होने के कारण, व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है; न ही किसी संगठन को किसी विशेष रास्ते पर लोगों का नेतृत्व करने या उनके साथ जबरदस्ती करने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए। मेरी एकमात्र चिंता लोगों को पूरी तरह, बिना शर्त आज़ाद करना है।

नब्बे वर्ष की आयु में अपने जीवन के अंत तक, कृष्णमूर्ति ने एक निजी व्यक्ति के रूप में बोलते हुए दुनिया भर की यात्रा की। अपने स्वयं के सहित सभी आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक अधिकार की अस्वीकृति, एक मौलिक विषय है। एक प्रमुख चिंता का विषय सामाजिक संरचना है और यह व्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है।

उनकी बातचीत और लेखन में उन मनोवैज्ञानिक बाधाओं पर जोर दिया गया है जो धारणा की स्पष्टता को रोकती हैं। रिश्ते के दर्पण में, हम में से प्रत्येक अपनी चेतना की सामग्री को समझ सकता है, जो पूरी मानवता के लिए सामान्य है। हम इसे विश्लेषणात्मक रूप से नहीं, बल्कि सीधे तौर पर उस तरीके से कर सकते हैं, जिसका वर्णन कृष्णमूर्ति ने विस्तार से किया है। इस सामग्री का अवलोकन करते समय हम अपने भीतर प्रेक्षक और जो देखा जाता है उसका विभाजन पाते हैं। वह बताते हैं कि यह विभाजन, जो प्रत्यक्ष धारणा को रोकता है, मानव संघर्ष की जड़ है।

1929 के बाद उनकी केंद्रीय दृष्टि नहीं डगमगायी, बल्कि कृष्णमूर्ति अपनी भाषा को और भी अधिक सरल और स्पष्ट बनाने के लिए जीवन भर प्रयास करते रहे। उनके प्रदर्शन में एक विकास है. साल-दर-साल उन्होंने अलग-अलग बारीकियों के साथ अपने विषय में नए शब्दों और नए दृष्टिकोणों का इस्तेमाल किया।

क्योंकि उनका विषय सर्वव्यापी है, संकलित रचनाएँ आकर्षक रुचि की हैं। किसी एक वर्ष में अपनी बातचीत में, कृष्णमूर्ति अपने दृष्टिकोण की पूरी श्रृंखला को कवर करने में सक्षम नहीं थे, लेकिन इन सभी संस्करणों में विशेष विषयों के व्यापक अनुप्रयोग पाए जाते हैं। उनमें उन्होंने बाद के वर्षों में उपयोग की गई कई अवधारणाओं की नींव रखी।

एकत्रित कार्यों में कृष्णमूर्ति की पहले प्रकाशित वार्ता, चर्चा, विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर और 1933 से 1967 तक के लेख शामिल हैं। वे उनकी शिक्षाओं का एक प्रामाणिक रिकॉर्ड हैं, जो शब्दशः शॉर्टहैंड रिपोर्ट और टेप रिकॉर्डिंग के प्रतिलेखों से लिया गया है।

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ अमेरिका, एक कैलिफोर्निया धर्मार्थ ट्रस्ट, का उद्देश्य कृष्णमूर्ति पुस्तकों, वीडियो कैसेट, फिल्मों और टेप रिकॉर्डिंग का प्रकाशन और वितरण करना है। एकत्रित कार्यों का उत्पादन इन गतिविधियों में से एक है।

सीखने पर, 1958

हमें ऐसा लगता है कि एक बिल्कुल अलग तरह की नैतिकता और आचरण और जीवन की पूरी प्रक्रिया की समझ से उत्पन्न होने वाली कार्रवाई एक तत्काल आवश्यकता बन गई है क्योंकि हम बढ़ते संकटों और समस्याओं का सामना कर रहे हैं। हम इन मुद्दों को राजनीतिक और संगठनात्मक तरीकों से, आर्थिक समायोजन के माध्यम से और सुधारों के माध्यम से हल करने का प्रयास करते हैं। इनमें से कोई भी तरीका कभी भी अस्तित्व की जटिल मानवीय कठिनाइयों का समाधान नहीं करेगा, हालांकि वे अस्थायी राहत प्रदान कर सकते हैं। सभी सुधार, चाहे वे कितने ही व्यापक और स्थायी प्रतीत होते हों, अपने आप में और अधिक भ्रम और आगे के सुधार के लिए उत्पादक होते हैं। सुधार, चाहे कितना ही आवश्यक क्यों न हो, मनुष्य के संपूर्ण जटिल अस्तित्व को समझे बिना, केवल आगे के सुधारों की भ्रमित करने वाली मांग ही लाएगा। सुधार का कोई अंत नहीं है, और इस प्रकार कोई मौलिक समाधान नहीं है।

राजनीतिक, आर्थिक, या सामाजिक क्रांतियाँ भी इसका उत्तर नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने या तो भयानक अत्याचार उत्पन्न किए हैं या सत्ता की शक्ति एक अलग समूह के हाथों में चली गई है। ऐसी क्रांतियाँ, किसी भी समय, भ्रम और संघर्ष से निकलने का रास्ता नहीं हैं। लेकिन एक क्रांति है जो पूरी तरह से अलग है और अगर हमें चिंताओं, संघर्षों और निराशाओं की इस अंतहीन श्रृंखला से बाहर निकलना है तो यह होनी ही चाहिए। यह क्रांति सैद्धांतिक और वैचारिक स्तर पर नहीं शुरू होनी चाहिए - जो अंततः बेकार साबित होती है - बल्कि मन में आमूल-चूल परिवर्तन लाने में होनी चाहिए। इसे केवल सही शिक्षा के माध्यम से, मनुष्य के संपूर्ण विकास के माध्यम से ही लाया जा सकता है। सही शिक्षा के माध्यम से यह क्रांति केवल विचार में नहीं बल्कि संपूर्ण मस्तिष्क में होनी चाहिए। आख़िरकार, विचार एक परिणाम है, कारण नहीं। कारण में ही आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए, परिणाम में नहीं। हम परिणामों के साथ, लक्षणों के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं, और हम विचारों, परंपराओं और आदतों के पुराने तरीकों को उखाड़कर एक महत्वपूर्ण, आमूल-चूल परिवर्तन नहीं ला रहे हैं। हम इसी से चिंतित हैं और केवल सही शिक्षा ही इसे अस्तित्व में ला सकती है।

खोजने और सीखने की क्षमता मन का कार्य है। सीखने से हमारा तात्पर्य केवल स्मृति की खेती और जानकारी के संचय से नहीं है, बल्कि भ्रम के बिना स्पष्ट और विवेकपूर्ण तरीके से सोचने की क्षमता, तथ्यों से शुरू करने की क्षमता है, न कि मान्यताओं और आदर्शों से। यदि विचार निष्कर्षों से उत्पन्न होता है तो कोई सीख नहीं है। केवल जानकारी प्राप्त करना, जिसे ज्ञान कहा जाता है, सीखना नहीं है। सीखने का अर्थ है समझने का प्यार और खुद काम करने का प्यार। सीखना तभी संभव है जब किसी भी प्रकार की कोई जबरदस्ती न हो। जबरदस्ती का अर्थ है, स्नेह या धमकी के माध्यम से, प्रेरक प्रोत्साहन या चर्चा के सूक्ष्म रूपों के माध्यम से हर प्रकार का प्रभाव।

अधिकांश लोग सोचते हैं कि तुलना के माध्यम से सीखने को बढ़ावा मिलता है, जबकि सच्चाई इसके विपरीत है। तुलना निराशा लाती है और केवल ईर्ष्या को बढ़ावा देती है, जिसे प्रतिस्पर्धा कहा जाता है। अनुनय के सूक्ष्म या स्पष्ट रूप सीखने को रोकते हैं और केवल भय उत्पन्न करते हैं। महत्वाकांक्षा भय को जन्म देती है। महत्वाकांक्षा, चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिकता से जुड़ी हो, हमेशा असामाजिक होती है। तथाकथित महान महत्वाकांक्षा अपने रिश्तों में हमेशा विनाशकारी होती है।

एक अच्छे दिमाग के विकास को प्रोत्साहित करना आवश्यक है जो समग्र रूप से जीवन के कई मुद्दों से निपटने में सक्षम है और जो उनसे भागने की कोशिश नहीं करता है और इसलिए विरोधाभासी, निराश, कड़वा या निंदक बन जाता है। और यह आवश्यक है कि उसे अपनी स्वयं की कंडीशनिंग, अपने उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में पता होना चाहिए।

चूँकि अच्छे दिमाग का विकास हमारी प्रमुख चिंताओं में से एक है, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षक कैसे पढ़ाते हैं। चूँकि शिक्षक मुख्य रूप से मन की समग्रता के विकास से संबंधित है, न कि केवल जानकारी देने से, उसे हर प्रकार की चर्चा, पूछताछ के लिए निमंत्रण और स्वतंत्र रूप से सोचने के माध्यम से ज्ञान या जानकारी प्रदान करनी होती है। जो जानता है, उसके लिए सीखने में प्राधिकार का कोई स्थान नहीं है।

शिक्षक और छात्र दोनों एक-दूसरे के साथ इस अनोखे रिश्ते में सीख रहे हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षक विचार की क्रमबद्धता की उपेक्षा करता है। यह क्रमबद्धता केवल ज्ञान के मुखर कथनों के रूप में अनुशासन द्वारा नहीं लाई जाती है, बल्कि यदि शिक्षक समझता है कि वह बुद्धि का विकास कर रहा है, तो स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रता की भावना होनी चाहिए। यह स्वतंत्रता वह करने की नहीं है जो आपको पसंद है या केवल विरोधाभास की भावना से सोचने की है, बल्कि एक ऐसी स्वतंत्रता है जिसमें मन को अपने आग्रहों और उद्देश्यों के बारे में जागरूक होने में मदद की जाती है जो छात्र को उसके अपने विचार और कार्य के माध्यम से प्रकट होते हैं।

एक अनुशासित मन कभी भी स्वतंत्र मन नहीं होता है, न ही इच्छा को दबा देने वाला मन कभी भी स्वतंत्र हो सकता है। केवल मन ही है जो इच्छा की पूरी प्रक्रिया को स्वतंत्र रूप से समझता है। अनुशासन हमेशा विचार और विश्वास की प्रणालियों के ढांचे के भीतर एक आंदोलन को प्रोत्साहित करता है, है न? ऐसा मन कभी भी बुद्धिमान होने के लिए स्वतंत्र नहीं होता। इस तरह का अनुशासन अधिकार के प्रति समर्पण, या समाज के पैटर्न के भीतर कार्य करने की क्षमता लाता है जो कार्यात्मक क्षमता की मांग करता है, न कि उस बुद्धिमत्ता की जिसकी अपनी क्षमता होती है। वह मस्तिष्क जिसने केवल स्मृति के माध्यम से क्षमता विकसित की है, आधुनिक मशीन, कंप्यूटर के समान है, जो आश्चर्यजनक क्षमता और सटीकता के साथ कार्य करता है।

प्राधिकार केवल कुछ दिशाओं में सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है। निष्कर्षों पर सोचना और निश्चित दिशा में निर्देशित होना बिल्कुल भी सोचना नहीं है; यह केवल एक मानव मशीन के रूप में कार्य कर रहा है, जो विचारहीन असंतोष पैदा करता है, अपने साथ निराशा, दुख आदि लाता है। और हम प्रत्येक मनुष्य के उसकी उच्चतम और पूर्ण क्षमता के संपूर्ण विकास के बारे में चिंतित हैं - उस उच्चतम क्षमता के लिए नहीं जिसे शिक्षक एक अवधारणा के रूप में देखता है, बल्कि वह क्षमता जिसके लिए कोई भी व्यक्ति खिलने में सक्षम हो सकता है।

तुलना की कोई भी भावना किसी व्यक्ति के इस पूर्ण विकास को रोकती है, चाहे वह एक वैज्ञानिक के रूप में हो या एक माली के रूप में। लेकिन माली की पूर्ण क्षमता वैज्ञानिक की पूर्ण क्षमता है जब कोई तुलना नहीं होती है, लेकिन जब तुलना आती है, तो अपमान और ईर्ष्यापूर्ण प्रतिक्रियाएं होती हैं जो मनुष्य और मनुष्य के बीच संघर्ष पैदा करती हैं। प्रेम तुलनात्मक नहीं है. दुःख की तरह इसकी तुलना बड़े या छोटे से नहीं की जा सकती। दुख तो दुख ही है, चाहे वह गरीब में हो या अमीर में—जैसे प्रेम है।

किसी व्यक्ति का पूर्ण विकास समानता वाले समाज का निर्माण करता है। केवल आर्थिक या कुछ आध्यात्मिक स्तर पर समानता लाने के वर्तमान सामाजिक संघर्ष का कोई मतलब नहीं है। समानता लाने के लिए किए गए सामाजिक सुधार अन्य प्रकार की असामाजिक गतिविधियों को जन्म देते हैं। सही शिक्षा के साथ सामाजिक और अन्य सुधारों की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इसकी तुलनात्मक क्षमताओं से ईर्ष्या समाप्त हो जाती है।

हमें यहां कार्य और स्थिति के बीच अंतर करना होगा। अपनी सभी भावनात्मक और पदानुक्रमित प्रतिष्ठा के साथ स्थिति केवल उच्च और निम्न के रूप में कार्य की तुलना के माध्यम से उत्पन्न होती है। जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता से खिल रहा होता है, तो स्थिति और कार्य के बीच कोई विभाजन नहीं होता है; वहाँ केवल एक शिक्षक या एक प्रधान मंत्री के रूप में उस क्षमता की अभिव्यक्ति होती है, और इसलिए स्थिति अपना महत्व खो देती है। कार्यात्मक या तकनीकी क्षमता अब है

नाम के पीछे बीए या पीएचडी होने से मान्यता प्राप्त; लेकिन चूँकि हमारा सरोकार मनुष्य के संपूर्ण विकास से है, इसलिए ऐसा व्यक्ति अपने नाम के आगे अक्षर जोड़ सकता है या नहीं लगा सकता है, लेकिन डिग्री लेने या न लेने की क्षमता अपनी इच्छानुसार रखेगा। उसकी क्षमता किसी डिग्री से नहीं मापी जाती, लेकिन वह अपनी क्षमताओं को स्वयं जान लेगा। और उसकी क्षमता की अभिव्यक्ति उस आत्म-केंद्रित आत्मविश्वास को नहीं लाती जो महज़ तकनीकी क्षमता पैदा करती है; ऐसा आत्मविश्वास तुलनात्मक है और इसलिए असामाजिक है। तुलना केवल उपयोगितावादी उद्देश्यों के लिए मौजूद है, लेकिन यह शिक्षक का काम नहीं है कि वह क्षमताओं में अंतर करे और अधिक या कम मूल्यांकन दे।

चूँकि हमारा संबंध व्यक्ति के संपूर्ण विकास से है, इसलिए शुरुआत में छात्र को अपने स्वयं के विषय चुनने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। यदि वह चुनता है, तो उसकी पसंद तात्कालिक सुखों और पूर्वाग्रहों पर आधारित होगी और जो करना सबसे आसान है; यदि वह चुनता है, तो वह किसी विशेष समाज की तात्कालिक आवश्यकताओं के अनुसार चयन करेगा। लेकिन जब हम प्राथमिक चीज़ के बारे में चिंतित होते हैं और इसकी खेती करते हैं, तो वह स्वाभाविक रूप से अध्ययन करने और उत्तीर्ण करने के लिए सबसे आसान विषय नहीं चुनेंगे, बल्कि यह चुनेंगे कि वह अपनी क्षमताओं को पूर्ण और उच्चतम सीमा तक कैसे व्यक्त कर सकते हैं। हम समग्र रूप से जीवन के कई मुद्दों, उनकी सभी मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक और भावनात्मक समस्याओं से निपटने में चिंतित हैं। चूँकि विद्यार्थी को शुरू से ही जीवन को समग्र रूप से देखने में मदद की जाती है, इसलिए वह इससे भयभीत नहीं होगा।

किसी भी समस्या से समग्र रूप से निपटने की क्षमता ही बुद्धिमत्ता है। विद्यार्थी को ग्रेड और अंक देने से बुद्धि का विकास नहीं होता। इसके विपरीत, यह समझ की मानवीय गरिमा को कम करता है। यह तुलनात्मक मूल्यांकन दिमाग को पंगु बना देता है - जिसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षक प्रत्येक छात्र की प्रगति का निरीक्षण नहीं करता है और उसका रिकॉर्ड नहीं रखता है। माता-पिता, स्वाभाविक रूप से अपने बच्चों की प्रगति जानने के लिए उत्सुक हैं, एक रिपोर्ट चाहेंगे; लेकिन, सबसे दुर्भाग्यवश, चूंकि वे समझ नहीं पाते हैं कि शिक्षक क्या करने की कोशिश कर रहा है, वे रिपोर्ट का उपयोग स्नेहपूर्ण या धमकी भरे तरीके से दबाव डालने के साधन के रूप में करेंगे ताकि वे परिणाम प्राप्त कर सकें जो वे चाहते हैं और इस प्रकार शिक्षक का काम खराब हो जाएगा। करने की कोशिश। माता-पिता को यह समझना चाहिए कि हम किस प्रकार की शिक्षा देना चाहते हैं। आम तौर पर वे यह देखकर संतुष्ट होते हैं कि उनके बच्चों को किसी प्रकार की डिग्री मिलती है जो उन्हें आजीविका सुनिश्चित करेगी। बहुत कम लोग इससे परे चिंतित हैं। बेशक वे अपने बच्चों को तथाकथित खुश देखना चाहते हैं, लेकिन इस अस्पष्ट इच्छा से परे उनके संपूर्ण विकास की चिंता बहुत कम लोगों को होती है। जैसा कि उनमें से अधिकांश की इच्छा होती है कि उनके बच्चों का सफल करियर हो, वे या तो स्नेहपूर्वक रहते हैं

किताबी ज्ञान हासिल करने के लिए उन्हें धमकाएं या डराएं, और इसलिए किताब बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है; इसके साथ, केवल स्मृति की खेती होती है जो इसके पीछे वास्तविक विचार की गुणवत्ता के बिना दोहराई जाती है।

हमारे शिक्षक को जिस कठिनाई का सामना करना पड़ता है वह व्यापक और गहन शिक्षा के प्रति माता-पिता की बड़ी उदासीनता है, क्योंकि माता-पिता केवल सतही ज्ञान की खेती से चिंतित हैं जो उनके बच्चे को भ्रष्ट समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाएगा।

इसलिए शिक्षक को न केवल बच्चों को सही तरीके से शिक्षित करना है, बल्कि यह भी देखना है कि स्कूल में जो कुछ भी किया गया है, उसे माता-पिता रद्द न करें। वास्तव में स्कूल और घर वास्तविक शिक्षा के केंद्र होने चाहिए और एक-दूसरे के विरोधी नहीं होने चाहिए - माता-पिता एक चीज़ की इच्छा रखते हैं और शिक्षक कुछ पूरी तरह से अलग कर रहे हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि माता-पिता को इस बात की पूरी जानकारी होनी चाहिए कि शिक्षक क्या कर रहा है और उन्हें अपने बच्चों के संपूर्ण विकास में गहरी दिलचस्पी होनी चाहिए। यह देखना भी उसकी समान रूप से जिम्मेदारी है कि इस प्रकार की शिक्षा जारी रहे और इसे केवल उन शिक्षकों पर न छोड़ें जिनका बोझ पहले से ही काफी भारी है। यह संपूर्ण विकास तभी पूर्ण रूप से हो सकता है जब शिक्षक, छात्र और अभिभावक के बीच सही संबंध हो। चूँकि शिक्षक किसी भी परिस्थिति में माता-पिता की सनक या जिद्दी माँगों के आगे नहीं झुक सकता, इसलिए यह आवश्यक है कि माता-पिता समझें कि शिक्षक क्या कर रहा है और अपने बच्चों में संघर्ष और भ्रम पैदा न करें।

स्वाभाविक जिज्ञासा और सीखने की ललक, निश्चित रूप से, एक बच्चे में शुरू से ही मौजूद होती है, और इसे समझदारी से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि जैसे-जैसे वह बड़ा हो, यह ललक बिना किसी विकृति के महत्वपूर्ण बनी रहे और विभिन्न विषयों के अध्ययन के लिए प्रेरित हो। यदि सीखने की इस उत्सुकता को हर समय प्रोत्साहित किया जाए, तो गणित, भूगोल, इतिहास, विज्ञान या जीव विज्ञान बच्चे या शिक्षक के लिए कोई समस्या नहीं होगी। जब विचारशील स्नेह और सुखद देखभाल का माहौल हो तो सीखने में आसानी होती है।

भावनात्मक संवेदनाएँ केवल तभी पैदा की जा सकती हैं जब छात्र महसूस करता है कि वह अपने शिक्षकों के साथ अपने रिश्ते में सुरक्षित है। रिश्तों में सुरक्षित होने का एहसास बच्चों की प्राथमिक आवश्यकता है। सुरक्षित होने की भावना और निर्भरता की भावना के बीच बहुत अंतर है। अधिकांश शिक्षक, जानबूझकर या अनजाने में, निर्भरता की इस भावना को विकसित करते हैं और इसलिए सूक्ष्मता से डर को प्रोत्साहित करते हैं, जिसे माता-पिता भी अपने स्नेही या आक्रामक तरीके से करते हैं; और यह निर्भरता स्वयं को सत्तावादी या हठधर्मी दावे के रूप में दर्शाती है कि एक बच्चे को क्या होना चाहिए और क्या करना चाहिए।

निर्भरता के साथ हमेशा डर का साया रहता है और यह डर बच्चे को बड़ों की आज्ञा मानने, उनके अनुरूप चलने और उनकी आज्ञाओं और प्रतिबंधों को स्वीकार करने के लिए मजबूर करता है। निर्भरता के इस माहौल में, भावनात्मक संवेदनाओं को कुचल दिया जाता है और इसलिए उन्हें कभी विकसित नहीं किया जा सकता है। लेकिन जब बच्चा जानता है और महसूस करता है कि वह सुरक्षित है, तो असुरक्षा के डर से भावनात्मक विकास बाधित नहीं होता है। यह सुरक्षा असुरक्षा के विपरीत नहीं है. सुरक्षा से हमारा तात्पर्य घर पर होने के एहसास से है - वह घर नहीं जहाँ से बच्चा आया है, बल्कि वह घर जहाँ वह वही रह सकता है जो वह है, जहाँ उसे रहने या न रहने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है, जहाँ वह एक पेड़ पर चढ़ सकता है और अगर वह गिर जाए तो उसे डांटा न जाए, जहां शिक्षक या गृहमाता या गृहपिता बच्चे के संपूर्ण कल्याण के बारे में गहराई से चिंतित है - जिसे बच्चा पहले प्रभाव में महसूस करता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे को पहले प्रभाव में महसूस होना चाहिए, न कि कुछ हफ्तों या कुछ महीनों बाद, कि वह घर पर है, पूरी तरह से सुरक्षित है। यह पहला प्रभाव है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। लेकिन अगर शिक्षक अपना आत्मविश्वास हासिल करने के लिए विभिन्न तरीकों की कोशिश करता है और बच्चे को वह करने की आजादी देता है जो उसे पसंद है, तो शिक्षक निर्भरता की खेती कर रहा है और बच्चे को सुरक्षित होने का एहसास नहीं दे रहा है, यह एहसास नहीं दे रहा है कि वह घर पर है जहां बच्चे हैं। जो लोग उसके संपूर्ण कल्याण के प्रति गहराई से चिंतित हैं। इस नए रिश्ते का पहला प्रभाव, जो बच्चे पर पहले कभी नहीं पड़ा है, एक प्राकृतिक संचार लाएगा जिसमें युवा पुराने को खतरे के रूप में नहीं मानते हैं जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। एक बच्चा जो सुरक्षित महसूस करता है उसके पास सम्मान व्यक्त करने के अपने तरीके होते हैं जो सीखने में आवश्यक है। यह सम्मान सभी अधिकार और भय से वंचित है। सुरक्षा की इस भावना में आचरण और व्यवहार किसी बड़े द्वारा थोपी गई चीज़ नहीं, बल्कि सीखने की एक प्रक्रिया बन जाती है। और क्योंकि बच्चा शिक्षक के साथ, बड़े के साथ अपने रिश्ते में सुरक्षित है, वह स्वाभाविक रूप से विचारशील होगा, और केवल सुरक्षा के इस माहौल में ही भावनात्मक संवेदनाओं का विकास हो सकता है। घर पर रहने, सुरक्षित रहने के इस माहौल में, वह वही करेगा जो उसे पसंद है, लेकिन जो उसे पसंद है उसे करने में, वह यह पता लगाना सीखेगा कि क्या करना सही है - जो कि किसी कार्रवाई का परिणाम नहीं है प्रतिरोध का या हठ का कार्य या दबी हुई भावनाओं का, या किसी तात्कालिक आग्रह की प्रतिक्रिया का।

संवेदनशील होने का अर्थ है अपने बारे में सभी चीज़ों के प्रति संवेदनशील होना, चाहे वह पौधे हों, जानवर हों, पेड़ हों, आकाश हो, पानी हो या पंख पर बैठा पक्षी हो, अपने बारे में लोगों की मनोदशाओं के प्रति संवेदनशील होना और पास से गुजरने वाले अजनबी के प्रति संवेदनशील होना। . यह संवेदनशीलता अनिर्धारित, निःस्वार्थ प्रतिक्रिया की गुणवत्ता लाती है

जो सच्ची नैतिकता और आचरण है। अतः उसका आचरण खुला होगा न कि गुप्त, और खुला होने के कारण शिक्षक की ओर से मात्र एक सुझाव बिना किसी प्रतिरोध और घर्षण के आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है।

चूँकि हम मनुष्य के संपूर्ण विकास और उसके भावनात्मक आग्रहों से चिंतित हैं, जो बौद्धिक तर्क से बहुत अधिक मजबूत हैं, हमें भावनात्मक क्षमता विकसित करनी चाहिए और इसे दबाने में मदद नहीं करनी चाहिए।

जब कोई व्यक्ति भावनात्मक और बौद्धिक मुद्दों से निपटने में सक्षम होगा, तो उसके पास जाने में डर की कोई भावना नहीं होगी।

चूँकि हम मनुष्य के संपूर्ण विकास से चिंतित हैं, संवेदनशीलता की खेती के साधन के रूप में एकांत एक आवश्यकता बन जाता है। जैसे गणित को जानना आवश्यक है, वैसे ही यह जानना भी आवश्यक है कि अकेला रहना क्या है, ध्यान करना क्या है, मरना क्या है—न कि एकांत क्या है, ध्यान क्या है। और ये तो खोज कर ही पता चल सकता है. और इसलिए, यह सीखना चाहिए कि ध्यान के, एकांत के, मृत्यु के क्या निहितार्थ हैं। इन निहितार्थों को सिखाया नहीं जा सकता लेकिन सीखना चाहिए। कोई संकेत कर सकता है, लेकिन जो संकेत किया गया है उसके माध्यम से सीखना एकांत नहीं है और न ही ध्यान है। लेकिन यह जानने के लिए कि एकांत क्या है और ध्यान क्या है, जैसे आप गणित सीखते हैं, एक जांच होनी चाहिए, और यह जांच मूलतः सीखने का तरीका है। जो मन पूछताछ करने में सक्षम है वह सीखने में भी सक्षम है। लेकिन जब पूछताछ को बेहतर ज्ञान या बेहतर अधिकार और अनुभव से दबा दिया जाता है, तो सीखना नकल है, और नकल केवल एक मानवीय इकाई का निर्माण करती है जो सीखने के अनुभव के बिना दोहराती है।

शिक्षण केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि एक जिज्ञासु दिमाग का विकास है जो धर्म क्या है के प्रश्न को गहराई से समझेगा और न केवल स्थापित धर्मों, चर्चों और रीति-रिवाजों को स्वीकार करेगा। ईश्वर की खोज, सत्य की खोज, या कोई इसे जो भी नाम देना चाहे वह सच्चा धर्म है, न कि केवल विश्वास और हठधर्मिता की स्वीकृति। जिस प्रकार विद्यार्थी प्रतिदिन दाँत धोता है, प्रतिदिन स्नान करता है, दिन का प्रत्येक मिनट सीखता है, उसी प्रकार दूसरों के साथ या स्वयं के साथ चुपचाप बैठने की क्रिया भी होनी चाहिए। लेकिन जब वह एकांत में चुपचाप बैठता है, तो यह उसकी बोरियत से या उसकी रोजमर्रा की गतिविधि से भागने का साधन नहीं होना चाहिए, और यह कुछ असामान्य नहीं बल्कि उसके जीवन का हिस्सा होना चाहिए। इस एकांत में जो निर्देश द्वारा नहीं लाया जाता है, या परंपरा के बाहरी अधिकार द्वारा आग्रह नहीं किया जाता है, या उन लोगों द्वारा प्रेरित नहीं किया जाता है जो चुपचाप बैठना चाहते हैं लेकिन जो अकेले रहने में सक्षम नहीं हैं - इस एकांत में वह सभी के निहितार्थों को देखना भी सीख रहा है। जिसे वह एक ऐसे जीवन के संबंध में ज्ञान के रूप में एकत्रित कर रहा है जो महज़ नहीं है

अधिग्रहणशील, आत्म-मापा, और आत्म-केंद्रित। यह एकांत मन को दर्पण की तरह स्पष्ट रूप से देखने और भय और निराशा की सभी जटिलताओं के साथ महत्वाकांक्षा के व्यर्थ प्रयास से खुद को मुक्त करने में मदद करता है, जो आत्म-केंद्रित गतिविधि की अभिव्यक्ति हैं। यह एकांत मन को स्थिरता देता है, वह स्थिरता जिसे समय के संदर्भ में नहीं मापा जा सकता है। मन की यह स्पष्टता ही चरित्र है। चरित्र का अभाव आत्म-विरोधाभास की स्थिति है।

संवेदनशील होना ही प्रेम करना है। प्यार शब्द प्यार नहीं है. और प्रेम को ईश्वर के प्रेम और मनुष्य के प्रेम के रूप में विभाजित नहीं किया जाना चाहिए। प्रेम को एक या अनेक के प्रेम के रूप में नहीं मापा जाना चाहिए। प्यार किसी को भी फूल के रूप में प्रचुर मात्रा में देने की क्षमता है जो इसे अपने होठों तक ले जाना चाहता है, लेकिन हम हमेशा इसे अपने रिश्तों में मापते हैं और इस तरह इसे नष्ट कर देते हैं। प्रेम समाज सुधारक और सामाजिक कार्यकर्ता की वस्तु नहीं है; यह कोई राजनीतिक उपकरण नहीं है जिससे कार्रवाई की जा सके। जब राजनेता और सुधारक इसका उपयोग करते हैं, तो वे शब्द का उपयोग कर रहे होते हैं और इसलिए वे कभी भी इसकी वास्तविकता को नहीं छू सकते हैं, क्योंकि प्रेम को अंत के साधन के रूप में नियोजित नहीं किया जा सकता है, चाहे वह तात्कालिक हो या दूर का। यह पृथ्वी का प्रेम है न कि उसके किसी विशेष क्षेत्र का। वास्तविकता का प्रेम किसी भी धर्म में शामिल नहीं है, और जब संगठित धर्म इसका उपयोग करते हैं, तो यह समाप्त हो जाता है। समाज और संगठित धर्म और सत्तावादी सरकारें, अपनी विभिन्न गतिविधियों में मोहक होकर, अनजाने में उस प्रेम को नष्ट कर देती हैं जो कार्रवाई में जुनून बन जाता है।

और चूँकि हम सही शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के संपूर्ण विकास से चिंतित हैं, इसलिए शुरू से ही प्रेम की गुणवत्ता का पोषण और रखरखाव किया जाना चाहिए। प्रेम भावुकता नहीं है और न ही भक्ति है। यह मृत्यु के समान शक्तिशाली है; इसे ज्ञान से नहीं खरीदा जा सकता. और जो मन अपने लिए ज्ञान प्राप्त कर रहा है, वह मन निर्ममता से काम करता है और केवल दक्षता के लिए कार्य करता है।

इसलिए, शिक्षक को शुरू से ही प्यार के इस गुण के बारे में चिंतित होना चाहिए, जो विनम्रता, नम्रता, विचारशीलता, धैर्य और शिष्टाचार है। अच्छे और सही शिक्षा वाले व्यक्ति में शिष्टाचार की विनम्रता अंतर्निहित होती है; यह किसी के बारे में सभी चीजों पर ध्यान देने का निर्देश देता है - पौधे, जानवर, व्यवहार का तरीका और बात करने का तरीका।

इसका मतलब यह नहीं है कि सभी चीजों के प्रति संवेदनशीलता का विकास, सभी चीजों की देखभाल करना - चाहे वह पेड़ हो या इंसान या फर्नीचर का टुकड़ा या नवीनतम मोटर - छोटी उम्र से ही। प्रेम की गुणवत्ता पर यह जोर संवेदनशीलता और एक ऐसा मन लाता है जो अपनी महत्वाकांक्षाओं, लालच और अधिग्रहणशीलता में आत्म-लीन नहीं होता है। क्या ऐसा नहीं है

अपने बारे में परिष्कार इकट्ठा करें, जो न केवल खुद को अच्छे स्वाद और सम्मान के रूप में व्यक्त करता है, बल्कि मन की शुद्धि भी लाता है, और जो अन्यथा गर्व में खुद को मजबूत करने की प्रवृत्ति रखता है? कपड़ों में, बातचीत में, व्यवहार में परिष्कार कोई स्व-लगाया हुआ समायोजन या बाहरी मांग नहीं है, बल्कि यह प्यार के इस गुण के साथ आता है। इस गुणवत्ता की समझ के साथ, सेक्स और मानवीय संबंधों की सभी जटिलताओं और सूक्ष्मताओं को विवेक के साथ देखा जा सकता है, न कि उत्तेजना और आशंका के साथ।

जिस शिक्षक के लिए मनुष्य का संपूर्ण विकास प्राथमिक महत्व रखता है, उसे शुरू से ही बच्चों की जिज्ञासा को जगाने के बिना, बल्कि उनकी जिज्ञासा को पूरा करने के लिए यौन आग्रह के निहितार्थ के बारे में चिंतित होना चाहिए। चूँकि यौन इच्छाएँ किसी के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, किशोरावस्था में मात्र जैविक ज्ञान या जानकारी प्रदान करना प्रयोगात्मक वासना बन सकता है यदि प्यार की गुणवत्ता महसूस नहीं की जाती है। प्रेम मन से बुराई को दूर करता है। इन सबके बिना, लड़के और लड़की को कंटीले तारों और फरमानों से अलग करना ही उनकी जिज्ञासा और उस जुनून को मजबूत करता है जो कि महज संतुष्टि में बदल जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि लड़के और लड़की को एक साथ सही ढंग से शिक्षित किया जाए।

प्रेम के इस गुण को अपने हाथों से काम करने में व्यक्त होना चाहिए - बागवानी, बढ़ईगीरी, पेंटिंग, हस्तशिल्प - और आंखों और कानों के माध्यम से - जैसे कि पेड़ों को देखना, बहते पानी, पृथ्वी की समृद्धि और गरीबी को देखना। मनुष्यों ने आपस में पक्षियों, संगीत और गीतों को सुनना उत्पन्न किया है।

हम न केवल मन और भावनात्मक संवेदनाओं के बारे में चिंतित हैं, बल्कि शरीर की भलाई के बारे में भी चिंतित हैं, और इसलिए हमें इस पर काफी विचार करना चाहिए। क्योंकि, यदि शरीर स्वस्थ, जीवंत नहीं है, तो जाहिर तौर पर यह विचार को विकृत कर देगा और असंवेदनशीलता को जन्म देगा। यह एक स्पष्ट तथ्य है जिसके विस्तार में हमें जाने की आवश्यकता नहीं है। शरीर के उत्तम स्वास्थ्य के लिए सही भोजन करना और पर्याप्त नींद लेना आवश्यक है। यदि इंद्रियां सतर्क और संवेदनशील नहीं हैं, तो शरीर मनुष्य के संपूर्ण विकास में बाधा डालेगा। मांसपेशियों की शोभा और नियंत्रण के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम, नृत्य, योग और खेल होने चाहिए। एक शरीर जो साफ़ नहीं है, जो खुद को अच्छी स्थिति में नहीं रखता है, जो मैला है, वह मन या भावनाओं की संवेदनशीलता के लिए अनुकूल नहीं है। शरीर मन का उपकरण नहीं है.

लेकिन शरीर, भावनाएँ और मन संपूर्ण मनुष्य बनाते हैं, और इन सभी के एक साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से रहने के बिना, संघर्ष अपरिहार्य है।
संघर्ष असंवेदनशीलता पैदा करता है। मन शरीर पर नियंत्रण या हावी हो सकता है, इंद्रियों को दबा सकता है और शरीर को असंवेदनशील बना सकता है। कितना असंवेदनशील

शरीर मन की पूर्ण उड़ान में बाधक बन जाता है। शरीर का वैराग्य निश्चित रूप से चेतना की गहरी परतों की खोज के लिए अनुकूल नहीं है - जो केवल तभी संभव है जब मन, भावनाएँ और शरीर एक दूसरे के साथ विरोधाभास में न हों, बल्कि किसी भी अवधारणा से प्रेरित हुए बिना सहजता से एक साथ रहें। विश्वास, या आदर्श.

मन की साधना में एकाग्रता पर नहीं बल्कि ध्यान पर जोर देना चाहिए। एकाग्रता मन को एक बिंदु तक सीमित करने के लिए मजबूर करने की एक प्रक्रिया है, जबकि ध्यान बिना किसी सीमा के होता है। एकाग्रता हमेशा एक सीमा या सीमा के साथ एक सीमित ऊर्जा है, लेकिन जब हम मन की समग्रता को समझने के बारे में चिंतित होते हैं, तो मात्र एकाग्रता एक बाधा बन जाती है, जबकि ज्ञान की सीमाओं के बिना, ध्यान असीमित है। ज्ञान एकाग्रता के माध्यम से आता है, और ज्ञान का विस्तार अभी भी एकाग्रता की सीमा के भीतर है।

ध्यान, जिस अर्थ में हम शब्द का उपयोग कर रहे हैं, वह ज्ञान का उपयोग कर सकता है और करता भी है जो आवश्यक रूप से एकाग्रता का परिणाम है। भाग कभी भी पूर्ण नहीं होता, और कई भागों को एक साथ जोड़ने से भी पूर्ण नहीं बनता। और ज्ञान, जो एकाग्रता की योगात्मक प्रक्रिया है, अथाह की समझ नहीं लाता है। समग्र कभी भी एकाग्रचित्त मन के दायरे में नहीं आता।

चूँकि हम मनुष्य और उसके दिमाग के संपूर्ण विकास से चिंतित हैं, ध्यान प्राथमिक महत्व का हो जाता है। यह ध्यान एकाग्रता के प्रयास से नहीं आता है, बल्कि यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें मन बिना किसी केंद्र के लगातार सीखता रहता है जिसके चारों ओर ज्ञान अनुभव के रूप में इकट्ठा होता है। स्वयं पर केंद्रित मन द्वारा ज्ञान का उपयोग आत्म-विस्तार के साधन के रूप में किया जाता है, और इसलिए ऐसी गतिविधि आत्म-विरोधाभासी और इतनी असामाजिक हो जाती है।

और चूँकि हम एक व्यक्ति के संपूर्ण विकास से चिंतित हैं और इसलिए दूसरे के साथ उसके रिश्ते - जो कि समाज है - पर ध्यान देने पर जोर दिया जाना चाहिए, न कि केवल एकाग्रता पर। सीखना केवल ध्यान की इस अवस्था में ही संभव है जिसमें कोई बाहरी या आंतरिक बाध्यता नहीं होती। सही सोच तभी आ सकती है जब मन परंपरा और स्मृति से बंधा न हो। यह ध्यान ही है जो मन पर मौन आने की अनुमति देता है, जो उस सृजन का द्वार खोलता है। ध्यान का सर्वाधिक महत्व है।

तब ज्ञान केवल मन को साधने के साधन के रूप में आवश्यक है, न कि अपने आप में एक साध्य के रूप में। हम जिस चीज से चिंतित हैं वह केवल एक गणितज्ञ या वैज्ञानिक या संगीतकार के रूप में एक क्षमता का विकास नहीं है,

लेकिन विद्यार्थी के संपूर्ण विकास के साथ जिसमें ये सभी चीजें शामिल होती हैं।

यह ध्यान कैसे लाया जाए? इसे किसी भी प्रकार के अनुनय, तुलना, पुरस्कार या दंड के माध्यम से विकसित नहीं किया जा सकता है; ये सब जबरदस्ती के रूप हैं। भय का उन्मूलन ही ध्यान की शुरुआत है। डर तब तक बना रहना चाहिए जब तक बनने या बनने की चाहत मौजूद है, जिसे अपनी सभी कुंठाओं और कपटपूर्ण विरोधाभासों के साथ सफलता के रूप में अनुवादित किया जाता है। जिस तरह आप एकाग्रता सिखा सकते हैं, उसी तरह ध्यान नहीं सिखाया जा सकता, जिस तरह आप संभवतः यह नहीं सिखा सकते कि डर से कैसे मुक्त हुआ जाए, लेकिन हम उन कारणों की खोज करना शुरू कर सकते हैं जो डर पैदा करते हैं और इन सभी कारणों की समझ में, डर का उन्मूलन होता है। इसलिए, ध्यान तब अस्तित्व में आता है जब छात्र के चारों ओर शारीरिक कल्याण का माहौल होता है, सुरक्षित होने की भावना होती है, घर पर होने की भावना होती है - जिसके बारे में हम पहले बात कर चुके हैं - और निःस्वार्थ कार्रवाई जो प्यार के साथ आती है। प्रेम तुलना नहीं करता, और इसलिए 'बनने' की यातना समाप्त हो जाती है।

सामान्य असंतोष जिसे हम सभी अनुभव करते हैं, चाहे वह युवा हो या बूढ़ा, जल्द ही संतुष्टि का रास्ता ढूंढ लेता है, और इस तरह हमारा दिमाग सो जाता है। वह समय-समय पर पीड़ा के माध्यम से जागृत होता है, और वह पीड़ा फिर से कुछ समाधान ढूंढती है जो संतुष्टिदायक हो। तो संतुष्टि और असंतोष के इस चक्र में, मन फंस गया है, और दर्द के माध्यम से जागृति इस असंतोष का हिस्सा है। असंतोष जांच का रास्ता है और अगर मन परंपरा, आदर्शों से बंधा है तो कोई जांच नहीं हो सकती। यह जिज्ञासा ही ध्यान की लौ है।

असंतोष से हमारा तात्पर्य मन की उस अवस्था से है जो यह समझती है कि वास्तविक क्या है, और आगे की खोज करने के लिए उत्सुक रहती है। जो है उसकी सीमाओं से परे जाने का यह आंदोलन असंतोष है, और यदि आप असंतोष को दबाते हैं या उस पर काबू पाने के तरीके और साधन ढूंढते हैं, तो आप आत्म-केंद्रित गतिविधि और उस समाज की सीमाओं को स्वीकार करेंगे जिसमें आप खुद को पाते हैं। असंतोष हममें से अधिकांश लोगों की आदत है और इस पर काबू पाने के लिए हम इसे दूर करने के लिए विभिन्न तरीके खोजते हैं।

लेकिन असंतोष वह ज्वाला है जो संतुष्टि के कूड़े को जला देती है।
छोटे से अधिक, बड़े घर आदि के लिए असंतोष ईर्ष्या के क्षेत्र में है, और यह ईर्ष्या ही है जो इस असंतोष को कायम रखती है। लेकिन हम ईर्ष्या, 'अधिक' के लालच की बात नहीं कर रहे हैं; हम उस असंतोष की बात कर रहे हैं जो 'अधिक' की किसी इच्छा या अनुभव से प्रेरित नहीं है। यह असंतोष एक अप्रदूषित अवस्था है जिसका अस्तित्व होना ही चाहिए और अस्तित्व में है, यदि इसे गलत शिक्षा या किसी आदर्श के माध्यम से सस्ता नहीं होने दिया जाए। जब हम इस असंतोष की प्रकृति को समझेंगे, तब हम देखेंगे कि ध्यान क्या है

इस जलती हुई लौ का हिस्सा जो क्षुद्र को भस्म कर देता है और मन को आत्म-आच्छादित गतिविधियों और संतुष्टि की सीमाओं के बिना छोड़ देता है। इसलिए ध्यान तभी अस्तित्व में आता है जब पूछताछ आत्म-उन्नति या संतुष्टि पर आधारित न हो।

यह ध्यान शुरू से ही विकसित किया जाना चाहिए। आप पाएंगे कि जब प्यार होता है जो खुद को विनम्रता, शिष्टाचार, धैर्य और नम्रता के माध्यम से व्यक्त करता है, तो आप पहले से ही उन सीमाओं को हटा रहे हैं जो असंवेदनशीलता पैदा करती है, और इसलिए बहुत ही कम उम्र से, आप ध्यान की इस स्थिति को लाने में मदद कर रहे हैं। यह ध्यान सीखना नहीं है, लेकिन आप इसे छात्र में लाने में मदद कर सकते हैं जब उसके आसपास कोई मजबूरी की भावना न हो और इसलिए कोई आत्म-विरोधाभासी अस्तित्व न हो। तब उसका ध्यान किसी भी क्षण किसी भी विषय पर केंद्रित हो सकता है, लेकिन यह अधिग्रहण या उपलब्धि की बाध्यकारी इच्छा के कारण उत्पन्न एकाग्रता नहीं है।

एक पीढ़ी जो इतनी शिक्षित है वह अपने माता-पिता और उस समाज की मनोवैज्ञानिक विरासत से मुक्त हो जाएगी जिसमें वे पैदा हुए हैं; और क्योंकि वे इतने शिक्षित हैं, वे संपत्ति की विरासत पर निर्भर नहीं रहेंगे। विरासत का यह कारक स्वतंत्रता को नष्ट कर देता है और बुद्धिमत्ता को सीमित कर देता है, क्योंकि यह सुरक्षा की झूठी भावना पैदा करता है, आत्म-आश्वासन देता है जिसका कोई आधार नहीं है। सुरक्षा की यह झूठी भावना मन का अंधकार है जिसमें कुछ भी पनप नहीं सकता। जिस पीढ़ी की शिक्षा बिल्कुल अलग तरीके से की गई है, जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं, वह एक नए समाज का निर्माण करेगी। क्योंकि, इसमें बुद्धि से पैदा हुई क्षमता होगी, वह बुद्धि जो भय से घिरी नहीं होती।

चूंकि हम छात्र के संपूर्ण विकास से चिंतित हैं, न कि किसी एक विशेष पहलू से, इसलिए सर्व-समावेशी ध्यान महत्वपूर्ण हो जाता है। यह संपूर्ण विकास वैचारिक नहीं है—अर्थात मानव मन की समग्रता का कोई खाका नहीं है। मन जितना अधिक स्वयं का उपयोग करता है, उसकी क्षमता उतनी ही अधिक होती है। मन की क्षमता अनंत है.

चूँकि शिक्षा किसी एक का नहीं, बल्कि कई लोगों का, माता-पिता के साथ-साथ शिक्षक का भी काम है, इसलिए साथ मिलकर काम करने की कला सीखनी चाहिए।
यह एक साथ काम करना तभी संभव है जब हममें से प्रत्येक यह समझे कि क्या सच है। यह सत्य है जो हमें एक साथ लाता है, न कि राय या विश्वास या सिद्धांत। वैचारिक और तथ्यात्मक में बहुत बड़ा अंतर है। वैचारिकता हमें मौद्रिक या अन्य कारणों से अस्थायी रूप से एक साथ ला सकती है, लेकिन जब बात केवल दृढ़ विश्वास की हो तो अलगाव होगा। सच देखा जाए तो विस्तार से असहमति हो सकती है लेकिन अलग होने का आग्रह नहीं होगा. यह मूर्ख ही हैं जो किसी भी विवरण पर टूट पड़ते हैं और विस्तार कभी नहीं बन पाता

एक ऐसे मुद्दे पर जिस पर मतभेद है। हम एक अवधारणा, एक आदर्श पर काम करने के लिए एक साथ आ सकते हैं; लेकिन ये तथ्यात्मक नहीं हैं और इन्हें दृढ़ विश्वास, अनुनय, प्रचार इत्यादि की आवश्यकता है; और हममें से अधिकांश लोग प्राधिकार की इन स्थापित रेखाओं के साथ मिलकर काम करने के आदी हैं।

एक अवधारणा के लिए, एक आदर्श के लिए एक साथ काम करना, और वह कार्रवाई जो सत्य को देखने से आती है और कार्रवाई में उस सत्य की आवश्यकता दो पूरी तरह से अलग गतिविधियां हैं। सत्ता की उत्तेजना के तहत काम करना सहयोग नहीं है, चाहे वह किसी आदर्श का अधिकार हो या उस आदर्श का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति का अधिकार हो। आपके पास एक केंद्रीय प्राधिकरण है जो कुछ विचारों को जानता है या जिसके पास एक मजबूत व्यक्तित्व है, और वह दूसरों पर हावी होता है और सूक्ष्मता से या अन्य तरीकों से, जिसे वह आदर्श कहता है, उसमें सहयोग करने के लिए मजबूर करता है।

यह निश्चित रूप से एक साथ काम नहीं कर रहा है। लेकिन जब हममें से प्रत्येक व्यक्ति कुछ मुद्दों की सच्चाई को समझता है, तो सत्य की यह समझ हमें उन्हें क्रियान्वित करने के लिए एक साथ लाती है। यह सहयोग है. और जिसने यह सहयोग सीख लिया है क्योंकि वह सत्य को सत्य के रूप में देखता है, झूठ को झूठ के रूप में देखता है, सत्य को झूठ के रूप में देखता है, वह सहयोग न करना भी सीख जाएगा - जो उतना ही महत्वपूर्ण है जितना सहयोग करना सीखना।

यदि हममें से हर कोई इस आवश्यकता को समझता है कि शिक्षा में मौलिक क्रांति आवश्यक है और हमने जो कहा है उसकी सच्चाई को समझता है, तो हम बिना किसी सहमति या असहमति के, बिना किसी प्रकार के अनुनय के साथ मिलकर काम करेंगे। सहमति या असहमति तभी मौजूद होती है जब कोई ऐसा रुख अपनाता है जिससे वह हटने को तैयार नहीं होता है, या जब वह किसी विचार के प्रति आश्वस्त होता है या किसी राय पर कायम होता है। वह विरोध लाता है और जब ऐसी स्थिति आती है तो किसी न किसी को समझाना, प्रभावित करना या अलग ढंग से सोचने के लिए प्रेरित करना पड़ता है। ऐसी स्थिति कभी उत्पन्न नहीं होगी जब हममें से प्रत्येक व्यक्ति सत्य को देखेगा। तब यह केवल मौखिक दृढ़ विश्वास या बौद्धिक, तर्कपूर्ण प्रयोग नहीं होगा बल्कि सत्य की समझ होगी। यदि हम सत्य को नहीं देखते हैं, तो उनके सभी विकृत और बेकार प्रयासों के साथ विवाद, सहमति या असहमति होती है। यह आवश्यक है कि हम साथ मिलकर काम करें, क्योंकि हम साथ मिलकर एक घर बना रहे हैं। यदि हममें से एक बना रहा हो और दूसरा तोड़ रहा हो तो घर नहीं बनेगा। इसलिए, हममें से प्रत्येक को, यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम वास्तव में एक नई पीढ़ी लाने की आवश्यकता को समझते हैं जो समग्र रूप से जीवन के मुद्दों से निपटने में सक्षम है, न कि समग्र से असंबंधित अलग-अलग हिस्सों के रूप में।

इस सहयोगात्मक तरीके से एक साथ काम करने के लिए, हमें अक्सर एक साथ मिलना होगा और सतर्क रहना होगा कि विस्तार में न डूबें। हममें से जो लोग इस समझ के प्रति गंभीरता से समर्पित हैं, उन पर न केवल इसे आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी है

हमने जो कुछ समझा है उसे क्रियान्वित करें, लेकिन यह भी देखें कि अन्य लोग भी इस समझ में आएँ। यदि इसे एक पेशा कहा जा सकता है तो शिक्षण सर्वोच्च पेशा है। शिक्षण की कला के लिए किसी विशेष बौद्धिक क्षमता की नहीं बल्कि असीम धैर्य और प्रेम की आवश्यकता होती है। शिक्षा का अर्थ है, क्या ऐसा नहीं है, अस्तित्व के विशाल क्षेत्र में सभी चीजों से संबंध की समझ - धन से, संपत्ति से, लोगों से, प्रकृति से।

सौंदर्य केवल अनुपात, रूप, स्वाद और व्यवहार नहीं है। सुंदरता मन की वह अवस्था है जिसने सादगी के जुनून में अपने केंद्र को ही त्याग दिया है। सरलता केवल तभी हो सकती है जब वह तपस्या हो जो सोचे-समझे इनकार और अनुशासित आत्म-शोध की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि वह आत्म-त्याग है जो केवल प्रेम ही ला सकता है। सादगी का कोई अंत नहीं है.

इन सबके बिना, हम एक ऐसी सभ्यता का निर्माण करते हैं जिसमें सरल आत्म-परित्याग की आंतरिक जीवन शक्ति और स्थिरता के बिना, रूप की सुंदरता की तलाश की जाती है। यदि क्रियाकलाप में, आदर्शों में, विश्वासों में स्वयं का बलिदान है तो कोई परित्याग नहीं है। ये बड़े क्षेत्र प्रतीत होते हैं, लेकिन हकीकत में स्वयं अभी भी अलग-अलग लेबल की आड़ में काम कर रहे हैं। केवल मासूम मन ही विशाल अज्ञात की जांच कर सकता है। लेकिन साधु की लंगोटी या वस्त्र की गणना की गई सादगी कभी भी आत्म-त्याग के जुनून के करीब नहीं आ सकती। इस जुनून से शिष्टाचार, नम्रता, नम्रता, धैर्य आता है - जो प्रेम की अभिव्यक्ति हैं।

हम सुंदरता को उस चीज़ के माध्यम से जानते हैं जो बनाई गई है या एक साथ रखी गई है - मानव रूप की सुंदरता या मंदिर की सुंदरता। हम कहते हैं कि वह पेड़, वह घर, वह नदी जो व्यापक रूप से घुमावदार है, सुंदर है। और तुलना के कारण, हम उसे जानते हैं जो कुरूप है—कम से कम हम सोचते हैं कि हम जानते हैं। क्या सुंदरता तुलनात्मक है? क्या सौन्दर्य वह है जो प्रकट किया गया हो, अभिव्यक्त हो? हम कहते हैं कि एक तस्वीर, एक कविता, एक चेहरा सुंदर है क्योंकि हम पहले से ही जानते हैं या महसूस करते हैं कि हमें क्या सिखाया गया है, या जिससे हम परिचित हैं, या जिसके बारे में हमने एक राय बनाई है। और क्या तुलना से सुंदरता ख़त्म नहीं हो जाती? क्या सौंदर्य केवल ज्ञात का ज्ञान है, या यह एक ऐसा अस्तित्व है जिसमें सृजन किया गया है या नहीं?

हम हमेशा सुंदरता की तलाश में रहते हैं और कुरूपता से बचते हैं, और एक से बचना और दूसरे में समृद्धि की तलाश अनिवार्य रूप से असंवेदनशीलता को जन्म देती है। अब तथाकथित सुंदर और तथाकथित कुरूप दोनों के प्रति संवेदनशीलता, निश्चित रूप से, सुंदरता क्या है, इसकी समझ या अहसास के लिए आवश्यक है। कोई भी भावना सुन्दर या कुरूप नहीं होती, वह केवल एक अनुभूति होती है। यह केवल तब होता है जब हम इसे अपनी शिक्षित और सामाजिक कंडीशनिंग के माध्यम से देखते हैं कि हम कहते हैं कि यह एक अच्छी भावना है और यह एक बुरी भावना है, और इस प्रकार भावना को नष्ट कर देते हैं या विकृत कर देते हैं। लेकिन जिस एहसास को अच्छा या बुरा का लेबल नहीं दिया जाता

तीव्र रहता है. यह भावुक तीव्रता ही है जो उस चीज़ को समझने की खोज में आवश्यक है जो न तो प्रकट सौंदर्य है और न ही कुरूप।

हम जिस चीज़ पर जोर दे रहे हैं वह निरंतर भावना के महान महत्व पर है, वह जुनून जो संतुष्टि में स्वयं की वासना मात्र नहीं है। यही वह है जो सुंदरता पैदा करता है, और चूंकि इसकी तुलना नहीं की जा सकती, इसलिए इसका कोई विपरीत भी नहीं है।

चूँकि हमारा संबंध मनुष्य के संपूर्ण विकास से है, इसलिए हमें न केवल चेतन मन बल्कि अचेतन मन का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए। अचेतन को समझे बिना चेतन की मात्र शिक्षा मानव जीवन में निराशाओं और दुखों के साथ विरोधाभास लाती है। सतही मन की तुलना में छिपा हुआ मन कहीं अधिक जीवंत और सशक्त होता है।

अधिकांश शिक्षक सतही दिमाग को शिक्षित करने, उसे ज्ञान नामक जानकारी देने, नौकरी हासिल करने और समाज में खुद को समायोजित करने से चिंतित हैं।
इसलिए छिपा हुआ मन कभी छू नहीं पाता। शिक्षकों ने जो कुछ किया है वह यह है कि उन्होंने तकनीकी ज्ञान और पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता की एक परत थोप दी है।

लेकिन चूँकि हमारा सरोकार मनुष्य के संपूर्ण विकास से है, इसलिए हमें छुपे हुए मन की स्थिति को भी समझना होगा। यह छिपा हुआ मन सतही मन की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली है, भले ही इसे कितना भी शिक्षित किया गया हो और यह समायोजन करने में कितना भी सक्षम क्यों न हो। छिपा हुआ मन कोई बहुत रहस्यमयी चीज़ नहीं है। यह निश्चित रूप से धर्म, अंधविश्वास, प्रतीक, किसी विशेष जाति की परंपरा, उसके साहित्य के प्रभाव, चाहे वह पवित्र हो या अपवित्र, के रूप में नस्लीय स्मृतियों का भंडार है; किसी विशेष समूह का सामूहिक प्रभाव, उसकी अपनी विशिष्ट परंपराओं, आकांक्षाओं और कुंठाओं, प्रतीकों, तौर-तरीकों और भोजन के साथ; और खुली और छिपी हुई इच्छा अपने उद्देश्यों और कुंठाओं, अपनी आशाओं और भयों, अपने छिपे हुए दुखों और सुखों और उन विश्वासों के साथ जो सुरक्षा की इच्छा के माध्यम से खुद को विभिन्न तरीकों से अनुवादित करते हुए कायम रहते हैं। इस छिपे हुए मन में न केवल इस शेष बचे हुए अतीत की असाधारण क्षमता है, बल्कि भविष्य में निकट या दूर की भविष्यवाणी करने की क्षमता भी है। यह सब स्वयं को सपनों के माध्यम से और सतही मन को विभिन्न सूचनाओं के माध्यम से व्यक्त करता है जब वह रोजमर्रा की घटनाओं में पूरी तरह व्यस्त नहीं होता है। छिपा हुआ मन न तो पवित्र है और न ही इससे डरने की कोई जरूरत है, न ही यह विशेषज्ञ से इसे सतही तौर पर उजागर करने की मांग करता है। केवल छिपे हुए मन की विशाल शक्ति के कारण, सतही उससे अपनी इच्छानुसार व्यवहार नहीं कर सकता। सतही अपने छुपे हुए के संबंध में काफी हद तक नपुंसक है। चाहे वह अपनी तात्कालिक सामाजिक माँगों के कारण उस पर हावी होने, उसे आकार देने, उसे नियंत्रित करने की कितनी भी कोशिश कर ले

पीछा करते हुए, यह केवल छिपे हुए की सतह को खरोंच सकता है, और इसलिए छिपे हुए और खुले के बीच एक दरार और विरोधाभास है। हम अनुशासन, विभिन्न प्रथाओं, प्रतिबंधों आदि के माध्यम से इस खाई को पाटने का प्रयास करते हैं; लेकिन इसे पाटना संभव नहीं है. चूँकि चेतन मन केवल तत्काल में व्यस्त रहता है - सीमित वर्तमान के अर्थ में - जबकि छुपे हुए में सदियों का भार होता है जिसे किसी भी तात्कालिक आवश्यकता से दूर नहीं किया जा सकता है, छुपे हुए में गहरे समय की गुणवत्ता होती है।

अपनी हालिया संस्कृति के साथ सतही दिमाग अपनी तात्कालिक तात्कालिकताओं के अनुसार इससे निपट नहीं सकता है। अत: अंतर्विरोध को मिटाने के लिए सतही मन को इस तथ्य को समझना होगा और शांत रहना होगा, जिसका अर्थ छुपे हुए असंख्य आग्रहों को गुंजाइश देना नहीं है। जब खुले और छिपे के बीच कोई प्रतिरोध नहीं है, तो छिपे हुए के पास समय का धैर्य होने के कारण छिपा हुआ तात्कालिक का उल्लंघन नहीं करेगा।

यह छिपा हुआ, अज्ञात और सतही तौर पर न समझा गया मन है जिसे शिक्षित किया गया है, जो वर्तमान - वर्तमान चुनौतियों और मांगों के संपर्क में आता है। सतही चुनौती का पर्याप्त रूप से जवाब दे सकता है, लेकिन क्योंकि सतही और छिपे हुए के बीच विरोधाभास है, सतही का कोई भी अनुभव केवल अपने और छिपे हुए के बीच संघर्ष को बढ़ाता है। इससे और अधिक अनुभव प्राप्त होता है, वर्तमान और अतीत के बीच की खाई चौड़ी होती है। आंतरिक, छिपे हुए को समझे बिना अनुभव करने वाला सतही मन, केवल गहरा और व्यापक संघर्ष पैदा करता है। अनुभव मुक्त या समृद्ध नहीं करते, जैसा कि हम आम तौर पर सोचते हैं कि वे करते हैं। जब तक अनुभव अनुभवकर्ता को मजबूत करते हैं, तब तक संघर्ष अवश्य रहेगा। अनुभवों वाला एक वातानुकूलित मन केवल कंडीशनिंग को मजबूत करता है, और इस प्रकार संघर्ष और दुख को बढ़ाता है। केवल उस मन के लिए जो स्वयं के संपूर्ण तरीकों को समझ रहा है, अनुभव एक मुक्ति कारक हो सकता है।

जब छुपे हुए कई परतों की शक्तियों और क्षमताओं की समझ हो जाती है, तो समझदारी और समझदारी से विवरणों पर गौर किया जा सकता है। जो महत्वपूर्ण है वह केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए सतही दिमाग की शिक्षा नहीं है - जो आवश्यक है - बल्कि छिपे हुए की समझ है। यह समझ समग्र मन को द्वंद्व से मुक्त करती है, और केवल तभी बुद्धिमत्ता होती है।

चूंकि हम मनुष्य के संपूर्ण विकास के बारे में चिंतित हैं, इसलिए हमें न केवल रोजमर्रा की गतिविधियों में रहने वाले सतही दिमाग को पूरी क्षमता देनी चाहिए, बल्कि छिपे हुए को भी समझना चाहिए, क्योंकि छिपे हुए को समझने में ही समग्रता आएगी। जो विरोधाभास, दुख के रूप में और

ख़ुशी ख़त्म हो जाती है. छिपे हुए मन की कार्यप्रणाली के बारे में जागरूक होना और उससे परिचित होना आवश्यक है, लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि उसमें व्यस्त न रहें और न ही उसे अनुचित महत्व दें। केवल तभी मन, सतही और छिपा हुआ, अपनी सीमाओं से परे जा सकता है और उस आनंद की खोज कर सकता है जो समय का नहीं है।

पूना, भारत, 1958

पूना में पहली बातचीत

मैं सोचता हूं कि यह अच्छा होगा यदि हम वक्ता और श्रोता के बीच सच्चा संबंध स्थापित कर सकें; अन्यथा, बहुत अधिक गलतफहमी और गलत निर्णय हो सकता है। जाहिर है वक्ता को कुछ कहना है और आप सुनने आए हैं। वह जो कहना चाहता है उसका बहुत कम मूल्य हो सकता है, या यदि कोई शांत ध्यान से सुनने में सक्षम है तो इसका महत्व हो सकता है।

यह जानना सबसे महत्वपूर्ण है कि कैसे सुनना है। हममें से अधिकांश लोग नहीं सुनते; हम या तो जो कहा जा रहा है उसका विरोध करने या उसका खंडन करने की प्रवृत्ति के साथ आते हैं, या हम उसकी तुलना उस चीज़ से करते हैं जो हमने पहले सुनी है, या किताबों से सीखी है। इस प्रक्रिया में, जाहिर है, कोई सुनना नहीं है क्योंकि जब आप किसी विषय पर किसी और ने क्या कहा है, उसके बारे में सोच रहे हैं, तो आपका दिमाग केवल विभिन्न यादों में वापस जा रहा है - जो कहा जा रहा है उसकी तुलना आप जो पहले ही सुन चुके हैं या उससे करने की कोशिश कर रहे हैं। पढ़ना। इसलिए कृपया, यदि मैं सुझाव दे सकूं, तो जो कहा जा रहा है उसका पालन करें।

दुनिया में बहुत सारी भयानक चीजें हो रही हैं, इतना दुख और भ्रम, इतना पतन, भ्रष्टाचार और बुराई; और मुझे लगता है कि अगर कोई इन मानवीय समस्याओं को समझने के लिए बिल्कुल भी ईमानदार, इरादा रखता है, तो उसे इस मामले को एक निश्चित गंभीर उद्देश्य के साथ देखना चाहिए। मैं जो कहने जा रहा हूं वह आप जो जानते हैं या विश्वास करते हैं उससे पूरी तरह भिन्न हो सकता है-और मुझे लगता है कि यह होगा। मैं यह बात किसी दंभ या अति-आत्मविश्वास के कारण नहीं कह रहा हूं, बल्कि इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हममें से अधिकांश लोग, जब कोई अपरिचित बात कही जाती है, तो उसे तुरंत अस्वीकार कर देते हैं या उसका उपहास उड़ा देते हैं। यह विशेष रूप से विशेषज्ञों के साथ सच है, जो किसी विभाग में विशेषज्ञ हैं - वैज्ञानिक, तकनीशियन, व्याख्याता, प्रोफेसर, इत्यादि। वे विशेष रूप से हमारी कई समस्याओं के लिए एक नए दृष्टिकोण को त्यागने में सक्षम हैं क्योंकि वे जीवन को विभागों में विभाजित करते हैं और केवल अपने विशेष क्षेत्र के संदर्भ में सोचते हैं। जीवन की समस्याएं हल होने वाली नहीं हैं

विशेषज्ञों द्वारा. यदि कोई व्यक्ति एक अर्थशास्त्री है, तो वह सोचता है कि जीवन की सभी समस्याओं का समाधान किसी आर्थिक प्रणाली द्वारा किया जाएगा जो उपलब्धि, लाभ के लिए अवसर की समानता लाएगा, और उसके लिए विचार के, जांच के, अन्य सभी रूपों के अवसर की समानता लाएगा। खोज, गौण महत्व की लगती है या सार्थक नहीं है।

तो, इन सभी बातों पर विचार करते हुए, मुझे लगता है, यह अच्छा होगा, अगर हम कम से कम इस घंटे के लिए, विनम्रता की भावना के साथ सुन सकें, यह जानने की कोशिश कर सकें कि वक्ता क्या कहना चाहता है। बाद में आप इस पर सवाल उठा सकते हैं, इस पर चर्चा कर सकते हैं, इसका खंडन कर सकते हैं, या इसे किनारे रख सकते हैं। लेकिन सबसे पहले, निश्चित रूप से, अगर संचार का कोई भी रूप होना है, तो वक्ता और श्रोता के बीच एक निश्चित समझ, एक सामान्य आधार स्थापित होना चाहिए। सुनना बहुत कठिन है; यह एक कला है. मुझे यकीन है कि आपने वास्तव में कभी किसी की नहीं सुनी होगी क्योंकि आपका दिमाग हमेशा अन्य चीजों के बारे में सोचने में व्यस्त रहता है, क्या ऐसा नहीं है? आप वास्तव में कभी भी अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपने पड़ोसी की बात नहीं सुनते, क्योंकि आपका मन अपने ही भय और चिंताओं में फँसा रहता है, मन में उठने वाली असंख्य व्यस्तताओं में फँसा रहता है और पूर्ण संचार को रोकता है। यदि आप स्वयं का निरीक्षण करेंगे तो आप देखेंगे कि किसी भी बात को सुनना कितना असाधारण रूप से कठिन है, विशेषकर उस वक्ता के लिए जो ऐसी बातें कहने जा रहा है जो आपको पसंद नहीं आएंगी, या जो आपको तुरंत समझ में नहीं आती हैं, या जो विरोधाभासी लगती हैं। ऐसी चीज़ें बहुत अधिक भ्रम पैदा करने वाली होती हैं, और इसलिए आप उन सभी को नज़रअंदाज कर देते हैं।

इसलिए विनम्रता के भाव से सुनना जरूरी है। विनम्रता विनम्र होने से बिल्कुल अलग है। विनम्रता उस व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जा सकती है, एकत्र की जा सकती है, विकसित की जा सकती है जो पहले से ही घमंड और अहंकार से भरा है, लेकिन विनम्रता अर्जित करने का गुण नहीं है; यह अस्तित्व की एक अवस्था है। आप विनम्रता की स्थिति में हैं, या नहीं हैं, और हम इस सब पर अभी चर्चा करेंगे क्योंकि हम आगे होने वाली बातचीत में अपनी कई समस्याओं पर चर्चा करेंगे। लेकिन अब मैं सुझाव दे रहा हूं कि यदि कोई सीखना चाहता है, दूसरे क्या कहता है उसे समझना चाहता है, तो उसमें वह विनम्रता होनी चाहिए जो सुनती है, जो न तो स्वीकार करती है और न ही अस्वीकार करती है बल्कि पूछताछ करती है। पूछताछ करने के लिए विनम्रता की स्थिति होनी चाहिए क्योंकि यदि आप पहले से ही जानते हैं, तो आप पूछताछ करना बंद कर देते हैं। यदि आप सहमत होने या इनकार करने की स्थिति लेते हैं, तो आप पूछताछ को समाप्त कर देते हैं। पूछताछ तभी संभव है जब मन की एक निश्चित स्वतंत्रता हो, जो कहा जा रहा है उसमें जाने की, पूछताछ करने की, पता लगाने की स्वतंत्रता हो। इसलिए यह आवश्यक है कि हमें स्वतंत्रता और विनम्रता की भावना के साथ सुनना चाहिए, तभी हम एक-दूसरे के साथ संवाद कर पाएंगे।

मैं यहां आपको यह निर्देश देने के लिए नहीं हूं कि क्या करना है या क्या नहीं करना है, बल्कि हम साथ मिलकर अपनी कई समस्याओं के बारे में पूछताछ करने जा रहे हैं। इसलिए सोच

यह एकतरफा नहीं होना चाहिए, जिसमें आप केवल प्राप्त कर रहे हों। आप और मैं, मानव अस्तित्व की संपूर्ण समस्या, जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया, मृत्यु, ध्यान, संघर्ष, मानवीय संबंधों की जांच करने का प्रयास करेंगे। वह सब जिसमें हम जा रहे हैं। लेकिन सबसे पहले यह आवश्यक है कि जो मन पूछताछ करना चाहता है वह कुछ हद तक लचीला और स्वतंत्र हो, कठोर न हो, पूर्वाग्रह से ग्रस्त न हो, ऐसा रुख अपनाने के लिए प्रवृत्त न हो जिसके लिए वह अनिच्छुक हो।

हिलना डुलना।

यह देखते हुए कि इतना संघर्ष और दुख है, इतना भयावह आर्थिक तनाव और दबाव है, इतनी अधिक भुखमरी और गिरावट है, निश्चित रूप से हमें यह जांच करनी चाहिए। जाहिर तौर पर बदलाव जरूरी है, आमूल-चूल बदलाव। एक मौलिक क्रांति आवश्यक है क्योंकि चीजें जैसी चल रही हैं वैसी नहीं चल सकतीं। निःसंदेह यदि हम पर्याप्त धन कमा रहे हैं, यदि हम इतने चतुर हैं कि जीवन को बहुत अधिक संघर्ष के बिना जी सकते हैं और केवल अपने बारे में चिंतित हैं, तो हमें कोई आपत्ति नहीं है अगर चीजें वैसे ही चलती रहें जैसे कि चल रही हैं। लेकिन अगर हम बिल्कुल भी जिज्ञासु हैं, गंभीर हैं, तो हमें निश्चित रूप से यह पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि बदलाव कैसे लाया जाए। क्योंकि धर्मों का स्पष्ट अर्थ बहुत ही कम है; वे केवल भागने की पेशकश करते हैं। आप किसी गुरु या पुजारी के पास जा सकते हैं, मंत्र या प्रार्थना दोहरा सकते हैं, किसी सिद्धांत या अनुष्ठान का पालन कर सकते हैं, लेकिन ये सभी भागने के रास्ते हैं।

वे आपकी समस्याओं का समाधान नहीं करेंगे—और उन्होंने ऐसा नहीं किया है। समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं, और उनसे भागना अच्छा नहीं है। चाहे आप मंदिर जाएं या संन्यासी बनने के लिए हिमालय चले जाएं, यह अभी भी भागना ही है।

पूरी दुनिया में यही समस्या है. धर्म विफल हो गये और शिक्षा भी। बहुत सारी परीक्षाएँ पास करने और अपने नाम के बाद अक्षर लगाने से आपकी समस्याएँ हल नहीं हो गई हैं। किसी भी प्रणाली, चाहे शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक या दार्शनिक, ने हमारी समस्याओं का समाधान नहीं किया है - जो स्पष्ट है क्योंकि हम अभी भी संघर्ष में हैं। वहाँ भयानक गरीबी, भ्रम, आदमी और आदमी के बीच, समूह और समूह, जाति और नस्ल के बीच संघर्ष है।

न तो कम्युनिस्ट और न ही किसी अन्य सामाजिक या आर्थिक क्रांति ने इस समस्या का समाधान किया है, या कभी करेंगे। चूँकि मनुष्य एक संपूर्ण इकाई है, इसलिए उसे उसके अस्तित्व के विभिन्न स्तरों पर, आंशिक रूप से नहीं, समग्रता के रूप में लेना होगा। विशेषज्ञ का संबंध केवल एक विशेष स्तर से होता है - राजनेता केवल शासन करने से, अर्थशास्त्री केवल धन मूल्यों से, धर्मवादी अपने पंथ से, इत्यादि। जाहिर तौर पर कोई भी मानवीय समस्या पर समग्र रूप से विचार नहीं करता है और आंशिक रूप से नहीं, बल्कि पूरी तरह से इसका समाधान करता है। धार्मिक व्यक्ति कहता है, "यदि आप वास्तव में समस्या का समाधान चाहते हैं तो संसार छोड़ दें," लेकिन संसार तो स्वयं के भीतर है। आँसू, असंख्य संघर्ष और भय,

वे सभी अंदर हैं. या समाज सुधारक कहते हैं, "अपने आप को भूल जाओ और अच्छा करो," और आप खुद को भूलने के लिए काम कर सकते हैं; लेकिन समस्या अभी भी है.
सभी विभिन्न विशेषज्ञ अपने-अपने उपचार पेश करते हैं, लेकिन किसी को भी मनुष्य के संपूर्ण परिवर्तन से कोई सरोकार नहीं है। वे जो कुछ भी प्रस्तुत करते हैं वह सोच के विभिन्न रूप हैं। यदि आप एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म में जाते हैं, तो आप केवल अपने सोचने का तरीका बदलते हैं। किसी को भी विचार की गुणवत्ता, सोचने वाले मन की गुणवत्ता से कोई सरोकार नहीं है।

समस्या बहुत बड़ी है, जैसा कि आप और मैं भली-भांति जानते हैं - हमें केवल सड़क से गुजरते समय, बस में चढ़ते समय, किसी मित्र से या किसी राजनेता से या किसी धार्मिक व्यक्ति से बात करते समय निरीक्षण करना है। हम गिरावट की इस पूरी प्रक्रिया को, हर प्रकार की गिरावट और भ्रष्टाचार को, बढ़ते हुए भ्रम को देख सकते हैं; और निश्चित रूप से हम इसे हल करने की आशा केवल तभी कर सकते हैं जब दिमाग समस्या के बारे में बिल्कुल अलग तरीके से सोचने में सक्षम हो। मन में ही एक क्रांति होनी चाहिए, न कि केवल मानव अस्तित्व के कुछ आंशिक स्तर पर परिवर्तन; और हमारी सोच में उस क्रांति के साथ, मन के उस आमूल-चूल परिवर्तन के साथ, हम समस्या से पूरी तरह निपट सकते हैं।

समस्या तो निरंतर बदलती रहती है ना? समस्या स्थिर नहीं है, लेकिन हम इसे ऐसे दिमाग से देखते हैं जो पहले से ही वातानुकूलित है, जिसने पहले से ही एक रुख अपना लिया है और कुछ प्रतिबंधों, आदेशों, मूल्यों को स्वीकार कर लिया है। इसलिए जबकि समस्या एक जीवित चीज़ है, परिवर्तनशील है, महत्वपूर्ण है, हम इसे मृत मन से देखते हैं, और इसलिए संघर्ष बढ़ता है और भ्रम बिगड़ता है।

तो सोच में क्रांति होनी चाहिए, मन में ही क्रांति होनी चाहिए, न कि इसमें कि मन क्या सोचता है। निःसंदेह दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। हम अधिकतर इस बात से चिंतित रहते हैं कि मन क्या सोचता है।

कम्युनिस्ट मन को वही सोचने के लिए तैयार करने से चिंतित है जो उसे बताया गया है, और तथाकथित धार्मिक व्यक्ति भी इसी चीज़ से चिंतित है।
हममें से अधिकांश लोग केवल उन विचारों को सोचने में रुचि रखते हैं जिन्हें हम पहले से ही जानते हैं और स्वीकार कर चुके हैं, और जाहिर तौर पर ये विचार मन को और अधिक प्रभावित करते हैं। आपका प्रत्येक विचार - एक अर्थशास्त्री के रूप में, एक विशेषज्ञ के रूप में, ईश्वर में विश्वास करने वाले या अविश्वासी के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो सद्गुणों का अनुसरण करता है या नहीं करता है - मन को आकार देता है। आपकी सोच आपकी कंडीशनिंग पर निर्भर करती है, आपका पालन-पोषण कैसे हुआ है, आपके परिवेश का दबाव क्या है- धर्म, समाज, परिवार, परंपरा। इसलिए यदि हम बिल्कुल भी गंभीर हैं, तो हमें एक विचार को दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापित करने या किसी अन्य स्तर पर विचार को उन्नत करने की चिंता नहीं होगी। हमें सोचने की क्षमता के आमूल-चूल परिवर्तन के बारे में चिंतित होना चाहिए, न कि केवल क्या सोचना है इसके चुनाव के बारे में। क्रांति वहीं होनी चाहिए, कहीं नहीं

मानव अस्तित्व की विशेष परत. मुझे आशा है कि मैं यह बात स्पष्ट कर रहा हूं। यदि नहीं, तो हम आगे बढ़ते हुए इस पर चर्चा करेंगे। सोचने के तरीके में एक क्रांति आवश्यक है - क्या सोचना है इसका चुनाव या सही विचार की खोज नहीं, बल्कि स्वयं की क्षमता में, मन में ही एक क्रांति है। जब तक मन में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं होता, आपके पास अपनी समस्याओं का कोई उत्तर नहीं हो सकता। आप जो चाहें करें, कोई भी किताब पढ़ें, किसी भी प्राधिकारी, किसी भी गुरु का अनुसरण करें, आप कभी भी अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएंगे जब तक कि मन का आमूल-चूल परिवर्तन न हो जाए।

अभी क्या हो रहा है? आप या तो हिंदू हैं, मुस्लिम हैं, बौद्ध हैं, कैथोलिक हैं, अमेरिकी हैं, रूसी हैं, या किसी प्रकार के विशेषज्ञ हैं, इत्यादि; और आप जीवन को अपनी विशेष सोच के साथ देखते हैं। साम्यवादी जीवन की समस्याओं को अपने तरीके से हल करना चाहता है; कैथोलिक, हिंदू, बौद्ध, उसके में; इसलिए हमेशा विवाद, संघर्ष, कड़वाहट, चिंता, युद्ध होता है, जो स्पष्ट रूप से हमारी मानवीय समस्याओं को हल करने का तरीका नहीं है। जब तक आप जो हैं वही बने रहेंगे, तब तक आप किसी भी बुनियादी समस्या का समाधान नहीं कर पाएंगे। और यदि आप, एक छात्र के रूप में, एक वैज्ञानिक बनने में विशेषज्ञता रखते हैं और आशा करते हैं कि विज्ञान सब कुछ हल कर देगा, तो ऐसा नहीं होगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं। आप आकाश में जाने में सक्षम हो सकते हैं, विभिन्न प्रकार के स्पुतनिक का उत्पादन कर सकते हैं, लेकिन मानव अस्तित्व की हमारी समस्याएं अभी भी मौजूद हैं - आप अपनी पत्नी के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, मैं आपके साथ कैसा व्यवहार करता हूं और आप मेरे साथ कैसा व्यवहार करते हैं, हमारी महत्वाकांक्षाएं, हमारे लालच, हमारी कुंठाएं , क्या ईश्वर है, मृत्यु के बाद क्या होता है, ध्यान क्या है, सदाचार क्या है, सच्चा धार्मिक जीवन क्या है। निश्चित रूप से ये सभी हमारी समस्याएं हैं, और अब हम उनसे विशेषज्ञों के रूप में, विभिन्न आशाओं, इच्छाओं, विश्वासों से बंधे व्यक्तियों के रूप में संपर्क करते हैं; और इसलिए हम उन्हें कभी हल नहीं करते।

इसलिए मन में क्रांति होनी चाहिए। यह क्रांति केवल सहमति का मामला नहीं है, यह दृढ़ विश्वास का मामला नहीं है, यह विश्वास का मामला नहीं है - यह अवश्य होना चाहिए। यदि आप मानते हैं कि मन में क्रांति अवश्य होनी चाहिए तो यह घटित नहीं हो सकता। वह मात्र एक अवधारणा है, एक आदर्श है, जो बेकार है। आप जानते हैं कि शब्द और क्रिया में बहुत अंतर है। संचार के साधन के अलावा इस शब्द का बहुत कम अर्थ है, और सभी विचार, योजनाएँ, आदर्श, अवधारणाएँ, सिद्धांत, अटकलें और उनका अनुसरण मौखिक स्तर पर हैं। यदि आप केवल मौखिक स्तर पर रहते हैं, तो यह मौलिक रूप से सोचने का नया तरीका नहीं लाता है। जो चीज़ इसे लाती है वह क्रिया है, किसी विचार के संबंध में नहीं, बल्कि क्रिया ही।

शायद यह थोड़ा कठिन है, लेकिन कृपया इसे सुनें, भले ही बौद्धिक मनोरंजन के लिए ही क्यों न हो। आप देखिए, हममें से अधिकांश लोग शब्दों, नारों, विचारों, वाक्यांशों, अवधारणाओं में फंसे हुए हैं। ये "क्रिया" से पूरी तरह से अलग हैं - जो किसी विचार से संबंधित क्रिया नहीं है बल्कि अभिनय की एक अवस्था है।

क्योंकि जिस क्षण आप वास्तव में कुछ समझते हैं - जो केवल सहमत होना या आश्वस्त होना या दबाव के आगे झुकना नहीं है, क्योंकि ये सब "शब्द" से संबंधित हैं और समझ नहीं लाते हैं - तो आप कार्य करते हैं। जब एक समझ होती है जो "क्रिया" है, तब एक "अभिनय" होता है जो अस्तित्व की एक अवस्था है। यदि आप इसके बारे में थोड़ा सोचें, तो आपको क्रिया और शब्द, करना और करने का विचार, प्यार और प्यार शब्द, दोनों के बीच अंतर दिखाई देगा। अब हममें से अधिकांश लोग इस विचार में फंस गए हैं कि हमें प्रेम करना चाहिए, एक महान, वैचारिक, उत्तम चीज़ के रूप में; वह केवल शब्द है.

क्रिया प्रिय है, किसी भी क्रिया से असंबंधित है; यह होने की, प्रेम करने की अवस्था है।
वैसे, यह केवल यह प्रदर्शित करने के लिए है कि हमारा दिमाग कैसे काम करता है।

हमारा दिमाग शब्दों में, अवधारणाओं में, आदर्शों में, 'क्या होना चाहिए' में काम करता है और यहीं क्रांति होनी चाहिए। मन को क्रिया की स्थिति में होना चाहिए, यदि कोई ऐसा कह सकता है - शब्द की स्थिति में नहीं बल्कि क्रिया की स्थिति में। फ़र्क तो दिख रहा है ना? क्रिया की उस स्थिति को अस्तित्व में लाना ही क्रांति है। यदि आप इसके बारे में सोचते हैं तो आप इसका असाधारण अर्थ देखेंगे, इसका कितना महत्व है - अस्तित्व और होने का विचार।

तो हमारी चिंता, अगर हम जरा भी गंभीर हैं, मन में एक क्रांति लाने की है। मैंने पहले भी कमोबेश क्रांति शब्द का वर्णन किया है, उसका महत्व बताया है , और यह भी बताया है कि एक गंभीर व्यक्ति से हमारा क्या मतलब है। आइए एक या दो मिनट के लिए उस गंभीर शब्द की जाँच करें। कौन गंभीर है? और उस शब्द का क्या मतलब है? कौन गंभीर है? क्या आप गंभीर हैं? क्या वह व्यक्ति जो संसार को त्याग कर पीला वस्त्र धारण करता है, गंभीर है? क्या समाज सुधारक बनने वाला व्यक्ति गंभीर होता है? वह व्यक्ति जो परमेश्वर का अनुसरण करता है —क्या वह गंभीर है? वह आदमी जो गाने और बाकी सब बातें सुनकर खुद को मंत्रमुग्ध कर लेता है - क्या वह गंभीर है? और वह आदमी जो पूरी तरह से खुद को एक विचार के साथ पहचानता है या जो कहता है, "मैंने एक प्रतिज्ञा ली है और मैं जीवन भर उस पर कायम रहूंगा" - क्या वह गंभीर है? या वह व्यक्ति जो आत्मदाह करता है, जो अपनी पहचान किसी देश से बताता है-क्या वह गंभीर है?

तो तथाकथित गंभीरता के सभी विभिन्न रूपों को देखते हुए, जिसमें वह पागल आदमी भी शामिल है जो सोचता है कि वह स्वस्थ है, क्या ये सभी लोग गंभीर हैं? क्या ये सभी लोग वास्तव में जो कर रहे हैं उसके प्रति समर्पित हैं? निश्चय ही, यही तो परीक्षा है, है न? भक्ति ईमानदारी है, और ईमानदारी उत्साह से रहित है। जो व्यक्ति उत्साही है वह ईमानदार नहीं है; वह बस कुछ समय के लिए उत्साहित है - एक गुब्बारे की तरह जो फुलाया जाता है और बहुत शोर करता है। तो इनमें से कोई भी जो अपने अस्तित्व में सत्य की खोज से चिंतित नहीं है

पीछा करना—ऐसा व्यक्ति गंभीर नहीं है। यह महज एक परिभाषा नहीं है, बल्कि अगर आप इसकी जांच करेंगे तो आपको जो कहा जा रहा है उसका मतलब समझ आएगा।

निश्चित रूप से भक्ति किसी चीज़ के प्रति, किसी भगवान के प्रति, किसी गुरु के प्रति, किसी चित्र या किसी आकृति के प्रति नहीं है। ऐसी भक्ति स्पष्टतः एक पलायन है, भागना है, किसी चीज़ में स्वयं को भूलने की कोशिश करना है। चाहे वह देश के प्रति हो, राज्य के प्रति हो, किसी चित्र के प्रति हो, या किसी विचार के प्रति हो, ऐसी भक्ति महज़ एक उड़ान है, अस्तित्व के तथ्यों से पलायन है। भक्ति बिल्कुल अलग चीज़ है. भक्ति मन के तरीकों की लगातार जांच करने की क्षमता है क्योंकि मन को समझे बिना, आप जो भी करते हैं - आप जो भी सोचते हैं, या अनुसरण करते हैं, जो भी आपके आदर्श, आपके अधिकारी हैं - का कोई मतलब नहीं है। अर्थात्, स्वयं को समझे बिना, आप क्या करते हैं और क्या सोचते हैं, या आप जो करते हैं और जो सोचते हैं उसे बदलने का प्रयास करने का कोई अर्थ नहीं है। यह तो समझते हो ना? स्वयं को जाने बिना, मैं कैसे जान सकता हूँ कि जो मैं सोचता हूँ वह सत्य है, मैं सत्य के बारे में कैसे जान सकता हूँ, मैं ईश्वर के बारे में कैसे जान सकता हूँ, कि ईश्वर है या नहीं? स्वयं को जाने बिना, मुझे दूसरे को सुधारने का प्रयास करने, या दूसरे को यह बताने का क्या अधिकार है कि मुझे क्या करना चाहिए? और क्या मैं, भले ही मैं स्वयं जानता हूँ, दूसरे को बताऊँगा कि क्या करना है?

तो, स्वयं को जाने बिना कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हो सकता, इसलिए कोई आमूल-चूल कार्रवाई नहीं हो सकती, और इसलिए मन में कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हो सकता। स्वयं को जानने से मेरा तात्पर्य किसी परात्मा, परमात्मा, आत्मा से नहीं है - जो कि केवल वे चीजें हैं जिनके बारे में आपको बताया गया है। मेरे लिए, स्वयं को पूरी तरह से जाने बिना, ये सब मिथ्या हैं, इनमें कोई वास्तविकता नहीं है। आख़िरकार, यदि आप नहीं जानते कि आप क्या सोचते हैं और क्यों सोचते हैं, आपके विचार किस स्रोत से आते हैं और आपके कार्य किस पृष्ठभूमि से आते हैं, तो आप ईश्वर में विश्वास करते हैं या नहीं, इसका कोई मतलब नहीं है। क्योंकि आपका पालन-पोषण हिंदू के रूप में हुआ है, आप ईश्वर में विश्वास करते हैं; क्योंकि आपका समाज, आपका पड़ोसी, आपकी परंपरा कहती है, "विश्वास करो" - आप विश्वास करते हैं। लेकिन रूस जाओ और वे कहेंगे कि यह सब क्या बकवास है; वे तुम्हें मूर्ख समझकर टाल देंगे और तुम्हारे कृत्य को पागलपन समझेंगे।

जबकि वह, रूसी, यह मानने के लिए भी बाध्य है कि कोई ईश्वर नहीं है, यह विश्वास करने के लिए कि राज्य ही पालन करने के लिए एकमात्र सही चीज़ है। वह संस्कारित है, जैसे आप संस्कारित हैं। इसलिए जब आप कहते हैं कि आप ईश्वर में विश्वास करते हैं, तो इसका कोई मतलब नहीं है। कृपया देखें कि इसे समझना कितना महत्वपूर्ण है। क्योंकि यदि आप वास्तव में ईश्वर को खोज रहे हैं, तो आपको इन सभी चीजों को दूर रखना होगा, आपको अपने सभी गुरुओं, अपने ज्ञान, अपनी परंपरा को दूर करना होगा, और किसी भी अधिकार का पालन या स्वीकार नहीं करना होगा। इसका मतलब है आंतरिक क्रांति। और यह केवल ऐसा व्यक्ति है जो स्पष्ट रूप से सोचता है, जो अपनी स्वयं की कंडीशनिंग, अपने संपूर्ण अस्तित्व को जानता है - न केवल चेतन, बल्कि अचेतन, अपने विचार की समग्रता - यह है

केवल ऐसा व्यक्ति जो यह जांच कर सके कि सत्य है या नहीं, ईश्वर है या आप उसे जो भी नाम देना चाहें। लेकिन इसका मतलब है कड़ी मेहनत, और कोई भी कड़ी मेहनत नहीं करना चाहता, चाहे वह घर पर हो या कार्यालय में या सत्य की खोज में; और इसलिए हम अक्षम हैं, भ्रष्ट हैं, और हम बिना काम के सत्य को समझना चाहते हैं।

स्वयं को समझने का अर्थ सुपरसेल्फ, आत्मा, अतिचेतनता और वह सब कुछ नहीं है, बल्कि अपनी प्रतिक्रियाओं के तरीकों को समझना, अपने आप को वैसे ही समझना जैसे आप हैं, आप क्या सोचते हैं, क्यों सोचते हैं, आप कुछ चीजें क्यों करते हैं और कुछ शब्द क्यों कहते हैं। समझने का अर्थ है सचेत होना, इस बात से अवगत होना कि आप क्या हैं। आप पाएंगे कि यह असाधारण रूप से कठिन है क्योंकि हममें से अधिकांश लोग स्वयं को समझने को तैयार नहीं हैं। हम विश्वास करना पसंद करेंगे, कहा जाएगा, प्रेरित किया जाएगा, राजी किया जाएगा, राजनीतिक, आर्थिक या पर्यावरणीय रूप से संचालित किया जाएगा। लेकिन अपने सभी रिश्तों में खुद का ध्यान रखें, चाहे अपने नौकर के साथ, अपनी पत्नी के साथ, अपने पति के साथ, या दूसरों के साथ, जब आप बस में चढ़ें तो खुद पर नजर रखें, जब आप प्रकृति, पेड़ों, बादलों को देखें तो सचेत रहें। अपनी सभी प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दें और जागरूक रहें - कि पाप ही वास्तविक ध्यान है। तब आप बहुत दूर तक जा सकते हैं. तब आप अपने लिए कोई भ्रम नहीं पैदा करेंगे।

तो स्वयं की समझ होनी चाहिए, और उसी में क्रांति है। यदि मैं स्वयं का निरीक्षण नहीं करता तो मैं स्वयं को नहीं समझ सकता। जब आप क्रोधित होते हैं - क्रोध के क्षण में आप अपने बारे में जागरूक नहीं होते हैं - अपने आप को देखें, इसे देखें, और पता लगाएं कि आप क्रोधित क्यों हैं। इसमें जाओ, क्रोध की पूरी प्रक्रिया में जाओ। मैं इसे केवल एक उदाहरण के तौर पर ले रहा हूं. इसके लिए बहुत अधिक विचार, गहनता की आवश्यकता होती है, लेकिन वह वास्तविक भक्ति है - किसी गुरु के प्रति नकली भक्ति नहीं, जिससे आपको कुछ प्रतिफल मिलने वाला है; वह महज़ एक सौदा है। सच्ची भक्ति यह जानना है कि आप क्रोधित क्यों हैं, अपने क्रोध के स्रोत को जानना और समझना।

किसी चीज़ को समझने के लिए, निश्चित रूप से, न तो स्वीकृति होनी चाहिए और न ही निंदा। आप में से कई लोग यहां हैं जिन्होंने कई वर्षों से मुझे सुना है, दुर्भाग्य से, क्योंकि इसलिए आप कहते हैं, "मुझे पता है कि वह इस बारे में क्या कहने जा रहा है," और इसलिए आप अपने कान बंद कर लेते हैं। लेकिन कोई क्यों स्वीकार करता है या निंदा करता है, इसका पूरा महत्व जानने के लिए सुनने, समझने के निरंतर नवीनीकरण की आवश्यकता होती है। यह केवल मेरी बात सुनने का मामला नहीं है, बल्कि यह जानने के लिए कि आप निंदा क्यों करते हैं, आपने खुद को बंद क्यों कर लिया है, या आपने स्वीकार क्यों कर लिया है, खुद को सुनने का मामला है। मैं कई वर्षों से यह कहता आ रहा हूं कि यदि आप कुछ समझना चाहते हैं, तो न तो निंदा होनी चाहिए और न ही स्वीकृति, बल्कि आपको उस पर गौर करना चाहिए। ऐसे कई लोग हैं जिन्होंने मुझे दस या बीस वर्षों से सुना है और जो कहते हैं, "मैं आपसे सहमत हूं,"

लेकिन उन्होंने इसके बारे में कुछ नहीं किया है. वे "शब्द" की स्थिति में हैं, न कि "क्रिया" की स्थिति में। क्रिया करना है, करने का विचार नहीं।

इसलिए यह समझने के लिए कि मैं क्यों स्वीकार करता हूं या अस्वीकार करता हूं, मैं क्यों निंदा करता हूं या तुलना करता हूं, इसके लिए स्वयं में बहुत अधिक प्रवेश की आवश्यकता होती है। आख़िर आप अधिकार क्यों स्वीकार करते हैं? आप किसी भी स्तर पर - राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक - किताब के अधिकार या अपने स्वयं के अनुभव के अधिकार को क्यों स्वीकार करते हैं? तुम क्यों स्वीकार करते हो, और क्यों अस्वीकार करते हो? आप साम्यवाद, समाजवाद, पूंजीवाद, या जो कुछ भी हो, को अस्वीकार क्यों करते हैं? क्या आप यह नहीं देखते हैं कि जब तक आप वास्तव में नहीं जानते कि यह क्या है - वह प्रेरणा, वह धक्का, वह प्रभाव जो आपको स्वीकार या अस्वीकार कर रहा है, आपको तुलना करने, औचित्य देने, पहचानने या इनकार करने के लिए मजबूर कर रहा है - तो आप केवल अधिकार के उपकरण हैं। वह व्यक्ति जो अनुसरण करता है, वह व्यक्ति जो नेतृत्व करता है, वह व्यक्ति जिसके पास आदर्श हैं, वह प्रेम को नहीं जानता।

जो आदमी अनुसरण करता है, वह प्रेम को कैसे जान सकता है? वह बस अनुसरण कर रहा है, और अनुसरण "शब्द" की दासता है। और वह आदमी जो नेता है, जो कहता है, ''मैं जानता हूं और तुम नहीं जानते। मैं सही हूं और तुम गलत हो''—वह प्रेम कैसे कर सकता है? वह खुद को अपने देश के साथ, एक विचार के साथ, एक सुधार के साथ पहचान सकता है, और वह इनकार और सादगी का सबसे अनुकरणीय जीवन जी सकता है, लेकिन वह अधिकार से भरा हुआ है, अपने ज्ञान, अनुभव, विचारों से भरा हुआ है, और ऐसा कैसे हो सकता है एक आदमी प्यार जानता है? न ही आदर्शवादी ऐसा कर सकता है क्योंकि वह हमेशा 'क्या होना चाहिए' के बारे में सोचता रहता है। तो, स्वयं को जाने बिना, आप जो करते हैं और जो सोचते हैं, उसमें कोई वास्तविकता नहीं है; आपके देवताओं में कोई वास्तविकता नहीं है, न ही आपके ग्राम सुधारों में कोई वास्तविकता है जो आप विभिन्न कारणों से कर रहे हैं, जिनमें से कई बचकाने, अपरिपक्व, केवल सम्मानजनक हो सकते हैं।

इसलिए किसी के सोचने के तरीकों में बुनियादी बदलाव लाने के लिए, व्यक्ति को आत्म-ज्ञान, स्वयं के बारे में ज्ञान, स्वयं के सोचने के तरीकों से शुरुआत करनी चाहिए, न कि ईश्वर के बारे में तथाकथित ज्ञान से।

ईश्वर के बारे में सभी ज्ञान अवास्तविक, मिथ्या है, जब तक कि आप स्वयं को नहीं जानते। इसलिए धार्मिक व्यक्ति वह व्यक्ति है जो स्वयं को समझने से शुरुआत करता है, न कि किसी परंपरा या किसी किताब के अनुसार कोई विशेष जीवन जीने से। निश्चित रूप से स्वयं को जानना आवश्यक है, यह जानना कि स्पष्ट रूप से कैसे सोचा जाए, बिना पूर्वाग्रह के, बिना पूर्वाग्रह के, बिना किसी डर के, और इसलिए बिना किसी डर के कार्य करें - जिसका अर्थ है चरित्र। चरित्र उस व्यक्ति के लिए नहीं है जो केवल कानून का पालन करता है - या तो समाज के कानून का या अपने स्वयं के कानून का - बल्कि उस व्यक्ति के लिए है जो स्पष्ट रूप से सोचता है और जिसके विचार आत्म-ज्ञान के माध्यम से उत्पन्न होते हैं। आत्म-ज्ञान इस बात का ज्ञान है कि आप क्रोधित क्यों हैं, आप महत्वाकांक्षी, निर्दयी, कामुक और अन्य सभी चीजें क्यों हैं जो होनी चाहिए

खोजा गया। आपको अपने बारे में जानना होगा, और जानना केवल ज्ञात में परिवर्तन लाने से काफी अलग है। मैं जान सकता हूं कि मैं क्रोधित क्यों हूं; हम सब जान सकते हैं. यदि आप मनोविज्ञान की एबीसी जानते हैं, तो यह जानना काफी आसान है कि आप लालची, महत्वाकांक्षी, असभ्य, क्रूर, क्रूर क्यों हैं। लेकिन इसके बारे में जानना और वास्तव में इसे समझना पूरी तरह से अलग है। समझने की प्रक्रिया ही परिवर्तन लाती है। क्योंकि जब आप स्वयं को समझते हैं, तो सोच में स्पष्टता आती है और उस स्पष्टता में चरित्र होता है। किसी आदर्श का अनुसरण करने और उस आदर्श पर टिके रहने से चरित्र का निर्माण नहीं होता; वह केवल हठ है. चरित्र का तात्पर्य स्पष्टता से है, और जब तक आप स्वयं को नहीं जानते तब तक कोई स्पष्टता नहीं है, और यदि आप स्वयं के बारे में पूरी तरह से जागरूक नहीं हैं तो आप स्वयं को नहीं जान सकते। और स्वयं को समझने में, जैसा कि हमने कहा है, आप जो हैं उसके लिए कोई स्वीकृति या औचित्य नहीं होना चाहिए, कोई बहाना नहीं होना चाहिए, कोई यह कहना नहीं चाहिए, "मैं अपने वातावरण के कारण ऐसा हूं," या "मुझे पता है कि मैं संस्कारित हूं क्योंकि मैं वहां रहता हूं।" एक छोटा सा प्रांत और इसलिए मेरा मन प्रांतीय है," इत्यादि।

यह सब देखने के लिए, इसके प्रति जागरूक होने के लिए, इसे जानने के लिए, इसमें जाने के लिए और इसके महत्व को देखने के लिए समर्पण, प्रयास, कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। तभी मन अपने भीतर एक क्रांति ला सकता है जो हमारे जीवन की सभी समस्याओं का समाधान कर देगी। जब आप अपनी समस्याओं के स्रोत और कारणों को जानते हैं, और जब आप जानते हैं कि उनका समाधान आपकी अपनी समझ में है, तो आप देखते हैं कि आपको किसी का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है; तब आपके पास कोई गुरु नहीं, कोई अधिकार नहीं, कोई किताब नहीं, कोई परंपरा नहीं, क्योंकि आप स्वयं एक प्रकाश हैं। ये शब्द नहीं हैं. मैं ये सब इसलिए कह रहा हूं क्योंकि ऐसा ही है.

लेकिन आप इसे स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि मैं ऐसा कहता हूं, क्योंकि तब आप केवल एक अनुयायी बन जाते हैं, जो कि एक बुरी बात है, चाहे राजनीतिक या धार्मिक रूप से।
जबकि, यदि आप खुद को समझना शुरू करते हैं, अपने आप में गहराई से जाना शुरू करते हैं - जिसके लिए बहुत अधिक ध्यान देने, बहुत अधिक समर्पण की आवश्यकता होती है - तभी आप उन कई समस्याओं को हल करने में सक्षम होंगे जो हम में से प्रत्येक के सामने आती हैं।

7 सितंबर, 1958

पूना में दूसरी वार्ता

पिछले रविवार को हमने एक सामान्य रूपरेखा दी थी कि हम इन विभिन्न सभाओं के दौरान क्या विचार करने जा रहे हैं, और मेरा प्रस्ताव है कि मैं एक निश्चित बिंदु, एक निश्चित विचार उठाऊं, और उस पर पूरी तरह से काम करूं, उस पर विस्तार से जाऊं। लेकिन एक बार फिर मैं

मैं यह बताना चाहूंगा कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि हम अपने बीच संवाद स्थापित करें। यह वास्तव में सत्य है कि मैं किसी बड़े समूह के बारे में नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के बारे में बात कर रहा हूँ, क्योंकि मेरे लिए कोई जनसमूह, समूह, वर्ग, नस्ल नहीं है, बल्कि केवल व्यक्ति है - वह व्यक्ति जो स्वतंत्र रूप से सोचने में सक्षम है और इसलिए उसकी कंडीशनिंग को तोड़ना, इस प्रकार मन की एक रचनात्मक स्थिति लाना। तो मैं आपसे ऐसे बात कर रहा हूं जैसे व्यक्तिगत और निजी तौर पर। और चूँकि आपने मुझे जो कहना है उसे सुनने का कष्ट उठाया है, कृपया ध्यान से सुनें। इसे अपनी विशेष स्थानीय भाषा, स्थानीय या पारंपरिक, के संदर्भ में अनुवाद न करें। जब मैं स्वयं की समझ के बारे में बात करता हूं, तो इसे किसी संस्कृत शब्द में अनुवाद न करें, इसे कुछ शानदार न बनाएं और कहें कि यह आत्म-साक्षात्कार है। मेरा अभिप्राय बस इतना है कि "अपने आप को समझें", जो कि आपके पास मौजूद विभिन्न सिद्धांतों को समझने से कहीं अधिक कठिन है। यदि आप सुनना नहीं चाहते, तो ठीक है, लेकिन यदि आप सुनना चाहते हैं, तो कृपया ठीक से सुनें, और यदि आप जो कहा जा रहा है उसे अपनी शब्दावली में, अपने सोचने के तरीके में अनुवाद करना शुरू कर दें तो आप ठीक से नहीं सुन पाएंगे। तब आप वास्तव में यह नहीं समझ पा रहे होंगे कि वक्ता क्या कहना चाहता है।

स्वीकार करने, अस्वीकार करने या आलोचना करने से पहले आपको यह पता लगाना होगा कि वक्ता क्या कहना चाहता है। सबसे पहले आपको यह पता लगाना होगा कि उसका क्या मतलब है, उसका इरादा क्या है। वह अतिशयोक्ति कर सकता है, वह सही जोर नहीं दे सकता है, लेकिन आपको सुनकर वह सब ग्रहण करना होगा। तभी आप और मैं एक सही रिश्ता स्थापित कर सकेंगे। मुझे कुछ कहना है जो मुझे लगता है कि सेब की गाड़ी, परंपरा, उन सभी चीजों को परेशान करेगा जो आप जानते हैं। लेकिन कृपया, इससे पहले कि आपको पता चले कि वास्तव में क्या कहा जा रहा है, रक्षात्मक बाधा खड़ी करना शुरू न करें। मैं जो कहना चाहता हूं उस पर अपनी प्रतिक्रिया तब तक रखें जब तक आपको आलोचना करने, त्यागने, स्वीकार करने या अपनी इच्छानुसार उसमें शामिल होने का अधिकार मिल जाए। लेकिन तब तक मैं तुम्हें—वह व्यक्ति जो इस कमरे में मेरे साथ बैठा है—को सुझाव देता हूं कि तुम तुरंत प्रतिक्रिया मत करो। मैत्रीपूर्ण तरीके से सुनें, लेकिन स्पष्ट मन से, मैं जो कहता हूं उसे स्वीकार या अस्वीकार या स्वीकार नहीं कर रहा हूं और किसी प्राधिकारी का हवाला देकर उसका विरोध नहीं कर रहा हूं- क्योंकि मैं प्राधिकारियों में विश्वास नहीं करता हूं। सत्य सत्ता की प्रक्रिया से नहीं आता। इसे पल-पल खोजा जाना चाहिए। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो स्थायी हो, टिकाऊ हो, सतत हो। इसे हर मिनट, हर सेकेंड में पाया जाना चाहिए। इसके लिए बहुत अधिक ध्यान देने, मन की बहुत अधिक सतर्कता की आवश्यकता होती है, और यदि आप केवल अधिकारियों का हवाला देते हैं, केवल अनुमान लगाते हैं कि ईश्वर है या नहीं, तो आप इसे समझ नहीं सकते हैं या इसे अपने पास आने की अनुमति नहीं दे सकते हैं। आपको एक व्यक्ति के रूप में इसका अनुभव करना चाहिए, या यूँ कहें कि उस चीज़ को अपने पास आने देना चाहिए। आप संभवतः उस तक नहीं जा सकते. कृपया हमें इस बिंदु पर स्पष्ट होने दें

-कि आप किसी भी प्रक्रिया से, किसी भी अनुशासन के माध्यम से, किसी भी प्रकार के ध्यान के माध्यम से, सत्य, ईश्वर, या जो भी नाम आप देना चाहें, उसके पास नहीं जा सकते। यह बहुत अधिक विशाल है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती; कोई वर्णन इसे कवर नहीं करेगा, कोई किताब इसे धारण नहीं कर सकती और न ही कोई शब्द इसे समाहित कर सकता है। इसलिए आप किसी कुटिल विधि से, किसी बलिदान से, किसी अनुशासन से, या किसी गुरु के माध्यम से इसके पास नहीं जा सकते। तुम्हें प्रतीक्षा करनी होगी, वह तुम्हारे पास आयेगा, तुम उसके पास नहीं जा सकते। यह पहली बुनियादी बात है जिसे किसी को समझना होगा, कि मन की किसी चाल से, किसी नियंत्रण से नहीं, किसी गुण से, किसी मजबूरी से, किसी प्रकार के दमन से, मन संभवतः सत्य तक नहीं जा सकता है। मन जो कुछ भी कर सकता है वह शांत रहना है - लेकिन इसे प्राप्त करने के इरादे से नहीं। और यह सबसे कठिन चीजों में से एक है क्योंकि हम सोचते हैं कि कुछ चीजें करने के माध्यम से सत्य को तुरंत अनुभव किया जा सकता है। सत्य को प्रेम से अधिक नहीं खरीदा जा सकता। और अगर आप और मैं इसे शुरू से ही बहुत स्पष्ट रूप से समझ लें, तो मुझे जो कहना है उसका एक बहुत अलग, एक बहुत ही निश्चित अर्थ होगा। अन्यथा आप आत्म-विरोधाभास की स्थिति में रहेंगे। आप सोचते हैं कि सत्य है, ईश्वर है, एक ऐसी स्थिति है जो स्थायी है, और आप इसे चाहते हैं, इसलिए आप अभ्यास करते हैं, अनुशासन करते हैं, विभिन्न प्रकार के व्यायाम करते हैं, लेकिन इसे खरीदा नहीं जा सकता है।

किसी भी मात्रा में भक्ति, त्याग, ज्ञान, सद्गुण इसे अस्तित्व में नहीं ला सकते। मन स्वतंत्र होना चाहिए - इसकी कोई सीमा, कोई सीमा, कोई सीमा, कोई कंडीशनिंग नहीं होनी चाहिए। अधिग्रहण की पूरी भावना समाप्त होनी चाहिए, लेकिन प्राप्त करने के लिए नहीं।

यदि कोई वास्तव में इसे समझ ले, तो वह देखेगा कि मन की यह रचनात्मकता कितनी असाधारण चीज़ है। तब आप वास्तव में समझ जाएंगे कि मन को कैसे मुक्त किया जाए ताकि वह सतर्क निगरानी की स्थिति में रहे, कभी मांग न करे, कभी खोज न करे, कभी मांग न करे।

जैसा कि मैंने कहा, मैं व्यक्ति से बात कर रहा हूं क्योंकि केवल व्यक्ति ही बदल सकता है, समूह नहीं; केवल आप ही स्वयं को बदल सकते हैं, और इसलिए व्यक्ति का महत्व असीमित है। मैं जानता हूं कि समूहों, जनसमूह, नस्ल के बारे में इस तरह बात करना फैशन है जैसे कि व्यक्ति का कोई महत्व ही नहीं है, लेकिन किसी भी रचनात्मक कार्य में व्यक्ति ही मायने रखता है। कोई भी सच्चा कार्य, कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय, स्वतंत्रता की खोज, सत्य की खोज, केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो समझता है। इसलिए मैं केवल व्यक्ति विशेष से बात कर रहा हूं।' आप संभवतः कहेंगे, "मैं, व्यक्ति, क्या कर सकता हूँ?"

इस विशाल जटिलता का सामना करते हुए - राष्ट्रीय और धार्मिक विभाजन, दुख, भुखमरी, युद्ध, बेरोजगारी, तेजी से गिरावट और विघटन की समस्याएं - एक व्यक्ति इस सब के बारे में क्या कर सकता है?

कुछ नहीं। व्यक्ति बाहर के पहाड़ से नहीं निपट सकता, लेकिन

व्यक्ति विचार की एक नई धारा स्थापित कर सकता है जो कार्यों की एक अलग श्रृंखला बनाएगी। वह विश्वव्यापी परिस्थितियों के बारे में कुछ नहीं कर सकता क्योंकि ऐतिहासिक रूप से घटनाओं को अपना क्रूर, क्रूर, उदासीन मार्ग अपनाना होगा। लेकिन अगर आधा दर्जन लोग हों जो पूरी समस्या के बारे में पूरी तरह से सोच सकें, तो वे पूरी तरह से एक अलग दृष्टिकोण और कार्रवाई शुरू कर देंगे, और यही कारण है कि व्यक्ति इतना महत्वपूर्ण है।

परन्तु यदि वह इस भारी उलझन को, इस विघटन के पहाड़ को सुधारना चाहे, तो बहुत कम कर सकता है; वास्तव में, जैसा कि दिखाया जा रहा है, उसका इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता है, लेकिन यदि हममें से कोई वास्तव में इस अर्थ में व्यक्तिगत है कि वह अपने दिमाग की पूरी प्रक्रिया को समझने की कोशिश कर रहा है, तो वह एक रचनात्मक इकाई होगी, एक स्वतंत्र व्यक्ति, बिना किसी शर्त के, अपने लिए सत्य का अनुसरण करने में सक्षम, परिणाम के लिए नहीं।

इसलिए, जैसा कि मैंने कहा है, वह वास्तविकता जिसकी कल्पना संभवतः मन नहीं कर सकता है, जिसके बारे में वह अनुमान नहीं लगा सकता है या उसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता है, वह सत्य आपके पास, व्यक्ति के पास आना ही चाहिए; आप उस पर नहीं जा सकते. आख़िरकार, यह बिल्कुल स्पष्ट है, है न कि व्यक्तिगत मन, जो कि सामूहिक मन भी है, संकीर्ण, क्षुद्र, क्रूर, कुरूप, स्वार्थी, अहंकारी है। ऐसा मन अज्ञात को कैसे आमंत्रित कर सकता है? क्योंकि जो कुछ भी वह सोचता है वह क्षुद्र, छोटा होना चाहिए—यहाँ तक कि उसके देवता भी। तुम्हारा ईश्वर मन का आविष्कार है। तू उसके चारों ओर एक कपड़ा बान्धना, परन्तु उसके वस्त्र तेरे ही ठहरेंगे; यह तुम्हारा ईश्वर है, लेकिन यह सत्य नहीं है, यह वास्तविकता नहीं है।

जो करना है करो, वास्तविकता को आमंत्रित नहीं किया जा सकता; यह आपके पास आना ही चाहिए. तो किसी को क्या करना है? कोई उस चीज़ का अनुभव कैसे कर सकता है जो केवल मन द्वारा निर्मित नहीं है? यह तभी संभव है जब मन अपनी प्रक्रिया, अपने तरीके को समझना शुरू कर दे। मैं प्रक्रिया शब्द का प्रयोग साध्य के साधन के अर्थ में नहीं कर रहा हूँ। आम तौर पर उस शब्द प्रक्रिया से हमारा तात्पर्य यह है कि यदि आप कुछ चीजें करते हैं तो एक परिणाम होगा - यदि आप मशीन में तेल डालते हैं, तो यह ठीक से चलेगी; यदि आप कुछ अनुशासनों का पालन करते हैं, बलिदान देते हैं, तो आपको बदले में कुछ मिलेगा। मैं इस शब्द का प्रयोग उस अर्थ में बिल्कुल नहीं कर रहा हूं। मैं प्रक्रिया शब्द का प्रयोग इस अर्थ में कर रहा हूँ कि मन किस प्रकार कार्य करता है, न कि वह परिणाम की खोज करता है।

इसलिए मन को उस स्थिति में आना चाहिए जब वह सभी प्रयासों से मुक्त हो, और मैं आज शाम प्रयास और संघर्ष की पूरी समस्या पर चर्चा करना चाहता हूं, और क्या कोई ऐसी स्थिति है जहां मन बिना किसी संघर्ष के पहुंच सकता है सच। क्योंकि केवल तभी जब मन आत्म-विरोधाभास में रहना बंद कर देता है, और इसलिए संघर्ष में रहना बंद कर देता है, तभी वह देखने और समझने में सक्षम होता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जो मन द्वंद्व में है वह कभी भी कुछ भी नहीं समझ सकता है, और इसलिए हम यह पता लगाना चाहते हैं कि ऐसा क्यों है

मन आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है। निश्चय ही, यदि हम मन के भीतर के द्वंद्व को समझ सकें, तो हम बहुत आगे बढ़ जायेंगे क्योंकि इससे पता चल जायेगा कि स्वयं के भीतर यह विरोधाभास क्यों है। यदि हम धीरे-धीरे, कदम दर कदम, उस प्रश्न की ओर बढ़ सकें और यदि आप वास्तव में इसका पालन करें, इसका विरोध न करें, तो शायद आप मन की उस स्थिति में आ जाएंगे जिसमें कोई संघर्ष नहीं है। लेकिन आप मेरे शब्दों को स्वीकार नहीं कर सकते, क्योंकि इसका मतलब है कि आपको काम भी करना है, न कि केवल सुनना है, कि आपको अपने मन के संचालन के बारे में जागरूक होना है। मैं केवल समझा रहा हूं, लेकिन यह आप पर निर्भर है कि आप अपने मन को कैसे क्रियान्वित करते हैं।

तो सबसे पहले, हमारे जीवन में संघर्ष क्यों है? हम आम तौर पर यह मान लेते हैं कि ऐसा ही होना चाहिए, कि यह अपरिहार्य है, कि मनुष्य संघर्ष में पैदा हुआ है, और हम उस संघर्ष पर काबू पाने के तरीके और साधन खोजने की कोशिश करते हैं। रिश्तों में, राजनीति में, या किसी अन्य क्षेत्र में, भीतर एक संघर्ष होता है, जो आत्म-विरोधाभास लाता है; बाह्य रूप से भी हम जो महसूस करते हैं कि हमें होना चाहिए और हम जो हैं, के बीच विरोधाभास है। मैं यह जानना चाहता हूं कि यह विरोधाभास क्यों मौजूद है। मैं यह नहीं मानता कि यह स्वाभाविक है, अपरिहार्य है, इसका कोई समाधान नहीं है और इसलिए हमें इससे बचना चाहिए।

वह अपरिपक्व सोच है. मैं इसे समझना चाहता हूं, और इसलिए मैं इससे बचूंगा नहीं, इससे बचूंगा नहीं, या किसी गुरु या सिनेमा के पास नहीं जाऊंगा। मेरे लिए, किसी पुस्तक की ओर मुड़ना, किसी गुरु के पास जाना, या जब आप संघर्ष में हों तो गहरे ध्यान में चले जाना, यह सब शराब पीने के समान है। लेकिन मैं यह समझना चाहता हूं कि क्या कोई इस आंतरिक विरोधाभास को दूर कर सकता है। यदि यह स्पष्ट है तो हम वहां से आगे बढ़ सकते हैं, और कृपया अंत में यह न कहें, "आपने जन्म नियंत्रण के बारे में बात क्यों नहीं की," या, "मैं यहां यह जानने के लिए आया हूं कि धर्म क्या है, यदि कोई ईश्वर है।" एक विरोधाभासी मन सत्य का कुछ भी पता नहीं लगा सकता। ज़रा सोचिए श्रीमानों, आप विरोधाभास में रहते हुए भी ऐसी कोई बात कैसे जान सकते हैं जो विरोधाभासी नहीं है?

आप उस अवस्था को कैसे जान सकते हैं जिसमें कोई विपरीतता नहीं है, कोई विभाजन नहीं है, जो अपरिमेय है? इस प्रश्न का उत्तर आप स्वयं ही देंगे, और इसकी सच्चाई का पता तभी लगाएंगे, जब आप यह पता लगाएंगे कि क्या आप अपने भीतर विरोधाभास को समाप्त कर सकते हैं, और यह आवश्यक है। वर्तमान में आप जो खोज रहे हैं वह विरोधाभास का उन्मूलन नहीं है, बल्कि आप अपने लिए शांति की तलाश कर रहे हैं, कुछ ऐसी स्थिति जिसमें मन बिल्कुल भी परेशान नहीं होगा। यह ज्वालामुखी पर बैठने और कहने जैसा है, "मुझे शांति पाने दो।" इसका कोई मतलब नहीं है. इसलिए मैं कहता हूं: आइए जांच करें कि ज्वालामुखी में क्या है, इसे बाहर आने दें, कुरूप, पाशविक, सुंदर, सब कुछ - इसे ऊपर आने दें और मुझे इसे देखने दें, जिसका अर्थ है कि मन को कोई डर नहीं होना चाहिए। तो चलिए इसमें चलते हैं.

अब हमारे अंदर यह विरोधाभास की स्थिति क्यों है? आइए सबसे निचले स्तर से शुरुआत करें। मुझे पैसा चाहिए, और मुझे पैसा इसलिए भी नहीं चाहिए क्योंकि मैं सोचता हूं

कि गरीब होना अच्छा है. मैं उस आदमी की बात नहीं कर रहा हूं जो पूरे दिल से कहता है, "मैं अमीर बनना चाहता हूं" - और इसके पीछे भागता है; उसके लिए कोई विरोधाभास नहीं है.
वह पूरी तरह ऊर्जा से भरा हुआ है क्योंकि वह आक्रामक है, क्रूर है, क्रूर है, भ्रष्ट है, हिंसक है, उसे पैसा चाहिए, उसे पद चाहिए; इसलिए भीतर कोई द्वंद्व नहीं है। हिटलर, क्रुश्चेव और दुनिया के सभी बड़े लोगों में विरोधाभास की कोई चेतना नहीं है क्योंकि वे इस चीज़ को चाहते हैं और इसके पीछे चलते हैं, सही तरीकों से या टेढ़े-मेढ़े तरीकों से। हम भी उस स्थिति में रहना चाहेंगे, लेकिन दुर्भाग्य से हम नहीं हैं। इसलिए हम विरोधाभास में हैं, और इसलिए हम मन की एक ऐसी स्थिति चाहते हैं जो स्थायी रूप से शांतिपूर्ण होगी, जिसमें कोई विरोधाभास नहीं होगा। या उस आदमी को ले लो जो कुछ हद तक पागल है। उसके लिए कोई विरोध नहीं है क्योंकि वह बस कहता है, "मैं भगवान हूं," या "मैं नेपोलियन हूं," या वह खुद को किसी अन्य विश्वास के साथ पहचानता है, और इसलिए विरोधाभास की कोई भावना नहीं है। वह वैसा ही है जैसी वह कल्पना करता है और वैसा ही होने के कारण वह ऊर्जा से भरपूर है।

क्या आपने ऐसे लोगों पर ध्यान नहीं दिया? वे जमीन पर ऊपर-नीचे यात्रा करेंगे, यह करेंगे और वह करेंगे, क्योंकि वे पूरी तरह से एक विचार में डूबे हुए हैं, वे पूरी तरह से लीन हैं। और हम भी उस स्थिति में रहना चाहेंगे. इसलिए, हम विभिन्न विचारों का अनुसरण करते हैं जब तक कि हमें कुछ ऐसा नहीं मिल जाता जो हमारे लिए उपयुक्त हो, और हम वहीं रुक जाते हैं। तो हमें फिर से पूछना चाहिए: हमारे अंदर यह विरोधाभास क्यों है?

विरोधाभास तो संघर्ष है ना? यदि मैं लालची हूं और मैं लालची नहीं होना चाहता, तो तुरंत मेरे अंदर विरोधाभास की स्थिति पैदा हो जाती है जो संघर्ष लाती है; लेकिन अगर मैं पूरी तरह से लालची हूं, तो कोई संघर्ष नहीं है। या अगर मैं पूरी तरह से लालची नहीं हूं, तो कोई संघर्ष नहीं है। लेकिन यह विरोधाभास क्यों है, जो, यदि हम बुद्धिमान हैं, यदि हमारा मन सतर्क है, तो और अधिक मजबूत होता जाता है और आसानी से छुटकारा नहीं पाता है? जो जितना अधिक मजबूत, अधिक सक्रिय, जितना अधिक भावुक होता है, वह उतना ही अधिक ऊर्जावान हो जाता है, और विरोधाभास तब तक अधिक बड़ा होता जाता है जब तक कि एक गहरा, स्थायी विरोधाभास स्थापित न हो जाए, हम यह कहकर उससे बचने की कोशिश करते हैं कि जीवन विघटन की एक प्रक्रिया है, मोहभंग, और हम अनिश्चित काल तक दार्शनिक विचार करते रहते हैं। जबकि मेरा मानना है कि इस विरोधाभास को आंशिक रूप से नहीं बल्कि पूरी तरह से दूर किया जा सकता है। जब आप किसी चीज़ से प्यार करते हैं, जब आप किसी चीज़ में रुचि रखते हैं, तो उस पर काम करने के अर्थ में कोई प्रयास नहीं होता है। हममें से अधिकांश के लिए काम ही प्रयास है; ऑफिस जाना, कई तरह के काम करना जो आप नहीं करना चाहते, खुद को अनुशासित करना यानी काम करना यानी प्रयास करना। लेकिन अगर आप इस विरोधाभास को समझने के लिए उन शब्दों से आगे बढ़ सकें जिनका उपयोग हम कर रहे हैं, तो आप बिना प्रयास के एक स्थिति पाएंगे।

आइए हिंसा और अहिंसा पर नजर डालें। हम हिंसक हैं, और हम कहते हैं कि हमें हिंसक नहीं होना चाहिए। अहिंसा आदर्श है; यह का प्रक्षेपण है

मन जो स्वयं को हिंसक महसूस करता है। तो आप अहिंसा को एक आदर्श बनाएं और फिर हिंसा को उस आदर्श में बदलने का प्रयास करें। लेकिन अहिंसा की कोई वास्तविकता नहीं है! जाहिर है, किसी भी आदर्श की कोई वास्तविकता नहीं होती। आप पहले तो आसानी से मुझसे सहमत नहीं होते क्योंकि विचारों, आदर्शों को दिमाग से बाहर निकालना बहुत कठिन होता है, जिसका मतलब है कि आपका दिमाग आदर्शों से इतना बंधा हुआ है कि कोई नया विचार उसे प्राप्त नहीं हो सकता है। आप आदर्श से उतने ही मंत्रमुग्ध हैं जितना कि एक पागल उसके विचार से। मैं आपका अपमान नहीं कर रहा हूं, लेकिन मैं सिर्फ यह कह रहा हूं कि जो दिमाग आदत के मुताबिक सोचता है, उसके लिए किसी नए विचार पर विचार करना कितना मुश्किल है। आदर्श कैसे बनते हैं, यह हम भली-भांति देख सकते हैं। मैं कुछ हूं-हिंसक, लालची, या आप जो चाहें-और मैं इसे तथाकथित आदर्श, विपरीत में बदलना चाहता हूं। इसलिए मैं वास्तव में जो हूं उससे विपरीत आदर्श बनाता हूं, और मेरे अंदर अनंत प्रकार के संघर्ष शुरू हो जाते हैं। मैं यह हूं, और मुझे वह होना चाहिए- यही संघर्ष का स्रोत है। जिस क्षण मन कहता है, "मैं नहीं हूं, लेकिन मुझे होना चाहिए," आपने संघर्ष की पूरी प्रक्रिया शुरू कर दी है।

आप में से अधिकांश लोग सोचेंगे कि यदि आप प्रयास नहीं करेंगे, तो आप बीज, वनस्पति की ओर चले जायेंगे, और यदि कोई दबाव, संघर्ष, मजबूरी न हो, तो आप गाय की तरह बन जायेंगे। इसलिए आप अपने बच्चों को - जैसा कि समाज, पूरी दुनिया - कुछ बनने के प्रयास के लिए तैयार करते हैं, जिसमें संघर्ष की यह सतत गति शामिल है। तो मैं देख सकता हूँ, क्या मैं नहीं देख सकता, कि जब तक कोई आदर्श है तब तक संघर्ष होना ही चाहिए, और जब तक मन भविष्य के बारे में, 'क्या होना चाहिए' के बारे में चिंतित है, उसे इस बात की चिंता नहीं है कि क्या है । यह बिल्कुल स्पष्ट है कि किसी का दिमाग विभाजित नहीं हो सकता - दिमाग का एक हिस्सा अहिंसा के बारे में सोचता है और दूसरा हिस्सा हिंसा में व्यस्त रहता है। अत: आप देखते हैं कि जब तक मन में किसी भी प्रकार का आदर्श है, तब तक विरोधाभास की स्थिति अवश्य रहेगी। इसका मतलब यह नहीं है कि आप जो है उसे स्वीकार कर लें और बस स्थिर हो जाएं। क्योंकि, यहीं से वास्तविक क्रांति शुरू होती है, यदि आप अपने सभी आदर्शों को दूर रख सकें, और यह कितना कठिन है! आपका पालन-पोषण आदर्शों के साथ हुआ है। सभी पुस्तकें, सभी संत, प्रोफेसर, विद्वान लोग, सभी ने कहा है कि आपके पास आदर्श होने चाहिए, और वह विचार एक आदत बन गया है। यह पूरी तरह से एक आदत है. आप इतने सारे प्यारे आदर्शों को पकड़े हुए हैं, और जब कोई आपके पास आता है और आपको बताता है कि ये आदर्श कितने बेतुके हैं, उनमें कोई वास्तविकता नहीं है, तो, मन के लिए वास्तव में यह देखना कि आदर्शों में कोई तथ्यात्मक वास्तविकता नहीं है, यही है सच जानो. सत्य पहाड़ों और पर्वतों से दूर कोई चीज़ नहीं है। यह साधारण चीज़ों में सत्य की अनुभूति है, और जो हम अभी कह रहे हैं यदि आप उसकी सच्चाई देख लेंगे, तो आप यह आदत तोड़ देंगे।

लेकिन सदियों से हम आदर्शों पर पले-बढ़े हैं, यह आदर्श कि आपको कुछ बनना चाहिए, या तो कार्यकारी, मुख्य व्यवसायी, या प्रधान मंत्री; और यदि आप इनमें से कुछ भी नहीं बन सकते, तो आप संत बनने की ओर रुख करें। आप हमेशा कुछ बनना चाहते हैं, या तो इस दुनिया में या तथाकथित आध्यात्मिक दुनिया में। तो आपके पास यहां के लिए आदर्श हैं और वहां के लिए आदर्श हैं। और इसलिए आपने संघर्ष का एक विशाल क्षेत्र खड़ा कर लिया है, जो कि आदत है। यह इतनी मजबूत, अभेद्य आदत बन गई है, और आपने इसके बारे में सोचा भी नहीं है। इसे छोड़ना बहुत कठिन आदत है क्योंकि आप डरते हैं कि क्या होने वाला है। लोगों के साथ आपके रिश्ते बदल जायेंगे; अब आप हर किसी की कही गई हर बात को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाएंगे। आप सवाल करना शुरू कर देंगे. आपकी नौकरी जा सकती है. इसलिए डर अंदर आता है और आदेश देता है। डर कहता है, "इन चीजों को मत छोड़ो क्योंकि फिर क्या होने वाला है?" आपकी पत्नी आदर्शों में विश्वास करती है, और यदि आप उन्हें त्याग देंगे तो घर में सदैव झगड़े होते रहेंगे। आप कौन होते हैं जो स्थापित की गई पूरी अथॉरिटी के खिलाफ जाएंगे? तुम्हें ऐसा करने का क्या अधिकार है? तो समाज तुम्हें दबा देता है। और अनजाने में आप भयभीत हो जाते हैं, और कहते हैं, "कृपया, मैं इन आदर्शों को केवल मौखिक रूप से स्वीकार करूंगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि उनका कोई अर्थ नहीं है।" लेकिन आपने संघर्ष की समस्या का समाधान नहीं किया है।

द्वंद्व उत्पन्न होता है न, क्योंकि मनुष्य ने 'क्या होना चाहिए' की परवाह किए बिना , क्या है की समस्या से कभी निपटा ही नहीं है। जो है उसे समझने के लिए बहुत अधिक ध्यान, गहन खोज, गहन पूछताछ की आवश्यकता होती है, लेकिन किसी आदर्श का अनुसरण करना बहुत आसान है - और इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन अगर आप कहते हैं, "मैं हिंसक हूं, और मैं अहिंसा के बारे में सभी आदर्शवादी बकवास को नजरअंदाज कर दूंगा और हिंसा को समझूंगा," आपकी स्थिति स्पष्ट है। फिर सवाल उठता है, चूँकि आप आदर्श से मुक्त हो चुके हैं: क्या अब आप जो है उसे बदलने की कोशिश नहीं करेंगे?

पहले आदर्श एक लीवर के रूप में कार्य करता था जिसके साथ आप जो है उसे बदलना चाहते थे। आपने सोचा कि अहिंसा का विचार एक ऐसे प्रभाव के रूप में काम करता है जिससे आप हिंसा से छुटकारा पा सकते हैं। अर्थात्, आदर्श के माध्यम से विरोधाभास पैदा करके हम संघर्ष के माध्यम से हिंसा से छुटकारा पाने की आशा करते हैं। लेकिन हम कभी भी हिंसा से छुटकारा पाने में सफल नहीं हो सके। यह बाह्य रूप से या दबा कर क्रूरता के साथ आगे बढ़ता है और अपने परिणाम स्वयं उत्पन्न करता है। तो क्या मुझे केवल हिंसा के साथ ही छोड़ा जा सकता है, इसके विपरीत को भी पकड़े नहीं रखा जा सकता? यदि ऐसा है, तो मैंने संघर्ष के कारणों में से एक, शायद प्रमुख कारण, को हटा दिया है।

लेकिन आदर्शों से मुक्त होना सबसे कठिन है, क्योंकि हो सकता है कि आप उन्हें बाहरी रूप से हटा दें, लेकिन फिर भी आंतरिक आदर्श बने रहेंगे - तथाकथित आंतरिक अनुभव जो आपको बताता है कि क्या करना है। आप बाहरी प्राधिकार को अस्वीकार कर सकते हैं, और काफी बुद्धिमान लोगों ने ऐसा किया है, लेकिन आंतरिक रूप से वे अभी भी वैसा ही होना चाहते हैं

कुछ, न केवल शहर के बॉस या स्कूल के बॉस, बल्कि वे भी आध्यात्मिक होना चाहते हैं, मन की ऐसी स्थिति प्राप्त करना चाहते हैं जो पूर्ण शांति पर हो।
लेकिन शांति की इच्छा यह दर्शाती है कि आप शांति में नहीं हैं, इसलिए आपको जो वास्तविक है उससे निपटना होगा। तो आप विरोधाभास की जटिल प्रकृति को देखते हैं!
यद्यपि आप सचेत रूप से कह सकते हैं कि ये आदर्श कितने बेतुके हैं, वे अचेतन में अंतर्निहित हैं। आपकी सारी जाति आदर्शों से ओत-प्रोत है; यह सिर्फ कुछ मूर्खतापूर्ण बातों को दूर करने की बात नहीं है, बल्कि आपको मन की पूरी प्रक्रिया को समझना होगा।

हममें से अधिकांश के लिए एक कठिनाई यह है कि हम समग्रता को देखने में सक्षम नहीं होते हैं। हम केवल भाग देखते हैं। एकदम से यह मत कहो, "मैं समग्रता को कैसे देख पाऊंगा?" यह कोई समस्या नहीं है। समस्या यह है कि हमारा दिमाग इतना छोटा है कि हम एक नज़र में सब कुछ ग्रहण करने में सक्षम नहीं लगते। हम पूरे पर्वत को, पूरी पहाड़ी को नहीं देख सकते, क्योंकि हमारा दिमाग छोटा होने के कारण, क्षुद्र होने के कारण, विवरणों में व्यस्त रहता है, और विवरणों का संग्रह संपूर्ण नहीं बनता है। कृपया अपने आप से पूछें कि आपका दिमाग आदर्शीकरण की पूरी प्रक्रिया के झूठ से पूरी तरह मुक्त होकर सत्य को ग्रहण क्यों नहीं कर पाता है। क्या हमें एक-एक करके प्रत्येक आदर्श को हटाना होगा? यह तो बहुत बड़ा काम होगा ना? दिन-ब-दिन संघर्ष करते हुए, उन्हें तोड़ते हुए; एक के बाद एक आदर्श अपनाने और उन्हें त्यागने में कदम दर कदम आगे बढ़ने में निश्चित रूप से वर्षों लग जाएंगे। तो क्या मैं यह संपूर्ण सत्य नहीं देख सकता कि आदर्श पूर्णतः अनावश्यक हैं? क्या मैं इसके अथाह महत्व को एक झटके में नहीं देख सकता और जो सत्य मैंने देखा है उसे क्रियाशील नहीं होने दे सकता?

यह सच्चाई तो आप सभी जानते हैं कि कोबरा काट ले तो आपकी मौत भी हो सकती है। यह एक सच्चाई है. आप तो क्या करते हो? जब आप जंगल में जाते हैं और रात में चलते हैं, तो आप स्वाभाविक रूप से हर समय बहुत सावधान रहते हैं। आपको यह कहने की ज़रूरत नहीं है, "मुझे कोबरा के बारे में अवश्य सोचना चाहिए।" काटे जाने का डर आपके अंदर काम कर रहा है। या फिर आपके बाथरूम में जहर की बोतल अंकित हो सकती है। यह तरल पदार्थ जहरीला है और यह सच्चाई है। और इसलिए, बिना सोचे-समझे, आपका दिमाग अंधेरे में भी हमेशा सतर्क रहता है, और आप बोतल उठाकर नहीं पीते। तो आप सच्चाई जानते हैं कि कोबरा में जहर और बोतल में जहर खतरनाक होता है, और आपका दिमाग इसके प्रति सतर्क रहता है, सिर्फ एक पल के लिए नहीं, बल्कि हर समय। इसी प्रकार यदि आप इस सत्य को देख सकें कि आदर्शों की कोई वास्तविकता नहीं है, इसे पूरी तरह से देख लें, तो संपूर्ण सत्य की यह धारणा कि आदर्शों का कोई मूल्य नहीं है, अपने आप काम करना शुरू कर देगी। आपको ऑपरेशन नहीं करना पड़ेगा. यह संचालित होगा.

यदि आप उसमें सच्चाई देख लें तो आपको एक-एक करके आदर्शों को तोड़ने का प्रयास नहीं करना पड़ेगा। सत्य यह करेगा. तो मैं जिस बिंदु पर जाना चाहता हूं

क्या आप किसी चीज़ की सच्चाई की संपूर्णता को तुरंत नहीं देख सकते, जैसे आप इस सच्चाई को देखते हैं कि कोबरा जहरीला होता है? यदि आप सत्य को देखते हैं कि संघर्ष समाप्त होना चाहिए, और संघर्ष इसी के माध्यम से लाया जाता है; मुझे क्या होना चाहिए और मैं क्या हूं इसका विभाजन, फिर आपको कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। आपका चेतन मन अभेद्य अचेतन से नहीं निपट सकता, लेकिन जो सत्य आपने देखा है वह ऐसा करेगा। अब क्या आपके साथ ऐसा हुआ है? अर्थात्, क्या आप इस सब में सच्चाई देखते हैं?—इसके सभी निहितार्थों को नहीं, क्योंकि यह केवल अन्वेषण और समय का विषय है। अगर आपको इसमें सच्चाई महसूस हो रही है तो आइए फिलहाल इसे छोड़ दें और जो है उसकी समस्या से निपटें, क्योंकि हमारा पूरा प्रयास आत्म-विरोधाभास को खत्म करना है।

अधिकांश लोगों के साथ विरोधाभास में जितना अधिक तनाव होता है, वे उतने ही अधिक सक्रिय होते हैं। विरोधाभास में तनाव तो है ना? मैं हिंसक हूं और मुझे हिंसक नहीं होना चाहिए; वह विरोध एक तनाव पैदा करता है, है न, और उस तनाव से आप कार्य करते हैं - एक किताब लिखें, या इसके बारे में कुछ करने का प्रयास करें।

वर्तमान समय में यही हमारी संपूर्ण गतिविधि है। आप भारत में कहते हैं कि आप एक अहिंसक जाति हैं। भगवान जाने इसका क्या मतलब है! मुझे बताया गया कि आप एक सेना तैयार कर रहे हैं और उस पर अपना 37% पैसा खर्च कर रहे हैं। और देखो यह तुम्हारे साथ क्या कर रहा है, न केवल गरीब लोगों के लिए, बल्कि पूरी दौड़ के दौरान। आप कहते कुछ हैं और करते बिल्कुल विपरीत, क्यों? क्योंकि, आप कहते हैं, अगर हमारे पास सेना नहीं होती तो पाकिस्तान हमला कर देता, और पाकिस्तान भी वही बकवास कहता है, और इसलिए आप यह खेल जारी रखें। न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में यह एक ही विरोधाभास है - कि हम सभी दयालु, प्यार करने वाले और युद्ध की तैयारी करने वाले लोग हैं! तो यह राष्ट्र, यह जाति, समूह, परिवार, व्यक्ति विरोधाभास की स्थिति में है, और विरोधाभास जितना तीव्र होगा, तनाव उतना ही अधिक होगा, और तनाव जितना अधिक होगा, गतिविधि उतनी ही अधिक होगी। किताब लिखने से लेकर सन्यासी बनने तक गतिविधि अलग-अलग रूप लेती है। तो हममें से हर कोई कुछ हद तक सिज़ोफ्रेनिक है, विरोधाभास की स्थिति में है। और यह नहीं जानते कि इससे कैसे दूर जाएं हम धर्म या नशीली दवाओं की ओर रुख करते हैं या महिलाओं का पीछा करते हैं या मंदिर जाते हैं - किसी भी प्रकार की गतिविधि जो हमें जो है उससे दूर ले जाती है ।

हम गांव में सुधार तो करते हैं, लेकिन इस बुनियादी चीज़ पर कभी ध्यान नहीं देते।

इसलिए मैं जो है उससे निपटना चाहता हूं क्योंकि अगर मैं ऐसा नहीं करता, तो मैं देखता हूं कि मैं हमेशा विरोधाभास में रहूंगा। अपने भीतर शांत व्यक्ति को किसी देवता की आवश्यकता नहीं है क्योंकि तब वह अपने आप में बहुत गहराई तक और बहुत दूर तक जा सकता है, जहां मान्यता की सीमाएं पूरी तरह से बंद हो जाती हैं, और मान्यता की सीमाएं समाप्त होनी चाहिए इससे पहले कि मन उसे प्राप्त कर सके जो शाश्वत है। सिर्फ इसलिए सहमत न हों क्योंकि सच्चाई यह है कि यह सबसे कठिन कामों में से एक है और इसके लिए जबरदस्त प्रयास की आवश्यकता होती है

अपने ऊपर काम करो. वह कार्य प्रयास नहीं है. यह एक प्रयास, एक द्वंद्व, एक विरोधाभास तभी बन जाता है जब आप अभी भी कुछ बनना चाहते हैं।

तो मैं जांचना चाहता हूं कि क्या है, यानी कि मैं लालची हूं, मैं हिंसक हूं। मैं इसकी जांच कर रहा हूं और मुझे लगता है कि इसमें कोई विरोधाभासी दृष्टिकोण नहीं होना चाहिए। मुझे यह देखना चाहिए कि मैं क्या हूं और इसे समझना चाहिए, लेकिन 'क्या होना चाहिए' के संबंध में नहीं। मैं ऐसा कर सकता हूँ? फिर से आप पाएंगे कि यह सबसे कठिन कामों में से एक है - बिना निर्णय के, बिना तुलना के, बिना स्वीकृति के, बिना निंदा के जो है उसकी जांच करना, क्योंकि जिस क्षण आप निंदा करते हैं आप विरोधाभास के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। तो क्या आप और मैं हिंसा को उस तत्व से परिचित कराए बिना देख सकते हैं जो विरोधाभास पैदा करता है, स्वीकृति या इनकार का तत्व। तो क्या मैं अपनी हिंसा को देख सकता हूँ? मन की वह कौन सी अवस्था है जो अंतर्विरोध को समाप्त करके उस हिंसा को देखता है? मेरे पास केवल वही बचा है जो वास्तविक है, क्या मैं नहीं हूं, इस साधारण तथ्य के साथ कि मैं हिंसक, लालची या कामुक हूं। क्या मैं इसे देख सकता हूँ?

मन की वह कौन सी अवस्था है जो किसी तथ्य को देखती है? क्या आपने कभी किसी तथ्य पर ध्यान दिया है - एक महिला, एक पुरुष, एक बच्चा, एक फूल, एक सूर्यास्त? जब आप देखते हैं तो आप क्या करते हैं? आप कुछ और ही सोच रहे हैं ना?

आप कहते हैं, वह एक सुंदर आदमी है और मुझे उसकी ओर नहीं देखना चाहिए, या वह एक सुंदर महिला है और मैं चाहता हूं कि वह मेरी पत्नी होती। आप कभी भी बिना प्रतिक्रिया के नहीं देखते। आप सूर्यास्त को देखते हैं और केवल यह कहते हैं कि यह कितना सुंदर है, या यह कि यह उतना सुंदर नहीं है जितना कल था। तो आपने कभी इस पर नजर नहीं डाली. कल की आपकी स्मृति आज क्या है की धारणा को नष्ट कर देती है । हमारे लिए किसी चीज़ को स्पष्ट रूप से, खुले तौर पर, सरलता से देखना कितना असाधारण रूप से कठिन है! अब एक और तथ्य पर नजर डालते हैं. तुम मेरी बात क्यों सुन रहे हो? जाहिर है, आप मेरी बात सुन रहे हैं, क्योंकि मेरी प्रतिष्ठा है। तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकता हूं. आपको लगता है कि आपको मेरी बात इसलिए सुननी चाहिए क्योंकि या तो बौद्धिक रूप से यह आपका मनोरंजन करती है या विभिन्न कारणों से, और इसलिए आप वास्तव में नहीं सुन रहे हैं। वास्तव में जो हो रहा है वह यह है कि चूँकि मैं जो कहता हूँ वह आपके विचार के विपरीत है, आप सुनते नहीं हैं। तुम सब वही सुन रहे हो जो तुम्हें लगता है कि तुम मेरे बारे में जानते हो—और तुम वास्तव में कुछ भी नहीं जानते हो! जो महत्वपूर्ण है वह मेरे बारे में जानना नहीं है, बल्कि जो कहा जा रहा है उसका वास्तव में पालन करना है, यह पता लगाना है कि क्या इसका कोई आधार, कोई वास्तविकता, कोई अर्थ है, या क्या यह बकवास है, झूठ है। यही एकमात्र महत्वपूर्ण बात है, और आप व्यक्तिगत रूप से मेरे बारे में जो सोचते हैं वह पूरी तरह से अप्रासंगिक है।

तो मैं पूछता हूं: क्या आपने कभी किसी तथ्य पर गौर किया है? कृपया, जब आप घर जाएं तो वास्तव में इसे आज़माएं, सिर्फ मनोरंजन के लिए। यदि आपके कमरे में एक फूल है, तो उसे देखें, और देखें कि मन क्या करता है; देखें कि क्या मन इसे केवल देख सकता है या नहीं

यह तुरंत कहता है, "यह गुलाब है," या "यह मुरझा गया है," इत्यादि। आप, शायद, एक फूल को, अपनी पत्नी या बच्चे को देख सकते हैं, लेकिन खुद को पूरी तरह से देखना, विरोधाभास या स्वीकृति के कारक को पेश किए बिना खुद को देखना कहीं अधिक कठिन है। क्या मैं अपनी हिंसा को किसी भी प्रकार की स्वीकृति या अस्वीकार के बिना देख सकता हूँ? यदि आप प्रयास करेंगे तो आप देखेंगे कि यह कितना असाधारण रूप से कठिन है क्योंकि आदत आती है और सभी प्रकार की बातें कहती है। किसी तथ्य को देखने के लिए, चाहे वह राजनीतिक तथ्य हो, धार्मिक तथ्य हो, या भुखमरी का तथ्य हो, ध्यान देने की आवश्यकता है, विरोधाभास की स्थिति की नहीं। विरोधाभास होने पर ध्यान नहीं दिया जा सकता.

दुनिया के कई हिस्सों में भुखमरी है, शायद अमेरिका, यूरोप या रूस में नहीं, लेकिन पूरे एशिया में है। हर कोई इसके बारे में बात करता है, और कुछ नहीं होता। क्यों? कम्युनिस्ट, समाजवादी, सुधारक और बड़े राजनेता, वे सभी इसके बारे में बात करते हैं, पूरी दुनिया बात करती है, और फिर भी कुछ नहीं होता है। सच तो यह है कि भुखमरी है, और दूसरा सच यह है कि हर समूह भुखमरी का समाधान अपने सिस्टम के अनुसार चाहता है और कहता है, "मेरा सिस्टम आपसे बेहतर है।" चूँकि राष्ट्रीय विभाजन हैं, सत्ता की राजनीति में हेराफेरी है, यह चलता रहता है। तो सच तो यह है कि कोई भी भुखमरी की समस्या से निपटना नहीं चाहता। वे केवल अपने तरीके से कार्य करना चाहते हैं। ये सभी तथ्य हैं. तो क्या आप पता लगा सकते हैं कि मन किसी तथ्य को कैसे देखता है? तथ्य के प्रति आपका दृष्टिकोण स्वयं तथ्य से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप इसे सही ढंग से देखते हैं, तो तथ्य में जबरदस्त बदलाव आता है।

मुझे लगता है कि अब रुकना बेहतर है, लेकिन अगली बार हम इसे फिर से उठाएंगे क्योंकि इसमें और भी बहुत कुछ शामिल है; यह केवल एबीसी है और कुछ नहीं। और जब आप मुझसे आगे बढ़ने के लिए कहते हैं और कहते हैं कि आप थके नहीं हैं, तो मैं कहता हूं कि आपको थक जाना चाहिए। यदि तुम केवल मेरी बात को स्वीकार कर रहे हो, तो तुम सोच नहीं रहे हो। यह आपके लिए कोई समस्या नहीं है, यह आप में काम नहीं कर रहा है और बिल्कुल यही मुद्दा है। आप सुनते हैं, लेकिन आप अपने बच्चे को आदर्श याद रखने को कहेंगे तो विरोधाभासी प्रक्रिया चलती रहेगी। तो इसका वास्तव में आपके लिए कोई मतलब नहीं है; यदि इसका कोई मतलब होता तो आप थक जाते।

क्योंकि इस सबका मतलब संपूर्ण क्रांति है।

अगली बार मैं डर, आदत और परंपरा के पूरे प्रश्न पर जा रहा हूं, क्योंकि ये सभी कारक हैं जो आपको तथ्य के बारे में कुछ करने से रोकते हैं। जब मन यह जानने में सक्षम हो जाता है कि वह तथ्य को क्यों नहीं देख सकता है और खुद को संचित विरोधाभासों और संस्कारों से मुक्त कर लेता है, तो तथ्य में जबरदस्त बदलाव आता है। फिर कोई तथ्य नहीं है. तब आप देखेंगे कि हिंसा पूरी तरह खत्म हो गई, पूरी तरह मिट गई। तब

मन, स्वतंत्र होने के कारण, अब विरोधाभास में नहीं है, और इसलिए अब प्रयास की स्थिति में नहीं है, अब कुछ बनने की कोशिश नहीं कर रहा है।

10 सितम्बर 1958

पूना में तीसरी वार्ता

पिछली बार जब हम मिले थे तो हम प्रयास की पूरी समस्या के बारे में बात कर रहे थे - क्या प्रयास के माध्यम से कोई आमूल-चूल परिवर्तन हो सकता है, क्या एक ऐसे मन के लिए यह संभव है जो आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है कि वह किसी भी माध्यम से उस विरोधाभास को समाप्त कर सके। किसी भी प्रकार के दमन के माध्यम से, इस पर काबू पाने के किसी भी प्रयास के माध्यम से, जबरदस्ती अनुशासन का एक रूप। हमने कहा है कि विरोधाभास में एक मन प्रयास की स्थिति में होना चाहिए, और हमने जांच की कि क्या आंतरिक कलह, आंतरिक संघर्ष, कभी भी वह परिवर्तन ला सकता है जो आवश्यक है यदि हमें चीजों को स्पष्ट रूप से देखना है और एक शांतिपूर्ण, शांतिपूर्ण जीवन जीना है। मुझे ऐसा लगता है कि इस मुद्दे को वास्तव में गहराई से समझना महत्वपूर्ण है - कि एक छोटा, सम्मानजनक, क्षुद्र दिमाग अनिवार्य रूप से अपने भीतर विरोधाभास पैदा करता है। जीवन क्षुद्र नहीं है. हम जीवन को अपनी क्षुद्रता के स्तर तक कम करने का प्रयास करते हैं, लेकिन यह बहुत विशाल, बहुत विशाल, बहुत मांग वाला, बहुत जरूरी है। जीवन हमारे सामने असंख्य दबाव, चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, जिनका क्षुद्र मन सामना नहीं कर सकता और इसलिए, अनजाने में या सचेत रूप से, यह आत्म-विरोधाभास की स्थिति पैदा करता है। अब क्या ऐसा क्षुद्र मन, सम्मानजनक मन, किसी भी प्रयास से ऐसी स्थिति ला सकता है जिसमें कोई विरोधाभास न हो? यही हमारी समस्या है.

जाहिर है, जीवन की चुनौती बहुत अधिक मांग वाली, बहुत बड़ी और असाधारण रूप से जटिल है जिसे केवल किसी एक विशेष बिंदु पर हल करना संभव नहीं है। इससे समग्रता से, समग्रता से निपटना होगा। इसे केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से या रोमांटिक या तथाकथित धार्मिक दृष्टिकोण से नहीं निपटा जा सकता है, जो आखिरकार हठधर्मिता, विश्वास और समारोहों की एक श्रृंखला के अलावा और कुछ नहीं है। लेकिन क्षुद्र मन इन सभी पलायनों में फंस गया है, और उसने अपने वातावरण को ऐसी सामाजिक स्थिति में ला दिया है जिसमें वह खुद को फिट कर सके।

निश्चित रूप से आप और मैं देख सकते हैं कि जीवन इतना असाधारण रूप से सुंदर, इतना गहरा, इतना गहरा है कि इसे आसानी से समझा नहीं जा सकता है, और फिर भी मैं अपने संकीर्ण छोटे दिमाग से इसका सामना करने की कोशिश कर रहा हूं। मेरा छोटा सा दिमाग जो भयभीत, चिंतित, जिज्ञासु, हिंसक है, उसे बहुत सारे सामाजिक और धार्मिक प्रतिबंध मिले हैं जिनके अनुसार उसे जीना चाहिए, और इसलिए जो है और जो वह सोचता है कि क्या होना चाहिए, के बीच हमेशा विरोधाभास रहता है। और इस विरोधाभास को पैदा करने से तनाव उत्पन्न होता है, और

उस तनाव से, अंतहीन गतिविधि से; और मैं उस क्षुद्र मन को समझने के बजाय उस गतिविधि को सुधारने का प्रयास करता हूं जो विरोधाभास पैदा करता है। यह धूप में अपनी छाया को सही करने की कोशिश करने जैसा है; मैं देखता हूं कि छाया बहुत तेज है, और इसलिए मैं यह सोचकर गुस्से से उस छाया को खरोंचने लगता हूं कि ऐसा करके मैं एक क्रांतिकारी काम कर रहा हूं। लेकिन वास्तव में क्रांतिकारी बात यह है कि मन में ही आमूल-चूल परिवर्तन लाया जाए, केवल विचार में नहीं, जो विरोधाभास की स्थिति का एक प्रक्षेपण है।

तो मेरा दिमाग कैसा है जो स्पष्ट रूप से खुद को बदलने के लिए बहुत सीमित और अनुकूलित है? मन वातानुकूलित है, है ना? आपका सारा वातावरण मन को आकार दे रहा है - जलवायु, रीति-रिवाज, परंपरा, जातीय प्रभाव, परिवार - असंख्य चेतन और अचेतन दबाव मन को आकार दे रहे हैं। आप हिंदू हैं, पारसी हैं, मुस्लिम हैं, ईसाई हैं, या जो भी हैं, क्योंकि आप अपने परिवेश से प्रभावित हैं।

तो आपका मन वातानुकूलित है, और वातानुकूलित होने के कारण आप जीवन का सामना करते हैं, जिसकी चुनौती समय के भीतर नहीं है, आपकी वातानुकूलित प्रतिक्रियाओं के साथ जो हमेशा समय के भीतर होती हैं। हमारा मानना है कि भुखमरी की चुनौती, भयावह असमानताओं की चुनौती से समय के हिसाब से निपटा जा सकता है क्योंकि हम इस चुनौती को अपनी खुद की कंडीशनिंग के हिसाब से देखते हैं। एक समाजवादी, एक कम्युनिस्ट या आप जो भी चाहें, होने के नाते, मैं अपने वातानुकूलित दिमाग से मिलता हूं, जिसे कई प्रभावों ने आकार दिया है, एक चुनौती जो स्वयं समय से परे है। सभी चुनौतियाँ समय से परे होनी चाहिए। जीवन की चुनौती को समय की सीमा में नहीं रखा जा सकता; क्योंकि तब यह परिचित हो जाता है, और इसलिए मुझे लगता है कि मैं इससे निपट सकता हूं। जब चुनौती हमारे सामने आती है तो वह कभी ज्ञात के संदर्भ में नहीं होती। यदि संभव हो तो मैं समझाऊंगा कि मेरा अभिप्राय क्या है।

मैं तुमसे पूछता हूँ - ईश्वर क्या है? एक सम्मानित हिंदू या ईसाई होने के नाते या आप जो भी चाहेंगे, आप अपनी कंडीशनिंग के अनुसार जवाब देंगे। लेकिन भगवान एक अनाम, अज्ञात, एक वातानुकूलित मन द्वारा अकल्पनीय चीज़ है; यह कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से अज्ञात है, लेकिन आपका दिमाग आपकी कंडीशनिंग के अनुसार उत्तर देता है। इसलिए चुनौती हमेशा समय से कम हो जाती है, और आपकी प्रतिक्रियाएँ हमेशा समय के भीतर होती हैं। कृपया मेरे साथ इस बारे में सोचें और केवल इनकार या स्वीकार न करें। सुनने में एक कला है, और जिस चीज़ से आप परिचित नहीं हैं उसे सुनना बहुत कठिन है। आपका दिमाग हमेशा जो कहा जाता है उसका अनुवाद, सहसंबंध, संदर्भ देता रहता है, जो आप पहले से ही जानते हैं - शंकर, बुद्ध, या किसी और ने क्या कहा है - और उस प्रक्रिया में कोई ध्यान नहीं है। आप पहले से ही दूर हैं, विचारों में खोए हुए हैं, और यदि आप स्वीकृत या अस्वीकृत करते हैं तो आपने पहले ही सुनना बंद कर दिया है। लेकिन अगर आप उस ध्यान से सुन सकते हैं जो कि जो सुना जा रहा है उसका अनुवाद नहीं कर रहा है, जो नहीं करता है

तुलना करें, जो वास्तव में जो कहा जा रहा है उस पर अपना संपूर्ण अस्तित्व दे रहा है, उस ध्यान में सुनना है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी को अपनी समग्रता से सुनने की कोशिश की है। उसमें कोई प्रयास नहीं है; प्रयास और तनाव का मतलब है कि आप या तो वक्ता से कुछ पाने की कोशिश कर रहे हैं या डर रहे हैं, टाल रहे हैं, विरोध कर रहे हैं और उन प्रक्रियाओं को बिल्कुल भी नहीं सुन रहे हैं। इसलिए यदि संभव हो तो मैं आदरपूर्वक सुझाव देता हूं कि जो कहा जा रहा है उसकी सच्चाई जानने के लिए आप सुनें। सत्य कोई असाधारण, रहस्यमय, रोमांटिक, काल्पनिक चीज़ नहीं है। सच तो यह है कि काला काला है, आसमान में बादल है। क्या झूठ है और क्या सच है, इसका पता लगाने के लिए आपको मन को उसकी पिछली परंपराओं, आशाओं और भय से मुक्त करना होगा और देखना होगा। सत्य क्षण-क्षण में खोजी जाने वाली चीज़ है, संचित की जाने वाली चीज़ नहीं।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी संचय, संग्रह, सीखने की इस पूरी समस्या के बारे में सोचा है। जो मन सीख चुका है वह सीखने में असमर्थ है। यदि मैं पूछूं, महोदय, उस कथन पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? क्योंकि यह सिर्फ एक व्याख्यान नहीं है जहां आप सुनते हैं और सहमत या असहमत होते हैं और फिर घर जाते हैं और जो आपको पसंद है वह करते हैं, बल्कि यह एक साथ एक प्रयोग है जहां, मेरी खोज के दौरान, आप अपने दिमाग को देख रहे हैं। यदि आप अपने मन का ध्यान रखें, तो मुझे लगता है कि इन वार्ताओं से अत्यधिक लाभ होगा, और आप चीजों को बिना आपकी मांग के अनजाने में घटित होते हुए देखेंगे।

इसलिए मैं कहता हूं कि एक सीखा हुआ दिमाग सीख नहीं सकता। एक मन जिसने इकट्ठा किया है, जिसने अनुभव किया है, और जो कहता है, "मुझे पता है," वह मन जिसने इतना अध्ययन किया है और जो अन्य लोगों की राय, विचारों, अटकलों, विवरणों से भरा हुआ है - ऐसा मन कैसे सीख सकता है? सीखना पल-पल होता है, लेकिन अगर आप संचय करने के लिए सीखते हैं और उस संचय के साथ अपने जीवन को निर्देशित करने का प्रयास करते हैं, तो आपने जीना बंद कर दिया है। आप केवल एकत्र हुए हैं और फिर वह प्रक्षेपित कर रहे हैं जो आप सोचते हैं कि जीवन कैसा होना चाहिए। इसलिए जीवन, जो कि विशाल और गहरा है, और आपके मन, जो अपने ही पर्यावरणीय प्रभावों में फंसा हुआ है, के बीच एक विरोधाभास है। तो हम फिर से इस प्रश्न पर आते हैं कि मन को आत्म-विरोधाभास से कैसे मुक्त किया जाए, क्योंकि यह हमारी प्रमुख समस्याओं में से एक है।

मैं यह सोचता हूं, और मैं वह करता हूं। अपने आप को देखें और आप देखेंगे. व्यक्ति अहंकार से, अभिमान से, जाति और उपलब्धि दोनों से भरा हुआ है, और साथ ही वह विनम्रता की सुंदरता भी चाहता है। इसलिए मैं विरोधाभास में हूं, जिसका अर्थ हमेशा संघर्ष होता है, और उस संघर्ष को दूर करने के लिए मैं यह कहते हुए प्रयास करता हूं कि मुझे गर्व को दूर करना चाहिए और विनम्रता लाने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए मैं खुद को अनुशासित करता हूं, खुद को भगवान के प्रति समर्पित करता हूं और अपने सभी प्रयास उस चीज के लिए करता हूं जो मुझे लगता है कि सबसे ऊंचा है। पहले मुझमें अहंकार, अभिमान उत्पन्न हुआ और फिर मैं इसे भगवान को अर्पित कर देता हूं क्योंकि मैं पीड़ित हूं। हम वास्तव में यही तो कर रहे हैं, है ना?

अब सच तो यह है कि विरोधाभास ही स्वयं का केंद्र है। स्वयं से मेरा तात्पर्य आत्मा, परमात्मा या किसी काल्पनिक आत्मा से नहीं है, जिसकी मेरे लिए कोई वास्तविकता नहीं है। मैं हमारे रोजमर्रा के स्वयं के बारे में बात कर रहा हूं - वह स्वयं जो लालची है, वह स्वयं जो कष्ट सहता है, वह स्वयं जो अपनी महत्वाकांक्षाओं में निराश है, जो लगातार चिंता करता रहता है, वह स्वयं जो कहता है, "मुझे हासिल करना चाहिए, पूरा करना चाहिए," फिर भी वह जानता है कि पूर्ति के लिए संघर्ष में केवल हताशा और निराशा की छाया है। वह स्वंय ही सत्य है। तो यह विरोधाभास है. मुझे गर्व है, और साथ ही मैं विनम्रता की सुंदरता का स्वाद भी चखना चाहता हूं। दोनों में से कौन सा वास्तविक है? निश्चय ही यह गौरव है। विनम्रता, जो मुझे किसी कल्पित भविष्य में होना चाहिए वह अस्तित्व में आ भी सकता है और नहीं भी।

तो समस्या यह है कि बिना कोई विरोधाभासी विचार लाए अभिमान को कैसे बदला जाए, जिससे मुझे अभिमान दूर करने की आशा है। मुझे लगता है कि इसे समझना वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सभी के पास प्रयास की यह समस्या है - हमारे काम में प्रयास, हमारी सोच में, खुद को बदलने की कोशिश में, एक अलग समाज बनाने का प्रयास, नफरत का विरोध करना, पाने के लिए प्रयास करना। भय से मुक्ति, प्रेम को जानना। हमारा संपूर्ण अस्तित्व एक निरंतर प्रयास है। उस वास्तविक अनुभूति का एक क्षण भी उस मन में नहीं आता जो किसी चीज़ को अपने लिए समझता है और जो चीज़ है उसे किसी और चीज़ में बदलने की कोशिश नहीं कर रहा है। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं, लेकिन अगर आपकी सोच के पीछे कोई दबाव, कोई प्रभाव है, तो विचार कभी भी किसी बात की सच्चाई तक सीधे नहीं पहुंच सकता। अगर मैं सोचता हूं कि मुझे कुछ इसलिए करना चाहिए क्योंकि कोई चाहता है कि मैं ऐसा करूं, तो ऐसा करना हमेशा पक्षपातपूर्ण होता है। प्रभावित विचार कभी सीधा विचार नहीं हो सकता। यदि मैं कुछ इसलिए करता हूँ क्योंकि मैं डरता हूँ या इसलिए कि मैं उससे कुछ चाहता हूँ, तो वह कार्य एक विकृत कार्य है; यह कोई साफ-सुथरा, सीधा कार्य नहीं है। उसी प्रकार यदि किसी विचार के पीछे कोई दबाव हो तो वह अवश्य ही टेढ़ा हो जाता है। तो समस्या यह है कि मन को इस विरोधाभास से कैसे मुक्त किया जाए और मन को अभिमान से कैसे मुक्त किया जाए। मन स्वयं को अभिमान से तभी मुक्त कर सकता है जब आदर्श समाप्त हो जाए। क्योंकि, आदर्श तथ्य नहीं है; तथ्य तो गौरव है. इसलिए मुझे अपने दिमाग से 'क्या होना चाहिए' का पूरा विचार निकालना होगा, आदर्श को पूरी तरह से हटाना होगा। तब मुझमें केवल अभिमान की अनुभूति होती है, और मैं इसे पूर्ण रूप से देख सकता हूँ।

कोई यह देख सकता है कि आदर्शों का कोई मतलब नहीं है। आप वास्तव में आदर्शवादी नहीं हैं, आप शब्दवादी हैं। आदर्श कुछ वास्तविक करने से पलायन मात्र है। मुझे गर्व है, और मैं कहता हूं कि कल, बाद में, मैं गर्व से रहित हो जाऊंगा। तुम कभी भी नही। तो मैं इस तथ्य से कैसे निपटूं कि मैं डरता हूं, कि मैं गौरवान्वित हूं, कि मैं अहंकारी हूं? क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, व्यक्ति महत्वपूर्ण है, जनसमूह नहीं। यदि व्यक्ति मौलिक रूप से बदलता है, तो द्रव्यमान बदल जाता है। यह दूसरा तरीका नहीं है. कोई भी जनसमूह रचनात्मक नहीं हो सकता, उत्पादन नहीं कर सकता

चित्र, कविता लिखें, या कुछ और। इसलिए मैं आपसे पूछ रहा हूं: आप इस तथ्य से कैसे निपटेंगे कि आपको गर्व है?

अब अभिमान में क्या बुराई है? आपको घमंड क्यों नहीं करना चाहिए और घमंड का मतलब क्या है? किस बात का जोम है तुम्हें? आपके परिवार का, आपके धन का, आपके सौंदर्य का, आपके चरित्र का? और यदि कोई गर्व महसूस नहीं करता है, तो वह हीन महसूस करता है, इसके विपरीत, और कहता है, "मैं कुछ भी नहीं हूं," जो गर्व का एक और सूक्ष्म रूप है।
और इस प्रकार एक को फिर से पकड़ लिया जाता है। इसलिए इससे पहले कि मैं यह जानना शुरू करूं कि मन को खुद को गर्व से मुक्त क्यों करना चाहिए, मुझे यह जानना चाहिए कि गर्व में क्या गलत है। हम इस पर वापस आएंगे, लेकिन पहले कुछ और लेते हैं।

हममें से अधिकांश के मन के कोनों में किसी न किसी तरह का डर छिपा रहता है - मौत का डर, पड़ोसी क्या कहेंगे, अपनी नौकरी खोने का, या काम पूरा न कर पाने का। अब कोई भय से मुक्ति क्यों चाहता है? जब मुझे डर लगता है तो क्या मैं स्पष्ट रूप से सोच सकता हूँ? स्पष्टः नहीं। यदि मुझे इस बात का डर है कि मेरा पड़ोसी क्या कहेगा तो मैं अपने पड़ोसी के विचारों के अनुसार जी रहा हूं क्योंकि मैं चाहता हूं कि मुझे समाज में सम्मानित समझा जाए। मुझे सम्मानित न होने का डर है, और इसलिए मैं अनुपालन करता हूं, अनुरूप हूं। इसलिए मैं हमेशा बहुत ही सतही स्तर पर रहता हूं और साथ ही गहराई के प्रति सचेत रहना चाहता हूं। इसलिए मैं फिर से अपने अंदर विरोधाभास लाता हूं। फिर मैं कहता हूं कि मुझे डर से छुटकारा पाना चाहिए। क्या आपने कभी डर से छुटकारा पाने की कोशिश की है? आइए हम मृत्यु के भय को दूर करें। मौत से सिर्फ बूढ़े ही नहीं डरते, जवान भी डरते हैं; दुनिया में हर कोई मृत्यु से डरता है, अस्तित्व समाप्त होने से डरता है, भले ही वे इसे तर्कसंगत ठहराते हों। आप उस समस्या का समाधान कैसे करेंगे?

जब कोई ऐसा व्यक्ति मर जाता है जिसे आप पसंद करते हैं और आपका सामना मृत्यु से होता है, तो क्या होता है? आप स्वयं को किसी विश्वास-पुनर्जन्म या पुनरुत्थान के विचार या किसी प्रकार के युक्तिकरण में सांत्वना देने का प्रयास करते हैं। लेकिन डर अब भी मौजूद है और आप उससे दूर भाग चुके हैं।

अब अगर मुझे डर की समस्या से निपटना है और उससे बचना नहीं है, तो मुझे मृत्यु के पूरे प्रश्न पर विचार करना होगा - मैं जो सोचता हूं उसमें निरंतरता है, मृत्यु एक अंत है। मुझे लगता है कि मुझे अगले 500 वर्षों तक, या अनिश्चित काल तक जीवित रहना चाहिए, क्योंकि इसके द्वारा मैं कुछ कर सकता हूँ या कुछ बन सकता हूँ। लेकिन सच तो यह है कि अगर मैं एक हजार साल जीऊं तो अंत में वैसा ही रहूंगा क्योंकि मैं अब नहीं बदलता हूं। तो समस्या मृत्यु की नहीं है बल्कि समस्या यह है कि निरंतरता नाम की कोई चीज़ है या नहीं। क्या ऐसा नहीं है? निश्चित रूप से, यदि मैं निरंतरता के प्रश्न को हल कर सका, तो मुझे मृत्यु से डर नहीं लगेगा। लेकिन, अब हम जो करते हैं वह विभिन्न प्रकार के युक्तिकरण के माध्यम से मृत्यु से बचने की कोशिश करते हैं, और मेरे इस युक्तिकरण के बावजूद, मैं अभी भी डरा हुआ हूं। इसलिए मैं सभी पलायनों को देखता हूं - रेडियो, पुस्तक, समारोह, भगवान, विश्वास - और मैं देखता हूं कि सभी पलायन

समान स्तर पर हैं और कोई भी दूसरे से श्रेष्ठ नहीं है। मैं देखता हूं कि पलायन के माध्यम से कोई समाधान नहीं है, और इसलिए मुझे यह पता लगाना होगा कि क्या निरंतरता जैसी कोई चीज है, क्या मेरे अंदर कोई स्थायी इकाई है जो जारी रहती है, और क्या जीवन में कुछ भी स्थायी है।

क्या आप ऐसी कोई चीज़ जानते हैं जो स्थायी हो, बिना परिवर्तन के? मैं चाहूंगा कि मेरी पत्नी, मेरे पति के साथ मेरा रिश्ता स्थायी, सतत रहे; मैं अपनी संपत्ति सदैव अपने पास रखना चाहूँगा; मैं सतत प्रसिद्धि, सतत प्रेम, या सतत आनंद और शांति की स्थिति में रहना चाहूंगा, लेकिन क्या ऐसी कोई चीज है? यहां तक कि अब आपकी संपत्तियों पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं और अगर आपके पास इससे ज्यादा जमीन है तो आप पर भारी टैक्स लगाया जाता है। क्या कुछ स्थाई है? कम्युनिस्ट राज्य की स्थायी पूजा चाहते थे, लेकिन उन्हें पहले ही इसमें संशोधन करना पड़ा। हर जगह निरंतर संशोधन चल रहा है, और केवल धार्मिक मन ही अपनी अभेद्य मान्यताओं के साथ किसी भी परिवर्तन के प्रति अभेद्य दिखता है। तो क्या निरंतरता जैसी कोई चीज़ है या जीवन एक निरंतर परिवर्तन है? निश्चय ही जीवन एक गति है जिसमें कोई स्थायित्व नहीं है। अगर आप इसे ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि इसमें कोई स्थायित्व नहीं है। हमारी सोच, हमारी मान्यताओं, हमारे आदर्शों में भी कोई स्थायित्व नहीं है। आप जो कुछ भी करते हैं वह अनिश्चित है, और कल आप अपनी नौकरी खो सकते हैं। इसलिए अनिश्चित होने के कारण, हम निरंतरता, स्थायित्व चाहते हैं और इसलिए हम फिर से विरोधाभास की स्थिति में वापस आ गए हैं। और यह विरोधाभास है जिसे हमें समझना चाहिए क्योंकि अगर हम वास्तव में इसे समझ सकते हैं, तो हम हर समस्या - गर्व, भय, मृत्यु, या जो भी हो - को पूरी तरह से अलग तरीके से देखने में सक्षम होंगे।

हमारा पूरा जीवन विरोधाभास की ओर अग्रसर है, हमारा पूरा अस्तित्व विरोधाभास की स्थिति में है, न केवल चेतन मन, बल्कि अचेतन मन, और फिर भी मैं देखता हूं कि अगर मुझे स्पष्ट रूप से सोचना है, तो क्या कुछ समझना है सच है, मन स्वतंत्र, स्पष्ट होना चाहिए। तो कोई विरोधाभास से मुक्त कैसे हो? क्या मैं किसी भी चीज़ को बिना विपरीत लाये देख सकता हूँ?

आख़िरकार, क्या मैं प्रेम को केवल इसलिए जानता हूँ क्योंकि मैं घृणा जानता हूँ? क्या मैं इस द्वंद्व को पूरी तरह से देख सकता हूँ, इसे पूरी तरह से समझ सकता हूँ, अपने पूरे अस्तित्व के साथ इसमें जा सकता हूँ, इसकी सच्चाई को समझ सकता हूँ? क्या आप अपने बारे में जागरूक हैं, कि आप क्या हैं?
निश्चय ही हम जानते हैं कि हम विरोधाभास में हैं, कि हम यह कहते हैं और वह करते हैं; तुम्हें इस भँवर के बारे में अवश्य जानना चाहिए। तो फिर आप इसके बारे में क्या करते हैं? आप इसके बारे में कुछ करके इससे छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं, जिसका अर्थ है कि आप स्वयं समस्या से नहीं निपट रहे हैं, बल्कि विचारों की एक अन्य श्रृंखला के साथ समस्या को कवर करने का प्रयास कर रहे हैं। तो, क्या मैं समस्या को विचारों से ढके बिना, अपने गौरव के तथ्य को देख सकता हूँ? क्या आपने इसे आज़माया है, श्रीमान, जब से मैंने पिछली बार इसका सुझाव दिया था? कर सकना

आप किसी फूल का नाम लिए बिना उसे देखते हैं, और क्या आप उसके बारे में कुछ करने का प्रयास किए बिना उस गुण को देख सकते हैं जिसके बारे में आप स्वयं जानते हैं?
क्या आपने कभी अपने आप से यह कहे बिना क्रोध को देखा है कि आपको क्रोध नहीं करना चाहिए? यदि ऐसा है, तो आपको पता चल जाएगा कि केवल तथ्य को देखना कितना कठिन है क्योंकि मन हमेशा 'क्या होना चाहिए' की स्मृति लाकर तथ्य में हस्तक्षेप करता रहता है। और मैं कहता हूं कि यदि मन पिछले अनुभवों, पिछली यादों को सामने लाए बिना, केवल तथ्य के प्रति जागरूक रहकर तथ्य को देख सकता है, तो तथ्य के प्रति जागरूकता ही इसे पूरी तरह से बदल देती है। इस तथ्य की जागरूकता से संघर्ष का अंत होता है।

अगर मुझे पता है कि मैं झूठा हूं, और मैं केवल यह कहकर इसे बदलने की कोशिश नहीं करता कि मुझे सच बोलना चाहिए, तो मैं इस पूरे सवाल पर गौर कर सकता हूं कि मैं झूठ क्यों बोलता हूं।
क्योंकि मैं अपने झूठ बोलने की पूरी पृष्ठभूमि जानना चाहता हूं, मैं झूठ क्यों बोलता हूं इसका महत्व जानना चाहता हूं, इसलिए मैं इसमें जाता हूं। और मैं देखता हूं कि मैं झूठ बोलता हूं क्योंकि मैं डरता हूं।
सतही तौर पर या बहुत गहराई से मैं इस बात से डरता हूं कि मैंने क्या किया है या कहा है और आप इसका पता लगा सकते हैं, या मुझे अपनी नौकरी खोने का डर है - अनगिनत अलग-अलग चीजें। अब मन को भय से मुक्त करना कैसे संभव है? अगर मैं इसके बारे में कुछ भी करता हूं, तो एक विरोधाभास है और इसलिए एक संघर्ष, एक शाश्वत लड़ाई चल रही है। तो, मैं यह नहीं कहूंगा कि मुझे डरना नहीं चाहिए, बल्कि मुझे उस डर के कारण की पूरी प्रक्रिया पर नजर डालनी चाहिए।

आइए एक और तथ्य लें: कि हम कुरूपता से बचते हैं और सुंदर से चिपके रहते हैं।
कृपया मुझे थोड़ा फॉलो करें। हम सोचते हैं कि हम सौंदर्य को जानते हैं क्योंकि हम कुरूप को जानते हैं; हम सुंदरता को किसी प्रकट चीज़ के रूप में, किसी व्यक्त चीज़ के रूप में जानते हैं। मैं कहता हूं कि यह एक सुंदर इमारत है या बदसूरत, लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि यह बदसूरत है या सुंदर? राय के कारण, क्योंकि मुझे बताया गया है ना? मेरा दिमाग परंपरा के अनुसार प्रशिक्षित, अनुकूलित है कि क्या सुंदर है और क्या बदसूरत है। क्या सुंदरता का कोई विपरीत है? कृपया उत्तर देने का प्रयास न करें, बल्कि केवल सुनें। क्या सुंदरता का विपरीत कुरूप है? यदि सुंदरता का कोई विपरीत है, तो क्या वह सुंदरता है?

मैं कह सकता हूं कि जीवन मिथ्या भी है और सत्य भी और मैं जानता हूं कि ठंड क्या है क्योंकि मैं जानता हूं गर्मी क्या है, मैं दर्द जानता हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि कब दर्द नहीं होता; वहाँ पुरुष है और वहाँ स्त्री है। द्वंद्व की स्थिति, जिसके बारे में हम सभी जानते हैं, शायद अपरिहार्य है, लेकिन उसके कारण हम संघर्ष क्यों पैदा करते हैं? जिस समस्या की हम जांच कर रहे हैं वह यह नहीं है कि सुंदर और कुरूप है या नहीं, बल्कि यह है कि यह होने और वह न होने की कोशिश में संघर्ष, तनाव, इतनी भारी मात्रा में चिंता क्यों है? चिंता और द्वंद्व इसलिए पैदा होता है क्योंकि मैं यह बनना चाहता हूं और वह नहीं, क्योंकि यह लाभदायक है और दूसरा नहीं; चुने हुए राज्य के साथ मैं अपनी पहचान बनाना चाहता हूँ,

और दूसरा मैं दूर रखना चाहता हूँ। तो एक के साथ तादात्म्य और दूसरे से बचना ही विरोधाभास का पूरा केंद्र है। और उस विरोधाभास को किसी भी प्रकार के अनुशासन से दूर नहीं किया जा सकता। जो चाहो करो, कोई भी व्यवस्था अपनाओ, उससे पार नहीं पाओगे। जो चीज़ मन को विरोधाभास से मुक्त करेगी वह है मन से निपटना और यह पता लगाना कि मन खुद को एक अवस्था से क्यों जोड़ता है और दूसरे से क्यों बचता है। इसके लिए आत्म-ज्ञान, अपने अंदर जाना, धैर्यपूर्वक, गहराई से स्वयं का अध्ययन करना आवश्यक है। लेकिन हम ऐसा नहीं करना चाहते; हम तत्काल परिणाम चाहते हैं.

तो जिस समस्या पर हम जा रहे हैं वह यह नहीं है कि वास्तव में कोई पुरुष या महिला नहीं है, कोई बुरा या अच्छा नहीं है, कुछ भी सुंदर या बदसूरत नहीं है, बल्कि यह है कि मन इन विभाजनों में क्यों काम करता है। और इसका मतलब वास्तव में इस पूरे प्रश्न में जाना है कि सोच क्या है। क्योंकि हम हमेशा इसी तरह सोचते हैं - कि सुंदरता है और कुरूपता है, और मुझे एक चाहिए और दूसरा नहीं। तो मैं अपने आप से कहता हूं, "यह सोचने की कौन सी मशीनरी है जो कहती है कि मेरे पास यह होना चाहिए और मेरे पास वह नहीं होना चाहिए, जिससे मेरे भीतर विरोधाभास पैदा होता है?"

और मैं पूछता हूं, "यह क्या चीज़ है जो सोच रही है?" मैं मुख्य विषय से दूर नहीं जा रहा हूँ, बल्कि अब मैं इस प्रश्न की जाँच करने जा रहा हूँ कि सोच क्या है। क्या आपने कभी अपने आप से यह प्रश्न पूछा है, या क्या आपके पास केवल विचार हैं? हमने कभी पूछा ही नहीं, क्या हम सोच रहे हैं; तो आइए देखें, आइए इसमें जाएं।

निश्चय ही सोचना एक प्रतिक्रिया है। यदि कोई प्रतिक्रिया न हो तो कोई सोच भी नहीं होगी। मैं जानता हूं कि संन्यासी और तथाकथित संत प्रतिक्रिया न देने के लिए तरह-तरह के काम करते हैं और इसलिए खुद को नष्ट कर लेते हैं, लेकिन हमें इससे कोई सरोकार नहीं है। सोचना मूलतः एक प्रतिक्रिया है। मैं आपसे पूछता हूं कि आप कहां रहते हैं, और आप बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर देते हैं क्योंकि आप अच्छी तरह जानते हैं कि आप कहां रहते हैं। यदि मैं आपसे कोई अधिक जटिल प्रश्न पूछता हूं, तो आपको उत्तर देने में समय लगता है। प्रश्न और उत्तर के बीच का अंतर सोचने की प्रक्रिया के कारण होता है, है न? कृपया इसका पालन करें. तो सवाल और जवाब के बीच के अंतराल का मतलब है कि आप पूछताछ कर रहे हैं, अपनी यादों को क्रियान्वित कर रहे हैं, और फिर आपकी याददाश्त जवाब देती है। फिर अगर मैं आपसे कोई और अधिक जटिल प्रश्न पूछता हूं, तो समय अंतराल अधिक होता है और उस अंतराल में मन बहुत सक्रिय होता है, पूछताछ करता है, आपकी यादों, पुस्तकों और संचित ज्ञान के आपके रिकॉर्ड के माध्यम से खोज करता है, और जब उसे वह मिल जाता है जो वह चाहता है, यह उत्तर देता है. यदि मैं आपसे एक बहुत ही जटिल प्रश्न पूछता हूं, तो अंतराल बहुत व्यापक होता है, और आपके दिमाग को टटोलने के बाद आप कहते हैं कि आप नहीं जानते। कृपया अवश्य सुनें; यह कोई हंसी-मजाक की बात नहीं है. आप कहते हैं, "मुझे नहीं पता," लेकिन यह केवल एक झिझक है, एक अंतराल है जिसमें आप अभी भी पूछताछ कर रहे हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं

मन को उत्तर ढूंढना है, जिसका फिर से मतलब है कि मन अभी भी काम कर रहा है, खोज कर रहा है, मांग कर रहा है, प्रतीक्षा कर रहा है, जो कि सभी प्रतिक्रिया है, है न? हमारी सभी प्रतिक्रियाएँ प्रतिक्रियाएँ हैं और यह निश्चित रूप से स्पष्ट है। हम अपनी सोच के तरीकों के बारे में बस इतना ही जानते हैं कि यह प्रतिक्रिया है, अधिक जटिल या कम जटिल, अधिक सूक्ष्म या कम सूक्ष्म, अधिक कुटिल या अधिक परिष्कृत। लेकिन सोचने की पूरी प्रक्रिया यांत्रिक है। सोचना महज़ उस चीज़ की प्रतिक्रिया है जिसे मैं जानता हूं, या जिसे मैं नहीं जानता लेकिन मैं पता लगा सकता हूं। कंप्यूटर यही कर रहा है. वे संगति और स्मरण के समान सिद्धांत के आधार पर आपकी इच्छानुसार कुछ भी उत्तर दे सकते हैं।

तो अब हमारी सोच पूरी तरह से यांत्रिक है, और उस यांत्रिक आदत के साथ हम जीवन को देखते हैं, जो यांत्रिक नहीं है। जिंदगी सिर्फ खबरें फेंकने वाली प्रिंटिंग प्रेस नहीं है। इसलिए मैं अपनी यांत्रिक सोच के साथ जीवन को देखता हूं जो यांत्रिक नहीं है, और इसलिए इसमें विरोधाभास है। मैं सोचने की प्रक्रिया के माध्यम से इस विरोधाभास को फिर से दूर करने की कोशिश करता हूं, वही यांत्रिक आदत, और इसलिए मेरे और जीवन के बीच विरोधाभास बना रहता है। अब क्या मैं जीवन को बिल्कुल अलग तरीके से देख सकता हूँ?

आइए इसे फिर से देखें। मैं सोच-विचार के बारे में पूछताछ कर रहा हूं क्योंकि जाहिर तौर पर यह हमारे विचार ही हैं, जिन्होंने यह विरोधाभास पैदा किया है। वहाँ सत्य है, वहाँ झूठ है, वहाँ सुन्दर है, और वहाँ कुरूप है, मैं कामुक हूँ, और मैं कामुक नहीं होना चाहता, इत्यादि; ये निर्विवाद तथ्य हैं. विचार स्वयं को एक अवस्था से पहचानता है और दूसरे को नकारता है। इसलिए मुझे सोचने की पूरी प्रक्रिया को समझना होगा, न केवल चेतन स्तर पर बल्कि अचेतन स्तर पर, गहराई से। इससे चेतन और अचेतन मन का प्रश्न सामने आता है। मैं आपसे पूछता हूं: आप क्या हैं, 'आप' में क्या शामिल है? इसमें वह सब शामिल है जो आप सोचते हैं, वह सब जो आप बनना चाहते हैं- आपकी महत्वाकांक्षाएं, आशाएं, भय, वह सब कुछ जो आपका है। आप नस्लीय प्रभावों, पिछली परंपराओं का उत्पाद हैं, जो मनुष्य सदियों से सदियों से चला आ रहा है; आप भी सतही, परिष्कृत, शिक्षित दिमाग हैं - तकनीकी रूप से प्रशिक्षित प्रोफेसर, वकील, पुलिसकर्मी, या जो कुछ भी आपके प्रशिक्षण या प्रशिक्षण की कमी ने पैदा किया है। तो आप न केवल पिछले चालीस या बीस वर्षों के उत्पाद हैं, बल्कि अतीत की सदियों के भी उत्पाद हैं। आप उन सभी की समग्रता हैं, लेकिन क्या आप इसे जानते हैं? मैंने यह सब वर्णन किया है, और अब आप कह सकते हैं कि आप इसे जानते हैं, लेकिन सुनने और जानने में अंतर है। अर्थात् जो वचन मैं ने कहा है, उसे तुम सुन और समझ चुके हो, और इसलिये कहते हो, मैं जानता हूं। लेकिन एक और अवस्था भी है, जो यह है कि आप इस समग्रता का अनुभव करते हैं। आप जो हैं उसकी समग्रता का अनुभव ही वास्तविक ज्ञान है; दूसरा है

विवरण की मात्र स्वीकृति. हममें से अधिकांश लोग केवल वर्णनात्मक अर्थ में जानते हैं, अनुभवात्मक अर्थ में नहीं। यदि आप वास्तव में स्वयं को अतीत की समग्रता का अनुभव करने के अर्थ में जानते हैं, तो आप उस समग्रता को तोड़ सकते हैं या इसे जारी रख सकते हैं। इस बिंदु पर आप देखेंगे तो पाएंगे कि किस प्रकार विरोधाभास उत्पन्न होता है। एक जानना है जो कि आप जो कुछ भी हैं उसका अनुभव है, जिसका मैंने अभी वर्णन किया है, और जिसमें चेतन और अचेतन दोनों शामिल हैं। लेकिन आप इसका अनुभव नहीं कर पाएंगे क्योंकि आप कहते हैं कि यह बहुत कठिन है। तो आपके दिमाग का एक हिस्सा कहता है, "मैं आपकी बात सुनूंगा और यह सब मौखिक रूप से जानूंगा," और दूसरा हिस्सा कहता है, "मुझे कोशिश करनी चाहिए और अनुभव करना चाहिए, यह अनुभव की एक अद्भुत स्थिति होनी चाहिए।" तो आपने एक विरोधाभास पैदा कर दिया है. आप अपने अस्तित्व की इस समग्रता का अनुभव करना चाहते हैं क्योंकि आप देखते हैं कि मौखिक ज्ञान मूर्खतापूर्ण है, लेकिन आप इसमें न जाकर, मौखिक स्तर पर संतुष्ट होकर खुद को रोक रहे हैं। मैं कहता हूं कि जब तक आप इस सब की समग्रता को नहीं जान लेते, तब तक आप मन को विरोधाभास से मुक्त नहीं कर सकते। आपका एक हिस्सा प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित व्यक्ति है, लेकिन आपका एक हिस्सा पारंपरिक अतीत भी है जो आपको अपना कर्तव्य करने, भगवान के बारे में सोचने, राख डालने, या जो भी आप करते हैं, करने के लिए कहता है। वह सब वहां मौजूद है, और आप बहुत ही सतही स्तर पर जी रहे हैं। तो विरोधाभास है, और इसलिए आपको सपने, चिंताएँ, अवसाद हैं। जब तक आप अपनी पूरी पृष्ठभूमि में नहीं जाते, आप संभवतः इस विरोधाभास से मुक्त नहीं हो सकते।

अब, कोई इन सबके प्रति पूरी तरह से कैसे जागरूक हो सकता है? क्या मुझे परत-दर-परत विश्लेषण करते हुए अपने अंदर की संपूर्ण सामग्री को थोड़ा-थोड़ा करके देखना चाहिए, जैसे कि प्याज का छिलका उतारना? इसमें आपकी पूरी जिंदगी लग जाएगी, है ना?
आपका पूरा मन संस्कारित है, आपके अस्तित्व की समग्रता संस्कारित है, और इससे छुटकारा पाने के लिए आप जो कुछ भी करते हैं, आप अभी भी उस संस्कार के दायरे में हैं। तो विचार वातानुकूलित अवस्था पर कार्य करने से वातानुकूलित मन मुक्त नहीं होगा क्योंकि विचार उस संस्कार का परिणाम, प्रतिक्रिया है। इसलिए विचार वह साधन नहीं है जिसके द्वारा हमारी कंडीशनिंग को नष्ट किया जा सके।

मन को सभी कंडीशनिंग से मुक्त करने के लिए, आपको बिना विचार किए इसकी समग्रता को देखना होगा। यह कोई पहेली नहीं है; इसके साथ प्रयोग करें, और आप देखेंगे। क्या आप कभी बिना सोचे कुछ भी देखते हैं? क्या आपने प्रतिक्रिया की इस पूरी प्रक्रिया को सामने लाए बिना कभी सुना है, देखा है? आप कहेंगे कि बिना विचार के देखना असंभव है; आप कहेंगे कि कोई भी मन बिना शर्त नहीं हो सकता। जब आप ऐसा कहते हैं, तो आप पहले से ही अपने आप को विचार से अवरुद्ध कर चुके हैं, क्योंकि तथ्य यह है कि आप नहीं जानते हैं।

तो क्या मैं देख सकता हूँ, क्या मन अपनी कंडीशनिंग के प्रति जागरूक हो सकता है? मुझे लगता है यह हो सकता है. कृपया प्रयोग करें. क्या आप इस बात से अवगत रह सकते हैं कि आप एक हिंदू हैं, एक समाजवादी हैं, एक कम्युनिस्ट हैं, यह या वह हैं, बिना यह कहे कि यह सही है या गलत, केवल जागरूक रह सकते हैं? चूँकि इसे देखना ही इतना कठिन कार्य है इसलिए हम कहते हैं कि यह असंभव है।
मैं कहता हूं कि केवल तभी जब आप बिना किसी प्रतिक्रिया के अपने अस्तित्व की इस समग्रता से अवगत होते हैं, तो कंडीशनिंग पूरी तरह से गहराई तक जाती है - जो वास्तव में स्वयं से मुक्ति है।

इसे तुरंत इस रूप में अनुवादित न करें कि आप अब क्या मानते हैं या नहीं मानते हैं, क्योंकि वह सब स्वयं ही है, और विचार, जो स्वयं की प्रतिक्रिया है, उसमें शामिल हुए बिना स्वयं पर कार्य नहीं कर सकता है। क्या तुम्हें यह नहीं दिखता? और फिर भी हम हर समय यही कर रहे हैं। जबकि यदि आप इस सच्चाई को देखते हैं कि विचार इस कंडीशनिंग को नहीं तोड़ सकता है क्योंकि सभी विचार, विश्लेषण, जांच, आत्मनिरीक्षण, आपकी वर्तमान स्थिति की प्रतिक्रिया मात्र है, तो आप केवल कंडीशनिंग के बारे में जानते हैं। उस जागरूकता में कोई विकल्प नहीं है क्योंकि विकल्प फिर से विचार को अस्तित्व में लाता है। इसलिए इस कंडीशनिंग के प्रति जागरूक होने का अर्थ है कोई विकल्प नहीं, कोई निंदा नहीं, कोई औचित्य नहीं, कोई तुलना नहीं, बल्कि सिर्फ जागरूक रहना है। जब आप इतने जागरूक होते हैं, तो आपका दिमाग पहले से ही उस कंडीशनिंग से मुक्त हो जाता है। बस अपनी कंडीशनिंग की पूरी प्रक्रिया के बारे में जागरूक होने से, आप देखेंगे कि आप पूरी तरह से एक नया कारक पेश कर रहे हैं, एक ऐसा कारक जिसमें स्वयं के साथ कोई पहचान या अस्वीकृति नहीं है, और वह कारक मुक्ति है, उसे मिटा देना है सभी कंडीशनिंग. इसीलिए मैं आपको सुझाव देता हूं कि जब तक हम दोबारा न मिलें तब तक आप प्रयोग करते रहें, ताकि आप निरीक्षण करें और जागरूक रहें।

14 सितंबर, 1958

पूना में चौथी वार्ता

यदि संभव हो तो मैं आज दोपहर को किसी ऐसी बात पर चर्चा करना चाहूंगा जो काफी कठिन हो सकती है और मुझे लगता है कि जिसके लिए बहुत अधिक समझ और पैठ की जरूरत है। हममें से अधिकांश के लिए रोजमर्रा की जिंदगी इतनी दमनकारी, इतनी मांग और आग्रहपूर्ण है कि चाहे हम मजदूर हों या क्लर्क, प्रोफेसर या आप जो भी कहें, हमारा लगभग सारा समय हमारे व्यवसाय में ही बीत जाता है, और हमारे पास बहुत कम समय होता है जीवन के व्यापक और संपूर्ण निहितार्थों के बारे में सोचें।

मुझे ऐसा लगता है कि भले ही कोई व्यक्ति गंभीर महसूस कर सकता है, भले ही वह समर्पित महसूस कर सकता है, भले ही उसके पास चीजों के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि हो, फिर भी मन को समझने की पूरी प्रक्रिया के लिए कुछ समय दिया जाना चाहिए-

मन जो न केवल प्रतिक्रिया करता है, सहयोग में, स्मृति में कार्य करता है, बल्कि वह मन भी है जो खाली है और उस खालीपन से कार्य करता है। यह कठिन होने वाला है क्योंकि अनिवार्य रूप से आप जो कहा जा रहा है उसे अपने अनुभव, अपने ज्ञान, अपनी परंपरा के संदर्भ में अनुवाद करेंगे, जिससे आप जो सुनेंगे वह निरस्त हो जाएगा। अगर मैं कोई बिल्कुल नई बात कहूं जिसे आप तुरंत नहीं समझ पाएं, तो दिमाग उसका अनुवाद पुराने शब्दों में कर देगा। यह पुरानी बोतलों में नई शराब डालने जैसा है।

हम पहली बार कुछ सुनते हैं, और तुरंत मन जुड़ने की अपनी गतिविधि शुरू कर देता है और जो कहा जा रहा है उसका अपनी पृष्ठभूमि के अनुसार अनुवाद करता है, और इस तरह वह जो सुन रहा है उसे नष्ट कर देता है।

इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि सुनना और परंपरा की ओर न मुड़ना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परंपरा स्पष्टता लाने में मदद नहीं करेगी। परंपरा सदैव सम्माननीयता को कायम रखती है और सम्मानजनक मन वास्तविकता से बहुत दूर है - ऐसा नहीं है कि बदनाम मन वास्तविकता के करीब है। सम्माननीय मन परंपरा के क्षेत्र में कार्य करता है, चाहे परंपरा प्राचीन हो या आधुनिक, साम्यवादी, कैथोलिक, हिंदू, बौद्ध, या जो भी हो - जिसका वास्तव में मतलब है कि मन ने खुद को वही सौंप दिया है जो उसने सुना है या पढ़ा है या किया है। बताया गया है, और दूसरों के अनुमोदन, विचारों और अनुभवों के अनुसार जी रहा है। यदि आपको कुछ भी नया अनुभव करना है, तो आपको निश्चित रूप से वह सब अलग रखना होगा, और यहीं हमारी कठिनाई है। मन अपनी निश्चितता की मांग में इतना जिद्दी है कि वह हमेशा सुरक्षा के रास्ते पर चलने पर जोर देता है जहां कोई रोमांच नहीं, कोई जोखिम नहीं, कोई मूल्यांकन नहीं, कोई अवलोकन या अनुभव नहीं हो सकता। तो मन धीरे-धीरे परंपरा के ढाँचे में ढल जाता है, और इस तरह जिस चीज़ के लिए उसे अनुकूलित किया गया है उसके अलावा किसी भी चीज़ का अनुभव करना बंद कर देता है। लेकिन यह कोई मूल अनुभव नहीं है, और यह केवल मूल अनुभव है जो वास्तव में मन की कंडीशनिंग के बोझ को कम करता है और आपको अपने लिए कुछ देखने में सक्षम बनाता है। अपने लिए कुछ देखना मन की सीमाओं को तोड़ देगा। यहां तक कि रास्ते के किनारे का कोई फूल भी, यदि आप वास्तव में उसे देखें, तो वह आपके लिए एक असाधारण कार्य कर सकता है। यदि आप कुछ मौलिक देख सकते हैं, कुछ मौलिक अनुभव कर सकते हैं तो यह मन की क्षुद्रताओं, अभ्यस्त खांचे को तोड़ देता है।

यदि आप अपनी सोच, अपने कार्य करने के तरीकों के प्रति ज़रा भी जागरूक हैं, तो आप पाएंगे कि आपके पास मौलिकता बहुत कम है, अगर कुछ है भी तो। युवा मन निर्णायक मन है; युवा मन वह मन है जो पूछताछ कर रहा है, खोज रहा है, देख रहा है, अनुभव कर रहा है। पारंपरिक मन पुराना मन है; यह एक मरा हुआ दिमाग है, भले ही यह सभी वेदों को उद्धृत कर सकता है, पवित्र पुस्तकों के पन्नों को दोहरा सकता है। एक जाति के रूप में हम बहुत पुराने हैं, और इसलिए हमारा पालन-पोषण हुआ है

यह परंपरा, और हम दोहराते हैं, दोहराते हैं, और कुछ भी मौलिक नहीं है। आपके पास अपना कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है जो रचनात्मक हो। यदि आप बिल्कुल भी रचनात्मक हैं, तो यह केवल वैज्ञानिक क्षेत्र में, प्रयोगशाला में है, और अस्तित्व की वह आंतरिक रचनात्मक स्थिति नहीं है जो अकेले कुछ नया अनुभव कर सके, कुछ ऐसा जो दुनिया की समस्याओं का समाधान कर सके। लेकिन दुर्भाग्य से इस देश के साथ-साथ अन्य देशों पर भी पुरानी मानसिकता का बोझ है, और परंपरा को तोड़ना और शंकर, बुद्ध, ईसा मसीह या आपके अपने पसंदीदा गुरु ने आपको जो बताया है, उसके संदर्भ में नहीं सोचना असाधारण रूप से कठिन है। . इन सबको दूर करने के लिए इस बात की बहुत अधिक समझ की आवश्यकता है कि मन अधिकार, परंपरा की तलाश क्यों करता है। जाहिर है वह सुरक्षित रहना चाहता है, लेकिन जो मन सुरक्षित है वह कभी भी नया अनुभव नहीं कर सकता; यह केवल दोहरा सकता है, और दोहराव का अनुभव नहीं हो रहा है। इसलिए उन लोगों से सावधान रहें जो गीता या कुछ और उद्धृत करते हैं; वे आपकी रचनात्मक होने की क्षमता को नष्ट कर देते हैं। रचनात्मक व्यक्ति समाज के लिए खतरा है और इसलिए समाज उस व्यक्ति को पकड़ कर नष्ट कर देता है जो जागृत होना, असंतुष्ट होना, खोज करना, अनुभव करना शुरू कर देता है। किसी भी रूप में अधिकार बुरा है, और मैं बिना किसी निंदा के उस शब्द का उपयोग कर रहा हूं। जैसे कोबरा जहरीला होता है, वैसे ही अधिकार जहरीला होता है। आप हंस सकते हैं, लेकिन आपकी हंसी इस बात का संकेत है कि आप इसे नजरअंदाज कर रहे हैं; आप वास्तव में सत्ता की जहरीली प्रकृति को नहीं देखते हैं।

प्राधिकरण आपको सुरक्षा, संरक्षा की ओर ले जाता है; कम से कम आप सोचते हैं कि ऐसा होता है, लेकिन ऐसा नहीं होता—यह आपको नष्ट कर देता है।

तो मेरे लिए, जैसा कि मैं इस सब के बारे में बात कर रहा हूं, वहां केवल शिक्षण है, शिक्षक नहीं। वक्ता बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है, और शिक्षण केवल तभी महत्वपूर्ण है जब आप समझते हैं और अनुभव करते हैं; लेकिन यदि आप केवल दोहराते हैं या तुलना करते हैं, तो यह मर चुका है। इसलिए कृपया उस व्यक्ति को शिक्षण से हटा दें ताकि आप बिना प्रभावित हुए जो कहा जा रहा है उसमें प्रवेश कर सकें। तब आप सारा अधिकार हटा देते हैं और इस तथ्य से रूबरू होते हैं कि यह सच है या झूठ। लेकिन यदि आप व्यक्ति और उसकी तथाकथित उपलब्धि का परिचय उसके रूप-रंग, हाव-भाव और परंपरा से कराते हैं, तो आप शिक्षण को विकृत कर देते हैं। यदि आप वास्तव में उस एक बात को समझ लेते हैं - कि महत्वपूर्ण यह है कि क्या कहा गया है और यह नहीं कि इसे कौन कहता है - तो आप देखेंगे कि आपके दिमाग में कितनी असाधारण बात घटित होती है। तब आप पाएंगे कि आप यह देखना चाहेंगे कि शिक्षा की सच्चाई क्या है और यह झूठ है या असली। इसके लिए वास्तविक, निष्पक्ष, आलोचनात्मक अवलोकन, परीक्षण की आवश्यकता होती है।

मैं जिस पर चर्चा करना चाहता हूं वह कुछ ऐसा है जिसे आप मेरे विवरण के माध्यम से अनुभव कर सकते हैं। वर्णन वास्तविक नहीं है, केवल आपका अनुभव ही बता सकता है

असली बनो. इसलिए आप जो सुनते हैं उसे सत्य और अपने अनुभव को असत्य न समझें।

अब कार्य और कारण दोनों बांधते हैं क्योंकि कारण के बिना कार्य अधूरा है, और कार्य के बिना कारण अधूरा है, और मन की प्रक्रिया को समझे बिना कार्य और कारण दोनों बांधते हैं। क्या ऐसा नहीं है? मैं किसी भी वकील की तरह सबसे तार्किक, चतुराई से तर्क करने में सक्षम हो सकता हूं, लेकिन अगर जिस पृष्ठभूमि से मेरा तर्क निकलता है, उस पर कभी चर्चा नहीं की जाती, पूछताछ नहीं की जाती, तो मैं अपनी पृष्ठभूमि से बंधा हुआ हूं। और जो मनुष्य विभिन्न रहस्यों, भ्रमों, भ्रमों और मतिभ्रमों के माध्यम से अकारण कार्य करता है, ऐसा मनुष्य भी स्पष्ट रूप से बंधा हुआ होता है और उत्पात मचाता है। इसलिए कार्य और कारण दोनों तब तक बंधे रहते हैं जब तक कि मन के तरीकों की समझ न हो। इस दुनिया में हमें रहना है, अर्थात कार्य करना और तर्क करना, लेकिन आप तर्क करने और कार्य करने में जितने अधिक चतुर होंगे, आप उतनी ही अधिक शरारतें करेंगे जब तक कि आप पहले अपने अस्तित्व की पूरी पृष्ठभूमि, अपनी प्रवृत्तियों, सोचने के तरीकों को न समझ लें। और कंडीशनिंग. यह सब बहुत स्पष्ट प्रतीत होता है।

हममें से अधिकांश लोग कार्रवाई से चिंतित हैं, और हम चीजें करना चाहते हैं; हम न तो शांत बैठ सकते हैं और न ही पहाड़ियों में जा सकते हैं; हमें लगता है कि हमें कार्य करना होगा, सुधार करना होगा, एक अलग दुनिया, एक अलग स्थिति, एक क्रांति लानी होगी। और हम सोचते हैं कि इसे तार्किक, सावधानीपूर्वक तर्क-वितर्क, द्वंद्वात्मक दृष्टिकोण और अन्य सभी कार्यों के माध्यम से लाया जा सकता है। लेकिन वास्तव में आमूलचूल क्रांति व्यक्ति को लानी होगी, न कि जनसमूह को, क्योंकि जनसमूह जैसी कोई चीज नहीं होती। व्यक्ति को मन की पूरी प्रक्रिया को समझना होगा, जिसका अर्थ है आपका अपना मन, मेरा नहीं। आप मुझे समझने के लिए नहीं सुन रहे हैं, आप स्वयं को समझने के लिए सुन रहे हैं, और स्वयं की समझ - जिसमें क्रिया और तर्क दोनों हैं - ध्यान है। आइए इसमें चलते हैं.

सबसे पहले तो ध्यान में ध्यान भटकाने जैसी कोई चीज़ नहीं होती। व्याकुलता का संबंध एकाग्रता से है। आप जानते हैं कि दुनिया भर में सभी तथाकथित धार्मिक लोग कैसे ध्यान केंद्रित करते हैं; चाहे वे मठों में रहें, गुफाओं में रहें, मंदिर जाएं, या सुबह चुपचाप अकेले बैठे रहें, उनके लिए एकाग्रता बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन एकाग्रता विनाशकारी है.

एकाग्रता का अर्थ है ध्यान भटकाना, यानी मन का भटक जाना।
कृपया अपना मन देखें. मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी लम्बे समय तक ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन यदि आपने किया है तो आपको पता चल जाएगा कि क्या होता है। आपका दिमाग संकुचित हो जाता है, ध्यान केंद्रित करता है, हर दूसरे विचार, इच्छा, प्रभाव को काट देता है और पूरी तरह से किसी चीज़ में लीन हो जाता है। आइए हम उसमें जाएं और अवशोषण की स्थिति की जांच करें। आपने किसी लड़के को किसी चीज में डूबे हुए देखा होगा

खिलौना; खिलौना रोमांचक, नया, यांत्रिक, जटिल है और वह इसमें पूरी तरह लीन है। क्या वह एकाग्रता है? हां, क्योंकि खिलौना उसके पूरे अस्तित्व को सोख लेता है और वह उस पर केंद्रित हो जाता है। वहां खिलौने का महत्व है. आपके साथ पुस्तक, शब्द, मंत्र, गुरु का खिलौना - एक चित्र, एक छवि - महत्वपूर्ण है, और आप आशा करते हैं कि यह आपको अवशोषित कर लेगा; और यदि ऐसा नहीं होता है, तो आप उस विचार को आत्मसात कर लेते हैं और उसी में जीते हैं। या तो छवि आपको अवशोषित कर लेती है या आप छवि को अवशोषित कर लेते हैं, और उसके अनुसार जीते हैं। यदि आप किसी विचार, किंवदंती, मिथक में पूरी तरह से डूब सकते हैं और किसी ध्यान संबंधी भ्रम में पड़ सकते हैं, तो आप सोचते हैं कि आपको सत्य का एहसास हो गया है। लेकिन एक चीज़ में इतना डूबा हुआ मन वास्तविकता को देखने में असमर्थ होता है। ऐसा मन विनाशकारी मन है; यह स्वयं को नष्ट कर देता है। आप ऐसी चीजें देखना शुरू कर देते हैं जो वहां नहीं हैं, जो मतिभ्रम है, या आप ऐसी चीजें देखते हैं जो वास्तव में वहां हैं लेकिन उन्हें अपनी इच्छाओं के अनुरूप अनुवादित करते हैं, जो भ्रम है।

इसलिए यदि कोई एकाग्रता के खतरों को देखता है, तो वह देखेगा कि ध्यान की एक बिल्कुल अलग प्रक्रिया है जो एकाग्रता नहीं है। आप एकाग्रता से कभी नहीं सीख सकते; आप हमेशा ध्यान के माध्यम से सीख सकते हैं।

ध्यान कभी भी संकुचित नहीं होता; इसके विपरीत, यह व्यापक है। एक मन जो केवल आप जो चाहते हैं उस पर ध्यान केंद्रित कर रहा है वह ध्यान की स्थिति में नहीं है।
ऐसे लोग हैं जिन्होंने ध्यान को बीस साल दिए हैं, और वे एक ऐसे बिंदु पर आ गए हैं जिसके आगे वे नहीं जा सकते क्योंकि उन्होंने जिस पर ध्यान किया है वह उनके लिए बाधा बन गया है, उनकी जेल बन गई है, और वे इसे तोड़ नहीं सकते हैं। वे दर्शन, ईश्वर, यह और वह देखते हैं, और महान संतों के रूप में बहुत लोकप्रिय हैं। लेकिन वे जो देखते हैं वह उनका अपना प्रक्षेपण है, उनका अपना विचार है, जो क्रिस्टलीकृत हो रहा है, आकार ले रहा है, जिसमें वे फंस गए हैं, और हम सोचते हैं कि यह एक अद्भुत बात है। यह सबसे मूर्खतापूर्ण बात है, और मैं उस शब्द का उपयोग उसके शब्दकोश अर्थ में कर रहा हूं, निंदात्मक अर्थ में नहीं।

क्या आप इसे नहीं देख सकते, इसकी सच्चाई का अनुभव नहीं कर सकते कि एकाग्रता मन के लिए विनाशकारी है? मन एक चलती-फिरती चीज़ है, महत्वपूर्ण, व्यापक, जबरदस्त ऊर्जा से भरपूर; यह उस रचनात्मकता का भंडार है जिसके बारे में आपको कोई अंदाज़ा नहीं है; यह सबसे जटिल और अज्ञात चीज़ में प्रवेश कर सकता है; यह अचेतन में जा सकता है और उसे खोज सकता है जो सबसे असाधारण है। और फिर भी आप इसे एक संकीर्ण बिंदु पर मजबूर करते हैं क्योंकि आप सोचते हैं कि यह ईश्वर है, वास्तविक चीज़ है, और इस तरह आप इसे नष्ट कर देते हैं। सभी संतों और संन्यासियों को देखो और उन्होंने इस गरीब, अभागे देश के साथ क्या किया है! उन्होंने अपनी इच्छाओं को अनुशासित कर लिया है, अपने मन को नियंत्रित कर लिया है, सौंदर्य के हर रूप को दबा दिया है, और इसलिए उनमें कोई जुनून, जीवंत गुणवत्ता, वास्तविकता का जीवित झरना नहीं है।

तो यदि आप इस सत्य को देख लें - कि एकाग्रता विनाशकारी है, अपने चारों ओर एक अवरोध, एक दीवार बनाने जैसा है - तो आप क्या करेंगे? तो फिर पूछना ही पड़ेगा कि क्या कोई भिन्न प्रकार का अटेन्शन होता है ना? लेकिन पहले व्यक्ति को वास्तव में यह देखना होगा कि एकाग्रता मन को मुक्त नहीं कर सकती; इसके विपरीत, यह मन को कैद कर लेता है। यहां तक कि स्कूली छात्र भी जानता है कि सीखने के लिए आपको जागते रहना होगा और सुनना होगा। सीखने का मतलब परीक्षा पास करने के लिए किसी पाशविक किताब को दोहराना मात्र नहीं है। सीखना समझने, पूछताछ करने, खोज करने की भावना है, जिसके लिए आपका दिमाग अंतर्दृष्टि की क्षमता के साथ असाधारण रूप से तेज़, तरल होना चाहिए।

तो जिस मन में एकाग्रता की शक्ति है, जो कहता है कि उसका विचार पर पूर्ण नियंत्रण है, वह मूर्ख मन है। यदि ऐसा है, तो आपको पूछताछ का एक तरीका खोजना होगा जो केवल एकाग्रता के माध्यम से नहीं हो। एकाग्रता का अर्थ है ध्यान भटकाना, है न? मन एक स्थिति ले लेता है और कहता है कि बाकी सब कुछ ध्यान भटकाने वाला है। इसमें कहा गया है कि मुझे इस बारे में अवश्य सोचना चाहिए और बाकी सभी चीजों को छोड़ देना चाहिए। अब मेरे लिए ध्यान भटकाने जैसी कोई चीज़ नहीं है क्योंकि ऐसी कोई केंद्रीय स्थिति नहीं है जिसे मन ले लेता है और फिर कहता है, "मैं इसका पीछा करूंगा और उसका नहीं।" तो आइए हम शब्द और व्याकुलता के निंदात्मक भाव दोनों को दूर कर दें। कृपया अनुभव करें कि मैं क्या कह रहा हूं।

उस शब्द से न केवल मौखिक रूप से बल्कि भावनात्मक रूप से, आंतरिक रूप से व्याकुलता को दूर करें।
फिर आप देखेंगे कि आपके मन का क्या होता है। वर्तमान में हमारे लिए एकाग्रता और व्याकुलता है, एक केंद्रित दृष्टिकोण और भटकाव है।
तो आप देखिए कि हमने एक द्वंद्व और इसलिए एक संघर्ष पैदा कर दिया है। आप अपना जीवन चुने हुए विचारों और विकर्षणों के बीच संघर्ष करते हुए बिताते हैं, और जब आपको एक घंटा मिलता है जब आप पूरी तरह से एक विचार से बंधे होते हैं, तो आपको लगता है कि आपने कुछ हासिल कर लिया है। लेकिन अगर आप ध्यान भटकाने के इस विचार को पूरी तरह से हटा दें, तो आप पाएंगे कि आपका मन प्रतिक्रिया की स्थिति में है - जुड़ाव की स्थिति में जिसे आप "भटकना" कहते हैं। यह तथ्य है, और आपने संघर्ष के तत्व को हटा दिया है। तब आप भटकन से निपटने के लिए स्वतंत्र हैं; आप यह पूछ सकते हैं कि मन क्यों भटकता है और न केवल इसे रोकने का, बल्कि इसे नियंत्रित करने का प्रयास करें।

फिर, चूँकि आपने शब्द को हटा दिया है, विचलित होने की भावना, अब जो काम कर रहा है वह एक मन है जो भटकने के प्रति, प्रतिक्रिया के प्रति चौकस है। क्या ऐसा नहीं है? मैंने व्याकुलता की भावना को दूर कर दिया है और अब मेरा मन विचार की हर गतिविधि के प्रति बहुत सतर्क है क्योंकि उसने ऐसी स्थिति नहीं ली है जिसमें वह विचार की हर गतिविधि को व्याकुलता कहे। मुझे आशा है कि जैसा मैं बात कर रहा हूं वैसा आप अनुभव कर रहे होंगे। तो तब आपका मन ध्यान की स्थिति में होता है, कुछ सीखने या अस्वीकार करने, नियंत्रित करने या दबाने की कोशिश नहीं कर रहा होता है।

आइए हम उस शब्द ध्यान के बारे में जानें। लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह अब तक स्पष्ट है। हम यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि ध्यान क्या है - ध्यान कैसे करें। यदि आप ध्यान की विभिन्न प्रणालियाँ सीखते हैं, तो वह ध्यान नहीं है; आप बस एक तकनीक सीख रहे हैं। अब मैं कहता हूं कि एक ध्यान है जो एकाग्र तो हो सकता है, लेकिन एकाग्रता से एकाग्र नहीं हो सकता। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि ध्यान क्या है, और इससे उस छात्र को भी मदद मिलेगी जो सीखना चाहता है, अगर वह इसमें बहुत गहराई से जाए। अब सवाल यह है कि क्या एकाग्र मन सीख सकता है? क्या आपने कभी अपने मन की स्थिति पर गौर किया है जब वह सीखता है? मैं अभी कुछ कह रहा हूं, कुछ नया कहा जा रहा है और आप इसके बारे में सीख रहे हैं। हमने देखा है कि एकाग्रता विनाशकारी है, तो सीखने वाले मन की स्थिति क्या है? यह बिना किसी दबाव के चौकस है, यह बिना किसी अनुरूपता के चौकस है, बिना किसी प्रकार के प्रभाव के, बिना किसी हेरफेर के, बिना किसी पुरस्कार की मांग किए या सजा से बचने के। क्या आप अपने मन पर ध्यान दे रहे हैं? तो जो मन सीखता है वह एक चौकस मन है जिसमें ये अन्य प्रभाव मौजूद नहीं होते हैं। ध्यान की उस अवस्था में आप सीखते हैं। यही एकमात्र अवस्था है जिसमें आप वास्तव में अनुभव कर सकते हैं—किसी अन्य अवस्था में नहीं।

अब आपने और मैंने यह स्थापित कर लिया है, या यूँ कहें कि समझ लिया है कि चौकस रहने का क्या मतलब है, उस ध्यान को प्राप्त करना जिसमें किसी प्रकार की बाध्यता न हो; तो आप बिना मेहनत के अटेंड कर रहे हैं ना, क्योंकि आप सीख रहे हैं। मैं तुम्हें सम्मोहित नहीं कर रहा हूँ. मैं आप पर कुछ थोपने की कोशिश नहीं कर रहा हूं। आप जानना चाहते हैं, आप सीखना चाहते हैं, और मैं आपको सीखने के लिए मजबूर कर रहा हूं। वह अलग बात है. हम मन की उस अवस्था के बारे में पूछताछ कर रहे हैं जो सीखती है, और हमें एहसास होता है कि मन की वह अवस्था ध्यान है।

कृपया इसमें जाएं और आप देखेंगे कि राज्य की कोई सीमा नहीं है, कोई सरहद नहीं है। क्या इसका आपके लिए कोई मतलब है? कृपया मुझसे सहमत न हों क्योंकि यह सहमति का मामला नहीं है; यह प्रत्यक्ष अनुभव का विषय है। एकाग्रता या तल्लीनता में - जैसे एक भक्त जो कुछ भी करता है उसमें लीन रहता है - उस स्थिति में एक सीमा होती है। क्या आपने ध्यान नहीं दिया? जब आप ध्यान केंद्रित कर रहे होते हैं तो आप मन की सीमाओं को लगभग महसूस कर सकते हैं। आपकी सभी क्षमताएँ - भावनात्मक, मानसिक, मौखिक - सब कुछ एक निश्चित बिंदु पर केंद्रित है, और जब कोई ध्यान केंद्रित होता है और कोई विस्तार नहीं होता है, तो एक सीमा होती है। एक मन जो चौकस है, जो जानता है कि वास्तव में ध्यान क्या है - जिसका मैंने वर्णन किया है - उसकी कोई सीमा नहीं है। मन ऐसी स्थिति में आ सकता है. क्या आप समझते हैं श्रीमान? यह आपके लिए एक महत्वपूर्ण खोज है; यह एक अनुभव है.

मैं इसे अलग-अलग शब्दों में कहूंगा. हमारा मन पहचानने का तंत्र है; यह मशीन है, पहचान का रिकॉर्ड। तुम वृक्ष, प्रकाश, मंदिर, पुरुष, स्त्री, पक्षी को पहचानते हो; आप अपना जानते हैं

विचार, आपकी प्रवृत्तियाँ, आपको जो अपमान मिला है, जो पीड़ा आपने महसूस की है - ये सभी यादें पहचान का रिकॉर्ड हैं, क्या ऐसा नहीं है? तो हमारा दिमाग प्रक्रिया है, पहचान का तंत्र है, और हम हमेशा इस मान्यता का विस्तार करने की कोशिश कर रहे हैं - अधिक जानने के लिए, अधिक अनुभव करने के लिए, और अधिक पढ़ने के लिए। यह अधिग्रहण सभी मान्यता के दायरे में है। अनिवार्य रूप से पहचान स्वयं का केंद्र है, न कि भ्रामक सुपर-स्व, बल्कि वह स्वयं जो महत्वाकांक्षी, शातिर, निर्दयी, क्रूर है, जो एक महान व्यक्ति या संत बनने की कोशिश कर रहा है, या जो बस कुछ भी नहीं बनना चाहता है . यह वह केंद्र है जो मान्यता के माध्यम से विस्तार कर रहा है। तो मन अपनी पहचान की सीमाओं को जान सकता है। क्या आप यह जानते हैं, महोदय? कृपया सहमत न हों क्योंकि आप यह नहीं जानते। तुमने इसके साथ कभी नहीं खेला; आप इसमें कभी नहीं गये हैं। लेकिन अगर आप इसमें जाएंगे, तो आप पाएंगे कि आप पहचानने की प्रक्रिया को बड़ा कर सकते हैं, क्षेत्र को, सीमा को चौड़ा कर सकते हैं, चौड़ा करते जा सकते हैं, चौड़ा करते जा सकते हैं। यह परिवार, समूह, जाति, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भावना की अवधारणा की तरह है - सभी मूल रूप से एक ही हैं, लेकिन व्यापक रूप से विस्तारित हो रहे हैं।

अब यदि कोई ध्यान की स्थिति को समझे और अनुभव करे, तो आप पाएंगे कि मन पहचान की सीमाओं से परे जा सकता है। इसे फिर से अलग ढंग से कहें तो, मन ज्ञात की सीमाओं के भीतर कार्य करता है। मैं पूना, बंबई, लंदन, न्यूयॉर्क को जानता हूं; मैं अपने परिवार, अपने गुणों, अपनी प्रवृत्तियों को जानता हूं; मुझे पता है कि मेरी चाहत क्या है; मैं अपनी परंपरा जानता हूं कि ईश्वर है या ईश्वर नहीं है; मेरी स्मृति यह सब है. तो मेरी स्मृति ज्ञात के क्षेत्र में कार्य करती है। आप उस क्षेत्र का विस्तार कर सकते हैं और अधिक से अधिक, अनिश्चित काल तक जान सकते हैं, जो कि चतुर दिमाग, विद्वान दिमाग, विद्वान दिमाग, वह दिमाग जो बहुत कुछ जानता है, की अंतहीन गतिविधि है। इसका एक केंद्र है जहां से यह सीमा तक जाती है और वापस आ जाती है। यह लहरों में चलता है लेकिन हमेशा ज्ञात के क्षेत्र के भीतर, और जब कोई अज्ञात, अज्ञात, अकल्पनीय के बारे में बात करता है, तो यह केंद्र सीमा की ओर बढ़ता है और अनुमान के माध्यम से सीमा पार झाँकने की कोशिश करता है, लेकिन यह ज्ञात पर टिका होता है . इसके सभी देवता ज्ञात हैं। आपकी पवित्र पुस्तकों ने इसके बारे में बताया है, किसी गरीब सज्जन ने हजारों साल पहले इसका अनुभव किया था, और आप इसे दोहराते हैं और इसका अनुभव करने की आशा करते हैं। तो आपके पास एक केंद्र है जो उस चीज़ तक पहुंचने की उम्मीद कर रहा है जिसके बारे में आप सोचते हैं कि उसका अस्तित्व है; यानी, आपका दिमाग जो कुछ भी जानता है उसे भविष्य में प्रोजेक्ट करता है। लेकिन विचार भले ही कितना भी दूर चला जाए, यह अभी भी ज्ञात के दायरे में ही है।

तो यह सब देखकर - तरीके, तरकीबें, सूक्ष्मताएं, विचार की धूर्त प्रक्रियाएं - मन इन सबको कैसे तोड़ सकता है, सदियों, कई जिंदगियों को नहीं, बल्कि एक भूखे आदमी के रूप में जो तुरंत भोजन चाहता है।

आप उससे यह नहीं कह सकते, "समाजवाद आने दो और तुम्हें भोजन मिलेगा"; वह अब भोजन चाहता है. इसी प्रकार मन को यह देखना चाहिए कि ज्ञात के क्षेत्र में कोई उत्तर नहीं है। मन ज्ञात, पहचानने योग्य की सीमा तक जा सकता है, जिसमें वह अज्ञात भी शामिल है जिसे उसने प्रक्षेपित किया है, लेकिन वह इसे तोड़ नहीं सकता है। न ही यह टूटना चाहता है; अधिकांश लोग ऐसा नहीं चाहते क्योंकि अज्ञात बहुत खतरनाक है। यह अज्ञात समुद्र में प्रवेश करने जैसा है, आपको डर है कि आप डूब जाएंगे। तो आप कहते हैं, "बेहतर होगा कि मैं यहीं रहूँ और पूरी दुनिया को अपने संकीर्ण हृदय में ले आऊँ।" तो मन को कैसे तोड़ना है?

यही वास्तविक ध्यान है. आप समझे श्रीमान? यह उस क्षण से ध्यान था जब मैंने परंपरा के बारे में पूछताछ करना शुरू किया और परंपरा को दूर रखना समझा क्योंकि यह सुरक्षा की इच्छा है; तब सब शिक्षकों को हटा देना, परन्तु उपदेश को समझना; फिर सारे अधिकार हटाकर असुरक्षा को देखना; फिर एकाग्रता और उसकी विनाशकारीता को समझना; और फिर मन की एक ऐसी अवस्था की खोज करना, अनुभव करना जो चौकस हो।

ऐसा मन बातूनी मन नहीं है। चौकस मन बकबक करने वाला मन नहीं है। यदि आप इसकी सुंदरता देखते हैं, यदि आप वास्तव में इसका अनुभव करते हैं, तो आप अपने मन को संचालित होते हुए देख सकते हैं। तब मन स्वयं को देखता है क्योंकि यह परंपरा में और ज्ञात की सीमाओं तक कार्य करता है।

तो पूछताछ, जब हमने शुरू की थी तब से लेकर अब तक, ध्यान की एक प्रक्रिया है। ध्यान यह नहीं है कि मन की शांति कैसे प्राप्त करें, मौन कैसे रहें, कैसे प्राप्त करें। वे सभी अपरिपक्व, बचकानी गतिविधियाँ हैं। आप एक दवा ले सकते हैं और अपने दिमाग को बिल्कुल शांत कर सकते हैं। आप सभी प्रकार की चालें कर सकते हैं और मन की शांति पा सकते हैं, लेकिन ऐसा मन अभी भी क्षुद्र, छोटा, संकीर्ण है। तो यह पूरी प्रक्रिया, मन का अपने प्रति जागृत होना ही ध्यान है। अज्ञात के बारे में कोई भी पूछताछ अटकल है, और अटकल लगाने वाला दिमाग एक चौकस दिमाग नहीं है। दार्शनिक, विद्वान, सिद्धांतकार, जो लोग कहते हैं कि ईश्वर यह है या वह है, बस शब्दों का जाल बुनते हैं। इसलिए जो मन चौकस है उसमें सम्मानजनकता का गुण नहीं है। इसमें गुण है, लेकिन ऐसा गुण नहीं जिसे आप पहचान सकें। इसके गुण को रोका नहीं जा सकता, जैसे आप हवा को अपनी मुट्ठी में नहीं रख सकते। सद्गुण को आपके दिमाग में एक अधिकार के रूप में नहीं रखा जा सकता है, और यही इसकी सुंदरता है। जिस क्षण आप सचेत हो जाते हैं कि आप सद्गुणी हैं, आप वैसा होना बंद कर देते हैं, और जो मन ध्यान देना बंद कर देता है वह सद्गुणी मन नहीं रह जाता है। और एक चौकस मन जो किसी खिलौने या विश्वास या विचार में लीन नहीं होता है - ऐसा मन एक खाली दिमाग है। आप आश्चर्यचकित लग रहे हैं, महोदय, और ऐसा इसलिए है क्योंकि आपने वास्तव में इस पूरी पूछताछ का पालन नहीं किया है; अगर तुम्हारे पास ये होता

इसका पालन किया अर्थात इसका अनुभव किया तो आप देखेंगे कि आपका मन खाली है। मुझे इसे दूसरी तरह से रखने दीजिए.

अब मन विचारों, भटकते विचारों, ऐसे विचारों से घिरा हुआ है जो लगातार आते और जाते रहते हैं, या विशेष विचार जिनका मन पीछा करता है। क्या ऐसा नहीं है? या तो विचार घर में हवा की तरह मन में घूमते हैं या मन विचारों का पीछा करता है। अब मैंने चौकस दिमाग के लिए दरवाजा खोल दिया है, लेकिन आपको इसके माध्यम से चलना होगा। आप इसे मन में खोजने से नहीं पा सकते। चौकस मन खाली है - जो खाली दिमाग वाला, कोरा नहीं है। खाली कप ही उपयोगी होता है, भरा हुआ कप नहीं।

एक मन जो उन सभी चीजों से शुद्ध हो जाता है जिनके बारे में हम बात करते रहे हैं, एक ऐसा मन जिसमें कोई संघर्ष नहीं है, ऐसा मन, खाली होने पर, या तो अज्ञात को प्राप्त कर सकता है या वह खाली रह सकता है और वहीं से कार्य कर सकता है। यदि कोई इस सब से गुजरता है और पूछताछ करता है, अनुभव करता है, तो वह वास्तविक धार्मिक क्रांति है, एकमात्र चीज जो इस दुनिया में कुछ भी सार्थक करने जा रही है - साम्यवादी, समाजवादी या किसी भी प्रकार की क्रांति नहीं। वास्तविक क्रांति मन में है, और वास्तविक शून्यता की वह स्थिति रचनात्मक स्थिति है क्योंकि जो खाली है उसकी कोई सीमा नहीं है; इसमें न तो गहराई है और न ही ऊंचाई।

यह व्यक्ति के मन की रचनात्मकता ही है जो एक नई दुनिया का निर्माण करने जा रही है, और यही एकमात्र समाधान है, एकमात्र मुक्ति है।

17 सितम्बर 1958

पांचवी वार्ता पूना में

मुझे लगता है कि हमारी सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह जानना है कि स्वतंत्रता क्या है, और इस समस्या को समझने की आवश्यकता काफी विशाल और निरंतर होनी चाहिए क्योंकि इतने सारे विशेषज्ञों द्वारा बहुत अधिक प्रचार किया जाता है, बाहरी और आंतरिक मजबूरी के कई और विभिन्न रूप होते हैं। , और सभी अराजक, विरोधाभासी अनुनय, प्रभाव और धारणाएँ। मुझे यकीन है कि हमने खुद से यह सवाल जरूर पूछा होगा: स्वतंत्रता क्या है? जैसा कि आप और मैं जानते हैं, दुनिया में हर जगह अधिनायकवाद फैल रहा है, न केवल राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्तर पर, बल्कि तथाकथित आध्यात्मिक स्तर पर भी।

हर जगह एक सम्मोहक पर्यावरणीय प्रभाव है; समाचार पत्र हमें बताते हैं कि क्या सोचना है, और बहुत सारी पाँच, दस, या पन्द्रह-वर्षीय योजनाएँ हैं। फिर आर्थिक, वैज्ञानिक और नौकरशाही स्तरों पर ये विशेषज्ञ हैं; रोजमर्रा की गतिविधियों की सभी परंपराएँ हैं, हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए; तब वहां तथाकथित पवित्र का संपूर्ण प्रभाव होता है

पुस्तकें; और सिनेमा, रेडियो, अखबार है - दुनिया में हर चीज हमें यह बताने की कोशिश कर रही है कि क्या करना है, क्या सोचना है और क्या नहीं सोचना चाहिए। मुझे नहीं पता कि आपने इस बात पर ध्यान दिया है या नहीं कि स्वयं के बारे में सोचना कितना कठिन होता जा रहा है। दूसरे लोग जो कहते हैं या जो कह चुके हैं, उसे उद्धृत करने में हम इतने विशेषज्ञ हो गए हैं और इस सत्तावादी स्वागत के बीच, स्वतंत्रता कहां है? और आज़ादी से हमारा क्या मतलब है? क्या वहां ऐसी कोई चीज है? मैं स्वतंत्रता शब्द का उपयोग उसके सबसे सरल अर्थ में कर रहा हूं जिसमें मुक्ति शामिल है, वह मन जो मुक्त है, स्वतंत्र है। मैं चाहता हूं, यदि संभव हो तो, आज शाम को उसमें शामिल हो जाऊं।

सबसे पहले, मुझे लगता है कि हमें यह महसूस करना चाहिए कि हमारा दिमाग वास्तव में स्वतंत्र नहीं है। हम जो कुछ भी देखते हैं, हमारा हर विचार, हमारे दिमाग को आकार देता है; अब आप जो भी सोचते हैं, अतीत में आपने जो भी सोचा है और भविष्य में आप जो भी सोचने जा रहे हैं - यह सब मन को आकार देता है। आप सोचते हैं कि आपको क्या बताया गया है, या तो धार्मिक व्यक्ति द्वारा या राजनेता द्वारा, आपके स्कूल में शिक्षक द्वारा, या किताबों और समाचार पत्रों द्वारा। आपके बारे में हर चीज़ आपकी सोच को प्रभावित करती है। आप क्या खाते हैं, आप क्या देखते हैं, आप क्या सुनते हैं, आपकी पत्नी, आपका पति, आपका बच्चा, आपका पड़ोसी - सब कुछ मन को आकार दे रहा है। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है। यहां तक कि जब आप सोचते हैं कि ईश्वर है या कोई ईश्वर नहीं है, तो यह भी परंपरा का प्रभाव है। तो हमारा मन वह क्षेत्र है जिसमें कई विरोधाभासी प्रभाव हैं जो एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध में हैं।

कृपया यह सब अवश्य सुनें क्योंकि, जैसा कि मैं कहता रहा हूँ, जब तक हम स्वयं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव नहीं करते, तब तक आपका इस प्रकार की बातचीत में आना कोई मायने नहीं रखता। कृपया मुझ पर विश्वास करें कि जब तक आप अनुभव नहीं करते कि क्या कहा जा रहा है, न केवल विवरण का पालन करें बल्कि जागरूक रहें, संज्ञान लें, अपनी सोच के तरीकों को न जानें और इस प्रकार अनुभव न करें, इन बातों का कोई मतलब नहीं होगा। आख़िरकार, मैं केवल यह वर्णन कर रहा हूँ कि वास्तव में किसी के जीवन में, उसके वातावरण में क्या हो रहा है, ताकि हम इसके बारे में जागरूक हो सकें और देख सकें कि क्या हम इसे तोड़ सकते हैं, और इसे तोड़ने के निहितार्थ क्या हैं। क्योंकि जाहिर तौर पर हम अब गुलाम हैं, या तो हिंदू गुलाम, कैथोलिक गुलाम, रूसी गुलाम, या किसी न किसी तरह के गुलाम। हम सभी कुछ प्रकार की सोच के गुलाम हैं, और इन सबके बीच, हम पूछते हैं कि क्या हम स्वतंत्र हो सकते हैं और स्वतंत्रता और अधिकार की संरचना के बारे में बात कर सकते हैं, इत्यादि।

मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश के लिए यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि हम जो सोचते हैं वह वातानुकूलित है। आपका विचार जो भी हो - चाहे वह कितना भी महान और व्यापक हो, या कितना भी सीमित और क्षुद्र हो - वह वातानुकूलित है, और यदि आप उस विचार को आगे बढ़ाते हैं तो विचार की कोई स्वतंत्रता नहीं हो सकती है। विचार स्वयं वातानुकूलित है क्योंकि विचार है

स्मृति की प्रतिक्रिया, और स्मृति आपके सभी अनुभवों का अवशेष है, जो बदले में आपकी कंडीशनिंग का परिणाम है। इसलिए यदि कोई यह महसूस करता है कि सभी सोच, किसी भी स्तर पर, वातानुकूलित है, तो हम देखेंगे कि सोच इस सीमा को तोड़ने का साधन नहीं है - जिसका मतलब यह नहीं है कि हमें कुछ खाली या काल्पनिक चुप्पी में जाना चाहिए। वास्तव में तथ्य तो यह है, क्या ऐसा नहीं है कि प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना, प्रत्येक क्रिया अनुरूप, वातानुकूलित, प्रभावित होती है। उदाहरण के लिए, कोई संत आता है और अपनी वाणी से, भाव-भंगिमा से, रूप से, यह-वह कह कर आपको प्रभावित कर लेता है। और हम प्रभावित होना चाहते हैं और हर प्रकार के प्रभाव से दूर जाने से डरते हैं और देखते हैं कि क्या हम गहराई में जा सकते हैं और पता लगा सकते हैं कि क्या कोई ऐसी स्थिति है जो प्रभाव का परिणाम नहीं है।

हम प्रभावित क्यों हैं? राजनीति में, जैसा कि आप जानते हैं, राजनेता का काम हमें प्रभावित करना है; और प्रत्येक पुस्तक, प्रत्येक शिक्षक, प्रत्येक गुरु - जितना अधिक शक्तिशाली, जितना अधिक वाक्पटु, उतना ही अच्छा हमें पसंद आता है - अपने विचार, अपनी जीवन शैली, अपने आचरण के तरीके को हम पर थोपता है। तो जीवन विचारों की लड़ाई है, प्रभावों की लड़ाई है, और आपका मन इस लड़ाई का क्षेत्र है। राजनीतिज्ञ आपका मन चाहता है; गुरु आपका मन चाहता है; संत कहते हैं, "यह करो और वह नहीं," और वह आपका मन भी चाहते हैं; और हर परंपरा, आदत या रीति-रिवाज का हर रूप, आपके दिमाग को प्रभावित करता है, आकार देता है, मार्गदर्शन करता है, नियंत्रित करता है। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है। इसे नकारना बेतुका होगा. तथ्य तो यही है.

आप जानते हैं, महोदय, यदि मैं थोड़ा विचलित हो जाऊं, तो मुझे लगता है कि सुंदरता की सराहना करना आवश्यक है। आकाश की सुंदरता, पहाड़ी पर सूरज की सुंदरता, मुस्कान, चेहरे, हावभाव की सुंदरता, पानी पर चांदनी की सुंदरता, लुप्त होते बादलों की सुंदरता, पक्षी का गीत - यह आवश्यक है इसे देखना, इसे महसूस करना, इसके साथ रहना, और मुझे लगता है कि सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के लिए यह सबसे पहली आवश्यकता है। हममें से अधिकांश लोग अपने बारे में इस असाधारण ब्रह्मांड से इतने बेपरवाह हैं; हम कभी हवा में पत्ते का हिलना भी नहीं देख पाते; हम कभी भी घास के एक तिनके को नहीं देखते, उसे अपने हाथ से छूते हैं और उसके अस्तित्व की गुणवत्ता को जानते हैं। यह सिर्फ काव्यात्मक होना नहीं है, इसलिए कृपया अटकलबाजी, भावनात्मक स्थिति में न जाएं। मैं कहता हूं कि जीवन के प्रति गहरी भावना रखना जरूरी है और बौद्धिक उलझनों, चर्चाओं, परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने, उद्धरण देने और किसी नई बात को यह कहकर खारिज करने में न फंसें कि यह पहले ही कहा जा चुका है। बुद्धि मार्ग नहीं है. बुद्धि हमारी समस्याओं का समाधान नहीं करेगी; बुद्धि हमें वह पोषण नहीं देगी जो अविनाशी है। बुद्धि तर्क कर सकती है, चर्चा कर सकती है, विश्लेषण कर सकती है, अनुमानों से किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकती है, इत्यादि, लेकिन बुद्धि सीमित है, क्योंकि बुद्धि हमारी कंडीशनिंग का परिणाम है। लेकिन संवेदनशीलता नहीं है. संवेदनशीलता नहीं है

कंडीशनिंग; यह आपको भय और चिंताओं के क्षेत्र से बाहर ले जाता है। वह मन जो इसके बारे में हर चीज के प्रति संवेदनशील नहीं है - पहाड़, टेलीग्राफ का खंभा, दीपक, आवाज, मुस्कान, हर चीज के प्रति - जो सच है उसे खोजने में असमर्थ है।

लेकिन हम अपने दिन और वर्ष बुद्धि को विकसित करने, बहस करने, चर्चा करने, लड़ने, कुछ बनने के लिए संघर्ष करने आदि में बिताते हैं। और फिर भी यह असाधारण रूप से अद्भुत दुनिया, यह धरती जो इतनी समृद्ध है - बंबई की धरती, पंजाब की धरती, रूसी धरती या अमेरिकी धरती नहीं - यह धरती हमारी, तुम्हारी और मेरी है, और यह कोई भावुक बकवास नहीं है; बात तो सही है। लेकिन दुर्भाग्य से हमने इसे अपनी क्षुद्रता से, अपनी प्रांतीयता से विभाजित कर दिया है। और हम जानते हैं कि हमने ऐसा क्यों किया है - अपनी सुरक्षा के लिए, बेहतर नौकरियों के लिए और अधिक नौकरियों के लिए। यह वह राजनीतिक खेल है जो पूरी दुनिया में खेला जा रहा है, और इसलिए हम इंसान होना, इस धरती पर खुशी से रहना और इससे कुछ बनाना भूल जाते हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे अंदर सुंदरता के प्रति वह भावना नहीं है जो भावुक नहीं है, जो भ्रष्ट नहीं है, जो यौन नहीं है, बल्कि देखभाल की भावना है; ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने वह भावना खो दी है - या शायद हमारे पास यह कभी नहीं थी - कि हम लड़ रहे हैं, शब्दों को लेकर एक-दूसरे से जूझ रहे हैं और हमें किसी भी चीज़ की तत्काल समझ नहीं है। देखिये आप भारत में क्या कर रहे हैं - ज़मीन को टुकड़ों में बाँटना, लड़ना और कत्लेआम करना - और यह दुनिया भर में हो रहा है, और किसलिए? बेहतर नौकरियाँ, अधिक नौकरियाँ, अधिक शक्ति पाने के लिए? और इसलिए इस लड़ाई में हम मन की वह गुणवत्ता खो देते हैं जो चीजों को स्वतंत्र रूप से, खुशी से और ईर्ष्या के बिना देख सकता है। हम नहीं जानते कि किसी को शानदार कार चलाते हुए खुश कैसे देखा जाए, कैसे देखा जाए और उससे खुश कैसे हुआ जाए; न ही हम जानते हैं कि अत्यंत गरीबों के प्रति सहानुभूति कैसे रखें। हम उस आदमी से ईर्ष्या करते हैं जिसके पास कार है, और हम उस आदमी से बचते हैं जिसके पास कुछ भी नहीं है। तो कोई प्यार नहीं है, और प्यार के उस गुण के बिना जो वास्तव में सुंदरता का सार है, वह करें जो आप करेंगे - दुनिया के सभी तीर्थयात्राओं पर जाएं, हर मंदिर में जाएं, उन सभी गुणों को विकसित करें जिनके बारे में आप सोच सकते हैं - आप कहीं नहीं मिलेगा. कृपया मुझ पर विश्वास करें, सौंदर्य और प्रेम की वह भावना आपके पास नहीं होगी, भले ही आप अगले दस हजार वर्षों तक अपनी सांस रोककर ध्यान के लिए क्रॉस-लेग करके बैठें। आप हंसते हैं, लेकिन आप इसकी त्रासदी नहीं देखते। हम मन की उस संवेदनशील स्थिति में नहीं हैं जो किसी ऐसी चीज़ को तुरंत प्राप्त कर लेती है, जो सच है। आप जानते हैं कि एक संवेदनशील मन एक रक्षाहीन मन है, यह एक असुरक्षित मन है, और सत्य के प्रवेश के लिए मन को असुरक्षित होना चाहिए - यह सत्य कि आपके पास कोई सहानुभूति नहीं है, यह सत्य है कि आप ईर्ष्यालु हैं।

इसलिए सौंदर्य की भावना का होना आवश्यक है, क्योंकि सौंदर्य की भावना ही प्रेम की भावना है। जैसा कि मैंने कहा, यह थोड़ा विषयांतर है, लेकिन मुझे लगता है कि हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसके संबंध में इसका महत्व है। हम कह रहे हैं कि एक मन जो प्रभावित है, आकार में है, अधिकार से बंधा हुआ है, वह स्पष्ट रूप से कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता है, और वह जो कुछ भी सोचता है, उसके आदर्श कितने ही ऊंचे हों, कितने ही सूक्ष्म और गहरे हों, वह अभी भी वातानुकूलित है। मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि मन, समय के माध्यम से, अनुभव के माध्यम से, हजारों कल के माध्यम से, आकार लेता है, अनुकूलित होता है, और यह विचार कोई रास्ता नहीं है।

जिसका अर्थ यह नहीं है कि आपको विचारहीन होना चाहिए; इसके विपरीत, जब आप बहुत गहराई से, बहुत गहराई से, व्यापक रूप से, व्यापक रूप से, सूक्ष्मता से समझने में सक्षम होंगे, तभी आप पूरी तरह से पहचान पाएंगे कि सोच कितनी छोटी है, कितनी छोटी सोच है। फिर उस कंडीशनिंग की दीवार टूटती है।

तो क्या हम उस तथ्य को नहीं देख सकते - कि सभी विचार वातानुकूलित हैं? चाहे वह साम्यवादी, पूंजीवादी, हिंदू, बौद्ध या बोलने वाले व्यक्ति का विचार हो, सोच वातानुकूलित है। और जाहिर तौर पर मन समय का परिणाम है, एक हजार साल और कल, एक सेकंड पहले और दस साल पहले की प्रतिक्रियाओं का परिणाम है; मन उस अवधि का परिणाम है जिसमें आपने सीखा और झेला है और अतीत और वर्तमान के सभी प्रभावों का। अब ऐसा मन, जाहिर है, स्वतंत्र नहीं हो सकता, और फिर भी हम यही तो चाह रहे हैं, है न? आप जानते हैं कि रूस में भी, सभी अधिनायकवादी देशों में जहां हर चीज नियंत्रित है, वहां भी आजादी की यही तलाश है। वह खोज हम सभी के लिए प्रारंभ में होती है जब हम युवा होते हैं, क्योंकि तब हम क्रांतिकारी होते हैं, हम असंतुष्ट होते हैं, हम जानना चाहते हैं, हम जिज्ञासु होते हैं, हम संघर्ष कर रहे होते हैं; लेकिन जल्द ही वह असंतोष विभिन्न चैनलों में फैल जाता है, और वहां वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। इसलिए हमारे भीतर हमेशा स्वतंत्र होने की मांग, आग्रह है, और हम इसे कभी नहीं समझते हैं, हम कभी इसमें नहीं जाते हैं, हमने कभी भी उस गहरी सहज मांग की खोज नहीं की है। युवावस्था में असंतुष्ट होना, जो चीजें जैसी हैं उनसे असंतुष्ट होना, पारंपरिक मूल्यों की मूर्खता से, हम धीरे-धीरे, जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, समाज द्वारा स्थापित पुराने ढर्रे में ढल जाते हैं, और खो जाते हैं। शुद्ध असंतोष को बनाए रखना बहुत कठिन है, वह असंतोष जो कहता है, “यह पर्याप्त नहीं है; कुछ और होना चाहिए।" हम सभी उस भावना को जानते हैं, दूसरेपन की भावना जिसे हम जल्द ही ईश्वर या निर्वाण के रूप में अनुवादित करते हैं, और हम इसके बारे में एक किताब पढ़ते हैं और खो जाते हैं। लेकिन अन्यता की यह भावना, इसकी खोज, इसकी जांच, मुझे लगता है, इन सभी से मुक्त होने की वास्तविक इच्छा की शुरुआत है

राजनीतिक, धार्मिक और पारंपरिक प्रभाव, और इस दीवार को तोड़ना।
आइये इसकी जांच करते हैं.

निश्चय ही स्वतंत्रता कई प्रकार की होती है। वहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता है; वह स्वतंत्रता है जो ज्ञान तब देता है जब आप जानते हैं कि काम कैसे करना है, ज्ञान; एक अमीर आदमी की आज़ादी जो दुनिया भर का चक्कर लगा सकता है; क्षमता की स्वतंत्रता, लिखने में सक्षम होने, स्वयं को अभिव्यक्त करने, स्पष्ट रूप से सोचने में सक्षम होने की। फिर किसी चीज़ से आज़ादी है: उत्पीड़न से आज़ादी, ईर्ष्या से आज़ादी, परंपरा से आज़ादी, महत्वाकांक्षा से आज़ादी, इत्यादि। और फिर वह स्वतंत्रता है जो हमें आशा है कि अंत में - अनुशासन के अंत में, सद्गुण प्राप्त करने के अंत में, प्रयास के अंत में - अंतिम स्वतंत्रता प्राप्त होगी जिसे हम कुछ चीजें करने के माध्यम से प्राप्त करने की आशा करते हैं। तो, वह आज़ादी जो क्षमता देती है, किसी चीज़ से आज़ादी और वह आज़ादी जो हमें एक धार्मिक जीवन के अंत में हासिल करनी होती है - ये आज़ादी के प्रकार हैं जिन्हें हम सभी जानते हैं। अब क्या वे विभिन्न स्वतंत्रताएँ महज़ प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं?

जब आप कहते हैं, "मैं क्रोध से मुक्त होना चाहता हूँ," तो यह महज़ एक प्रतिक्रिया है; यह क्रोध से मुक्ति नहीं है. और जो स्वतंत्रता तुम सोचते हो कि एक सदाचारी जीवन के अंत में तुम्हें संघर्ष से, अनुशासन से मिलेगी—वह भी जो हो चुका है उसकी प्रतिक्रिया है। कृपया श्रीमानों, इसका ध्यानपूर्वक पालन करें क्योंकि मैं कुछ इस अर्थ में कठिन बात कहने जा रहा हूँ कि आप इसके आदी नहीं हैं।

स्वतंत्रता की एक भावना है जो किसी चीज़ से नहीं है, जिसका कोई कारण नहीं है, बल्कि जो मुक्त होने की एक अवस्था है। आप देखिए, जिस स्वतंत्रता को हम जानते हैं वह हमेशा इच्छा से आती है, है न? मैं स्वतंत्र हो जाऊंगा, मैं एक तकनीक सीखूंगा, मैं विशेषज्ञ बन जाऊंगा, मैं अध्ययन करूंगा और इससे मुझे स्वतंत्रता मिलेगी। तो हम स्वतंत्रता प्राप्त करने के साधन के रूप में इच्छाशक्ति का उपयोग करते हैं, है ना? मैं गरीब नहीं रहना चाहता और इसलिए मैं अमीर बनने के लिए अपनी क्षमता, अपनी इच्छाशक्ति, हर चीज का इस्तेमाल करता हूं। अथवा, मैं व्यर्थ हूं और मैं व्यर्थ न होने का अभ्यास करता हूं। इसलिए हम सोचते हैं कि इच्छाशक्ति के प्रयोग से हमें स्वतंत्रता मिलेगी। लेकिन इच्छाशक्ति स्वतंत्रता नहीं लाती, इसके विपरीत, जैसा कि मैं आपको दिखाऊंगा।

वसीयत क्या है? मैं रहूंगा, मुझे होना चाहिए, मुझे नहीं होना चाहिए, मैं कुछ बनने के लिए संघर्ष करने जा रहा हूं, मैं सीखने जा रहा हूं - ये सभी इच्छाशक्ति के अभ्यास के रूप हैं। अब ये वसीयत क्या है और कैसे बनती है? जाहिर है, इच्छा के माध्यम से.
हमारी अनेक इच्छाएँ, अपनी कुंठाओं, मजबूरियों और पूर्तियों के साथ, मानो एक डोरी, रस्सी के धागे बन जाती हैं। वह तो इच्छा है ना? आपकी अनेक विरोधाभासी इच्छाएँ मिलकर एक बहुत मजबूत और शक्तिशाली रस्सी बन जाती हैं जिसके सहारे आप सफलता, स्वतंत्रता की ओर चढ़ने का प्रयास करते हैं। अब क्या चाहत आज़ादी देगी, या आज़ादी की चाह ही आज़ादी को नकारना है? कृपया अपना ध्यान रखें श्रीमान, अपनी इच्छाओं, अपनी महत्वाकांक्षा, अपनी इच्छा का ध्यान रखें।

और यदि किसी के पास कोई इच्छा नहीं है और उसे केवल प्रेरित किया जा रहा है, तो यह भी इच्छा का एक हिस्सा है - प्रेरित किया जाना भी उस इच्छा का हिस्सा है, विरोध करने और उसके साथ चलने की इच्छा - यह सब इच्छा का हिस्सा है। इच्छा के उस भार के माध्यम से, उस रस्सी के माध्यम से, हम भगवान तक, आनंद तक, या जो भी हो, चढ़ने की आशा करते हैं।

इसलिए मैं आपसे पूछ रहा हूं कि क्या आपकी इच्छा मुक्ति कारक है? क्या आज़ादी इच्छाशक्ति से मिलती है? या, क्या स्वतंत्रता पूरी तरह से अलग चीज़ है, जिसका प्रतिक्रिया से कोई लेना-देना नहीं है, जिसे क्षमता, विचार, अनुभव, अनुशासन या निरंतर अनुरूपता के माध्यम से प्राप्त नहीं किया जा सकता है? सारी किताबें यही कहती हैं, है न? पैटर्न के अनुरूप बनो और अंत में तुम मुक्त हो जाओगे; ये सब काम करो, आज्ञापालन करो, और अंततः मुक्ति होगी। मेरे लिए यह सब बिल्कुल बकवास है क्योंकि स्वतंत्रता शुरुआत में है, अंत में नहीं, जैसा कि मैं आपको दिखाऊंगा।

किसी सत्य को देखना संभव है, है न? आप देख सकते हैं कि आकाश नीला है—हजारों लोगों ने ऐसा कहा है—लेकिन आप देख सकते हैं कि यह आपके लिए ऐसा ही है। यदि आप जरा भी संवेदनशील हैं तो आप स्वयं ही एक पत्ते की गति को देख सकते हैं। प्रारंभ से ही जो सत्य है उसे सहज रूप से समझने की क्षमता होती है, किसी प्रकार की बाध्यता, समायोजन, अनुरूपता के माध्यम से नहीं। अब, श्रीमान, मैं आपको एक और सच्चाई दिखाऊंगा।

मैं कहता हूं कि एक नेता, एक अनुयायी, एक सदाचारी व्यक्ति प्रेम को नहीं जानता। मैं तुमसे यही कहता हूं. तुम जो नेता हो, तुम जो अनुयायी हो, तुम जो सदाचारी बनने के लिए संघर्ष कर रहे हो—मैं कहता हूं कि तुम प्रेम को नहीं जानते। मुझसे एक पल के लिए भी बहस मत करो; यह मत कहो, "मुझे इसे सिद्ध करो।" मैं आपके साथ तर्क करूंगा, आपको दिखाऊंगा, लेकिन पहले, कृपया रक्षात्मक, आक्रामक, अनुमोदन या इनकार किए बिना मुझे जो कहना है उसे सुनें। मैं कहता हूं कि एक नेता, एक अनुयायी, या एक आदमी जो सदाचारी बनने की कोशिश कर रहा है - ऐसा व्यक्ति नहीं जानता कि प्यार क्या है। यदि आप वास्तव में उस कथन को आक्रामक या विनम्र मन से नहीं सुनते हैं, तो आपको इसका वास्तविक सत्य दिखाई देगा। यदि आप इसकी सच्चाई नहीं देखते हैं, तो इसका कारण यह है कि आप ऐसा नहीं करना चाहते हैं, या आप अपने नेतृत्व, अपने अनुसरण, या अपने तथाकथित गुणों से इतने अधिक संतुष्ट हैं कि आप बाकी सभी चीजों से इनकार करते हैं। लेकिन अगर आप बिल्कुल भी संवेदनशील हैं, जिज्ञासु हैं, खुले हैं, जैसे खिड़की से बाहर देखते हैं, तो आपको इसकी सच्चाई अवश्य देखनी चाहिए, आप बाध्य हैं। अब मैं आपको कारण बताऊंगा क्योंकि आप सभी काफी तर्कसंगत, बौद्धिक लोग हैं, और आप आश्वस्त हो सकते हैं। लेकिन आप वास्तव में बुद्धि या तर्क के माध्यम से कभी भी सत्य को नहीं जान पाएंगे। आप तर्क के माध्यम से आश्वस्त हो जाएंगे, लेकिन आश्वस्त होना सत्य की धारणा नहीं है। दोनों में बहुत बड़ा अंतर है. जो व्यक्ति किसी चीज़ के प्रति आश्वस्त है वह यह देखने में असमर्थ है कि सत्य क्या है। एक व्यक्ति जो आश्वस्त है वह असंबद्ध भी हो सकता है

एक अलग तरीके से फिर मनाया. लेकिन एक आदमी जो देखता है कि जो सच है वह "आश्वस्त" नहीं है वह देखता है कि यह बिल्कुल सच है।

अब जैसा कि मैंने कहा, एक नेता जो कहता है, "मैं रास्ता जानता हूं, मैं जीवन के बारे में सब कुछ जानता हूं, मैंने परम वास्तविकता का अनुभव किया है, मेरे पास सामान है," जाहिर तौर पर वह अपने बारे में और अपने दृष्टिकोण के बारे में और अपने दृष्टिकोण को प्रसारित करने के बारे में बहुत चिंतित है बेचारा श्रोता; एक नेता लोगों को उस ओर ले जाना चाहता है जो उसे सही लगता है। तो नेता, चाहे वह राजनीतिक हो, सामाजिक हो, धार्मिक नेता हो, या आपकी पत्नी या पति हो - ऐसे व्यक्ति के पास कोई प्रेम नहीं है। वह प्यार के बारे में बात कर सकता है, वह आपको प्यार का रास्ता दिखाने की पेशकश कर सकता है, वह वह सभी चीजें कर सकता है जो प्यार को करनी चाहिए, लेकिन प्यार की वास्तविक भावना वहां नहीं है क्योंकि वह एक नेता है। यदि प्रेम है तो आप नेता बनना बंद कर देते हैं, क्योंकि प्रेम किसी अधिकार का प्रयोग नहीं करता। और यही बात अनुयायी पर भी लागू होती है। जिस क्षण आप अनुसरण करते हैं, आप अधिकार को स्वीकार कर रहे हैं, है ना? - वह अधिकार जो आपको सुरक्षा देता है, स्वर्ग में एक सुरक्षित कोना, या इस दुनिया में एक सुरक्षित कोना।

जब आप अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपनी जाति के लिए, अपने राष्ट्र के लिए सुरक्षा की तलाश में अनुसरण करते हैं, तो वह अनुसरण इंगित करता है कि आप सुरक्षित रहना चाहते हैं, और जो व्यक्ति सुरक्षा चाहता है वह प्रेम का कोई गुण नहीं जानता है। और ऐसा ही नेक आदमी के साथ भी होता है।
जो व्यक्ति नम्रता का विकास करता है वह निश्चित रूप से सदाचारी नहीं है। विनम्रता कोई विकसित करने वाली चीज़ नहीं है.

इसलिए, मैं आपको यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूं कि एक मन जो संवेदनशील है, पूछताछ कर रहा है, एक मन जो वास्तव में सुन रहा है वह किसी भी चीज़ की सच्चाई को तुरंत समझ सकता है।
लेकिन सत्य को "लागू" नहीं किया जा सकता। यदि आप सत्य को देखते हैं, तो यह आपके सचेत प्रयास के बिना, अपनी मर्जी से संचालित होता है।

तो, असंतोष स्वतंत्रता की शुरुआत है, और जब तक आप असंतोष में हेरफेर करने की कोशिश कर रहे हैं, अधिकार स्वीकार करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि यह असंतोष गायब हो जाए, सुरक्षित चैनलों में प्रवेश करें, तो आप पहले से ही वास्तविक भावना की उस प्राचीन भावना को खो रहे हैं। हममें से अधिकांश लोग अपनी नौकरी, अपने रिश्तों या जो कुछ भी हम कर रहे हैं उससे असंतुष्ट हैं, क्या हम असंतुष्ट नहीं हैं। आप चाहते हैं कि कुछ घटित हो, परिवर्तन हो, आगे बढ़े, प्रगति हो। आप नहीं जानते कि यह क्या है. निरंतर खोज, पूछताछ होती रहती है, विशेषकर तब जब कोई युवा, खुला, संवेदनशील हो। बाद में, जैसे-जैसे आप बूढ़े हो जाते हैं, आप अपनी आदतों, अपनी नौकरी में व्यवस्थित हो जाते हैं, क्योंकि आपका परिवार सुरक्षित है, आपकी पत्नी भाग नहीं जाएगी। तो यह असाधारण लौ गायब हो जाती है और आप सम्मानजनक, क्षुद्र और विचारहीन हो जाते हैं।

इसलिए, जैसा कि मैं बताता रहा हूँ, किसी चीज़ से आज़ादी आज़ादी नहीं है।
आप क्रोध से मुक्त होने का प्रयास कर रहे हैं; मैं यह नहीं कहता कि आपको क्रोध से मुक्त नहीं होना चाहिए, बल्कि मैं यह कहता हूं कि वह स्वतंत्रता नहीं है। मुझे लालच, क्षुद्रता से छुटकारा मिल सकता है,

ईर्ष्या, या एक दर्जन अन्य चीजें, और फिर भी मुक्त नहीं होना। स्वतंत्रता मन का एक गुण है। वह गुणवत्ता बहुत सावधानीपूर्वक, सम्मानजनक खोजों और पूछताछ से, बहुत सावधानीपूर्वक विश्लेषण से, या विचारों को एक साथ रखने से नहीं आती है। इसलिए इस सच्चाई को देखना जरूरी है कि जिस आजादी की हम लगातार मांग कर रहे हैं वह हमेशा किसी न किसी चीज से होती है, जैसे दुख से आजादी। ऐसा नहीं है कि दुख से मुक्ति नहीं है, लेकिन उससे मुक्त होने की मांग महज एक प्रतिक्रिया है और इसलिए दुख से मुक्ति नहीं दिलाती। क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ? मैं विभिन्न कारणों से दुःख में हूँ, और मैं कहता हूँ कि मुझे मुक्त होना चाहिए। दुःख से मुक्त होने की चाहत दर्द से पैदा होती है। मैं अपने पति या अपने बेटे या किसी और चीज़ के कारण पीड़ित हूं; मैं जिस स्थिति में हूं वह मुझे पसंद नहीं है और मैं इससे दूर जाना चाहता हूं। स्वतंत्रता की वह इच्छा एक प्रतिक्रिया है; यह आज़ादी नहीं है. जो कुछ है उसके विपरीत यह एक और वांछनीय स्थिति है जो मैं चाहता हूं । वह व्यक्ति जो दुनिया भर में यात्रा कर सकता है क्योंकि उसके पास बहुत सारा पैसा है, वह आवश्यक रूप से स्वतंत्र नहीं है, न ही वह व्यक्ति जो चतुर या कुशल है, क्योंकि उसकी स्वतंत्र होने की इच्छा फिर से केवल एक प्रतिक्रिया है। तो क्या मैं यह नहीं देख सकता कि स्वतंत्रता, मुक्ति, किसी भी प्रतिक्रिया के माध्यम से सीखी या हासिल नहीं की जा सकती या मांगी नहीं जा सकती?

इसलिए मुझे प्रतिक्रिया को समझना चाहिए, और मुझे यह भी समझना चाहिए कि स्वतंत्रता किसी इच्छाशक्ति के प्रयास से नहीं आती है। इच्छा और स्वतंत्रता विरोधाभासी हैं, जैसे विचार और स्वतंत्रता विरोधाभासी हैं। विचार स्वतंत्रता उत्पन्न नहीं कर सकता क्योंकि विचार वातानुकूलित है। आर्थिक रूप से, शायद, आप दुनिया को व्यवस्थित कर सकते हैं ताकि मनुष्य अधिक आरामदायक हो सके, उसके पास अधिक भोजन, कपड़े और आश्रय हो; और आप सोच सकते हैं कि यह स्वतंत्रता है। वे आवश्यक और आवश्यक चीजें हैं, लेकिन वह स्वतंत्रता की समग्रता नहीं है।

स्वतंत्रता मन की एक अवस्था और गुणवत्ता है। और यह वह गुणवत्ता है जिसके बारे में हम पूछताछ कर रहे हैं। उस गुण के बिना, आप जो चाहें वह करें, दुनिया के सभी गुणों को विकसित करें, आपको वह स्वतंत्रता नहीं मिलेगी।

तो दूसरेपन की वह भावना, मन की वह गुणवत्ता कैसे आती है?
आप इसे विकसित नहीं कर सकते क्योंकि जिस क्षण आप अपने मस्तिष्क का उपयोग करते हैं, आप विचार का उपयोग कर रहे होते हैं, जो सीमित है। चाहे वह बुद्ध का विचार हो या किसी और का, सभी विचार सीमित हैं। इसलिए हमारी पूछताछ नकारात्मक होनी चाहिए; हमें उस स्वतंत्रता को अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करना चाहिए, सीधे तौर पर नहीं। क्या आप समझते हैं श्रीमान? क्या मैं कोई संकेत दे रहा हूँ, या कुछ भी नहीं? उस स्वतंत्रता की तलाश आक्रामक तरीके से नहीं की जानी चाहिए, उसे इनकारों, अनुशासनों, खुद की जाँच करके, खुद को यातना देकर, विभिन्न अभ्यास करके और बाकी सभी चीज़ों के द्वारा विकसित नहीं किया जाना चाहिए।

यह आपकी जानकारी के बिना आना चाहिए, सद्गुण की तरह। विकसित किया गया सद्गुण सद्गुण नहीं है; जो गुण सच्चा गुण है वह आत्म-जागरूक नहीं है। निश्चित रूप से एक व्यक्ति जिसने विनम्रता विकसित की है, जिसने अपने दंभ, घमंड, घमंड के कारण विनम्रता विकसित की है

स्वयं को विनम्र बनाया—ऐसे व्यक्ति में विनम्रता की कोई सच्ची भावना नहीं होती। विनम्रता एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन अपनी गुणवत्ता के प्रति सचेत नहीं होता है, जैसे एक फूल जिसमें सुगंध होती है वह अपनी सुगंध के प्रति सचेत नहीं होता है। इसलिए यह स्वतंत्रता किसी भी प्रकार के अनुशासन से नहीं मिल सकती है, न ही अनुशासनहीन मन इसे समझ सकता है। आप परिणाम उत्पन्न करने के लिए अनुशासन का उपयोग करते हैं, लेकिन स्वतंत्रता कोई परिणाम नहीं है। यदि यह एक परिणाम है, तो यह अब मुफ़्त नहीं है क्योंकि इसका उत्पादन किया जा चुका है।

तो, जो मन अनेक प्रभावों, मजबूरियों, विभिन्न प्रकार की विरोधाभासी इच्छाओं से भरा हुआ है, समय की उपज है, उस मन में स्वतंत्रता का गुण कैसा है? आप समझे श्रीमान? हम जानते हैं कि मैं जिन चीजों के बारे में बात कर रहा हूं वे स्वतंत्रता नहीं हैं। वे सभी विभिन्न तनावों, मजबूरियों और प्रभावों के तहत मन द्वारा निर्मित होते हैं। इसलिए, अगर मैं इसे नकारात्मक रूप से देख सकता हूं, इस जागरूकता के साथ कि यह सब स्वतंत्रता नहीं है, तो मन पहले से ही अनुशासित है - लेकिन परिणाम प्राप्त करने के लिए अनुशासित नहीं है। आइये संक्षेप में उस पर चलते हैं।

मन कहता है, "परिणाम प्राप्त करने के लिए मुझे स्वयं को अनुशासित करना होगा।"
यह बिल्कुल स्पष्ट है. लेकिन ऐसे अनुशासन से आज़ादी नहीं मिलती. यह एक परिणाम लाता है क्योंकि आपके पास एक मकसद है, एक कारण है जो परिणाम उत्पन्न करता है, लेकिन वह परिणाम कभी भी स्वतंत्रता नहीं है, यह केवल एक प्रतिक्रिया है। यह बिल्कुल स्पष्ट है. अब, अगर मैं उस तरह के अनुशासन के संचालन को समझना शुरू कर दूं, तो समझने, पूछताछ करने, उसमें जाने की प्रक्रिया में, मेरा दिमाग वास्तव में अनुशासित हो जाता है। मुझे नहीं पता कि आप मेरा मतलब जल्दी से समझ पायेंगे या नहीं। परिणाम उत्पन्न करने के लिए इच्छाशक्ति के प्रयोग को अनुशासन कहा जाता है; जबकि, इच्छाशक्ति, अनुशासन और जिसे हम परिणाम कहते हैं, उसके पूरे महत्व की समझ एक ऐसे दिमाग की मांग करती है जो असाधारण रूप से स्पष्ट और "अनुशासित" हो, इच्छाशक्ति से नहीं, बल्कि नकारात्मक समझ के माध्यम से।

तो, नकारात्मक रूप से, मैंने पूरी समस्या को समझ लिया है कि स्वतंत्रता क्या नहीं है। मैंने इसकी जांच की है, मैंने अपने दिल और दिमाग, अपने अस्तित्व की गहराईयों में खोजा है, यह समझने के लिए कि स्वतंत्रता का मतलब क्या है, और मैंने देखा कि हमने जिन चीजों का वर्णन किया है उनमें से कोई भी स्वतंत्रता नहीं है क्योंकि वे सभी इच्छा, मजबूरी, इच्छा पर आधारित हैं। , अंत में मुझे क्या मिलेगा, और वे सभी प्रतिक्रियाएँ हैं। मैं तथ्यात्मक रूप से देखता हूं कि वे स्वतंत्रता नहीं हैं। इसलिए, क्योंकि मैंने उन चीज़ों को समझ लिया है, मेरा दिमाग उन चीज़ों को खोजने या प्राप्त करने के लिए खुला है जो मुफ़्त हैं।

तो, मेरे मन में एक गुण है जो परिणाम चाहने वाले अनुशासित मन का नहीं है, न कि अनुशासनहीन मन का है जो इधर-उधर भटकता रहता है, बल्कि वह नकारात्मक रूप से, क्या है और 'क्या होना चाहिए' दोनों को समझता है, और इसलिए कर सकता है

अनुभव करें, उस स्वतंत्रता को समझ सकते हैं जो किसी चीज़ से नहीं है, उस स्वतंत्रता को जो परिणाम नहीं है। महोदय, इसके लिए बहुत अधिक पूछताछ की आवश्यकता है। यदि आप बस यह दोहराते हैं कि एक ऐसी आज़ादी है जो किसी चीज़ से आज़ादी नहीं है, तो इसका कोई मतलब नहीं है। तो कृपया ऐसा न कहें. या यदि आप कहते हैं, "मैं वह दूसरी आज़ादी पाना चाहता हूँ," तो आप भी गलत रास्ते पर हैं, क्योंकि आप ऐसा नहीं कर सकते।

ब्रह्मांड क्षुद्र मन में प्रवेश नहीं कर सकता; माप जानने वाले मन में अथाह नहीं आ सकता। तो हमारी पूरी जांच यह है कि माप को कैसे तोड़ा जाए - जिसका मतलब यह नहीं है कि मुझे किसी आश्रम में जाना होगा, विक्षिप्त, भक्तिपूर्ण और यह सब बकवास करना होगा।

और यहां, अगर मैं ऐसा कह सकूं, तो जो महत्वपूर्ण है वह शिक्षण है, न कि शिक्षक। इस समय यहां बोलने वाला व्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है; उसे पानी में फेंक दो। महत्वपूर्ण यह है कि क्या कहा जा रहा है। तो मन केवल मापने योग्य, स्वयं की दिशा, सीमाओं, महत्वाकांक्षाओं, आशाओं, निराशा, दुख, दुखों और खुशियों को जानता है। ऐसा मन स्वतंत्रता को आमंत्रित नहीं कर सकता।

वह बस इतना ही कर सकता है कि स्वयं के प्रति जागरूक रहे और जो कुछ देखता है उसकी निंदा न करे; कुरूप की निंदा न करें या सुंदर से चिपके न रहें, बल्कि देखें कि क्या है। जो कुछ है उसकी मात्र धारणा ही मन के माप, उसकी सीमाओं, उसके पैटर्न के टूटने की शुरुआत है - चीजों को वैसे ही देखना जैसे वे हैं। तब आप पाएंगे कि मन अनजाने में, बिना जाने उस स्वतंत्रता तक आ सकता है। मन में यह परिवर्तन ही सच्ची क्रांति है। अन्य सभी क्रांतियाँ प्रतिक्रियाएँ हैं, भले ही वे स्वतंत्रता शब्द का उपयोग करते हैं और स्वप्नलोक, स्वर्ग, सब कुछ का वादा करते हैं। मन की गुणवत्ता में ही सच्ची क्रांति है।

21 सितम्बर 1958

छठी वार्ता पूना में

चूंकि यह आखिरी बातचीत है, मैं जितना संभव हो सके उतना विषय कवर करने जा रहा हूं। मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोग बचपन से लेकर परिपक्वता तक और यहां तक कि कब्र तक यह बताए जाने के आदी हैं कि क्या करना है और क्या सोचना है। न केवल हमारे बारे में समाज, बल्कि हमारे सभी धार्मिक ग्रंथ, हमारी सरकारें, हर कोई हमें बताता है कि क्या करना है और क्या सोचना है, और यदि आप वक्ता से भी यही अपेक्षा करते हैं तो यह एक बड़ी गलती होगी, क्योंकि जो महत्वपूर्ण है वह है स्वयं पता लगाएं कि कोई क्या सोचता है और उससे पता लगाएं कि क्या करना है। निःसंदेह, स्वयं को जानना आवश्यक है - उस स्वयं को नहीं जिसे चेतना से परे माना जाता है, जिसका वर्णन विभिन्न पुस्तकों आदि में किया गया है, बल्कि स्वयं को जानना है

वह चेतना की सीमाओं और सीमाओं के भीतर है। उस रोजमर्रा की चेतना की समझ में, उस असाधारण मानचित्र को उजागर करने में, प्रकट होने वाले स्वयं के महासागर पर उद्यम करने और उसके संपूर्ण महत्व को देखने में, सही कार्रवाई आती है, जो सच्चा व्यवसाय है। लेकिन अगर कोई अपने मन के तरीकों, अपने विचारों के तरीकों को नहीं जानता है, अगर वह हर चुनौती पर पहली प्रतिक्रिया को नहीं समझता है, मांग बनाने के लिए विचार की पहली गति को नहीं समझता है, अगर वह उस पहली गति को छोड़ देता है मन अस्पष्ट, निर्विवाद, प्रतिक्रियाओं के कारण की खोज के बिना, तो हम मन की मौखिक और सैद्धांतिक गतिविधियों में पूरी तरह से खो जाएंगे।

हममें से अधिकांश लोग कार्रवाई को लेकर चिंतित हैं कि क्या करना है। वहाँ इतना दुःख, कष्ट और भुखमरी है, और जो मनुष्य इन सबके प्रति सचेत है वह इसके बारे में क्या कर सकता है? क्या उन्हें सुधार का काम पूरी तरह से सरकार पर छोड़ देना चाहिए, या क्या उन्हें एक व्यक्ति के रूप में किसी ऐसे संगठन में शामिल हो जाना चाहिए जो जीवन में थोड़ी अधिक व्यवस्था, भूमि का अधिक समान वितरण, थोड़ी अधिक खुशी और सुंदरता लाएगा? यह हमारी समस्याओं में से एक है, है ना?

क्या सच्चे धर्म का सुधार से कोई संबंध है? क्या सचमुच धार्मिक आदमी का राजनीति और सरकार से कोई रिश्ता है? या क्या उसे धर्म शब्द के सभी निहितार्थों के बारे में पूरी तरह से चिंतित होना चाहिए? - जो कि संगठित धर्म, विश्वास, हठधर्मिता, अनुष्ठान, पवित्र पुस्तकों को पढ़ने और इसके बारे में कुछ भी नहीं करने के समान नहीं है। वह सब केवल मौखिक आनंद है। समस्या यह है कि क्या ऐसा नहीं है कि कोई इस दुनिया में दुख, बेरोजगारी, भुखमरी, चीजों की भयावह स्थिति देखता है, और उसे क्या करना है? क्या सुधार लाने के लिए किसी समूह में शामिल होना चाहिए या यह सरकार का काम है? कृपया, मैं आपसे कुछ भी करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। हम केवल कार्रवाई की पूरी समस्या की जांच कर रहे हैं क्योंकि हममें से अधिकांश लोग इस दुनिया में या तो सीमित, संकीर्ण अर्थ में या व्यापक अर्थ में कुछ करना चाहते हैं। इसके बारे में कुछ करना एक मानवीय, सहज प्रतिक्रिया है, लेकिन इसमें बहुत भ्रम है जिसे मैं अभी संक्षेप में खोज रहा हूं - जिसका मतलब यह नहीं है कि आपको मेरे द्वारा कही गई किसी भी बात का पालन करना होगा क्योंकि एक नेता या अनुयायी होना नष्ट हो जाता है मानव रिश्ता। न तो कोई नेता और न ही कोई अनुयायी ऐसा मन ला सकता है जो स्नेह, प्रेम करने में सक्षम हो।

तो हमारी समस्याओं में से एक है कार्रवाई। हम अपने बारे में यह दुख देखते हैं, और हमें क्या करना चाहिए? क्या किसी को सुधार लाने के लिए किसी समूह में शामिल होना चाहिए, या क्या किसी को यह देखना चाहिए कि सरकार ऐसे कानून, प्रतिबंध और आदेश बनाए जो सही सुधार लाएंगे? और जो लोग किसी प्रकार के सुधार के लिए समर्पित हैं वे राजनेताओं से हाथ क्यों मिलाते हैं? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि वे

क्या आपको लगता है कि सरकार के साथ हाथ मिलाकर वे सुधारों को गति दे सकते हैं, या ऐसा इसलिए है क्योंकि वे सुधारों और राजनीति के माध्यम से खुद को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं? समाज में सुधार लाने में मदद करने से हमें अपना विस्तार करने का अवसर मिलता है, है ना? यह हमें महत्वपूर्ण बनने का मौका देता है।' फिर हम भी कुछ हैं, धार्मिक क्षेत्र में भी और राजनीतिक क्षेत्र में भी। लेकिन क्या यह वास्तव में धार्मिक व्यक्ति का कार्य है? मुझे आशा है कि आप प्रश्न समझ गए होंगे, महोदय। यह सरकार का काम है कि वह भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून पारित करे, यह देखे कि कोई भुखमरी न हो, कोई युद्ध न हो, कोई धन और गरीबी न हो, और जब सरकार ऐसा नहीं करती है, तो क्या एक व्यक्ति के रूप में यह आपकी जिम्मेदारी है देखिये कि ये सब करने वाले राजनेता भी हैं? आपको या मुझे राजनीति में रुचि क्यों लेनी चाहिए? मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूं कि आपको मतदान और उस सभी व्यवसाय से खुद को अलग कर लेना चाहिए, लेकिन क्या यह धार्मिक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करे, जो केवल तात्कालिक परिणामों से संबंधित है - बांध बनाना, जल विद्युत प्रवाह लाना। देश भर में, इत्यादि? क्या उस क्षेत्र में प्रवेश करना धार्मिक व्यक्ति का कर्तव्य है, क्या यह उसका काम, उसका व्यवसाय है?

अब हम दोनों करना चाहते हैं, है ना? हम गंभीर या तथाकथित धार्मिक होना चाहते हैं, और हम राजनीति में भी हाथ आजमाना चाहते हैं। इसलिए मैं यह जानने का प्रयास कर रहा हूं कि एक धार्मिक व्यक्ति का वास्तविक कार्य क्या है। हम राजनीतिज्ञ के कार्य को जानते हैं - कुटिल व्यक्ति नहीं, बल्कि सही प्रकार का राजनीतिज्ञ। यह देखना उसका काम है कि कुछ चीजें की जाती हैं, कार्यान्वित की जाती हैं, और वह स्वयं अविनाशी है। लेकिन एक धार्मिक व्यक्ति क्या है, और यदि वह वास्तव में धार्मिक है, तो क्या वह तत्काल सुधार में, राजनीति में भाग लेगा? आइए हम इस प्रश्न पर विचार करें कि धर्म और धार्मिक व्यक्ति से हमारा क्या तात्पर्य है। जाहिर तौर पर हमारा मतलब उस आदमी से नहीं है जो दिन में तीन बार मंदिर जाता है, न ही उस आदमी से जो बहुत सारे शब्दों को दोहराता है, न ही उस आदमी से है जो किसी सिद्धांत का पालन करता है जैसे कि वहशी सभी प्रकार के विश्वासों को अपने पास इकट्ठा करता है। और निश्चित रूप से वह कोई धार्मिक व्यक्ति नहीं है जो शंकर, या बुद्ध, या ईसा मसीह ने जो कहा है उसे दोहराता है; वह केवल शब्दों का जाल बुनता है। ऐसा मन रुग्ण मन है। धार्मिक व्यक्ति वह है जो अपनी कंडीशनिंग को समझकर उस कंडीशनिंग को तोड़ रहा है। ऐसा व्यक्ति किसी भी धर्म से संबंधित नहीं होता है, उसकी कोई मान्यता नहीं होती है, वह किसी अनुष्ठान, किसी हठधर्मिता का पालन नहीं करता है क्योंकि वह देखता है कि हठधर्मिता, अनुष्ठान, विश्वास केवल कंडीशनिंग कारक हैं, उसके आसपास के समाज के प्रभाव हैं। चाहे वह रूस, इटली, भारत, अमेरिका या कहीं और में रहता हो, पर्यावरण उसे अनुकूलित कर रहा है और उसे विश्वास करने या न करने के लिए प्रभावित कर रहा है। लेकिन धार्मिक व्यक्ति वह है, जो आत्म-ज्ञान के माध्यम से, अपनी कंडीशनिंग की खोज करना और उसे तोड़ना शुरू करता है; और तोड़ना समय की बात नहीं है।

अब समय से हमारा क्या तात्पर्य है? महोदय, मैं वर्णन कर रहा हूं लेकिन यह आपको अनुभव करना है, इसलिए अपने आप से यह न कहें कि आप यह देखने के लिए बहुत ध्यान से सुनेंगे कि क्या शंकर, ईसा मसीह या बुद्ध एक ही बात कहते हैं। हम, आप और मैं, दो व्यक्तियों के रूप में चर्चा कर रहे हैं जो अपने लिए जानने का प्रयास कर रहे हैं, और यदि आप जो सुनते हैं उसकी तुलना आपने जो पढ़ा है उससे करते हैं, तो आप सुन नहीं रहे हैं, इसका मतलब है कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं आप अनुभव नहीं कर रहे हैं। हम यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि धार्मिक होना क्या है और क्या धार्मिक व्यक्ति समय को सद्गुणों तक पहुंचने के साधन के रूप में या अपनी अक्षमताओं, अपने कष्टों पर विजय पाने के साधन के रूप में चिंतित करता है। समय की इस प्रक्रिया की जांच करने में, जो कि हम क्या हैं और हम क्या बनना चाहते हैं के बीच की दूरी है, हम कहते हैं कि समय आवश्यक है। हम कहते हैं कि सद्गुण विकसित करने के लिए समय आवश्यक है, मन को उसकी कंडीशनिंग से मुक्त करने के लिए समय आवश्यक है, एक विचार से दूसरे विचार, आदर्श तक की दूरी तय करने के लिए समय आवश्यक है। एक बिंदु से एक बिंदु की दूरी, समय से हमारा तात्पर्य यही है, चाहे वह कालानुक्रमिक हो या मनोवैज्ञानिक - कालानुक्रमिक समय का अर्थ है पूरे जीवनकाल या कई जीवन की आवश्यकता, और मनोवैज्ञानिक समय का अर्थ है 'मैं आऊंगा', 'मैं आऊंगा' ' मन की स्थिति। 'होगा' तो समय है ना?

तो, क्या समझने के लिए समय आवश्यक है, या किसी ऐसी चीज़ को समझना जो तत्काल है, समय से असंबंधित है? निश्चित रूप से, यदि आप सचमुच सुन रहे हैं, तो समय समाप्त हो जाता है। मुझे नहीं पता कि आपने कभी समय के प्रश्न पर प्रयोग किया है या नहीं। यदि आपके पास है, तो आप महसूस करेंगे कि सारी समझ तत्काल वर्तमान में है, और वर्तमान से मेरा मतलब अतीत या भविष्य के विरोध में नहीं है, बल्कि एक ऐसा मन है जो पूरी तरह से ध्यान देने योग्य है, जिसका कोई कारण नहीं है। कहीं पहुंचने की इच्छा नहीं है. इसलिए मैं मन की कंडीशनिंग की उस तात्कालिक समझ को उजागर करने की कोशिश कर रहा हूं, और उस समझ में कंडीशनिंग को तोड़ रहा हूं। हम इसी की जांच कर रहे हैं.' मुझे एहसास है कि मेरा दिमाग समाज द्वारा संस्कारित है और मैं जानना चाहता हूं कि क्या उस संस्कार से बाहर निकलने के लिए समय आवश्यक है। क्या किसी चीज़ को देखने, समझने के लिए समय ज़रूरी है? क्या मैं दो घंटे बाद या दिन के अंत तक या कई दिनों के बाद समझ पाऊंगा, या तुरंत कुछ समझ पाऊंगा? हम आम तौर पर सोचते हैं कि समझने के लिए समय जरूरी है। हम प्रगति पर भरोसा करते हैं, हम कहते हैं, "मुझे समय दो, मुझे अवसर दो। मुझे अनुशासन का उपयोग करने दो, बढ़ने दो, बनने दो और अंत में मैं समझ जाऊंगा।'' यही पारंपरिक, धार्मिक और तथाकथित मानवीय दृष्टिकोण है। और मैं अपने आप से पूछता हूं कि क्या ऐसा है।

क्या समझ वास्तव में समय की बात है, या यह तत्काल वर्तमान की बात है? यदि यह तात्कालिक वर्तमान की बात है तो इसका अर्थ है मन

इस विचार से मुक्त होना चाहिए कि वह भविष्य में समझेगा। आख़िरकार, जब यह कहता है, "मैं समझूंगा," "इच्छा" समय अवधि है। अब उस समयावधि के दौरान वास्तव में क्या होता है? आप अपने मधुर तरीके से आगे बढ़ते हैं, क्या आप नहीं, अपने सभी सुखों और दुखों के साथ चलते रहते हैं क्योंकि आप वास्तव में समझना नहीं चाहते हैं; लेकिन जब आप समझना चाहते हैं, तो कार्रवाई तत्काल होती है। कृपया, यह सोचने के लिए समय की आवश्यकता नहीं है कि जो कहा गया है वह सच है या नहीं, बल्कि इसके लिए ध्यान की एक निश्चित स्थिति की आवश्यकता है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी सोचा है कि कल, कल और आज से हमारा क्या मतलब है। कालानुक्रमिक समय में हम जानते हैं कि कल मंगलवार था, लेकिन इसका मतलब कल की सभी सामग्री और कई, कई कल की यादें, अनुभव, सुख और दुख भी हैं जो कल पर आधारित थे।

और कल से हमारा क्या तात्पर्य है? हमारा मतलब है सारा अतीत जो आज से होकर भविष्य में गुजरता है, जो कुछ हद तक संशोधित है, लेकिन जिसकी सामग्री कल जैसी ही है। कल, आज और कल से हमारा यही मतलब है; बीता हुआ कल, अपने सभी संघर्षों, प्रयासों और दुखों के साथ, आज से गुजरता हुआ कल तक आता है, जो कि भविष्य है। और आज क्या है? क्या आज कल से आने वाले कल का एक मार्ग मात्र है?

कृपया श्रीमानों, अवश्य सुनें, और आप इसे देखेंगे। क्या आज का दिन मात्र बीते हुए कल से होकर आज कहलाने वाली चीज़ से होकर कल की ओर बढ़ रहा है, या आज का दिन पूरी तरह से कुछ अलग है? क्या आज कालातीत नहीं है, यह अहसास नहीं है कि आज अतीत या भविष्य से अलग हो गया है? लेकिन यदि आप अतीत के प्रति मरे नहीं हैं तो आप अतीत से अलग नहीं हो सकते। यदि आप कल का बोझ आज और कल पर ढोते हैं, तो कल का कोई अंत नहीं है। तब आप केवल निरंतरता को जानते हैं, अंत को नहीं। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी चीज़ के लिए मरने, ख़त्म करने की कोशिश की है। क्या आपने कभी खुशी से मरने की कोशिश की है? मैं जानता हूं कि आपने दुख, चिंता, अप्रिय, परेशान करने वाली समस्या के लिए मरने की कोशिश की है, लेकिन आप कभी भी खुशी के लिए नहीं मरे हैं, क्या ऐसा है? यह चाहत, कल अलग होने की चाहत का आनंद है, जो कल से वर्तमान तक कल तक हमारी निरंतरता का कारण है; यह बहुत ही सरल है। तो, क्या कल के लिए मरना संभव है? क्या मैं आज अपनी संपत्ति, अपनी इच्छाओं, अपने गुणों, अपनी महत्वाकांक्षाओं और सभी छोटी-मोटी गतिविधियों के प्रति मर नहीं सकता, उन्हें अपने से पूरी तरह दूर नहीं कर सकता? क्या तुमने इसे कभी आज़माया है? मुझे डर है कि आपने ऐसा नहीं किया है, और फिर भी आप बुढ़ापे में मरने के बारे में आशंका से बात करते हैं, जबकि यदि आप कल मर जाते हैं, तो कल में मृत्यु का कोई डर नहीं होगा क्योंकि उन चीज़ों को कल तक ले जाने के लिए कुछ भी नहीं होगा जिसे आप पकड़े हुए हैं. यदि आपने वास्तव में इसे सुना है, तो आपने मन की उस स्थिति का अनुभव किया होगा जो मर चुकी है

कल। दुर्भाग्य से आपमें से अधिकांश लोग मुझसे प्रेरित हो रहे हैं, लेकिन यदि आप वास्तव में एक सेकंड के लिए भी अतीत के प्रति मर जाते हैं, तो वह अनुभव किसी सत्य की अनुभूति है, और वह कार्य करेगा। जिस प्रकार जहर आपके शरीर में स्वयं ही कार्य करेगा, उसी प्रकार सत्य भी जहर के समान कार्य करेगा जब तक कि उस धारणा के संबंध में कोई कार्रवाई न हो।

तो एक धार्मिक व्यक्ति, जैसा कि मैं कह रहा था, आत्म-ज्ञान के माध्यम से मन को कंडीशनिंग से मुक्त करने से संबंधित है, और हम कहते हैं कि कंडीशनिंग को तोड़ने के लिए समय आवश्यक है क्योंकि कंडीशनिंग न केवल चेतन स्तर पर है, बल्कि अचेतन स्तर पर भी है। जहां नस्लीय, पारिवारिक और सामान्य मानवीय अनुभव के अवशेष हैं। अब क्या किसी को उस सारी प्रक्रिया से गुजरना होगा, या क्या वास्तव में इसे तोड़ने और इसे तुरंत समझने का कोई तरीका है? यही समस्या की असली जड़ है. मैं कहता हूं कि इसे तुरंत करने का एक तरीका है और कोई दूसरा तरीका नहीं है। एक और दिन की इच्छा मन के लिए समय का आवंटन है ताकि वह केवल कंडीशनिंग से मुक्त होने के विचार के साथ खेलता रहे। यह महसूस करने के लिए कि मन अनुकूलित है और उस संस्कार में कैद है, ध्यान देने की आवश्यकता है, और यह ध्यान, वह तत्काल धारणा है जो मन को मुक्त करती है। ऐसे व्यक्ति को सुधारों से कोई सरोकार नहीं होता, क्योंकि सभी सुधार समय के दायरे में होते हैं। तो मैं उस आदमी की बात कर रहा हूं जो नौकरशाही, प्रशासन और सभी तात्कालिक सुधारों और आदेशों से चिंतित नहीं है, लेकिन जो चिंतित है - चाहे वह कितनी भी गलती करे - सत्य के साथ, जिसका प्राथमिक हित यही है। ऐसे मन का न तो किसी और पर और न ही स्वयं पर कोई अधिकार होता है। यह लोगों का मार्गदर्शन करने के लिए नहीं है, यह लोगों को यह बताने के लिए नहीं है कि क्या सोचना है, कि ईश्वर है या नहीं। ऐसा मन मनुष्य को उसकी अपनी कंडीशनिंग से मुक्त होने में मदद करने से संबंधित है, और मैं कहता हूं कि ऐसा व्यक्ति एक धार्मिक व्यक्ति है। आप पूछ सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति का उस समाज से क्या लेना-देना है जिसे सुधार, शुद्धिकरण की आवश्यकता है? मैं कहता हूं कि धार्मिक आदमी सबसे महत्वपूर्ण कारक होगा क्योंकि वह क्रांति है। ऐसा नहीं है कि वह कोई क्रांति लाएंगे, बल्कि वह स्वयं क्रांति की स्थिति में हैं। मैं अंतर सोचने का काम आप पर छोड़ता हूं।

हममें से अधिकांश लोग इन सभी चीजों को या तो स्पष्ट रूप से या भ्रम में देखते हैं, लेकिन हम देख सकते हैं कि खुद को कंडीशनिंग से बाहर निकालने से डर की समस्या पैदा होती है। क्या ऐसा नहीं है? डर एक ऐसी चीज़ है जो अपने आप में नहीं बल्कि किसी और चीज़ के संबंध में ही मौजूद होती है। मुझे जनमत से डर लगता है; मुझे डर है कि कहीं किसी को मेरी मूर्खता का पता न चल जाए; मुझे मृत्यु से, अपनी नौकरी खोने से, एक महत्वपूर्ण व्यक्ति न बन पाने से डर लगता है। और यह डर की भावना ही मन में भ्रम पैदा करती है, और कुछ नहीं। हम भ्रमित होकर उसे सुलझाने का प्रयास करते हैं

समस्याएँ जो भ्रम ने पैदा की हैं। हम कारण की ओर जाने के बजाय प्रभाव को सुधारने का प्रयास करते हैं, जबकि यदि हम इसकी बारीकी से जांच करें तो पाएंगे कि कारण और प्रभाव अलग-अलग नहीं हैं। कारण यहाँ नहीं है और प्रभाव वहाँ नहीं है; कारण-परिणाम सदैव साथ-साथ रहते हैं। इसलिए भ्रम या विचार की स्पष्टता की कमी भय के कारण उत्पन्न होती है।

आइए इसे फिर से देखें। भ्रम का कारण क्या है? एक बहुत ही साधारण सी बात लीजिए. मुझे कार्य करना चाहिए, और मैं दुनिया में अच्छा करना चाहता हूं। मैं जानता हूं कि सरकार दुनिया में भलाई करने वाली है, लेकिन मैं खुद भी धार्मिक बनना चाहता हूं और ताकतवर भी बनना चाहता हूं, कह रहा हूं कि मैं मदद करना चाहता हूं। असल में मुझे एक रोल्स रॉयस और बाकी सब कुछ चाहिए, है ना? अत: महत्वाकांक्षा, जिसे पूरा करने की चाह हो, न केवल धार्मिक बल्कि राजनीतिक क्षेत्र में भी भ्रम का कारण है। पूर्णता की खोज भय और भ्रम का कारण है।

भ्रम की स्थिति अचानक आसमान से नहीं आती; यह विभिन्न कारणों से आता है। तो चूँकि हमारा मन भ्रमित है, इसका कारण क्या है? यदि कोई स्पष्ट रूप से सोचने में सक्षम हो, तो भ्रम की कोई भावना नहीं होगी। यदि मेरा मन बहुत स्पष्ट होता, किसी चीज़ के बारे में स्पष्ट नहीं, बल्कि स्पष्टता की स्थिति में होता, तो कोई भ्रम नहीं होता। मुझे आशा है कि आप किसी चीज़ के बारे में दिमाग के स्पष्ट होने और अपने आप में स्पष्ट होने के बीच के अंतर को समझेंगे। तो, कारण से भ्रम पैदा होता है; भ्रम पहले नहीं आता और फिर कारण। हम डर के बारे में बात कर रहे हैं और मैं कहता हूं कि डर इसलिए आता है क्योंकि हम पूरा करना चाहते हैं। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि संतुष्टि से मेरा क्या मतलब है - अपने परिवार की भावना, आत्म-महत्व, एक छोटे तालाब में बड़ी मछली होना, शक्तिशाली राजनेता, महान संत, किसी भी रास्ते का उपयोग करना जिसके माध्यम से मैं अपना विस्तार कर सकता हूं। और जब तक मैं छोटे शहर में मुख्य व्यक्ति बनना चाहता हूं, तब तक यह डर हमेशा बना रहता है कि आप भी वैसा ही बनना चाहेंगे। और इसलिए हम प्रतिस्पर्धा करना शुरू करते हैं, और मैं हमेशा चिंतित रहता हूं, और बाकी सब भी। तो डर शुरू हो जाता है. जब तक कुछ बनने की चाहत है तब तक डर भी रहेगा और यही डर भ्रम पैदा करता है। मैं यह नहीं कहता कि यह मुख्य कारण है, लेकिन यह कारणों में से एक है।

मैं जाँचने जा रहा हूँ कि डर से हमारा क्या मतलब है, लेकिन कृपया केवल शब्दों को न सुनें। तुम्हें पता है कि तुम किससे डरते हो, है न? आपको अपनी नौकरी खोने का डर है, अपनी पत्नी के बीमार होने का डर है, या आप किसी से प्यार करते हैं और वह व्यक्ति आपसे प्यार नहीं करता है, या आपको मौत का डर है। यदि आप बिल्कुल सतर्क हैं, तो आप स्वयं देख सकते हैं कि आप किससे डरते हैं। कृपया अपने डर पर ध्यान दें जैसा कि मैं इसका वर्णन करता हूँ। अब डर से हमारा क्या मतलब है? आइए उदाहरण के लिए मृत्यु को लें। मृत्यु के भय का क्या अर्थ है? इसका मतलब है कि मैं भविष्य से डरता हूं, मैं जो कुछ हो सकता है उससे डरता हूं, मैं अंत होने से डरता हूं। वह डर समय में मौजूद है। कल का विचार और मेरे कुछ न होने का विचार

कल, भविष्य, भय लाता है। अर्थात विचार कल के बारे में सोचकर डर पैदा करता है। क्या ऐसा नहीं है? मैं एक बेईमान आदमी हूं, और मैं इसे छुपाता हूं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि आप इसका पता लगाएं, और मुझे डर है कि आप इसका पता लगा सकें। मुझे डर है कि कहीं आप कभी मेरी बात न जान लें—जो कि भविष्य में है। डर समय का है. जबकि, अगर मैं कह सकता हूं, "हां, मैं बेईमान हूं, और मुझे अब आपके द्वारा इसका पता चलने पर कोई आपत्ति नहीं है" - तो मैं समय को खत्म कर देता हूं, और कोई डर नहीं है। केवल तथ्य है. जब मैं तथ्य जान लेता हूं तो कोई भय नहीं रहता। लेकिन तथ्य के बारे में भ्रमित होने में, और तथ्य को उस रूप में बदलने की कोशिश करने में जो मैं सोचता हूं कि यह होना चाहिए, मेरी कल्पना के अनुसार, डर शुरू होता है। अगर मैं जानता हूं कि मैं झूठा हूं, लालची हूं, तो कोई डर नहीं है। यह तो काफी। लेकिन अगर मैं झूठ को छुपाने की कोशिश करता हूं और कुछ और बनने की कोशिश करता हूं, तो डर शुरू हो जाता है। इसलिए वास्तविक तथ्य को समझे बिना, तथ्य को पूरी तरह से देखे बिना बदलने की इच्छा, लेकिन केवल यह चाहना कि यह कुछ और हो, यही डर की शुरुआत है - जिसमें समय और हासिल करने की इच्छा शामिल है। तो आपके मन में डर है जो भ्रम पैदा करता है। जब तक आप भय को नहीं मिटाते तब तक आप भ्रम से मुक्त नहीं हो सकते। डर को समझने का अर्थ है मन की प्रक्रिया, स्वयं को समझना और यह कैसे समय नामक चीज़ का निर्माण करता है। अर्थात विचार ही समय का निर्माण करता है। मैं 9:30 बजे जाने वाली ट्रेन के अर्थ में कालानुक्रमिक समय की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं डर की प्रक्रिया के बारे में बात कर रहा हूं, स्वयं के बारे में जो भविष्य में कुछ बनने के लिए समय बनाता है, और उस प्रक्रिया में निराशा और दुःख होता है। और उस दुःख से बचने के लिए, आप सभी प्रकार की बकवास, मिथकों का आविष्कार करते हैं, और भ्रम और भय की स्थिति में रहते हैं।

तो हम मुद्दे पर आते हैं, जो यह है: क्या मन तथ्य को बदलने की इच्छा के बिना तथ्य को देख सकता है? मैं लालची हूं, मैं ईर्ष्यालु हूं—ईर्ष्या लालच का हिस्सा है, है न? क्या मैं इस तथ्य को देख सकता हूँ कि मुझे ईर्ष्या हो रही है? कृपया महोदय, इसे देखें। केवल मेरी बात न सुनें, बल्कि यदि हो सके तो तथ्य पर भी गौर करें। तब आप देखेंगे कि किसी भी चीज़ को देखना, यह जानना कि आप हिंसक हैं, इसे इस अर्थ में जानना कितना असाधारण रूप से कठिन है कि आप देखते हैं कि आप हिंसक हैं। जब आप इसके संबंध में तुलना नहीं करते, निंदा नहीं करते, या स्वयं को उचित नहीं ठहराते, तो क्या तथ्य की समझ नहीं होती है और इसलिए तथ्य में मौलिक परिवर्तन नहीं होता है? यानी मैं हिंसक हूं. क्या मैं इसे बिना किसी टालमटोल की भावना के देख सकता हूँ, क्या मैं इसमें भाग ले सकता हूँ? मैं पहले ही बता चुका हूं कि ध्यान से मेरा क्या मतलब है।

ध्यान समय पर नहीं है, यह यह नहीं कह रहा है, "मुझे उपस्थित होना चाहिए," या "मैं इसे विकसित करूंगा," जिसके लिए समय की आवश्यकता होती है। लेकिन जो मन कहता है, "मुझे यह चीज़ अवश्य देखनी चाहिए," वह कार्य करता है, देखता है। जब आप वास्तव में किसी चीज़ में रुचि रखते हैं, जब आपका पूरा जीवन उस पर निर्भर करता है, तो आप पूरा ध्यान देते हैं।

तो जो मन स्वयं को अपनी कंडीशनिंग से मुक्त करने में सक्षम है वह वास्तव में स्वयं को ज्ञात से मुक्त कर रहा है, है न? मन को ज्ञात द्वारा एकत्रित किया जाता है, जिसमें दुख, सुख और पूर्ति की इच्छा होती है। मन ही वह सब कुछ है; यह समय का परिणाम है. मन ज्ञात के क्षेत्र में कार्य करता है। ये स्पष्ट मनोवैज्ञानिक तथ्य हैं।

विचार केवल ज्ञात के क्षेत्र में ही कार्य कर सकता है क्योंकि विचार ज्ञात का परिणाम है, अतीत की प्रतिक्रिया है, अनुभवों का संग्रह है। मन स्मृतियों, संगति का बैंक है और उसी से प्रतिक्रिया आती है। प्रतिक्रिया सोच रही है.

तो सोच ज्ञात के क्षेत्र के भीतर है, और उस क्षेत्र के भीतर और उस क्षेत्र से, यह पता लगाने की कोशिश करता है कि अज्ञात क्या है। यह असंभव है। मैं यहां बैठता हूं और जानना चाहता हूं कि उस पहाड़ी के पार क्या है। कोई इसे देखता है और इसका वर्णन करता है, और मैं यहां बैठता हूं और इसके बारे में किताबें पढ़ता हूं और कहता हूं कि यह बुद्ध, शंकर, ईसा मसीह है, और अटकलें लगाना शुरू कर देता हूं। तो सारा ज्ञान ज्ञात के क्षेत्र में है, और उस केंद्र से आप अज्ञात की ओर जाने का प्रयास करते हैं। तुम नहीं कर सकते। आप अज्ञात, अथाह, जो अकल्पनीय है, उसे ज्ञात में आमंत्रित नहीं कर सकते। इसीलिए मन को स्वयं को ज्ञात, ज्ञात होने वाली सभी यादों, अनुभवों, पीड़ाओं, दुखों, इच्छाओं और इच्छा - सभी मनोवैज्ञानिक संचयों से मुक्त करना होगा। तब आप देखेंगे कि आपकी कंडीशनिंग से मुक्ति समय की बात नहीं है।

कंडीशनिंग को तुरंत तोड़ना है। समझ केवल वर्तमान में होती है, तात्कालिक में। और कोई समझ नहीं है क्योंकि आप अपना पूरा ध्यान नहीं दे रहे हैं। यह मत कहो, "मैं पूरा ध्यान कैसे दूं?" क्योंकि तब तो तुम गलत पेड़ पर भौंक रहे हो। तब आप एक ऐसी व्यवस्था की तलाश करेंगे जो मन को और अधिक पंगु बना दे। कोई भी प्रणाली मन को मुक्त नहीं कर सकती है, लेकिन जो चीज मन को उसके अपने ज्ञान से मुक्त करेगी वह चुनौती के प्रति तत्काल प्रतिक्रिया की समझ है। अगर मैं आपसे पूछूं, "क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?" आपकी प्रतिक्रिया तत्काल है. उस प्रतिक्रिया पर जाएँ.

पता लगाएँ कि आप ऐसा उत्तर क्यों देते हैं। यदि आप उस एक प्रतिक्रिया में जाएंगे, तो आप पूरी बात उजागर कर देंगे। यदि आप समझेंगे कि क्या है, जो अथाह है, तो यह आवश्यक है कि मन ज्ञात से मुक्त हो - शंकर, बुद्ध, ईसा मसीह का ज्ञात, हर किताब का ज्ञात, हर विचार, हर अनुभव का ज्ञात। मन खाली होना चाहिए, लेकिन अस्पष्ट, खाली, रिक्तता में मंत्रमुग्ध नहीं होना चाहिए। मन को सभी अतीत से मुक्त करना होगा, न केवल उसके दुखों से, बल्कि उसके सुखों से भी, और इसका मतलब है अत्यधिक कठिन परिश्रम - दुनिया में किसी भी अनुशासन के अभ्यास से कहीं अधिक कठिन। क्योंकि इसमें पल-पल ध्यान देने की जरूरत होती है ताकि मन न लगे

जमा करो। आप एक सुंदर सूर्यास्त देखते हैं और वहां मनमोहक भावना का जबरदस्त एहसास होता है, और मन उस अनुभव को संचय के रूप में रखता है। और यदि आप सावधान नहीं हैं, तो आपने उस अनुभव को जड़ जमाने और कायम रहने के लिए जमीन दे दी है। अतः यह ज्ञात का हो जाता है। जब तक पूर्ण ध्यान न दिया जाए, प्रत्येक अनुभव उस भूमि को जन्म देता है जिसमें वह टिक सकता है।

यह ध्यान तुम्हें किसी अभ्यास से, किसी ध्यान से नहीं मिलेगा। यह वहाँ है, यदि आप रुचि रखते हैं, यदि आपके पास देखने के लिए आँखें हैं, यदि आप कहते हैं, "मुझे इसका पता लगाना चाहिए।" तब आप देखेंगे कि ऐसा मन अज्ञात है।
यह सब जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं वह कोई सिद्धांत नहीं है, यह आपके लिए सीखने और दोहराने के लिए कुछ नहीं है। यह आपके लिए जाने लायक कुछ है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें आपको काम करना है; तुम मुझसे नहीं सीख सकते. इसका कोई शिक्षक, कोई गुरु नहीं है. तुम्हें देखना होगा, तुम्हें कष्ट सहना होगा, तुम्हें अपने आप में, अपने आप में अज्ञात समुद्र की यात्रा करनी होगी, और इसके लिए अत्यधिक काम की आवश्यकता है, यह ध्यान देने की मांग करता है, और जहां ध्यान है वहां प्रेम है।

24 सितंबर, 1958

मद्रास, भारत, 1958

मद्रास में पहली वार्ता

मुझे लगता है कि अगर हमें एक-दूसरे को समझना है तो यह काफी महत्वपूर्ण है कि हम अपने बीच सही संचार की रेखाएं स्थापित करें, क्योंकि अगर हमारे पास एक-दूसरे के साथ संवाद के साधन नहीं हैं, तो हम कभी भी इस बात को पूरी तरह समझ नहीं पाएंगे कि क्या है। हम किस बारे में बात कर रहे हैं, या सहमत या असहमत होने की स्थिति में हैं। मैं सोचता हूं कि यह स्वयं जानना काफी महत्वपूर्ण है कि सुनने से हमारा क्या मतलब है। क्या हम वास्तव में केवल तभी दूसरे की बात सुनने में सक्षम हैं जब हमसे किसी चीज़ की तत्काल मांग की जाती है या जब परिस्थितियाँ हमें ऐसा करने के लिए मजबूर करती हैं, जब कोई आवश्यकता होती है? यदि हम देखते हैं कि हमारा सारा जीवन निश्चित समझ पर निर्भर करता है, तो हम पूरी तरह से वहां हैं, और हम उत्सुकता से सुनते हैं, और फिर वक्ता और सुनने वाले के बीच एक सही संचार स्थापित होता है। जाहिर है आप यहां कुछ सुनने आए हैं और मैं कुछ कहना चाहता हूं, लेकिन हम आपके और मेरे बीच सही संवाद कैसे स्थापित करें? यह वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए कृपया इसे यूं ही नजरअंदाज न करें और कहें, "ठीक है, बात करो, और हम देखेंगे कि क्या हम समझ सकते हैं।" मुझे नहीं लगता कि यह इतना आसान है क्योंकि जो महत्वपूर्ण है वह केवल यह नहीं है कि मुझे क्या कहना है, बल्कि यह भी है कि आप मुझे जो कहना है उसे कैसे सुनते हैं, अगर वास्तविक संचार होना है।

यदि आप जो मैं कहता हूं उसका अनुवाद अपने विचारों और राय के अनुसार, या अपने पूर्वाग्रहों और कंडीशनिंग के अनुसार करते हैं, तो जाहिर तौर पर कोई संचार नहीं होता है। तब आप अपनी राय, अपने विचार सुन रहे होते हैं। इसलिए यदि आप सुनना चाहते हैं, तो यह आवश्यक नहीं है कि पहले यह जान लें कि वक्ता क्या कहना चाहता है। आपको यह पता लगाना चाहिए कि क्या वह जो कहना चाहता है वह तार्किक, उचित, पर्याप्त रूप से स्पष्ट है जो उन समस्याओं पर लागू होता है जिनके साथ कोई सामना कर रहा है, या क्या वह किसी विशेष पूर्वाग्रह से बोलता है और उस दृष्टिकोण से एक निश्चित निष्कर्ष पर बहस करता है, और जल्द ही। लेकिन यह सुनना बहुत कठिन लगता है क्योंकि मैं यहां तीस वर्षों से अधिक समय से बात कर रहा हूं

और पूरी दुनिया में, और जाहिरा तौर पर ऐसा लगता है जैसे मुझे जो कहना है उसे संप्रेषित करना लगभग असंभव है। यह काफी घटना है.

तो दूसरे क्या कहते हैं उसे समझने से कौन रोकता है, और क्या आप और मैं एक दूसरे को समझ सकते हैं? हममें से अधिकांश के लिए सुनना महज़ एक आदत है, है न? आप किसी बैठक में आते हैं और सुनते हैं, लेकिन जब आप सुनते हैं तो वास्तव में क्या होता है? सबसे पहले, वक्ता के बारे में आपकी कुछ राय है, कुछ निष्कर्ष हैं, उसकी किसी तरह की प्रतिष्ठा है, आपको उसका चेहरा पसंद है या आपको यह या वह नापसंद है, तो आप वास्तव में उसे नहीं बल्कि उस बारे में सुन रहे हैं जिसके बारे में आपकी राय है उसे या आप स्वयं क्या सोचते हैं। यदि आप अपने आप पर, अपने सुनने के तरीके पर ध्यान दें, तो आपको जल्द ही पता चल जाएगा कि वास्तव में आप बिल्कुल भी नहीं सुन रहे हैं; कोई व्यक्ति जो सुनता है उसका अनुवाद इस आधार पर कर रहा है कि क्या सुनना सबसे सुविधाजनक है, वह क्या सुनना चाहता है, इत्यादि। तो एक बाधा है, और जब आप कहते हैं कि आप सुन रहे हैं, तो आप वास्तव में बिल्कुल भी नहीं सुन रहे हैं।

इसलिए मुझे लगता है कि हमारे लिए उस बाधा को दूर करना बहुत महत्वपूर्ण है। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह सबसे कठिन चीजों में से एक है - बिना किसी मानसिक रुकावट के, किसी भी प्रकार के अनुवाद, व्याख्या, तुलना के बिना दूसरे को सुनने में सक्षम होना; सिर्फ सुनने के लिए. तब हम एक दूसरे के साथ एकता स्थापित करेंगे; तब हम मामले के मूल तक पहुंचेंगे और केवल तर्क-वितर्क करते हुए शब्दों पर ही अटके नहीं रहेंगे। इसलिए मुझे उम्मीद है कि हम उस तरह से एक-दूसरे को सुन सकते हैं क्योंकि मुझे लगता है कि सुनने की सच्ची क्रिया में एक चमत्कार होता है। अगर मुझे पता है कि दूसरे को क्या कहना है तो उसे कैसे सुनना है, तो मैं शब्दों से परे चला जाता हूं, फिर मैं उसका अर्थ पकड़ लेता हूं। लेकिन मुझे पहले सुनना होगा; तब मैं सहमत या असहमत हो सकता हूं, तब मैं वह जो कहता है उसमें झूठ या सच्चाई देख सकता हूं। इसलिए मेरे पास अपने विचारों, अपनी राय, अपने निष्कर्षों, अपने अनुभवों को प्रोजेक्ट न करने की क्षमता होनी चाहिए, क्योंकि ये उस समझ में बाधा के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए यदि मैं सुझाव दे सकता हूं, तो यदि आप कर सकते हैं तो कृपया उस तरीके से सुनें।

यह सबसे कठिन चीज़ों में से एक है; यह एक कला है.

आप एक दिन में वायलिन बजाना नहीं सीख सकते, और इसी तरह आप तुरंत सही ढंग से नहीं सुन सकते क्योंकि आपने पहले कभी नहीं सुना है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी की बात सुनने की कोशिश की है - अपनी पत्नी की, अपने पति की, अपने पड़ोसी की, किसी राजनेता की, किसी अधिकारी की - क्या आपने कभी सचमुच सुनी है? यदि आप प्रयास करेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह कितना असाधारण रूप से कठिन है। सुनने में आपको पता चलना शुरू हो जाएगा कि जो कहा जा रहा है वह झूठ है या सच, आपको पता चल जाएगा कि वक्ता किस स्रोत से या किस पृष्ठभूमि से बात कर रहा है, उसके विचार की पूर्णता क्या है, क्या उसमें तर्क, बुद्धि और क्षमता है।

समझ, या क्या वह केवल अपने पूर्वाग्रहों, अपनी अस्थायी प्रतिक्रियाओं का प्रक्षेपण कर रहा है।

सुनने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता नहीं होती; जब तुम ध्यान केंद्रित करते हो तो कोई समझ नहीं होती; जब आप एकाग्र होते हैं तो आप स्वयं को सुनने के लिए मजबूर कर रहे होते हैं, क्या ऐसा नहीं है? आप तभी सुनते हैं जब स्वतंत्रता का एहसास होता है, जब मन आराम से निरीक्षण कर रहा होता है। तभी सीखने की संभावना बनती है. मुझे जो कहना है वह केवल कुछ सूचनाओं, ज्ञान का संचार नहीं है, बल्कि यदि हम सीख सकें, तो हम अपनी सभी समस्याओं का सामना करने में सक्षम होंगे। तभी हम समस्या के बारे में जान सकेंगे। मुझे लगता है कि हमारे जीवन में इतनी सारी समस्याएं हैं कि जब तक हम इन समस्याओं के बारे में नहीं सीखेंगे, हम उनका समाधान कभी नहीं कर पाएंगे। हमें यह नहीं सीखना होगा कि समस्या का समाधान कैसे किया जाए, बल्कि समस्या की प्रकृति के बारे में सीखना होगा।

अब सीखने वाले मन की स्थिति क्या है? यानी, अगर मेरे पास कोई समस्या है - आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, वे असंख्य हैं - और अगर मुझे पता है कि किसी समस्या के बारे में कैसे सीखना है, तो मैं समस्या का समाधान कर सकता हूं। लेकिन अगर मैं समस्या पर ऐसे दिमाग से आता हूं जो पहले से ही इसे एक निश्चित तरीके से हल करने की इच्छा रखता है, या यदि समस्या में असंख्य जटिलताएं और साइड मुद्दे हैं जिनका मैं पालन नहीं करता हूं, तो मैं इसका पूरी तरह से सामना नहीं कर पाऊंगा। मैं इसे तभी पूरा कर सकता हूं जब मैं इसके बारे में सब कुछ सीखने में सक्षम हो जाऊं। मुझे नहीं पता कि मैं जो कहना चाहता हूं उसे समझा पा रहा हूं या नहीं।

मुझे आशा है कि आप ज्ञान संचय करने वाले दिमाग और सीखने वाले दिमाग के बीच अंतर देखेंगे। सीखना एक जीवित प्रक्रिया है; यह कोई योगात्मक प्रक्रिया नहीं है. मैं इस पर बहुत ध्यान से जा रहा हूं, और आप वर्तमान में देखेंगे कि जो दिमाग ज्ञान जमा करता है वह सीख नहीं सकता है। सीखने के लिए, मन स्वतंत्र होना चाहिए, तीव्र गति से चलने में सक्षम होना चाहिए, लेकिन जो मन संचय कर रहा है वह तीव्र गति से चलने में सक्षम नहीं है; इसका एक निश्चित बिंदु है जहां से यह गति करता है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, आप देखेंगे कि अपने अस्तित्व की समस्याओं को समझने के लिए हमें मामले पर समग्रता से विचार करना होगा। मैं उस शब्द का उपयोग पूरी तरह से यह इंगित करने के लिए कर रहा हूं कि हमारा दृष्टिकोण विभागों के माध्यम से नहीं होना चाहिए, न कि एक तकनीशियन, एक इंजीनियर, एक वैज्ञानिक, एक वकील, एक विद्वान, एक राजनेता, इत्यादि के रूप में, बल्कि हमें जीवन को समग्र रूप से देखना चाहिए क्योंकि जीवन ये सब चीजें हैं. जीवन आजीविका अर्जित करना है, जीवन रिश्तों में निरंतर चलने वाली लड़ाई है, जीवन सुंदरता भी है और कुरूपता भी है, जीवन सभी चीजों के साथ समायोजन की भावना है। इसलिए किसी समस्या से निपटने के लिए हमें उस पर समग्रता से विचार करना चाहिए, न कि किसी विशेष इकाई के रूप में। ऐसा होने पर, आइए देखें कि दुनिया में क्या हो रहा है, क्योंकि आप जो हैं, वही दुनिया है, आप जो सोचते हैं, उससे आप दुनिया बनाते हैं; तुम संसार का हिस्सा हो, संसार से अलग नहीं; आपका

समस्याएँ दुनिया की समस्याएँ हैं - दुनिया आपका पड़ोसी है और पड़ोसी वह है जो आपके बगल में या दस हजार मील दूर है।

अब दुनिया में क्या हो रहा है, वास्तव में क्या हो रहा है?

वहाँ अत्यधिक जनसंख्या है, वहाँ अतिसंगठन है, वहाँ जनसंचार है। इन चीजों के जरिए इंसान के दिमाग को नियंत्रित किया जा रहा है।

जब अधिक जनसंख्या होती है, तो अनिवार्य रूप से विचारों में कटौती, अनुकूलन और सीमितता के कारण भ्रम की स्थिति पैदा होती है - जो कि भारत में हो रहा है।

इस देश में अत्यधिक जनसंख्या है, और इसलिए भारी भ्रम, गिरावट, भ्रष्टाचार है; और इस भ्रष्टाचार, इस गिरावट को नियंत्रित करने के लिए अनिवार्य रूप से मनुष्य के दिमाग को नियंत्रित करने वाली तानाशाही होनी चाहिए। और अति-संगठन भी मनुष्य और उसके विचार पर नियंत्रण लाता है; और जनसंचार के माध्यम से - रेडियो, समाचार पत्र, राजनेता, टेलीविजन - आपको प्रभावित किया जा रहा है और इसलिए नियंत्रित किया जा रहा है। तो अस्तित्व के हर चैनल, धारणा के हर चैनल के माध्यम से, हमें आकार दिया जा रहा है, अनुकूलित किया जा रहा है, नियंत्रित किया जा रहा है। समाज, धर्म, किताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, संगठन - चाहे वे आध्यात्मिक हों या आध्यात्मिक न हों - अर्थशास्त्र, राजनीति, सब कुछ मनुष्य को प्रभावित कर रहा है और उसे कुछ विचारों, मतों, अवधारणाओं के अनुसार आकार दे रहा है। मुझे नहीं पता कि आपको ये सब पता है या नहीं. यदि आप जरा भी विचारशील हैं, तो आपको पता होना चाहिए कि न केवल रूस या चीन में, बल्कि पूरे विश्व में क्या हो रहा है। एक हिंदू, बौद्ध, ईसाई, कैथोलिक और इसके बाकी सभी लोगों के रूप में आप जो सोचते हैं वह वास्तव में आपके दिमाग को एक विशेष प्रकार के विचार, आदत, प्रतीक, गतिविधि और सामाजिक संबंधों के लिए अनुकूलित कर रहा है। यह तो स्पष्ट है, है ना? यह इतना स्वाभाविक है कि हम इसे अपरिहार्य मान लेते हैं। यह एक अकाट्य सत्य है कि आप जो सोचते हैं, जो महसूस करते हैं वह आपके परिवेश से निर्धारित होता है। सब कुछ - किताबें, शिक्षक, पर्यावरण, भोजन, जलवायु - आपके विचार को आकार देते हैं, और जैसे-जैसे समाज अधिक से अधिक संगठित होता जाता है, मन की कंडीशनिंग गहरी होती जाती है। यह एक सच्चाई है चाहे आप इसे पसंद करें या न करें।

जब आपको इस तथ्य का एहसास होता है, तो सवाल उठता है कि कंडीशनिंग की उस प्रक्रिया के संबंध में व्यक्ति का क्या स्थान है। कृपया, हम इस बारे में बहस नहीं कर रहे हैं; हम इसके बारे में जानने की कोशिश कर रहे हैं - इस तथ्य के बारे में कि आप हर चीज़ से प्रभावित होते हैं, अतीत से और वर्तमान से जो भविष्य का निर्माण करता है। उस तथ्य के संबंध में, व्यक्ति कहाँ है? क्या कोई व्यक्ति भी है? इसे खोजना बहुत महत्वपूर्ण है, हममें से प्रत्येक के लिए इसके बारे में सीखना बहुत महत्वपूर्ण है, यह जानना कि क्या आप वास्तव में एक व्यक्ति हैं या केवल वातानुकूलित विचार की अभिव्यक्ति हैं, जो इससे प्रभावित है।

सदियों और इसलिए एक विशेष तरीके से सोचना ताकि व्यक्ति वास्तव में पूरी तरह से समाप्त हो जाए। मुझे आशा है कि आप बात समझ गए होंगे।

तानाशाह न केवल रूस या चीन के तानाशाहों को, बल्कि इस देश और हर जगह के तानाशाहों को, स्वतंत्र विचारों को खत्म करना चाहते हैं, क्योंकि जिस क्षण आप अपने बारे में सोचने में सक्षम होते हैं, आप उनके दृष्टिकोण के अनुसार, समाज के लिए खतरा होते हैं। देखना। और इसलिए शिक्षा, धर्म, सामाजिक प्रभाव, रेडियो और टेलीविजन हमें बताते हैं कि क्या सोचना है, और हम उनकी राय, तर्क और प्रतिवाद दोहराते हैं। आप गीता या बाइबिल पढ़ते हैं और दोहराते हैं, या आप मार्क्स पढ़ते हैं और आप दोहराते हैं, पक्ष लेते हुए, सहमत होते हुए या विरोध करते हुए।

तो, यह सब देखकर, क्या कोई व्यक्ति है? यदि नहीं है तो फिर व्यक्ति का निर्माण कैसे होगा? मुझे नहीं पता कि मैं जो कहना चाहता हूं वह बता पा रहा हूं या नहीं। मुझे लगता है कि हम बिल्कुल भी व्यक्ति नहीं हैं। यद्यपि आपका शरीर दूसरे से भिन्न हो सकता है, चेहरा भिन्न हो सकता है, रूप भिन्न हो सकता है, आप द्रव्यमान हैं। आप साम्यवादी हैं, समाजवादी हैं, पूंजीवादी हैं; आप कुछ श्रेणियों, व्यवसायों, पेशे से संबंधित हैं। आपके पास कुछ कार्य हैं, और आप स्वयं को उन कार्यों के साथ या नौकरी, क्षमता के साथ पहचानते हैं, और आप एक व्यक्ति नहीं रह जाते हैं। जाहिर है, एक व्यक्ति होने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए, पूर्ण स्वतंत्रता जिसका अर्थ है एक क्रिया जो किसी कंडीशनिंग की प्रतिक्रिया नहीं है। मुझे आशा है कि आप इसका पालन करेंगे।

अब आज़ादी क्या है? किसी चीज़ से मुक्ति तो हम ही जानते हैं न? क्रोध, गुलामी, उत्पीड़न से मुक्ति, पत्नी, पति आदि से मुक्ति। हम किसी चीज़ से आज़ादी कुछ और बनने के लिए ही जानते हैं, है ना? मैं केवल अपने गुस्से से मुक्त होकर कुछ अलग बनना चाहता हूं। आज़ादी के बारे में हम बस इतना ही जानते हैं। तो स्वतंत्रता एक प्रतिक्रिया है, है ना? यानी मैं एक कैदी हूं और भागना चाहता हूं. भागने की चाहत कैदी होने की एक प्रतिक्रिया है, और उस प्रतिक्रिया को मैं आज़ादी कहता हूँ। इसलिए, जहां तक हमारा सवाल है, स्वतंत्रता वास्तव में एक प्रतिक्रिया है। लेकिन निश्चित रूप से स्वतंत्रता अपने आप में कोई प्रतिक्रिया नहीं है। यदि ऐसा है, तो यह स्वतंत्रता नहीं रह जाती।

कृपया इसके बारे में सोचें और यह न कहें कि, "आप बकवास कर रहे हैं," बल्कि आइए इसके बारे में जानें, इसके बारे में जानें।

तो दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसे देखकर, हमें एहसास होता है कि व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो गया है, और सवाल यह है कि व्यक्ति को नए सिरे से कैसे बनाया जाए? लोग इसकी जरूरत देखते हैं. सुधारक, समाजवादी, कई लोग कहते हैं कि हमें एक ऐसा समाज बनाना चाहिए जो एक नए प्रकार के व्यक्ति को जन्म दे, हमें ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जो ऐसी इकाई को जन्म दे। शायद मैं इसे अतिसरलीकृत कर रहा हूं, लेकिन सभी सुधारक, सभी सामाजिक

क्रांतिकारियों ने कहा है, "आइए हम एक ऐसा वातावरण बनाएं जो ऐसे व्यक्ति का निर्माण करेगा जो स्वतंत्र और रचनात्मक होगा।" मेरे लिए यह पूरी तरह से एक झूठा आदर्श है। क्योंकि यदि व्यक्ति केवल पर्यावरण की उपज है, तो समाज चाहे कितना भी भव्य, कितना भी सुव्यवस्थित, कितना ही सुंदर क्यों न हो, व्यक्ति फिर भी एक बनी-बनाई वस्तु, एक परिणाम ही होगा।

वह अधिक चतुर, अधिक दयालु, यह और वह हो सकता है, लेकिन वह अभी भी मूलतः एक उत्पाद है, और इसलिए वह एक व्यक्ति नहीं रह जाता है। गौर करें तो वास्तविक व्यक्ति कभी भी पर्यावरण का गुलाम नहीं होता, वह उस पर हावी हो जाता है या उसे छोड़कर चला जाता है; वह पर्यावरण का खिलौना नहीं है और पर्यावरण उसकी सोच को आकार नहीं देता है। हम इसे देखते हैं, लेकिन हम कहते हैं कि वे अपवाद हैं, और इसे वहीं छोड़ देते हैं। वह तो महज़ एक अच्छा बहाना है। यह वास्तव में समस्या से निपटने का एक तरीका नहीं है - यह कहना कि वे लोग अपवाद हैं, भगवान द्वारा भेजे गए हैं, या जो कुछ भी है, और हम सक्षम नहीं हैं।

इसलिए सुधारक ने समस्या का समाधान नहीं किया है और न ही कभी करेगा। वह सही व्यक्ति के निर्माण के लिए समाज के सुधार से चिंतित है, लेकिन सही व्यक्ति समाज का उत्पाद नहीं है; वह समाज से पूर्णतः मुक्त है। वह हावी होता है, अपने वातावरण की कंडीशनिंग को तोड़ता है; वह समाज पर कार्य करता है; समाज उस पर कार्रवाई नहीं करता.

तो यह सब देख रहे हैं - यह देख रहे हैं कि हर सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक प्रभाव से मन कैसे आकार लेता है, यह देख रहा है कि हर प्रकार की तानाशाही के साथ अत्याचार होता है, और यह भी देख रहा है कि समाज सुधारक, आर्थिक क्रांतिकारी सही माहौल बनाकर आशा करते हैं सही व्यक्ति का निर्माण करें—यह सब देखकर, क्या आप अपने आप से नहीं पूछते कि एक सही व्यक्ति कैसे अस्तित्व में आ सकता है, एक ऐसा व्यक्ति जो परिस्थितियों का खिलौना नहीं है? शायद यह पहली बार है जब आपने खुद से यह प्रश्न पूछा है, और यदि आप वास्तव में इस बारे में पूछताछ कर रहे हैं, तो इसका उत्तर क्या है? मुझे आशा है कि आप समस्या को समझेंगे क्योंकि जब तक आप समस्या के बारे में बहुत स्पष्ट नहीं होंगे, आपका उत्तर स्पष्ट नहीं होगा।

शायद मैं इसे अलग ढंग से रख सकता हूं. हमारे मन अनुकूलित हैं; यह एक तथ्य है.
अनुकूलित होने के अनेक तरीके हैं और केवल उस संस्कार में सुधार करने से ही सच्चा व्यक्ति सामने नहीं आएगा। प्रत्येक सुसंगठित, कुशल समाज को विचार को अनुकूलित करना चाहिए, और चाहे वे इसे क्रूरता से करें या बच्चों की तरह, यह एक ही बात है; उन्हें विचार करना चाहिए।

तो यह सब देखकर, कोई व्यक्ति कैसा हो? क्योंकि यदि आप एक व्यक्ति नहीं हैं, तो कोई रचनात्मक समाज नहीं हो सकता।

आप देखिए, यदि आप एक व्यक्ति नहीं हैं तो आप अपने लिए और समाज के लिए और अधिक भ्रम, अधिक दुःख, अधिक समस्याएं पैदा करने के लिए बाध्य हैं - जो

फिर से एक स्पष्ट तथ्य है. तो आप एक व्यक्ति कैसे बनें, आप एक ऐसे व्यक्ति कैसे बनें जो परिस्थितियों से प्रेरित न हो, जो समाज से प्रभावित न हो, जो राजनेता और बाकी सभी चीजों से नियंत्रित न हो? ऐसा व्यक्ति कैसे अस्तित्व में आता है? यदि यह आपकी समस्या होती, तो आप इसके बारे में कैसे निर्णय लेते? यदि आप इसमें रुचि रखते हैं, जैसा कि आपको होना भी चाहिए क्योंकि आपको बुद्धिमान माना जाता है, धार्मिक मामलों, समाज आदि से चिंतित माना जाता है, तो आप इस समस्या से कैसे निपटेंगे? आप वह व्यक्ति कैसे होंगे? यह वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि केवल ऐसा व्यक्ति ही वास्तविकता को खोज पाएगा, केवल ऐसा व्यक्ति ही यह खोज पाएगा कि ईश्वर है या नहीं, केवल ऐसा व्यक्ति ही है जो समय से मुक्त होगा और जो अथाह की खोज करेगा.

अन्य लोग अथाह, ईश्वर, कालातीत और इसके बाकी सभी चीज़ों के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन वे केवल शब्दों में ही बात करते हैं। वे जो कहते हैं उसका कोई मतलब नहीं है क्योंकि वे बहुत सारे तोतों की तरह हैं जो केवल वही दोहराते हैं जो उन्हें बताया गया है।

तो हमारी समस्या मन है. वह मन जो संस्कारित है, जो आकार में है, जो हर प्रभाव, हर संस्कृति का खिलौना है, जो मन अतीत का परिणाम है, असंख्य यादों, अनुभवों से बोझिल है - ऐसा मन खुद को इन सब से कैसे मुक्त कर सकता है? संपूर्ण व्यक्ति बनें? मैं कहता हूं कि यह केवल तभी संभव है जब स्वयं का गंभीर, ईमानदारी से अध्ययन किया जाए - स्वयं आत्मा या कोई तथाकथित उच्च स्व नहीं है क्योंकि वे फिर से सिर्फ शब्द हैं। मैं रोजमर्रा के अस्तित्व के स्वयं की बात कर रहा हूं, वह स्वयं जो क्रोधित होता है, वह स्वयं जो महत्वाकांक्षी है, जो आहत होता है, जो दिखना चाहता है, जो बहुत उत्सुक है, जो कहता है, “मुझे सुरक्षित रहना चाहिए; मुझे अपनी स्थिति पर विचार करना चाहिए," इत्यादि। वही हमारा एकमात्र स्वत्व है। उच्चतर स्व, परम आत्मा केवल एक विचारधारा, एक अवधारणा, एक अवास्तविकता है; और असत्य के पीछे जाना अच्छा नहीं है, क्योंकि इससे भ्रम पैदा होता है। मैं जानता हूं कि सभी पवित्र पुस्तकें सुपर-आत्मा के बारे में बात करती हैं, चाहे वह कुछ भी हो, और जो व्यक्ति दैनिक स्व में फंसा हुआ है, उसके लिए यह एक अद्भुत पलायन है। जितना अधिक वह अनुमान लगाता है, जितना अधिक वह इसके बारे में लिखता है, उतना ही अधिक वह सोचता है कि वह धार्मिक है। लेकिन मैं कहता हूं कि यदि आप स्वयं में जा सकते हैं जिसे हम सभी जानते हैं, रोजमर्रा की गतिविधि का स्व, तो उस आत्म-ज्ञान के माध्यम से, सावधानीपूर्वक विश्लेषण, सावधानीपूर्वक अवलोकन के माध्यम से, आप पाएंगे कि आप उन सभी प्रभावों से अलग होने में सक्षम हैं जो शर्त विचार.

दूसरी बात यह है कि विचार, सोचने की प्रक्रिया से ही स्वयं को परिस्थितियों में ढाल लेता है। क्या ऐसा नहीं है? आप जो भी विचार करते हैं उसका असर दिमाग पर पड़ता है और यह बात समझना जरूरी है। विचार चाहे अच्छा हो या बुरा, कुरूप हो या सुंदर, सूक्ष्म हो या धूर्त - जो भी विचार हो, वह मन को आकार देता है। इसलिए

क्या सोच रहा है? सोचना, निश्चित रूप से, प्रतिक्रिया है - जो आप जानते हैं उसकी प्रतिक्रिया। ज्ञान प्रतिक्रिया करता है, और हम इसे सोच कहते हैं। कृपया इसका अवलोकन करें श्रीमान, और इस पर विचार करें; हम इसमें बार-बार जाएंगे। यदि आप सतर्क हैं, अपनी सोचने की प्रक्रिया के प्रति जागरूक हैं, तो आप देखेंगे कि आप जो भी सोचते हैं वह पहले से ही दिमाग को आकार दे चुका है; और जो मन विचार से आकार लेता है वह स्वतंत्र नहीं रह गया है, और इसलिए वह मन व्यक्तिगत नहीं है।

इसलिए आत्म-ज्ञान सोच की निरंतरता की नहीं बल्कि सोच के घटने, ख़त्म होने की प्रक्रिया है। लेकिन आप किसी भी चाल, इनकार, नियंत्रण, अनुशासन आदि से सोच को समाप्त नहीं कर सकते। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप अभी भी विचार के क्षेत्र में फंसे हुए हैं। सोच तभी समाप्त हो सकती है जब आप विचारक की संपूर्ण सामग्री को जानते हैं, और इसलिए कोई यह देखना शुरू कर देता है कि आत्म-ज्ञान होना कितना महत्वपूर्ण है। हममें से अधिकांश सतही आत्म-ज्ञान से संतुष्ट हैं, सतह पर खरोंचने से, मनोविज्ञान की सामान्य एबीसी; मनोविज्ञान पर कुछ किताबें पढ़ना, थोड़ा कुरेदना और कहना कि आप जानते हैं, अच्छा नहीं है। यह महज़ आपने जो सीखा है उसे दिमाग पर लागू करना है। इसलिए आपको यह जानना शुरू कर देना चाहिए कि सीखना क्या है। क्या आप आत्म-ज्ञान और सीखने के बीच संबंध नहीं देखते हैं? जिस मन में आत्म-ज्ञान है वह सीख रहा है, जबकि वह मन जो अर्जित ज्ञान को केवल अपने ऊपर लागू करता है और सोचता है कि यह आत्म-ज्ञान है वह केवल संचय कर रहा है।

संचय करने वाला मन कभी सीख नहीं सकता। कृपया मुझसे सहमत न हों, लेकिन निरीक्षण करें। क्या आप कभी सीखते हैं? क्या आपने अभी तक पता लगाया है कि क्या आप कुछ सीखते हैं, या क्या आप केवल जानकारी जमा करते हैं?

मैंने अभी कहा कि आत्म-ज्ञान के बिना कोई व्यक्तित्व नहीं है, और मैंने समझाया है कि व्यक्तित्व, व्यक्ति से मेरा क्या मतलब है। मैं कहता हूं कि आत्म-ज्ञान के बिना कोई व्यक्ति नहीं है। आपने वह बयान सुना है और इस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? आप कहते हैं, क्या आप नहीं कहते, "इससे आपका क्या मतलब है?" यानी, आप कहते हैं, "समझाएं और मैं या तो आपसे सहमत हो जाऊंगा या असहमत हो जाऊंगा," और आप बाद में कहते हैं कि आपने कुछ सीखा है - लेकिन क्या वह सीख है? क्या सीखना सहमति या असहमति का विषय है?

क्या आप बिना सहमति या असहमति के उस बयान की जांच नहीं कर सकते?
निश्चित रूप से आप यह पता लगाना चाहते हैं कि क्या वह कथन गलत है या सत्य है—यह नहीं कि आप सहमत हैं या असहमत। अगर आप सहमत हैं या असहमत हैं तो किसी को इसकी परवाह नहीं है, लेकिन अगर आप स्वयं पता लगा लें कि उस कथन में सच्चाई है या नहीं, तो आप वास्तव में देखना, सीखना शुरू कर रहे हैं।

तो जो मन सहमत या असहमत होता है, जो निष्कर्ष पर पहुंचता है, वह सीखने में सक्षम नहीं है। अर्थात्, एक विशिष्ट दिमाग कभी भी रचनात्मक दिमाग नहीं होता है। वह मन जो संचित है, वह मन जो ज्ञान में डूबा हुआ है, ऐसा

दिमाग सीखने में असमर्थ है. सीखने के लिए एक ताज़गी होनी चाहिए; एक मन होना चाहिए जो कहता है, "मैं नहीं जानता, लेकिन मैं सीखने को तैयार हूं।" मुझे दिखाओ,'' और यदि दिखाने के लिए कोई नहीं है, तो यह स्वयं ही पूछताछ करना शुरू कर देता है। यह एक निश्चित बिंदु से शुरू होकर दूसरे निश्चित बिंदु पर नहीं जाता है। हम यही तो करते हैं, है ना? हम एक निष्कर्ष पर पहुंचते हैं और उस निश्चित बिंदु से हम अधिक सोचते हैं और दूसरे निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं। और इस प्रक्रिया को हम सीखना कहते हैं। लेकिन यदि आप ध्यान देंगे तो आप देखेंगे कि आप एक पद से बंधे हुए हैं और बस दूसरे पद पर चले जाते हैं, और मैं कहता हूं कि यह बिल्कुल भी सीखना नहीं है। सीखने के लिए एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो सीखने के लिए तैयार हो लेकिन खुद में कुछ जोड़ने के लिए नहीं। क्योंकि जिस क्षण आप स्वयं को जोड़ने में लगे हैं, आपने सीखना बंद कर दिया है। अत: आत्म-ज्ञान जोड़ने की प्रक्रिया नहीं है। आप जो सीख रहे हैं वह स्वयं के बारे में है, मन के तरीकों के बारे में है। आप इसकी चालाकी, इसकी सूक्ष्मताओं, इसके उद्देश्यों, इसकी असाधारण क्षमताओं, इसकी गहराई, इसकी विशालता के बारे में सीख रहे हैं; और सीखने के लिए आपको अत्यधिक विनम्रता के साथ आना होगा। जिस व्यक्ति ने ज्ञान संचित कर लिया है वह कभी भी विनम्रता नहीं जान सकता। वह विनम्रता के बारे में बात कर सकते हैं, वह विनम्रता के बारे में उद्धरण दे सकते हैं, लेकिन उनमें विनम्रता की कोई भावना नहीं है। जो व्यक्ति सीखता है वह मूलतः विनम्र होता है।

इसलिए हमारे सामने सच्चे व्यक्ति को सामने लाने की समस्या है। ऐसे व्यक्ति का निर्माण आत्म-ज्ञान के बिना नहीं किया जा सकता है, और आपको स्वयं के बारे में सीखना होगा। आप जो पाते हैं उसकी कोई निंदा नहीं हो सकती और जो आप पाते हैं उसके साथ कोई पहचान नहीं हो सकती, क्योंकि कोई भी पहचान, औचित्य या निंदा संचय का परिणाम है, और इसलिए आप सीखना बंद कर देते हैं। कृपया इसका महत्व अवश्य देखें। यह बहुत विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। यदि आप निरीक्षण करेंगे तो आप देखेंगे कि सीखना कितना आवश्यक है, और सीखने के लिए पूर्ण विनम्रता की भावना होनी चाहिए, और यदि आप स्वयं में जो देखते हैं उसकी निंदा करते हैं तो कोई विनम्रता नहीं है।

इसी तरह, यदि आप कुछ अच्छा देखते हैं और उसके साथ अपनी पहचान बना लेते हैं, तो आप सीखना बंद कर देते हैं। तो जो मन सीखने में सक्षम है वह सच्चा व्यक्तिगत मन है, न कि वह मन जो संचित है। वर्तमान में हम हर समय अपने संचय में वृद्धि कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, क्या आपने कभी जांच की है कि अनुभव क्या है? ध्यान दें, श्रीमानों, केवल मेरी बात न सुनें बल्कि अपने मन को देखें और जब मैं बात कर रहा हूं तो उसके अंदर जाएं।
जब आप कहते हैं, "मुझे एक अनुभव हुआ है," तो इससे आपका क्या मतलब है?
अनुभव का अर्थ है, है ना, एक अनुभूति, एक प्रतिक्रिया जो पहचानने योग्य हो।
मैं मानता हूं कि मुझे सुखद अनुभव हो रहा है या दुखदायी। मैं इसे पहचानता हूं क्योंकि मुझे पहले भी ऐसा ही अनुभव हुआ है। तो पिछले अनुभव वर्तमान अनुभव को अनुकूलित करते हैं। यह कोई ताज़ा अनुभव नहीं है. अगर

यह एक नया अनुभव है, इसे तुरंत पहचाना जाता है और अनुवादित किया जाता है और पुराने में डाल दिया जाता है। इसलिए, प्रत्येक अनुभव मन को व्यवस्थित करता है क्योंकि सभी अनुभव पिछले अनुभव के माध्यम से पहचाने जाते हैं। इसलिए, अनुभव कभी भी मुक्ति कारक नहीं होता है।

जबकि पूरी दुनिया तकनीशियनों, विशेषज्ञों को विकसित कर रही है, हर विचार को आकार और अनुकूलित किया जा रहा है, किसी के भी एक व्यक्ति होने की कोई संभावना नहीं है। एक व्यक्ति होने की संभावना तभी आती है जब आप अपने बारे में समझना और सीखना शुरू करते हैं, किताबों के माध्यम से नहीं क्योंकि आप जो हैं, उसे किसी और के माध्यम से नहीं समझा जा सकता है। आपको स्वयं इसका निरीक्षण करना होगा, और आप इसे स्पष्टता के साथ, ताकत और उद्देश्यपूर्ण निर्देशन के साथ केवल संबंधों में ही देख सकते हैं। आप जिस तरह से व्यवहार करते हैं, जिस तरह से आप बात करते हैं, जिस तरह से आप किसी फूल या पेड़ को देखते हैं, जिस तरह से आप नौकर से बात करते हैं, आपके हाथों की गति, आपकी आंखें - सब कुछ दिखाएगा, अगर आप बिल्कुल जागरूक हैं, तो आप कैसे हैं मन कार्य करता है, और मन स्वयं है। यह सुपर-स्व का आविष्कार कर सकता है या यह नरक का आविष्कार कर सकता है, लेकिन यह अभी भी मन है।

इसलिए, जब तक मन स्वयं को नहीं समझ लेता, तब तक कोई स्वतंत्रता नहीं है। संचय से स्वतंत्रता नहीं मिल सकती. तुम्हें सीखना होगा कि मन कितनी असाधारण चीज़ है। यह हमारे पास सबसे अद्भुत चीज़ है, लेकिन हम नहीं जानते कि इसका उपयोग कैसे किया जाए; हम इसका उपयोग केवल कुछ निश्चित स्तरों, विशिष्ट आत्म-केन्द्रित स्तरों पर ही करते हैं। यह एक शानदार उपकरण है, एक जीवंत चीज़ जिसके बारे में हम अभी भी बहुत कम जानते हैं।

हम केवल सतही विस्तार, चेतना की पतली परतों को जानते हैं, लेकिन हम मन के समग्र अस्तित्व, असाधारण गहराई को नहीं जानते हैं; और आप केवल इसके बारे में अनुमान लगाकर इसे नहीं जान सकते। आप इसके बारे में केवल सीख सकते हैं, और सीखने के लिए आपको पूरा ध्यान देना होगा। ध्यान एकाग्रता से भिन्न है। एकाग्रता केवल मन को संकुचित करती है, लेकिन ध्यान एक ऐसी अवस्था है जिसमें सब कुछ होता है।

इसलिए, एक धार्मिक व्यक्ति के लिए जो महत्वपूर्ण है वह किताबों से सीखी गई बातों को दोहराना नहीं है या उन अनुभवों को दोहराना नहीं है जो उसकी कंडीशनिंग ने पेश किए हैं, बल्कि उसका खुद को समझने के बारे में चिंतित होना है - बिना किसी भ्रम के, बिना किसी छेड़छाड़ के, बिना किसी बदलाव के मोड़—चीजों को वैसे ही देखना जैसे वे हैं। और चीजों को वैसे देखना जैसे वे वास्तव में हैं, एक बहुत बड़ा काम है। मुझे नहीं पता कि आपने कभी ऐसा किया है या नहीं. मुझे नहीं पता कि आपने कभी किसी चीज़ को बिना रंगे, बिना घुमाए, बिना नाम लिए देखा है या नहीं।

मेरा सुझाव है कि आप बदलाव के लिए, जिसे आप लालच या ईर्ष्या कहते हैं उस पर गौर करने का प्रयास करें, और देखें कि इसे देखना कितना कठिन है क्योंकि लालच, ईर्ष्या शब्द ही अपने साथ एक निंदात्मक महत्व रखता है। आप एक लालची आदमी, एक महत्वाकांक्षी आदमी हो सकते हैं, लेकिन महत्वाकांक्षा, भावना, अनुभूति को बिना देखें

इसकी निंदा करने के लिए, बस इसे देखने के लिए, जैसा कि आप देखेंगे, असाधारण क्षमता की आवश्यकता है।

यह सब आत्म-ज्ञान का एक हिस्सा है, और आत्म-ज्ञान के बिना, आप जो करना चाहते हैं वह करें, सुधार करें, हर तरह की क्रांति करें, सुपर-नेताओं, सुपर-राजनेताओं, आप कभी भी ऐसी दुनिया नहीं बनाएंगे जिसमें व्यक्ति समग्र हो जाए होना और इसलिए समाज को प्रभावित कर सकता है। इसलिए यदि आपकी इसमें रुचि है, तो हम इस पर बहुत गंभीरता से विचार करेंगे। परंतु यदि आप केवल सतही तौर पर इसमें जाना चाहते हैं, तो कृपया न आएं; न आना ही बेहतर है. बहुत से अनुयायियों की तुलना में कुछ ऐसे लोगों का होना कहीं बेहतर है जो वास्तव में गंभीर हैं। जो आवश्यक है वह है ईमानदारी, एक ईमानदार दिमाग जो अपने भीतर पूछताछ करना शुरू कर देता है। ऐसा मन स्वयं वह खोज लेगा जो वास्तविक है।

22 अक्टूबर, 1958

मद्रास में दूसरी वार्ता

मुझे लगता है कि यह अच्छा होगा अगर हम-आप और मैं-दो इंसानों की तरह चुपचाप अकेले अपनी समस्याओं पर बात कर सकें। मुझे लगता है कि अगर हममें यह भावना है तो हमें एक वक्ता द्वारा संबोधित किए जाने वाले श्रोता के रूप में सोचने की बजाय बहुत आगे बढ़ना चाहिए। यानी, अगर आप और मैं किसी कोने, एक शांत कमरे में जा सकें और अपनी समस्याओं का पता लगा सकें, तो मुझे लगता है कि हम बहुत आगे बढ़ जाएंगे, लेकिन दुर्भाग्य से यह संभव नहीं है। वहाँ बहुत सारे लोग हैं और समय बहुत सीमित है। इसलिए व्यक्ति एक बड़े दर्शक वर्ग का सहारा लेता है, और उसे हमेशा सामान्यीकरण करना पड़ता है, और सामान्यीकरण की प्रक्रिया में, विशिष्टताओं, विवरणों को स्वाभाविक रूप से छोड़ना पड़ता है। लेकिन हममें से अधिकांश के लिए सामान्यताओं का बहुत कम महत्व होता है और विशेष समस्या, विशेष मुद्दा, विशेष संघर्ष सर्वथा महत्वपूर्ण लगते हैं। व्यक्ति व्यापक, गहरे मुद्दों को भूल जाता है क्योंकि उसे अपनी ही रोजमर्रा की छोटी-छोटी समस्याओं का जबरन सामना करना पड़ता है।

इसलिए चर्चा करते समय, एक साथ बातचीत करते समय, मुझे लगता है कि हमें इन दोनों मुद्दों को ध्यान में रखना चाहिए, न केवल सामान्य, बल्कि विशेष भी। व्यापक और गहरे मुद्दे हममें से अधिकांश लोगों से दूर रहते हैं, लेकिन इन्हें समझे बिना, छोटी-छोटी समस्याओं, क्षुद्र तुच्छताओं, रोजमर्रा के संघर्ष के प्रति दृष्टिकोण का बहुत कम अर्थ होगा। मुझे लगता है कि हमें शुरुआत में ही इसे बहुत स्पष्ट रूप से देखना चाहिए - कि यदि कोई अस्तित्व की रोजमर्रा की समस्याओं को हल करना चाहता है, चाहे वे कुछ भी हों, उसे पहले व्यापक मुद्दों को देखना चाहिए और फिर विस्तार में आना चाहिए। आख़िरकार, महान चित्रकार, महान कवि वही है जो देखता है

संपूर्ण—जो सारे आकाश, नीले आकाश, दीप्तिमान सूर्यास्त, वृक्ष, उड़ते पक्षी—सबको एक ही नज़र में देखता है; एक झटके से वह पूरी चीज़ देख लेता है।

कलाकार, कवि के साथ सौंदर्य की इस संपूर्ण अद्भुत दुनिया के साथ तत्काल, सीधा संवाद होता है। फिर वह चित्र बनाना, लिखना, मूर्ति बनाना शुरू करता है; वह इस पर विस्तार से काम करता है। यदि आप और मैं भी ऐसा कर सकते हैं, तो हमें अपनी समस्याओं को - चाहे वह कितनी भी विरोधाभासी, कितनी भी विरोधाभासी, कितनी भी परेशान करने वाली क्यों न हो - अधिक उदारतापूर्वक, अधिक बुद्धिमानी से, अधिक गहराई और रंग, भावना के साथ हल करने में सक्षम होना चाहिए। यह केवल रोमांटिक शब्दाडंबर नहीं है, बल्कि वास्तव में ऐसा है, और मैं अब और जब भी हम साथ मिलेंगे, इसी बारे में बात करना चाहूंगा। हमें समग्रता को पकड़ना चाहिए और विस्तार से प्रभावित नहीं होना चाहिए, चाहे वह कितना भी दबावपूर्ण, तत्काल, चिंताजनक क्यों न हो। मुझे लगता है कि क्रांति यहीं से शुरू होती है। कृपया ध्यान रखें कि मैं एक बड़े दर्शक वर्ग के रूप में बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मैं बात कर रहा हूँ, अगर मैं सम्मानपूर्वक ऐसा कह सकूँ, तो आप सभी से, हर एक से। और मुझे आशा है कि हम तात्कालिक और बुनियादी मुद्दे के उस पहले सिद्धांत को समझ सकते हैं।

आख़िरकार, हमारी कई समस्याएँ हैं, न केवल व्यक्तिगत, बल्कि सामूहिक समस्याएँ भी, जैसे भुखमरी, युद्ध, शांति और भयानक राजनेता। मैं भयानक शब्द का प्रयोग मौखिक अर्थ में कर रहा हूं और मैं उनकी निंदा नहीं कर रहा हूं. वे सतही लोग हैं जो इन समस्याओं के बारे में ऐसे बात करते हैं जैसे कि वे पूरी चीज़ को संक्षेप में हल कर सकते हैं। और हमारी अपनी व्यक्तिगत समस्याएँ रिश्तों की, हमारी नौकरी की, तृप्ति और हताशा की, भय, प्रेम, सौंदर्य, सेक्स इत्यादि की समस्याएँ हैं।

अब, हममें से अधिकांश के साथ क्या होता है कि हम इन समस्याओं को अलग-अलग, प्रत्येक समस्या को अपने आप हल करने का प्रयास करते हैं। यानी मुझे डर की समस्या है और मैं इसे सुलझाने की कोशिश करता हूं. लेकिन मैं इसे अपने आप कभी भी हल नहीं कर पाऊंगा क्योंकि यह एक बहुत ही जटिल मुद्दे से संबंधित है, एक व्यापक क्षेत्र से संबंधित है, और गहरी समस्या को समझे बिना, केवल विशेष समस्या से निपटने के लिए - क्षेत्र के बजाय क्षेत्र के एक कोने से संबंधित है। संपूर्ण—केवल अधिक समस्याएँ पैदा करता है। मुझे आशा है कि मैं यह बात स्पष्ट कर रहा हूं। यदि हम इसे स्थापित कर सकें - आप और मैं एक-दूसरे के साथ संवाद करने वाले दो लोगों के रूप में - तो मुझे लगता है कि हमने काफी हद तक समाधान कर लिया होगा, क्योंकि आख़िरकार, समझ तो यही है, है ना? किसी चीज़ को समझना, इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है ना, किसी चीज़ के महत्व को पूरी तरह से समझना। अन्यथा कोई समझ नहीं है, केवल बुद्धि है, केवल शब्दाडंबर है, मन का खेल है। अपने अस्तित्व की समग्रता को समझे बिना, केवल उस अस्तित्व की एक परत लेना और उसे समग्रता से असंबद्ध एक निर्विवाद डिब्बे में अलग से हल करने का प्रयास करना, केवल और अधिक जटिलताओं, और अधिक दुख की ओर ले जाता है। अगर हम यह कर सकते हैं

वास्तव में इसे समझें, वास्तव में इसकी सच्चाई को महसूस करें, फिर हम यह पता लगाने में सक्षम होंगे कि हम अपनी व्यक्तिगत, तात्कालिक समस्याओं से कैसे निपट सकते हैं।

आखिर जनाब ऐसा ही है. यदि आप खिड़की से देख रहे हैं तो आपको कभी आकाश नहीं दिखेगा; आप स्पष्ट रूप से आकाश का केवल एक भाग ही देखते हैं। आपको पूरे विशाल क्षितिज, असीमित आकाश को देखने के लिए बाहर जाना होगा। लेकिन हममें से अधिकांश लोग खिड़की से आकाश को देखते हैं, और ऐसे संकीर्ण, सीमित दृष्टिकोण से, हम सोचते हैं कि हम न केवल एक विशेष समस्या को बल्कि अपनी सभी समस्याओं को हल कर सकते हैं।

यह समाज का, सभी संगठनों का अभिशाप है। लेकिन अगर आप समग्र को समझने की आवश्यकता का एहसास कर सकते हैं - चाहे वह संपूर्ण कुछ भी हो, और हम उसमें जाएंगे - तो मन के पास पहले से ही एक अलग दृष्टिकोण, एक अलग क्षमता है।

यदि आपके और मेरे बीच, दो व्यक्तियों के रूप में, श्रोता और बात करने वाले के रूप में नहीं, गुरु और शिष्य के रूप में यह बहुत स्पष्ट रूप से स्थापित हो जाए - तो वह सारी बकवास दूर हो जाएगी, कम से कम जहां तक मेरा संबंध है - तो हम ऐसा कर सकते हैं आगे बढ़ना। तो मुद्दा क्या है, व्यापक, गहन मुद्दा? यदि मैं इसकी समग्रता को देख सकूंगा, तो विस्तार से निपट सकूंगा। अब मैं इसे शब्दों में बयां कर सकता हूं, लेकिन शब्द कोई चीज नहीं है। आकाश शब्द आकाश तो नहीं है? दरवाज़ा शब्द दरवाज़ा नहीं है. हमें शब्द और तथ्य, शब्द और वस्तु के बीच अंतर करने में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। स्वतंत्रता शब्द स्वतंत्रता की स्थिति नहीं है, और मन शब्द वास्तविक चीज़ नहीं है, जो वास्तव में पूरी तरह से अवर्णनीय है। तो फिर, यदि आप बहुत स्पष्ट हैं कि शब्द कोई चीज़ नहीं है, तो हम अपने संचार के साथ आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि मैं आप तक कुछ कहना चाहता हूं और आप समझना चाहते हैं, लेकिन यदि आप केवल शब्दों को ही पकड़कर रखते हैं, अर्थ को नहीं, तो संचार में बाधा आती है।

तो, वह कौन सी चीज़ है जिसे समझ लिया जाए, खोज लिया जाए, उसके महत्व को पूरी तरह से समझ लिया जाए, तो वह हमें विस्तार से जानने और सुलझाने में मदद करेगी?

जरूर मन ही है ना। अब जब मैं उस शब्द मन का उपयोग करता हूं, तो आप में से हर कोई अपनी शिक्षा, अपनी संस्कृति, अपनी कंडीशनिंग के अनुसार इसकी अलग-अलग व्याख्या करेगा। जब मैं मन शब्द का उपयोग करता हूं, तो जाहिर तौर पर उस शब्द पर आपकी प्रतिक्रिया होनी चाहिए, और वह प्रतिक्रिया आपके पढ़ने, आपके पर्यावरणीय प्रभावों, आपने इसके बारे में कितना या कितना कम सोचा है, इत्यादि पर निर्भर करती है। तो मन क्या है? यदि मैं मन नामक उस असाधारण चीज़ की कार्यप्रणाली, उसकी समग्रता, भावना, प्रकृति, उसकी अद्भुत क्षमता, उसकी गहराई, चौड़ाई और गुणवत्ता को समझ सकता हूँ, तो उसकी प्रतिक्रिया जो भी हो - जो कि मात्र का उत्पाद है इसकी संस्कृति, पर्यावरण, शिक्षा, पढ़ना इत्यादि-मैं इससे निपट सकता हूं। तो हम क्या करने जा रहे हैं, यदि

हम मन नामक इस चीज़ का पता लगा सकते हैं। लेकिन आप इसका अन्वेषण नहीं कर सकते, जाहिर है, यदि आपको इसके बारे में पहले से ही कोई विचार है। यदि आप कहते हैं, "मन आत्मा है," यह समाप्त हो गया है। आपने सारी खोजबीन, तहकीकात, पूछताछ बंद कर दी है.
या यदि आप कम्युनिस्ट हैं और कहते हैं कि मन केवल किसी प्रभाव का परिणाम है, तो भी आप जांच करने में असमर्थ हैं। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि यदि आप किसी समस्या के प्रति पहले से ही मन बना कर देखते हैं, तो आपने समस्या की जांच करना बंद कर दिया है और इसलिए समस्या को समझने से रोका है। समाजवादी, पूंजीवादी, साम्यवादी, जो भुखमरी की समस्या को देखता है, वह एक प्रणाली, एक सिद्धांत के साथ ऐसा करता है, और तो क्या होता है? वह समस्या का आगे परीक्षण करने में असमर्थ है। जिंदगी रुकती नहीं. यह एक गति है, और यदि आप इसे स्थिर मन से देखते हैं, तो आप इसे छू नहीं सकते। फिर यह बिल्कुल स्पष्ट है, है ना, तो चलिए आगे बढ़ते हैं।

जब मैं मन शब्द का उपयोग करता हूं तो मैं इसे बिना किसी निष्कर्ष के देखता हूं; इसलिए, मैं इसकी जांच करने में सक्षम हूं, या यूं कहें कि मन, अपने बारे में कोई निष्कर्ष नहीं होने पर, खुद को देखने में सक्षम है। जो दिमाग किसी निष्कर्ष पर सोचना शुरू करता है वह वास्तव में सोच नहीं है। यह एक बहुत बड़ी बात पूछ रहा है, क्या यह नहीं है कि मन किसी समस्या का बिना किसी निष्कर्ष के परीक्षण करे। मुझे नहीं पता कि आप इसे देखते हैं या नहीं - कि हममें से अधिकांश की सोच एक निष्कर्ष से शुरू होती है, एक निष्कर्ष कि ईश्वर है या नहीं, पुनर्जन्म है या नहीं, कि साम्यवादी व्यवस्था दुनिया को बचाएगी, या पूंजीवादी। हम एक निष्कर्ष से शुरू करके दूसरे निष्कर्ष पर जाते हैं, और निष्कर्ष से निष्कर्ष तक जाने की इस प्रक्रिया को हम सोच कहते हैं; और यदि आप इसका निरीक्षण करें, तो यह बिल्कुल भी सोच नहीं रहा है।

सोच का तात्पर्य निरंतर गतिशील रहना, निरंतर परीक्षण करना, विचार की गति के प्रति निरंतर जागरूकता रखना है, न कि कोई निश्चित बिंदु जहां से किसी अन्य निश्चित बिंदु पर जाना है।

तो हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि मन नामक यह असाधारण चीज़ क्या है, क्योंकि यही समस्या है और कुछ नहीं। यह मन ही है जो समस्या उत्पन्न करता है; यह विचार, वातानुकूलित मन, वह मन है जो क्षुद्र, संकीर्ण, कट्टर है, जिसने विश्वासों, विचारों और ज्ञान का निर्माण किया है, और जो अपनी अवधारणाओं, घमंड, लालच, महत्वाकांक्षाओं और कुंठाओं से अपंग है।

तो यह मन ही है जिसे समझना होगा, और वह मन 'मैं' है, वह मन स्वयं है - कोई उच्चतर स्व नहीं। मन उच्चतर स्व का आविष्कार करता है और फिर कहता है कि यह उच्चतर के लिए केवल एक उपकरण है। ऐसी सोच बेतुकी है, अपरिपक्व है.
यह मन ही है जो भागने के ये सभी रास्ते खोजता है और फिर वहां से आगे बढ़कर जोर देता है।

तो, हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि मन क्या है। अब आप मेरे विवरण से पता नहीं लगा सकते. मैं इसके बारे में बात करने जा रहा हूं, लेकिन यदि आप इसे केवल विवरण के माध्यम से पहचानते हैं, तो आप अपने मन की स्थिति को नहीं जान रहे हैं। मुझे आशा है कि आप इसे समझेंगे। अब, मैं कहता हूं कि मन की स्थिति सुंदरता है, और सुंदरता को जाने बिना, सुंदरता की भावना की पूरी समझ के बिना, सुंदरता के बिना, आप मन को कभी नहीं समझ पाएंगे। मैंने वह वक्तव्य दिया है और आपने उसे सुना है। फिर क्या होता है?

आपका मन कहता है, "सुंदरता क्या है?" है ना? फिर आप अपने आप से बहस करना शुरू करते हैं, शब्दों को ढूंढना शुरू करते हैं ताकि एक परिभाषा के माध्यम से आप सुंदरता को महसूस कर सकें। तो आप किसी भावना को जगाने के लिए शब्दों पर निर्भर रहते हैं, क्या ऐसा नहीं है? मैं पूछताछ कर रहा हूं कि यह असाधारण दिमाग क्या है, जो समय का उत्पाद है, कई हजारों वर्षों का उत्पाद है। पुनर्जन्म के विचार पर जल्दबाजी न करें। मन कई कलों की उपज है, है ना? यह हजारों प्रभावों का परिणाम है, यह परंपरा का परिणाम है, यह आदत का परिणाम है, इसे विभिन्न संस्कृतियों द्वारा एक साथ रखा गया है। यह निराशा और आशा को जानता है। यह अतीत को जानता है, यह वर्तमान है, और यह भविष्य का निर्माण करता है। इसने ज्ञान, प्रौद्योगिकी विज्ञान, भौतिकी, चिकित्सा और अनगिनत अन्य गतिविधियों को संचित किया है; यह असाधारण आविष्कार करने में सक्षम है। यह स्वयं से परे पूछताछ करने, स्वतंत्रता की खोज करने और अपनी कंडीशनिंग को तोड़ने में भी सक्षम है। ये सब चीजें हैं और भी बहुत कुछ। और यदि मन स्वयं के प्रति, असाधारण जटिलताओं के प्रति जागरूक नहीं है, तो केवल किसी भी विवरण पर, किसी एक विशिष्टता पर ध्यान केंद्रित करने से समग्रता नष्ट हो जाएगी।

कृपया, मुझे आशा है कि आप ध्यान से सुन रहे हैं क्योंकि यदि आप ठीक से नहीं सुनेंगे, तो आप चले जायेंगे और कहेंगे, "वह किस बारे में बात कर रहा था?" लेकिन अगर आप सही ढंग से सुनें, जो कि एक कला है, तो आपको पहले ही पता चल जाएगा कि मन कितनी असाधारण चीज़ है। यह बाद में पता लगाने की बात नहीं है, बल्कि सुनने के दौरान ही आप इस मन की खोज कर रहे हैं। यह बताए जाने और कि मन कितनी आश्चर्यजनक चीज़ है, स्वयं इसकी खोज करने के बीच बहुत अंतर है। दोनों राज्य बिल्कुल अलग हैं. जब आप कहते हैं, "मैं भूख जानता हूं," तो आपने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया है, लेकिन जिस व्यक्ति ने कभी भूख का अनुभव नहीं किया है, वह भी कह सकता है, "मैं भूख जानता हूं।" "जानने" की दो अवस्थाएँ पूरी तरह से अलग हैं; एक प्रत्यक्ष अनुभव और दूसरा वर्णनात्मक ज्ञान।

तो, क्या आप इस आश्चर्यजनक रूप से जटिल मन की गुणवत्ता - इसकी विशालता, इसकी विशालता - को सीधे अनुभव कर सकते हैं? यह किसी विशिष्टता तक सीमित नहीं है, जैसे कि एक वकील, प्रधान मंत्री या रसोइया का दिमाग, बल्कि यह सब कुछ है - वकील, प्रधान मंत्री, रसोइया, चित्रकार, आदमी

जो डरा हुआ है, ईर्ष्यालु है, चिंतित है, महत्वाकांक्षी है, निराश है-यह सब कुछ है। और यह मन ही है जो पर्यावरणीय प्रभावों के अनुसार समस्या पैदा कर रहा है। इस देश में अधिक जनसंख्या के कारण, जाति व्यवस्था के कारण, भुखमरी के कारण और बाकी व्यापार के कारण रोजगार की समस्या तात्कालिक, महत्वपूर्ण हो गई है। और इसलिए मन, यह जटिल चीज़, दबाव के कारण, तत्काल मांग के कारण, केवल एक निश्चित स्तर पर प्रतिक्रिया करता है और उस स्तर पर समस्या को हल करने की आशा करता है।

और जिस व्यक्ति को भुखमरी की, युद्ध की तत्काल, विकराल समस्या की चिंता नहीं है, वह किसी अन्य प्रकार की तात्कालिक समस्या में भाग जाता है। लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि मन की इस संपूर्ण समग्रता की जांच की जाए। और ऐसा करने के लिए, जो आवश्यक है वह स्वतंत्रता है, अधिकार नहीं। मुझे लगता है कि ये समझना वाकई बहुत ज़रूरी है क्योंकि ये सत्ता ही है जो इस अभागे देश को बर्बाद कर रही है. यह मत कहो, "क्या अन्य देश भी नष्ट नहीं हो रहे हैं?" वे हैं। लेकिन फिलहाल आप और मैं इस बात से चिंतित हैं कि यहां क्या है, और यह देश मूर्तिपूजक है। यहाँ, अधिकार की पूजा है, और सफलता की पूजा है, बड़े आदमी की। देखिये कि आप अपने रसोइये के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और आप उस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करते हैं जो सफल है, कैबिनेट मंत्री, उस व्यक्ति के पास जिसके पास ज्ञान है, संत और बाकी सभी के साथ। इसलिए आप अधिकार की पूजा करते हैं, और इसलिए आप कभी भी स्वतंत्र नहीं होते हैं। स्वतंत्रता पहली मांग है, उस मन की आखिरी मांग नहीं जो कहती है, "मुझे पता लगाना चाहिए, मुझे देखना चाहिए, मुझे पूछताछ करनी चाहिए।" मन को स्वयं की जांच करने के लिए, अपनी स्वयं की बनाई गई समस्याओं की जांच करने के लिए, जो उसकी अपनी सीमाओं से परे है उसकी जांच करने के लिए, उसे शुरुआत में स्वतंत्र होना चाहिए, अंत में नहीं। अब यदि आप वास्तव में ऐसा महसूस करते हैं, यदि आप इसकी आवश्यकता देखते हैं, तो तत्काल क्रांति होती है।

क्रांति वह नहीं है जो आप करना चाहते हैं क्योंकि आप कल्पना करते हैं कि आप स्वतंत्र हैं, बल्कि क्रांति यह देखना है कि मन स्वतंत्र होना चाहिए। तब वह स्वतंत्रता के माध्यम से समायोजन करने में सक्षम है, गुलामी के माध्यम से नहीं, अधिकार से नहीं। क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ?

आइए इसे फिर से देखें। अत्यधिक जनसंख्या, अति-संगठन और सामान्य संचार के कारण, नौकरी खोने के डर के कारण, लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाने के कारण, और अपनी अद्भुत तकनीक के साथ आधुनिक सभ्यता के सभी दबावों के कारण, और युद्ध के खतरे के कारण, नफरत , और यह सब, स्वाभाविक रूप से मन भ्रमित है, और इसलिए वह एक अधिकार की तलाश करता है - एक हिटलर का अधिकार, प्रधान मंत्री का, गुरु का, पुस्तक का, या कमिश्नर का। आप यही कर रहे हैं, और इसलिए आप अधिकार से बंधे हैं, मूर्तिपूजक हैं। तुम किसी मूर्ति या हाथ से बनी वस्तु की पूजा नहीं कर सकते, परन्तु तुम उस आदमी की पूजा करते हो जो सफल है, जो बहुत कुछ जानता है या जिसके पास बहुत कुछ है। वह सब एक को इंगित करता है

मूर्तिपूजक मन जो मूलतः एक उदाहरण द्वारा, नायक द्वारा अपंग किया गया मन है। नायक का अर्थ है सत्ता, और सत्ता की पूजा करने वाला मन समझने में असमर्थ होता है।

आइए अब हम मन के इस असाधारण क्षेत्र को देखें, देखें कि यह क्या करने में सक्षम है। स्पुतनिक या रॉकेट - यह सब मन है। यह मन ही है जो अपनी हठधर्मिता के कारण हजारों लोगों की हत्या करता है, जैसा कि चर्चों और तानाशाहों ने किया है। यह मन ही है जो डरता है। यह मन ही है जो कहता है, "मुझे पता होना चाहिए कि ईश्वर है या नहीं।" और इस मन को समझने के लिए आपको स्वतंत्रता से शुरुआत करनी होगी। लेकिन आज़ाद होना बेहद मुश्किल है क्योंकि जो मन साफ़ होना चाहता है, वही आज़ाद होने से डरता है। आख़िरकार, अधिकांश लोग सुरक्षित रहना चाहते हैं, अपने रिश्तों में सुरक्षित, अपनी नौकरियों में सुरक्षित, अपने विचारों में, अपने व्यवसायों में, अपनी विशेषताओं में, अपनी मान्यताओं में सुरक्षित रहना चाहते हैं।

अपने मन पर नजर रखें और देखें कि क्या हो रहा है - आप सुरक्षित रहना चाहते हैं, और फिर भी आप जानते हैं कि आपको स्वतंत्र होना चाहिए। इसलिए एक विरोधाभास चल रहा है. वह मन जो कहता है कि शांति होनी चाहिए और फिर भी युद्ध का निर्माण और समर्थन करता है, विरोधाभासी है। इस देश में आप शांति, अहिंसा की बात करते हैं और फिर भी युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। एक मन है जो शांतिपूर्ण है और एक मन है जो हिंसक है, और इसलिए मन में संघर्ष है।

तो सभी जांच के लिए, सभी नए जीवन के लिए, सभी समझ और समझ के लिए पहली चीज़ स्वतंत्रता है। लेकिन आप आज़ादी नहीं, सुरक्षा मांगते हैं। और जिस क्षण आप भौतिक सुरक्षा चाहते हैं, आप इसे बनाने की योजना बनाते हैं - जिसका अर्थ है कि आप विभिन्न प्रकार के अधिकार, तानाशाही, नियंत्रण स्थापित करते हैं, जबकि साथ ही आप स्वतंत्रता भी चाहते हैं। तो मन के भीतर द्वंद्व शुरू हो जाता है। लेकिन जो मन अपने द्वंद्व से अवगत है उसे यह पता लगाना होगा कि प्राथमिक महत्व क्या है - स्वतंत्रता या सुरक्षा। आख़िर सुरक्षा नाम की कोई चीज़ है क्या? हो सकता है आप ऐसा चाहते हों, लेकिन क्या ऐसी कोई चीज़ है? घटनाएं बता रही हैं कि सुरक्षा नाम की कोई चीज नहीं है। फिर भी मन विचार से चिपका रहता है। यदि मन पहले स्वतंत्रता की मांग करता है, तो उसके बाद सुरक्षा आएगी, लेकिन यदि आप पहले सुरक्षा चाहते हैं, तो आपको कभी भी स्वतंत्रता नहीं मिलेगी, और इसलिए आपके पास हमेशा विभिन्न प्रकार के संघर्ष, दुख और दुःख होंगे। निश्चय ही यह सब स्पष्ट है।

इसलिए मन की गुणवत्ता और उसकी विशालता को समझने के लिए, स्वतंत्रता होनी चाहिए - सभी कंडीशनिंग से मुक्ति, सभी निष्कर्षों से - क्योंकि केवल ऐसा मन ही युवा दिमाग है। और यह केवल युवा मन ही है जो स्वतंत्र रूप से घूम सकता है, जांच कर सकता है, निर्दोष हो सकता है।

फिर, मुझे ऐसा लगता है कि स्वतंत्रता से परे सुंदरता की सराहना की भावना है। हममें से बहुत कम लोग अपने बारे में चीजों के बारे में जानते हैं। की खूबसूरती

रात, चेहरे की सुंदरता, मुस्कान, नदी की सुंदरता और सूर्यास्त के समय चमकते बादल की सुंदरता, पानी पर चांदनी की सुंदरता; हम इस असाधारण सुंदरता के बारे में बहुत कम जानते हैं क्योंकि हम इतने असंवेदनशील हैं। मुक्त होने के लिए संवेदनशीलता जरूरी है। लेकिन यदि आप ज्ञान से भरे हुए हैं तो आप स्वतंत्र नहीं हो सकते। कोई भी मन संवेदनशील नहीं होता अगर उस पर ज्ञान का बोझ हो।

और मुझे लगता है कि स्वतंत्रता से परे दूसरी चीज़ है - एक ऐसे शब्द का उपयोग करना जो दुर्भाग्य से ऐसी बेतुकी भावना और इच्छा-धोखाधड़ी से जुड़ा है - प्यार। प्रेम का भावना से कोई लेना-देना नहीं है। प्रेम कठिन है, इस अर्थ में कि यह बिल्कुल स्पष्ट है, और जो स्पष्ट है वह कठिन हो सकता है। प्यार वह नहीं है जिसे आप प्यार समझते हैं। वह महज़ एक भावना बनकर रह जाती है।

अगर हम समझ सकें, इसमें अपना रास्ता महसूस कर सकें, तो हमें देखना चाहिए कि खोज के लिए स्वतंत्रता, सौंदर्य और प्रेम बहुत जरूरी हैं - ज्ञान नहीं, अनुभव नहीं, विश्वास नहीं, किसी संगठन से संबंधित नहीं।

कुछ भी न होना आज़ादी की शुरुआत है. इसलिए यदि आप महसूस करने में सक्षम हैं, इसमें जाने में सक्षम हैं, तो आप पाएंगे, जैसे ही आप जागरूक होंगे, कि आप स्वतंत्र नहीं हैं, कि आप बहुत सी अलग-अलग चीजों से बंधे हैं, और साथ ही मन मुक्त होने की उम्मीद करता है . और आप देख सकते हैं कि दोनों विरोधाभासी हैं। तो मन को यह जांच करनी होगी कि वह किसी भी चीज़ से क्यों चिपकता है। यह सब कड़ी मेहनत का तात्पर्य है। यह किसी कार्यालय में जाने से, किसी भी शारीरिक श्रम से, सभी विज्ञानों को एक साथ रखने से कहीं अधिक कठिन है। क्योंकि विनम्र, बुद्धिमान मन आत्मकेंद्रित हुए बिना स्वयं की चिंता करता है; इसलिए, इसे असाधारण रूप से सतर्क, जागरूक रहना होगा, और इसका मतलब है हर दिन, हर घंटे, हर मिनट वास्तविक कड़ी मेहनत। और क्योंकि हम ऐसा करने को तैयार नहीं हैं, हमारे पास तानाशाही, राजनेता, गुरु, समाज के अध्यक्ष और बाकी सभी बकवास हैं। इसके लिए आग्रहपूर्ण कार्य की आवश्यकता होती है क्योंकि स्वतंत्रता आसानी से नहीं मिलती। हर चीज़ बाधा डालती है - आपकी पत्नी, आपका पति, आपका बेटा, आपका पड़ोसी, आपके देवता, आपका धर्म, आपकी परंपरा। ये सभी आपमें बाधा डालते हैं, लेकिन आपने इन्हें बनाया है क्योंकि आप सुरक्षा चाहते हैं। और जो मन सुरक्षा की तलाश में है वह इसे कभी नहीं पा सकता। अगर आपने दुनिया को थोड़ा भी देखा है तो आप जानते हैं कि सुरक्षा नाम की कोई चीज नहीं है। पत्नी मर जाती है, पति मर जाता है, बेटा भाग जाता है—कुछ होता है। जीवन स्थिर नहीं है, हालाँकि हम इसे ऐसा बनाना चाहेंगे। कोई भी रिश्ता स्थिर नहीं है क्योंकि सारा जीवन गति है। यह समझने योग्य चीज़ है, देखने, महसूस करने योग्य सत्य है, इस पर बहस करने योग्य चीज़ नहीं है। तब आप देखेंगे, जैसे ही आप जांच करना शुरू करेंगे, कि यह वास्तव में ध्यान की एक प्रक्रिया है। लेकिन उस शब्द से मंत्रमुग्ध मत होइये। प्रत्येक विचार से अवगत होना, यह जानना कि यह किस स्रोत से उत्पन्न होता है

और उसका अभिप्राय क्या है—वही ध्यान है। और एक विचार की संपूर्ण सामग्री को जानने से मन की पूरी प्रक्रिया का पता चलता है।

अब, यदि आप स्वतंत्रता से आगे बढ़ सकते हैं, तो आप मन की सबसे असाधारण चीजों की खोज करेंगे, और तब आप पाएंगे कि मन ही संपूर्ण वास्तविकता है। ऐसा नहीं है कि कोई वास्तविकता है जिसकी ओर मन जाता है, बल्कि मन ही है, वह असाधारण चीज़ है, जब उसके भीतर कोई विरोधाभास नहीं है, जब कोई चिंता नहीं है, कोई डर नहीं है, सफल होने की कोई इच्छा नहीं है - तो वह मन ही है वह है जो शाश्वत है, अनाम है। लेकिन मन की पूरी प्रक्रिया को समझे बिना शाश्वत के बारे में अटकलें लगाना महज बचकाना खेल है। यह एक अपरिपक्व खेल है जिसे विद्वान - जिनकी आप पूजा करते हैं - खेलते हैं। इसलिए यह अच्छा होगा यदि आप और मैं वास्तव में बिना किसी नाटकीय वीरता के, बिना किसी शानदार बकवास के, बल्कि दो इंसानों के रूप में हमारी समस्याओं को हल करने में रुचि रखते हैं, जो दुनिया की समस्याएं भी हैं। व्यक्तिगत समस्या विश्व समस्या से भिन्न नहीं है। इसलिए यदि आप और मैं विनम्रता के साथ, अपनी स्थिति को जानते हुए, अस्थायी रूप से पूछताछ करते हुए इसमें जा सकते हैं, तो आप पाएंगे कि आपके पूछे बिना, आपके आमंत्रित किए बिना, कुछ ऐसा है जिसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, जिसे नाम नहीं दिया जा सकता है, जिसका कोई नाम नहीं है पथ। तभी, जैसे ही आप पूछताछ करना शुरू करेंगे, आप देखेंगे कि आप कितनी असाधारण आसानी से अपनी समस्याओं को हल कर पाएंगे, जिसमें भुखमरी की समस्या भी शामिल है, जो इतनी बड़ी है। लेकिन अगर आपने मन को नहीं समझा है तो आप इससे निपट नहीं सकते। तो कृपया, जब तक हम अगली बार न मिलें, अपने दिमाग पर नजर रखें, उसमें जाएं, न केवल तब जब आपके पास करने के लिए कुछ न हो, बल्कि जिस क्षण से आप उठते हैं उस क्षण से लेकर जिस क्षण आप बिस्तर पर जाते हैं, जिस क्षण से आप उठते हैं जब तक आप वापस सोने जाओ। जब आप अपने नौकर से बात करते हैं, अपने मालिक से, अपनी पत्नी से, अपने बच्चों से बात करते हैं, तब देखें जब आप बस कंडक्टर, बस ड्राइवर को देखते हैं, जब आप चाँद, पत्ते, आकाश को देखते हैं तो देखें। तब आपको पता चलना शुरू हो जाएगा कि वहां कितनी असाधारण समृद्धि है - ज्ञान में नहीं बल्कि मन की प्रकृति में समृद्धि। मन में भी अज्ञान है। अज्ञान को दूर करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ज्ञान की प्राप्ति नहीं, क्योंकि अज्ञान को दूर करना नकारात्मक है जबकि ज्ञान सकारात्मक है। और जो व्यक्ति नकारात्मक सोचने में सक्षम है उसकी सोचने की क्षमता सबसे अधिक होती है। वह मन जो अज्ञान को दूर कर सकता है और ज्ञान का संचय नहीं कर सकता - ऐसा मन एक निर्दोष मन है, और केवल निर्दोष मन ही वह खोज सकता है जो माप से परे है।

26 अक्टूबर, 1958

मद्रास में तीसरी वार्ता

मुझे आश्चर्य है कि इस तरह की बातचीत का क्या मतलब है? मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प होगा, अगर कोई खुद से यह सवाल पूछ सके और उसे कोई सतही जवाब नहीं, कोई सुविधाजनक जवाब नहीं, बल्कि उस तरह के प्रश्न का गहरा, सच्चा जवाब मिले। अगर हम अपने अंदर बहुत गहराई से देखें, तो मुझे लगता है कि हम लगभग हमेशा ही पाएंगे कि हम कुछ न कुछ पाना चाहते हैं। हम यहां किसी ऐसे व्यक्ति को सुनने के लिए आते हैं जिसके पास कहने के लिए कुछ है क्योंकि हमें लगता है कि शायद इससे हमें मदद मिलेगी, हमारी समझ बढ़ेगी, इत्यादि। लेकिन मैं सोच रहा हूं कि क्या यह सही उद्देश्य है। मैं खुद से पूछ रहा हूं - और मुझे लगता है कि आपको खुद से भी पूछना चाहिए - क्या कोई किसी खास तरीके से सोचने के लिए प्रभावित होना चाहता है। क्योंकि मुझे लगता है कि अगर कोई इस इरादे से शुरू करेगा - कुछ पाने के लिए, प्रभावित होने के लिए - तो आप और मैं नहीं मिलेंगे; हम एक दूसरे से संवाद नहीं कर पाएंगे. मैं निश्चित रूप से आपको किसी भी तरह से, इस तरह या उस तरह सोचने के लिए प्रभावित नहीं करना चाहता क्योंकि मुझे लगता है कि यह अपरिपक्व है, यह केवल प्रचार है, और हम इसे राजनेताओं, कम्युनिस्टों और अन्य ब्रेनवॉशर्स पर छोड़ सकते हैं। मैं आपकी सोच या आपके कार्य को किसी भी तरह से प्रभावित नहीं करना चाहता और यदि आप प्रभावित होने के इरादे से आये तो आपकी और मेरी मुलाकात नहीं हो सकेगी। लेकिन मुझे लगता है कि इस बातचीत का महत्व होगा यदि हम यह पता लगा सकें कि मन खुद को प्रभावित होने की अनुमति क्यों देता है, और क्यों हमारी पूरी संस्कृति, समाज, पर्यावरण, शिक्षा प्रभावों की एक श्रृंखला है जो सभी मन को प्रभावित करते हैं। यह एक तथ्य है, क्या ऐसा नहीं है कि हर चीज़ हमें प्रभावित कर रही है - हम क्या खाते हैं, हम क्या पढ़ते हैं, समाचार पत्र, सिनेमा, रेडियो, राजनीतिक भाषण, किताबें - सब कुछ हमें जाने-अनजाने में प्रभावित कर रहा है। हम सचेत रूप से कहीं अधिक अचेतन रूप से प्रभावित हो रहे हैं। मन किसी चीज़ को जल्दी से पढ़ सकता है क्योंकि वह किसी और चीज़ में व्यस्त रहता है, लेकिन आपने जो पढ़ा है वह अंदर समा जाता है, अंदर समा जाता है और बना रहता है। यह भी प्रचार का एक रूप है, परिष्कृत विज्ञापन, ताकि आपका दिमाग अनजाने में विचारों, विचारों, सुझावों के एक पैटर्न के अनुरूप हो जाए। इन सब से हम भली-भाँति परिचित हैं।

अब ऐसा क्यों होता है? ऐसा हमेशा क्यों होता है कि मन अनुकूलित होता है, आकार लेता है, और आकार लेने के बाद उसे टूटना पड़ता है?
आख़िर वही तो हो रहा है; हमारी पूरी संस्कृति, जीवन की पूरी चुनौती उसी प्रक्रिया से पूरी होती है। एक वातानुकूलित अवस्था होती है, फिर एक चुनौती, फिर अनुकूलन के अनुसार एक प्रतिक्रिया, और फिर चुनौती के परिणामस्वरूप हमारी वातानुकूलित स्थिति में संशोधन होता है। दुनिया में वास्तव में यही हो रहा है, है न?

कृपया, जैसा कि मैंने पिछले दिन कहा था, यह सिर्फ एक बातचीत नहीं है। हम संवाद कर रहे हैं, आप और मैं, एक-दूसरे के साथ संवाद कर रहे हैं, ज़ोर से सोच रहे हैं। यह केवल सुनने और फिर घर चले जाने, सहमत होने या असहमत होने का मामला नहीं है। समझ सहमति या असहमति से नहीं आती. किसी तथ्य पर कोई सहमत या असहमत नहीं हो सकता; आप केवल तभी सहमत या आश्वस्त हो सकते हैं जब मैं किसी बात पर ज़ोर दे रहा हूँ या कोई राय दे रहा हूँ। लेकिन हम जो कर रहे हैं वह वास्तव में एक तथ्य की जांच कर रहा है, और हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि किसी तथ्य की जांच करने के लिए यह मांग नहीं है कि आप उससे सहमत हों या असहमत हों।

यह सत्य है कि मन असाधारण सीमा तक, गहराई तक प्रभावित होता है, है ना? पर्यावरणीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, जलवायु, आहार संबंधी प्रभाव मन को प्रभावित करते हैं; चुनौती उसके सामने आती है और वह अपनी क्षमता के अनुसार प्रतिक्रिया देता है। इसकी क्षमता हमेशा सीमित, अपर्याप्त होती है और इसलिए चुनौती और प्रतिक्रिया के बीच संघर्ष होता है। और यदि प्रतिक्रिया पर्याप्त, पूर्ण, गहरी नहीं है, तो वह इकाई जिसमें संस्कृति, जाति सन्निहित है, धीरे-धीरे गायब हो जाती है। पूरे इतिहास में यही हुआ है, और यह हम सभी के साथ हर दिन हो रहा है।

तो मन पर्यावरण का गुलाम, संस्कृति का गुलाम क्यों है? क्योंकि इतना वातानुकूलित मन स्पष्टतः टूटना ही चाहिए। यानी, मैं हिंदू नहीं रह सकता, मंदिरों में नहीं जा सकता, किसी संत के पास नहीं जा सकता, वगैरह-वगैरह; यह असंभव हो जाता है क्योंकि जीवन की गति लगातार पैटर्न को तोड़ रही है।

हर संस्कृति टूट गई है - रोमन, ग्रीक, यह एक ऐतिहासिक तथ्य है - क्योंकि यह अब चुनौती का पर्याप्त रूप से जवाब नहीं दे सकती है। तो वे सभी नीचे चले जाते हैं। लेकिन हमारी पूरी प्रवृत्ति एक संस्कृति के अनुरूप होने की है और, अनुरूप होने के बाद, जब चुनौती आती है तो मैं प्रतिक्रिया नहीं देता। मैं कहता हूं कि मुझे हिंदू, या मुस्लिम, ईसाई, कैथोलिक, या कम्युनिस्ट बने रहना चाहिए, और इसलिए मेरे और चुनौती, मेरे और एक नए विचार, मेरे और एक नई धारणा के बीच समायोजन की निरंतर लड़ाई होती है कि जीवन क्या है . असल में यही तो हो रहा है ना? इसके बारे में कोई तर्क नहीं है, इसके बारे में कोई राय नहीं है। यह वास्तव में अब भारत में हो रहा है। संपूर्ण पश्चिमी संस्कृति, वे सभी चीजें जो पश्चिम यहां लेकर आया है - संसदवाद, सैन्यवाद, वैज्ञानिक जांच, इत्यादि - ये चीजें आ गई हैं, और वे एक चुनौती लेकर आए हैं। पश्चिम ने अपनी संस्कृति का एक हिस्सा भारतीय संस्कृति पर थोप दिया है और पश्चिम अधिक सशक्त, अधिक गतिशील होने के कारण यह संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। यद्यपि आप नमम धारण कर सकते हैं , पूजा कर सकते हैं, पुराने तरीके से आगे बढ़ सकते हैं, इसका अंत अवश्यंभावी है। अधिक गतिशील कमजोर को नष्ट कर देता है, और या तो हम नए पैटर्न के अनुरूप हो जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं। और आम तौर पर होता यह है कि हम नष्ट हो जाते हैं

क्योंकि दूसरा, अधिक मजबूत और अधिक महत्वपूर्ण होने के कारण जीत जाता है। बिलकुल यही हो रहा है.

अब हम यह जानना चाहते हैं कि मन स्वयं को प्रभावित क्यों होने देता है।
क्या आपने कभी खुद से यह सवाल पूछा है? यह अच्छे प्रभाव या बुरे प्रभाव का सवाल नहीं है, बल्कि किसी भी प्रकार के प्रभाव का है क्योंकि कोई देख सकता है कि मन हर विचार, हर क्रिया और प्रतिक्रिया से आकार लेता है।

चाहे प्रतिक्रिया चेतन हो या अचेतन, मन आकार ले रहा है; यह हमारे आस-पास के हर प्रभाव से अनुकूलित हो रहा है। अब ऐसा क्यों है? कोई भी इस स्पष्ट तथ्य को देख सकता है कि यदि आप समाज के पैटर्न, किसी विशेष संस्कृति के अनुरूप नहीं हैं, तो समाज आपको तोड़ देता है, संस्कृति आपको बाहर निकाल देती है। आप अपनी आजीविका, अपने परिवार, अपनी शादी और बाकी सभी चीजों के लिए पैटर्न पर निर्भर हैं। इसलिए मुझे डर है कि अगर मैं अनुरूप नहीं होता, अगर मैं खुद को प्रभावित नहीं होने देता, अगर मैं क्रांतिकारी बन जाता, तो मैं फीके से बाहर हो जाऊंगा, एक असंतुष्ट, एक ऐसा व्यक्ति माना जाएगा जिसमें कोई संतुलन नहीं है। तो डरकर - नौकरी खोने का, स्थिरता, सुरक्षा, कल्याण की उचित भावना न होने का - मन खुद को प्रभावित होने, अनुरूप होने की अनुमति देता है।

फिर, यह एक स्पष्ट तथ्य है कि असुरक्षा के डर से हम सहमत होते हैं।
हमने यह खेल सदियों से हर समय खेला है।

इसलिए मैं देखता हूं कि तथाकथित अस्तित्व के लिए अनुरूपता, अनुकरण, समायोजन नितांत आवश्यक है। लेकिन मैं यह भी स्पष्ट रूप से देखता हूं कि जो दिमाग केवल अस्तित्व की तलाश में है वह कभी रचनात्मक नहीं हो सकता। कृपया, मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे हैं, केवल बौद्धिक रूप से नहीं क्योंकि इसमें शब्दों और बुद्धि का कोई उपयोग नहीं है। यह वह व्यक्ति है जो महसूस करता है, चाहे कितनी ही कमज़ोरी से, कितनी ही सावधानी से, टटोलते हुए, वह टूट जाता है। तो हम पूछ रहे हैं: समायोजन की इस दुनिया में, निरंतर अनुरूपता की इस दुनिया में, क्या कोई ऐसा दिमाग है जो रचनात्मक रूप से क्रांतिकारी है? मुझे लगता है कि यह एक वैध प्रश्न है और मुझे आशा है कि आप इसे पूछ रहे हैं। क्या मन को हमेशा अनुरूपता में आगे बढ़ना चाहिए, धीरे-धीरे टूटना और अनुरूप होना, अनुरूप होना और टूटना, अंतहीन? उस प्रक्रिया में कोई क्रांति नहीं होती, और इसलिए कोई रचनात्मक मुक्ति नहीं होती। या फिर ब्रेकिंग थ्रू का समायोजन से कोई लेना-देना नहीं है? कृपया, मैं जोर-जोर से सोच रहा हूं। मुझे लगता है कि अज्ञात की ओर मुक्ति, जिससे रचनात्मक विचार का एक नया विस्फोट होता है - वह मुक्ति प्रगतिशील नहीं है। तकनीक प्रगतिशील है, लेकिन नई घोषणा नहीं, नई रचनात्मक रिलीज जो कुछ नया, असीमित खोजती है। आख़िरकार, तकनीशियन, विशेषज्ञ, चाहे वह किसी भी स्तर का हो, कभी भी रचनात्मक व्यक्ति नहीं होता। वह पूरी तरह से कुछ नया नहीं खोज पाता है। वह इस और उस में तकनीक को अधिक से अधिक परिपूर्ण कर सकता है, लेकिन यह केवल वास्तव में रचनात्मक है

वह मन जो पूरी तरह से तोड़ सकता है और वास्तव में खोज सकता है कि क्या ईश्वर है, इत्यादि। यह प्रगतिशील, गणना करने वाला, जानने वाला दिमाग, तकनीकी दिमाग, विशेष दिमाग नहीं है जो खोज कर सकता है - और मैं खोज शब्द का उपयोग इसके विशाल अर्थ में कर रहा हूं, किसी नए आविष्कार के क्षुद्र, छोटे अर्थ में नहीं। इस रिहाई, इस खोज से मैं चिंतित हूं, और मुझे लगता है कि इसका मतलब वास्तव में धार्मिक दिमाग है। धार्मिक मन वह नकली मन नहीं है जो मंदिर जाता है, दोहराता है, और अनुरूप हो जाता है। वह बिल्कुल भी धर्म नहीं है. मेरे लिए धर्म इस प्रगतिशील और अनैतिक गुण की पूर्ण धारणा है, अगर मैं इस शब्द का उपयोग कर सकता हूं, जो केवल सम्मानजनकता और मन की क्षुद्रता की ओर ले जाता है, जिससे कोई मुक्ति नहीं होती है। आख़िरकार, यदि आपका दिमाग सटीक, स्पष्ट, स्वच्छ, मजबूत, महत्वपूर्ण नहीं है, तो यह सभी कंडीशनिंग को कैसे तोड़ सकता है? एक भ्रमित मन संभवतः सफलता नहीं पा सकता।

आगे बढ़ने के लिए, कुछ गुण स्पष्ट रूप से आवश्यक हैं, लेकिन हमें उन पर जोर न दें क्योंकि यदि आप पहले तोड़ने की आवश्यकता को देख सकते हैं, तो आपके पास ऐसा करने के लिए जीवन शक्ति होगी, और साथ ही आप स्थापित करेंगे सद्गुण-जो बौद्धिक नहीं बल्कि वास्तविक होंगे।

आइए इसे फिर से देखें। मैं अपने आप से पूछ रहा हूं: सच्ची क्रांति क्या है?
क्योंकि स्पष्टतः साम्यवादी क्रान्ति कोई क्रान्ति नहीं है। यह एक प्रतिक्रिया है. पिछली सभी क्रांतियाँ, सभी प्रकार के धार्मिक पुनरुत्थान अभी भी प्रतिक्रिया के अलावा और कुछ नहीं हैं। क्षुद्र छोटे मन की प्रतिक्रिया होती है और हम उससे बहुत रोमांचित हो जाते हैं। मेरे लिए वह बिल्कुल भी धर्म नहीं है। क्योंकि, जैसा कि आप देख सकते हैं, ऐसी क्रांतियाँ मन के लिए अनुकूलन का एक नया रूप ही सामने लाती हैं।

तो फिर सच्ची क्रांति क्या है? मैं नहीं जानता कि यह आपके लिए कोई महत्वपूर्ण प्रश्न है या नहीं। मुझे लगता है कि ऐसा होना चाहिए, अगर मैं ऐसा कह सकूं। क्योंकि हम जिस रास्ते पर जा रहे हैं - धीरे-धीरे कुछ सद्गुण विकसित करना, थोड़ा यहाँ और थोड़ा वहाँ सुधार करना, कुछ पवित्र किताबें पढ़ना, कुछ कक्षाओं में भाग लेना, हर सुबह ध्यान या प्रार्थना करना, शब्दों को दोहराना - यह सब, मेरे लिए, का कोई मतलब ही नहीं है. यह महज़ आत्म-सुधार या किसी पैटर्न के प्रति आत्म-समायोजन है। एक धार्मिक दिमाग एक पैटर्न में समायोजित नहीं हो सकता है, इसलिए यह सफलता बहुत महत्वपूर्ण है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या हम एक दूसरे को समझते हैं? क्योंकि मुझे लगता है, अगर मैं बता दूं, कि अगर आप सच में मेरी बात सुन सकते हैं, सच में सुन सकते हैं, तो आप खुद ही सफलता को देख लेंगे। तुम टूट जाओगे; आप इसकी मदद नहीं कर सकते.
जो चीज़ समझ का विनाशकारी है वह है राय का सकारात्मक दावा, और राय का सकारात्मक दावा ही वह सब कुछ है जो हमारे पास है, है न? सभी पवित्र पुस्तकें, वे सभी जो राजनेता कहते हैं, वे सभी बातें जिन पर आप विश्वास करते हैं वे केवल विचारों के सकारात्मक दावे हैं, और इतना भरा हुआ मन सुनने में असमर्थ है।

यह तर्क कर सकता है, लेकिन तर्क, चाहे कितना भी तार्किक, कितना ही विवेकपूर्ण, कितना भी सही

जब आप किसी बिल्कुल नई चीज़ के बारे में जानना चाहते हैं तो अनुरूपता के दायरे में इसका कोई स्थान नहीं है। इसलिए यदि आप सुनना चाहते हैं, तो आप वह सब नहीं ला सकते। सबसे पहले आपको सुनना होगा, जैसे आप संगीत का एक टुकड़ा सुनेंगे। बाद में आप कह सकते हैं कि आपको यह पसंद है या नापसंद है, लेकिन पहले आपको ऐसी मानसिक स्थिति में होना चाहिए जो ग्रहण करने में सक्षम हो। ऐसा मन कहता है, “मैं तुम्हारी बात सुनूंगा; मैं इसमें जाऊंगा, मैं बहस नहीं करूंगा, अपनी सभी राय, अनुभव और ज्ञान सामने लाऊंगा और उनसे आपको परेशान कर दूंगा; मैं पहले सुनूंगा।”

अब, यदि आप ऐसा सुन सकते हैं, तो मुझे लगता है कि बात पूरी हो गई है। मुझे नहीं पता कि आपने कभी किसी की बात सुनी है या नहीं। असल में हम हमेशा बचाव का प्रयास कर रहे हैं; हम शायद ही कभी सुनते हैं. मैं जो कह रहा हूं वह न तो सुखद है और न ही अप्रिय, इसलिए बचाव की कोई जरूरत नहीं है। मैं सिर्फ एक तथ्य बता रहा हूं; आपको यह पसंद है या नहीं, यह आप बाद में तय करेंगे, लेकिन पहले आपको सुनना होगा। प्रचार और सुनना पूरी तरह से अलग प्रक्रियाएं हैं। प्रचारक, चाहे राजनीतिक हो या धार्मिक, नहीं चाहता कि आप वास्तव में सुनें। वे केवल आपके पूर्वाग्रहों, आपकी राय, आपकी विशेष प्रवृत्तियों आदि पर जोर देना चाहते हैं। मैं चाहता हूं कि आप पूरे ध्यान से सुनें, और सुनने के बाद अपनी सारी आलोचनात्मक क्षमता, अपने सारे संदेह, अपनी जिज्ञासाएं, अपने दिमाग की पूरी जीवंतता को अपने अंदर समाहित कर लें।

इसलिए मैं आपसे पूछ रहा हूं: मन की गुणवत्ता में यह संपूर्ण क्रांति क्या है? - जो केवल विचारों की एक नई श्रृंखला के लिए मन को आकार देना नहीं है।
क्या आप इस तरह से सुन सकते हैं कि आप इस क्रांति की गुणवत्ता को महसूस कर सकें, जो कि योगात्मक नहीं है बल्कि पर्यावरणीय कंडीशनिंग को पूरी तरह तोड़ रही है? मैं उस चीज़ को समझाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ जिसे समझाना बहुत मुश्किल है। यह एक आदमी से कहने जैसा है, "सुनो, और चुप रहो।" और उस पर वह कहता है, "मैं क्या सुन रहा हूँ, और मुझे चुप क्यों रहना चाहिए?" लेकिन यह केवल एक मन है जो बहुत शांत रहेगा - थोपी गई शांति के साथ नहीं, अनुशासित शांति के साथ नहीं - जो समझने के लिए सुन सकता है। ऐसा दिमाग बिना किसी दबाव के पूरी तरह से चौकस रहता है।

मैं जो कह रहा हूं वह यह है कि एक क्रांति है जो प्रतिक्रिया नहीं है, जो इस अर्थ में योगात्मक नहीं है कि ज्ञान के कई विवरण जोड़ने से पूरी समस्या हल हो जाएगी। अनेक तीलियाँ एक साथ रखकर आप कभी भी एक पहिया नहीं बना सकते; आपको यह अहसास होना चाहिए, पहले पहिये की धारणा और फिर तीलियाँ उपयोगी होती हैं। तो यह सफलता विचार का विषय नहीं है, कंडीशनिंग के एक रूप से दूसरे प्रकार की कंडीशनिंग को तोड़ना नहीं है। आप देखिए, हमारी सोच, अगर आप इसे बहुत बारीकी से जांचें, तो यह ज्ञात से ज्ञात की ओर एक गति है, है ना? बस अपने मन को देखो. ज्ञात ही निष्कर्ष है, द

अनुभव, आपने क्या सोचा है, विचार इत्यादि, और आप ज्ञात से ज्ञात की ओर बढ़ते हैं। आख़िरकार, तथाकथित धार्मिक व्यक्ति का अपना विचार होता है कि ईश्वर क्या है, सत्य क्या है, यह या वह क्या है; वह पिछले ज्ञान से वर्तमान ज्ञान की ओर बढ़ गया है, और वह इसे प्रगति कहता है। सभी क्रांतियाँ इसी तरह से भी होती हैं। ज्ञात तथ्यों की जांच करना, उन पर प्रतिक्रिया करना और एक नया पैटर्न बनाना एक क्रांति, एक नया समाज, यूटोपिया कहलाता है, लेकिन यह केवल ज्ञात से ज्ञात की ओर बढ़ना है। इस प्रक्रिया से हम परिचित हैं.

अब मैं जिस क्रांति की बात कर रहा हूं, या महसूस कर रहा हूं, वह बिल्कुल भी ऐसी नहीं है। यह धारणा है, ज्ञात की समग्रता की समझ, और इसे छोड़ना, न कि इसे जारी रखना। मन, अपनी स्वयं की सामग्री के प्रति, अपने स्वयं के ज्ञान के भंडार के प्रति, अपनी स्वयं की आलोचनात्मक क्षमता के द्वारा, ज्ञात से ज्ञात की ओर, निष्कर्ष से निष्कर्ष की ओर अपनी गति को देखते हुए - यह सब छोड़ देता है और एक छलांग लगाता है, जैसे यह अज्ञात में था। लेकिन अगर आप पूछें, "मैं अज्ञात में कैसे कूद सकता हूँ?" आप पहले ही अपने आप को भ्रमित कर चुके हैं क्योंकि तब आप रास्ता, पथ, विधि जानने की इच्छा के पैटर्न में वापस आ गए हैं। ऐसी कोई चीज नहीं है। जिस क्षण आप कहते हैं कि मुझे क्या करना है, कौन सा अभ्यास, कौन से गुण, कौन सा कार्य इस छलांग, इस सफलता को लाएगा, तो आपने बस एक और ज्ञात में सफलता हासिल की है।

आप फिर से ज्ञात से ज्ञात की ओर ले जाने के लिए कह रहे हैं। जिस क्षण आप ज्ञात को तोड़ने का नुस्खा मांगते हैं, आपने उसे छोड़ा नहीं है। मैं कहता हूं कि आपको ज्ञात के बारे में पूरी तरह से अवगत होना चाहिए। आपको मन की संपूर्ण कार्यप्रणाली के बारे में पूरी तरह से अवगत होना चाहिए, इसकी सभी पेचीदगियों को जानना चाहिए, जिस तरह से यह प्रतिक्रिया करता है, चेतन और अचेतन दोनों में जो छिपा हुआ है, छिपा हुआ है। अगर मैं खुद को पूरी तरह से जानता हूं, सुरक्षित होने के लिए, यह या वह होने के लिए मन की सभी चालों, धोखे, सूक्ष्म चालों को जानता हूं, जब मैं यह सब जानता हूं और फिर भी मुझे कोई मुक्ति नहीं मिलती है - तो मन उसे अकेला छोड़ देता है. इसलिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है।

आगे बढ़ने के लिए, दिमाग को गणितीय समस्या की तरह स्वयं के संचालन को जानना होगा। मुझे यकीन है कि असली गणितज्ञ किसी समस्या के बारे में सबसे गहनता से, विस्तार से सोचता है; गहन पूछताछ के साथ वह एक सच्चा रास्ता खोजता है, और उसे वह नहीं मिलता है। तो वह इसे छोड़ देता है, और अचानक, जैसे ही वह बस में चढ़ता है या जैसे ही वह चलता है, पूरी चीज़ दिखाई जाती है। लेकिन यह जरूरी है कि मैं अपने बारे में पूरी बात जानूं, मैं ऐसा क्यों सोचता हूं, मैं प्रभावित क्यों होता हूं, इस असाधारण दिमाग का उद्देश्य क्या है। मुझे बौद्धिक रूप से नहीं बल्कि भावना के साथ पूछताछ करनी चाहिए। मौखिक पूछताछ होती है और भावना से पूछताछ होती है।

मौखिक पूछताछ महज़ जिज्ञासा है या केवल समायोजन से संबंधित है,

अनुरूप बनाना, बदलना। ऐसा मन कोई भावनाशील मन नहीं है। हममें से अधिकांश लोगों की बुद्धि, शब्दों की क्षमता बहुत मजबूत होती है। हमारी सारी शिक्षा, सामाजिक पालन-पोषण, धार्मिक पठन-पाठन, धार्मिक उपदेश और अनुशासन केवल मौखिक स्तर पर हैं। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं, लेकिन उन्हें कोई अहसास नहीं है। जब आप बाइबल, गीता, या कुरान पढ़ते हैं, तो वे स्वयं केवल कागज होते हैं जिन पर शब्द छपे होते हैं, लेकिन आप इन शब्दों में भावना लाते हैं, शब्दों में स्वयं कोई भावना नहीं होती है। तो मन की पूरी प्रक्रिया की जांच के लिए मौखिक बुद्धि की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इसके साथ एक भावना भी होनी चाहिए।

मुझे आश्चर्य है, महोदय, क्या आपके मन में किसी चीज़ के बारे में कोई भावना है? क्या आपके मन में किसी चीज़ के बारे में कोई प्रबल भावना है? कृपया प्रश्न को देखें, इसके साथ थोड़ा खेलें, और आप देखेंगे। आत्म-सुधार, स्व-हित, क्षुद्र, छोटी चिंताओं और आशाओं की छोटी-छोटी भावनाओं के अलावा, क्या आपके पास किसी चीज़ के बारे में कोई मजबूत, महत्वपूर्ण भावना है? और यदि आपके पास है, तो यह कितनी जल्दी क्षुद्र कार्रवाई में तब्दील हो जाता है! क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ? जब तक आप भावुक, तीव्र भावना वाले नहीं हैं, आत्म-ज्ञान का कोई मतलब नहीं है। तब आत्म-ज्ञान आपके और आपके पड़ोसी के शोषण का एक और साधन मात्र है। इसलिए यह पता लगाना बहुत जरूरी है कि क्या आपके अंदर कोई भावना है। कृपया अपने आप से गंभीरतापूर्वक और ईमानदारी से पूछें कि क्या आपके मन में किसी चीज़ के बारे में कोई मजबूत भावना है - या क्या हम सभी इतने मृत, इतने सम्मानजनक, इतने क्षुद्र, इतने बुर्जुआ हैं कि हमारे पास कभी भी एक मजबूत, ज्वलंत भावना नहीं है? देखें कि क्या यह वास्तव में महत्वपूर्ण है या केवल क्षुद्र है। मैं जानता हूं कि यदि आपका पड़ोसी आपकी दीवार पर कुछ फेंक देता है तो आप बहुत क्रोधित हो जाते हैं, और कभी-कभार आप थोड़े कामुक, कामुक हो जाते हैं, लेकिन क्या यह सब कुछ है? मेरा तात्पर्य स्वयं के पूर्ण परित्याग के अर्थ में जुनून से है, क्योंकि उसमें से सच्ची सादगी आती है - लंगोटी की गणना की गई सादगी नहीं।

तो अगर मन खुद ही सबसे बड़ी भावना के साथ अपने बारे में पूरी तरह से जागरूक हो सकता है, तो आप देखेंगे कि आप जाने दे सकते हैं, फिर आप देखेंगे कि आप तोड़ सकते हैं। भावना अपने आप में अनुशासनात्मक है, जबकि सभी तथाकथित धार्मिक लोगों ने अपनी भावनाओं को नष्ट कर दिया है, अपनी इच्छाओं को अनुशासित कर दिया है। उनके देवता सस्ते देवता हैं जिनके पास वे कुछ भी लेकर नहीं आते हैं। लेकिन गहन भावना, गहरी जिज्ञासा वाला मन - गला घोंटने वाली भावना नहीं - अपना स्वयं का अनुशासन बनाना शुरू कर देगा। जो मन भ्रमित है, अव्यवस्थित है, प्रभावित है, वह कभी भी स्वयं को खोजने का स्पष्ट साधन नहीं बन सकता। जबकि स्वयं के बारे में पूछताछ की भावना की तीव्रता ही कंडीशनिंग को मुक्त कर देगी, कंडीशनिंग को तोड़ देगी।

दुर्भाग्य से, मैं ग्रीक भाषा में बात कर रहा हूँ क्योंकि आपमें से किसी ने भी इसका प्रयास नहीं किया है। आप देखिए, मैं एक बातचीत में बहुत कुछ कहने की कोशिश कर रहा हूं। मैं जो कहना चाहता हूं वह है

यह: मन वातानुकूलित है, चाहे आप इसे पहचानें या नहीं। और क्या आपको कंडीशनिंग की सभी परतों से गुजरना चाहिए, इसका विश्लेषण करना चाहिए, इसका विश्लेषण करना चाहिए, या क्या इसे तुरंत तोड़ने का कोई तरीका है? मुझे लगता है वहाँ है. मैं कहता हूं कि यदि आप जानते हैं कि मन वातानुकूलित है, और यदि आप जानते हैं कि एक वातानुकूलित मन, चाहे वह कुछ भी करता हो, उसके देवता, अनुष्ठान, विचार, गुण कुछ भी हों, अभी भी सीमित, वातानुकूलित है - तो आप देखेंगे कि वह ऐसा कर सकता है तोड़ना. लेकिन आपको पहले उसकी संपूर्णता को समझना होगा, विस्तार में गए बिना उसके संपूर्ण निहितार्थ को महसूस करना होगा। आप जानते हैं कि यह संपूर्ण विशाल क्षितिज, उसकी सुंदरता, जीवंतता, पवित्रता, दूरी और उसकी निकटता को देखने जैसा है। केवल भावना की गहराई, जब आप इन सबके प्रति जागरूक होंगे, कार्य करेगी। लेकिन यह कोई चाल नहीं है; यह कोई रहस्यमय अनुभव या काव्यात्मक कल्पना नहीं है। यदि मैं यह अनुभव कर सकूं कि मेरा मन क्षुद्र है, कि मेरे देवता क्षुद्र हैं, मेरी गीता, मेरा कुरान, मेरी बाइबिल क्षुद्र हैं, मैं जो मंदिर बनाता हूं, वे मूर्खतापूर्ण छवियां जिनका कोई अर्थ नहीं है सिवाय उस अर्थ के जो क्षुद्र मन उन्हें देता है; अगर मुझे निराशा के बिना, संशय के बिना एहसास होता है कि मेरा पूरा जीवन और विचार क्षुद्र हैं - तो उस अहसास की सच्चाई मन को पूरी तरह से शांत, पूरी तरह से शांत कर देती है; और इसे तोड़ने के लिए शांत रहना आवश्यक है। आप कुछ शब्द दोहरा सकते हैं और अपने आप को शांति में मंत्रमुग्ध कर सकते हैं, लेकिन आप ट्रैंक्विलाइज़र गोलियां भी ले सकते हैं। लेकिन जब आप अपनी कंडीशनिंग की विशालता देखते हैं, तो यह किसी अत्यंत सुंदर, शानदार आकाश को देखने जैसा होता है। स्वयं को इतना पूर्ण रूप से वातानुकूलित देखते हुए, स्वयं को ऐसा जानते हुए, मन पूरी तरह से शांत हो जाता है - न केवल चेतन मन बल्कि अचेतन भी। तब आप पाएंगे कि रचनात्मक रिहाई होती है - इसलिए नहीं कि आप इसे चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि यह जीवन की गति है।

29 अक्टूबर, 1958

मद्रास में चौथी वार्ता

एक प्रवृत्ति है ना, ज्यादातर चीजों को फॉर्मूलों तक सीमित कर देना और उन फॉर्मूलों के अनुसार जीने की कोशिश करना। हम सोचते हैं कि अगर हमें शिक्षा के लिए, अच्छे जीवन जीने के तरीके के लिए और पृथ्वी की सुंदरता को समझने के लिए कोई सही फॉर्मूला मिल जाए, तो हम अपनी समस्याओं का समाधान कर लेंगे। एक ऐसा सूत्र जिसके अनुसार हम जी सकें, हममें से अधिकांश लोग यही खोज रहे हैं, है ना?—अच्छा सूत्र, वह सूत्र जो अनुकूलन में सक्षम है, वह सूत्र जो तर्क की, जीवन की कसौटी पर खरा उतरेगा। मेरे लिए, उस प्रकार का कोई भी सूत्र न केवल जीवन के पूर्ण महत्व को नष्ट कर देता है और अप्रासंगिक हो जाता है, बल्कि मनुष्य को सबसे

गैरजिम्मेदाराना और सतही. हम सोचते हैं कि एक सूत्र का पालन करके - शांति के लिए, ध्यान के लिए, अनुशासन के लिए, किसी विशेष आदर्श तक पहुँचने के लिए, इत्यादि - हम बहुत जिम्मेदार, बहुत ईमानदार, बहुत गंभीर बन जाते हैं। मैं ऐसी मानसिकता पर बहुत सवाल उठाता हूं क्योंकि मुझे लगता है कि ऐसा व्यक्ति वास्तव में ईमानदार नहीं है; वह केवल नकल कर रहा है, अनुसरण कर रहा है, प्राधिकार द्वारा संचालित है। एक अनुयायी, निश्चित रूप से, कभी भी एक ईमानदार व्यक्ति नहीं होता है, और केवल सच्चे लोगों के लिए ही जीवन स्वयं को प्रकट करता है, किसी सूत्र के अनुयायी के लिए नहीं। जीवन ईमानदार के लिए है, और ईमानदार व्यक्ति वह नहीं है जो केवल संघर्ष और दुःख से, जीवन की विभिन्न समस्याओं, दुर्घटनाओं और घटनाओं से मुक्ति चाहता है। ईमानदार व्यक्ति के पास कोई तैयार समाधान नहीं होता जिसके साथ वह जीवन की समस्याओं का सामना करता है।

जो वास्तव में ईमानदार है वह वह है जो पूछताछ करता है, जो अस्तित्व की संपूर्ण समस्या की स्वयं जांच करने का प्रयास करता है, और जो केवल किसी दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक या धार्मिक उद्धारकर्ता के विचारों के अनुसार नहीं रहता है।
जिस क्षण आप किसी का अनुसरण करते हैं, आप वास्तव में ईमानदार होना बंद कर देते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, हमारी सभी प्रवृत्तियाँ, हमारी शिक्षा, हमारे आंतरिक भय, जीवन की दुर्घटनाएँ, दुखद प्रभाव - ये सभी मन को कठोर बनाते हैं, और जो मन कठोर हो गया है और जो फिर केवल बाहर निकलने का रास्ता खोज रहा है, वह नहीं है। मुझे लगता है, एक ईमानदार दिमाग.

मुझे ऐसा लगता है कि ईमानदारी का गुण होना बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके लिए प्रयास किए बिना, यदि आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है। आप सूर्यास्त की सुंदरता की सराहना करने का प्रयास नहीं कर सकते; सूर्यास्त की सुंदरता की सराहना करने के लिए, बहुत अधिक बुद्धिमत्ता, संवेदनशीलता, पेड़ों, पक्षियों, बादलों, प्रकृति, मनुष्यों और स्वयं सहित, की सतर्क दृश्य धारणा की आवश्यकता होती है। आप अचानक बादल की मनमोहक चमक की सराहना करने का निर्णय नहीं ले सकते। ऐसा नहीं होता. इसकी सुंदरता को देखने के लिए, न केवल दृष्टिगत रूप से, बल्कि सुंदरता की इस संपूर्ण भावना को पाने के लिए - जो कभी स्थिर नहीं होती, जिसका कोई सूत्र नहीं होता, जिसकी सराहना करने के लिए आपको शिक्षित नहीं किया जा सकता - कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। आप इसके बारे में साहित्य पढ़ सकते हैं, कवियों ने जो लिखा है उसे पढ़ सकते हैं, सभी चित्र दीर्घाओं को देख सकते हैं, संग्रहालयों में जा सकते हैं, लेकिन वास्तव में किसी चीज को देखने और उसकी सुंदरता को महसूस करने के लिए भारी मात्रा में आंतरिक काम की आवश्यकता होती है।

उसी तरह, वास्तव में ईमानदार होने के लिए ईमानदार होने के प्रयास की आवश्यकता नहीं है, जो कि सबसे मूर्खतापूर्ण है, बल्कि इसके लिए किसी की अपनी क्षमता, अपने स्वयं के प्रयासों, अपनी गतिविधियों और खोज के महत्व की समझ की आवश्यकता होती है। इसका अर्थ है किसी के द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों, उसकी भावनाओं, हावभाव, गपशप का अवलोकन और उन सभी चीज़ों के प्रति जागरूक होना। इन चीज़ों को बदलने के लिए, उन्हें ठीक करने के लिए जागरूक होना, स्वयं को जीवन के लिए और भी अधिक अभेद्य बनाना है। सूर्यास्त को देखना और कहना, “मुझे इसके प्रति बेहद गंभीर होना चाहिए

इसकी सुंदरता को देखें,'' इसका कोई अर्थ नहीं है, लेकिन यदि आप देखते हैं और सड़क के किनारे एक पत्ते की सुंदरता, गुजरते चेहरे की सुंदरता, और भ्रष्टाचार, कुरूपता, घृणितता के बारे में जानते हैं, तो उस संवेदनशीलता के साथ , यदि आप सूर्यास्त को देखें, तो इसका एक अर्थ है, एक गहराई है, इसका अपना महत्व है और यह अपनी कविता है। उसी प्रकार मैं सोचता हूं कि किसी भी मनुष्य के लिए ईमानदारी आवश्यक है, और विशेष रूप से उसके लिए जो यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि सत्य क्या है, इस अस्तित्व का अर्थ क्या है। लेकिन दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश के लिए, ईमानदारी का मतलब केवल भयावह प्रयास, महान संघर्ष, लगातार गंभीर होने की कोशिश करना है, जबकि वास्तव में यह सतही है।

मैं सोचता हूं कि कुछ बनने का, कुछ बनने का यह निरंतर प्रयास, मन की विनाशकारीता और उम्र बढ़ने का असली कारण है। देखिए, हम कितनी तेजी से बूढ़े हो रहे हैं, न केवल 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोग, बल्कि युवा भी। मानसिक रूप से वे पहले से ही कितने बूढ़े हैं! बहुत कम लोग युवा दिमाग की गुणवत्ता को बनाए रखते हैं या बनाए रखते हैं। युवा से मेरा तात्पर्य उस मन से नहीं है जो केवल आनंद लेना चाहता है, अच्छा समय बिताना चाहता है, बल्कि उस मन से है जो दूषित नहीं है, जो जीवन की दुर्घटनाओं और घटनाओं से खरोंच, विकृत, विकृत नहीं है, एक ऐसा मन जो घिसा-पिटा नहीं है संघर्ष से, दु:ख से, निरंतर प्रयास से। निश्चय ही युवा मन का होना आवश्यक है क्योंकि बूढ़ा मन यादों के घावों से इतना भरा होता है कि वह जीवित नहीं रह सकता, वह ईमानदार नहीं रह सकता; यह एक मृत मन है, एक निश्चित मन है। वह मन जिसने निर्णय ले लिया है और अपने निर्णयों के अनुसार जीता है, वह मृत है। लेकिन एक युवा दिमाग हमेशा नए सिरे से निर्णय लेता है, और एक ताज़ा दिमाग खुद पर असंख्य यादों का बोझ नहीं डालता। एक मन जिस पर दुख की कोई छाया नहीं होती, भले ही वह दुख की घाटी से गुजर जाए, वह अछूता रहता है। और व्यक्ति के पास ऐसा दिमाग होना चाहिए. यह स्पष्ट रूप से आवश्यक है क्योंकि ऐसे मन के लिए, जीवन है - सतहीपन का जीवन नहीं, आनंद का जीवन नहीं, हालांकि यह आनंद भी जान सकता है, पाने, खोने, प्राप्त करने, परेशान होने का जीवन नहीं, आप पूरी तरह से जानते हैं हमारे अस्तित्व का व्यवसाय, ज्ञान से बोझिल।

अब कोई निश्चित रूप से इसकी आवश्यकता को देखता है। जैसा कि मैं बात कर रहा हूं, आपको यह महसूस करना चाहिए कि किसी व्यक्ति के पास वास्तविक धारणा, तत्काल धारणा में सक्षम एक ताजा, अदूषित दिमाग का यह गुण होना चाहिए, जिसके बारे में मैं वर्तमान में बताऊंगा। और इसकी आवश्यकता को देखते हुए, हम पूछते हैं, "मुझे इसे कैसे प्राप्त करना है, इसे पाने के लिए मुझे कौन सी परीक्षाएँ, कौन से विषय लेने होंगे, मुझे कौन सा ध्यान, कौन सा अनुशासन अपनाना चाहिए, मुझे कौन से बलिदान करने होंगे?" -ये वे प्रश्न हैं जो कोई पूछता है। मुझे नहीं लगता कि इतना युवा दिमाग हासिल किया जा सकता है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप प्रयास के माध्यम से, बलिदान के माध्यम से खरीद सकते हैं।

इसका कोई सिक्का नहीं है और यह कोई बाजारू चीज नहीं है, लेकिन अगर आप देखें

इसका महत्व, इसकी आवश्यकता, यदि आप इसकी सच्चाई को देखते हैं, तो कुछ और होता है, और यही मैं, यदि मैं कर सकता हूं, इस बातचीत में बताना चाहता हूं। यह कोई बात नहीं है कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए क्योंकि सभी प्रक्रियाएं, सभी प्रकार के आत्म-अनुशासन, सभी विभिन्न तरीके जिनसे मन कुछ पाने के लिए खुद को वश में करता है, वे सभी स्मृति के इस पहाड़ को विकसित करते हैं जो केवल बोझ डालता है मन और उसे पुराना, जीर्ण, बेकार बना देता है। लेकिन यदि आप एक ताज़ा दिमाग की आवश्यकता को देख सकते हैं, यदि आप इसके निहितार्थों का प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं और केवल यह नहीं पूछ सकते कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए, तो सोचने की प्रक्रिया पूरी तरह से अलग है, है न? यदि आप कहते हैं, मैं इसे कैसे प्राप्त करूं, तो आपका पूरा दृष्टिकोण पूरी तरह से अलग है; तब कोई तात्कालिक बोध नहीं होता, कोई कालातीत समझ नहीं होती।

मुझे आश्चर्य है कि क्या हम समय के माध्यम से कुछ भी समझ पाते हैं? क्या मुझे कल, परसों, एक साल बाद या दस साल बाद कुछ समझ आता है? क्या समझना समय की बात है? क्या किसी चीज़ को सत्य, वास्तविक के रूप में देखना, या किसी चीज़ को झूठ के रूप में देखना समय की बात है, या तत्काल धारणा की बात है, तत्काल समय से बाहर होना? आपके साथ भी ऐसा ज़रूर हुआ होगा कि आपने तुरंत कोई चीज़ देख ली हो. तात्कालिकता की वह भावना समय से बाहर है - समय कल, आज और कल है। और क्या हम उसी तरह से एक युवा दिमाग की आवश्यकता, तात्कालिकता और असाधारण जीवन शक्ति को नहीं देख सकते हैं? मैं युवा मन शब्द का प्रयोग उस चीज़ के रूप में नहीं कर रहा हूँ जो समय में है। युवा मन समय से बाहर है; यह निर्दोष है, ताज़ा है, और यदि आप इस सच्चाई को देखते हैं कि ऐसा मन होना चाहिए, तो जीवन के प्रति आपका पूरा दृष्टिकोण पूरी तरह से अलग है, है ना? मुझे इसे दूसरी तरह से रखने दीजिए. शायद हम इसे अलग ढंग से प्राप्त कर सकते हैं।

मन बूढ़ा क्यों हो जाता है? यह पुराना है, है न, जीर्ण होने, बिगड़ने, खुद को दोहराने, आदतों, यौन आदतों, धार्मिक आदतों, नौकरी की आदतों या महत्वाकांक्षा की विभिन्न आदतों में फंसने के अर्थ में। मन असंख्य अनुभवों और स्मृतियों से इतना बोझिल है, इतना विकृत और दुःख से क्षत-विक्षत है कि वह कुछ भी ताजा नहीं देख पाता है, बल्कि जो देखता है उसे हमेशा अपनी यादों, निष्कर्षों, सूत्रों के रूप में अनुवादित करता रहता है, हमेशा उद्धृत करता रहता है; यह अधिकार-बद्ध है; यह एक पुराना दिमाग है. आप देख सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है. हमारी सारी शिक्षा केवल स्मृति का विकास है; और यह जनसंचार पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से होता है; ऐसे प्रोफेसर हैं जो व्याख्यान पढ़ते हैं और एक ही चीज़ को बार-बार दोहराते हैं जब तक कि आपका मस्तिष्क उनके द्वारा दोहराई गई बात को सोख नहीं लेता है, और आप इसे परीक्षा में उगल देते हैं और अपनी डिग्री प्राप्त करते हैं और प्रक्रिया के साथ आगे बढ़ते हैं - नौकरी, दिनचर्या , निरंतर पुनरावृत्ति। इतना ही नहीं, अपना भी है

अपनी कुंठाओं के साथ महत्वाकांक्षा का आंतरिक संघर्ष, न केवल नौकरियों के लिए बल्कि भगवान के लिए प्रतिस्पर्धा, उसके करीब रहने की चाहत, उसके लिए त्वरित रास्ता पूछना। निराशाओं, दुखों, दु:खों और अनसुलझे समस्याओं के साथ यह निरंतर प्रयास, संघर्ष हमारे दिलों को खा रहा है, और इसके शीर्ष पर हम किताबों के माध्यम से तथाकथित ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, जो कि सब बकवास है। हमारे पास ज्ञान के असंख्य स्कूल हैं, जो फिर से सरासर बकवास है।

तो, जो हो रहा है वह यह है कि दबाव के माध्यम से, तनाव के माध्यम से, तनाव के माध्यम से, हमारे दिमाग भीड़ में डूब रहे हैं, प्रभाव से डूब रहे हैं, दु:ख से, जाने-अनजाने। यदि हम इसके प्रति सचेत हैं, तो हम इसे दूर करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन अचेतन, गहरे नस्लीय विरोधाभास, एक-दूसरे से झगड़ती विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव, निराशाएँ, यह सब, निश्चित रूप से, मन को बूढ़ा बना रहे हैं। ये सभी यादें, और आख़िरकार ये केवल यादें ही हैं, मन को सुस्त कर रही हैं, और जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हमारी यादें और गहरी होती जाती हैं, और हम ख़ुशी के दिनों को देखते हैं या किसी भविष्य की आशा करते हैं। तो निश्चित रूप से इस गिरावट का प्रमुख कारक मन का गलत दिशा में निरंतर उपयोग है। हम दिमाग को कमजोर कर रहे हैं, उसका उपयोग नहीं कर रहे हैं।

इसलिए हमने उन प्रमुख कारकों को देखा है जिनके कारण मन सुस्त, असंवेदनशील, नए विचारों, नई दृष्टियों, नई गुणवत्ता के प्रति अभेद्य हो रहा है। यह मूलतः समय की चीज़ है, और समय हमेशा अतीत, वर्तमान और भविष्य के संदर्भ में कुछ सीमित होता है। क्या ऐसा नहीं है? क्या हम इसमें जा सकते हैं? यह सचमुच एक असाधारण विषय है. कालानुक्रमिक समय है - कल, आज और कल; आपकी ट्रेन एक निश्चित समय पर जाती है, इत्यादि। कालानुक्रमिक समय महत्वपूर्ण नहीं है, इसलिए आइए इसे छोड़ दें। अब समय क्या है? क्या उस मन के लिए समय है जो क्षति से मुक्त है? क्या उस मन के पास समय है जो अनुभव कर चुका है लेकिन फिर से इससे बाहर हो गया है? लेकिन ऐसे दिमाग के लिए समय होता है जिसने आनंद या दर्द या जो भी हो, उसके आधार पर एक स्मृति का अनुभव किया है और उसे बनाए रखा है। आख़िरकार, मन अपने स्वभाव से, अपनी संरचना से, अपनी शिक्षा की पूरी प्रक्रिया से, समय का एक उत्पाद है। आप जो कुछ भी हैं, आपका मन, वह इस अर्थ में समय का परिणाम है कि आपकी युवावस्था से लेकर, आपके जन्म के क्षण से लेकर अब तक, आपने अनगिनत अनुभव प्राप्त किए हैं, सीखे हैं, अनुभव किया है, सहा है, यात्रा की है, देखा है, सब कुछ प्राप्त किया है समय के संबंध में. और ऐसा मन, समय का परिणाम होने के कारण, हमेशा द्वंद्व के संदर्भ में, या एक विशेष इकाई के रूप में एक विशेष दिशा में सोचता है।

मुझे आशा है कि आप मुझे सुन रहे हैं, किसी ऐसी बातचीत के रूप में नहीं जिसे आपको लगता है कि आपको सुनना चाहिए, चाहे वह कितनी भी उबाऊ क्यों न हो, बल्कि यह देखने के लिए सुन रहे हैं कि क्या आपका अपना दिमाग वर्णित तरीके से काम नहीं कर रहा है, स्पीकर को केवल एक साउंडिंग बोर्ड के रूप में उपयोग करते हुए, जैसे

एक दर्पण जिसमें अपने मन को देखना है। अन्यथा, जो कहा गया है उसका कोई मतलब नहीं है।

हम जिस चीज़ के बारे में जानने का प्रयास कर रहे हैं वह समय है। मन समय का, कई कलों का परिणाम है, और अनुभव, झटके, दुख, सुख, समस्याएं, आनंद, जो चीजें किसी ने सीखी हैं उन्हें आज और फिर कल तक ले जाया गया है, संशोधित लेकिन वही प्रक्रिया जारी है। और ऐसा मन, जो समय में निहित है, अब पूछता है, "क्या मैं कुछ ऐसा पा सकता हूँ जो मन से परे है; क्या वहाँ शाश्वत है, क्या कुछ ऐसा है जो कालातीत है और, यदि वहाँ है, तो किसी को क्या करना है?" लेकिन जिस क्षण आप कहते हैं, "किसी को क्या करना है?" आप पहले ही समय की पूरी प्रक्रिया ला चुके हैं। तो अब हम जानते हैं कि समय क्या है, मनोवैज्ञानिक रूप से, आंतरिक रूप से। यह निरंतरता का भाव है, होने, न होने या बनने का भाव है। सभी बनना समय का है, और मन बस इतना ही जानता है।

अब क्या कोई अवस्था है, कोई जीवन है, कोई जिज्ञासा है - आप इसे जो भी कहना चाहें - जो प्रक्षेपण नहीं है, समय का परिणाम नहीं है, जो समय की छाया के भीतर नहीं है? क्या मन समय के साथ मरकर तुरंत कुछ नया नहीं देख सकता? अतीत के प्रति मरना तत्काल वर्तमान का जन्म है। तात्कालिक और वर्तमान शब्द समय के नहीं हैं, हालाँकि ये दोनों समय से संबंध दर्शाते हैं। जब हम "वर्तमान" कहते हैं, तो मन तुरंत अतीत या भविष्य के बारे में सोचता है, और जब हम "तुरंत" या "अभी" कहते हैं, तो यह फिर से अतीत या भविष्य से संबंधित होता है। लेकिन क्या कोई वर्तमान, तात्कालिक वर्तमान के बारे में इस तरह से नहीं सोच सकता या महसूस नहीं कर सकता कि अतीत और भविष्य की भावना - वे सभी चीजें जो उसने जानी, अनुभव की हैं - पतझड़ में पत्तियों की तरह गिर जाएं? क्योंकि उस अवस्था में मन ताज़ा, कालातीत होता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, कि मन वास्तव में सभी सामूहिक प्रभावों से, सभी विरासत में मिली संस्कृति से, सभी परंपराओं से, उन सभी चीजों से मुक्त होना चाहिए जिन्हें उसने जाना है, अनुभव किया है, आनंद लिया है। इसका मतलब है तुरंत उससे नाता तोड़ना, उत्तरोत्तर नहीं, क्योंकि उत्तरोत्तर अभी भी समय में है।

सर, हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह सबसे कठिन चीजों में से एक है। जैसा कि मैंने कहा, सत्य वह चीज़ है जो समय में नहीं बल्कि क्षण-क्षण में दिखाई देती है। इसमें कोई निरंतरता नहीं है, कोई स्थायी स्थान नहीं है। बुद्धि इसे खरीद नहीं सकती, और कोई अनुभव इसे आपको नहीं दे सकता। आपको हर उस चीज़ के प्रति मरना होगा जो आप जानते हैं - आपके स्वामी, आपके गुरु, आपकी बुद्धि, आपका समाज, हर चीज़। क्योंकि जानना समय के क्षेत्र के भीतर है। युवा मन संचयी नहीं है; यह पुराना मन है जो जमा हो गया है और जमा हो रहा है। पुराने दिमाग को मरना ही होगा, और यह कैसे होगा? और जब मैं "कैसे" कहता हूं तो मैं किसी विधि की बात नहीं कर रहा हूं। कोई देखता है, नहीं देखता, कि किसी भी चीज़ को समझने के लिए उसका होना ज़रूरी है

तत्काल या बिल्कुल नहीं. तात्कालिक कल में हो सकता है, लेकिन उसे अभी भी तात्कालिक होना चाहिए। मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं क्योंकि यह बहुत सूक्ष्म है; यह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे काले और सफेद में रखा जाए, कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका निष्कर्ष निकाला जाए और दिमाग पर ठप्पा लगा दिया जाए।

समझ समय की नहीं होती. धारणा तत्काल है. उदाहरण के लिए, दु:ख के पूर्ण महत्व की अनुभूति तत्काल होती है - दु:ख की व्याख्या नहीं, दु:ख का कारण नहीं। कोई समझा सकता है, कारण बता सकता है, लेकिन उसे समझना, उसे महसूस करना, उससे मुक्ति पाना बिल्कुल भी समय की बात नहीं है। देखिए, महोदय, हमारे जीवन के अधिकांश भाग में दु:ख हमारा निरंतर साथी है। हम आँसू बहाते हैं क्योंकि हम सफल नहीं हुए हैं या क्योंकि हम यह हैं जब हम सोचते हैं कि हमें वह होना चाहिए। हम लगातार निराश होते हैं; वहाँ मृत्यु है, वहाँ बुढ़ापा है, वहाँ बीमारी है, वहाँ किसी व्यक्ति या किसी विचार से लगाव है। हम दु:ख के असंख्य रास्ते जानते हैं, छोटे-छोटे छोटे दु:ख और विशाल दु:ख। बॉस से हमें लगातार मार मिलती है, पत्नी, पति का वर्चस्व होता है और मृत्यु होती है।

हम सभी जानते हैं कि दुख क्या है - वह गहरा घाव जो कभी ठीक नहीं हो सकता और जिसे छूने पर हम दिल खोलकर रोने लगते हैं। यह हम सभी की नियति है - युवा, बूढ़े, शक्तिशाली, तानाशाह, वे सभी इस पीड़ा को जानते हैं। तब मन विश्लेषण करना, विश्लेषण करना, कुछ प्रतिबंधों, सूत्रों को स्थापित करना शुरू कर देता है, और यह कहते हुए उन खंडनों को पूरा करने की कोशिश करता है, "यह सही है और वह गलत है, मुझे यह करना चाहिए और मुझे वह नहीं करना चाहिए।" और उस लड़ाई, हताशा, दुख में फिर से शाश्वत संघर्ष है। ऐसा लगता है कि हम जो कुछ भी छूते हैं वह यह दु:ख लेकर आता है।

अब जाहिर तौर पर इससे मुक्त होना समय की बात नहीं है. घाव को पूरी तरह से मिटा देना, न केवल बौद्धिक रूप से, मौखिक रूप से, बल्कि गहराई से, आंतरिक रूप से, समय की बात नहीं है। जीवन भर मिले सभी चेतन और अचेतन घाव - अपमान, चापलूसी, मन पर बोझ डालने वाली यादें, लालसाएँ और निराशाएँ, आशाएँ और निराशाएँ - इन्हें समय के साथ ठीक नहीं किया जा सकता है। उन्हें ढका जा सकता है; आप उन पर ढक्कन, मोम की परत लगा सकते हैं, लेकिन उन्हें समय के साथ मिटाया नहीं जा सकता। यदि आप ऐसा करने का प्रयास करते हैं, तो आप फिर से सूत्रों में फंस गए हैं - पुनर्जन्म, क्या करना है और क्या नहीं करना है - आप फिर से संघर्ष, स्थायी निराशा और आशा के उसी बदसूरत व्यवसाय में फंस गए हैं।

जाहिर तौर पर इससे बाहर निकलने का एक रास्ता होना चाहिए - इससे बाहर निकलने के लिए, जैसे कि अपने कपड़े उतारना, कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखना - जैसे तेज हवा से पहले बादल गायब हो जाता है। मुझे लगता है ऐसा कोई रास्ता है. लेकिन जाहिर तौर पर अगर आप पुरानी बातों से चिपके रहेंगे तो वह रास्ता कभी नहीं खोजा जा सकता। तुम्हें यह सब जाने देना चाहिए, दूसरे को जाने बिना।

आप मुझे समझते हैं, महोदय? यदि आपको लगता है कि आप दूसरा रास्ता जानते हैं - मन को कैसे साफ करें - तो आप जाने नहीं दे रहे हैं। जबकि यदि आप दूसरे को नहीं जानते हैं, लेकिन समय की मिथ्या को उपचार के साधन के रूप में, स्वयं को दुःख से मुक्त करने के साधन के रूप में देखते हैं, यदि आप देखते हैं कि स्मृति के संदर्भ में सोचने की पूरी प्रक्रिया मिथ्या है, तो आपका मन है किसी भी दिशा में नहीं देख रहे; इसलिए, स्वतंत्र होने के कारण, यह तुरंत देखने, समझने में सक्षम है।

मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए.
क्या आपने कभी खुशी से मरने की कोशिश की है? हम दुख के साथ मरना चाहते हैं, लेकिन क्या आपने कभी किसी सुख के लिए मरने की कोशिश की है? क्या आपने कभी स्वेच्छा से मरने की कोशिश की है, जबरदस्ती नहीं? सामान्यतः जब आप मरते हैं तो आप नहीं चाहते; मौत आती है और तुम्हें ले जाती है; आत्महत्या को छोड़कर यह कोई स्वैच्छिक कार्य नहीं है। लेकिन क्या आपने कभी स्वेच्छा से, आसानी से मरने की कोशिश की है, आनंद के त्याग की भावना को महसूस किया है? स्पष्टः नहीं! वर्तमान में आपके आदर्श, आपके सुख, आपकी महत्वाकांक्षाएं ऐसी चीजें हैं जो जीवन को तथाकथित महत्व देती हैं, लेकिन उनका कोई महत्व नहीं है। यह 'आप' ही है जो उन्हें महत्व दे रहा है। जीवन जीना है, प्रचुरता है, परिपूर्णता है, परित्याग है, न कि 'मैं' की भावना का महत्व है। वह मात्र बुद्धि है. यदि आप छोटी-छोटी चीज़ों पर मर मिटने का प्रयोग करते हैं - तो यह काफी अच्छा है। बस छोटी-छोटी खुशियों के लिए मर जाना - सहजता के साथ, आराम के साथ, मुस्कुराहट के साथ - काफी है, तब आप देखेंगे कि आपका मन कई चीजों के लिए मरने, सभी यादों के लिए मरने में सक्षम है। मशीनें स्मृति के कार्यों को संभाल रही हैं - कंप्यूटर - लेकिन मानव मस्तिष्क साहचर्य और स्मृति की महज एक यांत्रिक आदत से कहीं अधिक है। लेकिन यह कुछ और नहीं हो सकता है अगर यह जो कुछ भी जानता है उसके प्रति मर नहीं जाता है।

अब इस सब की सच्चाई को देखने के लिए, एक युवा दिमाग आवश्यक है, एक ऐसा दिमाग जो केवल समय के क्षेत्र में कार्य नहीं कर रहा है। युवा मन हर चीज़ के प्रति मर जाता है। क्या आप उसकी सच्चाई को तुरंत देख सकते हैं, उसकी सच्चाई को तुरंत महसूस कर सकते हैं? हो सकता है कि आप इसके संपूर्ण असाधारण महत्व, अत्यधिक सूक्ष्मता, उस मरने की सुंदरता, उसकी समृद्धि को न देख सकें, लेकिन इसे सुनने से भी बीज बोया जाता है, और इन शब्दों का महत्व जड़ें जमा लेता है - न कि केवल सतही स्तर पर , चेतन स्तर, लेकिन संपूर्ण अचेतन के माध्यम से सही।

इसलिए यदि आप उस तरह से सुनने में सक्षम हैं, तो आप देखेंगे कि यह अपने आप में पर्याप्त है। आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि पूरी तरह से सुनने का कार्य धरती में, गर्भ में एक बीज की तरह है - इसमें जीवन है और यह चलता रहता है। तो, क्या अब कोई देख सकता है कि समझ समय की बात नहीं है, यह धारणा किसी निष्कर्ष, स्पष्टीकरण का परिणाम नहीं है? आप क्यों पीड़ित हैं इसके बारे में आपके पास लाखों सूक्ष्म स्पष्टीकरण हो सकते हैं, लेकिन दुःख का स्पष्टीकरण नहीं है

दुःख का अंत. लेकिन अगर आप देख सकते हैं कि दुख का अंत समय से नहीं, बल्कि उसके लिए मरने से हो सकता है - बिना किसी पुरस्कार के बारे में सोचे, बिना किसी स्पष्टीकरण के - जैसे कि आप आनंद के लिए भी मर सकते हैं, तो आप देखेंगे कि समय का कोई मतलब नहीं है ईमानदार आदमी. फिर जीवन तत्काल पूर्णता से जीने वाली चीज़ है। मैं नहीं जानता कि क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है - एक जुगनू को देखना और उसमें, प्रकाश का, सत्य का, सौंदर्य का पूरा ब्रह्मांड देखना। यह महज़ एक रोमांटिक, काव्यात्मक विचार नहीं है, बल्कि इस तरह महसूस करने का मतलब है कि स्मृति का मैल धुल गया है - जिसका मतलब यह नहीं है कि आप भूल जाएं कि आप कहां रहते हैं, पागल हो जाएं। लेकिन पहचान, लगाव, अनुभव का विनाशकारी प्रभाव जिस पर मन रहता है, खुद को बनाए रखता है, जीर्ण हो जाता है और बिगड़ जाता है - वह सब धुल जाता है। श्रीमान्, आपके साथ अक्सर ऐसा हुआ होगा कि आप किसी के अपमान से आहत हुए हों, किसी के कृत्य से, आपके पति से, आपकी पत्नी से, या किसी और से। और क्या कोई घाव के कारण, बिना कारण, बिना हिसाब-किताब के, बिना क्षमा किये नहीं मर सकता? समझ में क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या कोई इसके प्रति पूरी तरह से मर नहीं सकता, ताकि वह चीज़ ख़त्म हो जाए? यदि आप मुझे सुन रहे हैं और केवल मंत्रमुग्ध नहीं हो रहे हैं, तो निश्चित रूप से आपने पहले ही देख लिया होगा कि मन - जिसे समय द्वारा एक साथ रखा जाता है - स्वयं मर सकता है।

संभवतः आपने कभी इसका प्रयोग नहीं किया है, लेकिन यदि आप ऐसा करेंगे, तो आप देखेंगे कि सारी धारणा, सारी समझ समय से बाहर है, और वह मुक्ति है - समय से मुक्ति। यह प्यार की तरह है. प्यार समय का नहीं होता. आप यह नहीं कहते, "मैंने कल प्यार किया था, या मैं कल प्यार करूंगा।" प्यार कालातीत है, और जब आप इतना प्यार करते हैं, तो कोई भविष्य या अतीत नहीं होता है। जो पूर्ण है, संपूर्ण है, वह समय से बंधा या स्थान से अलग नहीं है। तो अगर आपने सच में ये सुना है, बस थोड़ा सा, तो काफी है। बीज, यदि यह सत्य है, तो इसकी अपनी गति होगी। मन को बस इतना करना है कि मलबे से दूर रहना है। लेकिन सुनने के लिए भी एक खास ध्यान की जरूरत होती है। ध्यान मन का नहीं है; ध्यान ही प्रेम है. आख़िरकार, आप जिसे प्यार करते हैं, उसे अपना पूरा दिल देते हैं और पूरी तरह सुनते हैं। प्रेम मन का नहीं है, और इसकी गुणवत्ता कालातीत है।

दुर्भाग्य से, हम इनमें से कुछ भी नहीं जानते हैं, और इसलिए हमारा दिमाग उन पर शासन करता है। हमारा मन हमारे आचरण, हमारे जीवन के तरीके को नियंत्रित करता है, और इसलिए हमारा व्यवहार केवल आदत पर, तथाकथित नैतिकता पर आधारित है। केवल नैतिक दिमाग कभी भी सत्य को नहीं जान पाएगा। यह केवल वही व्यक्ति है जो संवेदनशील है, जो हमेशा खोता रहता है, कभी संचय नहीं करता है, केवल ऐसा व्यक्ति ही समझ सकता है, और वह समझ समय से बाहर है।

2 नवंबर, 1958

मद्रास में पांचवी वार्ता

मैं सोचता हूं कि यह बहुत दिलचस्प होगा यदि हम स्वयं पता लगा सकें कि क्या वहां कोई शिक्षण है, और क्या कोई शिक्षक है। हममें से अधिकांश लोग सोचते हैं कि हम जीवन से सीखते हैं, और हम जीवन को एक विशेष महत्व देते हैं। हम कहते हैं कि हम जीवन के विभिन्न अनुभवों, घटनाओं और दुर्घटनाओं से सीखते हैं। हम अनुभवों को संचित करते हैं, और यह संचय हमारी सोच और भविष्य के सभी अनुभवों को और बेहतर बनाता है। तो हम कहते हैं कि हम जीवन से सीखते हैं, और हम जीवन को महत्व देते हैं। हम इसे जितना अधिक महत्व देते हैं, हम उतना ही अधिक सोचते हैं कि हमारा जीवन उस महत्व की खोज में है। मुझे नहीं पता कि आपने इस बात पर ध्यान दिया है या नहीं कि हममें से अधिकांश लोग जीवन को एक महत्व देने के लिए कैसे लालायित रहते हैं; हम कहते हैं कि जीवन का एक उद्देश्य होना चाहिए, एक अंतिम लाभ होना चाहिए; अन्यथा, हम किसलिए जीते हैं?

ये प्रश्न निरपवाद रूप से, पूर्ण, गहन, व्यापक महत्व स्थापित करने की इच्छा से नहीं उठते हैं। और हम यह भी कहते हैं कि हम जीवन से सीखते हैं, और इस संग्रह को ज्ञान या अनुभव कहा जाता है। तो या तो हम ज्ञान, अनुभव इकट्ठा करने और उस संचय को समृद्ध करने से संतुष्ट हैं, या फिर हम जीवन को महत्व देने का प्रयास करते हैं। इसलिए हम हमेशा एक उद्देश्य, एक महत्व, एक अर्थ की तलाश में रहते हैं।

अब, क्या जीवन का कोई अर्थ है, उस सार्थकता के अर्थ में जिसे हम टटोल सकते हैं, और क्या जीवन में कोई शिक्षा और कोई शिक्षक है? बेशक, एक स्कूल में यांत्रिक अर्थ में एक शिक्षक होता है, उन लोगों के लिए जो विशेषज्ञता, विशेष तकनीक और यांत्रिकी जैसे विशेष ज्ञान की तलाश कर रहे हैं। ऐसा सारा ज्ञान, निश्चित रूप से, एक तकनीक को प्राप्त करने और संग्रहीत करने और आजीविका के उद्देश्य से उस स्मृति का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है। लेकिन मैं अपने आप से पूछ रहा हूं कि क्या जीवन से कुछ सीखा जा सकता है, और क्या कोई है जो मुझे जीवन के बारे में सिखा सकता है। कोई मुझे जीवन जीने की यांत्रिक प्रक्रिया सिखा सकता है, लेकिन मैं यह भी देख सकता हूं कि जब तक हम ज्ञान संचय कर रहे हैं, हम उस ज्ञान की सीमाओं से परे जाने में सक्षम नहीं लगते हैं। जाहिर तौर पर हमें ज्ञान होना चाहिए - कुछ गणित, कार, हवाई जहाज कैसे चलाना है, काम कैसे करना है और बाकी सब कुछ जानना चाहिए - और इसके लिए शिक्षक होने चाहिए। लेकिन क्या इसके अलावा भी कोई "शिक्षण" हो सकता है? और यदि उस प्रकार के अतिरिक्त कोई शिक्षा नहीं है, तो इस प्रकार की बातचीत का क्या प्रयोजन? यदि आप इसे स्वयं से पूछेंगे तो यह वास्तव में काफी महत्वपूर्ण प्रश्न है। कोई नृत्य सीख सकता है, वायलिन बजा सकता है, या पढ़-लिख सकता है, मशीन कैसे उड़ा सकता है, चंद्रमा पर कैसे जा सकता है, और बाकी सब कुछ, और जाहिर है, इसके लिए उसे किसी से सीखना होगा। लेकिन क्या हम इस बातचीत से सीख रहे हैं और सीखने से हमारा क्या मतलब है? अगर मैं कहूं तो मैं हूं

कार चलाना सीखना, यह बहुत सरल है—मैं ज्ञान संचय कर रहा हूं, और जितना अधिक मैं गाड़ी चलाता हूं, उतना अधिक विशेषज्ञ बन जाता हूं, जब तक कि बिना ज्यादा सोचे-समझे मैं गाड़ी नहीं चला लेता। वहाँ ज्ञान आवश्यक है। किसी तकनीक को लागू करने के लिए मुझे ज्ञान संग्रहित करना होगा। तो क्या हम यहाँ उस यांत्रिक अर्थ में सीख रहे हैं? क्या आप गीता या बाइबिल से सीखते हैं, और आप क्या सीखते हैं? जो कहा गया है उसकी व्याख्या कैसे करें या अपने जीवन को उसके अनुरूप कैसे बनाएं, क्या ऐसा नहीं है? वह फिर से यांत्रिक है। अर्थात्, आप सोचते हैं कि वहाँ आपको जीवन का एक महत्व मिल सकता है जिसका अर्थ है कि जीवन का अपने आप में कोई अर्थ नहीं है सिवाय उस महत्व के जो आप इसे देना चाहते हैं।

यदि मैं आपको बोर किए बिना ऐसा कर सकूं तो कृपया मुझे आपको यह याद दिलाने दीजिए कि आप सिर्फ किसी और की बात नहीं सुन रहे हैं। यदि हम कर सकते हैं तो हम जीवन की संपूर्ण समस्या में एक साथ यात्रा कर रहे हैं। मैं तुम्हें नहीं सिखा रहा हूं, और तुम मुझसे नहीं सीख रहे हो। वह सारा कारोबार बहुत अपरिपक्व, बचकाना है।

लेकिन हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह वास्तव में सीखने की पूरी प्रक्रिया में इस जांच का अनुभव करना है और यह पता लगाना है कि क्या मन खुद को ज्ञान और अनुभव की सीमा से मुक्त कर सकता है, या कुछ ऐसा सीख सकता है जो ज्ञान के क्षेत्र से परे है . मैं इसमें थोड़ा गहराई से जाने का प्रयास करूँगा क्योंकि यदि संभव हो तो मैं चाहता हूँ कि वर्तमान में इस बारे में बात करूँ कि सृजन से हमारा क्या तात्पर्य है।

तो, सीखने से हमारा क्या तात्पर्य है? या क्या यांत्रिक शिक्षा के अलावा ऐसी कोई चीज़ ही नहीं है? निश्चित रूप से कोई सीख नहीं है क्योंकि कोई भी बहुत स्पष्ट रूप से देख सकता है कि सभी अनुभव केवल आगे के अनुभव की शर्तें हैं; सारा अनुभव अगले अनुभव को यांत्रिक बना देता है। उदाहरण के लिए, जब किसी को सूर्यास्त का, क्रोध का, लोभ का, या यह या वह अनुभव होता है, तो वह अनुभव मन में एक अवशेष छोड़ जाता है, क्या ऐसा नहीं होता है? मन वह अवशेष है; यह कोई अलग चीज़ नहीं है, यह उस अनुभव का चिह्न है। फिर मैं तुरंत उस अनुभव को पिछले अनुभव के संदर्भ में अनुवादित करता हूं। इसलिए प्रत्येक अनुभव का मन द्वारा अनुवाद, संशोधन और महत्व दिया जाता है।

सभी अनुभव वास्तव में एक यांत्रिक प्रक्रिया है, मन इसे अपनी इच्छाओं और यादों के अनुसार अनुवाद करता है, इसे सुखद या दर्दनाक, समृद्ध या समृद्ध नहीं, दुखद या सुंदर कहता है।

तो कोई यह देख सकता है कि जहाँ तक यांत्रिक चीजों का संबंध है, वहाँ सीखना है, और कोई यह भी देख सकता है कि अनुभव से या किसी शिक्षण से तथाकथित सीखना फिर से मन की एक यांत्रिक कंडीशनिंग है। और क्या सीखने का कोई अन्य रूप है? क्या मैं उन दो श्रेणियों के अलावा आपसे कुछ भी सीख सकता हूँ? कोई देख सकता है, क्या नहीं, कि वे दो श्रेणियाँ यांत्रिक हैं; अनुभव से सीखना थोड़ा अधिक सूक्ष्म है, लेकिन फिर भी है

आदत के क्षेत्र में—आदत स्मृति है। तो क्या सीखने का कोई अन्य रूप है?

आप मुझे सुन रहे हैं, और मुझे आश्चर्य है कि क्यों? क्या यह कुछ सीखने, जीवन में कोई उद्देश्य खोजने, अपनी समस्याओं को स्पष्ट करने, या अपनी यादों को समृद्ध करने की आशा में है? या क्या ऐसा है कि सीखने शब्द का उपयोग किए बिना हम दोनों ध्यान की स्थिति में हैं जिसमें हम चीजों को बहुत स्पष्ट रूप से देख रहे हैं? उम्मीद है आप मेरे कथन का आशय समझ रहे होंगे। ध्यान की उस अवस्था में आप सीखते नहीं हैं - आप केवल चौकस रहते हैं। यह वह मन है जो चौकस नहीं है जो सीखने की कोशिश करता है, जो सिखाया जाना चाहता है, और यह प्रक्रिया केवल स्मृति विकसित करती है। और फिर यह यांत्रिक हो जाता है और आदतें स्थापित करता है - विचार की आदतें, विचारों की आदतें, मूल्यों की आदतें। तो हम यह पता लगाना चाहते हैं कि यह कौन सा ध्यान है जो संचयी नहीं है क्योंकि जिस क्षण मन संचय की मशीन बन जाता है, वह ध्यान देना बंद कर देता है। तब यह केवल यंत्रवत् कार्य करना है, जो हममें से अधिकांश लोग चाहते हैं क्योंकि उस तरह से जीना बहुत आसान है। यह पटरियाँ बिछाने और उन पर हमेशा-हमेशा के लिए दौड़ने जैसा है क्योंकि यह परेशान करने वाला नहीं है। इसलिए हमारा दिमाग हमेशा सुरक्षित रहने के लिए आदतें विकसित करता रहता है। सुरक्षित रहने के लिए हम सीखने की कोशिश करते हैं - शिक्षक से, किताब से, इससे और उस से - और सीखना आदतों को स्थापित करने की एक प्रक्रिया है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, यदि आप स्वयं के प्रति जागरूक हों, तो आप देखेंगे कि ऐसा ही है। हम सभी परिस्थितियों में सुरक्षित रहना चाहते हैं - अपने विचारों, अपनी नौकरियों, अपने अनुभवों, अपनी भावनात्मक स्थिति इत्यादि में। हम एक स्थायित्व चाहते हैं जिसका मतलब वास्तव में आदत की निरंतरता है। और क्या सीखने का कोई अन्य रूप है, या केवल ध्यान ही है?

आप देखते हैं कि यह प्रश्न महत्वपूर्ण है क्योंकि वे हमारे शरीर पर रासायनिक रूप से असाधारण चीजें कर रहे हैं। आप विभिन्न प्रकार की गोलियाँ ले सकते हैं - दिमाग को अत्यधिक ध्यान में लाने के लिए गोलियाँ, ऐसी गोलियाँ जो मन को असाधारण रूप से सतर्क बनाती हैं, गोलियाँ जो धारणा की आश्चर्यजनक तीव्रता को उत्तेजित करती हैं, चमकीले रंगों और जबरदस्त प्रभावों वाली। तो रासायनिक रूप से मन को जैसा चाहे वैसा बनाया जा सकता है। आप भावनात्मक रूप से, या तथाकथित आध्यात्मिक रूप से, या अपने बारे में हर चीज़ के प्रति असाधारण सतर्कता की भावना के साथ लगभग किसी भी स्थिति में आ सकते हैं। ऐसा कहा जाता है कि कोई रासायनिक प्रक्रिया के माध्यम से अचेतन को भी मिटा सकता है। ये चीजें की जा रही हैं, और मन रसायन विज्ञान द्वारा इतना नियंत्रित है - और आपको इसके लिए मेरा शब्द स्वीकार करने की ज़रूरत नहीं है - तो यह जांच, यह मुक्ति, मन से परे किसी चीज़ की खोज, ईश्वर के प्रति आग्रह कहां है , शाश्वत—यह सब कहां आता है? यदि मैं किसी गोली के माध्यम से अपने दिमाग को चिंता करना बंद कर दूं, उस क्षण के लिए असाधारण रूप से चौकस रहूं जिसमें यह काम कर रहा है, तो निश्चित रूप से मैंने एक महान समाधान प्राप्त कर लिया है

कई कठिनाइयाँ. मैं इस तरह से विभिन्न प्रकार के अनुभव उत्पन्न कर सकता हूं, दर्शन देख सकता हूं, इत्यादि।

तो, यह सब जानते हुए, कोई पूछता है, "क्या अनंत काल जैसी कोई चीज़ है? क्या सत्य जैसी कोई चीज़ होती है? क्या आदत से ग्रस्त दिमाग की पहुंच से परे होने जैसी कोई चीज़ है?" क्योंकि, आप जानते हैं, किसी को किसी भी बात पर विश्वास दिलाया जा सकता है; उनके पास इसके लिए गोलियाँ भी हैं। इसलिए विश्वास, ज्ञान, अनुभव का अब बहुत कम अर्थ रह गया है क्योंकि आपको किसी भी चीज़ पर विश्वास कराया जा सकता है। इस सब को ध्यान में रखते हुए, वास्तव में गहन पूछताछ के साथ, पता लगाने की इच्छा के साथ, अज्ञात में अपना रास्ता महसूस करने की भावना के साथ, क्या इसमें कोई सीख है? या क्या केवल ध्यान की एक अवस्था है जो किसी गोली से प्रेरित नहीं है? आप किसी गोली से या विभिन्न तरीकों से खुद को सचेत कर सकते हैं और यह फिर से एक आदत बन जाती है।

तो चूँकि यंत्रवत् आप द्वंद्व को दूर कर सकते हैं, एक गोली के माध्यम से पूर्ण आराम पा सकते हैं, तो मन का कार्य क्या है? क्या हमें केवल अपने वातावरण के साथ तालमेल बिठाकर जीना है, अपनी नौकरी पर जाना है और इस बात से चिंतित नहीं होना है कि किसी ने गोली ले ली है? ये वास्तव में हो रहा है. यदि मन को इस बात के लिए प्रेरित किया जा सकता है कि उसे कोई चिंता न हो, वह शान्त, शांतिपूर्ण, चुप रहे, अतीत को भूल जाए, तो फिर मन का कार्य क्या है? क्या मन केवल गोलियों का खिलौना मात्र है, न केवल बोतल से निकली गोलियाँ, बल्कि आदत की, स्मृति की, अनुभव की गोलियाँ भी? यदि कोई इन सबको तोड़ सकता है, तो मन का कार्य क्या है?

निश्चित रूप से कोई यह प्रश्न केवल तभी पूछ सकता है जब कोई सफलता प्राप्त कर चुका हो, जब आप आत्म-ज्ञान और बहुत सावधानीपूर्वक अवलोकन के माध्यम से सफलता प्राप्त कर चुके हों। जब आप विचार की कुछ आदतों, कुछ दृष्टिकोणों और कुछ मान्यताओं को त्याग देते हैं, तब भी एक गोली द्वारा मन को उस स्वतंत्रता में और अधिक प्रखर बनाया जा सकता है। मानव जीव के संबंध में रासायनिक दुनिया में होने वाली इन सभी असाधारण चीजों को जानकर, कोई भी स्वाभाविक रूप से खुद से पूछता है कि क्या वास्तविकता, ईश्वर या जो कुछ भी है, वह मौजूद है, या यह सब महज एक आविष्कार है? क्या यह किसी स्थायी, चिरस्थायी, अकाट्य सुरक्षा में भागने की मन की मात्र इच्छा है? क्योंकि हममें से अधिकांश लोग यही चाहते हैं - हमें उस स्थिति तक ले जाया जाए। और मन इन सभी विचारों, इन आदतों, इन यांत्रिक और रासायनिक चीजों से खुद को कैसे शुद्ध कर सकता है और पता लगा सकता है कि क्या सच्चाई है? क्या मैं वास्तविकता को देखना और उसके महत्व को समझना सीख सकता हूँ, या क्या मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं सीख सकता हूँ? या क्या मन वास्तविकता को क्रिया में परिणित किये बिना ही अनुभव कर सकता है? मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। मुझे डर है कि मैं नहीं हूं.

आप देखिए, मैं इस बारे में बहुत सोच रहा हूं कि सृष्टि क्या है। जब मैं "सोच" कहता हूं, तो आइए हम इसके बारे में स्पष्ट रहें। हममें से अधिकांश के लिए सोच महज़ प्रतिक्रिया है। विचार महज़ आप जो जानते हैं उसकी प्रतिक्रिया है; विचार आपके अनुभव, आपकी कंडीशनिंग का परिणाम है। इसलिए ऐसा कोई विचार नहीं है जो स्वतंत्र हो। लेकिन मैं सोच शब्द का उपयोग जांच के अर्थ के रूप में करता हूं। और मैं सोच रहा हूं कि यह रचना क्या है, जो महज प्रतिभा, उपहार या आविष्कार करने की क्षमता नहीं है। यह कौन सी रचनात्मक स्थिति है जिसके बिना मन हमेशा यांत्रिकी, आदतों की दुनिया से बंधा रहेगा? मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए.

हमारा जीवन यांत्रिक है, ज्ञात से ज्ञात की ओर एक गति है, और इसमें कोई सृजन नहीं है, उस विशाल, अथाह स्थिति का कोई एहसास नहीं है जो यांत्रिक मन की पहुंच से परे है।

उसकी जागरूकता के बिना, उसकी धारणा के बिना, उस पर ध्यान दिए बिना, जीवन यंत्रवत ही रहना चाहिए। तो एक यांत्रिक मन स्वयं को कैसे तोड़ सकता है और दूसरे को महसूस कर सकता है? जाहिर तौर पर सभी सीमाएं समाप्त होनी चाहिए; सभी विचारों को समाप्त होना चाहिए क्योंकि विचार केवल स्मृति की प्रतिक्रिया है, ज्ञान की प्रतिक्रिया है; यह अभी भी ज्ञात के क्षेत्र में है।

तो मैं देखता हूं कि विचार समाप्त हो जाना चाहिए, सीमा टूटनी चाहिए, कोई उद्देश्य होने की भावना नहीं होनी चाहिए, और मन किसी चीज के बारे में सक्रिय हुए बिना भी आश्चर्यजनक रूप से सक्रिय होना चाहिए। क्योंकि हमारा ज्यादातर दिमाग किसी न किसी चीज को लेकर सक्रिय रहता है। मन असाधारण रूप से चौकस होना चाहिए. मैं देखता हूं कि ये चीजें आवश्यक हैं, अनिवार्य हैं और इन्हें किसी प्रलोभन के माध्यम से, किसी गोली के माध्यम से, विश्वास की किसी चाल, आचरण के तरीके या सदाचार के तरीके के माध्यम से नहीं लाया जा सकता है - जो सभी आदत बनाने वाले हैं।

तो, मन कैसे इन सभी यांत्रिक आदतों के प्रति जागरूक रहे और उनमें फंस न जाए? बिना किसी प्रलोभन के मन स्वयं को ज्ञात से कैसे मुक्त कर सकता है? महोदय, ये सभी प्रश्न आपने स्वयं से नहीं पूछे होंगे, लेकिन मैं इन्हें आपके सामने रख रहा हूं ताकि आप स्वयं इनका उत्तर दे सकें। क्योंकि यह केवल ऐसा जिज्ञासु मन ही है जो तुरंत, एक क्षण भर के लिए, उस चीज़ को समझ सकता है जो अथाह है। यह वहाँ है, सदैव, कालातीत रूप से। लेकिन मन इसे कभी नहीं पा सकता क्योंकि वह केवल सीखने के बारे में जानता है, जो कि संचय है; यह तो बस आदत जानती है, जो समय की होती है। और यह जो कुछ भी सोचता है वह अभी भी समय के दायरे में है। तो यह सब छोड़ने का मन कैसा है? मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे कि मैं क्या पूछ रहा हूं, महोदय, क्योंकि जब तक ऐसा नहीं होता है, तब तक वही करें जो आप करना चाहते हैं, एक आदर्श सामाजिक राज्य, एक आदर्श कल्याणकारी राज्य, एक आदर्श संगठन, यह एक अद्भुत घर होने जैसा है जिसमें अंदर कुछ भी नहीं है।

और हम वही बन रहे हैं - अच्छा दिमाग, स्वस्थ शरीर, उत्तेजित भावनाएँ, सब कुछ गोलियों द्वारा नियंत्रित, और उससे आगे जाने में सक्षम नहीं।

तो, मन उस चीज़ को अपने पास कैसे आने दे? जाहिर है मन उस तक नहीं जा सकता. यह आना ही चाहिए, और यह कैसे आयेगा? आप इसे आमंत्रित नहीं कर सकते, आप इसकी आदत नहीं बना सकते, आप इसके लिए खुद का बलिदान नहीं दे सकते, या इसे पाने के लिए खुद को इस या उस में नहीं बना सकते। यह अवश्य आना चाहिए; और "कैसे", किस आचरण से, किस मार्ग से, किस प्रणाली से, किस सोचने की प्रक्रिया से - समस्या नहीं है। आप देखिए, इस प्रश्न को गंभीरता से अपने सामने रखने के लिए, आपको प्रश्न के संपूर्ण निहितार्थों के बारे में पूरी तरह से अवगत होना चाहिए।

मन की सभी आदतों को जानते हुए, यह जानते हुए कि अब आप मन के साथ दवाओं के माध्यम से कुछ भी कर सकते हैं जिसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा, तो आप निश्चित रूप से देखेंगे कि ऐसा मन, जो प्रभावित हो चुका है, संभवतः वह प्राप्त नहीं कर सकता है जिसका कोई माप नहीं है, जो नामहीन है. और फिर भी उस दूसरे के बिना, यह एक संपूर्ण शरीर, एक सुंदर यांत्रिक मन होने जैसा है, जो कि एक खाली खोल है। तो वह अज्ञात कैसे आएगा? आप इसे प्रेरित नहीं कर सकते; आप इसे किसी भी माध्यम से नहीं खरीद सकते. यह बहुत विशाल, अथाह और इतना क्षणभंगुर है कि मन इसे पकड़ नहीं सकता। इसे समय के दायरे में नहीं रखा जा सकता.

कृपया इसे जरूर सुनें. वह मन, जिसने सीमाएँ, सरहदें स्थापित कर रखी हैं, उन सरहदों को कैसे तोड़ सकता है? वह मन कैसा है जो केवल ज्ञान की आदतों में कार्य करता है—वह तुरंत कैसे समाप्त हो सकता है, भविष्य में नहीं? मुझे आशा है कि आप वास्तव में सुन रहे हैं - कुछ सीखने के लिए नहीं सुन रहे हैं जिसके बारे में आप घर आने पर सोच सकते हैं, क्योंकि तब आप कभी नहीं जान पाएंगे। क्योंकि भविष्य में इसके बारे में सोचना केवल समय को फिर से पकड़ना है। लेकिन अगर आप अभी सुन सकते हैं, बहुत सरलता से, तो आपका मन स्वयं देख लेगा कि प्रश्न में ही अपना उत्तर निहित है। आपको उत्तर खोजने की ज़रूरत नहीं है—प्रश्न ही उत्तर है।

सृजन एक ऐसी चीज़ है जिसका उपयोग मन नहीं कर सकता। वह इसका उपयोग पेंटिंग करने, या कविता लिखने, या कोई आविष्कार करने, या सपने देखने के लिए नहीं कर सकता। यह उन सब से बहुत परे है. उस असाधारण चीज़ के घटित होने के लिए, तत्काल, मन को स्वतंत्र होना चाहिए।

तो, महोदय, जो महत्वपूर्ण है वह पूर्ण ध्यान की स्थिति है जिसमें कोई सीमा नहीं है, कोई सरहद नहीं है, कोई सीमा नहीं है। सारी एकाग्रता सीमा पर आधारित है-लेकिन ध्यान पर नहीं। जब वह ध्यान होगा जो किसी भी तरह से प्रेरित नहीं किया गया है, तो आप देखेंगे कि यह असीमित है। लेकिन इसे न तो मन पकड़ सकता है और न ही समय का रास्ता आपको इस तक ले जा सकता है। यह सब देखना - और इसमें और भी बहुत कुछ है - मन की इस पूरी असाधारण प्रक्रिया को देखना

मन बस इतना ही कर सकता है - जैसे कि एक शानदार पहाड़ के सामने, जैसे कि किसी भी चीज़ के सामने जो वास्तव में सुंदर है - पूरी तरह से चौकस रहना और मौखिक, बौद्धिक रूप से विचार में, पूरी तरह से चुप रहना। ध्यान की उस अवस्था में कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए जिसके पास समय नहीं है, वह है।

तो, महोदय, इसीलिए मैं दृढ़ता से महसूस करता हूं कि मन की गुणवत्ता में क्रांति आवश्यक है। न केवल विचारों, विचारों और विश्वासों का परिवर्तन, बल्कि मन की गुणवत्ता में भी क्रांति। मन के इस गुण को सीखा नहीं जा सकता, विकसित नहीं किया जा सकता, इसे केवल तत्काल देखा जा सकता है और तत्काल भुलाया जा सकता है, इसे संचित नहीं किया जा सकता। लेकिन एक बार मन अपने अंदर इस गुण, इस क्रांति को देख ले तो वह इसे कभी नहीं खोएगा। इसीलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि केवल सम्मानजनक न बनें, क्षुद्र न बनें, बल्कि इस सारी गतिविधि को बंद कर दें, सम्मानजनकता के इस भयानक भार से अलग हो जाएं - जिसका मतलब बदनाम होना नहीं है। हर चीज़ को तुरंत तोड़ देना, ताकि मन हर समय निरंतरता की स्थिति में रहे - यही पूर्ण ध्यान है।

5 नवंबर, 1958

मद्रास में छठी वार्ता

मुझे लगता है कि शब्द, प्रतीक और नाम की पूरी समस्या पर गौर करना सार्थक और दिलचस्प होगा। शब्द हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रतीक, नाम का हमारे लिए असाधारण महत्व है, और शायद अगर हम मन की संपूर्ण सामग्री को समझकर इस महत्व को तोड़ सकें, जो शब्दों, प्रतीकों और नामों से भरा हुआ है, तो शायद हम इसे समझने में सक्षम हो सकते हैं। सोचने की पूरी प्रक्रिया. क्योंकि मुझे लगता है कि अगर हम तर्कसंगत, समझदारी से, गहरी अंतर्दृष्टि के साथ-साथ तर्क के साथ सोचना नहीं जानते हैं, तो हमारी सोच हमें बहुत दूर तक नहीं ले जाएगी; और इसके अलावा, तर्क से परे जाने के लिए, हमें पहले तर्क की पूरी प्रक्रिया को जानना होगा। कोई इसे छोड़ कर यह नहीं कह सकता कि यह महत्वपूर्ण नहीं है। व्यक्ति को तर्क का मूल जानना चाहिए। व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि वह कौन सी कंडीशनिंग है जिससे सभी तर्क उत्पन्न होते हैं। मैं मौखिक तर्क के बारे में बात नहीं कर रहा हूं बल्कि वास्तविक अनुभव, वास्तविक जीवन पर आधारित तर्क के बारे में बात कर रहा हूं। यदि हम वहां से आगे बढ़ सकते हैं, तो मुझे लगता है कि हम 'मैं' क्या है, और विचार के पूरे क्षेत्र की पूरी समस्या की जांच में बहुत गहराई से जा सकते हैं।

लेकिन बहुत गहराई में जाने के लिए, मुझे लगता है कि हमें शब्द से शुरुआत करनी चाहिए और देखना चाहिए कि एक शब्द कितना असाधारण रूप से प्रभावी है, और हम शब्द और शब्द को कैसे भ्रमित करते हैं

हमारी भावनाओं का अर्थ और महत्व। मुझे लगता है कि यह अच्छा होगा यदि हम में से प्रत्येक यह समझ सके कि हमारे सोचने के तरीके, हमारे कार्य करने के तरीके, हमारे जीवन जीने के तरीके में न्यूरोलॉजिकल के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी शब्दों का कितना असाधारण महत्व है। मुझे ऐसा लगता है कि जब तक हम शब्दों की बाधा को नहीं तोड़ सकते और शब्दों से विचार को मुक्त नहीं कर सकते, तब तक हम यह पता नहीं लगा पाएंगे कि अनुभवकर्ता कौन है और क्या मन को सभी अनुभवों से मुक्त करना संभव है। यह अजीब और पागलपन भरा लगता है, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, देखेंगे कि इसका क्या मतलब है।

मुझे नहीं पता कि आप अपने जीवन में शब्दों की भूमिका के बारे में जानते हैं या नहीं। सबसे पहले तो हम यह जान लें कि शब्द कोई वस्तु नहीं है। वृक्ष शब्द वृक्ष नहीं है; यह स्पष्ट है. और समय शब्द संपूर्ण क्षेत्र नहीं है जिसमें कल, आज और कल की तरह समय मौजूद है; दूरी के रूप में समय, प्रगति के रूप में समय - शब्द ही सब कुछ नहीं है। इसलिए हमें शब्द को वस्तु से अलग करने में सक्षम होना चाहिए, और शब्द को उस भावना से अलग करने में सक्षम होना चाहिए जो शब्द उत्पन्न करता है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी स्वयं इसे एक प्रयोग के रूप में आजमाया है - किसी भावना को शब्द से अलग करने के लिए। प्रेम शब्द और वास्तविक भावना को ही लीजिए। क्या शब्द भाव जगाता है; या पहले भावना आती है और फिर शब्द, प्रतीक? जब तक कोई व्यक्ति स्वयं इसके साथ बहुत सावधानी से प्रयोग नहीं करता, उसकी सोच बहुत सीमित होगी; अन्यथा कोई केवल मौखिक स्तर पर ही कार्य करता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि यह देखना बहुत ज़रूरी है कि शब्द, नाम, प्रतीक कैसे विचार को आकार देते हैं क्योंकि सभी शब्द, प्रतीक, नाम हमारी सोच को आकार देते हैं। भारत शब्द - यदि आप एक भारतीय हैं और इसके बारे में बहुत भावुक हैं, यदि आप राष्ट्रवादी हैं और यह सब बकवास है - तो तुरंत एक भावनात्मक उछाल आता है; उस शब्द से एक अपरिभाषित, भावुक, असंबंधित भावना जागृत होती है। यह आपके अंदर भारत की तस्वीर, मानचित्र, देश, समुद्र, गंदगी, गंदगी, पहाड़ों की सुंदरता, समृद्ध सूर्यास्त, और लोगों का विभाजन, उनकी संवेदनहीनता, अंधविश्वास, परंपराओं को जागृत करता है- पूरी बात।

जाहिर है यह शब्द एक असाधारण अनुभूति जगाता है। शब्द भावना नहीं है, लेकिन आप शब्द को महत्व देते हैं और वह आप पर हावी हो जाता है। क्राइस्ट शब्द , बुद्ध शब्द - इसका न्यूरोलॉजिकल और जैविक रूप से कितना तुरंत महत्व है। तो, ध्यान शब्द भी । कैसे, इसे सुनते ही मन तुरंत एक मुद्रा धारण कर लेता है, मन एक निश्चित रुख अपना लेता है; वह शब्द बचपन की कुछ यादें, जो आपने पढ़ा है, परंपरा से ताजा कर देता है, और आपके मन में तुरंत यह विचार आता है कि आपको क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए। तो प्रत्येक शब्द मन को जगाता है और आकार देता है; विचार मन को आकार देते हैं।

आख़िरकार, प्रचार की पूरी प्रक्रिया यही है। जब तक मन शब्द को भावना से अलग करने और शब्द से मुक्त भावना की जांच करने में सक्षम नहीं होता, तब तक आप हमेशा शब्दों के गुलाम बने रहेंगे; इसलिए, आप अत्याचार के, दुष्प्रचार के, सभी धार्मिक गिरोहों के भी गुलाम होंगे। गुरु शब्द को ही लीजिए —आपके लिए इसका कितना असाधारण महत्व है; आप तुरंत श्रद्धेय बन जाते हैं। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं, लेकिन ब्राह्मण-विरोधी के लिए ब्राह्मण शब्द भयानक है, और रूसी शब्द तुरंत एक राजनीतिक विश्वास का संकेत देता है। मैं केवल मन की शब्द के प्रति असाधारण दासता की ओर संकेत कर रहा हूं।

फिर प्रश्न यह है कि क्या मन स्वयं को शब्द से मुक्त कर सकता है? और, क्या शब्द, प्रतीक के बिना कोई सोच है? आख़िरकार, जब तक आप शब्द को भावना से अलग नहीं कर पाते, आप नहीं जानते कि आप क्या हैं। आत्मा शब्द को लीजिए - यह सभी धार्मिक, पाखंडी लोगों का पसंदीदा शब्द है। उस शब्द का प्रयोग करके वे सोचते हैं कि उन्होंने सब कुछ हल कर लिया है। लेकिन यह पता लगाने के लिए कि क्या यह तथ्य है, क्या इसकी कोई वास्तविकता है, सबसे पहले व्यक्ति को उस शब्द को दिए जाने वाले सभी भावनात्मक महत्व से मुक्त होना चाहिए। तब आप इसकी जांच कर सकते हैं; तब आप बहुत तेजी से सोच सकते हैं, और ऐसी सोच का महत्व है।

इसलिए यदि मन शब्द को भावना से अलग कर सकता है, तो मन जांच कर सकता है कि यह वास्तव में क्या है। क्या मन केवल शब्दों की एक श्रृंखला है जिसे हमने संचित किया है - उनके सभी अर्थों के साथ, चेतन और अचेतन - या मन शब्द से अलग है? क्या शब्द के बिना कोई मन है? क्या प्रतीक के बिना कोई विचार है? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इन पंक्तियों के बारे में सोचा है या नहीं, लेकिन मैं आपसे इस बारे में गहराई से पूछताछ करना चाहूंगा कि क्या मन शब्द से मुक्त हो सकता है और, जब यह शब्द से मुक्त होता है, तो क्या स्थिति होती है मन की? और, क्या पर्यवेक्षक जो मन की जांच करता है वह केवल शब्दों की एक और श्रृंखला है? और जब विचार शब्द से मुक्त हो जाता है, तो क्या वहां सोच होती है? मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं, लेकिन जब तक कोई इसमें बहुत गंभीरता से नहीं जाता - आंतरिक रूप से, गहराई से - आत्म-ज्ञान का बहुत कम अर्थ होगा।

तो, स्वयं क्या है? - जो हमने पहले देखा है उसे ध्यान में रखते हुए, शब्द को विचार, भावना से अलग किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि इसमें जाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर मैं नहीं जानता कि मैं वास्तव में क्या हूं, अगर मैं अपने विचारों के स्रोत को नहीं जानता, तो मैं इस तरह या उस तरह से कार्य क्यों करता हूं, मेरे पास विश्वास, आदर्श, महत्वाकांक्षाएं क्यों हैं, क्यों मैं निरंतर संघर्ष करता रहता हूं, अगर मैं इन सबके स्रोत और कारण को नहीं जानता, तो जाहिर तौर पर मैं जो कुछ भी सोचता हूं, जो कुछ भी करता हूं वह केवल परिधि पर एक जोड़ या घटाव है। यदि मन की गुणवत्ता में ही एक ज़बरदस्त क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है - गुणवत्ता,

परतों, विचारों, गतिविधियों को नहीं, बल्कि स्वयं मन की गुणवत्ता को - यदि परिधि पर नहीं, बल्कि केंद्र पर क्रांति लानी है, तो मुझे यह सब समझना होगा, मुझे स्वयं को समझना होगा।

जाहिर तौर पर हमें बदलना होगा, लेकिन पर्यावरणीय प्रभावों के माध्यम से नहीं, नारों के माध्यम से नहीं, प्रचार के माध्यम से नहीं, या दिमाग को बाहर से नियंत्रित करने वाले यंत्रवत उपकरणों के माध्यम से नहीं। क्योंकि अगर मन को अपने भीतर एक नया गुण लाना है, तो मन को यह सब समझना होगा, न केवल चेतन, रोजमर्रा की स्थिति के बारे में जागरूक होना होगा, बल्कि अचेतन के बारे में भी जागरूक होना होगा, जहां शायद शब्दों का महत्व चेतन मन की तुलना में कहीं अधिक है। . क्योंकि अचेतन में सभी परंपराएँ, नस्लीय विरासत, विचार के वर्ष, निष्कर्ष, आशाएँ और भय संग्रहीत हैं। मन नामक इस असाधारण चीज़ को समझने के लिए - जो असीम रूप से सक्षम है और फिर भी इतनी क्षुद्र, संकीर्ण, घातक है - मन को स्वयं के बारे में, अपनी स्वयं की कंडीशनिंग के बारे में जागरूक होना चाहिए।

तो, मन क्या है? आइए हम शुरुआत करें, मन से नहीं, बल्कि स्वयं से जिसके बारे में हम कहते हैं कि हमें जानना चाहिए। आत्मज्ञान तो होना ही चाहिए ना?
स्वयं की संपूर्ण समझ होनी चाहिए, न कि केवल किसी तात्कालिक सतही प्रतिक्रिया की परिधीय समझ। मैं कहता हूं कि ऐसी समझ अवश्य होनी चाहिए, और यदि हम सोचने की पूरी प्रक्रिया और मौखिक प्रतिक्रिया की बहुत सावधानी से जांच करें, यदि हम इसमें बहुत गहराई तक जा सकें, तो हम देखेंगे कि मन की गुणवत्ता में एक क्रांति तत्काल होती है- समय छीन लेने के अर्थ में तत्काल। मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे हैं और जब हम दोबारा शुरू करेंगे तो मुझे उद्धृत करने के लिए केवल कुछ वाक्यांश ही नहीं सीख रहे होंगे। क्योंकि यदि आप जो कहा जा रहा है उस पर गंभीरता से विचार कर सकें, न केवल इसे सुनें, बल्कि इसे अपने बारे में मेरे विवरण के माध्यम से जागरूक होने के अर्थ में लागू करें कि आपका अपना दिमाग कैसे काम कर रहा है - तो मुझे लगता है कि हम बहुत दूर तक जाने में सक्षम होंगे .

तो फिर यह कौन सा आत्म है जिसका इतना असाधारण महत्व है? यह मत कहो कि यह महत्वपूर्ण नहीं है, कि एकमात्र महत्वपूर्ण चीज़ उच्च स्व है, और यह सब बकवास है। क्योंकि यदि इसका कोई महत्व नहीं होता, तो हम नौकरियों के लिए नहीं लड़ रहे होते, हम एक-दूसरे को नहीं मार रहे होते, हम पृथक पीड़ा और अकेलेपन के इस पूरे क्षेत्र में महत्वाकांक्षी, निराश, दुखी नहीं होते। तो, महोदय, 'मैं', 'आप' क्या है? इसकी चिंता मत करो कि इसकी शुरुआत कैसे हुई और यह कहां पहुंचेगी, बल्कि वास्तव में, अब तुम क्या हो? कुछ संपत्ति, एक घर, एक बैंक खाता, यदि आपके पास कोई है, एक नाम, एक रूप, कुछ प्रवृत्तियाँ, एक निश्चित स्वभाव, आपके डर, आशाएँ, महत्वाकांक्षाएँ, उपलब्धियाँ, कुछ तकनीकी ज्ञान, इसमें रहने की जानकारी

संसार—तुम ही वह सब हो, है न? लेकिन आप इसमें यह जोड़ना चाहते हैं कि आप भी कुछ हैं जिसे आप आत्मा या उच्च स्व, शाश्वत, आध्यात्मिक इकाई कहते हैं। लेकिन वह फिर विचार के क्षेत्र में है, है न? चूँकि आप इसके बारे में सोच सकते हैं, यह विचार से संबंधित है और इसलिए अभी भी समय के क्षेत्र के भीतर है। मुझे आशा है कि आप इसे समझेंगे। कोई ऐसी चीज़ के बारे में नहीं सोच सकता जिसे वह नहीं जानता - अथाह, कालातीत - क्या कोई सोच सकता है? इसका कोई माप नहीं है; यह विचार के क्षेत्र से बाहर है. कोई इसके बारे में अटकलें लगा सकता है, कई सिद्धांत गढ़ सकता है, लेकिन सिद्धांत वास्तविकता नहीं हैं।

तो मैं जिस बारे में सोच सकता हूं वह समय से संबंधित है; यह समय से बाहर नहीं है. निश्चित रूप से यह बिल्कुल स्पष्ट है, है ना? एक हिंदू होने के नाते आप ईश्वर के बारे में सोच सकते हैं क्योंकि आपको कुछ बातें बताई गई हैं। कम्युनिस्ट ईश्वर के बारे में नहीं सोचता क्योंकि उसका प्रतीक राज्य है, जो उसका ईश्वर है। तो आपका ईश्वर आपकी अपनी सोच का उत्पाद है और इसलिए वास्तविक नहीं है। यदि आपको वास्तव में ऐसा लगता है, यह सच है, तो आपके ईश्वर का कोई मतलब नहीं है। तब आप यह पता लगाना शुरू कर सकते हैं कि ईश्वर है या नहीं। वह मजेदार है; उस जांच में जीवन शक्ति है, गहराई है, परिपूर्णता है, शक्ति है, लेकिन केवल यह दोहराना कि ईश्वर है और मंदिर चले जाओ, या जो कुछ भी करो, उसका कोई अर्थ नहीं है; यह घातक, अवास्तविक, विनाशकारी अस्तित्व है। जैसा कि आप जानते हैं, इस गरीब, अभागे देश में यही हो रहा है; हम सुंदरता के लिए मर रहे हैं, बौद्धिक रूप से, कलात्मक रूप से, नैतिक रूप से, हर तरह से मर रहे हैं क्योंकि हम मौखिक स्तर पर जी रहे हैं जिसका कोई मतलब नहीं है।

तो आत्मा अपनी सभी स्मृतियों के साथ 'मैं' है। सतही, चेतन स्तर पर यादें हैं जहां हम तकनीक, आधुनिक विज्ञान इत्यादि जोड़ते हैं, और उसके नीचे सभी कारणों, यौन आग्रहों, विकृतियों, भय, नस्लीय और पारिवारिक विरासत, देवताओं के साथ अचेतन है। मान्यताएँ, आदर्श, सदियों की संस्कृति - यह सब 'मैं' है।

अब क्या वह 'मैं' मात्र एक शब्द है? क्या आप समझते हैं कि मैं क्या पूछ रहा हूँ, मेरे प्रश्न का अर्थ क्या है? मान लीजिए कि आप स्वयं को हिंदू, ब्राह्मण, ईसाई, बौद्ध, या जो कुछ भी कहते हैं; क्या आप जो हैं वह आपकी चेतना से विच्छिन्न एक शब्द मात्र है? अथवा क्या यह शब्द आपकी चेतना का द्योतक है? या फिर हिंदू, ब्राह्मण, बौद्ध, ईसाई शब्द का कोई मतलब ही नहीं है? क्या आप स्वयं को केवल चेतना के रूप में ही नहीं जानते हैं? क्या आप मेरी बात का पालन करते हैं? मैं और उदाहरण नहीं लेना चाहता अन्यथा हम खो जायेंगे; हमें सामान्यतः, अमूर्त रूप से सोचने में सक्षम होना चाहिए, तभी हम विशेष पर आ सकते हैं। यदि आप संपूर्ण कथन के महत्व को समझ सकते हैं, तो आप स्वयं विवरण तैयार कर सकते हैं। आख़िरकार, महोदय, हम न केवल वर्तमान के संपर्क में आने वाले पूर्ण, समृद्ध अतीत हैं - जिसमें पश्चिमी संस्कृति भी शामिल है

स्वयं को पूरब पर थोप रहा है—हम कार्रवाई पैदा कर रहे हैं। लेकिन क्या ये सब महज शब्दों की शृंखला है?

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. आपकी जांच का साधन क्या है? जाहिर है, यह विचार है, है ना? जब आप कहते हैं, "मैं देखूंगा, मैं जांच करूंगा," आपका क्या मतलब है? क्या आप मौखिक रूप से देखते हैं, हर समय शब्दों का उपयोग करते हैं, या क्या आप अपने आप से कहते हैं, "मुझे शब्दों के खतरे का पता है, लेकिन मैं बस देखूंगा।" क्या आप बिना शब्दों के देख सकते हैं? संभवत: यह बहुत सारगर्भित लगता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यदि आप जो मैं कह रहा हूं उसका पालन कर रहे हैं तो ऐसा है। हम कहते हैं कि हम 'मैं' की जांच करना चाहते हैं, आत्म-ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन जाहिर तौर पर यह पता लगाना आवश्यक है कि वह उपकरण क्या है जिसके साथ हम जांच करते हैं, जांच करते हैं। क्या आप शब्दों या प्रतीकों की श्रृंखला के माध्यम से स्वयं की जांच कर रहे हैं? वास्तव में आप यही कर रहे हैं। आपके पास स्वयं का एक विचार है, एक चित्र है, स्वयं का एक प्रतीक है, और शब्दों की एक और श्रृंखला के साथ आप जांच कर रहे हैं। लेकिन क्या मन स्वयं को बिना किसी प्रतीक, बिना किसी शब्द के नहीं देख सकता? क्या मैं मन को शब्द से, सोच से मुक्त कर सकता हूँ? सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है, शब्दों की शृंखला है, है न? स्मृति में एक प्रकार का संघों का बैंक होता है, और उसी से मैं प्रतिक्रिया देता हूं। एक बहुत ही साधारण सी बात लीजिए. मैं आपसे कुछ पूछता हूं जिससे आप बहुत परिचित हैं, जैसे कि आप कहां रहते हैं, या आपका नाम क्या है। आपकी प्रतिक्रिया तत्काल होती है क्योंकि आप प्रश्न और उत्तर से बहुत परिचित हैं—यह स्वचालित है। मन को विचार की गति चालू करने की आवश्यकता नहीं है; प्रतिक्रिया तत्काल है. लेकिन अगर मैं आपसे थोड़ा अधिक जटिल प्रश्न पूछूं, तो आपके उत्तर देने से पहले एक अंतराल हो जाता है।

उस अंतराल में सोचने, जांचने की प्रक्रिया होती है, जिसका उत्तर ढूंढने में स्मृति को समय लगता है। तो चुनौती और प्रतिक्रिया के बीच का अंतराल समय है, और उस समय में विचार हो रहा है। प्रश्न और उत्तर के बीच जितना अधिक अंतराल होगा, विचार प्रक्रिया उतनी ही अधिक काम करेगी। यह सरल है; आप स्वयं प्रयोग कर सकते हैं और इसे घटित होते हुए देख सकते हैं। चाहे प्रतिक्रिया स्वचालित हो या विलंबित, यह हमेशा स्मृति से, शब्दों के भंडार से प्रतिक्रिया होती है।

अब कृपया सुनते समय स्वयं ध्यान दें। क्योंकि मैं अब आपसे एक सवाल पूछ रहा हूं. जब आप सोचते हैं, क्या हो रहा है? क्या आप शब्दों में, प्रतीकों में सोच रहे हैं? और क्या शब्दों के बिना, प्रतीकों के बिना सोचने जैसी कोई चीज़ है? क्या ऐसा कोई राज्य है? आप देख रहे हैं कि मैं इसमें और अधिक गहराई तक जाना चाहता हूं, लेकिन यदि आप मेरा अनुसरण नहीं कर रहे हैं, मेरे साथ नहीं चल रहे हैं तो मैं ऐसा नहीं कर सकता।

मैं अपने आप से कहता हूं, "क्या मैं केवल शब्दों का संग्रह हूं?" क्योंकि यदि मैं अपना नाम, सम्पत्ति, और कुछ वस्तुएं जो मेरे पास हैं, छीन लूं, तो मैं क्या हूं? क्या आप कभी इसमें गये हैं? अगर तुम कभी अपने भीतर गए हो, अपने को उघाड़ लिया हो

आपकी विशेषताएँ, आपका ज्ञान, आपकी महत्वाकांक्षाएँ, किसी के पास मौजूद सैकड़ों चीज़ें, फिर आप क्या हैं? आपने निश्चित रूप से, क्षणों में, पूर्ण अलगाव, अकेलेपन की भावना का अनुभव किया होगा। अब क्या वह अवस्था केवल मौखिक है, क्या वह तीव्र अकेलापन केवल मौखिक है? या यह वास्तविक है? कृपया ध्यान से सुनें. यदि यह वास्तविक है, तो क्या बिना कुछ बोले इसे देखना, इसकी जांच करना संभव है? सम्भव है ना? तो फिर, यदि आपने शब्द हटा दिया है, तो क्या केवल जांच ही वह स्थिति नहीं है? जाहिर है, यदि आप शब्द हटा दें, तो अन्वेषक उस पीड़ा, उस पूर्ण आत्म-अलगाव से अलग कोई नहीं है। इसलिए जब शब्द का उपयोग नहीं किया जाता है तो कोई पर्यवेक्षक नहीं होता है। मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। आइए हम कुछ और करीब ले जाएं, करीब। मुझे गुस्सा।

जब मैं क्रोधित होता हूं तो मेरे रक्त में उस तीव्र अधिवृक्क प्रवाह के क्षण में, क्रोधित होने वाले एक अलग 'मैं' की कोई जागरूकता या चेतना नहीं होती है।
सिर्फ क्रोध की स्थिति है. एक सेकंड बाद उस स्थिति के साथ आत्म-पहचान होती है, और फिर मैं कहता हूं, "मैं क्रोधित हूं।" अब यदि आप स्वयं को उस स्थिति से नहीं जोड़ते हैं, यदि आप मन को क्रोध शब्द से मुक्त करते हैं , तो क्या होगा? क्या यह जारी है? महोदय, मुझे आशा है कि आप इसका पालन कर रहे हैं, भले ही थोड़ा सा ही सही। मैं बौद्धिक जिम्नास्टिक नहीं खेल रहा हूं, लेकिन अगर कोई ऐसा कर सकता है, तो इसका मतलब है दिमाग की गुणवत्ता में एक असाधारण, आमूल-चूल परिवर्तन।

क्रोध शब्द का बड़ा सामाजिक एवं नैतिक महत्व है। यह शब्द ही निंदात्मक है। और वह शब्द आप स्वचालित रूप से एक भावना को देते हैं, और इसलिए आप कभी भी भावना की जांच नहीं करते हैं। आप इसकी जांच करने में असमर्थ हैं क्योंकि आप पहले ही इसे मौखिक महत्व दे चुके हैं। तो, क्या आप मन को शब्द से मुक्त कर सकते हैं और भावना को देख सकते हैं? क्या वह क्रोध है जो तब होता है जब आप शब्द छीन लेते हैं?

तो हम देखना शुरू करते हैं कि इस शब्द का कितना असाधारण महत्व है। यदि आपने कभी अकेलेपन का अनुभव किया है, तो आप उस आतंक, पीड़ा, निराशा, उस असमंजसीय स्थिति को जानेंगे जिसमें मन स्वयं को पाता है। लेकिन अगर मन खुद को शब्द से मुक्त कर सकता है, तो आप उसे बिना शब्द किए देख सकते हैं। तब आपकी तलाश एक पूरी तरह से अलग स्थिति को अस्तित्व में लाती है।

यह सब देखते हुए, अनुभवकर्ता, पर्यवेक्षक, विचारक कौन है, जिसके लिए अनुभव, ज्ञान इतना महत्वपूर्ण है? उस अनुभव शब्द का क्या अर्थ है? क्या यह फिर से केवल एक शब्द है, या अनुभव की एक वास्तविक स्थिति है जिसमें कोई अलग अनुभवकर्ता नहीं है? मुझे डर है कि मैं एक साथ बहुत सारी चीज़ें एक ही टोकरी में रख रहा हूँ, लेकिन जब तक आप इन सबका बहुत गहराई से अध्ययन नहीं करेंगे, आप पाएंगे कि अनुभव करने वाला हमेशा खुद को अनुभव से अलग कर लेता है, और इसलिए दो झूठी चीज़ों के बीच संघर्ष हमेशा बना रहेगा अस्तित्व में है, जो मन और मुख्य के लिए सबसे विनाशकारी चीज है

हमारी ख़राबी का कारण. मैं तेजी से आगे बढ़ रहा हूं और मुझे आशा है कि आप गति बनाए रखेंगे।

क्या अनुभवकर्ता के बिना अनुभव होता है? स्पष्टः नहीं। जब तक मुझे यह पता नहीं चलता कि मैं अनुभव कर रहा हूं, कोई अनुभवकर्ता नहीं है। जब मैं अपने आप को अनुभव से अलग कर लेता हूं और जागरूक हो जाता हूं कि मैं अनुभव कर रहा हूं, तब मैं कहता हूं कि मुझे यह अनुभव पसंद है और मुझे वह पसंद नहीं है; यह आनंददायक है, वह आनंददायक नहीं है। तब मैं एक को खोजता हूं और दूसरे से बचता हूं। इसलिए मेरा मन खुद को विभाजित कर चुका है, विरोधाभास की स्थिति में है, आनंद और आनंद न होने के द्वंद्व में फंस गया है, और मैं अपना जीवन तब तक इसी तरह व्यतीत करता हूं जब तक मैं मर नहीं जाता। इसलिए मैं यह पता लगाना चाहता हूं कि क्या अनुभवकर्ता के बिना अनुभव होता है। यह पागलपन लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। क्योंकि मैं देखता हूं कि जब तक मैं सचेत हूं कि मैं अनुभव कर रहा हूं, मैं इसे सुखद या दुखद के रूप में विभाजित करता हूं और एक का पीछा करता हूं और दूसरे से बचता हूं, जिससे अंतहीन संघर्ष पैदा होता है। मैं यह भी देखता हूं कि किसी भी प्रकार का संघर्ष, बाहरी या भीतरी, उस मन के लिए घातक है जो सतर्क, स्वस्थ, जोरदार, महत्वपूर्ण रहना चाहता है। तो प्रश्न यह है कि क्या अनुभवकर्ता के बिना अनुभव हो सकता है? जो एक ही प्रश्न है: क्या शब्द के बिना चिंतन हो सकता है? कृपया उत्तर न दें; यह सहमत या असहमत होने का प्रश्न नहीं है; आपको इसमें जाना होगा.

जब मैं उस प्रश्न पर बहुत गहराई से जाता हूं, तो देखता हूं कि अनुभवकर्ता के बिना भी अनुभव की एक स्थिति हो सकती है और जिसमें कोई अनुभव ही नहीं होता। यह असंवेदनशीलता, मृत्यु, एक ऐसे मन की अवस्था नहीं है जिसे संवेदनाशून्य कर दिया गया है, बल्कि यह एक ऐसे मन की अवस्था है जो पूरी तरह से जाग्रत है, अपने बारे में पूरी तरह से जागरूक है क्योंकि उसने खुद की संपूर्ण सामग्री और उन सभी प्रक्रियाओं को पूरी तरह से समझ लिया है जो मैं करता हूं। वर्णन किया है. जब ऐसा मन स्वयं को पूरी तरह से समझ रहा होता है और स्वयं की सभी जटिलताओं को जानता है, तो आप पाएंगे कि एक ऐसी स्थिति है जिसका कोई अनुभव ही नहीं हो रहा है। जब तक किसी अनुभव के बारे में जागरूकता है, तब तक प्रेक्षक और प्रेक्षित के बीच विभाजन होना चाहिए, और इसलिए संघर्ष होना चाहिए। तो आपको यह पता लगाना होगा कि क्या शब्दों के बिना सोचने जैसी कोई चीज़ है, क्या अनुभवकर्ता के बिना कोई अनुभव है, और क्या कोई मन है जो अनुभव के बिना, अनुभव को जाने बिना पूरी तरह से जागृत है।

अब जब मन अनुभव नहीं कर रहा है लेकिन पूरी तरह से जागृत है, तो ऐसा मन ही वह खोज सकता है जो परे है। लेकिन, आप देखिए, ये शब्द हैं। अब जो हो रहा है वो बहुत दिलचस्प है. मैं आपसे कुछ संवाद करना चाहता हूं, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं, लेकिन मैं आपको केवल वही बता सकता हूं जिसके बारे में आप जानते हैं। मैं तुम्हें ऐसी कोई बात नहीं बता सकता जो तुम नहीं जानते। मैं चाहता हूं, लेकिन आप केवल अनुभव करने वाले को ही जानते हैं, जो पूरे संघर्ष के साथ अनुभव कर रहा है। आप

केवल अनुभव की स्थिति को नहीं जानते, बिना अनुभवकर्ता द्वारा अपनी स्मृति के अनुसार अनुभव का अनुवाद किए बिना। और आप निश्चित रूप से नहीं जानते - हालाँकि आप में से कुछ लोग जानते होंगे - वह अवस्था जहाँ कोई अनुभवकर्ता ही नहीं है। मैं आपको इसके बारे में बताना चाहता हूं, लेकिन कठिनाई देखिए! इसका वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं; इसे ढकने के लिए कोई प्रतीक नहीं। इसके लिए आपकी पवित्र पुस्तकों का कोई अर्थ नहीं है; वे तो मुर्दे हैं।

तो मैं कहता हूं कि अपने अंदर इस सब से गहराई से गुजरना, वही मन में एक नई गुणवत्ता लाता है, वही सच्ची क्रांति है। फिर रचनात्मक मन है; वह सृजन है. तो आप देख सकते हैं कि आत्म-ज्ञान होना कितना महत्वपूर्ण है, मामूली बात नहीं, बल्कि वास्तविक आत्म-ज्ञान, मौखिक दृष्टिकोण नहीं, बल्कि आपके अस्तित्व की संपूर्ण स्थिति की वास्तविक समझ। यदि आप इसमें जाते हैं, तो आप इस बिंदु पर आने के लिए बाध्य हैं जहां आप शब्द के बिना सोचने में सक्षम हैं, जहां अनुभवकर्ता के बिना अनुभव होता है, जहां केवल एक स्थिति होती है जहां कोई अनुभव नहीं होता है। जो चीज़ पूरी तरह से जीवंत है, जो प्रकाश है, वह अनुभव कैसे कर सकती है? इसे जानने के लिए, सोच की पूरी समस्या पर गौर करना होगा, और तब आप इसकी असाधारण सुंदरता, गहराई, समृद्धि देखेंगे जो वास्तव में वहां मौजूद है। ऐसे मन को देवताओं, अनुष्ठानों, समारोहों, किसी देश या पुस्तकों की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे मन के लिए शुरू से अंत तक पूरी चीज़ ध्यान का एक तरीका है, जीवन जीने का एक तरीका है।

9 नवंबर, 1958

मद्रास में सातवीं वार्ता

मुझे लगता है कि लगभग सभी गंभीर लोगों ने मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता के बारे में बहुत सोचा होगा। हम देखते हैं, जैसे दुनिया में चीजें हैं, मानव मन में कोई बुनियादी परिवर्तन या परिवर्तन नहीं होता है। बेशक, दबाव, आर्थिक और सामाजिक, धार्मिक भय के विभिन्न रूपों के माध्यम से, नए आविष्कारों आदि के माध्यम से, परिवर्तन होता है, लेकिन यह परिवर्तन हमेशा परिधीय, बाहरी होता है, और जाहिर तौर पर ऐसा परिवर्तन कोई गहरा प्रभाव नहीं लाता है। , मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन। आपने देखा होगा कि समाज हमेशा एक पैटर्न, कुछ सूत्रों का पालन करता है, उसी तरह जैसे प्रत्येक व्यक्ति कुछ अवधारणाओं, आदर्शों का पालन करता है, हमेशा पैटर्न के भीतर चलता रहता है। आपने इसे न केवल अपने आप में और समाज में बल्कि हमारे सभी रिश्तों में देखा होगा, और आपने सोचा होगा कि एक गहरा, स्थायी, एकीकृत परिवर्तन कैसे लाया जाए, ताकि

बाहरी और भीतरी के बीच की बातचीत भ्रष्टाचार नहीं लाती। "आंतरिक" से मेरा तात्पर्य किसी रहस्यमयी चीज़ से नहीं है। यह मन का आंतरिक गुण है जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं, न कि आंतरिक चीजें जिनके बारे में मन कल्पना करता है और अनुमान लगाता है। संपूर्ण समाज, संपूर्ण मानव अस्तित्व बाहरी और आंतरिक के बीच इस अंतर्संबंध का विषय है जो लगातार उतार-चढ़ाव वाला और हमेशा संशोधित होता रहता है। और यदि संभव हो तो मैं आमूल-चूल परिवर्तन की संभावना के बारे में बात करना चाहूंगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। आख़िरकार, हम सामाजिक संस्थाएँ हैं और हमें कर्म से जीना चाहिए। जीवन क्रिया है. कोई सिर्फ बैठ कर अटकलें नहीं लगा सकता; न ही कोई केवल भ्रष्टाचार को जारी रख सकता है क्योंकि, जैसा कि हम जानते हैं, यह केवल हमारे भीतर विरोधाभास और चिरस्थायी यातना और संघर्ष को जन्म देता है।

तो मन कैसे बदले? न केवल मन के ऊपरी स्तरों पर, बल्कि गहरे स्तरों पर भी, और एक निर्धारित पैटर्न के अनुसार नहीं, समग्र चेतना में आमूल-चूल परिवर्तन कैसे हो सकता है? किसी पैटर्न का अनुसरण करना बिल्कुल भी बदलाव नहीं है; यह जो कुछ रहा है उसकी एक संशोधित निरंतरता मात्र है। कोई वास्तव में अपनी चेतना की गुणवत्ता, सार को पूरी तरह से कैसे बदल सकता है? मुझे नहीं पता कि क्या आपने इसके बारे में सोचा है, या क्या आप केवल बाहरी परिवर्तनों से चिंतित हैं जो हर प्रकार की सामाजिक और आर्थिक क्रांति, हर नए आविष्कार द्वारा लाए जाते हैं? यदि हम चेतना के, मन की गुणवत्ता के संपूर्ण परिवर्तन के बारे में चिंतित हैं, तो मुझे लगता है कि हमें नकारात्मक सोचना चाहिए क्योंकि नकारात्मक सोच सोच का उच्चतम रूप है, तथाकथित सकारात्मक सोच नहीं। सकारात्मकता केवल एक सूत्र, एक निष्कर्ष की खोज है, और ऐसी सभी सोच सीमित, वातानुकूलित है, मुझे आशा है कि आप केवल सुनने के बजाय सुन रहे हैं क्योंकि मैं कुछ कठिन में जाना चाहता हूं, अगर मैं कर सकता हूं, और मुझे आशा है कि हम करेंगे इसे एक साथ आगे बढ़ाने में सक्षम हो। लेकिन अगर आप केवल सुन रहे हैं और नहीं सुन रहे हैं, तो आप मौखिक स्तर पर फंस जाएंगे और शब्द अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाएंगे। शब्द किसी बात को संप्रेषित करने का माध्यम मात्र हैं। इसलिए मुझे आशा है कि आप केवल विचारों को समझने की इच्छा के बिना सुनेंगे। मेरे पास कोई विचार नहीं है क्योंकि मुझे लगता है कि वे सबसे बेवकूफी भरी बातें हैं; उनमें कोई सार नहीं है, कोई वास्तविकता नहीं है, वे केवल शब्द हैं। तो मुझे आशा है कि आप समस्या को देखने की कोशिश के अर्थ में सुन रहे हैं - केवल इसे देखने के लिए, इसे समझने या हल करने के लिए संघर्ष करने के लिए नहीं, बल्कि इस असाधारण जटिल समस्या को देखने के लिए जो हमारे पास है - संपूर्ण परिवर्तन लाने की समस्या चेतना में, मन में.

जैसा कि मैं कह रहा था, नकारात्मक सोच सोच का उच्चतम रूप है। हम कभी भी नकारात्मक नहीं सोचते; हम केवल सकारात्मक सोचते हैं। यानी हम ए से सोचते हैं

एक निष्कर्ष से एक निष्कर्ष, एक पैटर्न से एक पैटर्न, एक सिस्टम से एक सिस्टम - कि मुझे यह होना चाहिए; मुझे कुछ सद्गुण अर्जित करने होंगे, इस या उस मार्ग का अनुसरण करना होगा, कुछ अनुशासन करने होंगे। सकारात्मक सोच हमेशा हमारी अपनी वातानुकूलित सोच के खांचे में होती है - मुझे आशा है कि आप अपने मन, अपने विचार को देख रहे हैं - और यह तरीका केवल मन को और अधिक सीमित करने, मन की संकीर्णता, कार्रवाई की क्षुद्रता की ओर ले जाता है; यह हमेशा आत्म-केन्द्रित गतिविधि को मजबूत करता है। नकारात्मक सोच बिल्कुल अलग चीज़ है, लेकिन यह सकारात्मक सोच के विपरीत नहीं है। अगर मैं सकारात्मक सोच की सीमाओं को समझ सकता हूं, जो हमेशा आत्म-केंद्रित गतिविधि की ओर ले जाती है, अगर मैं न केवल मौखिक, बौद्धिक रूप से, बल्कि मानव सोच की पूरी प्रक्रिया को समझ सकता हूं, तो नकारात्मक सोच में एक नई जागृति होती है।

हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी चीज़ से जुड़े हुए हैं - संपत्ति से, किसी व्यक्ति से, किसी विचार से, किसी विश्वास से, किसी अनुभव से - क्या हम नहीं हैं? आप अपने परिवार, अपने अच्छे नाम, अपने पेशे, अपने गुरु, इस और उस से जुड़े हुए हैं। अब, यह लगाव हमेशा दुख और संघर्ष को जन्म देता है क्योंकि जिस चीज़ से आप जुड़े हुए हैं वह लगातार बदल रही है, जाहिर है। लेकिन आप बदलाव नहीं चाहते; आप इसे स्थायी रूप से अपने पास रखना चाहते हैं। इसलिए, यह जानते हुए कि आसक्ति दुख, दुःख, दर्द को जन्म देती है, आप वैराग्य विकसित करने का प्रयास करें।

जाहिर तौर पर लगाव और वैराग्य की खेती दोनों ही सकारात्मक सोच हैं। अनासक्ति आसक्ति का निषेध नहीं है; यह महज एक अलग मौखिक आवरण के तहत जारी लगाव है। यदि आपने कभी इस पर ध्यान दिया हो तो मानसिक प्रक्रिया बिल्कुल वैसी ही होती है। उदाहरण के लिए, मैं अपनी पत्नी से जुड़ा हुआ हूं। उसमें पीड़ा है, संघर्ष है, ईर्ष्या है, हताशा है; और उस सब से बचने के लिए, मैं कहता हूं, "मुझे अलग होना चाहिए, मुझे अवैयक्तिक तरीके से प्यार करना चाहिए" - इसका जो भी मतलब हो सकता है - "मुझे बिना किसी सीमा के प्यार करना चाहिए," और मैं वैराग्य पैदा करने की कोशिश करता हूं। लेकिन आसक्ति या विरक्ति में मेरी गतिविधि का केंद्र बिल्कुल वही है। तो, हमारी सोच जिसे हम सकारात्मक कहते हैं वह विपरीतताओं का संघर्ष है या एक संश्लेषण में भागने का प्रयास है जो फिर से एक विपरीत बनाता है। साम्यवाद को लें - यह पूंजीवाद का प्रतिवाद है, और अंततः संघर्ष के माध्यम से कम्युनिस्ट एक संश्लेषण बनाने की आशा करते हैं, लेकिन क्योंकि यह विरोधों के संघर्ष से पैदा हुआ है, वह संश्लेषण एक और प्रतिवाद पैदा करने जा रहा है। और इस प्रक्रिया को हम सकारात्मक सोच कहते हैं, न केवल बाहरी, सामाजिक रूप से, बल्कि आंतरिक रूप से भी।

अब अगर कोई इस सब की पूरी प्रक्रिया को न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि वास्तव में समझ ले, तो हम देखेंगे कि सोचने का एक नया तरीका अस्तित्व में आता है। यह एक नकारात्मक प्रक्रिया है जिसका सकारात्मक से कोई संबंध नहीं है। सोचने का सकारात्मक तरीका अपरिपक्वता की ओर ले जाता है, मन को संस्कारित कर देता है,

आकार दिया, और ठीक यही हम सभी के साथ हो रहा है। जब आप कहते हैं कि आप खुश रहना चाहते हैं, आप सत्य चाहते हैं, ईश्वर चाहते हैं, एक अलग दुनिया बनाना चाहते हैं, तो यह हमेशा सकारात्मक के संदर्भ में होता है - यानी एक ऐसी प्रणाली का पालन करना जो वांछित परिणाम देगा, और परिणाम हमेशा ज्ञात होता है , और यह फिर से कारण बन जाता है। कारण और प्रभाव दो अलग चीजें नहीं हैं. आज का प्रभाव कल का कारण बनेगा। ऐसा कोई पृथक कारण नहीं है, जो प्रभाव उत्पन्न करता हो; वे आपस में जुड़े हुए हैं। कारण और प्रभाव के नियम जैसी कोई चीज़ नहीं है, जिसका अर्थ है कि जिसे हम कर्म कहते हैं, वास्तव में ऐसी कोई चीज़ नहीं है। हमारे लिए, कर्म का अर्थ पिछले कारण के साथ एक परिणाम है, लेकिन प्रभाव और कारण के बीच के अंतराल में, समय आ गया है। उस समय में बहुत बड़ा बदलाव आया है और इसलिए प्रभाव कभी भी एक जैसा नहीं रहता। और प्रभाव एक और कारण उत्पन्न करने जा रहा है जो कभी भी केवल प्रभाव का परिणाम नहीं होगा। यह मत कहो, "मैं कर्म में विश्वास नहीं करता" यह बिल्कुल भी मुद्दा नहीं है। कर्म का अर्थ है, बहुत सरलता से, कार्य और परिणाम, इसके अतिरिक्त कारण के साथ। आम का बीज बोओ और आम का पेड़ पैदा होना तय है - लेकिन मानव मन ऐसा नहीं है। मानव मन अपने भीतर तत्काल समझ को बदलने में सक्षम है, जो हमेशा कारण से अलग होना है।

इसलिए नकारात्मक सोच पैटर्न के संदर्भ में नहीं सोच रही है क्योंकि पैटर्न एक कारण का संकेत देते हैं जो एक परिणाम उत्पन्न करेगा जिसे दिमाग हेरफेर, नियंत्रण और परिवर्तन कर सकता है। उस प्रक्रिया से हम सभी भली-भांति परिचित हैं। मैं जो बताना चाह रहा हूं वह एक नकारात्मक सोच है जिसका कोई कारण नहीं है। यह सब बहुत बेतुका लग सकता है, लेकिन हम इसमें जाएंगे और आप देखेंगे। हम इस पर अलग ढंग से विचार करेंगे।

हममें से अधिकांश लोग असंतुष्ट हैं, क्या हम नहीं हैं? हम अपनी नौकरी से, अपनी पत्नी, पति, बच्चों, पड़ोसियों, समाज या जो कुछ भी है उससे असंतुष्ट हैं। मुझे पद चाहिए, मुझे धन चाहिए, मुझे प्रेम चाहिए। ये सब हम जानते हैं. अब किसी चीज़ से असंतोष सकारात्मक है, लेकिन असंतोष अपने आप में नकारात्मक है। आपको समझाया जाएगा।

जब हम असंतुष्ट होते हैं, तो वास्तव में क्या हो रहा होता है? यदि मैं अपने काम से, स्वयं से असंतुष्ट हूं, तो क्या हो रहा है? मैं इसके माध्यम से या उसके माध्यम से संतुष्टि पाना चाहता हूं। इसलिए असंतोष को तब तक प्रसारित किया जाता है जब तक कि उसे कुछ ऐसा न मिल जाए जो संतोषजनक हो, और फिर वह ख़त्म हो जाता है। इसे ही हम सकारात्मक कार्रवाई कहते हैं - कुछ ऐसा ढूंढना जिससे हमें ख़ुशी मिले।

लेकिन वास्तविक असंतोष की लौ के बिना - किसी चीज़ से असंतोष नहीं - जीवन का कोई अर्थ नहीं है। हो सकता है कि आपके पास अद्भुत नौकरी हो, असाधारण दिमाग हो, डिग्री प्राप्त करें और चर्चा करने, उद्धरण देने में सक्षम हों, लेकिन आपका असंतोष केवल चतुराई का रूप ले चुका है, और वहां आप पूरी तरह से बांझ हैं। आप

शुरुआत असंतोष से हुई, और स्कूल में शायद आप बहुत अच्छे थे, लेकिन जैसे-जैसे आप बड़े हुए, वह असंतोष चतुराई या किसी प्रकार की तकनीक में बदल गया, और वहां आप संतुष्ट हैं क्योंकि आपको लगता है कि आपके पास क्षमता है और आप कार्य कर सकते हैं। वह फिर सकारात्मक सोच है। जबकि नकारात्मक सोच का मतलब सिर्फ असंतोष की स्थिति में होना है और ऐसा मन बहुत अशांत मन होता है। यह संतुष्ट नहीं है, और यह संतुष्टि की तलाश नहीं कर रहा है क्योंकि यह देखता है कि संतुष्टि केवल उस सकारात्मक कार्य की ओर ले जाती है जिसे हम सभी चाहते हैं। हमेशा के लिए संतुष्ट होने का रास्ता खोजने का मतलब है मृत होना। और यही तो आप चाहते हैं; आप इसे मन की शांति कहते हैं और कहते हैं, "भगवान के लिए मुझे इस ब्रह्मांड में कोई ऐसा कोना दे दीजिए जहां मैं शांति से मर सकूं।" इसलिए सकारात्मक कार्य सदैव मृत्यु की ओर ले जाता है। यदि आप ऐसा देख सकते हैं, तो आप देखेंगे कि एक नकारात्मक सोच विकसित हो रही है। इसलिए सोचने का नकारात्मक तरीका कभी भी किसी निष्कर्ष से शुरू नहीं होता क्योंकि कोई यह देखता है कि निष्कर्ष कहाँ ले जाते हैं।

तो सोचने का नकारात्मक तरीका उस गुणवत्ता का रखरखाव, पोषण है जो असंतोष है - अपने आप में असंतोष, किसी चीज से नहीं। कृपया मौखिक स्तर पर न उलझें बल्कि इसका महत्व देखें। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि सकारात्मक सोच वातानुकूलित सोच है और इसमें कोई बदलाव नहीं होता है; संशोधन तो है लेकिन आमूल-चूल परिवर्तन नहीं।

आमूल-चूल परिवर्तन केवल नकारात्मक सोच में ही होता है, जैसा कि हमने आसक्ति और असंतोष के संबंध में देखा। यह सकारात्मक सोच केवल एक सुस्त दिमाग, एक असंवेदनशील दिमाग, एक ऐसे दिमाग की ओर ले जाती है जो ग्रहण करने में सक्षम नहीं है, एक ऐसा दिमाग जो केवल अपनी सुरक्षा के बारे में सोचता है - या तो व्यक्ति की सुरक्षा या परिवार, समूह या जाति की सुरक्षा के बारे में जिसे आप विश्व राजनीति में बहुत स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

आख़िर ये धरती हमारी, आपकी और मेरी है. यह पृथ्वी जो इतनी अद्भुत, इतनी सुंदर, इतनी समृद्ध है, इस सब विखंडन के बिना, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस, भारत नामक विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित हुए बिना, हमारे लिए खुशी से रहने लायक है। फिर भी हम अलगाव बरकरार रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

कोई भी इस पूरी दुनिया को अपना नहीं समझता, कोई नहीं कहता, "आओ हम मिलकर इसके बारे में कुछ करें।" इसके बजाय, हमारे पास सोचने का यह खंडित तरीका है जिसे हम सकारात्मक कहते हैं, या हम अंतर्राष्ट्रीयता के कुछ विचार का अनुसरण करते हैं, जो समान रूप से मूर्खतापूर्ण है। अगर मैं इसे देख सकता हूं, तो मन का एक अलग दृष्टिकोण, एक अलग भावना है, चाहे वह रूसी हो या जर्मन या कोई भी मन हो। फिर देशभक्ति की बकवास जैसी कोई चीज़ नहीं है; यह धरती का प्रेम है - तुम्हारी धरती और मेरी धरती नहीं, तुम अपना छोटा सा खेत जोतते हो और मैं अपना खेत जोतता हूं, और उस पर झगड़ा करता हूं, लेकिन यह हमारी धरती है।

अब जब हम देखते हैं कि सोचने का यह सकारात्मक तरीका विनाशकारी है, तो नकारात्मक तरीका अस्तित्व में आता है। नकारात्मक सोचने के लिए संवेदनशीलता होनी चाहिए - सुंदर और बदसूरत दोनों के प्रति संवेदनशीलता। जो व्यक्ति जिसे वह सुंदर कहता है उसका पीछा कर रहा है और कुरूप से बच रहा है वह संवेदनशील नहीं है।

जो व्यक्ति सद्गुण का अनुसरण करता है, बिना यह समझे कि जो सद्गुण नहीं है, केवल उससे बचता है, वह सदैव असंवेदनशील होता है। कृपया मेरे साथ इस पर विचार करें, इसे महसूस करें और आप देखेंगे। इसलिए एक पेड़, एक पत्ते, शांत पानी पर प्रतिबिंब की सुंदरता की सराहना करना संवेदनशीलता नहीं है यदि आप गन्दगी, गंदगी, अपने खाने के तरीके, बात करने के तरीके, सोचने के तरीके, तरीके के बारे में भी जागरूक नहीं हैं। आपके व्यवहार का.

इस पेड़ के नीचे यह बहुत सुंदर है, बहुत शांत है, सुंदर छाया और रोशनी है, और इसके ठीक बाहर वह गंदा गाँव है जिसमें गंदगी और गंदगी है और वहाँ रहने वाले दुर्भाग्यपूर्ण इंसान हैं, लेकिन आप इसके बारे में नहीं जानते हैं।

इसलिए हम हमेशा सौंदर्य, सत्य और ईश्वर को चाहते हैं, और दूसरे से बचते हैं, और यह खोज सकारात्मक है और असंवेदनशीलता की ओर ले जाती है, अगर हम दूसरे के बारे में जागरूक नहीं हैं। और नृत्यों के लिए इमारतें खड़ी करने का सकारात्मक तरीका, नृत्यों के लिए विशेष स्कूल बनाना, वह सब व्यवसाय एक व्यक्तिगत रैकेट बन जाता है, जो उस मन को संतुष्ट करता है जो केवल सकारात्मक सोच रहा है। सृजन सदैव सकारात्मक नहीं होता। सृजन मन की वह अवस्था है जिसमें कोई सकारात्मक कार्य नहीं होता जैसा कि हम जानते हैं।

अतः मन में आमूल-चूल परिवर्तन तभी होता है जब यह नकारात्मक सोच हो। जैसा कि मैंने पिछले दिन कहा था, जिस सोच के बारे में हम जानते हैं वह हमेशा शब्दों या प्रतीकों में होती है। मुझे नहीं पता कि आपने ध्यान दिया है या नहीं कि शब्दों के बिना भी सोच होती है, लेकिन वह सोच अभी भी सकारात्मक शब्द का परिणाम है। आपको समझाया जाएगा। आप सदैव शब्दों में, प्रतीकों में ही सोचते हैं न?

कृपया देखें। शब्द, प्रतीक विचार के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह हमारी सारी सोच का आधार है; स्मृति के माध्यम से जुड़ाव होता है और स्मृति एक चित्र, एक शब्द है, और उससे हम फिर से प्रतीकों, शब्दों में सोचने के लिए आगे बढ़ते हैं। हम इतना ही जानते हैं, और यदि आप बहुत सतर्क, जागरूक हैं, तो आप देख सकते हैं कि शब्द के बिना, प्रतीक के बिना सोच होती है। मैं कोई उदाहरण नहीं देने जा रहा क्योंकि तब आप खो जाएंगे, इसलिए कृपया महत्व समझें, क्योंकि नकारात्मक सोच का विचार-शब्द से कोई संबंध नहीं है। जब तक आप इसे नहीं देखेंगे, आप यह नहीं देख पाएंगे कि आगे क्या होगा। मैं जोर-जोर से सोच रहा हूं; मैंने इस पर घर पर काम नहीं किया है और फिर इसे बोलने के लिए यहां आया हूं।

तो कृपया इसे देखें, न केवल मौखिक या काल्पनिक रूप से, बल्कि वास्तव में अनुभव करें कि विचार शब्दों में, प्रतीकों में कार्य करता है, और यह भी कि विचार शब्द और प्रतीक के बिना कार्य करता है। ये दोनों ही सकारात्मक तरीके हैं

सोच रहे हैं क्योंकि वे अभी भी विपरीत के दायरे में हैं। मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए.

आपने अपने मन को अवश्य देखा होगा, वह कितना आवारा है, कैसे हर जगह भटकता रहता है, एक विचार दूसरे विचार का पीछा करता रहता है। जब आप एक विचार की जांच करने की कोशिश करते हैं, तो दूसरा विचार सामने आ जाता है। इसलिए मन इस हलचल से, विचार की हलचल से भरा हुआ है। मन सदैव विचारों से घिरा रहता है। विचार मन का उपकरण है, इसलिए मन कभी स्थिर नहीं रहता। तुरंत मत कहो, "मैं मन को कैसे शांत करूँ?" यह सब बहुत अपरिपक्व, मूर्खतापूर्ण है, क्योंकि इसका मतलब फिर से किसी पैटर्न का सकारात्मक अनुसरण है। तो, स्मृति के माध्यम से, संगति के माध्यम से, विचार-उत्पादक तंत्र की निरंतर गतिविधि को महसूस करते हुए, उसके प्रति जागरूक होते हुए, क्या मन स्वयं को इस तंत्र से मुक्त नहीं कर सकता है? मत पूछो कैसे, बस सुनो, क्योंकि समझ तात्कालिक है; यह ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो अंततः आपके दिमाग को विचारों से खाली कर देगी। यदि आप सकारात्मक, विनाशकारी तरीका देखते हैं - विचार उत्पन्न करने और उसके द्वारा नियंत्रित होने और फिर दिमाग को खाली करने की मन की गतिविधि का - यदि आप इसका झूठ या सच देख सकते हैं, तो आप यह भी देखेंगे कि मन ऐसा कर सकता है स्वयं को स्वयं से, अपनी सीमाओं से, अपनी अहंकेन्द्रितता से, अपनी आत्मकेन्द्रित गतिविधियों से खाली कर दो। प्लीज थोड़ा मेरे साथ चलो.

मन सदैव सक्रिय रहता है, विचार उत्पन्न करता है और नियंत्रित करता है। यह इसका एहसास करता है और कहता है, "मुझे शांत रहना चाहिए," लेकिन इसका आम तौर पर मतलब नियंत्रण के माध्यम से शांत होना है, जो फिर से सकारात्मक, विनाशकारी और सीमित है। लेकिन अगर आप थोड़ा और आगे बढ़ें तो आप देख सकते हैं कि मन को विचार से खाली किया जा सकता है, खुद को अतीत से मुक्त किया जा सकता है, उस पर अतीत का बोझ नहीं डाला जा सकता। इसका मतलब यह नहीं है कि यादें नहीं हैं, लेकिन वे मन को आकार नहीं देतीं या नियंत्रित नहीं करतीं। अब वह सब अभी भी सकारात्मक सोच है। यदि आप इसके मिथ्यात्व को देखते हैं, तो मन हमेशा आगे बढ़ता जाएगा, अर्थात, मन तब विचार का गुलाम नहीं होता है, लेकिन वह जो चाहता है वह सोच सकता है। मुझे नहीं पता कि इसे कैसे रखा जाए. जैसा कि मैंने कहा, मैं आपके साथ जोर-जोर से सोच रहा हूं, और अगर मैं इसे अलग-अलग तरीकों से रखने की कोशिश करूंगा तो आपको मुझे माफ करना होगा।

मुझे नहीं पता कि आपने कभी विचार का गुलाम बने बिना सोचने की कोशिश की है या नहीं। हममें से अधिकांश लोगों का मन विचार का गुलाम है - यह विचार, विरोधाभासी विचार और इसके बाकी सभी पहलुओं का पीछा करता है। यदि आप इसे समझते हैं और दिमाग को खाली कर देते हैं, तो यह स्मृति से जुड़े विचारों से मुक्त होकर सोच सकता है; और यदि आप इसमें और आगे जाते हैं, तो आप देखेंगे कि जो मन स्वतंत्र है - गुलामी के विपरीत के अर्थ में नहीं, बल्कि स्वयं में स्वतंत्र है - तो वह मन, स्मृति से खाली होकर, नकारात्मक तरीके से सोच सकता है। तब आप देखेंगे कि मन, प्रणालियों, सूत्रों, अनुमानों, विचारों से पूरी तरह खाली हो गया है

स्मृति, अनुभव आदि से जुड़ा हुआ यह अनुभव कर सकता है कि एक ऐसी स्थिति है जिसमें इस दुनिया में कार्रवाई होती है, पूर्णता से नहीं, बल्कि शून्यता से।

आप देखते हैं कि अब हम भरे हुए दिमागों, भीड़ भरे दिमागों, लगातार सक्रिय रहने वाले दिमागों, विरोधाभासी, संघर्षशील, समायोजन करने वाले, महत्वाकांक्षी, ईर्ष्यालु, ईर्ष्यालु, क्रूर या सौम्य इत्यादि के साथ कार्य कर रहे हैं। तुम अनुसरण करो? हम उस स्तर पर काम कर रहे हैं. मन पूर्ण होकर कार्य करता है। वह क्रिया कभी भी एक नया मन, मन की एक नई गुणवत्ता, एक ताज़ा मन, एक निर्दोष मन उत्पन्न नहीं कर सकती है - और यह केवल इतना निर्दोष, ताज़ा मन ही है जो सृजन कर सकता है, जो सृजन की स्थिति में है। मन उसे देखता है, और यदि मन स्वयं को खाली कर सकता है, तो शून्यता से उत्पन्न होने वाली क्रिया ही सच्ची सकारात्मक क्रिया है, अन्य नहीं। यही एकमात्र सच्चा, सकारात्मक, रचनात्मक कार्य है क्योंकि यह शून्यता से पैदा होता है। यदि आपने कोई पेंटिंग बनाई है, कोई कविता लिखी है, कोई गीत लिखा है, तो आप पाएंगे कि गहरी अनुभूति शून्यता से आती है। लेकिन भीड़ से भरा मन कभी भी उस शून्यता को महसूस नहीं कर सकता और इसलिए वह कभी संवेदनशील नहीं हो सकता।

कोई देखता है कि मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन हो सकता है, जो अब नितांत आवश्यक है क्योंकि वर्तमान समाज एक मृत समाज है, जो विभिन्न प्रकार के एनेस्थीसिया और अपने अंदर गतिविधि पंप करके खुद को सुधार रहा है। यदि आपको एक व्यक्ति के रूप में मौलिक रूप से, मूलभूत रूप से, गहराई से बदलना है और इसलिए समाज को बदलना है - तो यह सब कुछ जो मैंने वर्णित किया है, अवश्य घटित होना चाहिए। फिर सुंदरता का बिल्कुल अलग महत्व है, जैसा कि कुरूपता का है, क्योंकि सुंदरता कुरूपता के विपरीत नहीं है।

एक बदसूरत चेहरा भी खूबसूरत हो सकता है. लेकिन ऐसी सुंदरता की कल्पना उस मन द्वारा नहीं की जाती जिसने कुरूपता से परहेज किया है।

इसलिए यदि आपने वास्तव में सुना है और इसके बारे में कुछ भी करने की कोशिश नहीं की है - क्योंकि आप जो भी करेंगे वह तथाकथित सकारात्मक और इसलिए विनाशकारी होगा - तो यह पर्याप्त है। यह किसी प्यारी चीज़ को देखना है और उसे अकेला छोड़ देना है, उसे पकड़ने की कोशिश नहीं करना है, उसे घर नहीं ले जाना है और विचार से उसे दबा देना है।

यदि तुमने स्वयं देखा है, मेरे समझाने से नहीं, मेरे शब्दों से नहीं, मेरे प्रभाव से, यदि तुमने खाली मन की सुंदरता, असाधारण गुणवत्ता को महसूस किया है, तो उस खालीपन से एक नया जन्म होता है।

यह नया जन्म है जिसकी आवश्यकता है, न कि महाभारत, रामायण, मार्क्स, या एंगेल्स, या पुनरुत्थानवाद की ओर वापस जाने की। जो दिमाग वास्तव में रचनात्मक होता है वह खाली दिमाग होता है, न कि खाली दिमाग या वह दिमाग जो केवल रचनात्मक होना चाहता है। यह केवल खाली दिमाग ही है जो इस पूरी चीज़ को समझ सकता है - विचार और विचार की स्वयं को खाली करने की असाधारण प्रक्रिया

प्रेरणा। तब आप देखेंगे कि एक आमूलचूल, गहरा परिवर्तन है जो प्रभाव, परिस्थितियों, संस्कृति या समाज द्वारा नहीं लाया गया है। यह वह मन है जो नये समाज का निर्माण करेगा। और जिस क्षण यह एक नया समाज बनाता है, वह समाज पहले से ही भ्रष्टाचार में होता है। सभी समाज भ्रष्टाचार में हैं क्योंकि जो बनाया गया है वह हमेशा मर रहा है। इसलिए, यह मानते हुए कि कोई भी समाज, कोई परंपरा, कोई ज्ञान स्थायी नहीं है, हम देख सकते हैं कि जो दिमाग खाली है वह रचनात्मक है, सृजन की स्थिति में है।

12 नवंबर, 1958

आठवीं वार्ता मद्रास में

मुझे ऐसा लगता है कि हममें से अधिकांश लोग बौद्धिक रूप से चतुर होने, तकनीकी रूप से प्रशिक्षित होने के इतने इच्छुक हैं - जो कि मन की यांत्रिक आदत की खेती है - कि धर्म हमारे जीवन में एक बहुत ही सतही भूमिका निभाता है। लेकिन कोई व्यक्ति कितना भी चतुर, कितना भी विद्वान, अपने विचारों को व्यक्त करने में कितना भी सक्षम क्यों न हो, वह वास्तव में अपनी चतुराई से कभी संतुष्ट नहीं होता है, और वह हमेशा उसी चीज़ की ओर मुड़ता है जिसे वह अधिक गहरा समझता है; वह पूछताछ करना, खोजना शुरू कर देता है क्योंकि उसकी बुद्धि स्पष्ट रूप से उसे पूरी तरह संतुष्ट नहीं करती है। तो वह धर्म की ओर मुड़ जाता है। या तो वह कैथोलिक बन जाता है, जहां उसे सुरक्षा मिलती है, जहां उसकी बुद्धि अब चीजों को अलग नहीं कर सकती है, या वह किसी प्रकार के बौद्ध धर्म या हिंदू धर्म या आप जो भी करेंगे, उसकी ओर मुड़ जाता है। वास्तव में पूरी दुनिया में यही हो रहा है। धर्म को कुछ रहस्यमय माना जाता है और इसमें "अन्यता" का गुण होता है - बुद्धिजीवी उस "अन्यता" में आश्रय लेना चाहता है और विश्वास से संतुष्ट होता है। और हममें से बाकी लोगों के लिए जो अत्यधिक बौद्धिक नहीं हैं - हालाँकि हम मौखिक रूप से बहुत चतुर हो सकते हैं, जो शायद एक ही बात है - धर्म का तात्पर्य परंपरा या पुनरुत्थानवाद से है, कुछ समारोहों में भाग लेना, चर्चों में जाना, मंदिरों में जाना, इत्यादि। बहुत सी बातों को उद्धृत करने में सक्षम होना, जिनका वास्तव में कोई अर्थ नहीं है, हमें धार्मिकता की भावना देता है। लेकिन निश्चित रूप से वास्तविकता, सत्य या जो कुछ भी हो, इनमें से किसी भी तरीके से नहीं पकड़ा जा सकता है, न ही किसी क्षुद्र मन से, चाहे वह कितना भी चतुर क्यों न हो। क्योंकि एक क्षुद्र मन, चाहे उसकी गतिविधियाँ कुछ भी हों, उसके देवता चाहे कुछ भी हों, उसके गुण, दर्शन, सूत्र, धारणाएँ और अटकलें कुछ भी हों, उसे हमेशा क्षुद्र, छोटा, संकीर्ण, सीमित रहना चाहिए। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है, हालाँकि कोई भी स्वयं इसे स्वीकार नहीं कर सकता है। दरअसल यह एक सच्चाई है कि एक छोटा दिमाग अपनी ही सीमाओं से परे नहीं देख सकता; यह मान्यता की सीमाओं से आगे नहीं जा सकता।

तो, मान्यता के क्षेत्र में रहते हुए - जिसमें मैं वर्तमान में जाऊंगा - हमारे देवता, हमारी वास्तविकताएं हमेशा समय सीमा के भीतर होती हैं, हमेशा अनुशासन, नियंत्रण, दमन या उत्थान के विभिन्न रूपों के माध्यम से कुछ हासिल किया जाना चाहिए। मुझे नहीं पता कि क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि आपका दिमाग कैसे काम करता है। यदि आपने देखा है, तो आपने अवश्य देखा होगा कि मन कितना असाधारण रूप से सीमित है। आप एक तकनीकी विशेषज्ञ, उच्च पदस्थ कार्यकारी, बैंक प्रबंधक या क्लर्क हो सकते हैं, लेकिन तकनीकी ज्ञान के मुखौटे के पीछे असंतोष का एक विशाल क्षेत्र है। और यह असंतोष जल्द ही अत्यधिक धार्मिक, पवित्र, या अश्रुपूर्ण बनने की कोशिश का रूप ले लेता है; और ऐसा मन क्षुद्र, छोटा, संकीर्ण, सीमित होता है, तो जाहिर तौर पर उसकी अभिव्यक्ति, ईश्वर के लिए उसकी खोज, सत्य के लिए उसकी खोज बहुत, बहुत सीमित होती है। यदि आप जंगली या आदिम मनुष्य से पूछें कि ईश्वर क्या है, तो वह इसे बहुत सीमित, संकीर्ण शब्दों में व्यक्त करेगा, जैसे कि तत्वों की पूजा। और यदि आप तथाकथित सभ्यता, संस्कृति के पैमाने पर ऊपर जाते हैं, तो आप पाएंगे कि मनुष्य के देवता समान रूप से सीमित हैं, जो उसे बताया गया है या उसकी खोज के छोटे से क्षेत्र से पता चला है। इसलिए क्षुद्र मन सदैव अपनी पहचान के क्षेत्र में ही कार्य करता है। क्या हममें से अधिकांश के साथ ऐसा नहीं है? हमारे सद्गुण मानकीकृत हैं, हमारे मानदंड परिभाषित हैं, हमारी गतिविधियाँ सम्मानजनक हैं, हमारा पूरा दृष्टिकोण मान्यता प्राप्त और सम्मानित तक ही सीमित है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें - और मैं यह कहकर आपका अपमान नहीं कर रहा हूं कि आपके पास एक क्षुद्र दिमाग है - तो आप देखेंगे कि यह केवल मान्यता की सीमाओं के भीतर ही कार्य करता है, जिसे आप पहचान सकते हैं। यह लंगोटी के संदर्भ में सादगी व्यक्त करता है; इसके जुनून, स्नेह, नफरत, इसकी प्रेरणा और शक्ति हमेशा पहचानने योग्य होती है, जिसे बहुमत द्वारा सम्मानजनक माना जाता है। क्या ऐसा नहीं है?

यदि आप स्वयं का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि आप हमेशा क्षेत्र, सीमाओं, पहचान की बाधाओं और इसलिए हमेशा समय के दायरे के भीतर कार्य कर रहे हैं। हमारे देवता, हमारे गुण, हमारे प्रेम, संघर्ष, आकांक्षा और अच्छाई सभी बहुत सीमित और संकीर्ण हैं।

अब हममें से अधिकांश लोग यह देखने को तैयार नहीं हैं। हम या तो समाज या अपनी शिक्षा को दोष देते हैं या कहते हैं कि परिस्थितियों ने हमें वैसा बनने के लिए मजबूर किया है, और हम ईमानदारी से अपने आप को यह स्वीकार करने से इनकार करते हैं कि हमारा अपना मन क्षुद्र है। लेकिन एक मन जो केवल समय के क्षेत्र में ही कार्य करता है, यानी कल, आज और कल, वह स्पष्ट रूप से एक क्षुद्र मन है। चाहे "कल" अनिश्चित काल तक पीछे की ओर यात्रा करता हो, या "कल" अनिश्चित काल तक आगे बढ़ता हो, या "आज" वर्तमान तक सीमित हो - यह सब समय के क्षेत्र के भीतर है और इसलिए बहुत संकीर्ण है। वह आदमी जो मैनेजर, बॉस बनना चाहता है, सत्ता पाने की पूरी प्रक्रिया, महत्वाकांक्षा,

चाहे कितना ही उदात्त, व्यापक, वैचारिक क्यों न प्रतीत हो - यह सब समय के क्षेत्र के अंतर्गत है और इसलिए क्षुद्र है।

कृपया यह सब सुनें, न कि इसे केवल बौद्धिक रूप से सुनें और इसे आकस्मिक रूप से सहमत या असहमत करें या इसे तर्कसंगत बनाएं। क्योंकि यदि आप वास्तव में सुनते हैं, तो आप अपने मन की कार्यप्रणाली को घड़ी की टिक-टिक की तरह देखेंगे; यदि आप अपने मन की गति, क्रिया को महसूस करने के लिए पर्याप्त संवेदनशील हैं तो आप इसे सुन सकते हैं, इसे देख सकते हैं, इसका निरीक्षण कर सकते हैं। यह एक सच्चाई है, चाहे कोई इसे स्वयं स्वीकार करे या नहीं, कि हम खुद को संशोधित करने, समाज का पुनर्निर्माण करने, कुछ पुनरुद्धार लाने, या विचारों के कुछ नए सेट को आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं, लेकिन हमेशा दिमाग के उस पहचानने योग्य क्षेत्र के भीतर। हमारे स्वामी, हमारे गुरु, हमारे दर्शन सभी पहचानने योग्य हैं, और इसलिए इसमें कुछ भी नया नहीं है। जिसे आप पहचानते हैं वह कभी नया नहीं हो सकता। जो भी तुम पहचानते हो, वह तो तुम जान ही चुके हो। और जो ज्ञात है वह पहले से ही अतीत में स्थापित हो चुका है, जो स्मृति है, जो समय का है, और इसलिए वह पुराना है।

इसलिए, बहुत गंभीर व्यक्ति जो वास्तव में अस्तित्व की इस पूरी समस्या को समझना चाहता है, उसे स्पष्ट रूप से खुद से यह सवाल पूछना चाहिए कि इस बाधा को कैसे तोड़ा जाए, जो न केवल चेतन मन की है, बल्कि चेतना की छिपी हुई, गहरी परतों की भी है। यदि बहुत गहराई से जांच की जाए तो यह अभी भी समय और मान्यता के दायरे में है। मैं पहचान शब्द का उपयोग इसके अत्यंत सरल रूप में कर रहा हूँ। मैं तुम्हें पहचानता हूं क्योंकि मैं तुमसे पहले मिल चुका हूं; अन्यथा, जाहिर है, मैं तुम्हें नहीं जानता। मैं उसमें इस शब्द का प्रयोग कर रहा हूं

समझ।

क्षुद्र मन के लिए - भले ही वह बौद्धिक हो और इसलिए पहचान के क्षेत्र में अधिक चतुराई से काम कर रहा हो - क्षुद्र मन के लिए कुछ भी नया नहीं है। यह हमेशा ज्ञात के भीतर कार्य करता है, भले ही इसे भविष्य कहा जाता है। सभी सामाजिक कार्यकर्ता, सुधारक, यूटोपिया के साधक, कम्युनिस्ट, कम्युनिस्ट-विरोधी, समाजवादी, पूंजीवादी, वे सभी मान्यता के क्षेत्र में, उनके द्वारा स्थापित मानदंड के क्षेत्र में काम कर रहे हैं, जो हमेशा आधारित होता है समय। इसलिए उनमें से कोई भी सच्ची क्रांति नहीं ला सकता। मौलिक क्रांति का मतलब कुछ बिल्कुल नया होता है, और हमें ऐसी क्रांति की आवश्यकता है क्योंकि क्रांति के अन्य सभी रूप - आर्थिक, सामाजिक या धार्मिक - विफल हो गए हैं। वे सब वास्तव में जो कुछ हुआ है उसका प्रतिरूप मात्र हैं, जो कुछ हो चुका है उसकी एक प्रतिक्रिया है।

तो, अपने आप में, और बौद्धिक लोगों में, दूरदर्शी लोगों में, सामाजिक कार्यकर्ताओं में, और तथाकथित संतों में मन की इस असाधारण प्रक्रिया को देखकर, हमने खुद से पूछा होगा कि इस संकीर्ण, क्षुद्र, पारंपरिक मानसिकता को कैसे तोड़ा जाए .
वैज्ञानिक मन भी एक पारंपरिक मन और कार्य है

मान्यता के क्षेत्र में. वैज्ञानिक कोई क्रांति लाने वाला नहीं है; वह जीवन जीने के नए तरीकों या तरीकों का आविष्कार करेगा, लेकिन वे केवल नई परिस्थितियों का निर्माण करेंगे जिनके लिए मन को खुद को समायोजित करना होगा, और इसलिए यह कोई क्रांति नहीं है। आप रेफ्रिजरेटर का उपयोग कर सकते हैं, जेट में उड़ सकते हैं, या चंद्रमा पर जा सकते हैं, लेकिन मन अभी भी क्षुद्र, संकीर्ण है।

यह सब देखकर और इस पूरी प्रक्रिया से अवगत होकर, मन कैसे टूट जाए, क्षुद्रता से तुरंत बाहर निकल जाए? मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी खुद से यह सवाल पूछा है। और जब आप ऐसा करते हैं, तो आप कैसे उत्तर देते हैं, आपकी प्रतिक्रिया क्या होती है? यदि आप प्रश्न से बहुत अधिक ऊब नहीं गए हैं, यदि आप वास्तव में इसका उत्तर खोजना चाहते हैं जैसे कि आप भूख लगने पर भोजन ढूंढना चाहते हैं, तो आप इसे कैसे करेंगे? निश्चित रूप से, किसी भी चीज़ को तोड़ने के लिए, क्रांतिकारी कार्रवाई करने के लिए जुनून होना चाहिए। किसी चीज़ के बारे में दृढ़ता से महसूस करना अपना स्वयं का कार्य लाता है, क्या ऐसा नहीं है? अगर मैं सड़कों पर गंदगी, गंदगी के बारे में दृढ़ता से महसूस करता, अगर मैं इसके बारे में तुरंत, तीव्रता से महसूस करता, तो मैं कुछ करता। मैं एक संगठन बनाऊंगा जो इस बारे में कुछ करेगा. मैं बैठकर बौद्धिक रूप से गंदगी को तर्कसंगत नहीं बनाऊंगा और इसे निपटने के लिए किसी और पर नहीं छोड़ूंगा। यदि कोई किसी चीज़ को गहराई से महसूस करता है तो वह कार्य करता है, क्या वह नहीं करता है? लेकिन दुर्भाग्य से हमने अपनी भावनाओं को अनुशासित कर लिया है। हमें सदियों से बताया गया है कि इच्छा गलत है, यह दुख की ओर ले जाती है, व्यक्ति को इच्छा से मुक्त होना चाहिए, और फिर उसे ईश्वर मिलेगा - आम तौर पर एक मृत ईश्वर। जो कुछ भी है, आप उसे खोज ही लेंगे—स्पष्टतः एक मृत मस्तिष्क को खोजने लायक कुछ भी नहीं मिलेगा। यह केवल एक जीवित दिमाग ही है जो खोजेगा।

सदियों से लोगों ने कहा है, "नष्ट करो, नियंत्रित करो, आकार दो, इच्छा को वश में करो" और समाज-जो आख़िरकार केवल व्यक्तियों के बीच की बातचीत है-ने सभी भावनाओं के दमन को बनाए रखने और बनाए रखने में मदद की है। आपमें प्रबल भावनाएँ रखने का साहस नहीं है क्योंकि यदि आपके पास बहुत प्रबल भावनाएँ हैं, तो आप कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं, आप एक खतरनाक इकाई, एक खतरनाक नागरिक हो सकते हैं। तो आप अपनी भावनाओं को दबाना, नियंत्रित करना, समाज के आदेशों के अनुसार आकार देना शुरू कर देते हैं, या फिर आप सब्लिमेट करने की कोशिश करते हैं, यानी मजबूत भावना की हिंसक यातनाओं से बचने का कोई रास्ता खोजने की कोशिश करते हैं। हम यही तो करते हैं ना? तो, धीरे-धीरे हम थोड़े से सेक्स, परिवार के लिए आजीविका कमाने, बहुत संकीर्ण दायरे आदि की बहुत ही सतही भावनाओं को छोड़कर सभी भावनाओं को नष्ट कर देते हैं। तो हमारे मन, जो क्षुद्र हैं, सभी भावनाओं को एक ही स्तर पर ले आते हैं, और फिर भी बिना जुनून के—मैं उस शब्द का उपयोग करता हूं क्योंकि, भले ही आपको यह पसंद न हो, मुझे लगता है कि यह सही शब्द है—जुनून के बिना आप कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं कर सकते।

उस जुनून शब्द का क्या अर्थ है? मैं इसमें जाना चाहूँगा क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। अधिकांश लोग, यहां और अन्य जगहों पर, हालांकि वे सतही रूप से भयावह रूप से सक्रिय हैं - नई मिलें, अधिक बांध, अधिक वैज्ञानिक आविष्कार बना रहे हैं - यदि आप ध्यान दें, तो आप पाएंगे कि पूरी दुनिया में अधिकांश लोग मर चुके हैं। केवल मरने वाले ही भ्रष्ट होते हैं, जीवित लोग नहीं।

और मृत होकर—हालाँकि पूरी तरह से मृत नहीं है, जाहिर है—कोई कैसे पुनर्जीवित हो सकता है? हमारे अंदर अभी भी कुछ भावनाओं की झलक है, आकांक्षा की झलक है, महत्वाकांक्षा की चिंगारी है, लेकिन यह बहुत छोटी है। आप सभी सफलता की सीढ़ी पर अगला कदम उठाना चाहते हैं, और आप इस तरह की संकीर्णता से बाहर कैसे निकलेंगे और नए सिरे से कैसे बनेंगे? यही समस्या है, है ना? मुझे नहीं पता कि आपने इसके बारे में कभी सोचा है या नहीं. कानून से मदद नहीं मिलेगी. जाहिर तौर पर गर्भ से कब्र तक अधिक कानून, अधिक योजना, अधिक राज्य कल्याण होने जा रहा है, और उस प्रक्रिया में मन और अधिक फंस जाएगा। तो यह सब देखकर कोई क्या करे?

जाहिर तौर पर जुनून होना चाहिए, और सवाल यह है कि उस जुनून को कैसे पुनर्जीवित किया जाए। हमें एक-दूसरे को गलत न समझने दें. मेरा मतलब हर मायने में जुनून से है, सिर्फ यौन जुनून से नहीं, जो कि बहुत छोटी चीज है। और हममें से अधिकांश इससे संतुष्ट हैं क्योंकि बाकी सभी जुनून नष्ट हो गए हैं - कार्यालय में, कारखाने में, एक निश्चित नौकरी, दिनचर्या, सीखने की तकनीकों का पालन करने के माध्यम से - इसलिए कोई जुनून नहीं बचा है; तात्कालिकता और रिहाई की कोई रचनात्मक भावना नहीं है। इसलिए सेक्स हमारे लिए महत्वपूर्ण हो जाता है, और वहां हम क्षुद्र जुनून में खो जाते हैं जो संकीर्ण, सदाचारी दिमाग के लिए एक बड़ी समस्या बन जाता है, या फिर यह जल्द ही एक आदत बन जाती है और ख़त्म हो जाती है। मैं जुनून शब्द का उपयोग एक संपूर्ण चीज़ के रूप में कर रहा हूं। एक भावुक व्यक्ति जो दृढ़ता से महसूस करता है वह केवल कुछ छोटे काम से संतुष्ट नहीं होता है - चाहे वह प्रधान मंत्री का काम हो, या रसोइये का, या आप जो भी करेंगे। एक भावुक मन पूछताछ कर रहा है, तलाश कर रहा है, पूछ रहा है, मांग कर रहा है, न कि केवल अपने असंतोष के लिए कोई वस्तु ढूंढने की कोशिश कर रहा है जिसमें वह खुद को पूरा कर सके और सो जाए। भावुक मन टटोल रहा है, खोज रहा है, तोड़ रहा है, किसी परंपरा को स्वीकार नहीं कर रहा है; यह कोई निश्चित मन नहीं है, कोई ऐसा मन नहीं है जो आ गया है, बल्कि यह एक युवा मन है जो सदैव आ रहा है।

अब, ऐसा मन कैसे अस्तित्व में आता है? होना तो चाहिए। जाहिर है, छोटा दिमाग इस पर काम नहीं कर सकता। भावुक बनने की कोशिश करने वाला एक क्षुद्र मन हर चीज़ को अपनी क्षुद्रता में ही सीमित कर देगा। यह होना ही चाहिए, और यह तभी हो सकता है जब मन अपनी क्षुद्रता को देखता है और फिर भी इसके बारे में कुछ करने की कोशिश नहीं करता है। क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ? शायद नहीं। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा, क्षुद्र मन, छोटे मन, प्रतिबंधित मन की कोई भी गतिविधि, चाहे वह कितनी भी उत्सुक क्यों न हो, फिर भी क्षुद्र ही होगी, और निश्चित रूप से यह स्पष्ट है। एक छोटा सा मन,

यद्यपि यह चंद्रमा पर जा सकता है, यद्यपि यह एक तकनीक प्राप्त कर सकता है, यद्यपि यह चतुराई से बहस और बचाव कर सकता है, फिर भी यह एक छोटा दिमाग है; उसकी गतिविधियाँ चाहे जो भी हों, वह एक छोटा मन है। तो जब वह छोटा मन कहता है, "कुछ सार्थक करने के लिए मुझे जुनूनी होना चाहिए," जाहिर है उसका जुनून बहुत छोटा होगा, है ना - जैसे किसी छोटे-मोटे अन्याय पर गुस्सा होना या यह सोचना कि कुछ लोगों की वजह से पूरी दुनिया बदल रही है। क्षुद्र, पॉटी में किया गया थोड़ा सुधार, पॉटी द्वारा छोटा गांव, छोटा दिमाग। यदि छोटा मन वह सब देखता है, तो यह धारणा ही काफी है कि वह छोटा है; तब उसकी संपूर्ण गतिविधि में परिवर्तन आ जाता है।

देखिए, श्रीमानों, जब तक मैं यह स्वीकार नहीं करता कि मैं अंधा हूं, मैं जो कुछ भी करता हूं वह विनाशकारी है। लेकिन अगर अचानक, अंधा होकर मैं इसे स्वीकार कर लूं, तो क्या होगा? मैं पूरी तरह से नई प्रवृत्तियाँ, धारणा के नए तरीके विकसित करता हूँ, है न? मेरा स्पर्श बहुत अधिक संवेदनशील हो जाता है; मैं हर उस चीज़ को पकड़ लेता हूँ जो मेरे बहुत करीब है; प्रतिक्रियाओं का एक बिल्कुल नया सेट तैयार हो रहा है; मेरी सारी चेतना आश्चर्यजनक रूप से संवेदनशील और तीव्र हो जाती है। और हममें से अधिकांश लोग अंधे, सोये हुए, क्षुद्र, संकीर्ण हैं; और यदि हम इसे केवल स्वीकार कर सकें, न केवल बौद्धिक रूप से, मौखिक रूप से, बल्कि वास्तव में इसे देख सकें - निराशा में पड़े बिना, जो फिर से छोटे मन की प्रक्रिया है जो कभी आशा की ओर चढ़ता है और निराशा में वापस चला जाता है - तो हम देखेंगे कि यह पूरी तरह से प्रतिक्रियाओं का नया समूह अस्तित्व में आता है। और क्या आप देखते हैं तब क्या होता है?

वह पहचान विनम्रता लाती है। मन की विनम्रता नहीं जो कहती है, "मैं देखता हूं कि मैं छोटा हूं और मैं चाहता हूं कि मैं बड़ा होता" - यह केवल घमंड का विस्तार है। मैं उस मन की बात कर रहा हूं जो वास्तव में देखता है कि उसके सभी कार्य क्षुद्र हैं, और तुरंत विनम्रता की भावना आती है। विनम्रता कोई विकसित करने वाली चीज़ नहीं है. एक मन जो विनम्रता विकसित करता है वह केवल स्वयं को विनम्र बनाता है; वह उस लबादे के समान है जिसे वह ओढ़ता है, और उस लबादे के पीछे व्यर्थता है।

इसलिए जब मैं पहचानता हूं कि मेरा मन छोटा है और यह जो कुछ भी करता है वह अभी भी छोटा होगा, जब मैं यह जानता हूं, जब मैं इसे महसूस करता हूं, जब मैं अब जो कहा जा रहा है उसका महत्व समझता हूं, तो मेरा मन विनम्रता है। और यह आवश्यक है, क्योंकि तभी वास्तविक सीखना शुरू होता है। क्योंकि, जो मन सीख चुका है वह सीख नहीं सकता। जिस मन पर सीखने का बोझ है, वह मन पहाड़ पर चढ़ने के लिए कैसे स्वतंत्र हो सकता है, जिसने ज्ञान संचित कर लिया है? यह तभी चढ़ सकता है जब इसने स्वयं को बोझ से मुक्त कर लिया हो, और जिस क्षण मन ने जो कुछ सीखा है उससे स्वयं को मुक्त कर लेता है, यह सीखना है।

तो अपने मन की क्षुद्रता की धारणा जो केवल मान्यता के क्षेत्र में ही काम करती है, वही धारणा एक है

तोड़ना, और उसी क्षण विनम्रता होती है और इसलिए सीखने की क्रिया होती है। और यदि जुनून नहीं है तो आप सीख नहीं सकते, और जुनून केवल तभी हो सकता है जब पूर्ण आत्म-त्याग हो। मुझे आशा है कि आप इसका पालन करेंगे। जाहिर है, अगर आप खुद को नहीं त्यागते तो आप भावुक नहीं हो सकते।

अर्थात्, यदि पूर्ण आत्म-विस्मृति, पूर्ण आत्म-परित्याग, इस समय तत्व का, जो स्वयं है, पूर्ण आत्म-त्याग नहीं है, तो कोई जुनून नहीं है। विनम्रता का सार ही आत्म-त्याग है। तो विनम्रता की इस भावना में सीखने का जुनून है, न कि सीखने को जमा करने का - वह कुछ भी नहीं है, वह केवल एक विश्वकोश होना है - लेकिन खोजने का, पूछताछ करने का, खोज करने का, समझने का जुनून है; और ऐसा जुनून तभी आ सकता है जब 'मैं' अनुपस्थित हो। जब आप किसी चीज़ में अत्यधिक रुचि रखते हैं तो आपके अंदर ऐसा जुनून होता है; जब आप किसी से प्यार करते हैं तो आप खुद को पूरी तरह से भूल जाते हैं। और मेरा मतलब उस प्यार से नहीं है जो ईर्ष्या जानता है, वह प्यार जो नफरत जानता है, वह प्यार जो अपने आप में व्यस्त है, सहानुभूति की मूर्खतापूर्ण भावना जो अच्छा करना चाहता है। प्यार कभी भी अच्छा नहीं करना चाहता.

प्यार कभी सुधरना नहीं चाहता. यह एक ऐसी चीज़ है जो शाश्वत है, और आप इसे समय के जाल में कैद नहीं कर सकते।

इसलिए यदि सीखने का जुनून नहीं है तो विनम्रता नहीं हो सकती है, और जब तक आत्म-त्याग नहीं है तब तक जुनून पैदा नहीं होता है। जब आत्म-त्याग होता है, तो सादगी होती है, तपस्या होती है - मन की संवर्धित तपस्या नहीं जो कहती है, "मुझे दिन में केवल एक बार भोजन करना चाहिए, केवल दो लंगोटी रखनी चाहिए" और अपनी सार्वजनिक प्रदर्शनी करता है। और आप देखेंगे कि आत्म-परित्याग की सादगी असाधारण रूप से समृद्ध है। उपवास, प्रार्थना, अनुशासन और नियंत्रित तपस्या की तथाकथित सादगी में कोई समृद्धि नहीं है, कोई सुंदरता नहीं है, कोई संवेदनशीलता नहीं है। लेकिन जो मन आत्म-परित्याग के माध्यम से जुनून को जानता है, उसके लिए विशाल, असीमित, अनंत धन की सरलता है। ऐसा मन असीम रूप से संवेदनशील होता है, और ऐसा मन एक रचनात्मक मन होता है; यह संघर्ष से मुक्त है. और जब तक आत्म-ज्ञान न हो, अपनी सारी सुंदरता और धन के साथ कोई आत्म-परित्याग नहीं होता है।

यदि आप स्वयं को नहीं जानते हैं - यदि आप नहीं जानते कि आप क्या सोचते हैं, क्या महसूस करते हैं, आपके विचार क्या हैं, आपके उद्देश्यों के स्रोत क्या हैं, आप ऐसा क्यों सोचते हैं, और आप ऐसा क्यों करते हैं - यदि आप नहीं जानते कि कैसे आपका दिमाग काम करता है, जाहिर है आप खुद को नहीं छोड़ सकते। आप इस समग्र चेतना से एक या दो टुकड़े कर सकते हैं, जो चीजें आपको पसंद नहीं हैं उन्हें काट सकते हैं, लेकिन वह आत्म-ज्ञान नहीं है। खुद को समझने के लिए आपको अपने बात करने के तरीके, अपने हाव-भाव, दूसरे के प्रति अपने दृष्टिकोण, अपने डर और महत्वाकांक्षाओं, अपनी खुशियों और क्षणभंगुर प्यार के बारे में पता होना चाहिए। यह सब जानने के लिए—एक के रूप में नहीं

ज्ञान का संचय, लेकिन इसे वैसे देखना जैसे यह वास्तव में हर दिन होता है और इसे देखना - उस संपूर्ण जागरूकता में आत्म-त्याग है। तभी जुनून है.

महोदय, आप खाली हाथ सत्य पर नहीं आ सकते। यदि आपने अपनी सभी भावनाओं, अपनी सभी भावनाओं को दबा दिया है, यदि आपने उन सभी को वश में कर लिया है, उन्हें सम्मानजनक बना दिया है, तो सत्य आपके पास नहीं आएगा। न ही तुम्हें पापी होना चाहिए. शायद पापी अधिक निकट है क्योंकि वह सक्रिय है, उसमें भावनाएँ हैं। आपको अपने खालीपन में असाधारण रूप से समृद्ध होना चाहिए। अब आप केवल सद्गुणों की, संघर्ष की, अपनी छोटी-छोटी आकांक्षाओं, महत्वाकांक्षाओं और निराशाओं की मृत राख में ही समृद्ध हैं; फिर भी, उन सब से लदे हुए आप ईश्वर को पाना चाहते हैं। जाहिर है, आप ऐसा नहीं कर सकते। केवल वह मन जो पूरी तरह से खाली है, जो खोज नहीं कर रहा है, मांग नहीं कर रहा है, मांग नहीं कर रहा है, केवल ऐसे मन में ही वास्तविकता आती है - न कि उपनिषद, गीता, या बाइबिल की वास्तविकता, इनमें से कुछ भी नहीं। वे शब्द हैं, निरर्थक बातें हैं, उनका केवल वही अर्थ है जो आपका छोटा दिमाग उन्हें देता है।

व्यक्ति को अपने दिमाग को सभी विचारों से खाली कर लेना चाहिए, क्योंकि विचार समय का होता है; व्यक्ति को अपने मन को कल के सारे ज्ञान से, सारे अनुभव से खाली कर देना चाहिए, ताकि मन ताजा, नया, युवा, निर्दोष और फिर भी पूरी तरह से खाली हो जाए। यह केवल खाली दिमाग है, जो शून्य है, जिसे भरा जा सकता है।

लेकिन इसका मतलब है कड़ी मेहनत. यह महसूस करना कठिन काम है कि किसी का दिमाग छोटा है, छोटा है। इस तथ्य का अवलोकन करना, इसका सामना करना, इससे जूझना कठिन काम है, इससे भागने की कोशिश करना नहीं। यह आपके कार्यालय जाने या परीक्षा उत्तीर्ण करने से कहीं अधिक कठिन काम है क्योंकि इसके लिए निरंतर सतर्कता, निरंतर जागरूकता, आपके छोटे, छोटे कार्यों पर हर मिनट नजर रखने की आवश्यकता होती है। और हममें से अधिकांश लोग कड़ी मेहनत करने को तैयार नहीं हैं, और इसलिए बाइबल या गीता बहुत अच्छा बचाव देती है, और हम सोचते हैं कि उन्हें उद्धृत करने से हम बहुत धार्मिक हो जाते हैं; या फिर हम सामाजिक कार्य अपना लेते हैं और वहां से भाग जाते हैं। इनमें से कोई भी चीज़ वास्तविकता नहीं लाएगी। यह वह मन है जिसने अपने कार्यों को त्याग दिया है जो अपनी शून्यता में समृद्ध है और इसलिए शांत है; केवल ऐसा मन ही मौन की पहचान के बिना मौन को जानता है, और केवल ऐसे मन के लिए ही अपरिमेय है

आता है।

16 नवंबर, 1958

बम्बई, भारत, 1958

बम्बई में पहली बातचीत

संचार हर समय काफी कठिन होता है, और विशेष रूप से तब जब कोई व्यक्ति जीवन की अत्यधिक जटिल समस्या और अपनी दैनिक गतिविधियों के व्यापक प्रभावों से चिंतित होता है। उसके बारे में बात करना और जीवन की प्रक्रिया में शामिल सभी निहितार्थों को संप्रेषित करना बहुत, बहुत कठिन है। यदि आप किसी अन्य व्यक्ति को कोई विचार संप्रेषित करना चाहते हैं, तो यह अपने आप में काफी जटिल है, लेकिन यह विशेष रूप से तब और अधिक जटिल हो जाता है जब कोई उस चीज़ से निपट रहा हो जिसे हम जीवन कहते हैं। जीवन में जीवन का हर कार्य, विचार की हर सूक्ष्मता, बारीकियाँ, मतभेद, संघर्ष, खुशियाँ, विचार की व्यापक गहराई शामिल है, और यह सब संप्रेषित करना बेहद कठिन है, खासकर जब हममें से अधिकांश लोग ऐसा नहीं करते हैं। इस विशेष लाइन पर सोचने के आदी।

मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूं, और जो कहा जा रहा है उसे सुनने के लिए, स्वाभाविक रूप से, मौखिक समझ की आवश्यकता होती है। आपको अंग्रेजी, वास्तविक शब्दों को समझना होगा, ताकि मौखिक स्तर पर संचार हो, और मौखिक स्तर पर जो कहा जा रहा है उसकी बौद्धिक समझ पैदा हो। शब्दों के माध्यम से जो कहा जाता है उसे बुद्धि तक पहुंचाया जाता है। तब बुद्धि या तो जो कहा जा रहा है उसे अस्वीकार कर देती है या स्वीकार कर लेती है। लेकिन स्वीकार करने या अस्वीकार करने से पहले, स्वाभाविक रूप से उसे तौलना, संतुलन बनाना, तर्क करना, यह पता लगाने की क्षमता का उपयोग करना होगा कि क्या गलत है और क्या सच है, और इसमें समय लगता है, और इस बीच वक्ता विचारों के एक नए सेट के साथ आगे बढ़ता है, एक नया विचार, और इसलिए आप पीछे रह जाते हैं और वह जो कह रहा है उसे समझना मुश्किल है। आप हमेशा पीछे हैं और वह हमेशा आगे जा रहा है, और संचार बेहद मुश्किल हो जाता है।

तो, मौखिक स्तर पर संचार होता है, बौद्धिक स्तर पर संचार होता है, और भावनात्मक स्तर पर भी संचार होता है; और भावनात्मक स्तर बहुत आसान है। जब कोई भावनाओं से अपील करता है तो आपके लिए संवेदना की उस लहर पर चलना तुलनात्मक रूप से आसान होता है।

संचार की समस्या असाधारण रूप से कठिन है, और व्यक्ति को कठिनाई का एहसास होना चाहिए और शब्दों को भेदने में सक्षम होना चाहिए क्योंकि केवल तभी संवाद होता है। संचार साम्य की ओर ले जाता है और साम्य का अर्थ है साझा करना, भाग लेना। यह क्या करना है या क्या नहीं करना है पर कोई प्रवचन नहीं है; यह एक-दूसरे के साथ संवाद करने का एक प्रयोग है। हम सभी स्तरों पर एक-दूसरे के साथ संवाद करने जा रहे हैं - मौखिक, बौद्धिक, भावनात्मक - और इसलिए इसका मतलब है कि वक्ता जो कह रहा है उसमें भाग लेना, साझा करना। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको सहमत या असहमत होना होगा। कोई केवल विचारों और राय से सहमत या असहमत हो सकता है। जब आप तथ्यों से निपट रहे हैं - ऐसे तथ्य जो सत्य को प्रकट करते हैं - तो कोई सहमति या असहमति नहीं है। साझाकरण तब होता है जब आप और मैं तथ्य को देख सकते हैं, और तथ्य में सच्चाई या झूठ को देख सकते हैं। और एक-दूसरे के साथ इस संवाद की प्रक्रिया में, मुझे आशा है कि हम उसे त्यागने में सक्षम होंगे जो झूठ है और बहुत स्पष्ट रूप से, बहुत सटीक रूप से देख पाएंगे जो सत्य है। धारणा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी क्रिया। मेरे लिए, धारणा क्रिया के बराबर है।

मैं अभी और आने वाली बातचीत में जिस बारे में बात करने जा रहा हूं वह विचारों, विचारों, निष्कर्षों और मन के सभी बौद्धिक संचयों से निपटने का मामला नहीं है ताकि आप उन्हें अस्वीकार कर सकें या स्वीकार कर सकें। अब हम जो कर रहे हैं वह जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया के बारे में एक-दूसरे के साथ साझा करना, संवाद करना है। और जीवन इतना व्यापक है; इसमें काम, खुशी, दुःख, मृत्यु, खुशी, ध्यान, सोचने की पूरी प्रक्रिया, अनुसरण, भय, स्मृति का संचय, स्मृति की प्रतिक्रियाएँ, साथ ही शाम की असाधारण सुंदरता शामिल है जब बादल आकाश की ओर इकट्ठे होते हैं। क्षितिज पर सूर्यास्त. वह सब जीवन है. जीवन केवल आपकी व्यक्तिगत खुशियों, आपके अपने छोटे परिवार, आपकी विशेष महत्वाकांक्षाओं, आपके यौन सुखों इत्यादि का एक छोटा सा हिस्सा नहीं है। जीवन दुनिया की सारी हँसी, सारे आँसू, दुख, कष्ट, परिश्रम, संघर्ष, संघर्ष और कुछ सुंदर देखने की असाधारण खुशी है। यह सब जीवन है, और हमें इसका हिस्सा बनना चाहिए, इसके बारे में एक-दूसरे के साथ संवाद करना चाहिए, लेकिन सैद्धांतिक रूप से, काल्पनिक या अमूर्त रूप से नहीं, किसी मूर्खतापूर्ण या तथाकथित पवित्र पुस्तक से उद्धृत नहीं करना चाहिए। उसका कोई मूल्य नहीं है. हम सीधे जीवन से निपट रहे हैं, जीवन के बारे में विचारों से नहीं, और दोनों के बीच बहुत बड़ा अंतर है। हम विचारों या सिद्धांतों से नहीं निपट रहे हैं, हम वास्तव में जीवन से निपट रहे हैं - वह जीवन जो इस पूरी पृथ्वी को कवर करता है, रोजमर्रा के अस्तित्व का जीवन, हमारे परिश्रम का जीवन, हमारी महत्वाकांक्षाएं, हमारे धोखे और भ्रष्टाचार। यह एक तथ्य है, और यदि हम इसे राय, विचार या सिद्धांतों के साथ देखते हैं, तो हम इस तथ्य को नहीं देख पाएंगे। जाहिर है, तथ्य के बारे में केवल राय एकत्र करने का कोई मूल्य नहीं है।

इसलिए, हम किस बारे में बात करने जा रहे हैं, इसके बारे में बहुत स्पष्ट होने के साथ-साथ एक-दूसरे के साथ हमारा संबंध भी स्थापित होना चाहिए। इस तरह के एक बड़े दर्शक वर्ग में, किसी व्यक्ति को अकेले पहचानना और उससे बात करना लगभग असंभव लगता है, लेकिन मैं यही करना चाहता हूं। मैं आपमें से प्रत्येक से एक व्यक्ति के रूप में बात करना चाहता हूं, न कि कई अलग-अलग विचारों, कई राय, कई निष्कर्षों वाले एक बड़े दर्शक वर्ग के हिस्से के रूप में। यदि आप और मैं, दो व्यक्तियों के रूप में, सभी स्तरों पर एक-दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं - बौद्धिक, मौखिक, भावनात्मक - तो हम एक-दूसरे को समझने में सक्षम होंगे। निश्चित रूप से यह समझने का कार्य है, है ना? जब हम अपने पूरे अस्तित्व के साथ, न कि केवल अपने एक टूटे हुए हिस्से के साथ, एक-दूसरे की बात सुनते हैं, तो साम्य होता है। तो क्या आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ सुन सकते हैं - बौद्धिक, मौखिक, भावनात्मक, शारीरिक - अपनी सभी इंद्रियों के साथ, सुंदरता के लिए अपनी पूरी भावना और बुराई के बारे में अपनी सारी जागरूकता के साथ? क्योंकि तब साम्य है, तब समझ है।

लेकिन मुश्किल ये है ना कि हमने कभी कोई बात ऐसे नहीं सुनी. हम किसी पक्षी का गाना आंशिक रूप से ही सुनते हैं; हम चंद्रमा को केवल आंशिक रूप से देखते हैं; हम वास्तव में कभी भी किसी पेड़ या फूल को नहीं देखते हैं - हम देखते हैं और अन्य चीजों के बारे में सोचते हुए गुजर जाते हैं। हम कभी भी किसी चीज़ को पूरी तरह से, पूर्णता के साथ नहीं देखते हैं, लेकिन तभी साम्य होता है। इसलिए, हम जिस बारे में बात करने जा रहे हैं, उसके लिए हमारे पूरे अस्तित्व पर संपूर्ण ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि आप केवल मौखिक रूप से, बौद्धिक रूप से सुनते हैं, तो स्पष्ट रूप से कोई संवाद नहीं है; यदि आप केवल भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं तो ऐसा नहीं है। तब आप संवेदना की बाधा या शब्दों, राय या विचारों की बाधा को दूर कर रहे हैं, और इसलिए कोई समझ नहीं है। यदि आप किसी चीज़ को समझना चाहते हैं, तो आपको अपना पूरा अस्तित्व उसमें देना होगा - अपना शरीर, अपना दिमाग, अपना दिल, सब कुछ - और तभी पूरी समझ की संभावना है। लेकिन ऐसा करना बहुत कठिन काम है क्योंकि आपमें से अधिकांश के पास संचित राय, निष्कर्ष, विचार, अनुभव, जो आपने सीखा है, आपके संग्रहीत दुख और सुख हैं - और ये सभी बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं। तो हम जो करने जा रहे हैं वह इन बाधाओं की जांच करना है, न केवल सचेतन बाधाओं की, बल्कि अचेतन बाधाओं की भी, क्योंकि वे संपूर्ण समझ को रोकते हैं।

जैसा कि मैंने कहा, मैं आपसे, व्यक्ति से बात कर रहा हूं, क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपने सोचने के तरीके, अपनी भावना के तरीके, आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, इसका पता लगाएं, क्योंकि यह तत्काल महत्वपूर्ण है एक व्यक्ति बनें. जैसा कि हम दुनिया में देख सकते हैं, वैयक्तिकता को पूरी तरह से कुचला जा रहा है। व्यक्तिगत शब्द से मेरा क्या मतलब है और इससे आपका क्या मतलब है, इस पर हम थोड़ी देर बाद चर्चा करेंगे। हमें सबसे पहले यह देखना चाहिए कि दुनिया भर में क्या हो रहा है, कैसे शक्तियां मन पर कब्जा करने की कोशिश कर रही हैं।

हर जगह यही हो रहा है-मन पर कब्ज़ा करना।
धर्मों ने ऐसा किया है - ईसाई, कैथोलिक, बौद्ध, हिंदू, मुस्लिम, इत्यादि। उन्होंने मन पर कब्ज़ा कर लिया है और उसमें कुछ विचार, राय, विश्वास और सिद्धांत, क्या सच है और क्या झूठ, और ईश्वर क्या है, की कुछ अवधारणाएँ डाल दी हैं। उन्होंने मन पर कब्ज़ा कर लिया है, जो एक स्पष्ट तथ्य है। यदि आप अपने मन का अवलोकन करेंगे, तो आप देखेंगे कि या तो आप पर आपके विशेष धर्म ने कब्जा कर लिया है या आप किसी राजनीतिक नारे या किसी विशेष विचार प्रणाली द्वारा कब्जा कर लिया गया है, इत्यादि। और दुनिया भर में, जैसा कि कोई देख सकता है, अलग-अलग सरकारें विभिन्न माध्यमों से मन पर कब्जा कर रही हैं ताकि व्यक्ति वास्तव में समाप्त हो जाए।

आप वास्तव में एक व्यक्ति नहीं हैं, क्या आप हैं? आप एक धर्म, एक राजनीतिक दल, पुस्तकों, समाचार पत्रों और सभी प्रकार के प्रचार द्वारा प्रत्यारोपित विचारों और विचारों का एक संग्रह मात्र हैं; आप सिर्फ विचारों की एक शृंखला हैं, यादों की एक शृंखला हैं। हम यह भी देख सकते हैं कि इस दुनिया में अति जनसंख्या, अति-संगठन और जन संचार है, और ये तीन चीजें व्यक्ति को नष्ट कर रही हैं क्योंकि वे स्वतंत्रता को नष्ट कर देती हैं। हमें इन असाधारण सूक्ष्म चीज़ों का एहसास नहीं होता जो हमारे चारों ओर घटित हो रही हैं। इस तरह के अत्यधिक जनसंख्या वाले देश में, अंतहीन पीड़ा, भुखमरी और गरीबी है; तो, जाहिर तौर पर व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह है और एक नई व्यवस्था की मांग है जो संतुष्ट करेगी और भोजन, कपड़ा और आश्रय देगी। और इस तरह आपको जनसंचार मिलता है और उससे, अपने दिमाग पर नियंत्रण मिलता है। तो विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से - चेतन और अचेतन - सूक्ष्म प्रचार, मनोवैज्ञानिक दबावों के माध्यम से, मन पर कब्जा किया जा रहा है, जैसा कि पहले भी किया गया है। लेकिन अब यह अधिक कुशलता से, अधिक चालाकी से किया जाता है, क्योंकि वे मनोविज्ञान की सभी तरकीबें जानते हैं, और मनोवैज्ञानिक शक्तियों को यह दिखाने में मदद कर रहे हैं कि मनुष्य के दिमाग पर कैसे कब्जा किया जाए। मैं नहीं जानता कि एक व्यक्ति के रूप में आप इन सबके बारे में जानते हैं या नहीं। मत कहो, "हाँ, लेकिन मैं इसके बारे में क्या कर सकता हूँ?" शायद आप इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते, लेकिन सबसे पहले, जो मायने रखता है वह यह है कि क्या आप वास्तव में इसके बारे में जानते हैं? शायद आप कभी नहीं पूछेंगे कि इसके बारे में क्या करना चाहिए क्योंकि अगर आप एक बार जागरूक हो जाएं कि वास्तव में क्या हो रहा है तो आप सही काम करेंगे। आप कभी नहीं पूछते कि जब आपका सामना किसी खतरनाक सांप से हो तो क्या करें। समस्या यह है कि आप दुनिया में चल रही असाधारण चीजों को नहीं देखते हैं, मन पर कब्ज़ा करने और मन को कुछ विचार प्रणालियों, कुछ धर्मों, कुछ पैटर्न का गुलाम बनाने के प्रयास को नहीं देखते हैं।

तो हमारी समस्या यह है कि व्यक्तिगत ऊर्जा को कैसे मुक्त किया जाए।
क्योंकि जाहिर है, जब आपका मन मुक्त नहीं है, तो कोई मुक्ति नहीं है। वह है

क्यों कोई व्यक्ति कुछ निश्चित विचारों और निष्कर्षों के साथ, एक ही तरह के शब्दों को दोहराते हुए, एक ही तरह से जीवन को देखते हुए, एक ही तरह के आनंद का पीछा करते हुए और एक जैसी निराशाओं में डूबते हुए आदतन कार्य करता है।
आप दिनचर्या के पैटर्न को जानते हैं, और जाहिर तौर पर दिमाग एक मशीन बन जाता है जो एक ही काम बार-बार करता है। ऐसे मन में रचनात्मक विद्रोह नहीं हो सकता। वास्तव में अब जो चाहिए वह अधिक वैज्ञानिक, अधिक कृषि विशेषज्ञ, अधिक पुल निर्माता, इंजीनियर और तकनीशियन नहीं हैं - हालाँकि, निश्चित रूप से, वे आपके पास होंगे क्योंकि एक निश्चित स्तर पर वे स्पष्ट रूप से आवश्यक हैं - लेकिन दुनिया को वास्तव में ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो विस्फोटक रूप से रचनात्मक हैं, जो केवल यांत्रिक नहीं हैं, अंतहीन रूप से दोहराते हैं, एक ही चीज़ का बार-बार अनुकरण करते हैं। इसीलिए यह देश मर गया है। हालाँकि आपके पास नई मशीनें, बाँध, कारखाने और अधिक और बेहतर भोजन की योजनाएँ हो सकती हैं, लेकिन भीतर से आप मर चुके हैं। चूँकि आप एक विस्फोटक व्यक्ति नहीं हैं, इसलिए आपके आस-पास की सभी ताकतें आपके दिमाग को विचार के एक विशेष पैटर्न का गुलाम बना देती हैं। और इसलिए, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक अत्याचार प्रचुर मात्रा में हैं।

मुख्य कठिनाइयों में से एक यह है कि आपने और मैंने कभी इस बात पर विचार नहीं किया कि कोई व्यक्ति वास्तव में क्या है। मैं समुदाय के विपरीत व्यक्ति की बात नहीं कर रहा हूं, या उस असभ्य व्यक्ति की बात नहीं कर रहा हूं जो सिर्फ महत्वाकांक्षा से आगे बढ़ता है; लेकिन क्या हम वास्तव में यह पता लगा सकते हैं कि किसी व्यक्ति से हमारा क्या मतलब है और यह पता लगा सकते हैं कि क्या मन के लिए इन सभी मजबूरियों और प्रभावों से खुद को मुक्त करना और मुक्त होना संभव है? जाहिर है अगर मन स्वतंत्र नहीं है तो रचनात्मकता की कोई संभावना नहीं है; आप केवल एक मशीन के रूप में कार्य करते रहेंगे। तो क्या आपके लिए, अकेले इंसान के लिए, वास्तव में यह जानना संभव है कि एक व्यक्ति होना क्या है - यानी, यह पता लगाना कि क्या मन मुक्त हो सकता है?

अतीत में आपके दिमाग ने खुद को कुछ आदर्शों के साथ पहचाना, जैसे "भारत के लिए स्वतंत्रता" - जिसके लिए आपने खुद का बलिदान दिया, जेल गए, और सभी प्रकार के काम किए। आजकल आप शायद उस तरह का काम नहीं करेंगे क्योंकि आपने न केवल यह देखा है कि आदर्श किस ओर ले जाते हैं - कैसे जेल जाने वाले लोगों को नौकरी नहीं मिलती - बल्कि आपने ऐसे आदर्शों का मिथ्यात्व भी देखा है, क्या आपने नहीं देखा है? इसलिए अब आप ऐसे नेता का पीछा नहीं करेंगे जो हर तरह की बेतुकी बातें करने का वादा करता है क्योंकि आपका दिमाग सोचना, देखना, निरीक्षण करना और पूछताछ करना शुरू कर रहा है। विश्व भर में विचारशील, बौद्धिक मस्तिष्क से आदर्श, बलिदान, स्वप्नलोक गायब होने लगे हैं।

तो, यह देखते हुए कि दुनिया में वास्तव में क्या हो रहा है, समस्या यह है कि क्या यह नहीं है, अपने लिए स्पष्ट रूप से, बहुत गहराई से पता लगाना कि क्या मन मुक्त हो सकता है। और

कोई भी इसे पहले यह पहचान कर ही पता लगा सकता है कि मन समाज का गुलाम है, एक विशेष संस्कृति का उत्पाद है। देखिए, श्रीमानों, आप एक पुल बनाने वाले, एक इंजीनियर, एक वैज्ञानिक, एक कलम चलाने वाले हो सकते हैं - लेकिन आप जो भी हैं, वह आपका पूरा जीवन है, है न? आपके पास कुछ छोटी-मोटी खुशियाँ, कुछ चिंताएँ, परिवार, सेक्स वगैरह हो सकता है, लेकिन अपने अधिकांश जीवन में आप किसी न किसी तरह के तकनीशियन हैं। अब, जब आप उस तकनीक को हटा देते हैं और जब आपका मन आपकी छोटी-छोटी चिंताओं से मुक्त हो जाता है, तो आप क्या हैं? कुछ भी नहीं, है ना? तुम एक खाली खोल हो. और, खाली खोल होने के कारण आप भयभीत होते हैं, इसलिए आप गुरुओं के पीछे भागते हैं, किताबें पढ़ते हैं, सिनेमा जाते हैं, रेडियो चालू करते हैं, या सैकड़ों अन्य काम करते हैं। दिनचर्या में उलझे रहने के बावजूद आप अंदर से महत्वाकांक्षा से भरे हुए हैं और यह सब आपके दिमाग को नष्ट कर रहा है।

तो जाहिर है, जो आवश्यक है वह है मन को मुक्त करना। और यदि आप पहले इसे नहीं समझते हैं तो आप अपने दिमाग को मुक्त नहीं कर सकते। यह एक असाधारण कठिन कार्य है, लेकिन यही वास्तविक ध्यान है। यह वास्तविक अनुशासन है क्योंकि मन की पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए ध्यान की आवश्यकता होती है, और ध्यान ही अपने आप में अनुशासन है। मुक्त होने के लिए आपको मन पर कोई अनुशासन थोपने की जरूरत नहीं है। स्वतंत्रता के बिना आप कभी पता नहीं लगा सकते कि क्या सच है या क्या झूठ; स्वतंत्रता के बिना आप कभी पता नहीं लगा सकते कि ईश्वर है या नहीं। बेशक आप अनुमान लगा सकते हैं, आप विश्वास कर सकते हैं कि ईश्वर है या नहीं है, लेकिन यह सब अपरिपक्व, पूरी तरह से बचकाना है। लेकिन मन को स्वतंत्रता की इस पूरी समस्या और स्वतंत्रता के सभी निहितार्थों की जांच करने के लिए, खोज करने के लिए, स्वयं पता लगाने के लिए, आपको अपना पूरा अस्तित्व इसमें देना होगा; और यदि आप स्वतंत्र नहीं हैं तो आप अपना संपूर्ण अस्तित्व इसमें नहीं दे सकते। तो मन को स्वतंत्र होना चाहिए, और इसके लिए आत्म-ज्ञान की आवश्यकता है - स्वयं को जानने के लिए, मन की सभी प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए, आप क्या सोचते हैं और आपके विचारों के स्रोतों को जानने के लिए - न कि अटकलें लगाना, न इस बात पर जोर देना कि आत्मा है या उच्चतर स्व, जो केवल एक और पलायन है। वास्तव में अपने बारे में - अपनी महत्वाकांक्षाओं के बारे में, अपने लालच के बारे में, अपनी ईर्ष्या, घमंड, संघर्ष, क्रूरता, बिना सोचे-समझे किए गए कृत्यों के बारे में, आप जिस तरह से बात करते हैं, जिस तरह से आप लोगों को देखते हैं - इन सबके बारे में जानना बहुत मुश्किल है। इसका अर्थ है निरंतर सतर्कता, निरंतर निगरानी; इसका मतलब यह जानना है कि आप क्यों पहचानते हैं, आप निंदा क्यों करते हैं, आप आलोचना क्यों करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आपको खुद का विश्लेषण करना होगा क्योंकि विश्लेषण से सच्चाई सामने नहीं आती है। जो चीज़ धारणा उत्पन्न करती है वह वास्तव में अनुभव करना है कि आप क्या हैं।

देखिये श्रीमानों, आप विश्वास करते हैं न कि ईश्वर है। यदि आप एक उचित, सम्मानित, क्षुद्र हिंदू या ईसाई हैं, तो आप भगवान में विश्वास करते हैं क्योंकि आपको बचपन से विश्वास करना सिखाया गया है। अब यह पता लगाना बिल्कुल अलग है

मामला। इसका विश्वास से कोई लेना-देना नहीं है, इसका किताबों से या आपको जो बताया गया है उससे कोई लेना-देना नहीं है। यह जानने के लिए कि क्या वास्तविकता है, मनुष्य को सत्य के बारे में, ईश्वर के बारे में अपने विचारों से मुक्त होना चाहिए। और उस विचार से मुक्त होने के लिए, आपको पहले यह जांचना होगा कि आपके पास वह विचार क्यों है, आपको देखना होगा। जब आप इसे उत्साहपूर्वक, उत्सुकता से देखते हैं, तो स्पष्टीकरण वहां होता है, उत्तर वहां होता है। मैं आपको दिखाऊंगा कि मेरा क्या मतलब है, और मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर सकता हूं।

हममें से अधिकांश लोग सुरक्षा चाहते हैं - आर्थिक, सामाजिक, वैचारिक - और यदि यह नहीं मिल पाती है, तो हम दूसरे स्तर पर, विश्वास के स्तर पर सुरक्षा खोजने का प्रयास करते हैं।
हम दावा करते हैं कि ईश्वर नामक कोई स्थायी इकाई है, और हम उस विचार में आराम, सांत्वना, सुरक्षा महसूस करते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं? क्योंकि भीतर से हम कुछ ऐसा चाहते हैं जो स्थायी हो; अंदर से हम दरिद्र हैं, खाली हैं, इसलिए हम अपने सारे विचार, अपनी भक्ति, अपना प्रेम, अपनी आशाएँ इस ईश्वर नामक चीज़ पर रखते हैं। विचार वास्तविक है या अवास्तविक, हम इसकी जांच नहीं करते क्योंकि यह संतुष्ट करता है, यह हमें सुरक्षा की भावना देता है। इसलिए हम कभी इस बात की जांच नहीं करते कि हम क्या करते हैं और क्यों करते हैं, बल्कि इसे स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि अंदर से हम पूरी तरह से सुरक्षित रहना चाहते हैं।

अब यदि आप इसे देखें, यदि आप इसे वास्तव में बिना विश्लेषण किए समझें, तो आप इस तथ्य को समझ गए हैं कि मन सुरक्षा चाहता है, और यह भी कि सुरक्षा जैसी कोई चीज नहीं है। तब मन स्वतंत्र होता है, और केवल तभी मन खोज सकता है कि क्या ईश्वर है, क्या सत्य है। लेकिन इसके लिए कड़ी मेहनत की ज़रूरत है, है ना? आप जो ईश्वर में विश्वास करते हैं, उनके लिए उस विश्वास से मुक्त होना कठिन काम है, है ना? क्योंकि अगर वह विश्वास चला गया, तो आप कहां हैं? आप खो गए हैं, आप दुखी हैं, आप हवा से उड़े हुए पत्ते की तरह हैं, और आप आश्रय चाहते हैं। क्या शरण में कोई वास्तविकता है, आप पूछताछ नहीं करते हैं, और इसलिए आपको गुरुओं, उद्धारकर्ताओं, मार्गों, प्रणालियों के बारे में यह सब भ्रम है - उस दासता का दुख। तो आप वास्तव में वह सब देखते हैं, क्योंकि मैंने इसे समझाया है, चाहे आपको यह पसंद हो या नहीं। गहन विश्लेषण के बिना आप इसे एक नज़र में, तेज़ी से देख सकते हैं; लेकिन यदि आप केवल किसी विश्वास, किसी निष्कर्ष से चिपके रहेंगे तो आप कुछ भी नहीं देख पाएंगे। तो, मैं जो सुझाव दे रहा हूं वह यह है कि यह पता लगाने के लिए कि क्या सत्य है, क्या वास्तविकता है, क्या कुछ ऐसा है जो मन की सीमा से परे है, सबसे पहले मन को स्वतंत्र होना चाहिए।

यदि आप अपने आप में बहुत गहराई तक जाते हैं - और अंतिम गहराई संपूर्ण ब्रह्मांड है - तो आप उसे खोज लेंगे जो कालातीत है। यदि आप एक विचार, एक ही विचार लेते हैं और उसमें अंत तक, पूरी तरह से, समग्रता से, अपने पूरे अस्तित्व के साथ जाते हैं, तो आप उस तक पहुंच जाएंगे जो कालातीत है - क्योंकि अपने आप में गहराई से उतरने की प्रक्रिया में, मन मुक्त हो रहा है अपने आप। इसका मतलब है कि आपको हर समय अपने विचारों के प्रति जागरूक रहना होगा। लेकिन अधिकांश

दुर्भाग्य से, आप अपने दैनिक जीवन में इतने व्यस्त हैं कि आपके पास किसी और चीज़ के लिए समय नहीं है; दिन के अंत में आप बहुत थके हुए हैं। तो आप सोचते हैं कि एक गोली निगलने से आपको वास्तविकता का पता चल जाएगा, एक विश्वास, जो केवल एक ट्रैंक्विलाइज़र है जो आपको सुला देगा। और समाज चाहता है कि आप सोये रहें क्योंकि समाज खतरनाक आदमी नहीं चाहता, समाज विस्फोटक क्रांतिकारी नहीं चाहता। आर्थिक क्रांतिकारी और सामाजिक क्रांतिकारी-वे केवल प्रतिक्रियावादी हैं। वे संपूर्ण मनुष्य पर विचार नहीं करते; वे केवल एक हिस्सा लेते हैं और उस हिस्से को सबसे महत्वपूर्ण बनाते हैं।

भाग उपयोगी है, लेकिन भाग पर ज़ोर देना, भाग को संपूर्ण का महत्व देना, मनुष्य को कभी ख़ुशी नहीं देगा।

तो, क्या यह हमारी कठिनाइयों में से एक नहीं है, संपूर्ण सत्य को देखना - केवल एक पत्ता, एक शाखा नहीं, बल्कि संपूर्ण वृक्ष। यदि एक बार आप समग्रता को देख लें, तो आप विशेष को भी देख सकते हैं। लेकिन यदि आप संपूर्ण की धारणा के बिना विशेष की जांच करते हैं, तो इसका कोई मतलब नहीं है - और दुनिया में ठीक यही हो रहा है। गाँव के सुधारक, वैज्ञानिक, नौकरशाह, तकनीशियन, राजनेता - वे सभी छोटे सुधारों से, तात्कालिक सुधारों से, आंशिक सुधारों से चिंतित हैं, और वे दुनिया में भयानक गड़बड़ी कर रहे हैं। विश्व अपनी विशालता, अपनी समृद्धि, अपनी सुंदरता के साथ पूरी पृथ्वी है - जिसमें हर छोटा क्षेत्र शामिल है, जिन क्षेत्रों को रूस, अमेरिका, इंग्लैंड, भारत आदि कहा जाता है। लेकिन उसकी समग्रता को देखे बिना, केवल एक छोटे से क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करना और उसके बारे में बहुत उत्साहित होना विनाश की ओर ले जाता है।

तो हमारी समस्या यह है कि समग्रता को कैसे देखा जाए? मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे, महोदय, संपूर्ण से मेरा क्या मतलब है। मेरा तात्पर्य संपूर्ण मनुष्य से है, मनुष्य की समग्रता से, न केवल उसकी छोटी-छोटी सुख-सुविधाओं से, उसके घर की सुरक्षा से, बल्कि उसके संघर्ष, उसकी महत्वाकांक्षाओं, उसकी कुंठाओं, उसकी खुशियों और दुखों की समग्रता से भी। वह सब देखने और उससे आगे जाने के लिए गहन ध्यान की आवश्यकता है। मुझे यकीन है कि आपने कभी भी कुछ भी पूरी तरह से नहीं देखा होगा। तुमने कभी किसी फूल को पूरे अस्तित्व से नहीं देखा है, क्या तुमने? आपने वास्तव में कभी भी अपनी पत्नी, अपने बेटे, अपने पड़ोसी की ओर पूरे अस्तित्व से नहीं देखा है। आप अपनी पत्नी को या तो शारीरिक रूप से देखते हैं या रसोई में उपयोगी प्राणी के रूप में देखते हैं, अपने बच्चों को जन्म देने वाली महिला के रूप में देखते हैं, या एक आरामदेह व्यक्ति के रूप में देखते हैं। आपका पूरा समय ऑफिस में, आपकी रोजी-रोटी कमाने में चला जाता है। आपका पूरा जीवन खंडित टुकड़ों में बंटा हुआ है, और हर समाज, हर प्रणाली, हर समूह उन समस्याओं को हल करने की कोशिश कर रहा है जो टूटे हुए टुकड़ों ने पैदा की हैं। और वह प्रक्रिया केवल और अधिक समस्याओं को जन्म देती है। कृपया इसके प्रति सचेत रहें और आप देखेंगे कि यह कितना सरल है।

सभी राजनेता और सुधारक टुकड़ों के सुधार, बेहतरी के बारे में चिंतित हैं, न कि समग्र के। और आप भी यही चाहते हैं क्योंकि आप अपनी रोजी-रोटी, अपनी सुरक्षा, अपनी निराशाओं और अपनी छोटी-छोटी खुशियों को लेकर बहुत चिंतित हैं।

तो जो मन इतना टूटा हुआ है, जो खंडित है—ऐसा मन समग्र को कैसे देख सकता है? आप समझे श्रीमान, मेरा अभिप्राय क्या है? आंशिक रूप से सोचते हो ना? आप विखंडन में सोचते हैं - आपकी नौकरी, आपका परिवार, आपका घर, आपका राष्ट्र, क्या आप नहीं सोचते हैं? आप कभी भी पृथ्वी के बारे में नहीं सोचते, हमारी पृथ्वी के बारे में, जिसका भारत या आपका देश बस एक छोटा सा, रंगीन हिस्सा है। तुम कभी मनुष्य के बारे में नहीं सोचते, तुम 'मैं' के बारे में सोचते हो। आप अपनी पत्नी के बारे में सोचते हैं लेकिन महिला के बारे में नहीं। आप सद्गुण के बारे में, लालच के बारे में सोचते हैं, लेकिन आप सद्गुण की समग्रता, उसके वास्तविक महत्व के बारे में नहीं सोचते हैं।

तो हमारी सारी सोच खंडित है, और क्या ऐसा मन, जो टूटा हुआ है, जो टुकड़ों में है, समग्र को देख सकता है? यदि आप मेरा प्रश्न समझ गए तो आप उत्तर कैसे देंगे? अब, आप देखिए, हम एक-दूसरे के साथ संवाद कर रहे हैं, हम समस्या को समझने में एक साथ भाग ले रहे हैं। अब आप केवल मेरी बातें नहीं सुन रहे हैं बल्कि हम वास्तव में इस समस्या में एक साथ भाग ले रहे हैं। तो आप मुझसे उत्तर की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं, समाधान की प्रतीक्षा कर रहे हैं; हम मिलकर समस्या साझा कर रहे हैं। क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ?

समस्या यह है: एक मन जो खंडित है, टूटा हुआ है, जो असंबद्ध खंडों में काम करता है - यह भगवान के बारे में सोचता है और नौकर को लात मारता है, यह दयालु होना चाहता है और निर्दयी है - ऐसा मन समग्र को कैसे देख सकता है? मुझे यकीन है कि आपने यह सवाल पहले कभी खुद से नहीं पूछा होगा, लेकिन अब आप खुद से पूछ रहे हैं और आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या है?

मुझे लगता है कि पहली प्रतिक्रिया यह है कि टुकड़ों को एक साथ कैसे लाया जाए, है न? आप सोचते हैं कि सभी टुकड़ों को एक साथ रखकर आप पूर्ण बना सकते हैं। आप सोचते हैं कि आप टूटे हुए टुकड़ों को इकट्ठा कर सकते हैं और उन्हें एक साथ रख सकते हैं और एकीकरण हो जाएगा। लेकिन एकीकरण इस तरह से कभी नहीं होगा क्योंकि जो इकाई इन टुकड़ों को इकट्ठा कर रही है और उनकी जांच कर रही है वह एक टूटी हुई इकाई है। कृपया इसका पालन करें, महोदय। वह मन जो कहता है, "मुझे इन सभी टूटे हुए टुकड़ों को एक साथ लाना होगा और उन्हें एकीकृत करना होगा" वह स्वयं केवल एक टुकड़ा है; यह संपूर्ण मन नहीं है, क्या ऐसा है? जब आप उसकी सच्चाई देखते हैं तो क्या होता है? आप देख रहे हैं कि हम एक-दूसरे के साथ संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं, और जब तक आप अनुभव नहीं कर रहे हैं जैसा कि मैं बात कर रहा हूं, इसका कोई मूल्य नहीं है।

तो, आपका अस्तित्व टुकड़ों में है, और मन भी एक और टुकड़ा है।
अब आप क्या करने जा रहे हो? आपकी क्या प्रतिक्रिया है? मैं आपसे बात कर रहा हूं, व्यक्ति, और मुझे आशा है कि आप अपने मन की जांच कर रहे हैं, जांच कर रहे हैं

आपका जीवन, संपूर्णता को देखते हुए - आपकी पत्नी, आपका बच्चा, समाज, आपकी महत्वाकांक्षा, आपके झगड़े, आपकी चिंताएँ, आपका घमंड, आपकी खुशियाँ - सभी छोटे टुकड़े, टुकड़े, टूटे हुए टुकड़े, और आप कैसे जोर देते हैं एक टुकड़ा और बाकी की उपेक्षा। यह वास्तव में आपका जीवन है, है ना? मैं आपके व्यक्तिगत जीवन के बारे में बात कर रहा हूं। अब, ऐसा जीवन कैसा है, जो सब कुछ टूटा हुआ है, विघटित है, वह जीवन, वह मन कैसा है जो इस विशाल पूर्णता को देख सके - समग्र रूप से जीवन? क्योंकि जब तक आप समग्रता को नहीं देख लेते, खंड का कोई उत्तर नहीं है। यकीनन आपके लिए ये समझना बेहद जरूरी है. जब तक आप अपने जीवन की समग्रता को नहीं देखते, उसके समग्रता को - जिसमें खुशी, आनंद, क्रोध, संकट, दुःख, संघर्ष, सब कुछ शामिल है, और जब तक आप इस पूरी पृथ्वी को एक के रूप में नहीं देखते, न कि केवल भारत नामक टुकड़े के रूप में। या जो कुछ भी हो—खंड से उत्तर खोजने की आपकी खोज का कोई अर्थ नहीं होगा; यह केवल और अधिक दुख को जन्म देगा। केवल वही मनुष्य है जो समग्रता को देखता है जिसके पास शाश्वत उत्तर है। संपूर्ण को देखने की क्षमता ही वास्तविकता है, ईश्वर है, ब्रह्मांड में सब कुछ है।

तो टूटा हुआ मन समग्रता को कैसे देख सकता है? सबसे पहले हमें यह सत्य देखना होगा कि टूटा हुआ मन कभी भी समग्रता को नहीं देख सकता। जैसा कि आप जानते हैं, ग्राम सुधारक, राजनीतिज्ञ, तकनीशियन, गुरु, सत्य के खोजी सभी टूटे हुए हिस्से हैं, प्रत्येक अपने सीमित तरीके से कार्य कर रहा है और अपने हिस्से को महत्व देने की कोशिश कर रहा है; वे कभी सत्य नहीं देख सकेंगे। उन सभी के पास आंशिक उत्तर हैं, लेकिन आंशिक उत्तर सबसे विनाशकारी है। संपूर्ण उत्तर केवल उस मन द्वारा पाया जाता है जो विखंडित नहीं है।

यदि आप देखते हैं कि संपूर्ण प्रतिक्रिया ही एकमात्र उत्तर है, तो आप अब उन सभी चीज़ों पर नहीं लड़ेंगे जिनके लिए आप अभी लड़ते हैं - आपका परिवार, आपकी स्थिति, आपका अधिकार, आपकी भूमि, आपका देश। तो फिर आपने कुछ खोज लिया है, है न?—कि सभी टुकड़ों को एक साथ रखकर एकीकरण नहीं हो सकता; ये टुकड़े, यद्यपि अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण हैं, संपूर्ण उत्तर नहीं हैं; कि गुरु की, गुरु की सारी बातें, सारी मान्यताएं छोटे-छोटे टुकड़ों को महत्व दे रही हैं जबकि उनका कोई महत्व ही नहीं है। तो आप अनुयायी बनना बंद कर देते हैं - जो एक अद्भुत बात है, एक शानदार बात है। इसलिए आप मन की गुणवत्ता को देखना शुरू कर रहे हैं जो मुक्त है। आप अनुभव करना शुरू कर रहे हैं, मन की गुणवत्ता को महसूस करना शुरू कर रहे हैं जो टुकड़ों के स्थान को देखता है लेकिन टुकड़ों को पूरा महत्व नहीं देता है। तो आपका मन पहले से ही खुद को विखंडनों से मुक्त कर रहा है। मुझे आशा है कि आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ अनुसरण कर रहे हैं ताकि आप देख सकें और कह सकें, "बाय जोव, यह कितना सच है!"

जब आप एक सुंदर चंद्रमा देखते हैं, जब आप सुंदर सूर्यास्त देखते हैं, तो आप इसके बारे में बहस नहीं करते हैं; तुम्हारा पूरा अस्तित्व पूरी तरह से उसके साथ है। और वही जब आप इस बात की सच्चाई देखेंगे. जब आप अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ इसके पास पहुंचते हैं - तो यह वहीं है। जब आप देखते हैं कि टुकड़े के माध्यम से कोई उत्तर नहीं है, जब आप वास्तव में इसे गहराई से महसूस करते हैं, जैसे कि जब आप सूर्यास्त को देखते हैं, एक सुंदर फूल, एक प्यारा चेहरा, पंख पर एक पक्षी - तो क्या होता है?

इसलिए जो आवश्यक है वह टुकड़ों को एक साथ रखने का संघर्ष नहीं है, बल्कि इस सच्चाई को देखना है कि टुकड़ों का कोई जवाब नहीं है। और इसकी सच्चाई को देखने का मतलब है अपने आप को पूरी तरह से इसके प्रति समर्पित कर देना। अपने आप को किसी चीज़ के लिए पूरी तरह से समर्पित करके, आप एक संपूर्ण अस्तित्व के रूप में कार्य कर रहे हैं - जो आप तब करते हैं जब आप किसी चीज़ को सत्य के रूप में देखते हैं। इसलिए सत्य की अनुभूति के लिए जुनून, तीव्रता, एक विस्फोटक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, न कि उस मन की जो भय से, अनुशासन से, संस्कारित सद्गुणों की सभी भयावहताओं से कुचला जाता है; ये सभी टूटे हुए दिमाग के आंशिक प्रयास हैं। जब आप इस चीज़ को देखते हैं तो आपका पूरा अस्तित्व इसमें समा जाता है।

केवल वही मन जो भावुक है, जो स्वतंत्रता के जुनून को जानता है, ऐसा मन ही उसे पा सकता है जो असीम है।

26 नवंबर, 1958

बम्बई में दूसरी वार्ता

सीखने के कार्य में विनम्रता की आवश्यकता होती है। एक मन जिसने बहुत सारा ज्ञान संचित कर लिया है, जो सोचता है कि वह जानता है, सीखने में असमर्थ है क्योंकि यह निष्कर्षों, राय, पूर्वाग्रहों, विश्वासों और हठधर्मिता से भरा है; और ऐसे मन में कोई विनम्रता नहीं होती. सीखने के लिए बहुत अधिक विनम्रता की आवश्यकता होती है। यह आवश्यक है कि एक भावना हो, विनम्रता की भावना हो, लेकिन विनम्रता तब अस्वीकार कर दी जाती है जब मन केवल एक मशीन के रूप में कार्य कर रहा है जो ज्ञान इकट्ठा कर रहा है, कार्य करने के लिए अनुभव, जानकारी इकट्ठा कर रहा है, कार्य करने के लिए। ऐसा दिमाग कभी सीख नहीं पाता. जीवन कोई निष्कर्ष नहीं है; यह एक निश्चित बिंदु से दूसरे तक, एक अनुभव से दूसरे अनुभव तक नहीं जाता; यह पूरी तरह से बहुत विशाल है, यह एक जीवित चीज़ है, वास्तव में मन से अथाह है। और जीवन के बारे में जानने के लिए व्यक्ति को प्रचुर मात्रा में विनम्रता की आवश्यकता होती है, लेकिन जब मन केवल एकत्रित हो रहा हो तो विनम्रता से इनकार कर दिया जाता है। वह एकत्रीकरण, वह संचय वह विकृत बिंदु बन जाता है जिससे वह कार्य करता है, जिससे वह सोचता है, जिससे वह कार्य करता है। मैं नहीं जानता कि आपने कभी अपने मन की कार्यप्रणाली पर ध्यान दिया है या नहीं। यदि ऐसा है, तो आपने देखा होगा कि जिस क्षण उसने कुछ भी इकट्ठा कर लिया है - अनुभव, ज्ञान, जानकारी, किसी भी प्रकृति का विचार - तो

इसमें आक्रामक संचय का एक विशेष गुण होता है। जो आदमी यह दावा करता है कि वह जानता है, जाहिर तौर पर वह नहीं जानता है, और जाहिर तौर पर उसमें कोई विनम्रता नहीं है। लेकिन विनम्रता कोई विकसित करने वाली चीज़ नहीं है; यदि आप इसे विकसित करते हैं, तो यह केवल विनम्रता बन जाती है जो घमंड और अहंकार के विपरीत से अधिक कुछ नहीं है। विनम्रता मन की उपज नहीं है, बल्कि सीखने की प्रक्रिया में है, जो एक निरंतर प्रक्रिया है, कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है, उस अवस्था में विनम्रता होती है। विनम्रता कोई लबादा नहीं है जिसे आप ओढ़ सकते हैं, एक परिधान है जिसे आप अपनी सुविधानुसार पहन सकते हैं।

तो मुझे ऐसा लगता है कि सीखना आश्चर्यजनक रूप से कठिन है, साथ ही सुनना भी। हम वास्तव में कभी कुछ नहीं सुनते क्योंकि हमारा मन स्वतंत्र नहीं है; हमारे कान उन चीज़ों से भरे हुए हैं जो हम पहले से ही जानते हैं, इसलिए सुनना असाधारण रूप से कठिन हो जाता है। मेरा मानना है - या यूँ कहें कि यह एक तथ्य है - कि यदि कोई किसी चीज़ को पूरे जोश के साथ, जोश के साथ, जीवंतता के साथ सुन सकता है, तो सुनने का कार्य ही एक मुक्ति कारक है, लेकिन दुर्भाग्य से आप कभी नहीं सुनते हैं, जैसा कि आपने किया है इसके बारे में कभी नहीं सीखा. आख़िरकार, आप तभी सीखते हैं जब आप अपना पूरा अस्तित्व किसी चीज़ के लिए समर्पित कर देते हैं। यहां तक कि जब आप अपना पूरा अस्तित्व गणित को दे देते हैं, तब भी आप सीखते हैं; लेकिन जब आप विरोधाभास की स्थिति में होते हैं, जब आप सीखना नहीं चाहते लेकिन सीखने के लिए मजबूर होते हैं, तो यह महज़ संचय की प्रक्रिया बनकर रह जाती है। सीखना असंख्य पात्रों वाले उपन्यास को पढ़ने जैसा है; इसके लिए आपके पूर्ण ध्यान की आवश्यकता है, न कि विरोधाभासी ध्यान की। यदि आप किसी पत्ते के बारे में सीखना चाहते हैं - वसंत का पत्ता या ग्रीष्म का पत्ता - तो आपको वास्तव में इसे देखना होगा, इसकी समरूपता, इसकी बनावट, जीवित पत्ते की गुणवत्ता को देखना होगा। एक पत्ते में सुंदरता है, ओज है, जीवन शक्ति है।

इसलिए पत्ती, फूल, बादल, सूर्यास्त या किसी इंसान के बारे में जानने के लिए आपको पूरी तीव्रता से देखना होगा।

यदि आप उसी तरह से सुन सकते हैं, न केवल जो कहा जा रहा है, बल्कि अपने आस-पास की हर चीज़ को सुन सकते हैं - एक बच्चे का रोना, आती हुई लहरों की आवाज़, ऊपर से हवाई जहाज का शोर - तो उस गहराई से बाहर निकलें सुनने से बड़ी समझ आएगी। समझ एकत्रित करने से, सूचनाओं के संचय से पैदा नहीं होती है। समझ सदैव तात्कालिक होती है। आप और मैं एक ऐसे विषय पर एक-दूसरे से संवाद कर रहे हैं जो बहुत कठिन है। मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं, न कि एक व्याख्याता के रूप में जो आपको निर्देश दे रहा है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, यह बहुत बेतुका होगा - लेकिन क्या आप और मैं, दो व्यक्तियों के रूप में, इस समस्या पर ध्यान नहीं दे सकते एक साथ? वक्ता समझा सकता है, अधिक सूक्ष्मताएँ, बारीकियाँ, कठिनाइयाँ देख सकता है, लेकिन यदि आप अपनी बात नहीं सुनते हैं

पूरी तरह से, आप अनुसरण नहीं कर पाएंगे, फिर केवल एक मौखिक अर्थ होगा, और शब्दों से कोई भूखा आदमी संतुष्ट नहीं होता है।

तो आप और मैं इसमें एक साथ जाएंगे। आप मुझसे कुछ भी सीखने नहीं जा रहे हैं, आप यहां कुछ इकट्ठा नहीं कर रहे हैं और इसके साथ चले नहीं जा रहे हैं क्योंकि यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह केवल एक संचय होगा, कुछ ऐसा जिसे आप याद रखने के लिए संग्रहीत करेंगे। लेकिन जैसा कि मैं बात कर रहा हूं, कृपया अपने पूरे अस्तित्व के साथ, अपने पूरे ध्यान के साथ, उत्सुकता के साथ सुनें, जैसे कि आप कुछ ऐसा सुनेंगे जो आपको वास्तव में पसंद है - यदि आप कभी भी प्यार करते हैं। क्योंकि यहां आपको कोई निर्देश नहीं मिल रहा है और आप शिष्य नहीं हैं। आप एक कला सीख रहे हैं- और मेरा वास्तव में यही मतलब है। हम एक साथ सीख रहे हैं और इसलिए शिक्षक और शिष्य का विभाजन पूरी तरह से खत्म हो गया है।' किसी को जानने वाला शिक्षक और स्वयं को न जानने वाला मानना अपरिपक्व सोच है। उस रिश्ते में दोनों में विनम्रता की कमी होती है और इसलिए दोनों सीखना बंद कर देते हैं। यह केवल एक मौखिक अभिव्यक्ति नहीं है, एक अस्थायी बयान है, जैसा कि आप स्वयं देखेंगे यदि आप केवल निर्देशों की तलाश किए बिना सुनेंगे कि क्या करना है और क्या नहीं करना है। जीवन को निर्देशों की एक श्रृंखला के माध्यम से नहीं समझा जाता है। आप डायनेमो, रेडियो पर निर्देश लागू कर सकते हैं, लेकिन जीवन कोई मशीन नहीं है; यह एक सदैव जीवित, सदैव नवीनीकृत होने वाली चीज़ है। तो, कोई निर्देश नहीं है - और यही सीखने की सुंदरता है। जो दिमाग छोटा होता है, निर्देश दिया जाता है, सिखाया जाता है, वह केवल याददाश्त को मजबूत करता है - जैसा कि सभी विश्वविद्यालयों और स्कूलों में होता है जहां आप केवल परीक्षा पास करने और नौकरी पाने के लिए याददाश्त विकसित करते हैं। वह बुद्धि प्राप्त करना नहीं है। बुद्धिमत्ता तब आती है जब आप सीख रहे होते हैं। सीखने में कोई अंत नहीं है, और यही जीवन की सुंदरता, जीवन की पवित्रता है। तो आप और मैं सीखने जा रहे हैं, अन्वेषण कर रहे हैं, एक साथ सोच रहे हैं, और कार्रवाई के बारे में एक दूसरे के साथ संवाद कर रहे हैं।

हममें से अधिकांश के लिए जीवन क्रिया है, और क्रिया से हमारा तात्पर्य कुछ ऐसा है जो किया गया है, किया जा रहा है, या किया जाएगा। कर्म के बिना आप जीवित नहीं रह सकते।
क्रिया का अर्थ केवल शारीरिक गति, इधर से उधर जाना ही नहीं है; विचार की क्रिया, एक विचार की क्रिया, एक भावना की क्रिया, पर्यावरण की क्रिया, राय की क्रिया, महत्वाकांक्षा की क्रिया, भोजन और मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी होते हैं - जिनसे हममें से अधिकांश पूरी तरह से अनजान हैं। चेतन मन की क्रियाएं और अचेतन मन की क्रियाएं होती हैं। वहाँ भी है, है ना, धरती में एक बीज की क्रिया, एक आदमी की क्रिया जो नौकरी पाता है और जीवन भर उसी से जुड़ा रहता है, किनारे पर टकराती लहरों की क्रिया है, सुहावने मौसम की क्रिया, वर्षा की; वहाँ पृथ्वी और स्वर्ग की सारी गतिविधियाँ हैं। तो कार्रवाई कुछ असीमित है. कार्रवाई समय के भीतर और बाहर दोनों ही तरह से एक आंदोलन है। मैं हूँ

आपके साथ जोर से सोचना; मैं अन्वेषण कर रहा हूं. मैं यहां एक विचार, कार्य के साथ आया हूं, और मैं आपके साथ इस पर चर्चा करना चाहता हूं, इसमें जाना चाहता हूं, धीरे-धीरे, शांति से इसका अन्वेषण करना चाहता हूं, ताकि आप और मैं इसे एक साथ समझ सकें।

लेकिन जब आप कार्रवाई को केवल इतना कम कर देते हैं, "मुझे क्या करना है?" क्या मुझे ये करना चाहिए और वो नहीं करना चाहिए? क्या यह सही है, या वह?" तब क्रिया बहुत छोटी चीज़ हो जाती है। स्वाभाविक रूप से, हमें समय के भीतर कार्य करना होगा; मुझे घंटे के अंत में रुकना होगा; व्यक्ति को एक निश्चित समय पर कार्यालय, फैक्ट्री जाना होता है, भोजन करना होता है। समय पर कार्रवाई अवश्य होनी चाहिए, और हम यही जानते हैं, है ना? आप और मैं वास्तव में पहचानने योग्य और समय के दायरे में आने वाली कार्रवाई के अलावा और कुछ नहीं जानते हैं। समय से हमारा तात्पर्य कल, आज और कल से है। कल अनंत भविष्य है, कल अनंत अतीत है, और आज वर्तमान है। और भविष्य और अतीत के बीच का संघर्ष एक ऐसी चीज़ को जन्म देता है जिसे हम क्रिया कहते हैं। इसलिए हम हमेशा इस बात की खोज में रहते हैं कि समय के क्षेत्र में, पहचान के दायरे में कैसे कार्य किया जाए। हम हमेशा पूछते रहते हैं कि क्या करना चाहिए, शादी करनी चाहिए या नहीं, प्रलोभन के सामने झुकना चाहिए या विरोध करना चाहिए, प्रयास करना चाहिए और अमीर बनना चाहिए या भगवान की तलाश करनी चाहिए। परिस्थितियाँ, जो वास्तव में समय के समान हैं, मुझे नौकरी स्वीकार करने के लिए मजबूर करती हैं क्योंकि मेरा एक परिवार है और मुझे कमाना है, और इसलिए सारा संघर्ष, उथल-पुथल और मेहनत है। इसलिए मेरा मन समय के भीतर कर्मक्षेत्र में फंस गया है। मैं बस इतना ही जानता हूं, और प्रत्येक कार्य समय के भीतर फिर से अपना परिणाम, अपना फल उत्पन्न करता है। यह एक कदम है, है ना, यह देखने के लिए कि हम समय की कार्रवाई में फंस गए हैं।

फिर तनाव की क्रिया होती है. कृपया इसका पालन करें क्योंकि हम एक साथ इसकी जांच कर रहे हैं। यह दो विपरीतताओं के बीच तनाव से पैदा हुआ कार्य है, जो आत्म-विरोधाभास की स्थिति है - ऐसा करना चाहते हैं और पूरी तरह से विपरीत करते हैं। यह तो आप जानते हैं न? एक इच्छा कहती है, "यह करो," और दूसरी इच्छा कहती है, "यह मत करो।" आप क्रोधित, हिंसक, क्रूर महसूस कर रहे हैं और फिर भी आपका एक हिस्सा आपको दयालु होने, सौम्य होने, अच्छा बनने के लिए कहता है। हममें से अधिकांश के लिए कार्रवाई तनाव, आत्म-विरोधाभास से पैदा होती है। यदि तुम स्वयं को देखो तो तुम इसे देखोगे; और जितना अधिक संघर्ष, विरोधाभास होगा, कार्रवाई उतनी ही कठोर और हिंसक होगी। इस तनाव से बाहर आकर महत्वाकांक्षी व्यक्ति निर्दयतापूर्वक काम करता है - ईश्वर के नाम पर, शांति के नाम पर, या राजनीति के नाम पर, अपने देश के नाम पर, इत्यादि। ऐसा तनाव महान कार्य उत्पन्न करता है; और जो व्यक्ति आत्म-विरोधाभास की पीड़ा में है वह एक कविता, एक किताब, एक पेंटिंग बना सकता है; आंतरिक तनाव जितना अधिक होगा, गतिविधि, उत्पादकता उतनी ही अधिक होगी।

फिर, यदि आप स्वयं में निरीक्षण करेंगे तो संकल्प की क्रिया भी होती है। “मुझे यह करना चाहिए और मुझे वह नहीं करना चाहिए। मुझे खुद को अनुशासित करना होगा. मुझे नहीं

इस तरह सोचो. मुझे अस्वीकार करना होगा, मुझे रक्षा करनी होगी।" इस प्रकार इच्छाशक्ति की सकारात्मक और नकारात्मक क्रिया होती है। मैं सिर्फ वर्णन कर रहा हूं, और यदि आप वास्तव में सुन रहे हैं, तो आप देखेंगे कि वास्तविक समझ की एक क्रिया घटित होती है - जिससे मैं वर्तमान में गुजरने जा रहा हूं। इच्छा की क्रिया, नकारात्मक या सकारात्मक, प्रतिरोध की क्रिया है। तो कार्रवाई की कई किस्में हैं, लेकिन हममें से अधिकांश लोग इच्छा की कार्रवाई को जानते हैं क्योंकि हममें से अधिकांश को कोई बड़ा तनाव नहीं है क्योंकि हम महान नहीं हैं। हम तथाकथित महान लेखक, महान राजनीतिज्ञ या महान संत नहीं हैं; वे वास्तव में बिल्कुल भी संत नहीं हैं क्योंकि उन्होंने स्वयं को जीवन के एक निश्चित रूप के प्रति समर्पित कर दिया है और इसलिए सीखना बंद कर दिया है। हम साधारण लोग हैं, ज्यादा चतुर भी नहीं। कभी-कभी हम किसी पेड़ या सूर्यास्त को देखते हैं और खुशी से मुस्कुराते हैं, लेकिन हममें से अधिकांश के लिए कार्रवाई इच्छाशक्ति से पैदा होती है; हम विरोध कर रहे हैं. वसीयत अनेक इच्छाओं का परिणाम है, है न? आप जानते हैं, क्या आप नहीं, इच्छाशक्ति की क्रिया - "मुझे आलस्य महसूस होता है और मैं थोड़ी देर बिस्तर पर लेटना चाहता हूँ, लेकिन मुझे खुद को अनुशासित करना होगा और उठना होगा; मैं कामुक, कामुक महसूस करता हूं, लेकिन मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए, मुझे इसका विरोध करना चाहिए। इसलिए हम परिणाम उत्पन्न करने के लिए इच्छाशक्ति का प्रयोग करते हैं। हम बस इतना ही जानते हैं; या तो हम झुकते हैं या विरोध करते हैं, और झुकना अपनी पीड़ा पैदा करता है जो वर्तमान में प्रतिरोध बन जाता है। इसलिए हम सदैव अपने भीतर युद्ध में रहते हैं।

तो, इच्छा इच्छा, चाहने और न चाहने का उत्पाद है। यह उतना ही सरल है, हमें इसे जटिल न बनाने दें—इसे दार्शनिकों, सट्टेबाजों पर छोड़ दें। आप और मैं जानते हैं कि इच्छा वह क्रिया है जो दो विपरीत इच्छाओं के क्षेत्र में पैदा होती है, और सद्गुण की हमारी खेती प्रतिरोध की खेती है। ईर्ष्या का विरोध करने को आप सद्गुणी कहते हैं। और यह हमारे भीतर हमेशा चल रहा है - एक इच्छा अपने विपरीत उत्पन्न करती है और विपरीत से एक प्रतिरोध पैदा होता है, और वह प्रतिरोध इच्छाशक्ति है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करेंगे तो आप इसे देखेंगे। और जैसा कि हमें इस दुनिया में आगे बढ़ना है, हम इस इच्छाशक्ति का प्रयोग करते हैं, और यही हम जानते हैं, और इस इच्छाशक्ति के साथ हम कहते हैं कि हमें यह पता लगाना चाहिए कि क्या इससे परे कुछ है। इससे हम स्वयं को अनुशासित करेंगे, स्वयं को प्रताड़ित करेंगे, स्वयं को नकारेंगे —और जितना अधिक आप स्वयं को नकारने में सक्षम होंगे, आप उतने ही अधिक संत माने जाएंगे। आपके सभी संत, आपके गुरु और देवता इसी इनकार, इस प्रतिरोध की उपज हैं; और वह व्यक्ति जो हर चीज को नकारते हुए, अपने द्वारा प्रस्तुत आदर्श का अनुसरण करते हुए उत्साहपूर्वक अनुसरण कर सकता है - उसे आप एक महान व्यक्ति कहते हैं।

तो जब आप कर्म के इस जीवन को देखते हैं - बढ़ते पेड़, पंखों पर पक्षी, बहती नदी, बादलों की आवाजाही, बिजली की, मशीनों की, किनारे पर लहरों की क्रिया - तब आप देखते हैं, करते हैं आप नहीं, वह जीवन स्वयं क्रिया है, अंतहीन क्रिया जिसकी न कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत। यह कुछ ऐसा है जो सदैव गतिशील है, और यह ब्रह्मांड है, ईश्वर है,

आनंद, वास्तविकता. लेकिन हम जीवन के विशाल कार्य को अपने जीवन के छोटे से छोटे कार्य तक सीमित कर देते हैं, और पूछते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, या किसी किताब, किसी प्रणाली का अनुसरण करते हैं। देखिए हमने क्या किया है- हमारा कृत्य कितना क्षुद्र, छोटा, संकीर्ण, कुरूप, क्रूर है। कृपया इसे अवश्य सुनें! मैं और आप भी जानते हैं कि हमें इस दुनिया में रहना है, कि हमें समय के भीतर कार्य करना है, और यह कहना अच्छी बात नहीं है, "जीवन इतना विशाल है, मैं इसे कार्य करने दूंगा;" यह मुझे बताएगा कि क्या करना है।" यह हमें नहीं बताएगा कि क्या करना है। तो आपको और मुझे हमारे मन की इस असाधारण घटना को देखना होगा जो इस क्रिया को कम कर देती है जो कि अनंत, असीमित, गहन है, नौकरी कैसे प्राप्त करें, मंत्री कैसे बनें, सेक्स करें या नहीं - आप सब जानते हैं जीवन के छोटे छोटे संघर्ष. इसलिए हम जीवन के इस विशाल आंदोलन को लगातार ऐसे कार्यों में घटा रहे हैं जो समाज द्वारा पहचाने जाने योग्य और सम्मानजनक बनाए जाएं। आप इसे देखते हैं, श्रीमान, क्या आप नहीं देखते? - वह क्रिया जो पहचानने योग्य है और समय के क्षेत्र के भीतर है, और वह क्रिया जिसकी कोई मान्यता नहीं है और जो जीवन की अंतहीन गति है।

अब सवाल यह है: क्या मैं इस दुनिया में रह सकता हूं, अपना काम कर सकता हूं, इत्यादि, कार्य की इस अनंत गहराई की भावना के साथ, या क्या मुझे अपने क्षुद्र मन के माध्यम से, कार्य को केवल क्षेत्र के भीतर कार्य करने तक सीमित कर देना चाहिए मान्यता, समय के क्षेत्र के भीतर? क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ?

मुझे बात अलग ढंग से रखने दीजिए. प्रेम एक ऐसी चीज़ है जिसे कर्म की दृष्टि से मापा नहीं जा सकता, है न? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं. आप और मैं अब आमने-सामने बात कर रहे हैं और हम दोनों इसमें रुचि रखते हैं और इसका पता लगाना चाहते हैं। हम जानते हैं कि सुंदरता की, प्रेम की यह भावना क्या है। हम प्रेम की ही बात कर रहे हैं, प्रेम की व्याख्या नहीं, मौखिक अभिव्यक्ति नहीं। प्यार शब्द प्यार नहीं है. यद्यपि बौद्धिक मन इसे अपवित्र प्रेम और पवित्र, दिव्य प्रेम में विभाजित करता है, लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन अनुभूति का वह सौन्दर्य जो शब्दों में व्यक्त नहीं होता और मन द्वारा पहचाना नहीं जा सकता - वह बात हम जानते हैं। यह सचमुच अत्यंत असाधारण बात है; इसमें 'अन्य' का कोई भाव नहीं है, और द्रष्टा अनुपस्थित है; केवल अनुभूति है. ऐसा नहीं है कि मैं प्यार महसूस करता हूं और आपका हाथ पकड़कर या यह या वह काम करके इसका इजहार करता हूं। यह है। यदि आपने कभी उस भावना को महसूस किया है, यदि आपने कभी उसे जीया है, यदि आपने उसे समझा है, उसे अभिव्यक्त किया है, उसका पोषण किया है, यदि आपने उसे अपने पूरे अस्तित्व के साथ पूरी तरह से महसूस किया है, तो आप देखेंगे कि उस भावना के साथ कोई भी व्यक्ति उसमें रह सकता है दुनिया। तब आप अपने बच्चों को सबसे शानदार तरीके से शिक्षित कर सकते हैं क्योंकि वह भावना कार्रवाई का केंद्र है, हालांकि समय के क्षेत्र के भीतर। लेकिन उस भावना के न होने पर, उसकी सारी विशालता, जुनून और जोश के साथ, हम प्यार को केवल "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" तक सीमित कर देते हैं और केवल समय के क्षेत्र में कार्य करते हैं, दूसरे का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करते हैं।

तो आप समस्या देखिए. प्यार एक ऐसी चीज़ है जिसका कोई माप नहीं है, जिसे मन द्वारा एक साथ नहीं रखा जा सकता है, जिसे विकसित नहीं किया जा सकता है, कुछ ऐसा है जो भावुक नहीं है, जिसका भावनात्मकता से कोई लेना-देना नहीं है और जिसका अच्छे कार्यों से कोई लेना-देना नहीं है - गाँव का सुधार, इत्यादि। . जब आपको यह एहसास होता है, तो जीवन में हर चीज़ महत्वपूर्ण है, महत्वपूर्ण है; इसलिये तुम वही करोगे जो अच्छा है। लेकिन इसकी सुंदरता, गहराई, शक्ति को जाने बिना हम प्यार को एक ऐसी चीज़ में बदलने की कोशिश कर रहे हैं जिसे मन पकड़ सके और सम्मानजनक बना सके। और यही बात कार्रवाई पर भी लागू होती है, जिसे हम अब समझने की कोशिश कर रहे हैं।

क्रिया एक अंतहीन गति है जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत और जो कारण और प्रभाव से नियंत्रित नहीं होती। क्रिया हर चीज की है - समुद्र की क्रिया, आम के बीज का आम का पेड़ बनना, इत्यादि।

लेकिन मानव मन एक बीज नहीं है, और इसलिए अपनी क्रिया के माध्यम से, वह जो था उसका एक संशोधित पुनरुत्पादन मात्र बन जाता है। हमारे जीवन में परिस्थितियों का निरंतर दबाव रहता है, और यद्यपि परिस्थितियाँ हमेशा बदलती रहती हैं, फिर भी वे हमारे जीवन को आकार देती रहती हैं। जो था, वह नहीं है; जो है, उसे तोड़ा जा सकता है। तो क्या हम जीवन की इस विशाल क्रिया को महसूस नहीं कर सकते, महसूस नहीं कर सकते, जो पृथ्वी में एक छोटे से कीड़े की गति से लेकर अनंत आकाश तक फैली हुई है? यदि आप वास्तव में जानना चाहते हैं कि यह असाधारण चीज़, यह क्रिया क्या है, तो आपको इससे गुजरना होगा, आपको समय रहते इस क्रिया की बाधा को तोड़ना होगा। तब आप इसे जान लेंगे, फिर उस भावना के साथ आप कार्य कर सकते हैं, आप अपनी नौकरी पर जा सकते हैं और वे सभी चीजें कर सकते हैं जो समय के क्षेत्र में पहचाने जाने योग्य हैं। लेकिन समय के पहचानने योग्य क्षेत्र के भीतर से, आप दूसरे को नहीं ढूंढ सकते। जो चाहो करो, क्षुद्र के माध्यम से तुम कभी भी अथाह को नहीं पा सकोगे।

यदि आपने एक बार वास्तव में इस सत्य को देख लिया है - कि समय के क्षेत्र के भीतर काम करने वाला मन कभी भी उस शाश्वत को नहीं समझ सकता है, जो समय से बाहर है - यदि आपने वास्तव में इसे देखा है, महसूस किया है, तो आप देखेंगे कि वह मन जो इसके बारे में अटकलें लगाता है प्यार करते हैं और इसे शारीरिक, अपवित्र, दैवीय या पवित्र के रूप में विभाजित करते हैं, कभी भी दूसरे को नहीं पा सकते। लेकिन अगर आप इस आश्चर्यजनक क्रिया को महसूस कर सकते हैं - सितारों, जंगलों, नदियों, समुद्र, जानवरों और मनुष्यों के तरीकों की गति - अगर आप वसंत ऋतु में एक कोमल पत्ते की सुंदरता, उसकी अनुभूति को जान सकते हैं जैसे आकाश से वर्षा होती है, तब उस अपार अनुभूति के साथ आप समय के क्षेत्र में, मान्यता के क्षेत्र में कार्य कर सकते हैं। लेकिन समय के क्षेत्र के भीतर की कार्रवाई कभी भी दूसरे की ओर नहीं ले जा सकती। यदि आप वास्तव में इसे समझते हैं, मौखिक रूप से नहीं, बौद्धिक रूप से, यदि आप वास्तव में इसके महत्व को महसूस करते हैं, इसे समझते हैं, इसकी असाधारण सुंदरता और सुंदरता को देखते हैं,

तब आप देखेंगे कि वसीयत का इसमें कोई स्थान ही नहीं है। इच्छाशक्ति से उत्पन्न होने वाली सभी क्रियाएं अनिवार्य रूप से आत्म-केंद्रित, अहंकेंद्रित होती हैं, लेकिन ऐसी क्रिया पूरी तरह से गायब हो जाएगी जब आप इसे पूरी तरह से समझ लेंगे, जब आप वास्तव में महसूस करेंगे कि आप इसमें आगे बढ़ रहे हैं, अपने मन के साथ इसमें पूरी तरह से आगे बढ़ रहे हैं। तब आप देख सकते हैं कि इच्छा की कोई आवश्यकता ही नहीं है; एक बिल्कुल अलग आंदोलन है. तब वसीयत रस्सी के एक गांठदार टुकड़े की तरह होती है; इसे पूर्ववत किया जा सकता है. वह इच्छा खो सकती है; लेकिन दूसरे को खोया नहीं जा सकता, उसे बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता।

इसलिए, यदि आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ सुन रहे हैं, अपने पूरे अस्तित्व के साथ सीख रहे हैं, जिसका अर्थ है गहराई से महसूस करना, न कि केवल बौद्धिक रूप से शब्दों को सुनना, तो आप सीखने की असाधारण गति को महसूस करेंगे, भगवान के बारे में - हाथ से बनाए गए भगवान को नहीं या मन से, मंदिर, मस्जिद या चर्च के भगवान से नहीं, बल्कि इस अनंत अथाह चीज़ से, कालातीत से। तब आप देखेंगे कि हम इस दुनिया में आश्चर्यजनक शांति के साथ रह सकते हैं; तब प्रलोभन जैसी कोई चीज़ नहीं है, पुण्य जैसी कोई चीज़ नहीं है, क्योंकि पुण्य केवल समाज की चीज़ है। जो व्यक्ति यह सब समझता है, जो इसे जीता है, वह व्यवस्थित है, आंतरिक रूप से शांत है; उसका कार्य पूरी तरह से अलग, अधिक प्रभावी, आसान और स्पष्ट है क्योंकि इसमें कोई आंतरिक भ्रम, विरोधाभास नहीं है।

इसलिए, निष्कर्ष पर टिके रहने वाला मन कभी विनम्र नहीं होता। एक व्यक्ति जिसने सीखा है वह अपने ज्ञान का बोझ ढो रहा है, लेकिन एक व्यक्ति जो सीख रहा है उसके ऊपर कोई बोझ नहीं है और इसलिए वह पहाड़ की चोटी तक जा सकता है। दो इंसानों के रूप में, आपने और मैंने कुछ ऐसी बात की है जिसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता है; लेकिन एक-दूसरे को सुनकर, इसकी खोज करके, इसे समझकर, हमने कुछ असाधारण पाया है, कुछ ऐसा जो अविनाशी है। जीवन से चिपका हुआ 'मैं' तक सीमित जीवन नाशवान है, लेकिन यदि आप उस असाधारण जीवन को शुरू से अंत तक देख सकते हैं, यदि एक बार आप उसमें चले गए, उसे महसूस किया, उसके झरने का आनंद लिया, तो आप एक साधारण जीवन जी सकते हैं जीवन को बिल्कुल नयेपन के साथ, आप वास्तव में जी सकते हैं। सम्मानित व्यक्ति जीवित नहीं है - वह पहले ही मर चुका है - और जीवन कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मृत व्यक्ति आमंत्रित कर सके। जीवन में प्रवेश करना और भूल जाना है क्योंकि उस जीवन को जीने को याद रखने के लिए कोई 'मैं' नहीं है। यह केवल तभी होता है जब मन पूर्ण विनम्रता की स्थिति में होता है, जब इसका अपने छोटे से अस्तित्व के लिए कोई उद्देश्य नहीं होता है, जब यह एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर, अनुभव से अनुभव की ओर, ज्ञान से ज्ञान की ओर नहीं जाता है - केवल ऐसा ही होता है मन जो पूरी तरह से, पूरी तरह से, पूरी तरह से गैर-खोज है, अस्तित्व की अनंत शुरुआत और अनंत अंत को जानता है।

30 नवंबर, 1958

बम्बई में तीसरी वार्ता

संचार के सभी रूपों में शब्द, स्वाभाविक रूप से, बहुत महत्वपूर्ण हैं।
वे तब और अधिक हो जाते हैं जब आप अमूर्त और जटिल समस्याओं से निपट रहे होते हैं क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक शब्द का अपनी समझ के अनुसार अनुवाद करेगा। इसलिए यह बहुत कठिन है जब कोई जीवन की असाधारण समस्या से उसकी सभी जटिलताओं और सूक्ष्मताओं के साथ निपटना चाहता है। शब्द वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाते हैं यदि हम उनके शब्दकोश अर्थ को बनाए रख सकें और खुद को केवल परिभाषा से परे जाने की अनुमति दे सकें, किसी भी निष्कर्ष से परे जा सकें जो एक शब्द व्यक्त कर सकता है।

उदाहरण के लिए स्वतंत्रता शब्द को लीजिए । प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशेष आवश्यकता, मांग, दबाव और भय के अनुसार इसका अनुवाद करेगा। यदि आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं, तो आप उस शब्द का अनुवाद अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने, अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक चीज़ के रूप में करेंगे। कुछ परंपराओं से बंधे व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता एक ऐसा शब्द है जिससे डरना चाहिए। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो अपनी सभी इच्छाओं और चाहतों में खुद को शामिल करता है, यह शब्द आगे भी भोग की संभावना बताता है। इसलिए शब्दों का हमारे जीवन में असाधारण महत्व है, और मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी महसूस किया है कि शब्द का महत्व कितना गहरा और गहरा है। ईश्वर, स्वतंत्रता, साम्यवादी, अमेरिकी, हिंदू, ईसाई इत्यादि शब्द - ये शब्द हमें न केवल तंत्रिका संबंधी रूप से प्रभावित करते हैं, बल्कि वे मौखिक रूप से हमारे अस्तित्व में कंपन करते हैं, कुछ प्रतिक्रियाएं लाते हैं । मुझे नहीं पता कि आपको यह सब एहसास है या नहीं और, अगर आपको इसका एहसास होता है, तो आप जान जायेंगे कि मन को शब्द से मुक्त करना बहुत मुश्किल है। जैसा कि मैं आपके साथ एक बहुत ही जटिल समस्या पर बात करना चाहता हूं, मुझे लगता है कि हमें इस पर झिझक और मन की स्पष्टता के साथ आना चाहिए जो न केवल शब्दों और उनके महत्व को समझता है, बल्कि जो शब्द से परे जाने में भी सक्षम है।

आप देख सकते हैं कि इस समय दुनिया भर में क्या हो रहा है।
जहाँ भी अत्याचार होते हैं, वहाँ स्वतंत्रता से इनकार किया जाता है; जहां भी चर्च का, धर्म का शक्तिशाली संगठन है, स्वतंत्रता फिर से अस्वीकार कर दी जाती है।
हालाँकि वे इस शब्द का उपयोग स्वतंत्रता करते हैं, धार्मिक और राजनीतिक दोनों संगठन उस स्वतंत्रता से इनकार करते हैं। यह भी देखा जा सकता है कि जहां अधिक जनसंख्या है, वहां स्वतंत्रता अनिवार्य रूप से कम होनी चाहिए, और जहां भी अतिसंगठन, जनसंचार है, वहां स्वतंत्रता से इनकार किया जाता है। तो यह सब देखकर, आप या मेरे जैसा व्यक्ति स्वतंत्रता की व्याख्या कैसे कर सकता है? इस दुनिया में रहना, ऐसे समाज में रहना जो पूरी तरह से संगठनों से बंधा हुआ है, जिसमें तकनीशियन बहुत महत्वपूर्ण हैं, मन गुलाम बन जाता है

तकनीक का एक निश्चित रूप, एक विधि, कुछ निश्चित तरीके। तो हम किस स्तर पर, कितनी गहराई तक उस स्वतंत्रता शब्द का अनुवाद करते हैं? यदि आप अपने कार्यालय से बाहर चले गए, तो इसका मतलब स्वतंत्रता नहीं होगा; आप बस अपनी नौकरी खो देंगे। यदि आप सड़क के गलत तरफ गाड़ी चलाते हैं, तो पुलिसकर्मी आपके पीछे पड़ जाएगा और आपकी स्वतंत्रता कम हो जाएगी। यदि आप वही करते हैं जो आपको पसंद है, या यदि आप अमीर हो जाते हैं, तो राज्य आप पर नियंत्रण रखेगा। हमारे चारों ओर प्रतिबंध, कानून, परंपराएं, विभिन्न प्रकार की जबरदस्ती और वर्चस्व हैं और ये सभी स्वतंत्रता को रोक रहे हैं।

तो अगर एक इंसान के तौर पर आप इस समस्या को समझेंगे, जो एक वास्तविक समस्या है, तो आप किस गहराई से पूछताछ कर रहे हैं? या आप बिल्कुल भी चिंतित नहीं हैं? मुझे डर है कि हममें से अधिकांश चिंतित नहीं हैं; हम अपनी रोज़ी रोटी, अपने परिवार, अपनी छोटी-छोटी परेशानियों, ईर्ष्याओं, महत्वाकांक्षाओं से चिंतित हैं, लेकिन हमें व्यापक, बड़ी समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। और केवल समस्या के समाधान की चिंता से कोई समाधान नहीं निकलेगा।

आपको कोई तात्कालिक उपाय मिल सकता है, लेकिन यह केवल अन्य समस्याएं ही पैदा करेगा, जैसा कि सभी जानते हैं। तो आप आज़ादी शब्द पर किस स्तर पर, कितनी गहराई से प्रतिक्रिया देते हैं?

निश्चित रूप से, किसी को भी यह एहसास होना चाहिए कि शब्द कोई चीज़ नहीं है। सत्य शब्द सत्य नहीं है. लेकिन हममें से अधिकांश के लिए यह शब्द ही पर्याप्त है; हम शब्द से आगे नहीं जाते और इसकी जांच नहीं करते कि शब्द के पीछे क्या है। कृपया इस पर विचार करें. मुस्लिम शब्द ही आपको उस इंसान को देखने से रोकता है जो उस शब्द का प्रतिनिधित्व करता है। उस शब्द के प्रति घबराहट भरी प्रतिक्रिया और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया बहुत गहरी होती है, और यह आपके अंदर सभी प्रकार के विचारों, विश्वासों, पूर्वाग्रहों को जागृत करती है। लेकिन अगर कोई बहुत गहराई से सोच सके, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि उसे शब्द को वास्तविक चीज़ से अलग करना होगा। हमारे रिश्तों में बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी इस बात में निहित है कि हम शब्दों को गलत महत्व देते हैं। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप और मैं, दो व्यक्तियों के रूप में, सही संचार स्थापित करें ताकि हम एक ही समय में एक-दूसरे को समान स्तर पर समझ सकें। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं, लेकिन जब आप किसी से प्यार करते हैं, तो आप दोनों के बीच संचार तुरंत होता है। इसी प्रकार, यदि हम ऐसा संवाद स्थापित कर सकें, तो मुझे लगता है कि हम इस अत्यंत जटिल समस्या का पता लगाने में सक्षम होंगे। संचार स्थापित करने में सबसे बड़ी कठिनाई शब्द है, और यदि हमें एक-दूसरे के साथ संवाद करना है, साझा करना है, उस समस्या में भाग लेना है जिसे हम खोलना, उजागर करना, चर्चा करना चाहते हैं तो आपको और मुझे शब्द को भेदना होगा और उससे आगे जाना होगा।

समस्या मन है. अब, जब मैं मन शब्द का उपयोग करता हूं तो मेरे लिए इसका अर्थ आपके लिए जो अर्थ है उससे बिल्कुल अलग हो सकता है। आपने कभी इस बारे में नहीं सोचा कि मन क्या है, आपने कभी मन की संपूर्ण सामग्री का अन्वेषण नहीं किया है। मन स्पष्ट रूप से एक अवस्था है, एक अस्तित्व है, एक परिपूर्णता है, एक गहराई है, एक विशालता है, लेकिन वे सभी शब्द वास्तविक स्थिति का संकेत नहीं देते हैं, वे केवल वर्णनात्मक शब्द हैं, और अवस्था शब्द नहीं है। मुझे आशा है कि आप अनुसरण कर रहे हैं। यह बहुत कठिन नहीं है, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे आपको और मुझे स्पष्ट होना चाहिए। इसलिए हमें यह जांचना चाहिए कि मन तक कैसे पहुंचा जाए। क्या मन मस्तिष्क है, और क्या मन मस्तिष्क से अलग है, क्या मन मस्तिष्क की उपज है? कृपया इसे देखें.

कृपया मेरे साथ जांच करें.

हम देख सकते हैं कि मस्तिष्क संवेदनाओं का प्रतिक्रिया केंद्र है। नसें संवेदनाओं को मस्तिष्क तक ले जाती हैं, और वही नसें खुशी और दर्द दोनों के आवेग को ले जाती हैं। वह मस्तिष्क, संवेदनाओं के माध्यम से, गर्म और ठंडे, सुख और दर्द, इत्यादि के बीच अंतर करना शुरू कर देता है। उस विभेद से विचार उत्पन्न होता है। सोचने की प्रक्रिया स्मृति की प्रतिक्रिया है, और स्मृति मन का हिस्सा है। मैं बहुत ध्यान से समझाने जा रहा हूं इसलिए कृपया फॉलो करें। मुझे साँप ने काट लिया है, एक अनुभूति होती है जो दर्दनाक होती है, और एक स्मृति होती है। इसलिए उसके बाद मुझे हमेशा सांपों से डर लगता है।' मस्तिष्क के एक हिस्से ने उस स्मृति को बरकरार रखा है, इसलिए जब भी मैं सांप देखता हूं, मैं कांप उठता हूं। या, मैं आपसे पूछता हूं कि आप कहां रहते हैं। आप प्रश्न से परिचित हैं और आपकी प्रतिक्रिया तत्काल है; आपको इसके बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं है। नसें उस प्रश्न को मस्तिष्क तक ले जाती हैं, और मस्तिष्क, जहां आप रहते हैं वहां की यादें संग्रहीत करके, तुरंत उत्तर देता है। यदि मैं आपसे कोई ऐसा प्रश्न पूछता हूं जो थोड़ा अधिक जटिल है, तो प्रश्न और उत्तर के बीच एक अंतराल होता है, एक समय अंतराल होता है। उस अंतराल में मस्तिष्क स्मृति में देखता है और उत्तर ढूंढने में थोड़ा समय लेता है। तो उस अंतराल में, समय अंतराल के दौरान, सोचने की प्रक्रिया चल रही है। क्या ऐसा नहीं है? मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम क्या चाहते हो. आप इतनी सारी चीज़ें चाहते हैं कि आप झिझकते हैं। उत्तर देने से पहले आप चारों ओर देखते हैं, खोजते हैं, जांच करते हैं, और वह जांच अंतराल का कारण बनती है क्योंकि आप वही सोच रहे हैं जो आप चाहते हैं। फिर मैं आपसे एक और भी जटिल प्रश्न पूछता हूँ, और क्या होता है? कृपया अपना मन देखें. फिर से शब्द प्रश्न के कंपन को स्थापित करते हैं और मस्तिष्क संदेश के साथ प्रतिक्रिया करता है, “मुझे तत्काल उत्तर नहीं मिल सकता है; मुझे स्मृति में आगे देखना चाहिए। तो उस अंतराल के दौरान आप तेजी से सोच रहे होते हैं और प्रश्न और उत्तर के बीच का अंतर बहुत अधिक होता है। और अगर मैं आपसे कोई अत्यंत कठिन प्रश्न पूछता हूं, तो कई सेकंड तक स्मृति में खोज करने के बाद, आप अंततः कहते हैं, "मुझे नहीं पता।" लेकिन "मुझे नहीं पता" का मतलब यह नहीं है कि आप अभी भी चारों ओर देख रहे हैं,

उत्तर की आशा करना, स्वयं से या किसी और से उत्तर की प्रतीक्षा करना। अब "मुझे नहीं पता" की स्थिति है जिसमें न इधर-उधर देखना है, न उत्तर की प्रतीक्षा करनी है, बल्कि हम वर्तमान में उस पर आएंगे।

सबसे पहले हमें सोचने की प्रक्रिया को समझना होगा। यह एक चुनौती और एक प्रतिक्रिया है, है ना? यदि चुनौती परिचित है, तो प्रतिक्रिया तत्काल होती है; यदि चुनौती परिचित नहीं है, तो प्रतिक्रिया में थोड़ा समय लगता है, और उस समय के दौरान आप सोच रहे होते हैं, जिसका अर्थ है कि पूरा तंत्र काम कर रहा है - न केवल मौखिक कंपन बल्कि स्मृति भी - और फिर आप उत्तर देते हैं। हम हर समय यही तो कर रहे हैं, है न?

स्मृति संग्रहीत अनुभव, परंपरा, ज्ञान का संचय है, और स्मृति हमेशा एकत्रित होती रहती है और हमेशा प्रतिक्रिया करती रहती है।
आप एक ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसे आप पहचानते हैं और आप प्रतिक्रिया देते हैं, लेकिन यदि आप उस व्यक्ति को नहीं जानते हैं तो कोई मान्यता नहीं है, कोई प्रतिक्रिया नहीं है। यह कोई जटिल बात नहीं है, यह बहुत सरल है, जैसा कि आप अपने मन का निरीक्षण करके देख सकते हैं। हम देख सकते हैं कि यह तथाकथित मस्तिष्क कई प्रकार की संवेदनाओं पर प्रतिक्रिया करता है, और जाहिर तौर पर अगर इसे हर प्रतिक्रिया और क्रिया का जवाब देना है तो इसे असाधारण रूप से संवेदनशील, सतर्क, महत्वपूर्ण और मजबूत होना चाहिए। हममें से अधिकांश लोग संवेदनशीलता के साथ प्रतिक्रिया नहीं करते हैं क्योंकि चिंता, संघर्ष, ज्यादतियों, भोग-विलास आदि के कारण मस्तिष्क को सुस्त बना दिया गया है। इसका केवल एक छोटा सा भाग ही कार्य करता है।

तो हम देखते हैं कि सोचने की प्रक्रिया स्मृति की प्रतिक्रिया है, जो हर समय एक मशीन की तरह काम करती रहती है। तो कोई पूछता है, "स्वतंत्रता का क्या अर्थ है?" मुझे आशा है कि आप इस प्रश्न को समझ गए हैं और मैं स्वयं को स्पष्ट कर रहा हूँ। यदि मेरा पूरा दिमाग समय का परिणाम है, परंपरा का परिणाम है, विभिन्न संस्कृतियों, अनुभवों, संस्कारों का परिणाम है, हमेशा परिवार, जाति, विश्वास की पृष्ठभूमि रखता है, हमेशा ज्ञात के क्षेत्र में काम करता है - तो स्वतंत्रता कहां है ? यदि मैं, जैसा मैं हूं, हर समय अपने मन की सीमाओं के भीतर घूम रहा हूं, जो यादों से भरा है और समय की उपज है, तो मन खुद से परे कैसे जा सकता है? ऐसे मन के लिए आज़ादी शब्द का कोई मतलब नहीं है, है न, क्योंकि यह आज़ादी को केवल एक और मांग में बदल देता है, कहता है, "मैं कैसे आज़ाद हो सकता हूँ?" कृपया इसका ध्यानपूर्वक पालन करें और आप देखेंगे। मुझे जाने-अनजाने यह एहसास होता है कि मेरा जीवन बहुत संकीर्ण है; वहाँ सतत चिंता, संघर्ष, भय, दुख, दुःख इत्यादि है; और इसलिए मैं कहता हूं, "मुझे स्वतंत्र होना चाहिए, मुझे मानसिक शांति होनी चाहिए, मुझे इस सीमा से बचना चाहिए।"

हममें से प्रत्येक व्यक्ति यही मांग कर रहा है। बाह्य रूप से, विभिन्न अत्याचारी सरकारों के अधीन कोई स्वतंत्रता नहीं है; तुम्हें बताया जाता है कि क्या करना है और तुम उसे करते हो, और अंदर ही अंदर वही समस्या बनी रहती है। यहां, एक तथाकथित लोकतांत्रिक देश में, आप बाह्य रूप से कमोबेश स्वतंत्र हैं - कमोबेश - लेकिन

भीतर से आप एक कैदी हैं, और आप स्वतंत्रता के बारे में यह प्रश्न पूछ रहे हैं।
किसी चर्च या समाज का संगठन जितना बड़ा होगा और जनसंचार के साधन और दक्षता जितनी अधिक होगी, संघर्ष और उथल-पुथल उतनी ही अधिक होगी। इसलिए हम हमेशा अपने पर्यावरण और अपने भीतर संघर्ष में रहते हैं। संघर्ष निरंतर चल रहा है और विरोधाभास और दुख है: "मेरी पत्नी मुझसे प्यार नहीं करती, मैं किसी और से प्यार करता हूं, मृत्यु है, मुझे विश्वास है, मुझे विश्वास नहीं है" - हमेशा अशांति और बेचैनी होती है, जैसे कि

समुद्र।

क्या आपने कभी समुद्र देखा है? कुछ ऐसे दिन होते हैं जब हवा शांत होती है, हवा का कोई झोंका नहीं होता और समुद्र तारों को प्रतिबिंबित करता है। वहां शांति है, सांस फूल रही है, शांति का एहसास है, लेकिन नीचे गहरी धाराएं, गहरी हलचलें हैं; इसका पानी एक विशाल क्षेत्र को कवर करता है और वास्तव में यह कभी भी शांत नहीं होता है; यह सदैव गतिमान है, बेचैनी से गतिमान है; आने वाली हर सांस शांति, स्थिरता को तोड़ देती है। मन भी वैसा ही है. हम सदैव अशांत रहते हैं, और इस बात से अवगत होकर, हम कहते हैं, “मुझे शांति दो। मुझे ईश्वर को खोजने दो. मैं इस दुख से बचना चाहता हूं और यह पता लगाना चाहता हूं कि क्या वहां शाश्वत शांति, आनंद है।'' हम बस यही चाहते हैं, और यही कारण है कि हम इतने भयावह संघर्ष में हैं, विरोधाभास के इतने तनाव में हैं, एक इच्छा दूसरी इच्छा से जूझ रही है। महत्वाकांक्षा निराशा और खालीपन को जन्म देती है और फिर पूरा करने की यह इच्छा फिर से निराशा की छाया लाती है। केवल हमारी स्थिति का वर्णन करने से कोई फायदा नहीं है - हम इसके बारे में जानते हैं, क्या हम नहीं हैं? - भ्रम, उथल-पुथल, दुख, शोक की स्थिति से लेकर क्षणभंगुर खुशियों की स्थिति तक, कभी-कभी आकाश की ओर देखने की स्थिति तक और कह रहा है, "कितना सुंदर, कितना अद्भुत!" और कभी-कभी प्यार की भावना को जानना। लेकिन यह सब अस्थायी है, क्षणभंगुर है, यह सब परिवर्तनशील है। तो मन कहता है, "क्या शांति की कोई स्थायी स्थिति नहीं है?" और यह ईश्वर के, सत्य के विचार को स्थायित्व के साथ निवेश करने के लिए आगे बढ़ता है। और सभी धर्म किसी विचार को स्थायित्व प्रदान करने को प्रोत्साहित करते हैं। दुनिया का हर धर्म कहता है कि एक स्थायित्व है, एक आनंद है जिसे आपको अवश्य खोजना चाहिए, और इसके लिए एक रास्ता है। वे कहते हैं कि उथल-पुथल से वास्तविकता तक का एक रास्ता है। आप समझे श्रीमान? जिस क्षण आप एक ऐसे राज्य की तलाश कर रहे हैं जो स्थायी होगा, आपको इसके लिए एक रास्ता खोजना होगा - एक विश्वास, एक विधि, एक प्रणाली, एक अभ्यास। अब मेरे लिए न तो कोई स्थायित्व है और न ही कोई विधि। वास्तविकता की खोज का कोई तरीका नहीं है. आइए इसमें जाकर देखें.

मैं भय से भरा हुआ हूँ - मृत्यु का भय, प्रेम के संबंध में भय, लोकमत का भय, बहुत सी चीज़ों का भय। मुझे पता है कि मैं चिंतित हूं, भयभीत हूं; और इसलिए मैं कहता हूं कि मुझे एक ऐसा तरीका खोजना होगा जो मुझे डरने से बचने में मदद करेगा। यह क्या है

हम सभी चिंतित हैं, क्या ऐसा नहीं है? इसलिए मैं किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाता हूं जो कहता है कि ईश्वर है, आनंद है, और वह मुझे बताता है कि इसे पाने के लिए क्या करना चाहिए, और मैं स्वीकार करता हूं कि यहां से वहां जाने के लिए एक विधि, एक रास्ता है। मैं उस विचार का पता लगाना चाहता हूं, लेकिन यदि आप वास्तव में इसकी जांच करेंगे, तो आप देखेंगे कि इसका कोई मतलब नहीं है। तो आप और मैं इसे एक साथ देखने जा रहे हैं, लेकिन आप इसे नहीं देख सकते हैं यदि आप इस विचार पर कायम हैं कि एक रास्ता है, यदि आप किसी विधि, प्रणाली या अपनी सदियों की परंपरा से मंत्रमुग्ध हैं। उस सब को त्यागने और किसी चीज़ को अलग ढंग से परखने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा, बहुत अधिक जोश की आवश्यकता होती है। अब हम यह जांच नहीं कर रहे हैं कि आनंद की कोई स्थायी स्थिति है या नहीं; हम "रास्ता" नामक चीज़ की जांच कर रहे हैं, जो लालच से गैर-लोभ की ओर, डर से गैर-भय की ओर, ईर्ष्या से गैर-ईर्ष्या की ओर, क्षणभंगुरता से स्थायित्व की ओर जाने की विधि है। दूसरे शब्दों में, हम जानना चाहते हैं कि एक निर्दिष्ट दिशा में एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक कैसे पहुंचा जाए। क्या ऐसा नहीं है? अब अगर मैं एक इंजीनियर बनना चाहता हूं, तो एक निर्दिष्ट दिशा है, एक विधि है - मुझे उच्च गणित इत्यादि का अध्ययन करना होगा, और मुझे पता है कि मुझे कैसे आगे बढ़ना है।

अगर मैं कोई भाषा सीखना चाहता हूं, तो मुझे पता है कि मुझे पहले पाठ से लेकर पंद्रहवें पाठ तक का अध्ययन करना होगा और इसी तरह आगे भी। यानी, किसी तकनीक को सीखने में मैं एक बिंदु से एक बिंदु की ओर बढ़ता हूं और उस समय अंतराल के दौरान मैं सीख रहा होता हूं, और एक निश्चित अवधि के अंत में, मैं इसे जानता हूं। यह देखना बहुत सरल है कि तकनीकी चीज़ों में ज्ञात से ज्ञात की ओर गति होती है। इसी तरह, आपकी सभी धार्मिक पुस्तकें और शिक्षक आपको बताते हैं कि आप अशांति के बिंदु से आनंद के बिंदु तक जा सकते हैं, और क्षणभंगुरता से स्थायित्व तक का एक रास्ता है। वे कहते हैं कि इस बिंदु से उस बिंदु तक पहुंचने के लिए आपको विश्वास करना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए, ध्यान करना चाहिए, बुराई का विरोध करना चाहिए, नियंत्रण रखना चाहिए - जिसका अर्थ है कि जिसे आप आनंद मानते हैं, उसके लिए एक निर्दिष्ट दिशा लेना। जिस प्रकार आप अशांति की स्थिति को जानते हैं, उसी प्रकार आनंद के लिए भी एक निर्दिष्ट दिशा बताई गई है, और वहां पहुंचने के लिए आपको अभ्यास करना होगा।

अब इस प्रक्रिया में क्या शामिल है? सबसे पहले, क्या आनंद एक स्थिर चीज़ है, एक स्थिर अवस्था जो चलती नहीं है? आप अपने घर जा सकते हैं क्योंकि आपका घर स्थिर है, लेकिन क्या आनंद, वास्तविकता, ईश्वर, या आप इसे जो भी कहना चाहें, एक स्थिर अवस्था या एक गतिशील वस्तु, एक जीवित वस्तु, एक संघर्षशील वस्तु है जिसे स्थिर नहीं किया जा सकता है? एक निश्चित, स्थैतिक स्थिति को खोजने की इच्छा मेरी उथल-पुथल, मेरे दुख का परिणाम है, है न, और इसलिए अपने भ्रम से मैं "स्थायी" नामक एक चीज़ बनाता हूं और फिर कहता हूं कि मुझे इसके लिए एक रास्ता खोजना होगा।

और एक पद्धति, एक अभ्यास, एक अनुशासन से हमारा क्या तात्पर्य है? मेरे लिए, हर प्रकार का अनुशासन मन को नष्ट कर देता है, बुद्धि को नष्ट कर देता है, विचार को सीमित कर देता है, मन की इस असाधारण क्षमता को सीमित कर देता है। मैं नहीं हूँ

आपसे इसे स्वीकार करने के लिए कह रहा हूं, लेकिन चूंकि हम एक-दूसरे के साथ संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं, मैं आपको बता रहा हूं कि मैं इसे कैसे देखता हूं और मुझे उम्मीद है कि आप भी इसे देख रहे हैं।
अनुशासन शब्द का क्या अर्थ है? यह एक लैटिन शब्द से आया है जिसका अर्थ है "सीखना" - नियंत्रित करना नहीं, अधीन करना नहीं, मजबूर करना नहीं, बल्कि सीखना। जब आप खुद को मजबूर करते हैं तो आप सीखना बंद कर देते हैं, लेकिन उदाहरण के लिए, अगर आप समझते हैं कि आपको डर के बारे में सब कुछ पता होना चाहिए, कि आपको केवल डर का विरोध नहीं करना चाहिए, इसे नियंत्रित नहीं करना चाहिए, या इससे बचने का कोई तरीका नहीं ढूंढना चाहिए, तो डर की जांच करें आप इसके बारे में सीख रहे हैं. इसलिए किसी अनुशासन की आवश्यकता नहीं है. मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। हम कहते हैं कि हम डर के बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं, इसलिए हमें इसकी जांच करनी होगी, हमें सीखना होगा कि इसमें क्या शामिल है, डर कितनी गहराई पर है। डर किसी चीज़ के संबंध में होना चाहिए; यह अपने आप अस्तित्व में नहीं रह सकता. जाने-अनजाने मैं किसी चीज़ से डरता हूँ; इसलिए मुझे जांच करनी है, अन्वेषण करना है, और डर के बारे में सब कुछ सीखने की प्रक्रिया में, डर का पूर्ण अंत होता है - न केवल डर के विपरीत पर पहुंचना, जिसे साहस कहा जाता है, बल्कि भय का पूर्ण अंत होता है। लेकिन इसे समझने के लिए बहुत अधिक विचार, बहुत अधिक जांच-पड़ताल की आवश्यकता होती है।

अब मैं संक्षेप में डर की जांच करने जा रहा हूं। सबसे पहले, मैं डरता हूँ, मान लीजिए, मृत्यु से। मृत्यु के भय से मेरा क्या तात्पर्य है? आख़िरकार, मैं मृत्यु के बारे में कुछ भी नहीं जानता; मुझे नहीं पता कि निरंतरता है या नहीं; मैं अज्ञात के बारे में कुछ भी नहीं जानता; मेरा दिमाग केवल ज्ञात के क्षेत्र में कार्य करने की प्रक्रिया से परिचित है। इसलिए मुझे उस चीज़ से डर लगता है जो मैं नहीं जानता। क्या ऐसा नहीं है? आप डरते हैं ना, आने वाले कल का, अपनी नौकरी खोने का, परिवार में किसी के बीमार होने का, भविष्य की अनिश्चितता का, अज्ञात का। आप अच्छी तरह से जानते हैं, क्या आप नहीं जानते हैं, डर की वह भावना, वह चिंता, वह अनिश्चितता की भावना, लेकिन आपने वास्तव में कभी इस पर ध्यान नहीं दिया है, है ना? आपने कभी अपने आप से नहीं कहा, "मुझे इसे देखने दो।" अब, कोई डर को कैसे देखता है? सबसे पहले आपको शब्द को भय से, भावना से अलग करना होगा, नहीं करना चाहिए, क्योंकि शब्द आपको स्थिति को देखने से रोकता है। मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे हैं क्योंकि यदि आप वास्तव में रुचि रखते हैं और इसे देख रहे हैं, तो आप भय से, ईर्ष्या से, लालच से - जिन चीजों में मन फंसा हुआ है - पूरी तरह से मुक्त हो जाएंगे।

यदि आप इससे गुजरेंगे तो आप देखेंगे कि मन इस सारे संघर्ष से पूरी तरह मुक्त हो जाएगा, लेकिन आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप शब्द से परे जा सकें। तो सबसे पहले मुझे पहचानना होगा कि डर है, फिर मुझे जागरूक होना चाहिए कि मुझे इससे बचकर किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए - मंदिर, गुरु के पास जाओ, शराब लो, रेडियो चालू करो, किताब पढ़ो। उन सभी पलायनों को रोकना होगा, मजबूरी से नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि आप वास्तव में सीखना, समझना और सीखना चाहते हैं

यदि आप किसी चीज़ से दूर भागते हैं तो आप उसके बारे में नहीं सीख सकते, जो कि स्पष्ट है।
तो मैं इस बिंदु पर आता हूं कि डर से बच पाना संभव नहीं है। तब मेरे पास डर को इंगित करने के लिए केवल डर शब्द ही बचता है । और क्या अब मैं शब्द को वास्तविक स्थिति से अलग कर सकता हूँ?

अब यदि आप ऐसा कर सकते हैं, यदि आप वास्तव में यह समझने में सक्षम हैं कि शब्द कोई चीज़ नहीं है, कि डर शब्द डर नहीं है; यदि आप इसे अलग कर सकते हैं, तो आप देखेंगे कि आपकी जो भावना है वह पूरी तरह से अलग है।
तब तुम पहली बार उसके पास पहुँचोगे; पहली बार तुमने शब्द को भाव से मुक्त कर दिया होगा। इसलिए आपका दिमाग भावना को समझने, उसमें जाने, उसे आत्मसात करने, समझने, सीखने में सक्षम है।

तो मन एक निर्दिष्ट बिंदु तक इस गति से, विधि, "कैसे" से मुक्त हो जाता है। निर्दिष्ट बिंदु का अर्थ है दूरी, इसका अर्थ है समय, कि आप अंततः वहां पहुंच जाएंगे; लेकिन जीवन कोई निश्चित बिंदु नहीं है, वास्तविकता स्थिर नहीं है, यह नदी के पानी की तरह एक जीवित चीज़ है। तुम चुल्लू भर पानी लेकर यह नहीं कह सकते कि यह नदी है; नदी आरंभ से अंत तक संपूर्ण गति है। इसी प्रकार वास्तविकता को भी नहीं रोका जा सकता; जीवन को कैद नहीं किया जा सकता और इसकी कोई दिशा नहीं है।

तो कोई विधि नहीं है. आप जो चाहें करें, सभी मूर्खतापूर्ण चीजों का अभ्यास करें, ओम शब्द को दोहराएं , और सुबह से रात तक व्यायाम करें, आप कभी भी इस अथाह चीज़ पर कब्जा नहीं कर पाएंगे। वे चीज़ें केवल मन को मंत्रमुग्ध कर देती हैं, उसे सुस्त और मूर्ख बना देती हैं। लेकिन यदि आप मन के बारे में सीखना चाहते हैं, तो आप देखेंगे कि सीखने से ही ध्यान का अपना सूक्ष्म रूप सामने आता है।

सीखने की कोई शुरुआत या कोई अंत नहीं है, और जीवन स्वयं के बारे में सीखना है, 'मैं', अंतहीन सीखना, कभी संचय नहीं करना, कभी प्रस्तुत नहीं करना, कभी संघर्ष नहीं करना। तब आप पाएंगे, जैसे ही आप ऐसा करते हैं, कि मन ज्ञात से पूरी तरह से खाली हो जाता है, और फिर सृजन होता है।

3 दिसंबर, 1958

चौथी वार्ता बम्बई में

हममें से अधिकांश लोग तत्काल कार्रवाई को लेकर चिंतित हैं, है ना?—क्या करें, क्या सोचें, क्या किया जाना चाहिए—और हम उस मांग पर ध्यान केंद्रित करते हैं और अपना पूरा विचार उसी पर केंद्रित करते हैं। और तत्काल कार्रवाई की यही चिंता हमारी मुख्य समस्या बन जाती है। "क्या मुझे यह करना चाहिए या मुझे यह नहीं करना चाहिए, या क्या करना चाहिए?" इसलिए हम तत्काल पर ध्यान केंद्रित करने में बहुत अधिक ऊर्जा खर्च करते हैं। यह एकाग्रता निश्चित रूप से एक निश्चित के केंद्र से शुरू होती है

इच्छा, एक निश्चित आग्रह, मांग या मकसद, तात्कालिक समस्या को हल करने की कोशिश के माध्यम से नहीं होता है। यदि आप निरीक्षण करेंगे तो आप स्वयं देखेंगे कि जब आप किसी तात्कालिक समस्या पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो उस समस्या के समाधान की मांग और एकाग्रता की प्रक्रिया हमेशा एक केंद्र से आती है।

एक केंद्र है जो ध्यान के पूरे क्षेत्र को एक निश्चित बिंदु से एक निश्चित बिंदु तक सीमित कर देता है। ऐसा ही होता है ना? मुझे कुछ करना है, और मैं उस पर अपना पूरा विचार लाता हूं, लेकिन एक बिंदु पर विचारों का एक साथ आना मकसद के केंद्र का परिणाम है, एक ऐसा केंद्र जो आनंद और दर्द के अनुसार, घमंड के अनुसार समाधान की मांग करता है , हताशा के अनुसार, इत्यादि। हर समय यही हो रहा है; हमेशा एक केंद्र होता है जहां से एकाग्रता घटित होती है। तो एकाग्रता बहिष्कार की प्रक्रिया बन जाती है, सभी विचारों को एक निश्चित बिंदु तक एकत्रित करना। जब आपको पढ़ाई करनी होती है, जब आपको नौकरी करनी होती है तो आप यही करते हैं। आप कहते हैं कि आपको ध्यान केंद्रित करना चाहिए, और सभी विचार एक निश्चित बिंदु पर लाए जाते हैं और वहां से आप कार्य करते हैं।

मेरा मानना है कि एकाग्रता और ध्यान में अंतर है।

ध्यान विचार के संपूर्ण क्षेत्र के प्रति जागरूकता है; ध्यान व्यापक है; यदि आप गौर करें तो इसकी कोई सीमा नहीं है, कोई सीमा नहीं है। ध्यान संपूर्णता के बारे में जागरूकता है, और उस अवस्था में, जब आप किसी समस्या पर ध्यान देते हैं, तो आप विचार के पूरे क्षेत्र का निरीक्षण करने में सक्षम होते हैं और समस्या के निहितार्थ और महत्व को भी समझते हैं। जबकि एकाग्रता सभी विचारों को एक निश्चित बिंदु तक सीमित कर देती है और यह एक विशेष प्रक्रिया है।

अतः, एकाग्रता से उत्पन्न होने के कारण हमारा कार्य सदैव सीमित होता है; और एकाग्रता की उस अवस्था में कोई ध्यान नहीं रहता। लेकिन जब ध्यान होता है - मन के उस व्यापक अर्थ में जो बिना किसी सीमा के होता है - तो एकाग्रता भी हो सकती है। छोटा बड़े को नहीं पकड़ता, लेकिन बड़ा छोटे को पकड़ सकता है।

अब जब आप जो कहा जा रहा है उस पर ध्यान दे रहे हैं, तो आप न केवल शब्दों के अर्थ को समझने के लिए सुन रहे हैं बल्कि यह जानने के लिए भी सुन रहे हैं कि वक्ता का क्या मतलब है, व्यापक निहितार्थ देखने के लिए, शब्दों के पीछे, बौद्धिकता से परे जाने के लिए भी सुन रहे हैं। स्तर। लेकिन जब किसी मकसद के साथ एकाग्रता होती है तो ध्यान और समझ की उस संपूर्णता से इनकार कर दिया जाता है।

आप जानते हैं, जब आप सुंदरता की सराहना करते हैं, तो यह वास्तव में एक ऐसी स्थिति में होता है जो अनुपात, समरूपता, रंग, आकार, गति और एक जीवित गुणवत्ता है। न केवल बुद्धि बहुत सतर्क और संवेदनशील होती है, बल्कि ध्यान और भावना की पूर्णता की स्थिति भी होती है। लेकिन अगर आप केवल किसी खूबसूरत चीज़ की सराहना पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, तो सुंदरता की कोई वास्तविक अनुभूति नहीं है। मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है

इसे समझो. क्योंकि मेरा मानना है कि सौन्दर्य की अनुभूति के बिना, कोई संभवतः यह नहीं समझ सकता कि सत्य क्या है। सत्य केवल एक विचार या बौद्धिक अवधारणा, एक सूत्र नहीं है; यह अस्तित्व की एक अवस्था है। यह मन की एक अवस्था है जो पूरी तरह से समझती है, न कि वह मन जो किसी उद्देश्य के साथ किसी विचार पर केंद्रित होता है। मुझे लगता है कि सुंदरता के इस गुण को महसूस करना बहुत महत्वपूर्ण और जरूरी है, जो बदसूरत को नकारना या बदसूरत के विपरीत नहीं है। सभी विपरीतताएँ एकाग्रता की स्थिति में एक मकसद का परिणाम हैं, जबकि सुंदरता मन की एक स्थिति है जिसमें एक ध्यान होता है जिसकी कोई सीमा नहीं होती है। मैं केवल उन बातों को शब्दों में व्यक्त कर रहा हूं जो हममें से ज्यादातर लोग कभी-कभी महसूस करते हैं। आप जानते हैं कि कैसे, जब आप किसी चीज़ के बारे में कहते हैं, "कितना सुंदर, कितना प्यारा!" तुम्हारा पूरा अस्तित्व उसमें है; उन शब्दों में वास्तविक भावना है, और आपका मन केवल उस विचार पर केंद्रित नहीं है जिसे आप सुंदर मानते हैं।

मुझे लगता है कि जो मन पृथ्वी, आकाश, ताड़ के पेड़, क्षितिज, एक रेखा, एक चेहरे, एक भाव की सुंदरता को पूरी तरह से देखने और महसूस करने में सक्षम नहीं है, वह उस असाधारण चीज़ को कभी नहीं समझ पाएगा जो कि है सौंदर्य और स्वतंत्रता. हममें से अधिकांश के लिए स्वतंत्रता केवल बंधन के विपरीत है, इसलिए केवल एक प्रतिक्रिया है। लेकिन उस भावना, सुंदरता, सुंदरता, उस असाधारण स्थिति को समझने के लिए जो बंधन के विपरीत नहीं है, एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो किसी चीज़ की समग्रता को देखने में सक्षम हो।

हम में से अधिकांश, निश्चित रूप से, वास्तविक अनुभूति खो चुके हैं या कभी महसूस ही नहीं कर पाए हैं। हमारी शिक्षा, हमारे रहन-सहन, हमारी दैनिक आदतों, परंपराओं, रीति-रिवाजों ने मन को भावना से वंचित कर दिया है। यदि आप ध्यान से देखें, बहुत परिश्रम से अपने मन में जाएँ, तो आप पाएंगे कि उस भावना का कोई उद्देश्य नहीं है - एक पेड़ के लिए भावना, एक सुंदर कार चलाते हुए एक अमीर आदमी की सराहना की भावना, भूख से मरते, संघर्ष करते ग्रामीण की दृष्टि, दिन-ब-दिन मेहनत करना। यदि भावना है, तो उस भावना से ही एक ऐसा कार्य होता है जो भलाई करने वालों और सुधारकों के बौद्धिक कार्य से कहीं अधिक व्यापक, कहीं अधिक शक्तिशाली होता है क्योंकि इसमें कुरूप और कुरूप दोनों के लिए समझ होती है, भावना होती है सुंदर—लेकिन विपरीतों की तरह नहीं। यदि हमें अपने अस्तित्व की इस पूरी प्रक्रिया और हमारे सोचने के तरीकों को समझना है तो ऐसी भावना का होना आवश्यक है। इसका अर्थ है जीवन की गहराई, चौड़ाई और स्वयं, 'मैं' नामक इस असाधारण चीज़ को समझना। इस 'मैं' को, इस स्वयं को, इसके सभी सुखों, इसके संघर्षों, इसके दर्द, इरादों, आशाओं, भय, महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, ईर्ष्या आदि को समझने के लिए, गहरी भावना होनी चाहिए, न कि केवल बुद्धि। आप जानते हैं, जब आपके मन में किसी चीज़ के प्रति भावना होती है, तो आप बहुत अधिक तीव्रता से, बहुत अधिक समझदारी से और स्पष्ट रूप से देखते हैं। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं, लेकिन जब आप किसी से प्यार करते हैं, या जब आप कुछ असाधारण देखते हैं

किसी के बारे में, आप अधिक बुद्धिमान, तेज, सतर्क हो जाते हैं, है ना?
एकाग्रता से एक तेज और सजगता तो आती है, पर उसमें कोई भावना नहीं, कोई स्नेह नहीं।

यदि कोई वास्तव में इसे समझ सकता है, न केवल बौद्धिक या मौखिक रूप से, बल्कि वास्तव में, गंभीरता से, तो जब आप कुछ देखते हैं - एक पेड़, एक लड़का, एक लड़की - इस गुणवत्ता के साथ आप मन की संपूर्ण सामग्री के बारे में भी जागरूक हो सकते हैं, नहीं केवल सतही, स्पष्ट, चेतन मन, लेकिन सभी असंख्य संघर्षों, जातीय विरासत, उद्देश्यों और अनुभवों और संग्रहीत ज्ञान के साथ अचेतन। जागरूकता और भावना की उस परिपूर्णता से आप क्रिया की एक बिल्कुल अलग प्रक्रिया को घटित होते हुए देखेंगे।

शायद मैं किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात कर रहा हूँ जिसके बारे में आपको कोई अनुभव नहीं है, और शायद आप मुझसे व्यावहारिक होने और धरती पर आकर आपको बताने के लिए कहेंगे कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, और अस्पष्ट नहीं होना चाहिए। लेकिन आप देख रहे हैं कि कठिनाई यह है कि जब तक आप इसे नहीं देखते हैं - जब तक आप पूरे आकाश, रात की सुंदरता, सुबह और शाम को नहीं देखते हैं, आप दैनिक अस्तित्व की अपनी छोटी-छोटी गतिविधियों के अलावा आकाश के नीचे कुछ भी सार्थक नहीं कर सकते हैं। . जब तक आप इस पूरी बात को समझ नहीं लेते, आपका अस्तित्व दुखी, दुखद बना रहेगा; लेकिन जीवन नामक इस विशाल चीज़ की अनुभूति के साथ, इसकी भावना के साथ, आप सटीकता के साथ, स्पष्टता के साथ, गहराई के साथ व्यावहारिक रूप में आ सकते हैं। लेकिन हममें से अधिकांश लोग केवल तात्कालिक लाभ, तात्कालिक परिणाम, तात्कालिक सुख या दुःख से ही चिंतित रहते हैं। तो मुझे ऐसा लगता है कि स्वयं को समझने की खोज में यह भावना होना बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन हमारी अधिकांश भावनाएँ मर चुकी हैं क्योंकि जब आप हर दिन वही गरीबी, वही गंदगी, वही दुख और संघर्ष, वही रीति-रिवाज और आदतें देखते हैं, तो मन सुस्त, मृत, असंवेदनशील हो जाता है और इसे महसूस करना बहुत मुश्किल हो जाता है। . इसलिए, यदि हो सके, तो मैं किसी ऐसी चीज़ में जाना चाहूंगा, जिसे अगर हम बहुत गहराई से समझ सकें, तो हमें इस भावना को महसूस करने में मदद मिलेगी - वह भावना जो भावुकता से, भावना, आँसू और भक्ति से काफी अलग है। यदि हम यह अनुभूति प्राप्त कर सकें तो आकाश खुल जायेगा।

यदि मैं एक पल के लिए भी विचलित हो जाऊं, तो मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि मैं आपसे एक व्यक्ति के रूप में बात कर रहा हूं। आप और मैं, दो दोस्तों के रूप में, वास्तव में जीवन से, उन सभी उथल-पुथल से चिंतित हैं जिनसे मनुष्य गुजरता है, और इसलिए हम इस बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि हम रुचि रखते हैं। मुझे आशा है कि आप केवल मेरी बात नहीं सुन रहे हैं या मुझसे सीखने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। जब मैं वर्णन कर रहा हूँ तो आप स्वयं अवलोकन करके ही सीखेंगे। लेकिन यदि आप बहक गए हैं और मौखिक विवरण पर निर्भर हैं, तो आप केवल बाहर सुन रहे हैं

सीखना। यदि आप सुन रहे हैं - जो ध्यान का कार्य है, एकाग्रता का नहीं - और सीधे अपनी स्थिति का अनुभव कर रहे हैं, तो आप देखेंगे कि सीखने के प्यार की एक असाधारण भावना अस्तित्व में आती है जो किसी किताब से नहीं, किसी बातचीत से सीखी जाती है। . उस प्रकार की सीख केवल ज्ञान है; यह मृत है, इसका कोई अर्थ नहीं है, यह केवल स्मृति की खेती है, और स्मृति बुद्धि नहीं है। यदि आप और मैं वास्तव में सुन सकें, सीख सकें, तो आप भावनाओं की उथल-पुथल को उभरते हुए देखेंगे; मैं उथल-पुथल शब्द का सही अर्थ में उपयोग कर रहा हूं - एक बुदबुदाहट, परिपूर्णता का विमोचन जिसके बिना कोई समझ नहीं हो सकती।

हमारी पूछताछ पर वापस लौटने के लिए, मैं चाहूंगा कि आप मेरे साथ लगाव की समस्या की जांच करें क्योंकि इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। आप जुड़े हुए हैं, हैं न, या तो चीज़ों से, या लोगों से, या विचारों से। आप चीजों से जुड़े हुए हैं - एक कार, कुछ संपत्ति, एक पोशाक, या जो कुछ भी है, या आप किसी व्यक्ति से जुड़े हुए हैं - आपकी पत्नी, आपका बच्चा, आपका दोस्त; या आप ईश्वर या ईश्वर न होने, अवस्था, पुनर्जन्म के विचार से जुड़े हुए हैं। अब इस लगाव का मतलब क्या है? किसी घड़ी या घर से लगाव को कुछ हद तक समझा जा सकता है, भले ही वे मृत चीजें हैं, लेकिन किसी व्यक्ति या विचार से लगाव कहीं अधिक जटिल है। मुझे ऐसा लगता है कि आसक्ति सदैव मृत वस्तुओं से होती है। पत्नी, पति, पुत्र से लगाव-क्या यह जीवित वस्तु से है या वास्तव में मृत वस्तु से? क्या आप किसी जीवित व्यक्ति से जुड़े हैं या आपने किसी जीवित व्यक्ति की जो तस्वीर बनाई है? और क्या वह चित्र एक मृत चीज़ नहीं है? हम पूछताछ कर रहे हैं, एक साथ इसमें जा रहे हैं। आप किससे जुड़े हुए हैं? जीवित व्यक्ति नहीं, बल्कि विचार, उस व्यक्ति से प्राप्त सुखों और अनुभवों की स्मृति। कृपया इसका अनुसरण करें —क्या आप किसी नदी से जुड़े रह सकते हैं? आपके पास किसी खास नदी की तस्वीर, स्मृति हो सकती है जिसके बारे में आप जानते हैं, लेकिन आप जीवित जल से जुड़े नहीं रह सकते; नदी तेजी से आगे बढ़ रही है, यह निरंतर गति की स्थिति में है, और आप जिससे जुड़े हुए हैं वह एक तस्वीर है जिसे नदी शब्द जागृत करता है - कहीं जहां आपने आनंद, मनोरंजन, नदी के किनारे एक शांत शाम का आनंद लिया था, लेकिन आप संलग्न नहीं हो सकते उस पानी की गति को. यदि हम इसका ध्यानपूर्वक पालन करें तो हमें पता चलेगा कि आसक्ति के माध्यम से हम भावनाओं को कैसे नष्ट कर रहे हैं, क्योंकि हमारी सारी आसक्ति मृत चीजों से है। आप कभी भी किसी जीवित चीज़ से उससे अधिक नहीं जुड़ सकते जितना आप नदी, समुद्र से जुड़ सकते हैं, क्योंकि जीवित चीज़ गतिशील है, शाश्वत है, निरंतर गति की स्थिति में है। इसलिए जब आप कहते हैं कि आप अपने बेटे, अपनी बेटी, अपने पति से जुड़े हुए हैं, तो यदि आप बहुत ध्यान से अपने भीतर देखें, तो आप देखेंगे कि आप किसी जीवित व्यक्ति से नहीं जुड़ सकते क्योंकि वह व्यक्ति लगातार

परिवर्तन, गति, उथल-पुथल की स्थिति में। आप जिस चीज़ से जुड़े हुए हैं वह उस व्यक्ति की आपकी तस्वीर है। उदाहरण के लिए, जब मैं कहता हूं कि मुझे अपने बेटे से लगाव है, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि उसके माध्यम से मैं खुद को अमर बना लेता हूं, उसके माध्यम से मैं समृद्ध हो जाता हूं, मैं उम्मीद करता हूं कि वह मेरा नाम बरकरार रखे। मैं कहता हूं कि मैं असफल हो सकता हूं, लेकिन वह सफल होगा, वह मुझसे अधिक महत्वाकांक्षी होगा, और इसलिए मैं खुद को उसके साथ पहचानता हूं - "वह" एक तस्वीर है। लेकिन तस्वीर तो बेकार चीज़ है! तो देखो मन क्या कर रहा है—यह तस्वीरें बना रहा है और खुद को मृत चीजों से जोड़ रहा है!

और जब आप कहते हैं कि आप किसी विचार से जुड़े हुए हैं, तो विचार क्या हैं? देखिए श्रीमान, आप हिंदू हैं, पारसी हैं, मुस्लिम हैं, ईसाई हैं, बौद्ध हैं, नास्तिक हैं - आप जो भी हैं, आपके मन में यह विचार दृढ़ता से बैठा हुआ है, जैसा कि समाजवादी के दिमाग में भी दृढ़ता से बैठा हुआ है , साम्यवादी, या पूंजीवादी। लेकिन विचार कभी भी जीवित चीज़ नहीं हो सकते हैं - वे निष्कर्ष, प्रतिक्रियाएँ, हठधर्मिता हैं जो बचपन से ही प्रचार, मजबूरी, शिक्षा और संचार के विभिन्न रूपों के माध्यम से आपके दिमाग पर थोपे गए हैं। और क्या आपने नहीं देखा कि मन को किसी विचार से मुक्त करना कितना आश्चर्यजनक रूप से कठिन है? हिंदू मन को पुनर्जन्म, कर्म और बाकी सभी चीजों से मुक्त करना लगभग असंभव है। तो फिर से आप देख सकते हैं कि एक विचार से जुड़ा हुआ मन एक मृत चीज़ से जुड़ा हुआ है, जैसे निष्कर्ष एक मृत चीज़ है, और एक विश्वास भी। तो आप एक मृत चीज़ से जुड़े हुए हैं, लेकिन आसक्त होना बंद करना बहुत मुश्किल है क्योंकि हम लोगों से भी प्यार करते हैं। लेकिन जहां लगाव है वहां प्रेम हो सकता है क्या? या क्या प्यार कुछ महत्वपूर्ण, रचनात्मक, गतिशील है - एक भावना जो मृत के साथ अस्तित्व में नहीं रह सकती है? इस तथ्य को देखना कितना दुरूह और कठिन है! यह देखने के लिए बहुत अधिक अंतर्दृष्टि, बहुत अधिक ऊर्जा और समझ की आवश्यकता होती है कि मन हमेशा के लिए खुद को मृत चीजों से जोड़ रहा है और ऐसा मन स्वयं मृत है। मृतकों में से होने के कारण हम केवल दाह-घाट के क्षेत्र में ही कार्य कर रहे हैं। अतः भावना कैसे हो सकती है?

तो आप यह देखना शुरू कर देते हैं कि प्रेम कोई लगाव नहीं जानता। इसे स्वीकार करना कठिन बात है, लेकिन यह एक सच्चाई है। और चूँकि हमारा मन मृत चीज़ों से इतना जुड़ा हुआ है, समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। फिर हम वैराग्य विकसित करने का प्रयास करते हैं - जो एक अलग आवरण में लगाव है और इसलिए अभी भी मृत्यु के क्षेत्र में है। स्वयं में निरीक्षण करो कि हम कितने मृत हो गये हैं, हमने बुदबुदाती भावना को किस प्रकार नष्ट कर दिया है। पृथ्वी कोई मृत चीज़ नहीं है, लेकिन जब आप किसी ऐसी चीज़ से जुड़े होते हैं जिसे आप "भारत" कहते हैं, जो कि केवल एक छोटे से हिस्से का प्रतीक है, न कि स्वयं पृथ्वी का, तो आप उस चीज़ से चिपके हुए हैं जो मर चुकी है। अत: आपका राष्ट्रवाद मृत्यु से खिलवाड़ मात्र है; इसमें कोई गहराई नहीं है, कोई जीवंतता नहीं है।

लेकिन स्वयं पृथ्वी के प्रति भावना - मेरी पृथ्वी या रूसी, अमेरिकी या अंग्रेजी पृथ्वी के लिए नहीं - जिसमें एक जीवित गुणवत्ता है।

तो क्या हम यह नहीं समझ सकते, महसूस नहीं कर सकते, देख नहीं सकते कि जहां लगाव है वहां मृत्यु है? आख़िरकार, जब आप हर दिन एक ही काम कर रहे हैं, एक ही समय पर उठ रहे हैं, एक ही दिनचर्या दोहरा रहे हैं, कार्यालय जा रहे हैं, इत्यादि, तो यह एक प्रथा, एक परंपरा, एक आदत बन जाती है, और इस तरह आपका मन बन जाता है उदासीन। आप एक सुंदर सूर्यास्त या सूर्योदय, एक मैदान में अकेले एक पेड़ के पास से गुजर सकते हैं, और भावना की कोई गहराई पैदा नहीं होती है क्योंकि आदत ने भावना की जगह ले ली है, और आपका मन आदत से जुड़ जाता है और वस्तुओं से हिल जाता है। मन परिवर्तन चाहता है, और इसलिए मन मृत या मरती हुई चीज़ों के प्रति अपनी आसक्ति के माध्यम से स्वयं को नष्ट कर रहा है।

अब यदि आप वास्तव में यह सब समझ गए हैं, केवल मौखिक या बौद्धिक रूप से नहीं, बल्कि यदि आप मेरे साथ गहराई से महसूस करते हैं कि यह वास्तव में एक बहुत ही गंभीर बात है, तो आप देखेंगे कि आप कार्यालय जा सकते हैं, बस ले सकते हैं, रोजमर्रा के कार्य कर सकते हैं एक अलग गुणवत्ता, मन की एक नई गुणवत्ता के साथ जीवन। आख़िरकार, आप अपना नियमित काम करना, अपना दैनिक जीवन जीना बंद नहीं कर सकते; अब यह एक दिनचर्या है जिससे आप जुड़े हुए हैं। और जब आप पानी को धारण करने वाले फव्वारे से जुड़े होते हैं, तो आप जीवित जल के साथ नहीं चल सकते। इसकी सच्चाई को देखने के लिए न केवल अंतर्दृष्टि, विचार की स्पष्टता, दिमाग की सटीकता, बल्कि सौंदर्य की भावना की भी आवश्यकता है। यदि आप समझ गए हैं, तो आप देखेंगे कि मोह का अब कोई अर्थ नहीं रह गया है। आपको इससे मुक्त होने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ेगा; यह हवा में एक पत्ते की तरह उड़ जाता है। तब आपका दिमाग असाधारण रूप से जीवंत, तेज, सटीक हो जाता है, अब भ्रमित नहीं होता। लेकिन यह सब समझे बिना, आप केवल इतना कहेंगे, "मुझे यह लेने दो," या "मुझे कुछ करना होगा।" आप कार्रवाई से जुड़े हुए हैं और आप तत्काल उत्तर चाहते हैं। आपको यह तय करना है कि कल क्या करना है, और यह आपके लिए इस पूछताछ से, इस खोज से, समझ, समझ, सौंदर्य और प्रेम की इस पूरी गुणवत्ता की भावना से कहीं अधिक सम्मोहक, कहीं अधिक जरूरी है। इसलिए आपके कार्य सदैव मृत्यु की ओर ले जा रहे हैं - मृत्यु भ्रम, दुःख, कष्ट और परिश्रम है। यदि आप एक ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो केवल तत्काल कार्रवाई, तत्काल समाधान चाहता है, तो आप ऐसे व्यक्ति के लिए क्या कर सकते हैं जो मृत्यु का पीछा कर रहा है और ऐसा करने पर जोर दे रहा है? मुझे डर है कि हममें से ज्यादातर लोग ऐसे ही हैं। इसीलिए इस देश की जनता अंदर से मर चुकी है। हालाँकि वे सिंचाई के लिए बाँध बना सकते हैं, उद्योग लगा सकते हैं, जनसंख्या कम कर सकते हैं, लोगों को बेहतर भोजन दे सकते हैं और बाकी सब कुछ, यह एक खूबसूरत घर की सतही संरचना की तरह है जिसमें कोई नहीं रहता है। वही हो रहा है. प्रौद्योगिकी एक कला है, लेकिन हमने इसे एक यांत्रिक चीज बना दिया है।

इसलिए यदि आपने और मैंने वास्तव में सच्चाई और ईमानदारी से खुद से पूछा है कि इस भावना को कैसे जागृत किया जाए, तो हम देखेंगे कि किसी भी प्रकार का लगाव एक मृत चीज़ है, और लगाव का यह घातक गुण है - चीजों से, लोगों से और विचारों से। -निश्चित रूप से कब्र की ओर ले जाता है। इसे समझने पर आप देखेंगे कि तत्काल कार्रवाई की आपकी इच्छा का उत्तर बिल्कुल अलग स्तर पर है, और उत्तर सत्य होगा, और यह व्यावहारिक होगा।

मुझे आशा है कि मैंने खुद को स्पष्ट कर लिया है क्योंकि हममें से अधिकांश के लिए आदत की दैनिक क्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, ताकि हम कभी भी क्षितिज को न देखें बल्कि हमेशा कुछ न कुछ करते रहें। आपमें भावना का विस्फोट तभी हो सकता है जब आप अपनी और अपनी आसक्तियों की इस पूरी प्रक्रिया को समझ लें। यदि आप अनुलग्नक नामक इस चीज़ का पता लगा सकते हैं, जाँच सकते हैं, देख सकते हैं, तो आप सीखना शुरू कर देंगे, और यह सीखना ही मृत चीज़ों को तोड़ देगा; यह सीखना ही है जो कार्य करने का एहसास देगा। आप उस कार्य में गलती कर सकते हैं, लेकिन वह गलती सीखने की एक सतत प्रक्रिया है। कार्य करने का मतलब है कि आप देखने, पता लगाने, समझने की कोशिश कर रहे हैं, न कि केवल परिणाम उत्पन्न करने की कोशिश कर रहे हैं - जो एक मृत परिणाम है। यदि आप केंद्र को, अभिनेता को नहीं समझते हैं तो कार्य बहुत छोटा और क्षुद्र हो जाता है। हम अभिनेता को क्रिया से अलग करते हैं; टी हमेशा ऐसा करता है और इसलिए एक मृत चीज़ बन जाता है। लेकिन अगर आप खुद को समझना शुरू कर रहे हैं, जो आत्म-ज्ञान है, जो अपने बारे में सीख रहा है, तो वह सीख एक सुंदर चीज है, इतनी सूक्ष्म, जीवित जल की तरह। यदि आप इसे समझते हैं, और उस समझ के साथ कार्य करते हैं - विचार की क्रिया के साथ नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से - तो आप पाएंगे कि मन अब मृत नहीं है, अब मृत और मरती हुई चीजों से जुड़ा नहीं है। तो फिर, मन असाधारण है; यह क्षितिज की तरह है, अंतहीन, अंतरिक्ष की तरह, बिना माप के। ऐसा मन बहुत गहराई तक जा सकता है, और वह बन सकता है जो ब्रह्मांड है, कालातीत है। उस अवस्था से आप समय पर कार्य करने में सक्षम होंगे, लेकिन एक बिल्कुल अलग भावना के साथ। इस सब के लिए कालानुक्रमिक समय-दिन, सप्ताह और वर्ष-की नहीं, बल्कि स्वयं की समझ की आवश्यकता होती है, जो तुरंत किया जा सकता है। तब तुम्हें पता चलेगा कि प्रेम क्या है। प्रेम कोई ईर्ष्या, कोई द्वेष, कोई महत्वाकांक्षा नहीं जानता, और उसका कोई आधार नहीं होता; यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें कोई समय नहीं है, और इसके कारण, कार्रवाई हमारे दैनिक अस्तित्व में एक बिल्कुल अलग अर्थ लेती है।

7 दिसंबर, 1958

पाँचवीं वार्ता बम्बई में

हममें से अधिकांश लोग परिवर्तन की आवश्यकता को स्वीकार करने में इतने व्यस्त हैं। मन निरंतर सक्रिय रहता है, उथल-पुथल में रहता है, इधर-उधर, जीवन की असंख्य समस्याओं में व्यस्त रहता है, न केवल बाहरी, बल्कि आंतरिक भी, और चेतन और अचेतन दोनों में यह निरंतर व्यस्तता किसी को भी अनुमति नहीं देती है। परिवर्तन होना है. मुझे ऐसा लगता है कि परिवर्तन के इस प्रश्न पर बहुत गहराई से विचार करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि घटनाओं के आक्रमण के साथ, परस्पर विरोधी और विरोधाभासी पर्यावरणीय प्रभावों के साथ, सामाजिक उथल-पुथल के दबाव और अत्याचारों, सैन्य तानाशाही आदि की स्थापना के साथ। आगे चलकर परिवर्तन महज़ एक बाहरी समायोजन बन जाता है। तो सवाल यह है कि क्या कोई बदलाव आया है? यदि हाँ, तो हम किस स्तर पर परिवर्तन करते हैं? और परिवर्तन से हमारा क्या तात्पर्य है? आप और मैं स्पष्ट रूप से देखते हैं कि न केवल सरकारों में, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में, बल्कि हमारे जीवन जीने के तरीके में, हमारे विचारों और आकांक्षाओं के तरीके में भी, किसी न किसी तरह का बदलाव आना चाहिए। इन सभी चीजों में किसी प्रकार की क्रांति, किसी प्रकार का परिवर्तन अवश्य होना चाहिए। क्या यह केवल निरंतर संशोधन की आवश्यकता है, या क्या ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जो पूरी तरह से अलग हो, जो केवल समय के क्षेत्र के भीतर न हो?

यदि संभव हो तो मैं आज शाम इस पर विचार करूंगा। मुझे ऐसा लगता है कि दबाव में, प्रभाव में, सामाजिक क्रांतियों के तहत जो भी परिवर्तन होते हैं, वे वास्तव में कोई परिवर्तन नहीं होते हैं; वे केवल पर्यावरण के साथ समायोजन हैं। और यही हर समय, लगातार घटित हो रहा है। एक नई सरकार, एक नई सामाजिक व्यवस्था, सोचने का एक नया तरीका अस्तित्व में आता है - प्रचार के माध्यम से, जन संचार के विभिन्न रूपों के माध्यम से - और दबाव के कारण हम स्वचालित रूप से खुद को इसके साथ समायोजित करते हैं। दुनिया में वास्तव में यही चल रहा है, और समायोजन करने का यह प्रयास, अनुरूप होने का यह संघर्ष, समर्पण करने, अनुसरण करने की यह निरंतर इच्छा, स्पष्ट रूप से मन को कमजोर कर देती है, और उस प्रक्रिया में हम सोचते हैं कि हम बदल रहे हैं।

अब, आप कैसे बदलेंगे? आप क्या कहते हैं, "मुझे बदलना होगा।" मुझे अब यह या वह नहीं करना चाहिए”? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इस पर विचार किया है या नहीं. यदि आप ईर्ष्यालु, ईर्ष्यालु, या महत्वाकांक्षी, या जो कुछ भी महसूस करते हैं, तो क्या चीज़ आपको इसे समाप्त करने के लिए प्रेरित करती है - यदि आप कभी ऐसा करते हैं? मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी इसकी जांच की है, या क्या आप बस इसके साथ चलते रहते हैं - कभी-कभी फूटते हुए, कभी-कभी ईर्ष्या के साथ, लेकिन हमेशा उबलती रहती है, हमेशा वहाँ। और यदि आप मौलिक रूप से बदलना चाहते हैं, ईर्ष्या को पूरी तरह से उखाड़ फेंकना चाहते हैं, तो आप कैसे आगे बढ़ेंगे?

हममें से अधिकांश लोग बदलाव लाने के लिए परिस्थितियों पर निर्भर रहते हैं, लेकिन मूलभूत स्थिति हमेशा एक समान रहती है; परिस्थितियाँ भिन्न हो सकती हैं, लेकिन

ईर्ष्या की स्थिति हमेशा आसपास रहती है और ईर्ष्या का कारण हमेशा मौजूद रहता है। कोई इसे छिपा सकता है, कोई विभिन्न प्रकार के अनुशासन और इनकार के माध्यम से इससे दूर भाग सकता है, लेकिन अनिवार्य रूप से यह वहां है और, एक नई स्थिति को देखते हुए, यह फिर से उत्पन्न होगा। ऐसा आपने अक्सर अनुभव किया होगा. अब आप या मुझमें क्या बदलाव आता है? और उस शब्द परिवर्तन से हमारा क्या तात्पर्य है ?

और क्या मन व्यस्त होने पर बदलने में सक्षम है? हमारा अधिकांश दिमाग व्यस्त है, है न? मन हमेशा दैनिक गतिविधियों में, आजीविका कमाने में, सामाजिक समस्याओं में, सेक्स में, मनोरंजन में, पड़ोसी क्या कहते हैं, सरकार के आदेशों में, लगातार चिंतित रहने के अर्थ में व्यस्त रहता है। यदि आप अमीर हैं, तो आप कर अधिकारियों से अपना पैसा छिपाने आदि को लेकर चिंतित हैं। आमतौर पर आपका दिमाग व्यस्त रहता है, चाहे आप इसके प्रति सचेत हों या नहीं। मन निरंतर उथल-पुथल की स्थिति में रहता है, हमेशा किसी न किसी चीज़ में व्यस्त रहता है, और जब उसके सामने कोई समस्या रखी जाती है - जैसे कि परिवर्तन की समस्या - तब वह स्वयं को उस समस्या में व्यस्त रखना शुरू कर देता है। क्या ऐसा नहीं होता है, और अब क्या हो रहा है? मैं आपके सामने यह समस्या रख रहा हूं कि बदलाव से आपका क्या मतलब है, और आप किस स्तर पर बदलाव करते हैं, और क्या चीज आपको बदलने के लिए मजबूर करती है, और आपका दिमाग कहता है, "जोव के अनुसार, यहां एक समस्या है। मुझे इसे अवश्य देखना चाहिए, मुझे इसमें स्वयं को व्यस्त रखना चाहिए।" लेकिन एक मन जो किसी समस्या में व्यस्त है, उसे देखता है, उसके चारों ओर घूमता है, उसका विश्लेषण करता है, उसे इस या उस रास्ते पर थोपता है - ऐसा मन किसी भी बदलाव की अनुमति नहीं देगा।

मुझे लगता है कि बदलाव बिल्कुल अलग तरीके से आता है और मैं आपके साथ इसमें शामिल होना चाहूंगा। परिवर्तन का अर्थ है एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक - किसी विचार या किसी विशेष इच्छा की ओर गति। या तो सामाजिक क्रांति है, जो एक निश्चित स्थिति से नई स्थिति की ओर है, या यह भावना है कि मैं लालची हूं और मुझे गैर-लोभ में बदलना चाहिए, मैं हिंसक हूं और मुझे अहिंसक बनना चाहिए, जो फिर से एक प्रक्रिया है दिए गए बिंदु से दूसरे बिंदु तक, एक गुण से दूसरे गुण तक। इसे ही हम परिवर्तन कहते हैं, है ना? मुझे आशा है कि कम से कम यह आपके और मेरे बीच स्पष्ट है, ताकि हम इस बिंदु पर एक साथ सटीक और स्पष्ट रूप से सोच सकें। मैं अज्ञानी हूं और मुझे विद्वान, प्रबुद्ध बनना चाहिए; मैं दुखी हूं लेकिन मुझे खुश रहने की कोशिश करनी चाहिए; मैं अशांति में हूं और मुझे शांति ढूंढनी होगी। तो यह आंदोलन कुछ से कुछ में परिवर्तन है। अब इसमें क्या शामिल है? निश्चित रूप से इसमें समय शामिल है, है ना? केवल कालानुक्रमिक समय ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक समय भी होना चाहिए। अर्थात्, एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक जाने के लिए दूरी, एक अंतराल, एक अंतराल का तात्पर्य है जिसे विचार द्वारा, गतिविधि द्वारा कवर किया जाना चाहिए, जिसके लिए कालानुक्रमिक समय के साथ-साथ "मैं" का मनोवैज्ञानिक समय भी आवश्यक है।

एक दिन ऐसा करूंगा" या "मुझे वास्तव में अलग होना चाहिए।" मुझे आशा है कि मैं यह बात स्पष्ट कर रहा हूं कि जो भी परिवर्तन आवश्यक है, चाहे बाहरी रूप से सामाजिक परिस्थितियों में हो या आंतरिक रूप से, इसमें समय शामिल है। और इसलिए आप कहते हैं कि समय आवश्यक है।

अब समय से हमारा क्या तात्पर्य है? इसमें न केवल अंतराल, एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक की गति शामिल है, बल्कि इसमें वर्तमान से कल, भविष्य तक की गति भी शामिल है। हम हमेशा समय के संदर्भ में सोचते हैं क्योंकि हमारा पूरा दिमाग समय पर आधारित है, समय का परिणाम है, है ना? आप कल भी अस्तित्व में थे, आप आज भी मौजूद हैं, और यदि कोई दुर्घटना न हो तो आप कल भी मौजूद रहेंगे। तो आप हमेशा समय के उस क्षेत्र के भीतर कार्य कर रहे हैं, है ना। हम हमेशा इस संदर्भ में सोचते रहते हैं कि क्या था, क्या है और क्या होगा। और समय के उस क्षेत्र में, हम कहते हैं कि हमें बदलना होगा। लेकिन क्या उस क्षेत्र में कोई परिवर्तन हुआ है, या केवल जो है और 'क्या होना चाहिए' के बीच संघर्ष है ? आख़िरकार, मैं एक पल में मन नहीं बदल सकता, न ही मैं समाज को बदल सकता हूँ क्योंकि काम में बहुत सारी विरोधाभासी इच्छाएँ हैं, बहुत सारी विरोधी इच्छाएँ हैं, सामूहिक गतिविधि को नियंत्रित करने और आकार देने के लिए बहुत सारे कानून, नियम हैं। उस सारी संरचना को एक पल में, कल तक, पूरी तरह से उखाड़ा नहीं जा सकता। सभी सुधारक और क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं, या तो हिंसक रूप से या धीरे-धीरे, लेकिन उन सभी को समय की आवश्यकता होती है। और जब मैं अपने आप से कहता हूं, “मैं था; मैं हूं," और "मैं रहूंगा," मैं भी समय में फंस गया हूं। इसलिए मैं अपने आप से पूछ रहा हूं कि क्या समय का तत्व ही कारक, उत्प्रेरक, शक्ति है जो परिवर्तन लाता है, या क्या परिवर्तन लाने के लिए एक पूरी तरह से अलग चीज, एक अलग तत्व की आवश्यकता होती है। जब तक मैं समय के क्षेत्र में बदल रहा हूं, मैं अभी भी अपने विचार के क्षेत्र में ही कार्य कर रहा हूं। 'मुझे क्या होना चाहिए', 'मैं क्या हूं', और 'मुझे क्या नहीं होना चाहिए' ये सब मेरी अपनी चेतना के क्षेत्र में हैं, क्या ऐसा नहीं है? जब आप क्रोधित या ईर्ष्यालु होते हैं, तो आप अनुशासित होना, सुधार करना, नियंत्रण करना शुरू कर देते हैं, लेकिन यह हमेशा 'आप' ही होता है जो नियंत्रित करता है, क्रोधित न होने का प्रयास करता है: हमेशा यह स्वयं ही है जो संचालन कर रहा है, और स्वयं ही है जाहिर तौर पर समय के क्षेत्र में. स्वयं समय का क्षेत्र है। क्या मैं इसे बहुत कठिन बना रहा हूँ? मैं ऐसा नहीं सोचता क्योंकि, आख़िरकार, हममें से अधिकांश लोग इसी तरह से कार्य करते हैं। हमारे भीतर एक निरंतर लड़ाई चल रही है, जो इस प्रक्रिया में हमें थका देती है। इसलिए मैं अपने आप से पूछ रहा हूं कि क्या परिवर्तन संभव है, क्योंकि चेतना के क्षेत्र में परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है। यह महज़ एक अलग मुखौटा पहनने जैसा है: हो सकता है कि मैं अब क्रोधित न रहूँ, लेकिन 'मैं' का तत्व जिसने क्रोध को नियंत्रित किया है वह अभी भी वहाँ है। तो परिवर्तन कैसे लाया जाए? क्योंकि मैं देखता हूं कि जब तक मैं समय के संदर्भ में सोचता हूं, कोई बदलाव नहीं होता है। मुझे नहीं पता कि मैं इस तथ्य का महत्व बता रहा हूं या नहीं

जब तक मैं बदलने के बारे में सोच रहा हूं, मुझे समय का सहारा लेना चाहिए। समय को समझना बहुत कठिन चीज़ है क्योंकि सभी प्रयास समय और आत्म-चेतना को दर्शाते हैं, और क्या उस क्षेत्र में कभी वास्तविक परिवर्तन होता है, या परिवर्तन पूरी तरह से समय के क्षेत्र से बाहर होता है?

आइए इसे अलग तरीके से कहें। अपने बारे में सीखे बिना - अपने आप को एक सामाजिक इकाई, एक आर्थिक इकाई, एक व्यक्ति के रूप में - जाहिर तौर पर कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हो सकता है। स्वयं को जाने बिना आप जो करते हैं वह मात्र परिवर्तन है, एक निश्चित पैटर्न में समायोजन है। इसलिए स्वयं को जाने बिना कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हो सकता। अब, क्या अपने बारे में सीखना समय की बात है? क्या आप तुरंत स्वयं की संपूर्णता को जान सकते हैं, या यह समय की बात है - धीरे-धीरे विश्लेषण, खोज, विच्छेदन, परीक्षण? उस प्रक्रिया में, यदि आप किसी विशेष कोण, किसी विशेष परत को चूक जाते हैं, तो आपका निष्कर्ष, आपका परीक्षण स्पष्ट नहीं होगा, विकृत हो जाएगा। यह एक अंतहीन प्रक्रिया होगी, है न, एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें थोड़ी सी भी गलती और अधिक भ्रम पैदा कर देगी। तो सवाल यह है: क्या मैं स्वयं को तुरंत जान सकता हूँ? क्या मन तुरंत ही इसकी संपूर्ण प्रक्रिया, इसकी संपूर्ण गहराई को जान सकता है, इसकी विशालता, इसकी असाधारण समृद्धि को जान सकता है?

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मुझे लगता है कि आपको अलग तरह से सुनना चाहिए। अभी सुन रहे हो ना, यह देखने के लिए कि हम कैसे समय को पार कर परिवर्तन ला सकते हैं। मैंने बताया है कि समय के क्षेत्र में बिल्कुल भी कोई बदलाव नहीं हुआ है, जो मन ईर्ष्यालु होने के लिए संघर्ष करता है वह अभी भी ईर्ष्यालु है, और फिर मैंने पूछा है कि क्या कोई व्यक्ति विश्लेषण की प्रक्रिया के बिना अपने बारे में पूरी तरह से जान सकता है। मैं अब पूछ रहा हूं कि आप मेरी बात कैसे सुन रहे हैं. क्या आप स्वयं से पूछ रहे हैं कि वह परिवर्तन कैसे लाया जाए जो आमूल-चूल हो? यदि हां, तो आप समय के क्षेत्र में वापस आ गये हैं, है न? या क्या आप समय की बाधा के बिना मेरी बात सुन रहे हैं और सीख रहे हैं? क्या मैं समस्या को स्पष्ट या अधिक कठिन बना रहा हूँ?

संभवतः अधिक कठिन क्योंकि यह एक बहुत ही जटिल समस्या है, और यदि आपने आंतरिक रूप से इसका अनुसरण नहीं किया है, तो जो मैं अब कहने जा रहा हूँ वह आपको अधिक कठिन लगेगा।

मौन, मौन की गति ही एकमात्र क्षेत्र है जिसमें एक है
परिवर्तन; यही एकमात्र स्थिर अवस्था है जहाँ से परिवर्तन हो सकता है।

देखिए, महोदय, समस्या यह है: मैं देखता हूं कि सामाजिक प्रभाव, दबाव, वातावरण, मुझमें कुछ बदलाव लाते हैं; मेरी पत्नी के साथ झगड़े के लिए एक निश्चित समायोजन की आवश्यकता होती है। और जीवन भर मैं समायोजन करता रहता हूं, सतही तौर पर लगातार बदलता रहता हूं, लेकिन अंदर से मैं वही हूं, और समस्या यह है कि मैं गहराई से कैसे बदलूं, बिना किसी प्रभाव के, बिना किसी दबाव के, बिना किसी मकसद के - क्योंकि मकसद का तात्पर्य समय से है। मैं देखता हूं मुझे अवश्य करना चाहिए

बदलो क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं सुस्त, बेवकूफ, ईर्ष्यालु, चिंतित, भयभीत हूं, और हर खुशी गायब हो रही है, और मैं इतना मौलिक, इतनी पूरी तरह से बदलना चाहता हूं कि मेरा दिमाग नया हो जाए। यदि आपकी भी यही समस्या है, तो हम संबंध में हैं, हम एक-दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं, और हम क्या खोज रहे हैं और क्या खोजने जा रहे हैं, यह समझने के लिए हमें वह संबंध स्थापित करना होगा। यदि आप केवल दबाव में, प्रभाव में बदलते हैं, तो आप पाएंगे कि आप केवल समायोजन कर रहे हैं, अनुकरण कर रहे हैं, अनुरूप हो रहे हैं, और जाहिर तौर पर यह परिवर्तन नहीं है। इन सबके पीछे सत्ता अब भी वही है.

परिवर्तन शब्द का अर्थ है, क्या यह इस से उस में बदलना नहीं है, इसलिए अब हम परिवर्तन शब्द को हटा दें और पूछें: मैं स्थिरता की स्थिति में कैसे रह सकता हूं जो अपरिवर्तनीय है, जो केवल एक स्थायी स्थिति नहीं है?

आप देखिए, महोदय, हमें स्थायी स्थिति और स्थिर स्थिति के बीच अंतर करना चाहिए। स्थायित्व की स्थिति - अमर होने की चाहत, स्थायी शांति, आनंद, आनंद पाने की चाहत - यही हममें से अधिकांश लोग वास्तव में चाहते हैं, है न? और क्या हम इसे प्राप्त कर सकते हैं? अथवा, क्या कोई ऐसी अवस्था है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता, जिसमें हमेशा ताज़गी, नयापन, अस्तित्व का भाव रहता है? परिवर्तन का तात्पर्य एक अस्थिरता से है जो स्थायित्व की तलाश में है। लेकिन बिना किसी परिवर्तन के एक अवस्था होती है, जिसमें छाया रहित गति का गुण होता है - एक ऐसी गति जिसमें यह होने और वह बनने के अर्थ में कोई समय नहीं होता है। तो मन इस अवस्था से उस अवस्था में कैसे जा सकता है? हमारी सारी गतिविधि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से स्थायी बनने की कोशिश पर आधारित है। मैं यह भी स्पष्ट रूप से देख सकता हूं कि मन की एक ऐसी स्थिति हो सकती है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है, लेकिन यह तभी हो सकता है जब मन गतिहीन और स्थिर हो। ऐसी निश्चल अवस्था एक स्थिर मन है, मृत मन नहीं, और यह न तो अनित्यता और न ही स्थायित्व को जानता है। यह एक ऐसा मन है जो पूरी तरह से शांत है।

ऐसा मन परिवर्तन की मांग नहीं करता है, और उसकी सारी क्रियाएं उस मौन से उत्पन्न होती हैं। वही एकमात्र अवस्था है जिसमें चिंताग्रस्त मन की थकावट, द्वंद्व पूर्णतया समाप्त हो जाता है। तो, क्या यहां से वहां जाना संभव है, लेकिन समय पर नहीं?

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. मैं नफरत को जानता हूं, मैं ईर्ष्या, महत्वाकांक्षा आदि को जानता हूं, और मैं नफरत को नियंत्रित कर सकता हूं, उसे अनुशासित कर सकता हूं, लेकिन मैं देखता हूं कि यह उस दिमाग से पूरी तरह से अलग चीज है जो कभी नफरत को नहीं जानता है, जिसने कभी नफरत का स्वाद नहीं चखा है क्योंकि यह निर्दोष है , ताजा, पूरी तरह से और पूरी तरह से अलग गुणवत्ता का। क्या मन तुरन्त ऐसा हो सकता है जो घृणा नहीं जानता? आख़िरकार, नफ़रत करने वाला मन नहीं जान सकता कि प्यार क्या है। तो नफरत कैसे तुरंत, पूरी तरह से ख़त्म हो जाए, ताकि एक और स्थिति हो जहां केवल प्यार हो? वह

संपूर्ण, आमूल-चूल परिवर्तन है. और यह चमत्कार कैसे घटित होगा? हम कहते हैं कि चमत्कार केवल ईश्वर की कृपा से या किसी रहस्यमय तरीके से ही हो सकता है। अगर आप ऐसा कहेंगे तो ऐसा कभी नहीं होगा. इस चमत्कार को लाने के लिए, सबसे पहले हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि समय के संदर्भ में कोई बदलाव नहीं है, केवल एक अलग मुखौटा लगाने की प्रक्रिया है।

आइए हम इस पर दूसरे दृष्टिकोण से हमला करें। क्या आप कभी चुप रहने के प्रति सचेत हैं? क्या आपने मौन का अनुभव किया है? यदि आपने मौन का अनुभव किया है तो वह मौन तो नहीं है? यदि कोई पर्यवेक्षक मौन का पालन कर रहा है, तो यह अनुभवकर्ता का प्रक्षेपण है - अनुभवकर्ता मौन की स्थिति में रहना चाहता है। इसलिए यह मौन नहीं है. वास्तविकता का अनुभव कभी नहीं किया जा सकता; यदि आप वास्तविकता का अनुभव करते हैं, तो यह वास्तविकता नहीं है क्योंकि तब अनुभवकर्ता और अनुभवकर्ता के बीच विभाजन होता है। वह विभाजन द्वंद्व और द्वंद्व के सभी संघर्षों का प्रतीक है। इसलिए मौन का कभी अनुभव नहीं किया जा सकता।

यदि आप वास्तव में इसे समझते हैं, यदि आप सुन रहे हैं और इस तथ्य को सीख रहे हैं कि मौन का कभी अनुभव नहीं किया जा सकता है, तो मन की वह स्थिति क्या है जिसे मौन का कोई अनुभव नहीं है, वह मौन है ? मैं यह देखना शुरू करता हूं कि जो मन शांत है उसे इस बात का एहसास नहीं है कि वह शांत है। तो विनम्रता के साथ भी. यदि आप सचेत हैं कि आप विनम्र हैं, तो वह विनम्रता नहीं है। यदि मैं सचेत हूं कि मैं पवित्र हूं, आध्यात्मिक हूं, तो मैं नहीं हूं; यदि मैं सचेत हूं कि मैं जानता हूं, तो मैं अज्ञानी हूं। यदि मैं सचेत हूं कि मेरा मन मौन है, तो कोई मौन नहीं है। तो मौन मन की एक अवस्था है जिसमें अनुभवकर्ता की अनुपस्थिति होती है।

क्या तुम उस मौन अवस्था में मुझे सुन सकते हो, इस बात से अनजान होकर कि तुम चुप हो?

महोदय, इसके लिए बहुत अधिक ऊर्जा, बहुत अधिक सटीक सोच की आवश्यकता होती है, लेकिन यदि आपने बहुत, बहुत स्पष्ट रूप से सोचा है, अपने आप को बहुत गहराई से, इतनी स्पष्टता से देखा है कि कोई छाया नहीं बची है, तो आप देखेंगे कि मन इसमें मौन का गुण है जिसमें समय और समय की गति बंद हो जाती है; बदलाव का सारा सवाल ही ख़त्म हो गया है क्योंकि न तो कोई माँग है और न ही बदलाव की कोई ज़रूरत है।

यह व्यक्त करना सबसे कठिन चीजों में से एक है क्योंकि शब्दों में इसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि आप केवल इसका अनुभव करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो आप ऐसा नहीं करेंगे; आप केवल प्रतीक्षा और प्रतीक्षा ही करेंगे। लेकिन यदि आपने परिवर्तन की पूरी समस्या, एक अवस्था से दूसरी अवस्था, एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक जाने की पूरी प्रक्रिया की गहराई से जांच की है, यदि आप इसमें बहुत, बहुत गहराई से गए हैं, इसे समझा है, इसे समझा है, और इसे छोड़ दिया है - जिस परित्याग में न तो आशा है और न ही निराशा - तब मन की एक अवस्था होती है जो मौन है, और वह है

मौन को मन द्वारा पहचाना नहीं जा सकता क्योंकि सारी पहचान अनुभव की एक प्रक्रिया है। इसलिए, परिवर्तन का तात्पर्य समय में केवल एक हलचल से है, और यह गति तलवार से हवा को काटने जैसी है - यह कुछ नहीं करती है, यह केवल बहुत सारी गतिविधि पैदा करती है। लेकिन जब आप पूरी प्रक्रिया, निहितार्थ और परिवर्तन के महत्व को समझते हैं, और इस तरह इसे अपने से दूर जाने देते हैं, तो आप देखेंगे कि मन मौन की स्थिति में है जिसमें समय की सभी गति बंद हो गई है, और वह नई गति है मौन की पहचान पहचान योग्य नहीं है और इसलिए अनुभव करने योग्य नहीं है। ऐसा राज्य परिवर्तन की मांग नहीं करता; यह शाश्वत गति में है, और इसलिए समय से परे है। फिर एक ऐसा कार्य होता है जो हमेशा और सभी परिस्थितियों में सही, सत्य होता है।

10 दिसंबर 1958

छठी वार्ता बम्बई में

मुझे आश्चर्य है कि कोई विचार को महत्व क्यों देता है? हमारे लिए सोच बहुत महत्वपूर्ण और सार्थक हो गयी है। यह जितना अधिक सूक्ष्म, अधिक चालाक, जितना अधिक जटिल है, हम इसे उतना ही अधिक महत्व देते हैं, और मुझे आश्चर्य है कि क्या विचार का कोई गहरा, मौलिक महत्व है। क्या हम विचार से जीते हैं? क्या हम अपना जीवन विचार से संचालित करते हैं? क्या विचार-आदर्श-हमारे जीवन में कोई गहरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, या क्या हम लापरवाही से सोचते हैं, क्या हमारे विचार सतही हैं, हमारे विचार बहुत गहरे नहीं हैं? और क्या विचार बहुत गहराई तक जा सकता है, या यह हमेशा सतही होता है? मुझे लगता है कि यह बहुत दिलचस्प होगा अगर हम इस पूरी समस्या में जा सकें और पता लगा सकें कि क्या धार्मिक जीवन विचार पर निर्भर है। धार्मिक जीवन से मेरा तात्पर्य मंदिर, चर्च, हठधर्मिता, विश्वास, रीति-रिवाज और बाकी सभी चीजों में जाना नहीं है। वे सभी स्पष्ट रूप से सामाजिक सुविधाएं हैं और बहुत कम अर्थ वाली हैं। लेकिन क्या विचार वास्तव में धार्मिक जीवन के लिए अनुकूल है? क्या विचार वास्तव में गहरी धार्मिक भावना की सुंदरता, गहराई को उजागर करता है? क्या विचार सत्य की खोज का साधन है? यदि नहीं, तो हमारी समस्त खोज में विचार की क्या भूमिका है?

यदि हम, आप और मैं, वास्तव में इस पर धीरे-धीरे, गहराई से विचार कर सकें, तो शायद हम जीवन के वास्तविक महत्व की खोज कर पाएंगे और विचार को इतना अधिक महत्व नहीं देंगे। शायद हम यह भी पता लगा सकेंगे कि कोई सही या गलत सोच नहीं होती, बल्कि वह सोच ही बहुत सतही होती है।

विचार वास्तव में एक प्रतिक्रिया है, क्या ऐसा नहीं है? - किसी भी समस्या पर प्रतिक्रिया, चाहे वह गणित की समस्या हो, भौतिकी की समस्या हो, या विज्ञान की समस्या हो

संबंध। जिसे हम "सोच" कहते हैं वह हमेशा समस्या, चुनौती और प्रतिक्रिया के बीच की प्रतिक्रिया होती है, है न? और सोचना, जैसा कोई देखता है वैसा देखता है, एकत्रित अनुभव स्मृति के रूप में संग्रहीत होता है और किसी भी चुनौती का जवाब देता है। किसी व्यक्ति के अनुभव की संपूर्ण पृष्ठभूमि, रोजमर्रा के अनुभव से एकत्रित और संचित किया गया ज्ञान, स्मृति का विशाल भंडार बन जाता है, और वह स्मृति प्रतिक्रिया देती है, या तो मौखिक तरीके से या भावनात्मक तरीके से या बौद्धिक रूप से।

मुझे आशा है कि आप मुझे किसी बातचीत या प्रवचन के रूप में नहीं बल्कि ऐसे सुन रहे हैं जैसे कि आप और मैं दो लोग हैं, जो समस्या पर बात कर रहे हैं और विचार के वास्तविक महत्व और मूल्य का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

मेरे लिए, विचार वास्तविक खोज का साधन नहीं है; विचार वह उपकरण नहीं है जो खोज करता है, जो खोजने या जांचने में सक्षम है। और यदि आप और मैं एक-दूसरे को समझना चाहते हैं, संवाद करना चाहते हैं, विचार के महत्व के बारे में एक-दूसरे से संवाद करना चाहते हैं, तो हम दोनों को बिना स्वीकार या अस्वीकार किए, बिना बचाव किए या किसी भी चीज़ को हल्के में लिए बिना देखने में सक्षम होना चाहिए। आप और मैं जो करने जा रहे हैं वह विचार की जांच करना है, मौखिक या बौद्धिक रूप से नहीं, बल्कि इसे एक तथ्य के रूप में देखना। मैं नहीं जानता कि क्या आपने कभी किसी तथ्य को बिना किसी राय के देखा है। मुझे लगता है कि अगर हम "विचार" नामक इस जटिल चीज़ को देख सकें, तो न तो अपनी राय दें और न ही इसे आवश्यक या गैर-आवश्यक कहकर अपने पूर्वाग्रह व्यक्त करें, बल्कि केवल इसका अवलोकन करके हम विचार की संपूर्ण सामग्री का पता लगाने में सक्षम होंगे। विचार की पूरी मशीनरी.

निश्चय ही, सोचना सतही है; यह स्मृति, एकत्रित अनुभवों, कंडीशनिंग की प्रतिक्रिया है; और उस कंडीशनिंग के अनुसार, जो हमारी पृष्ठभूमि है, विचार किसी भी चुनौती का जवाब देता है। विचार हमेशा इस एकत्रित अनुभव से बंधा होता है, और सवाल यह है: क्या सोच कभी स्वतंत्र हो सकती है? क्योंकि केवल स्वतंत्रता में ही कोई निरीक्षण कर सकता है, केवल स्वतंत्रता में ही कोई खोज कर सकता है। केवल सहजता की स्थिति में ही, जहां कोई बाध्यता नहीं है, कोई तात्कालिक मांग नहीं है, कोई सामाजिक प्रभाव का दबाव नहीं है, वास्तविक खोज संभव है। निश्चित रूप से, आप क्या सोच रहे हैं, क्यों सोचते हैं, और आपके विचार के स्रोत और मकसद का निरीक्षण करने के लिए, सहजता, स्वतंत्रता की एक निश्चित भावना होनी चाहिए, क्योंकि कोई भी प्रभाव अवलोकन को मोड़ देता है। समस्त चिंतन के साथ यदि कोई मजबूरी या दबाव हो तो विचार टेढ़ा हो जाता है।

तो क्या विचार कभी मनुष्य को स्वतंत्र कर सकता है, मन को स्वतंत्र कर सकता है, और क्या सत्य की खोज के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है? आज़ादी के दो अलग-अलग प्रकार हैं- किसी चीज़ से आज़ादी या उसे पूरा करने की आज़ादी

कुछ बनो; और वहाँ आज़ादी है, बस आज़ादी। हममें से अधिकांश लोग किसी चीज़ से मुक्त होना चाहते हैं - समय से मुक्त या किसी रिश्तेदार से मुक्त, या फिर हम पूर्ण होने के लिए, स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्र होना चाहते हैं। आज़ादी के बारे में हमारे सभी विचार उन दो तक ही सीमित हैं - किसी चीज़ से आज़ादी या कुछ बनने की आज़ादी। अब दोनों ही रिएक्शन हैं ना? दोनों ही विचार का परिणाम हैं, किसी न किसी प्रकार की आंतरिक या बाह्य बाध्यता का परिणाम हैं।

विचार उस प्रक्रिया में फंस जाता है; विचार अत्याचार से मुक्ति, भ्रष्ट सरकार से मुक्ति, किसी विशेष रिश्ते से मुक्ति, चिंता की भावना से मुक्ति चाहता है, और खुद को मुक्त करने में, व्यक्ति खुद को किसी और चीज में पूरा करने में सक्षम होने की उम्मीद करता है। इसलिए हम सदैव स्वतंत्रता से, या होने की, पूर्ण करने की स्वतंत्रता के संदर्भ में सोचते हैं। और ऐसा लगता है कि केवल उन दो श्रेणियों में स्वतंत्रता के बारे में सोचना बहुत सतही है।

तो, क्या ऐसी आज़ादी है जो महज़ एक प्रतिक्रिया नहीं है, जिसमें न तो कोई गति है और न ही कोई गति है? और क्या ऐसी स्वतंत्रता को विचार द्वारा एक विचार के रूप में उत्पन्न करके हासिल किया जा सकता है? क्योंकि यदि आप केवल किसी चीज़ से मुक्त हैं, तो आप वास्तव में स्वतंत्र नहीं हैं, और यदि आप पूर्ण होने के अर्थ में स्वतंत्र हैं, तो इसमें हमेशा चिंता, भय, हताशा और दुःख होता है।

क्या विचार मन को मुक्त कर सकता है ताकि दुःख और चिंता पूरी तरह से ख़त्म हो जाएँ? निश्चित रूप से, प्यार की तरह, वास्तविक अच्छाई विचार से विकसित नहीं होती है; यह अस्तित्व की एक अवस्था है, लेकिन वह अवस्था उस मन द्वारा नहीं लाई जा सकती जो स्वयं से कहता है, "मुझे अच्छा होना चाहिए।" तो, क्या विचार के विभिन्न माध्यमों से खोज कर कोई यह पता लगा सकता है कि स्वतंत्रता क्या है? क्या विचार जीवन के वास्तविक महत्व को उजागर कर सकता है, वास्तविकता को उजागर कर सकता है? या वास्तविकता के लिए विचार को पूरी तरह से निलंबित कर दिया जाना चाहिए?

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. आप कुछ खोज रहे हैं ना? यदि आप तथाकथित धार्मिक व्यक्ति हैं, तो आप वह खोज रहे हैं जिसे आप भगवान कहते हैं, या फिर आप अधिक धन, अधिक खुशी, या आप अच्छा बनना चाहते हैं; आप अपनी महत्वाकांक्षा की अभिव्यक्ति चाह रहे हैं। हर कोई कुछ न कुछ खोज रहा है.

अब तलाश से हमारा क्या तात्पर्य है? खोजने का तात्पर्य यह है कि आप जानते हैं कि आप क्या खोज रहे हैं। जब आप कहते हैं कि आप मानसिक शांति की तलाश कर रहे हैं, तो इसका मतलब यह होना चाहिए कि या तो आप इसे पहले ही अनुभव कर चुके हैं और इसे वापस चाहते हैं, या आप एक मौखिक विचार पेश कर रहे हैं जो वास्तविकता नहीं है, बल्कि विचार द्वारा बनाई गई चीज़ है। तो खोज का तात्पर्य यह है कि आप जो खोज रहे हैं उसे आप पहले ही जान चुके हैं या अनुभव कर चुके हैं। आप ऐसी किसी चीज़ की तलाश नहीं कर सकते जिसे आप नहीं जानते। जब आप कहते हैं कि आप ईश्वर को खोज रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आप पहले से ही जानते हैं कि ईश्वर क्या है, अन्यथा आपके संस्कार ने यह विचार प्रस्तुत किया है कि ईश्वर है। तो, सोच आपको उस चीज़ की तलाश करने के लिए मजबूर करती है जिसे विचार ने स्वयं प्रक्षेपित किया है। सोचा, जो है

सतही, विचार, कई अनुभवों का परिणाम है जो एकत्र किए गए हैं और जो आपकी पृष्ठभूमि बनाते हैं - उस विचार से आप एक विचार पेश करते हैं और फिर आप उसकी तलाश करते हैं! और ईश्वर की खोज में आपके पास दर्शन होते हैं, आपके पास अनुभव होते हैं जो केवल खोज को मजबूत करते हैं और आपको अपनी पृष्ठभूमि के अनुमानों का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं। तो, खोज अभी भी विचार की गति है। व्यक्ति संघर्ष में है, उथल-पुथल में है, और उस उथल-पुथल से बचने के लिए, विचार यह विचार प्रस्तुत करना शुरू कर देता है कि शांति होनी चाहिए, कि स्थायी आनंद होना चाहिए, और फिर वह इसकी तलाश में लग जाता है। यह वास्तव में हममें से प्रत्येक के भीतर घटित हो रहा है। कोई इस दयनीय अस्तित्व, इस शाश्वत अराजकता को नहीं समझता है, और वह आनंद की स्थायी स्थिति से बचना चाहता है। अब वह स्थिति मन द्वारा प्रक्षेपित होती है, और इसे प्रक्षेपित करने के बाद, विचार कहता है, "मुझे इसे पाने के लिए सहायता ढूंढनी होगी" - और इस प्रकार विधियों, प्रणाली, अभ्यास का अनुसरण करता है। विचार समस्या पैदा करता है, और फिर स्थायी स्थिति के अनुमानित विचार तक पहुंचने के लिए विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से समस्या से बचने की कोशिश करता है। तो, विचार अपने स्वयं के प्रक्षेपण, अपनी छाया का अनुसरण करता है।

अब, वास्तव में सवाल यह है: क्या मन सोच को निलंबित कर सकता है और मन की एक अलग गुणवत्ता से रोजमर्रा के अनुभव का सामना कर सकता है? इसका मतलब एकत्रित स्मृति, एकत्रित अनुभव को भूल जाना या उपेक्षा करना नहीं है। निःसंदेह, तकनीशियनों, पुल-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, क्लर्कों इत्यादि की आवश्यकता है, लेकिन क्या यह संभव है - यह महसूस करते हुए कि सोच हमारी समस्याओं का समाधान नहीं है - विचार को निलंबित कर दिया जाए और समस्या का निरीक्षण किया जाए? मैं नहीं जानता कि क्या आपने कभी किसी समस्या को बिना उत्तेजना, उथल-पुथल, विचार की बेचैनी के सचमुच हल करने की कोशिश की है। सोच बेचैनी, चिंता, समाधान की मांग की गतियों की एक श्रृंखला बनाती है, और क्या आपने कभी विचार को डुबाने, सोच को निलंबित करने और केवल समस्या का निरीक्षण करने की कोशिश की है? कृपया इसे आज़माएँ, महोदय, जैसा कि मैं बात कर रहा हूँ। सुनो ताकि आप विचार की हलचल के बिना समस्या को देख सकें।

आपकी अनेक समस्याएँ हैं—रिश्ते की समस्याएँ, परिवार की समस्याएँ, आपके काम की समस्याएँ, आपकी ज़िम्मेदारियाँ, आपके सामाजिक, पर्यावरणीय या राजनीतिक जीवन की समस्याएँ—चाहे वे तात्कालिक हों, गंभीर हों या दूरस्थ हों। उनमें से किसी एक समस्या को उठा कर देखिये। आपने हमेशा इस पर ध्यान केंद्रित किया है, क्या आपने ऐसा नहीं किया है, विचार की एक निश्चित उत्तेजना के साथ जो कहती है, "मुझे इसे हल करना होगा। मुझे क्या करना है? क्या ये सही है या वो? क्या यह सम्मानजनक है या संभव नहीं है?" वगैरह वगैरह. और इस बेचैन विचार के साथ आप समस्या की जांच करते हैं, और जाहिर है, उस बेचैनी के माध्यम से आप जो भी समाधान ढूंढते हैं वह सही उत्तर नहीं है और केवल और अधिक समस्याएं पैदा करता है। असल में यही हो रहा है

हम में से हर एक के साथ. तो क्या आप अपने विचार को स्थगित करके समस्या को देख सकते हैं? विचार एकत्रित अनुभवों का परिणाम है, और उनकी यादें समस्या का जवाब देती हैं, लेकिन क्या आप विचार को निलंबित कर सकते हैं ताकि फिलहाल आपका दिमाग दबाव में न हो, हजारों कल के बोझ के नीचे न हो? यह केवल यह कहने की बात नहीं है, "मैं नहीं सोचूंगा।" यह असंभव है। लेकिन अगर आप इस सच्चाई को देखते हैं कि एक उत्तेजित मन जो केवल अपनी कंडीशनिंग, अपनी पृष्ठभूमि, अपने संचित अनुभवों के अनुसार प्रतिक्रिया दे रहा है, वह समस्या का समाधान या समझ नहीं सकता है - यदि आप उस तथ्य की सच्चाई को पूरी तरह से देखते हैं, तो आप समझते हैं कि विचार नहीं है वह उपकरण जो हमारी समस्याओं का समाधान करेगा।

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ मनुष्य कर सकता है, वही कार्य एक उपयुक्त इलेक्ट्रॉनिक मशीन भी कर सकती है। यह खोजा जा रहा है और एक या दो दशक में यह सिद्ध हो जाएगा कि जो काम मानव मस्तिष्क कर सकता है, वही काम मशीन भी कर सकती है, और काफी कुशलता से। यह संभवतः रचनाएँ करेगा, कविताएँ लिखेगा, पुस्तकों का अनुवाद करेगा, इत्यादि। और रासायनिक रूप से वे आराम, शांति, चिंता से मुक्ति, ट्रैंकुलाइजेशन देने वाली दवाएं बना रहे हैं। तो आप समझ गये श्रीमान, क्या होने वाला है? क्या मशीन आपके काम को अपने हाथ में ले लेती है और शायद उसे बेहतर ढंग से करती है, और क्या दवा आपको मानसिक शांति देती है? कुछ ऐसी दवाएं हैं जिनका सेवन आप अपने दिमाग को असाधारण रूप से शांत करने के लिए कर सकते हैं ताकि आपको अनुशासन, नियंत्रण, सांस लेने के व्यायाम और उन सभी तरकीबों से न गुजरना पड़े। तो क्षुद्र मन, उथला मन, सीमित मन जो केवल अपने से एक इंच दूर सोचता है, उसे कोई चिंता नहीं होगी, उसे शांति मिलेगी।

लेकिन ऐसा मन अभी भी क्षुद्र है; इसकी सीमाएं पहचानने योग्य हैं और इसके सभी विचार उथले हैं। हालाँकि गोलियाँ लेने से यह बहुत शांत हो जाता है, फिर भी इसने अपनी सीमाएँ नहीं तोड़ी हैं, है ना? एक क्षुद्र मन, ईश्वर के बारे में सोचना, एक खोदी हुई छवि से दूसरे में जाना, बहुत सारे शब्द बोलना, बहुत सारी प्रार्थनाएँ बड़बड़ाना, अभी भी एक क्षुद्र मन है। और हममें से अधिकांश के साथ यही स्थिति है।

तो विचार, जो हमेशा सतही, हमेशा क्षुद्र, हमेशा सीमित होता है, उस विचार को कैसे निलंबित किया जा सकता है ताकि कोई सीमा ही न हो, ताकि स्वतंत्रता हो - लेकिन किसी चीज़ से आज़ादी या कुछ होने की आज़ादी नहीं? मुझे आशा है कि आप प्रश्न को समझ गये होंगे।

आप देखिए, कोई हमेशा के लिए खुद को सुधार सकता है - कोई थोड़ा और सोच सकता है, खुद को आत्म-सुधार में लगा सकता है, अधिक दयालु, अधिक उदार हो सकता है, यह या वह, लेकिन यह हमेशा स्वयं के क्षेत्र, 'मैं' के भीतर होता है। यह 'मैं' ही है जो हासिल कर रहा है, बन रहा है और वह 'मैं' हमेशा अनुभवों, यादों के संग्रह के रूप में पहचाना जाता है। और समस्या यह है कि इसका समाधान कैसे किया जाए, 'मैं' की सीमाओं को कैसे तोड़ा जाए। जब मैं "कैसे" कहता हूं तो मेरा तात्पर्य किसी विधि से नहीं बल्कि एक विधि से होता है

जाँच करना। क्योंकि, सभी तरीकों में विचार की कार्यप्रणाली, विचार का नियंत्रण, एक विचार का दूसरे विचार से प्रतिस्थापन शामिल होता है। इसलिए जब आपके पास केवल विधियाँ, प्रणालियाँ, अनुशासन होते हैं, तो कोई पूछताछ नहीं होती है।

यह सब देखकर - वह विचार स्मृति का, एकत्रित अनुभव का परिणाम है जो बहुत सीमित है, और वास्तविकता, ईश्वर, सत्य, पूर्णता, सौंदर्य की तलाश वास्तव में वर्तमान के साथ संघर्ष में विचार का प्रक्षेपण है और एक विचार की ओर जा रही है भविष्य का, और यह देखते हुए कि भविष्य की खोज समय का निर्माण करती है - यह सब देखकर, निश्चित रूप से यह स्पष्ट है कि विचार को निलंबित कर दिया जाना चाहिए। निश्चित रूप से, कुछ ऐसा होना चाहिए, जिसे विचार पकड़ नहीं सकता और स्मृति में नहीं रख सकता, कुछ बिल्कुल नया, पूरी तरह से अनजाना, अपरिचित। और आप, अपने विचारों की बेचैनी के साथ, उस स्थिति को कैसे समझ सकते हैं?

क्या समझना समय की बात है? क्या आप कल इस बारे में सोच कर समझ पायेंगे? आप जानते हैं कि कैसे, यदि आपके पास कोई समस्या है, तो विचार उसकी जांच करता है, उसका विश्लेषण करता है, उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है, जितना संभव हो सके उसमें घुस जाता है, और फिर भी उसके पास कोई उत्तर नहीं होता क्योंकि वह हमेशा समस्या की चिंता के साथ रहता है।
फिर वह इसे छोड़ देता है, इसे स्थगित कर देता है, और क्योंकि विचार ने खुद को समस्या से अलग कर लिया है ताकि समस्या अब मन पर दबाव नहीं डाल रही है, जाने-अनजाने में, तब उत्तर आता है। आपके साथ भी ऐसा हुआ होगा.

तो क्या हम सोच के इस पूरे कारोबार को नहीं देख सकते? आप जानते हैं कि आप किस तरह उस बौद्धिक व्यक्ति की पूजा करते हैं जो ज्ञान से भरपूर है, जो शब्दों और विचारों के अलावा कुछ नहीं है, लेकिन जो अभी भी सतही स्तर पर जी रहा है।
क्या आपने देखा है कि आप उस व्यक्ति के प्रति कितनी सहजता से आकर्षित होते हैं जो कहता है, "मुझे पता है"? तो, यह सब देखते हुए, सवाल यह है कि क्या विचार को निलंबित किया जा सकता है? यदि आपने समस्या को समझ लिया है, तो जैसे-जैसे मैं इसका और अधिक अन्वेषण करना शुरू करूँगा, आप इसका अनुसरण करने में सक्षम हो जाएँगे।

मृत्यु की समस्या है, ईश्वर की समस्या है, सद्गुण की, रिश्ते की; हम जिस संघर्ष में हैं, उसकी समस्या है, नौकरी, पैसे की कमी; वहाँ गरीबी, भुखमरी, और निराशा और आशा का पूरा दुख की समस्या है। आप इन समस्याओं को एक-एक करके हल नहीं कर सकते; यह असंभव है। आपको उन्हें पूरी तरह से, समग्र रूप से हल करना होगा, थोड़ा-थोड़ा करके नहीं; अन्यथा, आप उन्हें कभी भी हल नहीं कर पाएंगे। क्योंकि एक समस्या को हल करने में जैसे कि वह दूसरों से अलग हो गई हो, आप बस एक और समस्या पैदा कर देते हैं। कोई भी समस्या पृथक, अलग-थलग नहीं होती। प्रत्येक समस्या सतही या गहराई से किसी अन्य समस्या से संबंधित होती है, इसलिए आपको इसे पूरी तरह से समझना होगा। और विचार कभी भी इसे पूरी तरह से नहीं समझ सकता क्योंकि विचार ही है

आंशिक, खंडित है. तो समस्या को हल करने के लिए दिमाग कैसा है? आप इसे ऐसे हल नहीं कर सकते जैसे कि यह अलग-थलग हो; आप बौद्धिक अमूर्तन के माध्यम से कोई समाधान नहीं ढूंढ सकते; आप इसे संचित स्मृतियों के माध्यम से हल नहीं कर सकते; आप इसे मंदिर, या शराब, या सेक्स या किसी और चीज़ से बचकर हल नहीं कर सकते। इसे पूरी तरह से समझा जाना चाहिए, पूरी तरह से समझा जाना चाहिए, और यह तभी हो सकता है जब विचार का निलंबन हो। जब मन गतिहीन और शांत होता है, तो मन पर समस्या का प्रतिबिंब पूरी तरह से अलग होता है। जब झील बहुत शांत होती है, तो आप उसकी गहराई देख सकते हैं, आप हर मछली, हर घास-फूस, हर फड़फड़ाहट देख सकते हैं; इसी तरह, जब मन पूरी तरह से गतिहीन होता है, तो कोई भी बहुत स्पष्ट रूप से देख सकता है। यह केवल तभी हो सकता है जब विचार का निलंबन हो, समस्या को हल करने के लिए नहीं, बल्कि इसके महत्व, इसकी खंडित प्रकृति को देखने के लिए; और तब स्वयं के बारे में विचार शांत, गतिहीन हो जाता है, न केवल सचेतन स्तर पर बल्कि गहराई से।

इसीलिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है, अपने बारे में सीखना आवश्यक है। और यदि आप नहीं देखते हैं, या यदि आप ऐसे दिमाग से देखते हैं जो संचित ज्ञान से भरा है तो आप अपने बारे में नहीं जान सकते। सीखने के लिए, आपको स्वतंत्र होना होगा। तब आप समस्या को केवल सतही तौर पर नहीं देख सकते; तब हर मुद्दे, हर चुनौती का उस गहराई से जवाब दिया जाता है जिस तक विचार नहीं पहुंच सकता।

एक गतिहीन मन, एक शांत मन, सड़ा हुआ, मृत, भ्रष्ट नहीं होता है, जैसा कि वह मन होता है जिसे किसी दवा द्वारा, सांस लेने से, या आत्म-सम्मोहन की किसी प्रणाली द्वारा स्थिर बना दिया जाता है। यह एक ऐसा मन है जो पूरी तरह से जीवित है; स्वयं का प्रत्येक अछूता क्षेत्र प्रकाशित होता है, और प्रकाश के उस केंद्र से यह प्रतिक्रिया करता है - और यह कोई छाया नहीं बनाता है।

14 दिसंबर, 1958

सातवीं वार्ता बम्बई में

मुझे आश्चर्य है कि आप इन वार्ताओं में क्यों आते हैं। यदि यह केवल जीवन के बारे में अपने स्वयं के विशेष सिद्धांत की पुष्टि करने या किसी अन्य सिद्धांत को खोजने का प्रयास करने के लिए है जो बेहतर, अधिक सूक्ष्म है, तो मुझे लगता है कि इन वार्ताओं का बहुत कम अर्थ होगा।
क्योंकि हम यहां जो करने का प्रयास कर रहे हैं, यदि हम कर सकते हैं, तो सिद्धांतों के पर्दे को तोड़ना और बुद्धिमान बनना है। हमारे अस्तित्व के सभी स्तरों पर - शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, इत्यादि - बहुत सारी समस्याएं हैं और जाहिर तौर पर कोई भी सिद्धांत उनमें से किसी को भी हल नहीं कर सकता है। सिद्धांत हमेशा लाता है

अनुरूपता के बारे में, लेकिन तथ्य की समझ मन को मुक्त करती है और बुद्धिमत्ता, जीवन जीने का एक प्रबुद्ध तरीका लाती है। जब मन सिद्धांतों, विचारधाराओं, सूत्रों या बौद्धिक अवधारणाओं से ग्रस्त होता है तो जीवन जीने का यह प्रबुद्ध तरीका स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया जाता है। मुझे लगता है - और मैं इसे पूरी विनम्रता से कह रहा हूं - कि यहां इन प्रवचनों का कार्य, यदि संभव हो तो, इस बुद्धिमत्ता को जागृत करना है ताकि आप एक व्यक्ति के रूप में उन विभिन्न स्थितियों का सामना करने में सक्षम हो सकें जिनमें आप खुद को आत्मज्ञान के साथ पाते हैं, स्पष्टता के साथ, गहरी आंतरिक समझ की भावना के साथ।

इसलिए यदि आप और मैं इस बिंदु पर स्पष्ट हैं, कि हम वास्तव में अंधेरे की इस दीवार, सिद्धांतों, विश्वासों, हठधर्मिता और अंधविश्वासों की दीवार को तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, तो, इसे तोड़कर हम उस बुद्धि को जागृत करेंगे जो एक है जीवन जीने की संपूर्ण प्रक्रिया की प्रबुद्ध समझ। तब इन प्रवचनों का अर्थ होगा, वास्तविक महत्व होगा। लेकिन अगर हम जो कहा गया है उसे केवल एक सूत्र, एक सिद्धांत में अनुवादित करते हैं, तो हम इस सब के पूरे बिंदु से चूक जाएंगे। विचार, चाहे कितने ही परिष्कृत, कितने ही धूर्त, कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों, कभी भी हमारे अस्तित्व की समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते; कोई भी हठधर्मिता, कोई नई या पुरानी प्रणाली कभी भी हमारे जीवन की बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक समस्याओं का समाधान नहीं करेगी। हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में प्रबुद्ध बुद्धि के अनुप्रयोग की आवश्यकता है, और इसके लिए बहुत अधिक अंतर्दृष्टि, बहुत अधिक गहरी आंतरिक जांच की आवश्यकता है। जाहिर तौर पर अगर हम किसी विशेष फॉर्मूले या सिद्धांत के अनुसार कार्य करते हैं - चाहे वह पूंजीवादी हो, समाजवादी हो, या धार्मिक हो, कोई गहरी आंतरिक खोज नहीं है। यह केवल अनुरूपता की ओर ले जाता है। लेकिन दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश लोग सिद्धांतों, सूत्रों, विचार प्रणालियों में फंसे हुए हैं। हमारे पास पहले विचार की एक प्रणाली होती है और फिर तथ्य को उस प्रणाली में फिट करने का प्रयास करते हैं - जो एक असंभव है। हम निरपवाद रूप से यही करते हैं। हम कुछ सिद्धांत को स्वीकार करते हैं और उस सिद्धांत, उस विश्वास, उस हठधर्मिता के अनुरूप हम बनने की कोशिश करते हैं, जो स्पष्ट रूप से जीवन जीने के सबसे बेतुके तरीके की ओर ले जाता है।

तो आप और मैं, दो व्यक्तियों के रूप में जो जीवन की उस धारा में फंसे हुए हैं जिसका हम हिस्सा हैं - अपनी उथल-पुथल, चिंताओं, भय, हमारे गुज़रते स्नेह और खुशियों के साथ - क्या हम अपनी समस्याओं को समझ नहीं सकते, उन पर अपना दिमाग नहीं लगा सकते और प्रयोग से दिमाग तेज करें? लेकिन चालाकी भरे तरीके से नहीं, जो कि हममें से ज्यादातर लोग चाहते हैं - विभिन्न प्रकार की राजनीतिक और व्यावसायिक चालाकियों और रिश्तों में धूर्तता के माध्यम से किसी भी कीमत पर जीवित रहना। क्योंकि मुझे लगता है कि अगर हम जीवन नामक इस असाधारण चीज़ के प्रति संवेदनशील हो सकें, न केवल जीवन को अपने विशेष विचार पैटर्न के अनुसार अनुवादित करना चाहें, बल्कि जीवन की पूरी प्रक्रिया के प्रति संवेदनशील बनें - प्रकृति के प्रति, लोगों के प्रति, विचारों के प्रति - तब शायद हम जान सकेंगे कि क्या सच है और क्या झूठ।

संवेदनशीलता की वह क्षमता निस्संदेह बुद्धिमत्ता ही है, है न?
बुद्धिमत्ता जीवन की सभी गतिविधियों के प्रति गहराई से संवेदनशील होने की क्षमता है। आप एक व्यवसायी, एक फाइनेंसर, एक राजनेता, एक धार्मिक व्यक्ति, एक कम्युनिस्ट, या इस या उस के रूप में - टुकड़ों में, व्यक्तिगत रूप से, अलगाव में रहना जारी नहीं रख सकते हैं - क्योंकि आप असाधारण क्षमताओं वाले संपूर्ण प्राणी हैं। जीवित रहना, सतर्क रहना, जीवन की इस गतिविधि के प्रति संवेदनशील होना ही सच्ची बुद्धिमत्ता है, और जब कोई इतना बुद्धिमान होता है, तो वह उस बुद्धि को किसी भी स्तर पर किसी भी कार्य में पूरी तरह से लागू कर सकता है। तो मुझे ऐसा लगता है कि जीवन के प्रति, कुरूप के प्रति, सुंदर के प्रति, स्वर्ग के प्रति, अपने मन के सभी अनछुए क्षेत्रों के प्रति और अपने मन की बेचैनी के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है - इसकी मांगों के साथ, दुख, और आंतरिक चिंताएँ। हम समस्या का उत्तर ढूंढने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, बल्कि समस्या के प्रति संवेदनशील होने का प्रयास कर रहे हैं, और उस संवेदनशीलता के साथ, जो बुद्धिमत्ता है, हम समस्या को समझ सकते हैं और इसलिए उसका समाधान कर सकते हैं। किसी भी स्तर पर समस्या का कोई उत्तर नहीं है, लेकिन यदि पर्याप्त बुद्धिमत्ता हो, समस्या के प्रति पर्याप्त संवेदनशीलता हो तो समस्या का समाधान अवश्य होता है। लेकिन दुर्भाग्य से, हममें से अधिकांश समाधान खोजते हैं, उत्तर खोजते हैं, और इसलिए हम कभी भी किसी समस्या के प्रति संवेदनशील नहीं होते हैं क्योंकि जब मन उत्तर खोज रहा होता है, तो वह स्पष्ट रूप से वास्तविक समस्या से भाग रहा होता है। लेकिन संवेदनशीलता के माध्यम से बुद्धि जागृत होती है, और फिर आप समस्या से निपट सकते हैं, चाहे वह कोई भी हो। यदि किसी के पास जीवन की पूरी प्रक्रिया के प्रति संवेदनशीलता की क्षमता है, तो कर्मकांड, विश्वास और उस सभी बेवकूफी भरी बकवास का कोई मतलब नहीं है, और जब मन केवल आदत के अनुसार काम करता है तो यह संवेदनशीलता अस्वीकार कर दी जाती है। हमारा अधिकांश दिमाग विचार की आदतों में कार्य करता है - जिन निष्कर्षों पर हम पहुंचे हैं, हमारे अनुभव, कुछ अजीब स्थिति जिसे हम जानते हैं; ये हमारी आदतें बन जाती हैं और हम उनसे काम करते हैं।

अब अगर मैं थोड़ा विषयांतर करूँ, तो मुझे आशा है कि आप केवल बौद्धिक रूप से या केवल शब्दों के मौखिक महत्व को नहीं सुन रहे हैं क्योंकि तब आप जो सुनते हैं उसे लागू नहीं कर रहे हैं, तो आप सीखने में सक्षम नहीं हैं।
यहां आप और मैं एक साथ सीखने की कोशिश कर रहे हैं और इस पूछताछ में न तो शिक्षक है और न ही सिखाया गया है। जीवन किसी शिक्षक द्वारा सिखाई जाने वाली प्रक्रिया नहीं है।
सब कुछ सीखना पड़ता है. गंदी सड़क पर एक मरा हुआ पत्ता, यदि आप उसे संवेदनशीलता के साथ देख सकें, तो उसका बहुत बड़ा अर्थ है। आप उस मृत पत्ते से सीख सकते हैं क्योंकि वह जीवित है, उसने वसंत और ग्रीष्म देखा है, और वह मृत्यु को जानता है।
हर चीज़, हर घटना, हर अनुभव, हर हावभाव, हर नज़र, हर शब्द से सीखा जा सकता है। तो मुझे उम्मीद है कि आप और मैं एक-दूसरे को उसी तरह सुन रहे होंगे। इसके लिए विनम्रता की आवश्यकता है; एक मन जो नहीं जानता

विनम्रता सीख नहीं सकती, वह केवल जानकारी प्राप्त करती है। ऐसा मन वास्तव में अपने ज्ञान में अहंकारी होता है; वह संचय करता है, चालाक बन जाता है, लेकिन वह कभी सीख नहीं पाता। हालाँकि मैं बात कर रहा हूँ, मुझे आशा है कि आप मन की उस स्थिति में सुन रहे हैं जो सीख रही है - अपने विचार की आदत के बारे में सीखना, जो नकल, अनुरूपता, सम्मानजनकता, मन की क्षुद्रता है। यह वह मन है जो जीवन के प्रति असंवेदनशील है। यह वह क्षुद्र मन है जो समस्याएं पैदा करता है, और यह अभी भी वही मन है जो अपनी समस्या का उत्तर ढूंढता है और इसलिए समस्या को बढ़ाता है। यह उस मन के बारे में है जिसे हमें सीखना है।

यदि आपने अपने मन का निरीक्षण किया है तो आप देख सकते हैं कि यह कितनी असाधारण तेजी से विचारों के खांचे में गिर जाता है। आप देख सकते हैं, क्या आप नहीं देख सकते कि कैसे मन को कुछ निश्चित रेखाओं के अनुसार कार्य करने, तथाकथित अच्छी आदतें स्थापित करने और बुरी आदतों से बचने के लिए अनुकूलित किया जाता है। अब, कोई अच्छी आदत या बुरी आदत नहीं है, केवल आदत है, और यह आदत ही है जो हमें सुस्त, मूर्ख, बोझिल, जीवन की चुनौती के प्रति संवेदनशीलता रहित बनाती है। आप जानते हैं, हम सबके साथ यही हो रहा है, है न? हम ऐसी आदतें स्थापित करना चाहते हैं ताकि हमें और अधिक सोचना न पड़े। हम एक अच्छी आदत स्थापित करना चाहते हैं ताकि हम एक मशीन की तरह स्वचालित रूप से कार्य कर सकें। और जैसे मशीनों में कोई संवेदनशीलता नहीं होती, तो जाहिर है कि आदतन काम करने वाले दिमाग में भी कोई संवेदनशीलता नहीं होती। जो नौकरशाह कागजों पर हस्ताक्षर करते हुए तीस-चालीस साल तक जीवित रहे, वह जीवन के प्रति कैसे संवेदनशील हो सकता है? वह सीमित दिमाग से काम करता है, और सभी विशेषज्ञ, तकनीशियन और हममें से बाकी लोग भी उसी स्थिति में हैं; हम एक काम सीखते हैं और उसमें रहते हैं। तो समस्या यह है कि आदतों के कारण कैसे मरें, और मैं इस पर बहुत गहराई से चर्चा करना चाहता हूं, जिससे मृत्यु की समस्या उत्पन्न होती है।

मैं मृत्यु की इस पूरी समस्या पर चर्चा करना चाहता हूं, लेकिन आप और मैं उस समस्या को नहीं समझ पाएंगे यदि हम पहले उस मन को नहीं समझते हैं जो आदत बनाता है, वह मन जो एक केंद्र बनाता है जिससे वह कार्य करता है।
वह केन्द्र 'मैं' ही है न? वह केंद्र अपने संचित, संगठित अनुभवों वाला स्वयं है, जिससे वह कार्य करता है और सोचता है, जिससे वह प्यार करता है, और जिससे वह नफरत करता है। यह वह केंद्र है - जो स्पष्ट रूप से आदत, विचार, ज्ञान का संगठित अनुभव है - जो कार्य करता है, और वह केंद्र विचार से, स्वयं से अलग नहीं है। केवल विचारक ही है जो स्वयं का निर्माण करता है। और मुझे लगता है कि यदि आप और मैं आदत के, अनुकरण के इस केंद्र को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, और यदि वह केंद्र टूटा नहीं है, विलीन नहीं हुआ है, तो हम कभी नहीं समझ पाएंगे कि मृत्यु क्या है।

मैं इसमें जाना चाहूँगा, आपके साथ इसके बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा - या यूँ कहें कि "सोचना" नहीं बल्कि इस पर चर्चा करना चाहूँगा। लेकिन अगर आप वास्तव में अवलोकन किए बिना, अपने केंद्र के बारे में जागरूक हुए बिना - चिंता का केंद्र - केवल सुनते हैं,

पीड़ा का, वह केंद्र जो प्रेम करना चाहता है और नहीं जानता कि कैसे करें, जो किसी प्रकार की तृप्ति, किसी प्रकार की खुशी, खुशी, किसी प्रकार की शारीरिक या मनोवैज्ञानिक उत्तरजीविता की तलाश कर रहा है - यदि आप उस सब के बारे में नहीं जानते हैं, जो कि है अनिवार्य रूप से कल की नकलों का एक बंडल, तो मृत्यु की इस समस्या में मेरा जाना आपके प्रश्नों का उत्तर नहीं देगा। जैसा कि मैंने कहा, किसी भी समस्या का कोई उत्तर नहीं होता, केवल समस्या की समझ होती है।

इसी तरह मृत्यु का कोई जवाब नहीं है, लेकिन केवल मृत्यु की समझ है - इसकी असाधारण गहराई, इसकी सुंदरता, विशालता, इसका नयापन - और यही समझ मन की एक पूरी तरह से अलग स्थिति लाती है जो आपको बना देगी मृत्यु के भय और मृत्यु के दुःख से मुक्त। लेकिन मृत्यु का भय, अकेलेपन का भय, और वह अकेलापन जो मृत्यु की समझ के साथ आता है - यह सब तब तक समझ में नहीं आएगा जब तक आप आदत, नकल, अनुरूपता, सम्मान के निहितार्थ को समझदारी से नहीं समझते हैं।

अब, इस केंद्र को कैसे नष्ट किया जाए? मैं ' कैसे ' शब्द का उपयोग किसी उत्तर या नई प्रणाली को खोजने के अर्थ में नहीं कर रहा हूँ, बल्कि केवल समस्या की जाँच शुरू करने के लिए कर रहा हूँ। मैं जानना चाहता हूं कि इस केंद्र को कैसे तोड़ा जाए, न कि केवल उस केंद्र को कम्युनिस्ट शासन, समाजवादी शासन, पूंजीवादी शासन या किसी अन्य शासन के तहत जन्मजात पीड़ा, पीड़ा और दुःख के साथ अलग तरीके से जारी रखा जाए। मैं इसे समझना चाहता हूं, इसे तोड़ना चाहता हूं और मैं देखता हूं कि समय इसका समाधान नहीं है। भविष्य को लम्बा खींचना कोई समाधान नहीं है; जो रहा है उसकी निरंतरता इसका उत्तर नहीं है। उम्मीद है आप मेरे कथन का आशय समझ रहे होंगे। किसी को एहसास होता है, नहीं, कि यह केंद्र स्वयं है, 'मैं' - जो लालसा करता है, जो चाहता है, जो शक्ति, पद, प्रतिष्ठा की तलाश कर रहा है, जो संघर्ष, समायोजन, दर्द, दुःख, और का निरंतर दुःस्वप्न देखता है क्षणभंगुर खुशियाँ, जो हमारे अस्तित्व के सभी स्तरों पर हमें थका रही हैं। तो मैं पूछ रहा हूं: यह केंद्र कैसे टूटेगा? हम कहते हैं कि समय, आने वाले कई दिन इसका समाधान निकाल देंगे, या हम पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। लेकिन यह केवल वही दे रहा है जो भविष्य में एक संशोधित निरंतरता रही है, क्या ऐसा नहीं है?

अपनी सारी चिंताओं, समस्याओं, आशंकाओं, नकल के अवशेषों, आदत के साथ, इस केंद्र का अस्तित्व अभी भी बचा हुआ है, है न? तो सवाल यह है: क्या अब उस केंद्र के लिए मरना संभव है? - भविष्य में नहीं, तब तक इंतजार न करें जब तक कि आप बूढ़े और थके हुए न हो जाएं, और शारीरिक मृत्यु न आ जाए। क्या मैं समस्या को स्पष्ट रूप से रख रहा हूँ? महोदय, क्या मैं अब अपने आप से मर सकता हूँ? आख़िरकार, मृत्यु महान निषेध है, और उस गहरे स्तर पर सभी निषेध पवित्र हैं, गहन हैं। इसीलिए नकारात्मक सोच सोच का सबसे बड़ा रूप है और तथाकथित सकारात्मक सोच वास्तव में नकल, अनुरूपता की निरंतरता मात्र है। तो मैं हूँ

आपसे पूछ रहा हूं कि कैसे मरें—एक आदत के कारण कैसे मरें। आप समझे श्रीमान? महत्वाकांक्षा की जो आदत आप जानते हैं—क्या आप उससे मर सकते हैं? इस सामाजिक संरचना में सबसे महान नेता से लेकर सबसे गरीब आदमी तक हर कोई महत्वाकांक्षी है।
कुछ बनना, कुछ बनना चाहते हो ना? और इसमें जो संघर्ष, दर्द, हताशा, निर्ममता और क्रूरता शामिल है - आप यह सब जानते हैं, और फिर भी आप इसे पूरा करना चाहते हैं। अब क्या कोई विचार की उस आदत से मर सकता है? कल नहीं, लेकिन क्या इसी क्षण इच्छा समाप्त हो सकती है?

क्योंकि, निश्चित रूप से, जिस क्षण यह बंद हो जाता है, मन आश्चर्यजनक रूप से संवेदनशील हो जाता है, और उस विशेष आदत की समाप्ति में, आत्मज्ञान होता है।
वह आत्मज्ञान उस बुद्धिमत्ता से जागृत होता है जो तब आती है जब आप महत्वाकांक्षा के संपूर्ण निहितार्थ को देखते हैं। मैं एक उदाहरण के रूप में महत्वाकांक्षा को ले रहा हूं, लेकिन इसमें ईर्ष्या, लालच, घमंड और सद्गुण भी हैं, जिनके बारे में मैं वर्तमान में जा रहा हूं। क्या कोई इन सब से मर सकता है? क्योंकि, यदि आप इसके प्रति मर नहीं सकते हैं, तो जाहिर तौर पर आपके पास निरंतरता होगी - दु:ख और मृत्यु की निरंतरता - और फिर मृत्यु एक भयावह चीज है। आख़िरकार, सद्गुण भी निरंतरता का एक रूप है, जो आप सोचते हैं कि वह अच्छा है, सत्य है। आपके लिए सद्गुण, एक सकारात्मक स्थिति है और सद्गुण, जो विपरीत की खेती है, निरंतरता को दर्शाता है। यदि आप हिंसक हैं तो आप अहिंसा की खेती करते हैं और दिन-ब-दिन उस आदर्श का अनुसरण करते हैं। आप अभ्यास करते हैं, अपने मन को वश में करते हैं, लेकिन जाहिर है कि यह सब केवल एक निश्चित विचार, एक निश्चित विचार की निरंतरता है, बस इतना ही है। किसी विशेष विचार की निरंतरता, जिसे आप सद्गुण कहते हैं, केवल एक निश्चित पैटर्न के अनुरूप है जिसकी समाज मांग करता है। वास्तविक सद्गुण महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, लालच, अहंकार की पूर्ण समाप्ति है - न कि एक विशेष भावना को दूसरे प्रकार की भावना में बदलना। आदत का ख़त्म होना, जिसमें जो था उसकी कोई निरंतरता नहीं है - वह अकेला ही, निश्चित रूप से, पुण्य है। पूरी तरह से समाप्त हो जाना, बिल्कुल भी गर्व न होना, गर्व के प्रति सचेत रहने और विनम्रता विकसित करने से बिल्कुल अलग है; विकसित की गई विनम्रता एक अलग रूप में गर्व की निरंतरता मात्र है। लेकिन अभिमान की समाप्ति, पूरी तरह से, उसी क्षण-निश्चित रूप से, यह संभव है।

देखो हर जगह क्या हो रहा है! हर कोई महत्वाकांक्षी है, उच्चतम से निम्नतम तक। और एक बार जब कोई व्यक्ति उस पद पर आ जाता है जिसे वह धारण कर सकता है, तो वह उसे नहीं छोड़ता; उनका कहना है कि देश की भलाई के लिए, लोगों की भलाई के लिए, समाज की भलाई के लिए उन्हें पद पर बने रहना ही होगा। आप सारी शब्दावली जानते हैं. यह मत कहो, "अगर मैं महत्वाकांक्षी नहीं हूँ, तो मेरा क्या होगा?" आपको निश्चित रूप से पता चल जाएगा कि यदि आप महत्वाकांक्षी होना बंद कर देंगे तो क्या होगा। आपका जीवन बिल्कुल अलग होगा। आप इस सड़े हुए समाज में फिट हों या न हों, लेकिन आप समझ गए होंगे; वहां पुण्य की स्थिति होगी

कल का कोई पता नहीं. सदाचार तत्काल होने की एक अवस्था है, और इसमें सुंदरता की बहुत गहराई होती है। इसलिए तुम्हें अपने सभी कलों के लिए मरना होगा। लेकिन यह एक सिद्धांत, एक मात्र कथन बन जाता है यदि आपने वास्तव में अपने मन की सारी समस्या को नहीं समझा है जो एकत्रित हो गई है, यदि आप अपनी आदतों, अपने पूर्वाग्रहों, महत्वाकांक्षाओं, निराशाओं, खुशियों और दुखों के बारे में जागरूक नहीं हैं। यदि आप इस सब से अवगत नहीं हैं, तो केवल यह कथन कि आपको सभी कलों के लिए पूरी तरह से मरना होगा, का कोई मतलब नहीं है। आप इसे दोहरा सकते हैं, आगे बढ़ा सकते हैं, लेकिन इसका कोई अर्थ नहीं होगा। जबकि यदि आप अपने मन में आने वाले एक विचार, एक आदत को अपना सकते हैं और उसके साथ मर सकते हैं, तो आप देखेंगे कि मरना आपके द्वारा ज्ञात किसी भी चीज़ से काफी अलग है।

अगर मैं अपने गौरव के लिए मर सकता हूं, अगर मैं अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए मर सकता हूं, अगर मैं उन सभी चोटों के लिए मर सकता हूं जो मुझे मिली हैं, अपमान, निराशा, आशाएं और भय जो मैंने इतने लंबे समय तक पोषित किए हैं, तो मेरा मन है अब समय के संदर्भ में नहीं सोचता; तब मृत्यु केवल अस्तित्व के अंत में नहीं है, तब मृत्यु आरंभ में भी है और अंत में भी है। यह कोई सिद्धांत नहीं है, यह कोई काव्यात्मक वक्तव्य नहीं है; यदि आप इसे दोहराते हैं, तो इसका कोई मतलब नहीं है, लेकिन यदि आप अपनी किसी एक आदत के प्रति मर जाते हैं - किसी भी आदत के प्रति - बस इसके प्रति मर जाते हैं, बस इसे छोड़ देते हैं, जैसे एक पत्ता स्वाभाविक रूप से, स्वचालित रूप से गिर जाता है, तो आप देखेंगे कि उसी मरने में एक नई सांस अस्तित्व में आती है, अस्तित्व का एक नया तरीका। ऐसा नहीं है कि आप मृत्यु के स्थान पर अस्तित्व का कोई दूसरा तरीका अपना लेंगे, बल्कि आदत के प्रति मरना ही एक नया, रचनात्मक जीवन लेकर आता है। कृपया, श्रीमानों, जब मैं बात कर रहा हूं तो सुनें और इसे लागू करें - तब नहीं जब आप घर पहुंचें, तब नहीं जब आप बस का इंतजार कर रहे हों, न कि शांति के क्षण की तलाश में, बल्कि अभी। क्या अब आप किसी चीज़ के लिए नहीं मर सकते? क्या आप किसी के प्रति अपनी नापसंदगी, किसी के प्रति अपने डर, अपने विश्वासों के प्रति नहीं मर सकते - जो कि कहीं अधिक कठिन है, क्योंकि आपका गुरु, आपका विश्वास आपको आशा देता है, एक भविष्य देता है। लेकिन यदि आप अपनी निराशा से मर सकते हैं, तो गुरु की कोई आवश्यकता नहीं है, जिसका अर्थ है कि आशा की कोई आवश्यकता नहीं है, कल की कोई आवश्यकता नहीं है। निराशा में मरना मृत्यु का निषेध है; यह सबसे बड़ी रचनात्मकता की स्थिति है।

फिर एक और समस्या यह है कि वह क्या है जो हमारे दैनिक अस्तित्व में बना रहता है। क्या हम सभी यह जानने के लिए चिंतित नहीं हैं कि मृत्यु के बाद निरंतरता का कोई रूप है या नहीं। आप में से कई लोग आशा करते हैं कि आप पुनर्जन्म लेंगे, अपने आप को परिपूर्ण बनाएंगे, अधिक से अधिक मूल्यवान बनेंगे - जिसका अर्थ है सफलता की सीढ़ी चढ़ना। यदि आप इस जीवन में कुछ नहीं हैं, तो आप आशा करते हैं कि आप अगले जीवन में कुछ होंगे। निरंतरता की यह समस्या सदैव बनी रहती है।

अब ऐसा क्या है जो इस जीवन में चलता रहता है, और आप उस निरंतरता से क्यों चिपके रहते हैं? मन किस रूप को क्यों पकड़ता है, किस रूप में संलग्न करता है

रहा है? क्या आप प्रश्न समझते हैं, महोदय? आप मृत्यु से डरते हैं, और इसलिए कहते हैं कि आप इसके बाद भी रहेंगे। अब भविष्य पर गौर करने से पहले क्या आप वर्तमान पर सवाल नहीं उठा सकते? वह क्या है जो जारी है? वह क्या है जिससे आप चिपके रहते हैं? एक क्लर्क, एक मंत्री, एक पुजारी, एक व्यापारी के रूप में आपकी स्थिति - धोखेबाज, बेईमान, भ्रष्ट व्यक्तित्व? क्या आप इसी को पकड़कर रखे हुए हैं? आपका परिवार, आपकी संपत्ति, आपका नाम, क्या आप इसी से चिपके हुए हैं? और यह सब आप मृत्यु के बाद भी जारी रखना चाहते हैं? अच्छे भगवान! वह सब कुछ भी नहीं है, क्या ऐसा है? आपका नाम, आपकी संपत्ति, आपके विचार, अनुभव, खुशियाँ सब बदल रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं, और उनमें अनिश्चितता, भय और निराशा है। तो क्या आप यही जारी रखना चाहते हैं? और क्या उस सबमें कोई निरंतरता है; क्या किसी चीज़ की निरंतरता है, या सब कुछ स्वाभाविक रूप से मर जाता है?

मन अब मृत्यु को स्वीकार करने से इनकार करता है, है न, लेकिन निश्चित रूप से जो जारी रहता है वह कभी रचनात्मक नहीं हो सकता, मन की उस असाधारण स्थिति को कभी नहीं पा सकता जो सृजन है। जाहिर है, जो जारी है वह केवल वही है जिसे भविष्य में आगे बढ़ने के लिए वर्तमान में संशोधित किया गया है, और ऐसी निरंतरता - दुख, विफलता, आशा और निराशा के सभी निहितार्थों के साथ - केवल केंद्र की निरंतरता है, 'मैं', स्वयं जो सुपर-स्व, आत्मा और बाकी सभी सिद्धांतों का आविष्कार करता है।

क्या वह निरंतरता अब समाप्त हो सकती है, न कि केवल दुर्घटना, बीमारी या बुढ़ापे से मृत्यु की प्रतीक्षा करना? मुझे नहीं पता कि आपने इस समस्या के बारे में कभी सोचा है या नहीं। पारंपरिक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से समस्या को उजागर नहीं करता है। तो वास्तव में सवाल यह है कि क्या मन अपनी सभी यादों, संगठित अनुभवों के साथ, अपनी यादों के प्रति मर सकता है और केवल सुस्त, मूर्ख, रचनात्मकता में असमर्थ नहीं हो सकता है। क्या हम स्मृति के प्रति मर नहीं सकते ताकि स्मृति मस्तिष्क पर प्रभाव न डाले - भले ही हम इसे तथ्यात्मक रूप से बनाए रखें? क्योंकि यदि आप तथ्यात्मक रूप से कल को भूल जाते हैं, तो आप जीवित नहीं रह सकते, आप जी नहीं सकते। लेकिन जब बीता हुआ कल आज को प्रभावित करता है - जैसा कि हम सभी के साथ होता है - तब आप बीते हुए कल के प्रति वास्तविक मृत्यु की संवेदनशीलता, गहराई खो देते हैं।

यदि आपने सचमुच यह सब सुना है तो आप मृत्यु के बारे में सीख रहे हैं कि मृत्यु अभी है, भविष्य में नहीं। मृत्यु का सौंदर्य वर्तमान में है, और क्योंकि यह नकारात्मक है, सकारात्मक दृष्टिकोण इसे कभी नहीं खोज सकता। लेकिन जब जो कुछ हो चुका है उसकी निरंतरता समाप्त हो जाती है, तब मन की एक नई गुणवत्ता अस्तित्व में आती है; यद्यपि इसमें हजारों कल का संचित ज्ञान है, फिर भी मन उन सबके प्रति मर चुका है और इसलिए ताजा, नया, निर्दोष है। लेकिन अगर आप पूछें, "मैं वह मासूमियत कैसे पा सकता हूँ?" आप बहुत ही मूर्खतापूर्ण प्रश्न पूछ रहे हैं। न कोई विधि है, न कोई व्यवस्था है; प्रणालियाँ, विधियाँ, अनुशासन, गुण जो कुछ किया गया है, संशोधित किया गया है उसकी निरंतरता प्रदान करते हैं। यह तो मरने में ही है

कि एक रचनात्मक दिमाग है. कोई यह भी देख सकता है कि मन अपने अहंकार में, अपनी आत्म-केंद्रित गतिविधि में जितना मजबूत होता है, स्वयं उतना ही अधिक ऊर्जावान, हिंसक और संघर्षशील होता है। और जाहिर तौर पर यह जारी रहेगा क्योंकि मन मस्तिष्क से अलग है। यद्यपि मन मस्तिष्क का परिणाम है, यह मस्तिष्क से मुक्त है, जैसे विचार मस्तिष्क से मुक्त है। विचार एक कंपन के रूप में जारी रहता है जो बाद में स्वयं प्रकट हो सकता है, लेकिन वह फिर से निरंतरता का एक रूप है और वह निरंतर इकाई कभी रचनात्मक नहीं हो सकती, सृजन की इस असाधारण स्थिति को कभी नहीं जान सकती। तो, महोदय, वर्तमान समय में इस दुनिया को अधिक तकनीशियनों की आवश्यकता नहीं है; और भी तकनीशियन होंगे, लेकिन वे अपने स्तर पर मानवीय समस्या का समाधान नहीं करने वाले हैं। वे अधिक बांध, बेहतर सड़कें, बेहतर संचार साधन बना सकते हैं, अधिक समृद्धि ला सकते हैं, जीवन जीने का बेहतर तरीका ला सकते हैं - जो निश्चित रूप से आवश्यक है - लेकिन बस इतना ही है। इन सब में हमने धर्म को नकार दिया है क्योंकि हममें से अधिकांश के लिए जीवन मुख्यतः एक भौतिक मामला है। प्रौद्योगिकी के माध्यम से आपको उत्तम भौतिक जीवन मिल सकता है, लेकिन यह हमारी मूलभूत समस्याओं का उत्तर नहीं है।

इसलिए एक ऐसे मन की आवश्यकता है जो सृजन की स्थिति में हो, निरंतरता की स्थिति में नहीं। और सृष्टि को वास्तव में केवल मृत्यु की स्थिति में ही समझा, सीखा, जाना, अनुभव किया जा सकता है। सृजन वास्तविकता है, सृजन वह है जिसे आप ईश्वर कहते हैं—लेकिन ईश्वर शब्द वह रचना नहीं है; यह शब्द केवल एक प्रतीक है, इसका कोई अर्थ नहीं है। भगवान के बारे में दोहराना, भगवान से प्रार्थना करना, मंदिरों, चर्चों में जाना, कोई मतलब नहीं है। लेकिन यदि आप सभी शब्दों, सभी प्रतीकों के प्रति मर जाते हैं, तो आप खुद ही पता लगा लेंगे - बिना किसी किताब को पढ़े, बिना किसी गुरु के पास गए, बिना किसी अनुष्ठान के, बिना किसी सहारे के - आप सृजन की उस स्थिति को पाएंगे जिसमें सब कुछ मौजूद है. लेकिन आप उस स्थिति को किसी भी शब्द के दोहराव से नहीं समझ सकते। वह स्थिति तभी आती है जब आप अपनी महत्वाकांक्षा, अपनी चिंता, अपने भ्रष्टाचार के प्रति मर जाते हैं। तब आप देखेंगे कि मृत्यु की उस अवस्था में जो निषेध है, सकारात्मक की एक बिल्कुल अलग अवस्था है, जो सृजन है।

17 दिसंबर, 1958

आठवीं वार्ता बम्बई में

मैं आज शाम ध्यान के बारे में बात करना चाहूंगा, लेकिन वास्तव में गहराई से जाने के लिए व्यक्ति को यह देखना होगा कि ध्यान दैनिक अस्तित्व से अलग कुछ नहीं है; यह हमारी दैनिक गतिविधियों, हमारे दैनिक विचारों, हमारे संघर्षों, हमारे गुज़रते सुखों और खुशियों के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। यह नहीं है

कुछ ऐसा जो आप एक शांत कमरे में अकेले करते हैं, जो जीवन की दैनिक गतिविधि से असंबंधित है। मुझे लगता है कि वास्तव में इसकी गहराई से जांच करने के लिए व्यक्ति को प्रभाव की समस्या को समझकर शुरुआत करनी चाहिए।

मुझे आशा है कि आप, एक व्यक्ति के रूप में, इन बातों से किसी भी तरह से प्रभावित नहीं हो रहे हैं क्योंकि मेरे लिए, प्रभाव - जब तक कि कोई इसके महत्व को पूरी तरह से नहीं समझ लेता - एक जहर है। यह मन को स्थितिग्रस्त, ख़राब और विकृत करता है।
और प्रभाव तो बहुत हैं ना! वहां की जलवायु है, आप जो खाना खाते हैं, आपके जो विचार हैं, दबाव है, आपकी शिक्षा है, जो अखबार आप पढ़ते हैं, चर्च, मंदिर हैं, और परिवार का प्रभाव है, पत्नी पर पति का प्रभाव है और पति के ऊपर पत्नी, और सदियों की परंपरा का प्रभाव भी। किसी व्यक्ति के बारे में हर चीज़ उसके दिमाग को प्रभावित कर रही है, उसके विचार को आकार दे रही है, सचेतन या अचेतन रूप से, और व्यक्ति को इन प्रभावों के बारे में पता नहीं है। इन सभी अनेक प्रभावों से अवगत होना और उनसे मुक्त होना ही ध्यान की प्रक्रिया है।

लेकिन इसके लिए एक गहरी, विशाल समझ की आवश्यकता होती है क्योंकि उथले मन, क्षुद्र मन के साथ, ध्यान करने के लिए बैठना स्पष्ट रूप से केवल बड़बड़ाने, बुदबुदाने, दोहराव की एक प्रक्रिया है जिसका कोई अर्थ नहीं है।

प्रभाव की इस पूरी समस्या को समझने के लिए, अनुभव के प्रभाव, ज्ञान के प्रभाव, आंतरिक और बाहरी उद्देश्यों को समझने के लिए - क्या सच है और क्या झूठ है और तथाकथित झूठ में सच्चाई को देखने के लिए - इन सभी के लिए जबरदस्त आवश्यकता है अंतर्दृष्टि, चीज़ें जैसी वे हैं उनकी एक गहरी आंतरिक समझ, क्या ऐसा नहीं है? यह पूरी प्रक्रिया, निश्चित रूप से, ध्यान का तरीका है। ध्यान जीवन में, हमारे रोजमर्रा के अस्तित्व में आवश्यक है, जैसे सुंदरता आवश्यक है। सौंदर्य की अनुभूति, चीजों के प्रति संवेदनशीलता, कुरूप के साथ-साथ सुंदर के प्रति भी, आवश्यक है - एक सुंदर पेड़ को देखने के लिए, एक शाम का सुंदर आकाश देखने के लिए, विशाल क्षितिज को देखने के लिए जहां सूरज के रूप में बादल इकट्ठा हो रहे हैं सेटिंग। यह सब आवश्यक है, सौंदर्य की अनुभूति और ध्यान के तरीके की समझ, क्योंकि यह सब जीवन है, साथ ही आपका कार्यालय जाना, झगड़े, दुख, निरंतर तनाव, चिंता, गहरे भय, प्यार, और भुखमरी. अब अस्तित्व की इस संपूर्ण प्रक्रिया की समझ - प्रभाव, दुख, दैनिक तनाव, आधिकारिक दृष्टिकोण, राजनीतिक कार्य, इत्यादि - यह सब जीवन है, और इसे समझने की प्रक्रिया, और मन को मुक्त करना, ध्यान है. यदि कोई वास्तव में इस जीवन को समझता है, तो हमेशा एक ध्यान प्रक्रिया होती है, हमेशा चिंतन की एक प्रक्रिया होती है - लेकिन किसी चीज़ के बारे में नहीं। अस्तित्व की इस पूरी प्रक्रिया के प्रति जागरूक होना, इसका निरीक्षण करना, निष्पक्षता से इसमें प्रवेश करना और इससे मुक्त होना ही ध्यान है।

इसलिए यदि संभव हो तो मैं इन सबके बारे में बात करना चाहूँगा; लेकिन सबसे पहले, अगर मैं सुझाव दे सकूं, तो ध्यान शब्द से मंत्रमुग्ध न हों ; मानसिक या शारीरिक रूप से तुरंत कोई आसन न अपनाएं, कोई विशेष दृष्टिकोण न अपनाएं क्योंकि जो मन एक आसन, एक दृष्टिकोण अपना लेता है वह कभी भी ध्यान की स्थिति में नहीं हो सकता।

ध्यान वास्तव में मन की उस असाधारण प्रक्रिया को उसकी सभी सूक्ष्मताओं, उसकी भटकन, उसकी सतही क्रियाओं और उसकी गहरी गति के साथ उजागर करना, उजागर करना है जिसके बारे में चेतन मन को बिल्कुल भी जानकारी नहीं होती है। इन सबकी समग्र समझ और इसमें प्रवेश ही ध्यान है।

अब मुझे आशा है कि आप समझ गए होंगे कि मैं आपसे एक व्यक्ति के रूप में बात कर रहा हूं, एक दर्शक के रूप में नहीं। आप और मैं चुपचाप, स्वतंत्र रूप से, निष्पक्षता से जीवन नाम की इस चीज़ को समझने की कोशिश कर रहे हैं। और यदि हमें साथ मिलकर अन्वेषण करना है, तो आप प्रभावित नहीं हो सकते या ऐसा रवैया नहीं अपना सकते जो प्रभावित हुआ हो। आपको सुनना होगा, जिसका मतलब वास्तव में सीखना है। यदि आप कोई रवैया अपना लेते हैं, तो आप सीखना बंद कर देते हैं; यदि आप कहते हैं कि आप पहले से ही जानते हैं कि ध्यान क्या है, तो आप ध्यान के बारे में सीखना बंद कर देते हैं; यदि आप कहते हैं, "मैंने जीवन भर ध्यान किया है और मुझे दर्शन हुए हैं, मेरे पास स्पष्टता है, मेरे पास अनुभव हैं, और यह मेरे लिए काफी अच्छा है," तो आपने पहले ही ध्यान करना बंद कर दिया है, सीखना बंद कर दिया है। ध्यान अंतिम बात नहीं है; ध्यान की सुंदरता यह है कि यह अंतहीन है; यह एक शाश्वत चीज़ है. इसके अलावा, यह दुर्भाग्य होगा यदि मैं आपको इस तरह या उस तरह सोचने के लिए प्रेरित करता हूँ। लेकिन अगर आप अपने बारे में प्रभावों के बारे में जानते हैं, जिसमें मेरा भी शामिल है, इतना जागरूक हैं कि आप जानते हैं कि आप क्या खाते हैं, आप क्या सोचते हैं, आप क्या पढ़ते हैं और यह कैसे हमेशा दिमाग को आकार देता है, तो आप देखेंगे कि इन सबके बावजूद जो प्रभाव आप पर दबाव डाल रहे हैं, आप उन्हें तोड़ देंगे। मुझे लगता है कि शुरुआत में इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा जीवन निराशा की घाटी में रहता है, जिसमें आशा को आदर्श, स्वप्नलोक, प्राप्त की जाने वाली वस्तु, जिसके लिए कोई प्रयास करता है, वह मन को अनुशासित करती है। हम आशा नामक इस खड़ी पहाड़ी पर लगातार चढ़ रहे हैं और निराशा की घाटी में वापस गिर रहे हैं - पूर्णता की कमी के कारण निराशा, हीनता की भावना, निराशा की भावना, अकेलापन, 'नहीं' होने, 'नहीं पहुंचने' की भावना। इन दो अवस्थाओं के बीच हमारा अस्तित्व है। हम आशा को स्वीकार करते हैं और उसका एक दर्शन बनाते हैं, उसके चारों ओर अपना जीवन बुनते हैं। दुनिया के सभी धर्म आशा पर आधारित हैं - कुछ इसे पुनरुत्थान कहते हैं और अन्य इसे एक अलग नाम देते हैं, लेकिन सफलता के संबंध में बाहरी तौर पर और आध्यात्मिक धन के संबंध में आंतरिक रूप से आशा की यह भावना हमेशा हमारे अंदर मौजूद रहती है।

और ये निराशा का भाव भी है. मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी निराशा, निराशा, पूर्ण अकेलेपन की भावना को बहुत दृढ़ता से महसूस किया है।

समाज द्वारा पहचाने न जाने का दुख, पूरी तरह से बेकार होने की भावना, जिसे व्यक्ति बिल्कुल भी महत्व नहीं देता है। आख़िरकार, ऐतिहासिक प्रक्रियाएँ चल रही हैं - युद्ध, क्रांतियाँ, हिंसक परिवर्तन, आर्थिक दबाव, सामाजिक उथल-पुथल - जिनमें व्यक्ति की कोई आवाज़ नहीं है। अत्याचारी शक्तियाँ, साम्यवादी या जो भी हों, व्यक्तिगत सोच को पूरी तरह से रोकती हैं। और जब आप वह सब अनुभव करते हैं, जब आप उसमें फंस जाते हैं, तो निराशा होती है। तो आप निराशा का एक दर्शन बनाते हैं, जो चीजों को वैसे ही स्वीकार करना है जैसे वे हैं और उनमें से सर्वश्रेष्ठ बनाना है, जिसे कुछ लोग भौतिकवाद कहते हैं। या फिर, जब आप आशा कर रहे होते हैं, पहुंचने के लिए, हासिल करने के लिए संघर्ष कर रहे होते हैं, तो इसे आध्यात्मिकता कहा जाता है। दोनों एक ही घाटी में हैं; वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, और हम उसी स्थिति में रहते हैं। हमारे स्वर्ग, हमारे देवता, हमारे अनुष्ठान बेहतर अस्तित्व का वादा, पुरस्कार, आशा हैं। और इसलिए हम या तो बहुत सतही तौर पर आशा में जीते हैं या समान रूप से सतही तौर पर निराशा में जीते हैं।

अब मुझे जो प्रश्न पूछना चाहिए वह यह है कि क्या आपने कभी निराशा की भावना, पूर्ण अकेलेपन की भावना को बहुत गहराई से महसूस किया है, जब कोई जवाब नहीं होता है, किसी भी चीज से कोई संबंध नहीं होता है - बिना किसी पलायन की तलाश के, बिना किसी तलाश के। कोई स्पष्टीकरण. मुझे लगता है कि यह स्वयं से पूछने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि आमतौर पर हम स्पष्टीकरण की ओर मुड़ते हैं, क्या हम नहीं करते हैं, हम उसका कारण तलाशते हैं, हम कहते हैं कि यह कर्म है, यह यह है या वह है।

और हम अपनी निराशा के चारों ओर एक दर्शन का निर्माण करते हैं जो हमें केवल आशा की विपरीत स्थिति में ले जाता है। और हम उस स्थिति को स्वीकार करते हैं क्योंकि हममें से अधिकांश के लिए आशा कार्रवाई के लिए एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन है - आशा है कि आपको बहुत सारा पैसा मिलेगा, यह आशा है कि एक भगवान है जो आपकी रक्षा करेगा, जो आपकी मदद करेगा - आप पूरी बात जानते हैं उस सब का रैकेट। तो या तो निराशा का दर्शन है या आशा का दर्शन है, या फिर आप चीजों को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे वे हैं, और अस्तित्व में हैं। हममें से अधिकांश लोग यही कर रहे हैं, बस अस्तित्व में हैं। हालाँकि हम बहुत सारे शब्द घुमाते हैं, हालाँकि हम आदर्शों, अच्छाई, सुंदरता, सच्चाई और बाकी सभी चीजों के बारे में बात करते हैं, वे सिर्फ सतही प्रतिक्रियाएँ, शब्द हैं, लेकिन हम वास्तव में जो कर रहे हैं वह केवल अस्तित्व में है। बहुत कम लोग निराशा और आशा दोनों से दूर, मुक्त रहना चाहते हैं। वे दोनों समय की प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, है ना? - न केवल कालानुक्रमिक समय बल्कि मनोवैज्ञानिक समय भी। निराशा ख़त्म होना चाहती है, जो कि समय में है, और आशा भी कहीं न कहीं, समय पर पहुँचना चाहती है।

तो वहाँ निराशा है, वहाँ आशा है, और वहाँ केवल विद्यमान है - किसी भी चीज़ की चिंता न करना, दिन-ब-दिन चलते रहना, बिना सोचे-समझे, अब और परवाह नहीं करना, जाँच-पड़ताल नहीं करना - यही हममें से अधिकांश लोग कर रहे हैं। हम बस विद्यमान हैं, अपनी नौकरियों में सड़ रहे हैं, अपने पारिवारिक जीवन में सड़ रहे हैं, धन, पद, ज्ञान इत्यादि की तलाश में सड़ रहे हैं। हम ईश्वर, सत्य, के बारे में बात करते हैं

और इसके बाकी सभी चीजों को वैसे ही स्वीकार करने के साथ जैसे वे हैं। हममें से अधिकांश के लिए यही वास्तविक स्थिति है। हमेशा आदर्श होता है, आने की आशा होती है, और यदि आप बहुत मजबूत, महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं तो आप संघर्ष करेंगे, आप कहीं न कहीं पहुंचने के लिए प्रयास करेंगे। और यदि आप थोड़े अधिक जीवंत, स्पष्ट हैं, तो आप निराशा भी देखेंगे, दुनिया कितनी निराशाजनक है, हम कितने कम बदलते हैं, और हर क्रांति, हर युद्ध शांति के नाम पर, प्रेम के नाम पर, कैसे नष्ट कर देता है यूटोपिया का नाम.

तो हमारा जीवन आँसुओं की इस घाटी में फँसा हुआ है, और मन इन सब से अलग होकर कैसे जीवित हो सकता है? क्योंकि यह अवस्था स्पष्टतः मृत्यु है।
आशा, निराशा और जो चीजें जैसी हैं उन्हें वैसे ही स्वीकार करना, ये अवस्थाएं निश्चित रूप से मृत्यु का संकेत देती हैं, क्या ऐसा नहीं है? क्योंकि इन अवस्थाओं में मन सड़ रहा होता है, बोझ से दबा होता है, समय से भीड़ जाता है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि वास्तव में यही हो रहा है; हम आशा, निराशा में फंसे हुए हैं, या बस विद्यमान हैं; बात तो सही है। अब मन इन सब से अलग कैसे हो? निश्चित ही ध्यान टूटने की प्रक्रिया है। ध्यान शांति पाने के लिए नहीं है, क्योंकि जो मन स्वतंत्र नहीं है उसे शांति कैसे मिल सकती है? मन की शांति की यह चिरस्थायी खोज सरासर बकवास है। वह अमीर आदमी जिसके पास पूरा बैंक खाता है, इसके बारे में बात करता है, और वह आदमी जो दुख में है वह भी इसके बारे में बात करता है। लेकिन आज़ादी में ही शांति है.

इसलिए, निराशा, आशा और मात्र अस्तित्व की इन अवस्थाओं के एहसास में, किसी को निश्चित रूप से खुद से पूछना चाहिए कि क्या मन इन सब से बच सकता है। मुझे आशा है कि आप प्रश्नों को समझ गए होंगे, महोदय? हम हमेशा पूछते रहते हैं, "मुझे क्या करना चाहिए? मैं सहायता के लिए कहां जाऊं? मैं किस पर निर्भर रह सकता हूँ? मुझे किस प्रणाली का पालन करना चाहिए?" यह हमारी चिरस्थायी पुकार है, न केवल निराशा के आंसुओं में, बल्कि अपनी मुस्कुराहट के नीचे हम पूछ रहे हैं, मांग रहे हैं।

निश्चित रूप से समझने वाली पहली बात यह है कि कोई भी आपकी मदद नहीं करेगा - कोई भी नहीं। बिलकुल अकेले खड़ा होना पड़ता है। आख़िरकार, जब कोई देखता है कि मन आशा और निराशा के विकल्प से कितना भरा हुआ है, मन कैसे परंपरा से, ज्ञान से, ज्ञात और अज्ञात हर प्रभाव से बंधा हुआ है, स्वामित्व वाला, आविष्ट और वंचित है; जब आप जांच करना शुरू करेंगे, उस सब को समझेंगे, तो आप पाएंगे, है ना, कि मन को अकेला, अदूषित, अछूता होना चाहिए, निर्दोष होना चाहिए, ताजा होना चाहिए, नया होना चाहिए।

अब यह कैसे होगा?

सबसे पहले कोई यह देख सकता है कि कोई भी अभ्यास, कोई भी अनुशासन, कोई भी आदत, अच्छी या बुरी, केवल निराशा या आशा की निरंतरता लाती है। क्या ऐसा नहीं है? आप अभ्यास करते हैं, आप अनुशासन करते हैं—किसलिए? आप सुबह ध्यान करने बैठते हैं, विभिन्न अनुष्ठान करते हैं, शब्दों को दोहराते हैं, प्रार्थनाएँ करते हैं—किसलिए? क्योंकि

आप आशा करते हैं, क्या आप नहीं करते, मन की शांति लाने के लिए, आप कहीं पहुंचने की आशा करते हैं, आप समझने की आशा करते हैं, और इसलिए आप भीड़ भरे मन को शांत करने के लिए गीता या बाइबिल या जो कुछ भी करते हैं उसे दोहराते हैं - जो सम्मोहित कर रहा है शब्दों से मन. आप फिर से आशा के जाल में फंस गए हैं।

आप देख सकते हैं, क्या आप नहीं देख सकते हैं कि मनोवैज्ञानिक परिणाम पर पहुंचने के लिए नियंत्रण की प्रत्येक प्रणाली स्पष्ट रूप से आशा की निरंतरता को दर्शाती है, और इसलिए हमेशा निराशा छिपी रहती है। तो, आप इससे कैसे पार पा सकते हैं, मुक्त हो सकते हैं? क्योंकि स्वतंत्रता में ही शांति है। शांति एक उपोत्पाद है, जैसे सद्गुण एक उपोत्पाद है; यह अपने आप में कोई अंत नहीं है, यह एक गौण मुद्दा है। लेकिन अगर मन समझ सके और मुक्त हो सके, तो शांति है। मन कैसे मुक्त हो? मैं कैसे शब्द का उपयोग यह जानने के लिए नहीं कर रहा हूं कि किस प्रणाली का पालन करना है, किस अनुशासन का पालन करना है, बल्कि स्वतंत्रता के बारे में पूछताछ करने के अर्थ में कर रहा हूं, इस तथ्य को समझने के लिए कि मन को स्वतंत्र होना चाहिए। वह पहली आवश्यक धारणा है. लेकिन जब प्रार्थना होती है तो वह स्वतंत्रता अस्वीकार कर दी जाती है। प्रार्थना की शक्ति समय के क्षेत्र के भीतर है, और एक मन जो खोज रहा है, भीख माँग रहा है, याचना कर रहा है, स्पष्ट रूप से एक स्वतंत्र मन नहीं है। प्रार्थना की शक्ति से आप शायद वह पा सकते हैं जो आप चाहते हैं, लेकिन जो आप चाहते हैं वह बहुत क्षुद्र, तुच्छ है क्योंकि यह अभी भी आशा और निराशा के दायरे में है। अतः प्रार्थना ध्यान नहीं है, बल्कि प्रार्थना के सत्य को देखना और इसलिए प्रार्थना से मुक्त होना ही ध्यान है। साथ ही, शब्दों की पुनरावृत्ति मन को सम्मोहित करने की एक प्रक्रिया मात्र है; यदि आप किसी शब्द या वाक्य को लगातार दोहराते हैं तो आप स्पष्ट रूप से शांत हो जाते हैं, लेकिन इससे आप मन को सुस्त बना देते हैं, और उसमें कोई स्वतंत्रता नहीं होती है। लेकिन दोहराव से, आदत से, अनुष्ठान से मन को सुस्त बनाने की प्रक्रिया की समझ, और दोहराए गए शब्द के माध्यम से सुरक्षित होने की मनोवैज्ञानिक इच्छा की समझ - यही ध्यान है।

इस बिंदु पर समस्या अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि हमें ध्यान करने वाले और ध्यान करने वाले दोनों की जांच करनी चाहिए। और अगर मैं सुझाव दूं तो आपको बहुत ध्यान से सुनना होगा। किसी को केवल अस्वीकार करने या स्वीकार करने के लिए नहीं, बल्कि सीखने के लिए भी सुनना चाहिए। सीखने के लिए उत्सुक मन न तो स्वीकार करता है और न ही इनकार करता है; यह पता लगाने के लिए सुनता है। ध्यान की समस्या और ध्यान करने वाला कौन है, इसके लिए बहुत अधिक गहराई की आवश्यकता होती है। अब, ध्यान करने वाला, विचारक, टी कौन है जो कहता है, "मुझे ध्यान करना चाहिए"? वह कौन सी इकाई है जो अनुभव करती है और फिर कहती है, "मुझे अनुभव हुआ है"? आप निरीक्षण करते हैं, और वहां देखी गई चीज़ मौजूद होती है; वहाँ विचारक है, और वहाँ विचार है। अब विचारक क्या है? कृपया प्राधिकारी का हवाला देकर उत्तर न दें; यह मत कहो कि शंकर, बुद्ध, क्राइस्ट ने यह या वह कहा है। एक आदमी जो उद्धरण देता है वह बंद हो गया है

बुद्धिमान होना; जब आप केवल स्मृति से दोहराते हैं, तो आपने सोचना बंद कर दिया है। हम अपने लिए कुछ समझने और उसमें जाने की कोशिश कर रहे हैं, और इसलिए जिस क्षण आप उद्धरण देते हैं, आपने सोचना, देखना, समझना, सीखना बंद कर दिया है। उद्धरण देने वाले लोगों पर अविश्वास करें। वे केवल रिकॉर्डिंग मशीनें, ग्रामोफोन हैं, और वे ज्ञान का उपयोग आत्म-विस्तार के साधन के रूप में करते हैं। तो कृपया सीखने के लिए सुनें, क्योंकि विचारक की एक साथ जांच करने पर, हम डर नामक इस असाधारण चीज़ पर आने वाले हैं।

भय को समझे बिना ध्यान नहीं होता। ध्यान उस पूरी प्रक्रिया की समझ है कि डर कैसे अस्तित्व में आता है।

अब विचारक क्या है? नाम, रूप और मस्तिष्क ही रेसपान्ड करता है ना? यह मस्तिष्क, प्रतिक्रियाओं और बार-बार की उत्तेजनाओं के माध्यम से, मन का निर्माण करता है; मन मस्तिष्क से संबंधित है, जैसे मस्तिष्क मन से संबंधित है; वे एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। लेकिन मन मस्तिष्क से स्वतंत्र है; और विचार, यद्यपि मस्तिष्क पर निर्भर है, उससे स्वतंत्र भी है। मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम कहाँ रहते हो; आप प्रश्न सुनते हैं और मस्तिष्क में प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला घटित होती है, और फिर आपको याद आता है कि आप कहाँ रहते हैं और मुझे बताएं। तो नाम है, रूप है, मस्तिष्क है। मस्तिष्क मन का निर्माण करता है और मन मस्तिष्क से संबंधित है; दोनों के बीच हर समय बातचीत चलती रहती है। लेकिन फिर भी मन स्वतंत्र है, मस्तिष्क से भिन्न है, और मन ही विचारक 'मैं' का केंद्र है। यह मन ही है - जो मस्तिष्क का परिणाम है - जो सोचता है, जो कहता है, “मुझे याद है; मेरा नाम यह है; मैं वहां रहता हूं; मेरे पास यह नौकरी है; मुझे दर्द होता है।" तो सोचने की प्रक्रिया मस्तिष्क का परिणाम है, और सोचने की प्रक्रिया उस केंद्र का निर्माण करती है जहाँ से आप कहते हैं, "मैं जानता हूँ, मैं नहीं जानता; मैं जानता हूँ, मैं नहीं जानता।" मैं खुश हूं, मैं दुखी हूं।” वह केंद्र सभी स्मृतियों, सभी अनुभवों, सभी परंपराओं, चेतन और अचेतन का बंडल, अवशेष है। वह सारी चेतना, जो मन है, मस्तिष्क से संबंधित है। दोनों के बीच निरंतर अंतःक्रिया होती रहती है, और फिर भी मन स्वतंत्र है, मस्तिष्क से संबंधित होते हुए भी उससे अलग है।

इसलिए, जब तक चेतना में यह केंद्र है - पर्यवेक्षक जो संचय कर रहा है, और अवलोकन किया गया - तब तक संघर्ष होना चाहिए। कृपया इसे समझें; मैं इसमें जाऊंगा. जब तक एक विचारक, एक अनुभवकर्ता और एक अनुभवी, एक अवलोकनकर्ता मौजूद है, तब तक दोनों के बीच संघर्ष होना ही चाहिए। ऐसा ही है, है ना? मैंने आनंद का अनुभव किया है, और मैं और अधिक चाहता हूँ; मैंने दर्द का अनुभव किया है, और मैं और कुछ नहीं चाहता; मैं बुरा हूं, और मुझे अच्छा होना ही चाहिए; मैं पूरा करना चाहता हूं, और हताशा है। इसलिए अनुभव करने वाले और अनुभव की जाने वाली वस्तु के बीच निरंतर संघर्ष, संघर्ष, प्रयास होता रहता है। यह

केंद्र लालची है और इसलिए वह कहता है, "मुझे लालची नहीं होना चाहिए," और इसलिए संघर्ष है। ये तो हम सब जानते हैं ना? और यही संघर्ष मन को थका रहा है; यह मन के क्षेत्र में चलने वाला निरंतर संघर्ष है जो बिगड़ने, विकृत करने वाला, घातक कारक है। तो क्या करने का मन है? मन में प्रेक्षक और दृश्य की यह दोहरी प्रक्रिया चल रही है, और इसलिए संघर्ष, दर्द, दुख, पीड़ा, आशा और निराशा का पूरा कारोबार चल रहा है। सब कुछ इस इकाई, विचारक, पर्यवेक्षक के आसपास केंद्रित है; और जब तक वह केंद्र मौजूद है, तब तक दुःख अवश्य रहेगा क्योंकि केंद्र छाया-निर्माता है। और वह केंद्र विचार द्वारा निर्मित होता है, जो स्मृति की प्रतिक्रिया है - स्मृति भी मस्तिष्क का हिस्सा है - इसलिए वे सभी परस्पर जुड़े हुए हैं। अब सवाल यह है कि उस केंद्र पर कैसे मरें? इसे कैसे नष्ट किया जाए ताकि केंद्र अब छाया-निर्माता न रह जाए, वह इकाई न रह जाए जो कहती है, “मैं पीड़ित हूं; काश मैं खुश रह पाता"? क्योंकि तब चेतना, जागरूकता का कोई केंद्र नहीं होता, और फिर भी मस्तिष्क छापों को प्राप्त करने, अनुवाद करने, कार्य करने में सक्षम होता है। मुझे आशा है कि आप समस्या को समझेंगे, महोदय। मुझे आशा है कि मैं इसे स्पष्ट कर रहा हूं। जब तक विचारक और विचारक मौजूद है, जब तक अनुभवकर्ता और अनुभव की जाने वाली वस्तु मौजूद है, तब तक संघर्ष का बिगड़ता हुआ कारक अवश्य होगा, और संघर्ष के माध्यम से आप कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकते, संघर्ष के माध्यम से कोई सृजन नहीं होता है। सृजन तभी होता है जब मन पूरी तरह शांत होता है। मस्तिष्क में समस्याएं हो सकती हैं, मस्तिष्क बहुत सी चीजें काम कर सकता है, लेकिन मस्तिष्क की समस्या का समाधान केवल तभी हो सकता है जब मन - जो मस्तिष्क से संबंधित है - पूरी तरह से अलग स्थिति में हो। जब यह गतिहीन होता है तो कोई केंद्र नहीं होता। और गतिहीन मन की वह स्थिति आपके मस्तिष्क द्वारा इकट्ठा की जाने वाली, कैद की जाने वाली, पहुंचने वाली चीज़ नहीं है। चालाक दिमाग कहेगा, "मुझे वह अवस्था प्राप्त करनी होगी और सब कुछ ठीक हो जाएगा," लेकिन चालाक दिमाग इसे कभी नहीं जान सकता। जबकि यह अहसास कि जब तक किसी भी रूप में संघर्ष है, तब तक बेहोशी का एक केंद्र होना चाहिए जो सारा भ्रम, सारा दुख, कष्ट और परिश्रम पैदा कर रहा है - उसका एहसास, उसकी भावना, पूरी समझ यह मन में जागरूकता की एक असाधारण स्थिति लाता है जिसमें कोई केंद्र नहीं है, और इसलिए कोई सीमा नहीं है। ऐसा मन पूरी तरह से जागरूक, पूरी तरह से प्रबुद्ध है, इसका हर अछूता क्षेत्र ज्ञात है, और इसलिए यह पूरी तरह से शांत है। उस अवस्था में कोई अनुभवकर्ता नहीं होता।

यदि आपने इस प्रवचन की शुरुआत से चरण दर चरण अनुसरण किया है, यदि आप इसमें गए हैं, यदि आपने वास्तव में इसे मेरे साथ महसूस किया है, समझा है, नहीं

स्वीकार किया, लेकिन जैसे-जैसे आप आगे बढ़े, इसकी सच्चाई को देखा, तब आप पाएंगे कि मन की एक अकाट्य, वास्तविक, सच्ची स्थिति है जो केंद्र से रहित है।

तब एक समस्या उत्पन्न होती है जो वास्तव में बहुत अधिक जटिल है - समस्या यह है कि यह अवस्था क्या है, वह मन क्या है जो इस पूर्ण गतिहीनता का अनुभव करता है? यदि कोई केंद्र नहीं है जो मन की गतिहीन स्थिति को पहचानता है, तो आप कैसे जानते हैं कि ऐसा मन अस्तित्व में है? कृपया महोदय, इस प्रश्न को समझें क्योंकि इसका आपके दैनिक जीवन से बहुत गहरा संबंध है; यह कोई सुदूर चीज़ नहीं है, पहाड़ियों से परे, समुद्र से परे। यदि आप इसे समझ जाते हैं, तो आप अपने दैनिक संबंधों, अपनी दैनिक गतिविधियों, अपने दैनिक विचारों को समझ जायेंगे; तब आप जीवन को और अधिक महत्वपूर्ण तरीके से, अधिक जीवंतता से देखेंगे। आख़िरकार, आप किसी अनुभव को केवल इसलिए जानते हैं क्योंकि आप उसे पहले ही अनुभव कर चुके हैं; आप दर्द को जानते हैं क्योंकि आपने दर्द का अनुभव किया है। तो एक अनुभवकर्ता है जिसने दर्द का अनुभव किया है और इसे दर्द के रूप में पहचानता है।

अब प्रश्न यह है: यदि चेतना में कोई केंद्र नहीं है, केवल जागरूकता की स्थिति है जिसमें कोई सीमा नहीं है, कोई सरहद नहीं है, कोई समय नहीं है - क्योंकि यह समय से परे कुछ है, शाश्वत, अविनाशी है - तो मन कैसे जानता है कि ऐसा एक राज्य मौजूद है? यदि इसे पहचाना नहीं जा सकता, तो कोई कैसे जान सकता है कि यह अस्तित्व में है? यह कोई पहेली नहीं है श्रीमान, लेकिन कृपया इसे समझें, जब इस तरह की कोई समस्या आपके सामने रखी जाए तो अपने दिमाग पर नजर रखें। यह कुछ ऐसा है जिसे आप नहीं जानते हैं, जिसे आपने कभी अनुभव नहीं किया है, और इसलिए अनुभव करने वाला इसे कभी छू नहीं सकता है। एक अनुभवकर्ता केवल वही अनुभव कर सकता है जिसे वह पहचानता है, और पहचान केवल इसलिए आती है क्योंकि आपके पास एक स्मृति है। इसलिए बिना किसी सीमा, बिना किसी केंद्र के जागरूकता की यह स्थिति कुछ ऐसी है जिसे अनुभवकर्ता द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता है। तो फिर वह क्या है जो जानता है कि उसका अस्तित्व है? अब देखो, श्रीमानों, इसे देखो। जब आप कहते हैं, "मैं प्यार करता हूँ" तो क्या आप प्यार की स्थिति जानते हैं? यदि आपने पहले ही प्यार का अनुभव कर लिया है और कोई अनुभवकर्ता है जो कहता है, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ," तो यह अब प्यार नहीं है। आइए इसे अलग तरीके से कहें। जहाँ सौन्दर्य की अनुभूति होती है, वहाँ इच्छा नहीं होती। जब आप कोई बहुत सुंदर चीज़ देखते हैं, तो उसकी तत्काल अनुभूति सारी इच्छा को दूर कर देती है। क्या आपने इस पर ध्यान नहीं दिया? एक सुंदर व्यक्ति, आकाश के सामने एक मैदान में एक अकेला पेड़ - उस धारणा की सुंदरता में कोई इच्छा नहीं है। इच्छा बहुत बाद में आती है, जब मैं कहता हूं, "मैं वापस जाकर इसे फिर से देखना चाहता हूं। मैं वह चेहरा दोबारा देखना चाहूँगा।" फिर इच्छा की पूरी प्रक्रिया शुरू हो जाती है; फिर समय की प्रक्रिया आती है। अब अगर आप इसे समझेंगे, तो आप देखेंगे कि एक ऐसी अवस्था है जो नहीं है

मन द्वारा अनुभवकर्ता, केंद्र के रूप में अनुभव करने योग्य; और वह अवस्था कालातीत है, कोई ऐसी चीज़ नहीं जो निरंतर बनी रहे।

तो यह संपूर्ण प्रवचन, आरंभ से लेकर अब तक, ध्यान है। मन के तरीकों की समझ स्वयं को उजागर करना है, न कि स्वयं के बारे में ज्ञान एकत्र करना। मैं परमात्म के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, ऐसी कोई चीज नहीं है; यह सुरक्षित होने, अमर होने की इच्छा में मन का एक आविष्कार है। हम वास्तव में जो कुछ भी जानते हैं वह आंसुओं की इस घाटी है जिसमें हम निराशा और आशा के साथ रहते हैं, और उसमें से हम एक स्वर्ग, एक स्थायी आत्म, इत्यादि का आविष्कार करते हैं; वह सब असत्य है. लेकिन इस पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए महान धारणा, गहन ध्यान, स्वयं की वास्तविक समझ, हर विचार को लेना और उसे देखना, उसमें जाना आवश्यक है। यदि आप एक भी विचार में पूरी तरह, अंत तक जा सकें, तो आपको विचारक और विचार के बारे में और मन की उस स्थिति के बारे में पता चल जाएगा जिसमें कोई केंद्र नहीं है।

यह सब ध्यान है, और यदि आप यह सब नहीं समझते हैं, तो आपका जीवन उथला, खाली, दुखी रहेगा, और आप जो भी करेंगे - कोई भी किताब पढ़ें, किसी भी शिक्षक का अनुसरण करें - आप अभी भी अंधेरे की घाटी में हैं। जब आप इस संपूर्ण प्रक्रिया को समझना शुरू करते हैं तभी एक स्वतंत्रता होती है जिसमें मौन और शांति होती है।

21 दिसंबर 1958

नौवीं वार्ता बम्बई में

निश्चित रूप से, हम सभी दुनिया में अकथनीय असमानताओं, विशाल धन और अत्यधिक गरीबी, व्यापक दुख, भयावह मानवीय प्रयासों से अवगत हैं जो कहीं नहीं ले जाते हैं। यह संघर्ष और परिश्रम हमारे पूरे जीवन में तब तक बना रहता है जब तक हमारी मृत्यु नहीं हो जाती। हम इस सब से अवगत हैं और अपनी निराशा में, अपने दुख में, अपने निरंतर संघर्ष में, हम किसी ऐसी चीज़ की ओर मुड़ते हैं जिसे हम भगवान कहते हैं, किसी विश्वास, समर्थन या हठधर्मिता की ओर। और यदि संभव हो तो मैं धर्म नामक इस चीज़ पर आपसे बात करना चाहूँगा। लेकिन इससे पहले कि हम इसमें जाएं, मुझे लगता है कि हमें शब्द, या प्रतीक, और भावना, तथ्य के बीच के विभाजन के बारे में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। शब्द एक चीज़ है, और तथ्य कुछ और है, और हममें से अधिकांश के लिए इसे महसूस करना बहुत कठिन है। शब्द कभी भी वास्तविक चीज़ नहीं होता है, और इसके लिए बहुत सटीक सोच की आवश्यकता होती है ताकि शब्द, प्रतीक को तथ्य के साथ भ्रमित न किया जाए। ज्ञान एक चीज़ है और प्रेम दूसरी; धारणा एक बात है, और जानना दूसरी बात है। जानना महसूस करना नहीं है, और आप जो महसूस करते हैं उसे कभी भी शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। शब्द, प्रतीक तो साधन मात्र हैं

संचार। लेकिन शब्द, प्रतीक उस वास्तविक चीज़ को नहीं दर्शाता है जिसे कोई महसूस करता है। तो शब्द और तथ्य के बीच, ज्ञान और प्रेम के बीच, जानने और महसूस करने के बीच एक विभाजन है, और मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि हमें एक-दूसरे के साथ स्पष्ट रूप से संवाद करना है, तो हमें प्रतीक और तथ्य के बीच अंतर के बारे में पता होना चाहिए।

जैसा कि मैं इन सभी प्रवचनों के दौरान कहता रहा हूं, व्यक्ति का महत्व सबसे अधिक है - भले ही समाज, धर्म, सरकारें इस तथ्य को नहीं पहचानती हैं। आप बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आप वास्तविकता की विस्फोटक रचनात्मकता लाने का एकमात्र साधन हैं। आप स्वयं वह वातावरण हैं जिसमें यह वास्तविकता अस्तित्व में आ सकती है। लेकिन आपने देखा होगा कि सभी सरकारें, सभी संगठित धर्म और समाज, हालांकि वे व्यक्ति के महत्व पर जोर देते हैं, व्यक्तिगत मूल, व्यक्तिगत भावना को खत्म करने की कोशिश करते हैं क्योंकि वे सामूहिक भावना चाहते हैं, वे सामूहिक प्रतिक्रिया चाहते हैं। लेकिन जो मन केवल विश्वास के एक निश्चित पैटर्न के अनुसार संगठित होता है, रीति-रिवाज, परंपरा, ज्ञान से दबा होता है, वह व्यक्तिगत मन नहीं होता है। एक व्यक्तिगत मन तभी हो सकता है जब आप जानबूझकर, जानबूझकर, भावना के साथ इन सभी प्रभावों को एक तरफ रख दें क्योंकि आपने उनके महत्व, उनके सतही मूल्य को समझ लिया है। तभी कोई व्यक्तिगत रचनात्मक दिमाग होता है।

व्यक्ति को समूह से अलग करना असाधारण रूप से कठिन है, और फिर भी इस पृथक्करण के बिना वास्तविकता संभव नहीं है। इसलिए सच्चा व्यक्ति वह नहीं है जिसके पास केवल अपना नाम, कुछ भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ, कुछ पारंपरिक प्रतिक्रियाएँ, कुछ संपत्ति इत्यादि है, बल्कि सच्चा व्यक्ति वह है जो विचारों के इस भ्रम को, इस दलदल से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है। परंपरा का, जो इन सभी को एक तरफ रखकर मानवीय दुख के कारण, मूल, केंद्र को खोजने का प्रयास करता है। ऐसा व्यक्ति किताबों, अधिकार, प्रसिद्ध रीति-रिवाजों का सहारा नहीं लेता है, बल्कि इन सभी को त्याग देता है और पूछताछ करना शुरू कर देता है - और वह सच्चा व्यक्ति है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग दोहराते हैं, स्वीकार करते हैं, अनुपालन करते हैं, अनुकरण करते हैं, आज्ञा मानते हैं, क्या हम नहीं करते हैं, क्योंकि हमारे लिए आज्ञाकारिता नियम बन गई है - घर में आज्ञाकारिता, पुस्तक की आज्ञाकारिता, गुरु, शिक्षक की आज्ञाकारिता, इत्यादि; और आज्ञाकारिता के साथ हम महसूस करते हैं कि सुरक्षा है, सुरक्षा है। लेकिन वास्तव में जीवन सुरक्षित नहीं है, जीवन कभी सुरक्षित नहीं होता; इसके विपरीत, यह सबसे अनिश्चित चीज़ है। और क्योंकि यह अनिश्चित है, यह अत्यंत समृद्ध, अथाह भी है। लेकिन मन अपनी खोज में सुरक्षा और संरक्षा चाहता है, और इसलिए वह आज्ञा का पालन करता है, अनुपालन करता है और अनुकरण करता है; और ऐसा मन बिल्कुल भी व्यक्तिगत मन नहीं है।

हममें से अधिकांश व्यक्ति नहीं हैं, हालांकि हममें से प्रत्येक का एक अलग नाम, एक अलग रूप है, क्योंकि आंतरिक रूप से मन की स्थिति समयबद्ध है, रीति-रिवाज, परंपरा और अधिकार से दबी हुई है - सरकार का अधिकार, समाज का अधिकार, घर में अधिकार. तो ऐसा मन कोई व्यक्तिगत मन नहीं है; व्यक्तिगत मन इन सब से बाहर है, यह समाज के ढाँचे के भीतर नहीं है; व्यक्तिगत मन विद्रोह में है और इसलिए सुरक्षा की तलाश नहीं कर रहा है। क्रांतिकारी मन वह मन नहीं है जो विद्रोह करता है। क्रांतिकारी दिमाग केवल चीजों को एक निश्चित पैटर्न के अनुसार बदलना चाहता है और ऐसा दिमाग विद्रोह करने वाला दिमाग नहीं है, ऐसा दिमाग नहीं है जो स्वयं असंतुष्ट है।

मैं नहीं जानता कि क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि असंतोष कितनी असाधारण चीज़ है। आप ऐसे कई युवाओं को जानते होंगे जो असंतुष्ट हैं; वे नहीं जानते कि क्या करना है; वे दुखी हैं, नाखुश हैं, विद्रोह कर रहे हैं, यह खोज रहे हैं, वह प्रयास कर रहे हैं, लगातार प्रश्न पूछ रहे हैं। लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं वे नौकरी ढूंढते हैं, शादी करते हैं और यहीं सब ख़त्म हो जाता है। उनके मौलिक असंतोष को दूर कर दिया जाता है, और फिर दुख शुरू हो जाता है। जब वे छोटे होते हैं तो उनके माता-पिता, शिक्षक, समाज, सभी उन्हें असंतुष्ट न होने के लिए कहते हैं, यह पता लगाने के लिए कि वे क्या करना चाहते हैं और करें - लेकिन हमेशा पैटर्न के भीतर। ऐसा मन वास्तव में विद्रोह में नहीं है और आपको सत्य को खोजने के लिए वास्तविक विद्रोह में मन की आवश्यकता है, न कि अनुरूप मन में। विद्रोह का अर्थ है जुनून.

इसलिए एक व्यक्ति बनना बहुत महत्वपूर्ण है, और व्यक्तित्व केवल आत्म-ज्ञान के माध्यम से होता है - स्वयं को जानना, यह जानना कि आप नकल क्यों करते हैं, आप क्यों अनुरूप होते हैं, आप क्यों आज्ञापालन करते हैं। तुम भय से आज्ञा मानते हो न?
सुरक्षित रहने की इच्छा के कारण, आप अधिक शक्ति, अधिक धन, या यह या वह पाने के लिए तैयार होते हैं। लेकिन जिसे आप ईश्वर कहते हैं उसे खोजने के लिए, यह पता लगाने के लिए कि वह वास्तविकता है या नहीं, वह व्यक्ति अवश्य होना चाहिए जो अतीत के प्रति मर चुका है, जो ज्ञान के लिए मर चुका है, जो अनुभव के लिए मर चुका है; एक ऐसा मन होना चाहिए जो पूरी तरह से, बिल्कुल नया, ताज़ा, निर्दोष हो। धर्म उस चीज़ की खोज है जो वास्तविक है, जिसका अर्थ है कि आपको किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढना है और उसका अनुसरण नहीं करना है जो कहता है कि उसने पाया है और आपको इसके बारे में बताना चाहता है। एक ऐसा मन होना चाहिए जो उस वास्तविकता को ग्रहण करता है, न कि एक ऐसा मन जो वास्तविकता को केवल मौखिक रूप से स्वीकार करता है और वास्तविकता की आशा में उस विचार के अनुरूप होता है।

सुरक्षित।

इसलिए जानने और महसूस करने में अंतर है और मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत ज़रूरी है। हमारे यहां, स्पष्टीकरण पर्याप्त हैं, जिसका अर्थ है, "जानना।" हम कहते हैं, "मुझे पता है कि मैं महत्वाकांक्षी हूं; मैं जानता हूं कि मैं लालची हूं; मैं जानता हूं कि मुझे नफरत है,'' लेकिन ऐसा जानना तथ्य से मुक्त नहीं है। यह तो आप जानते ही होंगे

आप नफरत करते हैं, लेकिन नफरत की वास्तविक भावना और उससे मुक्ति उसकी व्याख्या और उसके कारण की खोज से बिल्कुल अलग चीज है, क्या ऐसा नहीं है? अर्थात्, यह जानना कि मैं सुस्त, मूर्ख हूँ, और अपनी नीरसता और मूर्खता की भावना के प्रति सचेत रहना दो पूरी तरह से अलग चीजें हैं। महसूस करने का तात्पर्य बहुत अधिक जीवन शक्ति, बहुत अधिक ताकत, जोश से है, लेकिन केवल जानना जीवन के प्रति केवल एक आंशिक दृष्टिकोण है - यह समग्र दृष्टिकोण नहीं है। आप जानते होंगे कि वानस्पतिक रूप से एक पत्ती का निर्माण कैसे होता है, लेकिन एक पत्ती को महसूस करने, उसे सूंघने, वास्तव में उसे देखने के लिए बहुत अधिक प्रवेश की आवश्यकता होती है - स्वयं में प्रवेश। मुझे नहीं पता कि आपने कभी कोई पत्ता हाथ में लेकर देखा हो या नहीं. आप सभी शहरवासी हैं और आप सभी अपने आप में, अपनी प्रगति में, अपनी सफलताओं में, महत्वाकांक्षाओं में, ईर्ष्या में, अपने नेताओं, अपने मंत्रियों और बाकी सभी बकवासों में व्यस्त हैं। हंसो मत, श्रीमानों. यह दुखद है क्योंकि यदि आप जानते कि गहराई से कैसे महसूस करना है, तो आपके पास प्रचुर सहानुभूति होगी, फिर आप कुछ करेंगे, फिर आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ कार्य करेंगे; लेकिन यदि आप केवल यह जानते हैं कि गरीबी है, बिना किसी भावना के एक सरकारी अधिकारी या ग्राम सुधारक के रूप में गरीबी हटाने के लिए बौद्धिक रूप से काम करते हैं, तो आप जो करते हैं उसका बहुत कम महत्व है।

आप जानते हैं, सत्य को समझने के लिए जुनून जरूरी है। मैं जुनून शब्द का उपयोग इसके पूर्ण अर्थ में कर रहा हूं क्योंकि दृढ़ता से महसूस करना, गहराई से महसूस करना, अपने पूरे अस्तित्व के साथ, आवश्यक है; अन्यथा, वास्तविकता नामक वह अजीब चीज़ आपके सामने कभी नहीं आएगी। लेकिन आपके धर्म, आपके संत कहते हैं कि आपको इच्छा नहीं करनी चाहिए, आपको नियंत्रण करना चाहिए, दबाना चाहिए, दूर करना चाहिए, नष्ट करना चाहिए, जिसका अर्थ है कि आप जले हुए, थके हुए, खाली, मृत सत्य पर आते हैं। महोदय, जीवन नामक इस अजीब चीज़ से मिलने के लिए आपके अंदर जुनून होना चाहिए, और यदि आप समाज से, रीति-रिवाज से मंत्रमुग्ध हैं, यदि आप मान्यताओं, हठधर्मिता, रीति-रिवाजों में उलझे हुए हैं, तो आपके पास जुनून, तीव्र भावना नहीं हो सकती है। तो, उस प्रकाश, उस सत्य, उस अथाह वास्तविकता को समझने के लिए, हमें पहले उसे समझना होगा जिसे हम धर्म कहते हैं और उससे मुक्त होना चाहिए - मौखिक रूप से नहीं, बौद्धिक रूप से नहीं, स्पष्टीकरण के माध्यम से नहीं, बल्कि वास्तव में स्वतंत्र होना चाहिए क्योंकि स्वतंत्रता - आपकी बौद्धिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि स्वतंत्रता की वास्तविक स्थिति-जीवन शक्ति देती है। जब आप इस सब बकवास से गुजर चुके होते हैं, जब आप इन सभी भ्रमित करने वाली, पारंपरिक, अनुकरणात्मक चीजों को एक तरफ रख देते हैं, तब मन स्वतंत्र होता है, तब मन सतर्क होता है, तब मन भावुक होता है; और केवल ऐसा मन ही आगे बढ़ सकता है।

तो आइए, व्यक्तिगत मनुष्य के रूप में, क्योंकि यह आप और मैं हैं जो चिंतित हैं, न कि जनसमूह - एक राजनीतिक इकाई के अलावा जनसमूह जैसी कोई चीज नहीं है - आइए जानें कि धर्म से हमारा क्या मतलब है। हममें से अधिकांश के लिए यह क्या है? क्या यह किसी चीज़ में विश्वास नहीं है - एक अतिमानवीय दिव्यता में

जो हमें नियंत्रित करता है, हमें आकार देता है, हमें आशा देता है और हमें निर्देशित करता है—और हम उस इकाई को अपनी प्रार्थनाएं, अपने अनुष्ठान अर्पित करते हैं; इसके नाम पर हम बलिदान देते हैं, प्रायश्चित करते हैं, प्रार्थना करते हैं और भीख मांगते हैं, और हम अपनी कठिनाइयों में हमारी मदद करने के लिए उसे अपने पिता के रूप में देखते हैं। हमारे लिए, धर्म न केवल मंदिर में खुदी हुई छवि है, मस्जिद में अक्षर, या चर्च में क्रॉस है, न केवल हाथ से बनाई गई खुदी हुई छवि है, बल्कि मन, विचार द्वारा बनाई गई खुदी हुई छवि भी है। तो हमारे लिए, धर्म स्पष्ट रूप से हमारे दैनिक दुःख, हमारे दैनिक भ्रम से बचने का एक साधन है। हम असमानताओं, अन्यायों, मृत्यु, निरंतर दुखों, संघर्षों, निराशा और निराशा को नहीं समझते हैं; इसलिए हम किसी भगवान की ओर, अनुष्ठानों, सामूहिक प्रार्थनाओं की ओर मुड़ते हैं, और इस तरह कुछ सांत्वना, कुछ सांत्वना पाने की आशा करते हैं। और इस प्रक्रिया में, संत, दार्शनिक, किताबें हमें अपनी विशेष व्याख्या, रीति-रिवाज, परंपरा से तौलते हैं। यही हमारी जीवन शैली है, है ना? यदि आप स्वयं में देखें तो आप सहमत होंगे, है न कि यह धर्म की एक सामान्य रूपरेखा है। यह मन के आराम के लिए मन द्वारा बनाई गई चीज़ है, न कि कोई ऐसी चीज़ जो समृद्धि, जीवन की परिपूर्णता या जीने का जुनून देती है। तो हम यह जानते हैं, लेकिन यहां फिर से जानना और महसूस करना दो अलग चीजें हैं। संगठित धर्म के मिथ्यात्व को जानना एक बात है, लेकिन इसे देखना, इसे त्यागना, इसे दूर रखना - इसके लिए वास्तविक भावना की एक बड़ी गहराई की आवश्यकता होती है। तो समस्या - जिसका कोई आसान उत्तर नहीं है - यह है कि किसी चीज़ को कैसे छोड़ा जाए, उसके लिए कैसे मरें, इन सभी स्पष्टीकरणों, इन सभी झूठे देवताओं के लिए कैसे मरें - क्योंकि मन और हाथ से बनाए गए सभी देवता झूठे हैं . कोई भी स्पष्टीकरण आपको इससे मरने पर मजबूर नहीं करेगा। तो, क्या चीज़ आपको इसके प्रति मरने पर मजबूर कर देगी, क्या चीज़ आपको यह कहने पर मजबूर कर देगी, "अब, मैं इसे छोड़ता हूँ"? हम आम तौर पर कुछ और पाने के लिए कुछ त्याग करते हैं जो हमें बेहतर लगता है, और हम इसे त्याग कहते हैं।

लेकिन निश्चित रूप से वह त्याग नहीं है. त्याग करने का अर्थ है त्याग करना, बिना यह जाने कि भविष्य क्या है, बिना यह जाने कि कल क्या होगा। यदि आप यह जानते हुए हार मान लेते हैं कि कल क्या होगा, तो यह महज एक आदान-प्रदान है, बाजार की चीज है; इसका कोई मूल्य नहीं है. जब शारीरिक मृत्यु आती है तो आप नहीं जानते कि आगे क्या होने वाला है; यह अंतिम बात है. उसी तरह, मरना, त्याग करना, पूरी तरह से, गहराई से अलग रख देना, वह सब जिसे हम धर्म कहते हैं, बिना यह जाने कि क्या होगा - क्या आपने कभी यह प्रयास किया है? मुझे नहीं पता कि यह आपके लिए कोई समस्या है या नहीं, लेकिन यह निश्चित रूप से किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए समस्या होगी जो सतर्क है, जो थोड़ा भी जागरूक है, क्योंकि दुनिया में इतना बड़ा अन्याय है। एक कार में क्यों चलता है जबकि दूसरा पैदल? क्यों है भूख, गरीबी और बेशुमार दौलत? सत्ता, अधिकार, पद पर बैठा व्यक्ति क्रूरता के साथ अपनी शक्ति का प्रयोग क्यों कर रहा है? बच्चा क्यों मरता है? सर्वत्र यह असहनीय दुःख क्यों है? ये सारे सवाल पूछने वाला एक आदमी जरूर होगा

वास्तव में उनके साथ जलना, कोई मूर्खतापूर्ण कारण नहीं ढूंढना - कोई आर्थिक, सामाजिक, या राजनीतिक कारण। जाहिर तौर पर बुद्धिमान व्यक्ति को केवल व्याख्यात्मक कारणों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण चीज़ों की ओर मुड़ना चाहिए। और यहीं हमारी समस्या है.

इसलिए पहली और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्पष्टीकरण से संतुष्ट न हों, कर्म शब्द से संतुष्ट न हों , चालाक दर्शन से संतुष्ट न हों, बल्कि यह महसूस करें, पूरी तरह से महसूस करें कि यह बहुत बड़ी समस्या है जिसे कोई भी स्पष्टीकरण नहीं दे सकता है पोंछ लें। यदि आप ऐसा महसूस कर सकें, तो आप देखेंगे कि मन में एक क्रांति हो गई है। आमतौर पर यदि कोई व्यक्ति दुख का समाधान नहीं ढूंढ पाता है, तो वह कड़वा, निंदक बन जाता है, या अपनी हताशा के आधार पर एक दार्शनिक सिद्धांत का आविष्कार करता है। लेकिन अगर मुझे पीड़ा के तथ्य का सामना करना पड़ता है, कि मृत्यु है, गिरावट है, और अगर मन से सभी स्पष्टीकरण, सभी समाधान, सभी उत्तर छीन लिए जाते हैं, तो मन का सामना सीधे उस चीज़ से होता है; और दिलचस्प बात यह है कि हमारा दिमाग कभी भी उस प्रत्यक्ष धारणा की अनुमति नहीं देता है।

तो देखने और जानने, महसूस करने और प्यार करने में अंतर है।
महसूस करने और प्यार करने का मतलब भक्ति नहीं है; आप भक्ति के माध्यम से वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकते। किसी विचार के प्रति भावनात्मक रूप से खुद को समर्पित करना आमतौर पर भक्ति कहा जाता है, लेकिन यह वास्तविकता को छोड़ देता है क्योंकि खुद को किसी चीज के लिए समर्पित करके, आप केवल उस चीज के साथ अपनी पहचान बना रहे हैं। अपने देवताओं से प्रेम करना, अपने गुरु के गले में मालाएँ डालना, कुछ शब्दों को दोहराना, उनकी उपस्थिति में मंत्रमुग्ध होना, और आँसू बहाना - आप अगले हज़ार वर्षों तक यह सब कर सकते हैं, लेकिन आपको वास्तविकता कभी नहीं मिलेगी। एक बादल, एक पेड़, एक इंसान को समझने, महसूस करने, उससे प्यार करने के लिए अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है, और जब आपका मन ज्ञान से विचलित हो तो आप इसमें कैसे भाग ले सकते हैं? ज्ञान तकनीकी रूप से उपयोगी है, और बस इतना ही। अगर कोई डॉक्टर ऑपरेशन करना नहीं जानता तो उससे दूर रहना ही बेहतर है। एक निश्चित स्तर पर, एक निश्चित दिशा में ज्ञान आवश्यक है, लेकिन ज्ञान हमारे दुख का संपूर्ण समाधान नहीं है। संपूर्ण उत्तर इस भावना, इस जुनून में निहित है जो तब आता है जब स्वयं की अनुपस्थिति होती है, जब आप उस सब से बेखबर होते हैं जो आप हैं। महसूस करने, समझने, प्यार करने के लिए जुनून का वह गुण आवश्यक है। वास्तविकता बौद्धिक नहीं है; लेकिन बचपन से ही, शिक्षा के माध्यम से, तथाकथित सीखने के हर रूप के माध्यम से, हमने एक ऐसा दिमाग लाया है जो तेज़ है, जो प्रतिस्पर्धा करता है, जो सूचनाओं से भरा हुआ है - जो कि वकीलों, राजनेताओं, प्रौद्योगिकीविदों और विशेषज्ञों के मामले में है। हमारे दिमाग को तेज़ किया जाता है, उज्ज्वल बनाया जाता है, और यह चलते रहने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ बन गई है; और इसलिए हमारी सारी भावनाएँ सूख गई हैं। आप उस गरीब आदमी के लिए महसूस नहीं करते

उसकी मनहूसियत; जब आप किसी अमीर आदमी को अपनी खूबसूरत कार में गाड़ी चलाते हुए देखते हैं तो आपको कभी खुशी नहीं होती; जब तुम कोई अच्छा चेहरा देखते हो तो तुम्हें कभी खुशी नहीं होती; जब आप इंद्रधनुष या हरी घास की शोभा देखते हैं तो कोई धड़कन नहीं होती। हम अपनी नौकरियों, अपने दुखों में इतने व्यस्त हैं कि हमारे पास कभी फुर्सत का क्षण नहीं है जिसमें हम महसूस कर सकें कि प्यार करना, दयालु होना, उदार होना क्या होता है - फिर भी इन सबके बिना हम जानना चाहते हैं कि ईश्वर क्या है! कितना अविश्वसनीय रूप से मूर्ख और बचकाना! इसलिए व्यक्ति के लिए जीवित होना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है - पुनर्जीवित होना नहीं; आप मृत भावनाओं को, लुप्त हो चुकी महिमा को पुनर्जीवित नहीं कर सकते। लेकिन क्या हम एक दिन के लिए भी तीव्रता से, पूरी तरह से, प्रचुरता से नहीं जी सकते? ऐसा एक दिन एक सहस्राब्दी को कवर करता है। यह कोई काव्यात्मक कल्पना नहीं है. आपको इसके बारे में तब पता चलेगा जब आप एक समृद्ध दिन जी चुके होंगे जिसमें कोई समय नहीं है, कोई भविष्य नहीं है, कोई अतीत नहीं है; तब आपको उस असाधारण स्थिति की पूर्णता का पता चलेगा। ऐसे जीवन का ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है।

हमारी समस्या यह है कि हम जो कुछ भी जानते हैं उसके प्रति कैसे मरें ताकि हम जीवित रह सकें, अन्यायों, सुखों और दुखों के प्रति कैसे मरें। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी किसी चीज़ के लिए मरने की कोशिश की है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जब आप मरते हैं तभी आपका दिमाग तरोताजा होता है, लेकिन अगर आप भावुक नहीं हैं तो आप मर नहीं सकते। केवल खाली मन ही समृद्ध होता है, वह मन नहीं जो ज्ञान, विश्वास, अनुभवों, आशाओं और निराशाओं से भरा होता है - ऐसा मन घिसा-पिटा होता है, ऐसा मन कोई नया मन नहीं होता; यह एक अनुभवी दिमाग है, और एक अनुभवी दिमाग कभी नहीं सीख सकता। यह केवल खाली मन है, वह मन जो अतीत के प्रति, हर चीज के प्रति मर चुका है, समृद्ध है क्योंकि ऐसा मन, भावुक होने के कारण, प्राप्त कर सकता है, और इसलिए जानता है कि प्यार करना क्या है।

महोदय, क्या आपने कभी जीवन की असमानता को गहराई से महसूस किया है - आपके पास क्यों है और दूसरे के पास नहीं, आप क्यों प्रतिभाशाली हैं और दूसरे के पास नहीं? यदि आपने वास्तव में इसे शिद्दत से महसूस किया है, तो आपको पता चल जाएगा कि प्यार कोई असमानता नहीं जानता। उस आदमी को देखना जो महँगी कार में चलता है, और बिना ईर्ष्या के उसका आनंद लेना; सड़क के किनारे भिखारी को भी देखना और उसकी दुर्दशा को महसूस करना-यह प्यार को जानना है, और प्यार के अलावा असमानता का कोई जवाब नहीं है।

आख़िरकार, धर्म प्रेम की खोज है, और प्रेम ऐसी चीज़ है जिसे पल-पल खोजा जाना चाहिए। प्यार क्या है, इसे दोबारा जानने के लिए आपको उस प्यार के लिए मरना होगा जिसे आप एक सेकंड पहले जानते हैं। और प्यार तभी अस्तित्व में आ सकता है जब एहसास का जुनून हो। फिर, उस भावना से क्रिया उत्पन्न होती है, और वह क्रिया आपको बांध नहीं पाएगी क्योंकि प्रेम कभी नहीं बांधता। और इसलिए धर्म वह चीज़ नहीं है जो अभी हमारे पास है, जो एक दयनीय चीज़ है, एक अंधकारमय चीज़ है, एक घातक चीज़ है। धर्म का अर्थ है स्पष्टता, प्रकाश,

जुनून; इसका तात्पर्य एक ऐसे मन से है जो खाली है और इसलिए उस अथाह, अविनाशी समृद्धि को प्राप्त करने में सक्षम है।

24 दिसंबर, 1958

दसवीं वार्ता बम्बई में

यह आखिरी बातचीत होगी और मुझे आश्चर्य है - यह नहीं कि प्रत्येक को सुनने से क्या मिला है, बल्कि - कितनी गहराई तक, किस हद तक प्रत्येक व्यक्ति वास्तव में अपने आप में गया है और अपने लिए कुछ खोजा है। यह केवल इस बात का मामला नहीं है कि क्या कहा गया है या क्या कहा जाएगा, बल्कि यह भी है कि क्या हर एक ने, अपने स्वयं के गंभीर प्रयास से, मन की असाधारण रूप से जटिल प्रक्रिया को उजागर किया है, हम में से प्रत्येक ने कितनी दूर तक रास्ते खोजे हैं चेतना का, जिन चीज़ों पर हम बात कर रहे हैं उन्होंने स्वयं को कितनी गहराई से अनुभव किया है। मुझे ऐसा लगता है कि केवल शब्दों को दोहराना या जो कुछ आपने पढ़ा है वह केवल दिमाग को आराम देता है; यह दिमाग को सुस्त बना देता है.

एक गंभीर दिमाग वह नहीं है जो केवल पवित्र धार्मिक पुस्तकों या मार्क्स, पूंजीवाद, समाजवाद या मनोविज्ञान पर नवीनतम समान रूप से पवित्र पुस्तकों को दोहराता है। मात्र दोहराव प्रत्यक्ष अनुभव का द्वार नहीं खोलता। प्रत्यक्ष अनुभव, प्रत्यक्ष समझ और प्रत्यक्ष ज्ञान से बोलना बिल्कुल अलग बात है, क्योंकि तब किसी ने जो सोचा और महसूस किया है उसमें एक प्रामाणिकता, एक गहराई होती है। जो व्यक्ति केवल स्मृति से या जो कुछ उसने सीखा, सुना या पढ़ा है उसे दोहराता है, वह निश्चित रूप से एक गंभीर व्यक्ति नहीं है। न ही वह गंभीर है जो सैद्धांतिक, अमूर्त चिंतन में लिप्त रहता है। एक ईमानदार व्यक्ति, निश्चित रूप से, वह है जो अपने भीतर जाता है, अपने दुःख और पीड़ा के बारे में चीजों को देखता है, भुखमरी, पतन, युद्ध और अन्याय के प्रति संवेदनशील होता है, और बाहरी अवलोकन से भीतर की खोज शुरू करता है। ऐसा व्यक्ति एक ईमानदार व्यक्ति होता है, न कि वह जो केवल स्पष्टीकरण से संतुष्ट होता है, जो सदैव उद्धरण देता रहता है, सिद्धांत बनाता रहता है, या जीवन का उद्देश्य खोजता रहता है। जो व्यक्ति जीवन का उद्देश्य खोजता है वह केवल अपने जीवन के लिए एक महत्व चाहता है, और वह जो महत्व देता है वह उसकी अपनी कंडीशनिंग पर निर्भर करेगा। लेकिन जो मन रोजमर्रा की घटनाओं और रिश्तों, रोजमर्रा की गतिविधियों और चुनौतियों का अवलोकन करके, पूछताछ करना शुरू करता है, वह अधिक से अधिक अपने भीतर जाता है और छिपे हुए को उजागर करता है।

क्योंकि आख़िरकार, यहीं पर आवश्यक मूलभूत परिवर्तन होना है। यद्यपि असंख्य बाहरी परिवर्तन स्पष्ट रूप से आवश्यक हैं - युद्धों को समाप्त करना, इत्यादि - एकमात्र आमूलचूल परिवर्तन भीतर है।

तो हमारी प्रमुख समस्याओं में से एक यह है: कोई परिवर्तन किससे होता है? वह मन जो पारंपरिक है, संस्कारित है, दुख में है, ईर्ष्यालु है, ईर्ष्यालु है, महत्वाकांक्षी है, ऐसा मन कौन सी चीज है जो उन सभी चीजों को छोड़कर ताजा, नया, स्पष्ट हो जाता है? यदि आप दबाव के कारण बदलते हैं - नए आविष्कारों का दबाव, कानून का, क्रांति का, परिवार का, इत्यादि - तो निश्चित रूप से ऐसा परिवर्तन, जिसकी एक दिशा है, कोई परिवर्तन नहीं है, क्या ऐसा है? उस प्रकार का परिवर्तन महज एक समायोजन है, कानूनों या अस्तित्व के एक पैटर्न के अनुरूप है, और यदि आपने इसे अपने भीतर देखा है, तो मजबूरी के माध्यम से, चिंता के माध्यम से परिवर्तन, जो पहले हुआ है, उसकी निरंतरता है, संशोधित है, क्या यह नहीं है ? मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि वह क्या चीज़ है जो एक आदमी को पूरी तरह से बदल देती है।

तकनीकी ज्ञान स्पष्ट रूप से आंतरिक परिवर्तन नहीं लाता है; यह हमारे दृष्टिकोण को बदल सकता है, लेकिन यह वह आंतरिक परिवर्तन नहीं लाता है जिसमें कोई संघर्ष नहीं है, बल्कि जिसमें एक प्रबुद्ध, सक्रिय बुद्धि है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी खुद से पूछा है कि ऐसा क्या है जो आपको बदलता है। निःसंदेह, यदि डॉक्टर आपसे कहे कि यदि आप सिगरेट पीना जारी रखेंगे तो इससे आपको फेफड़ों का कैंसर हो जाएगा, तो डर के मारे आप धूम्रपान से दूर रह सकते हैं। डर का दबाव या इनाम का वादा आपको एक निश्चित गतिविधि बंद करने पर मजबूर कर सकता है, लेकिन क्या यह वास्तविक बदलाव है? यदि दबाव के माध्यम से, भय के माध्यम से आप बदलते हैं, संशोधित करते हैं, समायोजित करते हैं, तो यह परिवर्तन नहीं है, यह केवल एक अलग रूप में जो रहा है उसकी निरंतरता है। तो क्या चीज़ आपको वास्तव में खुद को बदलने में मदद करेगी? मेरा मानना है कि ऐसा परिवर्तन किसी प्रयास, किसी संघर्ष, किसी पुरस्कार या दंड के दबाव से नहीं आता है, बल्कि यह तत्क्षण, तुरंत, अनायास ही आता है, जब समग्रता की समझ, अनुभूति होती है। मैं इसमें जा रहा हूं, लेकिन जैसा कि मैं कहता रहा हूं, केवल शब्दों को सुनने से आपको यह जानने में मदद नहीं मिलेगी कि क्या कहा जा रहा है। किसी को मानव अस्तित्व की समग्रता को देखना होगा, केवल एक खंड को नहीं; किसी को अस्तित्व की, जीवन की पूरी गहराई को देखना और महसूस करना होता है, और जब ऐसी समझ होती है, तो उस स्थिति में एक संपूर्ण परिवर्तन, एक संपूर्ण परिवर्तन होता है। अब हम केवल टुकड़ों में बदलते हैं - ईर्ष्या या ईर्ष्या को नियंत्रित करना, धूम्रपान छोड़ना या बहुत अधिक खाना, कुछ सुधार लाने के लिए इस समूह या उस समूह में शामिल होना - लेकिन वे सभी खंड, टुकड़े हैं, पूरे से असंबंधित हैं। ऐसी गतिविधि, जो संपूर्ण की धारणा से असंबद्ध है, जाहिर तौर पर विभिन्न प्रकार के कुसमायोजन, विरोधाभास और तनाव को जन्म देती है। तो हमारी समस्या वास्तव में यह है कि हम जीवन की समग्रता को कैसे देखें, कैसे समझें और महसूस करें, उसके साथ कैसे रहें और वहां से पूर्ण रूप से कार्य करें, टुकड़ों में नहीं।

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. मुझे नहीं पता कि आपने इसे स्वयं में नोटिस किया है या नहीं, लेकिन हममें से अधिकांश विरोधाभास की स्थिति में हैं, क्या हम नहीं हैं? आप कुछ सोचते हैं और कुछ और करते हैं, आप कुछ महसूस करते हैं और अगले ही पल उसे नकार देते हैं - न केवल एक व्यक्ति के रूप में, बल्कि एक जाति, एक समूह के रूप में। आप कहते हैं कि आपके पास शांति होनी चाहिए और अहिंसा के बारे में बात करते हैं, और हर समय आप आंतरिक रूप से हिंसक होते हैं, और आपके पास पुलिस, सेना, बमवर्षक, नौसेना और इसके बाकी सभी लोग हैं। इसलिए हमारे अंदर और हमारे बाहर विरोधाभास है। और विरोधाभास जितना अधिक होगा, तनाव उतना ही अधिक होगा, जब तक कि तनाव अंततः विक्षिप्त क्रिया और इसलिए असंतुलित मन की ओर न ले जाए। चूंकि हममें से अधिकांश लोग आत्म-विरोधाभास की स्थिति में हैं, हम लगातार तनाव और खिंचाव में रहते हैं, और उस तनाव से असंतुलित गतिविधि होती है। और यदि किसी को विरोधाभास के इस तनाव का एहसास होता है, तो वह दो विपरीतताओं के बीच एकीकरण लाने की कोशिश करता है, उदाहरण के लिए नफरत और प्यार के बीच, और वह केवल कुछ ऐसा उत्पन्न करता है जो पहचानने योग्य नहीं है, जिसे आप अहिंसा और अन्य सभी चीजें कहते हैं। लेकिन समस्या इस केंद्रीय तथ्य को देखने की है कि मन अपने भीतर विरोधाभास में है और किसी एक विरोध को ताकत देकर विरोधाभास को खत्म करने का प्रयास नहीं करना है।

इसलिए, जब आप देखते हैं कि मन आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है और इसके तनाव और तनाव को जानते हैं - दर्द, दुःख, पीड़ा और संघर्ष - जब आप मन की पूरी प्रक्रिया को समझते हैं, अनुभव करते हैं, समझते हैं विरोधाभास की स्थिति, तो ऐसी समग्र समझ एक बिल्कुल अलग स्थिति और एक बिल्कुल अलग गतिविधि लाती है। आख़िरकार, यदि आप केवल एक संकीर्ण खिड़की के माध्यम से पूरे, विशाल आकाश को देखते हैं, तो आपकी दृष्टि स्पष्ट रूप से विस्तृत आकाश से असंबंधित है। इसी प्रकार, आत्म-विरोधाभास से उत्पन्न कार्य बहुत सीमित होता है, जो केवल पीड़ा और दुःख को जन्म देता है।

काश मैं इसे स्पष्ट कर पाता, समग्रता की यह भावना। भारत की गुणवत्ता, पूरे विश्व की गुणवत्ता को महसूस करने के लिए - एक पारसी, हिंदू, मुस्लिम के रूप में नहीं, एक समाजवादी, कम्युनिस्ट या कांग्रेसी के रूप में नहीं, एक रूसी, अंग्रेज, जर्मन या अमेरिकी के रूप में नहीं, बल्कि समग्रता को महसूस करने के लिए मनुष्य की पीड़ा, उसकी कुंठाएं, उसके विरोधाभास, उसका दुखी, संकीर्ण अस्तित्व, उसकी आकांक्षाएं - ऐसी भावना, ऐसी धारणा मन का संपूर्ण परिवर्तन लाने के लिए है।

मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. सरकारें, समाज, हर प्रकार का दबाव और प्रचार कहता है कि आपको बदलना होगा। लेकिन परिवर्तन का निरंतर विरोध होता है और इसलिए वास्तविक और आदर्श के बीच संघर्ष होता है। वास्तविक और आदर्श विरोधाभास हैं, और हम बचपन से लेकर कब्र तक अपना जीवन इन दोनों के बीच संघर्ष करते हुए बिताते हैं, कभी किसी चीज़ के अंत तक नहीं पहुँचते,

कभी भी आसक्ति के अंत तक नहीं पहुँचते बल्कि हमेशा वैराग्य का पीछा करते रहते हैं। आसक्ति में पीड़ा होती है, और इसलिए हम वैराग्य पैदा करते हैं। तब समस्या यह उठती है कि स्वयं को कैसे अलग किया जाए, और यह एक ऐसी प्रणाली के अभ्यास में लाता है जिसके बारे में यदि आप सोचें तो यह सब बहुत मूर्खतापूर्ण है। जबकि यदि आप लगाव की पूरी प्रक्रिया और वैराग्य की पूरी प्रक्रिया को समझ सकते हैं, दोनों में क्या निहित है, तो आप कभी भी संलग्न या अलग नहीं होंगे; वहाँ एक बिल्कुल अलग स्थिति है, मन का वास्तविक परिवर्तन। आख़िरकार, आप केवल मृत चीज़ों से ही जुड़े हुए हैं क्योंकि आप किसी पूरी चीज़ से, किसी जीवित चीज़ से, जैसे जीवित पानी से नहीं जुड़ सकते हैं, क्या आप ऐसा कर सकते हैं? आप अपनी पत्नी, अपने पति की तस्वीर से जुड़े हुए हैं, और तस्वीर केवल स्मृति है। आप कुछ अनुभवों, सुखों, दुखों की स्मृति से जुड़े हुए हैं, जिसका अर्थ है कि आप अतीत से जुड़े हुए हैं, जीवित वर्तमान से नहीं, उस महिला या पुरुष से नहीं जो वर्तमान में प्रयास कर रहा है, संघर्ष कर रहा है। आसक्ति स्पष्टतः मरती हुई वस्तुओं और मृतकों से होती है; आप अपने घर से जुड़े हुए हैं; घर कोई जीवित वस्तु नहीं है, परन्तु आप अपनी सुरक्षित रहने की इच्छा से, जो मृतकों की इच्छा है, उसमें जीवन देते हैं। आसक्ति सदैव जीवितों से नहीं, वर्तमान से नहीं, बल्कि अतीत से होती है, जो मृतकों का है। और इसे समझे बिना, हम अलग होने की कोशिश कर रहे हैं, और इसका क्या मतलब है? किससे विरक्ति? जीवित वस्तु से नहीं क्योंकि तुमने उसे कभी धारण नहीं किया है; लेकिन आप उस स्मृति से, जो आप सोचते हैं उससे अलग होने का प्रयास कर रहे हैं, जो आपको पीड़ा देती है। आप मौलिक रूप से नहीं बदलते. तो आप आसक्ति और वैराग्य के बीच फंसे हुए हैं। जबकि यदि आप वास्तव में बहुत गहराई से अपने भीतर जाते हैं और पता लगाते हैं कि आपके लगाव का मूल कारण क्या है, तो आप पाएंगे कि यह स्पष्ट रूप से आरामदायक रहने, सुरक्षित रहने आदि की इच्छा है; तब आप वैराग्य के विकास की पूरी प्रक्रिया और वैराग्य के निहितार्थ को भी समझ जायेंगे। दोनों को पूरी तरह से समझ लेना ही आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया है। यदि आप अपनी स्वयं की समझ को उजागर करने के साधन के रूप में इसमें बहुत गहराई से जाते हैं, तो आप पाएंगे कि वहां बुद्धि है जो प्रतिक्रिया देगी; तब आप देखेंगे कि परिवर्तन नहीं, बल्कि रूपांतरण हो रहा है।

इस दुनिया को इसकी सभी चिंताओं, इसके युद्धों, इसके धीमे क्षय के साथ देखते हुए, निश्चित रूप से अधिकांश गंभीर लोग ईमानदारी से एक साधन ढूंढना चाहते हैं, एक ऐसा तरीका जिसके द्वारा मन एक यांत्रिक इकाई नहीं है बल्कि हमेशा नया, ताज़ा, युवा बना रहे। लेकिन अगर आप हमेशा संघर्ष में रहेंगे तो आपके पास इतना ताज़ा दिमाग नहीं हो सकता। अब तक आपने संघर्ष को जीवन का मार्ग माना है, है न, लेकिन जब आप संघर्ष के मार्ग की संपूर्ण प्रक्रिया को समझने लगेंगे, तब आप

देखें कि वास्तविक परिवर्तन हो गया है और मन अब संघर्ष के चक्र में नहीं फंसा है।

महोदय, मुझे समस्या को अलग ढंग से रखने दीजिए। सरल होना आवश्यक है, लेकिन हममें से अधिकांश के लिए सरलता केवल बाहरी चीजों में व्यक्त होती है। यदि आपके पास केवल कुछ चीजें हैं, केवल एक लंगोटी है तो आप सोचते हैं कि आप सरल, संत और सदाचारी हैं। लंगोटी मन की सरलता का प्रतीक नहीं है, न ही यह जीवन की व्यापक समृद्धि, जीवंतता, सुंदरता की समझ का द्योतक है। लेकिन आपने वह सब लंगोटी स्तर तक कम कर दिया है, और यह सरलता नहीं है। और जो मन ज्ञान से, पांडित्य से, जानकारी से बोझिल है वह साधारण मन नहीं है; इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटर अब आपको लगभग कुछ भी उद्धृत कर सकते हैं—यह महज़ एक यांत्रिक प्रतिक्रिया है। और एक मन जो लगातार टटोल रहा है, चाह रहा है, खोज रहा है, इच्छा को जला रहा है और साथ ही इच्छा भी कर रहा है, वह सरल मन नहीं है। कृपया यह सब सुनें, श्रीमानों; इसके बारे में जानें जैसे मैं बात कर रहा हूं क्योंकि यदि आप वास्तव में इसका पालन करते हैं, तो आप देखेंगे कि इससे जो निकलेगा वह सच्ची सरलता है। लेकिन सबसे पहले आपको यह देखना होगा कि सादगी क्या नहीं है, और जाहिर तौर पर वह आदमी जो कर्मकांडों में फंस गया है, लगातार दोहरा रहा है, भगवान का नाम ले रहा है और तथाकथित अच्छा कर रहा है, वह साधारण आदमी नहीं है। तो फिर सरलता क्या है? सरल मन वह मन है जो स्वयं को रूपांतरित करता है, सरल मन परिवर्तन का परिणाम है। जो मन कहता है, "मुझे सरल होना चाहिए," वह मूर्ख मन है, लेकिन वह मन जो अपने स्वयं के धोखे, अपनी चिंताओं, अपने भ्रम, आकांक्षाओं और इच्छाओं की सारी उथल-पुथल की व्यापकता से अवगत है - ऐसा मन मन सरल है. इन सबके बारे में पूरी तरह से जागरूक होने से - जैसे कोई पेड़ या स्वर्ग के बारे में जानता है - यह असाधारण सादगी आती है। मैं सरलता शब्द का उपयोग मासूमियत, स्पष्टता, एक ऐसे मन को दर्शाने के लिए कर रहा हूं जिसने खुद को त्याग दिया है। एक मन जो हिसाब-किताब कर रहा है, सदाचारी बन रहा है, एक ऐसा मन जिसे एक लक्ष्य मिल गया है जिसे वह निरंतर प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है - ऐसा मन स्वयं को नहीं त्याग रहा है। पूर्ण आत्म-परित्याग से ही सरलता आती है, और मन के भ्रमों, कल्पनाओं, मिथकों, आग्रहों और मांगों की व्यापकता के प्रति पूरी तरह से जागरूक होना ही आत्म-ज्ञान है। यह अस्तित्व की पूर्ण समझ है जैसा कि यह है और जैसा इसे होना चाहिए वैसा नहीं है। लेकिन सादगी की सुंदरता तब तक अस्तित्व में नहीं आती जब तक कि आत्म-परित्याग न हो, और परित्याग का अर्थ है, निश्चित रूप से, सभी कंडीशनिंग का दूर हो जाना, जैसे एक मृत पत्ता पेड़ से गिर जाता है; और यदि आप भावुक नहीं हैं तो आप किसी चीज़ के लिए मर नहीं सकते।

मरने का अर्थ है एक ऐसे बिंदु या अवस्था में आने का एहसास जिसके आगे कुछ भी नहीं है; मन की एक ऐसी स्थिति जिसमें, सभी धूर्त चालों और अटकलों के साथ, आप जो चाहें कर लें, आप आगे नहीं बढ़ सकते। वहां उस अवस्था में

न तो निराशा है और न ही आशा, और खोज का पूरा प्रश्न ही समाप्त हो गया है। समग्र मृत्यु अस्तित्व में आ गई है; और यदि आप पूरी तरह से अतीत के प्रति नहीं मरते, तो आप कैसे सीख सकते हैं? श्रीमानों, यदि आप हमेशा बीते हुए कल का बोझ ढोते रहेंगे तो आप कैसे सीख सकते हैं?

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी अपने अंदर यह जिज्ञासा की है कि बीते हुए कल, हज़ारों कलों, हज़ारों अनुभवों और प्रतिक्रियाओं तथा बेचैन समय की उथल-पुथल से कैसे मुक्त हुआ जाए? इन सब से कैसे मुक्त हुआ जाए ताकि मन असाधारण रूप से शांत, सरल, निर्दोष हो जाए? ऐसी स्थिति केवल तभी संभव है जब आप अपने अस्तित्व की समग्रता को समझते हैं - आप क्या करते हैं, आप क्या सोचते हैं, आप अपनी दैनिक गतिविधियों, अपनी नौकरी में कैसे लीन रहते हैं, आप अपनी पत्नी, अपने पति से कैसे बात करते हैं, किस तरह से व्यवहार करते हैं आपके तथाकथित हीन, जिस तरह से आप अपने बच्चों को शिक्षित करते हैं, इत्यादि। यदि आप उस सब में अपने दृष्टिकोण को केवल एक अस्थायी प्रतिक्रिया मानते हैं, कुछ ऐसा जिसे दूर किया जा सकता है, समायोजित किया जा सकता है, तो आपने जीवन की समग्रता को नहीं समझा है। और मैं कहता हूं कि स्वयं की समग्रता की समझ में, एक परिवर्तन होता है जो तत्काल होता है और जिसका समय की बेचैनी से कोई लेना-देना नहीं होता है। आपको जांच में समय लग सकता है, लेकिन परिवर्तन तत्काल होता है। समय और परिवर्तन की प्रक्रिया को भ्रमित न करें। समय इस अर्थ में है कि मैं जो कह रहा हूं और जो आप सुन रहे हैं, उसके बीच एक फासला है। शब्द के कंपन को आपके कान तक पहुंचने में समय लगता है, और तंत्रिका प्रतिक्रिया के साथ-साथ मस्तिष्क प्रतिक्रिया में एक सेकंड का समय लगता है। हालाँकि इसे आपके मस्तिष्क तक पहुँचने में समय लग सकता है, एक बार जब आप जो कहा जा रहा है वह सब समझ जाते हैं, तो अतीत से पूर्ण विराम हो जाता है।

क्रांति बाहर से नहीं बल्कि भीतर से होती है और वह क्रांति कोई क्रमिक प्रक्रिया नहीं है, कोई समय की बात नहीं है।

इसलिए व्यक्ति का परिवर्तन तभी हो सकता है जब मन के तरीकों की पूरी समझ हो, जो कि ध्यान है। स्वयं को समझना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कोई निंदा नहीं है, कोई औचित्य नहीं है, बल्कि केवल यह देखना है कि आप क्या हैं, बिना निर्णय किए, बिना जाँच, नियंत्रण या समायोजन किए केवल अवलोकन करना। बिना किसी मूल्यांकन के, कोई क्या है, इसकी धारणा मन को असाधारण गहराई तक ले जाती है, और केवल उस गहराई पर ही परिवर्तन होता है; और स्वाभाविक रूप से समझ की उस गहराई से की गई कार्रवाई समायोजन की कार्रवाई से बिल्कुल अलग है।

इसलिए मुझे आशा है कि आपने, एक व्यक्ति के रूप में, इन वार्ताओं को न केवल जानकारी इकट्ठा करने, बौद्धिक रूप से प्रसन्न होने, उत्साहित होने या भावनात्मक रूप से उत्तेजित होने के लिए सुना है, बल्कि इस प्रक्रिया में अपने बारे में सीखा है और इसलिए खुद को मुक्त किया है। क्योंकि इन वार्ताओं की शुरुआत से लेकर अब तक, हम रहे हैं

मन की वास्तविक, रोजमर्रा की स्थिति के बारे में बात करते हुए, और यदि आप इसकी उपेक्षा करते हैं और कहते हैं कि आप केवल भगवान में रुचि रखते हैं, मृत्यु के बाद क्या होता है, तो आप पाएंगे कि आपका भगवान और आपकी "मृत्यु के बाद" केवल अटकलों का एक सेट है ऐसे विचार जिनकी कोई वैधता नहीं है। यह जानने के लिए कि ईश्वर क्या है, यदि ईश्वर है, तो आपको उसके पास पूर्ण अस्तित्व के साथ आना चाहिए, ताजगी के साथ, न कि उस मन के साथ जो सड़ चुका है, अपने अनुभवों से बोझिल है, अनुशासन से टूटा हुआ है और कम हो गया है, और इच्छाओं से जल गया है . एक मन जो वास्तव में भावुक है - और जुनून का तात्पर्य तीव्रता और परिपूर्णता से है - केवल ऐसा मन ही वह प्राप्त कर सकता है जो अथाह है। उस अथाह को तब तक नहीं पाया जा सकता जब तक कि आप अपने भीतर और अधिक गहराई तक न जाएँ। आपकी यह पुनरावृत्ति कि शाश्वत है, बच्चों की बात है, और आपकी शाश्वत की खोज का भी कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि यह मन के लिए अज्ञात, अकल्पनीय है। मन को स्वयं को समझना होगा, अपनी शिक्षा की नींव, अपनी पहचान की सीमाओं को तोड़ना होगा, और यही आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया है। अब आपको आंतरिक क्रांति की जरूरत है, जीवन के प्रति बिल्कुल नए दृष्टिकोण की, न कि नई प्रणालियों, नए स्कूलों, नए दर्शन की। फिर, इस परिवर्तन से, आप देखेंगे कि मन, समय के रूप में, समाप्त हो जाता है। आख़िरकार, समय उस समुद्र के समान है जो कभी स्थिर नहीं होता, कभी शांत नहीं होता, सदैव गतिशील रहता है, सदैव बेचैन रहता है, और हमारा मन, समय के आधार पर, उसकी गति में फंस जाता है।

तो, केवल जब आप स्वयं को, चेतन के साथ-साथ अचेतन को, पूरी तरह से समझ लेते हैं, केवल तभी एक शांति, एक गतिहीनता होती है जो सृजन है। और वह शांति ही क्रिया है, सच्ची क्रिया है। केवल, हम इसे कभी नहीं छूते, हम इसे कभी नहीं जानते क्योंकि हम अपनी ऊर्जा, अपना समय, अपना दुःख, अपना प्रयास सतही चीज़ों पर बर्बाद कर रहे हैं।

तो सबसे ईमानदार व्यक्ति वह है जो आत्म-ज्ञान के माध्यम से समय की दीवारों को तोड़ देता है और मन की गतिहीन स्थिति लाता है। तब एक आशीर्वाद है जो बिना निमंत्रण के अस्तित्व में आता है; तब एक वास्तविकता है, एक अच्छाई जो आपके मांगे बिना आती है। यदि तुम उसकी लालसा करोगे तो तुम्हें वह नहीं मिलेगा, यदि तुम उसे खोजोगे तो तुम्हें वह नहीं मिलेगा। यह केवल तभी होता है जब मन स्वयं को पूरी तरह से समझ लेता है, व्यापक रूप से स्वयं को समझ लेता है ताकि वह बिना किसी बाधा के हो जाए और जो कुछ भी उसने जाना है उसके प्रति वह मर जाए - केवल तभी वास्तविकता अस्तित्व में आती है।

28 दिसंबर, 1958

नई दिल्ली, भारत, 1959

पहली बातचीत नई दिल्ली में

मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण लगता है कि हमें सबसे पहले अपने बीच सही संचार और समझ स्थापित करनी चाहिए। हममें से अधिकांश के लिए, संचार केवल सचेतन, मौखिक या बौद्धिक स्तर पर होता है, और जब संचार उस स्तर तक सीमित हो तो किसी भी चीज़ को समझना वास्तव में बहुत मुश्किल होता है। मैं सोचता हूं कि साम्य का एक ऐसा रूप है जो न केवल चेतन बल्कि अचेतन स्तर को भी समझता है, और उससे भी आगे, उससे आगे तक जाता है; और मुझे ऐसा लगता है कि वास्तविक संचार या साम्य तभी है, जब इन तीनों के बीच पूर्ण सामंजस्य हो।

शब्दों के महत्व की सचेतन या मौखिक समझ के पीछे एक अचेतन समझ होती है जो केवल मौखिक नहीं होती; और साम्य का एक रूप भी है जो इन सब से परे है और जिसमें संचार के साधन के रूप में कोई प्रतीक, कोई शब्द या वाक्यांश नहीं हैं। इन तीनों का संपूर्ण एकीकरण ही किसी भी चीज़ की संपूर्ण समझ को संभव बनाता है, है न? इसे अलग ढंग से कहें तो, मैं किसी चीज़ को पूरी तरह से, पूरी तरह से, पूरी तरह से तभी समझ सकता हूं, जब मैं अपने पूरे अस्तित्व के साथ सोचता हूं, जिसमें चेतन, अचेतन और एक ऐसी स्थिति शामिल है जो दोनों से परे है और शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती है। जब यह संपूर्ण समझ, यह संपूर्ण दृष्टिकोण होता है, तो निश्चित रूप से दो मनुष्यों के बीच पूर्ण सामंजस्य होता है।

मैं समझता हूं कि हमारे बीच साम्य की इस स्थिति को स्थापित करना बहुत महत्वपूर्ण है। लेकिन कठिनाई यह है कि हममें से अधिकांश लोग केवल मौखिक या बौद्धिक रूप से जो सुविधाजनक है उसे स्वीकार करते हैं, और जो सुविधाजनक नहीं है उसे अस्वीकार करते हैं, और उस स्तर पर हम विवाद करते हैं। हममें से अधिकांश लोग यही करते हैं। लेकिन गहराई तक जाने के लिए, मौखिक स्तर से परे, शब्दों और प्रतीकों के स्तर से परे, बहुत अधिक ध्यान, बहुत अधिक अंतर्दृष्टि, अधिक गुणवत्ता वाली जागरूकता की आवश्यकता होती है। और मुझे ऐसा लगता है कि अगर हम केवल मौखिक स्तर पर समझें और संवाद करें, तो ये बातचीत होगी

बहुत कम अर्थ रखते हैं. कुछ विचारों के बारे में बात करना और बहस करना बहुत आसान है, लेकिन हम विचारों से निपट नहीं रहे हैं। विचार वास्तव में मन की गुणवत्ता में कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं लाते हैं। विचार हमें प्रभावित करते हैं, वे मन को एक निश्चित गतिविधि देते हैं, लेकिन मौलिक रूप से, गहराई से, वे मन की गुणवत्ता को नहीं बदलते हैं; और यह निश्चित रूप से बहुत महत्वपूर्ण है कि ऐसा परिवर्तन हो - मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन। क्योंकि केवल मन की गुणवत्ता में क्रांति लाकर ही हम अपनी कई समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

मुझे उम्मीद है कि अब हम एक-दूसरे को समझेंगे। कोई शिक्षक नहीं है जिसके पास कुछ सिखाया जाए। मुझे लगता है कि हमें इस बिंदु पर बहुत स्पष्ट होना चाहिए - कि वक्ता शिक्षक नहीं है, न ही आप शिष्य हैं। यदि आप अपने आप को एक शिष्य की स्थिति में रखते हैं, एक ऐसे व्यक्ति की स्थिति में जो स्वीकार करता है या अस्वीकार करता है, जो कुछ समस्याओं को हल करने के लिए एक विशेष समझ चाहता है, तो मुझे डर है कि आप निराश होंगे। आपके और वक्ता के बीच सच्चा रिश्ता समझ का है; यह एक ऐसा रिश्ता है जिसमें हम दोनों सीख रहे हैं, और यदि आप केवल पवित्र, धार्मिक दृष्टिकोण के साथ कही गई बातों को स्वीकार या अस्वीकार करते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से सीखना बंद कर देते हैं, और इसलिए हमारे बीच संचार असंभव है। हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह निश्चित रूप से, जीवन की मुख्य समस्याओं को समझना है - उनमें जाना, उनके बारे में सीखना, और हर चीज़ के संबंध में मन की सभी प्रतिक्रियाओं को देखना। यदि हम सीधे तौर पर अपने बारे में नहीं सीखते हैं और केवल निर्देश पाने के लिए उत्सुक रहते हैं, तो निर्देश सीखने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि केवल ज्ञान का संचय है, जो हमारी समस्याओं का समाधान नहीं करता है। जो हमारी समस्याओं को मूल रूप से और मौलिक रूप से हल करता है वह एक ऐसा दिमाग है जो पूछताछ करने, खोजने और सीखने में सक्षम है। जब आप और मैं दो इंसानों के रूप में एक साथ बातें करते हैं, पूछताछ करते हैं, खोज करते हैं, तो हमारा रिश्ता पूरी तरह से अलग होता है। तब तुम स्वीकार या अस्वीकार नहीं करते; तब वक्ता किसी आसन पर नहीं है और आप नीचे नहीं हैं, और हम दोनों सीख रहे हैं।

सीखने में सक्षम होने के लिए, मन को स्पष्ट रूप से वह सब कुछ अलग रखना होगा जो उसने सीखा है, जो असाधारण रूप से कठिन है। सीखने के लिए, मन को स्वतंत्रता की स्थिति में होना चाहिए। हम स्वतंत्रता की स्थिति में होते हैं जब हम जानना चाहते हैं, जब हम जानना चाहते हैं, जब हम कुछ समझना या खोजना चाहते हैं; लेकिन वह स्वतंत्रता उस क्षण नष्ट हो जाती है जब हम जो खोजते हैं उसकी व्याख्या अपनी कंडीशनिंग के संदर्भ में, अपनी स्थापित नैतिकता, अपने पर्यावरणीय प्रभावों आदि के संदर्भ में करना शुरू करते हैं।

तो, क्या मैं बता सकता हूं कि ये बातचीत पूरी तरह से बेकार होगी यदि हम शुरू से ही आपके और मेरे बीच सही संबंध स्थापित नहीं करते हैं।

आख़िरकार, जो महत्वपूर्ण है वह समाज नहीं बल्कि वह व्यक्ति है जो समाज का निर्माण करता है, वह व्यक्ति जो सोचता है, जो महसूस करता है, जो पीड़ित है, जो जांच कर रहा है, सवाल कर रहा है, पूछ रहा है। तो आप और मैं व्यक्ति के रूप में पूछताछ कर रहे हैं, और पूछताछ की इस प्रक्रिया के माध्यम से, हम सीखेंगे।

लेकिन जब सीखने का संचय हो जाता है तो सीखना बंद हो जाता है। और वास्तव में ऐसी स्थिति में रहना सबसे कठिन बात है जब मन सीख रहा हो क्योंकि यह पूर्ण विनम्रता की भावना की मांग करता है, है न? यदि कोई किसी चीज़ को गहराई से, आंतरिक रूप से जानना चाहता है, तो जानने की इच्छा के लिए एक ऐसे मन की आवश्यकता होती है जो वास्तव में विनम्र हो; लेकिन हम विनम्र नहीं हैं, और यही हमारी कठिनाई है।

सीखने के लिए विनम्रता आवश्यक है। लेकिन विनम्रता पैदा नहीं की जानी चाहिए। जिस क्षण आप विनम्रता विकसित करते हैं, आप अहंकार का क्षेत्र विकसित कर रहे हैं, और वह क्षेत्र जो विनम्रता पैदा करता है वह झूठी है। लेकिन अगर हम वास्तव में पूछताछ करना, जांच करना, प्रश्न पूछना शुरू करते हैं, तो विनम्रता होती है क्योंकि पूछताछ की उस स्थिति में मन कुछ भी नहीं मानता है; यह किसी अधिकार को स्वीकार नहीं करता, इसकी कोई परंपरा नहीं है और यह ज्ञान से बंधा नहीं है।

निश्चित रूप से एक मन जो विनम्र होता है उसके पास ज्ञान के अधिग्रहण के माध्यम से स्वयं में कोई अधिकार नहीं होता है, न ही वह शिक्षक के बाहरी अधिकार को स्वीकार करता है। सीखने की प्रक्रिया के लिए विनम्रता की यह गहरी भावना आवश्यक है।
वास्तव में विनम्र मन सीखने, अनुभव, पवित्र पुस्तकों के ज्ञान से बोझिल नहीं होता है। जो आदमी हमेशा उद्धरण देता रहता है वह विनम्र नहीं है। जो आदमी बहुत पढ़ा-लिखा है और जिसका बोझ ज्ञान है, उसमें विनम्रता का भाव नहीं है।

इसलिए यह मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि शुरुआत से ही हम, आपके और मेरे बीच एक ऐसा रिश्ता स्थापित करें जिसमें आप किसी अन्य द्वारा निर्देशित होने या अपनी समस्याओं के समाधान की उम्मीद नहीं करना चाहते हैं।
किसी भी समस्या का समस्या के अलावा कोई समाधान नहीं है, और यह अच्छा होगा यदि हम इसे गहराई से, मौलिक रूप से समझ सकें।
कोई समाधान नहीं हैं; केवल समस्याएँ हैं, और प्रत्येक समस्या का समाधान समस्या में ही निहित है। इतना तो आपको और मुझे शुरू से ही समझना चाहिए। हमारे अस्तित्व के सभी स्तरों पर असंख्य समस्याएं हैं - सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, नैतिक, यौन। यहाँ मृत्यु की समस्या है, समस्या यह है कि क्या सत्य है, समस्या यह है कि क्या ईश्वर है, और समस्या यह है कि जीवन का यह पूरा कारोबार किस बारे में है। समस्या होने पर हम हमेशा समाधान की तलाश में रहते हैं, यानी हमारा ध्यान समस्या पर नहीं, बल्कि समस्या से हटकर समाधान की तलाश में रहता है। यदि आप और मैं यह एक बात आसानी से समझ सकें कि समस्या का समाधान समस्या में ही निहित है, तो हम समस्या पर अत्यधिक ध्यान देंगे।

कृपया जो कहा जा रहा है उस पर अपना ध्यान दें। मैं जानता हूं कि आपके पास हर तरह की समस्याएं हैं क्योंकि जो कुछ भी मानव मन-हृदय को छूता है, वह एक समस्या बन जाता है - जो एक भयानक बात है। समस्याएँ उत्पन्न करने के बाद, हम समाधान चाहते हैं, इसलिए हम सदैव उनकी खोज में लगे रहते हैं। हम एक करियर से दूसरे करियर, एक शिक्षक से दूसरे शिक्षक, एक धर्म से दूसरे धर्म की ओर तब तक जाते हैं जब तक हमें वह नहीं मिल जाता जिसे हम समाधान मानते हैं - और वह हमारा अभिशाप बन जाता है क्योंकि यह बिल्कुल भी समाधान नहीं है। यह एक धोखा है, और इसलिए समस्याएं बढ़ जाती हैं।

अब, आप और मैं मिलकर समस्याओं को उजागर करने जा रहे हैं, उन्हें समझ रहे हैं, लेकिन यह तभी संभव है जब हमारे बीच संवाद हो, न केवल मौखिक स्तर पर, बल्कि अचेतन स्तर पर भी, जो असाधारण रूप से महत्वपूर्ण है। क्योंकि कोई भी मूलभूत परिवर्तन, निश्चित रूप से, निर्णय के माध्यम से नहीं, बल्कि तभी आता है जब समस्या के पूर्ण महत्व की गहरी समझ होती है - जो कि निर्णय का विषय नहीं है।

इन वार्ताओं के दौरान हम जो करने का इरादा रखते हैं वह दो व्यक्तियों के रूप में एक-दूसरे के साथ सही संचार स्थापित करना है, और फिर हमारी कई समस्याओं को उजागर करने के लिए आगे बढ़ना है। एक व्यक्ति के रूप में किसी की समस्याओं को समझने में, मन स्वतंत्र होगा क्योंकि व्यक्ति मन की समग्रता है - चेतन, अचेतन और परे अछूता क्षेत्र।

आख़िरकार, आपका दिमाग जो कुछ उसने सीखा है, उससे बना है, कुछ आधुनिक तकनीकों से जो आपको जीवित रहने में मदद करती हैं, और अचेतन में, अतीत के, परंपरा के, असंख्य प्रभावों, छापों, मजबूरियों के अवशेष भी हैं। भय. इन सबके अलावा सचेतन आग्रह, महत्वाकांक्षाएं, कुंठाएं और परस्पर विरोधी इच्छाएं भी हैं जो आत्म-विरोधाभास की व्यापक खाई पैदा करती हैं।

इसलिए व्यक्ति का परिवर्तन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि आप जो हैं, वही संसार है। एक व्यक्ति के रूप में आपको अपने अंदर आमूल-चूल परिवर्तन लाना होगा, क्योंकि आप क्या सोचते हैं, आपकी गतिविधि और रिश्ते का तरीका, आपकी महत्वाकांक्षाएं, आपकी निराशाएं, आपके दुख - ये सब आपके बारे में दुनिया का निर्माण करते हैं; और जब तक मन की गुणवत्ता में परिवर्तन नहीं होता, केवल परिधि पर छेड़छाड़, जिसे क्रांति कहा जाता है, चाहे साम्यवादी हो या कोई अन्य, कभी भी मौलिक परिवर्तन नहीं लाएगी। व्यक्ति स्वयं को किसी विशेष वातावरण में समायोजित कर सकता है; वह साम्यवादी, समाजवादी, पूंजीवादी या कुछ भी बन सकता है, लेकिन अंदर से, गहराई से, वह अभी भी वैसा ही रहेगा। इसीलिए हमें मूल रूप से व्यक्ति के परिवर्तन की चिंता करनी चाहिए। लेकिन इसके लिए बहुत अधिक ध्यान देने की, बहुत अधिक पैठ बनाने की आवश्यकता है,

अंतर्दृष्टि; इसका मतलब यह है कि मन को लगातार गहरी होती जांच में परंपरा से परे जाना चाहिए, जो आत्म-ज्ञान में गहराई तक जाना है; और चूँकि इसके लिए अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, हम पवित्र पुस्तकों को उद्धृत करना पसंद करते हैं, या किसी गुरु के पास जाना पसंद करते हैं, या किसी तथाकथित धार्मिक समाज से संबंध रखते हैं, यह सोचते हुए कि यह सब मन को मुक्त करने वाला है, लेकिन यह केवल हमारे दुख को कायम रख रहा है।

मुझे ऐसा लगता है कि हमें सीखने की प्रक्रिया के बारे में चिंतित होना चाहिए, और हम तभी सीख सकते हैं जब हम कल की सभी चीज़ों के प्रति मर जाएँ। यह केवल नया, ताज़ा दिमाग ही है जो सीखता है, वह दिमाग नहीं जो अतीत के संचय के बोझ से दबा हुआ है। तो हमारी समस्या खुद को समझने की है.

स्वयं को समझे बिना यह समझने की कोई संभावना नहीं है कि क्या सत्य है और क्या असत्य है, या यह पता लगाने की कि क्या कुछ शाश्वत, अथाह है। जब तक स्वयं के बारे में पूर्ण समझ न हो, जीवन बिना किसी अर्थ के एक निरंतर प्रवाह मात्र है। इसलिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है।

मैं जानता हूं कि आप सभी इस कथन पर अपना सिर हिलाएंगे कि आपको स्वयं को अवश्य जानना चाहिए, क्योंकि इसे सदियों से बार-बार दोहराया जाता रहा है, लेकिन वास्तव में स्वयं के अंदर जाने और मन की संपूर्ण संरचना का निरीक्षण करने के लिए प्रत्येक विचार और प्रत्येक से अत्यधिक अलगाव की आवश्यकता होती है। अनुभूति। क्योंकि, आख़िरकार, विचार और भावनाएँ मन की प्रतिक्रियाएँ हैं, और खुद को जानने के लिए मुझे बिना किसी निंदा या आलोचना के, सभी चीजों के संबंध में अपनी प्रतिक्रियाओं के बारे में पता होना चाहिए। मुझे लोगों, संपत्ति, विचारों के प्रति अपनी प्रतिक्रियाएँ - अचेतन और चेतन - अवश्य देखनी चाहिए; अन्यथा, मैं स्वयं को नहीं जानता।

मुझे इन प्रतिक्रियाओं को हल्के में नहीं लेना चाहिए, या इन्हें केवल मौखिक, बौद्धिक रूप से स्वीकार नहीं करना चाहिए, बल्कि वास्तव में हर प्रतिक्रिया के प्रति जागरूक रहना चाहिए; और इस पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी न केवल अपनी प्रतिक्रियाओं के बारे में, बल्कि उनके पीछे के कारणों के बारे में भी जागरूक होने की कोशिश की है - जो आत्मनिरीक्षण नहीं है, क्योंकि इसका स्वयं से कोई लेना-देना नहीं है। बल्कि यह स्वयं को उजागर करना है, पूछताछ के माध्यम से स्वयं की संपूर्ण संरचना का प्रत्यक्ष अनुभव करना है। अपने अंदर जांच करने का कोई अधिकार नहीं हो सकता; कोई मनोवैज्ञानिक, कोई गुरु आपको नहीं सिखा सकता। मन की असाधारण सूक्ष्मताओं, उसके अंतर्विरोधों, उसके आग्रहों, उसकी महत्वाकांक्षाओं, निराशाओं और दुखों को जानने के लिए - यह सब जानने के लिए, आप जो देखते हैं उसके प्रति निंदा या निर्णय की कोई भावना नहीं होनी चाहिए। केवल अवलोकन होना चाहिए, जो असाधारण रूप से कठिन है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी सचमुच कुछ देखा है - एक मक्खी या एक तस्वीर या सूर्यास्त या एक पत्ते की सुंदरता या शांत रात में चांदनी पानी। शायद आपने वास्तव में इन चीज़ों को कभी महसूस नहीं किया होगा। हममें से अधिकांश के पास ऐसा नहीं है क्योंकि जैसे ही हम कुछ देखते हैं, हम तुरंत उसे एक नाम दे देते हैं, उसे ढक देते हैं

एक प्रतीक, हम जो जानते हैं उसके संदर्भ में इसका अनुवाद करें - जो सभी विकर्षण हैं जो प्रत्यक्ष धारणा को रोकते हैं। किसी चीज़ को बिना नाम लिए देखना, उसका समग्रता से निरीक्षण करना, तभी संभव है जब कोई तुलना न हो, यानी जब मन वास्तव में शांत हो, उसकी धारणा में मौन हो।

स्वयं के बारे में जानने के लिए ऐसा मन आवश्यक है - ऐसा मन जो बिना व्याख्या किये, बिना निंदा किये, बिना औचित्य दिये देखने में सक्षम हो। इसे कभी आज़माएं, और आपको पता चलेगा कि यह कितना असाधारण रूप से कठिन, कितना कठिन काम है। हमारी परंपरा, हमारी शिक्षा, हमारे सभी नैतिक और धार्मिक प्रशिक्षण ने हमें निंदा करने, उचित ठहराने, पर्दा डालने, घुसपैठ न करने के लिए तैयार किया है। पैठ, गहरी अंतर्दृष्टि तभी हो सकती है, जब आपका दिमाग मूल्यांकन की किसी भी प्रक्रिया से विचलित हुए बिना अवलोकन करने में सक्षम हो, और जब तक आप अपनी सोच का स्रोत नहीं जानते, आपके पास सोचने का कोई आधार नहीं है। तब आप महज एक मशीन हैं, जो कुछ विचारों, पूर्वनिर्धारित विचारों को दोहरा रही है।

तो, अपने आप में गहराई से प्रवेश करना आत्मनिरीक्षण नहीं है; यह आत्म-केन्द्रित गतिविधि को ताकत नहीं देता है बल्कि वह दरवाजा खोलना शुरू कर देता है जिसके माध्यम से आप अपने मन की पूरी प्रक्रिया को समझने में सक्षम होंगे। और यदि आप इसमें बहुत गहराई से जाते हैं, समझने की प्रक्रिया में आपने जो कुछ भी खोजा है, उसके प्रति समर्पित होकर, आप पाएंगे कि अनजाने में, बिना किसी दबाव या अनुशासन के, मन शांति की स्थिति, सतर्कता की स्थिति में आ जाता है; और तभी एक क्रांतिकारी क्रांति घटित होती है।

इन सभी वार्ताओं में आप और मैं मन के तरीकों की खोज करने जा रहे हैं; हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि इसे कैसे अनुकूलित किया जाता है, एक हिंदू या मुस्लिम, एक पारसी या एक ईसाई, एक कम्युनिस्ट या एक समाजवादी के रूप में आकार दिया जाता है, और देखें कि यह कैसे कुछ मान्यताओं, कुछ विचारों या आकांक्षाओं पर कायम रहता है। हम उस सब के बारे में जानने जा रहे हैं ताकि हमारा दिमाग प्रत्यक्ष धारणा के माध्यम से मुक्त हो जाए, और फिर हमारा समाज के साथ एक बिल्कुल अलग रिश्ता होगा। हम अलगाव में मौजूद नहीं रह सकते हैं, और केवल रिश्ते में ही हमें पता चलता है कि क्या है

हम हैं।

हमारे पास इतनी सारी समस्याएँ हैं कि हमारा जीवन उनसे भरा हुआ है। हम जीवन को केवल एक समस्या के रूप में जानते हैं, और हम कभी भी जीवन को समग्र रूप से नहीं देखते हैं - यह मन की असाधारण विशालता है जिसमें कोई बाधा नहीं है, जो अनुभव के बंधन में नहीं है।
हम मन के उस गुण को नहीं जानते जो असीमित है, शाश्वत है। इसीलिए हममें से प्रत्येक के लिए यह सीखना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे सुनना है।

अब, सुनना बहुत कठिन काम है। हममें से ज्यादातर लोग कभी नहीं सुनते। हम सुनते तो हैं, पर सुनते नहीं। निश्चित रूप से, सुनने का अर्थ कोई व्याख्या नहीं है। अगर मैं कुछ कहता हूं, तो आप सुन सकते हैं, लेकिन जैसे ही आप व्याख्या करते हैं, आप सुनना बंद कर देते हैं

आप अपनी पृष्ठभूमि के अनुसार क्या सुनते हैं। जबकि, यदि कोई व्याख्या नहीं है, कोई मूल्यांकन नहीं है, बल्कि अपने पूरे अस्तित्व के साथ वास्तविक श्रवण है, तो आप पाएंगे कि सुनने की उस क्रिया में एक दर्पण है जिसमें आप स्वयं देखते हैं कि क्या सच है और क्या झूठ है - और वह सुनने की खूबसूरती है.

जिस प्रकार आपने कभी किसी चीज़ को नहीं देखा है - एक फूल को, एक तारे को, पानी पर प्रतिबिंब को - अपने पूरे अस्तित्व के साथ, उसी तरह आपने शायद कभी भी अपने पूरे अस्तित्व के साथ कुछ भी नहीं सुना है। अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ सुनने का अर्थ है अपने चेतन मन, अपने अचेतन मन और अपने शरीर के साथ सुनना - यानी अपनी सभी इंद्रियों को पूरी तरह से जागृत करके सुनना। केवल जब आप इस तरीके से सुनते हैं तो आप यह पहचानने में सक्षम होते हैं कि क्या सच है और क्या झूठ है। मन को बस यही चाहिए, है ना? - अपने आप में और अपने बारे में क्या सच है यह देखने की क्षमता।

जो सच है उसे समझने के लिए, उस चीज़ के प्रति अपना संपूर्ण समर्पण होना चाहिए। यदि संगीत सुनने में आप पूरा ध्यान देने में सक्षम हैं, तो संगीत का अर्थ बिल्कुल अलग होता है। यदि आप किसी समस्या के प्रति अपना संपूर्ण अस्तित्व देने में सक्षम हैं, तो समस्या नहीं है। समस्या तभी होती है जब हमारे भीतर विरोधाभास होता है। इस आंतरिक विरोधाभास को केवल आत्म-ज्ञान के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है, और स्वयं को केवल एक या अनेक के साथ संबंध में ही प्रकट किया जा सकता है।

यह सब, निश्चित रूप से, एक जबरदस्त सतर्कता की मांग करता है, और हमारे आसपास की हर चीज़ हमें सुला देती है। दवाओं में से एक जो हमें सुला देती है वह जाहिर तौर पर ज्ञान है। जो मन जानता है वह कभी नहीं सीख सकता। एक और औषधि है परंपरा - न केवल सदियों की परंपरा, बल्कि कल की परंपरा, वह परंपरा जो कहती है, "मुझे पता है; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं; मैं जानता हूं।" मैंने अनुभव किया है।" ज्ञान, परंपरा और व्यक्ति द्वारा प्राप्त अनुभव, अच्छे और बुरे, हर्षित और दुखद - ये सभी मन को सुलाने में योगदान करते हैं। और यह केवल सतर्क मन है, वह मन जो लगातार सवाल कर रहा है, पूछ रहा है, खुद को और अपनी सभी गतिविधियों को देख रहा है - केवल ऐसा मन ही खोज सकता है कि क्या सच है।

सत्य विश्वास की मांग नहीं करता, सत्य अनुभव का परिणाम नहीं है, सत्य वह है जिसे आप सीधे अनुभव करते हैं; लेकिन यह तभी संभव है जब मन निर्दोष हो, हजारों समस्याओं से बोझिल न हो। उन सबके प्रति मरना ही ज्ञान की शुरुआत है।

इन वार्ताओं में आप और मैं जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह है स्वयं में झाँकना और अपनी चेतना की कई परतों को उजागर करना। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं और केवल शब्दों की एक श्रृंखला सुनते हैं, तो आप पाएंगे कि इन वार्ताओं का बहुत कम अर्थ होगा, और आपका यहां आना एक निरर्थक बात होगी। पर अगर तुम

जो कहा जा रहा है उसका पालन करें और अपने मन के अवलोकन के माध्यम से सीधे अनुभव करें, फिर हम एक साथ बहुत दूर तक जा सकते हैं। अपने भीतर गहराई से प्रवेश करने पर, आप पाएंगे कि मन पूरी तरह से गतिहीन, सहज रूप से स्थिर और मुक्त हो जाता है। वैराग्य की वह अवस्था किसी अनुशासन का परिणाम नहीं है; इसे किसी भी योगाभ्यास के माध्यम से नहीं लाया जा सकता है। यह स्वयं को समझने का परिणाम है। जीवन की समग्रता को समझने के लिए ऐसा मन आवश्यक है। ऐसा मन ही पता लगा सकता है कि सत्य क्या है, क्या ईश्वर है।

हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी रूप में दुख, उथल-पुथल, परेशानी में फंसे हुए हैं, और हम इसे केवल स्वयं को समझने के माध्यम से हल कर सकते हैं - "स्वयं" चेतन और अचेतन होने के नाते। जितना अधिक आप स्वयं को समझेंगे, आप मन को उतना ही अधिक सूक्ष्म और सुंदर पाएंगे, और स्वयं को समझे बिना कोई वास्तविकता नहीं है। आप पवित्र पुस्तकों का उद्धरण दे सकते हैं और ईश्वर में अपने विश्वास की पुष्टि कर सकते हैं, लेकिन ये सब केवल बिना किसी अर्थ के शब्द हैं।

जो आवश्यक है वह है आत्म-ज्ञान। स्वयं को जानने का अर्थ आत्मा, परा-स्व और उस सभी व्यवसाय के बारे में बात करना नहीं है, जो कि केवल मन का आविष्कार है। स्वयं को जानने का अर्थ उस मन को जानना है जो सुपर-स्व का आविष्कार करता है, जो सुरक्षा चाहता है, जो सदैव स्थिर, अबाधित, आश्वस्त होना चाहता है। प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से यह सब जानने से मन में सहज शांति आती है। और यह केवल शांत मन है, वह मन जो शांत है, गतिहीन है - केवल ऐसा मन ही है जो पूरी तरह से जीवित होने की जबरदस्त गतिविधि को जानता है।

8 फ़रवरी 1959

दूसरी वार्ता नई दिल्ली में

यदि संभव हो तो मैं आपसे कार्रवाई की समस्या पर बात करना चाहूंगा। कार्रवाई से हमारा आम तौर पर मतलब है कि हम दी गई परिस्थितियों में क्या करते हैं या सोचते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, सवाल यह है कि क्या करना सही है और क्या कोई विशेष कार्रवाई उचित है या नहीं। हमारी अधिकांश सोच इस बात से जुड़ी होती है कि क्या करें। राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में, हमारे व्यक्तिगत संबंधों में और दुनिया भर में, हम सभी मुख्य रूप से इस बात से चिंतित हैं कि सही कार्रवाई क्या है। और यदि संभव हो तो मैं आपसे इस विषय पर बात करना चाहूँगा कि कौन सा कार्य सही है और क्या गलत है, बल्कि कार्य की समग्रता के बारे में बात करूँ, क्योंकि यदि हम उस कार्य की अनुभूति प्राप्त कर सकें जो पूर्ण है, तो वह स्वयं नहीं है- विरोधाभासी, फिर

शायद हम किसी विशेष क्रिया के माध्यम से अपना रास्ता जान पाएंगे या महसूस कर पाएंगे।

लेकिन मुझे लगता है कि किसी चीज़ की समग्रता का एहसास पाना बहुत मुश्किल है। आख़िरकार, एक पेड़ का एहसास पाने के लिए, केवल एक पत्ती या एक शाखा या तने की जांच करना अच्छा नहीं है। वृक्ष एक समग्रता है, जो छिपा हुआ है और जो दिखाया गया है वह भी, और एक फैले हुए वृक्ष की सुंदरता, सुंदरता को समझने के लिए, किसी को उसकी समग्रता का एहसास होना चाहिए।

उसी तरह, मैं सोचता हूं कि व्यक्ति को यह भावना, संपूर्ण कार्रवाई की यह आंतरिक समझ होनी चाहिए। यदि हम अपने आप को देखें, तो हम देखेंगे कि हमारे रिश्तों में, हमारी सरकारों में, हमारे जीवन के हर विभाग में, एक संपूर्ण कार्रवाई नहीं बल्कि कई अलग-अलग, असंबंधित क्रियाएं होती हैं। सरकार हमारे व्यक्तिगत अस्तित्व से असंबंधित कुछ और करती है, व्यवसायी सरकार की कार्रवाई से असंबद्ध कुछ और करता है, और व्यक्ति कहता है, “मैं एक कम्युनिस्ट हूं; मैं एक कैथोलिक हूं," इत्यादि। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रणाली के अनुसार या एक सीमित क्षेत्र के भीतर कार्रवाई से चिंतित है, यह आशा करते हुए कि ऐसी कार्रवाई पूरे क्षेत्र को कवर करेगी। इसलिए हमेशा एक विरोधाभास होता है, न केवल व्यक्ति में, आपमें और मुझमें, बल्कि समाज के साथ, सरकार के साथ और दूसरों के साथ हमारे संबंधों में भी।

अब, कुल क्रिया क्या है? आप और मैं-आप एक व्यक्ति के रूप में और मैं एक अन्य व्यक्ति के रूप में-इस पर बात कर रहे हैं। मैं कानून नहीं बना रहा हूं. मैं यह नहीं कह रहा हूं, "यह सही है और वह गलत है," लेकिन साथ मिलकर हम यह पता लगाने जा रहे हैं कि यह असाधारण कार्रवाई क्या है जो समग्र है और इसलिए अपने आप में विरोधाभासी नहीं है।

हमारी सभी प्रतिक्रियाओं की विपरीत प्रतिक्रियाएँ होती हैं, है ना? अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि हर इच्छा की अपनी विरोधाभासी इच्छा होती है। जिस क्षण हम किसी चीज़ की इच्छा करते हैं, उस क्षण विरोधी इच्छा की छाया होती है, इसलिए हमारा कार्य हमेशा एक विरोधाभास, एक विपरीत प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है।

अब, क्या कोई ऐसी क्रिया है जो समग्र हो, जो कोई विरोधाभास पैदा न करती हो, और जो केवल गतिविधि के एक विशेष रूप की निरंतरता न हो? हम पता लगाने जा रहे हैं; हम बहुत झिझक के साथ इसमें जा रहे हैं और मामले की सच्चाई खुद ही जान रहे हैं।

आख़िरकार, एक वक्ता का कार्य केवल आपको विचार देना नहीं है - कम से कम मैं ऐसा नहीं सोचता - क्योंकि विचार वास्तव में कभी भी मनुष्य को नहीं बदलते हैं।
एक विचार का विरोध दूसरे विचार से हो सकता है। संपूर्ण क्रिया का विचार ही इसके विपरीत एक विचार उत्पन्न करता है। लेकिन अगर हम केवल विचारों को दूर रख सकें और एक साथ सोच सकें, एक साथ महसूस कर सकें, आगे बढ़ सकें, जांच कर सकें, एक साथ सवाल कर सकें, तो शायद

हमें एक संपूर्ण क्रिया का एहसास होगा जो आत्म-विरोधाभासी नहीं है क्योंकि जो समग्र है उसमें अपने आप के विपरीत कुछ भी नहीं हो सकता है।

यह एक बहुत ही जटिल समस्या है, और सभी जटिल समस्याओं की तरह, इसे भी बहुत सरलता से हल किया जाना चाहिए, जो कि सीखने का तरीका है। सीखने के लिए, मन को पूछताछ की स्थिति में होना चाहिए, और जब मन कोई निर्णय लेता है और वहां से शुरू करता है तो वह पूछताछ नहीं कर रहा होता है। यदि मुझे इस बात का अंदाज़ा है कि क्या सही है और क्या गलत है, तो मैंने पहले ही निर्णय ले लिया है, और ऐसा दिमाग कार्रवाई के बारे में सच्चाई सीखने में असमर्थ है। हालाँकि यह बहुत सक्रिय हो सकता है, यह वास्तव में एक मृत दिमाग है। उस मन के लिए सीखने की कोई गति नहीं है जो पहले ही सीख चुका है; अतीत के अनुभवों के बोझ से दबे मन के लिए कोई अनुभव नहीं है। मुझे नहीं पता कि आप इसे समझते हैं या नहीं, या मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं।

आप देखिए, कठिनाई यह है कि हममें से अधिकांश उपमाओं, उदाहरणों, दृष्टांतों के आदी हैं। यदि मैं आपको दस उदाहरण दे सकूं, तो आप सोचेंगे कि आप समझ गए हैं-लेकिन वास्तव में आप समझ नहीं पाए होंगे। उदाहरण और दृष्टांत सबसे अधिक धोखा देने वाले हैं। वे आपको वास्तव में सोचने, पूछताछ करने से रोकते हैं। एक उदाहरण को एक विरोधाभासी उदाहरण से ख़त्म किया जा सकता है, और उदाहरणों के बारे में बहस करने में, हम खो जायेंगे। जबकि, यदि हम क्रिया की समग्रता, उसकी अनुभूति को पकड़ सकें, तो हम इसे अपने दैनिक अस्तित्व में विस्तार से कार्यान्वित करने में सक्षम होंगे। लेकिन इसके लिए बहुत अधिक ध्यान देने और बहुत अधिक अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। हममें से अधिकांश लोग इस प्रकार की समस्या पर अपना पूरा ध्यान देने के इच्छुक नहीं हैं, और हम उदाहरणों पर चर्चा करके उत्साहित या खुश होना पसंद करेंगे।

आप और मैं यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या कोई ऐसी संपूर्ण कार्रवाई है जो हमारे अस्तित्व के पूरे क्षेत्र को कवर करेगी। मैं कहता हूं कि है—लेकिन हठधर्मिता से नहीं। मैं कहता हूं कि एक संपूर्ण कार्रवाई है जो हमारे अस्तित्व के हर विभाग को कवर करेगी - सरकारी, आर्थिक, सामाजिक और मानवीय संबंधों का पूरा क्षेत्र। लेकिन आप उस तक नहीं पहुंच सकते, यदि आप इसे एक विशेष दृष्टिकोण से देखते हैं, तो आप इसकी भावना, सुंदरता, इसकी सूक्ष्मता को नहीं समझ सकते। इसलिए आपके साम्यवाद, आपके हिंदू धर्म, गीता, बाइबिल, कुरान या आपके नवीनतम गुरु के अनुसार कार्य करने की आपकी अवधारणा को छोड़ना होगा। हर चुनौती का जवाब देने वाली संपूर्ण कार्रवाई खोजने के लिए उन सभी को मिटा देना होगा।

जैसा कि मैं पिछली बार कह रहा था, यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे सुनना है क्योंकि हममें से अधिकांश लोग कभी सुनते ही नहीं हैं। सुनना अपने आप में मुक्ति की एक क्रिया है - यह मन को मुक्त करता है। लेकिन जब आप सुनते हैं, तो वास्तव में क्या होता है? यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें तो आप देखेंगे कि आप हैं

जो कहा जा रहा है उसकी तुलना या तो आप जो जानते हैं या किसी प्राधिकारी से करें जिसका आप सम्मान करते हैं। आप हमेशा तुलना या व्याख्या करते रहते हैं, है न? इसलिए मन सुनने की स्थिति में ही नहीं है. सुनने के लिए आपको अपना पूरा ध्यान देना होगा, और जब आप तुलना या व्याख्या कर रहे हों तो पूरा ध्यान नहीं दिया जाता है। जब आप कहते हैं कि आप यहां जो कहा जा रहा है और शंकर या बुद्ध की शिक्षाओं के बीच एक पत्राचार देखते हैं, तो यह एक आलसी व्यक्ति के सुनने का तरीका है। लेकिन यदि आप वास्तव में अपने बारे में सच्चाई जानना चाहते हैं, तो आप बिना तुलना किए, बिना परिकलित रुचि के सुनने के लिए बाध्य हैं। और मैं कहता हूं कि तुलना या व्याख्या के बिना सुनने की उसी क्रिया में, आप खुद ही जान जाएंगे कि सीखने की स्थिति में मन संचय नहीं कर रहा है। लेकिन जब मन सीख लेता है, तो वह स्पष्ट रूप से सीखना बंद कर देता है क्योंकि वह हमेशा नए की व्याख्या पुराने के संदर्भ में करता है।

इसलिए सुनना एक असाधारण बात है क्योंकि यदि आप वास्तव में सुनने में सक्षम हैं, तो यह मन को सभी प्रभावों से मुक्त कर देता है। तब मन स्पष्ट, तेज़ होता है - और जो सच है उसका पता लगाने के लिए ऐसा दिमाग आवश्यक है।

कार्रवाई का यह प्रश्न, क्या करना है, एक बहुत बड़ी समस्या है, और यदि हम केवल बौद्धिक या मौखिक स्तर पर सचेत होकर सुनें, तो हम तर्क-वितर्क के क्षेत्र में प्रवेश करेंगे: "मैं सही हूं, आप गलत हैं; मैं सही हूं, तुम गलत हो; मैं सही हूं, तुम गलत हो।" मैं आपको यह उद्धृत करता हूं, आप मुझे वह उद्धृत करते हैं,'' और इसी तरह अनिश्चित काल तक। इसीलिए एक-दूसरे के साथ बहुत गहरे स्तर पर, अनजाने में संवाद करना महत्वपूर्ण है। मेरा मानना है कि मूलभूत परिवर्तन केवल अचेतन स्तर पर ही होता है। सचेतन स्तर पर परिवर्तन एक निर्णय पर आधारित होता है, और निर्णय हमेशा अपना विरोधाभास उत्पन्न करेगा।

कृपया इसे थोड़ा धैर्य से पालन करें। पसंद से जन्मा कार्य निर्णय पर आधारित होता है, और ऐसा कार्य स्व-विरोधाभासी होता है। मैं कुछ करने का फैसला करता हूं.
वह निर्णय पसंद का परिणाम है, और पसंद में हमेशा अपना स्वयं का विपरीत होता है। इसलिए निर्णय की कार्रवाई अंदर और बाहर दोनों ही तरह से विरोधाभासी है। एक ऐसा कार्य है जो पसंद का नहीं है, निर्णय का नहीं है, और ऐसे कार्य में कोई विरोधाभास नहीं है, लेकिन इसके लिए स्वयं के बारे में बहुत अधिक जांच की आवश्यकता होती है।

अब यह स्वीकार या अस्वीकार का मामला नहीं है. मुझसे तुरंत यह न कहें, "मैं आपसे असहमत हूं," या "आप बिल्कुल सही हैं," क्योंकि इसका कोई मतलब नहीं होगा। आपके लिए इस सत्य को देखना महत्वपूर्ण है कि पसंद से, निर्णय से जन्मा कार्य अनिवार्य रूप से एक आत्म-विरोधाभासी प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगा। यदि आप कुछ करने का निर्णय लेते हैं, तो आपका कार्य चयन से पैदा होता है, और वह कार्य निरपवाद रूप से अपना स्वयं का विपरीत उत्पन्न करेगा; इसलिए, आप विरोधाभास में फंस गए हैं। तो आपको क्या करना है? मैं कहता हूं जिसमें संपूर्ण क्रिया है

बिल्कुल भी कोई विरोधाभास नहीं है. लेकिन इसे समझने के लिए, व्यक्ति को अचेतन में जाना होगा, और वहीं हमें एक-दूसरे के साथ संवाद करना होगा।

क्या तुम समझ रहे हो? मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं। मैं देखता हूं कि मैं नहीं हूं।

हममें से अधिकांश लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि क्या करना है, किस प्रकार का कानून बनाना है, किस प्रकार का सुधार करना है और बाकी सभी चीजें। लेकिन मैं कहता हूं कि यह महत्वपूर्ण नहीं है; इसे फिलहाल एक तरफ रख दें और अपने आप को संपूर्ण कार्रवाई के बारे में चिंतित करें जो स्व-विरोधाभासी न हो। यदि आप यह पता लगा सकें कि कुल क्रिया क्या है, तो आप वास्तव में एक विशेष दिशा में कार्य करने में सक्षम होंगे। क्या तुम समझ रहे हो?

आइए हम कहें कि मुझे नहीं पता कि एक सरकारी अधिकारी के रूप में या परिवार में या एक नागरिक के रूप में क्या करना है जो किसी विशेष पार्टी या प्रणाली के लिए प्रतिबद्ध नहीं है। लेकिन इससे पहले कि मैं पूछूं कि मुझे क्या करना है, मैं अपने आप से कहता हूं, "एक संपूर्ण कार्रवाई होनी चाहिए, एक ऐसी कार्रवाई जो संपूर्ण हो, जिसमें आत्म-विरोधाभास का बीज न हो।" पेड़ को समझने के लिए, मुझे पूरे पेड़ को देखना होगा और किसी विशेष पत्ते की चिंता नहीं करनी होगी। यदि मैं जीवन को समझना चाहता हूं, तो मुझे इसकी पूरी गहराई, चौड़ाई और ऊंचाई को समझना होगा, न कि इसे किसी विशेष प्रणाली, विश्वास या विचारधारा के माध्यम से देखना होगा। इसी तरह, मुझे फिलहाल उस विशेष कार्य को अलग रख देना चाहिए और संपूर्ण कार्य की समझ पर ध्यान देना चाहिए।

महोदय, जीवन कोई एक विशेष वस्तु नहीं है। जीवन सिर्फ नई दिल्ली की नौकरशाही व्यवस्था नहीं है, जीवन सिर्फ साम्यवादी व्यवस्था या पूंजीवादी व्यवस्था नहीं है, जीवन सिर्फ अत्याचार या आत्म-विरोधाभास नहीं है। जीवन ये सब चीज़ें हैं, और इससे भी कहीं अधिक; यह संघर्ष, दुख, संघर्ष और पीड़ा का दैनिक संबंध है। जीवन जन्म और मृत्यु है; यह ध्यान, पूछताछ और सभी विभिन्न सूक्ष्मताएं हैं जिनका मन आविष्कार करता है। जीवन बहुत बड़ा है, मन से अथाह है, और जब आप इसके एक छोटे से हिस्से का विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं तो आपको लगता है कि आपने जीवन को समझ लिया है। आप कहते हैं, "हां, मैं जीवन को जानता हूं," लेकिन आप तब तक जीवन को नहीं जानते जब तक आपकी पूरी एकाग्रता जीवन के एक खंड या विभाग पर केंद्रित है।

उसी तरह, जो मायने रखता है वह तात्कालिक कार्य नहीं बल्कि कार्य की समग्रता की जांच है, इसलिए मैं कहता हूं: तत्काल कार्य को किनारे रख दें। लेकिन आप इसे किनारे नहीं रखेंगे. दबाव बहुत ज़्यादा है. तुम्हें कल कुछ करना होगा; तुम्हें अभिनय करना होगा. अतः चेतन मन एक मशीन की तरह, जो निरंतर गतिमान रहती है, सदैव तात्कालिक कार्रवाई में व्यस्त रहता है।

आप कभी नहीं कहते, "मैं यह सब एक तरफ रख दूंगा और पता लगाऊंगा।"

तो आप और मैं अब अचेतन स्तर पर पूछताछ कर रहे हैं; इसलिए, संचार पूरी तरह से अलग है। यह मौखिक नहीं है, यह मात्र विश्लेषण नहीं है

उदाहरण देने की प्रक्रिया नहीं है; यह पानी के नीचे अपना रास्ता महसूस करने जैसा है।
आप कुछ भी नहीं मान सकते, आप हठधर्मी या दृढ़ नहीं हो सकते; आपको नकारात्मक होना चाहिए. इसीलिए नकारात्मक सोच बेहद महत्वपूर्ण है। नकारात्मक सोच सोच का उच्चतम रूप है - लेकिन आइए हम उसमें न पड़ें

पल।

मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे होंगे। यदि नहीं, तो हम इस पर फिर कभी चर्चा करेंगे।

आप और मैं अचेतन स्तर पर संवाद कर रहे हैं, जहां केवल सुनने की क्रिया होती है, न कि श्रोता जो कहता है, "मुझे क्या करना चाहिए?"
"क्या करना है" को चेतन मन पर छोड़ दें। हम अनजाने में कार्रवाई की समग्रता के बारे में पूछताछ करने जा रहे हैं - जिसका मतलब यह नहीं है कि कोई सो जाए; इसके विपरीत, यह ध्यान की अत्यंत असाधारण स्थिति है।

अब, आइए ध्यान और एकाग्रता के बीच अंतर करें।
मन को केन्द्रित करने के कारण एकाग्रता सीमित है, लेकिन ध्यान सीमित नहीं है।
चेतन मन को अपने स्तर पर एकाग्र किया जा सकता है, लेकिन अचेतन केवल चौकस हो सकता है, एकाग्र नहीं।
क्या मैं यह स्पष्ट कर रहा हूँ?
महोदय, तुरंत हाँ मत कहो। मुझे यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए, क्योंकि आप यह कह सकते हैं कि यह स्पष्ट है क्योंकि आप आगे बढ़ना चाहते हैं। मैं आगे बढ़ सकता हूं, लेकिन आप केवल मौखिक या चेतन स्तर पर ही रहेंगे, और इसलिए आप आगे नहीं बढ़ पाएंगे। आपको और मुझे एक साथ आगे बढ़ना चाहिए, या बिल्कुल नहीं।

इसलिए हम क्रिया की समग्रता में नकारात्मक रूप से पूछताछ कर रहे हैं, जिसका अर्थ है कि मन का निर्णय से कोई लेना-देना नहीं है; वह फिलहाल इस बात से चिंतित नहीं है कि क्या करना है, तत्काल कार्रवाई। मुझे इसे दूसरी तरह से रखने दीजिए।

चेतन मन सदैव इस तात्कालिक प्रश्न से चिंतित रहता है कि क्या किया जाये। सभी राजनेता चिंतित हैं कि क्या करना है; इसलिए, उन्हें कार्रवाई की समग्रता से कोई सरोकार नहीं है। सचेतन स्तर पर निर्णय होते हैं और होने भी चाहिए, लेकिन वे निर्णय विकल्प पर आधारित होते हैं, जो कि इच्छाशक्ति की क्रिया है, और इसलिए वे आत्म-विरोधाभासी हो जाते हैं। इसके मनोवैज्ञानिक सत्य को देखकर, मैं नकारात्मक रूप से पूछताछ करना शुरू करता हूं, जो अचेतन तक पहुंचने का एकमात्र तरीका है। कोई सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं हो सकता क्योंकि सकारात्मक दृष्टिकोण चेतन मन का होता है। अचेतन बहुत बड़ा है; यह एक विशाल समुद्र की तरह है जहां निरंतर हलचल होती रहती है, और आप एक सकारात्मक विचार के साथ उस विशाल गहराई तक कैसे पहुंच सकते हैं? सीखने के लिए सकारात्मकता का निषेध होना चाहिए। चेतन स्तर पर कोई सीख नहीं है; वहाँ केवल ज्ञान प्राप्त करना है।

जैसा मैंने कहा, महोदय, यह बहुत कठिन प्रश्न है। एकाग्रता बहिष्करण है, और जिसे आप बहिष्कृत करते हैं वह हमेशा अंदर आने की प्रतीक्षा कर रहा है। ध्यान एक है

एकाग्रता का निषेध क्योंकि वहां कोई बहिष्कार नहीं है, और इसी तरीके से व्यक्ति को अचेतन तक पहुंचना चाहिए। यह वह तरीका है जिससे आप और मैं संवाद करने जा रहे हैं, जिसका अर्थ है कि हम तत्काल निर्णय और उस निर्णय पर आधारित गतिविधि से चिंतित नहीं हैं। हम अचेतन के पूरे क्षेत्र में नकारात्मक रूप से पूछताछ कर रहे हैं, जिसमें एक ऐसी क्रिया है जो स्व-विरोधाभासी नहीं है।

तो, हमने अब तक क्या किया है? हमने देखा है कि किसी बात को समझने के लिए समग्र भावना का होना आवश्यक है, जो कि प्रेम है। प्रेम एक संपूर्ण कृत्य है; यह पूर्णता की भावना है जिसमें सभी इंद्रियाँ पूरी तरह से जागृत होती हैं, मन पूरी तरह से आराम पर होता है, और जिसमें कोई विरोधाभास नहीं होता है। आकाश के सामने एक पेड़ की सुंदरता को समझने के लिए, पेड़ की समग्रता की भावना होनी चाहिए, और जब आप केवल एक पत्ते के साथ खुद को चिंतित करते हैं तो वह भावना नकार दी जाती है। लेकिन जब आपको पेड़ की समग्रता का अहसास होता है, तब आप पत्ते, शाखा, फूल की चिंता कर सकते हैं।

जैसा कि हम आज शाम कार्रवाई से चिंतित हैं, हम इसकी समग्रता के बारे में पूछताछ कर रहे हैं, और आप इसे केवल नकारात्मक रूप से देख सकते हैं, यह जानने की इच्छा से नहीं कि क्या करना सही है। यदि इतना स्पष्ट है, तो हम आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन मुझे डर है कि यह स्पष्ट नहीं है क्योंकि हममें से अधिकांश ने इस बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचा है। हमने केवल इस बारे में सोचा है कि क्या करना है, क्या सही है, क्या लाभदायक है, क्या हमें अधिक शक्ति, प्रभाव देगा - जिसका अर्थ है कि हम हमेशा गणना करने वाले, स्वार्थी होते हैं, और इसलिए हमेशा आत्म-विरोधाभासी होते हैं। और हम वहां रहते हैं, अपने आत्म-विरोधाभास को एकीकृत करने का एक तरीका खोजने की उम्मीद करते हैं, लेकिन हम इसे कभी नहीं ढूंढ पाते क्योंकि उस स्तर पर आत्म-विरोधाभास का कोई अंत नहीं है।

साम्यवादी, समाजवादी, यह या वह नहीं होना और समग्र कार्रवाई क्या है, इसकी जांच करना बहुत कठिन है। हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और जो व्यक्ति किसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध है वह सीखने में असमर्थ है।
जीवन कभी स्थिर नहीं रहता; यह स्वयं को किसी भी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध नहीं करता है; यह शाश्वत गति में है। और आप इस जीवित चीज़ का अनुवाद एक विशेष विश्वास या विचारधारा के रूप में करना चाहते हैं, जो बिल्कुल बचकाना है।

तो हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह कार्रवाई की समग्रता को महसूस करना है। विचार की पृष्ठभूमि के बिना कोई कार्य नहीं होता है क्या? और विचार सदैव विकल्प होता है। इसे यूं ही स्वीकार न करें. कृपया इसकी जांच करें, इसमें अपना रास्ता महसूस करें। विचार चुनने की प्रक्रिया है. बिना विचार के आप चुनाव नहीं कर सकते।

जिस क्षण आप चुनते हैं, एक निर्णय होता है, और वह निर्णय अपना स्वयं का विपरीत उत्पन्न करता है - अच्छा और बुरा, हिंसा और अहिंसा। जो व्यक्ति निर्णय के माध्यम से अहिंसा का अनुसरण करता है वह स्वयं में विरोधाभास पैदा करता है।
विचार मूलतः पसंद से पैदा होता है। मैं एक निश्चित तरीके से सोचना चुनता हूं। मैं

साम्यवाद, समाजवाद, बौद्ध धर्म की जाँच करें, मैं तार्किक रूप से तर्क करता हूँ और यह या वह सोचने का निर्णय लेता हूँ। इस तरह का विचार स्मृति पर, मेरी कंडीशनिंग पर, मेरी खुशी पर, मेरी पसंद और नापसंद पर आधारित है, और इस तरह के विचार से पैदा हुआ कोई भी कार्य अनिवार्य रूप से मुझमें और इसलिए दुनिया में विरोधाभास पैदा करेगा; यह न केवल मेरे लिए, बल्कि दूसरों के लिए भी दुःख, कष्ट उत्पन्न करेगा।

अब कृपया शांति से सुनें, और हाँ या ना न कहें। क्या कोई ऐसा कार्य है जो प्रभाव का परिणाम नहीं है, जो परिकलित स्वार्थ का परिणाम नहीं है, जो पिछले अनुभव का परिणाम नहीं है? - और मैंने समझाया है कि कैसे संचित अनुभव का बोझ मन को अनुभव करने में असमर्थ बना देता है।

क्या कोई ऐसा कार्य है जो चुनाव का, विचार का, किसी निर्णय का परिणाम नहीं है, बल्कि कार्य की संपूर्ण भावना है? मैं कहता हूँ वहाँ है. जैसा कि हम अभी जी रहे हैं, सरकार कुछ और करती है, व्यापारी कुछ और करता है, धार्मिक व्यक्ति, विद्वान और वैज्ञानिक कुछ और करते हैं, और वे सभी विरोधाभास में हैं। इन विरोधाभासों को कभी भी दूर नहीं किया जा सकता क्योंकि एक विरोधाभास पर काबू पाने से केवल एक और तनाव पैदा होता है। मन के लिए आवश्यक बात यह है कि वह कार्य की समग्रता को समझे, अर्थात, कार्य की उस अनुभूति को प्राप्त करे जो निर्णय से पैदा नहीं होती है, जैसे कि किसी को एक सुंदर सूर्यास्त, किसी फूल, या किसी पक्षी की अनुभूति हो सकती है। पंख. इसके लिए उत्तर की कोई सकारात्मक मांग के बिना अचेतन की जांच की आवश्यकता होती है। और यदि आप जीवन की तात्कालिकता में न फंसने में सक्षम हैं, कि कल क्या करना है, तो आप पाएंगे कि मन कार्य की एक ऐसी स्थिति की खोज करना शुरू कर देता है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है, एक ऐसा कार्य जिसमें कोई विपरीत नहीं है।

आप कोशिश कीजिए। घर जाते समय, जब आप बस में बैठे हों तो इसे आज़माएँ। स्वयं ही पता लगाओ कि यह असाधारण चीज़ क्या है, एक क्रिया जो संपूर्ण है।

आप देखिए श्रीमानों, पृथ्वी साम्यवादी या पूंजीवादी नहीं है, यह हिंदू या ईसाई नहीं है, यह न तो आपकी है और न ही मेरी है। पृथ्वी की समग्रता, सुंदरता, समृद्धि, पृथ्वी की असाधारण शक्ति का एहसास होता है, लेकिन आप उस संपूर्ण वैभव को तभी महसूस कर सकते हैं जब आप किसी भी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते हैं। उसी तरह, आप संपूर्ण कार्रवाई का एहसास केवल तभी प्राप्त कर सकते हैं जब आप किसी विशेष गतिविधि के लिए प्रतिबद्ध नहीं हैं, जब आप "भले लोगों" में से एक नहीं हैं जो इस या उस पार्टी, विश्वास या विचारधारा के लिए प्रतिबद्ध हैं और जिनके कार्य वास्तव में आत्म-केन्द्रित गतिविधि का एक रूप हैं। यदि आप प्रतिबद्ध नहीं हैं, तो आप पाएंगे कि चेतन मन, हालांकि तत्काल कार्रवाई में शामिल है, उस तत्काल कार्रवाई को अलग रख सकता है और अचेतन में नकारात्मक रूप से पूछताछ कर सकता है कि वास्तविक उद्देश्य, छिपे हुए विरोधाभास, पारंपरिक बंधन और अंध आग्रह कहां हैं। जो की समस्याएँ पैदा करते हैं

तात्कालिकता. और एक बार जब आपको यह सब समझ आ जाए तो आप बहुत आगे तक जा सकते हैं। तब आप महसूस कर पाएंगे - जैसे आप एक पेड़ की सुंदरता, संपूर्णता महसूस करेंगे - कार्रवाई की समग्रता जिसमें कोई विपरीत प्रतिक्रिया नहीं है, कोई विरोधाभास नहीं है।

यह क्रिया का उसके विपरीत के साथ एकीकरण नहीं है, जो बकवास है; इसके विपरीत, यह क्रिया की समग्रता की समझ है जो तब आती है जब मन तत्काल गतिविधि में केंद्रित नहीं होने में सक्षम होता है। तात्कालिक गतिविधि में केन्द्रित होना ही एकाग्रता है। जागरूकता या ध्यान तात्कालिक गतिविधि में केन्द्रित नहीं होता, बल्कि उस ध्यान में तात्कालिक गतिविधि शामिल होती है। इसलिए कार्रवाई की समग्रता तभी होती है जब मन पल-पल की गहराई से पूछताछ करने में सक्षम होता है और केवल तत्काल की चिंता नहीं करता है। तब मन प्रवेश करता है; यह बुनियादी सवाल पूछता है. क्योंकि इसकी जांच मौलिक है, इसकी कार्रवाई गुमनाम है, और गुमनाम होने के कारण इसमें कोई विरोधाभास नहीं है, कोई विपरीत नहीं है।

11 फ़रवरी 1959

तीसरी वार्ता नई दिल्ली में

यदि संभव हो तो आज शाम मैं आपके साथ मन की पूरी प्रक्रिया पर बात करना चाहूंगा। हममें से अधिकांश के लिए, जाहिरा तौर पर, विचार बहुत महत्वपूर्ण है; लेकिन विचार, भले ही यह हमारे कार्यों और हमारे जीवन को आकार देता है, इसका बहुत कम अर्थ होगा जब तक कि हम मन के तरीकों को नहीं समझते।

इससे पहले कि मैं आगे बढ़ूं, मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आपके यहां आने का उद्देश्य या महत्व क्या है? मुझे लगता है कि यह एक वैध सवाल है और इसका जवाब आपको खुद ही देना होगा। आपके आने का मकसद, इरादा क्या है? इस पर आपकी समझ निर्भर करेगी कि क्या कहा जा रहा है। अगर आप महज जिज्ञासावश आएंगे तो जाहिर है कि आप थोड़े संतुष्ट होंगे और पहले से ज्यादा भ्रमित होकर चले जाएंगे। लेकिन अगर आप सिर्फ यह सुनने के लिए नहीं आते कि वक्ता क्या कहना चाहता है, बल्कि खुद को समझने के लिए आते हैं, तो मुझे लगता है कि इन बातों का कुछ मतलब होगा। लेकिन स्वयं को समझने के लिए बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है, न केवल जब हम यहां हैं, बल्कि तब भी जब हम अपने दैनिक अस्तित्व के तरीकों की ओर बढ़ते हैं; क्योंकि यह हमारे रोजमर्रा के रिश्तों में ही है कि हम वह दर्पण पाते हैं जिसमें हम खुद को वैसे देख सकें जैसे हम हैं।

तो आइए आज शाम यहां एक साथ एकत्रित होने के अपने इरादे के बारे में बिल्कुल स्पष्ट रहें। आप वक्ता से कुछ भी नहीं सीखेंगे। मेरे लिए न तो कोई शिक्षक है और न ही सिखाया गया; न कोई नेता है न कोई अनुयायी, नहीं

गुरु और कोई शिष्य नहीं; वास्तविकता तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं है, कोई प्रणाली या अनुशासन नहीं है जो उस असाधारण चीज़ की प्राप्ति करा सके जिसे हम वास्तविक, शाश्वत, अथाह कहते हैं। कोई भी संगठित धर्म आपको इसकी ओर नहीं ले जा सकता।
और यदि आप यहां प्रसन्नता, मन की शांति की आशा से आए हैं, तो आप न केवल निराश होंगे बल्कि उससे भी अधिक भ्रमित होंगे।
कभी।

इसलिए एक व्यक्ति के रूप में आपको यह स्पष्ट होना चाहिए कि आप यहां क्यों हैं। वह व्यक्ति जो किसी मार्ग, किसी प्रणाली, किसी शिक्षक का अनुसरण करता है, या जो किसी संगठित धर्म से संबंधित है, वह केवल एक नकलची है, न कि एक व्यक्ति जो मानव अस्तित्व के पूरे क्षेत्र को समझने की कोशिश कर रहा है। जीना एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है, और इसे समझने के लिए असाधारण ध्यान, विस्तृत धारणा, सोच में सटीकता की आवश्यकता होती है; तो, जाहिर तौर पर कोई अनुसरण नहीं हो सकता है, न तो आसान स्वीकृति हो सकती है और न ही आकस्मिक इनकार हो सकता है। यदि दो व्यक्तियों के रूप में आपके और मेरे बीच यह बात बिल्कुल स्पष्ट है, तो हम साथ मिलकर आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन यदि आप यहां केवल शब्दों की बाजीगरी करने, या बौद्धिक रूप से मनोरंजन करने, या कही गई बातों का चतुराई से खंडन करने आए हैं, तो मुझे लगता है कि आप पूरी बात के महत्व को भूल जाएंगे।

यदि कोई अपने आप से बहुत स्पष्ट रूप से पूछे, "मैं क्यों आया हूँ?" वही प्रश्न व्यक्ति के अपने मन की प्रक्रिया को उजागर करना शुरू कर देगा। आख़िरकार, मन ही हमारे पास एकमात्र साधन है। यह मन ही है जो समझता है, जो सोचता है, जो गणना करता है, जो इच्छा करता है, जो संचार करता है, जो प्रवेश करता है, जो अपनी रुकावटें पैदा करता है, जो खुद को पूरा करने की कोशिश करता है और निराशा, दुख पाता है; यह मन ही है जो महत्वाकांक्षी और निर्दयी, स्नेही और सहानुभूतिपूर्ण है; यह मन ही है जो सुख और दुख, प्रेम और घृणा को जानता है, जो सौंदर्य में आनंद लेता है। इसलिए जब तक हम मन नामक इस असाधारण चीज़ को नहीं समझ लेते, हमारे पास तर्कसंगत, स्पष्ट और बोधगम्य सोच के लिए बहुत कम आधार होगा।

सोच हमारे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है, है ना? यह हमारे अस्तित्व के लगभग पूरे क्षेत्र को कवर करता है। इसीलिए मन को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, जिससे सोच उत्पन्न होती है। मन हमारे विचार, हमारी भावना, हमारी धारणा, हमारी जागरूकता का स्रोत है; यह समाज के साथ, प्रकृति के साथ, एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों को आकार देता है। इसलिए मन को समझे बिना हम अपनी सोच में जो भी बदलाव लाएंगे उसका कोई मतलब नहीं रह जाएगा।

अब, इस बातचीत में और इसके बाद होने वाली सभी बातचीतों में, हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह मन नामक चीज़ को उजागर करना है। हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि आपको किसी विशेष दिशा में सोचने के लिए प्रभावित किया जाए- और यह समझना आपके और मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सभी प्रभाव, अच्छे या बुरे, हानिकारक होते हैं

क्योंकि यह मन को गुलाम बना लेता है। प्रभाव मात्र प्रचार है। कुछ वाक्यांशों को लगातार दोहराने से विश्वास पैदा होता है, जो सोच नहीं है। मेरे लिए कोई भी प्रभाव, चाहे वह सुखद हो या अप्रिय, और कितना भी सूक्ष्म या चतुर, मजबूरी का एक रूप है। तो फिर से हम यह स्पष्ट कर लें कि आप मुझसे मंत्रमुग्ध नहीं हो रहे हैं; आपका दिमाग किसी निश्चित दिशा में सोचने के लिए प्रभावित नहीं हो रहा है।

मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि हम इसे समझें। प्रभाव, जो कि प्रचार है, हर समय दिमाग पर डाला जा रहा है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, किताबें, टेलीविजन और रेडियो द्वारा दिए जाने वाले भाषण - यह सब और वह सब कुछ जो हमारे पर्यावरण को बनाते हैं, हमें एक निश्चित दिशा में सोचने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, और जानबूझकर या अनजाने में हम या तो इसका विरोध करते हैं या स्वीकार करते हैं।

कृपया केवल मेरी बात न सुनें, बल्कि अपने मन के संचालन पर भी ध्यान दें। मैं केवल आपके मन की कार्यप्रणाली का वर्णन कर रहा हूं कि कैसे प्रभाव आपके विचार को मोड़ और विकृत कर देता है। इसमें न केवल चेतन प्रभाव होता है, जिसे शिक्षा कहा जाता है, बल्कि अचेतन प्रभाव भी होता है, जिसके प्रभाव के बारे में कोई नहीं जानता, और शायद यह चेतन प्रभाव से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है। यदि मैं सीधे तौर पर आपको कुछ करने के लिए कहता हूं, तो आप इसे कर भी सकते हैं या नहीं भी, यह मेरे अधिकार, मेरी अनुनय-विनय की शक्ति और मैं जो कहता हूं उसे स्वीकार करने की आपकी इच्छा या अन्यथा पर निर्भर करता है - जो एक सचेत प्रभाव है। लेकिन अचेतन, जहां बचाव का कोई साधन नहीं है, सूक्ष्म सुझावों, विचारों, तर्कों द्वारा बहुत आसानी से प्रवेश किया जाता है; और उस स्तर पर प्रभाव मन को अधिक प्रभावित करने वाले होते हैं। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर गौर किया है या नहीं. और परंपरा का पूरा भार है, आधुनिक और प्राचीन भी, जो धीरे-धीरे, अनजाने में मन को आकार देता है।

इसलिए व्यक्ति को इन सभी वार्तालापों में सतर्क रहना होगा कि प्रभावित न हों, जो कहा गया है उसे स्वीकार करने के लिए सम्मोहित न हों - जिसका अर्थ यह नहीं है कि आपको इसे अस्वीकार कर देना चाहिए। हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह मन की प्रक्रिया को समझना है, और यदि आप केवल स्वीकार या अस्वीकार करते हैं तो आप मन को, उसकी संपूर्ण सीमा और गहराई को नहीं समझ सकते हैं। आप और मैं मिलकर मन को समझने, उसमें जाने, उसके सभी विभिन्न पहलुओं को उजागर करने का प्रयास कर रहे हैं, न कि केवल एक विशेष भाग तक खुद को सीमित रखने का। हम खोज कर रहे हैं और इसलिए खोज रहे हैं; और आप अपने लिए जो खोजते हैं वह मुझसे सुनी गई किसी भी चीज़ से कहीं अधिक मायने रखता है। लेकिन यदि आप पूर्वाग्रही हैं, यदि आप तर्कशील हैं, यदि आप केवल अस्वीकार करते हैं या स्वीकार करते हैं, तो आप वास्तव में सुन नहीं रहे हैं, क्योंकि तब आप मौखिक स्तर पर बने रहते हैं; इसलिए, आप अन्वेषण नहीं कर सकते, आप मन की गति, असाधारण सूक्ष्मताओं की खोज नहीं कर सकते। मैं आपको इंगित कर सकता हूँ

बहुत सी चीज़ें, लेकिन जब तक आप उन्हें सीधे अनुभव नहीं करते, आप संभवतः अपने मन की प्रक्रिया को नहीं समझ सकते।

यदि आप वास्तव में सतर्क हैं, तो आप देखेंगे कि कोई गुरु, कोई मार्ग, कोई प्रणाली या विश्वास नहीं है जो आपको सत्य तक ले जा सके। इसमें केवल आपकी अपनी सोच की प्रक्रिया का अन्वेषण है। जब एक बार आप अपने मन के तरीकों को जानना शुरू कर देते हैं और देखते हैं कि आपके विचार के पीछे क्या है - डर क्यों है, आप सुरक्षा क्यों चाहते हैं, और बाकी सब - तो आप फिर कभी किसी का अनुसरण नहीं करेंगे।

यह बात आपके और मेरे द्वारा स्पष्ट रूप से समझे जाने के बाद, आइए हम स्वयं से पूछें: मन क्या है? जब मैं वह प्रश्न पूछूं, तो कृपया मेरे उत्तर की प्रतीक्षा न करें। अपने मन को देखो; अपने स्वयं के विचार के तरीकों का निरीक्षण करें।

मैं जो वर्णन करता हूं वह केवल एक संकेत है; यह हकीकत नहीं है. वास्तविकता आपको स्वयं अनुभव करनी होगी। शब्द, वर्णन, प्रतीक, वास्तविक चीज़ नहीं है। दरवाज़ा शब्द स्पष्टतः दरवाज़ा नहीं है। प्रेम शब्द भावना नहीं है, यह शब्द जिस असाधारण गुण को इंगित करता है। इसलिए हमें शब्द, नाम, प्रतीक को तथ्य के साथ भ्रमित न होने दें। यदि आप केवल मौखिक स्तर पर बने रहते हैं और चर्चा करते हैं कि मन क्या है, तो आप खो गए हैं, क्योंकि तब आप मन नामक इस आश्चर्यजनक चीज़ की गुणवत्ता को कभी महसूस नहीं करेंगे।

तो, मन क्या है? जाहिर है, मन हमारी संपूर्ण जागरूकता या चेतना है; यह हमारे अस्तित्व का संपूर्ण तरीका है, हमारी सोच की संपूर्ण प्रक्रिया है। मन मस्तिष्क का परिणाम है। मस्तिष्क मन का निर्माण करता है।

मस्तिष्क के बिना मन नहीं है, लेकिन मन मस्तिष्क से अलग है। यह मस्तिष्क का बच्चा है. यदि मस्तिष्क सीमित है, क्षतिग्रस्त है, तो मन भी क्षतिग्रस्त है। मस्तिष्क, जो हर संवेदना, सुख या दर्द की हर भावना को रिकॉर्ड करता है, मस्तिष्क अपने सभी ऊतकों, अपनी सभी प्रतिक्रियाओं के साथ, जिसे हम मन कहते हैं, बनाता है, हालांकि मन मस्तिष्क से स्वतंत्र है।

आपको इसे स्वीकार करने की ज़रूरत नहीं है. आप इसके साथ प्रयोग कर सकते हैं और स्वयं देख सकते हैं।

मैं आपसे पूछता हूं कि आप कहां रहते हैं, यह एक ऐसा प्रश्न है जिससे आप परिचित हैं। कान के पर्दे पर टकराने वाली वायु तरंगें आपके मस्तिष्क में एक आवेग भेजती हैं, जो अपनी यादों के अनुसार जो कुछ भी सुनता है उसका अनुवाद और प्रतिक्रिया करता है, और आप कहते हैं, "सर, मैं अमुक जगह पर रहता हूं।" मस्तिष्क की प्रतिक्रिया भी उसकी कंडीशनिंग के अनुसार मन की प्रतिक्रिया होती है। मन न केवल मस्तिष्क का परिणाम है, बल्कि समय प्रक्रिया का भी परिणाम है - समय प्रक्रिया बाहरी या कालानुक्रमिक, और आंतरिक या मनोवैज्ञानिक, त्वचा के अंदर होती है, जो बनने की भावना है

कुछ। तो मन मस्तिष्क और समय का परिणाम है, और यह चेतन और अचेतन, सतही और गुप्त दोनों से बना है।

अब शिक्षा से मन वश में होता है न? पूरी दुनिया में यही हो रहा है. कम्युनिस्ट तथाकथित शिक्षा के माध्यम से, ब्रेनवॉशिंग के माध्यम से दिमाग पर कब्ज़ा कर लेते हैं और इस तरह उसे नियंत्रित कर लेते हैं। सभी संगठित धर्म मूलतः यही करते हैं। आप हिंदू या पारसी, मुस्लिम या बौद्ध हैं क्योंकि आपका पालन-पोषण एक के रूप में हुआ है; आपके माता-पिता, आपकी परंपरा, आपका पुजारी, आपका पूरा वातावरण, सभी आपके दिमाग को उस तरह से अनुकूलित करने में मदद करते हैं।

इसलिए मन को हर समय एक निश्चित दिशा में सोचने के लिए प्रभावित किया जा रहा है।
ऐसा होता था कि केवल संगठित धर्म ही आपके मन के पीछे थे, लेकिन अब सरकारों ने यह काम बड़े पैमाने पर अपने हाथ में ले लिया है। वे आपके दिमाग को आकार देना और नियंत्रित करना चाहते हैं। सतही तौर पर मन उनके नियंत्रण का विरोध कर सकता है। आप तभी कम्युनिस्ट बनेंगे जब यह आपको भुगतान करेगा। यदि आप सोचते हैं कि आप कैथोलिक धर्म के माध्यम से ईश्वर को पा लेंगे, तो आप कैथोलिक बन जायेंगे, अन्यथा नहीं।

सतही तौर पर इस मामले में आपकी कुछ राय है, लेकिन सतह के नीचे, गहरे अचेतन में, समय का, परंपरा का पूरा भार है, जो आपको एक विशेष दिशा में प्रेरित करता है। चेतन मन कुछ हद तक खुद को नियंत्रित और निर्देशित कर सकता है, लेकिन अचेतन में आपकी महत्वाकांक्षाएं, आपकी अनसुलझी समस्याएं, आपकी मजबूरियां, अंधविश्वास, भय इंतजार कर रहे हैं, धड़क रहे हैं, आग्रह कर रहे हैं।

तो मन में चेतन और अचेतन, खुला और छिपा हुआ विभाजन है; भीतर, गहराई से, एक विरोधाभास है। आप हिंदू बने हुए हैं और कुछ अंधविश्वासों से चिपके हुए हैं, भले ही आधुनिक सभ्यता कहती है कि वे बकवास हैं। आप एक वैज्ञानिक हैं, और फिर भी आप अपने बेटे या बेटी की शादी पुराने पारंपरिक तरीके से करते हैं। तो आपके अंदर एक विरोधाभास है. स्वयं विचार में, स्वयं इच्छा में भी विरोधाभास है।

आप कुछ करना चाहते हैं, और साथ ही आप सोचते हैं कि आपको यह नहीं करना चाहिए। आप कहते हैं, "मुझे अवश्य करना चाहिए," और "मुझे नहीं करना चाहिए।"

मन का यह संपूर्ण क्षेत्र समय का परिणाम है; यह पूर्ण समझ के बिना स्वीकृतियों की एक पूरी श्रृंखला के संघर्षों और समायोजनों का परिणाम है। इसलिए हम विरोधाभास की स्थिति में रहते हैं; हमारा जीवन अंतहीन संघर्ष की एक प्रक्रिया है। हम दुखी हैं, और हम खुश रहना चाहते हैं।

हिंसक होते हुए भी हम अहिंसा के आदर्श का पालन करते हैं। तो एक द्वंद्व चल रहा है - मन एक युद्धक्षेत्र है। हम सुरक्षित रहना चाहते हैं, आंतरिक रूप से, गहराई से यह जानते हुए कि सुरक्षा नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। सच तो यह है कि हम इस तथ्य का सामना नहीं करना चाहते कि कोई सुरक्षा नहीं है; इसलिए, हम हमेशा सुरक्षा की तलाश में रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सुरक्षित न होने का डर रहता है।

तो मन अंतर्विरोधों, विरोधों, समायोजनों, भावनात्मक प्रतिक्रियाओं, चेतन और अचेतन का एक समूह है, और वहीं से हम सोचना शुरू करते हैं। हमने कभी भी अपनी चेतना की गहराइयों की खोज नहीं की है, बल्कि केवल सतह पर कार्य करते हैं। हम मानें या न मानें; हम वही करते हैं जो हमें लाभदायक लगता है; हम खुद को कुछ करने के लिए मजबूर करते हैं, या बहस करते हैं, बहक जाते हैं। यह हमारा जीवन है। और इस अवस्था में मन ईश्वर की तलाश कर रहा होता है। दुखी, दुःखी, आत्म-विरोधाभासी होकर मन कहता है, "मैं वास्तविकता खोजना चाहता हूँ।"

लेकिन जो वास्तविक है उसे आप तभी समझ सकते हैं जब मन आत्म-विरोधाभास की स्थिति में न हो। आप ईश्वर को मानें या न मानें, इसका बहुत कम महत्व है। दरअसल, इसका कोई महत्व ही नहीं है क्योंकि आपके जीवन में यह सिर्फ सुविधा, परंपरा और सामाजिक सुरक्षा का मामला है। आप ईश्वर में विश्वास करने के लिए बाध्य हैं, जैसे कम्युनिस्ट विश्वास न करने के लिए बाध्य हैं। यह कंडीशनिंग है जो आपको खुद को हिंदू या बौद्ध, मुस्लिम या ईसाई कहने पर मजबूर करती है। ईश्वर या सत्य के बारे में आपकी नैतिकता और विभिन्न धर्मग्रंथों को उद्धृत करने का बहुत कम महत्व है क्योंकि जिस क्षण आपको पता चलेगा कि आपका मन वातानुकूलित है, वह पूरी संरचना ढह जाएगी।

भयभीत होने के कारण, मन अपने विचारों, विश्वासों और अनुभवों के क्षेत्र में सुरक्षा पाता है; यह विश्वास के माध्यम से शरण का आश्रय बनाता है और जीवन की गति को दूर करता है। यह वास्तविक तथ्य है, चाहे आप इसे स्वीकार करें या न करें। मन जिस आश्रय का आश्रय बनाता है और भीतर रहता है वह 'मैं' और 'मेरा' है, और हर प्रकार की अशांति जो इस आश्रय की नींव को हिला सकती है, मन अस्वीकार कर देता है।

यह देखते हुए कि विचार क्षणिक है, मन टी-प्रक्रिया, 'मैं' बनाता है, जिसे वह स्थायी, शाश्वत कहता है, लेकिन जो अभी भी मन के क्षेत्र में है क्योंकि मन ने इसे बनाया है और इसके बारे में सोच सकता है।

मन जिसके बारे में सोच सकता है वह स्पष्ट रूप से मन के क्षेत्र के भीतर है, जो समय का क्षेत्र है; इसलिए, यह कालातीत, शाश्वत नहीं है, हालाँकि आप इसे आत्मा, उच्चतर स्व या ईश्वर कह सकते हैं। आपका ईश्वर आपके विचार का एक उत्पाद है, और आपका विचार आपकी कंडीशनिंग, आपकी यादों, आपके अनुभवों की प्रतिक्रिया है, जो सभी समय के क्षेत्र के भीतर हैं।

अब, क्या मन समय से मुक्त हो सकता है? यही असली समस्या है. क्योंकि सारी सृष्टि समय के क्षेत्र के बाहर घटित होती है। सभी गहन सोच, सभी गहरी भावनाएँ हमेशा कालातीत होती हैं। जब आप किसी से प्यार करते हैं, जब प्यार होता है तो वह प्यार समय से बंधा नहीं होता।

लेकिन वातानुकूलित मन, निश्चित रूप से, यह पता लगाने में असमर्थ है कि समय से परे क्या है। अर्थात्, महोदय, जैसा कि हम जानते हैं, मन अतीत से अनुकूलित होता है।
अतीत, वर्तमान से भविष्य की ओर बढ़ता हुआ, मन को व्यवस्थित करता है; और यह वातानुकूलित मन, संघर्ष में, परेशानी में, भयभीत, अनिश्चित होकर, समय की सीमाओं से परे कुछ चाहता है। हम सभी विभिन्न तरीकों से यही कर रहे हैं, है न? लेकिन जो मन समय का परिणाम है वह उसे कैसे पा सकता है जो कालातीत है? वह बस इतना कर सकता है कि खुद को उस स्थिति में सम्मोहित कर ले जिसे वह कालातीत, वास्तविक कहता है, या कुछ मान्यताओं के साथ खुद को सहज बना लेता है।

वास्तविकता को खोजने के लिए, मन को स्वयं को बदलना होगा; इसे स्वयं से परे जाना होगा।
और जब तक मन वास्तविकता को ग्रहण करने में सक्षम नहीं होता, तब तक वह उन असंख्य समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता जो हमारे दैनिक जीवन में हमारे सामने आती हैं। यह स्वयं को समायोजित कर सकता है, अपनी रक्षा कर सकता है, यह अस्थायी रूप से शरण ले सकता है; लेकिन जीवन हर समय उन बचावों को चुनौती दे रहा है जिन्हें आप अपने चारों ओर इतनी चालाकी से बनाते हैं। आपके विश्वासों, आपकी संपत्तियों, आपके लगाव और सोचने के आरामदायक तरीकों के घर को लगातार तोड़ा जा रहा है। लेकिन मन सुरक्षा की तलाश में रहता है, इसलिए आप क्या चाहते हैं और जीवन की प्रक्रिया आपसे क्या मांग करती है, इसके बीच संघर्ष होता है। हममें से प्रत्येक के साथ यही हो रहा है।

तो मन समय का परिणाम है, यह संघर्ष में, अनुशासन में, नियंत्रण में फंसा हुआ है; और ऐसा दिमाग समय की सीमा से परे क्या है, इसकी खोज करने के लिए कैसे स्वतंत्र हो सकता है? मुझे नहीं पता कि इस समस्या में आपकी कोई दिलचस्पी है या नहीं। रोजमर्रा का अस्तित्व, अपनी सभी परेशानियों के साथ, हममें से अधिकांश के लिए पर्याप्त प्रतीत होता है। हमारी एकमात्र चिंता हमारी विभिन्न समस्याओं का तत्काल उत्तर ढूंढना है। लेकिन देर-सवेर तत्काल उत्तर असंतोषजनक पाए जाते हैं क्योंकि किसी भी समस्या का समस्या के अलावा कोई उत्तर नहीं होता। लेकिन अगर मैं समस्या को, इसकी सभी जटिलताओं को समझ सकता हूं, तो समस्या अब मौजूद नहीं है।

मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि इस दुनिया में बिना किसी संघर्ष के कैसे रहा जाए। हम वह चाहते हैं जिसे हम मन की शांति कहते हैं, जिसका अर्थ है कि हम गहराई से परेशान नहीं होना चाहते हैं। इसीलिए हम मृत्यु, दुःख आदि के बारे में तत्काल उत्तर स्वीकार कर लेते हैं। लेकिन इन समस्याओं को तब तक नहीं समझा जा सकता, न ही संघर्ष का अंत हो सकता है जब तक कि कोई व्यक्ति मन की पूरी प्रक्रिया को समझना शुरू नहीं कर देता। जब आप मन में पूछताछ करना शुरू करते हैं, तो आप अपरिहार्य खोज करेंगे कि मन की सीमाएँ या सीमाएँ उस चीज़ से परिभाषित होती हैं जो पहचानने योग्य है, और मन की इन सीमाओं पर कभी भी हमला नहीं किया जा सकता है, इसलिए विचार कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकते हैं।

विचार केवल आपके अनुभव की प्रतिक्रिया है, स्मृति की प्रतिक्रिया है, और ऐसा विचार कभी भी मुक्त कैसे हो सकता है? स्वतंत्रता का अर्थ, निश्चित रूप से, एक ऐसी अवस्था है जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत; यह अपनी सभी स्मृतियों के साथ अनुभव पर आधारित वातानुकूलित सोच की निरंतरता नहीं है।

तो विचार, जो स्मृति, संचित अनुभव, किसी की विशेष कंडीशनिंग की प्रतिक्रिया है, किसी भी समस्या का समाधान नहीं है; और मुझे लगता है कि हममें से अधिकांश के लिए यह निगलने के लिए एक कड़वी गोली है। विचार कभी भी सीधी उड़ान नहीं भर सकता क्योंकि वह हमेशा प्रभावित होता है, वह हमेशा प्रेरित होता है, आकर्षित होता है और वह आकर्षण हमारे संस्कारों पर, हमारी पृष्ठभूमि पर, हमारी स्मृति पर आधारित होता है। अतः विचार मात्र यांत्रिक है। कृपया श्रीमान्, इसका महत्व अवश्य समझें। मशीनें मानव मस्तिष्क के अधिकाधिक कार्यों को अपने हाथ में लेती जा रही हैं। इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क, जो कुछ क्षेत्रों में आपकी और मेरी तुलना में बहुत बेहतर काम कर सकता है, अनिवार्य रूप से संगति, स्मृति, अनुभव, आदत पर आधारित है, जो मन के तरीके भी हैं; और संगति, स्मृति, अनुभव, आदत के माध्यम से, आप कभी भी उस तक नहीं पहुंच सकते जो मुफ़्त है।

इसलिए, न केवल चेतन या सतही स्तर पर, बल्कि गहरे, अचेतन स्तर पर भी - मन नामक इस असाधारण चीज़ के बारे में, पहचानने योग्य सीमाओं के साथ जागरूक रहना मौलिक महत्व का है।

और क्या यह मन - जो कालानुक्रमिक और मनोवैज्ञानिक दोनों अर्थों में समय का परिणाम है - अपनी सभी माँगों, अपनी सभी भिन्नताओं और प्रभावों के साथ, रचनात्मक हो सकता है? क्योंकि निश्चित रूप से इसकी आवश्यकता है - एक ऐसा दिमाग जो न केवल उत्पादक या आविष्कारशील हो, बल्कि रचनात्मकता की स्थिति में हो जो दिमाग का उत्पाद न हो।

मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। इसमें शामिल होना एक कठिन बात है, और इसका तब तक बहुत कम मतलब होगा जब तक कि आपने आज शाम कही गई बातों का पालन नहीं किया है - इसका पालन किया है, न केवल मौखिक रूप से, बल्कि साथ ही साथ अपने मन को भी देखते हुए।

जिसे हम सोच कहते हैं उसमें हमेशा विचार से अलग एक विचारक होता है, देखे गए से अलग एक पर्यवेक्षक होता है। लेकिन यह विचार ही है जिसने विचारक को जन्म दिया है; विचारक के रूप में कोई इकाई नहीं है जो विचार उत्पन्न करती है। विचार, जो स्मृति की प्रतिक्रिया है, विचारक का निर्माण करता है। यदि कोई सोच नहीं है, तो कोई 'मैं' नहीं है - हालांकि यह उस बात के विपरीत है जो आपको हमेशा बताया गया है। आपने इस विचार को स्वीकार कर लिया है कि एक स्थायी 'मैं' है - जिसे आप आत्मा, उच्च स्व और इसके बाकी सभी भाग कहते हैं - जो विचार उत्पन्न करता है। मेरे लिए यह सरासर बकवास है—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किताबें क्या कहती हैं। आपके लिए मामले की सच्चाई का पता लगाना महत्वपूर्ण है

अपने आप को। जब तक विचारक और विचारक का यह विभाजन है, जब तक एक अनुभवकर्ता है जो अनुभव कर रहा है, तब तक मन पहचानने योग्य सीमाओं के भीतर रहता है और इसलिए सीमित है। यह संचय, लगाव की प्रक्रिया में फंस गया है, और इसलिए निरंतर आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है।

तो मन में अनुभवकर्ता और अनुभवी, पर्यवेक्षक और अवलोकन का यह विभाजन है। इस तथ्य को जानकर और अपनी सीमाओं को पहचानकर, मन स्वयं से परे कैसे जा सकता है?

क्योंकि जब मन स्वयं से परे चला जाता है तभी सृजन होता है।
अनुभवकर्ता और अनुभवी, विचारक और विचारक के क्षेत्र में सृजन नहीं हो सकता, क्योंकि उस क्षेत्र में सब कुछ संघर्ष की स्थिति में है; भ्रम है, दुःख है. जब तक अनुभवकर्ता और अनुभवी, विचारक और विचारक मौजूद हैं, तब तक एक विभाजन है, एक विरोधाभास है, और इसलिए दोनों को एक साथ लाने के लिए, उनके बीच एक पुल बनाने के लिए एक निरंतर संघर्ष है। जब तक वह विभाजन मौजूद है, तब तक मन पहचानने योग्य सीमाओं के भीतर रहता है, और जो पहचाना जाता है वह नया नहीं है। सत्य को पहचाना नहीं जा सकता. जिसे आप पहचानते हैं वह आप पहले से ही जानते हैं, और जो आप जानते हैं वह वह नहीं है।

अब, मन स्वयं को ज्ञात से कैसे मुक्त करे? क्योंकि केवल अज्ञानता की स्थिति में ही सृजन होता है, ज्ञात के क्षेत्र में नहीं। समय का परिणाम होने के कारण, जो ज्ञात है, मन ज्ञात के प्रति कैसे मर सकता है?

महोदय, इसका कोई उत्तर नहीं है, ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिससे आप मन को नया, ताजा, युवा, निर्दोष बना सकें। जब तक मन ज्ञात के क्षेत्र में कार्य कर रहा है, तब तक वह स्वयं को कभी भी नवीनीकृत नहीं कर सकता, वह स्वयं को कभी भी पूर्णतः मुक्त नहीं कर सकता। तो कृपया प्रश्न सुनें, और प्रश्न के बीज को अचेतन में प्रवेश करने दें; तब आपको उत्तर वैसे ही मिलेगा जैसे आप जीते हैं, जैसे आप दैनिक कार्य करते हैं।

मन स्वयं को ज्ञात से कैसे मुक्त करे? केवल ज्ञात से मुक्ति की उस स्थिति में ही सृजन हो सकता है, जिसका अनुवाद आविष्कारशीलता के रूप में, किसी कलाकार की रचनात्मकता के रूप में, यह या वह के रूप में किया जा सकता है - ये सब अप्रासंगिक है, इसका केवल सामाजिक महत्व है। ईश्वर, या सत्य, ज्ञात से मुक्ति की वह अवस्था है; इसका उस राज्य के बारे में आपके विचारों से कोई लेना-देना नहीं है। जो मनुष्य ईश्वर को खोज रहा है उसे ईश्वर कभी नहीं मिलेगा। जो व्यक्ति अनुशासन का पालन करता है, जो पूजा और बाकी सब कुछ करता है, उसे कभी पता नहीं चलेगा कि क्या सच है क्योंकि वह अभी भी ज्ञात के क्षेत्र में काम कर रहा है। ऐसा तभी होता है जब मन अपने द्वारा अनुभव की गई हर चीज़ के प्रति पूरी तरह से मर चुका होता है

ज्ञात से खाली - खाली नहीं, बल्कि खाली, पूर्ण अज्ञातता की भावना के साथ - केवल तभी वास्तविकता अस्तित्व में आती है।

15 फ़रवरी 1959

चौथी वार्ता नई दिल्ली में

आज शाम मैं सुझाव देना चाहूँगा कि हम परिवर्तन और क्रांति के प्रश्न पर बात करें; लेकिन इससे पहले कि हम इसमें उतरें, मुझे लगता है कि व्यक्ति और समाज के संबंध को समझना बहुत महत्वपूर्ण है। समझने वाली पहली बात यह है कि व्यक्ति की समस्याएं, उसके दुख और संघर्ष भी दुनिया के ही हैं। संसार व्यक्ति है; व्यक्ति उस समाज से भिन्न नहीं है जिसमें वह रहता है। इसीलिए, व्यक्ति के आमूल-चूल परिवर्तन के बिना, समाज एक बोझ बन जाता है, एक गैरजिम्मेदार निरंतरता जिसमें व्यक्ति महज एक पुर्जा मात्र है।

यह सोचने की प्रबल प्रवृत्ति है कि आधुनिक समाज में व्यक्ति का बहुत कम महत्व है, और व्यक्ति को नियंत्रित करने, प्रचार के माध्यम से, प्रतिबंधों के माध्यम से, जन संचार के विभिन्न माध्यमों के माध्यम से उसके विचारों को आकार देने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। व्यक्ति स्वयं आश्चर्यचकित होता है कि वह उस समाज में क्या कर सकता है जो इतना बोझिल है, जो उस पर पहाड़ के समान भार रखता है, और वह लगभग असहाय महसूस करता है। भ्रम, गिरावट, युद्ध, भुखमरी और दुख के इस समूह का सामना करते हुए, व्यक्ति अस्वाभाविक रूप से खुद से यह सवाल नहीं पूछता है, "मैं क्या कर सकता हूं?" और मुझे लगता है कि इस प्रश्न का उत्तर यह है कि वह कुछ नहीं कर सकता, जो एक स्पष्ट तथ्य है। वह किसी युद्ध को नहीं रोक सकता, वह भुखमरी को ख़त्म नहीं कर सकता, वह धार्मिक कट्टरता, या राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक प्रक्रिया, उसके सभी संघर्षों पर रोक नहीं लगा सकता।

इसलिए मुझे लगता है कि ऐसा प्रश्न पूछना स्वाभाविक रूप से गलत है। व्यक्ति का उत्तरदायित्व समाज के प्रति नहीं, बल्कि स्वयं के प्रति है। और यदि वह स्वयं के प्रति जिम्मेदार है, तो वह समाज पर कार्य करेगा-लेकिन इसके विपरीत नहीं। जाहिर है कि व्यक्ति इस सामाजिक भ्रम के बारे में कुछ नहीं कर सकता, लेकिन जब वह अपने स्वयं के भ्रम, अपने आत्म-विरोधाभास, अपनी हिंसा और भय को दूर करना शुरू कर देता है, तो ऐसे व्यक्ति का समाज में असाधारण महत्व होता है। मुझे लगता है कि हममें से बहुत कम लोगों को इसका एहसास है। यह देखते हुए कि हम विश्व स्तर पर कुछ भी नहीं कर सकते, हम हमेशा कुछ भी नहीं करते हैं, जो वास्तव में एक है

अपने भीतर के उस कार्य से बचें जो आमूल-चूल परिवर्तन लाएगा।

इसलिए मैं आपसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के रूप में बात कर रहा हूं। हम भारतीय या अमेरिकी या रूसी या चीनी या किसी विशेष समूह के सदस्य के रूप में एक दूसरे के साथ संवाद नहीं कर रहे हैं। हम दो इंसानों के तौर पर बात कर रहे हैं, एक आम आदमी और एक विशेषज्ञ के तौर पर नहीं। अगर हमारे बीच इतना स्पष्ट है तो हम आगे बढ़ सकते हैं।'

व्यक्ति का स्पष्ट रूप से समाज में सबसे बड़ा महत्व है क्योंकि केवल व्यक्ति ही रचनात्मक गतिविधि करने में सक्षम है, जन समूह नहीं - और मैं वर्तमान में समझाऊंगा कि रचनात्मक शब्द से मेरा क्या मतलब है। अगर आप इस तथ्य को देखेंगे तो आपको यह भी एहसास होगा कि आप अपने आप में क्या हैं, इसका महत्व सबसे ज्यादा है। आपकी सोचने की क्षमता, संपूर्णता के साथ कार्य करने की क्षमता, एक ऐसे एकीकरण के साथ जिसमें कोई आत्म-विरोधाभास न हो - इसका बहुत बड़ा महत्व है।

हम देखते हैं कि यदि दुनिया में कोई वास्तविक परिवर्तन होना है - और वास्तविक परिवर्तन होना ही चाहिए - तो व्यक्तिगत रूप से आपको और मुझे खुद को बदलना होगा। जब तक हममें से प्रत्येक में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं होता, जीवन एक अंतहीन नकल बन जाता है, जो अंततः ऊब, हताशा और निराशा की ओर ले जाता है।

अब, परिवर्तन से हमारा क्या तात्पर्य है? निश्चय ही, मजबूरी में किया गया परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं होता। अगर मैं इसलिए बदलता हूं क्योंकि समाज मुझे बदलने के लिए मजबूर करता है, तो यह महज सुविधा के अनुसार एक समायोजन है, दबाव, भय के कारण लाई गई अनुरूपता है।

हममें से अधिकांश लोग केवल मजबूरी में, डर के कारण, किसी प्रकार के पुरस्कार या दंड के माध्यम से बदलते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह वास्तविक तथ्य है। और जब हमें बदलने के लिए मजबूर किया जाता है, तो यह केवल एक बाहरी अनुरूपता है, जबकि आंतरिक रूप से हम वही रहते हैं। मैं बदल सकता हूं क्योंकि मेरा परिवार या जिस समाज में मैं रहता हूं वह मुझे ऐसा करने के लिए प्रभावित करता है, या क्योंकि सरकार की आवश्यकता है कि मैं एक निश्चित तरीके से कार्य करूं; लेकिन यह केवल एक समायोजन है, यह परिवर्तन नहीं है, और अंदर से मैं अभी भी लालची, ईर्ष्यालु, महत्वाकांक्षी, निराश, दुखी, भयभीत हूं। मैं बाह्य रूप से एक नये पैटर्न के अनुरूप हो गया हूँ; मैं अपने भीतर मौलिक रूप से नहीं बदला हूं। और क्या एक इंसान के रूप में मेरे लिए निरंतर परिवर्तन, क्रांति की स्थिति में रहना संभव है, जो किसी मजबूरी या इनाम के वादे का परिणाम नहीं है?

निश्चित रूप से, मैं मजबूरी, डर, नकल या इनाम के कारण जो कुछ भी करता हूं वह समय के दायरे में होता है, और यह आदत पैदा करता है। जब तक आदत स्थापित नहीं हो जाती तब तक मैं एक ही काम को बार-बार करता हूं और यह आदत समय के दायरे में है। इसलिए

समय के क्षेत्र में कोई वास्तविक परिवर्तन, कोई क्रांति नहीं हो सकती; वहां केवल समायोजन, अनुरूपता, अनुकरण, आदत ही हो सकती है। परिवर्तन के लिए अनुकरण, अनुरूपता में निहित सभी चीजों की समग्र धारणा या जागरूकता की आवश्यकता होती है, और यह समग्र धारणा मन को मौलिक रूप से बदलने के लिए मुक्त करती है। मैं इसे सिर्फ आपके सामने पेश कर रहा हूं, ताकि आप और मैं मिलकर इस पर विचार कर सकें।

जैसा कि मैंने कहा, मजबूरी के माध्यम से किसी भी प्रकार का परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है, जो मुझे लगता है कि काफी स्पष्ट है। यदि आप अपने बच्चे को कुछ करने के लिए मजबूर करते हैं, तो वह डर के कारण ऐसा करेगा, लेकिन इसमें क्या शामिल है इसकी कोई समझ नहीं है, कोई समझ नहीं है। जब कार्य भय से उत्पन्न होता है तो बाहरी तौर पर यह बदलाव प्रतीत हो सकता है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं होता है।

अब आइए जानें कि क्या मन को समझना और भय से मुक्त करना संभव है ताकि बिना प्रयास के बदलाव हो सके। परिवर्तन के सभी प्रयासों का तात्पर्य एक प्रलोभन है, क्या ऐसा नहीं है? जब मैं बदलने का प्रयास करता हूं, तो यह हासिल करने, बचने या कुछ बनने के लिए होता है; इसलिए, कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं हुआ है। मेरा मानना है कि यदि कोई मूलभूत परिवर्तन लाना है तो इस तथ्य को हममें से प्रत्येक को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए।

यदि हम संपन्न हैं और हमारे पास अच्छी नौकरी है, यदि हम काफी संपन्न हैं, तो हममें से अधिकांश संतुष्ट हैं और कुछ भी बदलाव नहीं चाहते हैं; हम जैसे हैं वैसे ही चलते रहना चाहते हैं। हम एक खास आदत, एक खास आरामदायक खांचे में फंस गए हैं और हम अंतहीन सीमा की उस स्थिति में बने रहना चाहते हैं। लेकिन जीवन की लहर उस तरह से काम नहीं करती है, यह हमेशा टकराती रहती है और सुरक्षा की दीवारों को तोड़ती रहती है जो हमने अपने चारों ओर बनाई हैं।

मनोवैज्ञानिक और शारीरिक रूप से सुरक्षित रहने की हमारी इच्छा को जीवन की हलचल से लगातार चुनौती मिल रही है, जो एक बेचैन समुद्र की तरह हमेशा किनारे पर टकराता रहता है। और कोई भी चीज़ उस तेज़ प्रहार का सामना नहीं कर सकती; चाहे कोई व्यक्ति आंतरिक सुरक्षा से कितना भी चिपका रहे, जीवन उसे लंबे समय तक अस्तित्व में नहीं रहने देगा। इसलिए जीवन की गति और सुरक्षित रहने की हमारी इच्छा के बीच विरोधाभास है; और इससे भय अपने सभी विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। अगर हम डर को समझ सकें, तो शायद उस समझ की प्रक्रिया में ही डर खत्म हो जाएगा और इसलिए बिना किसी प्रयास के एक बुनियादी बदलाव आ जाएगा।

डर क्या है? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं. हम अब इसकी जांच करने जा रहे हैं, लेकिन यदि आप केवल मौखिक रूप से कही गई बातों का पालन करते हैं और अपने डर के बारे में नहीं जानते हैं, तो आप समझ नहीं पाएंगे और डर से मुक्त नहीं होंगे।

आख़िरकार, इन बैठकों का उद्देश्य न केवल आपको उत्तेजित करना है बल्कि मन की गुणवत्ता में बदलाव लाने में मदद करना है। वह वहीं है

मन की गुणवत्ता में ही एक क्रांति होनी चाहिए। और वह क्रांति तभी घटित हो सकती है जब आप अपने डर के प्रति जागरूक हों और उसे सीधे देखने में सक्षम हों।

डर एक दुखद, भयानक चीज़ है और यह हमेशा हममें से अधिकांश लोगों के साथ छाया की तरह चलता रहता है। किसी को इसके बारे में पता नहीं हो सकता है, लेकिन गहराई से यह मौजूद है: मौत का डर, विफलता का डर, नौकरी खोने का डर, पड़ोसी क्या कहेंगे इसका डर, किसी की पत्नी या पति का डर, और जल्द ही। ऐसे भय हैं जिनके बारे में कोई सचेत है, और ऐसे भय हैं जिनके बारे में कोई अनजान है। मैं डर के किसी विशेष रूप के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि डर की पूरी भावना के बारे में बात कर रहा हूं, क्योंकि जब तक मन डर की सभी भावनाओं से मुक्त नहीं होता है, यानी इसे ढंकना नहीं है, तब तक विचार स्पष्टता के साथ, धारणा के साथ काम नहीं कर सकता है; हमेशा आशंका, भ्रम रहता है। इसलिए व्यक्ति के लिए भय के सभी रूपों से मुक्त होना नितांत आवश्यक है।

अब डर कैसे पैदा होता है? जब आप वास्तव में तथ्य का सामना करते हैं तो क्या डर होता है? कृपया इसका बारीकी से पालन करें। आइए हम कहें, जब आप मृत्यु के तथ्य का सामना करते हैं तो क्या डर होता है? निश्चित रूप से, जब आप सीधे तथ्य से रूबरू होते हैं, तो कोई डर नहीं होता क्योंकि उस क्षण चुनौती आपसे कार्रवाई की मांग करती है और आप प्रतिक्रिया देते हैं, आप कार्रवाई करते हैं। भय घटना के पहले या बाद में ही उत्पन्न होता है। मुझे भविष्य में मृत्यु का भय है। मुझे डर है कि अगर मैं बीमार हो गया तो क्या होगा—कहीं मेरी नौकरी न चली जाए। या मैं यह सोच कर डर जाता हूँ कि क्या हो चुका है, या क्या होने वाला है। तो मेरा डर हमेशा अतीत या भविष्य से जुड़ा होता है, यह हमेशा समय के दायरे में होता है, है न? डर अतीत के बारे में मेरी सोच और भविष्य के बारे में मेरी सोच का परिणाम है। अगर आप बहुत ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि वर्तमान का कोई डर नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि जब वर्तमान के बारे में पूर्ण जागरूकता होती है, तो न तो अतीत मौजूद होता है और न ही भविष्य। मुझे नहीं पता कि मैं इस मुद्दे पर खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं।

यह जानते हुए कि मैं भविष्य में मरूंगा, मैं मृत्यु से डरता हूं, कि क्या होने वाला है। मैंने अतीत में मृत्यु देखी है, और इससे मेरे मन में भविष्य में क्या होने वाला है इसका भय जागृत हो गया है। इसलिए मेरा दिमाग कभी भी वर्तमान के बारे में पूरी तरह से जागरूक नहीं होता है - जिसका मतलब यह नहीं है कि मुझे वर्तमान में बिना सोचे-समझे जीना चाहिए। मैं वर्तमान के बारे में जागरूकता के बारे में बात कर रहा हूं जो अतीत के भय या भविष्य के भय से दूषित नहीं है, और इसलिए असीमित है।

इसे समझना बहुत कठिन है जब तक कि आप स्वयं अनुभव न कर लें कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ - या यूँ कहें कि, जब तक आप भय के वास्तविक उद्भव को नहीं देख लेते। डर तभी अस्तित्व में आता है जब विचार अतीत में स्मृति के रूप में, या भविष्य में प्रत्याशा के रूप में पकड़ा जाता है। अतः समय भय का कारक है, और

जब तक मन समय से मुक्त नहीं हो जाता, तब तक भय को जड़ से मिटाया नहीं जा सकता। यह जटिल लगता है, लेकिन ऐसा नहीं है। हम डर का विरोध करने, उसके ख़िलाफ़ ख़ुद को अनुशासित करने के आदी हैं। हम कहते हैं कि हमें अतीत या भविष्य के बारे में नहीं सोचना चाहिए, कि हमें केवल वर्तमान में जीना चाहिए; इसलिए, हम अतीत और भविष्य के खिलाफ प्रतिरोध की दीवार बनाते हैं और वर्तमान का सर्वोत्तम उपयोग करने का प्रयास करते हैं, जो कि जीने का एक बहुत ही उथला तरीका है। यदि यह स्पष्ट है, तो आइए डर की पूरी प्रक्रिया पर फिर से नजर डालें।

भयभीत होने के कारण, मैं भय का समाधान कैसे करूँ? मैं डर का विरोध कर सकता हूं, मैं उससे बच सकता हूं; लेकिन प्रतिरोध और पलायन से डर नहीं मिटता। तो फिर मैं डर से कैसे निपटूं, बिना प्रयास के इसे कैसे समझूं और इसका समाधान कैसे करूं? जिस क्षण मैं डर से मुक्त होने का प्रयास करता हूं, मैं इच्छाशक्ति का प्रयोग कर रहा हूं, जो प्रतिरोध का एक रूप है, और प्रतिरोध समझ नहीं लाता है। इसलिए प्रयास की यह आदत अवश्य ही ख़त्म होनी चाहिए - यह पहली चीज़ है जिसे मुझे महसूस करना है। मेरा मन डर की निंदा करने, उसका विरोध करने की आदत में फंस गया है, जो डर को समझने से रोकता है। अगर मैं डर को समझना चाहता हूं, तो उस विशेष भावना के संबंध में कोई प्रतिरोध, कोई रक्षा-तंत्र काम नहीं करना चाहिए जिसे मैं डर कहता हूं। और फिर क्या होता है? क्या होता है जब मन किताबें पढ़ने, रेडियो सुनने और भागने के विभिन्न अन्य तरीकों से, जिनसे हम सभी परिचित हैं, डर का विरोध करने या डर से भागने की आदत से मुक्त हो जाता है? तब, निश्चित रूप से, मन उस भावना को सीधे देखने में सक्षम होता है जिसे वह डर कहता है।

अब, क्या मन किसी चीज़ को बिना नाम लिए देख सकता है? क्या मैं किसी फूल को, पानी पर चाँदनी को, किसी कीड़े को, किसी भावना को देख सकता हूँ, बिना शब्दों में कहे, बिना नाम दिए? क्योंकि शब्दबद्ध करना, जो समझा जाता है उसे एक नाम देना, समझने से ध्यान भटकाना है, है ना?

कृपया, महोदय, मुझे आशा है कि आप वास्तव में ऐसा कर रहे हैं, यह पता लगाने के लिए प्रयोग कर रहे हैं कि क्या आप अपने डर को उसका नाम लिए बिना देख सकते हैं। क्या आप किसी फूल को बिना नाम दिए, बिना यह कहे देख सकते हैं, "यह प्यारा है।" यह पीला है। मुझे वह फूल पसंद है. मुझे वह फूल पसंद नहीं है"—जब आप किसी चीज़ को देखते हैं तो मन की सारी बकबक के बिना जो क्रियाशील होती है? इसे आज़माएं और आप पाएंगे कि यह करना सबसे कठिन कामों में से एक है। मन की यह बकबक, निंदा या प्रशंसा के संदर्भ में यह शब्दाडंबर, एक आदत है जो प्रत्यक्ष धारणा को रोकती है।

तो अब आप अपने डर से अवगत हैं; तुम्हें पता है कि तुम डरे हुए हो. क्या आप इसे निंदा या स्वीकृति के बिना देख सकते हैं? क्या आप इसे डर शब्द के फोकस से देख रहे हैं , या क्या आप शब्द के बिना उस भावना से अवगत हैं?

महोदय, आइए एक और उदाहरण लेते हैं। हममें से अधिकांश लोग मूर्तिपूजक हैं - जिसका अर्थ है कि यह प्रतीक असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। हम न केवल हाथ से बनी मूर्ति की पूजा करते हैं, बल्कि विचार से निर्मित आदर्श की भी पूजा करते हैं। अब, मूर्तिपूजक मन स्वतंत्र मन नहीं है। मूर्तिपूजक मन कभी भी स्पष्ट रूप से, प्रत्यक्ष रूप से नहीं सोच सकता। जिस व्यक्ति के पास कोई आदर्श होता है वह स्पष्टतः बहुत विचारशील नहीं होता। मैं जानता हूं कि आदर्श रखना फैशन है; यह वास्तविक तथ्य से सम्मानजनक पलायन है, और इसीलिए आदर्श अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। लेकिन उदाहरण के लिए, चाहे आप अहिंसा के आदर्श का कितना भी अनुसरण करें, वास्तविक तथ्य यह है कि आप हिंसक हैं।

अतः आदर्शवादी मन मूर्तिपूजक है; हिंसक होने के कारण, यह अहिंसा के आदर्श की पूजा करता है और इस प्रकार आत्म-विरोधाभास की स्थिति में रहता है। अहिंसा का आदर्श अपनी ही हिंसा के विरुद्ध मन की प्रतिक्रिया मात्र है; और यदि इसे दोनों से मुक्त होना है, तो मन को अपनी हिंसा के तथ्य के प्रति जागरूक होना चाहिए, लेकिन विपरीत के संबंध में नहीं, जिसे वह अहिंसा कहता है। तब कोई हिंसा को देख सकता है, उसे अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ देख सकता है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि इसकी निंदा की जाए या यह कहा जाए कि यह जीवन में अपरिहार्य है।

अब, क्या आप उस तरह से अपने डर से अवगत हैं? क्या आप शब्द के बिना होने वाली अनुभूति से अवगत हैं? यानी, क्या आप भावना को बिना बोले देख सकते हैं, जो वास्तव में अपना पूरा ध्यान भावना पर देना है, है ना? तब आपके और जो देखा जा रहा है उसके बीच कोई व्याकुलता, कोई मौखिक स्क्रीन नहीं होती है। यह निश्चित रूप से सच्ची धारणा है - जब मन बकबक नहीं कर रहा है, बल्कि तथ्य को पूरी तरह से देखता है, बीच में कोई शब्द आए बिना।

शब्दों के बिना भय का यह अवलोकन अपने आप में अनुशासन है; यह मन पर थोपा गया अनुशासन नहीं है। मुझे आशा है कि यह स्पष्ट है क्योंकि इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। भय का अवलोकन ही अनुशासन है। निरीक्षण करने के लिए आपको अनुशासन का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। निरीक्षण करने के लिए अनुशासन का प्रयोग अवलोकन को रोकता है; यह धारणा को अवरुद्ध करता है। लेकिन जब आप निरीक्षण के लिए मन को अनुशासित करने की मिथ्या देखते हैं, तो वही धारणा अपना अनुशासन लाती है।

यदि आप कुछ समझना चाहते हैं, यदि आप डर को समझना चाहते हैं, तो आपको स्पष्ट रूप से अपना पूरा ध्यान उस पर देना होगा। यह मत कहो, "मैं अनुशासन के बिना अपना पूरा ध्यान कैसे लगा सकता हूँ?" यह एक गलत प्रश्न है जिसका गलत उत्तर मिलेगा। सबसे पहले इस सच्चाई को देखें कि अपने डर को समझने के लिए, आपको उस पर अपना पूरा ध्यान देना होगा, और जब तक आप डर से दूर भागते हैं या उसकी निंदा करते हैं, तब तक उस पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकता है। यह निंदा और पलायन एक आदत है जिसमें आप पड़ गए हैं, और इस आदत को किसी भी अनुशासन से नहीं मिटाया जा सकता है। केवल आदत को मिटाने के लिए मन को अनुशासित करना

एक और आदत बनाता है. लेकिन बिना किसी शब्दाडंबर के, बिना निंदा या औचित्य के भय का अवलोकन करने में, पल-पल एक सहज अनुशासन होता है - जिसका अर्थ है कि मन अनुशासन की आदत से मुक्त है।

मुझे आश्चर्य है कि आपमें से कितने लोग यह सब अनुसरण कर रहे हैं? शायद आप दिन के अंत में सचेत रूप से इसका पालन करने के लिए बहुत थके हुए हैं, लेकिन यदि आप सुनने के सचेत प्रयास के बिना बस सुनते हैं, तो मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि सुनना अपने आप में एक आश्चर्यजनक बात है। अगर तुम ठीक से सुनो तो चमत्कार घटित हो जाता है। जो व्यक्ति बिना प्रयास के सुनना जानता है वह उस व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक सीखता है जो सुनने का प्रयास करता है। जब कोई सहजता से, सहजता से सुनता है, तो मन देख सकता है कि क्या सच है और क्या झूठ; यह असत्य में सत्य को देख सकता है। इसलिए जो कहा जा रहा है उसे सुनें, भले ही आप प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सचेत रूप से इसका पालन करने में सक्षम न हों। आख़िरकार, मनुष्य की गहरी, मौलिक प्रतिक्रियाएँ गुमनाम हैं। ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें कुछ बता रहा हूं जिसे तुम समझ जाओगे, बल्कि जब मन सुनने की स्थिति में होता है तो एक समझ पैदा होती है जो न तो तुम्हारी है और न ही मेरी; और यह सहज समझ ही है जो मौलिक क्रांति लाती है।

पीछे जाएं तो, डर केवल समय के दायरे में ही मौजूद होता है, जहां कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता बल्कि केवल प्रतिक्रिया होती है। उदाहरण के लिए, साम्यवाद पूंजीवाद की प्रतिक्रिया है, जैसे बहादुरी भय की प्रतिक्रिया है। जहाँ स्वतंत्रता है, अर्थात् भय का अभाव है, वहाँ एक ऐसी अवस्था है जिसे वीरता नहीं कहा जा सकता। यह बुद्धि की अवस्था है. वह बुद्धि बिना किसी डर के समस्याओं का सामना कर सकती है, और इसलिए उन्हें समझ सकती है। जब भयभीत मन किसी समस्या का सामना करता है, तो वह जो भी कदम उठाता है वह समस्या को और अधिक उलझा देता है।

अत: मन को मुक्त करना बुद्धि का कार्य है। बुद्धिमत्ता की कोई परिभाषा नहीं है, और यदि आप केवल एक परिभाषा का अनुसरण करते हैं, तो आप बुद्धिमान नहीं होंगे। लेकिन यदि आप चरण-दर-चरण यह पता लगाना शुरू करते हैं कि आप किससे और क्यों डरते हैं, तो आप निश्चित रूप से पाएंगे कि प्रेक्षक और प्रेक्षित के बीच एक विभाजन है। कृपया इसका थोड़ा पालन करें महोदय; मैं इसे केवल अलग ढंग से रख रहा हूं।

एक पर्यवेक्षक है जो कहता है, "मुझे डर लगता है," और जो उस भावना से अलग है जिसे वह डर कहता है। यदि, उदाहरण के लिए, मुझे डर है कि पड़ोसी क्या कहेंगे, तो डर की भावना होती है और 'मैं' जो अनुभवकर्ता है, उस भावना का पर्यवेक्षक है। जब तक प्रेक्षक और दृश्य के बीच, डरने वाले 'मैं' और डरने की भावना के बीच यह विभाजन है, तब तक डर का कोई अंत नहीं हो सकता। भय का अंत

ऐसा तभी होता है जब आप डर की पूरी प्रक्रिया का बहुत सावधानी से विश्लेषण और जांच करना शुरू करते हैं, और खुद को पता चलता है कि पर्यवेक्षक देखे गए से अलग नहीं है। डर इसलिए है क्योंकि देखने वाला अपने आप में डरा हुआ है, इसलिए यह किसी खास चीज के डर से मुक्त होने की बात नहीं है।

किसी चीज़ के भय से मुक्ति एक प्रतिक्रिया है और इसलिए स्वतंत्रता नहीं है। जब मैं क्रोध से मुक्त हो जाता हूं, तो वह स्वतंत्रता केवल क्रोध की प्रतिक्रिया है, और इसलिए वह स्वतंत्रता नहीं है। जब मैं हिंसा से मुक्त हो जाता हूं, तो वह स्वतंत्रता फिर से हिंसा की प्रतिक्रिया मात्र होती है। एक आज़ादी है जो किसी चीज़ से आज़ादी नहीं है, और जो बुद्धिमत्ता का उच्चतम रूप है, लेकिन वह आज़ादी तभी अस्तित्व में आ सकती है जब कोई डर के इस पूरे प्रश्न में बहुत गहराई से जाता है।

अब, आइए एक और समस्या पर नजर डालें, जो यह है: हमारे पास आदर्श क्यों हैं? क्या यह समय की बर्बादी नहीं है? क्या आदर्श इस धारणा को नहीं रोकते कि वास्तव में क्या है? मैं जानता हूं कि आपमें से अधिकांश के पास आदर्श हैं: कुलीनता का आदर्श, शुद्धता का आदर्श, अहिंसा का आदर्श और भी बहुत कुछ। क्यों? क्या वे वास्तव में जो कुछ है उससे छुटकारा पाने में आपकी मदद करते हैं ? आइए हम कहें, मैं लोभी, जिज्ञासु, ईर्ष्यालु हूं और मेरे पास त्याग का आदर्श है। अब, मुझे वह आदर्श क्यों रखना चाहिए? हम कहते हैं कि आदर्श आवश्यक है क्योंकि यह एक लीवर के रूप में, लोभ से छुटकारा पाने के साधन के रूप में कार्य करेगा। लेकिन क्या ऐसा है? निश्चित रूप से, मन लालच से, या जो भी हो, तभी मुक्त हो सकता है, जब वह स्वयं को समस्या पर लागू करता है, न कि तब जब वह किसी आदर्श से विचलित हो। इसीलिए मैं कहता हूं कि आदर्श बिल्कुल बकवास है। हिंसक होने के कारण, मन अहिंसा के आदर्श का अनुसरण करता है, जो हिंसा के वास्तविक तथ्य से बचने का एक विशाल तंत्र है। यह एक आत्म-धोखा है. इसकी कोई वैधता ही नहीं है. जो वैधता है वह हिंसा है और इसकी जांच करने की क्षमता है। अहिंसा के आदर्श को आगे बढ़ाने के लिए हर समय अपने भीतर हिंसक न होने के लिए संघर्ष करना हिंसा का ही दूसरा रूप है।

तो जो मायने रखता है वह आदर्श नहीं है, बल्कि तथ्य और तथ्य का सामना करने की आपकी क्षमता है। जब तक आपके पास कोई आदर्श है, तब तक आप अपने क्रोध, अपनी हिंसा के तथ्य का सामना नहीं कर सकते क्योंकि आदर्श काल्पनिक है, भ्रामक है; इसकी कोई वास्तविकता नहीं है. अपनी हिंसा को समझने के लिए, आपको अपना पूरा ध्यान उस पर देना होगा, और यदि आपके पास कोई आदर्श है तो आप अपना पूरा ध्यान उस पर नहीं दे सकते। आदर्शवाद हमारी एक आदत है और भारत इस आदत में डूबता जा रहा है।

"वह एक नेक आदमी है; उनके पास आदर्श हैं और वे उनके अनुरूप हैं"—आप जानते हैं कि हम कितनी बकवास बातें करते हैं। साधारण तथ्य यह है कि हम हिंसक हैं, और केवल तभी जब हम अपनी हिंसा को बिना किसी औचित्य या निंदा के देखते हैं तभी हम इसमें जा सकते हैं। जिस क्षण किसी का दिमाग हिंसा को उचित ठहराना या निंदा करना बंद कर देता है, वह पहले से ही हिंसा की संरचना की जांच करने के लिए स्वतंत्र होता है।

भय स्वयं को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करता है। न केवल निराशा के रूप में भय है, बल्कि आशा के रूप में भी भय है, और हममें से अधिकांश लोग इन दोनों के बीच की खाई में फंसे हुए हैं। निराशा में होने के कारण, हम आशा की ओर दौड़ते हैं; लेकिन अगर हम डर की पूरी प्रक्रिया को समझने लगें, तो न तो आशा है और न ही निराशा।

महोदय, मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी सद्गुणों को उसकी सीमा तक आगे बढ़ाने और बिना स्वीकृति या अस्वीकृति के उसका परीक्षण करने का प्रयास किया है। कभी-कभी इसे आज़माएं - सद्गुण को उचित ठहराए बिना या उसकी निंदा किए बिना उसका अनुसरण करने और उसे देखने का प्रयास करें, और आप पाएंगे कि आप सद्गुण की समझ में एक ऐसे बिंदु पर आ गए हैं जो केवल एक सामाजिक सुविधा या आदर्शवादी पैटर्न के अनुरूप नहीं है। आप एक ऐसे बिंदु पर आएँगे जब मन सद्गुण के पूरे विचार से मुक्त हो जाएगा, और इसलिए शून्यता की स्थिति का सामना करेगा।

पुनः, महोदय, सहमत या असहमत होने से पहले कृपया सुनें; बस सुनो, और चलो
शब्द आपके अचेतन में डूब जाते हैं।

मन इस समय विचारों से अव्यवस्थित है, है न? मन अनुभव का परिणाम है; मन भयभीत है; यह आशा और निराशा, लालच और गैर-लालच के आदर्श को जानता है। समय का परिणाम होने के कारण, मन केवल समय के क्षेत्र के भीतर ही कार्य कर सकता है, और उस क्षेत्र के भीतर कोई परिवर्तन नहीं होता है। वहां परिवर्तन केवल अनुकरण या प्रतिक्रिया है, और इसलिए यह कोई क्रांति नहीं है।

अब, यदि मन अपने आप में अधिक से अधिक गहराई तक धकेल सकता है, तो आप पाएंगे कि यह एक बिंदु पर आता है जब पूर्ण शून्यता, पूर्ण शून्यता होती है, जो निराशा का शून्य नहीं है। आशा और निराशा दोनों ही भय के परिणाम हैं, और जब आप भय का गहराई से पीछा करते हैं और उससे परे चले जाते हैं, तो आप शून्यता की इस स्थिति में आ जाएंगे, पूर्ण शून्यता की भावना जिसका निराशा से कोई लेना-देना नहीं है। केवल इस अवस्था में ही मन की गुणवत्ता में क्रांति, आमूल-चूल परिवर्तन होता है।

लेकिन शून्यता की यह स्थिति कोई आदर्श नहीं है जिसका अनुसरण किया जाए। इसका दिमाग के आविष्कारों से कोई लेना-देना नहीं है. मन इसे समझ नहीं सकता, क्योंकि यह बहुत विशाल है। लेकिन मन जो कर सकता है वह है अपने आप को अपनी सारी बकवास से, अपनी सारी क्षुद्रताओं से, अपनी सारी मूर्खताओं से, अपनी ईर्ष्या, लालच, भय से मुक्त करना।

जब मन शांत होता है, तो पूर्ण शून्यता की भावना अस्तित्व में आती है जो विनम्रता का सार है। तभी मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन होता है, और ऐसा मन ही रचनात्मक होता है।

18 फ़रवरी 1959

पांचवी वार्ता नई दिल्ली में

आज शाम मैं इस बारे में बात करना चाहूंगा कि भ्रम क्या है और स्पष्टता क्या है। लेकिन इससे पहले कि हम उस पर जाएं, मुझे लगता है कि हमें खुद ही यह समझ लेना चाहिए कि इन वार्ताओं का इरादा क्या है। यह बहुत अफ़सोस की बात होगी अगर हम केवल अपनी समस्याओं का उत्तर ढूंढने के लिए सुनें। जैसा कि मैंने अक्सर बताया है, और मुझे आशा है कि अगर मैं इसे दोबारा कहूं तो आप बुरा नहीं मानेंगे, केवल समस्या है, कोई उत्तर नहीं है; क्योंकि समस्या की समझ में ही उसका समाधान निहित है।

इसलिए मुझे लगता है कि उत्तर खोजने या निर्देश प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि सुनने की प्रक्रिया में ही भ्रम और स्पष्टता के बारे में सच्चाई की खोज करना बुद्धिमानी होगी।

हममें से अधिकांश लोग विवरण से, उत्तर से, स्पष्टीकरण से संतुष्ट हैं और सोचते हैं कि हमें अपनी समस्याओं का समाधान मिल गया है। यही कारण है कि हम दोहराने, उद्धृत करने, समझाने, सूत्रबद्ध करने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं। लेकिन मेरे लिए ये सभी चीजें समझने में बाधाएं हैं। एक व्यक्ति जो उद्धरण देता है वह स्पष्ट रूप से स्पष्ट सोच में असमर्थ है। वह अपने विचार के लिए प्राधिकार पर निर्भर रहता है।

लेकिन भले ही दुनिया में हर तरह का अधिकार है जो मनुष्य को एक विशेष दिशा में ले जाना चाहता है, ऐसे अधिक से अधिक व्यक्ति हैं जो समस्या से अवगत हैं, और जिन्होंने न केवल अधिकार को त्याग दिया है बल्कि अपने लिए संपूर्ण की खोज करने का प्रयास कर रहे हैं। जीने का महत्व.

अब, या तो हम जीवन को एक अर्थ देते हैं, या हम जी रहे हैं। वह व्यक्ति जो जीवन को एक अर्थ देता है, जो वह खोजता है जिसे वह जीवन का लक्ष्य कहता है, वह स्पष्ट रूप से जीवित नहीं है। वह अस्तित्व और जीवन के तथ्य से भी अधिक महत्वपूर्ण कुछ खोजना चाहता है, इसलिए वह एक यूटोपिया बनाता है, जीवन कैसा होना चाहिए इसका एक काल्पनिक सूत्रीकरण, और उस सूत्र के अनुसार वह अपने जीवन का मार्गदर्शन करता है।

यह बिल्कुल वही है जो मैं करने का प्रस्ताव नहीं रखता। हमारे पास असंख्य समस्याएं हैं, उनमें से कुछ काफी दमघोंटू हैं, और उन्हें किसी विशेष दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया के हिस्से के रूप में समझा जाना चाहिए। ऐसे लोग हैं जो जीवन की समस्याओं को समझते हैं और जो उन्हें धार्मिक या राजनीतिक-आर्थिक, कुछ निश्चित मान्यताओं और हठधर्मिता के अनुसार हल करना चाहते हैं; वे मनुष्य के अस्तित्व की विसंगतियों और भयावहताओं को केवल उस संकीर्ण दृष्टिकोण से देखते हैं, और वे सोचते हैं कि किसी प्रकार के विश्वास या कानून के माध्यम से वे दुनिया में परिवर्तन ला सकते हैं। और ऐसे वैज्ञानिक भी हैं जो केवल पदार्थ की खोज और आकाश में ऊपर की ओर जाने से चिंतित हैं। ये सभी लोग अस्तित्व की समस्याओं को एक विशेष दृष्टिकोण से देख रहे हैं, क्या ऐसा नहीं है? वे सभी जीवन की प्रक्रिया को खंडों में विभाजित कर रहे हैं। लेकिन जीना, निश्चित रूप से, एक संपूर्ण प्रक्रिया है; यह विभागीय मामला नहीं है

व्यवहार। वर्तमान समय में व्यक्ति सरकार में कुछ और है और निजी जीवन में कुछ और; वह एक अर्थशास्त्री या कम्युनिस्ट या व्यापारी है, और इसका वास्तविकता के प्रति उसकी भूख, मृत्यु की सच्चाई, ध्यान, जीवन से जुड़ी सभी असाधारण चीजों का पता लगाने की उसकी लालसा से कोई लेना-देना नहीं है।

इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत अफ़सोस की बात होगी अगर आप एक व्यक्ति के रूप में यह सब खंडित दिमाग से, आंशिक या विशिष्ट दिमाग से सुनें।
जीवन खंडित नहीं है, और इसे समग्रता से, संपूर्णता से और यथासंभव गहराई से देखा जाना चाहिए।

मुझे ऐसा लगता है कि जो महत्वपूर्ण है, वह है जीवन के इस विशाल महासागर को उसकी अथाह सुंदरता और वास्तविकता, उसके उथलेपन और महान गहराई, उसके आनंद, उसके दुख, उसके संघर्ष और दर्द के साथ समझना। आजीविका कमाने का संघर्ष, निराशा की भावना, घोर निराशा, गलतियाँ और दुर्घटनाएँ, ध्यान के माध्यम से स्वयं में गहराई से उतरना और उस वास्तविकता की खोज करना जो समय से परे है - यह सब जीवन है, और इसके पूर्ण महत्व को देखना , मन बहुत साफ़ होना चाहिए. भ्रम की कोई छाया नहीं रहनी चाहिए. मन को अपने अस्तित्व के हर अनछुए क्षेत्र की खोज करने में सक्षम होना चाहिए, जो खोजा गया है उसे एकत्रित किए बिना क्योंकि जो मन संचय करता है वह स्पष्ट रूप से बहुत दूर तक नहीं जा सकता है। मैं बयानबाजी नहीं कर रहा हूं बल्कि केवल तथ्यात्मक हूं। जब मन पर बहुत अधिक अनुभव का बोझ हो तो वह कुछ भी नया कैसे अनुभव कर सकता है? यह वह मन है जो युवा है, ताज़ा है, निर्दोष है, वह मन है जो हमेशा गतिशील रहता है, जिसके पास अनुभव का कोई संचय नहीं है, कोई आश्रय नहीं है - केवल ऐसा मन ही है जो जीवन को समग्रता के रूप में समझ सकता है।

जीवन की विशालता, अथाहता की इस असाधारण धारणा को पाने के लिए, हमारे दिमाग को बहुत स्पष्ट, बहुत सटीक होना चाहिए। और मन की सटीकता निर्देशों का पालन करने का मामला नहीं है; यह अनुशासन या आज्ञाकारिता के माध्यम से नहीं आता है। मन में सटीकता तभी आती है जब कोई भ्रम की इस पूरी प्रक्रिया को समझता है जिसमें हममें से अधिकांश लोग जी रहे हैं। अधिकांश लोग - सबसे बड़े राजनेता से लेकर सबसे गरीब क्लर्क तक, जो व्यवसाय की कुछ बदसूरत दिनचर्या को दोहराने के लिए हर दिन अपनी साइकिल पर जाता है - भ्रमित हैं, और यह समझे बिना कि वह क्या है जो भ्रम की इस दुखद स्थिति को लाता है, स्पष्टता की खोज महज है एक पलायन, एक पलायन.

हममें से बहुत कम लोग यह स्वीकार करने को तैयार हैं कि हम पूरी तरह भ्रमित हैं। हम कहते हैं, "मैं आंशिक रूप से भ्रमित हूं, लेकिन मेरा एक और हिस्सा है जो बहुत स्पष्ट है, और इस स्पष्टता के साथ मैं अपने आंशिक भ्रम को दूर करने जा रहा हूं।" या, यदि आप

स्वीकार करें कि आप पूरी तरह से भ्रमित हैं, आप कहते हैं, "मैं किसी ऐसे व्यक्ति के पास जाऊंगा जो मुझे बताएगा कि मेरा भ्रम दूर करने के लिए क्या करना चाहिए।" लेकिन जब आप अपनी मदद के लिए किसी गुरु या नेता को चुनते हैं, तो आप अपनी उलझन से बाहर निकल रहे होते हैं; इसलिए, आपकी पसंद भी उतनी ही भ्रमित होने वाली है। (हंसी) हंसो मत, महोदय, वास्तव में राजनीतिक दुनिया में यही हो रहा है, और आपके तथाकथित धार्मिक जीवन में भी, इसके गुरुओं, मान्यताओं, दर्शन और अनुशासनों के साथ; यह आपके अस्तित्व के सभी तरीकों से हो रहा है। भ्रमित होने पर आप किसी ऐसे व्यक्ति की ओर रुख करते हैं जो आपका भ्रम दूर करने का वादा करता है। तो तानाशाही प्रकट होती है; शोषण की क्रूर प्रणालियाँ अस्तित्व में आती हैं, राजनीतिक और तथाकथित आध्यात्मिक दोनों।

तो सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि भ्रम को कोई दूसरा कभी भी दूर नहीं कर सकता है, और हममें से अधिकांश के लिए इसका सामना करना बहुत कठिन बात है। मन इस तथ्य को देखना नहीं चाहता कि कोई भी नहीं है जो इसे स्पष्ट करने में मदद कर सके। लेकिन जब तक आप भ्रमित हैं, नेता या गुरु का चुनाव आपके भ्रम का परिणाम है; और यदि आप भ्रमित नहीं हैं, तो आप नेता, गुरु, सत्ता की पदानुक्रमित प्रणाली नहीं बनाएंगे।

सीधी सी बात है कि मन भ्रमित है। यदि आप वास्तव में अपने मन को देखें, तो आप देखेंगे कि आप राजनीतिक, धार्मिक और हर तरह से भ्रम की स्थिति में हैं। आप नहीं जानते कि क्या करना सही है, किसे फ़ॉलो करना है, या किसी को फ़ॉलो करना भी है या नहीं। विशेषज्ञ अन्य विशेषज्ञों का खंडन करते हैं। कम्युनिस्ट, पूंजीपति और विभिन्न धार्मिक संप्रदाय सभी एक-दूसरे के खिलाफ काम कर रहे हैं। तो मन भ्रमित है, और वह अपनी उलझन में जो कुछ भी चुनता है या करने का निर्णय लेता है वह और भी अधिक भ्रम, और अधिक संघर्ष और दुख लाने के लिए बाध्य है।

अब, भ्रम क्यों है? मैं इसकी जांच करने जा रहा हूं और कृपया इसे अस्वीकार या स्वीकार किए बिना जो कहा जा रहा है उसे सुनें। बस वैसे ही सुनें जैसे आप कोई सार्थक बात सुनेंगे। सबसे पहले इस सच्चाई को देखें कि जो दिमाग भ्रम से बाहर निकलता है वह केवल और अधिक भ्रम पैदा कर सकता है। यह एक तथ्य है.

एक और तथ्य यह है: कि जब मन कहता है कि वह केवल आंशिक रूप से भ्रमित है और सोचता है कि स्वयं का एक हिस्सा है जो स्पष्ट है - उच्च स्व, आत्मा और वह सब व्यवसाय - तब भी वह पूरी तरह से भ्रमित है। जो मन कहता है, "मेरा एक हिस्सा है जो भ्रमित नहीं है," वह स्वयं को धोखा दे रहा है। यदि आपका कोई ऐसा हिस्सा होता जो बहुत स्पष्ट हो, तो जाहिर है कि वह स्पष्टता सभी भ्रमों को मिटा देगी। जहाँ स्पष्टता है, वहाँ कोई अंधकार नहीं है; वहां केवल स्पष्टता है.

इसलिए यह सोचना बिल्कुल बकवास है कि आपका एक हिस्सा है, एक आध्यात्मिक सार, जो स्पष्ट है, और केवल भौतिक संसार ही भ्रम की स्थिति में है।
वह विचार मन का आविष्कार है जो आपको देखने से रोकता है

तथ्य। तथ्य यह है कि केवल भ्रम है, इसलिए आपको इस तथ्य के बारे में पता होना चाहिए और खुद को धोखा नहीं देना चाहिए।

इस भ्रम की स्थिति का कारण क्या है? मूलतः, यह आप जो हैं उससे अलग होने की चाहत है, जिसे शैक्षिक और अन्य प्रभावों द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है जो आपको यह सोचने पर मजबूर करता है कि आपके पास आदर्श होने चाहिए। जहां अलग होने की चाहत होती है, वहां नकल की एक अंतहीन प्रक्रिया होती है, जिसका अर्थ है अधिकार के पैटर्न का पालन करना। कृपया इसकी सच्चाई देखें। जब आप जो हैं उससे अलग होने की इच्छा रखते हैं, तो आप उनका अनुसरण करना शुरू कर देते हैं, आपके पास मानक, सूत्र, आदर्श होते हैं, जिसका अर्थ है कि आप जो हैं और जो आप सोचते हैं कि आपको होना चाहिए, उसके बीच विरोधाभास है। जरा अपने अंदर इस विरोधाभास का निरीक्षण करें। मैं जो कह रहा हूं उसे स्वीकार या अस्वीकार न करें, क्योंकि यह बहुत मूर्खतापूर्ण होगा - यदि मैं उस शब्द का उपयोग बिना किसी अपमानजनक अर्थ के कर सकता हूं। निश्चित रूप से जिस क्षण आप यह समझे बिना कि आप क्या हैं उससे भिन्न होना चाहते हैं, आपने आत्म-विरोधाभास की प्रक्रिया को गति दे दी है; और यही आत्म-विरोधाभा अनुकरण का मार्ग है। उदाहरण के लिए, यदि आप आलसी हैं, तो आपके पास आलसी न होने का आदर्श है, और आप अपने आदर्श पर खरा उतरने का प्रयास करते हैं; और उसी प्रयास में आपने अनुकरण का आदर्श स्थापित किया है।

तो एक अंदर की ओर जाना और एक बाहर की ओर जाना है। बाहर की ओर जाने को आप भौतिकवादी कहते हैं, और भीतर की ओर जाने को आप आध्यात्मिक मानते हैं। लेकिन जो व्यक्ति किसी आदर्श का अनुसरण करने की भावना से अंदर की ओर जाता है, जो अनुशासन और बाकी सभी चीजों के माध्यम से खुद को बदलने के लिए संघर्ष करता है - ऐसे व्यक्ति का दिमाग विरोधाभासी इच्छाओं का युद्धक्षेत्र बन जाता है, क्या ऐसा नहीं होता है?

मनोवैज्ञानिक रूप से, आंतरिक रूप से उसने नकल का, अधिकार का पैटर्न स्थापित कर लिया है और वह उस पैटर्न के अनुसार जीने के लिए संघर्ष करता है। तो आपका अंदर जाना वास्तव में उतना ही भौतिकवादी है जितना आपका बाहर जाना - लाभदायक होने के अर्थ में भौतिकवादी। बाह्य रूप से आप अधिक शक्ति, बेहतर पद, अधिक प्रतिष्ठा चाहते हैं, आप अधिक भूमि, अधिक संपत्ति चाहते हैं; और भीतर से आप जो हैं उससे भिन्न कुछ बनना चाहते हैं। तो दोनों ही स्वार्थ, आत्म-स्थायित्व का एक रूप हैं।

ये तथ्य हैं; वे मेरा आविष्कार नहीं हैं. मैं तो केवल तथ्य उजागर कर रहा हूं। आपको शायद यह पसंद नहीं आएगा क्योंकि आप सोचते हैं कि आप एक धार्मिक व्यक्ति हैं और इसलिए आप यह सब त्याग देंगे। लेकिन यदि आप अपने आप को बहुत स्पष्ट रूप से, सटीक रूप से, निष्पक्ष रूप से जांचने में सक्षम हैं, तो आप देखेंगे कि अंदर और बाहर दोनों तरफ से अलग होने की इच्छा है; इसलिए, नकल और अधिकार का निर्माण होता है और इसलिए एक अंतहीन विरोधाभास होता है

क्या है और 'क्या होना चाहिए' के बीच । आत्म-विरोधाभास की यह स्थिति भ्रम की शुरुआत है।

अब, अंदर की ओर जाना है जो अलग होने की इच्छा से प्रेरित नहीं है, और इसलिए यह आत्म-विरोधाभास पैदा नहीं करता है जो भ्रम पैदा करता है। यह सच्ची आंतरिक प्रवृत्ति है - तथ्य को वैसा ही देखना, जैसा वह है, उसे बदलने की कोशिश किए बिना। इस तथ्य को देखने के लिए कि कोई व्यक्ति आलसी है, कि विभिन्न रूपों में अधिकार उसके जीवन पर हावी है - इस तथ्य को देखने के लिए और इसे बदलने की कोशिश न करें, यह न कहें, “मुझे आलसी नहीं होना चाहिए; मुझे अधिकार से मुक्त होना चाहिए," निश्चित रूप से सबसे बड़ा महत्व है क्योंकि यह विपरीत पैदा नहीं करता है और आत्म-विरोधाभास का भ्रम पैदा नहीं करता है। लेकिन केवल तथ्य को समझना एक असाधारण रूप से कठिन काम है क्योंकि हमारा दिमाग हमेशा तुलना करता रहता है, हमेशा जो है उसे किसी और चीज़ में बदलने की इच्छा रखता है।

उदाहरण के लिए, अधिकार को लें। जब आप जानते हैं कि आपको मजबूर किया जा रहा है, धकेला जा रहा है, जब आप जानते हैं कि आपको आज्ञापालन करना होगा, तो क्या होता है? विपरीत की भी गति है ना? यानी आपको लगता है कि आपको आज़ाद होना चाहिए। तो आज्ञाकारिता के तथ्य में ही, उस आज्ञाकारिता का विरोधाभास है। यह विरोधाभास तब तक अपरिहार्य है जब तक आप अधिकार की पूरी प्रक्रिया को नहीं समझते हैं - यह नहीं कि आपको सड़क के दाईं या बाईं ओर क्यों रहना चाहिए, जो स्पष्ट है, लेकिन गुरु का अधिकार क्यों है, आप इलाज क्यों करते हैं इतनी असाधारण श्रद्धा के साथ एक विशेष पुस्तक, और इसके बाकी सभी भाग। यदि आप वास्तव में इसमें जाते हैं, तो आप देखेंगे कि मन निश्चित, सुरक्षित होना चाहता है; वह नेतृत्व करना चाहता है, मार्गदर्शन करना चाहता है, ताकि उसे कोई संघर्ष न हो, कोई दर्द न हो, अकेलेपन का एहसास न हो। जब तक मन इस तथ्य को नहीं देखता है और केवल आंतरिक या बाह्य रूप से स्पष्टता चाहता है, तब तक अधिकार होना निश्चित है; और वह अधिकार आपके भ्रम का परिणाम है, जो आत्म-विरोधाभास का परिणाम है।

तो व्यक्ति यह देखना शुरू कर देता है कि प्रत्येक इच्छा की अपनी समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। क्या तुम समझ रहे हो? क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ? निःसंदेह, इच्छा अपना स्वयं का विपरीत निर्मित करती है। दूसरे शब्दों में, सभी इच्छाएँ स्व-विरोधाभासी हैं। मैं अच्छा बनने, दयालु होने, स्नेही होने की इच्छा रखता हूं, और साथ ही हिंसक होने, क्रोधित होने, ईर्ष्यालु होने और बाकी सब कुछ करने की इच्छा भी रखता हूं। कुछ बनने की चाहत ही विपरीत इच्छा पैदा करती है, क्या ऐसा नहीं है? नहीं?

महोदय, मुझे इसे अलग तरीके से कहने दीजिए। क्या आप कोई इच्छा उसके विपरीत के बिना रख सकते हैं? पक्का नहीं। मैं दयालु बनना चाहता हूं, और फिर भी मैं क्रूर हूं; मैं अहिंसक होना चाहता हूं, और मैं हिंसा से भरा हूं। इसलिए इच्छा अपने आप में विरोधाभासी है - जिसका अर्थ यह नहीं है कि कोई इच्छा ही नहीं होनी चाहिए। इसके विपरीत। अगर

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, आप स्वयं का निरीक्षण करेंगे, आप देखेंगे कि कुछ बिल्कुल अलग अस्तित्व में आता है - ऐसा मन नहीं जो इच्छा रहित हो।

भ्रम वहीं पैदा होता है जहां अलग होने की चाहत होती है। यह स्वयं के लिए खोज करने योग्य एक महत्वपूर्ण तथ्य है। और इस सत्य को देखना भी महत्वपूर्ण है कि हर इच्छा का अपना विपरीत होता है।

अब, किसी चीज़ की सच्चाई देखना एक तात्कालिक धारणा है; यह कोई विवादित, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण नहीं है जिसमें आप अंततः कहते हैं, "हां, मैं समझता हूं।" जो सत्य है उसकी अनुभूति तब होती है जब मन वास्तविक जांच की स्थिति में होता है, जिसका अर्थ है कि वह बचाव नहीं कर रहा है और न ही आक्रामक है। आप सत्य को सत्य के रूप में, झूठ को झूठ के रूप में, और सत्य को झूठ के रूप में तभी देख सकते हैं, जब आपका मन बहुत स्पष्ट और सरल हो, यानी जब वह विचारों से, अनुभवों से, अपनी आशाओं से और अव्यवस्थित हो। भय. किसी चीज़ की सच्चाई देखने के लिए मन को ताज़ा, निर्दोष होना चाहिए, जो वास्तव में आत्म-त्याग की स्थिति है।

मैं कह रहा था कि भ्रम तब होता है जब आत्म-विरोधाभास होता है, जो अलग होने की इच्छा से पैदा होता है, और नकल और अधिकार की विभिन्न प्रणालियों में अलग-अलग होने की इच्छा होती है। आपको इसकी सच्चाई स्वयं देखनी होगी-मेरे समझाने से नहीं, क्योंकि तब आप इसे बिल्कुल नहीं देख पाएंगे, और आप फिर से किसी और के द्वारा प्रेरित या प्रभावित हो जाएंगे। कोई अच्छा प्रभाव नहीं है; सभी प्रभाव बुरे हैं, जैसे सभी अधिकार बुरे हैं; और अधिकार जितना अधिक पूर्ण होगा, बुराई भी उतनी ही अधिक पूर्ण होगी। इसलिए आपके लिए इस सच्चाई को स्वयं देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है - कि जब आत्म-विरोधाभास होता है, तो भ्रम होता है, जो अलग होने की इच्छा से पैदा होता है, और यह इच्छा नकल और अधिकार को जन्म देती है।

अब, यदि आप उस सरल तथ्य को देखें, तो प्रश्न उठता है, "क्या मैं क्या हूँ इसकी समझ नहीं होनी चाहिए?" और आप जो हैं उसकी समझ ही असली अंतर्गामी है; यह बाहर जाने की प्रतिक्रिया या अस्वीकृति नहीं है। लेकिन आप नहीं जानते कि आप क्या हैं. आप सोचते हैं कि आप आत्मा हैं, उच्चतर स्व, यह या वह; जबकि, आप वास्तव में अनगिनत प्रभावों, परंपरा, विभिन्न पर्यावरणीय दबावों आदि का परिणाम हैं। सच तो यह है कि आप उस संस्कृति से संस्कारित होते हैं जिसमें आप पैदा हुए हैं। जिस तरह एक कम्युनिस्ट को ईश्वर में विश्वास न करने के लिए बाध्य किया जाता है, यह कहना सरासर बकवास है, उसी तरह आपको एक हिंदू के रूप में पाला और संस्कारित किया जाता है, और आप उसी के अनुसार विश्वास करते हैं।

यह पता लगाने के लिए कि आप क्या हैं, पल-पल की समझ की आवश्यकता है, न केवल बाहरी प्रभावों की, जिन्होंने आपके जीवन को ढाला है, बल्कि अचेतन के सूक्ष्म प्रभावों और आग्रहों की भी, जिनसे आप

आम तौर पर अनजान होते हैं. आप जो हैं वह स्थिर नहीं है; यह गतिशील है, हर समय बदलता रहता है। वह कभी भी स्थायी अवस्था नहीं होती और उस अनित्यता की धारणा में कोई विरोधाभास नहीं होता। मुझे नहीं पता कि आप इसमें सच्चाई देखते हैं या नहीं। आप जो हैं वह कभी स्थिर, स्थायी नहीं होता। आप चाहेंगे कि यह स्थायी हो, आप यह कहने में सक्षम होना चाहेंगे, "मैं परम आध्यात्मिक आत्म हूं, जो स्थायी है," क्योंकि उस "स्थायी" स्थिति में आप सोचते हैं कि आपको खुशी, सुरक्षा, भगवान और मिल जाएगा। बाकी सारा कारोबार.

जबकि, यह देखना कि आप हर पल क्या हैं और जो आप देखते हैं उसका पूरी गहराई और चौड़ाई तक पीछा करना ही सच्चा अंतर्मुखी होना है, और यह सच्चा अंतर्मुखी होना कभी भी आत्म-विरोधाभास और भ्रम पैदा नहीं करेगा क्योंकि प्रत्येक में पूर्ण परित्याग होता है जो देखा गया, अनुभव किया गया, सीखा गया उसका क्षण। यह वह मन है जिसने एक स्थिति ग्रहण कर ली है, जिसने अनुभव किया है और कहता है, "मुझे पता है," जो अलग होना चाहता है - यह केवल ऐसा मन है जो आत्म-विरोधाभास और इसलिए भ्रम पैदा करता है।

आप स्पष्टतः प्रभाव का परिणाम हैं। आपका मन हर समय अखबारों से, रेडियो से, भाषणों से, आपकी पत्नी या पति से, समाज से, परंपराओं, सिद्धांतों, मान्यताओं से प्रभावित हो रहा है। आप जो खाते हैं, जो पहनते हैं, जिस जलवायु में रहते हैं, जिस दैनिक दिनचर्या का पालन करते हैं, इत्यादि से आप प्रभावित होते हैं। लेकिन यह सब जानने के लिए, स्वीकृति या अस्वीकृति के बिना पल-पल इन असंख्य प्रभावों से अवगत होने का मतलब है उनसे मुक्त होना शुरू करना क्योंकि, जाहिर है, एक मन जो बहुत सतर्क है वह आसानी से प्रभावित नहीं होता है। यह वह मन है जो स्वयं से अनभिज्ञ है, जो परंपरा से पंगु है, समय के बंधन में जकड़ा हुआ है - यह केवल ऐसा मन है जो हमेशा प्रभावित होता रहता है।

हर पल यह देखने के लिए कि वास्तव में क्या है, एक धारणा, एक सतर्कता, एक जागरूकता की आवश्यकता होती है जिसमें कोई संचय नहीं होता क्योंकि जो है वह लगातार बदल रहा है। आज तुम वह नहीं हो जो तुम कल थे; आप कल जो थे वह समय के साथ घटनाओं की एक शृंखला द्वारा संशोधित हो गया है। विचार समय में एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर गति करता है; यह कभी निरपेक्ष नहीं होता, कभी स्थिर नहीं होता, कभी एक जैसा नहीं होता। जो है वह कभी स्थिर नहीं होता. इसलिए आपको यह विचार लाने की ज़रूरत नहीं है कि आपको अलग होना चाहिए। जो है उसके तथ्य की अनुभूति ही पर्याप्त है; यह परिवर्तन की अपनी स्वयं की गति लाता है, जो कि जो है उसका परिवर्तन है।

तो एक मन जो भ्रमित है, फिर भी स्पष्ट होना चाहता है, वह अपने आप में एक विरोधाभास पैदा करता है और इस तरह अपना भ्रम बढ़ाता है; और चाहे यह बाहर की ओर जाए या भीतर की ओर, एक भ्रमित दिमाग सिस्टम, अनुशासन, विरोधाभास, मजबूरियां बनाता है, जो केवल और अधिक दुख को जन्म देता है। आदमी जो

बाहर की ओर मुड़ने वाले को तुम भौतिकवादी कहते हो, और जो व्यक्ति भीतर की ओर मुड़ता है उसे तुम आध्यात्मिक कहते हो; लेकिन वे दोनों आत्म-विरोधाभासी हैं। जबकि, एक सच्चा अंतर्मुखी होना है जो कोई प्रतिक्रिया नहीं है, बहिर्गमन के विपरीत नहीं है। यह जो है उसकी सरल धारणा है , और इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

महोदय, क्या होता है जब एक आलसी मन को अपने आलस्य का एहसास होता है? यह तुरंत कहता है, "मुझे आलसी न होने के लिए स्वयं को अनुशासित करना चाहिए। मुझे हर सुबह जल्दी उठना चाहिए. मुझे यह अवश्य करना चाहिए; मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए।" अब, आलस्य एक अनुशासित मन का संकेत है. जो मन स्वयं को अनुशासित करता है वह आलसी होता है। (हँसी) महोदय, इसे हँसी में मत उड़ाओ; जरा इसकी सच्चाई देखिए.

यह जानते हुए कि मैं आलसी हूं, मैं खुद को हर सुबह जल्दी उठने, व्यायाम करने, तथाकथित ध्यान में चुपचाप बैठने और बाकी सभी चीजों के लिए मजबूर करता हूं।

अब क्या हुआ? मैंने विचारहीनता की एक और आदत छोड़ दी है। विचारहीनता ही आलसी मन का सार है। जब आप देखते हैं कि आप आलसी हैं और अपने आप को आलसी न होने के लिए मजबूर करते हैं, तो वही जबरदस्ती विरोधाभास और आगे भ्रम पैदा करती है। सच तो यह है कि आप आलसी हैं.

उस तथ्य को देखो, उसमें जाओ, उन सभी कारकों को उजागर करो जो तुम्हें आलसी बना रहे हैं।

तथ्य को बदलने का प्रयास न करें, बल्कि संचालन में आलस्य को देखें, पल-पल इसके प्रति सचेत रहें। तब आपको स्वयं को अनुशासित करने की आवश्यकता नहीं है। मन हर मिनट यह देखने के लिए सचेत रहता है कि वह कब आलसी है, और ऐसा मन भ्रमित मन नहीं है।

इसलिए भ्रम तभी होता है जब कोई बाहर की ओर जाने वाला या अंदर की ओर जाने वाला होता है जो विरोधाभास बन जाता है। धारणा न तो भीतर की ओर जाने वाली है और न ही बाहर जाने वाली है; यह बिना किसी पूर्वाग्रह, बिना रंग, बिना मूल्यांकन के हर पल चीजों को वैसे ही देखना है जैसे वे हैं। तभी स्पष्टता है. ऐसे मन का कोई अछूता क्षेत्र नहीं होता, न तो सतह पर और न ही भीतर, क्योंकि यह इतना सतर्क, इतना सतर्क, इतना जागरूक होता है कि इसकी हर गतिविधि को देखा, जांचा और समझा जाता है।

मैं जो कुछ कह रहा हूं वह यह है कि एक स्पष्ट दिमाग एक अवधारणात्मक दिमाग है। आत्म-ज्ञान के अर्थ में जितनी अधिक सच्ची अनुभूति होती है, वह अनुभूति उतनी ही गहराई तक भीतर प्रवेश करती है - लेकिन समय के संदर्भ में नहीं। जब आत्म-ज्ञान होता है, जो न केवल चेतन स्तर पर बल्कि अचेतन की गहराई में जो कुछ है उसकी निरंतर गति की अनुभूति है , तो आप पाएंगे कि एक ऐसी स्थिति आती है जिसे मन द्वारा मापा नहीं जा सकता है। तब मन असाधारण रूप से स्पष्ट होता है; इसमें छाया के बिना स्पष्टता होती है, और केवल ऐसा मन ही सत्य को ग्रहण करने में सक्षम होता है।

22 फ़रवरी 1959

छठी वार्ता नई दिल्ली में

क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आज शाम हम आत्म-ज्ञान क्या है, इस प्रश्न पर एक साथ बात करें। यह एक जटिल समस्या है और जीवन की कई अन्य समस्याओं की तरह इसका भी कोई अंतिम उत्तर नहीं है। हममें से अधिकांश लोग आत्म-ज्ञान की उन व्याख्याओं को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं जो हम दूसरे से सुनते हैं या मनोवैज्ञानिक या धार्मिक पुस्तकों में पढ़ते हैं, और यह बहुत अफ़सोस की बात होगी यदि हम केवल उसी स्तर पर बने रहे। इसके बजाय, आइए आज शाम देखें कि क्या हम अपनी चेतना की गहराई में प्रवेश कर सकते हैं, जिसका अर्थ है सीधे तौर पर अपनी सोच और भावना की संपूर्ण प्रक्रिया, अपनी आशाओं और अपने भय की समग्रता का अनुभव करना।

इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मुझे लगता है कि आपके लिए यह जानना ज़रूरी है कि जो कहा जा रहा है उसे आप कैसे सुन रहे हैं। मैं आत्म-ज्ञान के इस पूरे प्रश्न में जाने की कोशिश करूंगा, लेकिन अगर आपने केवल स्पष्टीकरणों को सुना और शब्दों से संतुष्ट हो गए - तो मुझे ऐसा लगता है कि यह करना सबसे निरर्थक बात होगी। यह उस भूखे आदमी के समान होगा जो फसल या भोजन की तैयारी के बारे में बहुत सारी बातें और स्पष्टीकरण सुन रहा है, यह आशा करते हुए कि इससे उसकी भूख संतुष्ट हो जाएगी। दरअसल, हममें से ज्यादातर लोग उसी स्थिति में हैं।

शब्द के गहरे अर्थ में हम भूखे नहीं हैं; हम वास्तव में मन की संपूर्ण प्रक्रिया, अपने विचारों और भावनाओं की समग्रता को समझने के लिए उत्सुक नहीं हैं। यही कारण है कि हम स्पष्टीकरणों से इतनी आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं और अपनी कई समस्याओं को व्याख्यात्मक स्तर पर देखते हैं; और मुझे लगता है कि वह व्यक्ति जो केवल समझाता है और वह व्यक्ति जो स्पष्टीकरण से संतुष्ट होता है, दोनों ही बहुत सतही तौर पर जी रहे हैं।

क्या स्पष्टीकरण से कभी किसी महत्वपूर्ण समस्या का समाधान होता है? मैं आपको राष्ट्रवाद की मिथ्याता समझा सकता हूं - इसका भ्रष्ट, विनाशकारी और बिगड़ता प्रभाव - लेकिन यद्यपि आप इस तरह की व्याख्या की वैधता देख सकते हैं, यह स्पष्ट रूप से आपको राष्ट्रवाद से मुक्त नहीं करता है। सच तो यह है कि आप राष्ट्रवादी होने की भावना का आनंद लेते हैं; आप एक विशेष समूह से जुड़े रहना पसंद करते हैं—यह आपके लिए भावनात्मक और आर्थिक रूप से लाभदायक है। इसलिए स्पष्टीकरण कभी भी समझ नहीं लाते हैं, वे वास्तव में कभी भी किसी महत्वपूर्ण समस्या का समाधान नहीं करते हैं। एक दंत चिकित्सक आपको बता सकता है कि बहुत अधिक चीनी लेना आपके दांतों के लिए बहुत बुरा है, और वह आपको अपने कथन के समर्थन में बहुत सारे सबूत भी दिखा सकता है, लेकिन आपको चीनी पसंद है, और आप इसे बड़ी मात्रा में लेते रहते हैं। इसलिए स्पष्टीकरण एक बात है, और सीधी कार्रवाई बिलकुल दूसरी बात है। या तो आप केवल शब्दों, स्पष्टीकरणों का अनुसरण कर रहे हैं, या सुनने की प्रक्रिया में, आप सीधे अनुभव कर रहे हैं कि क्या वर्णन किया जा रहा है - जो है

शब्दों से संतुष्ट होने की तुलना में कहीं अधिक महत्व, कहीं अधिक वैधता, कहीं अधिक जीवंतता।

तो आइए हम इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट हो जाएं कि स्पष्टीकरण कहां समाप्त होते हैं और वास्तविक धारणा या अनुभव कहां से शुरू होता है। आप केवल स्पष्टीकरण के साथ ही इतनी दूर तक जा सकते हैं, और बाकी यात्रा आपको स्वयं ही करनी होगी। हममें से अधिकांश लोग उस यात्रा को करने के इच्छुक नहीं हैं क्योंकि हम आलसी हैं और स्पष्ट चीज़ों से आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं, जो हमेशा स्पष्टीकरण होता है। लेकिन प्रत्यक्ष कार्रवाई, अनुभव की जीवन शक्ति, स्पष्टीकरण से परे है, चाहे वह कितनी भी स्पष्ट या सूक्ष्म क्यों न हो।

इसलिए जिन चीज़ों के बारे में हम बात कर रहे हैं उन्हें सीधे अनुभव करना बहुत ज़रूरी है न कि केवल मौखिक स्तर पर रुकना। मुझे लगता है कि यह वास्तव में दिलचस्प होगा यदि हम आत्म-ज्ञान की इस पूरी समस्या में जा सकें और पता लगा सकें कि हमारी सोच का वास्तविक आधार क्या है, हमारे सभी कार्यों का आधार, हमारे अस्तित्व का आधार क्या है। यदि कोई इस पर चरण दर चरण, सूक्ष्म विवरण से पूछताछ कर सके और इसका प्रत्यक्ष अनुभव कर सके, तो मुझे लगता है कि वह बहुत आगे तक जाएगा। आख़िरकार, दूर तक जाने के लिए पास से शुरुआत करनी होगी, और पास ही 'मैं' है, स्वयं है, मन की यह पूरी प्रक्रिया है। आप एक वैज्ञानिक या इंजीनियर हो सकते हैं और अंतरिक्ष यात्रा की तकनीक में महारत हासिल कर सकते हैं, लेकिन वास्तविक यात्रा अंदर की ओर होती है, और वह यंत्रवत् चंद्रमा पर जाने से कहीं अधिक कठिन, कहीं अधिक गहरी और अधिक महत्वपूर्ण है। अथाह अभी भी अपने भीतर है।

इसलिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि मौखिक या बौद्धिक व्याख्या कहाँ समाप्त होती है और प्रत्यक्ष धारणा या अनुभव कहाँ से शुरू होता है। स्पष्टीकरण कभी भी वास्तविकता की ओर नहीं ले जा सकते। व्याख्या कितनी भी संतोषजनक क्यों न हो, यह आपको वह समझ नहीं दे सकती जो प्रत्यक्ष बोध, प्रत्यक्ष अनुभव से पैदा होती है।

यदि आप इसे स्पष्ट रूप से महसूस करते हैं, तो आप कभी भी स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं होंगे, आप कभी उद्धरण नहीं देंगे, आप कभी भी गीता या बाइबिल के प्रमाण की ओर नहीं मुड़ेंगे। आप इसे केवल बौद्धिक मनोरंजन के रूप में पढ़ सकते हैं, लेकिन प्रत्यक्ष अनुभव किताबों में सिखाई गई बातों से कहीं अधिक मूल्यवान है। एक जीवित कुत्ता मरे हुए शेर से बेहतर है। किताबों में सभी नायक मरे हुए शेर हैं, और उनका अधिकार विनाशकारी है। आप स्वयं जो प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करते हैं और जानते हैं, वह प्राचीन या आधुनिक, सभी विभिन्न प्राधिकारियों की व्याख्याओं से कहीं अधिक मान्य है।

इसे ध्यान में रखते हुए, आइए हम आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया के बारे में जाँच करें। एक साइनपोस्ट की तरह, मैं केवल दिशा बता रहा हूं। साइनपोस्ट बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है. जो महत्वपूर्ण है वह वह व्यक्ति है जो यात्रा कर रहा है। वक्ता गुरु नहीं है, अधिकारी नहीं है, मार्गदर्शक नहीं है. व्यक्ति को अंदर की यात्रा अकेले ही करनी होगी - बाहरी चीजों से दूर प्रतिक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि प्रतिक्रिया के रूप में

समझने की कोशिश की अपरिहार्य प्रक्रिया। बाहरी को भीतर की ओर ले जाना चाहिए, यानी अस्तित्व की पूरी प्रक्रिया की समझ, जिसमें बाहरी और भीतरी जैसा कोई विभाजन नहीं है।

अस्तित्व की पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए, बाहरी और भीतरी तौर पर आपको अपने सोचने के तरीकों को समझना होगा; आपको यह पता लगाना होगा कि आप जो सोचते हैं वह क्यों सोचते हैं, अर्थात अपने विचार के स्रोत को देखना होगा। उस स्रोत की खोज के बिना, आपके पास पूछताछ के लिए, कार्रवाई के लिए कोई वास्तविक आधार नहीं है। अब आपका कार्य आदत पर, दिनचर्या पर, अनुशासन पर, आपकी विशेष कंडीशनिंग पर आधारित है। एक ऐसी क्रिया है जो दिनचर्या की, अनुशासन की, कंडीशनिंग की अभ्यस्त क्रिया से बिल्कुल अलग है; लेकिन ऐसा कार्य केवल आत्म-ज्ञान के माध्यम से आता है, और इसीलिए स्वयं को समझना इतना आवश्यक है।

अब, ज्ञान से हमारा क्या तात्पर्य है? जब हम कहते हैं, "मुझे पता है," इसका क्या मतलब है? मैं आपको जानता हूं क्योंकि मेरा आपसे परिचय हो चुका है. आपसे एक बार मिलने के बाद, आपकी एक तस्वीर मेरे दिमाग में बनी रहती है, और जब हम दोबारा मिलते हैं तो मैं आपको पहचान लेता हूं। इसलिए जानना पहचान की एक प्रक्रिया है, और हम पिछले अनुभव की पृष्ठभूमि के माध्यम से पहचानते हैं, जिसका अर्थ है कि जानना संचयी, योगात्मक है; ज्ञान को जोड़ा जा सकता है। और जब हम कहते हैं, "मुझे स्वयं को जानना चाहिए," हम सोचते हैं कि स्वयं कुछ स्थिर, स्थिर, स्थिर और इसलिए पहचानने योग्य है। या हमें बताया गया है कि स्वयं क्या है और हम इसके बारे में कुछ निष्कर्षों पर पहुंचे हैं, और उस पृष्ठभूमि से हम स्वयं को पहचानना शुरू करते हैं। इसलिए जानना हमेशा पहचानने की एक प्रक्रिया है, जिसके बिना कोई ज्ञान नहीं है। मान्यता के माध्यम से ज्ञान योगात्मक होता है।

यह जटिल लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह बहुत सरल है।

जानना एक बात है और समझना दूसरी बात है। जानने का तात्पर्य संचय से है; यह पिछले अनुभव के माध्यम से पहचान की एक प्रक्रिया है। प्रत्येक नया अनुभव पिछले ज्ञान से अनुकूलित होता है और उसमें जुड़ता है। इसलिए जानना योगात्मक है, जबकि समझना कभी भी योगात्मक नहीं है। जब आप कहते हैं, "मैं आपको जानता हूं," तो आप मुझे पिछले, स्थिर अनुभव की पृष्ठभूमि से ही जानते हैं। आप मुझे मेरी विशेषताओं से, मेरे नाम से, मैंने आपसे जो कहा है, या दूसरों ने मेरे बारे में आपसे क्या कहा है, इत्यादि से जानते हैं। वह सब ज्ञान कल का है। तब से मैं कई अनुभवों, कई प्रकार के प्रभावों से गुज़रा हूँ, और हो सकता है कि मुझमें ज़बरदस्त बदलाव आया हो। लेकिन आप कल की स्मृति को बरकरार रखते हैं, और उस पृष्ठभूमि से आप आज मुझे आंकते हैं। तो आप कहते हैं, "मैं आपको जानता हूं," जबकि वास्तव में आप मुझे बिल्कुल भी नहीं जानते हैं, लेकिन आपको यह कहना बहुत सुविधाजनक लगता है, "मैं आपको जानता हूं," और आगे बढ़ जाते हैं।

शायद मैं खुद को स्पष्ट नहीं कर रहा हूं. जब तक आप इस एक साधारण बात को नहीं समझ लेते, आपके लिए आत्म-ज्ञान के इस पूरे आंदोलन के महत्व को समझना बहुत मुश्किल होगा।

जब मन कहता है, "मुझे पता है," तो वह जो कुछ जानता है वह यह है कि कल या अतीत में किसी अन्य समय क्या हुआ था। उस ज्ञान के साथ वह वर्तमान तक पहुंचता है, लेकिन वर्तमान पल-पल बदल रहा है।

इसलिए मन कभी नहीं कह सकता, "मुझे पता है," और मनोवैज्ञानिक रूप से इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। जो आदमी कहता है, "मैं जानता हूं," वह नहीं जानता।
आप कभी नहीं कह सकते, "मुझे सत्य मिल गया है," क्योंकि सत्य गतिशील है, जीवंत है, गतिशील है; यह कभी स्थिर नहीं होता, कभी स्थिर नहीं होता, कभी एक समान नहीं होता; और वही सत्य का सौंदर्य, वैभव है।

'मैं', स्वयं नामक इस चीज़ को समझने के लिए, आपको यह कहे बिना, "मैं जानता हूँ," बिना किसी अधिकार को स्वीकार किए, इस तक आना होगा। सारा अधिकार मर चुका है, और यह इस रचनात्मक खोज को नहीं लाता है। प्राधिकरण आपका मार्गदर्शन कर सकता है, आपको आकार दे सकता है, आपको बता सकता है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है, लेकिन यह सब अभी भी जानने के क्षेत्र में है; और ज्ञात के बोझ तले दबे तुम उसका अनुसरण नहीं कर सकते जो सजीव है, महत्वपूर्ण है, गतिमान है। तो जो मन इस सत्य को देखता है और खुद से पूछताछ करना चाहता है, वह कभी नहीं कहेगा, "मुझे पता है" इसलिए, निरंतर गति की स्थिति में होने के कारण, वह उसका निरीक्षण करने में सक्षम होता है जो कभी भी एक जैसा नहीं होता है। यह आत्म-ज्ञान की शुरुआत है. मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं।

देखिए, श्रीमान, जैसा कि हम जानते हैं कि आत्मा एक सीमित चीज है, लेकिन यह जीवित है, चलती है, और एक मन है जो संस्कारित है, परंपरा से बंधा हुआ है, एक मन जो कहता है, "एक उच्च आत्म और एक निचला आत्म है, ” और बाकी सब कुछ - ऐसा मन संभवतः स्वयं को नहीं समझ सकता है। मैं स्वयं शब्द का प्रयोग किसी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अर्थ में नहीं कर रहा हूँ; उस शब्द से मेरा तात्पर्य उस आत्मा से है जो प्रतिदिन कार्य करती है, जो सोचती है, महसूस करती है, आविष्कार करती है, आशा करती है, चाहती है और संघर्ष में फंस जाती है, वह आत्मा जो पक्षपाती है, जो अटकलें लगाती है, निर्णय लेती है, खोज करती है।

क्या ये सब बहुत मुश्किल है? मुझे आशा नहीं है। यदि ऐसा है, तो आप इसे छोड़ सकते हैं, और शायद मैं इसे अलग ढंग से रख सकता हूँ।
हम स्वयं को 'मैं' के रूप में जानते हैं जिसके पास संपत्ति है, जिसके पास गुण हैं, जिसके कुछ रिश्ते हैं, जो एक विशेष संस्कृति से, कई पर्यावरणीय प्रभावों से, पढ़ी जाने वाली किताबों से, जिन दर्शनों का अध्ययन करता है, जिन तकनीकों से प्रभावित होता है। सीखता है. वह मन जो ईर्ष्यालु है, जो प्रेम और घृणा, आशा और भय को जानता है - वह सब आत्मा है। स्वयं केवल सतही स्तर पर नहीं है, इसमें केवल चेतन मन ही कार्य नहीं करता है

हमारी दैनिक गतिविधियाँ, लेकिन यह अचेतन मन भी है, जो बहुत गहरे स्तर पर कार्य करता है। उस चेतना की समग्रता स्वयं है।

अब, उस केंद्र से, जो स्वयं है, हमारी सारी सोच शुरू होती है। जहाँ केन्द्र है, वहाँ परिधि भी है, सीमा भी है। केंद्र चेतन और अचेतन विचारक है जो जानता है, और सीमा वह है जिसे वह खोजता है और जो ज्ञात के क्षेत्र के भीतर भी है। तो विचारक और विचारक, अनुभवकर्ता और अनुभवी, पर्यवेक्षक और अवलोकन किया गया है। इसे स्वीकार या अस्वीकार न करें; बल्कि इसका पालन करें, न केवल मौखिक रूप से, बल्कि स्पष्टीकरण के माध्यम से वास्तव में देखें कि आपका अपना दिमाग कैसे काम कर रहा है।

मैं खुद को जानना चाहता हूं. क्यों? क्योंकि स्वयं को जाने बिना, मेरे पास कोई आधार नहीं है जिस पर मैं कुछ भी बना सकूं। मुझे नहीं पता कि मेरे विचार वैध हैं या नहीं, क्या मैं भ्रम में जी रहा हूं, क्या मैं खुद को धोखा दे रहा हूं; मैं नहीं जानता कि मैं संघर्ष क्यों करता हूं, मेरी कुछ आदतें क्यों हैं, इत्यादि।

स्वयं को जाने बिना मैं स्पष्ट रूप से देखने में असमर्थ हूं। इसलिए मुझे स्वयं को जानना होगा, अर्थात मुझे अपने मन को समझना होगा। मुझे किसी भी निंदा या औचित्य की भावना के बिना, हर प्रतिक्रिया, हर विचार के बारे में पता होना चाहिए। मुझे जांच की स्थिति में होना चाहिए, जिसका अर्थ है हर विचार, हर भावना को बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना पिछले अनुभव की पृष्ठभूमि के देखना जो कहता है, "यह अच्छा है, वह बुरा है; इसे मुझे रखना होगा, इसे मुझे त्यागना होगा।"

यह सब तो स्पष्ट है ना? अगर मैं अपने बेटे को समझना चाहता हूं, तो मुझे उसके बारे में जागरूक रहना होगा, बिना किसी निंदा या तुलना के उसका अध्ययन करना होगा; मुझे उसका निरीक्षण करना होता है जब वह खेल रहा होता है, जब वह रो रहा होता है, जब वह अधिक खा रहा होता है, इत्यादि। उसी तरह, अगर मैं खुद को समझना चाहता हूं, तो मुझे रिश्ते के आईने में बिना किसी निर्णय के खुद को देखना होगा; मुझे इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि मैं आपसे क्या कहता हूं और आप मुझ पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं; मुझे यह देखना चाहिए कि मैं अपने नौकर से कैसे बात करता हूं, मैं अपनी पत्नी या पति से कैसे बात करता हूं, मैं बस वाले और कुली के साथ कैसा व्यवहार करता हूं; मुझे पता होना चाहिए कि मैं क्या महसूस करता हूं, क्या सोचता हूं और क्यों। मुझे अपनी सोच और भावना की पूरी प्रक्रिया को देखना चाहिए। इसके लिए अनुशासन की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। जब आप स्वयं को निरीक्षण करने के लिए अनुशासित करते हैं, तो अनुशासन आपको अवलोकन करने से रोकता है क्योंकि अनुशासन तब आपकी आदत बन जाता है। जहां पता लगाने की वास्तविक चिंता है, वहां निरंतर अवलोकन करना पड़ता है जिसके लिए अनुशासन की आदत की आवश्यकता नहीं होती है।

तो यह समझने वाली पहली बात है - कि स्वयं को जानना नितांत आवश्यक है; अन्यथा, आपके पास विचार का कोई आधार ही नहीं है। आप बहुत हो सकते हैं

विद्वान हैं और बड़े पद पर हैं, लेकिन जब तक आप स्वयं को नहीं जानते तब तक यह सब बकवास है, क्योंकि आप अंधकार में चल रहे होंगे।

स्वयं को समझने के लिए एक जागरूकता, एक सजगता, एक अवलोकन की स्थिति होनी चाहिए जिसमें निंदा या औचित्य का कोई निशान न हो, और बिना निर्णय किए अवलोकन की उस स्थिति में रहना एक असाधारण कठिन कार्य है क्योंकि परंपरा का वजन इसके विरुद्ध है आप; आपके दिमाग को सदियों से निर्णय लेने, निंदा करने, औचित्य साबित करने, मूल्यांकन करने, स्वीकार करने या अस्वीकार करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। यह मत कहो, "मैं इस कंडीशनिंग से कैसे छुटकारा पा सकता हूँ?" लेकिन सच तो यह है कि यदि आप स्वयं को समझना चाहते हैं, जो स्पष्ट रूप से सर्वोच्च महत्व का है, तो आपको बिना किसी निंदा या तुलना के अपने मन की कार्यप्रणाली का निरीक्षण करना होगा।

अब आप तुलना क्यों करते हैं, निंदा क्यों करते हैं? क्या निंदा करना सबसे आसान कामों में से एक नहीं है? यदि आप पूंजीवादी हैं, तो आप कम्युनिस्ट की निंदा करते हैं, जैसे कम्युनिस्ट पूंजीपति की निंदा करता है। यदि आप एक कट्टर ईसाई हैं, तो आप स्पष्ट रूप से हिंदू धर्म, या इस्लाम की निंदा करते हैं, क्योंकि यह करना आसान काम है - निंदा करना और उस पर अमल करना। निंदा वास्तव में एक प्रतिक्रिया है और यह आलसी मन का एक लक्षण है।

तुलना के बारे में भी यही सच है, है ना? क्या तुलना करने वाला मन कभी समझ सकता है? महोदय, सहमत या असहमत न हों, लेकिन स्वयं देखें। जब आप अपने छोटे बेटे की तुलना उसके बड़े भाई से करते हैं, तो क्या आप छोटे लड़के को समझते हैं? और कक्षा में, तथाकथित शिक्षा में, संवेदनशील बच्चे की तुलना बड़े या अधिक चतुर लोगों से करने से क्या वह नष्ट नहीं हो जाता? निःसंदेह, तुलना भी एक सुस्त दिमाग, विचारहीन दिमाग, एक ऐसे दिमाग का संकेत है जो स्वाभाविक रूप से आलसी है; और ऐसा दिमाग कभी नहीं समझ सकता।

अगला प्रश्न है: सोच क्या है? निश्चित रूप से, जिसे हम सोच कहते हैं वह स्मृति की, किसी की कंडीशनिंग की प्रतिक्रिया है। यदि मैं आपसे कोई ऐसा प्रश्न पूछता हूं जिससे आप परिचित हैं, तो आपकी प्रतिक्रिया तत्काल होती है क्योंकि स्मृति का तंत्र तुरंत संचालित होता है। प्रश्न और उत्तर के बीच कोई अंतर नहीं है. यदि मैं आपसे अधिक जटिल प्रश्न पूछता हूं, तो प्रश्न और उत्तर के बीच एक अंतराल होता है, समय का अंतराल होता है, जिसके दौरान मन स्मृति के भंडार में देखता है, उन सभी चीजों पर विचार करता है जो उसने उत्तर खोजने के लिए सीखी हैं। . निश्चित रूप से, इसे ही हम सोच कहते हैं—स्मृति की प्रतिक्रिया।

अब, स्मृति सदैव वातानुकूलित होती है, है न? आप एक हिंदू, एक मुस्लिम, एक कम्युनिस्ट, एक पूंजीवादी, या जो भी हो, के रूप में संस्कारित हैं, और जब मैं आपसे एक निश्चित प्रश्न पूछता हूं, तो आप अपने संस्कार के अनुसार उत्तर देते हैं। यदि आप ए

धर्मनिष्ठ हिंदू और मैं पूछता हूं, "क्या आप ईश्वर में विश्वास करते हैं?" आप हां कहेंगे क्योंकि सदियों से आपको विश्वास करने के लिए शिक्षित किया गया है, संस्कारित किया गया है। और यदि यही प्रश्न किसी ऐसे व्यक्ति से पूछा जाए जिसे ईश्वर में विश्वास न करने की आदत डाल दी गई है, तो वह कहेगा, "आप क्या बकवास कर रहे हैं?" तो हमारी सारी सोच, सबसे सतही से लेकर सबसे जटिल तक, इसकी कंडीशनिंग के अनुसार स्मृति की प्रतिक्रिया है।

वह मन जो कहता है, "मैं अपने अंदर जांच करने जा रहा हूं," पहले से ही वातानुकूलित है; इसे हिंदू, बौद्ध, ईसाई, यह या वह के रूप में परिभाषित किया गया है। केवल इस कंडीशनिंग को समझने में ही कंडीशनिंग को तोड़ा जा सकता है। और जाहिर तौर पर इसे तोड़ा जाना चाहिए। हिंदू, ईसाई, कम्युनिस्ट या समाजवादी होना बेतुका है। हम मनुष्य हैं, और जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए, हमें उनसे मनुष्य के रूप में संपर्क करना चाहिए, न कि इन परस्पर विरोधी समूहों के सदस्यों के रूप में। कोई भी व्यवस्था, कोई भी विश्वास या विचारधारा हमारी मानवीय समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। भुखमरी एक मानवीय समस्या है और हमें पूंजीपतियों और कम्युनिस्टों के रूप में विभाजित होकर नहीं, बल्कि मिलकर इससे निपटना होगा।

जीवन की बुनियादी समस्याओं को सुलझाने में प्रणालियाँ बिल्कुल भी अच्छी नहीं हैं; वे केवल हमारे दिमागों को और अधिक अनुकूलित करते हैं, जो पहले से ही परंपरा, पर्यावरणीय प्रभावों आदि से अनुकूलित होते हैं।

अब, वातानुकूलित मन अपनी कंडीशनिंग को कैसे हल करेगा? क्या आप प्रश्न समझते हैं? मान लीजिए कि आप एक हिंदू के रूप में संस्कारित हैं, और आप उस संस्कार से पूरी तरह से अनजान हैं क्योंकि आप एक ऐसे समाज में रहते हैं जहां व्यावहारिक रूप से हर कोई हिंदू है और आपने इसे स्वीकार कर लिया है, इसलिए आप कभी भी इस पर सवाल नहीं उठाते हैं। लेकिन अब कोई आपसे कह रहा है कि आपका मन संस्कारित है, और आपने यह देखना शुरू कर दिया है कि यह सच है, तो आप कहते हैं, "मैं इस संस्कार से कैसे मुक्त हो सकता हूँ?"

महोदय, एक विशेष कंडीशनिंग से मुक्ति अभी भी एक कंडीशन्ड अवस्था ही है, क्या ऐसा नहीं है? कृपया इसका पालन करें. किसी चीज़ से मुक्त होना एक प्रतिक्रिया है; इसलिए, यह बिल्कुल भी स्वतंत्रता नहीं है। मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मेरा क्या मतलब है। केवल खुद को राष्ट्रवाद से मुक्त करना एक प्रतिक्रिया है क्योंकि मैं कुछ और बनना चाहता हूं। मेरी कंडीशनिंग मुझे दर्द, दुख देती है और मैं कहता हूं कि खुश रहने के लिए, यानी कुछ और बनने के लिए मुझे इससे मुक्त होना होगा। दूसरे शब्दों में, अधिक संतुष्टिदायक स्थिति में रहने के लिए मैं खुद को किसी चीज से मुक्त करता हूं, जो स्पष्ट रूप से एक प्रतिक्रिया है; इसलिए, यह स्वतंत्रता नहीं है। स्वतंत्रता प्रतिक्रिया से पैदा नहीं होती; यह मन की एक अवस्था है जिसमें कुछ होने या न होने की कोई इच्छा नहीं होती है।

यदि आप इसमें सच्चाई देखते हैं, तो अगला प्रश्न यह है: कंडीशनिंग से मुक्त होने का क्या मतलब है? इसका मतलब, निश्चित रूप से, किसी चीज़ से आज़ादी नहीं है, या

कुछ बनने की आज़ादी, लेकिन तथ्य को वैसा ही देखना जैसा वह है। मान लीजिए कि मैं एक हिंदू के रूप में संस्कारित हूं। मैं अपनी कंडीशनिंग से मुक्त नहीं होना चाहता; मुझे इसे देखना है। और जिस क्षण मैं इसे वैसा देखता हूं जैसा यह है, वहां स्वतंत्रता होती है, प्रतिक्रिया के रूप में नहीं। मुझे नहीं पता कि मैं इस मुद्दे पर खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। मैं उदाहरण नहीं लेना चाहता क्योंकि उदाहरणों को दूसरे उदाहरणों से झुठलाया जा सकता है।
लेकिन जो महत्वपूर्ण है वह है इसके बारे में नकारात्मक ढंग से सोचना, क्योंकि नकारात्मक सोच प्रत्यक्ष सोच है।

आप देखिए, सकारात्मक सोच और नकारात्मक सोच होती है। सकारात्मक सोच यह तय कर रही है कि क्या करना है, एक प्रणाली, एक पद्धति, एक अनुशासन का अभ्यास करके किसी की कंडीशनिंग को कैसे तोड़ना है। कंडीशनिंग से मुक्त होने के लिए किसी पद्धति या अनुशासन का अभ्यास करते समय, व्यक्ति ने केवल एक और कंडीशनिंग, एक नई आदत का परिचय दिया है। यही सकारात्मक सोच है. जबकि नकारात्मक सोच किसी की कंडीशनिंग के तथ्य को देखना है, और इस सच्चाई को देखना है कि कोई भी प्रणाली या अनुशासन कंडीशनिंग से मुक्ति नहीं दिला सकता है।

महोदय, आप में से कई लोग अहिंसा का पालन करते हैं, आप अहिंसा के आदर्श की पूजा करते हैं, आप सदैव अहिंसा का प्रचार करते हैं। वह सकारात्मक दृष्टिकोण है, जिसे आप भली-भांति जानते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि आप हिंसक हैं, और नकारात्मक दृष्टिकोण केवल उस सच्चाई को समझने का है। इस सत्य को समझ लेना कि आप हिंसक हैं, अपने आप में काफी है। आपको कुछ भी नहीं करना है.

जिस क्षण आप हिंसा पर अमल करते हैं, आपने अहिंसा का काल्पनिक आदर्श प्रस्तुत कर दिया है।

मुझे नहीं पता कि आप इसे देखते हैं या नहीं। मान लीजिए कि मैं लालची हूं। यह एक सच्चाई है और मैं इसे जानता हूं। मैं लालच को गैर-लोभ में नहीं बदलना चाहता; मेरे लिए इसका कोई मतलब नहीं है क्योंकि मैं देखता हूं कि लालची बनने में अभी भी लालच के गुण हैं। सभी बनना स्पष्ट रूप से लालच का एक रूप है। मन इस तथ्य से अवगत है कि वह लालची है, और वह यह भी मानता है कि लालच को बदलने के लिए उसकी ओर से कोई भी कदम अभी भी लालच के क्षेत्र में है। जो है उसका यह बोध ही उसका समाधान है।

इसलिए स्वयं की जांच नकारात्मक दृष्टिकोण से शुरू होनी चाहिए क्योंकि आप नहीं जानते कि स्वयं क्या है। आप सोच सकते हैं कि आप स्वयं को एक लालची व्यक्ति के रूप में जानते हैं, इस या उस के रूप में, लेकिन स्वयं प्रभावित हो रहा है, यह निरंतर परिवर्तन से गुजर रहा है, और इसे समझने के लिए आपको इसे सकारात्मक रूप से नहीं, बल्कि नकारात्मक, परोक्ष रूप से देखना होगा।

अधिकांश मन संस्कारित होते हैं, और उस संस्कार का टूटना किसी संकल्प या दृढ़ संकल्प, अनुशासन के किसी अभ्यास से नहीं होता है। यह तभी होता है जब किसी की कंडीशनिंग के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण होता है। जो है उसका आभास ही अपने आप में काफी है।

इसका पालन करें और आप देखेंगे कि क्यों। जब आप नकारात्मक दृष्टिकोण को समझते हैं, जो इसकी सच्चाई, इसकी बेकारता, इसकी काल्पनिक प्रकृति को देखना है, तो आपका मन, जो लालची है, अब लालची बनने की कोशिश की काल्पनिक प्रक्रिया में नहीं फंसता है। इसलिए यह देखने के लिए स्वतंत्र है कि क्या है, जो लालच है; और क्योंकि मन लालच को देखने के लिए स्वतंत्र है, यह लालच को ख़त्म करने में सक्षम है। अगली बार जब आप क्रोधित या हिंसक हों तो इसे आज़माएँ। इसकी निंदा मत करो, यह मत कहो कि यह सही है या गलत, बल्कि इसे देखो। बिना उसका नाम लिए, बिना उसकी निंदा किए या उसे उचित ठहराए, केवल भावना को देखना, एक असाधारण बात है। क्रोध शब्द ही निंदात्मक है, और जब आप बिना नाम लिए उस भाव को देखते हैं, तो क्रोध शब्द के माध्यम से उस भाव के साथ मौखिक संबंध समाप्त हो जाता है।

इसके साथ चलो, महोदय; जो कहा जा रहा है उसे स्वीकार या अस्वीकार न करें, बल्कि उसका पालन करें, चाहे आप उसे समझें या न समझें।

स्वयं की पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा क्योंकि चेतन मन कभी भी सचेतन रूप से गहरे अचेतन में नहीं जा सकता। आप बाह्य रूप से, चेतन स्तर पर एक महान तकनीशियन हो सकते हैं, लेकिन अंदर से, अचेतन की गहरी परतों में, नस्लीय, सहज, पारंपरिक प्रतिक्रियाओं का चिरस्थायी खिंचाव है; वहां आपकी सभी महत्वाकांक्षाएं, आपकी कुंठाएं, आपके छिपे हुए उद्देश्य और भय व्याप्त हैं, और आपको यह सब समझना होगा। इसे समझने के लिए आपको इसे नकारात्मक ढंग से देखना होगा। सकारात्मक दृष्टिकोण हमेशा ज्ञात के क्षेत्र में होता है।

लेकिन नकारात्मक दृष्टिकोण मन को ज्ञात से मुक्त कर देता है, और इसलिए मन समस्या को नए सिरे से, मासूमियत की स्थिति में देख सकता है।

तब आपको पता चलेगा कि स्वयं न केवल खोजकर्ता है, बल्कि खोजने की प्रक्रिया भी है, साथ ही जो खोजा जाता है वह भी है। साधक मन की शांति की तलाश कर रहा है, और वह एक विधि का अभ्यास करता है जिसके द्वारा वह जो चाहता है उसे पा सकता है।

खोजने वाला, तलाश करने वाला और खोजा जाने वाला, ये सभी एक ही चीज़ हैं। जब साधक वह खोजता है जो वह चाहता है, जो मन की शांति है, तो यह अभी भी ज्ञात के क्षेत्र में है। उसकी खोज जीवन के संघर्षों की प्रतिक्रिया है, इसलिए जिस शांति की वह सदैव तलाश कर रहा है वह ज्ञात का एक प्रक्षेपण है। जबकि, यदि मन, स्वयं उस खोज की काल्पनिकता को देखते हुए, शांति से बिल्कुल भी चिंतित नहीं है, बल्कि अपने स्वयं के संघर्षों को समझने में रुचि रखता है, और इसलिए उन्हें नकारात्मक रूप से देखता है, तो आत्म-ज्ञान की शुरुआत होती है।

स्वयं को समझना एक सतत, कालातीत प्रक्रिया है। आत्म-ज्ञान का कोई अंत नहीं है। जिस क्षण आप इस सत्य को देख लेते हैं कि स्वयं की समझ असीमित है, आपका मन पहले से ही ज्ञात से मुक्त हो जाता है और इसलिए अज्ञात में प्रवेश करने में सक्षम हो जाता है। एक मन जो बंधा हुआ है

ज्ञात कभी अज्ञात में नहीं जा सकता। आपके सभी भगवान, आपकी बाइबिल, आपकी गीता, आपकी मार्क्सवादी किताबें आपको बहुत दूर तक नहीं ले जाएंगी। दूर तक जाने के लिए आपको पास से शुरुआत करनी होगी, यानी यह देखना होगा कि चारों ओर से घिरा हुआ, ज्ञात से बंधा हुआ मन अज्ञात की ओर नहीं बढ़ सकता है।

अज्ञात ज्ञात का पूर्ण निषेध है; यह ज्ञात की प्रतिक्रिया नहीं है। तो खोजने वाले और खोजने वाले के खेल का अंत होना ही चाहिए।
दूसरे शब्दों में, सभी खोजों का अंत होना चाहिए। तभी कुछ नया है. सभी गहन खोजें इसी अवस्था में की जाती हैं, न कि तब जब मन ज्ञात का प्रक्षेपण कर रहा हो। यह तब होता है जब मन ज्ञात के क्षेत्र में जाना पूरी तरह से बंद कर देता है, जब यह ज्ञात को अज्ञात में प्रक्षेपित नहीं करता है - केवल तभी रचनात्मक नवीनता की एक असाधारण स्थिति अस्तित्व में आती है जिसका कोई लेना-देना नहीं होता है ज्ञात के साथ. वह सत्य है, वह वास्तविकता है, वह ईश्वर है, या जो भी नाम आप देना चाहें। लेकिन बात नाम की नहीं है.

इसलिए व्यक्ति को नजदीक से शुरुआत करनी चाहिए, यानी अपने दिमाग को उन सभी चीजों से खाली करना चाहिए जिन्हें वह जानता है - आंतरिक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से, तथ्यात्मक रूप से नहीं। आप यह नहीं भूल सकते कि आप कहाँ रहते हैं, यह भूलने की बीमारी होगी। लेकिन आपको, मनोवैज्ञानिक अर्थ में, वह सब कुछ मिटा देना होगा जो आपने एक अनुभवी व्यक्ति के रूप में, एक ज्ञानी व्यक्ति के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जाना है जिसने पढ़ा है, पढ़ा है, पढ़ा है, और जो ज्ञात द्वारा नियंत्रित होता है - वह सब इसका अंत अवश्य होना चाहिए। जो ज्ञात है उसका हमेशा एक केंद्र होता है, और इसलिए हमेशा एक परिधि, एक पहचानने योग्य सीमा होती है। सीमा तभी समाप्त होती है जब केंद्र समाप्त हो जाता है। फिर मन असीमित है, मनुष्य द्वारा मापा नहीं जा सकता।

25 फ़रवरी 1959

सातवीं वार्ता नई दिल्ली में

आज शाम मुझे लगता है कि समय और जीवन की बेहद जटिल और पेचीदा समस्या पर बात करना और यह देखना सार्थक होगा कि वे एक-दूसरे से किस तरह से संबंधित हैं। ऐसा करने के लिए एक बहुत ही सटीक और मर्मज्ञ दिमाग की आवश्यकता होती है, एक ऐसा दिमाग जो निष्कर्षों, अटकलों के सिद्धांतों में नहीं फंसता है, और इसलिए सुनने में सक्षम है, जो वास्तव में अनुभव कर सकता है। लेकिन हममें से अधिकांश के पास समय के बारे में, प्रेम के बारे में, मृत्यु के बारे में सिद्धांत हैं; हम काल्पनिक विचारों से भरे हुए हैं और मौखिक या अटकल स्तर पर बने रहने में ही संतुष्ट हैं। हम उस आदमी की तरह हैं जो हमेशा हल चलाता है और कभी बोता नहीं। और मुझे ऐसा लगता है कि यदि कोई अनुभव करेगा, तो उसके पास करने की क्षमता भी होनी चाहिए

अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ सुनें, जैसे कोई तब करता है जब उसे किसी चीज़ में वास्तव में रुचि होती है। तब, शायद, सुनना अनुभव है।

अब, किसी चीज़ को सीधे अनुभव करने के लिए, एक ऐसा दिमाग होना चाहिए जो अस्थायी, झिझकने वाला हो, जो किसी निष्कर्ष से शुरू न हो या कोई रुख न अपनाए।
निश्चित रूप से, मृत्यु या समय या प्रेम जैसी समस्या को सुलझाने के लिए विनम्रता की भावना के साथ, बड़ी झिझक के साथ, एक निश्चित कोमलता के साथ संपर्क करना आवश्यक है - यदि कोई भावुकता के बिना उस शब्द का उपयोग कर सकता है। मेरा विचार है, केवल तभी हम जो कहा जा रहा है उसकी सत्यता या असत्यता का अनुभव कर सकेंगे। व्यक्ति को असत्य के साथ-साथ सत्य का भी अनुभव करना चाहिए; अन्यथा, केवल स्वीकृति या अस्वीकृति है। यदि कोई यह समझने में सक्षम है कि क्या सच है और क्या झूठ है, तो अनुभव का असाधारण महत्व है। यह चुनौती की तत्काल प्रतिक्रिया है; यह कहने का कोई सवाल ही नहीं है, "मैं इसके बारे में सोचूंगा, मैं घर जाऊंगा और इस पर ध्यान लगाऊंगा," जो वास्तव में तत्काल प्रतिक्रिया को रोकता है। धारणा के बिना कोई तत्काल प्रतिक्रिया नहीं होती है, और धारणा वास्तव में काफी सरल है। कोई समझता है, और बस इतना ही। इसमें कोई तर्क-वितर्क नहीं है, कोई अटकल नहीं है, कोई विचार-प्रणाली नहीं है। या तो कोई देखता है या कोई नहीं देखता; कोई समझता है या कोई नहीं समझता है। जो नहीं समझता वह इसके बारे में सोचने से, स्पष्टीकरण ढूंढने से कभी भी समझ में नहीं आएगा। स्पष्टीकरण माँगना मौखिक, व्याख्यात्मक स्तर पर रहना है। एक व्यक्ति जो वास्तव में कुछ अनुभव करता है वह स्पष्टीकरण की तलाश नहीं करता है। उसका अपना बोध ही व्याख्या जगा देता है।

और इसलिए, जब हम चर्चा कर रहे होते हैं, किसी गंभीर समस्या पर एक साथ बात कर रहे होते हैं, तो मुझे ऐसा लगता है कि व्यक्ति के पास यह समझने की बुद्धि, कोमलता होनी चाहिए कि क्या झूठ है और क्या सच है। ऐसी धारणा हममें से अधिकांश के लिए बहुत कठिन है क्योंकि हमारे दिमाग बहुत सारे विचारों से भरे हुए हैं, बहुत सारे निष्कर्षों, परंपराओं, विश्वासों से भरे हुए हैं, और वे आत्म-विरोधाभास के भँवर हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह पता लगाना संभव है कि क्या झूठ है और क्या सच है अगर कोई अपनी खुद की कंडीशनिंग के बारे में जानता है और कहता है, "मुझे पता है कि मैं कंडीशन्ड हूं, और मैं उस पृष्ठभूमि के प्रभावों को हस्तक्षेप नहीं करने दूंगा मेरी धारणा के साथ। धारणा तब आती है जब विनम्रता, झिझक की भावना, कोमलता होती है, न कि तब जब हठधर्मी दावा या इनकार, या मात्र स्वीकृति होती है।

हम दो व्यक्तियों के रूप में एक साथ बात करने जा रहे हैं जो वास्तव में चिंतित हैं, मृत्यु की समस्या, समय की समस्या, और प्रेम नामक असाधारण चीज़। इन चीजों को वास्तव में समझने के लिए, हमें उनमें अपना रास्ता एक अज्ञात क्षेत्र के रूप में महसूस करना चाहिए, एक ऐसा क्षेत्र जहां मन ने कभी कदम नहीं रखा है, और इसके लिए एक नाजुक स्पर्श, एक संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। उस संवेदनशीलता को नकार दिया गया है

जब आपके पास दावे या इनकार का रवैया होता है, जो स्पष्ट रूप से अपरिपक्व होता है, तो यह एक विचारहीन दिमाग की प्रतिक्रिया होती है। इसलिए चाहे आप युवा हों या बूढ़े, चाहे आप अच्छी नौकरी करने वाले तकनीशियन हों या कुली या कई बच्चों वाली माँ हों, मेरा सुझाव है कि आप इन प्रश्नों, जो हम सभी को चिंतित करते हैं, पर बिना कोई उत्तर खोजे विचार करें; क्योंकि, जैसा कि मैंने कहा, कोई उत्तर नहीं है, और यदि आप बातचीत के अंत में उत्तर की आशा करते हैं, तो आप निराश होंगे। लेकिन दो व्यक्तियों के रूप में आप और मैं जो कर सकते हैं, वह है समस्या का पता लगाना। खोजने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है अन्वेषण करना। जो मायने रखता है वह यह कहे बिना कि "मैंने पा लिया है" देखते रहना, परखना, समझना जारी रखना है। जिस आदमी ने पाया है, उसने वस्तुतः नहीं पाया है; जो आदमी कहता है कि वह जानता है, वह कभी नहीं जानता। तो यह सीखने के दृष्टिकोण के साथ है, इसे एक साथ महसूस करने का है, कि आप और मैं दो इंसानों के रूप में समस्या पर गौर करेंगे।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी मृत्यु या समय या उस स्थिति के बारे में सोचा है जिसे हम प्यार कहते हैं। लेकिन इससे पहले कि हम यह जानना शुरू करें कि मृत्यु क्या है, हमें पहले यह जानना होगा कि जीवन क्या है - किसी विशेष स्तर पर जीवन नहीं, किसी वैज्ञानिक या सांसद या गृहिणी या व्यवसायी का जीवन नहीं। हमारे अपने दैनिक अस्तित्व में जीवन क्या है इसकी जांच में ये सभी शामिल हैं। यह जाने बिना कि हमारा जीवन वास्तव में क्या है, हम कभी यह नहीं जान सकते कि जीवन का महत्व क्या है। तो आइए हम बहुत सावधानी से, सलाहपूर्वक, उस पर गौर करें जिसे हम जीना कहते हैं।

हमारा जीवन क्या है? वह जीवन क्या है जिसे हम पल-पल, दिन-प्रतिदिन, वर्ष-दर-वर्ष जीते हैं? यह तो निरन्तर झगड़ा है ना? हम अपने आप को समाज के साथ, अपने पड़ोसी के साथ, अपनी पत्नी या पति के साथ, सरकार के साथ, जिस संस्कृति में हम रहते हैं उसके साथ तालमेल बिठाने के लिए लगातार संघर्ष करते हैं। हमारे और पर्यावरण के बीच एक अंतहीन लड़ाई है, कड़वाहट, दिनचर्या, कठिन परिश्रम और ऊब की निरंतर उथल-पुथल है। हम उन चीजों को करने के लिए मजबूर हैं जो हमें नापसंद हैं, इसलिए एक विरोधाभास है, संघर्षों और संघों की एक श्रृंखला है जो स्मृति को मजबूत करती है। इस स्मृति से हम कार्य करते हैं, कार्य करते हैं। हममें से अधिकांश लोग वास्तविक मनुष्य नहीं हैं, बल्कि मात्र कार्यकर्ता हैं, और हमारे पास इन चीजों के बारे में सोचने का समय नहीं है, इसलिए हम कहते हैं, "जब मैं सेवानिवृत्त होऊंगा तो गंभीर चीजों के बारे में सोचूंगा।"

जो राजनेता सरकार में जाता है उसे मनुष्य की चिंता नहीं होती; वह नीतियों, प्रणालियों, स्थिति से चिंतित है। लेखक का संबंध मौखिक अभिव्यक्ति से है, प्रतिस्पर्धा से है, आगे बढ़ने और अपना नाम बनाने के लिए संघर्ष करना है - और यहीं उसकी हताशा का बीज निहित है। वह आदमी जो नहीं पहुंचा है, वह पहुंचना चाहता है, वह आदमी जिसके पास और अधिक की लालसा कम है—ये और

कई अन्य संघर्ष उस जीवन का निर्माण करते हैं जिसे हम दिन-प्रतिदिन जानते हैं। एक क्षणभंगुर आनंद है, एक प्यार है जो जल्द ही मुरझा जाता है, एक अनुभूति है जो नियमित हो जाती है, पूरी तरह से ऊब की भावना है; हमारा जीवन संकीर्ण, क्षुद्र, उथला है और अनुभव के रूप में स्मृति इस सब पर हावी हो जाती है। ये हमारे दैनिक अस्तित्व के स्पष्ट तथ्य हैं, और इसके अंत में अपरिहार्य है: मृत्यु। मृत्यु उन सभी चीज़ों का अंत है जिन्हें हमने जाना है, उन सभी चीज़ों का जिन्हें हमने अनुभव किया है, और हम उस अंत से भयभीत हैं। डर का संबंध समय से इस अर्थ में है कि मन जो कुछ भी जानता है उसके अंत की भविष्यवाणी करता है, और इसलिए ज्ञात को अतीत की पृष्ठभूमि से भविष्य में प्रक्षेपित करता है।

मृत्यु अज्ञात है, और अज्ञात का सामना करते हुए, मन उन सभी की निरंतरता की तलाश करता है जो उसने जाना है।

तो हमारा जीवन समय के क्षेत्र में उनके कारणों और प्रभावों के साथ घटनाओं की एक श्रृंखला है। अर्थात्, मैंने कल को उसके सभी सुखों, गुज़रती खुशियों, संघर्षों, दुखों, संघर्षों के साथ जीया था, और कल के उस बोझ के साथ मैं आज जी रहा हूँ, जो स्पष्ट रूप से आज के मन को रंग देता है, और यह बदले में मन को आकार और विकृत करता है। कल। हम तो इस सातत्य को ही जानते हैं न? मैं जानता हूं कि मैं कल जीया था; मैं जानता हूं कि आज मैं कुछ चुनौतियों का अपर्याप्त रूप से जवाब दे रहा हूं, और इसलिए पीड़ित हूं; और मैं जानता हूं कि कल - अगर कुछ नहीं होता, अगर कोई दुर्घटना नहीं होती, अगर आसमान मुझ पर नहीं गिरता - मैं उसी पैटर्न पर आगे बढ़ूंगा: कार्यालय जाना, अपने संघर्षों, अपनी पसंद-नापसंद को जारी रखना, सेक्स के छोटे-छोटे सुख, मंदिर जाना वगैरह। हमारा जीवन समय के क्षेत्र में एक निरंतर गति है, जिसे निरंतरता कहा जाता है। हम बस इतना ही जानते हैं।

क्या आप अपने जीवन, अपने मन का अवलोकन कर रहे हैं, न कि केवल मेरा विवरण सुन रहे हैं? यदि आप सुनते समय अपने मन को देख रहे हैं तो आप देखेंगे कि जो कहा जा रहा है वह सत्य है। आप इसका खंडन, खंडन या स्वीकार नहीं कर सकते। यह बस एक तथ्य है. थोड़ा सा दर्द, थोड़ी सी ख़ुशी, उपलब्धि का घमंड, स्थायी दुःख, गहरी निराशाएँ, महत्वाकांक्षाएँ जो कभी पूरी नहीं हो सकतीं, ईर्ष्या, ईर्ष्या, खालीपन का डर, 'अकेलापन, विनाश का डर - यही हमारा जीवन है, एकमात्र जीवन हम जानते हैं. हम ज्ञात के क्षेत्र में रहते हैं और कार्य करते हैं।

स्मृति ज्ञात है. यदि आपको कल की कोई स्मृति नहीं है और आज की कोई स्मृति नहीं है, तो जाहिर है कि कल की भी कोई स्मृति नहीं होगी। परंतु मन स्वयं को स्मृति से मुक्त करने में सक्षम नहीं है क्योंकि यह स्वयं स्मृति का परिणाम है, और इसकी कार्यप्रणाली समय के क्षेत्र के भीतर है। तो स्मृति - हर अनुभव, हर विचार, हर प्रतिक्रिया की स्मृति - निरंतरता की एक स्थिति है, और वही आप हैं। यदि आप कहते हैं कि आप आत्मा हैं,

स्थायी आत्मा, या उच्चतर स्व, यह अभी भी ज्ञात के क्षेत्र में है क्योंकि आप केवल वही दोहरा रहे हैं जो आपको सिखाया गया है। आपने आत्मा के बारे में पढ़ा है और आपको यह विचार पसंद आया है - यह आपको संतुष्ट करता है, यह आपको एक निश्चित आराम देता है क्योंकि जीवन क्षणभंगुर है और आप आशा करते हैं कि कुछ स्थायी होगा।

इसीलिए मन एक स्थायी ईश्वर, एक स्थायी आध्यात्मिक सार, एक स्थायी शांति की स्थिति की अवधारणा बनाता है। लेकिन यह सब अभी भी ज्ञात के दायरे में है। यह अज्ञात के प्रति ज्ञात की प्रतिक्रिया है-मृत्यु। जिस मन में निरंतरता है वह निरंतर मृत्यु से भयभीत रहता है क्योंकि मृत्यु एक अंत है, भौतिक का अंत। तो मन कहता है, “मैंने काम किया है, मैंने कष्ट उठाया है, मैंने अनुभव किया है, और जो कुछ मैंने इकट्ठा किया है उसका एक भविष्य होना चाहिए; निरंतरता का कोई न कोई रूप अवश्य होना चाहिए।" यदि मेरा बेटा मर जाता है, तो मैं कहता हूं, "उसे अभी भी जीवित रहना चाहिए, और मुझे उससे दोबारा मिलना होगा।" मैं उससे बिल्कुल वैसे ही मिलना चाहता हूँ जैसे मैं उसे जानता था, बिना यह सोचे कि जीवन एक गति है, एक निरंतर परिवर्तन है। मेरी एकमात्र चिंता यह है कि जो मैंने जाना है उसे कायम रखना है।

सारा ज्ञान ज्ञात पर आधारित है। अज्ञात का कोई ज्ञान नहीं है, चाहे आप अज्ञात को ज्ञात के रूप में कितना भी अनुमान लगा लें।

मन एक तंत्र है जो अपने स्वभाव से ही स्मृति के माध्यम से अपनी निरंतरता की भावना पैदा करता है। यह निरंतर मन जानता है कि अंत है, इसलिए यह पुनर्जन्म में विश्वास करता है या किसी अन्य विश्वास से जुड़ा रहता है जो आत्म-स्थायित्व की आशा प्रदान करता है। हम यह करते हैं; यह हमारे रोजमर्रा के अनुभव का एक तथ्य है, है ना?

अब, हम उन सभी चीजों के अंत से इतने भयभीत क्यों हैं जिन्हें हम जानते हैं? वह क्या है जो हमने जाना है? आप अपने संघर्षों, अपने दुखों, अपनी छोटी-छोटी खुशियों और व्यर्थताओं, अपनी खुद की सोच की भयावह क्षुद्रता - "मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी संपत्ति" - अपने दैनिक अस्तित्व की उथल-पुथल और पीड़ा के अलावा क्या जानते हैं? हममें से अधिकांश लोग यही सब जानते हैं, और हम इसे जाने देने से डरते हैं। इसलिए समय हमारे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है - न केवल कल, आज और कल के रूप में कालानुक्रमिक समय, बल्कि खुद को पूरा करने, पहुंचने, कुछ बनने के मनोवैज्ञानिक अर्थ में भी समय। कल का हमारे लिए बहुत महत्व है क्योंकि कल आदर्श है - कल मैं अहिंसक हो जाऊंगा, कल मेरे अंदर प्रेम, विनम्रता की भावना होगी, कल मैं महानता प्राप्त करूंगा, कल मैं ईश्वर तक पहुंच जाऊंगा, कल मुझे पता चल जाएगा कि क्या सच है और जानते हैं कि कैसे जीना है. हम हमेशा समय के दायरे में कुछ न कुछ बनते रहते हैं।

बनने की क्रिया ने असाधारण महत्व ग्रहण कर लिया है। यदि यह क्रिया है

मन से मिटा दिया जाए, तब केवल अस्तित्व का भाव बचता है, जो कालातीत है। लेकिन आप उस स्थिति का अनुभव तब तक नहीं कर सकते जब तक आप महसूस नहीं करते, स्वयं बनने के महत्व को नहीं समझते। जो मनुष्य बन रहा है वह जीवित नहीं है, और इसलिए वह मृत्यु के भय में निरंतर बना रहता है। जो मनुष्य जीवित है वह बनने से मुक्त है, और उसके लिए कोई मृत्यु नहीं है।

तो समय मन का माप है, और ऐसा मन केवल अपने माप के भीतर ही कार्य कर सकता है; यह अपने माप से परे कार्य नहीं कर सकता, जो मनुष्य का माप है। समय के क्षेत्र में सदैव भय रहता है - मृत्यु का भय, समाप्त होने का भय, भविष्य का भय, अज्ञात। मैं नहीं जानता कि कल क्या होने वाला है—मैं असफल हो सकता हूँ, मेरी नौकरी जा सकती है, मेरा बेटा मर सकता है।

मैं आज ठीक हूं, लेकिन कल मैं बीमार हो सकता हूं।' कल का विचार ही भय का जागरण है। मैं बीमारी को जानता हूं, मैंने पीड़ा झेली है और उस स्मृति के साथ मैं कल के डर में आज जीता हूं। तो डर की शुरुआत समय का ज्ञान है, जो अंततः एक मन की स्थिति है जिसमें निरंतरता है।

कारण और प्रभाव समय के क्षेत्र में एक सतत प्रक्रिया है। कारण कभी स्थिर नहीं होता, न ही प्रभाव। जो एक प्रभाव था वह दूसरे प्रभाव का कारण बन जाता है। इन सबका पालन करें, महोदय; इसे अपने जीवन में देखें. कारण कार्य बन जाता है और कार्य कारण बन जाता है। निश्चित प्रभाव वाला कोई निश्चित कारण नहीं है, सिवाय शायद बीजों के मामले में। बलूत का फल कभी आम नहीं बन सकता; यह हमेशा ओक बन जाएगा। कारण और प्रभाव निश्चित हैं।

लेकिन मन स्थिर नहीं है; यह स्थिर नहीं है, और यही मन की सुंदरता है।
कारण और प्रभाव के बीच के अंतराल में विभिन्न प्रभाव कार्य करते हैं, सूक्ष्म दबाव और प्रवृत्तियाँ होती हैं जो प्रभाव को बदल देती हैं, और उस प्रभाव में और भी परिवर्तन होते हैं; एक और प्रभाव का कारण बनने की प्रक्रिया में इसे फिर से आकार और संशोधित किया जाता है। मन के साथ कोई निश्चित कारण नहीं है जो एक निश्चित परिणाम उत्पन्न करता हो।

तो किसी को पता चलता है कि मन उस क्षण अचानक बदल सकता है जब उसे निरंतरता के मिथ्या का एहसास होता है, जिसमें हमेशा मृत्यु का भय होता है। जब मन ईमानदारी से मृत्यु, समय और प्रेम की पूरी समस्या को समझने की कोशिश कर रहा है और इसलिए उन असंख्य कारणों और प्रभावों से पूरी तरह अवगत है जो इसे विभिन्न दिशाओं में धकेल रहे हैं, तो यह अचानक बदल सकता है - कल यह पूरी तरह से नया हो सकता है, पूरी तरह से परिवर्तित. यह सच्ची क्रांति है - आर्थिक या सामाजिक क्रांति नहीं, बल्कि मन की क्रांति जो मृत्यु और समय को एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखती है जिसमें कोई पुनरुत्थान, कोई नवीनीकरण नहीं है। जो निरंतर है उसका नवीनीकरण नहीं किया जा सकता।

यह केवल मन है जो अचानक समाप्त हो गया है, अटकलबाजी से नहीं

अनुशासन या आत्म-सम्मोहन के किसी भी रूप के माध्यम से, बल्कि जो है उसे ठीक से देखने के माध्यम से - केवल ऐसा मन ही है जो मृत्यु के चंगुल से परे जा सकता है।

महोदय, क्या आपने कभी अपने सुखों और अपने दुखों के लिए मरने की कोशिश की है?
जैसे एक मुरझाया हुआ पत्ता पेड़ से गिरता है और हवा से उड़ जाता है, क्या आपने कभी अपने सुखों, अपने दुखों, अपनी चिंताओं को यूं ही गिरने और मरने दिया है?
क्या तुमने इसे कभी आज़माया है? हममें से अधिकांश ने ऐसा नहीं किया है क्योंकि हम उस बोझ को अपने जीवन के अंत तक और उससे आगे तक ढोना चाहते हैं। हम किसी से नफरत करते हैं, और हम उससे नफरत करते रहना चाहते हैं; हम कहते हैं कि उसने हमारे साथ अन्याय किया है, या हम कोई अन्य स्पष्टीकरण देते हैं और पहले की तरह काम करते रहते हैं। अथवा किसी अत्यंत आनंद, अत्यंत मनोहरता का अद्भुत अनुभव पाकर हम उसकी स्मृति में जीना चाहते हैं। हम भी महत्वाकांक्षा की स्थिति में रहना चाहते हैं, जो वास्तव में ईर्ष्या की स्थिति है। आख़िरकार, महत्वाकांक्षा ईर्ष्या है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु नहीं है वह महत्वाकांक्षी नहीं है।

लेकिन हमारा समाज ईर्ष्या पर, ईर्ष्या पर आधारित है; इसने महत्वाकांक्षा और प्रतिस्पर्धा जैसे शब्दों को पवित्र बना दिया है । और क्या इन सबके बावजूद मरना संभव है? अपने घमंड के प्रति समर्पित होने का प्रयास करें, और आप इसे एक अत्यंत असाधारण अनुभव पाएंगे। मत पूछो क्या होगा. बस इसकी कोशिश। जब मृत्यु आती है, तो वह आपके मन को मिटा देती है।
कोई आशा नही है; यह एक अंतिम परिणति है, एक पूर्ण अंत है। उसी तरह, कोई भी बिना स्पष्टीकरण, बिना मकसद, बिना कारण के घमंड में मर सकता है।
इसे आज़माएं और आप उस मन की असाधारण स्थिति का पता लगाएंगे जिसने सब कुछ पीछे छोड़ दिया है, जिसने खुद को उन सभी चीजों से मुक्त कर लिया है जिन्हें उसने जाना है।
यदि आप स्मृति के रूप में समय की निरंतरता के लिए इस तरह से मर सकते हैं, तो आप मृत्यु नामक उस असाधारण चीज़ को पूरा करने में सक्षम होंगे, अपने जीवन के अंत में नहीं, बुढ़ापे से नहीं, किसी बीमारी या दुर्घटना से नहीं, बल्कि जब आप जीवित हैं, बेहद सतर्क हैं, अपने संपूर्ण अस्तित्व के प्रति पूरी तरह सचेत हैं। जब आप अपने अहंकार, अपनी महत्वाकांक्षा, अपनी छोटी-मोटी मांगों के प्रति मर जाएंगे, तब आपको पता चलेगा कि मृत्यु क्या है। और आप पाएंगे कि मृत्यु कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसके बारे में आप विश्वास रख सकें या अटकलें लगा सकें; यह पूरी तरह से अज्ञात है.

लेकिन हममें से अधिकांश के लिए अज्ञात एक डरावनी चीज़ है क्योंकि हम ज्ञात से चिपके रहते हैं। ज्ञात ही वह कारक है जो हमें बांधे रखता है। मैं तुम्हें जानता हूं और तुम मुझे जानते हो। यदि मैं तेरी पत्नी हूं, तू मुझे जानता है, तू मेरे साथ रहा है, तू ने मुझ से सुख पाया है; आप "मेरा घर, मेरी पत्नी, मेरी नौकरी" के संदर्भ में सोचते हैं, जो समय के क्षेत्र के भीतर ज्ञात है। और क्या आप उस सब से मर सकते हैं? यदि आप इसके प्रति मर नहीं सकते, तो आपके मन का क्या होगा? उस मन का क्या होता है जो निरंतरता जानता है? क्या आप प्रश्न समझते हैं? यदि मैं मनोवैज्ञानिक रूप से अपने घर, अपनी संपत्ति, अपनी पत्नी, अपने बच्चों के प्रति नहीं मर सकता, यदि मैं अपने मन को उन सभी चीजों से पूरी तरह मुक्त नहीं कर सकता जो मैंने जाना है, तो क्या होगा? जाहिर है कोई भी रोजमर्रा की जिंदगी के तथ्यों को नहीं भूल सकता, इसका तरीका क्या है

किसी का घर, उसने जो तकनीक सीखी है, इत्यादि। लेकिन क्या मन घमंड, शक्ति, पद, प्रतिष्ठा, उन सभी चीज़ों के मनोवैज्ञानिक निहितार्थों के आगे नहीं मर सकता, जिन्हें वह आंतरिक रूप से सबसे प्रिय मानता है और जो स्मृति का भी हिस्सा हैं?

महोदय, यदि आप सभी अतीत के प्रति मर नहीं सकते हैं और नए की खुशबू नहीं ले सकते हैं, तो जाहिर तौर पर आपका मन सम्मानजनक हो गया है, जो कि हम में से अधिकांश लोग हैं। हम ऐसे समाज में सम्माननीय हैं जो ईर्ष्या पर आधारित है, जिसमें झूठी नैतिकताएं, अनुकरणीय गुण, अहिंसा और शांति की खोखली बातें हैं।

एक सम्मानजनक मन एक अनुकरणशील मन है, और ऐसे मन का क्या होता है?
क्या यह वास्तव में एक मन है, या महज़ एक दोहराई जाने वाली रिकॉर्डिंग मशीन है? इस बारे में जरूर सोचिए जनाब, जो कहा जा रहा है उस पर अपना ध्यान दीजिए। ऐसा दिमाग स्पष्ट रूप से एक रिकॉर्डिंग मशीन के रूप में जारी रहता है जो मूल रूप से लाखों भारतीयों, चीनी, रूसी, अमेरिकियों या आप जिस समाज का हिस्सा हैं, उससे अलग नहीं है। यह क्षुद्र, छोटा, सीमित दिमाग है जो जारी रहता है, और आप उस निरंतरता को बनाए रखने की आशा करते हैं, आप फिर से जीने की आशा करते हैं, इसलिए आप पुनर्जन्म में, मृत्यु के बाद के जीवन में, या जीवित रहने के किसी अन्य रूप में विश्वास करते हैं। लेकिन केवल वही मनुष्य है जो रिकॉर्डिंग मशीन को क्रियाशील मानता है और निरंतरता की उस पूरी प्रक्रिया के प्रति मर जाता है - केवल ऐसा ही मनुष्य है जो नए सिरे से जीवित रहता है।

आइए इसे दूसरे तरीके से देखें। क्या आप अपने पड़ोसी से बहुत अलग हैं? आपका रूप अलग है, नाम अलग है, काम या कार्य अलग है, लेकिन अंदर से क्या आप तथाकथित जनसमूह से बहुत अलग हैं? मुझे डर है कि तुम नहीं हो. और मंत्री, देश के महान लोग—वे क्या हैं? उनकी स्थिति, उनकी कारें, उनकी टोपियां और बाकी सब कुछ जो वे पहनते हैं, उन्हें हटा दें और वे बिल्कुल आपके या किसी अन्य की तरह हैं - रिकॉर्डिंग मशीनें जो समय की दुनिया में जारी रहती हैं, शक्ति, स्थिति की तलाश करती हैं, संघर्ष करती हैं, आनंद लेती हैं, पीड़ा सहती हैं।

जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है, वह अपनी ईर्ष्या से, पद और शक्ति की इच्छा से शीर्ष पर पहुंच सकता है, ताकि इतिहास में वह जीवित रहे, लेकिन वह अभी भी समय के क्षेत्र में है। यह केवल मन ही है जो समय के लिए मर चुका है, ज्ञात के लिए मर चुका है - केवल ऐसा मन ही है जो पता लगा सकता है कि प्रेम क्या है।

अब, श्रीमान, प्रेम भावना नहीं है, प्रेम भक्ति नहीं है, प्रेम न तो दैहिक है, न पवित्र, न अपवित्र और न ही शुद्ध। यह अस्तित्व की एक अवस्था है, और आप इसे विभाजित नहीं कर सकते। आप यह नहीं कह सकते, "मैं एक से प्यार करता हूँ और दूसरे से प्यार नहीं करता।"
क्या आपने कभी एक पत्ता अपने हाथ में लिया है और उसे देखा है, एक पत्ता जो अभी-अभी उस गंदी सड़क पर गिरा है जहाँ हजारों लोग चले थे और अपने थूक से जमीन को प्रदूषित किया था? यदि आप उस पत्ते को महसूस कर सकते हैं, तो आप जान जाएंगे कि प्यार कैसे किया जाता है।

महोदय, नोट्स मत लीजिए; जो कहा जा रहा है उसका अनुभव करें, इस सब में अपना रास्ता महसूस करें। क्योंकि प्यार एक असाधारण चीज़ है, है ना? हमने इसे ईश्वर के प्रेम और मनुष्य के प्रेम में विभाजित किया है। मेरे लिए ऐसा करना एक अधार्मिक बात है। वहां केवल प्रेम है.

लेकिन एक मन जो भावुक है, एक मन जो ईर्ष्यालु, ईर्ष्यालु, महत्वाकांक्षी है, एक मन जो राष्ट्रवादी, प्रांतीय है - ऐसा मन कभी नहीं जान पाएगा कि प्यार क्या है। जब प्यार होता है तो कोई सही या गलत नहीं होता है, क्योंकि जब आपके पास वह भावना होती है, तो प्यार वह कर सकता है जो वह करेगा। लेकिन यह एक असाधारण स्थिति है क्योंकि हममें से अधिकांश लोग केवल समय की निरंतरता, मृत्यु के भय और ईर्ष्या से दबा हुआ प्रेम ही जानते हैं। हम बस इतना ही जानते हैं, और हम ज्ञात को कभी नहीं छोड़ते। एक हाथ से ज्ञात को पकड़ते हैं, दूसरे हाथ से अज्ञात को टटोलते हैं। हम विशुद्ध रूप से भौतिकवादी नहीं हैं, लेकिन न ही हम वास्तव में अज्ञात की खोज कर रहे हैं, इसलिए हम दुखी इंसान हैं जिनके दुःख दूर नहीं होते हैं और खुशियाँ जो समय के साथ जल्द ही ख़त्म हो जाती हैं।

मरना पल-पल होता है, और मरते हुए मन पर कोई प्रभाव अपना निशान नहीं छोड़ता। ऐसा दिमाग अनुभव को जड़ जमाने के लिए कोई जमीन नहीं देता, और इसलिए वह हमेशा युवा रहता है। लेकिन यह स्थिति तभी संभव है जब मन हर दिन हर उस चीज़ के प्रति मर रहा हो जो उसने जाना है, हर अनुभव के प्रति, हर स्मृति के प्रति, हर सुख के प्रति, हर दुःख के प्रति। आप कभी यह नहीं पूछ सकते कि कैसे मरें, जितना आप यह पूछ सकते हैं कि मृत्यु से कैसे बचा जाए। पेड़ से पत्ता ही गिर जाता है। जब मरना होता है, तो प्रेम होता है। बिना मरे प्रेम घृणा, ईर्ष्या बन जाता है; और कोई विश्वास, कोई मंदिर, कोई पवित्र पुस्तक आपको मृत्यु के भय से नहीं बचा सकती। जो चीज़ मन को मृत्यु के भय से मुक्त करती है वह दिन-प्रतिदिन मरती है, और केवल तभी प्रेम की शाश्वत स्थिति होती है।

1 मार्च, 1959

आठवीं वार्ता नई दिल्ली में

क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि हम आज शाम ध्यान में मन के बारे में बात करें, जो कि सबसे जटिल और सूक्ष्म समस्या है। यदि कोई नहीं जानता कि ध्यान, सच्चा ध्यान क्या है, तो मुझे लगता है कि वह जीवन में सब कुछ खो देता है। यह एक जेल में रहने जैसा है जहां आप केवल अपने सामने की दीवार देखते हैं और केवल सीमाएं, दर्द, दुःख और उन सभी छोटी-छोटी चीजों को जानते हैं जो आपके कारावास के जीवन को बनाते हैं। तो मुझे ऐसा लगता है कि ध्यान बहुत सीधा है

और हममें से प्रत्येक के लिए यह एक अंतरंग समस्या है क्योंकि जीवन की संपूर्ण गतिविधि को समझने के लिए ध्यान में मन के दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

लेकिन ध्यान में इस जांच को मन में साझा करना अपने आप में काफी कठिन समस्या है। साझा करने का तात्पर्य सुनने वाले लोगों की रुचि से है, क्या ऐसा नहीं है; इसका मतलब है कि हम जिस चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं उसका अवलोकन करना और उसमें भाग लेना। अगर मैं तुमसे कहूं, "फूल को देखो, यह कितना सुंदर है!" आप फूल की सुंदरता को केवल तभी साझा कर सकते हैं जब आपका मन शांत हो और इसलिए अवलोकन की स्थिति में हो। इसे अलग ढंग से कहें तो, आपका अपना दिमाग एक ही समय में समान स्तर पर दूसरे दिमाग से मिलने में सक्षम होना चाहिए; अन्यथा, उस अनुभव को साझा नहीं किया जा सकता। हम ऐसी कोई बात साझा नहीं कर सकते जिसमें मेरी रुचि हो और आपकी नहीं। मैं इंगित कर सकता हूं, वर्णन कर सकता हूं, व्याख्या कर सकता हूं, लेकिन कोई साझाकरण नहीं है जब तक कि आप मुझे अवलोकन के समान स्तर पर और समान गहनता, हृदय की समान भावनाओं के साथ न मिलें।

यह कोई अलंकारिक कथन नहीं है; यह एक रोजमर्रा का तथ्य है. आप अपने मित्र से कह सकते हैं, "उस अद्भुत सूर्यास्त को अवश्य देखें!" लेकिन अगर आपके दोस्त को सूर्यास्त की सुंदरता में दिलचस्पी नहीं है, तो आप इसे उसके साथ साझा नहीं कर सकते।

इसी तरह, अपनी पत्नी के साथ, अपने पति के साथ, अपने पड़ोसी के साथ किसी भी समस्या को साझा करने के लिए एक संवाद की आवश्यकता होती है जिसमें एक ही चीज़ की पारस्परिक और तत्काल धारणा होती है।

अब, आइए देखें कि क्या हम एक साथ ध्यान के महत्व को महसूस कर सकते हैं, और इसकी सुंदरता, निहितार्थ, सूक्ष्मताओं को भी समझ सकते हैं। सबसे पहले, ध्यान शब्द का आपके लिए बहुत विशेष महत्व है, है ना? आप तुरंत एक निश्चित मुद्रा में बैठने, एक निश्चित तरीके से सांस लेने, मन को किसी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करने आदि के बारे में सोचते हैं। लेकिन मेरे लिए वह बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। मेरे लिए ध्यान पूरी तरह से अलग है, और अगर आपको और मुझे ध्यान के बारे में यह पूछताछ साझा करनी है कि ध्यान क्या है, तो आपको स्पष्ट रूप से ध्यान के बारे में अपने पूर्वाग्रहों, अपनी वातानुकूलित सोच को एक तरफ रखना होगा। मुझे लगता है कि यह सच है, चाहे हम राजनीति पर चर्चा करें, या अर्थशास्त्र की किसी विशेष प्रणाली पर, या एक दूसरे के साथ हमारे संबंधों पर। ऐसी बातचीत, ऐसी चर्चा या आदान-प्रदान, किसी भी मूल्य के होने के लिए, साझा करने की एक प्रक्रिया होनी चाहिए; लेकिन अगर हम दोनों में से कोई एक निश्चित दृष्टिकोण से, किसी निष्कर्ष से शुरुआत करता है तो कोई साझेदारी नहीं है। यदि आपको तथाकथित ध्यान का एक विशेष रूप दिया गया है और दूसरा नहीं, तो स्पष्ट रूप से कोई साझाकरण नहीं हो सकता है। आपको अपने पूर्वाग्रहों और अनुभवों को छोड़ना होगा, और उसे भी अपने पूर्वाग्रहों को छोड़ना होगा, ताकि आप दोनों समस्या पर गौर कर सकें और साथ मिलकर पता लगा सकें कि ध्यान क्या है।

यदि आपको और मुझे इस समस्या को साझा करना है और समझना है, जो कि बहुत ही सूक्ष्म और जटिल है, तो यह आवश्यक है कि आप मेरी बातों से मंत्रमुग्ध न हों।

कह रहा हूँ. यदि आप केवल इसे स्वीकार या अस्वीकार करते हैं या स्पष्टीकरण से परे क्या है यह जानने की कोशिश करने के बजाय इसे अपने तरीके से व्याख्या करते हैं, तो कोई साझाकरण नहीं है, कोई वास्तविक सहभागिता नहीं है। इसलिए इस समस्या से समझदारी से निपटना बहुत ज़रूरी है।

अब, हमें बुद्धिमत्ता की परिभाषा खोजने की अनुमति न दें। एक विशेषज्ञ अपने चुने हुए क्षेत्र में बहुत चतुर हो सकता है, चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक्स, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र या आप जो भी हो, लेकिन जब तक वह जीवन को उस संकीर्ण, सीमित दृष्टिकोण से देखता है, वह स्पष्ट रूप से बुद्धिमान नहीं है। बुद्धिमान होने के लिए, दिमाग को पूरे जीवन से निपटने में सक्षम होना चाहिए, न कि केवल उसके एक निश्चित हिस्से से।

एक अर्थशास्त्री, एक वैज्ञानिक, एक व्यापारी, एक गृहिणी, यह या वह होने के नाते, आप यह सब अस्वीकार कर सकते हैं और कह सकते हैं, "ध्यान का मेरे जीवन से क्या लेना-देना है?"
संन्यासी के लिए, उस व्यक्ति के लिए जिसने दुनिया को त्याग दिया है, ध्यान करना ठीक है, लेकिन मेरे कार्य के लिए यह आवश्यक है कि मैं किसी भी सामान्य व्यक्ति की तरह दुनिया में रहूं, तो ध्यान का मुझसे क्या लेना-देना है? यदि यह किसी का दृष्टिकोण है, तो वह केवल अपनी स्वयं की नीरसता, अपनी स्वयं की असंवेदनशीलता, अपनी स्वयं की बुद्धिमत्ता की कमी को कायम रख रहा है। हम मनुष्यों के बारे में बात कर रहे हैं, न कि केवल उनके विभिन्न कार्यों के बारे में। मुझे आशा है कि आप अंतर देखेंगे. किसी विशेष मनुष्य का विशिष्ट कार्य चाहे कुछ भी हो, हम स्वयं समग्र मनुष्य के बारे में बात कर रहे हैं। लेकिन यदि आप जीवन को केवल कार्य का विषय मानते हैं और उस कार्य में अपनी विशेष स्थिति से चिपके रहते हैं, तो आप स्पष्ट रूप से अस्तित्व की संपूर्ण समस्या का सामना कभी नहीं कर पाएंगे। और इस समस्या से पूरी तरह निपटने की क्षमता ही बुद्धिमत्ता का सार है।

मुझे ऐसा लगता है कि ध्यान में केवल मन ही है जो मौलिक रूप से हमारे सभी कार्यों, हमारे जीने के पूरे तरीके को प्रभावित कर सकता है। ध्यान न तो हिमालय में किसी साधु के लिए आरक्षित है, न ही किसी मठ में किसी साधु या नन के लिए; और जब ऐसा होता है, तो यह जीवन से पलायन, जीवन की वास्तविकता से इनकार बन जाता है। जबकि, यदि आप और मैं दो इंसानों के रूप में, विशेषज्ञ के रूप में नहीं, यह पता लगा सकें कि ध्यान की स्थिति में मन के होने का क्या मतलब है, तो शायद वह धारणा सीधे तौर पर हमारे कार्यों और हमारे जीवन के पूरे तरीके को प्रभावित करेगी। आधुनिक अस्तित्व की अनेक जटिल समस्याएँ।

अब, ध्यान क्या है, और मन की वह स्थिति क्या है जो ध्यान करने में सक्षम है? ध्यानी कौन है और वह किस चीज़ का ध्यान करता है?
ध्याता और ध्यानी तो है ना? और निश्चित ही ध्यान करने वाले को समझे बिना ध्यान नहीं हो सकता। एक व्यक्ति जिसे गहन ध्यान कहता है उसमें बैठने में सक्षम हो सकता है, लेकिन यदि उसका मन क्षुद्र है,

वातानुकूलित, सीमित, उसके ध्यान का कोई अर्थ नहीं होगा। यह आत्म-सम्मोहन का एक रूप होगा - जिसे हममें से अधिकांश लोग ध्यान कहते हैं। तो, यह पूछने से पहले कि ध्यान कैसे करें या ध्यान की कौन सी प्रणाली का पालन करें, ध्यान करने वाले को समझना बहुत महत्वपूर्ण है, है ना।

मुझे इसे अलग तरीके से कहने दीजिए. एक सतही दिमाग विभिन्न धर्मग्रंथों को शब्द दर शब्द उद्धृत करने में सक्षम हो सकता है, लेकिन इससे वह सतही होना बंद नहीं हो जाता है। वह अपनी भक्ति की वस्तु से मंत्रमुग्ध होकर बैठ सकता है, वह मंत्रों को दोहरा सकता है, वह वास्तविकता को समझने या ईश्वर की तलाश करने का प्रयास कर सकता है; लेकिन अपने स्वभाव में उथला मन होने के कारण, इसका तथाकथित ध्यान भी उतना ही उथला होगा। जब क्षुद्र मन ईश्वर के बारे में सोचता है तो उसका ईश्वर भी क्षुद्र होता है।

जब एक भ्रमित मन स्पष्टता के बारे में सोचता है, तो उसकी स्पष्टता केवल और अधिक भ्रम पैदा करती है।

इसलिए सबसे पहले यह पता लगाना बहुत ज़रूरी है कि जो व्यक्ति ध्यान करना चाहता है उसके लिए ध्यान का क्या अर्थ है। जिसे हममें से अधिकांश लोग ध्यान कहते हैं, उसमें विचारक, ध्यानी, जो शांति, आनंद, वास्तविकता पाने के लिए ध्यान करना चाहता है, मौजूद है या नहीं। ध्यान करने वाला कहता है, "अगर मुझे उस वास्तविकता, उस आनंद, उस शांति को पाना है जिसकी मैं तलाश कर रहा हूं, तो मुझे अपने मन को अनुशासित करना होगा," इसलिए वह अंदर या बाहर, ध्यान की मुद्रा लेता है। लेकिन मन अभी भी क्षुद्र है, अभी भी भ्रमित है, अभी भी संकीर्ण है, पूर्वाग्रही है, ईर्ष्यालु है, व्यर्थ है, मूर्ख है; और ऐसा मन, ध्यान की प्रणाली की खोज या आविष्कार में, केवल अपनी संकीर्ण कंडीशनिंग की तर्ज पर ही सीमित होगा।

इसीलिए मैं कहता हूं कि ध्यानी को समझकर शुरुआत करना बहुत जरूरी है। किसी मठ में एक साधु चिंतन, प्रार्थना में घंटों बिता सकता है; वह अपनी भक्ति की वस्तु पर अंतहीन दृष्टि रख सकता है, चाहे वह हाथ से बनी हो या मन से, लेकिन ऐसा मन स्पष्ट रूप से प्रतिबद्ध, वातानुकूलित होता है; यह अपनी सीमाओं के अनुसार मोक्ष की तलाश कर रहा है, और यद्यपि यह प्रलय के दिन तक ध्यान कर सकता है, लेकिन इसे कभी भी वास्तविकता नहीं मिलेगी। वह केवल कल्पना कर सकता है कि उसे वास्तविकता मिल गई है और वह उस आरामदायक भ्रम में जी रहा है - जो कि हममें से अधिकांश लोग चाहते हैं। हम हवा में महल बनाना चाहते हैं, एक ऐसा आश्रय ढूंढना चाहते हैं जहां हम कभी परेशान न हों, जहां हमारे क्षुद्र मन कभी विचलित न हों।

तो, ध्यान करने वाले मन को समझे बिना, ध्यान केवल आत्म-सम्मोहन की एक प्रक्रिया बनकर रह जाता है। ओम शब्द या किसी अन्य शब्द को दोहराकर, किसी मंत्र का जाप करके, या वर्णमाला को पर्याप्त संख्या में पढ़कर, आप ध्वनि की एक लय बना सकते हैं जो आपके मन को मंत्रमुग्ध कर देगी, और एक मंत्रमुग्ध मन बहुत शांत हो जाता है, लेकिन वह शांति अभी भी आपकी अपनी क्षुद्रता के क्षेत्र में है। जब तक कोई गहराई से न समझे

विचारक, ध्यानी, ध्यानी और जिस पर वह ध्यान करता है उसके बीच हमेशा एक विभाजन, एक अंतर होता है, और इस अंतर को पाटने के लिए वह हमेशा संघर्ष करता रहता है।

तो फिर, जो मायने रखता है, वह है अपने स्वयं के मन को संचालन में देखना - एक पर्यवेक्षक के रूप में नहीं, एक इकाई के रूप में नहीं जो मन को देख रही है, बल्कि इसलिए कि मन अपनी गति के प्रति जागरूक हो। मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं।

जब आप किसी चीज़ को देखते हैं, तो हमेशा देखने वाला ही होता है, है ना?
जब आप एक फूल को देखते हैं, तो आप पर्यवेक्षक होते हैं, और फूल वहीं होता है। विचारक विचार से अलग है, अनुभवकर्ता अनुभवी से अलग है। यदि आप स्वयं का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि प्रेक्षक और प्रेक्षित, टी और 'नहीं-मैं', अनुभवकर्ता और अनुभव की जाने वाली चीज़ का विभाजन हमेशा होता है।

अब, ध्यान की समस्याओं में से एक यह है कि इस अंतर को कैसे खत्म किया जाए जो अनुभवकर्ता को अनुभवी से अलग करता है क्योंकि जब तक यह अंतर मौजूद है तब तक संघर्ष रहेगा - न केवल विपरीतताओं का संघर्ष, बल्कि मन का संघर्ष भी। किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, किसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सदैव संघर्षरत रहना। तो कोई मन की उस असाधारण स्थिति को कैसे ला सकता है जिसमें केवल अनुभव होता है, कोई अनुभवकर्ता नहीं?

महोदय, जब आप बहुत शांति से बैठते हैं और किसी प्रकार का ध्यान करने का प्रयास करते हैं तो क्या होता है? आपका मन हर जगह भटकता रहता है, है न? आप अपने जूते के बारे में, अपने पड़ोसी के बारे में, अपनी नौकरी के बारे में, आप क्या खाने वाले हैं, शंकर या बुद्ध या ईसा मसीह ने क्या कहा है, इत्यादि के बारे में सोचते हैं। आपका दिमाग भटक जाता है और आप इसे किसी विशेष फोकस या केंद्रीय मुद्दे पर वापस लाने की कोशिश करते हैं।

विचारक द्वारा अपने विचारों को नियंत्रित करने के इस प्रयास को एकाग्रता कहा जाता है। इसलिए विचारक और उसके भटकते विचारों के बीच हमेशा एक विरोधाभास होता है, जिसे वह एक विशेष खांचे में खींचने और जबरदस्ती थोपने की हमेशा कोशिश करता है। और यदि आप अपने सभी विचारों को एक चुने हुए पैटर्न में लागू करने में सफल हो जाते हैं, तो आप सोचते हैं कि आपने एक अद्भुत स्थिति हासिल कर ली है। लेकिन वह स्पष्टतः ध्यान नहीं है; यह बोध का जागरण नहीं है। वह केवल एकाग्रता की तकनीक सीखना है, जिसे कोई भी स्कूली छात्र कर सकता है।

एकाग्रता बहिष्कार, प्रतिरोध, दमन की एक प्रक्रिया है; यह एक प्रकार की मजबूरी है. ऐसा कहा जाता है कि जब कोई स्कूली छात्र वास्तव में खिड़की से बाहर देखना चाहता है या बाहर जाकर खेलना चाहता है तो वह खुद को अपनी किताब पढ़ने के लिए मजबूर करता है, ऐसा कहा जाता है कि वह ध्यान केंद्रित कर रहा है, और आप बिल्कुल यही करते हैं। आप अपने मन को एकाग्र होने के लिए बाध्य करते हैं, और इस प्रकार प्रेक्षक और प्रेक्षित, विचारक और विचार के बीच विरोधाभास शुरू हो जाता है, जो अंतहीन संघर्ष की स्थिति है।

अपने अंदर के इस द्वंद्व के प्रति जागरूक होकर आप कहते हैं कि आपको इससे छुटकारा पाना चाहिए,

और इसलिए आप ध्यान की एक प्रणाली की तलाश करते हैं - एक ऐसी प्रक्रिया जिससे हम सभी बहुत परिचित हैं, खासकर भारत में जहां लगभग हर कोई ध्यान की किसी न किसी प्रणाली का अभ्यास करता है।

अब, ध्यान की प्रणाली का अभ्यास क्या दर्शाता है? आइए हम मिलकर इस पर विचार करें। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि एक विधि, एक अभ्यास, एक प्रणाली के माध्यम से, आप एक निश्चित बिंदु पर पहुंचेंगे जिसे आप शांति या मुक्ति या आनंद कहते हैं। आप ईश्वर को महसूस करना चाहते हैं, और उस अहसास को लाने के लिए आप एक प्रणाली का अभ्यास करते हैं। लेकिन कोई भी सिस्टम आपको कभी भी उस तक नहीं ले जा सकता जो आप चाहते हैं क्योंकि सिस्टम ने आपका दिमाग पंगु बना दिया है। संन्यासी से नीचे की ओर और आप से ऊपर की ओर, वास्तव में यही हो रहा है।

कोई भी प्रणाली ज्ञात से ज्ञात की ओर गति को दर्शाती है, और ज्ञात सदैव स्थिर रहता है। जब आप कहते हैं, "मैं शांति तक पहुंचना चाहता हूं," आप जिस चीज के लिए प्रयास कर रहे हैं वह उस चीज का प्रक्षेपण है जो आप सोचते हैं कि शांति होनी चाहिए; इसलिए, आपके घर की तरह, यह स्थिर है, यह दूर नहीं जा सकता है, और एक रास्ता या एक प्रणाली आपको इस तक ले जा सकती है। लेकिन वास्तविकता एक जीवित चीज़ है, यह स्थिर नहीं है, इसका कोई ठिकाना नहीं है, और इसलिए कोई भी प्रणाली आपको इस तक नहीं ले जा सकती है। यदि आप एक बार वास्तव में इस सत्य को समझ लेते हैं, तो आप सभी गुरुओं, सभी शिक्षकों, सभी पुस्तकों से मुक्त हो जाते हैं - और यह एक जबरदस्त मुक्ति है।

तो क्या हमारी समस्या यह नहीं है कि हम इस तथ्य का अनुभव करें कि विचारक और विचार एक हैं, कि देखने वाला ही दृश्य है; और यदि आपने कभी इसे आज़माया है, तो आपको पता होगा कि यह करना एक असाधारण रूप से कठिन काम है। इसका मतलब प्रेक्षित के साथ स्वयं की पहचान करना नहीं है। क्या आप समझते हैं श्रीमान?
आप किसी व्यक्ति के साथ अपनी पहचान बना सकते हैं। आप खुद को मंदिर की छवि के साथ पहचान सकते हैं, जिसकी आप पूजा करते हैं और एक जबरदस्त भावना महसूस करते हैं जिसे आप भक्ति कहते हैं। लेकिन ऐसी पहचान अभी भी उस व्यक्ति को बनाए रखती है जो खुद को किसी चीज़ से पहचानता है। हम एक पूरी तरह से अलग स्थिति की बात कर रहे हैं जिसमें अनुभवी के अलावा कोई पहचान, कोई पहचान, कोई अनुभवकर्ता नहीं है जो खुद को अनुभवी के साथ पहचानने की कोशिश करके विरोधाभास पैदा करता है। वहां कोई अनुभवकर्ता ही नहीं है, केवल अनुभव कर रहा है।

आप स्वयं को अपनी भक्ति की वस्तु के साथ पहचान सकते हैं, लेकिन अभी भी एक द्वंद्व है। आप स्वयं को भारतीय मानते हैं क्योंकि आपने स्वयं को मानचित्र के उस रंगीन भाग से पहचाना है जिसे भारत कहा जाता है - जिसका राजनेताओं ने शोषण किया है, और जिसका आप भी शोषण करना चाहेंगे। लेकिन तथ्य यह है कि यह, पहचान के हर अन्य रूप की तरह, उस इकाई को बनाए रखता है जिसने खुद को किसी चीज़ के साथ पहचाना है।

यदि आप इस तथ्य को देखते हैं, तो अगला प्रश्न यह है: क्या मन के लिए ऐसी स्थिति लाना संभव है जिसमें अनुभवकर्ता के बिना केवल अनुभव हो? मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए. दिन के प्रत्येक मिनट में मन पर प्रभाव पड़ते रहते हैं। यह एक संवेदनशील फोटोग्राफिक फिल्म की तरह है जिस पर हर घटना, हर प्रभाव, हर अनुभव, विचार की हर गतिविधि अपनी छाप छोड़ रही है। चाहे हम इसके प्रति सचेत हों या नहीं, वास्तव में यही हो रहा है। अतीत के अनुभवों के इन छापों से बोझिल होकर, मन पुराने के संदर्भ में नए से मिलता है। दूसरे शब्दों में, अतीत हमेशा वर्तमान से मिलता है और भविष्य का निर्माण करता है।

अब, क्या मन छापों को ग्रहण करे और उन पर अंकित न हो? क्या आप समझते हैं श्रीमान? मुझे इसे बहुत सरलता से कहने दीजिए। आपका अपमान किया गया या आपकी चापलूसी की गई, और इसने आपके मन पर एक छाप छोड़ी है; अर्थात् अपमान या चापलूसी मन की भूमि में जड़ जमा चुकी है। अब, क्या आपने कभी यह देखने का प्रयोग किया है कि क्या आप अपमान और चापलूसी प्राप्त कर सकते हैं ताकि बाद में आपका मन उनसे पूरी तरह से अछूता रहे? असंख्य अनुभव एक के ऊपर एक ढेर होकर स्मृति की सतह पर खरोंच की तरह मन पर अपनी अराजक और विरोधाभासी छाप छोड़ रहे हैं। और क्या मन इन खरोंचों के बिना, नये सिरे से अनुभव कर सकता है? मैं कहता हूं कि यह हो सकता है, और तभी एक ऐसी स्थिति अस्तित्व में आती है जिसमें विचारक के बिना सोच होती है, अनुभवकर्ता के बिना अनुभव होता है, और इसलिए कभी विरोधाभास नहीं होता है।

यदि आप जिसे ध्यान कहते हैं, उसमें अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि विचारक और विचार के बीच हमेशा एक विभाजन, एक विरोधाभास होता है। जब तक विचार से अलग कोई विचारक है, तब तक ध्यान इस विरोधाभास को दूर करने का एक निरंतर प्रयास मात्र है।

मुझे आशा है कि यह सब बहुत सारगर्भित और बहुत कठिन नहीं है, लेकिन यदि ऐसा है, तो कृपया सुनें। हालाँकि आप पूरी तरह से समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या कहा जा रहा है, लेकिन सुनने का कार्य अंधेरी मिट्टी में बीज बोने जैसा है। यदि बीज महत्वपूर्ण है, और यदि मिट्टी समृद्ध है, तो वह अंकुर पैदा करेगी; आपको इसके बारे में कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। इसी प्रकार, यदि आप केवल सुन सकें और बीज को मन के गर्भ में गिरने दें, तो वह अंकुरित होगा, वह फलेगा-फूलेगा और एक ऐसा कार्य करेगा जो अचेतन रूप से सत्य है।

ध्यान में एक और समस्या एकाग्रता और ध्यान की है।
एकाग्रता का अर्थ है, जैसा कि मैंने पहले बताया, एक प्रतिबंध, एक सीमा; यह एक संकीर्ण, विशिष्ट प्रक्रिया है। जब स्कूली छात्र ध्यान केंद्रित करता है, तो वह खिड़की से बाहर देखने की इच्छा छोड़ देता है और कहता है, "यह एक भयानक किताब है, लेकिन परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए मुझे इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।" वह मूलतः है

जब हम ध्यान केंद्रित करते हैं तो हम सब क्या करते हैं। इसमें प्रतिरोध होता है, मन का एक निश्चित फोकस तक सीमित हो जाना, जिसे एकाग्रता कहा जाता है।

अब, ध्यान बिल्कुल अलग है। ध्यान की कोई सीमा नहीं होती. कृपया इसका बारीकी से पालन करें। ध्यान की स्थिति में मन पहचान की सीमा तक सीमित नहीं है। ध्यान एक ऐसी अवस्था है जिसमें किसी के भीतर और आसपास होने वाली हर चीज के बारे में पूरी जागरूकता होती है, पहचान की सीमा या सीमा के बिना जो एकाग्रता में मौजूद होती है।

श्रीमान, भगवान के लिए, मैं जो कह रहा हूँ उसे अवश्य सुनें; अनुभव करो कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं। नोट्स मत लो. अगर कोई आपसे कहे कि वह आपसे प्यार करता है तो क्या आप नोट्स लेंगे? (हंसी) आप हंसते हैं, लेकिन आप इसकी त्रासदी नहीं देखते। हममें से अधिकांश के साथ कठिनाई यह है कि हम याद रखना चाहते हैं, हम जो कहा गया है उसकी पहचान चाहते हैं, और हम इसे स्मृति में संग्रहीत करते हैं या इसे एक नोटबुक में रख देते हैं ताकि हम कल इसके बारे में सोच सकें।

लेकिन जब कोई कहता है कि वह तुमसे प्यार करता है, तो क्या आप नोट्स लेते हैं? क्या आप दूसरी तरफ देखते हैं? यहाँ भी वही बात है; अन्यथा, ये बैठकें बेकार हैं। खोखले शब्दों का कोई मतलब ही नहीं होता. इसलिए जो कहा जा रहा है उसे सुनें, और यदि आप कर सकते हैं, तो इसका अनुभव करें - लेकिन एक अनुभवकर्ता के रूप में नहीं।

मैं एकाग्रता और ध्यान के बीच अंतर बता रहा था। एकाग्रता में ध्यान नहीं होता, लेकिन ध्यान में एकाग्रता होती है। ध्यान में मन की कोई सीमा नहीं होती। जब आप ध्यान की स्थिति में होते हैं, तो आप सुनते हैं कि क्या कहा जा रहा है, आप खाँसी सुनते हैं, आप एक आदमी को अपना सिर खुजलाते हुए देखते हैं, दूसरे को जम्हाई लेते हुए देखते हैं, दूसरे को नोट्स लेते हुए देखते हैं, और आप अपनी प्रतिक्रियाओं से अवगत होते हैं। तुम सुनते हो, तुम देखते हो, तुम जागरूक हो; एक ध्यान है जिसमें कोई प्रयास नहीं है। प्रयास तभी अस्तित्व में है जब एकाग्रता हो, जो ध्यान के विपरीत है। ध्यान की स्थिति में, आपका पूरा अस्तित्व चौकस होता है, न कि आपके दिमाग का सिर्फ एक हिस्सा। जिस क्षण आपका मन कहता है, "मुझे वह अवश्य मिलना चाहिए," एकाग्रता होती है, जिसका अर्थ है कि आप अब ध्यान की स्थिति में नहीं हैं। कुछ पाने या बनने की लालसा से एकाग्रता उत्पन्न होती है, जो विरोधाभास की स्थिति है।

जरा देखिए इसकी सच्चाई. ध्यान में समग्र अस्तित्व है, जबकि एकाग्रता में नहीं है; यह बनने का एक रूप है। जो व्यक्ति बन रहा है उसके पास अधिकार होना चाहिए; वह विरोधाभास की स्थिति में रहता है। लेकिन जब सरल जागरूकता होती है, एक सहज ध्यान जिसका कोई अंत नहीं होता, तब आप पाएंगे कि मन के पास पहचानने की कोई सीमा नहीं है। ऐसा मन एकाग्र तो हो सकता है, लेकिन उसकी एकाग्रता बहिष्करण नहीं है। यह मत कहो, "मैं उस ध्यान की स्थिति को कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?" यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप "प्राप्त" कर सकते हैं। जरा इसकी सच्चाई देखिए- कि ध्यान की अवस्था में मन की कोई सीमा नहीं होती; कोई नहीं है

प्राप्त किए जाने वाले या हासिल किए जाने वाले लक्ष्य की पहचान। ऐसा मन एकाग्र हो सकता है, और वह एकाग्रता बहिष्कार नहीं है। यह ध्यान में मन द्वारा खोजी जाने वाली चीजों में से एक है।

फिर समस्या है मन में उठने वाले अनेक विरोधाभासी विचारों की। मन आवारा है, बेचैन है, एक चीज़ से दूसरी चीज़ की ओर लगातार उड़ता रहता है। अधिकांश लोगों की यही नियति है, है न?

अब, मन ऐसा क्यों करता है? निःसंदेह, मन ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह मूलतः आलसी है। एक मन जो आवारा है, विचारों से भरा हुआ है, एक मन जो तितली की तरह एक चीज़ से दूसरी चीज़ की ओर जाता है, वह आलसी मन है; और जब एक आलसी मन अपने भटकते विचारों को नियंत्रित करने की कोशिश करता है, तो वह केवल सुस्त, मूर्ख बन जाता है।

जबकि, यदि मन अपनी गति के प्रति जागरूक है, यदि वह अपने सभी विचारों को एक के बाद एक उठते हुए देखता है, और यदि वह अपने साथ आने वाले किसी भी एक विचार, अच्छे या बुरे, को ले सकता है, और उस विचार को अंत तक आगे बढ़ाता है। , तो आप पाएंगे कि मन असाधारण रूप से सक्रिय हो जाता है। यह मन की गतिविधि है जो विचारों की आवारागर्दी को समाप्त करती है - लेकिन नियंत्रण या बल के माध्यम से नहीं। ऐसा दिमाग अत्यधिक सक्रिय होता है, लेकिन इसकी गतिविधि किसी राजनेता या इलेक्ट्रीशियन या किताबों का उद्धरण देने वाले व्यक्ति की तरह नहीं होती है; यह बिना केंद्र वाली गतिविधि है। वह मन जो महत्वाकांक्षा से प्रेरित है, जो अपनी ही पूर्ति का पीछा कर रहा है, इस अर्थ में बिल्कुल भी सक्रिय नहीं है। लेकिन यदि आप एक विचार ले सकते हैं और उसमें पूरी तरह से, उत्साहपूर्वक, आनंदपूर्वक, अपने पूरे अस्तित्व के साथ जा सकते हैं, तो आप पाएंगे कि आपका दिमाग असाधारण रूप से सक्रिय हो जाता है; और यह गतिविधि, मन की यह सटीकता होनी चाहिए।

हमारी अगली समस्या यह है कि मन समय का परिणाम है, ज्ञात का परिणाम है। जो कुछ भी आपने अनुभव किया है - आपकी यादें, आपकी कंडीशनिंग, वह सब कुछ जो आपके लिए पहचानने योग्य है - ज्ञात के क्षेत्र में है, क्या ऐसा नहीं है? मन ज्ञात से ज्ञात की ओर सोचता है; इसकी गति सदैव ज्ञात के क्षेत्र में होती है। और मन के लिए स्वयं को ज्ञात से मुक्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है; अन्यथा, यह अज्ञात में प्रवेश नहीं कर सकता। एक मन जो ज्ञात से बंधा हुआ है वह उस स्थिति का अनुभव करने में असमर्थ है जिसमें बिना किसी गिरावट के पूर्ण शांति होती है। ऐसा तभी होता है जब मन ने ज्ञात को अचेतन के साथ-साथ चेतन स्तर पर भी समझ लिया हो, जब उसने समझ लिया हो और इसलिए खुद को इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, नफरतों, चापलूसों, सुखों, उन सभी चीजों से मुक्त कर लिया हो जो उसने एकत्र की हैं -केवल तभी, ज्ञात से मुक्ति में, अज्ञात अस्तित्व में आता है। आप अज्ञात को आमंत्रित नहीं कर सकते. यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप जो अनुभव करेंगे वह फिर से ज्ञात का परिणाम होगा; यह वास्तविक नहीं होगा.

तो ध्यान में मन पहचान के केंद्र के बिना जागरूकता की स्थिति में होता है, और इसलिए बिना परिधि के; यह बिना किसी सीमा के ध्यान है। ध्यान में मन वह है जिसने स्वयं को ज्ञात से बिना प्रयास के मुक्त कर लिया है। ज्ञात टूटकर गिर गया है, जैसे वृक्ष से पत्ता गिर जाता है, और इसलिए मन निश्चल है, मौन की स्थिति में है; और ऐसा मन ही अथाह, अज्ञात को प्राप्त कर सकता है।

4 मार्च, 1959

नौवीं वार्ता नई दिल्ली में

आज शाम मैं कर्म, धर्म और सौंदर्य की प्रकृति के बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा। मुझे ऐसा लगता है कि वे सभी संबंधित हैं, और केवल क्रिया या धर्म या सौंदर्य की प्रकृति से चिंतित होना क्रिया की पूर्णता को नष्ट करना है, जो तब केवल एक गतिविधि बन जाती है। अगर हमें इस सवाल पर बहुत गहराई से जाना है कि कार्रवाई क्या है, तो मुझे लगता है कि हमें धर्म और सुंदरता की प्रकृति के साथ-साथ मन की गुणवत्ता या संवेदनशीलता पर भी विचार करना चाहिए जो सुंदर चीज़ों को महसूस करता है और उनकी सराहना करता है।

हममें से अधिकांश के लिए कार्य एक दिनचर्या, एक आदत, कुछ ऐसा बन जाता है जिसे कोई प्यार से नहीं करता है या इसलिए नहीं कि इसका स्वयं के लिए गहरा महत्व है, बल्कि इसलिए कि उसे यह करना ही पड़ता है। व्यक्ति परिस्थितियों के कारण, ग़लत प्रकार की शिक्षा के कारण, उस प्रेम की कमी के कारण प्रेरित होता है जिससे वह कुछ वास्तविक करता है। यदि हम इस पूरे प्रश्न पर गौर कर सकें, तो मुझे लगता है कि यह बहुत ही खुलासा करने वाला होगा, क्योंकि तब शायद हम क्रांति की वास्तविक प्रकृति को समझना शुरू कर देंगे।

निश्चित रूप से, सच्ची कार्रवाई स्पष्टता से आती है। जब मन बहुत स्पष्ट, भ्रमित न हो, अपने भीतर विरोधाभासी न हो, तो कार्रवाई अनिवार्य रूप से उस स्पष्टता से उत्पन्न होती है; हमें इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि कार्रवाई कैसे की जाए।
लेकिन यह बहुत मुश्किल है, क्या ऐसा नहीं है, अबाधित धारणा रखना और चीजों को देखना, उस तरह नहीं जैसे कोई उन्हें देखना चाहता है, लेकिन जैसा कि वे वास्तव में हैं, किसी की पसंद और नापसंद से विकृत नहीं। ऐसी स्पष्टता से ही कार्रवाई की पूर्णता घटित होती है।

कार्रवाई की तुलना में स्पष्टता कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। लेकिन हमारा दिमाग सिस्टम, तकनीकों, यह जानने की इच्छा से ग्रस्त है कि क्या करना है। "क्या करें?" बहुत महत्वपूर्ण हो गया है; यह हमारा चिरस्थायी प्रश्न है. हम जानना चाहते हैं कि भुखमरी के बारे में क्या करना है, असमानता के बारे में क्या करना है, दुनिया में भयावह भ्रष्टाचार के बारे में और अपने दु:ख के बारे में क्या करना है।

कष्ट। हम हमेशा एक विधि, एक साधन, एक कार्य प्रणाली की तलाश में रहते हैं, है न?

लेकिन स्पष्टता कैसे प्राप्त करें यह स्पष्ट रूप से एक अधिक महत्वपूर्ण जांच है क्योंकि यदि कोई बहुत स्पष्ट रूप से सोच सकता है, यदि उसके पास ऐसी धारणा है जो विकृत नहीं है, जो प्रत्यक्ष, पूर्ण है, तो उस स्पष्ट धारणा से कार्रवाई होती है। ऐसी स्पष्टता अपना कार्य स्वयं निर्मित करती है। लेकिन जो लोग विभिन्न प्रणालियों के प्रति समर्पित हैं वे हमेशा एक-दूसरे के साथ मतभेद में रहते हैं, क्या ऐसा नहीं है?

वे एक साथ काम नहीं कर सकते. प्रत्येक व्यक्ति अपने विशेष अनुकूलन और स्वार्थ के अनुसार, उस प्रणाली के संदर्भ में समस्या की व्याख्या करता है जिसके लिए वह प्रतिबद्ध है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि हममें से अधिकांश लोग खुद को समूहों, पार्टियों और प्रणालियों में कैसे विभाजित करते हैं, और खुद को कुछ निष्कर्षों के लिए प्रतिबद्ध करते हैं। ऐसी कोई भी प्रतिबद्धता निश्चित रूप से स्पष्टता नहीं लाती। यह केवल शत्रुता, विरोध ही लाता है। लेकिन अगर आप और मैं अपनी मानवीय समस्याओं को प्रतिबद्धताओं, निष्कर्षों और स्वार्थ के साथ नहीं, बल्कि स्पष्टता के साथ देखते हैं, तो मुझे लगता है कि इन समस्याओं को बहुत आसानी से हल किया जा सकता है।

तो असली समस्या वह मन है जो समस्या का सामना करता है, और क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि हम केवल जो कहा जा रहा है उसे न सुनें बल्कि अपने अंदर जाएं और पता लगाएं कि मन किस तरह से भ्रमित है। यदि हम पूछें कि अपने भ्रम को कैसे दूर किया जाए, तो यह केवल एक अन्य प्रणाली की खेती ही लाएगा। वास्तव में यह देखना कि मन भ्रमित है, निश्चित रूप से, कार्रवाई के सवाल से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि क्या किया जाए। हमें इस दुनिया में रहना है, हमें काम करना है, हमें ऑफिस जाना है और सैकड़ों अलग-अलग काम करने हैं; और यह सारी क्रिया किस प्रकार के मन से आती है? मैं मन की पृष्ठभूमि का वर्णन कर सकता हूं, लेकिन मुझे लगता है कि इसका बहुत कम महत्व होगा यदि आप जो कहा जा रहा है उसे अपने मन से नहीं जोड़ते हैं। हममें से अधिकांश लोग सोचते हैं कि आत्म-ज्ञान केवल जानकारी का विषय है, मन भ्रमित क्यों है, इसके लिए विभिन्न स्पष्टीकरणों का संचय है, और हम स्पष्टीकरणों से आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं। लेकिन वास्तव में स्वयं को समझने के लिए, व्यक्ति को सभी स्पष्टीकरणों को दूर रखना होगा और अपने स्वयं के दिमाग का पता लगाना शुरू करना होगा - जो कि जो है उसे सीधे समझना है; मुझे पता होना चाहिए कि मैं भ्रमित हूं, कि मैं प्रतिबद्ध हूं, कि मुझे किसी प्रणाली, विचारधारा या विश्वास में निहित स्वार्थ है, और इसका महत्व देखना चाहिए; और निश्चित रूप से, वह धारणा ही अपने आप में पर्याप्त है। लेकिन अगर मैं केवल अपने भ्रम के विभिन्न कारणों को समझाने से संतुष्ट हूं तो उस प्रत्यक्ष धारणा को रोका जा सकता है।

मुझे ऐसा लगता है कि वास्तविक क्रांति आर्थिक, राजनीतिक या सामाजिक नहीं है, बल्कि मन की इस नई गुणवत्ता को लाना है जो हमेशा स्पष्ट होती है। और जब मन स्पष्ट नहीं होता, तो समझना ही मायने रखता है

इसके बारे में कुछ करने की कोशिश किए बिना सीधे तौर पर भ्रम का कारण बनता है।
भ्रमित मन अपनी उलझन के बारे में कुछ भी करे, वह फिर भी भ्रमित ही रहेगा।
मुझे नहीं लगता कि हम इसका महत्व देखते हैं। हममें से ज्यादातर लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि हम अपना भ्रम कैसे दूर करें, अपना अंधकार कैसे मिटाएं। लेकिन केवल यह अनुभव करना कि मन भ्रमित है, अपने आप में पर्याप्त है। अपने साथ प्रयोग करके देखो, और तुम देखोगे। भ्रमित मन का कोई उत्तर नहीं है; उसकी उलझन से निकलने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि वह जो भी रास्ता खोजेगा, वह फिर भी उलझन में ही रहेगा। जबकि, यदि मन अपनी उलझन के प्रति पूरी तरह से जागरूक है और पूरी तरह से चौकस है, अगर वह देखता है कि यह गड़बड़ है, कि इसमें विकृति है, कि इसमें कोई निहित स्वार्थ है - यह अपने आप में पर्याप्त है। यह अपनी स्वयं की कार्रवाई लाता है, जो मुझे लगता है कि वास्तविक क्रांति है। क्योंकि यह समस्या को नकारात्मक रूप से देखता है, ऐसा दिमाग सकारात्मक रूप से कार्य करता है। लेकिन जब मन किसी समस्या को सकारात्मक रूप से देखता है, तो वह नकारात्मक और इसलिए विरोधाभासी रूप से कार्य करता है।

इस पर विचार करें और आपको इसकी सच्चाई पता चल जाएगी। आख़िरकार, कोई भी तर्क, अनुनय, या प्रभाव, इनाम का कोई वादा या सज़ा की धमकी आपको सच को सच, झूठ को झूठ और झूठ में सच को देखने में सक्षम नहीं बना सकती है। जिस चीज की आवश्यकता है वह सरलता है जो चीजों को सीधे वैसे ही देखती है जैसे वे हैं - और यह मन की नई गुणवत्ता है जो वास्तव में एक क्रांति है।

समस्याएँ सकारात्मक प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन उन्हें सकारात्मक दृष्टिकोण से हल नहीं किया जा सकता क्योंकि समस्याएँ हमेशा नकारात्मक होती हैं; इसलिए, उनसे नकारात्मक रूप से संपर्क किया जाना चाहिए।

साहब, भुखमरी की समस्या लीजिए. हम इससे कैसे संपर्क करें? कम्युनिस्ट इसे एक प्रणाली के माध्यम से देखते हैं, पूंजीपति दूसरी प्रणाली के माध्यम से, जबकि संगठित धर्मों की अपनी परस्पर विरोधी प्रणालियाँ हैं। निश्चित रूप से, भुखमरी की समस्या को, हर अन्य मानवीय समस्या की तरह, नकारात्मक रूप से देखा जाना चाहिए; कोई भी प्रणाली इसका समाधान नहीं कर सकती क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी विशेष प्रणाली के लिए लड़ेगा जिसमें उसका निहित स्वार्थ है। आप इसे अभी अपने आसपास की दुनिया में घटित होते हुए देख सकते हैं। जबकि, यदि मन स्वयं को व्यवस्था से मुक्त कर लेता है और समस्या को नकारात्मक रूप से देखता है क्योंकि समस्या स्वयं नकारात्मक है, तो उस निषेध से एक सकारात्मक क्रिया उत्पन्न होगी। फिर एक कम्युनिस्ट के रूप में आपके और एक पूंजीवादी के रूप में मेरे बीच, या एक हिंदू के रूप में आपके और एक ईसाई या मुस्लिम के रूप में मेरे बीच कोई झगड़ा नहीं है, क्योंकि हम दोनों का संबंध व्यवस्था से नहीं बल्कि समस्या से है। समस्या में कोई निहित स्वार्थ नहीं है, जबकि व्यवस्था में निहित स्वार्थ है और यही वह निहित स्वार्थ है, जिस पर हम सदैव झगड़ते रहते हैं।

अब, इसकी सच्चाई देखने मात्र से स्पष्टता आती है, और उस स्पष्टता से कार्रवाई होती है। और मुझे लगता है कि यह हर समस्या के साथ समान है क्योंकि सभी समस्याएं नकारात्मक हैं, और आपको उनसे सकारात्मक सोच के साथ नहीं, बल्कि नकारात्मक तरीके से निपटना चाहिए। लालच या ईर्ष्या या ईर्ष्या या महत्वाकांक्षा से मुक्त होने के लिए, आपको इसे नकारात्मक रूप से देखना चाहिए और यह नहीं कहना चाहिए, "मैं इससे कैसे छुटकारा पाऊंगा?" जो नकारात्मक है उसकी प्रत्यक्ष धारणा स्पष्टता लाती है।

मुझे डर है कि किसी को इन चीजों के बारे में बहुत अधिक सोचना होगा - सोचना नहीं, बल्कि उनमें अपना रास्ता महसूस करना होगा क्योंकि विचार कभी भी मौलिक क्रांति नहीं लाते हैं, विचार कभी भी मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं लाते हैं। विचार, सोच ही निष्कर्ष तक ले जाते हैं और इन निष्कर्षों से निहित स्वार्थ निकलते हैं। जो दिमाग किसी निष्कर्ष से शुरू होता है उसने सोचना बिल्कुल बंद कर दिया है। आख़िरकार, जिसे हम सोच कहते हैं वह महज़ एक प्रतिक्रिया है, है न? यह किसी की पृष्ठभूमि, किसी की स्मृति, किसी के ज्ञान की प्रतिक्रिया है। इसलिए, सोच हमेशा सीमित, वातानुकूलित होती है। लेकिन प्रत्यक्ष धारणा कभी भी वातानुकूलित नहीं होती है। आप इस तथ्य को सीधे समझ सकते हैं कि आप ईर्ष्यालु हैं, उदाहरण के लिए, इसके बारे में सोचने के बिना, और उस प्रत्यक्ष धारणा की अपनी क्रिया होती है। लेकिन एक बार जब आप यह सोचना शुरू कर देते हैं कि आप ईर्ष्यालु क्यों हैं, अपनी ईर्ष्या के कारणों को ढूंढना, उसे समझाना, उसकी निंदा करना या उसे उचित ठहराना, उससे मुक्त होने का रास्ता खोजना शुरू करते हैं, तो वह पूरी प्रक्रिया प्रत्यक्ष धारणा को रोक देती है, जो है जिसे आप ईर्ष्या कहते हैं उसके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण।

शायद आप यह सब अस्वीकार कर देंगे क्योंकि मन पहली बार जो कुछ सुनता है उसे कुछ नया मानकर अस्वीकार कर देता है। लेकिन मुझे लगता है कि यह अफ़सोस की बात होगी यदि आपने इसे केवल यह कहकर अस्वीकार कर दिया, "आप हमें ध्यान की एक प्रणाली, एक विधि नहीं देते जिसके द्वारा यह या वह किया जा सके।" मेरा मानना है कि एक दिमाग जो किसी प्रणाली या पद्धति का अनुसरण करता है और उसके भीतर कार्य करता है वह मूलतः एक आलसी दिमाग है। किसी सिस्टम में कार्य करना बहुत आसान है; मन एक मशीन के पेंच की तरह काम कर सकता है; यह सोचने की जरूरत नहीं है. जबकि, किसी समस्या को नकारात्मक ढंग से देखने में आपको सतर्क रहना होगा; इसके लिए असाधारण रूप से चौकस दिमाग की आवश्यकता होती है। और मुझे लगता है कि यह एकमात्र वास्तविक क्रांति है क्योंकि यह शत्रुता और निहित स्वार्थ पैदा नहीं करती है, जबकि सिस्टम, विचार, निष्कर्ष हमेशा ऐसा करते हैं।

अब, प्रत्यक्ष बोध की स्पष्टता के साथ आइए देखें कि हम किसे धर्म कहते हैं। निश्चित रूप से, धार्मिक मन विश्वास करने वाला मन नहीं है। विश्वास सकारात्मक है, और जो मन किसी चीज़ पर विश्वास करता है वह कभी भी यह पता नहीं लगा सकता कि वास्तविक क्या है।

आख़िरकार, वह कौन सा धर्म है जिसे आप मानते हैं? आप मानते हैं कि ईश्वर या आप इसे जो भी कहें उसे पाने के लिए आपको अपने शरीर को अनुशासित करना होगा, अपने मन को नियंत्रित करना होगा और हर प्रकार की इच्छा को नष्ट करना होगा। जिसे बुलाओगे उसी के पास जाओगे

एक ऐसे मन से पवित्र जो विश्वासों से भरा हुआ है, अंधविश्वास और भय से अपवित्र है। जो वास्तविक है उसकी खोज करने के बजाय आप प्रतीक की पूजा करते हैं, इसलिए प्रतीक अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। आप प्रार्थना करते हैं, और आपकी प्रार्थना प्रार्थना है, जिसे आप भगवान कहते हैं उससे अपने या अपने परिवार के लिए कुछ मांगना। यह बाज़ार की चीज़ है. यदि तुम भीख मांगोगे तो तुम्हारा कटोरा भर सकता है। यदि आप रेफ्रिजरेटर मांगेंगे तो आपको रेफ्रिजरेटर मिल सकता है। यदि आप प्रार्थना में शांति मांगते हैं, तो आपको वह मिल सकता है जिसे आप शांति कहते हैं, लेकिन यह शांति नहीं है।

तो तुमने धर्म को एक आश्रय, एक पलायन, एक निरर्थक चीज़ बना दिया है।
आप शरीर के निरंतर अनुशासन के माध्यम से, हर इच्छा के दमन या नियंत्रण के माध्यम से वास्तविकता की तलाश करते हैं। जिसे आप भगवान कहते हैं, उसके पास आप एक ऐसे मन के साथ जाते हैं जो थका हुआ है, निराश है, निराशा में है, ऐसे हृदय के साथ है जो शुष्क, भयभीत और बदसूरत है। वह आदमी जो बहुत सारे वाक्यांश दोहराता है, जो सुबह से रात तक गीता पढ़ता है, या जो खुद को हर चीज से इनकार करता है और संन्यासी का चोला पहनता है - क्या आपको लगता है कि ऐसा आदमी वास्तविकता को खोज पाएगा? निश्चित रूप से, किसी को सच्चे दिल से, अपनी सभी संवेदनाओं को अत्यधिक विकसित करके, एक ऐसे दिमाग के साथ वास्तविकता की खोज के लिए निकलना चाहिए जो समृद्ध हो - स्पष्टता में समृद्ध हो, अनुभव में नहीं, वास्तविक स्नेह की सुगंध से समृद्ध हो।

धर्म वह नहीं है जिसे आप अब धर्म कहते हैं; यह किताब में नहीं है, यह मंत्र में नहीं है, यह मंदिर में नहीं है, यह खुदी हुई मूर्ति में नहीं है, चाहे हाथ से बनाई गई हो या दिमाग से। यह बिल्कुल अलग चीज़ है.

यह पता लगाने के लिए कि धर्म क्या है, मन को असाधारण पूर्णता के साथ इसकी ओर जाना होगा क्योंकि यह खाली है, और केवल तभी वास्तविकता अस्तित्व में आ सकती है। यह उन सभी चीज़ों का पूर्णतः उलट है जो आपको सिखाई गई हैं, और यही कारण है कि आपके लिए इसकी सच्चाई को देखना बहुत कठिन है।

सदियों से यह कहा जाता रहा है कि आपको इच्छारहित होना चाहिए, कि किसी भी वस्तु के प्रति इच्छा के हर रूप को विफल कर देना चाहिए, काट देना चाहिए। जबकि, मैं कहता हूं कि इच्छा को दबाना, काटना, विफल करना, नियंत्रित करना नहीं है, बल्कि समझना है।
नियंत्रण, दमन आलस्य का ही एक रूप है। इच्छा को उसकी सभी सूक्ष्मताओं के साथ, उसके सभी संकेतों के साथ, उसकी सभी प्रेरणा और ऊर्जा के साथ समझने के लिए, निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है, एक ऐसा दिमाग जो असाधारण रूप से सतर्क हो और न केवल चेतन स्तर पर, बल्कि अचेतन स्तर पर भी गहराई तक जाने में सक्षम हो। भी। चेतन मन सकारात्मक मन है; उसने सीखा है, उसने अनुभव किया है, उसने इकट्ठा किया है, और वह हर चीज़ का अपने स्वार्थ के अनुसार अनुवाद करना चाहता है। दूसरी ओर, अचेतन, नकारात्मक मन है, और आप इसके पास सकारात्मक रूप से नहीं जा सकते। यह केवल तभी होता है जब चेतन मन शांत, अबाधित होता है, कि वह अचेतन के संकेत और सूचनाएं प्राप्त करने में सक्षम होता है। सपनों का यही तरीका है.

यह कोई सकारात्मक दावा या इनकार नहीं है जो स्पष्टता लाता है, बल्कि समझने की यह पूरी प्रक्रिया है। यदि, सुनते समय, आप अपने आप में जाते हैं और अपने मन का निरीक्षण करते हैं, जो मुझे आशा है कि आप कर रहे हैं, तो आप पाएंगे कि ऐसे सुनने से समझ की स्पष्टता आती है। एक मन जो स्पष्ट है क्योंकि वह स्वयं को समझता है वह इच्छा से निपट सकता है, लेकिन एक मन जो आलसी है, और इसलिए इच्छा को दबाता है, नियंत्रित करता है, आकार देता है, वह हमेशा आत्म-विरोधाभास की स्थिति में रहेगा। मुझे नहीं पता कि क्या आपने ध्यान दिया है कि जब किसी इच्छा को नियंत्रित किया जाता है, आकार दिया जाता है, प्रेरित किया जाता है, दबाया जाता है, तो वह प्रतिक्रिया करती है, और इसलिए हम सदैव द्वंद्व के संघर्ष में रहते हैं।

महोदय, जो कहा जा रहा है उसे अवश्य सुनें और सुनते समय अपने मन को भी देखें। जो कहा जा रहा है वह महत्वपूर्ण है, वक्ता नहीं, क्योंकि जो कहा जा रहा है वह सत्य है; और सच होने के कारण यह गुमनाम है। इसका स्पीकर से कोई लेना-देना नहीं है.

यदि, सुनते समय, आप स्वयं के प्रति जागरूक होते हैं, अपने स्वयं के विचारों की गति को देखते हुए, आप देखेंगे कि कैसे इच्छा हमेशा अपना स्वयं का विपरीत बना रही है, जिसका अर्थ है कि मन में एक विभाजन, एक विरोधाभास है; और उस विरोधाभास से आप ईश्वर की तलाश करते हैं, आप अपनी पूजा के लिए संतों और मूर्तियों को गढ़ते हैं। जबकि, यदि आप इच्छा का विरोध नहीं करते हैं, बल्कि अपने अंदर जाते हैं और वास्तव में अपनी ईर्ष्या, अपनी यौन इच्छा, अपनी महत्वाकांक्षा, ईर्ष्या की भावना और इच्छा के हर अन्य रूप को समझना शुरू करते हैं; यदि आप इसे स्वीकार या अस्वीकार किए बिना, इसे बुरा या अच्छा कहे बिना इसका अवलोकन करते हैं और इसके बारे में पूरी तरह से जागरूक हैं - यानी इसे ऐसे मन से देखना है जो नकारात्मक है और इसलिए सीधे समझने में सक्षम है - यदि आप ऐसा कर सकते हैं, तो आप ऐसा करेंगे पता लगाएं कि ईश्वर आपकी खोज के ईश्वर से बिल्कुल अलग है। यह दुखी मन है, यह भ्रमित, भयभीत मन है जो भगवान की तलाश करता है। मन सोच सकता है कि उसने संसार को त्याग दिया है, लेकिन यदि वह अभी भी इच्छा से जल रहा है, तो उसका त्याग केवल आत्म-उन्नति का एक रूप है; इसका निहित स्वार्थ अब उस विचार में विश्वास है जिसे वह ईश्वर कहता है। जबकि, यदि आप स्वयं की इस पूरी प्रक्रिया को, 'मैं' को, इसकी इच्छाओं, इसकी महत्वाकांक्षाओं, इसके सूक्ष्म आग्रहों के साथ समझना शुरू करते हैं, तो आप देखेंगे कि विश्वास वास्तविकता में बाधा है, क्योंकि विश्वास अधिकार बनाता है; और अधिकार से बंधा हुआ मन कभी भी यह पता नहीं लगा पाएगा कि वास्तविक क्या है।

इसलिए धर्म चर्च या मंदिर का नहीं है; इसमें कोई हठधर्मिता, कोई विश्वास, कोई अभ्यास नहीं है। एक धार्मिक व्यक्ति वह है जो स्वयं में निरंतर जिज्ञासा करता रहता है।
एक राजनेता धार्मिक व्यक्ति नहीं होता, भले ही वह स्वयं को धार्मिक व्यक्ति कहता हो, क्योंकि वह एक विशेष परिणाम से चिंतित होता है जो उसका निहित स्वार्थ बन जाता है।
केवल वह मन जो नकार की स्थिति में है, वास्तविकता को पाएगा क्योंकि यह केवल है

ऐसा मन जो असत्य को असत्य और सत्य को असत्य के रूप में देखने में सक्षम हो
सत्य।

जिस प्रकार मन को सत्य को सीधे समझने के लिए संवेदनशील, अप्रतिबद्ध होना चाहिए, उसी प्रकार सौंदर्य की प्रकृति को महसूस करने के लिए भी उसे खुला, संवेदनशील होना चाहिए। हममें से अधिकांश लोग कहते हैं, "वह सुंदर है," या "वह कुरूप है," क्योंकि हमें याद है कि जिस परंपरा, शिक्षा, संस्कृति में हम पले-बढ़े हैं, उसके अनुसार क्या सुंदर है और क्या कुरूप है। लेकिन निश्चित रूप से, प्यार की तरह, सुंदरता का कोई विपरीत नहीं है। जिस मन में सुंदरता के प्रति असाधारण संवेदनशीलता होती है वह उस चीज के प्रति भी संवेदनशील होता है जो कुरूप है, और तुलना नहीं करता है। मुझे नहीं पता कि क्या आपको कभी अपनी भावनाओं, अपनी प्रतिक्रिया के बारे में पता चला है जब आप अचानक सूर्यास्त या आकाश के सामने पूरी तरह से खिले हुए पेड़ को देखते हैं। उस क्षण, निश्चित रूप से, आप ध्यान नहीं दे रहे हैं कि यह सुंदर है या बदसूरत, लेकिन एक पूर्ण प्रतिक्रिया है जिसमें विचारक अनुपस्थित है - जिसका अर्थ यह नहीं है कि मन ने खुद को पूरी तरह से त्याग दिया है। मुझे आशा है कि आप इसका अनुसरण कर रहे हैं।

शायद आपने कभी मन की उस स्थिति का अनुभव नहीं किया है जिसमें हर चीज़ का पूर्ण परित्याग होता है, पूरी तरह से जाने देना। और गहरे जुनून के बिना आप सब कुछ नहीं छोड़ सकते, क्या आप ऐसा कर सकते हैं? आप बौद्धिक या भावनात्मक रूप से सब कुछ नहीं छोड़ सकते। पूर्ण परित्याग निश्चित रूप से तभी होता है जब तीव्र जुनून होता है। उस शब्द से घबराएं नहीं, क्योंकि जो व्यक्ति भावुक नहीं है, जो प्रखर नहीं है, वह सुंदरता की गुणवत्ता को कभी नहीं समझ सकता या महसूस नहीं कर सकता। वह मन जो कुछ आरक्षित रखता है, वह मन जिसमें निहित स्वार्थ होता है, वह मन जो पद, शक्ति, प्रतिष्ठा से चिपका रहता है, वह मन जो सम्मानजनक है, जो डरावना है - ऐसा मन कभी भी खुद को त्याग नहीं सकता है।

जिसे सौन्दर्य कहा जाता है, उसके स्वरूप को समझने के लिए मन को पूरी तरह से समाप्त हो जाना चाहिए, लेकिन निराशा में नहीं। यह बहुत सरल होना चाहिए क्योंकि केवल एक साधारण दिमाग ही वह देख सकता है जो सत्य है। लेकिन अनुशासन से मन को सरल नहीं बनाया जा सकता. वह संन्यासी जो लंगोटी पहनता है, जो दिन में केवल एक बार भोजन करता है और इसके बारे में पुण्य महसूस करता है, वह सरल नहीं है।

सरलता एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन को स्वयं के सरल होने की कोई चेतना नहीं होती है। जिस क्षण आपको अपनी विनम्रता का एहसास होता है, आप विनम्र होना बंद कर देते हैं। जिस क्षण आप अपनी अहिंसा के प्रति सचेत होते हैं, आप हिंसा से भर जाते हैं। आदर्श और इसे प्राप्त करने के लिए सभी अभ्यास और अनुशासन एक आत्म-जागरूक प्रक्रिया हैं, और इसलिए पुण्य नहीं हैं।

यह सब अवश्य देखें क्योंकि आपके दिमाग इस तरह की चीज़ों से भरे हुए हैं; तुम इसके गुलाम हो. जो कहा जा रहा है उससे आप सहमत हो सकते हैं, लेकिन आप गिर जायेंगे

अपने पुराने तरीकों पर वापस लौटें। यह सहमति का सवाल नहीं है, यह धारणा का सवाल है। एक बार जब आप मामले की सच्चाई को स्वयं समझ लेते हैं, तो आप कभी भी आदर्शों और अनुशासनों की बकवास पर वापस नहीं लौट सकते। यह बात आपको विश्वास दिलाने या अविश्वास दिलाने या कोई नई हठधर्मिता पैदा करने के लिए नहीं कही जा रही है। लेकिन आपको अपने हर विचार, हर भावना के महत्व को समझने में तीव्र होना चाहिए, और उस तीव्रता से स्पष्टता आती है; और स्पष्टता अपना स्वयं का अनुशासन बनाती है—आपको किसी अनुशासन का अभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है।

सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता केवल किसी पेंटिंग, पेड़ या कविता में प्रकट सौंदर्य को देखने का मामला नहीं है। यह सौंदर्य की अनुभूति है, और प्रेम की अनुभूति की तरह, यह केवल अभिव्यक्ति में, शब्द में, हाथ पकड़ने में नहीं है। वह भावना, जो असाधारण है, अपनी क्रिया स्वयं रचती है। जो व्यक्ति जानता है कि प्रेम क्या है, जो प्रेम की स्थिति में है, उसके लिए कोई पाप नहीं है, कोई बुराई नहीं है। वह जो कर सकता है वह करे, यह मूलतः सही होगा। उसी तरह, जो मन अनुभव करता है वह बहुत सरल है, और यह सरल है क्योंकि वह अनुभव करता है; और वही धारणा अपनी क्रिया स्वयं निर्मित करती है। केवल ऐसा मन ही पूर्ण परित्याग की स्थिति में आ सकता है - जो समय के साथ कोई क्रमिक प्रक्रिया नहीं है।

बस उसकी सच्चाई देख लेना ही काफी है. ऐसा मन सत्य की खोज नहीं करता; यह मंदिर या पवित्र पुस्तकों के पास नहीं जाता; यद्यपि यह सक्रिय है, इसका क्रिया से कोई सरोकार नहीं है। क्योंकि यह एक आंतरिक क्रांति के माध्यम से हुआ है जिसने इसमें एक नया गुण लाया है, ऐसा मन जो शाश्वत है उसे प्राप्त करने के लिए नकार में प्रतीक्षा कर सकता है।

यदि कोई निरीक्षण करे, तो वह अपने भीतर अतीत को देख सकता है, न केवल अपना अतीत, बल्कि मानवता का संपूर्ण अतीत। आख़िरकार, हम विचारों और अनुभवों, खुशियों और दुखों की श्रृंखला के साथ सदियों के मानव अस्तित्व का परिणाम हैं। लेकिन उन सभी की जांच करने और उन्हें तोड़ने के लिए नकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है; मन को हर चीज़ को नकार के माध्यम से देखने में सक्षम होना चाहिए। "नकार" को किसी संस्कृत शब्द के समकक्ष के रूप में अनुवादित न करें और न ही कहें, बल्कि वास्तव में इसका अनुभव करें। जिस क्षण आप अनुवाद करना, तुलना करना शुरू करते हैं, आप तथ्य से दूर चले जाते हैं; जो कुछ तुमने पढ़ा है या सुना है उसकी याद में तुम जी रहे हो, और इसलिए तुम मर गये हो। जबकि, यदि आप प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं, तो मन आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट, सटीक, बोझ रहित है, और इसलिए इसकी क्रिया क्रांतिकारी है। केवल ऐसा मन ही वास्तविकता का आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है।

8 मार्च 1959

दसवीं वार्ता नई दिल्ली में

यह वर्तमान शृंखला की आखिरी बातचीत है, और यदि संभव हो तो मैं बात करना चाहूंगा अज्ञान, अनुभव और मन के बारे में जो सृजन की स्थिति में है।

लेकिन इससे पहले कि हम उस सब में जाएं, मुझे लगता है कि आपके और वक्ता के बीच के रिश्ते को समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर इतनी बातचीत के बाद भी उस रिश्ते को स्पष्ट रूप से नहीं समझा जाता है, तो इससे बहुत भ्रम पैदा होगा। वक्ता बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है; वह केवल आवाज है, टेलीफोन है; लेकिन जब कोई सीखने की प्रक्रिया में होता है तो जो कहा जाता है, उसका अत्यधिक महत्व होता है। यदि आप एक शिक्षक के रूप में वक्ता को महत्व देते हैं, तो आप केवल एक अनुसरणकर्ता का निर्माण कर रहे हैं, और इस प्रकार आप स्वयं को भी नष्ट कर रहे हैं और जो कहा जा रहा है उसे भी। अनुयायी और शिक्षक दोनों ही सीखने की प्रक्रिया के लिए हानिकारक हैं, और जब कोई सीखने का इरादा रखता है, तो न तो शिक्षक होता है और न ही अनुयायी।

मुझे लगता है कि यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि मैं आपसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बात नहीं कर रहा हूं जो समाज का विरोध करता है, या एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो इस या उस समूह से संबंधित है। मेरे लिए केवल इंसान है, चाहे वह भारत में रहता हो, अमेरिका में, रूस में, जर्मनी में या कहीं और। इसलिए मैं आपसे एक विशेष आस्था प्रणाली वाले भारतीय के रूप में बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि हम साथ मिलकर यह पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि जीवन जीने की यह पूरी प्रक्रिया क्या है।

यह हमारी पृथ्वी है; यह अंग्रेज या रूसी, अमेरिकी या भारतीय का नहीं है; यह वह धरती है जिस पर हम, आप और मैं रहते हैं। यह साम्यवादी या पूंजीवादी, ईसाई या हिंदू की नहीं है। यह हमारी पृथ्वी है, जिस पर बड़े पैमाने पर, व्यापक रूप से और गहराई से निवास किया जा सकता है; लेकिन जब आप राष्ट्रवादी होते हैं, जब आप किसी पार्टी या संगठित धर्म से होते हैं तो उस जीवन को अस्वीकार कर दिया जाता है। कृपया मेरा विश्वास करो; ये वही चीजें हैं जो इंसान को नष्ट कर रही हैं। राष्ट्रवाद एक अभिशाप है. अपने आप को हिंदू या ईसाई कहना भी एक अभिशाप है क्योंकि यह हमें विभाजित करता है। हम इंसान हैं, किसी संप्रदाय के सदस्य या किसी व्यवस्था के पदाधिकारी नहीं। लेकिन राजनेता, वह व्यक्ति जो किसी निष्कर्ष या ऐसी प्रणाली के प्रति प्रतिबद्ध है जिसमें उसका निहित स्वार्थ है, वह हमारे राष्ट्रवाद के माध्यम से, हमारे अहंकार और भावुकता के माध्यम से हम में से प्रत्येक का शोषण करेगा, जैसे पुजारी इसके नाम पर हमारा शोषण करता है- धर्म कहा जाता है.

लेकिन इन बातों पर एक साथ विचार करते समय, मुझे लगता है कि हममें से प्रत्येक के लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि सुनना एक बात है, और सुनना, जो कार्रवाई लाता है, बिल्कुल अलग बात है। जब आप यह कहते हुए सुनेंगे कि राष्ट्रवाद, अपनी सारी भावनात्मकता और निहित स्वार्थ के साथ, आपको सतही तौर पर सहमत हो सकता है

शोषण और मनुष्य को मनुष्य के विरुद्ध स्थापित करना; लेकिन वास्तव में अपने मन को राष्ट्रवाद की क्षुद्रता से मुक्त करना दूसरी बात है। न केवल राष्ट्रवाद से, बल्कि संगठित धर्मों और राजनीतिक प्रणालियों के सभी निष्कर्षों से मुक्त होना आवश्यक है, यदि मन को युवा, ताजा, निर्दोष, यानी क्रांति की स्थिति में होना है; और केवल ऐसा दिमाग ही एक नई दुनिया का निर्माण कर सकता है - न कि राजनेता, जो मर चुके हैं, न ही पुजारी, जो अपनी ही धार्मिक प्रणालियों में फंसे हुए हैं।

तो, सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, आपने कुछ ऐसा सुना है जो सच है; और यदि आप इसे केवल सुनते हैं और सक्रिय रूप से परेशान नहीं होते हैं ताकि आपका मन खुद को उन सभी चीजों से मुक्त करना शुरू कर दे जो इसे संकीर्ण और टेढ़ा बना रही हैं, तो आपने जो सत्य सुना है वह जहर बन जाएगा।

निःसन्देह सत्य यदि सुना जाए और घाव पर सड़न की भाँति मन में प्रभाव न डाले तो विष बन जाता है। लेकिन स्वयं यह पता लगाना कि क्या सत्य है और क्या असत्य, और असत्य में सत्य को देखना, उस सत्य को कार्य करने देना और अपनी स्वयं की क्रिया को सामने लाना है।

यह स्पष्ट रूप से सबसे महत्वपूर्ण बात है कि व्यक्तिगत मनुष्य के रूप में हम जीवन की इस पूरी प्रक्रिया को स्वयं समझें। जीना केवल कार्य और स्थिति का मामला नहीं है, और यदि हम एक निश्चित स्थिति के साथ मात्र कार्यकर्ता बनकर संतुष्ट हैं, तो हम यांत्रिक हो जाते हैं, और फिर जीवन हमारे पास से गुज़र जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि यदि कोई वास्तव में जीवन में भाग नहीं लेता है, जीवन की परिपूर्णता को अपने दिल में नहीं लेता है, तो उसका मन क्षुद्र, संकीर्ण, हठधर्मी मान्यताओं से भरा हो जाता है जो अब मनुष्यों को नष्ट कर रहे हैं।

यदि यह स्पष्ट है, तो आइए हम अज्ञानता के प्रश्न की जाँच करें। अज्ञान क्या है, ज्ञान क्या है, ज्ञान क्या है? निश्चित रूप से, सारा ज्ञान समय के क्षेत्र के भीतर है, और एक मन जो ज्ञान का अनुसरण करता है वह समय से बंधा हुआ है, ज्ञात के क्षेत्र तक सीमित है। जो चीजें कोई जानता है, जो तथ्य उसने एकत्र किए हैं, जो तकनीक उसने हासिल की है, चाहे वह पुल निर्माण हो, लेखांकन हो, या आप क्या करेंगे - यह सब ज्ञात के क्षेत्र के भीतर है।

अब, ज्ञान तो मानवीय रिश्तों में सदैव सक्रिय रहता है, है ना? मैं तुम्हें जानता हूं, और तुम मुझे जानते हो; मैं जानता हूं कि कैसे लिखना है, कैसे बात करनी है, यह या वह कैसे करना है, यह सब स्मृति से पैदा होता है - स्मृति जिसे अर्जित किया गया है, उत्तेजित किया गया है, शिक्षित किया गया है। मस्तिष्क स्मृति की इसी पृष्ठभूमि से कार्य करता है जिसे ज्ञान कहते हैं। ज्ञान को अनिश्चित काल तक बढ़ाया जा सकता है, उसके दायरे को व्यापक, गहरा, निश्चित, विश्वकोशीय बनाया जा सकता है, लेकिन सामाजिक रूप से उपयोगी होते हुए भी वह अज्ञान के दायरे में ही रहता है। ज्ञान अज्ञान को नहीं मिटाता। आपके द्वारा गीता या कोई भी अन्य पुस्तक पढ़ने से अज्ञानता दूर नहीं होगी।

तो, अज्ञान क्या है? एक आदमी बहुत विद्वान हो सकता है, वह प्रयोगशाला में कुशल हो सकता है, या नौकरशाह के रूप में कुशल हो सकता है, या बांधों और पुलों का एक महान निर्माता हो सकता है; परन्तु यदि वह स्वयं को नहीं समझता है, तो वह मूलतः अज्ञानी है। अगर मैं अपने सोचने के तरीके से अनजान हूं, जिस तरह से महसूस करता हूं, अगर मैं अपने अचेतन उद्देश्यों और छिपी हुई मांगों को नहीं देखता हूं, अगर मुझे नहीं पता कि मैं क्यों विश्वास करता हूं, मैं क्यों डरता हूं, मेरी महत्वाकांक्षा के स्रोत क्या हैं और निराशा, अगर मैं अपने भीतर जो कुछ भी है उसे उजागर और समझ नहीं पाता हूं, तो मैं ज्ञान की अधिरचना को कितना भी ऊंचा बना लूं, वह अनिवार्य रूप से विनाश का साधन बन जाएगा।

अज्ञान मन की वह अवस्था है जिसे स्वयं की कोई समझ नहीं होती। आप गीता, बाइबिल, कुरान, या जो भी किताब आप पवित्र मानते हैं, उसे उद्धृत कर सकते हैं, लेकिन यदि आप स्वयं को नहीं जानते हैं, तो उद्धरणों का कोई अर्थ नहीं होगा। अज्ञानता को दूर करना स्वयं को समझने में निहित है - न कि उच्च स्व, न परमात्मा और शेष अधिरचना जिसे मन ने अपनी क्षुद्रता से बचने के लिए बनाया है, बल्कि वह स्व जो हर दिन कार्य कर रहा है और जो महत्वाकांक्षा, हताशा, ईर्ष्या, ईर्ष्या, घृणा, भय से फटा हुआ है। यह निश्चित रूप से इस पूरी प्रक्रिया की पल-पल की समझ ही है जो मन की उस स्थिति को जन्म देती है जिसे ज्ञान कहा जा सकता है। इसलिए बुद्धि का ज्ञान से कोई लेना-देना नहीं है।

ज्ञान और अज्ञान साथ-साथ चलते हैं; एक दूसरे में प्रवाहित होता है, और अनुभव से अज्ञानता मजबूत होती है।

कृपया जो कहा जा रहा है उसे सुनें, और इसे नजरअंदाज न करें। बस सुनें, भले ही आप ठीक से न समझें। आप शब्द, वाक्यांश, प्रतीक को समझ सकते हैं; लेकिन शब्द, वाक्यांश, प्रतीक वास्तविक नहीं है। यदि आपको इसका एहसास होता है, तो शायद आप शब्दों के पीछे के अर्थ को समझने में बहुत झिझक महसूस करने लगेंगे, यानी खुद से पूछताछ करने लगेंगे। और आख़िरकार, इस बैठक का कार्य यही है - दिमाग पर कोई विचार या विश्वास थोपना नहीं, बल्कि जीवन की मूलभूत समस्याओं पर मिलकर विचार करने में हमारी मदद करना।

तो आप, एक इंसान के रूप में, और मैं, एक इंसान के रूप में, सीख रहे हैं। जैसा कि आप जानते हैं, मैं कोई संत या शिक्षक नहीं हूं जो यहां मंच पर बैठकर आपको बता रहा हूं कि क्या करना है क्योंकि जब हम दोनों सीख रहे होते हैं तो कोई अधिकार नहीं होता है।

अधिकार की स्वीकृति होने पर सीखना बंद हो जाता है। जो महत्वपूर्ण है वह उस मन से सुनना है जो पूछताछ कर रहा है, एक ऐसा मन जो जानना चाहता है कि क्या सच है और क्या झूठ है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग एक राय, एक विश्वास के साथ सुनते हैं।

जब हम किसी तथ्य के करीब पहुंचते हैं, तो तथ्य के बारे में हमारी राय होती है, और इसलिए तथ्य कभी भी दिमाग पर काम नहीं करता है। तो क्या मैं सुझाव दे सकता हूँ कि आप जानने के लिए सुनें

अपने लिए क्या सत्य है और क्या असत्य। किसी और के आपको बताने का इंतज़ार न करें क्योंकि कोई और नहीं बता सकता।

जैसा कि मैं कह रहा था, अनुभव से अज्ञानता मजबूत होती है क्योंकि अनुभव संचयी, योगात्मक होता है। कार्य के रूप में अनुभव एक स्तर पर आवश्यक है, लेकिन अनुभव जो इस अर्थ में संचयी है कि यह मन को उसके स्वार्थ के केंद्र में मजबूत करता है, केवल अज्ञानता को बढ़ाता है, और वह अज्ञान जिसे हम ज्ञान कहते हैं, बन जाता है।

यदि आप अपने मन की कार्यप्रणाली को देखें, तो आप देखेंगे कि यह हमेशा पुराने के संदर्भ में, यानी पिछले अनुभव के संदर्भ में नए का अनुवाद कर रहा है, जो बदले में आपकी विशेष संस्कृति, आपके विश्वासों का परिणाम है। आपकी शिक्षा का, आपकी कंडीशनिंग का। इसलिए अनुभव कभी भी मुक्ति कारक नहीं होता। अनुभव केवल अज्ञान के केंद्र को मजबूत करता है। उदाहरण के लिए, आपके पास ईसा मसीह या कृष्ण के दर्शन हो सकते हैं, लेकिन वह अनुभव एक ईसाई या हिंदू के रूप में आपकी पृष्ठभूमि का परिणाम नहीं है; और अनुभव पृष्ठभूमि, कंडीशनिंग, विश्वास को और मजबूत करता है।

तो अनुभव स्पष्ट रूप से मन को मुक्त करने, मुक्त करने का साधन नहीं है। आख़िरकार, अनुभव करना दर्द और खुशी, दुख और खुशी, इनकार और स्वीकृति की एक प्रक्रिया है। हम बस इतना ही जानते हैं। अनुभव की वह प्रक्रिया हर समय चलती रहती है, और इसे समझे बिना, मन कभी भी उस स्थिति में नहीं आएगा जिसमें वह पूरी तरह से सक्रिय है, लेकिन जिसमें कोई अनुभव नहीं है।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि मन अनुभव किए बिना भी समझने में सक्षम है। जब आप अचानक एक सुंदर पेड़ को आकाश में फैलता हुआ देखते हैं, तो क्या होता है? आप इसका अनुभव करते हैं, यानी आप इसका नाम रखते हैं, आप कहते हैं, "कितना सुंदर पेड़ है; मुझे इसकी प्रशंसा करनी चाहिए।" जब अधिकांश लोग कोई सुंदर चीज़ देखते हैं, तो जाने-अनजाने में यही करते हैं; वे इसका अनुभव करते हैं। लेकिन अगर आप सिर्फ सूर्यास्त, एक सुंदर फूल, या घास में भव्यता का अनुभव करते हैं, तो कोई अनुभव नहीं है। ऐसा नहीं है कि आप अपने आप को जो देखा जाता है उसके साथ पहचानते हैं, बल्कि यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें न तो पर्यवेक्षक होता है और न ही देखा गया, व्याख्या के बिना शुद्ध धारणा की स्थिति, स्मृति की याद के बिना। वह मुक्ति कारक है, क्योंकि यह मन को अतीत से मुक्त करता है।

कार्य में अनुभव आवश्यक है। यदि मुझे मशीनों का कोई अनुभव नहीं है तो मैं मैकेनिक नहीं हूं। अगर मैं मिट्टी को नहीं जानता तो मैं माली नहीं हूं।
अनुभव मुझे उन चीज़ों के बारे में सिखाता है जो मुझे एक निश्चित कार्य के निर्वहन में करनी होती हैं। लेकिन अनुभव विनाशकारी है; यह एक बिगड़ता हुआ कारक है जब यह एक ऐसी परंपरा बन जाती है जिसके अनुसार हर चीज़ का अनुवाद किया जाता है। दुनिया भर में यही हो रहा है, खासकर यहां भारत में, जहां सब कुछ है

परंपरा से बंधा हुआ है और यदि आप गीता पर एक भाष्य लिख सकते हैं तो आप बहुत बड़े आदमी हैं।

इसलिए अनुभव तब विनाशकारी होता है जब यह केवल एक योगात्मक प्रक्रिया बन जाता है। कृपया इसे जरूर सुनें. पारंपरिक मन एक मृत मन है; यह ज्ञात के क्षेत्र तक सीमित है, जो कार्य और स्थिति का क्षेत्र है। यह केवल मन है जो ध्यान की स्थिति में है, धारणा की स्थिति में है, जिसका अर्थ है कि यह पुराने के संदर्भ में अनुभव या अनुवाद नहीं कर रहा है - यह केवल ऐसा मन है जो ताजा, युवा, निर्दोष है, और इसलिए रचनात्मक।

ज्ञान में अज्ञान है, और अनुभव बंधनकारी है; लेकिन स्वयं की समझ - जो स्वयं की पूरी प्रक्रिया को जानना है, अचेतन के साथ-साथ चेतन, छिपे हुए और साथ ही खुले - मन को मुक्त करती है, यह मन को ताजा, युवा बनाती है। युवा दिमाग हमेशा गतिशील रहता है, बदलता रहता है, निर्णय लेता रहता है; यह हमेशा अपनी सीमा के पास आ रहा है और उसे तोड़ रहा है। लेकिन जिस मन ने अनुभव किया है और आगे अनुभव प्राप्त कर रहा है, हालांकि यह एक निश्चित कार्यात्मक स्तर पर मूल्यवान है, वह कभी भी ताज़ा दिमाग नहीं होता है; यह कभी भी उत्सुक, नया नहीं होता। साम्यवादी दिमाग, या पूंजीवादी दिमाग, या वह दिमाग जो एक संप्रभु राजनीतिक राज्य के संदर्भ में सोचता है - ऐसा दिमाग युवा कैसे हो सकता है? यह ऐसे निर्णय कैसे ले सकता है जो नए हों, ऐसे निर्णय जो पुराने विचारों पर आधारित न हों?

स्वयं को समझे बिना, अपने विचारों और इच्छाओं के छिपे तरीकों को उजागर किए बिना, छिपी हुई चाहत को पूरी तरह से समझे बिना, हमेशा नफरत, गर्व, भय रहेगा। तो आइए इस छुपे रहस्य पर नजर डालते हैं

चाहना।

मैं नहीं जानता कि क्या आप कभी अपने भीतर गहराई तक गये हैं। ऐसा करने के लिए, निश्चित रूप से, आपको अपने बारे में सभी स्पष्टीकरण, सभी निष्कर्ष, अपने बारे में अर्जित सारा ज्ञान एक तरफ रख देना होगा। केवल एक स्वतंत्र दिमाग ही पूछताछ करने में सक्षम है, न कि वह दिमाग जो किसी निष्कर्ष, विश्वास या हठधर्मिता से बंधा हुआ है।

यदि आपने कभी अपने आप में बहुत गहराई से जांच की है, तो आप निश्चित रूप से उस स्थिति में आ गए हैं जिसे हम अकेलापन कहते हैं, पूर्ण अलगाव की भावना, संबंधित न होने की भावना। एक इंसान के रूप में, आपने कभी न कभी अलगाव की उस हताश, पीड़ादायक, निराशाजनक भावना को महसूस किया होगा, जिससे जाने-अनजाने हम हमेशा दूर भागते रहते हैं। अकेलेपन की उस असाधारण भावना की वास्तविकता से हमारी उड़ान में, हम एक गहरी इच्छा से प्रेरित होते हैं, जो किताबों के माध्यम से, संगीत के माध्यम से, काम और गतिविधि के माध्यम से, पद, शक्ति, प्रतिष्ठा के माध्यम से हमेशा के लिए पूर्णता की तलाश में है।

यदि किसी भी समय आपको पूर्ण अकेलेपन का एहसास हुआ है, या यदि आपने कभी सचेत रूप से, जानबूझकर खुद को इसके बारे में जागरूक होने दिया है, तो आपको पता चल जाएगा कि आप तुरंत इससे दूर भागना चाहते हैं, इससे बचना चाहते हैं। आप मंदिर जाते हैं, भगवान की पूजा करते हैं, सतत गतिविधि में डूब जाते हैं, अनंत काल तक बात करते हैं, चीजों को समझाते हैं, या रेडियो चालू करते हैं। हम सभी ऐसा करते हैं, जैसा कि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि क्या हम स्वयं के प्रति सचेत हैं।

अब, यह महसूस करने के लिए कि किसी भी रूप में पलायन कभी भी आत्म-संतुष्टि के लिए इस गहरी इच्छा को संतुष्ट नहीं करेगा, यह देखने के लिए कि यह अतृप्त है, एक अथाह गड्ढा है, आपको इसके बारे में पूरी तरह से जागरूक होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि आपको उस सच्चाई को देखना होगा जो पलायन के पास है कोई वास्तविकता नहीं. आप ईश्वर के माध्यम से या शराब के माध्यम से बच सकते हैं, लेकिन वे दोनों एक ही हैं; एक दूसरे से अधिक पवित्र नहीं है. तुम्हें इस छिपी हुई चाहत को समझना होगा और उससे आगे जाना होगा, और अगर तुमने उस असाधारण अकेलेपन, उस अंधेरे का स्वाद नहीं चखा है, जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है, कोई उम्मीद नहीं है, तो तुम उसे समझ नहीं सकते और उससे आगे नहीं जा सकते। आशा तब अस्तित्व में आती है जब निराशा होती है। एक मन केवल इसलिए निराशा में है क्योंकि वह अपनी आशा से निराश है। इस गहरी इच्छा, इस छिपी हुई इच्छा को समझने के लिए, आपको इसे पूरी तरह से समझना होगा, जैसे आप एक पेड़ या एक सुंदर फूल को देख सकते हैं। तब तुम इसके पार जा सकते हो; और एक बार इसके परे, आप पाएंगे कि वहां एक पूर्ण अकेलापन है जो अकेले होने से बिल्कुल अलग है। लेकिन अकेलेपन से बचने के लिए, स्वयं को पूरा करने की गहरी इच्छा को समझे बिना आप पूर्ण अकेलेपन की उस स्थिति की खोज नहीं कर सकते।

यह सब असामान्य, अवास्तविक लग सकता है, और शायद आप कहेंगे, "इसका हमारे दैनिक जीवन से क्या लेना-देना है?" मुझे लगता है कि इसका आपके दैनिक जीवन से गहरा संबंध है क्योंकि आपका दैनिक जीवन हताशा का दुख है; कुछ बनने की, कुछ बनने की चिरस्थायी कोशिश है, जो इस गहरी चाहत, इस छुपी चाहत का वास्तविक परिणाम है। सतही तौर पर आप अनुशासन का अभ्यास कर सकते हैं, अपने मन को नियंत्रित कर सकते हैं, पूजा कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं, मंदिर जा सकते हैं, गीता पढ़ सकते हैं, शांति के बारे में बात कर सकते हैं, या जो भी आप चाहते हैं, लेकिन जब तक आप छिपे हुए रहस्य को नहीं समझते हैं तब तक यह सब बकवास है। चाहते हैं कि वह तुम्हें चला रहा है।

इसलिए अकेलेपन की स्थिति आवश्यक है क्योंकि निरंतर प्रयास से हमारा दिमाग थक जाता है। आपका जीवन क्या है? आप लगातार यह बनने और वह न होने का प्रयास कर रहे हैं, प्रसिद्ध होने, बेहतर नौकरी पाने, अधिक कुशल होने का सतत प्रयास कर रहे हैं; अथाह पुरूषार्थ कर रहे हो ना? मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि हमारा अस्तित्व कितना दयनीय है, हम हमेशा कुछ बनने, अच्छा बनने, अहिंसक होने का प्रयास करते हैं, राजनीतिक भावनात्मकता में लिप्त रहते हुए और युद्ध की तैयारी करते हुए लगातार शांति की बात करते रहते हैं।

हमारा जीवन संघर्ष, उथल-पुथल, पीड़ा से भरा हुआ है और उस स्थिति में कोई मन कभी भी ताजा, युवा, नया नहीं हो सकता है। ये सब देखकर जरूर किसी ने पूछा होगा

स्वयं कि क्या इस संसार में रहने के लिए ऐसा प्रयास आवश्यक है। जीने का एक अलग तरीका हो सकता है, बिना प्रयास के जीने का एक तरीका - सबसे निचले स्तर पर नहीं, गाय की तरह, न ही एक इंसान की तरह जो हमेशा वही करता रहता है जो उसे पसंद है, बल्कि उच्चतम स्तर पर, एक ऐसा स्तर जहां कोई प्रयास नहीं है.

लेकिन आप यह नहीं कह सकते, "मैं उस मनःस्थिति का एहसास कैसे करूँ जिसमें कोई प्रयास नहीं है?" क्योंकि उस स्थिति को प्राप्त करने की इच्छा ही आसक्ति का दूसरा रूप है, और सारी आसक्ति उन चीज़ों से होती है जो मर रही हैं, या मर चुकी हैं।

आप मृतकों से जुड़े हैं, जीवितों से नहीं। आप अपनी पत्नी से नहीं, जो एक जीवित इंसान है, बल्कि सुखद स्मृति वाली पत्नी से जुड़े हुए हैं।

आप जीवित, गतिशील नदी से बंधे नहीं रह सकते; आप उस नदी को देखने के आनंद से आसक्त हैं, जो एक स्मृति है, एक मृत चीज़ है।

जीने का एक ऐसा तरीका है जो पूरी तरह सहज है। कृपया महोदय, मैं आपसे इसे स्वीकार करने के लिए नहीं कह रहा हूं। इसका स्वीकार या अस्वीकार से कोई लेना-देना नहीं है.

आप बस इसे नहीं जानते। तुम सब जानते हो प्रयास, संघर्ष; आप लगातार खुद को कुछ बनने या न होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, और तनावों और विरोधाभासों के साथ अपनी महत्वाकांक्षाओं की आपकी आक्रामक खोज, इस छिपी हुई चाहत का परिणाम है। आप स्वयं को सम्मोहित करके इस छिपी हुई चाहत को दूर नहीं कर सकते। आपको इसे देखना होगा, और जब तक आप बच रहे हैं तब तक आप इसे नहीं देख सकते। आप इसे तभी देख सकते हैं जब आप पूरी तरह से बिना किसी डर के इसके पास आ जाएं क्योंकि यह सच्चाई है। यह तय न करें कि तथ्य क्या होना चाहिए; तथ्य आपको बताएं कि यह क्या है। हममें से अधिकांश लोग तथ्य के बारे में एक राय के साथ, ज्ञान के साथ, विश्वास के साथ तथ्य पर आते हैं, जो एक अपरिपक्व, बचकानी बात है।

आपको मासूमियत के साथ, दिल की परिपूर्णता के साथ, जो कि विनम्रता है, इस तथ्य पर आना चाहिए। तब तथ्य आपको बताएगा कि यह क्या है।

यह छिपी हुई चाहत असाधारण रूप से गहरी और सूक्ष्म है, लेकिन अगर आप इसे बिना किसी राय के, बिना किसी डर के देखने में सक्षम हैं, तो आप पाएंगे कि आप इसके अंधेरे से परे एक ऐसी स्थिति में जा सकते हैं जहां मन पूरी तरह से अकेला है और इसलिए नहीं लंबे समय तक प्रभाव का परिणाम. यह अकेलापन ही ध्यान की अवस्था है।

जैसा कि मैंने पिछले दिन कहा था, ध्यान और एकाग्रता दो अलग चीजें हैं। इस अकेलेपन में, जो ध्यान की अवस्था है, एकाग्रता की कोई छाया नहीं होती। अकेला, अप्रभावित, विचारों में न फँसा हुआ, मन पूर्णतया चौकन्ना रहता है; यह गतिहीन है, मौन है, पूर्णतया शांत है। लेकिन आप मन को स्थिर नहीं कर सकते। आप कुछ वाक्यांशों को दोहराकर मन को मंत्रमुग्ध कर सकते हैं, या प्रार्थना द्वारा इसे शांत कर सकते हैं, लेकिन वह शांति नहीं है - वह मृत्यु है। यह मन को स्थिर रखने के लिए एक स्ट्रेटजैकेट में डालने जैसा है - और इसलिए मन नष्ट हो जाता है।

जो आवश्यक है वह इस गहरी, छिपी हुई चाहत को समझना है, जो हमेशा बदलती रहती है - और यही इसकी सुंदरता है। आपको लगता है कि आपने इसे समझ लिया है, लेकिन बाद में पता चलता है कि यह कहीं और चला गया है। इसलिए व्यक्ति को मन के सभी अंधेरे गलियारों में इस छिपी हुई चाहत को आगे बढ़ाना होगा। तब वह अकेलापन आता है जो ध्यान है, और जो वास्तव में एक गतिहीन स्थिति है। मैं गतिविधि के विरोध में गतिहीन शब्द का उपयोग नहीं कर रहा हूं । वह मन जो गतिहीन है, स्थिर है, मृत मन नहीं है। यह एक सक्रिय मन है, यह स्वयं गतिविधि है क्योंकि यह स्थिर है, और केवल ऐसा मन ही रचनात्मक होता है - वह मन नहीं जो पेंटिंग करता है, नृत्य करता है या किताबें लिखता है। यह केवल मन की बाहरी अभिव्यक्ति है जो बिल्कुल भी रचनात्मक नहीं हो सकती है। एक मस्तिष्क के पास लिखने का उपहार हो सकता है; यह कभी-कभार किसी चीज़ के दृश्य को पकड़ सकता है और उसे कविता या कैनवास पर व्यक्त कर सकता है, लेकिन मन की रचनात्मकता पूरी तरह से अलग होती है। जो मन सृजन की स्थिति में है वह वास्तव में पूरी तरह से शांत है, और केवल ऐसा मन ही अथाह को प्राप्त कर सकता है। वास्तविक, अविनाशी, अपरिमेय को जानने के लिए मन को शांत, पूर्ण विनम्रता की स्थिति में होना चाहिए; और जब तक गहरी, छुपी हुई चाहत मौजूद है तब तक मन में विनम्रता नहीं है।

11 मार्च, 1959

मद्रास, भारत, 1959

मद्रास में पहली वार्ता

ऐसा लगता है कि सहभागिता एक अत्यंत कठिन कला है। हमारी अनेक समस्याओं पर एक-दूसरे के साथ संवाद करने के लिए सुनने और सीखने की आवश्यकता होती है, जो दोनों ही करना बहुत कठिन है। हममें से अधिकांश शायद ही सुनते हैं, और हम शायद ही सीखते हैं। एक-दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए, जिसके लिए इन बैठकों का उद्देश्य है, एक निश्चित क्षमता, सुनने के एक निश्चित तरीके की आवश्यकता होती है - न केवल जानकारी इकट्ठा करने के लिए, जो कोई भी स्कूली छात्र कर सकता है, बल्कि समझने के लिए सुनना भी आवश्यक है। इसका मतलब है कि जो कहा जा रहा है उसके सभी निहितार्थों के बारे में आलोचनात्मक रूप से जागरूक होना, साथ ही जो कहा जा रहा है उसके बारे में अपने स्वयं के मूल्यांकन को बहुत ध्यान से देखना। आप जो सुनते हैं उसका मूल्यांकन करने की प्रक्रिया के दौरान, जाहिर तौर पर आप नहीं सुन रहे हैं क्योंकि वक्ता पहले ही आपके विचार, आपकी राय, आपके निश्चित विचार से परे जा चुका है। आपने पहले ही सुनना बंद कर दिया है, और इसलिए संवाद करना बहुत कठिन हो जाता है, खासकर जब बड़ी संख्या में श्रोता हों। जब दो या तीन लोग एक कमरे में चुपचाप इकट्ठे होते हैं, तो एक साथ शब्द के अर्थ, शब्दार्थ महत्व पर बात करना संभव होता है। लेकिन जब कोई इस तरह से कई लोगों से बात कर रहा होता है, तो हमारे लिए एक-दूसरे के साथ बातचीत करना, एक-दूसरे के साथ कई समस्याओं को साझा करना लगभग असंभव हो जाता है, जो स्पष्ट रूप से हर विचारशील व्यक्ति के सामने आती हैं।

आदमी।

मुझे यह अत्यंत महत्वपूर्ण लगता है कि सीखने के लिए हम सुनें। सीखना केवल ज्ञान का संचय नहीं है। ज्ञान कभी बोध नहीं लाता; अनुभव कभी भी समझ की सुंदरता में विकसित नहीं होता। हममें से अधिकांश लोग जो जानते हैं, जो हमने अनुभव किया है उसकी पृष्ठभूमि में सुनते हैं। शायद आपने कभी उस मन के बीच अंतर पर ध्यान नहीं दिया है जो वास्तव में सीखता है और वह मन जो केवल ज्ञान एकत्रित करता है। ज्ञान संचय करने वाला मन कभी नहीं सीखता।

यह हमेशा अपने अनुभव के अनुसार, जो कुछ भी सुनता है उसका अनुवाद करता है

उस ज्ञान का जो उसने इकट्ठा किया है; वह संचय करने, जो वह पहले से जानता है उसमें जोड़ने की प्रक्रिया में उलझा हुआ है, और ऐसा दिमाग सीखने में असमर्थ है। मुझे नहीं पता कि आपने इस पर ध्यान दिया है या नहीं. ऐसा इसलिए है क्योंकि हम कभी भी यह सीखने में सक्षम नहीं होते हैं कि हम अपना जीवन दुःख और कष्ट में, संघर्ष और विपत्ति में गुजारते हैं; और इसलिए जीवन का सौंदर्य, जीने का व्यापक महत्व खो गया है। प्रत्येक भूखी पीढ़ी आने वाली पीढ़ी को नष्ट कर देती है। इसलिए मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण लगता है कि हम एक-दूसरे के साथ शांति से, सम्मानजनक तरीके से संवाद करें और इसके लिए सुनना और सीखना जरूरी है।

जब आप अपने हृदय से संवाद करते हैं, जब आप अपने मित्र के साथ संवाद करते हैं, जब आप आकाश के साथ संवाद करते हैं, सितारों के साथ, सूर्यास्त के साथ, फूल के साथ संवाद करते हैं, तो निश्चित रूप से आप जानने के लिए, सीखने के लिए सुन रहे हैं - जो करता है इसका मतलब यह नहीं कि आप स्वीकार करें या इनकार करें। आप सीख रहे हैं, और जो कहा जा रहा है उसे स्वीकार करना या अस्वीकार करना सीखने को समाप्त कर देता है। जब आप सूर्यास्त के साथ, किसी मित्र के साथ, अपनी पत्नी के साथ, अपने बच्चे के साथ संवाद करते हैं, तो आप आलोचना नहीं करते हैं, आप इनकार नहीं करते हैं या दावा नहीं करते हैं, अनुवाद नहीं करते हैं या पहचान नहीं करते हैं। आप संवाद कर रहे हैं, आप सीख रहे हैं, आप खोज रहे हैं। इस पूछताछ से सीखने की गति आती है, जो कभी संचयी नहीं होती।

मैं समझता हूं कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि जो व्यक्ति संचय करता है वह कभी नहीं सीख सकता। स्व-शिक्षा का तात्पर्य एक ताज़ा, उत्सुक दिमाग से है - एक ऐसा दिमाग जो प्रतिबद्ध नहीं है, एक ऐसा दिमाग जो किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं है, जो किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित नहीं है। ऐसा दिमाग ही सीखता है।

कृपया आगे बढ़ते हुए जो कहा जा रहा है उसके साथ प्रयोग करें। मैं आपके साथ स्वतंत्रता की विशाल और जटिल समस्या पर विचार करना चाहता हूं, लेकिन उस समस्या की जांच करने के लिए, उससे संवाद करने के लिए, झिझकते हुए, अस्थायी रूप से उसमें जाने के लिए एक बहुत तेज, स्पष्ट और तीक्ष्ण दिमाग की आवश्यकता होती है - एक ऐसा दिमाग जो सुनने और इस प्रकार सीखने में सक्षम। यदि आप देखें कि दुनिया में क्या हो रहा है, तो आप देखेंगे कि स्वतंत्रता का दायरा कम से कम होता जा रहा है। समाज व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन कर रहा है।

संगठित धर्म, यद्यपि वे स्वतंत्रता की बात करते हैं, वास्तव में इससे इनकार करते हैं।
संगठित विश्वास, संगठित विचार, आर्थिक और सामाजिक संघर्ष, प्रतिस्पर्धा और राष्ट्रवाद की पूरी प्रक्रिया - हमारे चारों ओर सब कुछ स्वतंत्रता के अंतर को कम कर रहा है, और मुझे नहीं लगता कि हम इसके बारे में जानते हैं। राजनीतिक अत्याचार और तानाशाही प्रचार और तथाकथित शिक्षा के माध्यम से कुछ विचारधाराओं को लागू कर रहे हैं। हमारी पूजा, हमारे मंदिर, समाजों से हमारा जुड़ाव, समूहों से, राजनीतिक दलों से - यह सब स्वतंत्रता के अंतर को और कम कर देता है। संभवत: आपमें से अधिकांश लोग विभिन्न समाजों से संबंधित हैं; आप इस या उस समूह के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और यदि आप बहुत करीब से देखें, तो आप

आप देखेंगे कि आपके पास कितनी कम स्वतंत्रता, कितनी कम मानवीय गरिमा है क्योंकि आप केवल वही दोहरा रहे हैं जो दूसरों ने कहा है। तो आप स्वतंत्रता से इनकार करते हैं, और निश्चित रूप से केवल स्वतंत्रता में ही मन सत्य की खोज कर सकता है, न कि तब जब वह किसी विश्वास से घिरा हो या किसी विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध हो।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आप किसी चीज़ से संबंधित होने की इस असाधारण बाध्यता से अवगत हैं? मुझे यकीन है कि आपमें से अधिकांश लोग किसी न किसी राजनीतिक दल, किसी खास समूह या संगठित विश्वास से जुड़े हैं; आप सोचने या जीने के एक विशेष तरीके के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और यह निश्चित रूप से स्वतंत्रता से इनकार करता है। मुझे नहीं पता कि आपने किसी देश से, किसी व्यवस्था से, किसी समूह से, कुछ राजनीतिक या धार्मिक मान्यताओं से जुड़ने, खुद को पहचानने की इस मजबूरी की जांच की है या नहीं। और जाहिर है, इस बाध्यता को समझे बिना, केवल एक पार्टी या समूह से बाहर निकलने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि आप जल्द ही खुद को दूसरे के लिए प्रतिबद्ध कर लेंगे।

क्या आपने यही काम नहीं किया है? एक धर्म को छोड़कर, आप जाते हैं और किसी अन्य धर्म में शामिल हो जाते हैं - कैथोलिकवाद, साम्यवाद, नैतिक पुनरुद्धार, और भगवान जाने और क्या। आप किसी चीज़ से जुड़े रहने की चाहत से मजबूर होकर एक प्रतिबद्धता से दूसरी प्रतिबद्धता की ओर बढ़ते हैं। क्यों? मुझे लगता है कि खुद से पूछना एक महत्वपूर्ण सवाल है। आप क्यों बनना चाहते हैं? निश्चित रूप से यह केवल तभी होता है जब मन पूरी तरह से अकेला खड़ा होता है कि वह सत्य को ग्रहण करने में सक्षम होता है - तब नहीं जब उसने खुद को किसी पार्टी या विश्वास के प्रति समर्पित कर दिया हो। कृपया इस प्रश्न पर विचार करें, अपने हृदय में इस पर विचार करें। आप क्यों संबंधित हैं? आपने स्वयं को एक देश, एक पार्टी, एक विचारधारा, एक विश्वास, एक परिवार, एक जाति के प्रति क्यों समर्पित कर दिया है? किसी चीज़ के साथ अपनी पहचान बनाने की इच्छा क्यों है? और इस प्रतिबद्धता के निहितार्थ क्या हैं? यह केवल वह व्यक्ति ही समझ सकता है जो पूरी तरह से बाहर है - वह व्यक्ति नहीं जो किसी विशेष समूह के प्रति वचनबद्ध है या जो लगातार एक समूह से दूसरे समूह में, एक प्रतिबद्धता से दूसरे प्रतिबद्धता की ओर जा रहा है।

निश्चित रूप से, आप किसी चीज़ से जुड़ना चाहते हैं क्योंकि यह आपको सुरक्षा की भावना देता है - न केवल सामाजिक सुरक्षा, बल्कि आंतरिक सुरक्षा भी। जब आप किसी चीज़ से जुड़े होते हैं, तो आप सुरक्षित महसूस करते हैं। हिंदू धर्म नामक इस चीज़ से संबंधित होने पर, आप सामाजिक रूप से सम्मानित, आंतरिक रूप से सुरक्षित, सुरक्षित महसूस करते हैं। तो आपने खुद को सुरक्षित, सुरक्षित महसूस करने के लिए किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध किया है - जो स्पष्ट रूप से स्वतंत्रता के मार्जिन को कम करता है, क्या ऐसा नहीं है?

हममें से अधिकांश लोग स्वतंत्र नहीं हैं। हम हिंदू धर्म के, साम्यवाद के, किसी न किसी समाज के, नेताओं के, राजनीतिक दलों के, संगठित धर्मों के, गुरुओं के गुलाम हैं, और इसलिए हमने मनुष्य के रूप में अपनी गरिमा खो दी है। एक इंसान के रूप में गरिमा तभी होती है जब किसी ने इसे चखा हो, सूंघा हो, जाना हो

असाधारण चीज़ जिसे स्वतंत्रता कहा जाता है। स्वतंत्रता के पुष्पन से मानवीय गरिमा आती है। लेकिन अगर हम इस आज़ादी को नहीं जानते तो हम गुलाम हैं। दुनिया में यही तो हो रहा है ना? और मुझे लगता है कि किसी चीज़ से जुड़ने की, खुद को प्रतिबद्ध करने की इच्छा, स्वतंत्रता के इस संकुचन के कारणों में से एक है। संबंधित होने की इस इच्छा से छुटकारा पाने के लिए, खुद को प्रतिबद्ध करने की इच्छा से मुक्त होने के लिए, किसी को अपने सोचने के तरीके की जांच करनी होगी, खुद के साथ, अपने दिल और इच्छाओं के साथ संवाद करना होगा। ऐसा करना बहुत कठिन काम है. इसके लिए धैर्य, दृष्टिकोण की एक निश्चित कोमलता, निंदा या स्वीकृति के बिना स्वयं में निरंतर और निरंतर खोज की आवश्यकता होती है। यह सच्चा ध्यान है, लेकिन आप पाएंगे कि इसे करना आसान नहीं है, और हममें से बहुत कम लोग इसे करने के इच्छुक हैं।

हममें से अधिकांश लोग निर्देशित होने, नेतृत्व किये जाने का आसान रास्ता चुनते हैं; हम किसी चीज़ से संबंधित हैं, और इस तरह अपनी मानवीय गरिमा खो देते हैं। संभवतः आप कहेंगे, "ठीक है, मैंने यह पहले भी सुना है; वह अपने पसंदीदा विषय पर है,'' और चले जाओ। मेरी इच्छा है कि आपके लिए ऐसे सुनना संभव होता जैसे कि आप पहली बार सुन रहे हों - जैसे कि सूर्यास्त या अपने मित्र का चेहरा पहली बार देखना।

तब आप सीखेंगे, और इस प्रकार सीखते हुए, आप अपने लिए स्वतंत्रता की खोज करेंगे - जो कि दूसरे द्वारा दी गई तथाकथित स्वतंत्रता नहीं है।

तो आइए हम धैर्यपूर्वक और लगातार इस प्रश्न की जांच करें कि स्वतंत्रता क्या है। निश्चित रूप से, केवल एक स्वतंत्र व्यक्ति ही सत्य को समझ सकता है - अर्थात यह पता लगाना कि क्या मन की सीमा से परे कोई शाश्वत चीज़ है; और जो व्यक्ति अपने अनुभव या ज्ञान के बोझ से दबा होता है वह कभी भी स्वतंत्र नहीं होता क्योंकि ज्ञान सीखने में बाधा डालता है।

हम एक-दूसरे के साथ संवाद करने जा रहे हैं, इस प्रश्न पर एक साथ जांच करने जा रहे हैं कि स्वतंत्रता क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए। और इस प्रकार पूछताछ करने के लिए, स्पष्ट रूप से प्रारंभ से ही स्वतंत्रता होनी चाहिए; अन्यथा, आप पूछताछ नहीं कर सकते, क्या आप कर सकते हैं? आपको पूरी तरह से संबंध तोड़ना बंद कर देना चाहिए, केवल तभी आपका मन पूछताछ करने में सक्षम होता है। लेकिन यदि आपका मन किसी प्रतिबद्धता से बंधा हुआ है, चाहे वह राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक हो, तो वही प्रतिबद्धता आपको पूछताछ करने से रोक देगी क्योंकि आपके लिए कोई स्वतंत्रता नहीं है।

कृपया जो कहा जा रहा है उसे सुनें और स्वयं इस तथ्य को देखें कि जांच का पहला आंदोलन स्वतंत्रता से पैदा होना चाहिए। आप प्रतिबद्ध नहीं हो सकते और वहां से पूछताछ नहीं कर सकते, इससे अधिक कि एक पेड़ से बंधा हुआ जानवर दूर तक भटक सकता है। आपका मन तब तक गुलाम है जब तक वह हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म, साम्यवाद या किसी ऐसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध है जो उसने स्वयं के लिए आविष्कार किया है। इसलिए जब तक हम समझ नहीं लेते तब तक हम एक साथ आगे नहीं बढ़ सकते

शुरू से ही, अब से, पूछताछ करने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए। अतीत का परित्याग होना चाहिए - अनिच्छा से, अनिच्छा से नहीं, बल्कि पूर्ण रूप से जाने देना चाहिए।

आख़िरकार, जो वैज्ञानिक चंद्रमा पर जाने की समस्या से निपटने के लिए एकत्र हुए थे, वे पूछताछ करने के लिए स्वतंत्र थे, भले ही वे अपने देश और इसके बाकी सभी लोगों के कितने भी गुलाम क्यों न हों। मैं केवल एक अनुसंधान केंद्र पर वैज्ञानिक की उस अनोखी स्वतंत्रता की बात कर रहा हूं। कम से कम कुछ समय के लिए, वह अपनी प्रयोगशाला में पूछताछ करने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन हमारी प्रयोगशाला ही हमारा जीवन है; यह दिन-ब-दिन, महीने-दर-महीने, साल-दर-साल जीवन की संपूर्ण अवधि है, और पूछताछ करने की हमारी स्वतंत्रता संपूर्ण होनी चाहिए; यह कोई खंडित चीज़ नहीं हो सकती, जैसा कि तकनीकी लोगों के साथ होता है। इसीलिए, अगर हमें सीखना और समझना है कि स्वतंत्रता क्या है, अगर हमें इसके अथाह आयामों में गहराई से उतरना है, तो हमें शुरू से ही अपनी सभी प्रतिबद्धताओं को त्यागना होगा और अकेले खड़े रहना होगा।

और ये करना बहुत मुश्किल काम है.

एक दिन कश्मीर में कई संन्यासियों ने मुझसे कहा, ''हम बर्फ में अकेले रहते हैं। हम कभी किसी को नहीं देखते. हमसे मिलने कभी कोई नहीं आता।" और मैंने उनसे कहा, "क्या आप सचमुच अकेले हैं, या आप केवल शारीरिक रूप से मानवता से अलग हो गए हैं?" "ओह, हाँ," उन्होंने उत्तर दिया, "हम अकेले हैं।" लेकिन वे अपने वेदों और उपनिषदों के साथ, अपने अनुभवों और एकत्रित ज्ञान के साथ, अपने ध्यान और जप के साथ थे। वे अभी भी अपनी कंडीशनिंग का बोझ ढो रहे थे। वह अकेला होना नहीं है. ऐसे लोग भगवा वस्त्र पहनकर अपने आप से कहते हैं, "हमने संसार का त्याग कर दिया है," लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है।

आप कभी भी संसार का त्याग नहीं कर सकते क्योंकि संसार आपका ही हिस्सा है। आप कुछ गायों, एक घर, कुछ संपत्ति का त्याग कर सकते हैं, लेकिन अपनी आनुवंशिकता, अपनी परंपरा, अपने संचित जातीय अनुभव, अपने संस्कारों के पूरे बोझ को त्यागने के लिए एक विशाल जांच, खोज की आवश्यकता होती है, जो सीखने का आंदोलन है . दूसरा रास्ता—एक साधु या सन्यासी बनना—बहुत आसान है।

तो, विचार करें और देखें कि आपकी नौकरी, आपका तीस, चालीस या पचास वर्षों तक हर दिन घर से कार्यालय जाना, एक इंजीनियर, एक वकील, एक गणितज्ञ, एक व्याख्याता के रूप में कुछ तकनीकों का आपका ज्ञान - यह सब कैसा है तुम्हें गुलाम बना देता है. बेशक, इस दुनिया में किसी को कुछ तकनीक जाननी होगी और नौकरी करनी होगी, लेकिन विचार करें कि ये सभी चीजें स्वतंत्रता के अंतर को कैसे कम कर रही हैं। समृद्धि, प्रगति, सुरक्षा, सफलता - सब कुछ मन को संकुचित कर रहा है जिससे अंततः, या अब भी, मन यांत्रिक हो जाता है और केवल कुछ सीखी हुई चीजों को दोहराता रहता है।

एक मन जो स्वतंत्रता की खोज करना चाहता है और उसकी सुंदरता, उसकी विशालता, उसकी गतिशीलता, उस शब्द के सांसारिक अर्थों में प्रभावी न होने की उसकी अजीब गुणवत्ता की खोज करना चाहता है - ऐसे मन को शुरू से ही अपनी प्रतिबद्धताओं, इच्छा को अलग रखना होगा संबंधित; और उस स्वतंत्रता के साथ, उसे पूछताछ करनी चाहिए। इसमें कई सवाल शामिल हैं. मन की वह कौन सी अवस्था है जो पूछताछ करने के लिए स्वतंत्र है? प्रतिबद्धताओं से मुक्त होने का क्या मतलब है? क्या एक विवाहित व्यक्ति को अपनी प्रतिबद्धताओं से मुक्त होना चाहिए? निश्चित रूप से, जहां प्यार है, वहां कोई प्रतिबद्धता नहीं है; तुम अपनी पत्नी के नहीं हो, और तुम्हारी पत्नी तुम्हारी नहीं है। लेकिन हम एक-दूसरे के हैं क्योंकि हमने प्यार नाम की इस असाधारण चीज़ को कभी महसूस नहीं किया है और यही हमारी कठिनाई है। हमने शादी में खुद को प्रतिबद्ध किया है, जैसे हमने एक तकनीक सीखने में खुद को प्रतिबद्ध किया है। प्रेम प्रतिबद्धता नहीं है, लेकिन फिर भी, इसे समझना बहुत कठिन चीज़ है क्योंकि शब्द कोई चीज़ नहीं है। दूसरे के प्रति संवेदनशील होना, बुद्धि द्वारा दूषित न होने वाली शुद्ध भावना रखना - निश्चित रूप से, यही प्रेम है।

मुझे नहीं पता कि आपने बुद्धि के स्वभाव पर विचार किया है या नहीं। बुद्धि और उसकी गतिविधियाँ एक निश्चित स्तर पर ठीक हैं, है न? लेकिन जब बुद्धि उस शुद्ध भावना में हस्तक्षेप करती है, तो सामान्यता आ जाती है।

बुद्धि के कार्य को जानने के लिए और दोनों को घुलने-मिलने और एक-दूसरे को नष्ट किए बिना उस शुद्ध भावना से अवगत होने के लिए बहुत स्पष्ट, तीव्र जागरूकता की आवश्यकता होती है।

अब, जब हम कहते हैं कि हमें किसी चीज़ की जांच करनी चाहिए, तो क्या वास्तव में कोई पूछताछ की जानी है, या केवल प्रत्यक्ष धारणा है? क्या तुम समझ रहे हो? मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं। पूछताछ आम तौर पर विश्लेषण करने और निष्कर्ष पर पहुंचने की एक प्रक्रिया है। यह मन का, बुद्धि का कार्य है, है ना? बुद्धि कहती है, "मैंने विश्लेषण किया है, और मैं इसी निष्कर्ष पर पहुंचा हूं।" उस निष्कर्ष से यह दूसरे निष्कर्ष की ओर बढ़ता है, और इसी प्रकार यह चलता रहता है।

निश्चित रूप से, जब विचार किसी निष्कर्ष से निकलता है, तो वह सोच नहीं रह जाता क्योंकि मन पहले ही निष्कर्ष निकाल चुका होता है। सोच तभी होती है जब कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। इस पर फिर तुम्हें विचार करना होगा, न तो इसे स्वीकार करना और न ही अस्वीकार करना। यदि मैं यह निष्कर्ष निकालूं कि साम्यवाद या कैथोलिकवाद या कोई अन्य धर्म ऐसा ही है, तो मैंने सोचना बंद कर दिया है। यदि मैं यह निष्कर्ष निकाल लूं कि ईश्वर है या कोई ईश्वर नहीं है, तो मैंने पूछताछ करना बंद कर दिया है। निष्कर्ष विश्वास का रूप ले लेता है। यदि मुझे यह पता लगाना है कि क्या ईश्वर है, या व्यक्ति के संबंध में राज्य का वास्तविक कार्य क्या है, तो मैं कभी भी किसी निष्कर्ष से शुरुआत नहीं कर सकता क्योंकि निष्कर्ष प्रतिबद्धता का एक रूप है।

तो बुद्धि का कार्य सदैव ही है न, पूछताछ करना, विश्लेषण करना, खोजना; लेकिन क्योंकि हम आंतरिक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित रहना चाहते हैं, क्योंकि हम डरते हैं, जीवन के बारे में चिंतित हैं, हम किसी न किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं जिसके लिए हम प्रतिबद्ध हैं। एक प्रतिबद्धता से हम दूसरी प्रतिबद्धता की ओर बढ़ते हैं, और मैं कहता हूं कि ऐसा मन, ऐसी बुद्धि, किसी निष्कर्ष का गुलाम होने के कारण, सोचना, पूछताछ करना बंद कर देता है।

मैं नहीं जानता कि क्या आपने देखा है कि बुद्धि हमारे जीवन में कितनी बड़ी भूमिका निभाती है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, हमारे बारे में सब कुछ तर्क का विकास कर रहा है। ऐसा नहीं है कि मैं तर्क के विरुद्ध हूं। इसके विपरीत, व्यक्ति में बहुत स्पष्टता से, तीव्रता से तर्क करने की क्षमता होनी चाहिए। लेकिन यदि आप ध्यान दें, तो आप पाएंगे कि बुद्धि निरंतर विश्लेषण कर रही है कि हम हमारे क्यों हैं या हमारे नहीं हैं, वास्तविकता को खोजने के लिए किसी को बाहरी व्यक्ति क्यों होना चाहिए, इत्यादि। हमने स्वयं का विश्लेषण करने की प्रक्रिया सीख ली है। तो वहाँ बुद्धि है जिसमें पूछताछ करने, विश्लेषण करने, तर्क करने और निष्कर्ष पर पहुंचने की क्षमता है; और एक अनुभूति है, शुद्ध अनुभूति, जो सदैव बाधित होती रहती है, बुद्धि द्वारा रंगी जाती है। और जब बुद्धि शुद्ध भावना में हस्तक्षेप करती है, तो इस हस्तक्षेप से एक औसत दर्जे का मन विकसित होता है। एक ओर हमारे पास बुद्धि है, जिसमें अपनी पसंद-नापसंद, अपनी कंडीशनिंग, अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर तर्क करने की क्षमता है; और दूसरी ओर, हमारी भावना है, जो समाज द्वारा, भय से दूषित हो गई है। और क्या ये दोनों बताएंगे कि क्या सच है? अथवा क्या केवल धारणा ही है, और कुछ नहीं? मुझे डर है कि मैं अपने आप को स्पष्ट नहीं कर रहा हूँ। मैं समझाऊंगा कि मेरा क्या मतलब है.

मेरे लिए केवल धारणा है - जो किसी चीज़ को तुरंत गलत या सच के रूप में देखना है। क्या झूठ है और क्या सच है की यह तत्काल धारणा आवश्यक कारक है-बुद्धि नहीं, जिसका तर्क उसकी चालाकी, उसके ज्ञान, उसकी प्रतिबद्धताओं पर आधारित है। आपके साथ भी कभी-कभी ऐसा हुआ होगा कि आपने किसी चीज़ का सच तुरंत देख लिया हो, जैसे यह सच कि आप किसी चीज़ के नहीं हो सकते. वह धारणा है: किसी चीज़ की सच्चाई को तुरंत देखना, बिना विश्लेषण के, बिना तर्क के, उन सभी चीजों के बिना जो बुद्धि धारणा को स्थगित करने के लिए बनाती है। यह अंतर्ज्ञान से पूरी तरह से अलग है, जो एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग हम सहजता और सहजता के साथ करते हैं। और धारणा का अनुभव से कोई लेना-देना नहीं है। अनुभव आपको बताता है कि आपको किसी चीज़ से संबंधित होना चाहिए; अन्यथा, आप नष्ट हो जायेंगे, आप अपनी नौकरी, या अपना परिवार, या अपनी संपत्ति, या अपना पद और प्रतिष्ठा खो देंगे।

तो बुद्धि, अपने सभी तर्कों के साथ, अपने चतुर मूल्यांकन के साथ, अपनी वातानुकूलित सोच के साथ, कहती है कि आपको किसी चीज़ से संबंधित होना चाहिए, कि आप

जीवित रहने के लिए खुद को प्रतिबद्ध करना होगा। लेकिन अगर आप इस सच्चाई को समझते हैं कि व्यक्ति को पूरी तरह से अकेले खड़ा होना चाहिए, तो वही धारणा एक मुक्ति कारक है; आपको अकेले रहने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।

मेरे लिए यह केवल प्रत्यक्ष धारणा है - तर्क नहीं, गणना नहीं, विश्लेषण नहीं। आपके पास विश्लेषण करने की क्षमता होनी चाहिए; तर्क करने के लिए आपके पास एक अच्छा, तेज़ दिमाग होना चाहिए, लेकिन जो दिमाग तर्क और विश्लेषण तक ही सीमित है वह यह समझने में असमर्थ है कि सत्य क्या है। इस सत्य को तुरंत समझने के लिए कि किसी भी धार्मिक संगठन से संबंधित होना मूर्खतापूर्ण है, आपको बुद्धि द्वारा उत्पन्न सभी बाधाओं के बिना, अपने हृदय में झांकने में सक्षम होना चाहिए, इसे पूरी तरह से जानना चाहिए। यदि आप स्वयं के साथ संवाद करते हैं, तो आपको पता चल जाएगा कि आप क्यों हैं, आपने स्वयं को क्यों समर्पित किया है; और यदि आप आगे बढ़ते हैं, तो आप गुलामी, स्वतंत्रता में कटौती, मानवीय गरिमा की कमी देखेंगे जो उस प्रतिबद्धता में शामिल है। जब आप यह सब तुरंत अनुभव कर लेते हैं, तो आप मुक्त हो जाते हैं; आपको मुक्त होने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिये धारणा आवश्यक है। मुक्त होने के सभी प्रयास आत्म-विरोधाभास से आते हैं। हम प्रयास करते हैं क्योंकि हम अपने भीतर विरोधाभास की स्थिति में हैं, और यह विरोधाभास, यह प्रयास, भागने के कई रास्ते तैयार करता है जो हमें हमेशा के लिए गुलामी की ट्रेडमिल में फंसाए रखता है।

तो मुझे ऐसा लगता है कि व्यक्ति को बहुत गंभीर होना चाहिए, लेकिन मेरा मतलब किसी चीज़ के प्रति प्रतिबद्ध होने के अर्थ में गंभीर होना नहीं है। जो लोग किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध हैं वे बिल्कुल भी गंभीर नहीं हैं। उन्होंने अपने स्वयं के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, अपनी स्थिति या प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए खुद को किसी चीज़ के हवाले कर दिया है। ऐसे लोगों को मैं गंभीर नहीं कहता. गंभीर व्यक्ति वह है जो यह जानना चाहता है कि स्वतंत्रता क्या है, और इसके लिए उसे निश्चित रूप से अपनी गुलामी की जांच करनी होगी। यह मत कहो कि तुम गुलाम नहीं हो. आप किसी चीज के मालिक हैं और वह है गुलामी, हालांकि आपके नेता आजादी की बात करते हैं। हिटलर ने भी ऐसा ही किया, ख्रुश्चेव ने भी ऐसा ही किया। हर तानाशाह, हर गुरु, हर राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति, संपूर्ण धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था में हर कोई स्वतंत्रता की बात करता है। लेकिन आज़ादी बिल्कुल अलग चीज़ है। यह एक अनमोल फल है जिसके बिना आप मानवीय गरिमा खो देते हैं। यह प्रेम है, जिसके बिना आप कभी भी ईश्वर, या सत्य, या उस अनाम चीज़ को नहीं पा सकेंगे। आप जो करना चाहते हैं वह करें - सभी गुणों को विकसित करें, त्याग करें, दास बनें, मनुष्य की सेवा करने के तरीकों की खोज करें - स्वतंत्रता के बिना, इनमें से कोई भी आपके दिल के भीतर की वास्तविकता को प्रकाश में नहीं लाएगा।

वह वास्तविकता, वह अथाह कुछ, तब आता है जब स्वतंत्रता होती है - संपूर्ण आंतरिक स्वतंत्रता जो केवल तब मौजूद होती है जब आपने स्वयं को प्रतिबद्ध नहीं किया होता है, जब आप किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं होते हैं, जब आप खड़े होने में सक्षम होते हैं

बिना कड़वाहट, बिना संशय, बिना आशा या निराशा के बिल्कुल अकेला। केवल ऐसा मन-हृदय ही उसे ग्रहण करने में सक्षम है जो अथाह है।

22 नवंबर, 1959

मद्रास में दूसरी वार्ता

आज शाम मैं आपके साथ दु:ख की जटिल समस्या पर बात करना चाहूँगा। दुख केवल उस चीज़ को चाहने का मामला नहीं है जो किसी को मिल नहीं सकती। यह उससे कहीं अधिक गहरा और अधिक सूक्ष्म है, और इसे समझने के लिए बहुत अधिक पूछताछ, मर्मज्ञता की आवश्यकता होती है। जैसा कि मैं पिछले दिन कह रहा था, समझ बौद्धिक धारणा का परिणाम नहीं है।

चीजों को ज्यादा सोचने से समझ नहीं आती. मैं दुःख की इस पूरी प्रक्रिया को समझना चाहता हूँ, इसमें शामिल सभी दर्द, चिंता, भय, असाधारण भारीपन और निराशा के साथ। मैं इसे समझना चाहता हूं, और केवल इसके बारे में सोचने, इसके बारे में तर्क करने, इसके विभिन्न पहलुओं को देखने और किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से कभी भी वह संपूर्ण समझ नहीं आएगी जो मन को दुख से मुक्त करती है। यह केवल तब होता है जब आपका संपूर्ण अस्तित्व, मानो, दुख को आमंत्रित करता है, जब यह महत्व, आंतरिकता, सूक्ष्मता, पवित्रता, दुख की असाधारण गति के लिए खुला होता है - केवल तभी, मुझे लगता है, पूर्ण समझ होती है। यदि कोई इस संपूर्ण समझ में सक्षम है, जिसका अर्थ है कि वह दुख को सुन रहा है, दुख के बारे में सीख रहा है, तो मुझे लगता है कि चमत्कार होता है। दुःख से मुक्त होने का अर्थ है अपना हृदय पूरी तरह से समस्या पर समर्पित कर देना। लेकिन हम बहुत कम ही किसी समस्या पर अपना दिल देते हैं; हम केवल अपना दिमाग, अपने विचार देते हैं। अकेले विचार से किसी भी महत्वपूर्ण मानवीय समस्या का समाधान नहीं होगा। हम समस्या के बारे में सोच सकते हैं, और हमें सोचना भी चाहिए। हम शब्दों के साथ खेल सकते हैं, तर्क-वितर्क कर सकते हैं, निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं और अधिकारियों को उद्धृत कर सकते हैं, जो कि हममें से अधिकांश लोग करते हैं, लेकिन इससे हमें समझ के द्वार खोलने में मदद नहीं मिलेगी और इस तरह मन को उथल-पुथल और उलझनों से मुक्त नहीं किया जा सकेगा। दु: ख।

मुझे लगता है कि दुख को ख़त्म किया जा सकता है. सभी दुखों का अंत होता है, लेकिन दुख का अंत दुख की समझ से शुरू होता है। आरंभ में ही अंत है, न कि उस पर विचार करने और फिर दुख भोगने में ही अंतत: अंत हो जाता है। आरंभ में ही अंत है क्योंकि अंत और आरंभ एक हैं; वे दो अलग चीजें नहीं हैं.

हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी प्रकार के दुःख में फंसे हुए हैं, चाहे वह किसी स्कूली बच्चे का छोटा सा दुःख हो या किसी वयस्क का उतना ही छोटा दुःख हो जो अपनी इच्छाओं, अपनी चिंताओं, अपनी नफरतों, अपने डर, अपनी महत्वाकांक्षाओं के द्वंद्व में फंसा हुआ है। , उसकी निराशाएँ और पूर्तियाँ। इस सब में फंसकर, हम शुरुआत और अंत के बारे में सोचते हैं; हम यह नहीं देखते कि दुःख की समझ के आरंभ में ही दुःख का अंत है। मुझे लगता है कि इस तथ्य को केवल बौद्धिक या मौखिक रूप से नहीं, बल्कि प्रेम से, इसकी सच्चाई को पूरी तरह से देखने की भावना से समझा जाना चाहिए - जो कि स्वीकृति नहीं है। जिस क्षण आप किसी चीज़ को स्वीकार करते हैं, उसका विपरीत, उसका खंडन होता है। यह हमारी कठिनाइयों में से एक है - हम या तो स्वीकार करते हैं या अस्वीकार करते हैं या बीच में खेलते हैं। लेकिन अगर हम वास्तव में देखते हैं कि शुरुआत में ही अंत है, अगर हम इसे एक तथ्य के रूप में समझते हैं, अपने पूरे अस्तित्व के साथ इसकी सच्चाई को पूरी तरह से महसूस करते हैं, तो हम दुख को समझेंगे और न केवल दुख से बच जाएंगे।

आख़िरकार, दुःख एक मन की स्थिति है जो अपने आप में विरोधाभासी है - "मैं चाहता हूँ" और "मैं नहीं चाहता।" मन मजबूरियों, इच्छाओं से संचालित होता है; यह महत्वाकांक्षा की पकड़ में अपनी पूर्तियों और निराशाओं के साथ संघर्ष करता है। हमारे जीवन में अंदर और बाहर असंख्य विरोधाभास हैं। हमारी वाणी में, हमारे व्यवहार में, हमारे विचारों और भावनाओं में, निरंतर आत्म-विरोधाभास की स्थिति बनी रहती है और इस आत्म-विरोधाभास के तनाव, दर्द, अशांति को हम दुःख कहते हैं।

मैं नहीं जानता कि क्या हम स्वयं में विरोधाभास की इस स्थिति से अवगत हैं या नहीं। मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोगों को इसके बारे में तभी पता चलता है जब यह किसी संकट तक पहुंच जाता है।
तब हम पूरी तरह से परेशान हो जाते हैं, और हम इससे बाहर निकलने का रास्ता खोजना चाहते हैं, इसलिए हम एक विधि, एक प्रणाली, एक पलायन की तलाश करते हैं। लेकिन हम अपनी रोजमर्रा की आत्म-विरोधाभास की स्थिति से अवगत नहीं हैं। हम एक निश्चित कार्य करते हैं, या करने के लिए बाध्य हैं, और हम वास्तव में कुछ और करना चाहते हैं। सामाजिक और आर्थिक रूप से हम जो जीवन जीते हैं, वह वह जीवन नहीं है जो हम जीना चाहते हैं। हमारे रिश्तों में मजबूरी का एक तत्व है, और हम असंख्य आत्म-विरोधाभासों के अधीन हैं। मुझे नहीं पता कि हमें इन सबके बारे में पता है या नहीं. यदि हमें इसके बारे में पता है, तो हम इसे सब ध्यान में लाते हैं और कार्य करते हैं। लेकिन अगर हम अपने अंदर विरोधाभास की इस स्थिति से अवगत नहीं हैं, तो यह तब तक चुपचाप सुलगती रहती है जब तक कि एक तनाव पैदा नहीं हो जाता है जो अंततः आग में बदल जाता है और या तो हमें एक विक्षिप्त स्थिति में ले जाता है या हमें एक अस्थायी समाधान खोजने के लिए मजबूर करता है। या फिर सभी छिपी हुई चाहतों की पूरी समझ होती है, आत्म-विरोधाभास के पूरे महत्व की समझ होती है, और इसलिए इसका अंत होता है।

अब, मैं नहीं जानता कि आप वास्तव में क्या करते हैं, या क्या आप अपने आत्म-विरोधाभासों के बारे में जानते भी हैं। एक हिंदू के रूप में आपकी सदियों की परंपरा,

जिसके लिए आपको अपने माथे और बाकी सभी चीजों पर राख लगाना पड़ता है, आधुनिक दुनिया के दबाव को पूरा करने से आपके अंदर एक विरोधाभास पैदा होता है। आप आध्यात्मिक जीवन जीना चाहते हैं, चाहे इसका कोई भी मतलब हो, और साथ ही आपके दैनिक जीवन की मांगें भी हैं, और आप अंदर ही अंदर असंख्य इच्छाओं से घिरे हुए हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप अपने अंदर के इन विरोधाभासों से अवगत हैं। मुझे लगता है कि आपको ऐसा करना चाहिए क्योंकि जिस क्षण आप अपने बारे में जागरूक होना शुरू करते हैं, यह मन के सभी छिपे हुए कोनों को उद्वेलित कर देता है, जिसे हममें से अधिकांश लोग नहीं जानते हैं - और जानना नहीं चाहते हैं क्योंकि हम परेशान नहीं होना चाहते हैं।

हम अपनी परंपराओं को आगे बढ़ाना चाहते हैं, और हम बिल्कुल आधुनिक जीवन भी जीना चाहते हैं। हम एक आधुनिक कार्यालय में जाते हैं और वहां काम करते हैं, और जब हम घर लौटते हैं तो हम रूढ़िवादी हिंदू, मुस्लिम या जो भी हों, होते हैं। हम कभी भी अपने आप में इस विरोधाभास का सामना नहीं करते हैं - अधिकार और स्वतंत्रता का विरोधाभास, नेतृत्व का विरोधाभास और आज्ञा मानने की नहीं बल्कि स्वयं खोजने की गहरी इच्छा।

हम सभी ने अपने जीवन में इस असाधारण विरोधाभास का स्वाद जरूर चखा होगा; हमें इसके बारे में कुछ हद तक जागरूक होना चाहिए, लेकिन दुर्भाग्य से हम इसे कभी भी संकट में नहीं लाते हैं और एक बहुत ही सरल कारण के लिए - क्योंकि संकट का मतलब कार्रवाई होगा, इसके बारे में कुछ करना होगा। जब हमें कार्य करना होता है तो हम अपने आत्म-विरोधाभास को उस उबलते बिंदु पर लाने के लिए तैयार नहीं होते हैं, और इसलिए हम टेढ़े-मेढ़े, विरोधाभासी जीवन जीते हैं, किसी आश्रय की तलाश में रहते हैं जहां हमें उम्मीद होती है कि हम शांति से रहेंगे।

कृपया मैं जो कह रहा हूं उसे वास्तव में सुनें और इसे एक व्याख्यान के रूप में न लें जिसमें आप भाग लेते हैं और फिर घर जाते हैं और पहले की तरह आगे बढ़ते हैं। मैं आपके ही मन की स्थिति का वर्णन कर रहा हूँ। यदि आप सुनना नहीं चाहते तो यहां न आएं और यहीं बात ख़त्म हो गई। लेकिन चूँकि आप यहाँ हैं, आपको सुनने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, भले ही मन स्पष्ट रूप से सुनने का विरोध करता हो। वह एक उत्तर खोजना चाहता है, एक रास्ता खोजना चाहता है, लेकिन कोई उत्तर नहीं है, विरोधाभास से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। विरोधाभास से बाहर निकलने का कोई भी रास्ता दूसरे विरोधाभास का निर्माण है। किसी को विरोधाभास को पूरी तरह से समझना होगा, उसमें गहराई से जाना होगा और उसके माध्यम से अपना रास्ता महसूस करना होगा।

मैंने कहा है कि दुःख विरोधाभास की एक स्थिति है जो तीव्र हो जाती है जब आपके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण घटित होता है - जब आपका बेटा मर जाता है, जब आपकी पत्नी या पति आपसे दूर हो जाते हैं। यह तब तीव्र हो जाता है जब पूर्णता की तलाश में आप पाते हैं कि पूर्णता की छाया में हमेशा निराशा होती है। आप प्यार करते हैं और बदले में आपसे प्यार नहीं किया जाता। आप अच्छे बनना चाहते हैं, और आप नहीं हैं। आप आंतरिक या भीतर को खोजने की आशा में बाहरी का पीछा करते हैं

आंतरिक का पीछा करते हुए, आप बाहरी को अस्वीकार करने के लिए संघर्ष करते हैं। यह आपकी वास्तविक स्थिति है, है ना? आपके जीवन में निरंतर विरोधाभास बना रहता है।

अब, यह विरोधाभास क्यों मौजूद है? कृपया मुझे कोई उत्तर, मौखिक स्पष्टीकरण या परिभाषा न दें क्योंकि इससे समस्या का समाधान नहीं होने वाला है। आप सारी परिभाषाएँ, सारे उत्तर जानते हैं, लेकिन फिर भी दुःख में हैं। अतः समझाने मात्र से दुःख दूर नहीं होता। फिर भी हम कितनी आसानी से स्पष्टीकरणों से संतुष्ट हो जाते हैं, और यही इसका दिलचस्प हिस्सा है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने देखा है कि शब्द, स्पष्टीकरण कितनी जल्दी हममें से अधिकांश को संतुष्ट कर देते हैं। यह एक विशेष रूप से उथले दिमाग का संकेत देता है, है न? लेकिन अब हम एक ऐसी समस्या पर विचार कर रहे हैं जिसका उस तरह का कोई उत्तर नहीं है। दुःख का कोई उत्तर नहीं है.

दुख से निकलने का कोई रास्ता नहीं है. जो करना है करो—चर्च जाओ, अपने आप को मंत्रों से मंत्रमुग्ध करो, अपने सिर के बल खड़े हो जाओ, भाग जाओ—कुछ भी तुम्हें दुःख से मुक्त नहीं करेगा। दुख का अंत जो होगा वह दुख की समझ है।

तो, हमारे अंदर विरोधाभास क्यों मौजूद है? मैं कुछ चाहता हूं, और वह मुझे मिल नहीं सकता। मैं एक महान व्यक्ति बनना चाहता हूं और महान बनने के रास्ते में मुझे कई प्रलोभन, कई परीक्षण, कई निराशाएं, कुंठाएं मिलती हैं। पूर्ति में दुःख की छाया निरंतर बनी रहती है। इसलिए मैं अपने आप से पूछता हूं—और क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आपको भी अपने आप से पूछना चाहिए—यह आंतरिक विरोधाभास क्यों है? क्या आपको नहीं लगता कि विरोधाभास मौजूद है क्योंकि मन विकल्प चुनने में सक्षम है? मैं बाईं ओर जाने के बजाय दाईं ओर जाना चुनता हूं। यही विकल्प वामपंथ के प्रति आकर्षण को दर्शाता है। यदि कोई आकर्षण नहीं होता, तो मुझे चयन नहीं करना चाहिए था। चुनाव, निश्चित रूप से, कार्य करने के दो तरीकों, सोचने के दो तरीकों, जीवन जीने के दो तरीकों के बीच मौजूद है। यह काफी सरल है. मैंने कार्य का जो मार्ग चुना है वह पूर्ति के उद्देश्य से है। मुझे खुद को एक निश्चित दिशा में पूरा करने की मजबूरी है - एक मंत्री के रूप में, एक लेखक के रूप में, एक कवि के रूप में, एक गायक के रूप में, या बच्चे पैदा करने वाले परिवार के माध्यम से। चुनने की उसी प्रक्रिया में, विपरीत भी है।

क्या आपने कभी स्वयं को बिना विकल्प के कार्य करते हुए देखा है? क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि आपने कोई ऐसा कार्य किया हो जिसमें कोई विकल्प ही न हो? जरूर ऐसा हुआ होगा. आप कुछ भी पूरी तरह से, पूरी तरह से, बिना सोचे-समझे, बिना बुद्धि का ध्यान भटकाए करते हैं; भावनात्मक और बौद्धिक रूप से आपका संपूर्ण अस्तित्व वहीं है। क्या आपके साथ ऐसा नहीं हुआ है? शायद शायद ही कभी, लेकिन ऐसा होता है. ऐसे क्षणों में, आप उस कार्य को जानते हैं जिसमें कोई विकल्प नहीं है, इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है, और इसलिए कोई दुःख नहीं है। यह मत पूछो, "मैं उस क्रिया को कैसे जान सकता हूँ?" मैं उस विकल्पहीन अवस्था तक कैसे पहुँच सकता हूँ?” वही सवाल, "कैसे?" विरोधाभास पैदा करता है.

मुझे लगता है कि जो दिमाग किसी चीज़ को समझने के लिए एक प्रणाली की तलाश करता है वह सबसे मूर्ख दिमाग है। एक सिस्टम को एक इंजीनियर, एक मैकेनिक, एक तकनीशियन या एक वैज्ञानिक के रूप में उपयोग करना बिल्कुल सही है क्योंकि आप यांत्रिक चीजों से निपट रहे हैं। लेकिन जीवन यांत्रिक नहीं है; यह एक अभेद्य चीज़ है, असीम, अथाह। केवल एक बहुत ही सतही दिमाग ही उस समस्या का उत्तर चाहता है जिसका कोई उत्तर नहीं है। जब ऐसा मन कोई उत्तर पाता है, तो वह उत्तर उसकी अपनी सतहीता को दर्शाता है, और उससे वह संतुष्ट हो जाता है।

मैं निश्चित रूप से शिकायत नहीं कर रहा हूं, मैं चिड़चिड़ा नहीं हूं, मैं सिर्फ यह बता रहा हूं कि दुख का कोई जवाब नहीं है, और मुझे लगता है कि यह महसूस करना एक असाधारण बात है। दुख के तरीकों को समझना महत्वपूर्ण है। चयन के अभाव में विरोधाभास, द्वंद्व और इसलिए दुःख उत्पन्न होता है। आख़िरकार, अगर हमें चुनना नहीं होता, अगर कोई संघर्ष नहीं होता, तो हमें दुःख की समस्या नहीं होती। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति को संतुष्ट, संतुष्ट रहना चाहिए और आरामदायक जीवन जीना चाहिए। इसके आन्तरिक महत्व को समझना होगा। जहाँ विरोधाभास है, वहाँ प्रयास है; और जहां प्रयास है, वहां विकल्प है। विकल्प का तात्पर्य कार्य की समग्रता की कमी से है। केवल जब आप किसी चीज़ को अपना दिमाग, अपना दिल, अपना पूरा अस्तित्व देते हैं - केवल तभी कोई दुःख नहीं होता है, क्योंकि कोई विरोधाभास नहीं होता है। यह ध्यान या जागरूकता या आत्म-ज्ञान या विभिन्न ग्रंथों को उद्धृत करने से प्राप्त होने वाली स्थिति नहीं है। दुःख की पूरी प्रक्रिया को समझना होगा।

समझने से हमारा क्या तात्पर्य है? धारणा से हमारा क्या तात्पर्य है?
निश्चय ही, धारणा एक कालातीत अवस्था है। जब तक मन वैसा ही है जैसा अभी है - समय का परिणाम, वर्तमान के संबंध में कई हजारों कल के अवशेष - दुःख को नहीं समझा जा सकता है। मन समय का परिणाम है; यह समय का उपकरण है, और उस उपकरण से हम उस समस्या को समझने या दूर करने का प्रयास कर रहे हैं जो स्वयं समय का उत्पाद है।

देखिये साहब, दुःख है। हम सभी दुःख की छाया को महसूस करते हैं, इसलिए हम उससे छुटकारा पाने के, उससे बचने के तरीके और उपाय ढूंढते हैं। हम कहते हैं, "आओ हम इसके बारे में तर्क करें; आइए हम सभी तथ्यों को एक साथ लाएं," इत्यादि। यह मन, बुद्धि की प्रक्रिया है, जो स्पष्ट रूप से समय का परिणाम है - समय इस अर्थ में कि क्या हुआ है, किसी ने क्या सीखा है, क्या अनुभव किया है। इस यंत्र से हम दुःख को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन दुःख स्वयं समय की उपज है। मुझे नहीं पता कि मैं इस बात को स्पष्ट कर रहा हूं या अधिक अस्पष्ट।

आप कहते हैं, "दुःख को समझने के लिए मुझे इसके बारे में सोचने के लिए समय चाहिए। मेरी समझ बढ़नी चाहिए. दुःख से मुक्त होने के लिए, मुझे तब तक एक प्रणाली का अभ्यास करना चाहिए जब तक मैं ऐसी स्थिति में नहीं पहुंच जाता जिसमें मेरा मन अब परेशान नहीं होगा। ये सब हैं

समय में कदम, क्या वे नहीं हैं? और इस प्रक्रिया के माध्यम से आप समय की उपज, दुःख को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं - जो असंभव है। आपको एक बिल्कुल नए कारक, एक अलग गुणवत्ता, एक और आयाम की आवश्यकता है, और वह धारणा है- ऐसी धारणा जिसमें बिल्कुल भी समय नहीं है। आप इसे तुरंत देखते हैं. लेकिन इसके लिए आश्चर्यजनक रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है; इसके लिए आपकी सारी जीवन शक्ति की आवश्यकता है। मन, पूरी तरह से एकत्रित होकर, समस्या पर केंद्रित हो जाता है और समस्या की गहराई, चौड़ाई, सुंदरता को देखता है। लेकिन दुर्भाग्य से, आपका दिमाग वास्तव में चौकस नहीं है क्योंकि आप कार्यालय गए हैं, आपके झगड़े होते हैं, आपका अस्तित्व दयनीय है, आपको समाज द्वारा गुलाम की तरह चलाया जाता है, जो आपको पीसता है। तो जब तुम सुनते हो, तो थक जाते हो, और तुम पूरा ध्यान कैसे दे सकते हो? मुझे नहीं लगता कि आपने कभी किसी चीज़ पर पूरा ध्यान दिया हो. यदि आपने ऐसा किया होता, तो आप वह नहीं कर रहे होते जो आप वास्तव में कर रहे हैं। आप एक क्लर्क नहीं होंगे जो मैनेजर बनना चाहता हो, या कोई राजनेता नहीं होगा जो गवर्नर या कोई अन्य महिमामंडित व्यक्ति बनना चाहता हो। आप किसी समूह, किसी राष्ट्रीयता, किसी पार्टी, किसी संगठित धर्म से संबंधित नहीं होंगे।

इसलिए मैं सुझाव दूंगा कि दुख का अंत विकास का विषय नहीं है, वृद्धि का विषय है, विकास का विषय है। दु:ख के बारे में सच्चाई तत्काल समझी जानी चाहिए। निश्चित रूप से, आपने कभी-कभी कुछ ऐसा महसूस किया होगा जिसने आप पर इतना ज़ोर डाला होगा कि इसने आपके सोचने के पूरे तरीके को बदल दिया है। जो कुछ तुमने देखा है वह सत्य है—और सत्य अपनी स्वयं की कार्रवाई, अपनी स्वयं की क्रांति लाता है। आपको इसके बारे में कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए किसी भी समस्या की सच्चाई को समझना बहुत जरूरी है।

हमारी समस्या दुख और दुख का अंत नहीं है, बल्कि यह तथ्य है कि मन परंपरा में, यांत्रिक सोच में फंस गया है। यह वास्तव में हमारी समस्या है. जब मन उन सब से मुक्त हो जाता है, तब व्यक्ति दुख को देख सकता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या हम इस बात से अवगत हैं कि परंपरा हमें कैसे घेरती है, मन परंपरा से कैसे बंधा हुआ है? सामाजिक परंपरा बहुत सतही है, और कोई इसे वैसे ही उतार सकता है जैसे कोई पुराना कपड़ा उतारता है, लेकिन एक अलग तरह की परंपरा भी होती है, जो कहीं अधिक मजबूत, कहीं अधिक गहरी होती है और वह है अनुभव की परंपरा। मैं नहीं जानता कि क्या आप इस बात से अवगत हैं कि अनुभव मन को कैसे आकार देता है। अनुभव मन को आकार देता है, है ना श्रीमानों? और यह अनुभव क्या है? निश्चय ही, यह अतीत की वर्तमान पर प्रतिक्रिया है। वर्तमान एक चुनौती है, और मैं अपनी कंडीशनिंग के अनुसार, अपनी संस्कृति के अनुसार, अपनी शिक्षा के अनुसार प्रतिक्रिया देता हूं - ये सब अतीत है। यह वर्तमान की चुनौती के प्रति अतीत की प्रतिक्रिया है

अनुभव; इसलिए, अनुभव स्पष्ट रूप से कभी नया नहीं हो सकता है, और वह अनुभव केवल अतीत को मजबूत करता है। अनुभव, जो अतीत की वर्तमान पर प्रतिक्रिया है, केवल अतीत को मजबूत करता है, इसलिए अनुभव कभी भी मुक्ति कारक नहीं होता है। इसके विपरीत, यह एक बंधनकारी कारक है। मुझे आशा है कि मैं अपने आप को कुछ हद तक स्पष्ट कर रहा हूँ।

हम सभी इस विचार से परिचित हैं कि अनुभव आवश्यक है। मशीनी चीजों से निपटने के लिए अनुभव जरूरी है. मुझे कार चलाने के लिए अनुभव की आवश्यकता है; मुझे फैक्ट्री चलाने, फोरमैन बनने, तकनीकी नौकरी करने के लिए अनुभव की आवश्यकता है। बिना अनुभव के मैं ये काम नहीं कर सकता. लेकिन क्या उस मन के लिए अनुभव आवश्यक है जो अनुभव करना चाहता है? एक सरल उदाहरण लीजिए. कोई जानना चाहता है कि वास्तविकता, ईश्वर या सत्य क्या है, वह चीज़ जिसे मन से मापा नहीं जा सकता। हर कोई मौलिक रूप से यह जानना चाहता है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं या खुद को क्या कहते हैं। नास्तिक, कम्युनिस्ट, कैथोलिक, हिंदू, मुस्लिम - हर कोई इस एक चीज़ का पता लगाना चाहता है क्योंकि इसके बिना, जीवन खाली है। सभी प्रार्थनाएं, अनुष्ठान, विचारधाराएं, महत्वाकांक्षाएं, पारिवारिक झगड़े इसके बिना कोई मायने नहीं रखते। और हर कोई वही दोहराता है जो उनके गुरुओं या संतों या उनके नेताओं ने कहा है। इस विषय में उन्होंने कहा है, “तुम्हें अनुभव में वृद्धि करनी होगी; आपको इस अनुशासन का अभ्यास करना चाहिए, इन शिक्षाओं का पालन करना चाहिए, और अंततः, समय की लंबी दूरी में, आप सत्य को प्राप्त करेंगे। मैं उस सब पर विश्वास नहीं करता; मेरे लिए यह सब बकवास है क्योंकि समय के माध्यम से आप कालातीत को पकड़ने की उम्मीद कर रहे हैं, जो एक असंभव है। आपको पीछे जाना होगा और यह पता लगाना होगा कि मन को अनुभव की गुलामी से कैसे मुक्त किया जाए।

अवश्य सुनें; यह बहुत महत्वपूर्ण है। और इसे समझना काफी कठिन है क्योंकि आपने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं है। महान संतों ने हमेशा हमें अनुभव प्राप्त करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा है कि अनुभव हमें समझ देता है. लेकिन यह केवल निर्दोष मन है, अनुभव से अस्पष्ट मन, अतीत से पूरी तरह से मुक्त - यह केवल ऐसा मन है जो समझ सकता है कि वास्तविकता क्या है। यदि आप इसकी सच्चाई को देखते हैं, यदि आप इसे एक सेकंड के लिए भी समझते हैं, तो आप उस मन की असाधारण स्पष्टता को जान लेंगे जो निर्दोष है। इसका अर्थ है स्मृति के सभी आवरणों का दूर हो जाना, अर्थात अतीत को त्याग देना। लेकिन इसे समझने के लिए "कैसे" का सवाल ही नहीं उठता। आपका मन "कैसे", उत्तर की इच्छा से विचलित नहीं होना चाहिए। ऐसा मन चौकस मन नहीं है। जैसा कि मैंने इस बातचीत में पहले कहा था, शुरुआत में ही अंत है। आरंभ में ही उसके अंत का बीज है जिसे हम दुःख कहते हैं। दुःख का अंत दुःख में ही होता है, दुःख से दूर नहीं। दुःख से दूर हटना मात्र है

एक उत्तर, एक निष्कर्ष, एक पलायन खोजें; लेकिन दु:ख जारी है. जबकि, यदि आप इस पर अपना पूरा ध्यान देते हैं, यानी अपने पूरे अस्तित्व के साथ चौकस रहना है, तो आप देखेंगे कि एक तत्काल धारणा है जिसमें कोई समय शामिल नहीं है, जिसमें कोई प्रयास नहीं है, कोई संघर्ष नहीं है; और यह तत्काल बोध, यह विकल्पहीन जागरूकता ही दुख का अंत करती है।

25 नवंबर 1959

मद्रास में तीसरी वार्ता

संभवतः कार्रवाई की जटिल समस्या पर एक साथ बात करना सार्थक होगा - किसी विशेष समस्या के संबंध में कोई विशेष कार्रवाई नहीं, बल्कि समग्र रूप से कार्रवाई। हम यहां राजनीतिक कार्रवाई से, या आपको कोई विशेष नौकरी चुननी चाहिए या नहीं, या आपको कुछ परिस्थितियों में क्या करना चाहिए, इससे चिंतित नहीं हैं। मेरा मानना है कि कार्रवाई की समस्या के प्रति ऐसा दृष्टिकोण अमान्य है क्योंकि हम हमेशा अपने हिस्से में खोए हुए दिखते हैं और इसलिए समग्र रूप से समस्या से निपटने में असमर्थ होते हैं। इसलिए यदि यह संभव है, तो मैं कार्रवाई के इस प्रश्न पर, कि क्या करना है, झिझकते हुए विचार करना चाहूँगा।

क्या हम सभी इस समस्या का सामना अलग-अलग तरीकों से नहीं कर रहे हैं? लेकिन दुर्भाग्य से हम इसका अनुवाद किसी विशेष परिस्थिति में क्या करना है, कोई चुनौती आने पर क्या करना है, इत्यादि के संदर्भ में करते हैं। निश्चय ही, पसंद से जन्मा कार्य आंशिक होता है; यह कभी भी संपूर्ण नहीं होता है, और हमारी समस्या यह है कि हम समग्र कार्रवाई के महत्व, अर्थ को कैसे पकड़ें, और समाज द्वारा मांग की गई कार्रवाई के एक विशेष रूप में न फंसें। यदि हम इस समस्या के प्रति अपने दृष्टिकोण में बहुत स्पष्ट हो सकते हैं, तो मुझे लगता है कि हमें सही उत्तर मिल जाएगा। लेकिन हममें से ज्यादातर लोग हमेशा गलत प्रश्न पूछते हैं और गलत उत्तर पाते हैं, जिससे और समस्याएं ही पैदा होती हैं।

तो, संपूर्ण कार्रवाई क्या है? यदि कोई कार्रवाई की समग्रता को समझता है, तो वह किसी विशेष मांग का सही ढंग से जवाब देगा, लेकिन इस समझ के बिना किसी विशेष मांग का जवाब देना केवल और अधिक भ्रम पैदा करता है। यदि मैं कार्रवाई की समग्रता को पूरी तरह से समझे बिना, केवल राजनीतिक रूप से कार्य करता हूं, तो ऐसी आंशिक गतिविधि ही विरोधाभास पैदा करती है। हममें से अधिकांश के साथ यही स्थिति है।

विशेष विचारों के जाल में फंसकर हम अपनी समस्याओं को आंशिक कार्रवाई के माध्यम से हल करने का प्रयास करते हैं, जिससे हमारी समस्याएं बढ़ती और विस्तारित होती हैं।

तो फिर संपूर्ण क्रिया क्या है? यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है, है ना? और ऐसी कार्रवाई स्पष्ट रूप से बिना किसी प्रयास के होनी चाहिए क्योंकि

प्रयास विरोधाभास का परिणाम है. मैं इस समस्या में जाना चाहूँगा और इस दिए गए एक घंटे के भीतर जितना संभव हो सके इसे समझना चाहूँगा।

लेकिन इससे पहले कि हम संपूर्ण कार्रवाई के सवाल पर जाएं, क्या हमें समाज के संबंध में, एक संगठित राजनीतिक समूह के संबंध में, हमारे बारे में जो कुछ भी चल रहा है, उसके संबंध में व्यक्ति की वर्तमान कार्रवाई की जांच नहीं करनी चाहिए? वर्तमान में व्यक्ति का कार्य क्या है, और जब समाज उसे कुचल रहा है, उसकी सोच को विकृत कर रहा है, ताकि उसे कोई स्वतंत्रता न हो तो वह क्या कर सकता है?

समाज जितना अधिक संगठित होता है, वह व्यक्ति के प्रति उतना ही अधिक क्रूर होता है। हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में ऐसा होते हुए देखते हैं। कम्युनिस्टों के पास व्यक्ति के लिए कोई जगह नहीं है; हालाँकि वे उसकी परम स्वतंत्रता के बारे में बात करते हैं, व्यक्ति पूरी तरह से नष्ट हो जाता है। संगठित धर्मों के साथ भी मूलतः यही बात है। यद्यपि वे व्यक्ति को मोक्ष प्राप्त करने के बारे में बात करते हैं, व्यक्ति को एक विशेष पंथ के अनुसार अनुकूलित किया जाता है, चाहे वह कैथोलिक, मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध, या आप जो चाहें।

इसलिए व्यक्ति पर समाज का अतिक्रमण लगातार बढ़ता जा रहा है, और उसकी स्वतंत्रता का दायरा, उसकी सोच की स्पष्टता, बहुत संकीर्ण होती जा रही है। मुझे नहीं पता कि आपको इसकी जानकारी है या नहीं. आपको होना चाहिए। और इसके प्रति जागरूक होकर तुम्हें क्या करना है? मैं यह प्रश्न केवल इसलिए रख रहा हूं ताकि हम मिलकर इस पर विचार करना शुरू करें। वर्तमान परिस्थितियों में व्यक्ति को परिवार, समाज के साथ अपने संबंधों में क्या करना है?

धर्म के संबंध में उसे क्या करना है? क्या उसे अत्यधिक संगठित कम्युनिस्ट समाज में शामिल होना चाहिए? निश्चित रूप से, जिस क्षण आप किसी संगठन में शामिल होते हैं, आप पहले से ही उस संगठन के गुलाम होते हैं। हिटलर से लड़ने के लिए या कम्युनिस्टों से लड़ने के लिए आपको वही तरीके अपनाने होंगे जो वे अपनाते हैं। ये तो हम सब जानते हैं. और जिस व्यक्ति को इन सब चीजों का सामना करना पड़ता है उसकी स्थिति क्या है? हममें से अधिकांश लोग बस इसलिए परेशान हो गए हैं क्योंकि समाज के दबाव के खिलाफ संघर्ष करने में बहुत अधिक असुविधा और अनिश्चितता शामिल होगी; इसका अर्थ व्यक्ति के जीवन में एक क्रांति होगा। किसी चीज़ से संबंधित होने की आदत से छुटकारा पाने के लिए सोच में अत्यधिक स्पष्टता की आवश्यकता होती है क्योंकि सोच में स्पष्टता ही चरित्र है। ऐसी स्पष्टता के बिना, कोई चरित्र नहीं है, कोई व्यक्तित्व नहीं है।

अब, कुल क्रिया की प्रकृति क्या है? मैं अस्थायी रूप से सोचता हूं कि कार्रवाई के दो तरीके हैं। एक वह क्रिया है जो केंद्र से होती है, और दूसरी वह क्रिया है जिसका कोई केंद्र नहीं होता। हममें से अधिकांश लोग एक केंद्र से कार्य करते हैं - वह केंद्र जो ज्ञान, अनुभव से बना होता है, वह केंद्र जो उस संस्कृति, धर्म, आर्थिक स्थिति के अनुसार अनुकूलित होता है जिसमें हम रहते हैं। आप कब फैक्ट्री या दफ्तर जाते हैं, कब अपना कारोबार करते हैं, कब

आप अनुष्ठान, अनुष्ठान करते हैं, जब आप जिसे भगवान कहते हैं उसकी पूजा करते हैं - इन सब में आप जानबूझकर या अनजाने में ज्ञान, परंपरा, अनुभव के केंद्र से कार्य कर रहे होते हैं। उस केंद्र को नियंत्रित किया जा सकता है; सावधानीपूर्वक संगठित समाज द्वारा इसे मजबूत या कमजोर किया जा सकता है। मैं हिंदू धर्म छोड़कर कैथोलिक या कम्युनिस्ट बन सकता हूं, लेकिन मैं जो कुछ भी करूंगा, वह केंद्र हमेशा बना रहेगा; केवल तकनीक, कोटिंग बदल गई है।

मैं कोई बहुत अजीब बात नहीं कह रहा हूं. यह प्रक्रिया स्पष्टतः हममें से प्रत्येक में घटित हो रही है। एक हिंदू के रूप में आप एक निश्चित तरीके से सोचते हैं। यदि आप कम्युनिस्ट बन जाते हैं तो आप अलग तरीके से सोचेंगे, लेकिन आपकी सोच हमेशा कंडीशनिंग के केंद्र से होती है। प्राप्त करने के लिए सभी आत्म-जागरूक प्रयास उस केंद्र से उत्पन्न होते हैं, जो महत्वाकांक्षा, भय, ईर्ष्या, घृणा, अच्छा करने की इच्छा और अच्छा बनने की इच्छा से भी बना है। तो हम हर समय उस केंद्र से कार्य कर रहे हैं - या यूं कहें कि वह केंद्र हर समय कार्य कर रहा है क्योंकि मन उस केंद्र से अलग नहीं है। विचारक विचार है; विचार विचारक से अलग नहीं है. केंद्र एक निश्चित पैटर्न के अनुसार सोचने की प्रक्रिया है, हिंदू, बौद्ध, ईसाई, कम्युनिस्ट या आप जो चाहें, हमारी कंडीशनिंग के अनुसार सोचना। जब तक वह केन्द्र कार्य कर रहा है, जाहिर है उसमें असंख्य विरोधाभास, संघर्ष होंगे; भय, आशा, निराशा अवश्य होगी। खुद को पूरा करने की चाह में और कुंठाओं से बचने के लिए हम अनेक भ्रम, मिथक गढ़ते हैं, जिन्हें हम ईश्वर, सत्य जैसे शब्दों से प्रतिष्ठित करते हैं।

मुझे लगता है, एक ऐसा कार्य है जो किसी केंद्र का परिणाम नहीं है। लेकिन उस कार्य को तभी जाना जा सकता है जब कोई किसी समाज, किसी राष्ट्रीयता, किसी संगठित धर्म से संबंधित न हो - जिसका अर्थ है कि वह समूह के, समाज के सभी प्रभावों को झेलने में सक्षम है। मुझे ऐसा लगता है कि यह उस दुनिया में व्यक्ति के लिए एकमात्र आशा है जहां साम्यवाद फैल रहा है और जहां संगठित धर्म, जो साम्यवाद से लड़ रहा है, भी फैल रहा है। आख़िरकार, रोमन कैथोलिक चर्च एक उच्च संगठित धार्मिक संस्था है, और यह साम्यवाद से लड़ रहा है, जो अत्यधिक संगठित भी है, और जो इसका अपना धर्म है। ये दोनों - साम्यवाद और साम्यवाद का संगठित प्रतिरोध - फैल रहे हैं। तो व्यक्ति को क्या करना है? किसी भी समूह, किसी भी धार्मिक या राजनीतिक संगठन से संबंधित होने का तात्पर्य एक वातानुकूलित मस्तिष्क के केंद्र की कार्यप्रणाली से है।

मुझे नहीं पता, श्रीमान, मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूँ या नहीं। यदि नहीं तो हम चर्चा कर सकते हैं यह बिंदु बाद में फिर से।

वह केंद्र, जहां से हममें से अधिकांश लोग कार्य करते हैं, विभिन्न रूपों में ज्ञान से बना है - तकनीक के रूप में ज्ञान, अनुभव के रूप में ज्ञान,

ज्ञान परंपरा के रूप में, ज्ञान उन चीज़ों की स्मृति के रूप में जो हमें बताई गई हैं। यह मूलतः आदत का केंद्र है, अधिकार का केंद्र है। वह केन्द्र ही सत्ता है। इसलिए मेरा मानना है कि हमें ज्ञान और अधिकार की पूरी प्रक्रिया की जांच करनी चाहिए।

जो मन ज्ञान का गुलाम है वह अधिकार से बंधा हुआ है। कृपया इस पर विचार करें क्योंकि मैं आपसे बात कर रहा हूं और घर जाने तक इंतजार न करें। वह मन जिसने यह ज्ञान संचित कर लिया है कि क्या करना है, क्या सोचना है, या कैसे सोचना है; वह मन जिसने केवल एक प्रोफेसर, एक मैकेनिक, एक पुजारी, एक नौकरशाह की तकनीक हासिल की है - ऐसा मन स्पष्ट रूप से एक गुलाम मन है, जो अपने ही ज्ञान से बंधा हुआ है। यह कभी मुफ़्त नहीं होता. मन तभी स्वतंत्र होता है जब वह अपने अधिनायकवादी ज्ञान के प्रति जागरूक होता है और उसे एक तरफ रख देता है। तब वह ज्ञान का गुलाम हुए बिना ज्ञान का उपयोग कर सकता है।

लेकिन ऐसा करना बेहद मुश्किल काम है. ज्ञान हमें समाज में स्थिरता के साथ, स्पष्टता के साथ कार्य करने की भावना देता है; यह हमें निश्चितता की भावना, सुरक्षा की भावना देता है; इसलिए ज्ञान अधिकार को जन्म देता है, और हम अधिकार की पूजा करते हैं। हम उस व्यक्ति की पूजा करते हैं जो जानता है, प्रोफेसर, गुरु, पुस्तकों के लेखक, इत्यादि। लेकिन जो मन जिज्ञासा कर रहा है, जो यह समझने की कोशिश कर रहा है कि स्वतंत्रता क्या है, वह ज्ञान का गुलाम नहीं हो सकता।

यदि आप अपने मन को कार्य करते हुए देखें, तो आप देखेंगे कि पिछले अनुभवों, पिछले विचारों, स्थापित आदतों से मुक्त होना कितना असाधारण रूप से कठिन है। मुझे नहीं पता कि आपने इस तरह से खुद को देखा है या समझने की कोशिश की है या नहीं, लेकिन अगर आपने किया है, तो आपको पता चल जाएगा कि मन को कल के पैटर्न से मुक्त करना कितना कठिन है।

कल परंपरा हो सकती है, यह आपका अपना अनुभव हो सकता है, यह हो सकता है कि आपने क्या पढ़ा है, आपने क्या इकट्ठा किया है, आपने क्या सुना है, आपने क्या सीखा है। मूलतः यह दूसरों की राय, विचारों पर आधारित है - शंकर, बुद्ध, ईसा मसीह, मार्क्स या स्टालिन ने क्या कहा है। यह कल पहले ही गति पकड़ चुका है; इसने एक पैटर्न स्थापित किया है जो आपका अधिकार बन गया है, और जब तक कल की यह गति, जिसने आपके दिमाग में अधिकार का एक पैटर्न बनाया है, समझ में नहीं आता है, आप आत्म-ज्ञान की खोज में अवरुद्ध हैं। आप आगे नहीं बढ़ सकते क्योंकि अधिकार, चाहे राजनीतिक हो या तथाकथित धार्मिक, मन को गुलाम बना देता है; वह स्वतंत्र रूप से नहीं सोच सकता, वह पूरी तरह जागरूक नहीं हो सकता।

जब ज्ञान अधिकार का मूल बन जाता है, तो मन के लिए अधिकार से मुक्त होना बहुत मुश्किल होता है। इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क मानव मस्तिष्क की तुलना में कुछ कार्य बहुत तेजी से और कहीं अधिक कुशलता से कर सकता है, लेकिन यह मुफ़्त नहीं है। यह कुछ नया नहीं सोच सकता, यह केवल उसके अनुसार कार्य कर सकता है

इसे जो करना सिखाया गया है - और मानव मन के साथ बिल्कुल यही स्थिति है, सिवाय इसके कि मानव मन के मामले में, स्वतंत्रता की, ताजगी की, नवीनता की आशा है। लेकिन ताजगी, नयापन तब तक अस्तित्व में नहीं आ सकता जब तक कि मन ज्ञान के अधिकार की बाध्यकारी गुणवत्ता से अनभिज्ञ है और उसे नहीं समझता है।

ज्ञान तो विचित्र चीज़ है ना? हम न केवल अतीत को जानते हैं, बल्कि हम भविष्य को भी जानते हैं, या सोचते हैं कि हम जानते हैं, क्योंकि अतीत स्वयं को वर्तमान के माध्यम से भविष्य में प्रक्षेपित करता है। कम्युनिस्ट, संगठित धार्मिक लोगों की तरह, भविष्य जानने का दावा करते हैं, और वे उस भविष्य, अंतिम और परिपूर्ण स्वप्नलोक को प्राप्त करने के लिए वर्तमान पीढ़ी का बलिदान करने को तैयार हैं।

वे न केवल अतीत के, बल्कि अपने अनुमानित भविष्य के भी गुलाम हैं।

अब, यह महसूस करते हुए कि हमारा दिमाग पंगु हो गया है, कि हम न तो अतीत से मुक्त हैं और न ही अनुमानित भविष्य से, क्या हमें खुद से नहीं पूछना चाहिए कि क्या कोई ऐसी क्रिया है जिसका कोई केंद्र नहीं है? लेकिन सबसे पहले, क्या किसी के लिए ऐसी कार्रवाई के महत्व के बारे में दूसरे को बताना संभव है? मैं अंग्रेजी बोल रहा हूं, और आप अंग्रेजी शब्दों को समझते हैं, जिनका एक निश्चित अर्थ होता है, इसलिए हम मौखिक स्तर पर कुछ हद तक एक-दूसरे को समझते हैं। लेकिन निश्चित रूप से संपूर्ण कार्रवाई का महत्व तभी संप्रेषित होता है जब आप और मैं मौखिक स्तर से परे जाते हैं। मात्र वर्णन से समझ नहीं आ सकती; इसके विपरीत, यदि आपका दिमाग शब्दों से चिपक जाता है तो विवरण समझ को विकृत कर देता है क्योंकि आप शब्दों की एक निश्चित व्याख्या करते हैं, जो हमारे बीच रुकावट पैदा करता है। जिस क्षण हम केवल मौखिक स्तर पर एक दूसरे के साथ संवाद करने का प्रयास करते हैं, सहमति या इनकार होता है। आप कहते हैं, "मेरी भी यही राय है," या "आप गलत हैं, मैं आपसे सहमत नहीं हूं," इत्यादि। मुझे लगता है कि यह दृष्टिकोण पूरी तरह गलत है। समझ सहमति और असहमति का विषय नहीं है. या तो तुम समझोगे या नहीं समझोगे। जो दिमाग समस्या को कई राय, निष्कर्षों के साथ देखता है, वह सहमत या असहमत होगा, और इसलिए वास्तविक की कोई धारणा नहीं है।

मैं उस क्रिया के बारे में बात करना चाहूंगा जो आंशिक नहीं है, जो ज्ञान का परिणाम नहीं है, जो अधिकार का उत्पाद नहीं है, बल्कि कुछ पूरी तरह से अलग है - जिसका अर्थ है, वास्तव में, केंद्र के बिना कार्रवाई। आपके साथ ऐसा जरूर हुआ होगा कि आपने बिना हिसाब-किताब के, बिना तर्क-वितर्क के, बिना विचार की चालाकी के, बिना यह सोचे कि क्या हो चुका है या क्या हो सकता है, बिना किसी विकल्प के कुछ किया है। इस पूरी प्रक्रिया के घटित हुए बिना भी आपने अपने जीवन में कुछ अवश्य किया होगा। लेकिन इस प्रकार की कार्रवाई को समझने के लिए बहुत अधिक आत्म-ज्ञान की आवश्यकता होती है, जो

अपने मन की कार्यप्रणाली को समझना है, क्योंकि स्वयं को धोखा देना और यह कहना बहुत आसान है, “मैंने बिना केंद्र के काम किया है; मैं विचार की प्रक्रिया के बिना ऐसे और ऐसे समूह में शामिल हो गया हूँ” - जो मूर्खतापूर्ण और अपरिपक्व है, क्योंकि जो कार्य कर रहा है वह व्यक्ति की अपनी छिपी हुई इच्छा है। जबकि, जो क्रिया संपूर्ण है और जिसका कोई केंद्र नहीं है, उसके लिए स्वयं में अन्वेषण की आवश्यकता होती है - और इसका मतलब है, वास्तव में, सोचने की पूरी प्रक्रिया में, मन के पूरे तंत्र में, बिना किसी सीमा के, बिना किसी अंत के, जाना।

मैं नहीं जानता कि क्या आपमें से किसी ने कभी गंभीरता से पूरी इच्छा के साथ, पूरे दिल से, खुशी के साथ, बिना किसी मजबूरी के अपने अंदर जाकर यह जानने की कोशिश की है कि आप क्या हैं। केवल यह कहना, "मैं यह हूं" या "मैं वह नहीं हूं," फिर भी अपरिपक्वता है; इसका कोई मतलब नहीं है. खोजबीन करने के लिए, खोजने के लिए, आनंद होना चाहिए, उत्साह होना चाहिए, जीवन शक्ति होनी चाहिए, खासकर जब मन नामक इस जटिल चीज़ में जाना हो। लेकिन हममें से ज्यादातर लोग या तो निराशा से बाहर खोजते हैं या कुछ ऐसा ढूंढते हैं जो हमें पोषण दे, जो हमें स्थिरता दे, निरंतरता का आश्वासन दे। वास्तविक पूछताछ इनमें से किसी भी चीज़ के बिना होनी चाहिए। कोई केवल यह जानने के लिए पूछताछ करता है कि वास्तव में क्या हो रहा है। मुझे नहीं पता कि आपने कभी ऐसा किया है या नहीं, क्या आपने कभी खुद का अध्ययन किया है जैसे एक महिला दर्पण में अपना चेहरा देखती है।

दर्पण में अपने चेहरे का अध्ययन करने में कुछ भी गलत नहीं है, अर्थात उसे वैसा ही देखना जैसा वह है - सीधे बाल, टेढ़ी नाक, इत्यादि। आप इसे सजा सकते हैं, रंग सकते हैं, इसे और अधिक सुंदर बनाने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन वह अलग बात है। इसी प्रकार, स्वयं का अध्ययन करने का अर्थ यह देखना है कि वास्तव में आपके मन की स्थिति क्या है - आप कुछ चीजें क्यों सोचते और करते हैं, आप कार्यालय या मंदिर क्यों जाते हैं, आप अपनी पत्नी से, अपने नौकर से एक निश्चित तरीके से बात क्यों करते हैं , आप पवित्र पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं, आप इन वार्ताओं में क्यों शामिल होते हैं। आपको यह सब पल-पल जानना होगा, न कि संचित ज्ञान के रूप में जिसके आधार पर आप कार्य करते हैं। सीखना मन की एक गति है जिसमें संचय नहीं होता। आप तभी सीख सकते हैं जब सीखने की प्रक्रिया से ज्ञान इकट्ठा नहीं किया जा रहा हो। जिस क्षण आप ज्ञान इकट्ठा करते हैं, जो आपने सीखा है उसे जोड़ते हैं, आपने सीखना बंद कर दिया है। एक दिमाग जो सीखने के माध्यम से ज्ञान इकट्ठा करता है वह सुरक्षा, सुरक्षा की इच्छा से प्रेरित होता है, या कुछ लाभ के लिए बाहर होता है। जबकि, सीखने की गति में कोई संचय नहीं होता है - और यही सीखने की सुंदरता है। सीखने का अर्थ केवल यह देखना है कि आप क्या हैं - घृणा, निन्दा, अश्लीलता, भय, आशाएँ, चिंताएँ, महत्वाकांक्षाएँ - बिना निर्णय किए, बिना मूल्यांकन किए, बिना निंदा या स्वीकार किए।

समझ या धारणा तब आती है जब सीखने की एक ऐसी गति होती है जो योगात्मक नहीं होती। यदि मन स्वयं को इस तरह से निरीक्षण और समझ सकता है, तो आप पाएंगे कि इस तरह के अवलोकन और समझ से एक ऐसी क्रिया होती है जो समग्र होती है, जिसका 'मैं', स्वयं के रूप में कोई केंद्र नहीं होता है।

सर, इसे जरूर ट्राई करें। किसी विशेष प्रकार की कार्रवाई विकसित करने का प्रयास न करें, बल्कि कार्रवाई की पूरी समस्या की जांच करें - जो आप तब तक नहीं कर सकते जब तक आप केवल समस्या का उत्तर ढूंढ रहे हों। इसका कारण यह है कि हम इन बातों पर इतना कम विचार करते हैं कि हमारा जीवन दयनीय, क्षुद्र, संकीर्ण, दु:ख से भरा हुआ है। हममें से अधिकांश लोग जो चाहते हैं वह सम्माननीयता है।

जो व्यक्ति वास्तव में पूछताछ करना चाहता है उसे पहले अपने मन को समझना होगा।
अपने मन को समझे बिना आप कुछ भी नहीं समझ पाएंगे। आप चर्च जा सकते हैं, अनुष्ठान कर सकते हैं, आपने धर्मग्रंथों में जो पढ़ा है उसे ग्रामोफोन रिकॉर्ड की तरह दोहरा सकते हैं, लेकिन इससे धर्म नहीं बनता। धार्मिक मन वह है जिसने अपनी प्रक्रियाओं, अपने छिपे हुए उद्देश्यों, अपने अनछुए रास्तों को समझ लिया है। यह स्वयं की गहन गहराइयों में उतर चुका है क्योंकि यह जीवित है, गतिशील है, कार्य कर रहा है और कभी किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचता है; यह हर समय खोज रहा है कि सत्य क्या है। सत्य स्थिर नहीं है; यह गतिशील है, गतिशील है; इसका कोई ठिकाना नहीं है, और जो मन इसका तेजी से पालन करने में असमर्थ है वह सत्य की गुणवत्ता, अथाह प्रकृति को कभी नहीं समझ सकता है।

इसीलिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है - उच्च स्व, आत्मा और उन सभी अपरिपक्व चीज़ों का ज्ञान नहीं, बल्कि स्वयं का ज्ञान, जो यह देखना है कि आपका अपना मन कैसे वातानुकूलित है।

ज्ञान और अधिकार के महत्व को समझे बिना, कार्य की समग्रता को जानना असंभव है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है।
संपूर्ण कार्य बिना किसी मजबूरी की भावना के और इसलिए पछतावे के बिना किया गया कार्य है। निश्चित रूप से, ऐसा कार्य बुद्धिमत्ता है। बुद्धि सिखानी नहीं है। ज्ञान की कोई पाठशाला नहीं हो सकती. बुद्धि कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप खरीदते हैं या जो सेवा, आत्म-बलिदान और बाकी सभी चीजों के माध्यम से आपके पास आती है। बुद्धिमत्ता किताबें पढ़ने से, या कई अनुभव प्राप्त करने से, या वह करने से नहीं आती जो आपके पिता या आपकी दादी या आपके नेता आपको करने के लिए कहते हैं। बुद्धि केवल उस मन में आती है जो यह अनुभव करता है कि क्या सत्य है और जब अनुभूति पूर्ण होती है। आत्म-ज्ञान के बिना कोई अनुभूति नहीं होती। बुद्धि तभी आती है जब कोई संघर्ष न हो। आप तभी समझ पाएंगे कि संपूर्ण क्रिया क्या है, जब आप मन की पूरी प्रक्रिया की जांच करना शुरू करेंगे, और तब आप यह भी जान पाएंगे कि किसी विशेष स्थिति में कैसे कार्य करना है, आज या किसी भी दिन क्या करना है। अंश के माध्यम से आप कभी भी संपूर्ण को नहीं समझ सकते, लेकिन

जब आप संपूर्ण के महत्व को समझते हैं, तो उस समझ से आप भाग को समझ सकते हैं।

इस सब में जाने के लिए स्वयं की सोच की प्रक्रिया को समझने की आवश्यकता है। और इस जांच की सुंदरता इसमें नहीं है कि क्या हासिल किया गया है, क्या सीखा या हासिल किया गया है, बल्कि एक मन की पूरी मासूमियत में है जो आसमान, कई चेहरों, नदियों और समृद्ध भूमि को नए सिरे से देखने के लिए स्वतंत्र है। केवल वह मन जिसने स्वयं को समझ लिया है, वह आशीर्वाद प्राप्त करने में सक्षम है जिसका कोई अंत नहीं है।

29 नवंबर, 1959

मद्रास में चौथी वार्ता

अच्छाई में रहना, विनम्र होना, क्रोध न करना, ईर्ष्या न करना, अधिग्रहण न करना बहुत कठिन होगा। हमें कुछ हद तक सभ्य बनाने के लिए, हमें शालीनता के दायरे में रखने के लिए, विभिन्न धार्मिक प्रतिबंध, वर्जनाएं, भय, स्वर्ग का वादा और नरक की धमकी दी जाती है; और इनमें से किसी भी प्रभाव के बिना, बिना किसी दबाव के, बिना पुरस्कार या दंड के परिवर्तन करना - जिसका अर्थ है, समझ के माध्यम से, मन के भीतर आमूल-चूल परिवर्तन लाना - असाधारण रूप से कठिन लगता है। बदलाव करना जाहिर तौर पर सबसे कठिन कामों में से एक है - अगर हम कभी भी बदलते हैं। यह बात किसी संशय की भावना से नहीं कही गई है। लेकिन परिवर्तन की पूरी प्रक्रिया को समझे बिना, हम अनुशासन की विभिन्न प्रणालियों की तलाश करते हैं जिनके द्वारा मन को नियंत्रित या आकार दिया जा सके। हम उस चीज़ को दबा देते हैं जिसे हम महसूस करते हैं कि त्याग दिया जाना चाहिए और इस तरह उसे उदात्त बनाने या उससे आगे निकलने की आशा करते हैं।

हममें से अधिकांश के साथ यही स्थिति है, है ना? जब हम क्रोधित होते हैं, तो हम अपने क्रोध को दबाने की कोशिश करते हैं; हम इसका समाधान, इससे बाहर निकलने का रास्ता तलाशते हैं। हम कभी भी समस्या में नहीं जाते हैं और इसे पूरी तरह से नहीं समझते हैं - फिर भी यह क्रोध की समस्या या किसी अन्य समस्या को हल करने का एकमात्र तरीका हो सकता है जो मन में संघर्ष पैदा करता है। हम जीवन भर संघर्ष के साथ जीते हैं; बचपन से लेकर मरने तक, हम भीतर और बाहर, शाश्वत संघर्ष में हैं। हम इच्छाशक्ति का प्रयोग करने, खुद को दबाने या नियंत्रित करने का प्रयास करने के आदी हैं; हम अनुशासन, ध्यान की विभिन्न विधियों का अभ्यास करते हैं; हम उन चीजों से बचने की उम्मीद में पवित्र पुस्तकें और अन्य सभी चीजें पढ़ते हैं जो हमारे जीवन में संघर्ष पैदा करती हैं। हमें सम्मानजनक व्यवहार की सीमा में रखने के लिए हैं

विभिन्न धार्मिक प्रतिबंध और जनमत के नैतिक कोड, और हम उन सभी के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं।

तो हमारा अस्तित्व वास्तव में विरोधाभास की स्थिति है, जिसमें यह होने और वह न होने का निरंतर प्रयास रहता है। हम सदैव कुछ बनने, कुछ से बचने, दमन करने, अनुरूप होने, समायोजित करने का प्रयास कर रहे हैं। यदि आप अपना निरीक्षण करें - जैसा कि यदि कोई बुद्धिमान है तो अवश्य करना चाहिए - तो आपको पता चलेगा कि यह प्रक्रिया हमारे अंदर दिन-ब-दिन, साल-दर-साल तब तक चलती रहती है जब तक हम मर नहीं जाते। हम अनुरूप होने, समायोजित करने, अनुपालन करने, अनुकरण करने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं; यह हमारा जीवन है, और इस पैटर्न से हम शायद ही कभी अलग होते हैं।

उस चीज़ का कोई अंत नहीं है जो हमारे अंदर विरोधाभास पैदा करती है। हम कभी भी अपने आप को क्रोध, लालच, ईर्ष्या, ईर्ष्या से पूरी तरह मुक्त नहीं कर पाते हैं, हालाँकि हम हमेशा इन चीज़ों के खिलाफ संघर्ष करते रहते हैं।

अब, यदि संभव हो तो, मैं परिवर्तन के इस प्रयास के बारे में और परिवर्तन में क्या निहित है, इसके बारे में बात करना चाहूँगा। मैं जोर-जोर से सोचकर और आपके साथ इस पर बात करके इस पर विचार करना चाहूंगा क्योंकि मुझे लगता है कि मन की गुणवत्ता में ही एक बुनियादी बदलाव होना चाहिए, और अपने लाभ की तलाश में एक चालाक दिमाग का केवल बाहरी समायोजन ही परिणाम देगा। हम कहीं नहीं.

ऐसा मन कभी भी शांति के गुण को नहीं जान सकता। यह संभवतः बिना विकल्प के जागरूक नहीं हो सकता, या रचनात्मक वास्तविकता की उस स्थिति में नहीं हो सकता।

यदि किसी को परिवर्तन के इस प्रश्न में बहुत गहराई से जाना है, तो मुझे लगता है, उसे इस तक पहुंचना चाहिए, यह समझकर कि चेतना क्या है - वह चेतना नहीं जिसका वर्णन किताबें करती हैं, और जिसके बारे में कई लोगों के पास कुछ सिद्धांत, निष्कर्ष हैं, बल्कि चेतना काम कर रही है अपने आप में.

यह निश्चित रूप से एकमात्र बिंदु है जहां से कोई भी शुरुआत कर सकता है। कोई कुछ भी नहीं मान सकता; कोई किसी सिद्धांत, दृढ़ विश्वास या निष्कर्ष से शुरुआत नहीं कर सकता। मेरा मानना है कि हमें बहुत सरलता से आगे बढ़ना चाहिए, और शंकर और अन्य लोगों ने चेतना के बारे में जो कहा है उसे बीच में नहीं लाना चाहिए। केवल तभी हम दो इंसानों के रूप में इस समस्या में जाने में सक्षम होंगे जो हमारी सोच के तरीकों को उजागर करने, हमारे संघर्षों को समझने और हम कुछ चीजें क्यों करते हैं यह समझने का प्रयास कर रहे हैं।

जिसे हम चेतना कहते हैं उसे समझने की कोशिश में, मुझे लगता है कि हमें कुछ चीज़ों के बारे में जागरूक होना चाहिए। हम विश्लेषण नहीं कर रहे हैं, हम केवल अवलोकन कर रहे हैं - जो विश्लेषणात्मक प्रक्रिया से काफी अलग है, जिसका एक उद्देश्यपूर्ण इरादा है, क्योंकि इसके माध्यम से आप कहीं न कहीं पहुंचने की उम्मीद करते हैं। इसलिए चेतना की हमारी जांच आत्म-सुधार के लिए की गई विश्लेषण की प्रक्रिया नहीं है। मेरे लिए, स्वयं को बेहतर बनाने की इच्छा भयावह है; यह सोचने का सबसे बचकाना, अपरिपक्व तरीका है। यह जीवन को एक व्यवसाय बनाता है; यह उसी स्तर पर है

विज्ञान में, व्यवसाय में, गणित में, या आप जो भी करेंगे उसमें आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करना। हम यहां स्वयं का विश्लेषण या सुधार करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। हम स्वयं का निरीक्षण करने की कोशिश कर रहे हैं, इस चेतना को समझने की कोशिश कर रहे हैं जो रोजमर्रा की गतिविधियों, रोजमर्रा के विचारों और भावनाओं में 'मैं' है - इच्छाएं, जुनून, क्रोध, क्रूरता, क्रूरता और भय। हम यहां 'मैं' के तरीकों की खोज करने के लिए हैं, न कि 'मैं' को सुधारने के लिए।

'मैं' में कोई सुधार नहीं है. यह केवल औसत दर्जे का दिमाग है जो कहता है, "मुझे बहुत अधिक चतुर, बहुत अधिक बुद्धिमान, बहुत अधिक विद्वान होना चाहिए।"
क्षुद्र मन स्वयं को सुधारने का कितना ही प्रयत्न करे, वह सदैव क्षुद्र ही रहेगा।

तो कृपया समझें कि हम चेतना नामक चीज़ को किस दृष्टिकोण से देख रहे हैं। यदि हमें समझ में नहीं आता कि चेतना को किस दृष्टि से देखा जाए, तो हम उसे बदलने या नियंत्रित करने का सदैव प्रयास करते हैं और यह प्रयास चेतना को और सीमित कर देता है। इस तरह के प्रयास की प्रकृति ही 'मैं' के रूप में एक केंद्र बनाना है जिससे चेतना को नियंत्रित किया जा सके। मुझे नहीं पता कि क्या आपने इस बात पर ध्यान दिया है कि जिस क्षण आप प्रयास करते हैं, आपके पास पहले से ही एक उद्देश्य होता है, और यह उद्देश्य आपके दृष्टिकोण को सीमित कर देता है।

कृपया इस समस्या को देखने के लिए मेरे साथ आएं। यह मत कहो, "क्या प्रयास आवश्यक नहीं है? क्या हमारा अस्तित्व - अपने दुखों, सुखों, संघर्षों, विरोधाभासों के साथ - प्रयास की एक प्रक्रिया नहीं है? हम वह सब जानते हैं; आपको मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं है, और मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैं आपको बिल्कुल अलग बात बताने की कोशिश कर रहा हूं, और इसीलिए आपको इसे थोड़ा सावधानी से, झिझकते हुए देखना चाहिए।

जैसा कि मैं कह रहा था, यदि हम प्रयास की प्रकृति को नहीं समझते हैं, तो सभी कार्य सीमित हैं। प्रयास अपनी सीमाएँ, अपने उद्देश्य, अपनी सीमाएँ स्वयं बनाता है। प्रयास में समय बांधने वाला गुण होता है। आप कहते हैं, "मुझे ध्यान करना चाहिए, मुझे अपने मन को नियंत्रित करने का प्रयास करना चाहिए।" नियंत्रण करने का वह प्रयास ही आपके मन पर एक सीमा लगा देता है। इसे अवश्य देखें, मेरे साथ इस पर विचार करें। प्रयत्नपूर्वक जीना बुरा है; मेरे लिए यह घृणित है, अगर मैं किसी कड़े शब्द का उपयोग कर सकता हूं। और यदि आप ध्यान देंगे, तो आपको एहसास होगा कि बचपन से ही हम प्रयास करने के लिए बाध्य हैं। हमारी तथाकथित शिक्षा में, हम जो भी काम करते हैं, उसमें हम खुद को बेहतर बनाने, कुछ बनने के लिए संघर्ष करते हैं। हम जो कुछ भी करते हैं वह प्रयास पर आधारित है, और जितना अधिक प्रयास हम करते हैं, मन उतना ही सुस्त हो जाता है।

अत: आमूलचूल परिवर्तन तभी हो सकता है जब प्रयास का अंत हो। हममें से अधिकांश लोग परिवर्तन लाने के लिए प्रयास करने के लिए बाध्य हैं, और इसीलिए कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं होता है। ऐसा प्रयास केवल अपनी सीमाओं के साथ, एक संशोधन उत्पन्न करता है।

कृपया इसके लिए मेरी बात स्वीकार न करें, या जो कहा जा रहा है उसे अस्वीकार करें। यह आपको पता लगाना है कि मैं जो कह रहा हूं वह सच है या नहीं। आपकी पूरी कंडीशनिंग इस धारणा पर आधारित है कि प्रयास आवश्यक है, लेकिन अब कोई आता है और कहता है, "देखो, यह धारणा पूरी तरह गलत है।" आप स्वयं कैसे पता लगाएंगे कि क्या सत्य है? मैं जो कह रहा हूं वह पूरी तरह से झूठ हो सकता है, इसके पीछे कोई वास्तविकता नहीं है; यह एक ऐसे व्यक्ति की सनक से पैदा हो सकता है जिसका जीवन आसान है और इसलिए वह कोई प्रयास नहीं करना चाहता।

आप सोच सकते हैं, "आप जैसे बातें करते हैं, यह सब बहुत अच्छी बात है, लेकिन हम विभिन्न सीमाओं और अलग-अलग स्तर की गरीबी के साथ पैदा हुए हैं, और हमें प्रयास करना चाहिए; नहीं तो हम कुचल दिये जायेंगे। इसके अलावा, हमारे शास्त्र हमें अपने मन को अनुशासित करने, नियंत्रित करने और आकार देने के लिए प्रयास करने के लिए कहते हैं।

तो, आप कैसे पता लगाएंगे कि जो कहा जा रहा है वह सच है या नहीं? तुम्हें संघर्ष करने की आदत है; यह आपकी परंपरा का हिस्सा है; आप अनुशासन, नियंत्रण, समायोजन के आदी हैं। जनता की राय आपके लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

जिसे कोई दूसरा कहता है वही आपका "भगवान" है - चाहे वह शंकर हों या आपका पड़ोसी। जब मैं बात कर रहा हूँ तो अपने मन का ध्यान रखें; निरीक्षण करें कि आप कैसा सोचते हैं.

ऐसी मानसिकता के साथ आप कैसे पता लगाएंगे कि जो कहा जा रहा है वह सच है या झूठ? यह पता लगाने के लिए, निश्चित रूप से, आपको अपने सोचने के तरीकों पर सवाल उठाना होगा, न कि केवल जो कहा जा रहा है उस पर सवाल उठाना होगा। आप स्पष्ट रूप से यह पता नहीं लगा सकते कि क्या सच है और क्या गलत है उस दिमाग के साथ जिसे बचपन से ही अनुरूप होना, अनुकरण करना, अनुसरण करना सिखाया गया है। इसलिए आपको अपने मन की स्थिति के बारे में पूछताछ करके शुरुआत करनी होगी। आपको अपनी चेतना में देखना होगा और देखना होगा कि आप क्यों अनुसरण करते हैं, आप नकल क्यों करते हैं, आप अनुरूप क्यों होते हैं।

निश्चित रूप से, यह चेतना की किसी भी जांच की शुरुआत है। ऐसी जाँच में कोई विश्लेषण नहीं होता, कोई उद्देश्यपूर्ण इरादा नहीं होता। आप यह पता लगाने के लिए अवलोकन कर रहे हैं कि क्या मस्तिष्क के लिए कार्य करना, जीवित रहना, बिना प्रयास के हर दिन कार्य करना संभव है। आप देखिए, महोदय, एक मन जो निरंतर विरोधाभास, प्रयास की स्थिति में है, वह खुद को कमजोर कर रहा है। वह कभी ताज़ा, निर्दोष नहीं होता। और निश्चित रूप से, किसी भी चीज़ की सच्चाई या झूठ को समझने के लिए आपको एक ताज़ा दिमाग, एक निर्दोष दिमाग, एक अच्छा, स्पष्ट दिमाग की आवश्यकता होती है।

हम चेतना नामक इस चीज़ के बारे में पूछताछ कर रहे हैं, जो एक संपूर्ण इकाई, एक पूर्ण एकीकृत अवस्था होनी चाहिए। लेकिन चेतना का एक हिस्सा है जो अंधेरे में है, और एक हिस्सा जो प्रकाश में है - ब्रह्मा का, यीशु का आध्यात्मिक प्रकाश नहीं, और वह सब बकवास जिस पर आपको विश्वास करने के लिए बाध्य किया गया है। जो हिस्सा प्रकाश में है वह है सतही मन जो कार्यालय जाता है, जो झगड़ता है, जो बेहतर नौकरी चाहता है—वह मन जो हर दिन कार्य करता है। फिर छिपा हुआ मन है, अचेतन मन, अपने उद्देश्यों के साथ,

इसकी इच्छाएँ, सतही मन के स्तर से नीचे चल रहे संघर्ष की इसकी सूचनाएँ। वह सब चेतना है। इस चेतना को समझने के लिए, आप किताबों का संदर्भ नहीं ले सकते, शंकर और अन्य लोगों ने चेतना के बारे में क्या कहा है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप खो गए हैं क्योंकि आप नहीं जानते कि आप क्या हैं, और आप केवल दूसरों के कथन उद्धृत करते हैं। कोई भी मूर्ख उद्धरण दे सकता है, और जो जितना अधिक मूर्ख होता है, वह उतना ही अधिक उद्धरण देता है। उद्धरण देना सोचना बंद करना है, पूछताछ करना बंद करना है, और इसलिए मन सुस्त, असंवेदनशील हो जाता है।

मैं जानता हूं, श्रीमान, कि मेरी बात सुनकर आप कह सकते हैं, "यह एक अच्छा भाषण है।" आपको यह एहसास नहीं है कि उद्धरण आपके दिमाग पर क्या प्रभाव डालता है, यह आपको कितना सुस्त बना देता है। मैं एक दिन एक ऐसे व्यक्ति से बात कर रहा था जो बहुत विद्वान था, जो किसी भी धर्मग्रंथ को उद्धृत कर सकता था, चाहे पूर्व से या पश्चिम से, उत्तर से या दक्षिण से। लेकिन वह अपने बारे में सोचने में पूरी तरह असमर्थ था। इसलिए कृपया उद्धरण देना बंद करें और स्वयं सोचें; पता लगाएँ कि आपके अपने विचार और भावनाएँ क्या हैं। जब आप उद्धरण देते हैं तो आप दूसरे के अधिकार पर भरोसा कर रहे होते हैं, जो आपके अपने दिमाग को देखने और खुद को वैसे ही समझने से बचने का एक बहुत आसान तरीका है जैसे आप वास्तव में हैं।

अब आप और मैं, दो इंसानों के रूप में, देख सकते हैं कि चेतना वह सब कुछ है जो हम सोचते हैं, महसूस करते हैं, सूँघते हैं, इच्छा करते हैं - सभी संवेदनाएँ, और संवेदनाओं के पीछे, चाहने और न चाहने की इच्छाएँ। हम बहुत अधिक विवरणों में नहीं जा सकते, लेकिन हम देख सकते हैं कि यह सब चेतना की समग्रता का निर्माण करता है। इस चेतना में विरोधाभास है; हालाँकि कुछ क्षणों में हम विरोधाभास से मुक्त स्थिति को जान सकते हैं, यह महज़ एक प्रतिक्रिया है।

आइए हम इसे अलग तरीके से देखें। चेतन और अचेतन मन है. मैं इन शब्दों का प्रयोग किसी विशेष मनोविश्लेषणात्मक ढंग से नहीं कर रहा हूँ; मैं उनका उपयोग वैसे ही कर रहा हूं जैसे आप और मैं रोजमर्रा की बातचीत में उनका उपयोग करते हैं। एक चेतन मन है, वह मन जो आधुनिक समाज में अपनी सभी मांगों, मजबूरियों, आशाओं और भय के साथ शिक्षित है। यदि मैं एक कम्युनिस्ट के रूप में जन्मा हूं, तो मैं आम तौर पर कम्युनिस्ट ही रहूंगा। मेरा चेतन मन, साम्यवाद में शिक्षित होने के कारण, उसी पैटर्न के भीतर कार्य करता रहता है, जैसे एक कैथोलिक, एक हिंदू, या एक बौद्ध अपने विशेष पैटर्न के भीतर कार्य करता है। यह चेतन मन ही है जो एक तकनीक सीखता है - मोटर चलाने की तकनीक या अपनी अवांछित इच्छाओं से छुटकारा पाने की तकनीक। यह चेतन मन ही है जो गुरु से सीखता है कि सद्गुणों का अनुकरण कैसे किया जाए, "आध्यात्मिक" होने के लिए क्या किया जाए, इसे कैसे दबाया जाए और कैसे विकसित किया जाए। यह चेतन मन ही है जो ज्ञान प्राप्त करता है, जो सतही स्तर पर समायोजन करता है।

फिर तथाकथित अचेतन है। अचेतन क्या है? आप स्वयं इसका पता कैसे लगाएंगे और केवल मनोवैज्ञानिक, विशेषज्ञ, विश्लेषक का उद्धरण नहीं देंगे? अचेतन मन स्पष्ट रूप से एक ऐसी चीज़ है जिस पर हममें से अधिकांश ने ध्यान नहीं दिया है। और क्या हम इस पर गौर करने में सक्षम हैं? किसी चीज़ को देखने के लिए हमारे पास एकमात्र साधन चेतन मन है, जो सीख रहा है, ज्ञान प्राप्त कर रहा है, और जो अपने दृष्टिकोण में हमेशा सकारात्मक है, और क्या ऐसा मन अचेतन में पूछताछ कर सकता है? मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। संभवतः मैं नहीं हूं.

मैं जानना चाहता हूं कि मैं ईर्ष्यालु क्यों हूं—मैं इसे एक उदाहरण के रूप में ले रहा हूं। मुझे ईर्ष्या क्यों हो रही है? चेतन मन समझ सकता है और समझा सकता है कि वह ईर्ष्यालु क्यों है। जब ऐसा होता है, तो यह विपरीत भी उत्पन्न करता है और कहता है, "मुझे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।" तो द्वंद्व है, यह होने और वह न होने का प्रयास है। लेकिन ईर्ष्या का तात्पर्य प्रतिस्पर्धा, तुलना से है; इसका तात्पर्य कुछ बनने की चाहत से है - प्रधान मंत्री बनना, सबसे प्रसिद्ध विद्वान बनना, शहर का सबसे बड़ा वकील बनना, इत्यादि। तो ईर्ष्या बहुत गहरी जड़ें जमा चुकी है; यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे यह कहकर टाल दिया जा सके, "मुझे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।"

अब, ईर्ष्या की जांच करने के लिए, उसकी गहरी जड़ों का पता लगाने के लिए एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो बिल्कुल भी सकारात्मक न हो। मुझे नहीं पता कि आप उसे देखते हैं या नहीं। हममें से अधिकांश के लिए, चेतन मन के केवल दो ही दृष्टिकोण होते हैं: सकारात्मक या इसके विपरीत, तथाकथित नकारात्मक। या तो यह चाहता है या यह नहीं चाहता है. वह ईर्ष्या से छुटकारा पाना चाहता है, या फिर ईर्ष्या रखकर उसका आनंद लेना चाहता है। यह कहता है, “ईर्ष्या का अपना दर्द और आनंद है; मैं दर्द दूर करने की कोशिश करूंगा लेकिन ईर्ष्या का आनंद बरकरार रखूंगा।”
इस प्रकार यह ईर्ष्या को सकारात्मक या तथाकथित नकारात्मक रूप से देखता है। लेकिन ईर्ष्या की जड़ों को खोजने के लिए बिल्कुल अलग मनःस्थिति की आवश्यकता होती है। यदि ईर्ष्या एक उथला पौधा होती, तो कोई इसे आसानी से उखाड़ कर फेंक सकता था। लेकिन पौधा गहरी जड़ों वाला पेड़ बन गया है; यह संपूर्ण आधुनिक सभ्यता को कवर करता है, और इसलिए समस्या बनी रहती है।

ईर्ष्या की जांच करने के लिए, अचेतन में जाने के लिए जहां इसकी गहरी जड़ें छिपी हुई हैं, आपको उस चेतन मन की आवश्यकता नहीं है जिसे शिक्षित किया गया है, बल्कि एक बिल्कुल अलग मानसिकता, एक पूरी तरह से अलग मन की स्थिति की आवश्यकता है। आप अचेतन को सूचनाओं और संकेतों, सपनों और स्पष्टता के कुछ क्षणों के अलावा नहीं जानते हैं; और अचेतन निश्चित रूप से चेतन मन द्वारा अन्वेषण योग्य नहीं है। जब चेतन मन इसका अन्वेषण या परीक्षण करने का प्रयास करता है, तो प्रेक्षक सदैव प्रेक्षित वस्तु को देखता रहता है। चेतन मन यही सब कर सकता है। यह देखे गए, अनुभवी, विचार से अलग एक पर्यवेक्षक, एक अनुभवकर्ता, एक विचारक के रूप में देख सकता है। यह अभी भी एक है

सकारात्मक प्रक्रिया यद्यपि नकारात्मक प्रतीत हो सकती है। सकारात्मक प्रक्रिया के साथ एक नकारात्मक भी है जो अभी भी उसका ही हिस्सा है।

हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं, जैसा कि मैंने बातचीत की शुरुआत में कहा, प्रयास को समझना है और यह पता लगाना है कि क्या मन के लिए प्रयास से पूरी तरह मुक्त होना संभव है - खुशी के साथ, आनंद के साथ, समग्र रूप से कार्य करने के लिए स्वतंत्र होना। प्रयास के बिना।

तो चेतन मन को क्या करना है? अचेतन से सपने, संकेत, सूचनाएं आती हैं, लेकिन जब चेतन मन उनकी व्याख्या करने की कोशिश करता है, तो यह अभी भी सकारात्मक के क्षेत्र में है, इसके विपरीत, तथाकथित नकारात्मक के साथ। किसी ऐसी चीज़ को समझने के लिए जिसके बारे में वह अस्पष्टता के अलावा कुछ नहीं जानता है, चेतन मन को निश्चित रूप से पूरी तरह से चुप होना चाहिए - अगर मैं उस शब्द का उपयोग कर सकता हूँ। उम्मीद है आप मेरे कथन का आशय समझ रहे होंगे। शांत मन सुप्त नहीं है, वह सुस्त होकर सोया नहीं है। चेतन मन को स्थगित होना चाहिए, यानी ध्यान की उस स्थिति में होना चाहिए जहां कोई सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया न हो।

यहाँ देखिए, महोदय, मैं आपको कुछ बताने की कोशिश कर रहा हूँ। यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में आप नहीं जानते, सिवाय इसके कि आपने इसके बारे में सुना है या किताबों में पढ़ा है। आपने इसकी सुंदरता को अपने दिल में, अपने दिमाग में कभी महसूस नहीं किया है।
उस मन की स्थिति क्या है जो सुनता है? जाहिर है, व्याख्यात्मक दिमाग सुन नहीं सकता। जब आप जो कुछ भी सुनते हैं उसकी व्याख्या अपने ज्ञान के अनुसार करते हैं, तो आप सुन नहीं रहे हैं। अन्वेषण करने के लिए, पता लगाने के लिए, आपका दिमाग वास्तव में नकारात्मक स्थिति में होना चाहिए - जो सकारात्मक होने के विपरीत नहीं है बल्कि पूरी तरह से अलग चीज है। यह नकारात्मकता के साथ सकारात्मकता का पूर्ण अभाव है। आपका चेतन मन, बिना किसी उद्देश्य के, अचेतन की सूचनाओं के प्रति खुला होना चाहिए; यह ध्यान की उस अवस्था में होना चाहिए जो वास्तव में पूर्ण निषेध है।

यदि आप यह सब नहीं समझते हैं तो मुझे खेद है, लेकिन मुझे आशा है कि आप समझेंगे। मेरा मानना है कि हर इंसान सम्मान के साथ, स्वतंत्रता की भावना के साथ, सहजता की स्थिति में जी सकता है, और बिना प्रयास के जीने की इस स्थिति में ही रचनात्मकता, वास्तविकता की अनुभूति हो सकती है। चेतन मन को पूर्ण ध्यान देने में सक्षम होना चाहिए, जो पूर्ण निषेध है - और वह पूर्णतः सकारात्मक स्थिति है। लेकिन मैं अभी उस सब में नहीं जाऊंगा. जब चेतन मन पूरी तरह से चौकस होता है, तो वह अचेतन में देख सकता है, जो कुछ ऐसा है जिसे वह नहीं जानता है। अचेतन, निश्चित रूप से, नस्लीय विरासत है, पारंपरिक मूल्य जो आपको अनकहे युगों से दिए गए हैं। यद्यपि आप सीखी गई तकनीकों में अति आधुनिक हो सकते हैं, अचेतन रूप से आप अभी भी एक ब्राह्मण, एक वैश्य, एक हिंदू, एक कैथोलिक, या जो कुछ भी हैं क्योंकि

सदियों से यह आपके नस्लीय अचेतन में डाला गया है। अचेतन न केवल व्यक्ति का बल्कि परिवार, जाति का भी संचित अनुभव है। यह मनुष्य के बनने, विकसित होने, जीवित रहने के प्रयास का परिणाम है। अतः चेतना, जो प्रयास का परिणाम है, सीमित है। जैसा कि मैंने आरंभ में कहा, जहां प्रयास है, वहां उद्देश्य है; जहां प्रयास है, वहां ध्यान और कार्रवाई पर एक सीमा होती है। गलत दिशा में अच्छा करना बुराई करना है। क्या तुम समझ रहे हो?

सदियों से हमने यह मानकर गलत दिशा में "अच्छा" किया है कि हमें यह होना चाहिए, हमें वह नहीं होना चाहिए, इत्यादि, जो केवल और अधिक संघर्ष पैदा करता है।

इसलिए मन को सदियों से अपनी सीमाओं को पार करने के प्रयास में खुद को दबाने, अनुशासित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है; और यद्यपि यह आत्मा, आत्म, उच्चतर स्व के विचार का आविष्कार कर सकता है, यह अभी भी अपने स्वयं के विचार की सीमा के भीतर, अपने स्वयं के प्रयास की सीमा के भीतर है; इसलिए, जिसे वह वास्तविकता कहता है वह केवल उसके अपने भ्रम का प्रक्षेपण है। हममें से अधिकांश के मन की यही वास्तविक स्थिति है। और ऐसा मन कैसे मुक्त हो सकता है? वह अगला प्रश्न है.

मैं मानता हूं कि मेरा मन समय, प्रयास का परिणाम है, और मैं देखता हूं कि प्रयास बंधन पैदा करता है, चेतना की सीमा पर एक सीमा लगाता है।
मन इस सीमा से कैसे मुक्त हो? मैं मन को मुक्त करने की कोई विधि खोजने के लिए "कैसे" नहीं पूछ रहा हूँ। किसी विधि के बारे में पूछना सोचने का सबसे अपरिपक्व तरीका है, और यह मेरा उद्देश्य नहीं है। मैं "कैसे" केवल यह जानने के लिए पूछ रहा हूं कि क्या मन के इस बंधन से बाहर निकलने का कोई रास्ता है, और हो सकता है कि बाहर निकलने का कोई रास्ता ही न हो।

तो आप इस समस्या से बचे रहते हैं: क्या मन को पूरी तरह से मुक्त करने की कोई संभावना है? हर दूसरी मानवीय समस्या की तरह इस समस्या का भी कोई उत्तर नहीं है।
क्या आप समझते हैं श्रीमान? यहाँ एक समस्या है, यदि कोई वास्तव में इसमें जाता है, तो यह अत्यधिक जटिल पाई जाती है, और मेरे लिए यह कहना मूर्खतापूर्ण होगा, "यही उत्तर है।" इसलिए आप समस्या से बचे हुए हैं। लेकिन यदि आपने जो कुछ भी कहा गया है उसका गहराई से पालन किया है, तो समस्या अब कोई समस्या नहीं है क्योंकि आप पहले ही इसकी समग्रता को समझ चुके होंगे; और जो मन किसी भी समस्या की समग्रता को समझ लेता है वह समस्या से मुक्त हो जाता है।

आप कह सकते हैं कि यह एक बहुत ही गंदी चाल है जो मैं आपके साथ खेल रहा हूं - आपको समस्या दे रहा हूं और आपको कोई रास्ता नहीं दिखा रहा हूं। मैं कहता हूं कि कोई रास्ता नहीं है. लेकिन समग्रता से देखने पर समस्या स्वयं ही हल हो जाती है। प्यार की स्थिति उस एहसास से बिल्कुल अलग है जिसे हम प्यार कहते हैं। हममें से अधिकांश के लिए, प्यार एक विरोधाभास है, जो ईर्ष्या, द्वेष, कब्ज़ा, अधिग्रहण, निराशा से भरा है-

आप मन की सारी हलचल को जानते हैं। लेकिन अगर कोई शोर सुनता है, अगर कोई तथाकथित प्रेम के सभी निहितार्थ देखता है, तो समस्या स्वयं हल हो जाती है।
जिस चीज की आवश्यकता है वह है धारणा की, न कि समस्या का उत्तर खोजने की निरंतर कोशिश की।

इसलिए, प्रयास हमेशा मन को सीमित करता है। अगर आप उसमें सच्चाई देख लें तो यही काफी है. वही धारणा काम करेगी; आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है. किसी चीज़ की सच्चाई को देखना मुक्ति कारक है। यह केवल तभी होता है जब आपको किसी समस्या की सच्चाई नहीं दिखती है कि आप पूछते हैं, "मुझे क्या करना चाहिए?" यदि आप देखते हैं कि आपका मन सदियों से किस प्रकार संस्कारित किया गया है, और अतीत की वह अनुकूलता किस प्रकार वर्तमान से होते हुए भविष्य में प्रक्षेपित हो रही है; यदि आप देखते हैं कि आपका मन किस प्रकार समय का, पर्यावरण का, विभिन्न मान्यताओं का गुलाम है जो उसे विरासत में मिली है और अर्जित की गई है; यदि आप देखते हैं कि कैसे आप लगातार उसी कंडीशनिंग से पैदा हुए अनुभव के माध्यम से अपनी कंडीशनिंग को जोड़ रहे हैं - यदि आप यह सब बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं, तो मुक्ति आपकी खोज के बिना आती है, और तब जीवन पूरी तरह से कुछ अलग होता है।

2 दिसंबर, 1959

मद्रास में पांचवी वार्ता

मैं सोचता हूं कि यह लाभदायक और सार्थक होगा कि हम स्वयं यह पता लगाएं कि मन इतना बेचैन क्यों है। यह समुद्र के समान बेचैन है, कभी स्थिर नहीं, कभी शांत नहीं; यद्यपि बाहरी तौर पर यह शांत हो सकता है, लेकिन अंदर से यह तरंगों, खांचों और हर तरह की अशांति से भरा हुआ है। मुझे लगता है कि इस प्रश्न पर गहराई से विचार करना आवश्यक है, न कि केवल यह पूछना कि मन को कैसे शांत किया जाए। मन को शांत करने का कोई उपाय नहीं है. बेशक, कोई गोलियाँ, ट्रैंक्विलाइज़र ले सकता है, या आँख बंद करके किसी प्रणाली का पालन कर सकता है; कोई प्रार्थनाओं से, दोहराव से मन को नशे में डाल सकता है, लेकिन नशे में धुत्त मन कोई दिमाग नहीं है। इसलिए मुझे इस प्रश्न की गहराई में जाना अत्यंत महत्वपूर्ण लगता है कि क्यों मन लगातार किसी चीज़ की तलाश में रहता है, और उसे पा लेने के बाद भी संतुष्ट नहीं होता है, बल्कि किसी और चीज़ की ओर चला जाता है - संतुष्टि से निराशा की ओर, पूर्णता से एक निरंतर गति दर्द और निराशा के लिए. हम सभी को सुख और दु:ख के इस अंतहीन चक्र से अवगत होना चाहिए। सब कुछ बीत रहा है, अनित्य है; हम लगातार उड़ान की स्थिति में रहते हैं, और ऐसी कोई जगह नहीं है जहां कोई शांत रह सके, खासकर अंदर से, क्योंकि मन का हर हिस्सा परेशान है। मन में कोई अछूता क्षेत्र नहीं है. जाने-अनजाने हमने शांति, स्थिरता लाने के लिए विभिन्न तरीकों से प्रयास किए हैं

मन को शांति की स्थिति; और इसे पाकर, हमने जल्द ही इसे फिर से खो दिया है। आपको अपने मन में चल रही इस अंतहीन खोज के बारे में पता होना चाहिए।

इसलिए मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि - झिझक के साथ, बिना हठधर्मिता के, बिना उद्धरण दिए, या निष्कर्ष पर पहुंचे - हम अपने दिमाग की इस बेचैन गतिविधि की जांच करने का प्रयास करें। और मुझे लगता है कि हमें खुद से यह पूछकर शुरुआत करनी होगी कि आखिर हम खोज क्यों करते हैं, हम खोज क्यों करते हैं, पहुंचने, हासिल करने, कुछ बनने की लालसा क्यों है। आख़िरकार, आप शायद थोड़ी सी जिज्ञासा के कारण यहां आए हैं, लेकिन मुझे आशा है कि इससे भी अधिक, खोजने की इच्छा के कारण, पता लगाने के लिए।

वह क्या है जो आप खोज रहे हैं? और तुम क्यों खोजते हो? यदि हम स्वयं से यह पूछकर इस प्रश्न की गहराई में जा सकें कि हम क्यों खोज रहे हैं - यदि हम, मानो, उस प्रश्न के माध्यम से द्वार खोल सकें, तो मुझे लगता है कि शायद हमें किसी ऐसी चीज़ की झलक मिल सकती है जो भ्रामक नहीं है और जो उसमें उस चीज़ का क्षणिक गुण नहीं है जो केवल आनंददायक या संतुष्टिदायक है।

यह क्यों है, और यह क्या है, आप खोज रहे हैं? मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी यह प्रश्न स्वयं से पूछा है? आप जानते हैं, एक चुनौती हमेशा नई होती है क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जो आपका ध्यान आकर्षित करती है। आपको जवाब देना होगा; इस पर आपकी कोई प्रतिक्रिया नहीं है, और या तो आप पूरी तरह से, पूरी तरह से, या आंशिक रूप से, अपर्याप्त रूप से प्रतिक्रिया करते हैं। किसी चुनौती का पूरी तरह से जवाब देने में असमर्थता संघर्ष पैदा करती है। दुनिया अपनी वर्तमान स्थिति में हम में से प्रत्येक के लिए एक निरंतर चुनौती है, और जब हम चुनौती की संपूर्णता, पूरी गहराई और सुंदरता के साथ प्रतिक्रिया नहीं करते हैं, तो अनिवार्य रूप से अशांति, चिंता, भय, दुःख होता है। उसी तरह, यह प्रश्न - आप क्या खोज रहे हैं, और आप क्यों खोज रहे हैं? - एक चुनौती है, और यदि आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ जवाब नहीं देते हैं, लेकिन इसे केवल एक बौद्धिक समस्या के रूप में मानते हैं, जिसका आंशिक रूप से जवाब देना है, तो जाहिर है आपको कभी भी संपूर्ण उत्तर नहीं मिलेगा। चुनौती के प्रति आपकी प्रतिक्रिया आंशिक और अपर्याप्त होती है, जब आप केवल बयान देते हैं या उन निश्चित निष्कर्षों के बारे में सोचते हैं जिन पर आप पहुँच चुके हैं। चुनौती हमेशा नई होती है, और आपको इसका नए सिरे से जवाब देना होता है—अपने अभ्यस्त, पारंपरिक तरीके से नहीं। यदि हम इस प्रश्न को अपने आप से ऐसे पूछ सकें जैसे कि हम इस पर पहली बार विचार कर रहे हैं, तो हमारी प्रतिक्रिया बुद्धि की सतही प्रतिक्रिया से बिल्कुल अलग होगी।

वह क्या है जिसे आप खोज रहे हैं, और आप इसे क्यों खोज रहे हैं? क्या यह तलाश ही बेचैनी नहीं पैदा करती? यदि कोई खोज न होती तो क्या आप स्थिर हो जाते? या फिर बिल्कुल अलग तरह की खोज होगी? लेकिन इससे पहले कि हम अपनी जांच के अधिक जटिल पहलुओं पर जाएं, मुझे यह पता लगाना महत्वपूर्ण लगता है कि व्यक्तिगत इंसान के रूप में आप और मैं क्या चाह रहे हैं।

जाहिर है, सतही उत्तर हमेशा यह कहना होता है, "मैं खुशी की तलाश में हूं,

पूर्ति।" लेकिन खुशी की तलाश में, संतुष्टि की तलाश में, हम खुद से यह पूछना कभी नहीं छोड़ते कि क्या संतुष्टि जैसी कोई चीज है। हम तृप्ति या संतुष्टि की चाहत रखते हैं, और हम यह देखे बिना उसके पीछे भागते हैं कि क्या शब्द के पीछे कोई वास्तविकता है। पूर्ति की खोज में, इसकी अभिव्यक्ति दिन-प्रतिदिन, वर्ष-दर-वर्ष बदलती रहती है। अधिक सांसारिक संतुष्टि से थककर, हम अच्छे आचरण में, सामाजिक सेवा में, भाईचारे में, अपने पड़ोसी से प्यार करने में खुशी तलाशते हैं। लेकिन देर-सबेर अच्छे आचरण के माध्यम से पूर्णता की ओर यह गति भी समाप्त हो जाती है, और हम एक और दिशा की ओर मुड़ जाते हैं। हम बौद्धिक गतिविधियों के माध्यम से, कारण, तर्क के माध्यम से खुशी खोजने की कोशिश करते हैं, या हम भावनात्मक, भावनात्मक, रोमांटिक बन जाते हैं। हम ख़ुशी शब्द को अलग-अलग समय पर अलग-अलग अर्थ देते हैं। हम इसका अनुवाद उस अर्थ में करते हैं जिसे हम शांति, ईश्वर, सत्य कहते हैं; हम इसे एक स्वर्गीय निवास के रूप में सोचते हैं जहां हम पूरी तरह से तृप्त होंगे, कभी परेशान नहीं होंगे, इत्यादि।

हममें से अधिकांश लोग यही चाहते हैं, है न? इसीलिए आप बेचैन मन को शांति देने की आशा में शास्त्र, बाइबिल, कुरान या अन्य धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं। शायद इसीलिए आप यहां हैं.

तलाश का अर्थ है एक वस्तु, एक लक्ष्य, क्या ऐसा नहीं है? जो अज्ञात है उसकी कोई खोज नहीं हो सकती। आप केवल वही चीज़ खोज सकते हैं जिसे आप जानते हैं और खो चुके हैं या जिसके बारे में आपने सुना है और पाना चाहते हैं। आप वह नहीं खोज सकते जिसे आप नहीं जानते। एक अजीब तरीके से, आप पहले से ही जानते हैं कि खुशी क्या है। आपने इसका स्वाद चखा है, अतीत ने आपको इसकी अनुभूति, आनंद, इसकी सुंदरता दी है, इसलिए आप इसकी गुणवत्ता, इसकी प्रकृति और आपके द्वारा प्रक्षेपित की गई स्मृति को पहले से ही जानते हैं। लेकिन जो तुमने जाना है, वह वह नहीं है; आपका प्रक्षेपण वह नहीं है जो आप वास्तव में चाहते हैं। जो तुमने चखा है वह पर्याप्त नहीं है; आप कुछ और चाहते हैं, और भी, और भी, और इसलिए आपका जीवन एक शाश्वत संघर्ष है।

मुझे आशा है कि आप जो कहा जा रहा है उसे सुन रहे हैं, किसी व्याख्यान के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे जैसे कि आप संघर्ष करते, टटोलते, खोजते, लालसा करते हुए अपनी कोई फिल्म देख रहे हों। आप दुखी हैं, चिंतित हैं, भयभीत हैं, जबरदस्त आशा और निराशा में फंसे हुए हैं, विरोधाभास के चरम पर हैं और इस तनाव से कार्रवाई होती है। आप बस इतना ही जानते हैं. आप बाहरी संतुष्टि चाहते हैं, घर में, परिवार में, कार्यालय जाने में, अमीर आदमी बनने में, या मुख्य निरीक्षक, या एक प्रसिद्ध न्यायाधीश, या प्रधान मंत्री बनने में - आप जानते हैं, सीढ़ी चढ़ने का पूरा व्यवसाय सफलता और उपलब्धि का. आप बूढ़े होने तक उस सीढ़ी पर चढ़ते हैं, और फिर आप भगवान की तलाश करते हैं। आप धन, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा इकट्ठा करते हैं, और जब आप एक निश्चित उम्र तक पहुँच जाते हैं, तो आप बेचारे बूढ़े भगवान की ओर मुड़ जाते हैं। भगवान को ऐसा आदमी नहीं चाहिए, श्रीमानों। ईश्वर एक पूर्ण मानव चाहता है

जो गुलाम नहीं है. वह एक निर्जलित इंसान नहीं चाहता बल्कि एक ऐसा इंसान चाहता है जो सक्रिय हो, जो प्रेम को जानता हो, जिसमें आनंद की गहरी अनुभूति हो।

लेकिन दुर्भाग्य से, खुशी, संतुष्टि की हमारी तलाश में एक अंतहीन संघर्ष चल रहा है। बाहरी तौर पर हम खुद को उस खुशी का आश्वासन देने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, लेकिन बाहरी चीजें विफल हो जाती हैं। घर, संपत्ति, पत्नी और बच्चों के साथ संबंध - यह सब बह सकता है, और मौत हमेशा कोने में इंतज़ार कर रही है। इसलिए हम आंतरिक चीजों की ओर मुड़ते हैं, हम अपने मन, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने के प्रयास में विभिन्न प्रकार के अनुशासन का अभ्यास करते हैं, और हम अच्छे आचरण के मानक के अनुरूप होते हैं, यह आशा करते हुए कि हम एक दिन खुशी की स्थिति में पहुंचेंगे जिसे परेशान नहीं किया जा सकता है .

अब, मैं देख रहा हूं कि यह पूरी प्रक्रिया चल रही है, और मैं खुद से पूछ रहा हूं: आखिर हम खोज क्यों करते हैं? मैं जानता हूं कि हम तलाश करते हैं। हम उन समाजों में शामिल होते हैं जो आध्यात्मिक पुरस्कार का वादा करते हैं; हम उन गुरुओं का अनुसरण करते हैं जो हमें संघर्ष करने, बलिदान देने, खुद को अनुशासित करने और बाकी सभी चीज़ों के लिए प्रोत्साहित करते हैं; इसलिए हम अनंत काल से खोज रहे हैं। यह तलाश क्यों है? वह कौन सी मजबूरी है, वह आग्रह है जो न केवल बाहरी तौर पर, बल्कि अंदर भी तलाश करने को मजबूर करता है? और क्या खोज की बाहरी और भीतरी गति के बीच कोई बुनियादी अंतर है, या यह केवल एक ही गति है? मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। हमने अपने अस्तित्व को बाहरी जीवन और आंतरिक जीवन में विभाजित कर दिया है।

हमारी दैनिक गतिविधियाँ और अनुसरण बाहरी जीवन हैं, और जब हमें उस क्षेत्र में खुशी, खुशी, संतुष्टि नहीं मिलती है, तो हम प्रतिक्रिया के रूप में अंदर की ओर मुड़ जाते हैं। लेकिन भीतर भी हताशा और निराशा है।

तो, वह क्या है जो हमें तलाश करने पर मजबूर कर रहा है? कृपया अपने आप से यह प्रश्न पूछें; मेरे साथ इसमें जाओ. निःसंदेह, एक सुखी, आनंदित व्यक्ति परमेश्वर की खोज नहीं करता; वह पुण्य प्राप्त करने का प्रयास नहीं कर रहा है; उसका अस्तित्व ही शानदार, उज्ज्वल है। तो, वह क्या है जो हमें खोजने और इतना जबरदस्त प्रयास करने के लिए प्रेरित कर रहा है? अगर हम इसे समझ सकें तो शायद हम इस बेचैन खोज से परे जा सकेंगे।

क्या आप जानते हैं कि आपकी खोज का कारण क्या है? कृपया सतही उत्तर न दें क्योंकि तब आप वास्तविकता से अनभिज्ञ हो जायेंगे।

निश्चित रूप से, यदि आप अपने आप में गहराई से जाते हैं, तो आप देखेंगे कि आप खोज रहे हैं क्योंकि हममें से प्रत्येक के भीतर अलगाव की, अकेलेपन की, खालीपन की भावना है; एक आंतरिक शून्य है जिसे कोई नहीं भर सकता। आप जो करना चाहते हैं वह करें - अच्छे कार्य करें, ध्यान करें, अपने आप को परिवार के साथ, समूह के साथ, जाति के साथ, राष्ट्र के साथ पहचानें - वह खालीपन अभी भी है, वह खालीपन जिसे भरा नहीं जा सकता, वह अकेलापन जिसे कुछ भी दूर नहीं कर सकता। यही हमारी अंतहीन खोज का कारण है, है न? इसे किसी भिन्न नाम से पुकारें, ऐसा नहीं है

मामला। किसी के भीतर गहरे में खालीपन, अकेलेपन, पूर्ण अलगाव की भावना होती है। यदि मन इस शून्य में जाकर इसे समझ सके तो शायद इसका समाधान हो जायेगा।

कभी न कभी, शायद जब आप चल रहे थे, या जब आप एक कमरे में अकेले बैठे थे, तो आपको अकेलेपन की इस भावना का अनुभव हुआ होगा, हर चीज़ से कटे होने की असाधारण भावना - अपने परिवार से, अपने दोस्तों से, विचारों, आशाओं से—ताकि आपको लगे कि आपका किसी से या किसी चीज़ से कोई संबंध नहीं है। और इसमें प्रवेश किए बिना, वास्तव में इसके साथ जीए बिना, इसे समझे बिना, मन उस भावना का समाधान नहीं कर सकता।

मेरा मानना है कि जानने और अनुभव करने में अंतर है। आप शायद जानते हैं कि अकेलेपन की यह भावना क्या है, इसके बारे में आपने जो सुना या पढ़ा है, लेकिन जानना अनुभव की स्थिति से पूरी तरह से अलग है। हो सकता है कि आपने बहुत कुछ पढ़ा हो, आपने बहुत सारे अनुभव एकत्रित कर लिए हों ताकि आप बहुत कुछ जान सकें, लेकिन ज्ञान सजीव नहीं है।

यदि आप एक कलाकार हैं, एक चित्रकार हैं, तो हर पंक्ति, हर छाया का कुछ मतलब होता है।
आप हर समय निरीक्षण कर रहे हैं, छाया की गति और गहराई, वक्र की सुंदरता, चेहरे की अभिव्यक्ति, पेड़ की शाखा, हर जगह के रंगों को देख रहे हैं - आप हर चीज के प्रति जीवित हैं। लेकिन ज्ञान आपको यह धारणा, यह महसूस करने की क्षमता, यह अनुभव करने की क्षमता नहीं दे सकता कि आप क्या देखते हैं। अनुभव करना एक बात है, और अनुभव दूसरी बात है।

अनुभव, ज्ञान, अतीत की बात है, जो स्मृति के रूप में चलता रहेगा, लेकिन अनुभव वर्तमान की एक जीवित धारणा है; यह वर्तमान की सुंदरता, शांति, असाधारण गहराई के बारे में एक महत्वपूर्ण जागरूकता है। उसी प्रकार अकेलेपन के प्रति भी जागरूक रहना होगा; किसी को इसे महसूस करना होगा, वास्तव में पूर्ण अलगाव की इस भावना का अनुभव करना होगा। और यदि कोई इसका अनुभव करने में सक्षम है, तो उसे पता चलेगा कि इसके साथ रहना वास्तव में कितना कठिन है। मुझे नहीं पता कि क्या आप कभी सूर्यास्त के साथ रहे हैं।

आप जानते हैं, श्रीमान, प्रेम की एक चमक होती है जिसे विकसित नहीं किया जा सकता।
प्रेम अच्छे आचरण का परिणाम नहीं है; आपका कितना भी दयालु, उदार हो, आपको प्यार नहीं देगा। प्रेम व्यापक भी है और विशिष्ट भी। प्रेम करने वाला मन सदाचारी होता है; यह सद्गुण की तलाश नहीं करता है। यह गलत नहीं हो सकता क्योंकि यह सही और गलत को जानता है। यह प्रेम के बिना मन है जो सद्गुण चाहता है, जो ईश्वर को चाहता है, जो विश्वास की प्रणाली से चिपक जाता है और इस तरह खुद को नष्ट कर देता है। प्रेम - वह गुण, वह भावना, बिना किसी वस्तु के करुणा की भावना, जो जीवन का सार है - मन द्वारा पकड़ी जाने वाली चीज़ नहीं है।

जैसा कि मैंने दूसरे दिन कहा था, जब बुद्धि उस शुद्ध भावना का मार्गदर्शन करती है

सामान्यता अस्तित्व में आती है। हममें से अधिकांश लोगों की बुद्धि इतनी अधिक विकसित है कि बुद्धि सदैव शुद्ध भावना को भ्रष्ट कर रही है; इसलिए, हमारी भावनाएँ औसत दर्जे की हैं, हालाँकि हम तर्क करने में उत्कृष्ट हो सकते हैं।

अब, अकेलेपन की यह भावना शुद्ध भावना है, जो मन से दूषित नहीं है। यह मन ही है जो डरा हुआ है, डरा हुआ है, और इसलिए कहता है, "मुझे इससे दूर हो जाना चाहिए।" लेकिन अगर कोई इस अकेलेपन के बारे में बस जागरूक हो, अगर कोई इसके साथ रहता है, तो इसमें शुद्ध भावना का गुण होता है। मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं।

क्या आपने कभी सचमुच किसी फूल को देखा है? ये सबकुछ आसान नहीं है। आप सोच सकते हैं कि आपने इसे देखा है, आप सोच सकते हैं कि आपने इसे पसंद किया है, लेकिन वास्तव में आपने जो किया है वह यह है: आपने इसे देखा है, आपने इसे एक नाम दिया है, आपने इसे सूंघा है, और फिर आप चले गए हैं। प्रजाति का नामकरण ही, फूल की महक ही आपकी स्मृति की एक खास प्रतिक्रिया का कारण बनती है, और इसलिए आप वास्तव में कभी फूल की ओर देखते ही नहीं हैं। बस कभी-कभी किसी फूल को, सूर्यास्त को, किसी पक्षी को, या जो भी आप देखना चाहते हैं उसे देखने का प्रयास करें, मन की ओर से किसी भी हस्तक्षेप के बिना, और आप देखेंगे कि यह कितना कठिन है, फिर भी केवल तभी पूर्णता प्राप्त होती है किसी भी चीज़ की धारणा.

यह अकेलापन, यह शुद्ध भावना जो पूर्ण अलगाव की भावना है, उसी तरह देखी जा सकती है जैसे आप फूल को देखते हैं - पूरे ध्यान के साथ, जिसका मतलब उसे नाम देना या उससे भागने की कोशिश करना नहीं है। तब आप पाएंगे, यदि आप अपनी जांच में इतनी दूर चले गए हैं, कि वहां केवल नकार की स्थिति है। कृपया इसका संस्कृत या किसी अन्य भाषा में अनुवाद न करें, न ही इसकी तुलना अपने द्वारा पढ़ी गई किसी चीज़ से करें। जो मैं आपको बता रहा हूं वह वह नहीं है जो आपने पढ़ा है।

जो वर्णन किया गया है वह वैसा नहीं है।

मैं कह रहा हूं कि यदि मन अकेलेपन की इस भावना का अनुभव करने में सक्षम है, मौखिक रूप से नहीं, बल्कि वास्तव में इसके साथ रहता है, तो पूर्ण निषेध की जागरूकता आती है - निषेध जो कि विपरीत नहीं है। हममें से अधिकांश लोग केवल विपरीत ही जानते हैं - सकारात्मक और नकारात्मक, "मैं प्यार करता हूँ" और "मैं प्यार नहीं करता," "मैं चाहता हूँ" और "मैं नहीं चाहता।" हम बस इतना ही जानते हैं। लेकिन मैं जिस स्थिति के बारे में आपको बता रहा हूं वह उस प्रकृति की नहीं है क्योंकि उसका कोई विपरीत नहीं है। यह पूर्ण नकार की स्थिति है।

मुझे नहीं पता कि आपने कभी रचना की गुणवत्ता या प्रकृति के बारे में सोचा है या नहीं। प्रतिभा होने, प्रतिभाशाली होने के अर्थ में रचनात्मकता, सृजन की स्थिति से पूरी तरह से अलग है। मुझे नहीं पता कि क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है कि अकेले चलते हुए या किसी कमरे में बैठे हुए आपको अचानक असाधारण आनंद की अनुभूति हुई हो। उस भावना को महसूस करने के बाद, आप उसका अनुवाद करना चाहते हैं, इसलिए आप एक कविता लिखते हैं या एक चित्र बनाते हैं। अगर वो कविता या वो

चित्र फैशनेबल हो जाता है, समाज आपकी चापलूसी करता है, आपको इसके लिए भुगतान करता है, आपको लाभ देता है, और आप इन सबमें बहक जाते हैं। वर्तमान में आप फिर से उस जबरदस्त परमानंद को पाना चाहते हैं, जो बिन बुलाए आया था। जब तक आप इसे खोजते रहेंगे, यह कभी नहीं आएगा। लेकिन आप इसे विभिन्न तरीकों से खोजते रहते हैं - आत्म-अनुशासन के माध्यम से, तंत्र के अभ्यास के माध्यम से, ध्यान के माध्यम से, पेय के माध्यम से, महिलाओं के माध्यम से - आप चमक, आनंद की उस जबरदस्त भावना को वापस पाने के प्रयास में हर संभव कोशिश करते हैं, जिसमें सारी सृष्टि है. लेकिन आपको यह कभी वापस नहीं मिलेगा. यह अंधेरे में, बिन बुलाए आता है।

तो यह निषेध की स्थिति है जहाँ से सारी रचना होती है। चाहे आप अनायास कोई कविता लिखें या बिना हिसाब-किताब के मुस्कुराएं, चाहे बिना किसी मकसद के दयालुता हो या बिना किसी कारण के डर के अच्छाई हो, यह सब पूर्ण निषेध की इस असाधारण स्थिति का परिणाम है, जिसमें सृजन है। लेकिन यदि आप खोजने की पूरी प्रक्रिया को नहीं समझते हैं, तो आप उस तक नहीं पहुंच सकते हैं, ताकि सभी खोज पूरी तरह से बंद हो जाएं। खोज की समझ और समाप्ति अंत में नहीं बल्कि शुरुआत में होती है। वह व्यक्ति जो कहता है, "आखिरकार मैं खोजने की प्रक्रिया को समझ जाऊंगा, और फिर मैं और अधिक खोज नहीं करूंगा," वह विचारहीन है, मूर्ख है, क्योंकि अंत शुरुआत में है, जिसके लिए कोई समय नहीं है। यदि आप अपने आप में जांच करना शुरू कर दें और समझें कि आप क्यों खोज रहे हैं और आप क्या खोज रहे हैं, तो आप तुरंत इसके संपूर्ण महत्व को समझ सकते हैं; और तब आप पाएंगे कि, बिना किसी इरादे के, बिना किसी कारण के, एक मौलिक क्रांति होती है, मन का पूर्ण परिवर्तन। तभी सत्य अस्तित्व में आता है।

सत्य उस मन में नहीं आता है जो अनुभव से बोझिल है, जो ज्ञान से भरा है, जिसने सद्गुण एकत्र कर लिया है, जिसने अनुशासन, नियंत्रण के माध्यम से खुद को दबा लिया है। सत्य मन में आता है जो वास्तव में निर्दोष है, निडर है।

और यह वह मन है जिसने अपनी खोज को पूरी तरह से समझ लिया है, जो इस नकार की स्थिति की पूरी गहराई तक चला गया है - यह केवल ऐसा मन है जो भय के बिना है। तब वह असाधारण चीज़ आएगी जिसे हम सभी चाह रहे हैं। यह मायावी है, और यदि आप इसे पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाएंगे तो यह नहीं आएगा। आप अथाह को नहीं पकड़ सकते। इसे प्राप्त करने के लिए आपके हाथ, आपका दिमाग, आपका पूरा अस्तित्व शांत, पूरी तरह से शांत होना चाहिए। आप इसकी तलाश नहीं कर सकते क्योंकि आप नहीं जानते कि यह क्या है। अथाह तब होगा जब मन खोज की इस पूरी प्रक्रिया को अंत में नहीं, बल्कि शुरुआत में समझेगा - जो कि आत्म-ज्ञान की निरंतर गति है।

6 दिसंबर, 1959

मद्रास में छठी वार्ता

यदि हम जरा भी विचारशील हैं, तो हमें अक्सर आश्चर्य होता होगा कि हमारी गतिविधियाँ किस स्रोत से आती हैं। हमने खुद की जांच की होगी और सोचा होगा कि हम कुछ चीजें क्यों करते हैं - हम कुछ संगठनों में क्यों शामिल होते हैं, कुछ नौकरियां क्यों करते हैं, हम एक निश्चित तरीके से क्यों सोचते हैं, कुछ निश्चित विश्वास क्यों रखते हैं, क्यों असंख्य जटिल और विरोधाभासी इच्छाएं हैं जिनसे हमारे सभी कार्य उत्पन्न होते हैं। . कम से कम हममें से कुछ लोगों ने इन विरोधाभासी इच्छाओं को अपने आप में और दूसरों में सक्रिय होते देखा होगा। जिस तरह हमने पृथ्वी को कई परस्पर विरोधी भागों में विभाजित किया है, उन्हें अलग-अलग नामों से बुलाया है - इंग्लैंड, भारत, रूस, अमेरिका और इसी तरह - उसी तरह हम भी आंतरिक रूप से कई हिस्सों में विभाजित हैं, प्रत्येक भाग दूसरे के साथ संघर्ष में है।

परन्तु पृथ्वी हमारी, तुम्हारी, और मेरी है; यह भारतीय या अंग्रेजी, चीनी या रूसी, जर्मन या अमेरिकी नहीं है। यह हमारी पृथ्वी है, जिस पर रहना, आनंद लेना, पोषण करना, देखभाल करना और सुशोभित करना है। यह संपूर्ण चीज़ है, इसे तोड़ने योग्य नहीं है। फिर भी हम पृथ्वी को तोड़ना जारी रखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम अपने आप में टूटे हुए हैं, और यह टूटने की प्रक्रिया निरंतर गिरावट का एक स्रोत है।

अब, क्या इस आत्म-विरोधाभासी स्थिति के बजाय, जिससे हम इतने परिचित हैं, अस्तित्व की कोई पूर्णता, पूर्णता है जिससे संपूर्ण कार्रवाई हो सकती है? आइए हम एक साथ इस प्रश्न पर विचार करें। मन अपनी सोच में, अपनी भावना में, अपनी गतिविधि में, अपने अस्तित्व के तरीके में हमेशा टूटा हुआ क्यों रहता है? यदि हम इस समस्या की गहराई से जांच कर सकें, तो शायद हमें एक कार्य, जीने का एक तरीका, एक ऐसी अवस्था मिल जाएगी जो स्व-विरोधाभासी नहीं है। लेकिन आत्म-विरोधाभास से मुक्त होने के लिए न केवल बाहरी परिवर्तन की आवश्यकता है, बल्कि मन की गुणवत्ता में क्रांति की भी आवश्यकता है।

हम देख सकते हैं कि हमारे अस्तित्व के हर स्तर पर और समाज के हर स्तर पर मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। आपको और मुझे बहुत बड़े पैमाने पर बदलाव की जरूरत है क्योंकि जैसा कि अभी है, हमारी जीवन शैली बहुत खंडित है; यह एक आत्म-विरोधाभासी प्रक्रिया है जिसमें हमारे विभिन्न हिस्से एक-दूसरे के साथ युद्ध में हैं। हमारे जीवन में क्रांति स्पष्ट रूप से आवश्यक है। मेरा अभिप्राय आर्थिक क्रांति से नहीं है—वह बहुत छोटी बात है। जिस चीज़ की आवश्यकता है वह हमारे अस्तित्व में एक क्रांति है, मन में एक संकट है, चेतना में एक संकट है, न कि केवल समाज में एक संकट है। हमारे जीवन में मूलभूत क्रांति लाने के लिए यह आंतरिक संकट अवश्य होना चाहिए।

तो, मूल रूप से परिवर्तन कैसे किया जाए यह समस्या है। उथला, क्षुद्र मन कैसा होता है, ऐसा मन जो बहुत गहराई से सोचने का आदी नहीं होता, ऐसा मन जो बाहरी घटनाओं से दूर हो जाता है, ऐसा मन जो किसी व्यवस्था में फंस जाता है, चाहे वह कोई भी हो

योगिक, साम्यवादी, धार्मिक, या तकनीकी - ऐसा मन मौलिक रूप से कैसे बदल सकता है? मैं खुद से और आपसे यह सवाल पूछ रहा हूं; मैं समस्या के बारे में जोर-जोर से सोच रहा हूं। क्या मन की गुणवत्ता, हमारे सोचने और महसूस करने के तरीकों में आमूल-चूल क्रांति लाना संभव है? क्या कोई अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ जी सकता है ताकि काम, तकनीक, उसके दैनिक विचारों और भावनाओं से अलग न हो जाए? क्या जीवन जीने का कोई ऐसा तरीका है जो खंडित न हो, आत्म-विरोधाभासी न हो, बल्कि एक एकीकृत संपूर्णता हो, जैसे एक पेड़ जिसकी कई शाखाएँ, कई पत्तियाँ हों? क्या इस तरह से जीना संभव है कि प्रत्येक क्रिया संपूर्ण क्रिया हो, प्रत्येक भावना संपूर्ण हो, मन की प्रत्येक गतिविधि संपूर्ण हो? क्या आप और मैं अपने अस्तित्व की गहराई से समग्रता से जी सकते हैं, ताकि कोई आत्म-विरोधाभास न हो? यदि हम दो अलग-अलग इंसानों के रूप में इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार कर सकें, तो शायद हमें इसका उत्तर मिल जाएगा; और आज शाम मैं यही करना चाहूंगा।

हमारे जीवन में ऐसा बहुत कम या कोई कार्य क्यों नहीं है जो टूटा हुआ, स्व-विरोधाभासी न हो? मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी खुद से यह सवाल पूछा है। आप सभी आत्म-विरोधाभास की स्थिति में हैं, है ना? और जितना अधिक आप सोचते हैं, आप उतने ही अधिक आत्म-विरोधाभासी हो जाते हैं। अपने आप में इस विरोधाभासी स्थिति के प्रति जागरूक होने के कारण, आप ईश्वर का आह्वान करते हैं, या किसी धार्मिक समाज में शामिल होते हैं - जो आपको केवल सुला देता है। बाहर से आप शान्त, शान्त दिखाई दे सकते हैं, परन्तु अन्दर अभी भी विरोधाभास, द्वन्द्व है।

तो, क्या सद्भाव, सौंदर्य की भावना के साथ, कभी न खत्म होने वाली तृप्ति की भावना के साथ जीना संभव है - या बल्कि, मैं तृप्ति नहीं कहूंगा क्योंकि तृप्ति निराशा लाती है, लेकिन क्या कार्रवाई की कभी न खत्म होने वाली स्थिति है कोई दु:ख नहीं, कोई पश्चात्ताप नहीं, पछतावे का कोई कारण नहीं? यदि ऐसी कोई अवस्था है तो कोई उस तक कैसे पहुंचेगा? कोई भी स्पष्ट रूप से इसकी खेती नहीं कर सकता है। कोई यह नहीं कह सकता, "मैं सामंजस्यपूर्ण रहूंगा" - इसका कोई मतलब नहीं है। यह मान लेना कि सामंजस्यपूर्ण होने के लिए व्यक्ति को स्वयं पर नियंत्रण रखना चाहिए, एक अपरिपक्व सोच है। संपूर्ण एकीकरण की, एकात्मक कार्रवाई की स्थिति, तभी आ सकती है जब कोई इसकी तलाश नहीं कर रहा हो, जब मन खुद को जीने के एक पैटर्न वाले तरीके के लिए मजबूर नहीं कर रहा हो।

हममें से ज़्यादातर लोगों ने इस सब पर ज़्यादा विचार नहीं किया है। अपनी दैनिक गतिविधियों में हम केवल समय की परवाह करते हैं, क्योंकि समय हमें भूलने में मदद करता है, समय हमारे घावों को भर देता है, हालांकि अस्थायी रूप से, समय हमारी निराशाओं, हमारी कुंठाओं को दूर कर देता है। समय की प्रक्रिया में फँसकर, कोई इस असाधारण स्थिति तक कैसे पहुँच सकता है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है, जिसमें जीने की गति ही एकीकृत क्रिया है, और रोजमर्रा की जिंदगी वास्तविकता है? यदि प्रत्येक

हममें से कोई गंभीरता से यह प्रश्न अपने आप से पूछता है, तो मुझे लगता है कि हम समस्या को सुलझाने में एक-दूसरे के साथ संवाद करने में सक्षम होंगे; लेकिन यदि आप केवल शब्द सुन रहे हैं, तो आप और मैं एकाकार नहीं हैं। हम एक-दूसरे के साथ तभी जुड़ते हैं जब यह हम दोनों के लिए एक समस्या है - और फिर यह सिर्फ मेरी समस्या नहीं है, जिसे मैं आप पर थोप रहा हूं, या जिसे आप अपनी मान्यताओं और विशिष्टताओं के अनुसार व्याख्या करने की कोशिश कर रहे हैं। यह एक मानवीय समस्या है, एक विश्व समस्या है, और यदि यह हम में से प्रत्येक के लिए बहुत स्पष्ट है, तो मैं जो कह रहा हूं, जो मैं सोच रहा हूं और महसूस कर रहा हूं, वह हमारे बीच एकता की स्थिति लाएगा, और हम एक साथ चल सकते हैं बहुत गहराई तक.

तो समस्या क्या है? समस्या यह है कि स्पष्ट रूप से किसी व्यक्ति की बाहरी गतिविधियों में, न केवल सतही स्तर पर, बल्कि आंतरिक रूप से, गहराई से जबरदस्त बदलाव होना चाहिए; एक आंतरिक क्रांति होनी चाहिए जो किसी के सोचने के तरीके को बदल देगी और जीवन का एक तरीका लाएगी जो अपने आप में संपूर्ण कार्रवाई है। और ऐसी क्रांति क्यों नहीं होती? जैसा कोई देखता है, वैसी ही समस्या है। तो आइए हम अपने अंदर गहराई से उतरें और इस समस्या की जड़ का पता लगाएं।

समस्या की जड़ तो डर ही है ना? कृपया इस पर स्वयं गौर करें और मुझे केवल दर्शकों को संबोधित करने वाला वक्ता न समझें। मैं आपके साथ इस समस्या पर चर्चा करना चाहता हूं क्योंकि अगर आप और मैं मिलकर इसका पता लगाते हैं और हम दोनों कुछ ऐसा समझते हैं जो सच है, तो उस समझ से एक ऐसा कार्य होगा जो न तो आपका है और न ही मेरा, और राय, जिस पर हम हमेशा के लिए लड़ते रहेंगे , अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

मुझे लगता है कि एक बुनियादी डर है जिसे खोजा जाना चाहिए - एक ऐसा डर जो किसी की नौकरी खोने के डर या गलत होने के डर या बाहरी या आंतरिक असुरक्षा के डर से कहीं अधिक गहरा है। लेकिन इसमें बहुत गहराई से जाने के लिए, हमें उन डर से शुरुआत करनी होगी जिन्हें हम जानते हैं, जिन डर के बारे में हम सभी सचेत हैं। मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि वे क्या हैं, क्योंकि आप उन्हें स्वयं में देख सकते हैं - जनता की राय का डर; मृत्यु नामक दुखद अनुभव के माध्यम से किसी के बेटे, किसी की पत्नी या पति को खोने का डर; बीमारी का डर; अकेलेपन का डर; सफल न होने का, स्वयं को पूरा न कर पाने का डर; सत्य, ईश्वर, स्वर्ग, या जो आप चाहते हैं उसका ज्ञान प्राप्त न कर पाने का डर।

जंगली व्यक्ति के कुछ बहुत ही सामान्य भय होते हैं, लेकिन हमारे पास असंख्य भय होते हैं, जिनकी जटिलता जैसे-जैसे हम अधिक से अधिक "सभ्य" होते जाते हैं, बढ़ती जाती है।

अब डर क्या है? क्या आपने कभी सचमुच डर का अनुभव किया है? आप अपनी नौकरी खो सकते हैं, आप सफल नहीं हो सकते हैं, आपका पड़ोसी आपके बारे में यह या वह बात कह सकता है, और मृत्यु हमेशा आपका इंतजार कर रही है। यह सब आपके अंदर डर पैदा करता है, और आप योग के माध्यम से, किताबें पढ़ने के माध्यम से इससे दूर भागते हैं।

ईश्वर में विश्वास के माध्यम से, मनोरंजन के विभिन्न रूपों और इसके बाकी सभी तरीकों के माध्यम से। इसलिए मैं पूछ रहा हूं: क्या आपने कभी सचमुच डर का अनुभव किया है, या मन हमेशा उससे दूर भागता है?

मृत्यु का भय दूर करो. मृत्यु से भयभीत होने के कारण, आप यह कहकर अपने भय को दूर कर देते हैं कि मृत्यु अपरिहार्य है, कि सब कुछ मर जाता है। तर्कसंगत बनाने की प्रक्रिया तथ्य से पलायन मात्र है। या आप पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं, जो आपको संतुष्ट करता है, आराम देता है, लेकिन डर अभी भी बना रहता है। या आप पूरी तरह से वर्तमान में जीने की कोशिश करते हैं, अतीत और भविष्य के बारे में सब कुछ भूल जाते हैं, और केवल वर्तमान के बारे में चिंतित रहते हैं; लेकिन भय बना रहता है।

मैं आपसे पूछ रहा हूं कि क्या आपने कभी वास्तविक भय को जाना है-सैद्धांतिक भय को नहीं जिसकी मन केवल कल्पना करता है। शायद मैं इसे बहुत स्पष्ट नहीं कर रहा हूं. नमक का स्वाद तो आप जानते ही हैं. आपने दर्द, वासना, ईर्ष्या का अनुभव किया है, और आप स्वयं जानते हैं कि इन शब्दों का क्या अर्थ है। इसी तरह, क्या आप डर को जानते हैं? या क्या आपको वास्तव में डर का अनुभव किए बिना केवल यह पता है कि डर क्या है? क्या मैं अपने आप को समझा रहा हूँ?

तुम मृत्यु से डरते हो, और वह भय क्या है? आप मृत्यु की अनिवार्यता को देखते हैं, और क्योंकि आप मरना नहीं चाहते हैं, आप इससे डरते हैं। परन्तु तुमने कभी नहीं जाना कि मृत्यु क्या है; आपने इसके बारे में केवल एक राय, एक विचार पेश किया है, इसलिए आप मृत्यु के बारे में एक विचार से डरते हैं। यह काफ़ी सरल है, और मैं हमारी कठिनाई को ठीक से नहीं समझता।

वास्तव में डर का अनुभव करने के लिए, आपको पूरी तरह से इसके साथ रहना चाहिए, आपको पूरी तरह से इसमें रहना चाहिए, और इससे बचना नहीं चाहिए; आप इसके बारे में विश्वास, राय नहीं रख सकते। लेकिन मुझे नहीं लगता कि हममें से कई लोगों ने कभी इस तरह से डर का अनुभव किया है क्योंकि हम हमेशा डर से बचते रहते हैं, उससे दूर भागते रहते हैं; हम कभी भी इसके साथ नहीं रहते, इस पर गौर करते हैं, पता लगाते हैं कि यह सब क्या है।

अब, क्या मन डर का हिस्सा बनकर उसके साथ जीने में सक्षम है? क्या मन उस भावना से बचने या भागने की कोशिश करने के बजाय उसमें जा सकता है? मुझे लगता है कि यह काफी हद तक इसलिए है क्योंकि हम हमेशा डर से भागते रहते हैं जिसके कारण हम इस तरह का विरोधाभासी जीवन जीते हैं।

महोदय, व्यक्ति को यह ज्ञात होता है, विशेषकर जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती है, कि मृत्यु सदैव प्रतीक्षा में रहती है। और तुम मौत से डरते हो, है ना? अब, आप उस डर को कैसे समझें? आप मृत्यु के भय से कैसे मुक्त हो सकते हैं? मृत्यु क्या है? यह वास्तव में आपके द्वारा ज्ञात हर चीज़ का अंत है। यही वास्तविक तथ्य है. आप जीवित रहेंगे या नहीं, यह मुद्दा नहीं है। मृत्यु के बाद जीवित रहना महज एक विचार है। तुम नहीं जानते, परन्तु तुम विश्वास करते हो, क्योंकि विश्वास तुम्हें सांत्वना देता है। आप कभी भी मृत्यु के प्रश्न पर नहीं जाते क्योंकि अंत होने का, पूरी तरह से अज्ञात में प्रवेश करने का विचार ही आपके लिए डरावना है,

जो भय जगाता है; और भयभीत होकर, आप बचने के साधन के रूप में विभिन्न प्रकार के विश्वास का सहारा लेते हैं।

निश्चित रूप से, मन को भय से मुक्त करने के लिए, आपको यह जानना होगा कि शारीरिक और मानसिक रूप से सशक्त होते हुए, कार्यालय जाते हुए, हर काम करते हुए मरना क्या होता है। तुम्हें जीवित रहते हुए मृत्यु का स्वरूप जानना होगा।

विश्वास भय को दूर नहीं कर सकता। आप इसके बाद के बारे में कितनी भी किताबें पढ़ सकते हैं, लेकिन वह मन को भय से मुक्त नहीं कर पाएगी क्योंकि मन केवल एक ही चीज का आदी है, वह है स्मृति के माध्यम से निरंतरता, और इसलिए अंत का विचार ही एक है डरावनी। जो कुछ आपने अनुभव किया है और आनंद लिया है, जो कुछ भी आपके पास है, जो चरित्र आपने बनाया है, आपके आदर्श, आपके दृष्टिकोण, आपका ज्ञान - यह सब समाप्त हो रहा है। और मन भय से मुक्त कैसे हो?—यही समस्या है, न कि यह कि क्या मृत्यु के बाद कोई निरंतरता है। मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे होंगे।

यदि मुझे अंत के भय से मुक्त होना है, तो निश्चित रूप से मुझे मृत्यु की प्रकृति की जांच करनी होगी; मुझे इसका अनुभव अवश्य करना चाहिए, मुझे जानना चाहिए कि यह क्या है-इसकी सुंदरता, इसकी जबरदस्त गुणवत्ता। मरना, किसी ऐसी चीज़ में प्रवेश करना जिसकी कभी कल्पना भी नहीं की गई हो, पूरी तरह से अज्ञात हो, एक असाधारण बात होनी चाहिए।

अब, जीवित रहते हुए मन को उस अंत का अनुभव कैसे करना चाहिए जिसे मृत्यु कहा जाता है? मृत्यु समाप्त हो रही है; यह शरीर का अंत है और शायद मन का भी। मैं इस बात पर चर्चा नहीं कर रहा हूं कि अस्तित्व बचा है या नहीं। मुझे ख़त्म होने की चिंता है. क्या मैं जीते जी ख़त्म नहीं हो सकता? क्या मेरा मन - अपने सभी विचारों, अपनी गतिविधियों, अपनी यादों के साथ - मेरे जीवित रहते ही समाप्त नहीं हो सकता, जबकि शरीर बुढ़ापे और बीमारी से टूटा नहीं है या किसी दुर्घटना से नष्ट नहीं हुआ है? क्या मन, जिसने एक निरंतरता बना ली है, अंतिम क्षण में नहीं, बल्कि अभी समाप्त हो सकता है? अर्थात् क्या मन स्मृति के समस्त संचयों से मुक्त नहीं हो सकता?

आप हिंदू हैं, ईसाई हैं, या जो भी आप चाहेंगे। आप अतीत से, रीति-रिवाज से, परंपरा से आकार लेते हैं। आप लालच, ईर्ष्या, खुशी, खुशी, किसी सुंदर चीज़ की सराहना, प्यार न किए जाने की पीड़ा, पूरा न कर पाने की पीड़ा हैं - आप वह सब हैं, जो निरंतरता की प्रक्रिया है।

इसका एक ही रूप लीजिए. आप अपनी संपत्ति से, अपनी पत्नी से जुड़े हुए हैं।

यह एक सच्चाई है. मैं वैराग्य की बात नहीं कर रहा हूं. आप अपनी राय, अपने सोचने के तरीकों से जुड़े हुए हैं।

अब, क्या आप उस लगाव के अंत तक नहीं पहुँच सकते? आप आसक्त क्यों हैं?—यह प्रश्न है, यह नहीं कि अनासक्त कैसे हुआ जाए। यदि आप अलग होने का प्रयास करते हैं, तो आप केवल विपरीत और इसलिए विरोधाभास पैदा करते हैं

जारी है। लेकिन जिस क्षण आपका मन आसक्ति से मुक्त होता है, वह आसक्ति के माध्यम से निरंतरता की भावना से भी मुक्त होता है, है ना? तो, आप क्यों जुड़े हुए हैं? क्योंकि तुम्हें डर है कि आसक्ति के बिना तुम कुछ भी नहीं रहोगे; इसलिए, आप अपना घर हैं, आप अपनी पत्नी हैं, आप अपना बैंक खाता हैं, आप अपनी नौकरी हैं। आप ये सभी चीजें हैं. और यदि आसक्ति के माध्यम से निरंतरता की इस भावना का अंत हो जाता है, संपूर्ण अंत हो जाता है, तो आपको पता चल जाएगा कि मृत्यु क्या है।

क्या आप समझते हैं श्रीमान? आइए हम कहें, मैं नफरत करता हूं और मैंने इस नफरत को वर्षों से अपनी स्मृति में रखा है, लगातार इसके खिलाफ लड़ रहा हूं। अब, क्या मैं तुरंत नफरत करना बंद कर सकता हूँ? क्या मैं इसे मृत्यु के अंत के साथ छोड़ सकता हूँ? जब मौत आती है, तो वह आपकी अनुमति नहीं मांगती; यह आता है और तुम्हें ले जाता है, यह तुम्हें वहीं नष्ट कर देता है। उसी तरह, क्या आप घृणा, ईर्ष्या, स्वामित्व का अभिमान, विश्वासों, विचारों, विचारों, सोचने के एक विशेष तरीके के प्रति लगाव को पूरी तरह से छोड़ सकते हैं?

क्या आप यह सब एक पल में छोड़ सकते हैं? इसका कोई "कैसे छोड़ें" नहीं है क्योंकि यह निरंतरता का ही दूसरा रूप है। राय, विश्वास, मोह, लोभ, ईर्ष्या को छोड़ना मरना है - हर दिन, हर पल मरना। यदि क्षण-क्षण में सभी महत्वाकांक्षाओं का अंत हो रहा है, तो आप कुछ भी नहीं होने की असाधारण स्थिति को जानेंगे, एक शाश्वत गति के रसातल में आ जाएंगे, और किनारे पर गिर जाएंगे - जो कि मृत्यु है .

मैं मृत्यु के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ क्योंकि मृत्यु वास्तविकता हो सकती है; यह वही हो सकता है जिसे हम ईश्वर कहते हैं - वह सबसे असाधारण चीज़ जो जीवित है और चलती है, फिर भी जिसका कोई आरंभ और अंत नहीं है। इसलिए मैं मृत्यु के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं - और इसके लिए मुझे उन सभी चीजों के लिए मरना होगा जो मैं पहले से जानता हूं। मन अज्ञात के प्रति तभी जागरूक हो सकता है जब वह ज्ञात के प्रति मर जाता है - बिना किसी उद्देश्य के, बिना पुरस्कार की आशा या सजा के डर के मर जाता है। तब मैं जीवित रहते हुए यह जान सकता हूं कि मृत्यु क्या है - और उसी खोज में भय से मुक्ति है।

शरीर के मरने के बाद कोई निरंतरता है या नहीं, यह अप्रासंगिक है; आपका दोबारा जन्म होगा या नहीं यह एक मामूली बात है। मेरे लिए, जीना मरने से अलग नहीं है क्योंकि जीने में मृत्यु है। मृत्यु और जीवन के बीच कोई अलगाव नहीं है। कोई मृत्यु को जानता है क्योंकि मन हर मिनट मर रहा है, और उस अंत में नवीनीकरण, नवीनता, ताजगी, मासूमियत है - निरंतरता में नहीं। लेकिन हममें से अधिकांश के लिए, मृत्यु एक ऐसी चीज़ है जिसका मन ने वास्तव में कभी अनुभव नहीं किया है। जीवित रहते हुए मृत्यु का अनुभव करने के लिए, मन की सभी चालें - जो उस प्रत्यक्ष अनुभव को रोकती हैं - समाप्त होनी चाहिए।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी जाना है कि प्यार क्या है? क्योंकि मुझे लगता है मौत और प्यार साथ-साथ चलते हैं। मृत्यु, प्रेम और जीवन एक ही हैं, लेकिन हमने जीवन को विभाजित कर दिया है, जैसे हमने पृथ्वी को विभाजित कर दिया है। हम प्रेम के अस्तित्व की बात करते हैं

या तो शारीरिक या आध्यात्मिक और उन्होंने पवित्र और अपवित्र के बीच लड़ाई शुरू कर दी है। हमने प्यार क्या है और प्यार क्या होना चाहिए, इसे बांट दिया है, इसलिए हम कभी नहीं जान पाते कि प्यार क्या है। प्रेम, निश्चित रूप से, एक संपूर्ण भावना है जो भावुक नहीं है और जिसमें अलगाव की कोई भावना नहीं है; यह बुद्धि की पृथक्कारी, खंडित गुणवत्ता के बिना, भावना की पूर्ण शुद्धता है। प्रेम में निरंतरता का कोई भाव नहीं होता। जहां निरंतरता की भावना है, वहां प्यार पहले ही मर चुका है, और इसमें अपनी सभी बदसूरत यादों, झगड़ों, क्रूरताओं के साथ कल की गंध आती है। प्यार करने के लिए मरना जरूरी है. मृत्यु प्रेम है—दोनों अलग नहीं हैं।

लेकिन मेरी बातों से मंत्रमुग्ध मत हो जाना क्योंकि तुम्हें इसका अनुभव करना है, तुम्हें इसे जानना है, इसका स्वाद लेना है, इसे स्वयं खोजना है।

पूर्ण अकेलेपन, अलगाव, कुछ भी न होने का डर, हमारे आत्म-विरोधाभास का आधार, मूल है। क्योंकि हम कुछ भी न होने से डरते हैं, हम कई इच्छाओं से बंटे हुए हैं, प्रत्येक इच्छा एक अलग दिशा में खींचती है। इसीलिए, यदि मन को समग्र, गैर-विरोधाभासी क्रिया को जानना है - एक ऐसी क्रिया जिसमें कार्यालय जाना कार्यालय न जाने के समान है, या संन्यासी बनने के समान है, या ध्यान के समान है, या समान है जैसे किसी शाम के आसमान को देखना - भय से मुक्ति होनी चाहिए। लेकिन जब तक आप इसका अनुभव नहीं करते तब तक डर से मुक्ति नहीं मिल सकती है, और जब तक आप इससे बचने के तरीके और साधन नहीं खोजते तब तक आप डर का अनुभव नहीं कर सकते। तुम्हारा ईश्वर भय से अद्भुत मुक्ति है; आपके सभी अनुष्ठान, आपकी किताबें, आपके सिद्धांत और विश्वास आपको वास्तव में इसका अनुभव करने से रोकते हैं। आप पाएंगे कि केवल अंत में ही भय का पूर्ण अंत होता है - कल का अंत, जो हुआ है उसका अंत, वह मिट्टी है जिसमें भय अपनी जड़ें जमा लेता है। तब तुम्हें पता चलेगा कि प्रेम, मृत्यु और जीवन एक ही हैं। मन तभी मुक्त होता है जब स्मृति का संचय समाप्त हो जाता है। सृष्टि समाप्ति में है, निरंतरता में नहीं। केवल तभी संपूर्ण क्रिया है जो जीना, प्यार करना और मरना है।

9 दिसंबर, 1959

मद्रास में सातवीं वार्ता

यदि हम बिना किसी इरादे या उद्देश्य के, बिना कुछ खोजे, एक साथ यात्रा कर सकें, तीर्थयात्रा कर सकें, तो शायद लौटने पर हम पाएंगे कि अनजाने में हमारा हृदय बदल गया है। मुझे लगता है कि यह प्रयास करने लायक है।

किसी भी इरादे या उद्देश्य, किसी भी मकसद या लक्ष्य का तात्पर्य प्रयास से है - प्राप्त करने के लिए, प्राप्त करने के लिए एक सचेत या अचेतन प्रयास। मैं सुझाव देना चाहूँगा कि हम

एक साथ ऐसी यात्रा करें जिसमें इनमें से कोई भी तत्व मौजूद न हो। यदि हम ऐसी यात्रा कर सकते हैं, और यदि हम रास्ते में आने वाली चीज़ों का निरीक्षण करने के लिए पर्याप्त सतर्क हैं, तो शायद जब हम वापस लौटेंगे, जैसा कि सभी तीर्थयात्रियों को करना चाहिए, तो हम पाएंगे कि हृदय परिवर्तन हो गया है; और मुझे लगता है कि यह दिमाग को विचारों से भर देने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगा क्योंकि विचार मनुष्य को मौलिक रूप से बिल्कुल भी नहीं बदलते हैं। विश्वास, विचार, प्रभाव मन को सतही तौर पर खुद को एक पैटर्न में समायोजित करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं, लेकिन अगर हम बिना किसी उद्देश्य के एक साथ यात्रा कर सकते हैं और जीवन की असाधारण चौड़ाई और गहराई और सुंदरता के साथ चलते हुए बस निरीक्षण कर सकते हैं, तो इस अवलोकन से बाहर निकलें। एक ऐसा प्यार आ सकता है जो केवल सामाजिक, पर्यावरणीय नहीं है, एक ऐसा प्यार जिसमें देने वाला और लेने वाला नहीं है, बल्कि जो एक ऐसी स्थिति है, जो सभी मांगों से मुक्त है। तो, इस यात्रा को एक साथ करने में, शायद हम अपने दैनिक जीवन की बोरियत और हताशा, खालीपन और निराशा से कहीं अधिक महत्वपूर्ण चीज़ के प्रति जागृत होंगे।

अधिकांश मनुष्य, जैसा कि वे दिन-प्रतिदिन जीते हैं, धीरे-धीरे निराशा में डूब जाते हैं, या वे सतही खुशियों, मनोरंजन, आशाओं में फंस जाते हैं, या वे तर्कसंगतताओं, घृणा या सामाजिक सुविधाओं से दूर हो जाते हैं। यदि हम वास्तव में आमूल-चूल, आंतरिक परिवर्तन ला सकें ताकि हम पूरी तरह और समृद्धता से जी सकें, गहरी भावनाओं के साथ जो बुद्धि की बड़बड़ाहट से दूषित न हों, तो मुझे लगता है कि हम अपने सभी कार्यों में पूरी तरह से अलग तरीके से कार्य करने में सक्षम होंगे। रिश्तों।

मैं जो यात्रा प्रस्तावित कर रहा हूँ वह चाँद तक या सितारों तक भी नहीं है। तारों की दूरी हमारे भीतर की दूरी से बहुत कम है। स्वयं की खोज अंतहीन है, और इसके लिए निरंतर जांच की आवश्यकता होती है, एक धारणा जो समग्र होती है, एक जागरूकता जिसमें कोई विकल्प नहीं होता है। यह यात्रा वास्तव में व्यक्ति के लिए दुनिया के साथ उसके रिश्ते का द्वार खोलना है। क्योंकि हम स्वयं के साथ संघर्ष में हैं, हमारा संसार में भी संघर्ष है। हमारी समस्याएँ जब बढ़ती हैं तो विश्व की समस्याएँ बन जाती हैं। जब तक हम स्वयं के साथ संघर्ष में हैं, दुनिया में जीवन भी एक निरंतर लड़ाई, एक विनाशकारी, बिगड़ती लड़ाई है।

इसलिए स्वयं की समझ व्यक्तिगत मुक्ति के अंत तक नहीं है; यह एक निजी स्वर्ग, एक हाथी दांत की मीनार प्राप्त करने का साधन नहीं है जिसमें हम अपने भ्रमों, विश्वासों, देवताओं के साथ निवृत्त हो सकें। इसके विपरीत, यदि हम स्वयं को समझने में सक्षम हैं, तो हम शांति में रहेंगे, और तब हम जानेंगे कि उस दुनिया में सही तरीके से कैसे रहना है जो अब भ्रष्ट, विनाशकारी, क्रूर है।

आख़िर दुनियादारी क्या है? सांसारिकता, निस्संदेह, संतुष्ट होना है - न केवल बाहरी चीजों से संतुष्ट होना, बल्कि संपत्ति, धन, स्थिति से भी संतुष्ट होना।

शक्ति, लेकिन आंतरिक चीज़ों के साथ भी। हममें से अधिकांश लोग बहुत सतही स्तर पर संतुष्ट हैं। हम चीज़ों को अपने पास रखने में संतुष्टि महसूस करते हैं - एक कार, एक घर, एक बगीचा, एक उपाधि। कब्ज़ा हमें संतुष्टि की एक असाधारण अनुभूति देता है।
और जब हम चीजों के कब्जे से अभिभूत हो जाते हैं, तो हम गहरे स्तर पर संतुष्टि की तलाश करते हैं; हम उसे खोजते हैं जिसे हम सत्य, ईश्वर, मोक्ष कहते हैं। लेकिन हम अभी भी उसी मजबूरी से प्रेरित हैं - संतुष्ट होने की मांग। जिस तरह आप सेक्स में, सामाजिक स्थिति में, चीज़ों के मालिक होने में संतुष्टि चाहते हैं, उसी तरह आप "आध्यात्मिक" तरीकों से भी संतुष्ट होना चाहते हैं।

कृपया यह न कहें, "क्या बस इतना ही है?" और इसे टाल दें, लेकिन जब आप सुन रहे हों, तो संतुष्टि की अपनी इच्छा पर गौर करें। यदि आप कर सकते हैं, तो स्वयं को यह देखने दें कि आप किस प्रकार संतुष्ट हो रहे हैं। बौद्धिक व्यक्ति अपने चतुर विचारों से संतुष्ट होता है, जो उसे श्रेष्ठता की भावना, जानने की भावना देता है; और जब जानने की वह भावना उसे संतुष्टि देना बंद कर देती है, जब वह हर चीज का विश्लेषण कर लेता है और बौद्धिक रूप से हर धारणा, हर सिद्धांत, हर विश्वास को खंडित कर देता है, तब वह व्यापक, गहरी संतुष्टि चाहता है। वह परिवर्तित हो जाता है और विश्वास करना शुरू कर देता है; वह बहुत "धार्मिक" हो जाता है और उसकी संतुष्टि किसी संगठित धर्म का रंग ले लेती है।

इसलिए, बाहरी चीज़ों से असंतुष्ट होकर, हम संतुष्टि के लिए तथाकथित आध्यात्मिक चीज़ों की ओर रुख करते हैं। यह एक कुरूप शब्द बन गया है, वह आध्यात्मिक शब्द; इसमें पवित्रता की बू आती है। क्या आप जानते हो मेरे कहने का क्या मतलब है? संत अपने संवर्धित गुणों, अपने संघर्षों, अपने अनुशासनों, अपने दमन और आत्म-त्याग के साथ अभी भी संतुष्टि के क्षेत्र में हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम संतुष्ट होना चाहते हैं कि हम स्वयं को अनुशासित करते हैं; हम किसी ऐसी चीज़ की तलाश में हैं जो हमें स्थायी संतुष्टि दे, एक ऐसी संतुष्टि जिससे सभी संदेह दूर हो गए हैं। हममें से अधिकांश यही चाहते हैं—और हम सोचते हैं कि हम आध्यात्मिक, धार्मिक हैं। संतुष्टि की हमारी खोज को हम "सत्य की खोज" कहते हैं।

हम मंदिर या चर्च जाते हैं, हम व्याख्यान में भाग लेते हैं, हम इस तरह की बातें सुनते हैं, हम गीता, उपनिषद, बाइबिल पढ़ते हैं - यह सब संतुष्टि की इस अजीब भावना को प्राप्त करने के लिए जिसमें कभी कोई संदेह नहीं होगा, कभी कोई पूछताछ नहीं.

संतुष्ट होने की हमारी इच्छा ही हमें ध्यान और सद्गुणों के विकास की ओर ले जाती है। सद्गुण कैसे "विकसित" किया जा सकता है, मैं नहीं जानता।
निश्चय ही, विनम्रता कभी विकसित नहीं की जा सकती; प्रेम कभी विकसित नहीं किया जा सकता; नियंत्रण से कभी शांति नहीं लायी जा सकती. ये चीजें हैं, या नहीं हैं। जो व्यक्ति नम्रता विकसित करता है वह घमंड से भरा होता है; वह विनम्र बने रहने में स्थायी संतुष्टि पाने की उम्मीद करता है। उसी प्रकार, ध्यान के माध्यम से

हम पूर्ण, अथाह, अज्ञात की तलाश करते हैं। लेकिन ध्यान रोजमर्रा के अस्तित्व का हिस्सा है; यह कुछ ऐसा है जिसे आपको सांस लेते समय, सोचते हुए, जीते हुए, नाजुक या क्रूर भावनाओं को महसूस करते हुए करना होगा। यह वास्तविक ध्यान है, और यह उस व्यवस्थित ध्यान से पूरी तरह से अलग है जिसका आपमें से कुछ लोग इतने मोहक तरीके से अभ्यास करते हैं।

यदि संभव हो तो मैं ध्यान के इस प्रश्न पर विचार करना चाहूंगा, लेकिन कृपया मेरे शब्दों से मंत्रमुग्ध न हों। अचानक ध्यानमग्न न हो जाएं; सच्चे ध्यान का लक्ष्य क्या है, यह जानने के लिए बहुत अधिक इच्छुक न बनें। मैं जिस चिंतन की बात कर रहा हूं उसका कोई लक्ष्य नहीं है, कोई अंत नहीं है। प्यार का कोई अंत नहीं होता. प्रेम सफल नहीं होता; यह आपको पुरस्कृत या दंडित नहीं करता है। प्रेम अस्तित्व की एक अवस्था है, चमक की भावना है। प्रेम में सभी गुण हैं। प्रेम की अवस्था में जो चाहो करो, कोई पाप नहीं, कोई बुराई नहीं, कोई विरोधाभास नहीं; और प्रेम के बिना हम हमेशा स्वयं के साथ और इसलिए एक-दूसरे के साथ और दुनिया के साथ युद्ध में रहेंगे। यह प्रेम ही है जो मन को पूरी तरह से बदल देता है।

लेकिन जिस ध्यान से हममें से अधिकांश परिचित हैं, और जिसका हममें से कुछ लोग अभ्यास करते हैं, वह पूरी तरह से अलग है। आइए सबसे पहले हम इसकी जांच करें - आप जो कर रहे हैं उसे उचित ठहराने या निंदा करने के लिए नहीं, बल्कि इसकी सच्चाई, वैधता या झूठ को देखने के लिए। हम एक साथ एक यात्रा पर जा रहे हैं, और यात्रा पर आप केवल वही ले जा सकते हैं जो अत्यंत आवश्यक हो। मैं जिस यात्रा की बात कर रहा हूं वह बहुत तेज है; वहां न रहने का स्थान है, न रुकने का, न विश्राम का; यह एक अंतहीन गति है, और एक बोझिल मन यात्रा करने के लिए स्वतंत्र नहीं है।

हममें से अधिकांश लोग जिस ध्यान का अभ्यास करते हैं वह बहिष्कार पर, प्रतिरोध की दीवारों के निर्माण पर आधारित एकाग्रता की एक प्रक्रिया है, क्या ऐसा नहीं है? आप अपने मन को नियंत्रित करते हैं क्योंकि आप किसी विशेष चीज़ के बारे में सोचना चाहते हैं, और आप अन्य सभी विचारों को बाहर करने का प्रयास करते हैं। अपने मन को नियंत्रित करने और अवांछित विचारों को दूर करने में मदद करने के लिए ध्यान की विभिन्न प्रणालियाँ हैं। जीवन को ज्ञान, भक्ति और कर्म के रूप में विभाजित किया गया है। आप कहते हैं, "मैं ऐसे-ऐसे स्वभाव का हूं," और अपने स्वभाव के अनुसार आप ध्यान करते हैं। हमने खुद को स्वभावों में उसी तरह से विभाजित किया है जैसे हमने पृथ्वी को राष्ट्रीय, नस्लीय और धार्मिक समूहों में विभाजित किया है, और प्रत्येक स्वभाव का अपना मार्ग, ध्यान की अपनी प्रणाली है। लेकिन अगर आप उन सबके पीछे जाएं, तो आप पाएंगे कि हर मामले में किसी न किसी प्रकार का नियंत्रण अपनाया जाता है और नियंत्रण का तात्पर्य दमन से है।

कृपया स्वयं निरीक्षण करें क्योंकि मैं इस समस्या में जा रहा हूं, और जो मैं कह रहा हूं उसका केवल मौखिक रूप से पालन न करें क्योंकि मैं जो कह रहा हूं वह बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है। आपके लिए स्वयं को खोजना महत्वपूर्ण है। जैसा कि मैंने शुरुआत में कहा था, हम एक साथ अपने आप में एक यात्रा कर रहे हैं। मैं केवल

कुछ चीजों की ओर इशारा करना, और यदि आप जो बताया गया है उससे संतुष्ट हैं, तो आपका दिमाग खाली, उथला, क्षुद्र रहेगा। एक क्षुद्र मन यात्रा को अपने अंदर नहीं ले जा सकता। लेकिन अगर इन शब्दों के माध्यम से आप अपने विचारों, अपनी स्थिति से अवगत हो रहे हैं, तो कोई गुरु नहीं है।

ध्यान की इन सभी प्रणालियों के पीछे जो सद्गुण विकसित करती हैं, जो पुरस्कार का वादा करती हैं, जो एक अंतिम लक्ष्य प्रदान करती हैं, नियंत्रण, अनुशासन का कारक है, है न? मन को अनुशासित किया जाता है कि वह व्यवस्था या समाज द्वारा निर्धारित संकीर्ण, सम्मानजनक रास्ते से न भटके।

अब, नियंत्रण में क्या निहित है? कृपया स्वयं निरीक्षण करें क्योंकि हम सभी मिलकर इस समस्या की जांच कर रहे हैं। हम उस चीज़ पर आ रहे हैं जो मैं देखता हूं और जो इस समय आप नहीं देखते हैं, इसलिए कृपया मेरे शब्दों, मेरे चेहरे, मेरे व्यक्तित्व से मंत्रमुग्ध हुए बिना अनुसरण करें। उस सब को काटो—यह पूरी तरह से अपरिपक्व है—और स्वयं का निरीक्षण करो। नियंत्रण का तात्पर्य क्या है? निश्चित रूप से, इसका मतलब यह है कि आप जिस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं और जो विचार भटक जाते हैं, उनके बीच एक संघर्ष है। इसलिए एकाग्रता बहिष्कार का एक रूप है - जिसे हर स्कूली छात्र और उसके कार्यालय का हर नौकरशाह जानता है। नौकरशाह को ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि उसे बहुत सारे कागजात पर हस्ताक्षर करने होते हैं, उसे व्यवस्थित करना होता है और कार्य करना होता है; और स्कूली बच्चों के लिए शिक्षक का खतरा हमेशा बना रहता है।

एकाग्रता का अर्थ है दमन, क्या ऐसा नहीं है? जो मुझे पसंद नहीं है उसे मैं अपने अंदर दबा लेता हूं। मैं इसे कभी देखता नहीं, इसमें गहराई से उतरता हूं। मैंने पहले ही इसकी निंदा की है, और जो मन निंदा करता है वह प्रवेश नहीं कर सकता, वह समझ नहीं सकता कि उसने क्या निंदा की है।

एकाग्रता का एक और रूप है, और वह है जब आप अपने आप को किसी चीज़ के हवाले कर देते हैं। मन एक छवि में लीन रहता है, जैसे एक बच्चा किसी खिलौने में लीन रहता है। आपमें से जिनके बच्चे हैं उन्होंने देखा होगा कि कैसे एक खिलौना उन्हें पूरी तरह से सोख लेता है। जब कोई बच्चा किसी नये खिलौने से खेल रहा होता है, तो वह असाधारण रूप से एकाग्रचित्त होता है। उस एकाग्रता में कोई बाधा नहीं डालता क्योंकि वह स्वयं का आनंद ले रहा है। खिलौना इतना आकर्षक, इतना आनंददायक है कि फिलहाल यह बहुत महत्वपूर्ण है, और बच्चा परेशान नहीं होना चाहता। उसका मन पूरी तरह से खिलौने के हवाले हो गया है। और इसे ही आप भक्ति कहते हैं: अपने आप को उस प्रतीक, विचार, उस छवि के प्रति समर्पित कर देना जिसे आपने भगवान का नाम दिया है। छवि आपको वैसे ही लीन कर लेती है, जैसे बच्चा किसी खिलौने को लीन कर लेता है। मन या हाथ द्वारा बनाई गई चीज़ में खुद को खो देना, ज्यादातर लोग यही चाहते हैं।

ध्यान की प्रणाली के माध्यम से एकाग्रता परम शांति, परम वास्तविकता, परम संतुष्टि की प्राप्ति प्रदान करती है, जो कि है

तुम्हें चाहिए। ऐसे सभी प्रयासों में विकास, समय के माध्यम से विकास का विचार शामिल होता है - यदि इस जीवन में नहीं, तो अगले जीवन में या सौ जन्मों में, आप वहां पहुंचेंगे। नियंत्रण और अनुशासन का अर्थ हमेशा बनने, बनने का प्रयास होता है, और यह प्रयास विचार पर, मन पर एक सीमा लगाता है - जो बहुत संतोषजनक है। मन पर, चेतना पर एक सीमा लगाना सबसे संतुष्टिदायक बात है क्योंकि तब आप देख सकते हैं कि आप जो बनना चाहते हैं वह बनने के अपने प्रयासों में आप कितना आगे बढ़ चुके हैं। जैसे-जैसे आप प्रयास करते हैं, आप मन की सीमा को और अधिक दूर धकेलते हैं, लेकिन यह अभी भी विचार की सीमाओं के भीतर है। आप एक ऐसी स्थिति प्राप्त कर सकते हैं जिसे आप ईश्वर, ईश्वर, परमात्मा, या जो चाहें कहते हैं, लेकिन यह अभी भी मन के क्षेत्र के भीतर है - वह मन जो आपकी संस्कृति, आपके समाज, आपके लालच और सभी से अनुकूलित होता है। इसका बाकी हिस्सा.

तो ध्यान, जैसा कि आप इसका अभ्यास करते हैं, नियंत्रण की, दमन की, बहिष्कार की, अनुशासन की एक प्रक्रिया है, जिसमें सभी प्रयास शामिल हैं - 'मैं', स्वयं के रूप में चेतना की सीमाओं का विस्तार करने का प्रयास; लेकिन इसमें एक अन्य कारक भी शामिल है, जो मान्यता की पूरी प्रक्रिया है।

मुझे आशा है कि आप मेरे साथ यात्रा कर रहे हैं। मत कहो, “यह बहुत कठिन है; मैं नहीं जानता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं," क्योंकि तब आप स्वयं को नहीं देख रहे हैं। मैं जिस बारे में बात कर रहा हूं वह सिर्फ एक बौद्धिक अवधारणा नहीं है। यह एक जीवंत, महत्वपूर्ण चीज़ है, जो जीवन से स्पंदित होती है।

जैसा कि मैं कह रहा था, जिसे आप ध्यान कहते हैं, पहचान उसका एक अनिवार्य हिस्सा है। आप जीवन के बारे में जो कुछ भी जानते हैं वह पहचानों की एक शृंखला है। रिश्ता तो पहचान की प्रक्रिया है ना? आप अपनी पत्नी या अपने पति को जानते हैं; आप अपने बच्चों को इस अर्थ में जानते हैं जैसे आप उन्हें पहचानते हैं, जैसे आप अपने गुणों, अपनी विनम्रता को पहचानते हैं। अगर आप देखें तो पहचान एक असाधारण चीज़ है। सभी विचार, सभी रिश्ते पहचान की एक प्रक्रिया है। ज्ञान मान्यता पर आधारित है। तो क्या होता है? आप ध्यान के माध्यम से अज्ञात को पहचानना चाहते हैं। और क्या यह संभव है? क्या आप समझ रहे हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं? शायद मैं खुद को स्पष्ट नहीं कर रहा हूं.

आप अपनी पत्नी, अपने बच्चों, अपनी संपत्ति को पहचानते हैं; आप पहचानते हैं कि आप एक वकील हैं, एक व्यापारी हैं, एक प्रोफेसर हैं, एक इंजीनियर हैं; आपके पास एक लेबल, एक नाम, एक शीर्षक है। आप चीजों को उस दिमाग से जानते और पहचानते हैं जो समय, प्रयास का परिणाम है, एक ऐसा दिमाग जिसने गुणों को विकसित किया है, जिसने हमेशा कुछ बनने या बनने की कोशिश की है - यह सब पहचानने की एक प्रक्रिया है।

ज्ञान अनुभव का परिणाम है जिसे किसी विश्वकोश में या स्वयं में याद किया जा सकता है, पहचाना जा सकता है।

उस शब्द को पहचानने पर विचार अवश्य करें। यह क्या दर्शाता है? आप यह जानना चाहते हैं कि ईश्वर क्या है, सत्य क्या है, जिसका अर्थ है कि आप अज्ञात को पहचानना चाहते हैं, लेकिन यदि आप किसी चीज़ को पहचान सकते हैं, तो वह पहले से ही ज्ञात है। जब आप ध्यान का अभ्यास करते हैं और अपने विशेष देवी-देवताओं के दर्शन करते हैं, तो आप पहचान पर जोर दे रहे हैं। ये दर्शन आपकी पृष्ठभूमि, आपके वातानुकूलित मन के प्रक्षेपण हैं। ईसाई हमेशा जीसस या मैरी को देखेंगे, हिंदू श्री कृष्ण या उनके भगवान को एक दर्जन भुजाओं के साथ देखेंगे, क्योंकि वातानुकूलित दिमाग इन छवियों को प्रोजेक्ट करता है और फिर उन्हें पहचानता है। यह पहचान आपको अत्यधिक संतुष्टि देती है, और आप कहते हैं, "मैंने पाया है, मैंने महसूस किया है, मैं जानता हूं।"

ऐसी कई प्रणालियाँ हैं जो आपको इस प्रकार की चीज़ें प्रदान करती हैं, और मैं कहता हूँ कि इनमें से कोई भी ध्यान नहीं है। यह आत्म-सम्मोहन है; इसकी कोई गहराई नहीं है. आप दस हजार वर्षों तक एक प्रणाली का अभ्यास कर सकते हैं, और आप अभी भी समय के क्षेत्र में, अपने ज्ञान, अपनी कंडीशनिंग की सीमाओं के भीतर रहेंगे।
चाहे आप उन सीमाओं को कितनी भी दूर तक बढ़ा दें जिनके भीतर आप अपने स्वयं के प्रक्षेपणों को पहचान सकते हैं, यह स्पष्ट रूप से ध्यान नहीं है, भले ही आप इसे यह नाम दे सकते हैं। आप केवल स्वयं पर, 'मैं' पर जोर दे रहे हैं, जो कुछ और नहीं बल्कि जुड़ी हुई यादों का एक बंडल है; आप अपने तथाकथित ध्यान के माध्यम से विचारक और विचार, प्रेक्षक और प्रेक्षित के संघर्ष को कायम रख रहे हैं, जिसमें प्रेक्षक हमेशा देख रहा है, नकार रहा है, नियंत्रित कर रहा है, प्रेक्षित को आकार दे रहा है। कोई भी स्कूली छात्र इस खेल को खेल सकता है, और मैं कहता हूं कि इसका ध्यान से कोई लेना-देना नहीं है, हालांकि ग्रेबर्ड्स इस बात पर जोर देते हैं कि आपको इस प्रकार "ध्यान" करना चाहिए। योगी, स्वामी, संन्यासी, वे लोग जो संसार को त्याग कर एक गुफा में बैठ जाते हैं - वे सभी अभी भी अपने स्वयं के दर्शन की खोज में फंसे हुए हैं, चाहे वे कितने भी महान क्यों न हों, जो एक भूख का भोग है, एक प्रक्रिया है आत्मसंतुष्टि का.

तो फिर ध्यान क्या है? निश्चित रूप से, आप तभी ध्यान की स्थिति में होते हैं जब विचारक वहां नहीं होता है - यानी, जब आप विचार को, स्मृति को, जो कि 'मैं' का केंद्र है, स्वयं को मिट्टी नहीं दे रहे हैं। यह वह केंद्र है जो चेतना की सीमाओं को चिह्नित करता है, और यह कितना भी व्यापक, कितना ही गुणी क्यों न हो, या मानवता की मदद करने की कितनी भी कोशिश कर ले, यह कभी भी ध्यान की स्थिति में नहीं हो सकता है। आप जागरूकता की उस अवस्था में, जो कि ध्यान है, तभी आ सकते हैं, जब कोई निंदा न हो, दमन या नियंत्रण का कोई प्रयास न हो। यह एक जागरूकता है जिसमें कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि विकल्प का तात्पर्य इच्छा का प्रयास है, जो बदले में वर्चस्व, नियंत्रण को दर्शाता है। यह एक जागरूकता है जिसमें चेतना की कोई सीमा नहीं है और इसलिए वह पूरा ध्यान दे सकती है - जो एकाग्रता नहीं है। मैं

सोचें कि ध्यान और एकाग्रता के बीच बहुत बड़ा अंतर है। यदि कोई केंद्र है जहाँ से आप ध्यान दे रहे हैं तो वहाँ कोई ध्यान नहीं है। आप एक केंद्र से किसी चीज़ पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, लेकिन ध्यान का तात्पर्य पूर्णता की स्थिति से है जिसमें देखे गए के अलावा कोई पर्यवेक्षक नहीं होता है।

ध्यान, जैसा कि हम आज इसमें गए हैं, वास्तव में मन को ज्ञात से मुक्त करना है। जाहिर तौर पर इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपने घर का रास्ता भूल जाएं, या अपने काम के निष्पादन के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान को त्याग दें, इत्यादि। इसका अर्थ है मन को उसकी कंडीशनिंग से, अनुभव की पृष्ठभूमि से मुक्त करना जहां से सभी प्रक्षेपण और मान्यता होती है। मन को स्वयं को अधिग्रहण, संतुष्टि और मान्यता की प्रक्रिया से मुक्त करना होगा। आप उस अज्ञात को पहचान या आमंत्रित नहीं कर सकते, जो वास्तविक है, कालातीत है। आप अपने मित्रों को आमंत्रित कर सकते हैं, आप सद्गुणों को आमंत्रित कर सकते हैं, आप अपनी रचना के देवताओं को आमंत्रित कर सकते हैं; आप उन्हें आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें अपना मेहमान बना सकते हैं। लेकिन तुम जो करोगे वह करो—ध्यान करो, त्याग करो, सदाचारी बनो— तुम उस अथाह को आमंत्रित नहीं कर सकते, जिसके बारे में तुम नहीं जानते। सदाचार का अभ्यास प्रेम का संकेत नहीं देता; यह आपकी संतुष्टि की इच्छा का परिणाम है।

तो, ध्यान मन को ज्ञात से मुक्त करना है। आपको इस स्वतंत्रता तक, कल नहीं, बल्कि तत्काल, अभी आना होगा, क्योंकि समय के माध्यम से आप कालातीत तक नहीं पहुंच सकते, जो द्वैत नहीं है। कालजयी हर कोने में फुसफुसा रही है; यह हर पत्ते के नीचे स्थित है। यह खुला है, संन्यासियों के लिए नहीं, निर्जलित मनुष्यों के लिए नहीं जिन्होंने खुद को दबा लिया है और जिनके पास अब कोई जुनून नहीं है, बल्कि उन सभी के लिए है जिनका मन पल-पल ध्यान की स्थिति में है। केवल ऐसा मन ही उसे ग्रहण कर सकता है जो अज्ञात है।

13 दिसंबर 1959

आठवीं वार्ता मद्रास में

ये मौजूदा सीरीज की आखिरी बातचीत है.

मुझे लगता है कि यह अद्भुत होगा अगर, शब्दों के बिना, कोई यह बता सके कि अस्तित्व की पूरी समस्या के बारे में वह वास्तव में क्या महसूस करता है। नौकरी और इसके बाकी सभी कार्यों की सतही आवश्यकता के अलावा, चेतन और अचेतन दोनों में गहरे, आंतरिक आग्रह, मांगें, अस्तित्व की विरोधाभासी स्थितियाँ हैं; और मुझे आश्चर्य है कि क्या उन सभी से परे जाना संभव नहीं है, उन सीमाओं से परे जो मन ने खुद पर थोपी हैं, उससे परे

किसी के अपने दिल की संकीर्ण सीमाएँ, और वहाँ रहना - अपनी रोजमर्रा की गतिविधियों को जारी रखते हुए उस स्थिति से कार्य करना, सोचना और महसूस करना। मुझे लगता है कि यह किया जा सकता है-केवल इसका संचार नहीं, बल्कि इसका तथ्य भी। निश्चित रूप से, हम उन सीमाओं को तोड़ सकते हैं जो मन ने अपने ऊपर लगा रखी हैं क्योंकि, आखिरकार, हमारे पास केवल एक ही समस्या है। जैसे वृक्ष अपनी अनेक जड़ों, अनेक शाखाओं और पत्तियों के साथ एक समग्रता है, इसलिए हमारी मूल समस्या केवल एक ही है। और अगर, किसी चमत्कार से, किसी कृपा से, किसी शाम के बादलों को देखने के किसी तरीके से, मन विचार की, भावना की हर गतिविधि के प्रति असाधारण रूप से संवेदनशील हो सकता है - अगर वह सैद्धांतिक रूप से नहीं बल्कि वास्तव में ऐसा कर सकता है, तो मुझे लगता है हमने अपनी समस्या सुलझा ली होगी.

जैसा कि मैंने कहा, मूलतः केवल एक ही समस्या है - "मैं और मेरे आग्रह" की समस्या, जिससे हमारी अन्य सभी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। हमारी वास्तविक समस्याएँ यह नहीं हैं कि चंद्रमा पर कैसे उतरें, या शुक्र पर रॉकेट कैसे दागें; वे बहुत घनिष्ठ हैं, लेकिन दुर्भाग्य से हमें यह नहीं पता कि उनसे कैसे निपटें। मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि हम अपनी वास्तविक समस्या से अवगत भी हैं। प्रेम को जानना, प्रकृति की सुंदरता को महसूस करना, मनुष्य की रचनाओं से परे किसी चीज़ की पूजा करना - मुझे लगता है कि अगर हम अपनी तात्कालिक समस्याओं को नहीं समझते हैं तो यह सब हमें नहीं मिलता है।

इसलिए यदि संभव हो तो मैं चाहूंगा कि मैं आपके साथ इस प्रश्न पर जोर-जोर से विचार करूं कि क्या मन अपनी सीमाओं को तोड़ सकता है, अपनी सीमाओं से परे जा सकता है, क्योंकि हमारा जीवन स्पष्ट रूप से बहुत उथला है। तुम्हारे पास वह सारी संपत्ति हो जो पृथ्वी तुम्हें दे सकती है; हो सकता है कि आप बहुत विद्वान हों; आपने कई किताबें पढ़ी होंगी और अतीत और वर्तमान के सभी स्थापित प्राधिकारियों को बहुत ही विद्वत्तापूर्ण ढंग से उद्धृत करने में सक्षम होंगे; या हो सकता है कि आप बहुत सरल हों, पारिवारिक जीवन के सभी छोटे-छोटे सुखों और दुखों के साथ बस दिन-प्रतिदिन जी रहे हों और संघर्ष कर रहे हों। कोई भी हो, निश्चित रूप से यह पता लगाना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि मन ने अपने लिए जो बाधाएँ पैदा की हैं, उन्हें किस तरह से दूर किया जा सकता है। मुझे ऐसा लगता है कि यही हमारी मूलभूत समस्या है। तथाकथित शिक्षा के माध्यम से, परंपरा के माध्यम से, सामाजिक, नैतिक और धार्मिक कंडीशनिंग के विभिन्न रूपों के माध्यम से, मन सीमित है, पर्यावरणीय प्रभावों के चलते भंवर में फंस गया है। और क्या मन के लिए इन सभी कंडीशनिंग से अलग होना संभव है ताकि वह आनंद के साथ जी सके, चीजों की सुंदरता को समझ सके, अथाह जीवन की इस असाधारण भावना को महसूस कर सके?

मुझे लगता है कि यह संभव है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह कोई क्रमिक प्रक्रिया है। यह विकास के माध्यम से नहीं, समय के माध्यम से टूटता है। यह तुरंत किया जाता है, या कभी नहीं। सत्य का बोध कई वर्षों के अंत में नहीं होता। समझ में कोई कल नहीं है. या तो मन

तुरंत समझ में आता है, या बिल्कुल नहीं। दिमाग के लिए इसे देखना बहुत मुश्किल है क्योंकि हममें से ज्यादातर लोग कल के बारे में सोचने के आदी हैं।
हम कहते हैं, “मुझे समय दो; मुझे और अधिक अनुभव लेने दो, और अंततः मैं समझ जाऊंगा।" लेकिन क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि समझ हमेशा तुरंत आती है - कभी गणना के माध्यम से, समय के माध्यम से, कभी व्यायाम और धीमी गति से विकास के माध्यम से नहीं? जो मन क्रमिक समझ के इस विचार पर निर्भर करता है वह मूलतः आलसी है। यह मत पूछो, "आलसी मन को कैसे सचेत, सक्रिय और सक्रिय बनाया जा सकता है?" कोई "कैसे" नहीं है। मूर्ख मन कितना भी चतुर बनने की कोशिश करे, वह मूर्ख ही रहेगा। एक क्षुद्र मन अपने द्वारा आविष्कृत ईश्वर की पूजा करने से क्षुद्र नहीं रह जाता। समय किसी भी चीज़ की सच्चाई, सुंदरता को उजागर नहीं करेगा। जो चीज़ वास्तव में समझ लाती है वह ध्यान की स्थिति है - केवल एक सेकंड के लिए भी, अपने पूरे अस्तित्व के साथ, बिना किसी गणना के, बिना किसी पूर्वचिन्तन के, चौकस रहना। यदि आप और मैं तत्काल पर पूरी तरह से चौकस हो सकते हैं, तो मुझे लगता है कि एक तात्कालिक समझ, एक संपूर्ण समझ होती है।

लेकिन किसी चीज़ पर अपना पूरा ध्यान देना बहुत मुश्किल है, है ना?
मैं नहीं जानता कि क्या आपने कभी किसी फूल को पूरे अस्तित्व से देखने की कोशिश की है, या अपने मन के तरीकों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होने की कोशिश की है। यदि आपने ऐसा किया है, तो आपको पता चल जाएगा कि संपूर्ण ध्यान किस स्पष्टता के साथ किसी भी समस्या पर ध्यान केंद्रित करता है। लेकिन किसी भी चीज़ पर इतना ध्यान देना आसान नहीं है क्योंकि हमारा दिमाग बहुत सम्मानजनक है; वे शब्दों और प्रतीकों से, क्या होना चाहिए और क्या नहीं, इस बारे में विचारों से पंगु हो गए हैं।

मैं ध्यान के बारे में बात कर रहा हूं, और मुझे आश्चर्य है कि क्या आप ध्यान दे रहे हैं - न कि केवल जो कहा जा रहा है, क्योंकि वह गौण महत्व का है, बल्कि क्या आप उन बाधाओं, रुकावटों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होने के अर्थ में ध्यान दे रहे हैं जो आपके दिमाग में हैं अपने लिए बनाया है? यदि आप इन बंधनों के प्रति जागरूक हो सकते हैं - बस उनके प्रति जागरूक रहें, बिना यह कहे, "मैं उनके बारे में क्या करूँ?" - आप पाएंगे कि वे टूटने लगते हैं, और फिर ध्यान की एक स्थिति आती है जिसमें कोई विकल्प नहीं होता है , कोई भटकना नहीं, क्योंकि अब कोई केंद्र नहीं है जहां से भटका जा सके। ध्यान की वह अवस्था अच्छाई है; यह एकमात्र गुण है. और कोई गुण नहीं है.

तो, हमें एहसास होता है कि हमारा दिमाग बहुत सीमित है। हमने पृथ्वी और स्वर्ग, जीवन की विशाल गति, को एक छोटे से कोने में सीमित कर दिया है जिसे 'मैं' कहा जाता है, स्वयं, जिसके होने या न होने के शाश्वत संघर्ष के साथ। यह मन, जो इतना छोटा, इतना क्षुद्र, इतना आत्मकेन्द्रित है, किस तरह से उन सीमाओं, सीमाओं को तोड़ सकता है जो उसने अपने ऊपर लगा रखी हैं? जैसा कि मैंने कहा, केवल ध्यान के माध्यम से, जिसमें कोई विकल्प नहीं है, सत्य देखा जाता है, और वह है

सत्य जो बंधन को तोड़ता है, जो सीमाओं को मिटा देता है--आपके प्रयास को नहीं, आपके ध्यान को नहीं, आपके अभ्यास को नहीं, आपके अनुशासन को, आपके नियंत्रण को नहीं।

ध्यान की इस स्थिति में रहने के लिए, निश्चित रूप से, 'मैं' और उसके तरीकों का ज्ञान आवश्यक है। मुझे स्वयं को जानना होगा; मेरे दिमाग को हर भावना, हर विचार की गति को जानना चाहिए। लेकिन ज्ञान एक अनोखी चीज़ है. ज्ञान संचयी है; यह सदैव अतीत में है। वर्तमान में केवल जानना है।

ज्ञान हमेशा जानने का रंग देता है। हमारा संबंध जानने से है, न कि ज्ञान से, क्योंकि स्वयं के बारे में ज्ञान स्वयं के बारे में जानने को विकृत कर देता है। मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं। मुझे लगता है कि हर समय खुद को जानने और अपने बारे में जानने के बीच अंतर है। जब आत्म-ज्ञान उस जानकारी का संचय होता है जो मैंने अपने बारे में एकत्र की है, तो यह मुझे स्वयं को समझने से रोकता है।

यहाँ देखो, महोदय. स्वयं, 'मैं' बेचैन है; यह हमेशा भटकता रहता है, कभी स्थिर नहीं रहता। यह एक गरजती हुई नदी की तरह है, जो घाटी से नीचे उतरते समय जबरदस्त शोर मचाती है। यह एक जीवित, चलती-फिरती चीज़ है, और कोई ऐसी चीज़ के बारे में कैसे ज्ञान प्राप्त कर सकता है जो लगातार बदलती रहती है, कभी एक जैसी नहीं होती?
आत्मा सदैव गतिशील रहती है; यह कभी शांत नहीं होता, एक क्षण के लिए भी शांत नहीं होता।
जब मन ने इसका अवलोकन कर लिया, तो यह पहले ही जा चुका है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी खुद को देखने, अपने दिमाग को किसी एक चीज़ पर केंद्रित करने की कोशिश की है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो जिस चीज को आपने बांध रखा है वह लगातार आपके सामने है - और इस प्रकार आप आत्म-ज्ञान के अंत पर आ गए हैं। क्या मैं कुछ बता रहा हूँ?
क्या मैं अपने आप को समझा रहा हूँ?

ज्ञान हमेशा जानने के लिए विनाशकारी होता है। स्वयं के बारे में जानना कभी भी संचयी नहीं होता; इसकी परिणति उस बिंदु पर नहीं होती जहां से आप इस तथ्य का निर्णय कर सकें कि 'मैं' क्या है। आप देखिए, हम ज्ञान एकत्रित करते हैं, और वहां से हम निर्णय लेते हैं—और यही हमारी कठिनाई है। अनुभव के माध्यम से, सीखने के माध्यम से, पढ़ने के माध्यम से और बाकी सभी चीज़ों के माध्यम से ज्ञान संचित करने के बाद, हम उस पृष्ठभूमि से सोचते हैं, हम कार्य करते हैं। हम ज्ञान में एक पद लेते हैं, और वहां से हम कहते हैं, "मैं स्वयं के बारे में सब कुछ जानता हूं। यह लालची है, मूर्ख है, सदैव श्रेष्ठ बने रहने की चाहत रखता है'' - चाहे वह कुछ भी हो। इसलिए जानने के लिए और कुछ नहीं है. जिस क्षण आप ज्ञान में कोई पद ग्रहण करते हैं, आपका ज्ञान बहुत सतही होता है।
लेकिन अगर ज्ञान का कोई संचय नहीं है जिस पर मन आराम करता है, तो केवल जानने की गति होती है, और तब मन अपनी धारणाओं में असाधारण रूप से तेज़ हो जाता है।

इसलिए आत्म-ज्ञान महत्वपूर्ण है, न कि आत्म-ज्ञान। विचार की गति को जानना, बाहर की अनुभूति की गति को जानना

संचय - और इसलिए कभी भी निर्णय का, निंदा का क्षण नहीं आता - बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि जिस क्षण संचय होता है, वहां एक विचारक होता है। ज्ञान का संचय मन को एक स्थिति देता है, एक केंद्र देता है जहाँ से सोचा जा सकता है; यह एक पर्यवेक्षक को जन्म देता है जो इसका न्याय करता है, निंदा करता है, पहचान करता है और बाकी सब कुछ करता है। लेकिन जब आत्म-ज्ञान होता है, तो न तो पर्यवेक्षक होता है और न ही देखा जा सकता है; वहां केवल ध्यान देने की, देखने की, सीखने की अवस्था है।

निश्चित रूप से, महोदय, जिस मस्तिष्क ने ज्ञान संचित कर लिया है वह कभी नहीं सीख सकता। यदि मन को सीखना है, तो उस पर ज्ञान का बोझ नहीं होना चाहिए, जो कुछ उसने इकट्ठा किया है उसका बोझ नहीं होना चाहिए। यह ताज़ा, निर्दोष, अतीत से मुक्त होना चाहिए। ज्ञान का संचय 'मैं' को जन्म देता है, लेकिन जानना ऐसा कभी नहीं कर सकता क्योंकि जानना सीखना है, और जो मन लगातार सीख रहा है उसके पास आराम करने की कोई जगह नहीं हो सकती। यदि आप वास्तव में इसकी सच्चाई को समझते हैं, कल नहीं, बल्कि अभी, तो आप पाएंगे कि वहां केवल ध्यान देने की, सीखने की स्थिति है, संचय का एक क्षण भी नहीं है; और फिर वे समस्याएं जो अब हममें से अधिकांश के पास हैं, पूरी तरह से दूर हो गई हैं। लेकिन यह कोई तरकीब नहीं है जिससे आप अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें, न ही यह आपके लिए सीखने के लिए कोई सबक है।

आप देखिए, हमारा जैसा समाज - चाहे भारतीय हो, रूसी हो, अमेरिकी हो या आप कुछ भी हो - न केवल भौतिक चीजों की खोज में, बल्कि प्रतिस्पर्धा करने, हासिल करने, पहुंचने, पूरा करने के मामले में भी अधिग्रहणशील है। इस समाज ने हमारे सोचने के तरीकों को इस तरह आकार दिया है कि हम खुद को एक लक्ष्य, एक लक्ष्य की अवधारणा से मुक्त नहीं कर सकते हैं। हम हमेशा कहीं न कहीं पहुंचने, आंतरिक शांति प्राप्त करने आदि के बारे में सोचते रहते हैं। हमारा दृष्टिकोण हमेशा अधिग्रहणात्मक है.

शारीरिक रूप से हमें कुछ हद तक अधिग्रहण करना होगा; हमें स्पष्ट रूप से स्वयं को भोजन, वस्त्र और आश्रय प्रदान करना चाहिए। लेकिन मन इन चीजों को आगे अधिग्रहण के साधन के रूप में उपयोग करता है - मैं मनोवैज्ञानिक अर्थ में अधिग्रहण के बारे में बात कर रहा हूं। जिस प्रकार मन प्रतिष्ठा और शक्ति प्राप्त करने के लिए भौतिक आवश्यकताओं का उपयोग करता है, उसी प्रकार ज्ञान के माध्यम से वह स्वयं को मनोवैज्ञानिक निश्चितता की स्थिति में स्थापित करता है। ज्ञान हमें सुरक्षा की भावना देता है, है न? अपने अनुभव की पृष्ठभूमि से, अपने बारे में संचित ज्ञान से, हम सोचते हैं और जीते हैं, और यह प्रक्रिया द्वंद्व की स्थिति पैदा करती है - मैं क्या हूं, और मैं क्या सोचता हूं कि मुझे क्या होना चाहिए। इसलिए दोनों के बीच एक विरोधाभास, एक निरंतर लड़ाई है। लेकिन अगर कोई इस प्रक्रिया को व्यापक रूप से देखता है, अगर कोई इसे समझता है, वास्तव में इसके महत्व को महसूस करता है, तो वह पाएगा कि मन अनायास ही अच्छा, सतर्क, प्रेमपूर्ण है; यह हमेशा सीखता रहता है और कभी हासिल नहीं करता। तब आत्म-ज्ञान का बिल्कुल अलग अर्थ होता है, क्योंकि यह अब स्वयं के बारे में ज्ञान का संचय नहीं है।

स्वयं के बारे में ज्ञान छोटा, क्षुद्र, सीमित है; लेकिन स्वयं को जानना अनंत है, इसका कोई अंत नहीं है। इसलिए हमारी समस्या आदत, रीति-रिवाज, परंपरा को तुरंत त्यागने और नए सिरे से जन्म लेने की है।

महोदय, इस सब में हमारी कठिनाइयों में से एक है कम्यूनियन या संचार की समस्या। मैं आपको कुछ बताना चाहता हूं, और कहने में ही वह अभिव्यक्ति, जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उससे विकृत हो जाता है। मैं आपसे जो बात करना चाहता हूं, या आपके साथ संवाद करना चाहता हूं, वह बहुत सरल है - तत्काल पूर्ण आत्म-त्याग। यह सब कुछ है - वह नहीं जो आत्म-परित्याग के बाद होता है, या वह प्रणाली जो इसे लाएगी। कोई प्रणाली नहीं है क्योंकि जिस क्षण आप किसी प्रणाली का अभ्यास करते हैं, आप स्पष्ट रूप से स्वयं को मजबूत कर रहे होते हैं। क्या मन अचानक उन आधारों को नहीं गिरा सकता जो उसने अस्तित्व के विभिन्न स्वरूपों में स्थापित कर रखे हैं? किसी शाम जब सूरज डूबने ही वाला था, जब हरे चावल के खेत चमक रहे थे, जब कोई अकेला राहगीर था और पक्षी पंख फैला रहे थे, आपके साथ भी ऐसा हुआ होगा कि दुनिया में अचानक एक असाधारण शांति छा गई। . वहां कोई 'आप' नहीं था जो देख रहा था, महसूस कर रहा था, सोच रहा था, क्योंकि आप ही वह सौंदर्य, वह शांति, वह अनंत अवस्था थे। यदि आपने कभी दुनिया के चेहरे पर, आकाश की विशालता पर ध्यान दिया हो तो आपके साथ भी ऐसा अवश्य हुआ होगा। यह कैसे होता है? जब अचानक कोई चिंता नहीं रह जाती है, जब आप अब यह नहीं सोच रहे हैं कि आप किसी से प्यार करते हैं, या सोच रहे हैं कि क्या कोई आपसे प्यार करता है, और आप उस प्यार की स्थिति, उस सुंदरता की स्थिति में हैं - क्या हुआ है? हरे पेड़, नीला आकाश, समुद्र का नाचता हुआ पानी, पृथ्वी की पूरी सुंदरता - इन सभी ने कुरूप, क्षुद्र छोटे से स्व को बाहर निकाल दिया है, और एक पल के लिए आप वह सब हैं। यह निश्चय ही बिना गणना के आत्मत्याग की स्थिति है।

परित्याग की इस भावना को महसूस करने के लिए, आपको जुनून की आवश्यकता है। यदि आप भावुक नहीं हैं तो आप संवेदनशील नहीं हो सकते। उस जुनून शब्द से डरो मत ।
अधिकांश धार्मिक पुस्तकें, अधिकांश गुरु, स्वामी, नेता और बाकी सभी कहते हैं, "जुनून मत करो।" लेकिन अगर आपमें कोई जुनून नहीं है, तो आप बदसूरत, सुंदर, फुसफुसाती पत्तियों, सूर्यास्त, मुस्कुराहट, रोने के प्रति कैसे संवेदनशील हो सकते हैं? आप उस जुनून की भावना के बिना कैसे संवेदनशील हो सकते हैं जिसमें त्याग है? महोदय, कृपया मेरी बात सुनें, और यह न पूछें कि जुनून कैसे प्राप्त करें। मैं जानता हूं कि आप सभी अच्छी नौकरी पाने के लिए, या किसी गरीब व्यक्ति से नफरत करने के लिए, या किसी से ईर्ष्या करने के लिए काफी जुनूनी हैं; लेकिन मैं पूरी तरह से अलग चीज़ की बात कर रहा हूँ - एक जुनून जो प्यार करता है। प्रेम एक ऐसी अवस्था है जिसमें कोई 'मैं' नहीं है; प्रेम एक ऐसी अवस्था है जिसमें कोई निंदा नहीं होती, कोई यह नहीं कहता कि सेक्स सही है या गलत, कि यह अच्छा है और कुछ और बुरा है। प्यार है

इनमें से कोई भी विरोधाभासी बात नहीं। प्रेम में विरोधाभास नहीं होता. और यदि कोई भावुक नहीं है तो वह प्रेम कैसे कर सकता है? बिना जुनून के कोई संवेदनशील कैसे हो सकता है? संवेदनशील होने का मतलब यह महसूस करना है कि आपका पड़ोसी आपके बगल में बैठा है; यह शहर की गंदगी, उसकी गन्दगी, उसकी गरीबी सहित कुरूपता को देखना है, और नदी, समुद्र, आकाश की सुंदरता को देखना है। यदि आप भावुक नहीं हैं, तो आप इन सबके प्रति संवेदनशील कैसे हो सकते हैं? आप एक मुस्कान, एक आंसू कैसे महसूस कर सकते हैं? प्यार, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, जुनून है। और प्रेम के बिना, तुम जो चाहोगे वह करो—इस गुरु का अनुसरण करो या उस गुरु का अनुसरण करो, सभी पवित्र पुस्तकें पढ़ो, सबसे महान सुधारक बनो, मार्क्स का अध्ययन करो और क्रांति करो—इसका कोई महत्व नहीं होगा क्योंकि जब हृदय खाली होगा, बिना जुनून के, बिना इस असाधारण सरलता में कोई आत्म-परित्याग नहीं हो सकता।

निश्चित रूप से, मन ने स्वयं को और अपने बंधनों को तभी त्याग दिया है जब सुरक्षा की कोई इच्छा नहीं है। सुरक्षा चाहने वाला मन कभी नहीं जान सकता कि प्रेम क्या है। आत्म-त्याग भक्त की अपनी मूर्ति या उसकी मानसिक छवि के सामने की स्थिति नहीं है। हम जिस बारे में बात कर रहे हैं वह उससे उतना ही अलग है जितना प्रकाश अंधेरे से अलग है। आत्म-परित्याग तभी हो सकता है जब आप इसे विकसित नहीं करते हैं, और जब आत्म-ज्ञान होता है। कृपया इसे अवश्य सुनें और अपना तरीका महसूस करें।

जब मन ज्ञान के महत्व को समझ लेता है, तभी आत्म-ज्ञान होता है; और आत्म-ज्ञान का तात्पर्य आत्म-त्याग से है। आपने किसी भी अनुभव पर एक ऐसे केंद्र के रूप में आराम करना बंद कर दिया है जहां से निरीक्षण किया जा सके, निर्णय लिया जा सके, तौला जा सके; इसलिए, मन पहले ही आत्म-त्याग के आंदोलन में उतर चुका है। उस त्याग में संवेदनशीलता है. लेकिन जो मन खाने की, सोचने की, कभी किसी चीज़ को न देखने की आदत में घिरा हुआ है - ऐसा मन स्पष्ट रूप से संवेदनशील नहीं हो सकता, प्रेमपूर्ण नहीं हो सकता। अपनी सीमाओं के परित्याग में ही मन संवेदनशील और इसलिए निर्दोष हो जाता है। और केवल मासूम मन ही जानता है कि प्रेम क्या है - गणना करने वाला मन नहीं, वह मन नहीं जिसने प्रेम को शारीरिक और आध्यात्मिक में विभाजित किया है। उस अवस्था में जुनून होता है; और जुनून के बिना वास्तविकता आपके करीब नहीं आएगी। यह केवल कमज़ोर मन ही है जो वास्तविकता को आमंत्रित करता है; यह केवल सुस्त, समझने वाला दिमाग है जो सत्य, भगवान का अनुसरण करता है। लेकिन जो मन प्रेम में जुनून को जानता है—ऐसे मन में अनाम आता है।

16 दिसंबर, 1959

बम्बई, भारत, 1959

बम्बई में पहली बातचीत

स्वतंत्रता का सर्वाधिक महत्व है, लेकिन हम इसे अपनी दंभ की सीमाओं के भीतर रखते हैं। स्वतंत्रता क्या है, या यह क्या होनी चाहिए, इसके बारे में हमारे पास पूर्वकल्पित विचार हैं; स्वतंत्रता के बारे में हमारे पास विश्वास, आदर्श, निष्कर्ष हैं। लेकिन आज़ादी एक ऐसी चीज़ है जिसकी पहले से कल्पना नहीं की जा सकती। इसे समझना होगा.
स्वतंत्रता केवल बुद्धि से, निष्कर्ष से निष्कर्ष तक तार्किक तर्क से नहीं आती। यह अंधेरे में, अप्रत्याशित रूप से आता है; यह अपनी आंतरिक स्थिति से पैदा होता है। स्वतंत्रता का एहसास करने के लिए एक सतर्क दिमाग की आवश्यकता होती है, एक ऐसा दिमाग जो ऊर्जा से भरपूर हो, एक ऐसा दिमाग जो क्रमिकरण की प्रक्रिया के बिना, धीरे-धीरे प्राप्त होने वाले अंत के विचार के बिना तत्काल धारणा में सक्षम हो। इसलिए, यदि संभव हो तो मैं आज शाम आपके साथ आज़ादी के बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा।

इससे पहले कि हम इस प्रश्न पर अधिक गहराई से विचार करें, मुझे लगता है कि यह आवश्यक है कि हम इस बात से अवगत हों कि मन कैसे गुलाम बन गया है। हममें से अधिकांश का मन परंपरा का, रीति-रिवाज का, आदत का, दैनिक कार्य का गुलाम है जो हमें करना होता है और जिसके हम आदी होते हैं। मुझे लगता है कि हममें से बहुत कम लोगों को इस बात का अहसास है कि हमारा दिमाग कितना गुलाम है, और बिना यह जाने कि कौन सी चीज दिमाग को गुलाम बनाती है, इसकी गुलामी की प्रकृति से अवगत हुए बिना, हम यह नहीं समझ सकते कि आजादी क्या है। जब तक कोई इस बात से अवगत नहीं होता कि मन को कैसे पकड़ा और धारण किया जाता है, यानी इसकी दासता की समग्रता को कैसे समझा जाता है, मुझे नहीं लगता कि मन कभी भी मुक्त हो सकता है। व्यक्ति को यह समझना होगा कि क्या है, इससे पहले कि वह यह समझ सके कि जो है उसके अलावा क्या है।

तो आइए हम अपने मन का निरीक्षण करें; आइए हम मन की समग्रता को देखें, अचेतन के साथ-साथ चेतन भी। चेतन मन वह है जो जीवन की रोजमर्रा की घटनाओं में व्यस्त रहता है; यह दिमाग ही है जो सीखता है, जो समायोजन करता है, जो एक तकनीक प्राप्त करता है, चाहे वह वैज्ञानिक हो, चिकित्सा हो, या नौकरशाही हो। यह व्यवसायी का चेतन मन है जो बन जाता है

उस काम का गुलाम जो उसे करना है। हममें से अधिकांश लोग अपने अस्तित्व के लगभग हर दिन नौ बजे से शाम पांच बजे तक आजीविका कमाने में व्यस्त रहते हैं; और जब मन अपना अधिकांश जीवन किसी तकनीक को प्राप्त करने और उसका अभ्यास करने में बिताता है, चाहे वह एक मैकेनिक की हो, एक सर्जन की हो, एक इंजीनियर की हो, एक व्यापारी की हो, या आप जो भी हो, तो स्वाभाविक रूप से वह उस तकनीक का गुलाम बन जाता है। मुझे लगता है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है। जैसे गृहिणी घर की, अपने पति की, अपने बच्चों के लिए खाना पकाने की गुलाम है, वैसे ही आदमी अपनी नौकरी का गुलाम है; और दोनों परंपरा के, रीति-रिवाज के, ज्ञान के, निष्कर्षों के, विश्वासों के, अपनी सोच के अनुकूलित तरीकों के गुलाम हैं। और हम इस गुलामी को अपरिहार्य मानते हैं। हम कभी यह जानने की कोशिश नहीं करते कि क्या हम गुलाम बने बिना काम कर सकते हैं। आजीविका कमाने की अनिवार्यता को स्वीकार करने के बाद, हमने मन की दासता, उसके भय को भी अपरिहार्य मान लिया है, और इस प्रकार हम रोजमर्रा के अस्तित्व की चक्की में कदम रखते हैं।

हमें इस दुनिया में रहना है - यही जीवन की एकमात्र अपरिहार्य चीज़ है।
और सवाल यह है कि क्या हम इस दुनिया में आज़ादी के साथ नहीं रह सकते? क्या हम इस दुनिया में गुलाम बने बिना, भय और हताशा के शाश्वत बोझ के बिना, दु:ख की सारी पीड़ा के बिना नहीं रह सकते?

मन की सीमाएँ, हमारी अपनी सोच की सीमाएँ, हमें गुलाम बनाती हैं। और अगर हम गौर करें तो पाते हैं कि व्यक्ति की स्वतंत्रता का दायरा लगातार कम होता जा रहा है। राजनेता, संगठित धर्म, जो किताबें हम पढ़ते हैं, जो ज्ञान और तकनीक हम हासिल करते हैं, जिन परंपराओं में हम पैदा हुए हैं, हमारी अपनी महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं की मांगें- ये सभी स्वतंत्रता के अंतर को कम कर रहे हैं। मैं नहीं जानता कि आप इस बात से किस हद तक और कितनी गहराई तक परिचित हैं।

हम गुलामी के बारे में एक अमूर्त बात नहीं कर रहे हैं, जिसके बारे में आप आज शाम सुनते हैं और फिर अपनी पुरानी दिनचर्या में लौट आते हैं। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि इस समस्या को स्वयं समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि स्वतंत्रता में ही प्रेम है; स्वतंत्रता में ही सृजन है; केवल स्वतंत्रता में ही सत्य पाया जा सकता है। जो करना है करो, गुलाम मन कभी सत्य नहीं पा सकता; एक गुलाम दिमाग कभी भी जीवन की सुंदरता और परिपूर्णता को नहीं जान सकता। इसलिए मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे मन, अपनी प्रक्रियाओं से, परंपरा, रीति-रिवाज, ज्ञान और विश्वास के प्रति अपनी लत के कारण गुलाम बन जाता है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आप एक व्यक्ति के रूप में इस समस्या से अवगत हैं? क्या आप केवल इस कुरूप, क्रूर दुनिया में किसी तरह जीवित रहने, ईश्वर और स्वतंत्रता के बारे में बड़बड़ाते रहने और कुछ निरर्थक सद्गुणों को विकसित करने के लिए चिंतित हैं जो आपको समाज की नजरों में बहुत सम्मानजनक बनाते हैं? या फिर आप चिंतित हैं

मानवीय गरिमा के साथ? स्वतंत्रता के बिना कोई मानवीय गरिमा नहीं हो सकती, और स्वतंत्रता आसानी से नहीं मिलती। स्वतंत्र होने के लिए व्यक्ति को स्वयं को समझना होगा; व्यक्ति को विचार और भावना की गतिविधियों, अपने मन के तरीकों के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

जैसा कि हम एक साथ बात कर रहे हैं, मुझे आश्चर्य है कि क्या आप अपने बारे में जानते हैं। क्या आप जानते हैं, सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि वास्तव में, आप किस गहराई तक गुलाम हैं? या क्या आप केवल स्पष्टीकरण दे रहे हैं - अपने आप से कह रहे हैं कि कुछ हद तक गुलामी अपरिहार्य है, कि आपको आजीविका अर्जित करनी है, कि आपके पास कर्तव्य, जिम्मेदारियाँ हैं - और उन स्पष्टीकरणों से संतुष्ट हैं?

हमें इससे कोई सरोकार नहीं है कि आपको क्या करना चाहिए या क्या नहीं करना चाहिए; यह कोई समस्या नहीं है। हम मन को समझने से चिंतित हैं, और समझने में कोई निंदा नहीं है, कार्रवाई के पैटर्न की कोई मांग नहीं है।
आप केवल अवलोकन कर रहे हैं, और जब आप स्वयं को कार्य के पैटर्न के बारे में चिंतित करते हैं, या केवल गुलाम जीवन की अनिवार्यता की व्याख्या करते हैं तो अवलोकन से इनकार किया जाता है। जो मायने रखता है वह है बिना किसी निर्णय के अपने मन का निरीक्षण करना - बस उसे देखना, उस पर नज़र रखना, इस तथ्य के प्रति सचेत रहना कि आपका मन एक गुलाम है, और नहीं; क्योंकि वही धारणा ऊर्जा मुक्त करती है, और यही ऊर्जा मन की दासता को नष्ट करने वाली है। लेकिन यदि आप केवल यह पूछें, "मैं अपनी दिनचर्या की गुलामी से, रोजमर्रा के अस्तित्व में अपने भय और ऊब से कैसे मुक्त हो सकता हूँ?" आप इस ऊर्जा को कभी भी मुक्त नहीं करेंगे। हमारा सरोकार केवल यह समझने से है कि क्या है, और यह क्या है इसकी धारणा ही रचनात्मक आग को उजागर करती है। यदि आप सही प्रश्न नहीं पूछते हैं तो आप समझ नहीं सकते हैं - और एक सही प्रश्न का कोई उत्तर नहीं है क्योंकि उसे किसी उत्तर की आवश्यकता नहीं है। ये गलत प्रश्न हैं जिनके उत्तर हमेशा होते हैं। सही प्रश्न के पीछे की तात्कालिकता, उसकी तात्कालिकता ही धारणा उत्पन्न करती है।

विचार करने वाला मन जीवित है, गतिशील है, ऊर्जा से भरपूर है, और केवल ऐसा मन ही समझ सकता है कि सत्य क्या है।

लेकिन हममें से अधिकांश, जब हम इस तरह की किसी समस्या का सामना करते हैं, तो हमेशा एक उत्तर, एक समाधान, "क्या करें" और समाधान की तलाश करते हैं, "क्या करें" इतना आसान होता है, जो आगे चलकर दुर्भाग्य की ओर ले जाता है। , आगे दुख. राजनेताओं का यही तरीका है. यह संगठित धर्मों का तरीका है, जो एक उत्तर, एक स्पष्टीकरण प्रदान करता है; और इसे पाकर, तथाकथित धार्मिक मन संतुष्ट हो जाता है।

लेकिन हम राजनेता नहीं हैं, न ही हम संगठित धर्मों के गुलाम हैं। अब हम अपने मन के तरीकों की जांच कर रहे हैं, और इसके लिए कोई डर नहीं होना चाहिए। स्वयं के बारे में जानने के लिए, कोई क्या सोचता है, वह क्या है, मन की असाधारण गहराइयों और गतिविधियों के बारे में जानने के लिए - बस इन सबके प्रति जागरूक रहने के लिए

इसके लिए एक निश्चित स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। और स्वयं के बारे में जानने के लिए भी एक आश्चर्यजनक ऊर्जा की आवश्यकता होती है क्योंकि व्यक्ति को एक ऐसी दूरी तय करनी होती है जो अथाह होती है। हममें से अधिकांश लोग चंद्रमा या शुक्र पर जाने के विचार से रोमांचित होते हैं, लेकिन वे दूरियां हमारे भीतर की दूरी से बहुत कम होती हैं।

इसलिए, अपने आप में गहराई से, पूरी तरह से जाने के लिए, स्वतंत्रता की भावना आवश्यक है - अंत में नहीं, बल्कि शुरुआत में। यह मत पूछो कि उस स्वतंत्रता तक कैसे पहुंचा जाए। ध्यान की कोई प्रणाली, कोई किताब, कोई दवा, कोई मनोवैज्ञानिक तरकीब जिसे आप स्वयं पर खेल सकें, आपको मुक्ति नहीं देगी। स्वतंत्रता का जन्म इस धारणा से होता है कि स्वतंत्रता आवश्यक है। जिस क्षण आपको लगता है कि स्वतंत्रता आवश्यक है, आप विद्रोह की स्थिति में हैं - इस बदसूरत दुनिया के खिलाफ विद्रोह करें, सभी रूढ़िवादों के खिलाफ, परंपरा के खिलाफ, नेतृत्व के खिलाफ, राजनीतिक और धार्मिक दोनों के खिलाफ। मन के ढांचे के भीतर विद्रोह जल्द ही ख़त्म हो जाता है, लेकिन एक स्थायी विद्रोह होता है जो तब अस्तित्व में आता है जब आप स्वयं महसूस करते हैं कि स्वतंत्रता आवश्यक है।

दुर्भाग्य से, हममें से अधिकांश लोग अपने बारे में जागरूक नहीं हैं। हमने कभी भी अपने दिमाग के तरीकों के बारे में नहीं सोचा है, जैसा कि हमने अपनी तकनीकों, अपनी नौकरियों के बारे में सोचा है। हमने वास्तव में कभी स्वयं की ओर नहीं देखा; हम कभी भी बिना हिसाब-किताब के, बिना पूर्वचिंतन के, उन गहराइयों से कुछ खोजे बिना अपनी गहराई में नहीं उतरे हैं। हमने कभी भी बिना किसी उद्देश्य के अपने अंदर की यात्रा नहीं की है। जिस क्षण किसी के पास कोई मकसद, कोई उद्देश्य होता है, वह उसका गुलाम हो जाता है; कोई अपने भीतर स्वतंत्र रूप से नहीं घूम सकता क्योंकि वह हमेशा परिवर्तन, आत्म-सुधार के बारे में सोचता रहता है। व्यक्ति आत्म-सुधार के पद से बंधा हुआ है, जो उसकी अपनी संकीर्ण, क्षुद्र मानसिकता का प्रक्षेपण है।

कृपया मैं जो कह रहा हूं उस पर विचार करें, केवल मौखिक रूप से नहीं, बल्कि अपने मन का, अपनी आंतरिक स्थिति की वास्तविकता का निरीक्षण करें। जब तक आप गुलाम हैं, तब तक ईश्वर के बारे में, सत्य के बारे में, उन सभी चीजों के बारे में जो आपने पवित्र पुस्तकों से सीखी हैं, बड़बड़ाने का कोई मतलब नहीं है; यह केवल आपकी गुलामी को कायम रखता है। लेकिन अगर आपका दिमाग स्वतंत्रता की आवश्यकता को समझने लगता है, तो यह अपनी ऊर्जा बनाएगा, जो गुलामी से मुक्त होने के आपके गणना किए गए प्रयासों के बिना काम करेगी।

इसलिए, हम व्यक्ति की स्वतंत्रता से चिंतित हैं। लेकिन व्यक्ति को खोजना बहुत कठिन है क्योंकि अभी हम व्यक्ति नहीं हैं। हम अपने पर्यावरण, अपनी संस्कृति की उपज हैं; हम जो खाना खाते हैं, अपनी जलवायु, अपने रीति-रिवाजों, अपनी परंपराओं का उत्पाद हैं। निश्चित रूप से, वह 'व्यक्तित्व नहीं है। मेरा मानना है कि व्यक्तित्व तभी अस्तित्व में आता है जब कोई व्यक्ति पूर्ण होता है

मन को गुलाम बनाने वाली पर्यावरण और परंपरा की इस अतिक्रमणकारी गति के प्रति सचेत। जब तक मैं परंपरा, किसी विशेष संस्कृति के आदेशों को स्वीकार करता हूं, जब तक मैं अपनी यादों, अपने अनुभवों का बोझ ढोता हूं - जो आखिरकार मेरी कंडीशनिंग का परिणाम हैं - मैं एक व्यक्ति नहीं हूं, बल्कि केवल एक उत्पाद हूं।

जब आप अपने आप को हिंदू, मुस्लिम, पारसी, बौद्ध, कम्युनिस्ट, कैथोलिक या जो भी कहते हैं, कहते हैं, तो क्या आप अपनी संस्कृति, अपने परिवेश की उपज नहीं हैं? और जब आप उस वातावरण के विरुद्ध प्रतिक्रिया करते हैं, तब भी आपकी प्रतिक्रिया कंडीशनिंग के क्षेत्र में ही होती है। हिंदू होने के बजाय, आप ईसाई, कम्युनिस्ट या कुछ और बन जाते हैं।

वैयक्तिकता तभी होती है जब मन अपनी स्वतंत्रता के संकीर्ण दायरे को समझता है और राजनेताओं और संगठित मान्यताओं, जिन्हें धर्म कहा जाता है, के अतिक्रमण के खिलाफ, ज्ञान, तकनीक और अपने स्वयं के संचित अनुभवों के अतिक्रमण के खिलाफ लगातार लड़ता है। ये किसी की कंडीशनिंग, किसी की पृष्ठभूमि का परिणाम हैं।

यह धारणा, जो है उसके बारे में यह निरंतर जागरूकता, इसकी अपनी इच्छा है - अगर मैं उस इच्छा शब्द का उपयोग उस इच्छा के साथ भ्रमित किए बिना कर सकता हूं जिसके आप आदी हैं, और जो इच्छा का उत्पाद है। अनुशासन की इच्छा, प्रयास की इच्छा, निश्चित रूप से इच्छा का उत्पाद है, और यह क्या है और 'क्या होना चाहिए' के बीच, आप क्या चाहते हैं और क्या नहीं चाहते हैं के बीच संघर्ष पैदा करती है। यह एक प्रतिक्रिया है, एक प्रतिरोध है, और ऐसी इच्छाशक्ति अन्य प्रतिक्रियाओं और प्रतिरोध के अन्य रूपों को पैदा करने के लिए बाध्य है। इसलिए संकल्प के माध्यम से कभी स्वतंत्रता नहीं होती - जिस संकल्प के बारे में आप जानते हैं। मैं मन की एक बोधगम्य स्थिति की बात कर रहा हूं जिसकी अपनी क्रिया है। अर्थात् धारणा ही क्रिया है। मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं स्वयं को स्पष्ट कर रहा हूँ!

आप देखिए, श्रीमान, मुझे एहसास है, जैसा कि आपको भी महसूस होना चाहिए, कि मन आदत, रीति-रिवाज, परंपरा और उन सभी यादों का गुलाम है, जिनसे वह बोझिल है। इसका एहसास करते हुए, मन को यह भी एहसास होता है कि उसे स्वतंत्र होना चाहिए क्योंकि केवल स्वतंत्रता में ही कोई पूछताछ कर सकता है, कोई खोज सकता है। इसलिए, स्वतंत्र होने की आवश्यकता को समझना एक परम आवश्यकता है।

अब गुलाम मन कैसे मुक्त हो? कृपया इसका पालन करें. गुलाम मन कैसे मुक्त हो? हम यह प्रश्न इसलिए पूछ रहे हैं क्योंकि हम देखते हैं कि हमारा जीवन गुलामी के अलावा और कुछ नहीं है। पूरी तरह से बोरियत के साथ दिन-ब-दिन कार्यालय जाना, परंपरा का, रीति-रिवाज का, डर का, अपनी पत्नी या पति का, अपने बॉस का गुलाम बनना - यही किसी का जीवन है, और कोई इसमें भयावह क्षुद्रता, घृणित अपमान देखता है सभी। इसलिए हम यह प्रश्न पूछ रहे हैं: "मैं कैसे मुक्त होऊं?" और क्या यह सही प्रश्न है? यदि यह है, तो इसमें कोई नहीं होगा

उत्तर दीजिए क्योंकि प्रश्न ही द्वार खोल देगा। लेकिन यदि यह एक गलत प्रश्न है, तो आप पाएंगे - कम से कम आप सोचेंगे कि आपने समस्या को "समाधान" करने के तरीके और साधन ढूंढ लिए हैं। लेकिन जो करना है करो, गुलाम दिमाग कभी भी किसी भी माध्यम से, किसी भी प्रणाली या तरीके से खुद को मुक्त नहीं कर सकता।

जबकि, यदि आप पूरी तरह से, पूरी तरह से, पूरी तरह से अनुभव करते हैं कि मन को मुक्त होना चाहिए, तो वही धारणा एक क्रिया लाती है जो मन को मुक्त कर देगी।

मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत ज़रूरी है, और समझ तात्कालिक है। तुम्हें कल समझ नहीं आएगा. विचार करने पर समझ नहीं आती। या तो आप अभी समझते हैं, या बिल्कुल नहीं समझते हैं। समझ तब घटित होती है जब मन उद्देश्यों, भय, उत्तर की मांग से अव्यवस्थित न हो। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने देखा है कि जीवन के प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं है? आप ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं, "जीवन का लक्ष्य क्या है?" या "मृत्यु के बाद क्या होता है?" या "मैं ध्यान कैसे करूँ?" या "मेरा काम उबाऊ है, मैं क्या करूँ?" आप पूछ सकते हैं, लेकिन आप कैसे पूछते हैं यह मायने रखता है। यदि आप किसी उद्देश्य से, यानी उत्तर खोजने के उद्देश्य से पूछते हैं, तो उत्तर निश्चित रूप से गलत होगा क्योंकि आपकी इच्छा, आपका क्षुद्र दिमाग पहले ही इसे प्रक्षेपित कर चुका है। तो मन की स्थिति यह है कि प्रश्न स्वयं प्रश्न से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। कोई भी प्रश्न जो गुलाम दिमाग से पूछा जा सकता है, और उसे जो उत्तर मिलता है, वह अभी भी उसकी अपनी गुलामी की सीमाओं के भीतर ही होगा। लेकिन जो दिमाग अपनी गुलामी की पूरी सीमा को महसूस करता है, उसका दृष्टिकोण बिल्कुल अलग होगा, और यह बिल्कुल अलग दृष्टिकोण है जिससे हम चिंतित हैं। आप सही प्रश्न तभी पूछ सकते हैं जब आप तुरंत स्वतंत्रता की परम आवश्यकता को देख लें।

हमारा मन हज़ारों कलों का परिणाम है; जिस संस्कृति में वे रहते हैं और पिछले अनुभवों की स्मृति से अनुकूलित होकर, वे खुद को ज्ञान और तकनीक के अधिग्रहण के लिए समर्पित करते हैं। ऐसे दिमागों के लिए, सत्य या ईश्वर का स्पष्ट रूप से कोई अर्थ नहीं हो सकता है। उनकी सच्चाई की बातें आज़ादी के बारे में एक गुलाम के बुदबुदाने जैसी हैं। लेकिन आप देखिए, हममें से ज्यादातर लोग गुलाम बनना पसंद करते हैं; यह कम परेशानी वाला, अधिक सम्मानजनक, अधिक आरामदायक है। गुलामी में थोड़ा खतरा होता है, हमारा जीवन कमोबेश सुरक्षित होता है, और हम यही चाहते हैं - सुरक्षा, निश्चितता, जीवन का एक तरीका जिसमें कोई गंभीर गड़बड़ी नहीं होगी।

लेकिन जीवन हमारे दरवाजे पर दस्तक देता है, और दुःख लेकर आता है। हम निराश महसूस करते हैं, हम दुख में हैं, और आख़िरकार कोई निश्चितता नहीं है क्योंकि सब कुछ लगातार बदल रहा है। सारे रिश्ते टूट जाते हैं, और हम स्थाई रिश्ता चाहते हैं। तो जीवन एक चीज़ है, और हम जो चाहते हैं वह दूसरी चीज़ है।

हम क्या चाहते हैं और जीवन क्या है, इसके बीच एक संघर्ष है, और हम जो चाहते हैं वह हमारे मन की, हमारे रोजमर्रा के अस्तित्व की क्षुद्रता से संकीर्ण हो जाता है। हमारी लड़ाइयाँ, हमारे विरोधाभास, जीवन के साथ हमारे संघर्ष बहुत सतही स्तर पर हैं; भय और चिंताओं पर आधारित हमारे छोटे-छोटे प्रश्न अनिवार्य रूप से उतने ही सतही उत्तर पाते हैं।

महोदय, यदि आप इसका अवलोकन करें तो जीवन कुछ असाधारण है। जीवन केवल आपस में यह मूर्खतापूर्ण झगड़ना, मानवजाति का राष्ट्रों, नस्लों, वर्गों में बँटना मात्र नहीं है; यह सिर्फ हमारे दैनिक अस्तित्व का विरोधाभास और दुख नहीं है। जीवन व्यापक है, असीम है; यह प्रेम की वह अवस्था है जो सुंदरता है; जीवन दुख है और आनंद की यह जबरदस्त अनुभूति। लेकिन हमारे सुख और दु:ख बहुत छोटे हैं, और मन की उस उथलेपन से, हम प्रश्न पूछते हैं और पाते हैं

उत्तर.

तो समस्या, निश्चित रूप से, मन को पूरी तरह से मुक्त करने की है ताकि वह जागरूकता की स्थिति में हो जिसकी कोई सीमा, कोई सीमा न हो। और मन उस अवस्था की खोज कैसे करता है? उस आज़ादी तक आना कैसा है?

मुझे आशा है कि आप यह प्रश्न गंभीरता से अपने आप से पूछ रहे हैं क्योंकि मैं यह आपसे नहीं पूछ रहा हूँ। मैं आपको प्रभावित करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ; मैं केवल स्वयं से यह प्रश्न पूछने के महत्व की ओर इशारा कर रहा हूँ। दूसरे द्वारा मौखिक रूप से प्रश्न पूछने का कोई अर्थ नहीं है यदि आप इसे तुरंत, तात्कालिकता के साथ अपने सामने नहीं रखते हैं। स्वतंत्रता का दायरा हर दिन कम होता जा रहा है, जैसा कि आपको पता होना चाहिए कि क्या आप बिल्कुल भी चौकस हैं। राजनेता, नेता, पुजारी, जो समाचार पत्र और किताबें आप पढ़ते हैं, जो ज्ञान आप अर्जित करते हैं, जिन मान्यताओं से आप चिपके रहते हैं - ये सब स्वतंत्रता के अंतर को और अधिक संकीर्ण बना रहे हैं। यदि आप चल रही इस प्रक्रिया से अवगत हैं, यदि आप वास्तव में आत्मा की संकीर्णता, मन की बढ़ती गुलामी को महसूस करते हैं, तो आप पाएंगे कि धारणा से ऊर्जा निकलती है; और यह धारणा से पैदा हुई ऊर्जा है जो क्षुद्र मन, सम्मानित मन, मंदिर जाने वाले मन, डरने वाले मन को चकनाचूर कर देगी।

अतः धारणा ही सत्य का मार्ग है।

आप जानते हैं, किसी चीज़ को समझना एक आश्चर्यजनक अनुभव है। मैं नहीं जानता कि आपने कभी सचमुच कुछ देखा है या नहीं - क्या आपने कभी फूल देखा है या चेहरा देखा है या आकाश या समुद्र देखा है। बेशक, जब आप बस या कार से गुजरते हैं तो आप इन चीजों को देखते हैं, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी किसी फूल को देखने की परेशानी उठाई है? और जब आप किसी फूल को देखते हैं, तो क्या होता है? आप तुरंत फूल का नाम बता देते हैं, आप चिंतित होते हैं कि यह किस प्रजाति का है, या आप कहते हैं, "इसमें कितने प्यारे रंग हैं।" मैं इसे अपने बगीचे में उगाना चाहूँगा; मैं इसे अपनी पत्नी को देना चाहूंगा, या रखूंगा

यह मेरे बटनहोल में है," इत्यादि। दूसरे शब्दों में, जैसे ही आप किसी फूल को देखते हैं, आपका मन उसके बारे में बातचीत करना शुरू कर देता है; इसलिए, तुम्हें कभी फूल का बोध नहीं होता। आपको कोई चीज़ तभी समझ में आती है जब आपका दिमाग शांत होता है, जब किसी भी तरह की कोई बक-बक नहीं होती। यदि आप मन की हलचल के बिना समुद्र के ऊपर शाम के तारे को देख सकते हैं, तो आप वास्तव में इसकी असाधारण सुंदरता का अनुभव कर सकते हैं; और जब तुम्हें सौन्दर्य का अनुभव होता है, तो क्या तुम्हें प्रेम की अवस्था का भी अनुभव नहीं होता? निःसंदेह सौंदर्य और प्रेम एक ही हैं। प्रेम के बिना कोई सौंदर्य नहीं है, और सौंदर्य के बिना कोई प्रेम नहीं है। सौंदर्य रूप में है, सौंदर्य वाणी में है, सौंदर्य आचरण में है। यदि प्रेम नहीं, तो आचरण खोखला है; यह केवल समाज का, किसी विशेष संस्कृति का उत्पाद है, और जो उत्पन्न होता है वह यांत्रिक, निर्जीव होता है। लेकिन जब मन थोड़ी सी भी हलचल के बिना अनुभव करता है, तो वह स्वयं की संपूर्ण गहराई में देखने में सक्षम होता है; और ऐसी धारणा वास्तव में कालातीत है। इसे लाने के लिए आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है; कोई अनुशासन, कोई अभ्यास, कोई तरीका नहीं है जिसके द्वारा आप अनुभव करना सीख सकें।

महोदय, कृपया मैं जो कह रहा हूं उसे सुनें। आपके दिमाग पैटर्न, सिस्टम, तरीकों और तकनीकों के गुलाम हैं। मैं बिल्कुल अलग चीज़ की बात कर रहा हूं। धारणा तात्कालिक, कालातीत है; इसके लिए कोई क्रमिक दृष्टिकोण नहीं है। यह उसी क्षण होता है जब बोध घटित होता है; यह सहज ध्यान की स्थिति है। मन कोई प्रयास नहीं कर रहा है; इसलिए, यह कोई सीमा, सीमा नहीं बनाता, यह अपनी चेतना पर कोई सीमा नहीं लगाता। तब जीवन दुःख, संघर्ष, अवर्णनीय ऊब की भयानक प्रक्रिया नहीं है। जीवन तो एक शाश्वत गति है, जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है। लेकिन उस कालातीत स्थिति से अवगत होने के लिए, उसकी जबरदस्त गहराई और परमानंद को महसूस करने के लिए, व्यक्ति को गुलाम मन को समझने से शुरुआत करनी होगी। एक को समझे बिना आप दूसरे को नहीं पा सकते।

हम अपनी गुलामी से बचना चाहते हैं और इसीलिए हम धार्मिक बातें करते हैं; इसीलिए हम धर्मग्रंथ पढ़ते हैं; यही कारण है कि हम अटकलें लगाते हैं, बहस करते हैं, चर्चा करते हैं - जो कि इतना व्यर्थ और निरर्थक है। जबकि, यदि आप जानते हैं कि आपका मन संकीर्ण, सीमित, गुलाम, क्षुद्र है - इसके बारे में विकल्पहीन रूप से जानते हैं - तो आप धारणा की स्थिति में हैं, और यह धारणा ही है जो मन को उसकी गुलामी से मुक्त करने के लिए आवश्यक ऊर्जा लाएगी। . तब मन का कोई केंद्र नहीं होता जहां से वह कार्य करता हो। जिस क्षण आपके पास एक केंद्र होगा, वहां एक परिधि भी होनी चाहिए; और एक केंद्र से, एक परिधि के भीतर कार्य करना गुलामी है। लेकिन जब मन, केंद्र के प्रति जागरूक होकर, केंद्र की प्रकृति को भी समझ लेता है, तो वही धारणा पर्याप्त होती है। केंद्र की प्रकृति को समझना सबसे बड़ा काम है जो आप कर सकते हैं; यह मन की सबसे बड़ी क्रिया है

ले जा सकते हैं। लेकिन इसके लिए आपका पूरा ध्यान आवश्यक है। आप जानते हैं, जब आप बिना किसी मकसद के, बिना किसी चाहत के किसी चीज से प्यार करते हैं, तो ऐसा प्यार अपने परिणाम लाता है, यह अपना रास्ता खुद ढूंढता है, यह अपनी सुंदरता है।

इसलिए, यह जानना महत्वपूर्ण है कि संचय की प्रक्रिया में किसी का दिमाग कैसे गुलाम बन जाता है। यह मत पूछो, "मैं संचय से कैसे मुक्त हो सकता हूँ?" तब तो आप ग़लत प्रश्न पूछ रहे हैं। लेकिन यदि आप वास्तव में स्वयं अनुभव करते हैं कि आपका मन संचय कर रहा है, तो यह पर्याप्त है।

समझने के लिए पूर्ण ध्यान की आवश्यकता होती है; और जब आप अपना पूरा दिमाग, अपना पूरा दिल, अपना संपूर्ण अस्तित्व किसी चीज़ को दे देते हैं, तो कोई समस्या नहीं होती है।
यह आंशिक ध्यान है, जिसमें एक रोकथाम है, जो हमारे जीवन की समस्याओं और दुखों को पैदा करता है।

23 दिसम्बर 1959

बम्बई में दूसरी वार्ता

आज शाम मैं प्रयास, संघर्ष और चेतना के उस सीमित क्षेत्र के प्रश्न के बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा जिसकी सीमाएँ विचार और अनुभव द्वारा निर्धारित होती हैं। यह एक जटिल समस्या है, और मुझे लगता है कि इसे समझने के लिए पर्याप्त ध्यान देना होगा। हम विभिन्न प्रकार के, अलग-अलग स्तर के और विभिन्न गहराईयों के झगड़ों में फंसे हुए हैं। कुछ संघर्ष बहुत उथले, यांत्रिक और आसानी से सुलझने वाले होते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो बहुत गहरे, लगभग अथाह होते हैं। ये छिपे हुए संघर्ष हमेशा विकृत कार्यों को जन्म देते हैं, जो बदले में बहुत अधिक दुख और दुख पैदा करते हैं, लगातार बढ़ती समस्याएं जिनसे हम सभी अपने दैनिक जीवन में जूझते हैं।

इसलिए, यदि संभव हो तो, मैं प्रयास, संघर्ष और चेतना के उस सीमित क्षेत्र के इस पूरे प्रश्न पर बात करना चाहूँगा, जिसकी सीमाएँ विचार और अनुभव द्वारा निर्धारित की गई हैं। आप पूछ सकते हैं, “जब हमारे पास इतनी बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, पतन, दुःख, भय और अन्य सभी दुख हैं जो हमारे अस्तित्व को प्रभावित करते हैं, तो चेतना के विषय पर चर्चा क्यों करें? इसका हमारे दैनिक जीवन से क्या लेना-देना है?” मुझे लगता है कि इसका इससे काफी लेना-देना है। अपनी सोच की पूरी प्रक्रिया को समझे बिना, उसके तौर-तरीकों और गतिविधियों से परिचित हुए बिना, मुझे समझ नहीं आता कि हमारी कठिनाइयों से बाहर निकलने का कोई रास्ता कैसे हो सकता है।

इस दुर्भाग्यपूर्ण देश में आपको न केवल आर्थिक, राजनीतिक और भाषाई समस्याएँ हैं, बल्कि इससे उत्पन्न व्यक्तिगत कठिनाइयाँ भी हैं

समस्याएँ जो पश्चिमी संस्कृति ने पूर्वी संस्कृति पर थोप दी हैं।
ऐसी समस्याएं हैं जिनसे, शायद, आप में से बहुत से लोग अनजान हैं - और शायद आप उनके बारे में जागरूक होने की परवाह नहीं करते हैं क्योंकि आप एक आसान जीवन, एक सुस्त, अकर्मण्य जीवन जीना चाहते हैं। हम कई चीज़ों से घिरे हुए हैं, कुरूप और सुंदर दोनों। शहर की सड़कों की गंदगी, गाँव की गरीबी और गंदगी, आकाश के सामने पेड़ों की सुंदरता, और इन सभी चीजों के साथ हमारा रिश्ता - हममें से अधिकांश इनमें से किसी के प्रति संवेदनशील नहीं हैं क्योंकि हम एक सुरक्षित जीवन जीना चाहते हैं, सुरक्षित, अबाधित जीवन. लेकिन विपदा सदैव आसपास ही रहती है

कोना।

चाहे आप कहीं भी हों, चाहे आपके पास बहुत सारा पैसा हो या आप गुजारा करने के लिए संघर्ष कर रहे हों, ये समस्याएं भीतर और बाहर दोनों जगह मौजूद हैं, और मुझे लगता है कि प्रत्येक गंभीर सोच वाले व्यक्ति के लिए इनके बारे में जागरूक होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन केवल बाहरी समस्याओं के बारे में जागरूक रहना और अपने भौतिक अस्तित्व के पैटर्न को सुधारने का प्रयास करना अच्छा नहीं है।

दुनिया में स्पष्टता लाने के लिए सबसे पहले आंतरिक स्पष्टता होनी चाहिए। आंतरिक रूप से व्यवस्थित हुए बिना आप अपने बारे में चीजों को व्यवस्थित नहीं कर सकते। आदेश धारणा से शुरू होता है, त्वचा के बाहर चीजों की पुनर्व्यवस्था से नहीं।

तो, हम जिस बारे में बात करने जा रहे हैं वह हमारी दैनिक समस्याओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। कृपया यह कहकर अपने आप को बंद न करें, "इससे मुझे कोई सरोकार नहीं है।" यह आपको बहुत चिंतित करता है। हो सकता है कि आप चिंतित न होना चाहें, हो सकता है कि आप इसके बारे में सोचना न चाहें, लेकिन संपूर्ण मानवीय समस्या के प्रति जागरूक होना हर इंसान का काम है। हम किसी विशेष समस्या पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं और केवल उसी में व्यस्त रह सकते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि हमें चेतना की समग्रता के बारे में चिंतित होना चाहिए, न कि केवल उसके एक विशेष खंड के बारे में। आपको और मुझे समग्र मनुष्य के बारे में चिंतित होना चाहिए क्योंकि दुनिया में जो कुछ भी होता है उसके लिए हम जिम्मेदार हैं, चाहे वह रूस में हो, अमेरिका में हो, यहां भारत में हो, या कहीं और हो। हम आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, और एक स्थान पर जो कुछ भी होता है वह हम सभी को प्रभावित करता है। कोई भी देश अमीर नहीं हो सकता जबकि कोई देश गरीबी से त्रस्त हो। यह कोई राजनीतिक भाषण नहीं है, यह केवल एक व्यक्ति के रूप में हममें से प्रत्येक की जिम्मेदारी को इंगित करने के लिए है; और इसीलिए मैं कहता हूं कि जिस समस्या के बारे में मैं आज शाम बात करने जा रहा हूं, उसके बारे में जागरूक होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

लेकिन इसमें जाने से पहले, मुझे लगता है कि एक केंद्रीय मुद्दे को समझना महत्वपूर्ण है - कि साधन ही साध्य है। साधन के अतिरिक्त कोई साध्य नहीं है। कृपया इसके महत्व को देखें-लेकिन केवल बौद्धिक रूप से नहीं

बौद्धिक या मौखिक समझ का बहुत कम मूल्य है। कोई भी मूर्ख मौखिक रूप से समझ सकता है, लेकिन इसकी सच्चाई को महसूस करना, यह महसूस करना कि साधन और साध्य एक हैं, बिल्कुल अलग बात है।

किसी विशेष साधन के माध्यम से आप उस साधन से भिन्न किसी लक्ष्य या वस्तु तक नहीं पहुँच सकते। एक इंजीनियर, एक वास्तुकार, एक वैज्ञानिक, एक सर्जन, इत्यादि बनने का एक सही साधन है। यूटोपियन लक्ष्य के लिए काम करने का एक साधन भी है जिसके बारे में कम्युनिस्ट और अन्य लोग बात करते हैं।

फिलहाल हमें इसकी चिंता नहीं है कि साधन सही है या गलत।
लेकिन किसी तकनीक को सीखने के अलावा, जहां साध्य का साधन होता है, वहां जीवन के प्रति एक यांत्रिक दृष्टिकोण विकसित होता है, जो वास्तव में भौतिकवादी है। वह व्यक्ति जो संन्यासी का चोला पहनता है, जो दुनिया को त्याग कर "आध्यात्मिक" होने के लिए साधु बन जाता है, वह वास्तव में भौतिकवादी है क्योंकि वह साध्य को साधन से अलग कर रहा है।

कृपया समझें कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं, और यह मत कहिए, "आप बकवास कर रहे हैं क्योंकि प्राचीन काल से लेकर आज तक सभी पवित्र पुस्तकें इस बात पर जोर देती हैं कि एक प्रणाली या एक विधि आवश्यक है।" वह मात्र स्वीकृत परंपरा है। आप नहीं जानते, आप बस वही स्वीकार करते हैं और दोहराते हैं जो आपको बताया गया है। आप कह सकते हैं कि परंपरा ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जिसे आप जानते हैं। यदि ऐसा है, तो जब कोई ऐसी बात कही जाती है जो परंपरा के अनुरूप नहीं है तो आपको स्पष्ट रूप से काफी समझदारी से सुनना चाहिए। फिलहाल, जो कहा जा रहा है उसकी सच्चाई या झूठ का पता लगाने के लिए कम से कम आपको सुनना चाहिए।

कृपया इस सत्य को देखें कि साध्य के लिए साधन का उपयोग करने से जीवन के प्रति एक यांत्रिक दृष्टिकोण विकसित होता है। साध्य तक साधन का उपयोग करने से दक्षता का पता चलता है। इंजीनियरिंग की दुनिया में, यांत्रिकी की दुनिया में, विज्ञान की दुनिया में एक कुशल दिमाग आवश्यक है; लेकिन विचार की दुनिया में एक कुशल दिमाग अत्याचारी होता है। आपके गुरु, आपके स्वामी, आपकी धार्मिक पुस्तकें सभी अत्याचारी हैं क्योंकि वे हमेशा एक साधन के माध्यम से लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बाध्य हैं। इसलिये साधन तुम्हारा गला घोंट देता है; यह तुम्हें गुलाम बनाता है. साधन से मुक्ति नहीं मिलती. यदि अंत स्वतंत्रता है, तो उस तक पहुंचने के लिए गुलामी से गुजरना अच्छा नहीं है। यदि आपके द्वारा उठाए गए पहले कदम में ही स्वतंत्रता नहीं है, तो अंत में कोई स्वतंत्रता नहीं होगी। यह कहना कि अब गुलामी से गुज़रकर आप अंततः आज़ाद हो जायेंगे - यह राजनेताओं, स्वामी और योगियों का पुराना खेल है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है, इसलिए आइए हम इसके बारे में बहुत स्पष्ट हों। मैं जो उजागर करने जा रहा हूं और आपसे बात करने जा रहा हूं वह किसी भी तरह से यांत्रिक दिमाग की अनुमति नहीं देता है। यदि आप एक प्रणाली के आदी होने के कारण पुरानी प्रणाली के स्थान पर एक नई प्रणाली की तलाश में यहां आए हैं, तो मुझे डर है कि आप निराश होंगे

क्योंकि मैं कोई प्रणाली, कोई विधि, कोई लक्ष्य नहीं दे रहा हूँ। हम मिलकर जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह उजागर करना है, और इसलिए जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, खोजते हैं। लेकिन खोज तभी हो सकती है जब मन स्वतंत्र हो, और इसीलिए स्वतंत्रता बहुत महत्वपूर्ण है। यदि आप केवल आदतन उन्हें देखते हैं, तो आप जीवन की सामान्य चीज़ों की भी खोज नहीं कर सकते, आप सुंदरता, सुंदर आकार और रंग, चीज़ों का नयापन नहीं देख सकते। किसी समस्या के प्रकट होने में ही खोज निहित होती है, लेकिन जैसे ही आप खोजी गई चीज़ों को एकत्रित करना शुरू करते हैं, आप खोज करना बंद कर देते हैं। कृपया इसे समझें. संचयी, यांत्रिक मन के लिए किसी नई चीज़ की खोज या समझ असंभव है।

देखिये श्रीमानों. आपने अक्सर कौवों को एक दूसरे को पुकारते हुए सुना होगा, है ना? एक पेड़ पर रात बिताने के लिए वे कितना भयानक शोर मचाते हैं! क्या आपने कभी उनका शोर सुना है, वास्तव में सुना है? मुझे संदेह है कि आपने कभी ऐसा किया होगा। आपने संभवतः यह कहकर इसे बंद कर दिया है कि यह एक भद्दा शोर है, एक उपद्रव है। लेकिन अगर आप वास्तव में सुनने में सक्षम हैं, तो उस शोर और जो कहा गया है, उसके बीच कोई विभाजन नहीं है क्योंकि ध्यान का तात्पर्य सभी एकजुटता की स्पष्टता से है, जिसमें कोई बहिष्कार नहीं है। और यही वह है जो हम अभी करने की कोशिश कर रहे हैं: विचार की, ध्यान की समग्रता को उजागर करना, उजागर करना।

इसलिए, मुझे आशा है कि आप वह सुन रहे हैं जो कहा जा रहा है क्योंकि आप पहली बार कुछ नया सुन रहे होंगे। सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, लेकिन शायद सबसे अधिक दुर्भाग्य से, आप में से कुछ लोगों ने मुझे कई बार सुना है। आपकी सुनना एक आदत बन गई है, और इसलिए आप कहते हैं, “मैंने यह पहले भी सुना है; यह कोई नई बात नहीं है।” सर, धरती पर कुछ भी नया नहीं है, लेकिन आप जो सुनते हैं उसके सुनने के तरीके में एक नयापन हो सकता है। तब हर चीज़ नई है, हर चीज़ सजीव है; तब मन की प्रत्येक गतिविधि एक उद्घाटन, एक खोज है। तो कृपया मेरी बात उस तरह से सुनें क्योंकि मैं एक ऐसी बात पर बात करने जा रहा हूं जिसके आप बिल्कुल भी आदी नहीं हैं। मैं आत्म-विरोधाभास की समस्या में जाना चाहता हूं। इसका अस्तित्व क्यों है, और व्यक्ति को इसे सदैव सहन करना चाहिए? या क्या इसे समझने और उससे आगे जाने की कोई संभावना है?

स्व-विरोधाभास से तात्पर्य पुरुषार्थ के प्रश्न से है ना? हमारा पूरा जीवन इसी पर आधारित है; स्कूल जाने की उम्र से लेकर मरने तक, हम सदैव प्रयास करते रहते हैं। एक विद्यार्थी के रूप में आपसे प्रयास करने का आग्रह किया गया था; अन्यथा, तुम पशुवत परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाओगे। आपको ऑफिस में ध्यान केंद्रित करने का प्रयास करना होगा; आपको अपने बॉस से, अपनी पत्नी या पति से, अपने पड़ोसियों से, सारी कुरूपता के बावजूद, सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करना होगा; आपको स्वयं को नियंत्रित करने, अनुशासित करने का प्रयास करना होगा; और आपमें से कुछ लोग जिसे आप भगवान कहते हैं उसे खोजने के लिए जबरदस्त प्रयास करते हैं। यही तो आपकी जिंदगी है श्रीमान, है ना? से

सुबह से रात तक, आप प्रयास कर रहे हैं, एक पल भी शांति के साथ नहीं, एक पल भी ऐसा नहीं जब मन शांत हो, जब यह पूर्ण, समृद्ध, आनंदमय हो। यह हमेशा संघर्षरत, संघर्षरत, संघर्षरत रहता है।

मेरे लिए ऐसा जीवन व्यर्थ है, बेकार है; इसका कोई मतलब नहीं है; इसलिए मैं उस पूरी प्रक्रिया की जांच करना चाहूंगा। मत कहो, "प्रयास, संघर्ष, अपरिहार्य है; यह मानव स्वभाव का हिस्सा है," क्योंकि तब आपने सुनना बंद कर दिया है, आपने पूछताछ करना बंद कर दिया है। किसी भी चीज़ को स्वीकार न करें - या तो जो अभी कहा जा रहा है, या दुनिया में कुछ भी - क्योंकि जीवन स्वीकृति और इनकार का विषय नहीं है। जिंदगी तो जीना है; इसे महसूस करना और समझना होगा। जब आप केवल स्वीकार करते हैं या इनकार करते हैं, तो आपने अपने दिमाग पर रोक लगा दी है; तुमने महसूस करना, जीना बंद कर दिया है।

कृपया इसे अपने ऊपर लागू करें। आप ऐसे बहुत से शब्द नहीं सुन रहे हैं जिनका आपके दैनिक जीवन में कोई अर्थ नहीं है।

आपने प्रयास की अनिवार्यता को स्वीकार कर लिया है, और जब आपसे पूछा जाता है कि आप प्रयास क्यों करते हैं, तो आप कहते हैं, "यदि मैंने प्रयास नहीं किया होता, तो समाज मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देता।" अगर मैंने खुद को अनुशासित नहीं किया, तो मैं हर जगह होता,'' इत्यादि। लेकिन यह जानने के लिए कि आप वास्तव में प्रयास क्यों करते हैं, आपको इस आग्रह के स्रोत को उजागर करना होगा, क्या आपको ऐसा नहीं करना चाहिए, श्रीमान? अपने पूरे जीवन में आप निरंतर प्रयास करते रहते हैं, और आपने कभी स्वयं से यह नहीं पूछा कि ऐसा क्यों है; और इसके अंत में, आप क्या हैं? एक बेकार इंसान, अपंग, निर्जलित, बेकार। तो आपके द्वारा किये जा रहे इस निरंतर प्रयास का कारण क्या है?

अब, जब आप किसी कारण के बारे में पूछताछ कर रहे हैं, तो केवल परिभाषा, जो निष्कर्ष का एक रूप है, का कोई मूल्य नहीं है। तुम्हें इसे महसूस करना होगा. आप जानते हैं, वहाँ बुद्धि है, और वहाँ शुद्ध भावना है - किसी चीज़ से प्यार करने की, महान, उदार भावनाएँ रखने की शुद्ध भावना। बुद्धि तर्क करती है, गणना करती है, तौलती है, संतुलन बनाती है। यह पूछता है, "क्या यह सार्थक है? क्या इससे मुझे फ़ायदा होगा?" दूसरी ओर, शुद्ध भावना है - आकाश के लिए असाधारण भावना, अपने पड़ोसी के लिए, अपनी पत्नी या पति के लिए, अपने बच्चे के लिए, दुनिया के लिए, एक पेड़ की सुंदरता के लिए, इत्यादि। जब ये दोनों एक साथ आते हैं तो मृत्यु होती है।

क्या तुम समझ रहे हो? जब शुद्ध भावना बुद्धि द्वारा दूषित हो जाती है, तो सामान्यता होती है। हममें से अधिकांश लोग यही कर रहे हैं। हमारा जीवन औसत दर्जे का है क्योंकि हम हमेशा गणना करते रहते हैं, खुद से पूछते हैं कि क्या यह सार्थक है, हमें क्या लाभ मिलेगा, न केवल पैसे की दुनिया में, बल्कि तथाकथित आध्यात्मिक दुनिया में भी, "अगर मैं ऐसा करता हूं, तो क्या मुझे मिलेगा?" वह?"

अतः प्रयास का कारण खोजना होगा। जो कहा जा रहा है उसे स्वीकार या अस्वीकार न करें क्योंकि मैं केवल आपको उजागर करने, देखने में मदद कर रहा हूं। यह बेवकूफी है

केवल स्वीकार करना या अस्वीकार करना, क्योंकि तब कोई नहीं देखता; और हम कुछ खोजने, उसे स्वयं अनुभव करने का प्रयास कर रहे हैं।

तो, इस प्रयास का कारण क्या है जो हम हमेशा करते रहते हैं? निःसंदेह, यह आत्म-विरोधाभास है। क्या तुम समझ रहे हो? हमारी सोच में, हमारे रहन-सहन में, हमारे अस्तित्व में ही विरोधाभास है; और जहां विरोधाभास है, वहां प्रयास अवश्य होना चाहिए - यह या वह होने या न होने का प्रयास। विरोधाभास छोटी चीज़ों में भी होता है, और बड़ी चीज़ों में भी। हमारी विभिन्न इच्छाओं में विरोधाभास है; मैं क्या हूं और मैं क्या सोचता हूं कि मुझे होना चाहिए, इसमें विरोधाभास है, जो आदर्श द्वारा अतिरंजित है। जहाँ भी कोई आदर्श होता है, वहाँ आत्म-विरोधाभास अपरिहार्य है। सभी आदर्श इस आंतरिक संघर्ष को कायम रखते हैं।

आदर्श कितना भी महान क्यों न हो, आदर्श का पालन करने वाला मन निरंतर आत्म-विरोधाभास की स्थिति में रहना चाहिए, और आत्म-विरोधाभासी मन निरंतर प्रयास के इस जाल में फंस जाता है।

कृपया श्रीमान्, इसकी सत्यता को देखें, और जो मैं कह रहा हूँ उसे केवल स्वीकार या अस्वीकार न करें, क्योंकि तब इसका कोई मूल्य नहीं रहेगा। यह देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आदर्श आत्म-विरोधाभास को कायम रखता है, और आत्म-विरोधाभास के माध्यम से ऐसा कोई कार्य नहीं हो सकता जो भ्रष्ट न हो। जब तक आत्म-विरोधाभास है, सभी कार्य भ्रष्टाचार हैं। महोदय, गलत दिशा में किया गया "अच्छा" कार्य बुरा है, और मन का "अच्छा" कार्य जो स्वयं के साथ विरोधाभास में है, दुख पैदा करने के लिए बाध्य है। इस और हर दूसरे देश में बिल्कुल यही हो रहा है।

तो, आत्म-विरोधाभास ही इस निरंतर प्रयास का कारण है जो हममें से अधिकांश लोग कर रहे हैं। आत्म-विरोधाभास इसलिए मौजूद है क्योंकि कोई कुछ बनना चाहता है, क्या ऐसा नहीं है? मैं राज्यपाल या प्रधान मंत्री बनना चाहता हूँ; मैं नेक बनना चाहता हूं, लालची नहीं; मैं संत बनना चाहता हूं. क्या आप अनुसरण करते हैं, महोदय? जिस क्षण आपके मन में कुछ बनने या बनने का विचार आता है, उसमें आत्म-विरोधाभास अवश्य होता है। मत कहो, "तो क्या मुझे कुछ नहीं बनना चाहिए?" यह कोई समस्या नहीं है। बस यह देखिये कि कुछ बनने में क्या निहित है। वह पर्याप्त है।

यदि आप कहते हैं कि आप सांसारिक या तथाकथित आध्यात्मिक अर्थों में कुछ बनना चाहते हैं, तो आपको अनिवार्य रूप से आत्म-विरोधाभास और प्रयास को स्वीकार करना होगा, उस प्रयास से पैदा होने वाली सभी कुटिलताओं के साथ। और जब तक आपके भीतर विरोधाभास है, आप कभी भी ऐसी दुनिया का निर्माण नहीं कर पाएंगे जिसमें मनुष्य खुश रह सकें। आपके सभी संत, आपके सभी नेता कुछ बनने की इसी परंपरा में पले-बढ़े हैं, और वे आत्म-विरोधाभास से उबल रहे हैं; इसलिए, वे जो भी "अच्छा" करेंगे उससे केवल बुराई ही उत्पन्न होगी। हो सकता है कि जो कहा जा रहा है वह आपको पसंद न आए, लेकिन यह एक सच्चाई है।

आत्म-विरोधाभास क्रिया उत्पन्न करता है, है ना? और जितना अधिक आप अपने आत्म-विरोधाभास में दृढ़ होते हैं, उतनी अधिक ऊर्जा आप कार्य में लगाते हैं। इस प्रक्रिया को अपने अंदर जरूर देखें. आत्म-विरोधाभास का तनाव अपनी ही क्रिया उत्पन्न करता है। यदि आप एक क्लर्क हैं और प्रबंधक बनना चाहते हैं, या आप एक प्रसिद्ध कलाकार या लेखक, या एक महान संत बनना चाहते हैं, तो उस आत्म-विरोधाभास की स्थिति में आप सबसे अधिक दृढ़ता से कार्य करते हैं, और आपके कार्य की समाज द्वारा प्रशंसा की जाती है, जो समान रूप से आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है। आप ये हैं, जो आपको नापसंद है, और आप वो बनना चाहते हैं, जो आपको पसंद है। तो, आत्म-विरोधाभास ही आपके निरंतर प्रयास का कारण है। यह मत कहो, "मैं आत्म-विरोधाभास से कैसे बाहर निकल सकता हूँ?" यह पूछने के लिए सबसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। जरा देखिए कि आप किस तरह पूरी तरह से आत्म-विरोधाभास में फंस गए हैं। यह पर्याप्त है क्योंकि जिस क्षण आप अपने भीतर के विरोधाभास के बारे में, उसके सभी निहितार्थों के साथ, पूरी तरह से जागरूक हो जाते हैं, वही जागरूकता विरोधाभास से मुक्त होने की ऊर्जा पैदा करती है। तथ्य के बारे में जागरूकता, किसी खतरनाक चीज़ के बारे में जागरूकता की तरह, अपनी स्वयं की ऊर्जा बनाती है, जो बदले में विरोधाभास पर आधारित कार्रवाई उत्पन्न करती है।

तो, हममें से प्रत्येक में विरोधाभास है, है ना? मैं नफरत करता हूं, और मैं प्यार करना चाहता हूं; मैं मूर्ख हूं, और मैं चतुर बनना चाहता हूं। हम सभी अपने आप में विरोधाभास से परिचित हैं; हम दिन-रात इसके साथ रहते हैं। और इसे कैसे समझा जाए-समझा जाए, अतिक्रमण न किया जाए, दबाया न जाए, या उदात्त न किया जाए? आप जानते हैं, किसी बात को समझने के लिए आपके दिल में प्यार होना चाहिए। किसी पेड़ के तने, या घुमावदार शाखा, या पत्तियों के माध्यम से सूरज की रोशनी की सुंदरता को समझने के लिए, आपको देखना होगा, आपको महसूस करना होगा, आपको प्यार करना होगा। उसी तरह, अगर किसी को इस आंतरिक विरोधाभास को समझना है तो स्नेह की, सहानुभूति की, प्रेम की स्थिति होनी चाहिए। और जो चीज़ विरोधाभास पैदा करती है उसकी गहराई में जाने के लिए असीम धैर्य होना चाहिए। क्या आप समझते हैं श्रीमान?

मैं स्वयं को, स्वयं की संपूर्णता को जानना चाहता हूं; मैं हर विचार, हर भावना का उथलापन, क्षुद्रता जानना चाहता हूं; मैं अपनी चेतना में गहराई से उतरना चाहता हूं ताकि मैं इसकी पूरी प्रक्रिया को समझना शुरू कर सकूं। लेकिन ऐसा करने के लिए, प्यार होना चाहिए, धैर्य होना चाहिए, आग्रह की भावना होनी चाहिए जो इच्छाशक्ति का उत्पाद नहीं है, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी में एक सहज आंदोलन है। तो, प्रेम और धैर्य के साथ, और इस आग्रह की भावना के साथ, आइए यह जानने का प्रयास करें कि चेतना क्या है।

चेतना, निश्चित रूप से, विरोधाभास पर आधारित है; यह रिश्ते और जुड़ाव की एक प्रक्रिया है। यदि कोई रिश्ता नहीं है, तो कोई चेतना नहीं है। विचारों का संबंध, अनुभवों का जुड़ाव

किसी ने उन यादों को इकट्ठा किया है जो उसने जानबूझकर या अनजाने में संग्रहीत की हैं, नस्लीय प्रवृत्ति, परंपराएं जो उसे विरासत में मिली हैं, असंख्य प्रभाव जिनके अधीन वह है - इन सभी से वह बनता है जिसे हम चेतना कहते हैं। आख़िरकार, स्वयं को हिंदू, पारसी, बौद्ध या ईसाई मानने में आप महज़ कुछ प्रभावों का परिणाम हैं। हम अच्छे या बुरे प्रभावों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। सभी प्रभाव मन को सीमित करते हैं, और एक मन जो सीमित है, प्रभाव से संकुचित होता है, एक बहुत प्रभावी उपकरण है - जो कि संगठित धर्म चाहते हैं।

तो चेतना, निश्चित रूप से, विरोधाभास की वह स्थिति है, अपने निरंतर प्रयास के साथ, जो मन की सीमाओं को निर्धारित करती है; यह सोचने का तरीका है जो एक केंद्र और एक परिधि बनाता है।

देखिए, महोदय, आइए हम इसे बहुत सरल बनाएं। आप क्या? आप एक व्यापारी हैं, एक क्लर्क हैं, एक प्रोफेसर हैं, एक इंजीनियर हैं, या जो भी आप चाहेंगे। यदि आप प्रोफेसर हैं, तो आपका दिमाग आपके द्वारा अर्जित ज्ञान तक ही सीमित है। यह स्पष्ट है. यदि आप एक व्यवसायी हैं, तो धन प्राप्त करने की दुनिया में प्रतिस्पर्धा, धोखाधड़ी और अन्य सभी चीजों के साथ आपका अनुभव आपकी सोच के क्षेत्र को सीमित कर देता है। यदि आप एक वैज्ञानिक हैं, तो आपकी जांच का क्षेत्र भी आपकी जानकारी तक ही सीमित है। यदि आप एक तथाकथित धार्मिक व्यक्ति हैं, तो आपकी चेतना उस विशेष वातावरण की सीमाओं के भीतर रहती है जिसमें आप पले-बढ़े हैं, चाहे वह हिंदू, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई या कोई अन्य हो।

इसलिए विरोधाभास, अपने प्रयास से, मन को सीमित कर देता है, और वह सीमित चेतना 'मैं' बन जाती है - 'मैं' जो एक इंजीनियर है, जो इतने वर्षों तक जीवित रहा है और इतने सारे पुलों का निर्माण किया है, 'मैं' जो एक आविष्कारक है या एक स्वामी या एक व्यापारी, 'मैं' जो विचार से, अनुभव से, ज्ञान से बंधा हुआ है।

जिन अनुभवों, प्रभावों, परंपराओं से हम बंधे हैं वे चेतन या अचेतन हो सकते हैं। हममें से ज्यादातर लोग शायद इन सभी चीजों से अनजान हैं जो हमें बांधती हैं। विरोधाभास की स्थिति में होने पर, हम पूछते हैं, "मैं इससे कैसे बाहर निकलूं?" या फिर हम इस आंतरिक विरोधाभास को अपरिहार्य मान लेते हैं, और किसी तरह इसे सह लेते हैं। लेकिन एक व्यक्ति जो यह पता लगाएगा कि क्या आत्म-विरोधाभास से मुक्त होकर जीने का कोई तरीका है, अपने सभी दुखों के साथ, उसे अपनी चेतना की प्रकृति की जांच शुरू करनी चाहिए, न केवल ऊपरी स्तर पर, बल्कि गहरे स्तर पर भी। कुंआ। और यदि आप अपने आप में जांच करना शुरू करते हैं, तो आप अनिवार्य रूप से देखेंगे कि आपके चेतन और अचेतन संघर्ष, जो सपने और विभिन्न अन्य मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं को उत्पन्न करते हैं, एक गहरे, आंतरिक विरोधाभास का परिणाम हैं। एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति, चाहे वह एक व्यापारी हो, ए

राजनेता, या तथाकथित संत मूलतः एक आत्म-विरोधाभासी इंसान होते हैं। तो कृपया उस मनोवैज्ञानिक क्रांति को देखें जो तब घटित होगी जब आप आत्म-विरोधाभास की इस पूरी समस्या की जांच शुरू करेंगे।

आत्म-विरोधाभास बुद्धि से नहीं बल्कि चालाकी से पैदा होता है।
यह अपने आप को पर्यावरण के साथ समायोजित करने में एक निश्चित दक्षता पैदा करता है - और यही हममें से अधिकांश लोग कर रहे हैं। आत्म-विरोधाभा, अपने निरंतर प्रयास से, चेतना पर बंधन डालता है; और आत्म-विरोधाभास से पैदा हुआ कार्य मूल रूप से दुख का उत्पादक है, हालांकि सतह पर यह सार्थक प्रतीत हो सकता है। यदि आपका मन आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है, तो आप सतही तौर पर अच्छा कर सकते हैं, लेकिन मूलतः आप और अधिक दुख पैदा कर रहे हैं। निःसंदेह, सड़कों और बाकी सभी चीजों को साफ किया जाना चाहिए-लेकिन हम उसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

अब, यह देखते हुए कि आत्म-विरोधाभास से उत्पन्न कोई भी कार्य, अपने तनाव के साथ, न केवल व्यक्ति में, बल्कि हर चीज के साथ उसके रिश्ते में भी दुख पैदा करेगा, कोई यह पूछना शुरू कर देता है, "तो फिर बुद्धिमान कार्य क्या है? वह कौन सा कार्य है जो आत्म-विरोधाभास से उत्पन्न नहीं होता, जो प्रयास का परिणाम नहीं होता?" कृपया इसका पालन करें, महोदय। हममें से अधिकांश के लिए, विचार और कार्य दो अलग चीजें हैं। विचार वहाँ है, और उस विचार के प्रति हमारा सन्निकटन जिसे हम क्रिया कहते हैं, इसलिए वहाँ आत्म-विरोधाभास है। आप समझे? वह मन जो क्रिया को एक विचार के रूप में देखता है और फिर उस विचार के अनुसार अपनी क्रिया को आकार देता है, आत्म-विरोधाभास की स्थिति में है, क्या ऐसा नहीं है?

तो फिर, क्या कोई ऐसा कार्य है जो स्व-विरोधाभासी नहीं है? हम सभी उस क्रिया को जानते हैं जो अपने आप में विरोधाभासी है-वही हमारी रोजमर्रा की जिंदगी है।
मन इससे बहुत परिचित है. और इस तरह के कार्य से उत्पन्न होने वाले दुख, भ्रम, कुरूपता, क्रूरता, क्षणभंगुर खुशियों को देखकर, मन अब पूछताछ कर रहा है कि क्या कोई ऐसा कार्य है जो आत्म-विरोधाभास के गर्भ से नहीं आता है। यदि यह अस्तित्व में है, तो उस क्रिया की प्रकृति क्या है? निश्चित रूप से, यह एक आंदोलन है जो विचार और कार्य के रूप में विभाजित नहीं है। जब आप किसी चीज़ को बहुत दृढ़ता से महसूस करते हैं, तो आप बिना गणना किए, बिना बुद्धि और उसके चालाक कारणों को सामने लाए, बिना यह सोचे कि यह कितना खतरनाक होगा, कार्य करते हैं।

इस शुद्ध भावना से एक ऐसा कार्य होता है जो स्व-विरोधाभासी नहीं है।
शायद मैं खुद को स्पष्ट नहीं कर रहा हूं.
महोदय, जब आप किसी चीज़ को अपने संपूर्ण अस्तित्व से प्यार करते हैं, तो कोई आत्म-विरोधाभास नहीं होता है। लेकिन हममें से अधिकांश के पास प्रेम की वह संपूर्णता नहीं है। हमारा प्यार शारीरिक और आध्यात्मिक, पवित्र और अपवित्र और बाकी सभी बकवास के रूप में विभाजित है। हम उस प्रेम को नहीं जानते जो एक संपूर्ण अनुभूति है, अस्तित्व की संपूर्णता है, जो न तो अतीत का है और न ही भविष्य का, और जो नहीं है

अपनी निरंतरता से चिंतित। वह भावना समग्र है; इसकी कोई सीमा नहीं है, कोई सीमा नहीं है, और यह भावना आत्म-विरोधाभास से मुक्त कार्य है। यह मत कहो, "मैं इसे कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?" यह कोई आदर्श, हासिल की जाने वाली चीज़, कोई ऐसा लक्ष्य नहीं है जिस पर आपको अवश्य पहुंचना चाहिए। यदि यह एक आदर्श है, तो इसे बाहर फेंक दें क्योंकि यह आपके जीवन में केवल अधिक विरोधाभास पैदा करेगा। आपके पास पर्याप्त आदर्श हैं, पर्याप्त दुख हैं—दूसरा मत जोड़ें। हम पूरी तरह से अलग चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं: मन को सभी आदर्शों से मुक्त करना, और इसलिए सभी विरोधाभासों से। अगर आप उसमें सच्चाई देख लें तो यही काफी है.

तो, आप देखिए, बुद्धि न तो आपकी है, न मेरी है, न ही यह किसी विशेष पुस्तक में पाई जाती है; यह गुमनाम है. जब मन जो कहा जा रहा है उसे बिना स्वीकार या अस्वीकार किए, बिना तुलना या मूल्यांकन किए सुनता है, जब वह चलते-फिरते हर चीज की सच्चाई को उजागर करता है, तो ऐसा मन बुद्धि की स्थिति में होता है, और वह बुद्धि पूरी तरह से गुमनाम होती है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? सभी महान चीजें गुमनाम हैं, क्या ऐसा नहीं है? इस देश के सभी महान मंदिर, यूरोप के सभी महान गिरजाघर गुमनाम हैं।

आप नहीं जानते कि उन संरचनाओं का निर्माण किसने किया। किसी भी आदमी ने उन पर अपना छोटा सा नाम नहीं छोड़ा है। इसी तरह, सत्य गुमनाम है, और इसे आप तक आने के लिए आपको गुमनामी की स्थिति में होना चाहिए। सारी सृष्टि गुमनाम है - वह रचना जो शून्य से आती है।

यदि आपने जो कुछ भी कहा गया है उसका परिश्रमपूर्वक पालन किया है, तो आप अनुभव करेंगे कि जहां सोच अनुभव पर आधारित है, वह आत्म-विरोधाभास का उत्पादक है। उस अनुभव शब्द का क्या अर्थ है? एक चुनौती और एक प्रतिक्रिया है; चुनौती की प्रतिक्रिया अनुभव है, जो स्मृति बन जाती है। ऐसी स्मृति विचार की उत्पादक होती है, जो कहती है, “यह सही है, वह ग़लत है। ये अच्छा है, वो बुरा है. मुझे यही करना चाहिए, मुझे यही नहीं करना चाहिए," इत्यादि। जब तक मन इस प्रकार अनुभव का अवशेष है, जब तक विचार मौजूद है जिसकी जड़ें स्मृति की मिट्टी में हैं, तब तक आत्म-विरोधाभास होना ही चाहिए।

मैं जानता हूं कि इसे समझना बहुत कठिन है, श्रीमान, क्योंकि हममें से अधिकांश के लिए जीवन अनुभव पर आधारित है। हम एक अनुभव से दूसरे अनुभव की ओर बढ़ते हैं, और प्रत्येक अनुभव, स्मृति के रूप में एकत्रित होकर, आगे के सभी अनुभवों को आकार और स्थितियां प्रदान करता है। लेकिन मैं सुझाव दे रहा हूं कि मन की एक अवस्था होती है जिसमें क्रिया संपूर्ण होती है। तब क्रिया के अतिरिक्त कोई विचार नहीं रहता; किसी विचार के लिए कार्रवाई का कोई अनुमान नहीं है। यदि आप वास्तव में बुद्धिमत्ता की उस स्थिति की जांच करना शुरू करते हैं, तो आप अपने लिए एक ऐसे मन की आश्चर्यजनक पूर्णता, समग्रता, समग्रता की खोज करेंगे जिसका कोई अतीत नहीं है, कोई भविष्य नहीं है; और उस अवस्था से, कार्रवाई अपरिहार्य है। फिर जीना ही कर्म है, और ऐसे कर्म में

वहां कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि आनंद की एक असाधारण अनुभूति है, एक शांति जिसे दोहराया नहीं जा सकता, जिसकी नकल नहीं की जा सकती या किसी दूसरे से सीखा नहीं जा सकता। यह आपके मांगे बिना, अंधेरे में, रहस्यमय तरीके से आता है। यह तभी आता है जब आप अपने अंदर बहुत गहराई तक जा चुके होते हैं और अपनी सभी रूढ़ियों, रीति-रिवाजों, आदतों, तरीकों, आदर्शों और अंधविश्वासों की जड़ें उखाड़ फेंकते हैं। तब तुम पाओगे कि प्रेम है; और उस प्रेम से कोई बुराई नहीं; दोनों में से कोई भी अच्छा नहीं है, क्योंकि दोनों बंधन हैं। यह केवल प्रेम ही है जो स्वतंत्र है।

27 दिसंबर, 1959

बम्बई में तीसरी वार्ता

मैं इस शाम ज्ञान, अनुभव और समय के बारे में बात करना चाहूंगा। लेकिन इससे पहले कि हम इस सब पर बहुत गहराई से जाएं, मुझे लगता है कि विनम्रता की प्रकृति के बारे में पूछताछ करना महत्वपूर्ण है; और विनम्रता का पता लगाने के लिए, हमें यह स्पष्ट होना होगा कि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हासिल किया जाए, हासिल किया जाए या विकसित किया जाए। जिस सद्गुण के लिए संघर्ष किया जाता है, विकसित किया जाता है, धीमी गति से इकट्ठा किया जाता है, वह सद्गुण नहीं रह जाता। निःसंदेह, यह समझने योग्य एक महत्वपूर्ण बिंदु है। या तो तुम लोभ रहित हो, ईर्ष्या रहित हो, या नहीं हो; और यदि आप लालची, ईर्ष्यालु हैं, तो आप गैर-लोभ, गैर-ईर्ष्या पैदा नहीं कर सकते। हममें से अधिकांश लोगों के लिए इसे समझना बहुत कठिन है क्योंकि हम समय के संदर्भ में सोचते हैं। हम विनम्रता को धीरे-धीरे हासिल किए जाने वाले गुण के रूप में देखते हैं, और इस प्रकार विनम्रता की अत्यंत सरल लेकिन असाधारण रूप से गहन प्रकृति को पूरी तरह से भूल जाते हैं; और विनम्रता के बिना कोई बहुत दूर तक नहीं जा सकता।

विनम्रता की स्थिति सभी पूछताछ के लिए आवश्यक है। यह एक "पूरी तरह से" भावना है, बिना किसी केंद्र के जिससे मन कह सके, "मैं विनम्र हूं।" एक व्यक्ति जो सकारात्मक या नकारात्मक रूप से किसी विशेष समस्या से मुक्त होने के लिए दृढ़ संकल्पित है, वह विनम्रता की स्थिति में नहीं है। विनम्रता तभी होती है जब मन समस्या को स्पष्ट रूप से देखना चाहता है, चाहे वह अन्वेषण कुछ भी प्रकट करे।

ऐसा मन जिज्ञासु होता है। यह समस्या के सभी निहितार्थों को जानना चाहता है, सुखद और अप्रिय दोनों; यह चीज़ों को वैसे ही देखना चाहता है जैसे वे हैं, बिना रूपांतरित करने, अपने वश में करने या जो कुछ वह देखता है उसे उच्चीकृत करने की इच्छा के बिना; और केवल ऐसा मन ही विनम्रता की स्थिति में होता है।

जैसा कि मैं जोर-जोर से सोच रहा हूं, कृपया जो कहा जा रहा है उसे प्रयास के बजाय सहजता से सुनें। जिस क्षण आप सुनने का प्रयास करते हैं, आप सुनना बंद कर देते हैं। आप तभी सुन रहे हैं जब सहजता का, एक निश्चित भाव हो

मन और शरीर दोनों की स्थिरता, आराम की स्थिति। उस शांत ध्यान की स्थिति में मन बहुत कुछ समझेगा; जब वह कहता है, "मैं समझना चाहता हूं, और समझने के लिए मुझे प्रयास करना होगा" की तुलना में यह कहीं अधिक गहरी सूक्ष्मताओं को समझेगा - मुझे डर है कि ज्यादातर लोग क्या करते हैं।

मैं एक बहुत ही सरल चीज़ के बारे में बात करने जा रहा हूँ, लेकिन इसकी सरलता एक जटिल दिमाग को नहीं दिखेगी। निश्चित रूप से, आप वह देख सकते हैं जो बहुत नाजुक है, जिसमें आश्चर्यजनक रूप से सूक्ष्म अनुभूति होती है, केवल तभी जब आपका मन शांत होता है, जब वह कुछ पाने के लिए संघर्ष नहीं कर रहा होता है। मैं ऐसी किसी चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ जिसे आप "प्राप्त" कर सकते हैं। मैं भावना, स्नेह की गुणवत्ता, सहानुभूति, प्रेम को व्यक्त करना चाहता हूं - जिसके लिए कोई शब्द नहीं हैं, जो कोई मुद्रा नहीं है, यह दृष्टिकोण और मूल्यों का मामला है। मैं आपसे विनम्रता की प्रकृति के बारे में संवाद करना चाहता हूं, और फिर इसके सभी निहितार्थों के साथ जानने की प्रक्रिया के बारे में पूछताछ करना चाहता हूं। लेकिन एक मन जो केवल विनम्रता की उस स्थिति को प्राप्त करने या विकसित करने की कोशिश कर रहा है वह इसकी बारीकियों, इसके महत्व, इसकी असाधारण गुणवत्ता को नहीं समझ सकता है।

इसलिए कृपया स्नेह की भावना से, सहज पूछताछ की भावना से, निश्चिंत होकर ध्यान से सुनें, क्योंकि आपको मुझसे कुछ भी मिलने वाला नहीं है। मैं तुम्हें कोई चीज़ नहीं देने जा रहा हूँ और अगर तुम कुछ पाने के इरादे से आओगे तो अपना समय बर्बाद करोगे। यदि एक देने वाला है और एक लेने वाला है, तो दोनों ही दीनता की स्थिति में हैं। स्वभाव को समझने के लिए या विनम्रता की भावना को जानने के लिए, व्यक्ति को अपनी समस्याओं से मुक्त होने, उनका समाधान करने के इस दृढ़ निश्चय को समझना होगा। हममें से अधिकांश लोग यही चाहते हैं, है न? हम अपनी समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं, रोजमर्रा के दुख, संघर्ष, कलह से, अपने दैनिक अस्तित्व की क्षुद्रता, कुरूपता, क्रूरता और क्षणभंगुर आनंद से बचना चाहते हैं; इसलिए हम हमेशा किसी न किसी चीज़ की तलाश में रहते हैं। यही कारण है कि हम नेताओं का अनुसरण करते हैं, विभिन्न संगठित धर्मों में शामिल होते हैं, एक गुरु से दूसरे गुरु के पास जाते हैं, इस उम्मीद में कि कोई ऐसा साधन मिल जाए जिससे हम अपनी चिंता, अपने भय, अपने प्रेम की कमी से पार पा सकें।

हम सभी को समस्याएँ हैं, इनसे छुटकारा पाना संभव नहीं है; और जैसे-जैसे हम इस दुनिया में दिन-प्रतिदिन रहते हैं, हमारी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं, कम नहीं हो रही हैं। तथाकथित सभ्यता का भारी बोझ हमारी अपनी सोच की गुणवत्ता को नष्ट कर रहा है, और हमने वह सरलता खो दी है जिसके साथ हमारे सामने आने वाली असंख्य समस्याओं से निपटना आवश्यक है। क्योंकि मन अपनी समस्या से परे जाना या उसे हल करना चाहता है - चाहे वह लालच हो, ईर्ष्या हो, झूठ बोलना हो, ईर्ष्यालु होना हो, आलसी होना हो, भयभीत होना हो, या आप जो चाहें - वह एक रास्ता, एक विधि, एक प्रणाली खोजने के लिए दृढ़ है जिसके द्वारा ऐसा करने के लिए; और यह दृढ़ संकल्प ही विनम्रता को नष्ट कर देता है।

कृपया इसे समझें, महोदय। यह कोई अस्पष्ट या झगड़ालू बात नहीं है, न ही यह वक्ता की कोई विशेष विशिष्टता है। यदि आप निरीक्षण करते हैं कि आपका मन अतिक्रमण करने, परे जाने या अपनी समस्या को हल करने के संदर्भ में कैसे सोचता है, तो उस अवलोकन में कोई प्रयास शामिल नहीं है। लेकिन जहां प्रयास है - बदलने का प्रयास, खुद को बदलने का प्रयास - वहां कोई विनम्रता नहीं है, वहां अनिवार्य रूप से घमंड है। आपको यह विचार है कि आप बदल गए हैं, कि आपने हासिल कर लिया है, कि आप आगे बढ़ गए हैं, यह सब आपको महत्वपूर्ण होने का एहसास दिलाता है; इसलिए, आप कभी भी विनम्रता की वास्तविक प्रकृति को महसूस नहीं करते हैं।

जो मायने रखता है वह है समस्या को देखना, बस उसे देखना और उसके सभी निहितार्थों से परिचित होना। यदि आप समस्या का अध्ययन करते हैं, चाहे वह कितनी भी दर्दनाक, बदसूरत क्यों न हो, यदि आप इसे देखते हैं, इसमें आगे बढ़ते हैं, इसके साथ जीते हैं और - मेरा वास्तव में यही मतलब है - इसे गले लगाते हैं, इसे अपने दिल में लेते हैं, तो आप पाएंगे कि आप हैं विनम्रता की स्थिति में; और फिर समस्या जो थी उससे बिल्कुल अलग है।

सभी समस्याएँ अत्यंत जटिल हैं; इसका उत्तर कभी भी हां या ना में नहीं हो सकता. किसी समस्या की गहराई तक जाने के लिए, व्यक्ति में विनम्रता का असाधारण गुण होना चाहिए, और यदि आप सुन रहे हैं, वास्तव में सुन रहे हैं, तो आप पहले से ही उस स्थिति में हैं। जैसा कि मैंने कहा, मेरे पास आपको देने के लिए कुछ भी नहीं है, मैं केवल इंगित कर रहा हूं; और जब कोई चीज़ आपकी ओर इंगित की जाती है, तो आप उसे "प्राप्त" नहीं कर सकते, आप उस पर अपना हाथ नहीं रख सकते - आपको उसे देखना होता है, आपको उसे अनुभव करना होता है, महसूस करना होता है, छूना होता है, सूंघना होता है। सभी दृढ़ संकल्पों, परिवर्तन के सभी प्रयासों को त्याग देना, नकार की स्थिति नहीं है; न ही यह कोई सकारात्मक स्थिति है. आप तो बस पूछताछ कर रहे हैं. यह हासिल करने का आवेग है जो मन को अपने महत्व का एहसास कराता है, और उपलब्धि वह है जिसे हम सकारात्मक कार्रवाई कहते हैं, लेकिन ऐसी कार्रवाई केवल और अधिक भ्रम और दुख लाती है। जबकि, यदि आप समस्या के बारे में पूछताछ कर रहे हैं, जो कि असंख्य आग्रहों और प्रभावों के साथ विरोधाभास की यह स्थिति है, जिसमें हममें से प्रत्येक व्यक्ति रहता है - यदि आप इसके बारे में बस जागरूक हैं, तो यह जागरूकता ही उसकी अपनी क्रिया है।

देखिये श्रीमानों. हममें से अधिकांश लोग ईर्ष्यालु हैं, क्या हम नहीं हैं? और ईर्ष्या की समस्या काफी जटिल है. ईर्ष्या में शाश्वत संघर्ष, तुलना, प्रतिस्पर्धा होती है, जो इच्छाशक्ति, कुछ हासिल करने के संकल्प, उससे भी आगे जाने को तेज करती है। इसे सकारात्मक कार्य कहते हैं और आपकी संस्कृति आपको इसमें प्रोत्साहित करती है।

आख़िरकार, प्रसिद्धि की इच्छा ईर्ष्या पर आधारित है; और ईर्ष्यालु होने के कारण, आप पीड़ित होते हैं, आप निराश महसूस करते हैं, आप चिंतित और भयभीत होते हैं। इसलिए आप अपने आप से कहें, "मुझे ईर्ष्या से मुक्त होना चाहिए।" आपका मन ईर्ष्या से मुक्ति के बारे में चिंतित है - जिसका अर्थ है कि यह दर्द, निराशा, खुशी की क्षणभंगुरता से छुटकारा पाने के बारे में है जो ईर्ष्या में निहित है। तो वहाँ संघर्ष है, और

जहां संघर्ष है, वहां अनिवार्य रूप से एक इच्छाशक्ति है जो कहती है, "मुझे आगे बढ़ना चाहिए।" ऐसा मन विनम्रता की स्थिति में नहीं होता है।

जब मन को पता चलता है कि वह ईर्ष्यालु है, जब वह इस तथ्य से बचता नहीं है, जब वह स्वयं को धोखा नहीं देता है या पाखंडी रवैया नहीं अपनाता है, बल्कि बस कहता है, "ऐसा है, मैं ईर्ष्यालु हूं," इस तरह के तथ्य की स्वीकृति अपनी स्वयं की कार्रवाई लाता है। लेकिन स्वीकारोक्ति तथ्य की स्वीकृति नहीं है - दोनों के बीच एक अंतर है। जब आप स्वीकार करते हैं कि कोई चीज़ वैसी ही है, तो इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता है। जब आप इसे केवल स्वीकार करते हैं, तो इसे स्वीकार न करने की संभावना हमेशा बनी रहती है। इसलिए, जब आप इस तथ्य से अवगत होते हैं कि आप ईर्ष्यालु हैं, जिसका अर्थ है कि आप इसे देखते हैं और स्वीकार करते हैं, तो वही स्वीकार्यता, वही आत्म-आलोचनात्मक जागरूकता एक ऐसी क्रिया का निर्माण करती है जो इच्छा की क्रिया नहीं है। और मैं कहता हूं कि ऐसा कार्य विनम्रता की स्थिति से आता है क्योंकि यह संचयी नहीं है। जिस क्षण आप ईर्ष्या न करने का गुण अर्जित कर लेते हैं, आपका मन विनम्रता की स्थिति में नहीं रह जाता है - केवल इसी स्थिति में वह सीख सकता है।

मुझे आशा है कि मैं अपने आप को स्पष्ट कर रहा हूं क्योंकि विनम्रता की प्रकृति की समझ के साथ, मैं ज्ञान की समस्या में, अनुभव नामक इस असाधारण चीज़ में, और बहुत अधिक जटिल समस्या में, जो कि समय की है, प्रवेश करना चाहूंगा। शायद आपका मन कार्यालय में दिन भर के काम के बाद पहले से ही थका हुआ है, या आप पारिवारिक झगड़ों और समायोजन और अपने जीवन में चल रही अन्य सभी चीजों से थका हुआ महसूस कर सकते हैं। इसीलिए मेरा सुझाव है कि आप बिना तनाव के, आराम से सुनें। आप मुझसे कुछ भी नहीं सीख रहे हैं, जैसा कि आप एक स्कूल में सीखेंगे, और वहाँ उत्तीर्ण होने के लिए कोई परीक्षा नहीं है। कोई भी गुरु आपको यह नहीं बताएगा कि आप अच्छा कर रहे हैं और आप अगले चरण में जा सकते हैं। आप स्वयं को सुन रहे हैं—और स्वयं को सुनना एक कला है। यदि आप हर समय कुछ बनने या करने का प्रयास कर रहे हैं तो आप सुन नहीं सकते। इसलिए, मैं अनुभव के बारे में बहुत ही सहजता से बात करना चाहता हूं, और कृपया सहजता से सुनें। मैं अन्वेषण करना चाहता हूं, उस पर गौर करना चाहता हूं - और उस अन्वेषण से बाहर आना चाहता हूं, शायद अनुभव के साथ नहीं, बल्कि उस मन के साथ जो निर्दोष है। क्योंकि यह केवल निर्दोष मन ही है जो सत्य को समझ सकता है, जो सत्य की पूर्णता, गुणवत्ता को समझ सकता है-अनुभवी मन नहीं। अनुभवी मन एक मृत मन है. क्या मन, अनुभव के बोझ से दबे होने के कारण, अपने सभी अनुभवों को विघटित कर सकता है या मिटा सकता है और नए सिरे से जन्म ले सकता है - मैं इसी में जाना चाहता हूँ।

हम सभी के पास अनुभव हैं। हम चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, क्रोध, घृणा, हिंसा इत्यादि का अनुभव करते हैं। क्रोध के अनुभव से गुजरना, के लिए

उदाहरण के लिए, मन उस अनुभव के अवशेषों को इकट्ठा करता है; और अवशेष शेष रह जाता है, जो आगे के अनुभव को रंग देता है। हमारी जितनी आसानी से चापलूसी की जाती है उतनी ही आसानी से हमारा अपमान भी किया जाता है। आपका मन चापलूसी में आनंदित होता है, अगर कोई आपको बताता है कि आप कितने अद्भुत हैं तो यह प्रसन्न होता है; और उन शब्दों से उत्पन्न आनंद की अनुभूति एक अनुभव है जो आपके मन में बनी रहती है। इसी तरह, यदि कोई आपका अपमान करता है, तो आप अनिवार्य रूप से उसी अनुभव से गुजरते हैं, लेकिन खुशी के साथ नहीं, और उस अप्रिय अनुभव का अवशेष भी आपके दिमाग में रहता है।

तो अनुभव मन पर एक छाप छोड़ता है, जो स्मृति है। यांत्रिकी और तकनीक के आवश्यक ज्ञान के रूप में स्मृति है, और स्मृति जो मनोवैज्ञानिक है, जो महत्वपूर्ण होने, यह होने या वह होने की इच्छा पर आधारित है। अनुभव ज्ञान का संचय है, चाहे वह बाहरी या आंतरिक चीज़ों का हो। अनुभवी मन कहता है, "मुझे पता है कि ईर्ष्या से, इन झगड़ों और झगड़ों से कैसे निपटना है," या जो भी समस्या हो। तो अनुभव वह मिट्टी है जिसमें विचार पनपते हैं - महत्वपूर्ण होने का विचार, उससे आगे जाने का विचार, इत्यादि।

कृपया श्रीमानों, अपने मन का अवलोकन अवश्य करें। मैं केवल वर्णन कर रहा हूं, और यदि आप केवल वर्णन सुन रहे हैं, तो आप जीवित नहीं हैं। सभी विवरण सेकेंडहैंड हैं, और आप प्रत्यक्ष रूप से केवल तभी जी रहे हैं जब आप स्वयं खोजते हैं। एक भूखा आदमी भोजन के वर्णन पर निर्भर नहीं रह सकता, चाहे वे कितने भी सुंदर, कितने ही आकर्षक क्यों न हों। तो आप मेरी नहीं, बल्कि अपनी बात सुन रहे हैं। आप स्वयं देख रहे हैं कि अनुभव का अवशेष मन को किस प्रकार पंगु बना देता है।

यदि आप चापलूसी के आनंद पर या अपमान के आक्रोश पर जीते हैं, तो निश्चित रूप से आपका दिमाग सुस्त, पंगु है। जिस व्यक्ति ने आपका अपमान किया है, उसके प्रति आप शत्रुता की दृष्टि से जाते हैं, और जिस व्यक्ति की चापलूसी करते हैं, उसके प्रति आप प्रसन्नता की भावना से देखते हैं; इसलिए, आपका दिमाग देखने, पूछताछ करने के लिए ताज़ा नहीं है। आप जीवन में सुखद और दुखद दोनों तरह के प्रभाव, निशान, घाव इकट्ठा करते हुए गुजरते हैं, जो मन में बने रहते हैं और जिन्हें आप अनुभव कहते हैं; और अनुभव से ज्ञान आता है। इसलिए ज्ञान के रूप में अनुभव स्पष्टता को रोकता है।

कृपया इस बिंदु को अवश्य देखें, महोदय। चरित्र किसी के ज्ञान में अड़ियल होने या किसी के अनुभव में मजबूत होने का मामला नहीं है। चरित्र तभी होता है जब मन, अपने संचित अनुभव से पूरी तरह अवगत होकर, उस पृष्ठभूमि से मुक्त होता है और इसलिए स्पष्टता में सक्षम होता है। केवल स्पष्ट मन में ही चरित्र होता है। मानव अस्तित्व के एक स्तर पर ज्ञान स्पष्ट रूप से अनिवार्य है - मुझे पता होना चाहिए कि मैं कहाँ रहता हूँ, मुझे पता होना चाहिए कि मुझे अपना काम कैसे करना है, मैं

मुझे अपनी पत्नी को पहचानने में सक्षम होना चाहिए, इत्यादि। लेकिन दूसरे स्तर पर ज्ञान जानने की गति को रोकता है।

तो, जानना क्या है, और ज्ञान क्या है? जब हम कहते हैं कि हम जानते हैं तो हमारा क्या मतलब है? क्या हम जानते हैं, या हमें बताया जाता है और फिर कहते हैं कि हम जानते हैं?
कृपया, महोदय, मेरे साथ इस पर अवश्य चलें, थोड़ा ध्यान दें। जानना एक बहुत ही दिलचस्प शब्द है. आप कैसे जानते हैं, और आप क्या जानते हैं? कृपया अपने आप से पूछें, जैसे मैं खुद से पूछ रहा हूं। जो कुछ भी कोई जानता है वह अनुभव पर आधारित है, और इसलिए मन पहले से ही इसके द्वारा अनुकूलित है, क्योंकि सभी अनुभव अनुकूलन हैं, है न? आपके पास एक निश्चित अनुभव है, आप किसी प्रकार के दुःख या सुख से गुजरते हैं, जो आपके दिमाग पर एक छाप छोड़ता है, और उस वातानुकूलित दिमाग के साथ आप अगली चुनौती का सामना करते हैं। दूसरे शब्दों में, आप उस चुनौती को अपनी सीमाओं के संदर्भ में, अपने स्वयं के अनुभव की पृष्ठभूमि के विरुद्ध अनुवादित करते हैं, जिससे आपका दिमाग और अधिक अनुकूलित होता है। अतः मन अनुभव के माध्यम से अधिकाधिक अनुकूलित होता जाता है। आपको इसे स्वीकार करने की जरूरत नहीं है, श्रीमान. यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि यह एक तथ्य है। मन केवल तभी सीख सकता है जब वह अधिग्रहण नहीं कर रहा हो, यदि वह संचय नहीं कर रहा हो, यदि वह गतिशील हो। जब उसने अर्जित कर लिया है, संचय कर लिया है तो वह हिल नहीं सकता है, सीख नहीं सकता है, क्योंकि वह एक स्थिर अवस्था है।

तो, सीखने, जानने की गति क्या है? मैं देखता हूं कि ज्ञान अनुभव के माध्यम से संचित होता है। एक आदमी के पास यांत्रिक या तकनीकी ज्ञान हो सकता है, या उसने चतुराई से सीख लिया होगा कि मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों से कैसे बचा जाए और अपने लिए आंतरिक आराम की स्थिति बनाए रखी जाए; लेकिन मैं देखता हूं कि यह ज्ञान जानने की गति नहीं है। निश्चित रूप से, दोनों पूरी तरह से अलग हैं। जानना एक सतत गति है; इसलिए, कोई स्थिर स्थिति नहीं है, कोई निश्चित बिंदु नहीं है जहां से कार्य किया जा सके। मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं स्वयं को स्पष्ट कर रहा हूँ?

देखिये श्रीमानों. सुनना और सुनना दो पूरी तरह से अलग अवस्थाएँ हैं।
सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, आप में से कुछ लोगों ने मुझे दस या अधिक वर्षों तक बार-बार सुना है, और सुनने के बाद, आप कहते हैं, "हाँ, मुझे पता है कि वह क्या कहेगा।" वह सुनने की अवस्था नहीं है। आप तभी सुन रहे हैं जब आप जो सुनते हैं उसका अनुवाद उस रूप में नहीं करते जो आप पहले ही सुन चुके हैं। सुनने की स्थिति सुनने, इकट्ठा करने और फिर आगे सुनने से बिल्कुल अलग है। जब आप किसी चीज़ को आगे सुनते हैं, तो आप सुनना बंद कर देते हैं।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी प्रेम की प्रकृति पर विचार किया है? प्यार करना एक बात है और प्यार करना दूसरी बात है। प्यार का कोई समय नहीं होता. आप यह नहीं कह सकते, "मैंने प्रेम किया है"—इसका कोई अर्थ नहीं है। तब प्रेम मर गया; आपको प्यार नहीं है। प्रेम की स्थिति अतीत या भविष्य की नहीं है। वैसे ही ज्ञान एक है

चीज़, और जानने की गति दूसरी है। ज्ञान बंधनकारी है, लेकिन जानने की गति बंधनकारी नहीं है।

बस इसमें अपना रास्ता महसूस करें, इसे स्वीकार या अस्वीकार न करें। आप देखिए, ज्ञान में समय की गुणवत्ता होती है; यह समयबद्ध है जबकि जानने की गति कालातीत है। यदि मैं प्रेम की, ध्यान की, मृत्यु की प्रकृति को जानना चाहता हूँ, तो मैं किसी भी चीज़ को स्वीकार या अस्वीकार नहीं कर सकता। मेरा मन संदेह की नहीं, बल्कि जिज्ञासा की स्थिति में होना चाहिए - जिसका अर्थ है कि इसका अतीत से कोई बंधन नहीं है। जो मन जानने की गति में है वह समय से मुक्त है क्योंकि वहां कोई संचय नहीं है।

महोदय, आप देखिए, जब तक मन ताज़ा, नया, मासूमियत की स्थिति में न हो, कालातीतता की प्रकृति, अमरता की प्रकृति को नहीं समझा जा सकता है। मैं अमरता शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थ में नहीं कर रहा हूँ। मैं इसका उपयोग विशालता की भावना को व्यक्त करने के लिए कर रहा हूं, जो कि माप के बिना है, एक ऐसे मन की भावना है जिसकी कोई सीमा नहीं है, कोई सीमा नहीं है। मैं उस अमरता की बात नहीं कर रहा हूँ जो मेरा छोटा सा दिमाग हमेशा जीने की चाहत में चाहता है। वह बिल्कुल भी अमरता नहीं है; यह एक बंधन है, यह समय की गुलामी है। मैं उस अमरता की प्रकृति की खोज करना चाहता हूं जो समय से परे है। ऐसा करने के लिए, मेरा दिमाग जांच की स्थिति में होना चाहिए, यानी, पल-पल जानने की गति में - जानने की स्थिति में नहीं, जो जानने पर रोक लगा देता है। आप देखिए, अधिकांश लोगों के दुख का यही स्रोत है। आपने अपनी असंख्य पुस्तकें पढ़ी हैं; आप जानते हैं कि इस संत या उस गुरु ने क्या कहा है, और जब आप अमरता शब्द सुनते हैं , तो आप तुरंत इसे अपनी सोच के पैटर्न के अनुरूप अनुवाद करते हैं; और जब आप ऐसा करते हैं, तो आपने जानने की गति को रोक दिया है।

सचेत रूप से या अनजाने में, मन ने कई अनुभव एकत्र किए हैं, और क्या ऐसा मन निर्दोषता की स्थिति में हो सकता है, देखने, निरीक्षण करने, कार्य करने के लिए हमेशा अतीत की इस पृष्ठभूमि, समय के बंधन के बिना स्वतंत्र हो सकता है?
मुझे नहीं पता कि यह आपके लिए कोई समस्या है या नहीं। संभवतः ऐसा नहीं है. लेकिन जो कोई भी जीवन के बारे में पूछताछ करता है, उसके लिए यह निश्चित रूप से एक समस्या है क्योंकि हम जो कुछ भी जानते हैं वह हताशा, दुख और निराशा है, कभी-कभी खुशी के क्षणभंगुर क्षण के साथ।
हालाँकि इसमें आनंद भी है, कभी-कभार आनंद का स्पर्श भी, हममें से अधिकांश के लिए जीवन एक भयानक चीज़ है, और हमारी आँखें आँसुओं से भरी होती हैं। जीवन एक ऐसी चीज़ है जिसका कोई उत्तर नहीं है; इसे पल-पल समझना होगा।
लेकिन हम हमेशा एक उत्तर चाहते हैं, और जो उत्तर हमें मिलता है वह अनिवार्य रूप से उस पैटर्न के अनुरूप होता है जो हम सोचते हैं कि हम जानते हैं। और जब यह पता चलता है - जितनी जल्दी या बाद में यह होना ही चाहिए - कि एक पैटर्न के अनुसार उत्तर बिल्कुल भी उत्तर नहीं है, तो हम फिर से निराशा में पड़ जाते हैं।

इसलिए, जब मन वास्तव में इस सब के बारे में पूछताछ करना शुरू करता है, तो उसे एक ऐसी स्थिति का अनुभव करने की आवश्यकता दिखती है, जो कालातीत है।
समय निराशा है क्योंकि समय में केवल कल है। वह कल सैकड़ों कल तक खिंच सकता है, लेकिन उसके अंत में कोई उत्तर नहीं मिलता; पीड़ा अभी भी है. इसलिए हमारा जीवन अस्त-व्यस्त है, और हमारे दुख का कोई अंत नहीं है, चाहे हम इसके बारे में कितना भी दार्शनिक विचार कर लें। इसीलिए कालातीतता की प्रकृति की जांच कोई व्यर्थ, बेकार चीज़ नहीं है।

समय अनुभव का संग्रह है, और सभी एकत्रित अनुभव समय को जन्म देते हैं - जो हो चुका है उससे क्या होगा का मार्ग। समय तकनीकी समस्याओं का समाधान कर सकता है; आप वर्तमान में चंद्रमा और उसके बाकी सभी हिस्सों पर जाने के लिए मशीनें बना सकते हैं। लेकिन हमारी गहरी मानवीय समस्याएं कभी भी समय के माध्यम से हल नहीं होती हैं - जिसका अर्थ है कि उन्हें अनुभव पर आधारित मन, ऐसे मन द्वारा हल नहीं किया जा सकता है जो समय का परिणाम है। जब ऐसे मन को अपने सामने मौजूद गतिरोध, खाली दीवार का एहसास होता है, तो निराशा की भावना पैदा होती है। और इस पूरी समयबद्ध प्रक्रिया की प्रकृति को देखते हुए, किसी को अनिवार्य रूप से उस चीज की जांच करनी चाहिए जिसे कालातीत, शाश्वत कहा जाता है - इस पर अटकलें लगाने के लिए नहीं कि क्या कोई शाश्वतता है, और उस तक कैसे पहुंचा जाए, जो कि एक स्कूली दृष्टिकोण है, बल्कि होना चाहिए पूछताछ की स्थिति में, जानने की गति में, कभी नहीं कहते, "मुझे पता है।" जो आदमी कहता है कि वह जानता है, वह नहीं जानता।

तो वास्तव में समस्या यह है कि क्या मन अपने सभी संचित अनुभव और ज्ञान से मुक्त हो सकता है और फिर भी भूलने की स्थिति में नहीं हो सकता है? क्या यह निर्दोषता की स्थिति को महसूस कर सकता है और इसलिए पूछताछ करने के लिए स्वतंत्र हो सकता है? क्या आप मेरा प्रश्न समझते हैं, महोदय? एक हिंदू, एक पारसी, एक बौद्ध, एक ईसाई, या आप जो भी चाहें, आप इतने वर्षों तक जीवित रहे हैं, आपने इतना कुछ सीखा है, इतना कुछ हासिल किया है, इतना कुछ सहा है, और आपका मन क्षुद्र, उथला है; यद्यपि यह बहुत सी चीजों से भरा हुआ है, यह एक खाली दिमाग है, और आप इसी तरह जीते रहते हैं, अधिक से अधिक संचय करते हुए, जब तक आप मर नहीं जाते। मृत्यु की अनिवार्यता को देखकर आप पूछते हैं कि क्या मृत्यु के बाद भी कुछ है? जब आपको बताया जाता है कि स्वर्ग और बाकी सब कुछ है, तो आप इससे संतुष्ट हैं, और अभी भी दुःख के बोझ से दबे हुए हैं, आप शांति से गुजर जाते हैं।

मुझे लगता है कि जो मायने रखता है वह जानने की गति में होना है, यानी स्वयं के बारे में पूछताछ की स्थिति में होना। लेकिन इसके लिए निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है - ध्यान, प्रयास नहीं। ध्यान देने का अर्थ है कि जब आप चल रहे हों, जब आप बात कर रहे हों, जब आप बस में यात्रा कर रहे हों, या सिनेमा में बैठे हों, या किताब पढ़ रहे हों, तो क्या हो रहा है। यदि आप इतने जागरूक हो सकते हैं, तो आप स्वयं जानने की गति की खोज कर लेंगे, जो विनम्रता की वास्तविक स्थिति है। केवल मन

वह जानता है कि विनम्रता की यह स्थिति निर्दोष है। तब आप अनुयायी नहीं रह जाते, और आपके बारे में कुछ भी अप्राप्य नहीं रह जाता।

इस समय तुम सब सेकेंडहैंड हो; आप केवल वही जानते हैं जो आपको ईश्वर के बारे में, सद्गुणों के बारे में, जीवन की लगभग हर चीज़ के बारे में बताया गया है। आप वही हैं जो आपने पढ़ा है, जो आपने सुना है, जो आपकी संस्कृति ने आप पर थोपा है; इसलिए आप अपनी नौकरी, अपनी भूख और चिंताओं के अलावा कुछ भी नहीं जानते हैं। सेकेंडहैंड होने के नाते, आप अनुसरण करते हैं, आपके पास अधिकारी हैं, आपके पास गुरु हैं, आपके पास ये सभी घटिया देवता हैं।

एक मन जो जानने की गति में है वह विनम्रता की स्थिति में है, जो मासूमियत है, और केवल मासूम ही प्यार को जानता है। निश्छल मन प्रेम है; यह वही करेगा जो यह करेगा, लेकिन इसमें कोई अहंकार नहीं है। तो अनुभव शिक्षक नहीं है. अनुभव उपलब्धि का शिक्षक है; यह यांत्रिक चीजों का शिक्षक है, जैसा कि ज्ञान है। लेकिन जो मन जानने की गति में है वह ज्ञान और अनुभव से मुक्त है; इसलिए, इसका कोई अतीत या भविष्य नहीं है, और केवल ऐसा मन ही वह प्राप्त कर सकता है जिसे मन द्वारा मापा नहीं जा सकता है।

30 दिसंबर, 1959

चौथी वार्ता बम्बई में

यदि संभव हो तो मैं आज शाम इच्छा, तृप्ति और हताशा के रूप में ऊर्जा के प्रकटीकरण के बारे में बात करना चाहूंगा; और शायद, अगर हमारा दिमाग इतनी दूर तक फैल सके, तो हम इस सवाल पर जाने में सक्षम हो सकते हैं कि दिमाग से परे क्या है। लेकिन इससे पहले कि हम इन सब पर विचार करें, मुझे लगता है कि बदलाव की समस्या पर ध्यान देना ज़रूरी है।

हममें से अधिकांश के लिए, किसी भी रूप में परिवर्तन एक बहुत ही परेशान करने वाला कारक है। हमें आदत और रीति-रिवाज का घिसा-पिटा रास्ता पसंद है और खुद को उस रास्ते से हटाना लगभग असंभव लगता है। आदत और रीति-रिवाज में किसी भी बदलाव के लिए हम प्रभाव पर निर्भर रहते हैं; हमें लगता है कि हमें बदलने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। परिस्थितियाँ हमारे दृष्टिकोण, हमारे मूल्यों और साथ ही बाहरी चीजों में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मुझे लगता है कि हमें इस मामले पर काफी सावधानी से विचार करना चाहिए, ताकि हम अपनी सोच के तरीकों को खुद ही उजागर कर सकें।

हम प्रचार के प्रभाव में बदल जाते हैं, क्या हम नहीं? विभिन्न रूपों में प्रभाव हमारे जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। समाचार पत्रों का प्रभाव; हम जो किताबें पढ़ते हैं, उनका प्रभाव, चाहे पवित्र हो या अपवित्र;

सामाजिक, शैक्षिक और धार्मिक वातावरण का प्रभाव; हमारे पड़ोसियों का प्रभाव; परिवार का प्रभाव, पत्नी का पति पर और पति का पत्नी पर प्रभाव; परंपरा और जनमत का प्रभाव; आहार, जलवायु का प्रभाव - ये और कई अन्य प्रभाव लगातार हमारे दिमाग को आकार दे रहे हैं। हम कभी भी इन असंख्य प्रभावों से मुक्त नहीं होते हैं जिनका हम परिणाम हैं, और इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि हम पर्यावरण के प्राणी हैं। आप एक हिंदू, एक मुस्लिम, एक ईसाई, या जो कुछ भी हैं, आप इसलिए हैं क्योंकि आप एक निश्चित संस्कृति, उसकी विशेष परंपराओं और सोचने के तरीकों में पले-बढ़े हैं।

इसलिए, प्रभाव हमारे जीवन में असाधारण रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम यह चर्चा नहीं कर रहे हैं कि अच्छा प्रभाव क्या है और बुरा प्रभाव क्या है। मेरे लिए, सभी प्रभाव बुरे हैं क्योंकि यह मन को गुलाम बना देते हैं। यदि मन किसी प्रभाव में बदलता है, तो वह केवल अपनी परिधि के भीतर ही बदल रहा है, चाहे वह परिधि बड़ी हो या छोटी।

जो कहा जा रहा है उसे सुनते समय, कृपया बातचीत में श्रोता का रवैया न अपनाएं, बल्कि अपने मन का निरीक्षण करें। अपना और अपने पर्यावरणीय प्रभावों का निरीक्षण करें, और आप तथाकथित मुक्त दिमाग के भीतर एक असाधारण घटना घटित होते हुए देखेंगे। मुझे नहीं लगता कि मन स्वतंत्र है, लेकिन मन अपनी अनुकूलनशीलता और उन असंख्य प्रभावों से अवगत हो सकता है जिनके द्वारा वह अनुकूलित है। आप जानते हैं, कुछ शब्द हम पर गहरा प्रभाव डालते हैं। ईश्वर, साम्यवाद, चीनी, कैथोलिक, जीसस, बुद्ध आदि जैसे शब्दों का हमारे दिमाग पर असाधारण रूप से गहरा प्रभाव पड़ता है, और मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोग इससे अनजान हैं। और जब तक हम वास्तव में इन प्रभावों से जूझते और समझते नहीं हैं, कोई भी परिवर्तन - चाहे वह आर्थिक क्रांति हो या मन के दृष्टिकोण में परिवर्तन - का बहुत कम अर्थ होता है क्योंकि तब हम प्रचार के गुलाम होते हैं।

आप सब मेरी बात सुन रहे हैं. क्यों? यह पता लगाना बहुत दिलचस्प होगा. आप रविवार की गर्म दोपहर में यहाँ क्यों आते हैं? यदि आपको राजी किया जाए, प्रभावित किया जाए, निर्देशित किया जाए, बताया जाए कि क्या करना है, तो आप जो सुनेंगे वह महज प्रचार बनकर रह जाएगा। और प्रचार-चाहे वह राजनेताओं का हो, संगठित धार्मिक लोगों का हो, या पवित्र पुस्तकों का हो-मानव मन पर सबसे विनाशकारी प्रभाव डालता है।

इसलिए, उन प्रभावों को समझे बिना जिनके हममें से अधिकांश लोग गुलाम हैं, हम कभी नहीं जान पाएंगे कि ऊर्जा को कैसे जागृत किया जाए, और ऊर्जा स्पष्ट रूप से आवश्यक है। मेरा मतलब एक पढ़े-लिखे दिमाग की ऊर्जा, या एक अच्छी तरह से पोषित शरीर की ऊर्जा से नहीं है - हालाँकि शारीरिक ऊर्जा इसका हिस्सा है। एक विक्षिप्त व्यक्ति में जबरदस्त ऊर्जा हो सकती है, ठीक वैसे ही जैसे कभी-कभी एक उन्मादी व्यक्ति में हो सकती है

बहुत मजबूत। उसी तरह, जो व्यक्ति किसी आदर्श के प्रति समर्पित होता है, उसमें अक्सर असाधारण जीवन शक्ति होती है। ये सभी उस ऊर्जा की अभिव्यक्तियाँ हैं जो प्रभाव का परिणाम है, और यदि आप इसमें बहुत गहराई से जाते हैं, तो आप पाएंगे कि यह शक्ति की ओर ले जाती है। शक्ति किसी भी रूप में बुरी है, चाहे वह तानाशाह की पूर्ण शक्ति हो, या पत्नी की अपने पति पर शक्ति हो, या पति की अपनी पत्नी पर शक्ति हो, या व्यक्ति पर समाज की शक्ति हो। लेकिन इससे पहले कि हम इस सब में जाएं, मुझे ऐसा लगता है कि, इस पागल, राक्षसी, प्रतिस्पर्धी दुनिया में रहने वाले इंसान के रूप में, हमें प्रभावित होने के पूरे सवाल को समझना होगा।

मन प्रभावित क्यों होता है? और क्या मन का सभी प्रभावों से मुक्त होना संभव है? निश्चित रूप से, प्रभाव क्षेत्र में रहने वाला दिमाग बहुत सीमित होता है, हालांकि यह बहुत सक्रिय हो सकता है। सभी प्रचारक बहुत सक्रिय हैं, है ना? फिर भी ऐसा मन सीमित, वातानुकूलित होता है, और इसलिए अपनी सीमाओं के भीतर निरंतर संघर्ष करता रहता है।

कृपया अपनी स्वयं की कंडीशनिंग का निरीक्षण करें और देखें कि आप कैसे प्रभावित होते हैं। यदि आप इस पूरी प्रक्रिया को स्वयं में देखें, तो आप अनुभव करेंगे कि आप जो कुछ भी सोचते हैं, साथ ही आपके कार्य, आपका पेशा, आपका मौखिक आदान-प्रदान, आपके आदर्श और विश्वास सभी उन असंख्य प्रभावों का परिणाम हैं जिनसे आप जाने-अनजाने में प्रभावित होते हैं। . मन हर चीज़ को ग्रहण कर रहा है, चाहे आप इसके बारे में जानते हों या नहीं। कौवों का शोर, ट्रामकार का शोर, वक्ता के शब्द, आपके बगल वाले व्यक्ति की हरकतें, इत्यादि - यह सब मन द्वारा सचेतन या अचेतन रूप से अवशोषित किया जा रहा है।

तो, क्या अपने आप से यह पूछना बहुत महत्वपूर्ण नहीं है कि क्या मन प्रभावों से मुक्त हो सकता है? मुझे नहीं लगता कि यह उन प्रभावों से अवगत हुए बिना संभव हो सकता है जिनके द्वारा यह प्रभावित होता है। इन प्रभावों के प्रति जागरूकता आत्म-ज्ञान का हिस्सा है, है ना? और इतना जागरूक होना अत्यंत कठिन है क्योंकि प्रभाव अक्सर बहुत सूक्ष्म होता है। विज्ञापन में, उन्होंने अचेतन प्रचार की कोशिश की है - एक विचार को बार-बार सिनेमा या टेलीविज़न स्क्रीन पर इतनी तेज़ी से चमकाना कि दर्शक को इसका पता ही न चले, फिर भी वह अचेतन द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। इसी तरह, आपसे लगातार कहा गया है - यह हजारों वर्षों की परंपरा है - कि आप हिंदू हैं। आप उस परंपरा में पले-बढ़े हैं, और आपकी नौकरी, आपका पेशा मन को और अधिक अनुकूलित करता है; आप प्रभावित होते हैं, आप जो करते हैं उससे आपकी सोच आकार लेती है, इत्यादि।

इन सभी प्रभावों से अवगत होना आसान नहीं है। लेकिन एक बार जब आप सचेत रूप से, जानबूझकर, लगातार सही प्रश्न पूछना शुरू कर देते हैं, जिसका अर्थ है अपने आप में इन विभिन्न प्रभावों को उजागर करना, तो मन बन जाता है

असाधारण रूप से सतर्क. इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि स्वयं से यह प्रश्न पूछना आवश्यक है।

अतीत - न केवल हाल का अतीत, बल्कि सदियों का अतीत, अपनी सभी यादों, अपने मनोवैज्ञानिक घावों, अपने संचित अनुभव और ज्ञान के साथ - वर्तमान को, अभी को प्रभावित कर रहा है। वर्तमान अतीत से भविष्य का मार्ग बन जाता है, इसलिए कल पहले से ही बीते हुए कल से आकार लेता है। वर्तमान अतीत के अनुसार चुनौती का जवाब देता है और वह प्रतिक्रिया भविष्य को आकार देती है। यह बहुत ही सरल प्रक्रिया है श्रीमान, अगर आप इसे अपने जीवन में देखेंगे। यदि आपको लगता है कि मैंने आज आपका अपमान किया है, तो कल जब आप मुझसे मिलेंगे, जो कि भविष्य है, तो उस अपमान की स्मृति आपके आक्रोश की भावना को मजबूत करती है, और इस तरह यह चलता रहता है। इसे कर्म के रूप में अनुवादित न करें। कर्म बिल्कुल अलग चीज़ है, कम से कम जैसा कि मैं इसे देखता हूँ। फिलहाल हम केवल प्रभाव और परिवर्तन की समस्या को उजागर कर रहे हैं।

जब हम बदलते हैं, तो यह आम तौर पर मजबूरी, दुख, महत्वाकांक्षा या किसी अन्य प्रकार के प्रभाव के कारण होता है। हम लाभ के उद्देश्यों से बदलते हैं, हम दर्द से बदलते हैं, हम किसी विचारधारा या विचार प्रणाली की गुलामी से बदलते हैं। आप परिवर्तन की इस यांत्रिक प्रक्रिया को मन में संचालित होते हुए देख सकते हैं, लेकिन ऐसा परिवर्तन, जो प्रभाव का परिणाम है, कोई परिवर्तन नहीं है - हालाँकि यह मन को ऊर्जा देता है। जिस व्यक्ति के पास अच्छी नौकरी है, जो अपने परिवार में सुरक्षित है, जो एक बड़ा बैंक खाता बना रहा है, उसमें असाधारण ऊर्जा की भावना होती है। वह व्यक्ति जिसके पास बोलने या लिखने, यह करने या वह करने की क्षमता है, वह व्यक्ति जो किसी कला या शिल्प में प्रतिभाशाली है, वह व्यक्ति जो खुद को पूरा करने, कुछ बनने की कोशिश कर रहा है - ऐसे लोगों में बहुत कुछ होता है ऊर्जा का, लेकिन जब देर-सबेर वह ऊर्जा अवरुद्ध हो जाती है, तो हताशा, निराशा की भावना उत्पन्न होती है।

कृपया इसका अनुसरण करें, महोदय, केवल एक बातचीत के रूप में नहीं जिसे आप सुन रहे हैं, बल्कि अपने मन के विवरण के रूप में, अपने बारे में, अपने दैनिक अस्तित्व के विवरण के रूप में। अपने लाभ की खोज में आप ऊर्जा उत्पन्न करते हैं, लेकिन वह ऊर्जा, चाहे कितनी भी चालाक, कितनी ही सक्षम और कुशल क्यों न हो, हमेशा केंद्र से परिधि की ओर कार्य करती है। और क्या यह कोई बदलाव है? जब आप मजबूरी से, डर से, मकसद से, किसी लक्ष्य की खोज से बदलते हैं, तो क्या कोई बदलाव होता है?

सामाजिक या आर्थिक क्रांति का प्रश्न लें, इसके प्रस्तावित लाभों के साथ, एक वर्गहीन समाज बनाने की इसकी योजना और इसके बाकी सभी पहलुओं को लें। क्या ऐसी क्रांति वास्तविक क्रांति है? या क्या यह महज़ एक प्रतिक्रिया है, और इसलिए अतीत की एक संशोधित निरंतरता है? ये तथाकथित क्रांतियाँ हमेशा से रही हैं

यह केवल एक प्रतिक्रिया रही है, और हमेशा पूर्व स्थिति में वापसी हुई है, केवल संशोधन हुआ है। तो एक व्यक्ति जो संपूर्ण परिवर्तन, वास्तविक क्रांति से चिंतित है, जो मन की गुणवत्ता में परिवर्तन है, न कि केवल संशोधित अतीत की निरंतरता - ऐसे व्यक्ति को निश्चित रूप से खुद से पूछना चाहिए कि क्या ऐसा करना संभव है बिना प्रभाव, बिना उद्देश्य के परिवर्तन। उद्देश्य और प्रभाव पर आधारित परिवर्तन, केवल मजबूरी या नकल का एक रूप है; इसलिए, यह बिल्कुल भी कोई बदलाव नहीं है। क्या तुम समझ रहे हो?

देखिए, श्रीमान, अहिंसा का पालन करके हिंसा से खुद को रोकना कोई बदलाव नहीं है, हालांकि इस देश में हर दिन इसके बारे में बात की जाती है।
किसी उद्देश्य से की गई अहिंसा अभी भी हिंसा ही है। उद्देश्य आदर्श है, जो मन का प्रक्षेपण है, और जो मन आदर्श के अनुरूप है वह अनुकरणात्मक है; यह अभी भी हिंसा के क्षेत्र में है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप इसे देखते हैं!

हिंसक होते हुए आप कहते हैं, "मुझे अहिंसा के आदर्श का पालन करना चाहिए।"
अहिंसा तब हिंसा की प्रतिक्रिया के रूप में आपके मन का प्रक्षेपण है।
अहिंसा के आदर्श को अपनाने के बाद, आप स्वयं को अनुशासित करने के लिए आगे बढ़ते हैं, आप उस आदर्श के अनुरूप होने के लिए संघर्ष करते हैं, आप उसके साथ निरंतर समायोजन की दर्दनाक प्रक्रिया से गुजरते हैं - एक ऐसी प्रक्रिया जो हमेशा सतही होती है, लेकिन जिसे लोग एक प्रकार के रूप में पहचानते हैं गुण। और यह इसका अजीब हिस्सा है - हम चाहते हैं कि लोग पहचानें कि हम गुणी हैं, कि हम अहिंसक बन गए हैं, या कि हम अहिंसा के रास्ते पर हैं। मान्यता हमारे जीवन में एक असाधारण भूमिका निभाती है, है ना? तो आपने देखा कि सत्ता की चाहत कितनी सूक्ष्म है।

अगर आप इस पूरी प्रक्रिया को बहुत बारीकी और निष्पक्षता से जांचेंगे तो पाएंगे कि वह हिंसक दिमाग जिसका लक्ष्य अहिंसा है, जो खुद को बदलने और अहिंसक बनने की इच्छा से प्रेरित है, वह अभी भी हिंसा में फंसा हुआ है। तो सवाल स्वाभाविक रूप से उठता है: क्या हिंसक दिमाग बिना किसी मकसद के खुद को बदल सकता है? या क्या यह अपरिहार्य है कि सभी परिवर्तन किसी मकसद से, किसी प्रकार के प्रभाव से आना चाहिए? तुम्हें समस्या दिख रही है, है ना?

हम सभी को मौलिक रूप से, गहराई से, मौलिक रूप से बदलना होगा क्योंकि जैसे हम हैं, हम वास्तविक इंसान नहीं हैं; हम विभिन्न प्रकार के प्रभावों के गुलाम हैं।
और मानवीय गरिमा की खोज करने के लिए, स्वतंत्रता की वास्तविक भावना को जागृत करने के लिए, किसी को निश्चित रूप से खुद से पूछना चाहिए कि क्या बिना किसी मकसद के, बिना किसी दबाव के, बिना किसी डर, मांग या प्रभाव के मन में आमूल-चूल परिवर्तन लाना संभव है। यदि आप कहते हैं कि ऐसा संभव नहीं है, कि किसी उद्देश्य से परिवर्तन करना मानव स्वभाव है, सदियों से यही चलता आ रहा है, तो यह आपके लिए कोई समस्या नहीं है। लेकिन जिस पल आप

वास्तव में क्रांति के, किसी भी स्तर पर परिवर्तन के संपूर्ण प्रश्न की जांच करना शुरू करें, आपको अनिवार्य रूप से यह प्रश्न पूछना होगा; अन्यथा, आप बहुत सतही सोच रहे हैं। और यह सतही सोच ही है जिसने अपने युद्धों, अपनी तथाकथित क्रांतियों, अपने एकाग्रता शिविरों, अपनी तानाशाही और पुलिस राज्य की सभी भयावहताओं के साथ इस क्रूर समाज का निर्माण किया है।

इसलिए, यदि आप मनुष्य के संपूर्ण परिवर्तन के बारे में गहराई से चिंतित हैं, तो आपको प्रभाव की इस समस्या के बारे में पता होना चाहिए, जिसमें प्रेरणा प्राप्त करना, मंदिर जाना, पवित्र किताबें पढ़ना, मंत्रों को दोहराना शामिल है - ये सभी राक्षसी रूप से बदसूरत अनुशासित हैं स्वतंत्र होने के लिए आगे बढ़ें, और जो वास्तविक स्वतंत्रता से इनकार है। लेकिन अगर आप इस बातचीत का केवल बौद्धिक रूप से जवाब दे रहे हैं, तो आप वैसे ही खाली होकर चले जायेंगे जैसे आये थे। बुद्धि बहुत सतही है. यह चतुर सिद्धांतों का आविष्कार कर सकता है; यह बहस या प्रतिवाद कर सकता है और उस खेल को अनिश्चित काल तक खेलता रह सकता है, लेकिन यह बदलाव नहीं ला सकता; यह मन की गुणवत्ता में वास्तविक परिवर्तन नहीं ला सकता।

अब हम वास्तविक परिवर्तन से चिंतित हैं; हम परिवर्तन और क्रांति की समस्या की वास्तविक जांच कर रहे हैं। क्रांति क्या है? यही वह सवाल है जो हम खुद से पूछ रहे हैं क्योंकि हमारा समय इसकी मांग करता है। लेकिन यह एक चिरस्थायी समस्या है; यह सिर्फ हमारे समय की समस्या नहीं है क्योंकि इंसान का दिमाग लगातार खराब होता जा रहा है। यह गिरावट एक लहर की तरह है जो हमेशा हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही है, और एक व्यक्ति जो वास्तव में गंभीर है उसे इस सवाल पर विचार करना होगा कि क्या परिवर्तन केवल प्रभाव के माध्यम से, भय के माध्यम से, मजबूरी के माध्यम से हो सकता है, या क्या यह पूरी तरह से अलग है एक प्रकार का परिवर्तन.

प्रभाव के माध्यम से जो परिवर्तन लाया जाता है, वह शक्ति की ओर ले जाता है, है न? यह शक्ति, पद की ओर ले जाता है—और हममें से अधिकांश लोग यही चाहते हैं। हममें से अधिकांश लोग या तो इस दुनिया में या तथाकथित आध्यात्मिक दुनिया में किसी के रूप में पहचाने जाना चाहते हैं। क्या आप सब ऐसा नहीं चाहते? सबसे छोटे क्लर्क से लेकर सबसे ऊंचे राजनेता तक, सबसे विनम्र शिष्य से लेकर सबसे महान गुरु तक, हर कोई एक व्यक्ति के रूप में पहचाना जाना चाहता है - जो कि सत्ता की इच्छा है। हम सभी किसी न किसी रूप में महत्वपूर्ण बनना चाहते हैं - एक टिकट संग्राहक के रूप में, एक वैज्ञानिक के रूप में, एक नौकरशाह के रूप में, एक प्रधान मंत्री के रूप में, एक अच्छी पत्नी के रूप में, एक अच्छे पिता के रूप में, या आप जो चाहें। हम पहचाने जाना चाहते हैं, हम महत्वपूर्ण होना चाहते हैं, और जिस क्षण आप महत्वपूर्ण होना चाहते हैं, आपके पास जबरदस्त ऊर्जा होती है।

अपने दैनिक अस्तित्व को देखो, श्रीमानों; देखिए कैसे पहचाने जाने की यह मांग, महत्वपूर्ण होने का यह संघर्ष हमेशा चलता रहता है। किसी बड़े आदमी की थोड़ी सी चापलूसी, और आप बिल्ली की तरह गुर्राने लगते हैं। आप उसकी महिमा का आनंद लेना चाहते हैं, और

तुम कहते हो, “वह मेरा मित्र है; मैं उसे तब से जानता था जब वह एक लड़का था”—आप उन सभी बचकानी चीज़ों को जानते हैं जिनके साथ हम खेलते हैं।

इसलिए, जब किसी मकसद से परिवर्तन होता है, यानी, जब परिवर्तन मजबूरी से, प्रभाव से लाया जाता है, तो ऐसा परिवर्तन हमेशा शक्ति की ओर होता है, महत्वपूर्ण होने की ओर होता है - न केवल इस दुनिया में महत्वपूर्ण है, बल्कि भगवान के आदमी के रूप में भी महत्वपूर्ण है, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसका अपने दिमाग पर, अपने शरीर पर नियंत्रण है, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो अपने गुणों और बाकी सभी चीजों में सम्मानजनक है।

कृपया इसका गहराई से पालन करें क्योंकि हमें शब्दों से नहीं अपने जीवन से सरोकार है। हम सभी सत्ता चाहते हैं, हम सभी किसी न किसी तरह से महत्वपूर्ण बनना चाहते हैं - भले ही यह केवल एक स्कूल शिक्षक के रूप में हो, जिसकी कक्षा में दस लड़के हों। इसीलिए हमारे पास डिग्रियाँ, उपाधियाँ और वह सब बकवास है।

कोई यह देख सकता है कि जहां बाहरी या आंतरिक रूप से बाध्यकारी परिवर्तन होता है, वहां शक्ति की भावना होती है, जो अंततः किसी प्रकार की तानाशाही की ओर ले जाती है, और शक्ति की यह भावना ऊर्जा पैदा करती है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी अपने मन और शरीर को नियंत्रित करने का प्रयोग किया है, लेकिन यदि आपने किया है, तो आप जानेंगे कि पूरी तरह से उनका स्वामी बनने से आपको एक असाधारण खुशी मिलती है। यह आपको शक्ति का एक महान एहसास देता है - किसी भी सांसारिक स्थिति के साथ आने वाली शक्ति की भावना से कहीं अधिक। हम बिजली आदि के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम बिजली की मनोवैज्ञानिक मांग पर चर्चा कर रहे हैं।

अब, शक्ति की भावना के रूप में ऊर्जा अपनी पूर्ति चाहती है, क्या ऐसा नहीं है?
अर्थात् मैं कर्म के द्वारा स्वयं को पूर्ण करना चाहता हूँ; मैं कुछ बनना या बनना चाहता हूं. मैं प्रबंधक, या मुख्य शिष्य बनना चाहता हूँ; मैं समझना चाहता हूं, बदलना चाहता हूं; मैं शहर का सबसे प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बनना चाहता हूँ; मैं शासक बनना चाहता हूं, या डिग्री हासिल करना चाहता हूं, या बेहतर नौकरी पाना चाहता हूं ताकि अधिक पैसा कमा सकूं - आप जानते हैं कि यह अधिग्रहण का खेल हम खुद के साथ खेलते हैं, और जिसके माध्यम से संतुष्टि मिलती है।

अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि पूर्ति वास्तव में उस मन की मांग है जो शक्ति के लिए तरस रहा है। जब वह शक्ति प्राप्त नहीं कर पाता और इसलिए उस पूर्ति से वंचित रह जाता है, तो उसे निराशा होती है; और अपनी हताशा के दुख से बचने के लिए, वह किसी और चीज़ की ओर मुड़ जाता है जिसके माध्यम से वह फिर से खुद को पूरा करने का प्रयास करता है। यदि मैं इस दुनिया में सफल नहीं हो पाता, तो मैं संत बनने के लिए संघर्ष करता हूं, या अगर मुझे लगता है कि संत बनना लाभहीन है, तो मैं सांसारिक सफलता का प्रयास करता हूं - और इस तरह यह चलता रहता है। परिवर्तन के पैटर्न के अनुरूप होने का आग्रह ऊर्जा पैदा करता है, जो शक्ति की भावना देता है, और शक्ति की भावना पूर्ति के माध्यम से खुद को ऊंचा उठाना चाहती है।

अपने आप को देखो, महोदय; मैं कोई असाधारण बात नहीं कह रहा हूँ बल्कि केवल आपके दैनिक अस्तित्व की प्रक्रिया का वर्णन कर रहा हूँ। उस प्रक्रिया में अत्यधिक दुःख होता है क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं को पूरा करना चाहता है वह अनिवार्य रूप से अतृप्ति के डर में रहता है, और इसलिए दुःख शुरू होता है।

आप देखिए, हम कभी भी अपने आप से यह नहीं पूछते कि क्या वास्तव में संतुष्टि जैसी कोई चीज़ है। एक आदमी किसी शाम को बादलों की एक खूबसूरत रचना देख सकता है और फिर उसे चित्रित करना चाहता है, लेकिन अगर इसे चित्रित करने में वह खुद को पूरा कर रहा है, तो उस कार्य में वह एक चित्रकार नहीं रह गया है। इसी तरह, आप अपने परिवार के माध्यम से खुद को पूरा करने की, अपने बेटे के माध्यम से अपना नाम आगे बढ़ाने की इच्छा कर सकते हैं, और आप इसे प्यार कह सकते हैं; लेकिन यह बिल्कुल भी प्यार नहीं है, भले ही इसे सम्मानित समाज द्वारा प्यार के रूप में मान्यता दी गई हो। यह केवल स्वयं को कायम रखना है। महोदय, आप इसे हंसी में उड़ा सकते हैं, लेकिन यह एक सच्चाई है।

इसलिए, जब तक मन पूरी तरह से सुस्त, पूरी तरह से असंवेदनशील, पूरी तरह से अपने आप में बंद न हो जाए, उसे अनिवार्य रूप से यह पता लगाने के लिए पूछताछ करनी चाहिए कि क्या बिना मकसद के बदलाव संभव है, क्योंकि मकसद के साथ बदलाव केवल शक्ति और आगे दुख की ओर ले जाता है। क्या परिवर्तन का कोई ऐसा तरीका है जिसका कोई मकसद न हो, जो तुलना पर आधारित न हो, जो किसी की वर्तमान स्थिति पर प्रतिक्रिया न हो? हमें इस मुद्दे पर बहुत स्पष्ट होना चाहिए क्योंकि हम हमेशा द्वंद्व के संदर्भ में सोचते हैं: अच्छा और बुरा, अमीर और गरीब, स्वर्ग और नरक, इत्यादि। उस परिवर्तन को एक मकसद के साथ देखने से शक्ति की तीव्र अनुभूति पैदा होती है, जो अपनी सभी कुंठाओं, सीमाओं और दुखों के साथ पूर्णता का एक रूप है, हम दूसरे की तलाश करके उससे बचना चाहते हैं; लेकिन दूसरे की तलाश नहीं की जानी चाहिए - यह कोई प्रतिक्रिया नहीं है, यह शक्ति के लिए हमारी लालसा के विपरीत नहीं है। बिना किसी मकसद के बदलाव करना पूरी तरह से अलग बात है; यह बिना सोचे-समझे आता है, जैसे सुबह से शाम, अंधकार से प्रकाश की ओर परिवर्तन।

मन सत्ता की इच्छा की विनाशकारी और भ्रष्ट प्रकृति को अपनी हताशा और दुख के साथ देखता है, और उसकी तत्काल प्रतिक्रिया उस सब से भागने की कोशिश करना है जिसे ब्रह्मांडीय चेतना, सत्य, ईश्वर कहा जाता है - आप उन सभी उच्च-ध्वनि को जानते हैं जो शब्द हम प्रयोग करते हैं. लेकिन यह कोई बदलाव नहीं है. यह केवल जो रहा है उसके परिणाम की ओर एक निरंतरता है, जो कि क्या होगा।

तो, क्या जांच का कोई तरीका है जो मन को ऊर्जा की, समझ की उस स्थिति में रहने में मदद करेगा, जो निरंतर परिवर्तन है, एक शाश्वत गति है जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है? क्या आप प्रश्न समझते हैं, महोदय? कृपया पहले प्रश्न को समझें, और यह न पूछें कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए, अपने छोटे से घर में अपने उपयोग के लिए उस शाश्वतता को कैसे प्राप्त किया जाए।

प्रश्न यह है: आप सभी सत्ता की लालसा, मान्यता की लालसा, महत्वपूर्ण पद की लालसा, उसकी पूर्तियों और निराशाओं, उसके दुखों, पीड़ाओं और भय से परिचित हैं। आप जानते हैं कि वह लालसा किस प्रकार एक असाधारण ऊर्जा देती है, जिसके बिना आप पचास वर्षों तक अपनी नौकरियाँ, अपने झगड़े, अपने संघर्ष और दुखों को दिन-ब-दिन जारी नहीं रख सकते। और आपकी क्षमता जितनी अधिक होगी, उस ऊर्जा के प्रयोग के लिए आपका क्षेत्र उतना ही व्यापक होगा, और इसलिए आप अपने चारों ओर उतनी ही अधिक बुराई पैदा करेंगे।

अब, यदि आप सत्ता की इस लालसा की विनाशकारी प्रकृति को देखते हैं, यदि आप इसकी पूरी शारीरिक रचना से अवगत हैं, तो निश्चित रूप से आप अपने आप से यह पूछने के लिए बाध्य हैं कि क्या मन को बदलने का कोई तरीका है जो इसका परिणाम नहीं है सत्ता की लालसा. क्या तुम समझ रहे हो?

हम देखते हैं कि शक्ति की यह लालसा, जिस ऊर्जा के साथ यह जागृत होती है, विनाशकारी है, और महत्वाकांक्षी मन लगातार गिरावट, क्षय की लहर से धकेला जा रहा है। यदि आप कहते हैं कि यह सब स्वाभाविक है, अपरिहार्य है, मनुष्य किसी अन्य तरीके से नहीं जी सकता, तो आपके लिए यह कोई समस्या नहीं है।

आप भ्रष्टाचार, क्षय को स्वीकार करते हैं। आप उस ढाँचे के भीतर अपने दुखों और गुज़रती खुशियों के साथ, अपने अनुकरण किए गए गुणों और अपने आविष्कृत देवताओं के साथ रहने में संतुष्ट हैं। लेकिन यदि आप प्रश्न करना, अन्वेषण करना, खोज करना शुरू करते हैं - इसलिए नहीं कि शंकर या बुद्ध ने ऐसा कहा, बल्कि अपने स्वयं के प्रयास, अपनी जागरूकता, अपनी बुद्धि के माध्यम से - तो आप पाएंगे कि आप अनजाने में उन सभी से पूरी तरह से दूर जा रहे हैं। नई दिशा। फिर एक ऐसा बदलाव आता है जो कोई प्रतिक्रिया नहीं है, मन द्वारा गढ़ा हुआ नहीं है।

महोदय, एक अवस्था होती है जिसमें सभी गुण होते हैं, और वह है ध्यान की अवस्था। पूरी तरह से चौकस रहना पूरी तरह से सदाचारी होना है, और इसलिए अच्छाई में, सुंदरता में खिलना है। लेकिन अब आप क्या करते हैं? आप अपने लिए एक छोटा सा आश्रय, जीवन की नदी में एक शांत बैकवॉटर ढूंढते हैं, और वहां आप आगे बढ़ते हैं, आप कार्य करते हैं, आप "परिवर्तन" करते हैं। तो शायद आप इन चीजों के बारे में बहुत गंभीर होने का इरादा नहीं रखते हैं, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि आपने केवल शब्द ही सुने हैं, तो आपने जो सुना है वह आपके दिमाग में रह सकता है क्योंकि आपका दिमाग प्रचार-प्रसार के लिए प्रवण है, लेकिन तब ये बातें कई अन्य शोरों के बीच केवल एक और शोर बनकर रह जाएंगी। जबकि, जो व्यक्ति वास्तव में इस सारे शोर में, मन की बातचीत में पूछताछ करना शुरू कर देता है, उसे अनिवार्य रूप से ऊर्जा की उस स्थिति में आना चाहिए जो अंतहीन रूप से घूम रही है, और जो उसकी अपनी इच्छाओं के जाल में नहीं फंसती है।

इसलिए परिवर्तन की, परिवर्तन की समस्या को पर्यावरणीय प्रभावों के संदर्भ में नहीं सोचा जाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि हमें एक क्रांति की आवश्यकता है - एक आर्थिक क्रांति, एक विश्व क्रांति - ताकि एक क्रांति हो

सरकार, पृथ्वी हमारी है। यह अमीर आदमी की धरती या गरीब आदमी की धरती नहीं है; यह रूस या अमेरिका, भारत या चीन का नहीं है, यह हमारी, आपकी और मेरी धरती है, जिस पर रहना, आनंद लेना, संजोना, प्यार करना है। लेकिन वह बाहरी क्रांति तभी लाई जा सकती है जब आपकी चेतना में क्रांति हो, आपके मन में संकट हो - यानी, जब आप राष्ट्रवादी नहीं रह गए हों, जब आप भारतीय, पारसी, कम्युनिस्ट नहीं रह गए हों , या इनमें से कोई भी चीज़, जब आप संपूर्ण मनुष्य हों। हमें एक विश्व क्रांति की आवश्यकता है क्योंकि केवल ऐसी क्रांति ही हमारी आर्थिक समस्या, भुखमरी की समस्या का समाधान करेगी। लेकिन राजनेताओं को भुखमरी की समस्या से नहीं बल्कि एक विशेष व्यवस्था से चिंता है और वे इस बात पर झगड़ते हैं कि कौन सी व्यवस्था इस समस्या का समाधान करेगी। बाहरी तौर पर क्रांति लाने के लिए आपको अंदर से बदलाव लाना होगा। यदि आप नहीं बदलते, तो चुनौती आपको नष्ट कर देती है। आपको चुनौती का सही ढंग से जवाब देना होगा; अन्यथा, आपको—एक मनुष्य के रूप में, एक संस्कृति के रूप में, एक जाति के रूप में—फेंक दिया जाता है।

आंतरिक परिवर्तन की समस्या की जांच करने के लिए - जो कि कहीं अधिक कठिन है - व्यक्ति को शक्ति की इस लालसा के बारे में पूरी तरह से जागरूक होना चाहिए जो हमारे पास है। और क्या मन, इस लालसा के महत्व को समझ सकता है, यह समझ सकता है कि किसी मकसद के साथ बदलना शक्ति की तलाश का एक रूप है, इसकी सभी बारीकियों, इसके संघर्ष, इसके दर्द, इसकी पूर्ति और निराशा के साथ- इन सबके प्रति जागरूक होना, क्या मन जानबूझकर, होशपूर्वक, बिना किसी उद्देश्य के, जाने दे सकता है? क्या आप समझते हैं श्रीमान? यही संसार का वास्तविक त्याग है - देवताओं को बदलना या साधु बनना या किसी मठ में शामिल होना या अलग-अलग कपड़े पहनना नहीं। वास्तविक त्याग, जो कि क्रांति है, सत्ता की चाहत, महत्वपूर्ण होने की चाहत, पहचान पाने की इच्छा का पूर्ण परित्याग है - जिसका अर्थ है, वास्तव में, एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करना जिसके बारे में हम कुछ भी नहीं जानते हैं। ऐसी दुनिया में प्रवेश करना जिसके बारे में हम पहले से ही जानते हैं, त्याग नहीं है।

त्याग है, क्रांति है, केवल तभी जब हम एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते हैं जहां मन पहले कभी नहीं गया है, जहां उसने खुद को प्रक्षेपित नहीं किया है, जहां उसका कोई भविष्य नहीं है, कोई अतीत नहीं है, लेकिन केवल ध्यान, जांच और धारणा की भावना है।

धारणा का कोई अतीत नहीं होता; धारणा संचयी नहीं है; और केवल धारणा के जागरण के साथ ही एक ऐसी ऊर्जा उत्पन्न होती है जो मन का उत्पाद नहीं है। इसका अनुवाद "भगवान" के रूप में न करें—इसका भगवान के बारे में आपकी कुरूप धारणाओं से कोई लेना-देना नहीं है। एक ऊर्जा है जो अपने आप में रचनात्मक है, शाश्वत है, और उसे समझे बिना, उसका स्वाद चखे बिना, उसे अपनाए बिना, उसकी सुंदरता को जाने बिना, केवल ईश्वर के बारे में सोचने का कोई मूल्य नहीं है। लेकिन यह आपके पूछे बिना, अंधेरे में, रहस्यमय तरीके से आता है।

हमारा जीवन सुन्दर नहीं है; हमारा जीवन नीरस, उथला, खोखला है; हमारी ऊर्जा सीमित है, और वह मर जाती है। हम नफरत, ईर्ष्या, ईर्ष्या को जानते हैं - ये ऐसी चीजें हैं जिनके साथ हम घनिष्ठ हैं। जाहिर सी बात है कि हमें ये सब छोड़ना होगा. बिना किसी उद्देश्य के दयालु होना, बिना किसी हिसाब-किताब के उदार होना, जो कुछ भी उसके पास है उसे बांटना, बदले में कुछ मांगे बिना अपने दिल, दिमाग और हाथ से देना - यह हमें करना ही चाहिए, यह केवल सभ्य है, सभ्य है, लेकिन यह दूसरा नहीं है. यह घर को व्यवस्थित, चमकीला, बेदाग साफ-सुथरा रखने जैसा है। घर को साफ-सुथरा और व्यवस्थित रखना निःसंदेह आवश्यक है, लेकिन यदि हम दूसरे को प्राप्त करने की आशा में ऐसा करते हैं, तो वह कभी नहीं आएगा।

मन को स्वच्छ, सतर्क, सतर्क रखें; विचार की हर गतिविधि का निरीक्षण करें, हर शब्द का महत्व देखें, लेकिन बिना किसी मकसद के, बिना किसी आग्रह या दबाव के। तब आप पाएंगे कि एक असाधारण घटना घटती है - एक ऐसी ऊर्जा आती है जो आपकी अपनी नहीं है, जो आप पर उतरती है। उस ऊर्जा में एक कालातीत अस्तित्व है, और वह ऊर्जा वास्तविकता है।

3 जनवरी, 1960

पाँचवीं वार्ता बम्बई में

ऐसी कई चीज़ें हैं जिन पर मैं आज शाम आपके साथ चर्चा करना चाहूँगा, विशेष रूप से मन की संवेदनशीलता और ध्यान। लेकिन इससे पहले कि हम इन चीजों में जाएं, मुझे लगता है कि मन की एक निश्चित स्पष्टता होना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस स्पष्टता के बिना, मन में बहुत गहराई से सोचने की क्षमता नहीं है। स्पष्टता, चाहे किसी भी स्तर पर हो, पूर्णतः आवश्यक है। अगर आपको अपने घर का रास्ता साफ नहीं है तो आप भ्रमित हो जाते हैं। यदि आप अपनी भावनाओं के बारे में बहुत स्पष्ट नहीं हैं, तो आत्म-विरोधाभास होता है। यदि आप अपनी सोच के तरीकों को स्पष्ट रूप से नहीं समझते हैं, तो स्पष्टता की कमी से भ्रम पैदा होता है। इसलिए हर दिशा में स्पष्टता जरूरी है। और मुझे ऐसा लगता है कि वास्तव में स्पष्ट दिमाग रखना सबसे कठिन काम है क्योंकि स्पष्टता विकसित नहीं की जा सकती, सीखी नहीं जा सकती; बल्कि, यह देखने के माध्यम से, अवलोकन के माध्यम से, धारणा के माध्यम से अस्तित्व में आता है।

मैं जिस स्पष्टता की बात कर रहा हूं वह सौंदर्य की भावना का हिस्सा है। मुझे नहीं पता कि ऐसा क्यों है, और मैं किसी को भी आंक नहीं रहा हूं, लेकिन ऐसे बहुत कम लोग हैं जो सुंदरता के प्रति संवेदनशील हैं - सूर्यास्त की सुंदरता, चेहरे की सुंदरता, वक्र की सुंदरता, किसी पेड़ की सुंदरता या हवा में लहराते पत्ते की सुंदरता, पंख पर बैठे पक्षी की सुंदरता, या किसी भाव या शब्द की सुंदरता। मैं अभिव्यक्ति की उतनी बात नहीं कर रहा हूँ जितनी भावना की

गुणवत्ता, सुंदरता की बनावट। मेरा मानना है कि सुंदरता के प्रति संवेदनशीलता स्पष्टता के साथ आती है। सुंदरता की ही तरह स्पष्टता भी संपूर्ण अस्तित्व की एक अवस्था है। सुंदरता केवल चेहरे में, रूप में नहीं होती; यह एक इंसान की समग्रता है, एक पेड़ की समग्रता है, आकाश की विशालता है, एक पत्ते पर सूरज की रोशनी की संपूर्णता है, पानी पर चांदनी की संपूर्णता है। सुंदरता एक संपूर्ण चीज़ है. उसी तरह, स्पष्टता आंशिक नहीं है. यदि आप अर्थशास्त्र के बारे में या चंद्रमा पर कैसे पहुंचें के बारे में स्पष्ट हैं और अपनी सोच के तरीकों, अपने दिमाग के संचालन के बारे में पूरी तरह से अस्पष्ट हैं, तो कोई स्पष्टता नहीं है। इसी तरह, जब आप आत्म-विरोधाभास की स्थिति में होते हैं, तो आप किसी चित्र की सुंदरता नहीं देख सकते हैं, या संगीत की सुंदरता नहीं सुन सकते हैं।

मुझे लगता है कि स्पष्टता एक ऐसी चीज़ है जो पूरे दिमाग में व्याप्त है; यह किसी के संपूर्ण अस्तित्व की अनुभूति है। निश्चित रूप से, महोदय, स्पष्टता ही सरलता है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग कार्य या व्यवहार के संदर्भ में सरलता के बारे में सोचते हैं; हम सोचते हैं कि इसका संबंध मुख्य रूप से हमारे बोलने के तरीके या हमारी पोशाक की प्रकृति से है। दूसरे शब्दों में, हम सादगी को केवल अभिव्यक्ति का विषय मानते हैं। हम कहते हैं कि एक आदमी बहुत सरल है क्योंकि उसके पास केवल दो लंगोटियां हैं, या क्योंकि उसने इसे त्याग कर वह अपना लिया है। हम सादगी को पहनावे से, जीवन के बाहरी तौर-तरीके से आंकते हैं। लेकिन मेरे लिए, सादगी एक आंतरिक स्थिति है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है, कोई तुलना नहीं है; यह किसी भी समस्या से निपटने में धारणा का गुण है।

जीवन तेजी से जटिल होता जा रहा है, अधिक से अधिक विशेषज्ञ हमेशा एक-दूसरे का खंडन करते रहते हैं; और एक मन जो जीवन को उसकी सभी जटिलताओं और समस्याओं के साथ समझना चाहता है, उसे निश्चित रूप से इसे बहुत सरलता से देखना चाहिए। लेकिन मन सरल नहीं होता जब वह किसी समस्या को एक निश्चित विचार या विश्वास, या विचार के एक विशेष पैटर्न के साथ देखता है। मेरा मानना है कि सरलता का दृढ़ संकल्प से कोई लेना-देना नहीं है। जो मन दृढ़ निश्चयी होता है वह कभी भी सरल मन नहीं होता।

कृपया यह सब अवश्य सुनें क्योंकि जब तक आप यह नहीं समझेंगे कि मैं अभी क्या कह रहा हूँ, आप यह नहीं समझ पाएँगे कि मैं मन और ध्यान के बारे में क्या कहने का प्रयास करूँगा। स्पष्टता, सरलता, सौंदर्य की इस असाधारण भावना का अनुभव किए बिना, आप संभवतः उस जटिल मशीनरी को नहीं समझ सकते हैं जिसे हम मन कहते हैं। हममें से अधिकांश लोगों के दिमाग के बारे में पूर्वकल्पित विचार होते हैं। हम इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं कि मन क्या है, या इसे क्या होना चाहिए, और हम उस निष्कर्ष के साथ, उस विश्वास के साथ पहुंचते हैं; इसलिए हमारे लिए मन को समझना असंभव नहीं तो बहुत कठिन हो जाता है।

सबसे पहले, आपका मन सरल नहीं है, क्या ऐसा है? निस्संदेह, एक सरल दिमाग वह है जो बिना किसी उद्देश्य के कार्य करता है, सोचता है और महसूस करता है।

कृपया जो कहा जा रहा है उस पर थोड़ा ध्यान दें। हो सकता है कि आपने पिछली बातचीत सुनी हो, या आपने वह पढ़ा हो जो पहले ही कहा जा चुका है, लेकिन कृपया अब सुनें ताकि आप सुन रहे हैं, इस भावना, जीवन की इस गति का अनुभव कर सकें जिसका कोई मकसद नहीं है।

जहां एक मकसद है, वहां एक रास्ता, एक विधि, एक अभ्यास, अनुशासन की एक प्रणाली होनी चाहिए। मकसद एक अंत की, एक लक्ष्य की इच्छा से लाया जाता है, और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक रास्ता, अनुशासन का कुछ रूप होना चाहिए; और ऐसा मन सरल नहीं है, ऐसा मन स्पष्ट नहीं है क्योंकि यह अपने भीतर द्वंद्व पैदा करता है। किसी को स्वयं इस अत्यंत सरल तथ्य को समझने से शुरुआत करनी होगी कि जहां कोई मकसद है, वहां जीवन में आत्म-विरोधाभास है। मेरे लिए, ध्यान मन को सभी उद्देश्यों से मुक्त करना है, और इसके लिए लक्ष्यों, प्रणालियों, प्रथाओं, अनुशासनों की संपूर्ण समस्या पर आश्चर्यजनक ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसलिए, मैं मन का वर्णन करना चाहूंगा, और वर्णन सुनते समय, कृपया अपने मन की प्रकृति के बारे में भी जागरूक रहें। मन केवल विचारों का भंडार नहीं है; इसमें वे विचार भी शामिल हैं, साथ ही वे सीमाएँ भी हैं जो समय ने इस पर थोप दी हैं, और यह कुछ ऐसा भी है जो समय से संबंधित नहीं है। एक बढ़िया मशीन की तरह सुचारु रूप से कार्य करना, निश्चित रूप से एक अच्छे दिमाग के गुणों में से एक है; इसी तरह बिना किसी निष्कर्ष के स्पष्ट रूप से तर्क करने और बिना किसी पूर्वाग्रह के विचार करने की क्षमता भी है। मन वैसे ही अलग, पृथक होने का भाव है; यह स्मृति, अनुभव करने की क्षमता और उस अनुभव को ज्ञान के रूप में संग्रहीत करने की क्षमता भी है। मन भी समय है - समय उन चीज़ों की ओर देखने के अर्थ में जो हो चुकी हैं, और जो होंगी उसकी प्रतीक्षा करने के अर्थ में - पहले और बाद का समय। ये सभी तत्व मन का निर्माण करते हैं।

लेकिन मन भी इन सबको कवर करने वाली एक चीज़ है, कुछ ऐसा जो महज़ एक शब्द और उस शब्द की पहचान नहीं है। निस्संदेह, मन आकाश की तरह है जिसमें सब कुछ समाहित है। एक पेड़ केवल पत्ती, फूल, शाखा, तना या जड़ नहीं है; यह एक समग्रता है जिसमें ये सभी चीजें शामिल हैं। इसी प्रकार, मन एक समग्रता है, और मन की समग्रता को महसूस करना, इसके प्रति जागरूक होना वास्तव में ध्यान की शुरुआत है। यदि हम मन की समग्रता को महसूस नहीं करते हैं, तो हम इसे मात्र एक मशीन में बदल देते हैं - जो कि हम में से अधिकांश के लिए है।

हममें से अधिकांश के लिए मन एक शब्द, एक प्रतीक, एक छवि है; यह स्मृति, अनुभव की पृष्ठभूमि से नामकरण की एक प्रक्रिया है। एक निश्चित नौकरी या पेशा सीखने के बाद, मेरा दिमाग स्वचालित रूप से कार्य करना जारी रखता है; अपनी पत्नी या पति के साथ, मेरे साथ एक निश्चित संबंध स्थापित करना

बच्चों, समाज के साथ, मैं बिना कुछ सोचे-समझे आगे बढ़ता रहता हूँ। विभिन्न उत्तेजनाओं के प्रति मेरी प्रतिक्रियाएँ यांत्रिक हैं। मेरा मन अशांत नहीं होना चाहता; यह सवाल नहीं उठाना चाहता, अनिश्चित नहीं होना चाहता, इसलिए यह आचरण का एक पैटर्न, विचार का, मनुष्य और प्रकृति के साथ-साथ संपत्ति, चीजों के साथ संबंध का एक पैटर्न स्थापित करता है।

यह निश्चित रूप से हम में से अधिकांश के लिए सच है, जैसा कि हम जानते हैं कि क्या हम अपने दिमाग के संचालन के प्रति बिल्कुल भी चौकस हैं। जरा देखिये कि आपका मन प्रेम, भगवान, साम्यवाद, भारत, गीता जैसे शब्दों का कितना गुलाम है । मन प्रतीकों का आविष्कार करता है और प्रतीकों का गुलाम बन जाता है, और तब प्रतीक जीवन की क्रिया से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

कृपया, महोदय, मैं किसी विदेशी चीज़ का वर्णन नहीं कर रहा हूँ; मैं एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन कर रहा हूँ जो वास्तव में हम में से प्रत्येक के दैनिक अस्तित्व में घटित हो रही है। और मैं नहीं समझता कि मन अपने भीतर गहराई तक कैसे उतर सकता है यदि वह इन प्रतीकों, इन शब्दों से मुक्त नहीं है जिनकी मन पर पकड़ हमारे अनुभवों, हमारी यादों का परिणाम है। मन ज्ञान का संचय करता है, जो मूलतः प्रतीक है, शब्द है; और यदि मन स्वयं को प्रतीक से, शब्द से, स्मृति से, जो कि ज्ञान है, मुक्त करने में असमर्थ है, तो वह कभी भी अपने व्यापक क्षेत्रों में नहीं भटक सकता है।

जाहिर है, हम उन चीजों को नहीं भूल सकते जिन्हें हमें जानना चाहिए। हम बोलना नहीं भूल सकते; हम घर का रास्ता नहीं भूल सकते; हम अपने विभिन्न व्यवसायों, या उन तकनीकों को नहीं भूल सकते जो विज्ञान के माध्यम से विकसित की गई हैं।
यह सब हमारे पास होना ही चाहिए और हम इसे भूल नहीं सकते। लेकिन दिमाग का दूसरा हिस्सा भी है जो खुद को समय के अनुसार प्रोजेक्ट करता है, जो हासिल किए जाने वाले लक्ष्य के रूप में भविष्य का निर्माण करता है। तो मन जैसा कि हम जानते हैं कि यह समय है; यह समय का परिणाम है - पहले और बाद का समय, अतीत या भविष्य में जीने की प्रक्रिया के रूप में समय, जो स्पष्ट रूप से वर्तमान की समझ से इनकार करता है। मैं कालानुक्रमिक समय की बात नहीं कर रहा हूं, बल्कि उपलब्धि की क्रमिक प्रक्रिया के प्रकटीकरण के लिए एक मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के रूप में समय की बात कर रहा हूं जिसे हम विकास कहते हैं।

हम कहते हैं कि हमारे पास समझने के लिए समय होना चाहिए - समय ही भविष्य है।

मुझे आशा है कि मैं यह सब स्पष्ट कर रहा हूं और इसे जटिल नहीं बना रहा हूं। लेकिन जीवन जटिल है; मन जटिल है. व्यक्ति को इन सभी समस्याओं पर स्वयं गौर करना होगा, न कि केवल यह कहना होगा, "मुझे समय से मुक्त होने में मदद करें।" निःसंदेह, कोई व्यक्ति जो कर सकता है, वह है मन के इन सभी स्वरूपों के प्रति पूरी तरह से जागरूक होना और उनके माध्यम से एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाना, जिसे मन द्वारा मापा नहीं जा सकता, क्योंकि मन खुद को मुक्त करने के लिए जो कुछ भी करता है वह हमेशा होता है। समय के क्षेत्र के भीतर. मन द्वारा किया गया कोई भी प्रयास मन को और सीमित कर देगा क्योंकि प्रयास का तात्पर्य एक लक्ष्य के लिए संघर्ष से है, और जब आपके पास एक लक्ष्य, एक उद्देश्य, एक लक्ष्य होता है।

अंत में, आपने मन पर एक सीमा लगा दी है; और ऐसे ही मन के साथ आप ध्यान करने का प्रयास कर रहे हैं।

क्या आप समझते हैं श्रीमान? सबसे पहले, कृपया समस्या देखें. समस्या यह नहीं है कि ध्यान कैसे करें, या किस पर ध्यान करें, बल्कि समस्या यह है कि क्या मन ध्यान करने में बिल्कुल भी सक्षम है। हमें बताया गया है कि हमें ध्यान करना चाहिए, और ध्यान के माध्यम से हम एक परिणाम प्राप्त करने की आशा करते हैं - खुशी, ईश्वर, सत्य, या जो आप चाहते हैं। तो हम ध्यान करने का प्रयास करते हैं, और जहां प्रयास है, वहां समय का तत्व है। हम कहते हैं, "अनुशासन के माध्यम से, अभ्यास के माध्यम से, नियंत्रण के माध्यम से, समय की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से, मैं यह समझ प्राप्त करूंगा कि ईश्वर क्या है।"

मेरे लिए, वह बिल्कुल भी ध्यान नहीं है। यह सरासर आत्म-सम्मोहन है, किसी के स्वयं के भ्रम और अनुभवों का प्रक्षेपण है - जो आपको दर्शन दे सकता है। लेकिन यह जानने के लिए कि ध्यान क्या है, निश्चित रूप से, आपको उस मन की प्रकृति को समझना होगा जो समस्या का सामना करता है। आप ध्यान करना चाहते हैं क्योंकि आपने ध्यान की असाधारण प्रकृति के बारे में पढ़ा है या बताया गया है। तुमने सुना है कि इसमें एक खास तरह की सुंदरता का एहसास है, एक खास तरह की शांति और मौन का गुण है; इसलिए आप ध्यान करने के प्रयास में अपने मन को नियंत्रित, अनुशासित करते हैं, उस मौन, उस शांति को महसूस करने की आशा करते हैं।

अब, इससे पहले कि आप उस मौन को महसूस कर सकें, इससे पहले कि आप पता लगा सकें कि सत्य क्या है, ईश्वर क्या है, आपको उस मन को समझना होगा जो ध्यान कर रहा है; अन्यथा, चाहे वह कुछ भी करे, मन अभी भी अपने ज्ञान और अनुकूलन के क्षेत्र में ही खेलता रहेगा। आप कुछ क्षमताएं जागृत कर सकते हैं, आपके पास दर्शन और बाकी सब कुछ हो सकता है, लेकिन यह सब भ्रम का एक रूप होगा। यदि आप स्वयं को धोखा देना पसंद करते हैं, यदि आप भ्रम को स्वीकार करते हैं, तो हर तरह से इसके साथ खेलते रहें। लेकिन यदि आप वास्तव में जानना चाहते हैं कि ध्यान क्या है, तो निश्चित रूप से आपको यह पूछकर शुरुआत नहीं करनी चाहिए कि ध्यान कैसे करें, बल्कि यह पता लगाने के लिए पूछताछ करें कि क्या जो मन समस्या की ओर बढ़ रहा है वह समस्या को समझने में सक्षम है।

मुझे नहीं पता कि क्या तुम्हें एहसास है कि मन कितना यांत्रिक है। यह जिसे भी छूता है वह यांत्रिक हो जाता है। आज शाम मैं कुछ बिल्कुल नया देखता हूं, और वह नयापन मन द्वारा अनुभव किया जाता है, लेकिन कल वह अनुभव यांत्रिक हो जाता है क्योंकि मैं उस अनुभूति को, उसके आनंद को दोहराना चाहता हूं। मैं एक प्रक्रिया स्थापित करता हूं, मैं एक विधि स्थापित करता हूं जिसके माध्यम से मैं उस नवीनता को पुनः प्राप्त करना चाहता हूं, इसलिए यह यांत्रिक हो जाता है। मन जिस भी चीज़ को छूता है वह अनिवार्य रूप से यांत्रिक, गैर-रचनात्मक हो जाती है।

तो, सवाल यह है: क्या मेरा दिमाग अपनी यांत्रिक आदतों की प्रकृति का एहसास कर सकता है? क्या यह सिर्फ इस तथ्य से अवगत हो सकता है कि क्या है, और नहीं पूछा जाए

इसे कैसे बदलें, इसे कैसे तोड़ें? मेरा मानना है कि तथ्य का, जो है उसके वास्तविक तथ्य का सरल अहसास, स्पष्टता लाता है।

निश्चित रूप से, इसे समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि हममें से अधिकांश लोग जो है उससे दूर 'क्या होना चाहिए' की ओर जाने की कोशिश करते हैं , जो बहुत सारी समस्याएं और विरोधाभास पैदा करता है। तो मैं बस यह जानना चाहता हूं कि क्या है; बस इतना ही, और कुछ नहीं. मुझे 'क्या होना चाहिए' में कोई दिलचस्पी नहीं है. मैं अपने मन को उसके सभी विरोधाभासों, उसकी ईर्ष्याओं, उसकी आशाओं और निराशाओं, उसकी आक्रामकता, उसकी ईर्ष्या, उसकी धोखा देने की क्षमता के साथ जानना चाहता हूं। और जिस क्षण मैं वास्तव में देखता हूं कि क्या है, तो स्पष्टता आती है - स्पष्टता जो मुझे जो है उसमें बहुत गहराई तक जाने में मदद करेगी।

हममें से अधिकांश के लिए, जो है वह दिलचस्पी का विषय नहीं है; इसलिए, यह जो है उसमें प्रवेश करने की क्षमता को नहीं खोलता है । हम सोचते हैं कि एक आदर्श रखकर हम जो है उसे 'क्या होना चाहिए' में बदल सकते हैं - आदर्श, 'क्या होना चाहिए' यह समझने की क्षमता जगाएगा कि क्या है। लेकिन मुझे लगता है कि यह बिल्कुल विपरीत है - कि जो कुछ है उसमें गहराई तक जाने की क्षमता तब अस्तित्व में आती है जब हम पूरे ध्यान से उसका निरीक्षण करते हैं।

हमारा संपूर्ण अस्तित्व वही है जो है, न कि 'क्या होना चाहिए'। 'क्या होना चाहिए', आदर्श की कोई वास्तविकता नहीं है। आप एक आदर्श बना सकते हैं, और आप उस आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध हो सकते हैं, उसे वास्तविकता कह सकते हैं; लेकिन आदर्श जो है उस पर प्रतिक्रिया है, और प्रतिक्रिया कभी भी वास्तविक नहीं होती। असली तो वही है जो है; यह हमारा दैनिक अस्तित्व है। जो कुछ है वह अतीत द्वारा निर्मित हो सकता है, और उसका भविष्य भी हो सकता है; लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि महत्वपूर्ण बात यह है कि मन अतीत और भविष्य को एक तरफ रख दे और वर्तमान के साथ पूरी तरह से चिंतित रहे, जो है - उसमें गहराई से उतरें, और यह कहकर सतह पर ही न रहें, " खैर, यही मेरी जिंदगी है, जिंदगी इसी तरह चलती है,'' इत्यादि। जीवन एक असाधारण चीज़ है जिसे हम अतीत, पहले का समय, साथ ही भविष्य, उसके बाद का समय कहते हैं; लेकिन जीवन बहुत व्यापक है, बहुत गहरा है—इसका कहीं अधिक गहरा महत्व है यदि मन वर्तमान के माध्यम से इसमें जा सके।

इसे अलग ढंग से कहें तो, सभी अनुभव पिछले अनुभव से वातानुकूलित होते हैं।
यदि कोई ध्यान दे तो वास्तव में अनुभव करने की अवस्था ही होती है। लेकिन जो अनुभव किया जाता है वह तुरंत स्मृति में अनुवादित हो जाता है, जो फिर आगे अनुभव की स्थिति बनाता है। अनुभव की स्थिति आपकी हिंदू, मुस्लिम, ईसाई या आप जो भी पृष्ठभूमि चाहते हैं, उसकी सभी मान्यताओं और अंधविश्वासों के आधार पर निर्धारित होती है।

जैसा कि मैं इसके बारे में बात करता हूं, शायद आपको यह मिल जाएगा; लेकिन वर्णन कभी भी वास्तविक नहीं होता. जो वास्तविक है वह सत्य को तुरंत देखना है क्योंकि सत्य का कोई अस्तित्व नहीं है

भविष्य। आप यह नहीं कह सकते, "मैं इसे कल देखूंगा।" सत्य का कोई अतीत नहीं होता—इसमें कोई निरंतरता नहीं होती, और यही सत्य की सुंदरता, सरलता और स्पष्टता है।

जब मन जो यांत्रिक है यह पता लगाने के लिए जांच करता है कि ध्यान क्या है, तो वह ध्यान को ज्ञात के क्षेत्र में लाना चाहता है। आख़िरकार, मन ही ज्ञात है; यह और कुछ नहीं है. मन अज्ञात नहीं है. और जब मन, जो ज्ञात है, अज्ञात को उजागर करने का प्रयास करता है, तो वह उस उद्देश्य के लिए तरीकों, प्रणालियों, प्रथाओं, अनुशासनों का आविष्कार करता है। मुझे आशा है कि आप कुछ हद तक अनुसरण कर रहे हैं।

अब, समस्या यह नहीं है कि मन, जो कि ज्ञात है, अज्ञात को कैसे उजागर करेगा, क्योंकि वह ऐसा नहीं कर सकता। वह जो कर सकता है वह है अपनी स्वयं की प्रक्रिया के प्रति जागरूक होना, जो कि ज्ञात की प्रक्रिया है - और वह कुछ और नहीं कर सकता है। यह अज्ञात को उजागर करने के लिए आगे नहीं बढ़ सकता, क्योंकि इसमें वह क्षमता नहीं है। आप अपने सिर के बल खड़े हो सकते हैं, अलग-अलग तरीकों से सांस ले सकते हैं, अनुशासन का अभ्यास कर सकते हैं, अपने विचारों को नियंत्रित कर सकते हैं, या अपनी पसंद के अनुसार कुछ भी कर सकते हैं; लेकिन मन चाहे कुछ भी करे, वह अज्ञात को कभी नहीं समझ सकता, या पकड़ नहीं सकता, या महसूस नहीं कर सकता।

तो फिर ध्यान क्या है?

अब, महोदय, जैसा कि मैंने इसका वर्णन किया है, कृपया विवरण का अनुसरण ऐसे करें जैसे कि आप ध्यान कर रहे हों। मेरे लिए, ध्यान का महत्व सबसे अधिक है क्योंकि सारा जीवन ही ध्यान है - जीवन जीने की एक ऐसी अवस्था के अर्थ में ध्यान जिसमें मन की सीमाएं टूट जाती हैं, जिसमें कोई स्वयं नहीं है, कोई केंद्र नहीं है, और इसलिए कोई परिधि नहीं है। ध्यान के बिना जीवन बहुत उथला, यांत्रिक हो जाता है। अतः ध्यान आवश्यक है; यह उतना ही आवश्यक है जितना कि खाना, जितना कि साँस लेना। इसलिए कृपया इसका पालन करें, न केवल मौखिक रूप से, बल्कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, वास्तव में इसका अनुभव करते हैं - जिसका अर्थ है कि ध्यान के बारे में आपने जो पढ़ा है या सिखाया गया है उसका परिचय नहीं देना है क्योंकि तब आप अवलोकन नहीं कर रहे हैं, आप प्रयोगात्मक रूप से इसका पालन नहीं कर रहे हैं।

ध्यान, निश्चित रूप से, कभी भी एकाग्रता की प्रक्रिया नहीं हो सकती क्योंकि सोच का उच्चतम रूप नकारात्मक सोच है। सकारात्मक सोच पूछताछ, खोज के लिए विनाशकारी है। मैं जोर-जोर से, नकारात्मक ढंग से सोच रहा हूं। नकार से सृजन होता है। निषेध सकारात्मक का विपरीत नहीं है, बल्कि एक ऐसी अवस्था है जिसमें न तो सकारात्मक होता है और न ही उसकी प्रतिक्रिया नकारात्मक होती है। यह पूर्ण शून्यता की स्थिति है, और केवल तभी जब मन पूरी तरह से खाली होता है, इस अर्थ में, सृजन होता है। उस खालीपन से जो कुछ भी पैदा होता है वह नकारात्मक सोच है, जो मन की ओर से किसी भी सकारात्मकता या नकारात्मकता तक सीमित नहीं है।

अतः एकाग्रता ध्यान नहीं है। यदि आप निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि एकाग्रता बहिष्कार का एक रूप है; और जहां बहिष्कार है, वहां एक है

विचारक जो बहिष्कृत करता है। यह विचारक, बहिष्करणकर्ता, ध्यान केंद्रित करने वाला व्यक्ति है जो विरोधाभास पैदा करता है क्योंकि तब एक केंद्र होता है जिससे विचलन हो सकता है, एक विकर्षण हो सकता है। तो, एकाग्रता ध्यान का तरीका नहीं है; यह उस चीज़ को उजागर करने का मार्ग नहीं है जिसे अथाह कहा जा सकता है। एकाग्रता का तात्पर्य बहिष्कार से है; इसका तात्पर्य उस विचारक से है जो किसी चीज़ पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास कर रहा है। लेकिन ध्यान की स्थिति, जो एकाग्रता नहीं है, की कोई सीमा नहीं है; यह बिना किसी बहिष्कार के अपने संपूर्ण अस्तित्व को किसी चीज़ के प्रति समर्पित करना है।

अब, क्या आप कृपया कुछ प्रयोग करेंगे जैसा कि मैं बात कर रहा हूँ? देखें कि क्या आप ध्यान की इस अवस्था में रह सकते हैं, ताकि न केवल आपका दिमाग काम कर सके बल्कि आपका पूरा अस्तित्व जागृत रहे। यह मत कहो, "मेरे 'संपूर्ण अस्तित्व' से आपका क्या मतलब है?" इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अपना पूरा ध्यान दें - जिसका अर्थ है बस का शोर, ट्रामकार का शोर सुनना और सन्नाटे को सुनना। यदि आप अपना पूरा ध्यान देंगे, तो आप पाएंगे कि जो कुछ कहा जा रहा है, उसे आप भी आश्चर्यजनक फोकस, कुशाग्रता के साथ सुन रहे हैं; लेकिन यदि आप केवल ध्यान केंद्रित करते हैं, तो बहिष्कार होता है, और इसलिए कोई ध्यान नहीं होता है।

एकाग्रता मन का संकुचित होना है। कक्षा में एक स्कूली छात्र के मामले में मन को संकीर्ण करना बहुत प्रभावी हो सकता है, लेकिन हम जीवन की संपूर्ण प्रक्रिया से चिंतित हैं, और जीवन के किसी विशेष पहलू पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करना जीवन को छोटा कर देता है। जबकि, जब ध्यान का यह गुण होता है, तो जीवन अनंत है; इसे मन से नहीं मापा जा सकता.

आपको बताया गया है कि वास्तविकता, ईश्वर, चाहे आप किसी भी शब्द का उपयोग करना चाहें, ध्यान करने के विभिन्न तरीके हैं। ऐसे तरीके, विधियां, प्रणालियां कैसे हो सकती हैं जिनके द्वारा किसी जीवित चीज़ तक पहुंचा जा सके? जो स्थिर है, स्थिर है, मृत है, उसके लिए कोई रास्ता हो सकता है, एक निश्चित रास्ता, लेकिन जो जीवित है उसके लिए नहीं। यदि आप अपनी पत्नी, अपने पड़ोसी, अपने मित्र को समझना चाहते हैं, तो ऐसा करने का कोई "तरीका" नहीं है; ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जिसके द्वारा जीवित मनुष्य को समझा जा सके। इसी तरह, आप किसी भी तरीके या तरीके से उस तक नहीं जा सकते जो जीवित है, गतिशील है। लेकिन आप वास्तविकता, ईश्वर, या आप जो भी नाम देंगे, उसे एक स्थिर चीज़ में बदल देते हैं, और फिर उस तक पहुंचने के तरीकों का आविष्कार करते हैं।

तो, एकाग्रता ध्यान का तरीका नहीं है, न ही कोई विधि, प्रणाली या अभ्यास आपको वास्तविकता तक ले जा सकता है। यदि आप इस सत्य को देखते हैं - कि किसी भी प्रकार की कोई भी प्रणाली, चाहे वह कितनी भी सूक्ष्म, कितनी भी नई या परंपरा में अच्छी तरह से अनुभवी हो, आपको वास्तविकता तक नहीं ले जा सकती है - तो आप फिर कभी भ्रम के उस क्षेत्र में प्रवेश नहीं करेंगे, और आपका मन पहले ही टूट चुका है अपने बंधनों से अतीत की ओर ढीला; इसलिए, यह ध्यान की स्थिति में है।

ध्यान में अज्ञात की समस्या भी होती है। मन, जैसा कि मैंने कहा, ज्ञात है - ज्ञात वह है जिसका अनुभव किया गया है। अब, उस माप से हम अज्ञात को जानने का प्रयास करते हैं। लेकिन ज्ञात स्पष्ट रूप से अज्ञात को कभी नहीं जान सकता; वह केवल वही जान सकता है जो उसने अनुभव किया है, जो उसे सिखाया गया है, जो उसने एकत्र किया है। तो, क्या मन - कृपया इसका ध्यानपूर्वक पालन करें, महोदय - क्या मन अज्ञात को जानने में अपनी असमर्थता का सच देख सकता है?

निश्चित रूप से, अगर मैं बहुत स्पष्ट रूप से देखूं कि मेरा मन अज्ञात को नहीं जान सकता है, तो पूर्ण शांति है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? अगर मुझे लगता है कि मैं ज्ञात की क्षमताओं से अज्ञात को पकड़ सकता हूं, तो मैं बहुत शोर मचाता हूं; मैं बात करता हूं, मैं अस्वीकार करता हूं, मैं चुनता हूं, मैं इसका रास्ता खोजने की कोशिश करता हूं। लेकिन अगर मन को अज्ञात को जानने में अपनी पूर्ण अक्षमता का एहसास हो, अगर उसे लगे कि वह अज्ञात की ओर एक भी कदम नहीं उठा सकता, तो क्या होता है? तब मन एकदम शांत हो जाता है. यह निराशा में नहीं है; यह अब कुछ भी नहीं खोज रहा है।

खोज की गति केवल ज्ञात से ज्ञात की ओर हो सकती है, और मन केवल यह जान सकता है कि यह गति कभी भी अज्ञात को उजागर नहीं करेगी। ज्ञात की ओर से कोई भी गतिविधि अभी भी ज्ञात के क्षेत्र में ही है। यही एकमात्र चीज़ है जिसे मुझे समझना है; यही एकमात्र चीज़ है जिसे मन को महसूस करना है। तब, बिना किसी उत्तेजना के, बिना किसी उद्देश्य के, मन शांत हो जाता है।

क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि प्रेम मौन है?—यह किसी दूसरे का हाथ पकड़ते समय, या किसी बच्चे को प्यार से देखते समय, या किसी शाम की सुंदरता को लेते हुए हो सकता है। प्रेम का कोई अतीत या भविष्य नहीं होता; और मौन की इस असाधारण स्थिति के साथ भी ऐसा ही है। और इस मौन के बिना, जो पूर्ण शून्यता है, कोई रचना नहीं है। आप अपनी क्षमता में बहुत चतुर हो सकते हैं, लेकिन जहां सृजन नहीं होता, वहां विनाश होता है, क्षय होता है और मन मुरझा जाता है।

जब मन खाली होता है, मौन होता है, जब यह पूर्ण निषेध की स्थिति में होता है - जो खालीपन नहीं है, न ही सकारात्मक होने के विपरीत है, बल्कि एक पूरी तरह से अलग स्थिति है जिसमें सभी विचार बंद हो जाते हैं - केवल तभी यह संभव है कि जो अस्तित्व में आना नामुमकिन है।

6 जनवरी, 1960

छठी वार्ता बम्बई में

यदि संभव हो तो आज दोपहर मैं आपसे दुःख, इच्छाशक्ति और भय के बारे में बात करना चाहूँगा। हममें से अधिकांश लोग मिथकों, प्रतीकों, बनावटी विश्वासों की दुनिया में रहते हैं।

जो हमारे लिए वास्तविकता की दुनिया से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि हम रोजमर्रा की जिंदगी की वास्तविक दुनिया को, उसके सभी दुखों और संघर्षों के साथ नहीं समझते हैं, हम दिखावटी दुनिया, देवताओं की दुनिया, प्रतीकों, विचारों और छवियों की दुनिया बनाकर इससे बचने की कोशिश करते हैं; और जहां वास्तविकता से काल्पनिक तक की उड़ान होती है, वहां हमेशा विरोधाभास, दुःख होता है। यदि हम दुख से मुक्त होना चाहते हैं, तो निश्चित रूप से, हमें उस दिखावटी दुनिया को समझना होगा जिसमें हम लगातार भाग रहे हैं। हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई - इन सभी के पास प्रतीकों और छवियों की अपनी काल्पनिक दुनिया है, और वे इसमें फंस गए हैं। उनके लिए, प्रतीक का अधिक महत्व है और यह जीने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है; यह अचेतन में अंतर्निहित है, और यह उन सभी के जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाता है जो विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं या संगठित धर्मों में से एक या दूसरे से संबंधित हैं।

इसलिए, यदि हम दुख से मुक्त होना चाहते हैं, तो मुझे लगता है कि सबसे पहले, उस काल्पनिक दुनिया को समझना महत्वपूर्ण है जिसमें हम रहते हैं।

यदि आप सड़क पर चलते हैं, तो आपको प्रकृति की भव्यता, हरे-भरे मैदानों और खुले आसमान की असाधारण सुंदरता दिखाई देगी; और तुम बच्चों की हँसी सुनोगे। लेकिन इन सबके बावजूद दुख का एहसास तो है ही. एक बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री की पीड़ा है; मृत्यु में दुःख है; दुःख तब होता है जब आप किसी चीज़ की आशा कर रहे हों और वह घटित न हो; दुःख होता है जब कोई राष्ट्र नष्ट हो जाता है, बीज की ओर चला जाता है; और भ्रष्टाचार का दुःख न केवल सामूहिक में है, बल्कि व्यक्तिगत में भी है। यदि आप गहराई से देखें तो आपके अपने घर में दुःख है - पूरा न कर पाने का दुःख, अपनी क्षुद्रता या असमर्थता का दुःख, और विभिन्न अचेतन दुःख।

जिंदगी में हंसी भी है. हँसी एक प्यारी चीज़ है - बिना वजह हँसना, बिना वजह किसी के दिल में ख़ुशी होना, बदले में कुछ भी न माँगते हुए प्यार करना। लेकिन ऐसी हंसी हमें कम ही आती है. हम दुःख के बोझ से दबे हुए हैं; हमारा जीवन दुख और संघर्ष की एक प्रक्रिया है, एक निरंतर विघटन है, और हम लगभग कभी नहीं जानते कि अपने संपूर्ण अस्तित्व से प्यार करना क्या है।

हर गली में, हर घर में, हर इंसान के दिल में यह दुखद प्रक्रिया चलती देखी जा सकती है। वहाँ दुख है, क्षणभंगुर आनंद है, और मन का क्रमिक क्षय है; और हम हमेशा कोई रास्ता तलाशते रहते हैं। हम एक समाधान, एक साधन या एक तरीका खोजना चाहते हैं जिसके द्वारा जीवन के इस बोझ को हल किया जा सके, और इसलिए हम वास्तव में दुःख को कभी नहीं देखते हैं। हम मिथकों के माध्यम से, छवियों के माध्यम से, अटकलों के माध्यम से भागने की कोशिश करते हैं; हमें आशा है कि हम इस बोझ से बचने का, दुःख की लहर से आगे रहने का कोई रास्ता खोज लेंगे।

मुझे लगता है कि हम इन सब से परिचित हैं। मैं तुम्हें दुःख के बारे में निर्देश नहीं दे रहा हूँ। और यह बेतुका होगा अगर आप अचानक दुःख महसूस करने की कोशिश करें जैसे कि आप यहां बैठे हुए सुन रहे हैं - या अगर आपने खुश होने की कोशिश की; इसका कोई मतलब नहीं होगा. लेकिन अगर कोई अपने जीवन की संकीर्णता, छिछलेपन, क्षुद्रता से थोड़ा भी अवगत है, अगर वह इसके लगातार होने वाले झगड़ों, अपनी असफलताओं, अपने द्वारा किए गए कई प्रयासों को देखता है जिनसे निराशा की भावना के अलावा कुछ नहीं हुआ है, तो उसे अवश्य ही ऐसा करना चाहिए। दुःख नामक इस चीज़ का अनिवार्य रूप से अनुभव करें। किसी भी स्तर पर, चाहे कितना भी थोड़ा या कितना भी गहरा हो, व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि दुःख क्या है। दुख हमारी परछाई की तरह हमारा पीछा करता है और हम उसका समाधान करने में सक्षम नहीं दिखते। इसलिए यदि संभव हो तो मैं आपसे अंत के बारे में बात करना चाहूँगा

दुः ख।

दुख का अंत तो होता है, लेकिन वह किसी तंत्र या विधि से नहीं आता। जो है उसका बोध होने पर दुःख नहीं होता । जब आप बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं कि क्या है - चाहे यह तथ्य हो कि जीवन की कोई पूर्ति नहीं है या यह तथ्य कि आपका बेटा, आपका भाई, या आपका पति मर चुका है; जब आप तथ्य को उसके वास्तविक रूप में जानते हैं, बिना किसी व्याख्या के, बिना उसके बारे में कोई राय रखे, बिना किसी विचार, आदर्श या निर्णय के, तो मुझे लगता है कि दुःख का अंत हो जाता है। लेकिन हममें से अधिकांश के मन में भय की इच्छा, असंतोष की इच्छा, संतुष्टि की इच्छा है।

कृपया केवल वही न सुनें जो कहा जा रहा है, बल्कि स्वयं के प्रति जागरूक रहें; अपने जीवन को ऐसे देखें जैसे कि दर्पण में आपका चेहरा प्रतिबिंबित हो। दर्पण में, आप वही देखते हैं जो - आपका अपना चेहरा - बिना किसी विकृति के। उसी प्रकार, कृपया अब स्वयं को देखें, बिना किसी पसंद या नापसंद के, बिना किसी स्वीकृति या अस्वीकार के, जो आप देखते हैं। बस अपने आप को देखें, और आप देखेंगे कि भय की इच्छा आपके जीवन में राज कर रही है। जहाँ इच्छा है - कार्य की इच्छा, असंतोष की, पूर्ति की इच्छा, संतुष्टि की - वहाँ सदैव भय रहता है। भय, इच्छा और दुःख एक साथ चलते हैं; वे अलग नहीं हैं. जहाँ इच्छा है, वहाँ भय है; जहाँ भय है, वहाँ दुःख है। "इच्छा" से मेरा मतलब है कुछ बनने का दृढ़ संकल्प, हासिल करने का दृढ़ संकल्प, बनने का दृढ़ संकल्प, वह दृढ़ संकल्प जो इनकार करता है या स्वीकार करता है। निश्चय ही ये इच्छा के ही विभिन्न रूप हैं न? क्योंकि जहां इच्छा है, वहां संघर्ष है।

इसे अवश्य देखें और न केवल मैं जो कह रहा हूं बल्कि इच्छाशक्ति के निहितार्थ को भी समझें। जब तक हम इच्छाशक्ति के निहितार्थ को नहीं समझेंगे, हम दुःख को नहीं समझ पायेंगे।

इच्छा इच्छा के विरोधाभासों का परिणाम है; यह "मुझे चाहिए" और "मुझे नहीं चाहिए" के परस्पर विरोधी खिंचाव से पैदा हुआ है, है ना? अनेक आग्रह,

अपने अंतर्विरोधों और प्रतिक्रियाओं से संतुष्टि या असंतोष की इच्छा पैदा करते हैं और उस इच्छा में भय होता है। प्राप्त करने की, होने की, बनने की इच्छा - यह, निश्चित रूप से, वह इच्छा है जो दुःख उत्पन्न करती है।

महोदय, दुख से हमारा क्या तात्पर्य है? आप एक स्वस्थ शरीर और प्यारे चेहरे, उज्ज्वल, बुद्धिमान आँखों और प्रसन्न मुस्कान वाले एक बच्चे को देखते हैं। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, उसे तथाकथित शिक्षा की मशीन से गुजारा जाता है। उसे समाज के एक विशेष ढाँचे के अनुरूप बना दिया जाता है और जीवन का वह आनंद, वह सहज आनंद नष्ट हो जाता है। ऐसी चीजें होते देखना दुखद है, है ना? जिसे आप प्यार करते हैं उसे खोना दुखद है। यह जानकर दुख होता है कि किसी ने जीवन की सभी चुनौतियों का जवाब छोटे, औसत दर्जे के तरीके से दिया है। और क्या यह दुखद नहीं है जब प्रेम जीवन की इस विशाल नदी के एक छोटे से बैकवाटर में समाप्त हो जाता है? यह भी दुखद है जब महत्वाकांक्षा आपको प्रेरित करती है, और आप कुछ हासिल कर लेते हैं - केवल निराशा पाने के लिए। यह जानकर दुख होता है कि मन कितना छोटा है - किसी और का नहीं, बल्कि स्वयं का मन। यद्यपि यह बहुत सारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है, यद्यपि यह बहुत चतुर, धूर्त, विद्वान हो सकता है, मन अभी भी एक बहुत ही उथली, खोखली चीज़ है; और इस तथ्य का एहसास दुख, दुःख की भावना लाता है।

लेकिन इनमें से किसी से भी अधिक गहरा दुःख है - वह दुःख जो अकेलेपन, अलगाव के एहसास के साथ आता है। हालाँकि आप दोस्तों के बीच में हैं, भीड़ में हैं, किसी पार्टी में हैं, या अपनी पत्नी या पति से बात कर रहे हैं, आपको अचानक एक विशाल अकेलेपन का एहसास होता है; पूर्ण अलगाव की भावना होती है, जो दुःख लाती है। और ख़राब सेहत का दुःख भी रहता है.

हम जानते हैं कि दुःख के ये विभिन्न रूप मौजूद हैं। हो सकता है कि हमने वास्तव में उन सभी का अनुभव न किया हो, लेकिन अगर हम चौकस हैं, जीवन के प्रति जागरूक हैं, तो हम जानते हैं कि उनका अस्तित्व है; और हममें से अधिकांश लोग उनसे बचना चाहते हैं। हम दुःख को समझना नहीं चाहते, हम उसे देखना नहीं चाहते, हम यह नहीं कहते, "यह सब क्या है?" हमें केवल दुःख से बचने की चिंता है। यह अप्राकृतिक नहीं है, यह इच्छा की एक सहज गति है, लेकिन हम इसे अपरिहार्य के रूप में स्वीकार करते हैं, और इसलिए दुःख के तथ्य की तुलना में पलायन कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। दुख से भागने में हम मिथक में, प्रतीक में खो जाते हैं; इसलिए, हम यह जानने के लिए कभी पूछताछ नहीं करते कि दुःख का कोई अंत है या नहीं।

आख़िरकार, जीवन समस्याएँ तो लाता ही है। हर मिनट जिंदगी एक चुनौती खड़ी करती है, एक मांग करती है; और यदि किसी की प्रतिक्रिया अपर्याप्त है, तो प्रतिक्रिया की अपर्याप्तता निराशा की भावना पैदा करती है। इसीलिए, हममें से अधिकांश के लिए, पलायन के विभिन्न रूप बहुत महत्वपूर्ण हो गए हैं। हम संगठित धर्मों और विश्वासों के माध्यम से बच निकलते हैं; हम प्रतीक, छवि के माध्यम से बच निकलते हैं, चाहे वह मन द्वारा गढ़ा गया हो या हाथ से। यदि मैं अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता

इस जीवन में, अगला जीवन हमेशा होता है। अगर मैं गम नहीं मिटा सकता, तो मुझे मनोरंजन में खो जाने दो; या, कुछ हद तक गंभीर दिमाग वाला होने के कारण, मैं ज्ञान प्राप्त करने के लिए किताबों की ओर रुख करता हूं। हम अधिक खाने से, लगातार बात करने से, झगड़ने से, अत्यधिक उदास होने से भी बच जाते हैं।

ये सभी पलायन हैं, और न केवल वे हमारे लिए असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हो जाते हैं, बल्कि हम उनमें से कुछ पर लड़ते हैं - आपका धर्म और मेरा धर्म, आपकी विचारधारा और मेरी विचारधारा, आपका कर्मकांड और मेरा कर्मकांड विरोधी।

कृपया स्वयं देखें, और कृपया मेरे शब्दों से मंत्रमुग्ध न हों। आख़िरकार, मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ वह कोई अमूर्त सिद्धांत नहीं है; यह आपका अपना जीवन है क्योंकि आप वास्तव में इसे दिन-प्रतिदिन जीते हैं। मैं इसका वर्णन कर रहा हूं, परंतु वर्णन से संतुष्ट नहीं होना है। विवरण के माध्यम से स्वयं के प्रति जागरूक रहें, और आप देखेंगे कि कैसे आपका जीवन भागने के विभिन्न तरीकों में फंस गया है। इसीलिए तथ्य को देखना, विचार करना, अन्वेषण करना, जो है उसकी गहराई में जाना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जो है उसका कोई समय नहीं है, कोई भविष्य नहीं है। जो है वह शाश्वत है. जो है वही जीवन है; जो है वह मृत्यु है; जो है वह प्रेम है, जिसमें कोई तृप्ति या निराशा नहीं है। ये तथ्य हैं, अस्तित्व की वास्तविक वास्तविकताएँ। लेकिन एक मन जिसे पलायन के विभिन्न मार्गों में पाला-पोसा गया है, संस्कारित किया गया है, उसे यह देखना असाधारण रूप से कठिन लगता है कि क्या है; इसलिए, यह प्रतीकों और मिथकों के अध्ययन में वर्षों का समय लगाता है, जिनके बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, या यह खुद को समारोहों या किसी विधि, प्रणाली, अनुशासन के अभ्यास में खो देता है।

निश्चित रूप से जो महत्वपूर्ण है, वह तथ्य का निरीक्षण करना है और राय पर टिके नहीं रहना है या केवल उस प्रतीक पर चर्चा नहीं करना है जो तथ्य का प्रतिनिधित्व करता है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? प्रतीक शब्द है. मौत ले लो. मृत्यु शब्द एक प्रतीक है जिसका उपयोग तथ्य के सभी निहितार्थों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है - भय, दुःख, अकेलेपन की असाधारण भावना, खालीपन, छोटापन और अलगाव, गहरी, स्थायी निराशा। मृत्यु शब्द से हम सभी परिचित हैं, लेकिन हममें से बहुत कम लोग ही इस तथ्य के निहितार्थ को देख पाते हैं। हम लगभग कभी भी मृत्यु का सामना नहीं करते हैं और इसमें निहित असाधारण चीजों को नहीं समझते हैं। हम परलोक में विश्वास के माध्यम से बचना पसंद करते हैं, या हम पुनर्जन्म के सिद्धांत से चिपके रहते हैं। हमारे पास ये आरामदायक स्पष्टीकरण हैं, विचारों की एक वास्तविक भीड़, दावे और खंडन के साथ, सभी प्रतीकों और मिथकों के साथ जो उनके साथ चलते हैं। अपना ध्यान अवश्य रखें महोदय। यह सच है।

जहां डर है, वहां भागने की इच्छा होती है - यह डर ही है जो इच्छाशक्ति पैदा करता है। जहां महत्वाकांक्षा है, वहां इच्छा अपनी पूर्ति में निर्दयी होती है। जब तक असंतोष है - संतुष्टि की अतृप्त प्यास जो सदैव बनी रहती है, चाहे आप स्वयं को संतुष्ट करके इसे बुझाने का कितना भी प्रयास करें

-वह असंतोष अपनी इच्छा को जन्म देता है। आप चाहते हैं कि संतुष्टि बनी रहे या बढ़ती रहे, इसलिए संतुष्ट रहने की इच्छा है। इच्छा अपने सभी विभिन्न रूपों में अनिवार्य रूप से निराशा का द्वार खोलती है, और निराशा ही दुःख है।

तो, हमारी आंखों में और होठों पर हंसी बहुत कम होती है; हमारे जीवन में शांति बहुत कम है। हम चीज़ों को शांति से देखने और स्वयं यह पता लगाने में असमर्थ प्रतीत होते हैं कि दुःख को समाप्त करने का कोई तरीका है या नहीं। हमारा कार्य निरंतर तनाव के साथ विरोधाभास का परिणाम है, जो केवल स्वयं को मजबूत करता है और हमारे दुखों को बढ़ाता है। श्रीमान, आप इसे देख रहे हैं, है ना?

आख़िर आप परेशान हो रहे हैं. मैं आपको आपके प्रतीकों, आपके मिथकों, आपके आदर्शों, आपके सुखों के बारे में परेशान कर रहा हूं और आपको वह अशांति पसंद नहीं है। आप जो चाहते हैं वह बचना है, इसलिए आप कहते हैं, "मुझे बताएं कि दुख से कैसे छुटकारा पाया जाए।" लेकिन दुःख का अंत दुःख से मुक्ति नहीं है। जितना आप प्रेम प्राप्त कर सकते हैं, उससे अधिक आप दुःख से "छुटकारा" नहीं पा सकते। प्रेम कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे ध्यान के माध्यम से, अनुशासन के माध्यम से, सदाचार के अभ्यास के माध्यम से विकसित किया जाए। प्रेम को विकसित करना प्रेम को नष्ट करना है। उसी प्रकार संकल्प की क्रिया से दुःख का अंत नहीं होता। कृपया इसे समझें.

आप इससे "छुटकारा" नहीं पा सकते। दुःख एक ऐसी चीज़ है जिसे गले लगाना है, उसके साथ रहना है, समझना है; दुःख से घनिष्ठ होना पड़ता है। परन्तु दुःख से तो आपका घनिष्ठ सम्बन्ध नहीं है? आप कह सकते हैं, "मैं दुःख जानता हूँ," लेकिन क्या आप कहते हैं? क्या आप इसके साथ रह चुके हैं? या दुःख पाकर उससे दूर भाग गये हो? असल में, तुम्हें दुख का पता ही नहीं है। भागना तो तुम जानते ही हो। तुम तो दुःख से मुक्ति ही जानते हो।

अब, जैसे प्रेम कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे विकसित किया जाए, अनुशासन के माध्यम से प्राप्त किया जाए, वैसे ही दुःख को किसी भी प्रकार के पलायन के माध्यम से, समारोहों या प्रतीकों के माध्यम से, "भले लोगों" के सामाजिक कार्यों के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रवाद, या मनुष्य द्वारा आविष्कृत किसी भी कुरूप चीज़ के माध्यम से। दुःख को समझना पड़ता है, और समझ समय की नहीं होती।

समझ तब आती है जब हर चीज़ में विस्फोट, विद्रोह, ज़बरदस्त असंतोष होता है। लेकिन, आप देखिए, हम अपने असंतोष को शांत करने का एक आसान तरीका ढूंढना चाहते हैं। हम सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहते हैं, हम नौकरी, पेशे में खो जाते हैं, हम मंदिर जाते हैं, किसी मूर्ति की पूजा करते हैं, हम किसी विशेष प्रणाली या विश्वास से चिपके रहते हैं - और ये सभी चीजें, निश्चित रूप से, एक टालने का तरीका है, रखने का एक तरीका है तथ्य का सामना करने से मन. बस जो है उसे देखना कभी दुःखदायी नहीं होता। केवल इस तथ्य को समझने से कि मैं व्यर्थ हूं, दुःख कभी उत्पन्न नहीं होता।

लेकिन जिस क्षण आप अपने घमंड को किसी और चीज़ में बदलना चाहते हैं, तब संघर्ष, चिंता, शरारत शुरू हो जाती है - जो अंततः आगे बढ़ती है
दु: ख।

महोदय, जब आप किसी चीज़ से प्यार करते हैं, तो आप वास्तव में उसे देखते हैं, है ना? यदि आप अपने बच्चे से प्यार करते हैं, तो आप उसकी ओर देखते हैं; आप नाजुक चेहरे, चौड़ी-खुली आँखों, मासूमियत की असाधारण भावना का निरीक्षण करते हैं। जब आप किसी पेड़ से प्यार करते हैं, तो आप उसे अपने पूरे अस्तित्व से देखते हैं। लेकिन हम कभी भी चीजों को उस नजरिये से नहीं देखते. मृत्यु के महत्व को समझने के लिए एक प्रकार के विस्फोट की आवश्यकता होती है जो तुरंत सभी प्रतीकों, मिथकों, आदर्शों, आरामदायक मान्यताओं को जला देता है, ताकि आप मृत्यु को पूरी तरह से, समग्रता से देख सकें। लेकिन सबसे दुर्भाग्य और दुख की बात है कि आपने शायद कभी भी किसी भी चीज़ को पूरी तरह से नहीं देखा है।

आपके पास? क्या आपने कभी अपने बच्चे को समग्रता से, अपने पूरे अस्तित्व के साथ देखा है - यानी, बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना अनुमोदन या निंदा के, बिना कहे या महसूस किए, "वह मेरा बच्चा है"? यदि आप ऐसा कर सकते हैं, तो आप पाएंगे कि इससे असाधारण महत्व और सुंदरता का पता चलता है। तब आप और बच्चा नहीं हैं - जिसका मतलब बच्चे के साथ कृत्रिम पहचान नहीं है। जब आप किसी चीज़ को समग्रता से देखते हैं, तो कोई पहचान नहीं होती क्योंकि कोई अलगाव नहीं होता।

उसी प्रकार, क्या कोई मृत्यु को समग्रता से देख सकता है?—अर्थात् कोई भय नहीं; और यह डर ही है, जिसने बचने की अपनी इच्छा के साथ, इन सभी मिथकों, प्रतीकों, विश्वासों को बनाया है। यदि आप इसे समग्रता से, अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ देख सकें, तो आप देखेंगे कि मृत्यु का बिल्कुल अलग अर्थ है क्योंकि तब कोई भय नहीं रहता। यह डर ही है जो हमें यह जानने की मांग करता है कि क्या मृत्यु के बाद निरंतरता है, और डर इस विश्वास में अपनी प्रतिक्रिया पाता है कि वहाँ है या नहीं। लेकिन जब आप मृत्यु नामक इस चीज़ को संपूर्णता से देख सकते हैं, तो कोई दु:ख नहीं होता। आख़िरकार, जब मेरा बेटा मर जाता है, तो मुझे क्या महसूस होता है? मेरा नुकसान हुआ है। वह चला गया है, कभी वापस नहीं लौटने के लिए, और मुझे ख़ालीपन, अकेलेपन का एहसास होता है। वह मेरा बेटा था, जिसमें मैंने अमरता की, 'मैं' और 'मेरा' को कायम रखने की अपनी सारी आशा लगा दी थी; और अब जब मेरी खुद की निरंतरता की आशा छीन ली गई है, तो मैं पूरी तरह से निराश महसूस कर रहा हूं। इसलिए मुझे सचमुच मृत्यु से नफरत है; यह घृणित है, एक ओर धकेलने योग्य चीज़ है, क्योंकि यह मुझे स्वयं से परिचित कराती है। और मैं इसे विश्वास के माध्यम से, पलायन के विभिन्न रूपों के माध्यम से एक तरफ धकेलता हूं; इसलिए, भय जारी रहता है, इच्छाशक्ति उत्पन्न करना और उत्पन्न करना

दु: ख।

अत: दु:ख का अंत किसी इच्छाशक्ति के कार्य से नहीं होता।
जैसा कि मैंने कहा, दुख का अंत तभी हो सकता है जब मन ने उससे बचने के लिए जो कुछ भी आविष्कार किया है, उससे नाता तोड़ दिया जाए। आपने सभी प्रतीकों, मिथकों, विचारों, विश्वासों को पूरी तरह से छोड़ दिया है, क्योंकि आप वास्तव में देखना चाहते हैं कि मृत्यु क्या है, आप वास्तव में दु:ख को समझना चाहते हैं - यह एक ज्वलंत आग्रह है। फिर क्या होता है? आप तीव्रता की स्थिति में हैं; आप स्वीकार नहीं करते या

इन्कार करो, क्योंकि तुम भागने का प्रयत्न नहीं कर रहे हो। आप सच्चाई का सामना कर रहे हैं. और जब आप इस प्रकार मृत्यु के, दुःख के तथ्य का सामना करते हैं, जब आप इस प्रकार उन सभी चीजों का सामना करते हैं जिनका आप पल-पल सामना करते हैं, तो आप पाएंगे कि एक विस्फोट होता है जो क्रमिकता के माध्यम से, धीमी गति के माध्यम से उत्पन्न नहीं होता है। समय। तब मृत्यु का अर्थ बिल्कुल अलग होता है।

दुःख की तरह मृत्यु भी अज्ञात है। तुम सचमुच दुःख नहीं जानते; आप इसकी गहराई, इसकी असाधारण जीवन शक्ति को नहीं जानते हैं। आप दुःख की प्रतिक्रिया को जानते हैं, परन्तु दुःख की क्रिया को नहीं। आप मृत्यु की प्रतिक्रिया को जानते हैं, लेकिन मृत्यु की क्रिया को नहीं, इसका क्या अर्थ है; आप नहीं जानते कि यह कुरूप है या सुंदर। लेकिन मृत्यु और दुःख की प्रकृति, गहराई, सुंदरता और सुंदरता को जानना ही मृत्यु और दुःख का अंत है।

आप देखिए, हमारा दिमाग यांत्रिक रूप से ज्ञात में कार्य करता है, और ज्ञात के साथ हम अज्ञात की ओर बढ़ते हैं: मृत्यु, दुःख। और क्या कोई विस्फोट हो सकता है ताकि ज्ञात मन को दूषित न कर दे? आप ज्ञात से छुटकारा नहीं पा सकते। वह मूर्खतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण होगा; यह तुम्हें कहीं नहीं ले जायेगा।

महत्वपूर्ण बात यह है कि मन को ज्ञात से दूषित न होने दें। लेकिन ज्ञात द्वारा मन का यह गैर-दूषितकरण दृढ़ संकल्प के माध्यम से, इच्छा के किसी भी कार्य के माध्यम से नहीं आता है। यह तब होता है जब आप तथ्य को वैसे ही देखते हैं जैसे वह है, और आप तथ्य को वैसे ही देख सकते हैं जैसे वह है - मृत्यु का तथ्य, दुःख का तथ्य - केवल तभी जब आप उस पर अपना पूरा ध्यान देते हैं। संपूर्ण ध्यान एकाग्रता नहीं है; यह पूर्ण जागरूकता की स्थिति है जिसमें कोई बहिष्कार नहीं है।

तो, दुःख का अंत दुःख की समग्रता का सामना करने में निहित है, अर्थात यह समझना कि दुःख क्या है। इसका मतलब है, वास्तव में, अपने सभी मिथकों, अपनी किंवदंतियों, अपनी परंपराओं और मान्यताओं को छोड़ना - जो आप धीरे-धीरे नहीं कर सकते।
अब उन्हें तुरंत ही चले जाना चाहिए। ऐसी कोई विधि नहीं है जिससे उन्हें छोड़ दिया जाए। ऐसा तब होता है जब आप अपना पूरा ध्यान उस चीज़ पर देते हैं जिसे आप समझना चाहते हैं, बिना भागने की इच्छा के।

हम जीवन नामक इस असाधारण चीज़ को केवल खंडित रूप से जानते हैं; हमने दुःख को पलायन के परदे के अलावा कभी नहीं देखा; हमने मृत्यु की सुंदरता, विशालता कभी नहीं देखी है, और हम इसे केवल भय और उदासी के माध्यम से जानते हैं। जीवन की, और मृत्यु के महत्व और सौंदर्य की समझ तभी हो सकती है, जब मन तुरंत यह समझ ले कि क्या है।

आप जानते हैं, श्रीमान, यद्यपि हम उनमें अंतर करते हैं, प्रेम, मृत्यु और दुःख सभी एक ही हैं क्योंकि, निश्चित रूप से, प्रेम, मृत्यु और दुःख अज्ञात हैं।
जिस क्षण तुम्हें प्रेम का पता चलता है, तुम प्रेम करना बंद कर देते हो। प्रेम समय से परे है; इसका कोई आरंभ या अंत नहीं है, जबकि ज्ञान है; और जब तुम कहते हो,

"मैं जानता हूं कि प्यार क्या है," आप नहीं जानते। तुम केवल एक अनुभूति, एक उत्तेजना को जानते हो। आप प्यार की प्रतिक्रिया जानते हैं, लेकिन वह प्रतिक्रिया प्यार नहीं है। उसी प्रकार, तुम नहीं जानते कि मृत्यु क्या है। आप केवल मृत्यु के प्रति प्रतिक्रियाओं को जानते हैं, और आप मृत्यु की पूरी गहराई और महत्व को तभी जान पाएंगे जब प्रतिक्रियाएं समाप्त हो जाएंगी।

तो, कृपया इसे एक व्याख्यान के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी चीज़ के रूप में सुनें, जो हर इंसान के लिए अत्यंत चिंता का विषय है, चाहे वह समाज के सबसे ऊंचे या सबसे निचले पायदान पर हो। यह हम में से प्रत्येक के लिए एक समस्या है, और हमें इसे उसी तरह जानना चाहिए जैसे हम भूख को जानते हैं, जैसे हम सेक्स को जानते हैं, जैसे हम कभी-कभी पेड़ों की चोटी या खुले आकाश को देखने में आशीर्वाद को जान सकते हैं। आप देखिए, आशीर्वाद तभी मिलता है जब मन प्रतिक्रिया न करने की स्थिति में होता है। मृत्यु को जानना एक आशीर्वाद है, क्योंकि मृत्यु अज्ञात है। मृत्यु को समझे बिना, आप अपना जीवन अज्ञात की खोज में बिता सकते हैं, और आप इसे कभी नहीं पा सकेंगे। यह प्यार की तरह है, जिसे आप नहीं जानते। तुम नहीं जानते कि प्रेम क्या है, तुम नहीं जानते कि सत्य क्या है। लेकिन प्रेम को खोजना नहीं है; सत्य को खोजना नहीं है। जब आप सत्य की तलाश करते हैं, तो यह एक प्रतिक्रिया है, तथ्य से पलायन है। सत्य जो है उसमें है, जो है उस पर प्रतिक्रिया में नहीं ।

10 जनवरी 1960

सातवीं वार्ता बम्बई में

यदि संभव हो, तो मैं आपके साथ यह पता लगाना चाहूँगा कि धार्मिक मन, धार्मिक भावना क्या है, और यदि हम कर सकते हैं, तो इसमें गहराई से जाना चाहेंगे। यह एक जटिल समस्या है, जैसा कि मानव अस्तित्व की सभी समस्याएं हैं, और मुझे लगता है कि व्यक्ति को इसे बहुत सरलता से, बड़ी विनम्रता की भावना के साथ देखना चाहिए, क्योंकि ऐसी समस्या का गहराई से पता लगाने के लिए एक स्पष्ट दिमाग की आवश्यकता होती है, एक ऐसा दिमाग जो बोझिल न हो आग्रहपूर्ण और लगातार ज्ञान के साथ. यदि आप किसी जटिल मानवीय समस्या पर गौर करेंगे, तो मुझे ऐसा लगता है कि आपने जो सारा ज्ञान, सारा अधिकार जमा किया है, उसे इसमें लाना अच्छा नहीं है। इसके विपरीत, आपको इसे एक तरफ रखना होगा, और तब शायद आप कुछ मौलिक, नया, कुछ ऐसा खोज पाएंगे जो आपको अधिकार द्वारा नहीं सौंपा गया है, या जिसे आपने विभिन्न मांगों और मजबूरियों के कारण स्वीकार किया है। इसलिए, चूँकि यह समस्या कुछ हद तक कठिन है, सबसे पहले, यह देखना आवश्यक है कि क्या कोई व्यक्ति अपने द्वारा सीखी गई सभी परंपराओं, सभी परंपराओं और धारणाओं को निलंबित कर सकता है, और स्वयं खोज सकता है कि धार्मिक मन क्या है।

जीवन अधिकाधिक जटिल और कठिन होता जा रहा है, कम नहीं। दबाव लगभग असहनीय होते जा रहे हैं, और दबाव, प्रभाव, आधुनिक दुनिया की निरंतर मांगों के साथ, ईर्ष्या, घृणा और निराशा बढ़ रही है। नफरत फैल रही है, और निराशा उस युवा व्यक्ति की सतही समस्या से कहीं अधिक है जिसे नौकरी नहीं मिल पाती है - यह इसका केवल एक हिस्सा है। न ही निराशा केवल वह भावना है जो आपको तब होती है जब आप किसी को मृत्यु के कारण खो देते हैं, या जब आप प्यार पाना चाहते हैं और नहीं किया जाता है। निःसंदेह, निराशा कहीं अधिक गहरी चीज़ है। और निराशा से बाहर निकलने का रास्ता खोजने के लिए, घृणा से परे जाने के लिए और इस आशा नामक चीज़ को - जो कि केवल निराशा का विपरीत है, और जिसमें हम भी फंस जाते हैं - मुझे ऐसा लगता है कि हमें इस प्रश्न की जांच करनी चाहिए कि वास्तव में क्या है एक धार्मिक मन, एक धार्मिक भावना।

ठीक से जांच करने पर न तो स्वीकृति हो सकती है और न ही इनकार। हममें से अधिकांश लोग या तो हाँ कहने वाले या ना कहने वाले होते हैं। हमारे सामने कई कठिनाइयाँ हैं, और हमारी प्रतिक्रिया अक्सर स्वीकार्यता का दृष्टिकोण होती है, जिसका अर्थ है जीवन के लिए हाँ कहना, लेकिन जीवन बहुत जटिल है, बहुत विशाल है, केवल इसके लिए हाँ कहना ही मुश्किल है। हां कहने वाले वे लोग हैं जो परंपरा का पालन करते हैं, उसकी सभी क्षुद्रता, संकीर्णता, क्रूरता के साथ, जो तथाकथित प्रगति, दक्षता से संतुष्ट हैं, जो चीजों को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे वे हैं और अस्तित्व की धारा के साथ तैरते हैं ताकि ज्यादा परेशान न हों . फिर कुछ कहने वाले नहीं हैं, वे लोग हैं जो दुनिया को अस्वीकार करते हैं, और अस्वीकार करके वे प्रतीकवाद में, सभी प्रकार के काल्पनिक मिथकों में भाग जाते हैं। वे भिक्षु, संन्यासी बन जाते हैं, या विभिन्न धार्मिक आदेशों में से एक में शामिल हो जाते हैं। मुझे आश्चर्य है कि हमारा रवैया क्या है, हममें से प्रत्येक किस श्रेणी का है?

वहाँ संत है, और वहाँ राजनीतिज्ञ है। राजनेता हां कहने वाला होता है; वह चीजों की तात्कालिकता को स्वीकार करता है और तत्काल का सतही तौर पर उत्तर देता है। दूसरी ओर, संत कुछ कहने वाला नहीं होता। उसे लगता है कि दुनिया इतनी अच्छी नहीं है, इसका कोई गहरा उत्तर होना चाहिए; इसलिए वह छोड़ देता है, संसार को अस्वीकार कर देता है। मेरा मानना है कि हममें से अधिकांश न तो बहुत गहराई से अस्वीकार करते हैं और न ही स्वीकार करते हैं, बल्कि मौखिक हाँ या मौखिक ना से संतुष्ट होते हैं।

अब, अगर हम वास्तव में इस सवाल का पता लगाएंगे कि धर्म क्या है, तो मुझे लगता है कि हमें अपने आप में बहुत स्पष्ट होने से शुरुआत करनी चाहिए कि हम हां कहने वाले हैं या ना कहने वाले। ऐसा कोई कहने वाला नहीं है जो बौद्धिक रूप से दुनिया को वैसा ही नकारता है जैसी वह है; उन्होंने विद्रोह तो किया है, लेकिन धर्म की भावना की वास्तव में गहराई से खोज नहीं की है। बौद्धिक रूप से उसने सब कुछ तोड़ दिया है जब तक कि कुछ भी नहीं बचा है, जैसे कि एक फूल में कुछ भी नहीं बचा है जिसे तोड़ दिया जाता है और रास्ते से फेंक दिया जाता है, और वह अंततः अपने बौद्धिक निष्कर्षों से, अपनी निराशाओं और आशाओं से, स्वीकृति की ओर प्रेरित होता है। किसी प्रकार की धार्मिक आस्था।

कृपया श्रीमानों, अपने मन और अपने जीवन का ध्यान रखें। चूँकि हममें से बहुत से लोग बहुत अधिक बौद्धिक या आक्रामक नहीं हैं, हम आसान, औसत दर्जे के जीवन से संतुष्ट हैं; और यद्यपि हम दुनिया को - प्रगति और समृद्धि की दुनिया को, चीजों की दुनिया को - ना कह सकते हैं - फिर भी हम इसमें फंस गए हैं। तो, वास्तव में, हम किसी भी प्रबल अर्थ में न तो हां कहने वाले हैं और न ही ना कहने वाले हैं; हम न तो गर्म हैं और न ही ठंडे। मुझे नहीं लगता कि ऐसा दिमाग अपने अन्वेषण में यह पता लगाने में सक्षम है कि धार्मिक भावना क्या है; और उस खोज के बिना, जीवन की किसी भी महत्वपूर्ण समस्या का उत्तर देना असंभव है क्योंकि प्रगति, समृद्धि, चीजों का गुणन हमें केवल और अधिक गुलाम बनाता है। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हम तेजी से मशीनों, चीजों के गुलाम बनते जा रहे हैं, और हमें यह देखने के लिए बहुत गहराई में जाने की जरूरत नहीं है कि सतही मन अपनी गुलामी की स्थिति से संतुष्ट है। वह संपत्ति से, पद और शक्ति से संतुष्ट है; वह अपनी सतही, अनुकरणात्मक गतिविधि में संतुष्ट है।

अब, जैसे-जैसे मन अधिकाधिक गुलाम होता जाता है, स्वतंत्रता का दायरा स्वाभाविक रूप से और अधिक संकीर्ण होता जाता है - और यही हमारी वास्तविक स्थिति है, है न? वही हमारा जीवन है. कुछ चीज़ों से ऊबकर, हम अधिक चीज़ें या अधिक कार्रवाई चाहते हैं, या हम शक्ति की तलाश करते हैं। जब ये लक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं, तो हम निराश महसूस करते हैं, हम निराशा में हैं, और इसलिए हम धार्मिक विश्वास के माध्यम से, चर्च, मंदिर, प्रतीकवाद, अनुष्ठानों और बाकी सभी चीजों के माध्यम से बच जाते हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो हम संसार से क्रोधित हो जाते हैं - और क्रोध का अपना कार्य होता है। क्रोध कर्म का बहुत उत्पादक है, है ना? जब आप गुस्से में विद्रोह करते हैं, तो यह आपको ऊर्जा देता है, और वह ऊर्जा क्षमता जगाती है, जो सब कुछ नया, मौलिक माना जाता है। लेकिन क्रोध, संशय, निराशा और कड़वाहट - निश्चित रूप से, ये भावनाएँ हमारे अस्तित्व की समस्याओं की वास्तविक समझ के लिए आवश्यक नहीं हैं। हम न तो यह जानते हैं कि अच्छा जीवन क्या है और न ही हमारा दैनिक जीवन क्या है - दुख और संघर्ष की यह असाधारण प्रक्रिया, क्षुद्रता, कुरूपता, निन्दा, लोलुपता, यह शाश्वत संघर्ष जब तक हम मर नहीं जाते। तो हम एक लक्ष्य, एक उद्देश्य, एक लक्ष्य का आविष्कार करते हैं; और चाहे वह अंत तत्काल हो या ईश्वर के रूप में दूर प्रक्षेपित हो, यह उस मन का परिणाम है जो वास्तव में निराशा में है, दुख में है, अराजकता में है। निश्चित रूप से, यह उस क्षण बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है जब आप स्पष्ट रूप से, वस्तुनिष्ठ रूप से सोचना शुरू करते हैं, न कि केवल इस संदर्भ में कि आप अपने लिए जीवन से क्या प्राप्त कर सकते हैं।

महोदय, क्या वास्तविकता है, क्या ईश्वर है, क्या कुछ स्थायी, मौलिक, नया है, यह सवाल सिर्फ हमारी अपनी तात्कालिक मांग नहीं है। मनुष्य ने सदियों से इसकी तलाश की है। पैंतीस हज़ार साल पहले, उत्तरी अफ़्रीका की एक गुफा की दीवारों पर मनुष्य ने संघर्ष का चित्रण किया था

अच्छे और बुरे के बीच; और हमेशा, उन तस्वीरों में, बुराई की जीत होती है। हम अभी भी एक उत्तर की तलाश में हैं - लेकिन किसी अपरिपक्व दिमाग वाले स्कूली बच्चे का कोई मूर्खतापूर्ण, संतुष्टिदायक उत्तर नहीं, बल्कि एक ऐसा उत्तर जो वास्तव में सच होगा, कुल मांग का पूर्ण उत्तर। मैं सोचता हूं कि हम समग्रता से नहीं पूछते, और यही हमारी कठिनाई है; कुल मांग नहीं है. यह तभी होता है जब हम निराशा में होते हैं कि हम देखते हैं, हम पूछते हैं, हम आशा करते हैं। लेकिन जब हम पूरे जोश में होते हैं, अपने अस्तित्व की पूरी धारा में होते हैं, तो कोई पूरी मांग नहीं होती; हम कहते हैं, "खुद को पूरा करने के लिए मुझे अकेला छोड़ दो।"

आप जानते हैं, यह संपूर्ण मांग तभी उत्पन्न होती है जब पूर्ण अकेलापन होता है। जब आपने अपने बारे में सब कुछ खोज लिया हो; जब आपने सभी धर्मों को उनके प्रतीकों, उनकी मूर्खताओं, उनकी संगठित हठधर्मिता के साथ देखा है; जब आप अब स्पष्टीकरणों, शब्दों, किताबों, विचारों, उन सभी चीज़ों से बंधे नहीं रह जाते हैं जिन्हें बुद्धि आविष्कृत करती है, और उन सभी को अस्वीकार कर दिया है, लेकिन इसलिए नहीं कि आप उनमें संतुष्टि नहीं पा सकते हैं - केवल तभी आप वास्तव में अकेले हैं। संतुष्टि या असंतोष के आधार पर किसी चीज़ को स्वीकार या अस्वीकार करना बहुत अपरिपक्वता है। लेकिन जब आप गंभीर संदेह में हों; जब तुम निरीक्षण करो, जांचो; जब आप प्रश्न पूछते हैं और परंपरा, संस्कार की मृत राख के अलावा कोई उत्तर नहीं मिलता; और जब आप गहराई से और पूरी तरह से इस सब को अस्वीकार कर देते हैं, जैसा कि आपको निश्चित रूप से करना चाहिए - तब आप अकेले हैं, पूरी तरह से अकेले, क्योंकि आप किसी भी चीज़ पर निर्भर नहीं रह सकते हैं; और वह अकेलापन उस फूल के समान है जो जंगल में उगता है।

मैं नहीं जानता कि क्या आप कभी वसंत ऋतु में रेगिस्तान में गये हैं। बारिश नहीं हुई है, केवल नमी है, और बहुत ज़्यादा नहीं। ज़मीन बहुत सूखी और कठोर है; सूर्य तेजस्वी है. निर्ममता का, नग्नता का, शून्यता का भाव है। और वसंत ऋतु में, एक फूल खिलता है, एक प्यारी चीज़ - शायद अमीर आदमी के बगीचे में उगाए गए सभी फूलों से अधिक सुंदर। इसकी अपनी एक सुगंध है, और एक ऐसा रंग है जो एक सुंदर बगीचे में सुपोषित फूल का रंग नहीं है। यह असाधारण सुंदरता की चीज़ है, और यह रेगिस्तान में फूला है। और मुझे लगता है कि पूर्ण अकेलेपन में मन का खिलना होता है, जो निश्चित रूप से धार्मिक है।

लेकिन, आप देखिए, यह बेहद कठिन है; यह कड़ी मेहनत है, और आपको कड़ी मेहनत पसंद नहीं है। आप एक आसान, अकर्मण्य अस्तित्व पसंद करते हैं - आजीविका कमाना, जो मिलता है उसे स्वीकार करना और जीवन में बस आगे बढ़ते रहना। या, यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप किसी प्रणाली, किसी प्रकार की बाध्यता, अनुशासन का अभ्यास करते हैं। आप ध्यान करने के लिए हर सुबह चार बजे उठते हैं - जिसका मतलब है कि आप अपने आप को ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर करते हैं, अपने दिमाग को एक विशेष पैटर्न के अनुरूप होने के लिए मजबूर करते हैं। आप अपने आप को दिन-ब-दिन लगातार ड्रिल करते रहते हैं, और वह भी

आप कड़ी मेहनत पर विचार करते हैं. लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह काम करने का सबसे बचकाना तरीका है; यह किसी परिपक्व दिमाग का काम नहीं है. कड़ी मेहनत से मेरा मतलब बिल्कुल अलग चीज़ से है। हर विचार और भावना, हर विश्वास की जांच करना कठिन काम है, बिना अपने पूर्वाग्रहों को सामने लाए, बिना किसी विचार, किसी निष्कर्ष, किसी स्पष्टीकरण के पीछे खुद को ढाले बिना। इसके लिए कठोर, स्पष्ट सोच की आवश्यकता होती है - जो वास्तविक कार्य है। और हममें से ज़्यादातर लोग उस तरह का काम नहीं करना चाहते। हम एक निरर्थक विश्वास को स्वीकार करेंगे, एक संगठित धर्म से जुड़े होंगे, मंदिर, चर्च या मस्जिद में जाएंगे, कुछ शब्दों को दोहराएंगे और थोड़ी अनुभूति प्राप्त करेंगे; और इन बातों से हम संतुष्ट हैं।

एक आदमी जो हर दिन मंदिर जाता है, मस्जिद जाता है, चर्च जाता है—उसे आप धार्मिक व्यक्ति कहते हैं। या आप कहते हैं कि जो लोग गुरुओं, संतों, गुरुओं की पूजा करते हैं वे बड़े धार्मिक होते हैं। निश्चय ही, वे धार्मिक लोग नहीं हैं; वे डरे हुए लोग हैं. वे हां कहने वाले हैं; वे नहीं जानते और वे अन्वेषण नहीं करते, उनमें क्षमता नहीं है; इसलिए, वे किसी बाहरी चीज़ पर भरोसा करते हैं, हाथ से या दिमाग से बनाई गई छवि पर। यह सब देखते हुए, और अंदर और बाहर दुख, क्रूरता, अवर्णनीय गंदगी से अवगत होने पर, निश्चित रूप से, अगर हमें इस सारी गड़बड़ी से बाहर निकलने का एक समझदार, तर्कसंगत तरीका ढूंढना है, तो हमें इस सवाल की जांच करनी चाहिए कि क्या है धार्मिक मन.

अब, कोई कैसे पूछताछ करेगा? कृपया थोड़ा ध्यान दीजिए. पूछताछ का तरीका क्या है? कोई इसके बारे में कैसे तय करे? क्या जांच की स्थिति तब मौजूद होती है जब सकारात्मक दृष्टिकोण होता है, या केवल तभी जब नकारात्मक दृष्टिकोण होता है? सकारात्मक दृष्टिकोण से मेरा तात्पर्य समस्या को उत्तर खोजने की इच्छा से देखना है। जब मैं निराश, निराशा में होता हूं, और मैं उत्तर खोजना चाहता हूं, तो मेरे अन्वेषण का एक मकसद है, है न? मेरी खोज कोई रास्ता खोजने की मेरी इच्छा का परिणाम है। तो मैं कोई रास्ता ढूंढूंगा, लेकिन वह बहुत उथला और खाली होगा; मैं किसी प्राधिकरण पर भरोसा करूंगा या किसी प्रणाली का पालन करूंगा, जो कल मुझे फिर से निराशा देगा। दुखी, दुखी, दुःख से युक्त, निरंतर संघर्ष की स्थिति में, मैं इस पूरे व्यवसाय से भाग जाना चाहता हूं; तो एक मकसद है, और वह मकसद एक सकारात्मक कार्य बनाता है; और ऐसी सकारात्मक कार्रवाई, जो उत्तर की मांग के साथ खोज है, बहुत सीमित है; यह स्वर्ग का द्वार नहीं खोलता।

कृपया इसे समझें; अन्यथा, आप स्वयं नहीं जान पाएंगे कि धार्मिक मन क्या है, और इसकी सुंदरता क्या है।

इसलिए, जिसे आप किसी सकारात्मक कार्य के माध्यम से कभी नहीं जान सकते, उसे किसी मकसद के साथ, निराशा से पैदा हुई मजबूरी के साथ नहीं देखा जा सकता है। यह एक गलत दृष्टिकोण है. अगर आप खुद इस बात की सच्चाई देखेंगे तो पता लगा लेंगे

दूसरा दृष्टिकोण है - जो कोई प्रतिक्रिया नहीं है, सकारात्मक के विपरीत नहीं है। क्या तुम समझ रहे हो? मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं।

कोई भी व्यक्ति बहुत स्पष्ट रूप से देखता है कि सकारात्मक दृष्टिकोण क्या है। यह वह दृष्टिकोण है जो हममें से अधिकांश लोग अपनाते हैं। दुखी होने के कारण, मैं कोई रास्ता चाहता हूं, इसलिए मैं ट्रैंक्विलाइज़र लेता हूं या गुरु के पास जाता हूं या चर्च जाता हूं या कोई अन्य मूर्खतापूर्ण, बदसूरत काम करता हूं और संतुष्ट हो जाता हूं। यही सकारात्मक दृष्टिकोण है. यह उस मन का दृष्टिकोण है जो द्वंद्व में है, जो दुःख, भ्रम की स्थिति में है, और वह एक उत्तर चाहता है, एक रास्ता चाहता है - जिसे वह एक विधि, एक प्रणाली या किसी अन्य सकारात्मक अभ्यास के माध्यम से खोजता है। गतिविधि।

अब, यदि मन उस सकारात्मक दृष्टिकोण की सच्चाई को देखता है, अर्थात उसकी मिथ्या को देखता है, तो नकारात्मक दृष्टिकोण केवल उसकी प्रतिक्रिया नहीं है।
यानी, मैं यह पता लगाना चाहता हूं कि क्या सच है, न कि वह जो मैं सच होना चाहता हूं, इसलिए मैं इसमें अपना व्यक्तित्व नहीं लाता हूं; मैंने अपनी मान्यताओं, अपने निष्कर्षों, इस असहनीय दुख से बचने की अपनी इच्छा को एक तरफ रख दिया। मैं स्वयं खोजना चाहता हूं कि इस पूरे अस्तित्व का अर्थ क्या है - लेकिन मेरी खुशी के अनुसार नहीं, या मेरी कल्पना के अनुसार, या मेरी परंपरा के अनुसार नहीं, जो सभी ऐसी मूर्खतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण और सशर्त चीजें हैं। मैं मामले की सच्चाई का पता लगाना चाहता हूं, चाहे वह कुछ भी हो। तो, मेरे लिए कोई विधि नहीं है, कोई अधिकार नहीं है, कोई गुरु नहीं है, कोई व्यवस्था नहीं है। और यह केवल ऐसा मन है - कृपया थोड़ा ध्यान दें, श्रीमान - यह केवल ऐसा मन है जो पता लगा सकता है: एक ऐसा मन जिसने सब कुछ तोड़ दिया है, जो किसी भी प्रकार की संतुष्टि या संतुष्टि की तलाश नहीं कर रहा है, जिसके पास कुछ भी नहीं है अंत में देखें.

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने जीवन में कुछ नोटिस किया है। जीवन की न तो कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत - शुरुआत में ही अंत है। ऐसे व्यक्ति के लिए जो उत्तर चाहता है, जीवन बहुत सीमित है। उसके लिए कल, आज और कल है, और वह इन्हीं शब्दों में जीवन के बारे में सोचता है। लेकिन जीवन उसे उन शब्दों में उत्तर नहीं देता। जीवन अनंत है, और इसलिए जीवन में कोई मृत्यु नहीं है। मृत्यु तभी होती है जब हम कहते हैं, "मेरे बारे में क्या?" - 'मैं' वह इकाई है जिसने कल, आज और कल के बारे में सोचा है। 'मैं' के रूप में जो दुख में है, आप मोक्ष की स्थिति खोजना चाहते हैं जहां आप परेशान नहीं होंगे; आप अपनी कुरूपता के जलाशय में चुपचाप और हमेशा के लिए बैठना चाहते हैं। परन्तु क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जहां आकाश और पृथ्वी मिलते हैं, वहां कोई अंत नहीं है, कोई विभाजन नहीं है? यह सब एक आंदोलन है. यह मन ही है जो जीवन को मृत्यु से विभाजित करता है, संघर्ष करता है और समस्याएं पैदा करता है।

इसलिए, यदि कोई इस समस्या को नकारात्मक रूप से देख सकता है कि धार्मिक भावना क्या है, तो वह निषेध सकारात्मक की प्रतिक्रिया नहीं है। यदि यह सकारात्मकता की प्रतिक्रिया है, जैसे साम्यवाद पूंजीवाद की प्रतिक्रिया है, तो यह महज़ है

एक ही चीज़ अलग-अलग रूप में. कंडीशनिंग के क्षेत्र में परिवर्तन करना बिल्कुल भी परिवर्तन नहीं है। लेकिन नकारात्मक दृष्टिकोण पूरी तरह से अलग है, और केवल नकारात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से ही मन अन्वेषण और खोज कर सकता है।

मुझे आशा है, जैसा कि मैं बात कर रहा हूं, कि आप प्रत्यक्ष अनुभव के रूप में, सकारात्मक दृष्टिकोण की सच्चाई - यानी झूठ - को स्वयं समझ रहे हैं। जिस प्रकार आपको भूख, प्यास, सेक्स, पद की मांग, शक्ति, प्रतिष्ठा और बाकी सभी चीजों का दैनिक अनुभव होता है, उसी प्रकार आपकी समस्याओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अनुभव भी हमेशा चलता रहता है, चाहे आप इसके प्रति सचेत हों या नहीं। लेकिन यदि आप इसकी सच्चाई को स्पष्ट रूप से देखते हैं, यदि आप वास्तव में सकारात्मक दृष्टिकोण के मिथ्यात्व, और सीमाओं, उस मन की क्षुद्रता को समझते हैं जो अपनी संतुष्टि के लिए उत्तर की मांग करता है, तो आपका मन नकार की स्थिति में है, जो वास्तव में रचनात्मक है; क्योंकि ऐसा दिमाग अन्वेषण और खोज कर सकता है।

मुझे आशा है कि आप केवल स्पष्टीकरण, शब्दों को नहीं सुन रहे हैं, क्योंकि शब्द कोई चीज़ नहीं है; यह महज़ एक प्रतीक है, और प्रतीक कभी भी वास्तविक नहीं होता। जो व्यक्ति प्रतीक से संतुष्ट है वह जीवन की राख के साथ, अस्तित्व की शुष्कता के साथ जी रहा है। इसलिए मुझे आशा है कि आप वास्तव में सत्य को समझ रहे हैं और उसका अनुभव कर रहे हैं। और ऐसे मन के लिए प्रश्न क्या है?

प्रश्न यह है कि धार्मिक भावना क्या है? आप धर्म के नाम पर बहुत से ऐसे काम करते हैं जो धर्म नहीं हैं। इसकी सच्चाई देखने के बाद, वह सब सामने आ गया है; यह समाप्त हो गया है, इसे हटा दें। तो फिर धार्मिक भावना क्या है? निश्चय ही, धार्मिक भावना एक प्रकार का विस्फोट है जिसमें सारा लगाव टूट जाता है, सर्वथा नष्ट हो जाता है।

मोह ही है; वैराग्य जैसी कोई चीज़ नहीं है। मन लगाव की पीड़ा की प्रतिक्रिया के रूप में वैराग्य का आविष्कार करता है। जब आप "अलग" होकर लगाव पर प्रतिक्रिया करते हैं, तो आप किसी और चीज़ से जुड़ जाते हैं।

तो वह पूरी प्रक्रिया लगाव की है। आप अपनी पत्नी या अपने पति से, अपने बच्चों से, विचारों से, परंपरा से, अधिकार से, इत्यादि से जुड़े हुए हैं; और उस लगाव के प्रति आपकी प्रतिक्रिया वैराग्य है। वैराग्य की साधना दुःख, पीड़ा का परिणाम है। आप लगाव के दर्द से बचना चाहते हैं, और आपका बचना कुछ ऐसा ढूंढना है जिससे आपको लगता है कि आप जुड़ नहीं सकते। तो केवल आसक्ति है, और यह एक मूर्ख मन है जो वैराग्य पैदा करता है। सभी किताबें कहती हैं, "अलग रहो," लेकिन इस मामले की सच्चाई क्या है? यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप एक असाधारण बात देखेंगे - कि वैराग्य पैदा करने के माध्यम से, आपका मन किसी और चीज़ से जुड़ रहा है।

अब, धार्मिक भावना एक विस्फोट है जो सभी लगाव को तोड़ देती है ताकि मन किसी भी चीज़ से जुड़ा न रहे। निःसंदेह, यही प्रेम का स्वभाव है।
प्रेम जुड़ा नहीं है. इच्छा जुड़ी हुई है, स्मृति जुड़ी हुई है, संवेदना लगाव की खाई है; लेकिन यदि आप ध्यान दें, प्रेम में - चाहे वह एक के लिए हो या अनेक के लिए - कोई लगाव नहीं होता है। आसक्ति का तात्पर्य अतीत, वर्तमान और भविष्य से है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? जबकि प्रेम का न तो अतीत होता है, न वर्तमान, न भविष्य होता है। यह केवल स्मृति है जो समयबद्ध है - जिसे आप प्रेम मानते हैं उसकी स्मृति।

तो, जो मन खोज कर रहा है, जिसे धर्म कहा जाता है उसकी जांच कर रहा है, वास्तव में वह मन है जो पूरी तरह से विद्रोह में है। आप जानते हैं, किसी खास चीज के खिलाफ विद्रोह करना काफी आसान है - गरीबी के खिलाफ, किसी के परिवार के खिलाफ, परंपरा के खिलाफ, या किसी विशेष धर्म के खिलाफ। और जब हम किसी विशेष धर्म के खिलाफ विद्रोह करते हैं, तो हम आम तौर पर किसी अन्य धर्म में शामिल हो जाते हैं; हम हिंदू धर्म के खिलाफ विद्रोह करते हैं और ईसाई धर्म, या बौद्ध धर्म, या आप जो चाहें, उसमें शामिल हो जाते हैं। ऐसा विद्रोह महज़ एक प्रतिक्रिया है; यह संपूर्ण क्रांति, संपूर्ण परिवर्तन नहीं है।

महोदय, क्या आप सिर्फ मेरी बात सुन रहे हैं, या अपने मन की बात देख रहे हैं?
मेरे शब्द आपके अपने विचारों का प्रतिबिंब हैं, जिसके प्रति आप सचेत या अचेतन हो सकते हैं। मैं आपके अपने मन का वर्णन कर रहा हूं, और यदि आप केवल शब्दों को सुन रहे हैं और अपने मन का अवलोकन नहीं कर रहे हैं, तो आप दुःख और अशांति में बने रहेंगे।

मैं जिस विद्रोह की बात कर रहा हूं वह हर प्रकार के लगाव के खिलाफ है - लेकिन प्रतिक्रिया के रूप में नहीं। आप इस सत्य को देख रहे हैं कि कुछ बौद्धिक व्याख्याओं के प्रति आपके लगाव ने आपको शुष्क, शुष्क बना दिया है। आपके जीवन में छोटे-मोटे विस्फोट या प्रतिक्रियाएँ हुई हैं जिन्होंने आपके दिमाग पर अपने निशान छोड़े हैं और आप उन निशानों से जुड़े हुए हैं। हो सकता है कि आप इस संगठन से हट गए हों, उस आंदोलन में शामिल हो गए हों, किसी भिन्न नेता का अनुसरण कर रहे हों, इत्यादि। इन सभी छोटे विस्फोटों और प्रतिक्रियाओं ने आपके दिमाग पर निशान छोड़ दिए हैं, और इस तरह से, आपका दिमाग कठोर हो गया है। यह कठोरता वास्तव में आपने जो किया है उसके प्रति, आपके अपने अनुभवों की स्मृति के प्रति लगाव है।

और जिस समग्र क्रांति की मैं बात कर रहा हूं वह इन सबके सत्य की संपूर्ण अनुभूति है; यह स्वयं विस्फोट की स्थिति है।

शायद हममें से अधिकांश के लिए इसे समझना कठिन है क्योंकि हम एक प्रकार की कंडीशनिंग से दूसरे में बदलने के संदर्भ में क्रांति के बारे में सोचने के आदी हैं। आज मैं यह हूं और कल मैं वह बनना चाहता हूं। पूंजीवाद के अंतर्गत गरीबी को देखकर, मैं कहता हूं कि साम्यवाद इसका उत्तर है; इसलिए, एक क्रांति होनी चाहिए। निश्चित रूप से, ऐसी कोई भी क्रांति केवल आंशिक है और इसलिए कोई क्रांति नहीं है। सबसे सतर्क और तथाकथित बुद्धिमान

लोगों ने साम्यवाद के साथ, इसके और उसके साथ, दस अलग-अलग चीजों के साथ खेला है। इन सबके साथ खेलने के बाद, उनके दिमाग अव्यवस्थित, भ्रमित और कठोर हो गए हैं; और जब ऐसा मन पूछता है, "सत्य क्या है?" ईश्वर क्या है?" इसका कोई मतलब नहीं है. अर्थ तो यही है कि उस सबको तोड़ देना, बिना किसी मकसद के, बिना किसी आग्रह या दबाव के उसे पूरी तरह से चकनाचूर कर देना। यह विस्फोट, जिसमें संतुष्टि या किसी व्यवस्था के लिए कोई स्थान नहीं है, ही वास्तविक क्रांति है। तब आप पाएंगे, जब मन विस्फोट की इस स्थिति में होता है, तो वहां रचनात्मकता होती है - वह रचनात्मकता नहीं जो किसी कविता में या पत्थर के टुकड़े को तराशने या पेंटिंग में व्यक्त होती है, बल्कि एक रचनात्मकता होती है जो हमेशा इसी स्थिति में रहती है। निषेध.

अब, महोदय, यह आपके लिए पूरी तरह सैद्धांतिक हो गया है; और सिद्धांत, अटकलें, या दूसरे के शब्दों पर जीने का बहुत कम अर्थ है। लेकिन जो मन वास्तव में इस सब में चला गया है, जिसने जांच की तीर्थयात्रा पर प्रवेश किया है जहां से कोई वापसी नहीं है, जो न केवल अभी, इस घंटे के दौरान, बल्कि दिन-प्रतिदिन पूछताछ कर रहा है - ऐसे मन ने खोज की होगी सृष्टि की एक अवस्था जिसका सम्पूर्ण अस्तित्व है। यह वही है जिसे आप सत्य या ईश्वर कहते हैं। उस सृजन के घटित होने के लिए, पूर्ण अकेलापन होना चाहिए - एक ऐसा अकेलापन जिसमें शब्दों या विचारों या यादों का कोई लगाव, कोई साथ नहीं है। यह उन सभी चीज़ों का पूरी तरह से खंडन है जो मन ने अपनी सुरक्षा के लिए गढ़ी हैं। पूर्ण एकांत, जिसमें कोई भय नहीं है, का अपना असाधारण सौंदर्य है; यह प्रेम की अवस्था है क्योंकि यह प्रतिक्रिया का अकेलापन नहीं है; यह पूर्ण निषेध है, जो सकारात्मक के विपरीत नहीं है। और मुझे लगता है कि केवल सृजन की उस अवस्था में ही मन वास्तव में धार्मिक होता है। ऐसे मन को ध्यान की कोई आवश्यकता नहीं है; वह स्वयं शाश्वत है. ऐसा मन अब खोज नहीं रहा है - ऐसा नहीं है कि वह संतुष्ट है, बल्कि वह अब खोज नहीं कर रहा है क्योंकि खोजने के लिए कुछ भी नहीं है। यह एक संपूर्ण चीज़ है, असीम, अथाह, अनाम।

13 जनवरी 1960

आठवीं वार्ता बम्बई में

हममें से अधिकांश, जीवन में हमारी स्थिति जो भी हो, भारी उथल-पुथल में हैं - कम से कम हमें होना चाहिए अगर हम नहीं हैं - क्योंकि दुनिया की घटनाओं और हमारे चारों ओर होने वाली अनियंत्रित ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के विभिन्न दबाव हम सभी को इसमें धकेल रहे हैं। एक संकीर्ण नाली जहां स्वतंत्रता का अंतर कम से कम होता जा रहा है। और जैसा कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति निरपवाद रूप से खोज रहा है

इस उथल-पुथल, इस भ्रम और दुख से बाहर निकलने का रास्ता, हम विभिन्न आंदोलनों में शामिल होते हैं, चाहे वह राजनीतिक हो या धार्मिक, और हम उन असंख्य समस्याओं का समाधान खोजने की आशा में उनके नेताओं का अनुसरण करते हैं जो हमारे जीवन पर बोझ डालती हैं। हम भ्रमित हैं, और अपनी उलझन में हम किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढने का प्रयास करते हैं जो हमें इस उथल-पुथल और दुख से बाहर निकाल सके। मुझे ऐसा लगता है कि हम अपने अंदर जाकर सीधे समस्या की जांच करने में बहुत अनिच्छुक हैं। हम चाहते हैं कि कोई समाधान प्रदान करे; हम एक ऐसी प्रणाली, एक दर्शन, एक गुरु, एक नेता चाहते हैं जो हमारी समस्याओं का समाधान करे और हमें शांति, आंतरिक शांति की ओर ले जाए। चूँकि यह संभव नहीं है, यदि संभव हो तो मैं आपके साथ स्वयं के भीतर जाने, आत्म-ज्ञान की प्रक्रिया को उजागर करने के बारे में बात करना चाहूँगा।

हम जानते हैं कि वैज्ञानिकों ने कई समस्याओं पर विजय पा ली है और जो कुछ भी आवश्यक है, वे उत्पादन करने में सक्षम हैं। यदि वैज्ञानिक और राजनेता एक साथ मिल जाएं, तो वे भुखमरी की समस्या, सभी के लिए भोजन, कपड़े और आश्रय की समस्या को भी हल कर सकते हैं और मनुष्य द्वारा मनुष्य के विनाश को रोक सकते हैं। यह किया जा सकता है, लेकिन वे ऐसा तब तक नहीं करेंगे जब तक उनकी सोच राष्ट्रवाद पर, अपने निजी लाभ के मकसद पर आधारित है। और भले ही यह दूरगामी बाहरी परिवर्तन लाया गया हो, मुझे ऐसा लगता है कि समस्या कहीं अधिक गहरी है। समस्या केवल भुखमरी, युद्ध, मनुष्य का मनुष्य के प्रति क्रूरता नहीं है; यह हमारी अपनी चेतना का संकट है। मूलतः, समस्या भीतर ही निहित है। लेकिन हम कितने भी इरादे वाले और सक्षम क्यों न हों, हममें से ज्यादातर लोग अपने अंदर बहुत गहराई तक जाने को तैयार नहीं हैं। हम बदलना चाहते हैं, दुनिया को बदलना चाहते हैं, लेकिन वास्तविक क्रांति, संपूर्ण परिवर्तन भीतर है, बाहर नहीं। हमें भीतर जाना बेहद कठिन लगता है, और इसलिए हम बौद्धिक या भावनात्मक रूप से, भक्तिपूर्वक भागने की कोशिश करते हैं।

बौद्धिक रूप से हम बहुत सारे सिद्धांत गढ़ते हैं, हम शब्दों और विचारों में उलझ जाते हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने देखा है कि हम सिद्धांतों पर चर्चा करने के लिए कितने उत्सुक हैं, हम कितनी जल्दी शब्दों में खो जाते हैं। जब हम यह गेम खेलते हैं, तो हमें लगता है कि हम बहुत बुद्धिमान हैं, लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ भी नहीं है; यह खोखली शब्दाडंबर है, इसका कोई अर्थ नहीं है। भावनात्मक रूप से, भावनात्मक रूप से, हम विश्वास की एक प्रणाली से चिपके रहते हैं, या हम एक प्रणाली से दूसरे में चले जाते हैं। हम किसी विचार या नेता के प्रति तथाकथित भक्ति में भी खो जाते हैं। इस सब में एक निश्चित संतुष्टि है, हमारे संघर्ष का एक अस्थायी राहत है, लेकिन देर-सबेर हम खुद को उसी पुरानी स्थिति में वापस पाते हैं, अपनी कई समस्याओं के साथ।

मुझे ऐसा लगता है कि ये सभी युक्तियाँ बहुत व्यर्थ हैं; वे बिल्कुल भी हमारी समस्याओं का समाधान नहीं हैं। यह केवल एक अपरिपक्व मन है, एक ऐसा मन जिसने प्यार का स्वाद नहीं चखा है, जिसने दुख की सुगंध को गहराई से नहीं सूंघा है - यह केवल ऐसा ही है

मन जो इन सभी तुच्छ चीज़ों में भाग जाता है, जो महज़ मनोरंजन हैं।
आपको कोई गुरु मिलता है, या आप मंदिर जाते हैं, किसी मूर्ति की पूजा करते हैं, जिससे आपको अस्थायी राहत मिलती है। दुर्भाग्य से, आप इन अस्थायी उपायों से बहुत आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं, और आप भक्ति की आदत डालकर, किसी गुरु, किसी राजनीतिक नेता या किसी अन्य प्राधिकारी का अनुसरण करके उन्हें स्थायी बनाने का प्रयास करते हैं। चाहे आप राजनीतिक रूप से अनुसरण करें या धार्मिक रूप से, सभी अनुसरण, निश्चित रूप से, बुरे हैं क्योंकि अनुसरण करने से सुरक्षा की इच्छा का पता चलता है, और जो मन सुरक्षा की तलाश करता है वह जीवन की अस्थिरता को नकार रहा है। जीवन स्पष्टतः अनित्य है। दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं है, और त्वचा के अंदर, आदत के अलावा कुछ भी स्थायी नहीं है - विचार की आदत, विचारों की आदत। हम इन आदतों में फंस गए हैं, और यदि हम एक आदत को तोड़ते हैं, तो हम दूसरी आदत बना लेते हैं, जो फिर से एक निश्चित स्थायित्व प्राप्त कर लेती है। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि हम हमेशा केंद्रीय मुद्दे, जो कि हम हैं, से बच रहे हैं।

अपने बारे में बात करते हुए, मेरा मतलब है, न केवल वह अहंकारी इकाई जिसके बारे में हम कमोबेश हर दिन जागरूक होते हैं, बल्कि वह इकाई जो समाज का परिणाम है, किसी विशेष संस्कृति या सभ्यता, जलवायु और परंपरा का परिणाम है। और जब तक व्यक्ति गहराई से रूपांतरित नहीं हो जाता, कोई यह नहीं देख सकता कि इस सारी अराजकता से बाहर निकलने का कोई रास्ता कैसे हो सकता है। मैं उस व्यक्ति की बात कर रहा हूं जो सामूहिकता के विरोध में नहीं है। वर्तमान में सामूहिक विचार ही है, जिससे हमारा कार्य होता है। यह सामूहिक विचार - चाहे वह साम्यवाद का हो, पूंजीवाद का हो, फासीवाद का हो, या आप जो चाहें - व्यक्ति को नकारता है; और जीवन में सारी सृष्टि, सारी समझ व्यक्ति से उत्पन्न होती है, द्रव्यमान से नहीं। दरअसल, जनसमूह जैसी कोई चीज नहीं है, सिवाय विचार के, विचार के, जिसके हम गुलाम हैं।

इसलिए, अस्तित्व की इस पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए व्यक्ति को स्वयं को समूह से, परंपरा से मुक्त करना आवश्यक है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को स्वयं में जाना होगा - जीवन का द्वार खोलने का कोई अन्य साधन, कोई अन्य रास्ता नहीं है। आप जो हैं वही समाज है। समाज आपसे अलग नहीं है.

यद्यपि आपके पास एक विशिष्ट नाम, कुछ संपत्ति, एक निजी बैंक खाता इत्यादि हो सकता है, आप समाज का हिस्सा हैं; आप उससे अलग नहीं हैं.
जब आप कहते हैं कि आप हिंदू हैं, कम्युनिस्ट हैं, या जो कुछ भी हो, तो इसका मतलब है कि आप उस संस्कृति का हिस्सा हैं, उस विशेष समाज का हिस्सा हैं, जिसने आपको एक निश्चित तरीके से सोचने में मदद की है। तो आप विभिन्न प्रभावों के गुलाम हैं, और यदि आप स्वयं को समझना चाहते हैं कि उनका परिणाम कौन है, तो इन प्रभावों या दबावों को समझना निश्चित रूप से आवश्यक है।

आप न केवल अपने पिता और माता का, बल्कि हज़ारों कलों, हज़ार पीढ़ियों का परिणाम हैं; आप समग्रता का परिणाम हैं

इंसानियत। यदि आप इसे नहीं समझते हैं, तो जीवन असाधारण रूप से उबाऊ हो जाता है, बहुत कम महत्व वाला एक अंतहीन संघर्ष, निराशा के दर्शन को जन्म देता है, या जो चीजें जैसी हैं उनसे संतुष्ट रहने के दर्शन को जन्म देता है, जो कि अस्तित्व की स्वीकृति मात्र है। ये सब बहुत स्पष्ट लगता है.

तो, आपको इस तथ्य को देखना होगा कि आप दुनिया हैं, और अपने आप में बदलाव के बिना, दिमाग में संपूर्ण क्रांति के बिना, अपनी सोच के तरीकों में, आप दुनिया में बुनियादी बदलाव नहीं ला सकते हैं। विशेष रूप से ऐसे अधिक आबादी वाले देश में, आपको स्वयं से शुरुआत करनी होगी; आपके रिश्तों की दुनिया में एक क्रांति होनी चाहिए।

महोदय, अच्छाई दूसरे के साथ आपके रिश्ते में खिलती है, और उस अच्छाई को समझे बिना, आपके सभी सामाजिक सुधार और असंख्य बाहरी परिवर्तन केवल एक बहुत ही सतही अस्तित्व में और अधिक दुख की ओर ले जाएंगे।

इसलिए, मुझे स्वयं को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण लगता है, लेकिन इस मामले में आपकी ओर से जबरदस्त अनिच्छा है क्योंकि आप कहते हैं, "अपने बारे में समझने के लिए क्या है?" मैं अपनी प्रतिक्रियाएँ अच्छी तरह जानता हूँ।”

अब, इससे पहले कि हम इसमें प्रवेश करें, मुझे लगता है कि क्रिया शब्द के महत्व को समझना महत्वपूर्ण है । क्रिया का तात्पर्य, निश्चित रूप से, एक अखंड आंदोलन, एक सक्रिय वर्तमान से है; हालाँकि इसमें एक समय तत्व है, जो अतीत और भविष्य के साथ-साथ वर्तमान को भी समाहित करता है, क्रिया एक संपूर्ण स्थिति को दर्शाती है, क्या ऐसा नहीं है? "मैं था," "मैं हूं," और "मैं रहूंगा" - अगर कोई इसमें गहराई से जाता है, तो वह पाता है कि यह एक संपूर्ण स्थिति है, एक सक्रिय वर्तमान है जो कालातीत है।

लेकिन हममें से अधिकांश लोग "मैं था" और "मैं रहूंगा" में फंसे हुए हैं, वहां कोई सक्रिय उपस्थिति नहीं है। "मैं था" स्मृति है, और "मैं रहूंगा" भी स्मृति है - वर्तमान से भविष्य तक अतीत का प्रक्षेपण। हम कहते हैं, "मैं क्रोधित रहा हूँ, और मैं क्रोधित नहीं होऊँगा," तो एक अंतराल है, एक अंतराल है, और इस अंतर का उपयोग भविष्य की स्थिति के लिए एक साधन के रूप में किया जाता है। हममें से अधिकांश के लिए क्रिया का तात्पर्य केवल एक अवस्था से नहीं बल्कि तीन अलग-अलग अवस्थाओं से है, "मैं लालची रहा हूँ," "मैं लालची नहीं बनूँगा," और उनके बीच का अंतराल, जो गैर-लालची बनने का प्रयास है।

अब, मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि क्रिया का तात्पर्य संपूर्ण क्रिया से है, न कि टूटी-फूटी क्रिया से। इसके भीतर न केवल जो कुछ हो चुका है और अंततः जो होना चाहिए उसका भाव भी मौजूद है, बल्कि इसमें वह भी शामिल है जो अभी हो रहा है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि अब वास्तव में क्या हो रहा है; हम "क्या हो चुका है" या "क्या होगा" से चिंतित हैं। यदि आप अपने मन का अवलोकन करें, तो आप इस तथ्य को देखेंगे, जो एक असाधारण खोज है - कि आप कभी भी अस्तित्व से चिंतित नहीं हैं, बल्कि केवल

होने और बनने के साथ। जब तक हम इस तथ्य को ध्यान से, समझदारी से और व्यापक रूप से नहीं समझते, हम आत्म-ज्ञान में निहित सभी चीजों को समझने में सक्षम नहीं होंगे; और मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हममें से अधिकांश में इस समझ की कमी है कि हम जिसे अपना आत्म-ज्ञान कहते हैं उसमें हम इतने सतही हो जाते हैं।

मैं उस शब्द क्रिया के निहितार्थ के साथ थोड़ा सा खेलने जा रहा हूं - और मेरा मतलब है खेलना क्योंकि जब तक कोई खेल नहीं सकता, उसे कभी पता नहीं चलेगा। क्या तुम समझ रहे हो? जब तक आप हँसने में सक्षम नहीं हैं, वास्तविक हँसी, आप नहीं जानते कि दुःख क्या है, आप नहीं जानते कि वास्तव में गंभीर होना क्या है। यदि आप मुस्कुराना नहीं जानते, न केवल अपने होठों से, बल्कि अपने पूरे अस्तित्व से - अपनी आँखों से, अपने दिमाग और दिल से - तो आप नहीं जानते कि सरल होना और आनंद लेना क्या है जीवन की सामान्य बातें.

निश्चित रूप से, क्रिया, साथ ही किसी चीज़ का नाम, दोहरी है। नाम कभी भी चीज़ नहीं होता. वृक्ष और वृक्ष शब्द बिल्कुल अलग-अलग हैं। प्रतीक कभी तथ्य नहीं होता, सत्य नहीं होता, लेकिन हममें से अधिकांश के लिए प्रतीक तथ्य से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। हम कभी भी पेड़ को शब्द के बिना नहीं देखते हैं, और शब्द पेड़ के बारे में हमारी धारणा को नष्ट कर देता है।

कृपया मैं जो कह रहा हूं उसे सुनें, महोदय। कौआ शब्द कोई जीवित वस्तु नहीं है जो अपने शोर से हमें परेशान करता हो। लेकिन हम शब्द में खो जाते हैं और इस तरह शब्द के पीछे की सच्चाई की कभी जांच नहीं करते हैं। तो व्यक्ति को शब्द, नाम, को वस्तु से अलग करना होगा; और व्यक्ति को क्रिया को भी समझना होगा - जो बहुत अधिक जटिल और महत्वपूर्ण है।

प्रेम करने की क्रिया को लीजिए । अगर तुम इसे बहुत गौर से देखोगे तो तुम पाओगे कि तुम प्रेम नहीं कर रहे हो। आप बस इतना कह सकते हैं, "मैंने प्यार किया है," या "मुझे प्यार करना ही चाहिए।" आप इस संदर्भ में सोचते हैं कि क्या बीत चुका है, और क्या होना है, या होना चाहिए - "पहले" और "बाद"। आप कभी भी उस स्थिति में नहीं होते, जो एक जीवित चीज़ है, सक्रिय वर्तमान है। इस सक्रिय वर्तमान, जो क्रिया द्वारा निहित है, का कोई भविष्य नहीं है, कोई अतीत नहीं है; और मुझे यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण लगता है।

जैसा कि मैंने कहा, हममें से अधिकांश कभी भी इस अवस्था में नहीं होते; हम हमेशा से रहे हैं, या हम होने की उम्मीद करते हैं, इसलिए बनने की प्रक्रिया के रूप में समय हमारे जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। लेकिन एक सक्रिय वर्तमान है जिसमें "क्या है", जो है, और "क्या होगा" सभी शामिल हैं, वे अलग नहीं हैं, और व्यक्ति को इस असाधारण स्थिति को, इस जीवंत, सक्रिय को समझना होगा उपस्थित। अस्तित्व वह नहीं है जो था या जो होगा; अस्तित्व वर्तमान है, जिसमें सारा समय समाहित है। और जो कहा जा रहा है उसे सुनने में महत्वपूर्ण बात, यदि आप कर सकते हैं, तो उस स्थिति को समझना है जिसमें हर समय

इसमें शामिल है - बिना किसी प्रयास के इसके बारे में जागरूक होना, "मुझे समझना चाहिए" कहे बिना इसके महत्व को समझना।

महोदय, अच्छाई अतीत या भविष्य की नहीं है; यह एक वर्तमान स्थिति है जिसके बारे में मन पूरी तरह से अचेतन होना चाहिए। जिस क्षण आपको लगता है कि आप अच्छे हैं, आप अच्छे नहीं रह जाते। जो व्यक्ति विनम्रता विकसित करने का प्रयास करता है वह व्यर्थ और मूर्ख है क्योंकि विनम्रता विकसित नहीं की जा सकती। विनम्रता अस्तित्व की एक अवस्था है; यह कोई ऐसा गुण नहीं है जिसे विकसित किया जाए - जो कि एक डरावनी बात है। सद्गुण विकसित करना हमेशा भयावह होता है, क्योंकि जब आप सद्गुण विकसित करते हैं, तो आप सद्गुण बनना बंद कर देते हैं। जब आप अहिंसक होने का प्रयास कर रहे हैं, तो आप हिंसा से भरे हुए हैं।

तो, क्रिया की इस समझ के साथ, जिसमें "होना," "रहा है," और "होगा" सभी सक्रिय वर्तमान का हिस्सा हैं, आइए हम स्वयं की प्रकृति की जांच करें।

स्वयं, 'मैं', विचार का केंद्र है, एक ऐसा केंद्र जो अनुभव से, ज्ञान से अनुकूलित होता है। जैसे बस की मोटर जो आपको यहां तक लेकर आई है, हर दूसरी जटिल मशीन की तरह, कई लोगों के ज्ञान और अनुभव का परिणाम है, उसी तरह आत्म अनुभवों, यादों के संग्रह की अभिव्यक्ति है, और इसलिए यह मूलतः यांत्रिक है। मुझे लगता है कि इसे समझना ज़रूरी है. आत्मा बिल्कुल भी आध्यात्मिक इकाई नहीं है; यह पूरी तरह से आदतों, अनुभवों, यादों, प्रभावों, सामूहिक परंपरा की अभिव्यक्ति और इसके बाकी सभी का परिणाम है। यह स्मृति, ज्ञान, अनुभव पर आधारित सोचने की एक प्रक्रिया है और इसलिए यह यांत्रिक है।

वह जो कुछ भी सोचता है - चाहे वह ईश्वर के बारे में सोचता हो या मशीनरी के किसी टुकड़े के बारे में या किसी नौकरी के बारे में - वह अभी भी अपनी ही सीमाओं के भीतर है। जब आप उच्च स्व, आत्मा, अंतरात्मा, वास करने वाले ईश्वर इत्यादि के बारे में बात करते हैं, तो यह केवल एक आदत है; तुम वही दोहरा रहे हो जो तुम्हें सिखाया गया है। कम्युनिस्ट को सिखाया गया है कि वह इन सभी धार्मिक सड़ांधों पर विश्वास न करे, इसलिए वह कहेगा कि ईश्वर या आत्मा जैसी कोई चीज़ नहीं है; यह सब बकवास है, पूंजीवादी आविष्कार है।

तो स्वयं, पर्यवेक्षक, विचारक, अनुभवकर्ता, कोई आध्यात्मिक इकाई नहीं है; यह अपनी विभिन्न सीमाओं के साथ 'मैं' के रूप में केंद्रीकृत स्मृति का तंत्र है। यह सच है। लेकिन आप आपत्ति करते हैं क्योंकि आप कहते हैं, "क्या कोई आध्यात्मिक दुनिया नहीं है, इन सब से परे कुछ स्थायी है?" जब मन यांत्रिक आदत के वास्तविक तथ्य में फंसकर उससे परे किसी चीज़ के बारे में अनुमान लगाता है, तो ऐसा मन स्पष्ट रूप से मूर्ख होता है। इसीलिए स्मृति की, आदत की, जिसे हम स्वयं, 'मैं' कहते हैं, इस तंत्र को समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

ज्ञान यांत्रिक है. यदि आप एक इंजीनियर बनते हैं, तो इंजीनियरिंग का आपका ज्ञान कुछ ऐसा है जो आपने हासिल किया है, और जो आपने हासिल किया है, सीखा है, वह एक आदत बन जाता है। चाहे आप एक इंजीनियर हों, एक वैज्ञानिक हों, एक नौकरशाह हों, या एक कार्यालयकर्मी हों, आप आदतों की एक शृंखला स्थापित करते हैं, और आप उन आदतों में फंस जाते हैं; आपका दिमाग आदत की मशीनरी में रखा जाता है - रिश्ते की आदत में, सोचने की आदत में, कार्य करने की आदत में।

कृपया श्रीमानों, अपने मन का ध्यान रखें। आप केवल मेरी बात नहीं सुन रहे हैं; यह बिल्कुल भी महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन मेरी बात सुनकर आप स्वयं ही निरीक्षण कर रहे हैं। और यदि आप वास्तव में स्वयं का निरीक्षण कर रहे हैं, तो आप देखेंगे कि मन कैसे आदत की मशीनरी में फंस गया है। इसमें घबराने या चिंतित होने की कोई बात नहीं है; यह बस एक तथ्य है, और समस्या मन को पूरी तरह से आदत से मुक्त करने की है, ताकि वह पुराने ढर्रे पर ही न चलता रहे, या पुरानी को छोड़ने या नष्ट करने की प्रक्रिया में आदतों का एक नया समूह स्थापित न करे।

आदतें, निश्चित रूप से, एक ऐसे दिमाग का संकेत देती हैं जो परेशान नहीं होना चाहता। जब तक मन सुरक्षित रहना चाहता है - इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह एक इंजीनियरिंग दिमाग है, एक गणितीय दिमाग है, एक वैज्ञानिक दिमाग है, एक राजनीतिक दिमाग है, या सत्य की खोज करने वाले का दिमाग है, जो भी इसका मतलब है - यह अनिवार्य रूप से गिर जाता है आदत की नाली और इस बात से अनजान है कि वह एक नाली में चल रही है। इसलिए किसी को इस तथ्य के प्रति सचेत होना होगा कि उसका मन, क्योंकि वह आनंद, सुरक्षा, अशांति की भावना की तलाश में है, एक खांचे में गिर जाता है। बस इस तथ्य के प्रति सचेत रहना, जागरूक रहना ही मायने रखता है - यह नहीं कि किसी विशेष आदत को कैसे खत्म किया जाए। एक आदत को तोड़ने की इच्छा ही दूसरी आदत पैदा कर देती है।

अब, वह कौन है जो जागरूक है? इन आदतों के संचालन को देखने वाला पर्यवेक्षक कौन है? यही वह प्रश्न है जो आप सदैव पूछेंगे, है ना? अगर तुम बहुत गौर से देखोगे तो तुम पाओगे कि वहां कोई देखने वाला ही नहीं है; यह महज़ एक आदत है जो दूसरी आदत का अवलोकन करती है।

देखिए, श्रीमान: जब आप किसी क्रिया की गति में होते हैं, तो न तो पर्यवेक्षक होता है और न ही देखा जाने वाला। उदाहरण के लिए, जब आप बहुत गुस्से में होते हैं, तो उस भावना की पूरी तीव्रता में कोई अलग इकाई नहीं होती जो देखती है और जो देखा जाता है उसे बदलने की कोशिश करती है। क्या तुम समझ रहे हो? वास्तविक तथ्य तो यह है कि अनुभव के क्षण में न तो देखने वाला होता है और न ही देखी जाने वाली वस्तु।

अब, अनुभव की वह स्थिति, जिसमें कोई पर्यवेक्षक नहीं है और कोई अवलोकन नहीं है, सक्रिय वर्तमान है। तो फिर प्रश्न यह है: यह जानते हुए कि किसी का मन आदत में फंस गया है, वह उस स्थिति को कैसे प्राप्त कर सकता है?

ऐसी जागरूकता जिसमें कोई पर्यवेक्षक नहीं है? मुझे नहीं पता कि मैं समस्या को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं। आइए हम इसे अलग तरीके से देखें।

जहां प्रेक्षक और अवलोकन किया जाता है, वहां अनिवार्य रूप से विरोधाभास और संघर्ष होता है, है न? जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति को देखता हूं जो अमीर है, और मैं उसके जैसा अमीर, उतना ही आरामदायक, उतना ही स्वतंत्र होना चाहता हूं, तो मेरे अंदर एक द्वंद्व, एक विरोधाभास, वैसा बनने का प्रयास होता है। तो जहां पर्यवेक्षक और प्रेक्षित है, वहां एक विरोधाभास, एक संघर्ष, होने या बनने का प्रयास है, जो चेतना पर एक सीमा लगाता है।

महोदय, यह थोड़ा कठिन लग सकता है, लेकिन ऐसा नहीं है। जो कठिन है वह शब्द है, वाक्यांश है, लेकिन वास्तविक अनुभूति, इसका वास्तविक अनुभव, पूरी तरह से अलग है।

उदाहरण के लिए, ज्ञान को लीजिए। सारा ज्ञान अतीत में है. इंजीनियर या वैज्ञानिक ने जो सीखा है वह अतीत में है, उसे अपने दिमाग में रख लें।

आपने जो सीखा है वह हमेशा अतीत में होता है, जिसका उपयोग आप वर्तमान में भविष्य के लिए करते हैं। अब, यदि आप निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि जानने की एक गति है, जो ज्ञान से भिन्न है। जब आप उस गति में होते हैं, तो वहां न तो पर्यवेक्षक होता है और न ही देखा जा सकने वाला; वहां केवल जानने की गति है। इसलिए, आत्म-ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है आत्म-ज्ञान। आपने अपने बारे में ज्ञान के रूप में जो संग्रहित किया है वह एक आदत बन जाती है जो आपको स्वयं को उस रूप में जानने से रोकती है जैसा वह वास्तव में है

पल पल।

देखिए, श्रीमान: मैं स्वयं को जानना चाहता हूं, और यदि आप इसका निरीक्षण करें तो 'मैं स्वयं सबसे असाधारण चीज हूं। यह कभी स्थिर नहीं होता; यह सदैव खोज रहा है, चाह रहा है, इनकार कर रहा है, संचय कर रहा है, स्वीकार कर रहा है; इसमें इच्छा के कई अलग-अलग रूप होते हैं; इसमें बहुत सारे विचार हैं, बहुत सारे लक्ष्य हैं, बहुत सारी निराशाएँ, भय, आशाएँ हैं। वह संपूर्ण स्वयं है, 'मैं' - वह 'मैं' जो एक लक्ष्य स्थापित करता है, वह 'मैं' जो आशा करता है या निराशा में है, 'मैं' जो किसी चीज़ की लालसा करता है, वह 'मैं' जो प्रेम करता है, वह कामुकता महसूस होती है. यह एक जीवित चीज़ है, यह स्थिर नहीं है। और जब ज्ञान से स्थिर मन इस जीवित वस्तु के पास आता है, तो या तो वह कहता है, "मुझे ऐसा नहीं होना चाहिए," और इसे बदलने की कोशिश करता है, या यह कहता है, "हाँ, वह मैं हूं, लेकिन मैं इसके बारे में क्या कर सकता हूं यह?" यह इनकार या स्वीकृति, जो ज्ञान पर आधारित है, एक आदत बन जाती है। जबकि जानने की गति, जो कि सक्रिय वर्तमान है, खोज की एक प्रक्रिया है, अपने बारे में पल-पल सीखने की। क्या आप अंतर देखते हैं, महोदय?

आप कहते हैं, "मैं अपनी पत्नी को जानता हूं," लेकिन क्या आप कहते हैं? आपके कहने का मतलब यह है कि आपने जो कुछ सीखा है, देखा है, कुछ विचारों के आधार पर आपके मन में उसकी एक छवि है।

तो क्या हुआ? आपने इस ज्ञान को एक आदत के रूप में स्थापित कर लिया है, और आप कहते हैं, "मैं अपनी पत्नी को जानता हूं।" इसकी जांच अवश्य करें, महोदय। क्या आप कभी कह सकते हैं कि आप किसी ऐसे जीवित इंसान को जानते हैं जो आपकी ही तरह लगातार बदलाव के दौर से गुजर रहा है, जो चिंताओं, भय, आशंकाओं, अनिश्चितताओं से भरा है? आप कह सकते हैं कि आप जानते हैं कि डीजल इंजन कैसे चलाना है, या पिस्टन क्या है, या जेट कैसे काम करते हैं, क्योंकि ये सभी यांत्रिक हैं। लेकिन आप अपने सभी रिश्तों को - मनुष्य के साथ, प्रकृति के साथ, विचारों के साथ - यांत्रिक आदतों तक सीमित कर देते हैं क्योंकि आपको उस स्थिति में रहना बहुत सुविधाजनक लगता है; आपके परेशान होने की संभावना बहुत कम है। आप कहते हैं, "मैं अपनी पत्नी को जानता हूं" - और उसे यांत्रिक चीजों की श्रेणी में डाल देते हैं। उसी तरह, जब आप कहते हैं, "मैं खुद को जानता हूं," तो इसका मतलब है कि आपको अपने बारे में ज्ञान है जो विचार का एक पैटर्न या आदत बन गया है। जबकि, यदि आप वास्तव में जानने शब्द के महत्व को देखते हैं , जिसका तात्पर्य सक्रिय वर्तमान से है जिसमें अतीत और भविष्य शामिल हैं, तो कभी भी निंदा नहीं होगी या जो है उसकी स्वीकृति मात्र नहीं होगी।

आप देखिए, मैं आपको कुछ ऐसी बात बताने की कोशिश कर रहा हूं जिसके बारे में आपने कभी नहीं सोचा है और यहीं हमारी कठिनाई है। संचार हमेशा कठिन होता है, लेकिन तब और भी मुश्किल हो जाता है जब कोई कुछ ऐसा कहने की कोशिश कर रहा हो जिसके बारे में बहुत कम लोगों ने सोचा हो। निश्चित ही आप कुछ सीख रहे हैं, है ना? सुनने की क्रिया में ही आप सीख रहे हैं। यह शब्दों को इकट्ठा करने, बाद में उनके बारे में सोचने और सीखने के लिए उससे सबक लेने की बात नहीं है। सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है. जैसे आप सुन रहे हैं, आप सीख रहे हैं; आप ज्ञान संचय नहीं कर रहे हैं.

महोदय, प्यार के बारे में जानने के लिए, इसके अर्थ को समझने के अर्थ में, इसके संपूर्ण महत्व को समझने के लिए, आप इसे यह कहकर नहीं समझ सकते हैं, "मुझे प्यार का अनुभव है, और मैं जानता हूं कि यह क्या है," क्योंकि प्यार कभी भी स्थिर नहीं होता है . मन प्यार को एक आदत बनाने की कोशिश करता है, इसे एक स्मृति में बदलने की कोशिश करता है - और इस तरह इसे नष्ट कर देता है। आप प्रेम के बारे में ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। यह एक जीवित चीज़ है, और आप केवल इसमें रह सकते हैं, इसके बारे में हर पल सीख सकते हैं, और इसलिए ऐसा कोई बिंदु नहीं है जिस पर आप कह सकें, "मुझे पता है कि प्यार क्या है।" ऐसा प्यार मर चुका है.

प्यार की यादें और यादें राख हैं; उनका कोई मतलब ही नहीं है.

उसी प्रकार, मन अपने बारे में जानने की गति में हो सकता है। उस आंदोलन में पर्यवेक्षक, सेंसर के रूप में कोई इकाई नहीं है, और इसलिए कोई विरोधाभास नहीं है, होने या बनने का कोई प्रयास नहीं है; इसलिए, मन जैसा है उसकी जीवंत समझ है। कोई आत्मा नहीं है, कोई सेंसर नहीं है जो चुनता है, किसी पैटर्न का कोई अनुमान नहीं है, जो प्राधिकरण बनाता है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? एक ही झटके में आप वह सारी बकवास दूर कर देते हैं; इसलिए, आप

मन को प्रयास से, द्वंद्व से मुक्त करो। विकल्पहीन जागरूकता है. मन जानने, सीखने, अस्तित्व की स्थिति में है, जो सक्रिय वर्तमान है।

आप देखिए, महोदय, हमारी कठिनाई यह है कि आपमें से बहुत कम लोग वास्तव में इसमें गए हैं। संभवतः आप भावुक हो रहे हैं और मेरी बातों से मंत्रमुग्ध हो रहे हैं. लेकिन इस सब के लिए बहुत सटीक सोच की आवश्यकता होती है; इसके लिए एक निश्चित स्पष्टता, बड़ी सरलता की आवश्यकता होती है; और आप वह स्पष्टता, वह सरलता, अपनी असाधारण जीवंतता के साथ तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब आप यह समझना शुरू कर दें कि केवल जानने की एक गति है। स्वयं के बारे में सभी निश्चित ज्ञान पूरी तरह से यांत्रिक आदत है, जो सेंसर का निर्माण करती है, और इसलिए विरोधाभास, संघर्ष होता है। जबकि, जानने की गति में, मन अपने भीतर जाता है, लेकिन समय के संदर्भ में नहीं; और यह कालातीत गति शांति, शांति की भावना लाती है। यह कल्पना की शांति नहीं है, न ही बौद्धिक मन की शांति है जिसने अपने लिए एक हाथी दांत का टॉवर बनाया है, न ही एक भक्त की शांति है जिसने खुद को किसी छवि, विश्वास या आदर्श के हवाले कर दिया है। ऐसी सभी "शांति" मृत है, यह ठहराव का एक रूप है।

लेकिन यदि आप स्वयं नामक इस जीवित चीज़ को समझना शुरू करते हैं, जो कि विभिन्न प्रभावों का एक केंद्रीकृत संग्रह मात्र है, तो जानने की उस गति में, जो कि सक्रिय वर्तमान है, आप पाएंगे कि मन, सेंसर से मुक्त है। विरोधाभास और द्वंद्व से भी मुक्त. ऐसे मन में पूर्ण मौन, पूर्ण शांति की अनुभूति होती है और केवल ऐसा मन ही रचनात्मक होता है। ऐसा मन केवल स्मृति से कार्य नहीं कर रहा है; यह यांत्रिक आदत से पूरी तरह से खाली है, और ऐसे मन में वह आता है जो सत्य है, अथाह है। सत्य कभी भी उस मन में नहीं आता जो अपनी ही चतुराई में फंसा हुआ है, न ही उस मन में जो अनुशासित, शुष्क, जला हुआ है; न ही यह संतों, नेताओं, केवल सद्गुणी लोगों तक पहुंचता है। सत्य, वास्तविकता, जो अच्छाई का खिलना है, वह प्रेम की भावना, केवल उस मन में आती है जो स्वयं की समझ में प्रवेश कर चुका है।

17 जनवरी 1960

बनारस, भारत, 1960

राजघाट पर पहली बातचीत

मुझे जीवन की प्रमुख समस्याओं के बारे में मौलिक रूप से सोचना और गहराई से महसूस करना बहुत महत्वपूर्ण लगता है। मौलिक रूप से सोचने का मतलब सैद्धांतिक या काल्पनिक रूप से सोचना नहीं है, बल्कि मन को उन घेरों से मुक्त करना है जो उसने अपने चारों ओर बुना है, और उन घेरों से भी मुक्त करना है जो दुनिया - परिस्थितियों, परंपरा, तथाकथित ज्ञान - ने उसके चारों ओर बुना है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग सैद्धांतिक रूप से सोचते हैं; हम सहज उत्तरों और स्पष्टीकरणों से संतुष्ट होते हैं, उद्धरणों से, संतोषजनक शब्दों से सो जाते हैं, और हमारी समस्याएँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, हम आम तौर पर उन्हें संतुष्ट और सतही रूप से हल करने में कामयाब होते हैं।

इसलिए, जो लोग गंभीरता से सुन रहे हैं और केवल दिन का समय बर्बाद नहीं कर रहे हैं क्योंकि उनके पास करने के लिए और कुछ नहीं है, मैं सुझाव देना चाहूंगा कि हम अपनी विभिन्न समस्याओं, कई संघर्षों और विरोधाभासों में, यदि संभव हो तो, एक साथ चलें। हमारे जीवन पर बोझ डालें। हमारी समस्याओं में "एक साथ जाने" से मेरा मतलब केवल मौखिकीकरण, या स्पष्टीकरण की पेशकश नहीं है, बल्कि अपने मन और अपने जीवन की जांच करके यह पता लगाना है कि क्या हम वास्तव में अनुभव नहीं कर सकते हैं कि क्या कहा जा रहा है, ताकि हम आ सकें। स्पष्टता, सटीकता और समझ के साथ इससे बाहर निकलें। अन्यथा हम केवल शब्दों में उलझे हुए हैं। आप इन वार्ताओं में आएंगे और कुछ और स्पष्टीकरण एकत्र करेंगे, कुछ और विचार एकत्र करेंगे, और फिर जीवन के पारंपरिक तरीके, या आरामदायक, सुरक्षित जीवन शैली में वापस आ जाएंगे जो आपने अपने लिए स्थापित की है।

इसीलिए मैं सुझाव दूंगा कि जो लोग इन मामलों के बारे में वास्तव में गंभीर हैं, उन्हें न केवल जो कहा जा रहा है उसे सुनना चाहिए, बल्कि सुनने की प्रक्रिया में, अपने दिमाग का निरीक्षण करना चाहिए, अपने सोचने के तरीकों का पता लगाना चाहिए, अपने दिमाग को उजागर करना चाहिए दैनिक जीवन में आदतें और गतिविधियाँ। जब तक हम ऐसा करने के इच्छुक नहीं होंगे, मुझे ऐसा लगता है कि ये बातचीत सार्थक नहीं होगी

सभी। मैं अक्सर यहां आता रहा हूं, और आप में से कुछ लोगों ने पिछले दस वर्षों से, सौभाग्य से या दुर्भाग्य से, मुझे बार-बार सुना है; और हममें से अधिकांश लोग बहुत कम बदलते हैं। हम अपने पदों पर स्थापित हैं और प्रतिष्ठा प्राप्त की है।' हम बूढ़े हो रहे हैं, और अपनी किसी भी समस्या का समाधान किए बिना हम जल्द ही कब्र में होंगे।

तो, क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि इन वार्ताओं को सुनते समय आप स्वीकार या अस्वीकार न करें, जो अपरिपक्व होगा, बल्कि मेरे साथ उन समस्याओं का पता लगाएं जो हममें से प्रत्येक के पास हैं। अन्वेषण का अर्थ केवल वर्णन करना और संतुष्ट होना नहीं है, बल्कि वास्तव में हमारे जीवन के संघर्षों, उलझनों, तुच्छताओं को उजागर करना है।

अखबार पढ़ने और दुनिया में चल रही घटनाओं पर नजर रखने से कोई यह देख सकता है कि आजादी कम होती जा रही है; आज़ादी का दायरा कम हो रहा है. क्या आप जानते हो मेरे कहने का क्या मतलब है? मन के मुक्त होने की संभावना बहुत कम है; यह सोचने, महसूस करने, खोजने में सक्षम नहीं है क्योंकि दुनिया भर में संगठित धर्मों ने, अपनी हठधर्मी मान्यताओं के साथ, हमारी सोच को पंगु बना दिया है; अंधविश्वासों और परंपराओं ने मन को घेर लिया है, मन को संस्कारित कर दिया है। आप एक हिंदू, एक ईसाई, एक मुस्लिम हैं, या आप किसी अन्य संगठित विश्वास से संबंधित हैं जो बचपन से आप पर थोपा गया है, और आप संकीर्ण या व्यापक सीमा के उस दायरे में कार्य करते हैं। जब आप कहते हैं कि आप हिंदू हैं, मुसलमान हैं, या जो आप चाहते हैं, तो कृपया अपने मन का निरीक्षण करें। क्या आप केवल वही नहीं दोहरा रहे हैं जो आपसे कहा गया है? आप नहीं जानते, आप केवल स्वीकार करते हैं—और आप स्वीकार करते हैं क्योंकि यह सुविधाजनक है। सामाजिक, आर्थिक रूप से, यह आपको स्वीकार करने और उस दायरे में रहने की सुरक्षा देता है। इसलिए स्वतंत्रता से इनकार किया गया है - न केवल हिंदू, ईसाई, मुस्लिम को, बल्कि उन सभी को जो एक संगठित धर्म के दायरे में हैं।

और अगर आप गौर करेंगे तो पाएंगे कि आप जिस भी पेशे से हैं, वह भी आपको गुलाम बना रहा है। वह आदमी कैसे आज़ाद हो सकता है जिसने चालीस साल किसी खास पेशे में गुज़ार दिए हों? देखिए एक डॉक्टर के साथ क्या होता है. कॉलेज में लगभग सात साल बिताने के बाद, अपने शेष जीवन के लिए वह एक सामान्य चिकित्सक या विशेषज्ञ होता है, और वह इस पेशे का गुलाम बन जाता है। निःसंदेह, उसकी स्वतंत्रता का अंतर बहुत ही संकीर्ण है। और यही बात राजनेताओं, समाज सुधारकों, उन लोगों के बारे में भी सच है जिनके पास आदर्श हैं, जिनके पास जीवन में एक उद्देश्य है।

इसलिए, यदि आप चौकस हैं, तो आप देखेंगे कि दुनिया में हर जगह स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा का अंतर कम होता जा रहा है। हमारा दिमाग महज मशीनें हैं। हम एक पेशा सीखते हैं, और उसके बाद हमेशा के लिए उसके गुलाम बन जाते हैं।
और मुझे ऐसा लगता है कि इसके लिए बहुत अधिक समझ की आवश्यकता है, वास्तविक

धारणा, अंतर्दृष्टि, इस घेरे को तोड़ने के लिए जिसे मन और समाज ने हममें से प्रत्येक के चारों ओर बुना है। इन गुलामियों से नए सिरे से संपर्क करने के लिए, उनसे मौलिक रूप से, गहराई से, मौलिक रूप से निपटने के लिए, मुझे लगता है कि व्यक्ति को क्रांतिकारी होना होगा - जिसका अर्थ है सोचना, पूरी तरह से महसूस करना, न कि केवल बाहर से चीजों को देखना। और व्यक्ति में विनम्रता का भाव तो होना ही चाहिए ना?

मैं नहीं मानता कि विनम्रता कोई विकसित गुण है। सद्गुण विकसित करना भयावह है क्योंकि जिस क्षण आप सद्गुण विकसित करते हैं, वह सद्गुण नहीं रह जाता है। सदाचार सहज, कालातीत है; यह वर्तमान में सदैव सक्रिय रहता है। एक मन जो केवल विनम्रता विकसित करता है वह वास्तव में विनम्र होने की पूर्णता, गहराई, सुंदरता को कभी नहीं जान सकता है; और यदि मन उस स्थिति में नहीं है, तो मुझे नहीं लगता कि वह सीख सकता है। यह यांत्रिक रूप से कार्य कर सकता है, लेकिन सीखना, निश्चित रूप से, ज्ञान का यांत्रिक संचय नहीं है। सीखने की गति बिल्कुल अलग है, है न? और सीखने के लिए मन में अत्यंत विनम्रता का भाव होना चाहिए।

मैं जानना चाहता हूं कि स्वतंत्रता क्या है - काल्पनिक स्वतंत्रता नहीं, जो किसी चीज़ की प्रतिक्रिया के रूप में स्व-प्रक्षेपित होती है। क्या वास्तविक स्वतंत्रता जैसी कोई चीज़ है - एक ऐसी अवस्था जिसमें मन वास्तव में उन सभी परंपराओं और प्रतिमानों से मुक्त हो रहा है जो उस पर सदियों से थोपे गए हैं? मैं जानना चाहता हूं कि यह कौन सी असाधारण चीज है जिसके पीछे लोगों को युगों-युगों तक संघर्ष करना पड़ा है; मैं इसके बारे में सब कुछ जानना, जानना चाहता हूं। और अगर मुझमें विनम्रता की भावना नहीं है तो मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं? विनम्रता का उस आत्म-सुरक्षात्मक विनम्रता से कोई लेना-देना नहीं है जिसे मन अपने ऊपर थोपता है। यह एक बदसूरत बात है. विनम्रता विकसित नहीं की जा सकती, और यह अनुभव करना सबसे कठिन चीजों में से एक है, निश्चित रूप से, क्योंकि हम पहले से ही खुद को कुछ पदों पर स्थापित कर चुके हैं। हमारे कुछ विचार, मूल्य हैं; हमारे पास एक निश्चित मात्रा में अनुभव, ज्ञान है और यह पृष्ठभूमि हमारी गतिविधियों, हमारे विचारों को निर्धारित करती है। एक बूढ़ा आदमी जिसने अपने अनुभवों के माध्यम से और दूसरों के अनुभवों के माध्यम से ज्ञान संचित किया है, और जो अपने लिए महत्वपूर्ण होने, अपने लिए शक्ति, प्रतिष्ठा की स्थिति स्थापित करने की इच्छा से प्रेरित है - ऐसा आदमी इस स्थिति में कैसे हो सकता है विनम्रता और इस प्रकार अपनी स्वयं की तुच्छताओं के बारे में जानें? इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि हमें विनम्रता की इस भावना के प्रति अत्यधिक चौकस और गहराई से जागरूक होना होगा।

दुनिया एक असाधारण उलझन में है, है ना? अपने नेताओं, स्वामियों, गुरुओं, मित्रों को देखो—वे सभी आत्म-विरोधाभास की स्थिति में हैं; वे नहीं जानते कि क्या करना है. हममें से कुछ लोगों के भीतर छोटे-मोटे विस्फोट हुए हैं और उन्होंने तदनुसार प्रतिक्रिया दी है। जब, उदाहरण के लिए, हम देखते हैं

गरीबी, भुखमरी, हमारे आसपास जो भी सामाजिक दुख चल रहा है, उसमें हमारे भीतर एक छोटा सा विस्फोट हो रहा है। हम कार्य करना चाहते हैं, कुछ करना चाहते हैं, न कि बैठे-बैठे हमेशा बातें करना, अटकलें लगाना चाहते हैं; इसलिए छोटा विस्फोट छोटी प्रतिक्रिया लाता है। हम किसी प्रकार के आंदोलन में शामिल होते हैं और काम करते हैं, काम करते हैं, काम करते हैं।
लेकिन वह संतुष्ट नहीं करता, उसमें कोई गहराई नहीं है, उसमें जीवन का विशाल विस्तार शामिल नहीं है, इसलिए हम उसे एक तरफ फेंक देते हैं और किसी और चीज़ की ओर देखते हैं; हम फिर से एक आंदोलन, एक संगठन से जुड़ते हैं। और इसलिए हम जीवन भर जुड़ते रहते हैं, छोड़ते रहते हैं, छोटे-मोटे विस्फोट करते रहते हैं और उतनी ही तुच्छता से प्रतिक्रिया करते रहते हैं।

महोदय, क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आप जो कहा जा रहा है उसे केवल एक व्याख्यान के रूप में नहीं, बल्कि अपने और अपने अस्तित्व के विवरण के रूप में सुनें; क्योंकि यदि हम अपने जीवन के प्रति जागरूक नहीं हैं, यदि हम वास्तव में हमारे भीतर और आसपास क्या हो रहा है इसके प्रति सचेत नहीं हैं, तो ये बातचीत खोखली, पूरी तरह से व्यर्थ हो जाती है। इसलिए, कृपया जो कहा जा रहा है उसे अपने जीवन से जोड़ें, और इसे केवल सैद्धांतिक रूप से बहुत अच्छी चीज़ के रूप में न फेंकें, लेकिन व्यावहारिक नहीं।

आख़िरकार, बहुत स्पष्टता से सोचना और स्वयं को धोखा न देना व्यावहारिक है। यह जानना कि समस्याएँ क्या हैं, और यह पता लगाना कि आप उन पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं, असाधारण रूप से महत्वपूर्ण है, है ना? अन्यथा आप केवल जीवन में अपना रास्ता बदल लेते हैं, या इससे भी अधिक भ्रम पैदा कर देते हैं क्योंकि आपको अधिक वोट मिलते हैं और आप एक महत्वपूर्ण पद पर आसीन हो जाते हैं। मन वैसे भी सुस्त, बहुत धीमा, सुस्त है; इसे बड़े पैमाने पर हिलाने की ज़रूरत है क्योंकि यह एक आरामदायक, सुरक्षित स्थिति में स्थापित हो गया है और परेशान नहीं होना चाहता। हममें से अधिकांश के साथ यही स्थिति है। और सुरक्षा की उस पृथक स्थिति से, मन चलता है, कार्य करता है और सोचता है। और जीवन, निश्चित रूप से, न केवल वर्तमान समय में बल्कि हमेशा, एक बिल्कुल अलग प्रतिक्रिया की मांग करता है।

तो मुझे ऐसा लगता है कि सीखने के लिए विनम्रता आवश्यक है। जीवन मन पर कुछ चीज़ों को प्रभावित कर रहा है, और यदि हम थोड़ा भी जागरूक हैं, तो हम हर समय सीख रहे हैं। लेकिन हममें से अधिकांश लोग केवल संचय की प्रक्रिया के रूप में सीखते हैं। मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी सीखने के बारे में सोचा है - सीखने का क्या मतलब है। मैं स्कूली बच्चों की शिक्षा के बारे में बात नहीं कर रहा हूं, जो केवल स्मृति की खेती है, जानकारी इकट्ठा करने की एक योगात्मक प्रक्रिया है। उस प्रकार की सीख यांत्रिक है, और यह अस्तित्व का एक आवश्यक हिस्सा है, लेकिन मैं पूरी तरह से अलग अर्थ में सीखने के बारे में बात कर रहा हूं। निश्चय ही, यदि मन पहले से ही संचित है तो वह सीख नहीं सकता। संचय की उस पृष्ठभूमि से, वह किसी भी चीज़ को नये सिरे से नहीं देख सकता है, है ना?

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि जब आप सूर्यास्त या नदी को देखते हैं तो आपके मन में क्या होता है। आपको नदी के बारे में ज्ञान है, आप उसका नाम जानते हैं, उसका तथाकथित आध्यात्मिक महत्व जानते हैं, और यह ज्ञान रोकता है

आप वास्तव में नदी को देख रहे हैं। महोदय, क्या मैं आप सभी से किसी विदेशी बात की बात कर रहा हूँ? मुझे नहीं लगता कि तुम मेरे साथ चल रहे हो.

जीवन में कई समस्याएं हैं, और आप उन्हें कैसे देखते हैं? बिजली की समस्या को आप कैसे देखते हैं? आप बहुमत पर कुछ लोगों के अत्याचार को किस प्रकार देखते हैं? आप एक बहुत ही विद्वान दिमाग की शक्ति और भीड़ को प्रभावित करने की शब्द की शक्ति को कैसे देखते हैं? गीता, वेदों, सभी आध्यात्मिक पुस्तकों के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया है? यदि आपकी प्रतिक्रियाएँ महज़ तुच्छ हैं, यदि वे पारंपरिक प्रतिक्रियाएँ हैं जिन्हें आपने अपने परिवेश से उठाया है, तो निश्चित रूप से आप नहीं सीख सकते।

मेरे लिए, सीखना एक निरंतर, कालातीत गतिविधि है; यह कभी संचयी नहीं होता.
जिस मन ने ज्ञान संचित कर लिया है, उसने सीखना बंद कर दिया है, भले ही वह अपने ज्ञान को बढ़ाता रहे। निश्चित रूप से, सीखना ज्ञान के अधिग्रहण से पूरी तरह से अलग है क्योंकि सीखना कभी भी एक योगात्मक प्रक्रिया नहीं हो सकती है।

मुझे बहुत खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आप इसे बिल्कुल भी समझते हैं। मेरे पास कोई
आपके साथ संवाद. यह बहुत बुरा है।

महोदय, मन-आपका मन-समय का परिणाम है, है ना? यह कई सदियों, कई कलों का संचयी परिणाम है। अब वह मन सीखना चाहता है, कुछ समझना चाहता है। लेकिन क्या इस सारे संचय से उसे कुछ समझ में आ सकता है? वह जो देखता है उसकी व्याख्या कर सकता है, कह सकता है कि वह अच्छा है या बुरा, सुखद है या अप्रिय, सार्थक है या नहीं; लेकिन जो मन सीखना चाहता है, कुछ समझना चाहता है, उसे निश्चित रूप से अतीत से मुक्त होना होगा।

इसलिए, यदि मन को सीखना है, समझना है कि स्वतंत्रता क्या है, तो उसे यह समझने से शुरू करना होगा कि वह किस हद तक, कितनी गहराई तक गुलाम है। कोई केवल यह नहीं कह सकता, "मेरा मन गुलाम है," और स्वतंत्रता को एक ऐसा लक्ष्य नहीं मान सकता जिसे उसे अवश्य प्राप्त करना चाहिए। एक गुलाम दिमाग आज़ादी की तलाश नहीं कर सकता क्योंकि वह नहीं जानता कि आज़ादी का मतलब क्या है। वह चाहे जो भी चाहे, वह फिर भी गुलामी ही होगी। लेकिन अगर मन यह जानने लगे कि वह किस हद तक गुलाम है, अगर वह लगातार अपनी गुलामी के वास्तविक तथ्य का अवलोकन कर रहा है, तो वह यह भी देखना शुरू कर देता है कि स्वतंत्रता कहां है। लेकिन हममें से अधिकांश को अपने बारे में सीखने से कोई सरोकार नहीं है। हमारा संबंध सतही गतिविधियों से है, मंदिरों के माध्यम से, ज्ञान के माध्यम से, किताबों के माध्यम से, सामाजिक कार्यों के माध्यम से और बाकी सभी चीजों के माध्यम से खुद से भागने में है।

मैं चिंतित हूं, जैसा कि दुनिया में हर कोई होगा, स्वतंत्रता क्या है, क्योंकि स्वतंत्रता कम होती जा रही है। सरकारें, यहाँ तक कि लोकतांत्रिक सरकारें भी, आपको आज़ादी नहीं देतीं; वे केवल इसके बारे में बात करते हैं। हम बैठ सकते हैं

यहां सरकार की आलोचना करते हैं, लेकिन यह बहुत सीमित अर्थों में ही आजादी है। अत्याचारी सरकारों के अधीन बिल्कुल भी स्वतंत्रता नहीं है; वे लोगों को इस तरह एक-दूसरे से बात करने की अनुमति नहीं देते। इसलिए स्वतंत्रता का दायरा और अधिक संकीर्ण होता जा रहा है, जिसका अर्थ है कि मानवीय गरिमा बहुत कम होती जा रही है। कृपया इसका महत्व अवश्य देखें। केवल स्वतंत्रता में ही आप रचनात्मक हो सकते हैं, और यह जानने के लिए कि स्वतंत्रता क्या है, इसके बारे में जानने के लिए, आपको पहले यह जानना होगा कि आपका मन किस हद तक गुलाम है। और क्या मन इसकी दासता के प्रति जागरूक होकर इसे तोड़ सकता है?

देखिए, श्रीमान, हम सभी परंपरा से परिचित हैं - परिवार की, समूह की, राष्ट्र की परंपरा। आपका मन उस परंपरा से कितना बना है?
आपका मन किस हद तक इसका गुलाम है? आपको निश्चित रूप से पता लगाना चाहिए। और यह पता लगाने के लिए, आप यह नहीं कह सकते कि परंपरा सही है या गलत, अच्छी या बुरी; आप यह नहीं पूछ सकते कि परंपरा के बारे में क्या करना है, क्या मन परंपरा के बिना काम कर सकता है, या कोई सतही प्रश्न नहीं उठा सकते जो कोई किसी चीज की सतही जांच करते समय पूछता है।

मैं वास्तव में जानना चाहता हूं कि मेरा मन किस हद तक परंपरा का गुलाम है - सदियों की परंपरा, और कल की परंपरा भी, जो मैंने अपने लिए बनाई है। परंपरा आदत है. मेरा मन किस हद तक आदत का गुलाम है? और क्या मन को आदत से मुक्त करना संभव है? यह कोई सतही प्रश्न नहीं है—यह मौलिक प्रश्न है। जब तक मैं यह नहीं जानता कि इसका उत्तर कैसे दूं - और मैं इसका उत्तर केवल अपने बारे में सीखकर ही दे सकता हूं - सामाजिक समस्याओं पर मेरी जांच, आर्थिक और धार्मिक समस्याओं पर मेरी चर्चा, हमेशा बहुत सतही होगी क्योंकि मैं केवल उस परंपरा के अनुसार उत्तर दूंगा जो समाज में है मुझ पर थोपा गया. हममें से अधिकांश लोग इस प्रकार की सतही सोच से संतुष्ट हैं, और यही कारण है कि हमारे लिए खुद को जांचने में गंभीर होना, अपने बारे में जानना और यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि हम किस हद तक गुलाम हैं। और अपने बारे में जानने के लिए विनम्रता ज़रूरी है ना?

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी विनम्रता के अजीब गुण को महसूस किया है।
नम्रता का तात्पर्य प्रेम है, है ना? इसका तात्पर्य समस्याओं के प्रति संयमित दृष्टिकोण से है। विनम्रता का तात्पर्य उन सभी निष्कर्षों, सभी लक्ष्यों की अनुपस्थिति से है जिन्हें मन ने प्रक्षेपित किया है।

देखिए, महोदय, हम, पुरानी पीढ़ी, हमेशा नई पीढ़ी द्वारा दुनिया को बदलने की बात करते हैं। लेकिन वही लोग जो नई पीढ़ी के बारे में इतनी उम्मीद से बात करते हैं, वे युवा लोगों पर अपनी सोच का ढर्रा थोप देते हैं। वे वास्तव में नई पीढ़ी नहीं चाहते; वे अस्तित्व के अपने सटीक स्वरूप को कायम रखना चाहते हैं। और अगर सीखने का मन है तो निश्चित रूप से विनम्रता आवश्यक है, है ना? मैं इस बिंदु पर परिश्रम कर रहा हूं क्योंकि

हममें से अधिकांश लोग अहंकारी हैं—हमें लगता है कि हम जानते हैं। दरअसल, वह क्या है जो हम जानते हैं? क्या आपने कभी "जानना" नामक प्रक्रिया पर ध्यान दिया है? क्या आपने कभी "मुझे पता है" के इस प्रश्न के बारे में पूछताछ की है? जो तुम जानते हो वही तुमने इकट्ठा किया है; यह इस पर निर्भर करता है कि आपके अनुभव क्या रहे हैं, और वे अनुभव आपकी कंडीशनिंग का हिस्सा हैं। क्या आप समझते हैं श्रीमान? यदि आप एक अमीर आदमी हैं, तो आपके अनुभव आपके धन के पैटर्न के अनुसार आकार लेते हैं। यदि आप एक गरीब आदमी हैं, तो आपके अनुभव आपकी गरीबी की स्थिति तक ही सीमित हैं। यदि आप एक विद्वान व्यक्ति हैं, तो आपके अनुभव काफी हद तक आपके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों से निर्धारित होते हैं। यदि आप चालीस वर्षों से नौकरशाह हैं, तो यह स्पष्ट है कि आपके अनुभव अधिकतर उसी क्षेत्र तक ही सीमित हैं; फिर भी आप कहते हैं, "मुझे पता है," और उस दंभ से आप अन्य जीवन की दिशा तय करना चाहते हैं। हम सब यही करते हैं. राजनेता, तथाकथित धार्मिक व्यक्ति, विद्वान, प्रोफेसर, पति, पत्नी-हर कोई ऐसा करता है। आह है।

तो, जो वास्तव में गंभीर हैं उनके लिए समस्या क्या है? जो लोग किसी लक्ष्य का पीछा कर रहे हैं, जो किसी गतिविधि में खोए हुए हैं, या जो वे चाहते हैं उसे पाने में खोए हुए हैं, वे बिल्कुल भी गंभीर नहीं हैं। वह केवल घमंड है. एक गंभीर व्यक्ति वह है जो पता लगाना चाहता है, स्वयं खोजना चाहता है, और अनगिनत लोगों ने जो कहा है उसे दोहराना नहीं चाहता है। और निश्चित रूप से ऐसे व्यक्ति को, वास्तव में गंभीर होने के नाते, इन सभी चीजों का पता लगाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, अहिंसा के पूरे प्रश्न को लें। इस देश में हम अहिंसा की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और हमने उसका एक दर्शन भी बना लिया है। मेरे लिए यह सब बकवास है, अगर आप मेरा ऐसा कहना माफ कर देंगे। सच तो यह है कि हम हिंसक हैं. हिंसक होकर हम अहिंसा का आदर्श बनाते हैं और इस प्रकार अपने भीतर एक अंतर्विरोध स्थापित कर लेते हैं; और उस विरोधाभासी मन के साथ हम एक दर्शन का आविष्कार करते हैं - जो बहुत ही मूर्खतापूर्ण है। निस्संदेह, जो मायने रखता है वह यह देखना है कि मैं हिंसक हूं और हिंसा की इस पूरी समस्या को समझना शुरू कर दूं-न कि अहिंसक बनने की कोशिश करूं। मैं नहीं जानता कि अहिंसक होने का क्या मतलब है.

मैं कैसे जान सकता हूँ कि इसका क्या मतलब है? मैं इसके बारे में केवल अटकलें ही लगा सकता हूं, जो बेकार है।' मैं जो कर सकता हूं वह यह है कि मैं अपने भीतर हिंसा के बारे में सीखूं, इसे देखूं, इसके सभी निहितार्थों, इसके महत्व, इसकी विक्षिप्त, विरोधाभासी स्थितियों को देखूं; और इस प्रकार अपने अंदर हिंसा के बारे में जानने के लिए बहुत अधिक विनम्रता की आवश्यकता होती है। लेकिन जो मन अहिंसक होना चाहता है वह अहंकारी, कल्पनाशील मन है; यह हिंसा से बच रहा है और इस तरह अपने भीतर एक विरोधाभास पैदा कर रहा है; और एक आत्म-विरोधाभासी मन कभी भी हिंसा को नहीं समझ सकता और न ही हिंसा से मुक्त हो सकता है।

चाहे वह खुद को अहिंसक होने के लिए कितना भी अनुशासित कर ले, वह हमेशा अहिंसक रहेगा

विरोधाभास की स्थिति, और एक आत्म-विरोधाभासी मन एक हिंसक, विनाशकारी मन है। कृपया इस सरल तथ्य को अवश्य देखें।

हममें से अधिकांश के साथ कठिनाई यह है कि हम इस तथ्य को देखने से इंकार कर देते हैं कि हम हिंसक हैं क्योंकि हम अहिंसा के आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध हैं, चाहे इसका मतलब कुछ भी हो। लेकिन अगर मैं देखता हूं कि मैं हिंसक हूं, और मैं अपनी हिंसा को समझना चाहता हूं, अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ उसमें उतरना चाहता हूं, तो मुझे विरोधाभास को त्यागना होगा, मुझे अहिंसा के आदर्श की मिथ्या को देखना होगा। मेरे अहिंसा के बारे में बात करने से क्या फायदा जब मेरा पूरा अस्तित्व ही हिंसक है, भले ही मैं इसे छिपा सकता हूँ? तो मुझे अपनी हिंसा को समझना होगा, उसमें जाना होगा, समझना होगा; और ऐसा करने के लिए, मेरा मन स्पष्ट रूप से विनम्रता की स्थिति में होना चाहिए। क्या आप समझते हैं श्रीमान?

इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि हमें इन सभी समस्याओं पर मौलिक रूप से विचार करना चाहिए। महत्वपूर्ण बात ऐसा उत्तर ढूंढना नहीं है जो तुरंत संतोषजनक हो, या फिलहाल लागू हो, बल्कि इन सभी समस्याओं के बारे में समग्र रूप से महसूस करना है।

मुझे डर है कि मैं आपको वह बिल्कुल भी नहीं बता पा रहा हूं जो मैं बताना चाहता हूं।
यह मेरी गलती हो सकती है; हो सकता है कि वह ठंडी सुबह हो या शायद कोई ठीक से सोया नहीं हो या अधिक खा लिया हो।

आप देखिए, हममें से अधिकांश लोग परेशान नहीं होना चाहते। क्या आपने कभी किसी अच्छे पद पर बैठे व्यक्ति को देखा है जिसे अपनी नौकरी से असाधारण लाभ मिलता हो? वह परेशान नहीं होना चाहता, वह जाने नहीं देगा, वह दूसरों को इसका मौका नहीं देने देगा। एक ही स्थिति पूरी दुनिया में लगातार दोहराई जाती है, और हम में से प्रत्येक के साथ यह अलग-अलग तरीकों से समान है। हमें एक ऐसे झटके की ज़रूरत है जो हमें ढीला कर दे और अंततः, निस्संदेह, मृत्यु है। क्या यह आपके लिए कोई समस्या है, महोदय? मन हमेशा सुरक्षा की तलाश में रहता है, एक ऐसा आश्रय जहाँ वह कभी परेशान न हो, और इसलिए वह जीने, सोचने, महसूस करने के एक विशेष पैटर्न का गुलाम बन जाता है। ऐसा मन अपने बंधनों से कैसे मुक्त हो सकता है? ऐसा दिमाग कैसे सीख सकता है?

हमारी समस्या, सबसे पहले, स्वयं को जानने की है - जो केवल एक आदर्शवादी खोज नहीं है क्योंकि केवल स्वयं को जानने में ही हम जान सकते हैं कि कार्य क्या है। स्वयं को जानना वास्तविक कार्य का आधार है - वह कार्य जो योग्य है, सार्थक है। हममें से अधिकांश लोग स्वयं को जानना नहीं चाहते; यह बहुत अधिक उबाऊ, एक व्यायाम है; बल्कि हमें बताया जाएगा कि क्या करना है। लेकिन अपनी सोच के तरीकों को उजागर करना, हमारी गतिविधियों के पीछे छिपे उद्देश्यों को देखना निश्चित रूप से बुनियादी मुद्दों में से एक है, है ना? यदि हम जानते हैं कि खुद को कैसे उजागर किया जाए, तो हम गुलामी के पैटर्न को तोड़ देंगे, और तब हम जानेंगे कि स्वतंत्रता क्या है - जो अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि

हर जगह आज़ादी का दायरा बहुत संकीर्ण होता जा रहा है। हम चीजों की दुनिया में और विचारों की दुनिया में जितनी अधिक प्रगति करते हैं, उतनी ही कम स्वतंत्रता होती है। अमेरिका में, जहां ऐसी समृद्धि है जैसी दुनिया ने कभी नहीं देखी, लोग समृद्धि के गुलाम बनते जा रहे हैं। यह अब वहां के प्रमुख मुद्दों में से एक है। यहां गरीबी है और हम समृद्धि चाहते हैं. हम अधिक भोजन, अधिक कपड़े, अधिक चीजें चाहते हैं; और हम इस विचार के गुलाम बनते जा रहे हैं कि हमें समृद्ध होना चाहिए।

तो कृपया स्वयं का परीक्षण करें कि आपका मन किस हद तक, कितनी गहराई तक गुलाम है। यह किसी कार्यालय की दिनचर्या का गुलाम नहीं हो सकता है, यह चीजों की यांत्रिक गुलामी में नहीं फंस सकता है, लेकिन यह हो सकता है कि आप ज्ञान के गुलाम हों। और यह सब देखे बिना, वास्तव में इसकी जांच किए बिना, इसे स्वयं उजागर और खोजे बिना, मैं नहीं समझता कि आप स्वतंत्रता में कैसे रह सकते हैं।

आप जानते हैं, ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके लिए जीवन एक निराशा है। अपना सारा जीवन सामाजिक सुधार लाने के लिए काम करने के बाद, या आप जो भी करेंगे, अचानक एक अंत हो जाता है, और वे निराश हो जाते हैं; सभी स्थापित दर्शन, धर्म, आदर्श समाप्त हो गये हैं और वे निराशा में हैं। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपमें से कोई भी उस स्थिति को जानता है? लेकिन जो लोग बहुत चतुर होते हैं, जब वे उस निराशा का सामना करते हैं, तो अपना एक दर्शन गढ़ लेते हैं, जो कि वर्तमान समय में दुनिया में क्या हो रहा है; वे कहते हैं, "जीवन जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करो और उसका सर्वोत्तम लाभ उठाओ।"

अब, जब आपने बचने के सभी रास्तों, चतुर सिद्धांतों, गीता के उद्धरणों और इसके बाकी सभी पहलुओं की जांच कर ली है, और जब आपका दिमाग किसी भी स्पष्टीकरण या आसान समायोजन से धोखा खाने से इनकार कर देता है ताकि आपके पास कोई उत्तर न हो, तो आपको निश्चित रूप से निराशा की स्थिति में आना होगा जो आशा के विपरीत नहीं है। हममें से अधिकांश लोग किसी बड़ी या छोटी चीज़ की आशा करते हैं - बेहतर नौकरी की या किसी कठिन समस्या से बाहर निकलने का रास्ता खोजने की - और जब हमारी आशाएँ पूरी नहीं होती हैं, तो हम निराशा की स्थिति में होते हैं, जो कि केवल आशा की प्रतिक्रिया है क्योंकि हम अभी भी कुछ चाह रहे हैं. मेरा अभिप्राय उस प्रकार की निराशा से नहीं है, जो वास्तव में काफी अपरिपक्व है। मैं उस दिमाग की बात कर रहा हूं जिसने इन सभी चीजों की जांच की है और कोई जवाब नहीं ढूंढ पाया है। ऐसा मन आशापूर्ण मन नहीं है; यह अंतिम उत्तर की तलाश या चाहत नहीं कर रहा है। यह पूरी तरह न जानने, पूरी निराशा की स्थिति में है और इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।

निश्चित ही, तभी कोई उसे पाता है जो सत्य है।

सत्य, या ईश्वर, या आप जो चाहेंगे—जिस चीज़ के बारे में हम सब इतनी आसानी से बात करते हैं—उसे प्राप्त करना इतना आसान नहीं है। किसी को बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ती है - लेकिन अनुशासन और प्रथाओं के माध्यम से नहीं, जो सभी अर्थहीन हैं क्योंकि उनमें निहित है

आशा और निराशा का बीज. यह उजागर करना और देखना कि कोई वास्तव में क्या सोच रहा है, और वह ऐसा क्यों सोच रहा है; परंपरा के प्रभावों, उद्देश्यों, विचार के अभ्यस्त पैटर्न को समझना - यह सब बहुत कठिन काम है। हर वक्त चौकन्ना रहना होगा. यदि, सुस्त होने के कारण, मन असावधान है, तो वह खुद को चौकस रहने के लिए अनुशासित कर सकता है, लेकिन इससे मन और भी अधिक सुस्त हो जाता है। एक अनुशासित दिमाग मूलतः एक सुस्त दिमाग होता है। अगर आप इस बारे में सोचेंगे तो आपको पता चलेगा कि ये कितना सच है. एक सतर्क, सक्रिय दिमाग, एक ऐसा दिमाग जो हर चीज़ को देखता है, परखता है, उसे किसी अनुशासन की आवश्यकता नहीं है। अनुशासन परीक्षा की प्रक्रिया में ही है, समझने की प्रक्रिया में ही है।

महोदय, मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि जो कुछ कहा गया है उसे स्वयं पर लागू किया जाए। यदि आप वास्तव में अपने आप को जांचने में सक्षम हैं, अपने भीतर बहुत गहराई से जाकर, तो आप पाएंगे कि एक ऐसी आजादी है जो गुलामी के विपरीत नहीं है, और इस आजादी के प्रकाश में, आपके जीवन की सभी समस्याओं का एक अलग अर्थ है . मुझे ऐसा लगता है कि जीवन में एकमात्र महत्वपूर्ण चीज़ इस स्वतंत्रता को पाना है क्योंकि इस स्वतंत्रता में रचनात्मकता है, वह वास्तविकता है जिसे मनुष्य सदैव तलाशता रहता है।

24 जनवरी, 1960

राजघाट पर दूसरी वार्ता

शायद आज सुबह, थोड़ी बातचीत करने के बाद, मैंने जो बात की है उस पर चर्चा करना सार्थक हो सकता है। चर्चा से मेरा मतलब यह है कि आपको और मुझे मिलकर समस्या पर विचार करना चाहिए, हमें पूछताछ करनी चाहिए, न केवल मौखिक रूप से, बल्कि यह भी देखना चाहिए कि हमारा दिमाग समस्या में कितनी गहराई तक प्रवेश कर सकता है। उस तरह से चर्चा करना केवल सुनने से अधिक सार्थक हो सकता है - हालाँकि सुनना अपने आप में एक असाधारण चीज़ है। लेकिन हममें से बहुत कम लोग सुनते हैं। हम अपने ही शब्दों से, अपनी ही व्याख्याओं से, अपने ही अनुभवों से घिरे हुए हैं, और हम शायद ही कभी दूसरे की बात सुनते हैं और पता लगाते हैं कि वह वास्तव में क्या सोचता है। मेरे द्वारा थोड़ी बातचीत करने के बाद, शायद हम विचारों के आदान-प्रदान और मौखिक रूप से क्षेत्र को साफ़ करने के माध्यम से इस प्रश्न पर अधिक गहनता से और गहराई से विचार कर सकते हैं।

आज सुबह मैं जिस बारे में बात करना चाहता हूं वह एक ऐसी समस्या है जिसका सामना मुझे लगता है कि न केवल हममें से जो यहां हैं बल्कि बाकी दुनिया को भी करना पड़ रहा है। हम सभी मिलकर काम करने, सहयोग करने, साथ मिलकर काम करने की समस्या से चिंतित हैं। साथ मिलकर काम करने की इस समस्या को विभिन्न तरीकों से देखा गया है, है ना? - जबरदस्ती, मजबूरी और प्रेरक तरीके से।

एक साथ काम करना न केवल समाज में, व्यावसायिक उत्पादन में, बल्कि वैचारिक रूप से भी महत्वपूर्ण हो गया है - मुझे यकीन नहीं है कि एक साथ काम करना बिल्कुल भी जरूरी है। साथ मिलकर काम करने के पूरे सवाल के कई निहितार्थ हैं, और हर कोई जो समाज में आमूल-चूल परिवर्तन के बारे में चिंतित है, निश्चित रूप से, इस सवाल से भी चिंतित है। हम आम तौर पर सज़ा के डर से, या इनाम की आशा से, या पद, प्रतिष्ठा, शक्ति प्राप्त करने की इच्छा से एक साथ काम करते हैं, क्या हम ऐसा नहीं करते हैं?

कृपया, क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि हम केवल शब्दों को न सुनें बल्कि वास्तव में जो कहा जा रहा है उसे स्वयं पर लागू करें।

हम कभी-कभी एक साथ काम करते हैं क्योंकि हम बौद्धिक, भावनात्मक रूप से, किसी धूर्त व्यक्ति द्वारा या किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रभावित होते हैं जिसने एक संत, एक गुरु आदि के रूप में आध्यात्मिक अधिकार ग्रहण किया है। यह हमारे तथाकथित कार्य को एक साथ लाने का एक तरीका है। दूसरा है राजनीतिक रास्ता. एक निश्चित कार्य करना होता है, एक अलग योजना के साथ दूसरी पार्टी के विरोध में एक पार्टी बनाई जाती है, और वोट पाने के लिए एक अभियान चलाया जाता है। इसमें बहुत अधिक धूर्तता, षडयंत्र, धूर्तता, भारी मात्रा में प्रचार और अनुनय निहित है।

हम समस्या पर विचार कर रहे हैं, इसलिए कृपया इस पर थोड़ा बारीकी से नज़र रखें।

फिर एक विचार, एक विश्वास के लिए मिलकर काम करना है, जो सामाजिक या तथाकथित आध्यात्मिक हो सकता है। कोई विचार किसी के द्वारा सामने रखा जाता है, और हम उस व्यक्ति के साथ सहयोग करते हैं क्योंकि हमें लगता है कि वह विचार उत्कृष्ट, सार्थक या महत्वपूर्ण है। इसे मिलकर काम करना भी कहते हैं. इसलिए हम एक विचार के लिए एक साथ काम करते हैं, अनुनय के माध्यम से, मजबूरी के माध्यम से, सजा के डर से या इनाम की आशा के माध्यम से, और यही सब हम जानते हैं। इसी तरह हम कुछ करने के लिए एक साथ आते हैं। आप कह सकते हैं कि हमारा एक साथ काम करना इतना क्रूर और सतही नहीं है, कि हम देश के प्यार, एक विचार के प्यार, गरीबों के प्यार के लिए मिलकर काम करें। निश्चित रूप से, जब प्यार होता है, तो दबाव या अनुनय की कोई भावना नहीं होती है, है ना? न वोट मिलना, न पार्टियाँ बनाना, न मेरा-तेरा का भाव।

किसी ऐसी चीज़ के लिए मिलकर काम करना जो स्व-प्रक्षेपित विचार नहीं है, जो स्वयं के लिए, किसी के परिवार या संबंधों आदि के लिए लाभदायक नहीं है - ऐसे साथ मिलकर काम करने का एक अलग ही महत्व है। लेकिन इससे पहले कि हम यह पता लगा सकें कि इस तरह से मिलकर काम करना क्या है, निश्चित रूप से हमें अपने अंदर से मजबूरी के विभिन्न रूपों को खत्म करना होगा।

क्या मैं ऐसे प्रयास में दूसरों के साथ काम करने में सक्षम हूं जो मेरे या आपके या उसके अधिकार पर आधारित नहीं है, और जिसमें कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं है, चाहे वह कितना भी सूक्ष्म क्यों न हो? सच्चा साथ मिलकर काम करने से ही निश्चित रूप से सफलता मिलती है

जब आप और मैं दोनों समस्या को समझते हैं, तो वास्तव में इसे समझें, क्योंकि यह वही समझ है जो एक साथ काम करने की आवश्यकता पैदा करती है। हमारा सहयोग तब स्वयं पर थोपा हुआ नहीं है; यह तथाकथित सहिष्णुता या किसी भी प्रकार के अनुनय का परिणाम नहीं है। जिस क्षण आप और मैं दोनों देखते हैं कि शिक्षा का एक निश्चित रूप लाया जाना चाहिए, वहां कोई 'आप' नहीं है और कोई 'मैं' नहीं है - जो महत्वपूर्ण है वह नई शिक्षा है। जब आप और मैं दोनों देखते हैं कि भुखमरी को जड़ से ख़त्म करना होगा, जब हम इसकी परम आवश्यकता को देखते हैं, न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि जब हम इसे गहराई से, पूरी तरह से, बहुत स्नेह, सहानुभूति, प्रेम के साथ महसूस करते हैं, तब उस स्थिति में समझ से, निश्चित रूप से, आप और मैं भुखमरी को खत्म करने के लिए मिलकर काम करते हैं। लेकिन यदि आपके पास भुखमरी मिटाने के लिए एक पसंदीदा प्रणाली है, और मेरे पास एक और है, तो प्रणाली अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है; इसलिए आप वोट इकट्ठा करते हैं, और मैं वोट इकट्ठा करता हूं, और हम एक-दूसरे से लड़ते हैं, एक ऐसी प्रणाली लाने के अंतहीन संघर्ष में अपनी रचनात्मक सोच और ऊर्जा को बर्बाद करते हैं जो समस्या का समाधान करेगी।

कृपया इसकी जांच करें. हालाँकि बहुत अधिक विवरणों में जाना संभव नहीं है, लेकिन कोई यह देख सकता है कि एक साथ काम करने का अर्थ बहुत कुछ है। जीवन के हर विभाग - राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक - में एक साथ मिलकर काम करना तभी संभव हो सकता है जब हम अपने दिमाग को हर तरह के डर से, हर तरह के प्रभाव और पुरस्कार से मुक्त करें; और हममें से अधिकांश के लिए यह करना बहुत कठिन है क्योंकि हम इसके अंत में कुछ चाहते हैं।

हम एक पद, एक निश्चित प्रतिष्ठा चाहते हैं, या हम सोचते हैं, "यह करना सही काम है," और हम इसके लिए काम करते हैं, पसीना बहाते हैं, वोट इकट्ठा करते हैं और दूसरों को किनारे कर देते हैं; इसलिए विवाद है, संघर्ष है। और मेरे लिए, संघर्ष का हर रूप, हमारे अस्तित्व के किसी भी स्तर पर, जीवन का सबसे विनाशकारी, बिगड़ता हुआ कारक है।

इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि साथ मिलकर काम करने की इस समस्या का समाधान स्वयं में आमूल-चूल परिवर्तन लाने में निहित है - एक ऐसा परिवर्तन जो किसी भी प्रकार के प्रभाव का परिणाम नहीं है। सर, हम समझाने से तो बदल जाते हैं ना? यह अनुनय का साम्यवादी रूप हो सकता है, या अनुनय का समाजवादी रूप हो सकता है, या अनुनय का लोकतांत्रिक रूप हो सकता है, या माँ का अनुनय कह सकता है, "मेरे लिए यह करो" जो भी हो, हम थोड़ा बदल जाते हैं।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी अपने जीवन पर नज़र डाली है कि क्या आप बिल्कुल बदले हैं? यदि आप बदल गए हैं तो आपके जीवन में यह बदलाव कैसे आया है? क्या यह किसी रूप में अनुनय, दबाव, किसी उद्देश्य के माध्यम से हुआ है? या यह बदलाव बिना किसी मकसद के आया है?

निश्चित रूप से, किसी मकसद से लाया गया परिवर्तन वास्तव में कोई परिवर्तन नहीं है, क्या ऐसा है?

देखिए, महोदय, क्रांति स्पष्ट रूप से आवश्यक है - स्कूल में, समाज में, धर्म में क्रांति। चीज़ों को तोड़ना ही होगा, चाहे वह कितनी भी असुविधाजनक क्यों न हो; वे वैसे नहीं चल सकते जैसे वे हैं। जहां कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोग शासन करते हैं; जहां परंपरा, हठधर्मिता और मूर्खता का राज है; जहां कुछ लोगों के पास शैक्षिक और अन्य लाभ हैं जो बहुतों के पास नहीं हैं; जहां अत्यधिक गरीबी, भुखमरी, पतन और साथ ही असाधारण समृद्धि हो वहां चीजें वैसी नहीं रह सकतीं जैसी वे हैं। कुछ तो टूटना ही चाहिए, और वह टूट रहा है, भले ही आप अपने अस्तित्व के वर्तमान तरीके को कितना भी पसंद करते हों और चाहते हों कि यह जारी रहे। तो, क्रांति-आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक-होनी ही चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से अधिकांश लोग इसका विरोध करते हैं। बैंक क्लर्क, वह पारिवारिक व्यक्ति जिसके पास घर है, थोड़ी सी संपत्ति है, सत्ता की स्थिति वाला व्यक्ति - हर कोई परिवर्तन का विरोध करता है, छोटी चीज़ों में और बड़ी चीज़ों में। क्या आपने अपने जीवन में इस पर ध्यान नहीं दिया है? जब आपको अलग तरह का खाना खाना पड़ता है, कुछ ऐसा जो अत्यधिक मसाले वाला खाना नहीं है जिसका आप आदी हैं, तो आपका शरीर विद्रोह कर देता है। वह भी न बदलने की चाहत का ही एक रूप है.

कृपया मेरी वाणी को नहीं, बल्कि अपने मन को खोजें। केवल बातचीत न सुनें। यह एक स्पष्ट सुबह है; वहाँ प्यारी नदी है, सुंदर आकाश है। इस कमरे में ऐसे लोगों की भीड़ में रहने से बेहतर है कि उन सभी चीजों पर गौर किया जाए जिनका खुद की जांच करने का कोई इरादा नहीं है। जीवन का आनंद लेना, पृथ्वी की समृद्धि को महसूस करना, गरीबी के प्रति जागरूक होना, बहती नदी को देखना, यहां बैठकर अटकलें लगाने से कहीं बेहतर है। अटकलें बौद्धिक मनोरंजन का सबसे मूर्खतापूर्ण रूप है।

जैसा कि मैं कह रहा था, हम हमेशा परिवर्तन का विरोध करते हैं, लेकिन परिवर्तन होकर रहेगा, चाहे हम इसे पसंद करें या नहीं। जो लोग शासन करते हैं और विरोध करते हैं वे उस समय टूट जायेंगे जब उनकी बनाई हुई चीज़ दरकने लगेगी; जबकि बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि परिवर्तन अपरिहार्य है, और जब क्रांति उन चीज़ों को चकनाचूर कर देती है जिन्हें वह बना रहा होता है तो वह अपने आप में बदलाव लाता है। लेकिन ऐसे लोग कम ही होते हैं.

तो समस्या यह है कि बिना किसी अनुनय के अपने आप में आमूल-चूल परिवर्तन कैसे लाया जाए - जो स्पष्ट रूप से आवश्यक है। यदि आपको परिवर्तन के लिए राजी किया जाता है, तो आप केवल एक निश्चित प्रकार की मजबूरी पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं, चाहे वह भारतीय रूप हो, या साम्यवादी रूप हो, या पश्चिमी रूप हो; और किसी भी प्रकार की बाध्यता के माध्यम से परिवर्तन करना कोई परिवर्तन नहीं है। यदि आप इसलिए बदलते हैं क्योंकि आपको पुरस्कार दिया जाता है या आपको धमकी दी जाती है, तो कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ है। आप बस दूसरे पैटर्न के अनुरूप हैं।

क्रांति जो कि जो हो चुका है उसकी प्रतिक्रिया है, क्रांति नहीं है क्योंकि यह केवल एक नया पैटर्न स्थापित करती है, जो पुराने का एक संशोधित रूप है; बस इतना ही। क्या मैं बहुत तेज़ बात कर रहा हूँ?

कोई देखता है कि यदि दुनिया में वास्तविक परिवर्तन करना है, तो सबसे पहले मन की गुणवत्ता में आमूल-चूल परिवर्तन करना होगा क्योंकि लोग बहुत आसानी से अधिनायकवादी से लोकतांत्रिक राज्य में, या लोकतंत्र से अधिनायकवाद में, चाहे वह कुछ भी हो, बदल जाते हैं। नाजी प्रकार का हो या साम्यवादी प्रकार का। उन्हें अधिक भोजन दें, उन्हें आजीविका कमाने के बेहतर अवसर प्रदान करें, उन्हें राष्ट्रवाद की मूर्खता में उत्तेजित करें, और वे सभी किसी न किसी तरह से "बदल जाएंगे"। लेकिन कोई देखता है कि ऐसा कोई भी परिवर्तन केवल एक प्रतिक्रिया है, और एक मन जो केवल प्रतिक्रिया करता है उसे फिर से किसी अन्य दिशा में परिवर्तन के लिए प्रभावित किया जा सकता है - आज मैं एक कम्युनिस्ट हूं, और यदि वह भुगतान नहीं करता है, तो मैं समाजवादी, या पूंजीवादी बन जाता हूं, और इसी तरह। दुनिया भर में चल रही इस प्रक्रिया को देखकर कोई भी अपने आप से पूछता है कि इसका क्या मतलब है। परिवर्तन कहाँ होना है? क्या परिवर्तन केवल एक पैटर्न को छोड़कर दूसरे के अनुरूप होने का मामला है? क्या आपको समस्या दिख रही है, महोदय?

परिवर्तन शब्द में क्या निहित है ? लालची होने के कारण, मैं उसी क्षण बदलना चाहता हूँ जब लालच दुखद हो, लेकिन मैं तब तक बदलना नहीं चाहता जब तक मुझे लालच में बहुत अधिक आनंद मिलता है। इसलिए जब मैं लालच से छुटकारा पाने की कोशिश करता हूं, तो मैं एक मकसद से बदल रहा हूं; परिवर्तन की मेरी इच्छा एक प्रतिक्रिया है, और उस प्रतिक्रिया को फिर से संशोधित किया जा सकता है। मुझे नहीं पता कि आप ये सब फॉलो कर रहे हैं या नहीं.

क्या कोई परिवर्तन हो सकता है, संपूर्ण क्रांति - आर्थिक क्रांति या सामाजिक क्रांति या धार्मिक क्रांति नहीं, जो सभी सतही हैं, बल्कि एक आंतरिक क्रांति है जो समग्र है, जिसमें मेरी पूरी चेतना, मेरा पूरा अस्तित्व बिखर जाता है, और एक नई बात सामने आती है? आप देखिए, महोदय, हममें से अधिकांश के लिए परिवर्तन अतीत की एक संशोधित निरंतरता है, और यह बिल्कुल भी परिवर्तन नहीं है। इस कठिनाई को देखकर, और यह महसूस करते हुए कि क्रांति, परिवर्तन की यह पूरी प्रक्रिया कितनी जटिल है, कोई भी अनिवार्य रूप से पूछता है: क्या चेतना के क्षेत्र में परिवर्तन करना संभव है?

क्या यह सब बहुत कठिन है, महोदय?

प्रश्न: क्या मैं बोल सकता हूँ?

कृष्णमूर्ति: बस एक क्षण। मैं जो कहना चाहता हूं वह अभी तक समाप्त नहीं हुआ हूं।
पहले समस्या तो देखिये सर. यदि कोई वास्तव में इसमें जाता है, तो वह इसे विचार बनाम अस्तित्व की समस्या के रूप में देखता है। हममें से अधिकांश के लिए, विचार परिवर्तन का एक साधन है। विचार के माध्यम से हम परिवर्तन की आशा करते हैं, विचारों के माध्यम से हम स्वयं को बदलने की आशा करते हैं। मैं आपको विचारों के माध्यम से, अपना राष्ट्रवाद छोड़ने के लिए, एक विशेष प्रकार की धार्मिक प्रथा अपनाने के लिए, या आप जो भी चाहें, अपनाने के लिए मनाता हूँ। मैं तुम्हें समझाने में सफल हो जाता हूं क्योंकि मैं बहुत चतुर हूं; मैं आपको इसकी बेतुकीता दिखाता हूं या

वह, और आप मेरी तीव्रता से, मेरे शब्दों से आश्वस्त हो जाते हैं, और आप बदल जाते हैं - या कम से कम आपको लगता है कि आप बदल गए हैं।

अब, उस प्रक्रिया में वास्तव में क्या हुआ है? आपने अपने विचार बदल दिए हैं, आपने अपना विचार बदल लिया है, लेकिन विचार हमेशा वातानुकूलित होता है। चाहे वह जीसस, बुद्ध, एक्स, वाई, या जेड का विचार हो, यह अभी भी विचार है, और इसलिए एक विचार दूसरे विचार के विरोध में हो सकता है; और जब विरोध होता है, दो विचारों के बीच संघर्ष होता है, तो परिणाम विचार की एक संशोधित निरंतरता होती है। दूसरे शब्दों में, परिवर्तन अभी भी विचार के क्षेत्र के भीतर है, और विचार के क्षेत्र के भीतर परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है।

एक विचार या विचारों के समूह को केवल दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापित कर दिया गया है।

इस पूरी प्रक्रिया को देखकर क्या विचार को छोड़कर विचार के क्षेत्र से बाहर परिवर्तन लाना संभव है? समस्त चेतना, निश्चित रूप से, चाहे वह अतीत की हो, वर्तमान की हो, या भविष्य की हो, विचार के क्षेत्र में है; और उस क्षेत्र के भीतर कोई भी परिवर्तन, जो मन की सीमाएँ निर्धारित करता है, कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं है। आमूल-चूल परिवर्तन केवल विचार के क्षेत्र के बाहर ही हो सकता है, उसके भीतर नहीं, और मन उस क्षेत्र को तभी छोड़ सकता है जब वह क्षेत्र की सीमाओं को देखता है, और यह महसूस करता है कि क्षेत्र के भीतर कोई भी परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है। . यही वास्तविक ध्यान है. इसमें जाने के लिए बहुत अधिक काम, विचार, ऊर्जा की आवश्यकता होती है - वह ऊर्जा जिसे हम अब विभिन्न प्रकार की प्रथाओं पर खर्च करते हैं, जो कि बहुत बचकानी हैं। वास्तव में विचार क्षेत्र की पड़ताल करना और चेतना की सीमाओं को देखना अत्यंत महत्वपूर्ण है। आख़िरकार, ये सीमाएँ प्रयास, विरोधाभासों, संघर्षों और परिवर्तन की इच्छा का परिणाम हैं। इस सीमित क्षेत्र को पूरी तरह से देखना, इसे पूरी तरह से समझना है, जिसके बारे में मैं बात कर रहा हूं वह आमूल परिवर्तन आता है - किसी भी प्रकार के अनुनय, मजबूरी या आधिकारिक प्रभाव के माध्यम से नहीं; और मुझे लगता है कि साथ मिलकर काम करने, रहने और काम करने का यही एकमात्र तरीका है।

जी श्रीमान?

टिप्पणी: मुझे लगता है कि आप जिन बदलावों की बात कर रहे हैं-सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक-सभी एक एकीकृत सिद्धांत की अभिव्यक्ति हैं।

कृष्णमूर्ति: यह एक सिद्धांत है।

टिप्पणी: मुझे लगता है कि विश्व में, संपूर्ण सृष्टि में एक एकीकृत सिद्धांत काम कर रहा है।

कृष्णमूर्ति: यह हो सकता है। मुझें नहीं पता।

टिप्पणी: परिवर्तन आएंगे, और कोई भी उनका विरोध नहीं कर सकता।

कृष्णमूर्ति: क्या हममें से हर कोई बदलाव का विरोध नहीं कर रहा है? यह देखना ही मायने रखता है। यदि हम परिवर्तन का विरोध नहीं कर रहे होते, तो हम एकीकृत सिद्धांत के बारे में बात नहीं करते। तब जीवन एक सतत क्रांति होगी।

टिप्पणी: एकीकृत सिद्धांत क्रांति पर आधारित है।

कृष्णमूर्ति: एकीकृत सिद्धांत शब्द को इस समस्या में क्यों लाया जाए?

प्रश्न: यदि परिवर्तन अपरिहार्य हैं, तो कौन सी चीज़ हमें उनका विरोध करने के लिए प्रेरित करती है?

कृष्णमूर्ति: इसका उत्तर देना बहुत आसान है। वह व्यक्ति जिसका राजनीतिक, आर्थिक, स्कूल में या कहीं भी अच्छा स्थान है, परिवर्तन का विरोध करता है। वह कहते हैं, "भगवान के लिए, चीज़ों को वैसे ही रखो जैसे वे हैं।" सत्ता में बैठे लोग किसी भी बदलाव का विरोध करते हैं क्योंकि वे परेशान नहीं होना चाहते। जीवन भर, प्रधान मंत्री से लेकर छोटे शहर के राजनेता तक, यही स्थिति है। वह व्यक्ति जो चीज़ों से असंतुष्ट है जैसा कि वे हैं - यह वह है जो परिवर्तन के बारे में जानना चाहता है। वह अपने आप में परेशान, असंतुष्ट होकर परिवर्तन के एक विशेष रूप को स्वीकार करता है जो उसे संतुष्ट करता है; और एक बार उस आदत में स्थापित हो जाने के बाद, वह परेशान भी नहीं होना चाहता।

टिप्पणी: असंतुष्ट लोग बहुत आसानी से किसी भी तरह के जाल में फंस सकते हैं
ऐसा परिवर्तन जो उन्हें नापसंद के विपरीत दिखाई देता है।

कृष्णमूर्ति: हाँ सर, हम यही कह रहे थे।

प्रश्न: आपका कहना है कि वास्तविक परिवर्तन विचार के क्षेत्र से बाहर होना चाहिए।
लेकिन क्या हमें पहले उन सभी संभावित तथ्यों को नहीं जानना चाहिए जो किसी चीज़ के बारे में दिमाग द्वारा एकत्र किए जा सकते हैं, और फिर उस जानकारी को हम पर तब तक प्रभावित नहीं होने देना चाहिए जब तक कि हमारी भावनाएं हमें यह न बताएं कि यह सही है?

कृष्णमूर्ति: मुझे समझ नहीं आता कि यह उस तरह से कैसे काम कर सकता है। आप कह रहे हैं कि विश्लेषण और कटौती के माध्यम से जानकारी एकत्र करनी चाहिए, इस एकत्रित जानकारी के महत्व को देखना चाहिए, इसे भावना में बदलना चाहिए और फिर उस भावना से कार्य करना चाहिए। हममें से अधिकांश लोग जानबूझकर या अनजाने में यही करते हैं। मैं कहता हूं कि जीवन जीने का एक निश्चित राजनीतिक या धार्मिक तरीका सही है।

मुझे कैसे पता चलेगा? क्योंकि मैंने इसके बारे में पढ़ा है, लोगों और अपने खुद के बारे में

अनुभव ने मुझे आश्वस्त किया है, और मुझे लगता है कि यह सार्थक है, कि इससे मनुष्य की स्थिति में सुधार होगा, इसलिए मैं खुद को पार्टी के लिए प्रतिबद्ध करता हूं, और मैं अन्य पार्टियों के खिलाफ हूं। हममें से अधिकांश लोग हर समय यही करते हैं। अब, उस भावना को उत्पन्न करने में, निश्चित रूप से जो निहित है वह अनुभव पर आधारित निर्णय की भावना है, क्या ऐसा नहीं है? और अनुभव स्पष्ट रूप से वातानुकूलित है। एक कम्युनिस्ट के रूप में, एक डेमोक्रेट के रूप में मेरा अनुभव, या आप जो भी करेंगे, वह विभिन्न प्रभावों, अनुनय, मजबूरियों, भय, पुरस्कारों का परिणाम है। उस कंडीशनिंग से भावना उत्पन्न होती है और मैं अभिनय करता हूं।

टिप्पणी: मुझे लगता है कि भावना कमोबेश अचेतन होती है। हमें अपने चेतन विचारों का उपयोग अपनी अचेतन भावना, जो कि अचेतन मन है, को प्रभावित करने के लिए करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति: क्या चेतन और अचेतन के बीच कोई वास्तविक विभाजन है, या यह हमारे सामाजिक, पर्यावरणीय प्रभावों द्वारा निर्मित एक अप्राकृतिक विभाजन है? चेतन मन वह मन है जिसने सीखा है, जिसने ज्ञान प्राप्त किया है; यह सूचना का एक सतही संग्रहकर्ता है। यह हर दिन कार्यालय जाता है, कुछ नियमित काम करता है, इत्यादि। फिर अचेतन है, और क्या चेतन मन अचेतन को प्रभावित कर सकता है? यदि आप वास्तव में इसकी जांच करते हैं, तो आप देखेंगे कि यह अचेतन है जो चेतन मन को प्रभावित कर रहा है, सौभाग्य से या दुर्भाग्य से; दोनों के बीच हर वक्त बातचीत होती रहती है. लेकिन चेतन और अचेतन के इस प्रश्न पर चर्चा करने के लिए बहुत अधिक प्रयास और समय की आवश्यकता होती है।

हमें शुरुआत में ही शुरुआत करनी होगी, समय के अंत में नहीं।
शायद हम इसे दूसरी बार कर सकते हैं.

प्रश्न: चेतना के क्षेत्र के बाहर परिवर्तन कैसे लाया जाए?

टिप्पणी: यह तभी संभव है जब हम आपके और मेरे बीच के विभाजन को भूल सकें।

कृष्णमूर्ति: मुझे नहीं लगता कि आपने बिल्कुल भी सुना है। एक सज्जन पूछते हैं कि चेतना के क्षेत्र के बाहर कैसे बदलाव लाया जाए। वह जानना चाहता है कि इसकी विधि क्या है, इसे कैसे करना है। आप जानते हैं, यह हमारे बारे में अजीब चीजों में से एक है कि हम तरीकों के प्रति इतने गुलाम हैं - जैसे कि कोई भी तरीका हमारी मानवीय समस्याओं का समाधान कर देगा। सर, किसी चीज़ को एक साथ रखने की एक विधि होती है। अगर मैं मैकेनिक बनना चाहता हूं, तो मैं सीखूंगा कि यांत्रिक चीजों से कैसे निपटना है। वह है

बहुत सरल। मैं स्कूल जाता हूं और वे मुझे इसकी विधि सिखाते हैं। लेकिन हम यांत्रिक चीजों की बात नहीं कर रहे हैं, और इसलिए कोई विधि नहीं है। आपको इस पर विचार करना होगा. महोदय, अगर मैं सुझाव दे सकूं तो इसे इस तरह से देखें: क्या लोगों से प्यार करने का कोई तरीका है?

टिप्पणी: नहीं.

कृष्णमूर्ति: आप उस प्रश्न को ना क्यों कहते हैं, और फिर भी बदलाव का तरीका क्यों पूछते हैं?

प्रश्न: क्या यह सच नहीं है कि हम परिवर्तन को कुछ मूर्त, कुछ ऐसा जिसे महसूस किया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, के रूप में सोचते हैं?

कृष्णमूर्ति: सोचो सर, मुझसे मत पूछो। समस्या बहुत बड़ी है.
आप यह नहीं कह सकते, "मुझे बताओ कि बदलाव का तरीका क्या है" इसका कोई मतलब नहीं है।
यदि आप परिवर्तन के बारे में चिंतित हैं, न केवल सैद्धांतिक रूप से ताकि आप घर वापस जाएं और पुराने तरीके से जारी रहें, बल्कि यदि आप इसकी आवश्यकता देखते हैं और महसूस करते हैं कि आपको बदलना है, तो यह समस्या उत्पन्न होती है - अनुनय की समस्या, प्रभाव, सज़ा, इनाम, और आपकी अपनी प्रतिक्रियाएँ जिनके बारे में आप नहीं जानते; इसलिए उठना और कहना व्यर्थ है, "कृपया मुझे कुछ मिनटों में चेतना के क्षेत्र के बाहर परिवर्तन के बारे में बताएं।"

जो व्यक्ति वास्तव में इस प्रश्न में रुचि रखता है उसे क्या करना चाहिए?—और मनुष्य को इसमें अत्यधिक रुचि होनी चाहिए क्योंकि यह पूरी दुनिया में समस्या है। यह समस्या सिर्फ इस स्कूल या आसपास के आदमी की नहीं है, बल्कि मानवता की भी है। क्या मन की गुणवत्ता में परिवर्तन लाया जा सकता है, जो अब इतना यांत्रिक, गुलाम होता जा रहा है? यदि यह आपके और मेरे लिए एक महत्वपूर्ण समस्या है, तो हम यूँ ही कोई तरीका नहीं पूछेंगे; हम सैद्धांतिक नहीं तथ्यात्मक चर्चा करेंगे. मुझे लगता है कि सारी सैद्धांतिक चर्चा बेकार, गर्म हवा और समय की बर्बादी है। अगर हमें सचमुच बुनियादी बदलाव की जरूरत दिखेगी तो हम तथ्यात्मक चर्चा करेंगे। मैं देखता हूं कि मैं लालची हूं, और मैं जानना चाहता हूं कि क्या लालच से मुक्त होना संभव है; मैं देखता हूं कि मैं ईर्ष्यालु हूं, और मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या मैं उस ईर्ष्या को तोड़ सकता हूं। मैं किसी विधि की तलाश में नहीं हूं, लेकिन मैं कहता हूं, "मुझे ईर्ष्या की समस्या की जांच करने दीजिए।" यदि कोई व्यक्ति जो सत्ता की स्थिति में है, कहता है, “देखो, मैं एक महान व्यक्ति हूँ; मुझे इस स्थिति में रहना पसंद है, और मुझे परेशान मत करो,'' तो उसके लिए कोई समस्या नहीं है। मैं ऐसे आदमी से दूर चला जाता हूँ; मैं उससे खिलवाड़ नहीं करता क्योंकि मैं उससे कुछ नहीं चाहता। लेकिन आम इंसान होने के नाते आप और मैं इस समस्या से चिंतित हैं। यह मेरी समस्या नहीं है, जिसे मैं आप पर थोप रहा हूं; यह आपकी समस्या है. यदि आप वहां बैठते हैं और

कहो, "मुझे इसके बारे में सब बताओ," तो आपका और मेरा कोई रिश्ता नहीं है। लेकिन अगर हममें से कुछ लोग मिलकर इस पर विचार कर सकें, तो यह बिल्कुल अलग बात है।

प्रश्न: एक सीढ़ी है, और हम उसके सहारे छत पर पहुँचते हैं। जब तक हम वहां नहीं पहुंच जाते, हमें नहीं पता कि यह किस प्रकार की छत है। क्या हम कह सकते हैं कि छत सीढ़ी से बाहर कुछ है? यदि सीढ़ियाँ नहीं होंगी तो क्या छत होगी?

कृष्णमूर्ति: सर, घर फर्श, दीवारें, खिड़कियाँ, छत और सीढ़ियाँ हैं। आप सीढ़ी या छत को घर से अलग नहीं कर सकते। दीवारों के बिना छत जैसी कोई चीज़ नहीं लटकती। घर एक संपूर्ण चीज़ है. अब, घर के भीतर कोई भी बदलाव - एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना, प्रत्येक कमरे को अलग तरीके से सजाना, इत्यादि - एक सीमित परिवर्तन है; यह वातानुकूलित, संकीर्ण है। जाहिर तौर पर यह आज़ादी नहीं है. तो क्या संपूर्ण परिवर्तन हो सकता है, ऐसा परिवर्तन जो घर के भीतर न हो? क्या आप कहते हैं कि ऐसा परिवर्तन असंभव है, कोई भी परिवर्तन हमेशा घर के भीतर ही होता है? क्या आप कहते हैं कि घर से बाहर बदलाव की बात करना बकवास है? आप क्या सोचते हैं? क्या सभी परिवर्तन घर के भीतर होते हैं, या क्या बाहर परिवर्तन लाना संभव है - या यों कहें कि परिवर्तन नहीं बल्कि कार्य करने का एक तरीका है? आख़िरकार, परिवर्तन का अर्थ है कार्रवाई - कार्रवाई का एक तरीका जो घर तक ही सीमित नहीं है।

देखिए, श्रीमान, मान लीजिए कि मैं एक हिंदू हूं, और मैं देखता हूं कि यह सब कितना मूर्खतापूर्ण, घटिया, बदसूरत है, इसलिए मैं कैथोलिक धर्म में शामिल हो जाता हूं। वह कर्म है ना? और मुझे लगता है कि मैं बदल गया हूं. लेकिन मेरा "परिवर्तन" अभी भी घर के भीतर, पिंजरे के भीतर है; यह अभी भी मानवीय दुख के क्षेत्र में है। मैंने केवल गुलामी की एक अवस्था को दूसरी गुलामी से बदला है। इस तथ्य को देखते हुए, मैं कहता हूं, "क्या इस सीमा के बिना, इस घर के बिना, हिंदू धर्म, कैथोलिक धर्म या किसी अन्य प्रणाली के बिना कार्य करना संभव है? कैथोलिकों और कम्युनिस्टों सहित बड़ी संख्या में लोगों का कहना है कि यह संभव नहीं है। ऐसा हो सकता है, लेकिन फिर आपको यह स्वीकार करना होगा कि मन हमेशा गुलाम रहता है।

टिप्पणी: आप कहते हैं कि हिंदू धर्म से कैथोलिक धर्म में परिवर्तन नहीं है
परिवर्तन। लेकिन जब हम सीढ़ियाँ चढ़ते हैं तो हम एक अलग स्तर पर होते हैं।

कृष्णमूर्ति: दूसरे शब्दों में, आप कह रहे हैं कि सीढ़ियाँ चढ़ने की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से, आप छत तक पहुँचते हैं, जहाँ जीवन के प्रति आपका एक अलग दृष्टिकोण होता है। ऐसा कहकर आप समय को निमंत्रण दे रहे हैं ना? जब आप छत तक पहुंचने तक सीढ़ी पर एक-एक कदम आगे बढ़ते हैं, तो वह प्रक्रिया, पहले कदम से आखिरी तक, क्रमिकता को दर्शाती है; से दूरी

एक बिंदु से दूसरे बिंदु को पार करना होगा, जिसका अर्थ समय है, है ना? यह सब अभी भी विचार के क्षेत्र में, मन के क्षेत्र में है।

टिप्पणी: सीढ़ियों से ऊपर जा रहे एक व्यक्ति ने छत नहीं देखी है; अंतिम चरण तक उसे पता नहीं चलता कि छत कैसी है, और फिर यह एक सहज बात है।

कृष्णमूर्ति: उपमाएँ सर्वाधिक भ्रामक होती हैं, और इसीलिए कोई उनका उपयोग करने से झिझकता है। आइए हम उपमाओं और उदाहरणों में न खो जाएँ। कोई रास्ता ढूंढने का प्रयास न करें-केवल समस्या देखें। हालाँकि मैं यह सब शब्दों में बयां कर रहा हूं, लेकिन समस्या के बारे में स्वयं जागरूक रहें, श्रीमान। समस्या यह है कि हमें बदलना होगा। आप कह सकते हैं, "मुझे परेशान मत करो, चीजें वैसी ही रहने दो जैसी वे हैं," लेकिन चीजें वैसी नहीं रहेंगी जैसी वे हैं। जीवन उसे चकनाचूर कर देगा जो सघन हो गया है। चाहे वह बंदूकधारी सैनिक के रूप में जीवन हो, या मेरे जैसे शब्द वाले व्यक्ति के रूप में जीवन हो, कुछ न कुछ आपको चकनाचूर कर देने वाला है। और जब आप किसी बाहरी घटना से, किसी मजबूरी या प्रभाव से टूट जाते हैं, तो क्या वह बदलाव है? अगर किसी तरह का कोई मकसद है तो क्या यह बदलाव है? और क्या बिना किसी मकसद के बदलाव संभव है? यह मत कहो कि यह संभव है, या यह संभव नहीं है। हम इस पर विचार कर रहे हैं. हम किसी नतीजे पर नहीं पहुंच रहे हैं.' किसी निष्कर्ष पर पहुँचना एक भयानक बात है क्योंकि तब आपने सोचना बंद कर दिया है। समस्या बहुत बड़ी है, और इसके बारे में बहुत सतर्क रहना होगा; किसी को पूछताछ करनी होगी, स्वयं निरीक्षण के माध्यम से, निरंतर जागरूकता के माध्यम से यह पता लगाना होगा कि क्या कोई ऐसा परिवर्तन है जो प्रेरित नहीं है, जो प्रभाव का परिणाम नहीं है।

महोदय, एक और कठिनाई यह है कि मन आदतन कार्य करना पसंद करता है। आदत सुरक्षित रहने की इच्छा है। यदि मैं एक तथाकथित महान व्यक्ति हूं, शक्ति रखने का आदी हूं, तो मैं उस आदत के अनुसार काम करना पसंद करता हूं। मन विभिन्न आदतें स्थापित करता है जो उसे एक निश्चित सुरक्षा की भावना प्रदान करती हैं, और यह उन किसी भी गतिविधि का विरोध करता है जो उन आदतों को बिगाड़ती है। जब हम किसी ऐसी आदत को तोड़ना चाहते हैं जिसमें मन पड़ गया है, तो हम कहते हैं कि हमारे पास एक आदर्श होना चाहिए, कि हमें अभ्यास करना चाहिए, कि हमें यह करना चाहिए या वह करना चाहिए; और मैं कहता हूं, क्या यह कोई बदलाव है? या क्या परिवर्तन बिल्कुल अलग चीज़ है - कुछ ऐसा जो सृजन की असाधारण भावना को जागृत करता है? निश्चित रूप से, यही एकमात्र वास्तविक परिवर्तन है। सृजन किसी चालाक दिमाग की रचनात्मक क्षमता नहीं है, न ही यह किसी ऐसे दिमाग की रचनात्मकता है जिसमें कोई उपहार या प्रतिभा हो; यह स्वयं के घर से, और उस घर के भीतर कार्य करने से पूर्ण मुक्ति का भाव है।

26 जनवरी, 1960

राजघाट पर तीसरी वार्ता

अगर हो सके तो मैं आज सुबह इस बारे में बात करना चाहूंगा कि जीवन में क्या करना है, जिसे कुछ लोग दार्शनिक रूप से कार्रवाई कहते हैं। हमने कर्म को जीवन से अलग कर दिया है न? और मुझे आश्चर्य है कि क्या कर्म को जीवन से विभाजित किया जा सकता है? जिसे हम सामाजिक कार्रवाई, राजनीतिक कार्रवाई, सुधारात्मक कार्रवाई, शिक्षा की कार्रवाई, एक व्यापारी की कार्रवाई, एक स्वामी, एक योगी, एक दार्शनिक की कार्रवाई, इत्यादि कहते हैं। क्रिया के ये विभिन्न रूप हैं, और क्या करना है इसका प्रश्न, मानो जो किया जाना है वह जीवन से अलग है। यह नदी के किनारे एक गड्ढा खोदने जैसा है, अपने आप को उस गड्ढे में बंद कर लें और फिर कहें, "मैं नदी के साथ कैसे बहूंगा?" पहले हम कर्म को जीवन से विभाजित करते हैं, और फिर हम उनके बीच की दूरी को पाटने का रास्ता खोजने का प्रयास करते हैं। यदि आपने ध्यान दिया हो, तो क्या हम अपने अधिकांश जीवन में यही नहीं कर रहे हैं?

हमारे पास कार्रवाई का एक पैटर्न है, चाहे वह समाजवादी, धार्मिक, दार्शनिक, शैक्षिक, या वाणिज्यिक हो, और हम में से अधिकांश कार्रवाई के उस विशेष पैटर्न से संतुष्ट हैं।

उदाहरण के लिए, सुधारक को ही लीजिए। उसके पास कार्रवाई का एक निश्चित पैटर्न है जिससे वह संतुष्ट है, क्योंकि वह सोचता है कि यह दुनिया को बदल देगा, इसलिए वह उस पैटर्न के लिए काम करता है, प्रयास करता है, अपना सब कुछ बलिदान कर देता है, और वह कभी भी उससे अलग नहीं होता है।

हममें से अधिकांश के साथ यही कठिनाई है, है ना? ऐसा लगता है कि हम पूरे जीवन की सराहना करने में सक्षम नहीं हैं। क्या आप जानते हैं कि सराहना शब्द से मेरा क्या मतलब है ? सराहना करने का अर्थ है संपूर्ण जीवन के प्रति संवेदनशील होना, जागरूक होना या उसका संज्ञान लेना; और यदि हम संपूर्ण जीवन के प्रति जागरूक, सचेत हो सकें, तो मुझे लगता है कि हम अधिक लाभप्रद ढंग से इस पर चर्चा कर सकते हैं कि कर्म क्या है।
कार्य जीवन से अलग नहीं है, बल्कि इसी संवेदनशीलता से उत्पन्न होता है, या पैदा होता है, जो समग्र रूप से जीवन की गहरी सराहना है। मुझे नहीं पता कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं या नहीं।

मान लीजिए कि आप एक शैक्षिक विशेषज्ञ हैं। आपको लगता है कि आप शिक्षा के बारे में सब कुछ जानते हैं। आपने कुछ इमारतें खड़ी की हैं, और आप बहुत ही सीमित शैक्षिक क्षेत्र में कार्य करते हैं। आप संपूर्ण जीवन पर ध्यान नहीं देते हैं, जिसमें राजनीति, धर्म, सामाजिक सुधार, दर्शन, दुःख, खुशी, प्रेम, क्रोध, किसी सुंदर चीज़ की सराहना शामिल है; तुम वह सब छोड़ दो। आप केवल उस संकीर्ण क्षेत्र की चिंता करते हैं जिसे आप शिक्षा कहते हैं, और आप नहीं चाहते कि कोई इसे छूए, इसे तोड़े, क्योंकि इसने आपको सुरक्षा की भावना दी है; आपके पास एक पद है, एक निश्चित प्रतिष्ठा है, और आप नहीं चाहते कि इसमें खलल पड़े। लेकिन नदी की तरह, जीवन हर समय बहता रहता है; यह पिटाई कर रहा है

जिसे आप शिक्षा कहते हैं, और यह आपको अकेला नहीं छोड़ेगी। तो जीवित, गतिशील, गतिशील और जो स्थिर है, उसके बीच एक संघर्ष है। स्थैतिक वह है जिसे आपने अपने विचार से बनाया है, और जो आपकी प्रोफेसनल या नौकरशाही स्थिति, या व्यावहारिक व्यक्ति की स्थिति, जैसा कि उसे कहा जाता है, के रूप में स्थापित हो गया है।

फिर ऐसे लोग भी हैं जो धार्मिक-सामाजिक सुधार को प्राथमिक महत्व मानते हैं, और यदि आप इसे निष्पक्ष रूप से, स्पष्ट रूप से, बिना किसी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के जांचते हैं, तो आप देखेंगे कि यहां भी मन गतिविधि का एक पैटर्न, एक महान जीवन शैली स्थापित करता है कई बचाव और वर्जनाएँ। यह कहता है, “मुझे यह करना चाहिए और वह नहीं; मुझे एक निश्चित समय पर उठना होगा, एक निश्चित तरीके से जीना होगा, पूरी मानव जाति के लिए काम करना होगा," इत्यादि इत्यादि। क्या तुम समझ रहे हो? जिस प्रकार जीवन का एक अमेरिकी तरीका या अंग्रेजी जीवन का तरीका माना जाता है, उसी तरह धार्मिक-समाज सुधारक कहते हैं, "यह मेरे लिए जीवन का तरीका है।" जीवन स्वयं इतना विशाल, इतना विशाल, इतना अविश्वसनीय रूप से जटिल और सुंदर है, फिर भी वह उन सभी को नजरअंदाज कर देता है। वह इसके बारे में मौखिक रूप से बोल सकता है, दार्शनिकता कर सकता है, स्पष्टीकरण में संलग्न हो सकता है, लेकिन वह नहीं चाहता कि जो पैटर्न उसने अपने लिए स्थापित किया है, उसमें कोई हस्तक्षेप करे। फिर भी जीवन नामक वह असाधारण चीज आती है और उस पर प्रहार करती है, इसलिए भीतर और बाहर विरोधाभास होता है, और देर-सबेर वह दुख में होता है। वह नहीं जानता कि क्यों, लेकिन वह दुखी है, निराश है, निरंतर आशंका के बोझ से दबा हुआ है।

अथवा तथाकथित धार्मिक व्यक्ति को ही लीजिए। वह कहते हैं, ''मुझे दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है; मैं भगवान की तलाश कर रहा हूं," और वह भिक्षु बन जाता है या त्याग का वस्त्र धारण कर लेता है। वह कुछ तपस्वी प्रथाओं का पालन करता है; वह कुंवारा रहता है और खुद को नकारता है, त्याग करता है, दबाता है, सुखाता है, निर्जलित करता है। उन्होंने भी अपने लिए एक पैटर्न, जीवन जीने का एक तरीका निर्धारित किया है। जीवन की असाधारण गति में प्रेम है, आनंद है, सेक्स का संपूर्ण जटिल संबंध है, मनुष्य का सहयोग है, संगीत है, दुःख, निराशा, आशाएँ और भय हैं। परन्तु वह जीवन का इन्कार करता है; उसने खुद को विचारों के एक प्रकार के भव्य गिरजाघर में जीवन की हलचल से अलग कर लिया है। वह ईसाई है, बौद्ध है, हिंदू है, या आप जो चाहें।

हममें से अधिकांश के साथ यह प्रक्रिया हर समय चलती रहती है। यदि आपने अपनी स्वयं की सोच की जांच की है, यदि आप अपने बारे में बिल्कुल भी जागरूक हैं, तो आपने देखा होगा कि आप कैसे अपने लिए एक जगह, एक आश्रय, विचारों का आश्रय, विश्वासों का, रिश्ते का निर्माण करते हैं, और फिर आप नहीं चाहते हैं परेशान होना. क्या यह हमारे जीवन का ढंग नहीं है? किसी चीज़ में आश्रय लेने की तीव्र इच्छा होती है - राष्ट्रवाद में, किसी विशेष धर्म या दर्शन में, जीवन के एक तरीके में - और हम जीवन की उस असाधारण गति को नकार देते हैं जिसमें सुंदरता है, संवेदनशीलता है,

आज़ादी, जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। यह एक ऐसा आंदोलन है जिसका कोई रूप नहीं है, जिसमें कोई ईसा मसीह, कोई बुद्ध, कोई .

तो हमारे जीवन में एक विरोधाभास है, एक आत्म-विरोधाभास जिसके बारे में हम जानबूझकर या अनजाने में जानते हैं। निराशा की एक गहरी, आंतरिक भावना है, और इस विरोधाभास से, इस हताशा से, हमारे अस्तित्व में इस सिज़ोफ्रेनिक दरार से, हम कार्य करते हैं। लड़ाई बाहर के साथ-साथ अंदर भी है। आप समाजवादी हैं, और मैं तथाकथित धार्मिक व्यक्ति हूं; या आप एक शैक्षिक विशेषज्ञ हैं, और मेरा संबंध केवल व्यवसाय से है; या आप एक राजनेता हैं, और मैं गरीब मतदाता हूं जिसे आप लगभग किसी भी चीज में फंसा सकते हैं; या आप असाधारण रूप से बौद्धिक व्यक्ति हैं, और मैं मूर्ख हूं; या तुम साधु हो, और मैं पापी हूं। आप मुझे मनाने या बदलने की कोशिश करते हैं, लेकिन मैं परेशान नहीं होना चाहता, इसलिए मैं कहता हूं, "मुझे अकेला छोड़ दो" या अगर यह मुझे सूट करता है क्योंकि मैं देखता हूं कि मुझे इससे आध्यात्मिक, शारीरिक या राजनीतिक रूप से कुछ लाभ मिल सकता है। , मैं कहता हूं, "आप बिल्कुल सही हैं, मैं आपका अनुसरण करूंगा।"

तो, भीतर और बाहर के इस विरोधाभास से, हमारी गतिविधि का जन्म होता है। मुझे नहीं पता कि क्या आपने ऐसे लोगों को देखा है जो असाधारण रूप से सक्रिय हैं, जो हमेशा कुछ न कुछ करते रहते हैं, हमेशा सुधार करते हैं, उपदेश देते हैं, नैतिकता का परिचय देते हैं, दूसरों को बताते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। यदि आपने ऐसे लोगों से बात की है, यदि आपने उनका अवलोकन किया है, उनके साथ रहे हैं, तो आपको पता चलेगा कि वे किस विरोधाभास की स्थिति में हैं, किस आंतरिक दुख में हैं। वे नहीं जानते कि प्यार करने का क्या मतलब है, और मुझे नहीं लगता कि आप भी जानते हैं। प्यार करो तो काफी है; तुम्हें और कुछ नहीं करना है. यदि आप प्यार करते हैं, तो वही करें जो आप करना चाहते हैं, यह हमेशा अच्छा होता है। प्रेम ही क्रिया का एकमात्र स्रोत है जिसमें कोई विरोधाभास नहीं है।

मैं जानता हूं यह सब सुखद लगता है; किसी प्यारी सुबह को सुनना अच्छी बात है, लेकिन आप नहीं जानते कि वह प्यार क्या है। आप उस प्रेम को नहीं जान सकते यदि आप अस्तित्व के अपने विशेष पैटर्न को पकड़कर कहते हैं, "मैं इसे अपने साथ ले जाऊंगा।" दूसरे को खोजने के लिए, आपको पैटर्न को तोड़ना होगा।

महोदय, मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी इस प्रश्न पर विचार किया है कि क्या झूठ है और क्या सच है? कोई भी व्यक्ति बिना ज्यादा सोचे-समझे कह सकता है, "यह झूठ है, वह सच है।" लेकिन क्या झूठ है और क्या सच है, इसकी जांच करना, इसके प्रति संवेदनशील होना और इसकी सराहना करना असाधारण रूप से कठिन है क्योंकि क्या सच है इसका पता लगाने के लिए, किसी को झूठ को देखना होगा और उसे हमेशा के लिए दूर करना होगा, न कि केवल दूसरों के पैटर्न का पालन करना होगा सच कहा है.

कृपया श्रीमानों, मेरी बात अवश्य सुनें।

यह पता लगाने के लिए कि क्या सच है और किसी दूसरे का अनुसरण न करें जो आपको बताता है कि क्या सच है, या मनमाने ढंग से दावा न करें कि क्या झूठ है और क्या सच है, आपको वह देखना होगा जो आंतरिक रूप से झूठ है और उसे दूर कर देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, किसी को पता चलता है कि सत्य क्या है, निश्चित रूप से, केवल नकार के माध्यम से। उदाहरण के लिए, मान लीजिए, आपको एहसास होता है कि जब तक लालच है तब तक आपका मन शांत नहीं हो सकता है, इसलिए आप मन की शांति से नहीं, बल्कि लालच से चिंतित हैं। आप यह देखने के लिए जांच करें कि क्या लालच को पूरी तरह से दूर किया जा सकता है - या लालच, या ईर्ष्या। मन का निरंतर शुद्धिकरण, निषेध की एक निरंतर प्रक्रिया है।

महोदय, यदि मैं जीवन नामक इस असाधारण चीज़ को समझना चाहता हूँ, जो सभी धर्मों की समग्रता होनी चाहिए; यदि मैं इसके प्रति संवेदनशील होना चाहता हूं, इसकी सराहना करना चाहता हूं, और मैं देखता हूं कि राष्ट्रवाद, प्रांतवाद, या कोई भी सीमित रवैया उस समझ के लिए सबसे विनाशकारी है, तो क्या होता है? निश्चित रूप से, मुझे एहसास है कि मुझे राष्ट्रवाद को त्याग देना चाहिए, कि मुझे हिंदू या मुस्लिम या ईसाई बनना बंद कर देना चाहिए। मुझे इस द्वेषपूर्ण, राष्ट्रवादी रवैये को बंद करना होगा और संगठित धर्मों, हठधर्मिताओं, मान्यताओं के अधिकार से मुक्त होना होगा। तो, नकार के माध्यम से, मन यह समझना शुरू कर देता है कि क्या सत्य है। लेकिन हममें से अधिकांश को नकार के माध्यम से समझना बहुत कठिन लगता है क्योंकि हम सोचते हैं कि यह हमें कहीं नहीं ले जाएगा, हमें कुछ नहीं देगा। हम कहते हैं कि यह शून्यता की स्थिति पैदा करेगा - जैसे कि हमारे दिमाग अब शून्यता की स्थिति में नहीं थे!

इस विशालता, जीवन की शाश्वत गुणवत्ता को समझने के लिए, निश्चित रूप से आपको इसे नकार के माध्यम से देखना होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि आप किसी विशेष कार्य पद्धति, अस्तित्व के एक निश्चित पैटर्न के प्रति प्रतिबद्ध हैं, इसलिए आपको खुद को उन सब से मुक्त करना और एक नए रास्ते, एक नए दृष्टिकोण का सामना करना मुश्किल लगता है।
आख़िरकार, मृत्यु अंतिम निषेध है। ऐसा केवल तभी होता है जब कोई जीवित रहते हुए मर जाता है, जिसका अर्थ है कि उसके सभी आदत पैटर्न, विभिन्न दृष्टिकोण, निष्कर्ष, विचार, विश्वास का लगातार टूटना - केवल तभी कोई पता लगा सकता है कि जीवन क्या है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग कहते हैं, “मैं इस पैटर्न को तोड़ नहीं सकता, यह असंभव है; इसलिए, मुझे इसे तोड़ने का एक तरीका सीखना चाहिए; मुझे एक निश्चित प्रणाली, उसे तोड़ने की एक विधि का अभ्यास करना चाहिए" ताकि हम उस नए पैटर्न के गुलाम बन जाएं जिसे हम अभ्यास के माध्यम से स्थापित करते हैं। हमने पैटर्न को नहीं तोड़ा है, बल्कि पुराने पैटर्न की जगह नया पैटर्न लाया है।

महोदय, आप अपना सिर हिलाते हैं, आप कहते हैं कि यह बहुत सच है, तार्किक है, स्पष्ट है - और आप पुराने या नए पैटर्न के साथ चलते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि असली समस्या मन की सुस्ती है। कोई भी काफी बुद्धिमान दिमाग यह देख सकता है कि आंतरिक रूप से हम सुरक्षा चाहते हैं, एक आश्रय, एक आश्रय जहां हमें परेशान नहीं किया जाएगा, और सुरक्षित रहने की यह इच्छा जीवन का एक पैटर्न बनाती है जो एक आदत बन जाती है। लेकिन उस पैटर्न को तोड़ने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है,

विचार, पूछताछ, और मन इनकार कर देता है क्योंकि वह कहता है, "अगर मैं अपने जीवन के पैटर्न को तोड़ दूं, तो मेरा क्या होगा? अगर पुराना पैटर्न टूट जाए तो यह स्कूल कैसा होगा? यह अराजकता होगी''—जैसे कि यह अभी अराजकता नहीं थी!

आप देखिए, हम हमेशा विरोधाभास की स्थिति में रहते हैं जिससे हम कार्य करते हैं, और इसलिए हम और भी अधिक विरोधाभास, अधिक दुख पैदा करते हैं। हमने जीवन को क्रिया बनाम अस्तित्व की प्रक्रिया बना दिया है। वह व्यक्ति जो बहुत चतुर है, जो अपनी शालीनता या अपनी जीवनशैली से दूसरों को कायल कर लेता है, जो लंगोटी पहनता है और बाहरी तौर पर संत बन जाता है, हो सकता है कि वह अंदर से विरोधाभास की स्थिति में काम कर रहा हो; हो सकता है कि वह अत्यंत विनाशकारी रूप से फटी हुई इकाई हो, लेकिन क्योंकि उसके पास एक संत जीवन का बाहरी साज-सामान है, हम सभी आँख बंद करके उसका अनुसरण करते हैं।

जबकि, अगर हम वास्तव में अंदर और बाहर विरोधाभास की इस समस्या को समझें और समझें, तो मुझे लगता है कि हम एक ऐसे कार्य पर पहुंचेंगे जो जीवन से दूर नहीं है। यह हमारे दैनिक अस्तित्व का हिस्सा है. ऐसा कार्य विचार से नहीं बल्कि अस्तित्व से उत्पन्न होता है। यह संपूर्ण जीवन की समझ है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आप कभी अपने आप से यह पूछने की स्थिति में हैं, "मैं क्या करने जा रहा हूँ?" यदि आप अपने आप से यह प्रश्न पूछते हैं, तो क्या आप हमेशा उस विचार के पैटर्न के अनुसार उत्तर नहीं देते हैं जो आपने पहले ही स्थापित कर लिया है? आप कभी भी अपने आप को यह पूछने की अनुमति नहीं देते हैं, "मैं क्या करूँ?" - और वहीं रुक जाएँ। आप हमेशा कहते हैं, "यह करना चाहिए, वह नहीं करना चाहिए।" यह केवल बुद्धिमान मन, जागृत मन, मन ही है जो इस पूरी प्रक्रिया के महत्व को देखता है - निश्चित रूप से - यह केवल ऐसा मन है जो पूछता है, "मुझे क्या करना चाहिए, मुझे क्या कदम उठाना चाहिए?" बिना किसी तैयार उत्तर के.

नकार के माध्यम से उस बिंदु पर आने के बाद, ऐसा मन अस्तित्व की संपूर्ण समस्या के प्रति संवेदनशील होना, समझना शुरू कर देता है।

मुझे आश्चर्य है, महोदय, क्या हम इस सब पर चर्चा कर सकते हैं? स्वयं को उजागर करने के अर्थ में चर्चा करना बहुत कठिन है। हम बौद्धिक, मौखिक रूप से कुछ विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। लेकिन वास्तव में खुद को उजागर करना, इस तथ्य से अवगत होना कि हमने खुद को किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध किया है, कार्रवाई के एक विशेष तरीके के लिए, उस पैटर्न की सीमाओं को देखना और चर्चा करके, उस पर विचार करके पता लगाना बिल्कुल अलग बात है। एक साथ, इसे कैसे तोड़ें। ऐसी चर्चा अत्यधिक सार्थक होगी, और मुझे आशा है कि हम ऐसा कर सकते हैं।

टिप्पणी: प्रत्येक मनुष्य ने कभी न कभी कोई ऐसा कार्य अवश्य व्यक्त किया होगा जिसने जीवन के प्रति एकता की भावना को न तोड़ा हो। गहरी भावना से मनुष्य कार्य करता है, बिना किसी समझ के कि उसका कार्य एक अलग केंद्र से उत्पन्न होता है। लेकिन ऐसे मामले में भी, जहां कर्म की सहज, मौलिक अनुभूति होती है जो जीवन को समृद्ध बनाती है, उस कर्म की गति ही एक अलग केंद्र का निर्माण करती प्रतीत होती है।

कृष्णमूर्ति: एक सज्जन सुझाव देते हैं कि किसी के संपूर्ण अस्तित्व के साथ कार्य करना संभव नहीं हो सकता है, जब तक कि उस क्रिया को फिर से एक अलग केंद्र न मिल जाए जहां से अन्य क्रियाएं होती हैं। क्या आप समस्या समझते हैं? यानी, क्या आपने कभी कोई ऐसा कार्य देखा है जिसमें आपका पूरा अस्तित्व शामिल हो, बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक - एक ऐसा कार्य जिसमें कोई मकसद नहीं था, इनाम का कोई विचार नहीं था या सजा का डर नहीं था? इस तरह की कार्रवाई में, आप बस कुछ ऐसा करते हैं मानो पहली बार, बिना किसी गणना के, बिना यह सोचे, "क्या यह सही है? क्या यह ग़लत है?" क्या आपने कभी ऐसी क्रिया, ऐसी स्थिति जानी है? हम कभी-कभी इसका अनुभव करते हैं, है ना? और फिर क्या होता है? उस अवस्था में कार्य करने के बाद, हमें एहसास होता है कि यह कितना असाधारण अनुभव था - पूर्ण स्वतंत्रता की भावना के साथ कार्य करना, जिसके परिणामस्वरूप पश्चाताप या आत्म-महिमा का कोई बोझ नहीं था। यह बिना किसी अवशेष के संपूर्ण कार्रवाई थी। लेकिन फिर हम कहते हैं, "मुझे उस अनुभव को वास्तविक, स्थायी बनाना होगा; मुझे उस स्थिति को कायम रखना होगा; मुझे हमेशा इसी तरह से कार्य करना चाहिए।" इसलिए हमने फिर से एक केंद्र, एक मंच, एक स्मृति स्थापित की है जिसे हम जारी रखना चाहते हैं। एक क्षण ऐसा था जब हमने बिना किसी गणना के, अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ कार्य किया - अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ भी नहीं, बल्कि किसी चीज़ की संपूर्णता से। वह अनुभव मन पर स्मृति के रूप में छाप छोड़ गया है। हम इस स्मृति का अनुसरण करते हैं, जिससे विचार के पैटर्न के अनुसार कार्यों की एक और श्रृंखला स्थापित होती है; इसलिए जो कार्य अनायास, पूर्ण रूप से किया गया, और पैटर्नयुक्त या आदतन कार्य, जो हमेशा आंशिक होता है, के बीच विरोधाभास है। और हमें कभी भी विरोधाभास का एहसास नहीं होता है, लेकिन हम कहते हैं, "कम से कम स्मृति के माध्यम से मैं दूसरे तक वापस पहुंच जाऊंगा।"

टिप्पणी: क्योंकि अन्यथा हमारा जीवन खाली है। लेकिन दूसरे राज्य में वापस जाने का यही प्रयास केंद्र को मजबूत बनाता है.

कृष्णमूर्ति: हममें से अधिकांश ने उस संपूर्ण क्रिया का बहुत कम ही अनुभव किया है, यदि अनुभव किया भी हो। हम जो जानते हैं वह आंशिक कार्रवाई है, जो इतनी संतोषजनक, इतनी सुरक्षित है, और चूंकि हम वास्तव में कुछ और नहीं जानते हैं, इसलिए हम इसे पकड़कर रखते हैं। अब, क्या यह संभव है - कृपया इस अगले प्रश्न का अनुसरण करें - क्या आपके और मेरे लिए आंशिक भाग को तोड़ना संभव है? क्या तुम समझ रहे हो?

प्रश्न: क्या यह संभव है कि संपूर्ण कर्म की स्मृति न रहे? क्या आप कर सकते हैं
हमें इसके बारे में कुछ सुराग दें?

कृष्णमूर्ति: क्या स्मृति न होना कभी संभव है?

टिप्पणी: हमें ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ।

कृष्णमूर्ति: सभी स्मृतियों को नकारना असंभव है, क्या ऐसा नहीं है सर?
क्या आप भूल सकते हैं, अपनी चेतना से उस स्मृति को हटा सकते हैं जहाँ आप रहते हैं? ऐसी बात तो बेतुकी होगी ना? लेकिन अगर आप जहां रहते हैं वही आपके लिए महत्वपूर्ण है, तो इसकी स्मृति आपके पूरे अस्तित्व पर छाया डालती है।

देखिए, सर, मान लीजिए कि मुझे संपूर्ण कार्रवाई का अनुभव हुआ है - बिना सोचे-समझे कार्रवाई, एक चालाक, उद्देश्यपूर्ण दिमाग की गणना के बिना। इसने एक स्मृति छोड़ दी है. मैं उस अनुभव को नहीं भूल सकता; मन यह नहीं कह सकता कि ऐसा नहीं हुआ। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि ऐसा हुआ था. अब, यह कैसे हुआ? यह किसी गणना से, किसी अभ्यास या दृढ़ प्रयास से नहीं हुआ। यह अभी हुआ. अब, क्या मैं इस तथ्य को देख सकता हूँ कि यह अभी-अभी घटित हुआ है, और यह भी देख सकता हूँ कि कोई भी चालाक विचार, इसे वापस पाने के साधन के रूप में कोई भी भविष्य का उद्देश्य इसका खंडन ही है?

मैं फिर से समझाऊंगा.

मान लीजिए कि मैं इस नदी के किनारे चल रहा हूं, और शहर पर सूर्यास्त हो रहा है। यह एक सुंदर दृश्य है और यह मन पर एक छाप छोड़ जाता है, इसलिए अगली शाम मैं उसी भावना को कैद करने की उम्मीद में फिर से नदी पर जाता हूं, लेकिन ऐसा नहीं होता है, वह अनुभव नहीं होता है। क्यों?

क्योंकि मैं दूसरी बार इसका अनुभव लेने की इच्छा से गया हूं. पहली बार कोई इच्छा नहीं थी; मैं बस चल रहा था, सूर्यास्त देख रहा था, निगलों को पानी के किनारे तैरते हुए देख रहा था, और अचानक वह असाधारण अनुभूति हुई। लेकिन अगली शाम मैं उस भावना को कैद करने के विशेष इरादे से गया; यह एक सोचा-समझा कार्य था, जबकि दूसरा नहीं था।

तो, हमारी समस्या यह है: क्या मन गैर-गणना की स्थिति में हो सकता है? अनुभव हो चुका है, कोई इससे इनकार नहीं कर सकता, और क्या यह संभव है कि उस अनुभव को लम्बा करने के लिए, उसे बढ़ाने के लिए उसकी स्मृति का पीछा न किया जाए? वही वह सवाल है। अनुभव प्राप्त करने के बाद, उसकी स्मृति के साथ, क्या यह संभव है कि उस स्मृति को देखा जाए और उसे मन में जड़ न जमाने दिया जाए?

प्रश्न: यह मेरा प्रश्न है, जिसका उत्तर नहीं दिया गया है। क्या उस अनुभव की स्मृति से चिपके रहना संभव नहीं है?

कृष्णमूर्ति: इसकी स्मृति ने मुझे बहुत आनंद दिया है, इसलिए मैं इसे महत्व देता हूं। मैं सिर्फ यह नहीं कहता कि यह जीवन का हिस्सा है और आगे बढ़ें। अप्रिय यादें हम बहुत जल्दी दूर कर देते हैं, या मनोवैज्ञानिक रूप से उन्हें धो देते हैं क्योंकि विभिन्न कारणों से हम उन्हें बनाए रखना नहीं चाहते हैं

उन्हें। लेकिन हम सुखद यादों से चिपके रहते हैं। क्यों? क्योंकि वे हमें प्रसन्न करते हैं, वे हमें कल्याण की अनुभूति देते हैं, और बाकी सब कुछ। इसलिए मन ने सुखद यादों को जड़ जमाने के लिए खुद को मिट्टी देने की अनुमति दे दी है। यह नहीं कहता, "सुखद यादें अप्रिय यादों के समान ही होती हैं; मुझे उनमें से किसी से भी चिपके रहने न दें।" आप कह सकते हैं कि आप सुखद यादों से चिपकना नहीं चाहते, लेकिन आप वास्तव में ऐसा करते हैं; तो आप देखिये कि मन अपने साथ कैसे चालें खेलता है।

इसके अलावा, श्रीमान, कृपया इस अजीब तथ्य पर गौर करें कि हम हमेशा उत्तर चाहते हैं।
क्या आपको लगता है कि जीवन में किसी भी चीज़ का उत्तर है? यांत्रिक चीज़ों का एक उत्तर है। यदि कोई मोटर खराब हो जाती है और मुझे नहीं पता कि इसे कैसे ठीक किया जाए, तो मैं एक मैकेनिक को बुलाता हूं जो इसे ठीक कर देता है। लेकिन क्या जिंदगी ऐसी ही है? क्या जीवन द्वारा उत्पन्न किसी भी समस्या का कोई उत्तर है? या क्या यह केवल समस्या है - जिसे मुझे समझना है, और यह नहीं पूछना है कि इसका उत्तर कैसे दूं?

यहाँ एक तथ्य है - मन सुखद यादों से चिपक जाता है और उनमें आश्रय लेता है। और मुझे निश्चित रूप से यह समझना चाहिए कि मन उस विशेष अनुभव को क्यों बनाए रखता है जिसे वह आनंद कहता है; मुझे सुखद को पकड़ने और जो सुखद नहीं है उसे छोड़ देने की इस इच्छा की जटिल मशीनरी को देखना होगा; मुझे मन की असाधारण सूक्ष्मता को अवश्य समझना चाहिए जो कहता है, "मैं इसे छोड़ दूँगा और उसे पकड़ कर रखूँगा।" यह धारणा महत्वपूर्ण है, न कि क्या करना है।

प्रश्न: क्या यह भी एक प्रथा नहीं बन जाएगी?

कृष्णमूर्ति: जब आप किसी चीज़ का सजीव अध्ययन कर रहे हैं, तो यह कोई अभ्यास नहीं है। आप किसी स्थिर चीज़ को संभालने में यांत्रिक कौशल का अभ्यास कर सकते हैं।
लेकिन अगर आप किसी बच्चे को समझना चाहते हैं तो क्या यह अभ्यास बन सकता है? बच्चा जीवित है, गतिशील है, बदल रहा है, शरारती है और उसे समझने के लिए आपका दिमाग भी उतना ही जीवंत और तेज़ होना चाहिए जितना वह है। आप देखिए, श्रीमान, हमारी समस्याओं में से एक यह है कि मन इतना यांत्रिक क्यों हो जाता है। मैं जानता हूं कि अभ्यास का यह प्रश्न हर जगह उठता है। क्या हमें ईश्वर को प्राप्त करने के लिए यह या वह अभ्यास नहीं करना चाहिए? - मानो ईश्वर, जीवन, सत्य, वह असाधारण चीज़, स्थिर थे!

आप सोचते हैं कि यदि आप दिन-ब-दिन, साल-दर-साल कुछ चीजें करते हैं, तो अंततः आपको कुछ और ही मिलेगा। लेकिन क्या दूसरा, चाहे आप इसे कुछ भी कहें, इतना सस्ता है?

टिप्पणी: आपने हमारी कठिनाई के बारे में कुछ कहा जो एक निश्चित आंतरिक सुस्ती है जो हमें जीवन के प्रवाह के साथ तालमेल बिठाने से रोकती है। मैं चाहता हूं कि आप थोड़ा उस सुस्ती में चले जाएं।

कृष्णमूर्ति: सच तो यह है कि मन सुस्त है। हम इसे कैसे जागृत करें? मन अपनी सुस्ती कैसे दूर करे? वही वह सवाल है।
अब, क्या कोई विधि है? कृपया इसका ध्यानपूर्वक पालन करें। क्या सुस्ती दूर करने का कोई तरीका है? आइए इसे बहुत सरल रखें. अगर मैं कहूं कि मुझे सुस्त नहीं होना चाहिए, और मैं खुद को हर सुबह छह बजे उठने के लिए मजबूर करता हूं, और बाकी सब, तो क्या मेरा दिमाग कम सुस्त हो जाएगा? क्या ऐसा होगा, सर? दरअसल, आपको लगता है कि ऐसा होगा; अन्यथा, आप अपनी विभिन्न प्रथाओं को त्याग देंगे, है ना? अब क्या किसी अभ्यास से सुस्त मन को जगाया जा सकता है? या क्या अभ्यास केवल उसकी सुस्ती को बढ़ाता है? मन अपने आप में सामान्यतः सुस्त नहीं होता; यह किसी चीज़ से सुस्त हो गया है। एक बच्चे का मन लीजिए, एक युवा मन। यह सुस्त तो नहीं है?

टिप्पणी: लेकिन हम स्थापित आदतों वाले वयस्क लोग हैं।

कृष्णमूर्ति: युवा मन सक्रिय, जिज्ञासु, जिज्ञासु होता है; यह कभी संतुष्ट नहीं होता; यह सदैव गतिमान है, गतिमान है, इसकी कोई सीमा नहीं है। अब हम बड़े लोग सुस्त क्यों हो गए हैं? क्यों महाशय? निश्चित रूप से इस सुस्ती का एक प्रमुख कारण यह तथ्य है कि हमने अपने लिए अस्तित्व का एक पैटर्न स्थापित कर लिया है; हम सुरक्षित रहना चाहते हैं, है ना? इसे अलग-अलग तरीकों से कहें: आर्थिक रूप से, सामाजिक रूप से, धार्मिक रूप से, परिवार में - हर चीज में हम सुरक्षित रहना चाहते हैं। क्या आपको लगता है कि एक युवा दिमाग सुरक्षित रहना चाहता है? बाद में यह खुद को सुरक्षित कर लेगा और इसलिए सुस्त हो जाएगा। तो मुझे ऐसा लगता है कि हमारी सुस्ती का एक प्रमुख कारण यह तथ्य है कि मन सुरक्षित रहना चाहता है; और जहां सुरक्षित होने की इच्छा है, वहां भय, चिंता, आशंका अवश्य होगी। इसे देखो, कारण और प्रभाव की श्रृंखला का पालन करो।

मन सुरक्षित रहना चाहता है, और इस तरह भय पैदा करता है। डर पैदा करने के बाद, यह डर से बचना चाहता है, इसलिए भागने के विभिन्न रूप स्थापित किए गए हैं: विश्वास, हठधर्मिता, विभिन्न प्रकार की प्रथाएं, रेडियो चालू करना, गपशप करना, मंदिर जाना और सैकड़ों अन्य चीजें। ये सभी पलायन हमारे आलस्य, हमारे मन की सुस्ती का कारण हैं। लेकिन एक बार जब मन किसी भी तरह से सुरक्षित रहने की इच्छा की व्यर्थता, मिथ्यात्व को देख लेता है, तो वह हमेशा सक्रिय रहता है।

प्रश्न: तीन साल के बच्चे की मानसिक स्थिति क्या है, जिसकी कोई याददाश्त नहीं है?

कृष्णमूर्ति: सर, क्या स्मृति के बिना दिमाग जैसी कोई चीज होती है?
यहां तक कि आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक कंप्यूटरों में भी यादें होती हैं, और वे याद रखते हैं, जैसे

मानव मस्तिष्क, संगति द्वारा, इत्यादि। हमारा मन यंत्रवत् कार्य करता है, और यदि हम उससे संतुष्ट हैं, तो कोई समस्या नहीं है; लेकिन जिस क्षण आप यह सवाल करना शुरू करते हैं कि क्या मन के लिए काम करने के इस यांत्रिक या अभ्यस्त तरीके से मुक्त होना संभव है, तो यह पूरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। हममें से अधिकांश लोग मन के सुखद यांत्रिक संचालन से संतुष्ट हैं, लेकिन यदि आप कहते हैं, "यह काफी अच्छा नहीं है; मैं इस यांत्रिक आदत को तोड़ना चाहता हूं," फिर आप एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करते हैं जहां कोई अधिकार नहीं है, और आपको लगातार पूछताछ करनी पड़ती है, धक्का देना पड़ता है, गाड़ी चलानी पड़ती है।

प्रश्न: क्या उस व्यक्ति के लिए स्वयं का विश्लेषण करना संभव है जिसकी चेतना अनुभवों से भरी हुई है?

कृष्णमूर्ति: इस प्रश्न में क्या शामिल है? किसी के अपने दिमाग की जटिल मशीनरी का विश्लेषण करने, उस पर गौर करने, उसका पता लगाने का क्या मतलब है? उस प्रक्रिया में सेंसर और वह वस्तु है जिसकी वह जांच करता है, है ना? अगर आप ज्यादा थके हुए नहीं हैं तो कृपया इसे थोड़ा फॉलो करें। विश्लेषण में हमेशा पर्यवेक्षक और अवलोकन, विश्लेषक और विश्लेषित होता है।

अब, विश्लेषक कौन है, और वह क्या विश्लेषण करता है? क्या जिसका विश्लेषण किया जाता है उससे विश्लेषक उत्पन्न नहीं हुआ है? यानी सर, अलग ढंग से कहें तो विचारक और विचारक हैं। विचारक कहता है, "मैं विचार का विश्लेषण करने जा रहा हूँ," लेकिन विचार का विश्लेषण शुरू करने से पहले क्या उसे यह विचार नहीं करना चाहिए कि विचारक कौन है? क्या विचार ने विचारक को उत्पन्न नहीं किया है? इसलिए वह विचार का हिस्सा है. सही है सर? विचारक विचार का हिस्सा है, वह विचार से अलग नहीं है; इसलिए, जब तक विचारक, सेंसर, मूल्यांकन, निंदा, पहचान आदि करने वाली इकाई मौजूद है, विश्लेषण हमेशा एक विरोधाभास पैदा करेगा, है न? क्या आप इसमें जाने में रुचि रखते हैं?

जब तक विचार से अलग कोई विचारक मौजूद है, तब तक सभी विश्लेषण केवल और अधिक विरोधाभास उत्पन्न कर सकते हैं। तो समस्या यह है: क्या विचारक के बिना विचार का निरीक्षण करना संभव है? क्या मन किसी चीज़ को देखने वाले, सेंसर करने वाले, प्रेक्षक, अनुभव करने वाले को अस्तित्व में लाए बिना देख सकता है?

क्या मैं किसी फूल को उस पर्यवेक्षक के बिना देख सकता हूँ जो कहता है, "यह एक डेज़ी है, मुझे यह पसंद नहीं है," या "यह एक पीला गेंदा है, मुझे यह पसंद है"? अब, जब मन सेंसर के बिना देखने में सक्षम है, तो विश्लेषण की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि अवलोकन की उस स्थिति में पूर्ण समझ होती है। आप देखिए श्रीमान, जहां सेंसर होता है और जो वह देखता है, वहां टकराव होता है; जहां विचार से अलग कोई विचारक है, वहां विरोधाभास है; लेकिन जब मन स्वयं को इस द्वैतवादी, विरोधाभासी प्रक्रिया से मुक्त कर सकता है, तब धारणा की एक स्थिति आती है जिसमें पूर्ण समझ होती है।

तो समस्या यह है: क्या मैं स्वयं को बिना किसी द्वंद्व के देख सकता हूँ? क्या मैं अपने अंदर चीज़ों को वैसे ही देख सकता हूँ जैसे वे वास्तव में हैं, बिना उस देखने वाले के जो कहता है, "मैं कितना बदसूरत हूँ," या "मैं कितना अच्छा हूँ"? क्या मैं सेंसर लागू किए बिना सिर्फ अपना निरीक्षण कर सकता हूँ?

प्रश्न: हम सुरक्षा क्यों चाहते हैं?

कृष्णमूर्ति: मन सुरक्षा क्यों चाहता है? संपूर्ण सामाजिक संरचना सुरक्षा की माँग पर आधारित है, है ना? धार्मिक रूप से, और रोजमर्रा की जिंदगी में जिसे हम जानते हैं, मन नकार की भावना, पूर्ण अलगाव की भावना से डरता है, जो भय है। यह सुरक्षित होने की जटिल इच्छा की शुरुआत है। यदि किसी का रिश्ता सुरक्षित है तो वह अधिक सुरक्षित महसूस करता है, है ना? जब मैं अपनी नौकरी में पूरी तरह से सुरक्षित महसूस करता हूं, तो मैं यंत्रवत काम कर सकता हूं, और मैं परेशान नहीं होना चाहता। यदि मेरे देवता, मेरी परंपराएँ, मेरी मान्यताएँ मुझे सुरक्षा देती हैं, तो मैं फिर से परेशान नहीं होना चाहता - इन सबका मतलब है कि किसी का दिमाग बहुत सुस्त है। यह समझकर हम कहते हैं, “मैं क्या करूँ; अपनी सुस्ती दूर करने के लिए मुझे कौन सा अभ्यास करना चाहिए?”

और इस प्रकार हम मूर्खता और भ्रम के पूरे क्षेत्र में प्रवेश करते हैं।

31 जनवरी, 1960

राजघाट पर चौथी वार्ता

मेरा मानना है कि सहमति और असहमति के साथ-साथ दृढ़ विश्वास के निहितार्थ को भी देखना महत्वपूर्ण है। ये तीनों एक निश्चित प्रकार का प्रभाव दर्शाते हैं, क्या ऐसा नहीं है? हममें से अधिकांश को तर्क द्वारा, स्पष्टीकरण द्वारा, किसी बात से सहमत या असहमत होने के लिए राजी किया जा सकता है, और हमारे अंदर दृढ़ विश्वास की भावना जागृत की जा सकती है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि न तो दृढ़ विश्वास और न ही असहमति कभी भी समझ ला सकती है, और केवल समझ ही है जो किसी की प्रतिबद्धताओं की प्रकृति और उसके जीवन के तरीके को मौलिक रूप से बदल देती है।

इसलिए मुझे लगता है कि हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि यहां हमारा संबंध किसी विशेष प्रकार के विचार, कार्य के तरीके या विश्वास के पैटर्न को अपनाने के लिए एक-दूसरे को मनाने से नहीं है। हमारा संबंध मुख्य रूप से समझ से है। इसका मतलब यह है कि आपको और मुझे यह स्पष्ट होना चाहिए कि इन वार्ताओं में कोई प्रचार नहीं है, कि मैं आपको कुछ भी समझाने नहीं आया हूं, और इसलिए सहमति या असहमति का कोई सवाल ही नहीं हो सकता है। एक मन जो सहमत है

अब बाद में असहमत भी हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई मन जो अभी असहमत है वह शायद बाद में सहमत हो जाएगा; और ऐसा दिमाग समझने में सक्षम नहीं है।
समझ सहमति या असहमति, या दृढ़ विश्वास से पैदा नहीं होती है; यह बिल्कुल अलग चीज़ है। समझ मन की स्थिति है, निश्चित रूप से, जब पूर्ण ध्यान होता है, यानी, जब मन पूरी तरह से देखता है, पूरी समस्या को व्यापक रूप से समझता है; और उस मनःस्थिति में न तो सहमति होती है और न ही असहमति।

मुझे लगता है कि हमें इस तथ्य को बहुत स्पष्ट रूप से समझना चाहिए क्योंकि हममें से अधिकांश का जीवन सहमति, असहमति या दृढ़ विश्वास से निर्देशित होता है, आकार लेता है।
आज आप किसी चीज़ के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हैं, और दस साल बाद आप किसी चीज़ के बिल्कुल विपरीत के बारे में भी उतने ही आश्वस्त हैं। आप अभी सहमत होते हैं, और बाद में असहमत होते हैं। निश्चित रूप से, दृढ़ विश्वास, सहमति और असहमति की यह प्रक्रिया विरोधाभास की स्थिति को जन्म देती है, और विरोधाभास की स्थिति में मन कुछ भी नहीं समझ पाता है। हममें से अधिकांश लोग विरोधाभासी जीवन जीते हैं क्योंकि हमारी मान्यताएँ, हमारे विचार, हमारी गतिविधियाँ दृढ़ विश्वास, सहमति और असहमति के पैटर्न पर आधारित हैं। लेकिन, जैसा कि मैंने कुछ समय पहले कहा था, हम यहां एक-दूसरे को किसी विशेष तरीके से सोचने या कार्रवाई का एक निश्चित तरीका अपनाने के लिए मनाने के लिए नहीं हैं; इसलिए, हमें विरोध करने की इच्छा के बिना या जो कहा जा रहा है उसके अनुसार अपने जीवन को आकार देने की इच्छा के बिना एक-दूसरे को सुनने में सक्षम होना चाहिए। चूँकि मैं आपके जीवन जीने के तरीके को तोड़ने, या आपको आपके विश्वासों और हठधर्मिता से अलग करने, या आपके कार्य की दिशा बदलने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, हमारा रिश्ता पूरी तरह से अलग है। हम एक-दूसरे को समझने की कोशिश कर रहे हैं, और इसलिए कोई बाधा नहीं है, कोई प्रतिरोध नहीं है, और इसलिए अंतरंग एकता की भावना है। कम से कम, मुझे लगता है कि इन बातचीत में यही होना चाहिए - मन के तरीकों के बारे में एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संवाद की भावना, और दिल के बारे में जो मन के तरीकों से अनुकूलित होता है।

इसलिए, सुनना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है, न कि सहमति या असहमति, या यह कहना कि, "कार्य करने से पहले मुझे आश्वस्त होना चाहिए।" मेरे लिए यह सब सरासर बकवास है क्योंकि यह बहुत ही छिछली सोच को दर्शाता है। सुनने के हमारे रिश्ते में, हम समझने की कोशिश कर रहे हैं, और यह बहुत अधिक कठिन, बहुत अधिक कठिन है; इसमें महज सहमति या असहमति से कहीं अधिक ध्यान देने की जरूरत है। इसे स्पष्ट रूप से ध्यान में रखते हुए, आइए हम प्रथा को देखें, जिसे नैतिकता कहा जाता है, और अच्छाई को देखें, जिसे सदाचार कहा जाता है।

अच्छाई किसी संस्कृति का परिणाम नहीं है, जबकि रीति-रिवाज या नैतिकता है।
नैतिकता जो एक प्रथा बन गई है वह एक संस्कारित आदत है जिसमें मन विचार या अनुभव के एक विशेष पैटर्न का अनुसरण कर रहा है, या तो स्व-लगाया गया है

या समाज द्वारा थोपा गया है, और नैतिक शुद्धता के ऐसे मार्ग का अच्छाई से कोई लेना-देना नहीं है। मन रीति-रिवाजों में, आदत में विकसित नहीं हो सकता, चाहे वह उस पैटर्न में कितने भी लंबे समय तक चलता रहे; यह केवल क्षय हो सकता है। रीति-रिवाज एक मुरझाने वाली प्रक्रिया है, और अच्छाई ही एकमात्र ऐसी स्थिति है जिसमें मन खिल सकता है और करुणा का अर्थ जान सकता है। मन नैतिकता विकसित कर सकता है, खुद को ईमानदारी में अनुशासित कर सकता है, लेकिन ऐसा मन दयालु नहीं है। यह एक बुर्जुआ, सम्मानजनक दिमाग है, एक ऐसा दिमाग जो समाज में समायोजन का परिणाम है, जो विचार और गतिविधि के एक निश्चित पैटर्न की मांग करता है।

विचार की आदत में, विश्वास के पैटर्न में, कोई खुशी नहीं है, मन का कोई उत्कर्ष नहीं है, जबकि यदि आप अच्छाई पर विचार करेंगे, तो आप देखेंगे कि अच्छाई में विरोधाभास के बिना होने का कभी न खत्म होने वाला भाव होता है। मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि, दुर्भाग्य से, हमारा जीवन रीति-रिवाज और आदत से निर्देशित होता है; इसलिए, हमारा जीवन बहुत संकीर्ण और उथला है, भले ही हम इसे महिमा या काल्पनिक आनंद के पैटर्न से कितना भी सजा लें। जो मन किसी विशेष संस्कार, दिनचर्या या रीति-रिवाज के पैटर्न का गुलाम है, वह निश्चित रूप से अच्छा दिमाग नहीं है। चाहे कोई प्रथा कितनी भी कठिन, कितनी भी अनुशासनात्मक, कितनी भी सम्मानजनक क्यों न हो, वह अभी भी केवल एक पैटर्न है जिसका मन अनुसरण कर रहा है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग सम्मान और मान्यता को लेकर बहुत चिंतित हैं। हम सम्मानजनक के रूप में पहचाने जाना चाहते हैं क्योंकि उस सम्मान में हम आर्थिक और आंतरिक दोनों तरह से सुरक्षित महसूस करते हैं। हम उस पैटर्न में फिट होना पसंद करते हैं जिसे रिवाज ने सही माना है। यदि आप इसमें बहुत गहराई से जाएंगे, तो आप देखेंगे कि रीति-रिवाज सुरक्षा, सुरक्षा का द्वार है; क्योंकि जब मन उस द्वार से गुजर जाता है, तो सम्मानजनक न समझे जाने के अर्थ में वह कभी गलत नहीं हो सकता।

मुझे आशा है कि आप केवल शब्दों को सुन नहीं रहे हैं, या उनसे मंत्रमुग्ध नहीं हो रहे हैं, बल्कि आत्म-आलोचनात्मक रूप से जागरूक हैं, और जो कहा जा रहा है वह स्व-लागू है। जैसा कि मैंने शुरुआत में कहा था, हम अपने मन की जटिलताओं, पेचीदगियों, सूक्ष्मताओं के बारे में एक-दूसरे के साथ घनिष्ठता से बातचीत कर रहे हैं; और मन की थाह लेने के लिए किसी को रक्षात्मक रवैये की नहीं बल्कि एक निश्चित आरामदेह ध्यान की आवश्यकता होती है।

इसलिए, हममें से अधिकांश लोग कार्रवाई के एक निश्चित तरीके, विचार और व्यवहार के एक निश्चित पैटर्न के प्रति प्रतिबद्ध हैं, जिसे सम्मानजनक माना जाता है; और जो नैतिकता सुरक्षित रहने, सही प्रकार के मनुष्य के रूप में पहचाने जाने की इच्छा से आती है, उसका अच्छाई से कोई लेना-देना नहीं है।

रीति-रिवाज राष्ट्रीय, सांप्रदायिक, सीमित है, जबकि अच्छाई की कोई राष्ट्रीयता नहीं है; यह एक सम्मानित दिमाग के लिए पहचानने योग्य नहीं है। और यह हमें एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु पर लाता है, जो यह है कि मन के पास यह बाध्यता क्यों है, यह

किसी चीज़ से संबंधित होने का आग्रह? मन स्वयं को किसी कार्य-पद्धति, जीवन-पद्धति, विश्वास के प्रतिरूप के प्रति समर्पित क्यों होना चाहता है? क्यों? मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने इसके बारे में सोचा है? मन स्वयं को किसी चीज़ के प्रति समर्पित, किसी चीज़ से संबंधित क्यों होना चाहता है?

आप जानते हैं, कई बौद्धिक लोगों, लेखकों और तथाकथित विचारकों ने खुद को विभिन्न संगठनों या गतिविधियों के लिए प्रतिबद्ध किया है। वे कम्युनिस्ट बन जाते हैं, और क्योंकि वह आंदोलन संतोषजनक नहीं होता या विनाशकारी पाया जाता है, वे उसे छोड़ देते हैं और किसी और चीज़ में शामिल हो जाते हैं। मन को किसी चीज़ के प्रति समर्पित करने की इच्छा न केवल उच्च-भौंह वाले बौद्धिक लोगों में, बल्कि हम में से हर एक में मौजूद है। आप किसी क्लब से, किसी समूह से, अमुक समाज से, किसी विशेष धर्म या सामाजिक गतिविधि से संबंधित हैं—क्यों? यदि आप कहते हैं, "मैं किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं हूं, लेकिन मुझे इस पार्टी या समूह के सदस्यों के साथ रहना पसंद है," तो यह केवल मुद्दे से बचने का एक तरीका है। हम निश्चित रूप से यह पता लगाना चाहते हैं कि हमारे अंदर किसी चीज़ से संबंधित होने की तीव्र बाध्यता क्यों है - किसी विचारधारा से, किसी विशेष दर्शन से, इस या उस चर्च या पार्टी से। यदि हम समझ सकें कि सभी स्तरों पर मनुष्यों में किसी चीज़ से संबंधित होने की लालसा क्यों है, तो मुझे लगता है कि हम समूहों और संप्रदायों, परस्पर विरोधी राष्ट्रीयताओं और राजनीतिक दलों के इस निरंतर गठन को पूरी तरह से तोड़ने में सक्षम होंगे, जो इतना विनाशकारी है।

कृपया इस पर थोड़ा ध्यान दीजिए. मैं जानता हूं कि आपमें से ज्यादातर लोग किसी न किसी चीज से जुड़े हैं और मैं कल्पना कर सकता हूं कि आप किस तरह की चीजों से जुड़े हैं। आप अन्य समूहों के विरोध में एक समूह का हिस्सा बनते हैं, और प्रत्येक समूह नए सदस्यों की तलाश करता है - आप उस पूरे खेल को जानते हैं, धर्मांतरण और प्रचार का रैकेट। लेकिन अगर आप और मैं यह पता लगा सकें - वास्तव में, बुद्धिमत्ता के साथ, जागरूकता के साथ - कि मानव मन में किसी चीज़ से जुड़ने, खुद को किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध करने की असाधारण इच्छा क्यों है, तो हम हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, कम्युनिस्ट नहीं रहेंगे। और ये सभी बेतुके विभाजन दूर हो जायेंगे। तब हम स्वतंत्रता की गरिमा के साथ इंसान होंगे, ऐसे व्यक्ति जो किसी चीज़ से संबंधित नहीं हैं, और इसलिए जिनका मानवीय रिश्ता है जो परिवार या समुदाय, राष्ट्र, जाति या संगठित धर्म की विशिष्टता पर आधारित नहीं है।

ऐसा क्यों है कि हममें खुद को किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध करने की चाहत होती है? इस आग्रह का एक कारण, निश्चित रूप से, यह है कि हम भ्रम, दुख, गिरावट देखते हैं, और हम इसके बारे में कुछ करना चाहते हैं; और ऐसे लोग भी हैं जो पहले से ही इसके बारे में कुछ कर रहे हैं। कम्युनिस्ट, समाजवादी, विभिन्न राजनीतिक दल और धार्मिक समूह - ये सभी गरीबों को बचाने, जरूरतमंदों को भोजन, कपड़े और आश्रय दिलाने के लिए कुछ करने का दावा करते हैं। वह बात करते है

लोगों का कल्याण, और वे बहुत आश्वस्त हैं। उनमें से कई त्याग करते हैं, तपस्या करते हैं, सुबह से रात तक कुछ न कुछ काम करते हैं; और उन्हें देखकर हम कहते हैं, "कैसे असाधारण लोग हैं ये।"

क्योंकि हम मदद करना चाहते हैं, हम उनसे जुड़ते हैं-और इसलिए हमने खुद को प्रतिबद्ध किया है। बस इसके क्रम का पालन करें। किसी पार्टी या आंदोलन के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने के बाद, हम हर चीज को उस विशेष विंडो के माध्यम से, उस विशेष कार्रवाई के संदर्भ में देखते हैं, और हम परेशान नहीं होना चाहते हैं। पहले हम परेशान थे; लेकिन अब, खुद को प्रतिबद्ध करने के बाद, हम तुलनात्मक शांति की स्थिति में हैं, और हम फिर से परेशान नहीं होना चाहते हैं। लेकिन अन्य पार्टियाँ और आंदोलन भी हैं, जो एक ही बात का दावा करते हैं, प्रत्येक के पास एक चतुर नेता है जो असाधारण, पहचानने योग्य सत्यता प्रदर्शित करता है।

तो इच्छा, कुछ करने की ललक हमें किसी विशेष कार्य के लिए प्रतिबद्ध बनाती है। हम यह देखने की कोशिश नहीं करते हैं कि क्या उस कार्यवाही में मनुष्य की समग्रता शामिल है। क्या तुम समझ रहे हो? मैं समझाऊंगा कि मेरा क्या मतलब है. कार्रवाई का कोई भी विशेष तरीका विशिष्ट होता है, और इसलिए इसका संबंध केवल मनुष्य के एक हिस्से से होता है। इसका संबंध पूरे मनुष्य से नहीं है - उसके दिमाग से, उसकी मानवीय गुणवत्ता, उसकी अच्छाई और उस सब से। यह समग्र नहीं, आंशिक चिंता है।

और हम स्वयं को न केवल किसी विशेष कार्य पद्धति के प्रति, बल्कि किसी विशेष विश्वास या जीवन शैली के प्रति भी प्रतिबद्ध होते हैं। जो आदमी संन्यासी, भिक्षु, संत बनता है, उसने ब्रह्मचर्य रहने, दरिद्रता में रहने, पूजा-पाठ करने, यह बनने और वह न होने का व्रत ले लिया है; उन्होंने खुद को उस पैटर्न के प्रति प्रतिबद्ध कर लिया है। क्यों? क्योंकि यह एक अद्भुत पलायन है, उसके मन के तट पर जीवन की निरंतर छटपटाहट से बचकर उसकी सभी समस्याओं को हल करने का एक तरीका है।

वह जीवन की इस गति को नहीं समझता है, वह नहीं जानता कि यह सब क्या है, लेकिन कम से कम उसका आत्म-अनुशासन और उसका विश्वास उसे सुरक्षा, सुरक्षा की भावना देता है; और इसके अंत में हमेशा यीशु या बुद्ध या भगवान होते हैं, इसलिए जो व्यक्ति इस तरह के मार्ग के लिए प्रतिबद्ध है वह पूरी तरह से खुश है। वह कहते हैं, ''इसमें संदेह करने की क्या बात है? यह सब बिल्कुल स्पष्ट है. आओ और हमारे साथ जुड़ें, और तुम्हें भी इसके बारे में सब पता चल जाएगा।" वह सम्माननीय बन गया है क्योंकि यह मान्यता है कि वह सही काम कर रहा है।

यह सब मैंने व्यंग्यपूर्वक या कठोरता से नहीं कहा है। मैं सिर्फ इशारा कर रहा हूं, नहीं
आलोचना कर रहे हैं, और आप बस देख रहे हैं।

हम व्यक्तिगत और संतोषजनक लक्ष्य हासिल करने के लिए भी खुद को प्रतिबद्ध करते हैं, क्या ऐसा नहीं है? किसी समाज या किसी विशेष प्रक्रिया के प्रति स्वयं को समर्पित करना

कार्रवाई, मुझे स्थायित्व की भावना, सुरक्षा की भावना देती है। कृपया, महोदय, स्वयं सावधान रहें; मैं जो कह रहा हूं उसे मत सुनो।

आप सभी इन विभिन्न चीजों से संबंधित हैं, और आप कभी नहीं कहते हैं, "मैं क्यों संबंधित हूं, मैं खुद को किसी भी चीज के लिए क्यों प्रतिबद्ध करता हूं?" और मुझे लगता है कि यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि हम खुद को किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध क्यों करते हैं क्योंकि कई लोगों ने खुद को एक के बाद एक चीजों के लिए प्रतिबद्ध किया है, और अपने जीवन के अंत में, वे पूरी तरह से निराश, दुखी, निराश, दुखी हैं। किसी चीज़ से जुड़ना, अपने आप को समर्पित करना, उस ईमानदारी की खेती है जो रीति-रिवाज पर आधारित है, और जिसका अच्छाई से कोई लेना-देना नहीं है। यह पाखंड का सूक्ष्म रूप है. मुझे अपने आप को किसी आदर्श के प्रति समर्पित नहीं करना है। मेरा व्यक्तित्व ऐसा ही है। ईर्ष्यालु होकर मैं एक विरोधाभासी तत्व का परिचय क्यों दूं जिसे मैं आदर्श कहता हूं? मेरी चिंता ईर्ष्या को समझने, उसमें जाने, उसके सभी निहितार्थों को देखने की है; और ईर्ष्या की उस समझ के माध्यम से अच्छाई आती है। अच्छाई कार्रवाई का एक पैटर्न नहीं है - भगवान के लिए, यह देख लें कि दोनों का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं है वह सज्जनता का मार्ग अपना सकता है, परन्तु ऐसा मन भ्रष्ट है, वह विघटनकारी मन है। इसलिए किसी चीज़ से जुड़े रहने की, प्रतिबद्ध होने की, किसी चीज़ के लिए खुद को समर्पित करने की इस प्रक्रिया को समझना बहुत ज़रूरी है।

आप देखिए, किसी चीज़ से संबंधित इस सब के पीछे, सुरक्षित होने की तीव्र इच्छा है, और अजीब बात यह है कि सुरक्षा की भावना सामाजिक मान्यता पर निर्भर करती है। यदि मैं किसी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल में शामिल होता हूं, या किसी मान्यता प्राप्त धार्मिक संप्रदाय से संबंधित होता हूं, या किसी मान्यता प्राप्त गतिविधि को अपनाता हूं, तो उस मान्यता में मैं आर्थिक और आंतरिक रूप से सुरक्षित महसूस करता हूं, और इससे मुझे कुछ व्यक्तिगत लाभ भी मिलते हैं। तो कोई बहुत स्पष्ट रूप से देखना शुरू कर देता है कि एक मन जो किसी चीज के लिए प्रतिबद्ध है - यीशु के लिए, बुद्ध के लिए, जीवन के किसी विशेष तरीके के लिए जिसके अनुसार वह खुद को अनुशासित कर रहा है - कभी भी अच्छाई को नहीं जान सकता है। यह कभी नहीं जान सकता कि प्यार क्या है, और आखिरकार, प्यार ही हमारी सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है। एक मन जो नहीं जानता कि प्यार क्या है, जो उस भावना की गुणवत्ता से अवगत नहीं है, वह चाहे कितना भी सम्मानजनक, कितना भी सही कदम उठा सकता है, लेकिन यह दूसरों के लिए और खुद के लिए केवल और अधिक दुख और विनाश की ओर ले जाएगा।

तो कोई देखता है कि रिवाज, या आदत को सद्गुण के रूप में विकसित करना, इसमें एक विनाशकारी, विघटित करने वाला तत्व अंतर्निहित है। और यदि कोई इस प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से देखता है, यदि कोई इसे समझता है और इसे जानबूझकर नहीं काटता है, तो यह उसी तरह गिर जाती है जैसे एक मुरझाया हुआ पत्ता पेड़ से गिर जाता है; और उस दूर जाने में अच्छाई का एक नया अंकुरण होता है, प्रकट होने की एक नई भावना होती है, और इसलिए

जीवन जीने का तरीका जो दूसरों से बिल्कुल अलग है। मुझे ऐसा लगता है कि यही एकमात्र धार्मिक जीवन है - वे सभी चीजें नहीं जिनका आप अभ्यास करते हैं, जो बिल्कुल भी धार्मिक जीवन नहीं है; यह सिर्फ सुविधा की बात है, एक औपचारिक वस्त्र जिसे आप पहनते हैं। यह मन नहीं है जो रीति-रिवाजों, आदत से ग्रस्त है, या किसी कार्य के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि यह अच्छा दिमाग है जो वह प्राप्त कर सकता है जिसे मापा नहीं जा सकता। अच्छे मन को कुछ नहीं चाहिए. यह अपने आप में एक गति है, यह आनंद की स्थिति है जिसमें कोई मांग नहीं है। यह केवल तभी होता है जब मन मांग करना बंद कर देता है, मांगना बंद कर देता है, खोजना बंद कर देता है - केवल तभी वास्तविकता अस्तित्व में आती है।

मैंने चालीस मिनट तक बात की है और अब शायद हम थोड़ी चर्चा कर सकें।
लेकिन चर्चा से हमारा क्या मतलब है? यह कोई स्कूल या कॉलेज की बहस नहीं है जिसमें आप विचारों का एक सेट सामने रखते हैं और मैं दूसरा, और हम इस बात पर झगड़ते हैं कि कौन विजयी होता है। यदि आपकी रुचि केवल इसी में है, तो आप पहले से ही विजयी हैं; आप पहले ही जीत चुके हैं. लेकिन अगर हम जीवन की समस्याओं को समझना चाहते हैं तो हमें वाद-विवाद के मूड में नहीं रहना चाहिए, तर्क-वितर्क या विवाद की भावना से चर्चा नहीं करनी चाहिए। जीवन हममें से अधिकांश के लिए एक समस्या है, और शब्द इसे हल नहीं करेंगे, स्पष्टीकरण हमारे घावों को ठीक नहीं करेंगे। हमें इसे समझना होगा और समझने के लिए बहुत प्यार, सौम्यता, झिझक, नम्रता की जरूरत है, न कि तर्क-वितर्क की कि कौन सही है और कौन गलत है।

प्रश्न: आत्मा और शरीर में क्या अंतर है?

कृष्णमूर्ति: क्या ऐसा कोई विभाजन है? सबसे पहले, मुझे नहीं पता कि हम ऐसे प्रश्न क्यों पूछते हैं। आम तौर पर हमें यह या वह बताया गया है, और हम यह पता लगाना चाहते हैं कि क्या सच है। अब, किसी भी चीज़ की सच्चाई का पता लगाने, खोज करने, उसे उजागर करने के लिए एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो कोई निष्कर्ष नहीं चाहता है, और जो किसी नकारात्मक या सकारात्मक निष्कर्ष से शुरू नहीं होता है, बल्कि कहता है, “मुझे नहीं पता। आइए पूछताछ करें।” जब ऐसा मन कोई प्रश्न पूछता है तो उसका अर्थ उस मन से बिल्कुल अलग होता है जो कहता है, "मुझे बताओ, मैं उत्तर जानना चाहता हूँ।" जीवन विशाल है, विशाल है, अथाह है, आप इसे अपनी मुट्ठी में कैसे पकड़ सकते हैं और कह सकते हैं, "मुझे उत्तर मिल गया"?

तो, अपने मन को जांच की उस स्थिति में रखते हुए, आइए हम पूछें: क्या मन और शरीर के बीच कोई विभाजन है? क्या आत्मा या आत्मा मन से भिन्न है? या क्या यह सब एक है, एकात्मक प्रक्रिया है जिसे मनुष्य अपनी सुविधा के लिए कई भागों में बांट देता है, यह कहते हुए, “यह आत्मा है, यह पदार्थ है; यह शरीर है, यह आत्मा है,” और फिर उन्हें फिर से एकजुट करने का प्रयास करता है? और जब वह उन्हें एकजुट नहीं कर पाता, तो वह आत्मा के बारे में बात करता है और उस विचार से बच निकलता है।

निःसंदेह, हममें से प्रत्येक एक संपूर्ण मानव है। यद्यपि शरीर मन से अलग है, मनुष्य एक संपूर्ण इकाई है; और इस समग्रता को समझना, महसूस करना, इसका आनंद लेना, इसकी सुंदरता को देखना यह कहने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि कुरूप छोटे मन के अलावा भी एक आत्मा है, और आत्मा को अपने शब्दों से माला पहनाएं।

आपका प्रश्न क्या है सर?

प्रश्न: आपने कहा कि जीवन का एक पैटर्न है जो सहमति और असहमति पर आधारित है, और जो दिमाग इस पैटर्न के अनुरूप होता है वह अच्छा दिमाग नहीं है। केवल एक अच्छा दिमाग ही समझने में सक्षम है, और एक अच्छा दिमाग कभी भी एक पैटर्न के अनुरूप नहीं होता है। लेकिन क्या अस्तित्व के किसी भी तरीके में कोई ऐसा है, जो किसी पैटर्न के अनुरूप नहीं है? आप भी एक पैटर्न के अनुरूप हैं, श्रीमान, यह कहते हुए, "यह एक अच्छा दिमाग है, और वह एक बुरा दिमाग है।"

कृष्णमूर्ति: सर, मुझे डर है कि आपने बात नहीं सुनी। मैं बस एक तथ्य की ओर इशारा कर रहा था - जिसका मतलब यह नहीं है कि मैं इसकी निंदा करता हूं या इसका अनुमोदन करता हूं। यह तो काफी। मैंने यह नहीं कहा, "यह अच्छा दिमाग है, और वह बुरा दिमाग है।" दोनों के बीच यह विभाजन पैदा करना मेरे मन में कभी नहीं था।'

टिप्पणी: लेकिन सर, आपने किया।

कृष्णमूर्ति: आप जीत गए, सर।

प्रश्न: मेरा एक प्रश्न है. जब तक मैं अहंकारी हूं, तब तक मेरा जीवन भी अहंकारी रहेगा
एक के बाद एक चीज़ को आगे बढ़ाने में खर्च किया गया। क्या मैं अपने आप को इससे बाहर निकाल कर सोच सकता हूँ?

कृष्णमूर्ति: सर, आप अपने बारे में किसी भी चीज़ से अलग सोच सकते हैं। अपने आप को किसी चीज़ से अलग समझना भ्रम पैदा करना है, लेकिन वह भ्रम असाधारण रूप से वास्तविक लग सकता है। यहां बनारस में तमाम गंदगी, गरीबी, कुरूपता, क्रूरता, भुखमरी, निर्दयता के साथ रहते हुए, मैं अलगाव की एक मीनार में रह सकता हूं और कह सकता हूं कि इन चीजों का अस्तित्व नहीं है। मैंने अपने बारे में कुछ सोचा है, लेकिन वह स्पष्ट रूप से इस तथ्य का सामना नहीं कर रहा है।

सच तो यह है कि हममें से अधिकांश असाधारण रूप से आत्म-केंद्रित हैं, केवल हम इसे स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। यह वह केंद्र है जिसने खुद को ऐसी कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध किया है जो उदार, महान, धार्मिक और बाकी सब कुछ दिखता है; लेकिन केंद्र अभी भी वहीं है. इस केंद्र को, अपनी स्वार्थपूर्ण गतिविधियों के साथ, समझना होगा; और समझने का अर्थ इसकी निंदा करना नहीं है बल्कि इसे इतनी स्पष्टता से देखना है जैसे कोई दर्पण में अपना चेहरा देखता है। व्यक्ति को दोनों में ही इसका अनुसरण करना होगा

चेतन और अचेतन; किसी को इसे उजागर करना होगा, इसके सभी तरीकों को देखना होगा, चाहे वे कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों; और इसकी समझ में, उस चीज़ का मुरझा जाना है जो केंद्र है।

प्रश्न: अचेतन मन को कैसे समझा जाए?

कृष्णमूर्ति: यह एक कठिन समस्या है, और यह प्रश्न एक युवा छात्र द्वारा पूछा गया है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, चेतन मन और अचेतन मन होता है। नदी न केवल चमकती, चमकती सतह है जिसे हम देखते हैं, बल्कि नीचे का अंधेरा, छिपा हुआ, जीवित पानी भी है। इसी प्रकार, चेतना गुप्त और सतही मन है। और जिस प्रकार नदी, अपनी सतह और अपनी छिपी गहराई के साथ, एक संपूर्ण वस्तु है, उसी प्रकार चेतना भी है, केवल हमने इसे सुविधा के लिए चेतन और अचेतन मन में विभाजित किया है। वास्तव में, ऐसा कोई विभाजन नहीं है; जब आप चेतन स्तर पर कार्य करते हैं तो ऐसे कोई द्वार नहीं होते जो आपको अचेतन से बंद कर दें।

चेतन मन सतही तौर पर समायोजन कर रहा है, प्रतिबिंबित कर रहा है, सीख रहा है, जानकारी प्राप्त कर रहा है, है न? आप आधुनिक भौतिकी सीख रहे हैं। आप सतही तौर पर एक निश्चित कार्यशैली में समायोजित हो रहे हैं जो उस प्राचीन संस्कृति से अलग है जिसमें आप पैदा हुए थे। यह बहुत जरूरी है क्योंकि आपको आजीविका अर्जित करनी है, खुद को आधुनिक दुनिया और बाकी सभी चीजों के साथ समायोजित करना है। लेकिन चेतना का एक गहरा हिस्सा, छिपा हुआ या अचेतन मन भी है, जो नस्लीय विरासत है, सभी अतीत का अवशेष है, रीति-रिवाजों का, परंपरा का, आपके पूर्वज क्या थे, या आपको बार-बार क्या बताया गया है। तो नीचे की चीज़, अतीत के अवशेष और ऊपर की चीज़ जो खुद को आधुनिक दुनिया के साथ समायोजित कर रही है, के बीच एक विरोधाभास है। आप समझे?

सतह से नीचे आप हिंदू हैं, मुस्लिम हैं, या जो भी आप चाहेंगे; ऊपर से आप इंजीनियर या वैज्ञानिक बनने के लिए पढ़ाई कर रहे हैं। नीचे वाली चीज़ ऊपर वाली चीज़ से कहीं अधिक मजबूत है, जिसने सतह पर बमुश्किल खरोंच डाली है।
जब तक हम इस आंदोलन की समग्रता को नहीं समझते, जो सतह के साथ-साथ सतह के नीचे मौजूद अतीत के अवशेषों से बना है, जीवन विरोधाभास की स्थिति बन जाता है।

अब, कोई उसे कैसे समझे जो सतह के नीचे है? यह आपकी बात है. दूसरे शब्दों में, चेतन मन उस चीज़ को कैसे समझ सकता है जिससे वह परिचित नहीं है? चेतन मन विश्लेषण, विच्छेदन से प्रारंभ करता है; और इस सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ, क्या आप इसका अवलोकन कर सकते हैं

जो मूलतः नकारात्मक है? क्या तुम समझ रहे हो? मैं इसमें जाऊंगा, लेकिन ज्यादा नहीं, क्योंकि इसमें बहुत लंबा समय लगेगा।

मान लीजिए कि आप बड़े हो गए हैं और शादीशुदा हैं, आपके अपने बच्चे भी हैं। आपका चेतन मन पूरे दिन दफ्तर जाने, अपने पैसों, अपने रीति-रिवाजों, अपनी गपशप में व्यस्त रहता है; यह सदैव बकबक करता रहता है।

लेकिन जब आप रात को सोने जाते हैं तो चेतन मन कुछ शांत हो जाता है। तब अचेतन आपको एक प्रतीक के रूप में एक संकेत देता है, और जब आप सुबह उठते हैं, तो आप कहते हैं, "मैंने एक अद्भुत सपना देखा है।"

अचेतन मन किसी संकेत, प्रतीक, स्वप्न के माध्यम से कुछ बताना चाहता है, जिसे वह चेतन मन से समझना चाहता है। क्योंकि वह समझने में सक्षम नहीं है, चेतन मन को उस सपने की व्याख्या करनी होती है, इसलिए आपके लिए दुभाषिया की जटिलता और बढ़ जाती है, जो इसकी गलत व्याख्या कर सकता है, और फिर से संघर्ष होता है।

अब, मन की, अचेतन और चेतन की संपूर्ण गतिविधि को समझने के लिए, व्यक्ति को दिन के दौरान प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना के प्रति जागरूक होना चाहिए। यह न तो कठिन है और न ही आसान. इसके लिए एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता है जो कहे, "मैं वास्तव में इस पूरी प्रक्रिया को समझना चाहता हूँ।" तब आप सतर्क, सावधान, पूरे दिन होने वाली हर चीज के प्रति जागे हुए, हर गतिविधि, हर संकेत, मन और हृदय की हर हलचल के प्रति जागरूक होते हैं। और जब आपका मन इस प्रकार ध्यानशील होता है - एकाग्र नहीं, बल्कि ध्यानपूर्ण - तब जब आप सोने जाते हैं, तो अचेतन और चेतन मन शांत होता है; यह अब आपको संकेत नहीं दे रहा है. पूरा मन शांत है, सिर्फ इसलिए नहीं कि वह थका हुआ है, बल्कि यह पूरी तरह से एक अलग तरीके से शांत है। और उस वास्तविक शांति में, उस गहरी शांति में, एक नया पुष्पन, एक नई स्थिति होती है।

प्रश्न: जब हम क्रांतिकारी नहीं हैं तो हम कैसे क्रांतिकारी हो सकते हैं?

कृष्णमूर्ति: आप जानते हैं, युवा मन, मासूम मन हमेशा क्रांतिकारी होता है - कभी स्वीकार न करने, हमेशा पूछताछ करने, खोज करने, खोज करने, जानने की इच्छा के अर्थ में क्रांतिकारी। ऐसे मन की कोई सीमा नहीं होती, कोई सीमा नहीं होती। लेकिन तथाकथित शिक्षा और सम्मान के माध्यम से, समाज में समायोजन के माध्यम से, अपनी महत्वाकांक्षाओं, घमंड और इसके बाकी सभी के माध्यम से, युवा मन एक बूढ़ा दिमाग बन जाता है, एक बाँझ दिमाग जो केवल आदतों, रीति-रिवाजों के क्षेत्र में कार्य करता है। और प्रतिबद्धताएँ.

अब, अधिकांश लोग सोचते हैं कि क्रांतिकारी होना स्वयं को तथाकथित क्रांतिकारी संगठन या गतिविधि के प्रति समर्पित करने का मामला है।
वे समाजवादी, या कम्युनिस्ट, या ट्रॉट्स्कीवादी, या स्टालिनवादी बन जाते हैं; वे

वे अति-वामपंथ के इस या उस आंदोलन से संबंधित हैं, अत्याचार के विभिन्न रूपों से संबंधित हैं, और वे इसे क्रांतिकारी कहते हैं। लेकिन जब कोई देखता है, तो उसे पता चलता है कि वह कोई क्रांति नहीं है। यह महज़ एक नई प्रतिबद्धता है, एक पैटर्न का दूसरे पैटर्न से प्रतिस्थापन। अगर मैं हिंदू न रहकर ईसाई बन जाऊं और कहूं कि मेरे जीवन में जबरदस्त क्रांति आ गई है, तो यह बिल्कुल बकवास है। मैं तो बस एक पिंजरा छोड़कर दूसरे पिंजड़े में घुस गया हूं। एक क्रांतिकारी दिमाग का कोई पिंजरा नहीं होता, कोई पैटर्न नहीं होता। यह एक ऐसा दिमाग है जो वास्तव में धार्मिक है क्योंकि इसमें कोई अधिकार नहीं है, और इसलिए यह वास्तव में एक अच्छा दिमाग है - बुरे दिमाग के विपरीत नहीं, जैसा कि उस सज्जन ने सुझाव दिया था। आप देखिए, क्रांति का अर्थ है वास्तविक परिवर्तन, केंद्र का उत्परिवर्तन या परिवर्तन।

7 फ़रवरी 1960

नई दिल्ली, भारत, 1960

पहली बातचीत नई दिल्ली में

यदि संभव हो तो मैं आपके साथ कुछ ऐसी समस्याओं पर बात करना चाहूँगा जिनका सामना हम सभी को करना पड़ता है। एक-दूसरे के साथ इन समस्याओं पर बात करते समय, हमें यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि किसी भी प्रकार का प्रभाव या अनुनय बहुत अस्थायी होता है, जो केवल चेतन मन को प्रभावित करता है, और बिल्कुल भी आमूल-चूल परिवर्तन नहीं लाता है। और आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक है. हमारी सोच की गुणवत्ता में किसी न किसी रूप में क्रांति स्पष्ट रूप से आवश्यक है, और हम मन में मौलिक परिवर्तन तभी ला सकते हैं जब समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता हो, न कि केवल समस्याओं या उनके तथाकथित को स्वीकार या अस्वीकार करना। समाधान। यदि आप और मैं इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझते हैं, तो हम केवल अपना समय बर्बाद कर रहे होंगे। मैं आपको किसी भी तरह से प्रभावित नहीं करना चाहता. मेरा इरादा आपको किसी विशेष दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करना नहीं है, न ही मैं आपके लिए आगे बढ़ने के लिए कोई कार्रवाई का मार्ग निर्धारित करना चाहता हूं। मेरे लिए, अनुनय या प्रभाव के ऐसे सभी रूप स्वतंत्रता का खंडन हैं। न तो अच्छा प्रभाव है और न ही बुरा प्रभाव; केवल प्रभाव है. प्रभाव प्रचार है, और प्रचार हमेशा स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता को नष्ट कर देता है।

यदि हमारे बीच यह अच्छी तरह से समझ में आ गया है - कि मेरी ओर से आपको किसी विशेष दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करने का कोई इरादा नहीं है - तो आइए हम अपनी कई समस्याओं पर एक साथ मिलकर विचार करने का प्रयास करें; आइए हम उन पर स्पष्ट रूप से, निष्पक्षता से विचार करें, ताकि मन अब बंधा न रहे, व्यवहार या विचार के किसी भी पैटर्न का गुलाम न रहे, क्योंकि नकारात्मक सोच सोच का उच्चतम रूप है।

"नकारात्मक" से मेरा तात्पर्य सकारात्मक के विपरीत नहीं है। हममें से अधिकांश लोग सकारात्मक रूप से सोचते हैं, क्या करें और क्या न करें के संदर्भ में, जो किसी निष्कर्ष पर, विचार या कार्य के पैटर्न में समायोजन है। पैटर्न बहुत सारे अनुभव का परिणाम हो सकता है, यह अनुसंधान और कई का परिणाम हो सकता है

प्रयोग, लेकिन यह अभी भी एक पैटर्न है; और एक पैटर्न के अनुसार सोचना, चाहे वह कितना भी निर्णायक, संतोषजनक क्यों न हो, अनुरूपता की एक प्रक्रिया है जो हमेशा दिमाग को व्यवस्थित करती है।

लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी सकारात्मक सोच को नकारना, और केवल पैटर्न के खिलाफ विद्रोह करना, किसी भी तरह से उच्चतम गुणवत्ता वाली सोच का निर्माण नहीं करेगा। सोच का उच्चतम रूप नकारात्मक सोच है - यानी, सकारात्मक सोच की भ्रांतियों के प्रति जागरूक होना, इससे पैदा होने वाले संघर्षों को देखना और वहां से बिना किसी पूर्वाग्रह या निष्कर्ष के स्पष्ट रूप से, निष्पक्षता से सोचना।

शायद, आज शाम, हम उन सब पर विचार कर सकते हैं क्योंकि हमारे सामने कई समस्याएं हैं, और मुझे लगता है कि कोई भी समस्या अलग-थलग नहीं है। हर समस्या हर दूसरी समस्या से संबंधित है, और व्यक्तिगत समस्या स्पष्ट रूप से दुनिया की समस्या है। जब हम समस्याओं को व्यक्तिगत और वैश्विक, व्यक्तिगत और सामाजिक, व्यक्तिगत और राजनीतिक, व्यक्तिगत और सांप्रदायिक के रूप में विभाजित करते हैं, तो मुझे लगता है कि इस तरह का विभाजन भ्रामक है और बिल्कुल भी समझ नहीं लाता है। संपूर्ण, अविभाजित समस्या के प्रति यह जागरूकता या धारणा ही समझ लाती है।

आप में से कुछ लोग यह सब पहली बार सुन रहे होंगे, और आपकी कठिनाई यह समझने में होगी कि ये शब्द क्या कहना चाहते हैं। शब्द प्रतीक हैं और केवल प्रतीकों से चिपक जाने से सारी सोच रुक जाती है। जबकि, यदि हम प्रतीकों, शब्दों और परिभाषाओं के माध्यम से आगे बढ़ सकें - उन्हें नकार नहीं सकते, बल्कि उनकी सीमाओं को देख सकते हैं और उनसे परे जा सकते हैं - तो, शायद, हम समस्या को समझने में सक्षम होंगे।

तो, हम में से प्रत्येक के लिए, मन के लिए केंद्रीय समस्या क्या है? यह प्रश्न रखते समय, मैं समस्या को इंगित करने की तैयारी नहीं कर रहा हूँ ताकि आप इसे स्वीकार कर सकें या अस्वीकार कर सकें। हम समझने की कोशिश कर रहे हैं- जिसका मतलब है कि न तो इनकार किया जा सकता है और न ही स्वीकार किया जा सकता है। जिस क्षण आप इनकार करते हैं या स्वीकार करते हैं, सारी जांच बंद हो जाती है, समस्या की सारी जांच समाप्त हो जाती है। और प्रश्न को सुनने में सक्षम होना भी बहुत महत्वपूर्ण है, है ना? मुझे लगता है कि हममें से ज्यादातर लोग बिल्कुल नहीं सुनते। हम बहुत कुछ सुनते हैं, लेकिन हम सुनते नहीं हैं, जैसे हम व्याख्या के बिना कुछ भी नहीं देखते हैं।

यदि संभव हो तो मैं थोड़ा समझाना चाहूंगा कि सुनने का क्या मतलब है। सुनना एक कला है. सुनने के लिए, आपको पूरा ध्यान देना होगा, और जब आपका दिमाग जो सुन रहा है उसकी व्याख्या कर रहा है, जो आप पहले से जानते हैं या अनुभव कर चुके हैं उसके संदर्भ में अनुवाद कर रहा है तो आप पूरा ध्यान नहीं दे सकते। एक मन जो शब्द के सही अर्थों में सुनता है वह जो कुछ भी सुनता है उसकी व्याख्या अपने अनुभवों के अनुसार नहीं करता है। यह बिल्कुल भी व्याख्या नहीं कर रहा है - यह पूरी तरह से चौकस है। ऐसा

बिना व्याख्या के सुनने से मन को एक अस्थायी फोकस मिलता है जिसमें संपूर्ण ध्यान का वह अजीब गुण होता है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी किसी चीज़ को पूरे ध्यान से सुना है? हम में से अधिकांश के लिए, ध्यान का तात्पर्य ध्यान केंद्रित करने का प्रयास है, लेकिन जहां ध्यान केंद्रित करने का प्रयास होता है, वहां कोई सुनना नहीं होता है और इसलिए कोई समझ नहीं होती है।
सुनने का तात्पर्य, निश्चित रूप से, एक ऐसा मन है जो पूरी तरह से शांत है और फिर भी चौकस है।
यदि आप कृपया आराम से ध्यान की इस स्थिति, जो सुनना है, के साथ प्रयोग करेंगे, तो हम पूछताछ के लिए आगे बढ़ सकते हैं - और तब पूछताछ न तो आपकी होगी और न ही मेरी। ऐसी पूछताछ वातानुकूलित नहीं है, यह किसी मांग या आवश्यकता के जवाब में नहीं है; इसलिए, ऐसी जांच से मन मुक्त होना शुरू हो जाता है।

मुझे ऐसा लगता है कि हम सभी के लिए केंद्रीय समस्या यह तथ्य है कि हम गुलाम हैं - समाज के गुलाम, जनता की राय के गुलाम, अपने व्यवसायों के गुलाम, अपनी धार्मिक हठधर्मिता और मान्यताओं के गुलाम। और जो दिमाग गुलाम है वह स्पष्ट रूप से यह नहीं समझ सकता कि क्या सच है। एक व्यक्ति जो एक इंजीनियर, एक नौकरशाह, एक राजनेता, एक भौतिक विज्ञानी के रूप में अपने पेशे में तीस, चालीस या पचास साल बिताता है, वह उस पेशे का गुलाम बन जाता है, क्या वह नहीं? वह वास्तविकता, ईश्वर, अच्छाई, सद्गुण और बाकी सभी चीज़ों के बारे में बड़बड़ा सकता है, लेकिन ऐसा मन स्पष्ट रूप से स्वतंत्र मन नहीं है। और निश्चित रूप से यह केवल एक स्वतंत्र दिमाग ही है जो जांच करने, खोज करने, ढूंढने और खुलासा करने में सक्षम है।

समस्या यह नहीं है कि गुलाम बनकर क्या किया जाए बल्कि समस्या यह है कि हम अपनी गुलामी की गहराई को समझें। मेरे लिए, समझ शब्द का अर्थ केवल किसी समस्या को बौद्धिक रूप से समझना नहीं है; इसका बिल्कुल अलग अर्थ है.
बौद्धिक रूप से, मौखिक रूप से, कोई व्यक्ति सभी तर्कों, सभी कारणों और निष्कर्षों को समझ सकता है और किसी प्रकार के निष्कर्ष पर पहुंच सकता है, लेकिन निश्चित रूप से वह समझ नहीं है। समझ अस्तित्व की पूरी प्रक्रिया की व्यापक धारणा की मांग करती है, न कि केवल एक समस्या की अनुभागीय या खंडित समझ की। जीवन हर चीज़ को कवर करता है, इसकी कोई शुरुआत नहीं है और कोई अंत नहीं है; जीवन अच्छा और बुरा है; जीवन साम्यवादी है, समाजवादी है, पूंजीवादी है, साम्राज्यवादी है; जीवन वह संपूर्ण चीज़ है जिसमें चित्रकार, संगीतकार, दु:खी व्यक्ति निवास करते हैं। अगर मैं जीवन नामक इस असाधारण चीज को उसकी संपूर्ण विशालता के साथ समझना चाहता हूं - और न केवल विशालता बल्कि विशेष, सीमित, एक छोटे से गांव या कस्बे में रहने वाले व्यक्ति के जीवन को भी - अगर मैं इस असाधारण चीज को समझना चाहता हूं इसे जीवन कहा जाता है, मेरे पास इसे पूरी तरह से देखने की क्षमता होनी चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि हम इस तक पूरी तरह नहीं पहुंच सकते क्योंकि हमारा दिमाग बहुत सीमित है, और उस सीमा से हम जीवन की चुनौती का जवाब देते हैं; इसलिए, शाश्वत संघर्ष, दुख, कलह है। तो समस्या निश्चित रूप से यह है कि क्या

मन पूर्ण प्रतिक्रिया देने में सक्षम है ताकि वह समस्याएँ पैदा न करे और स्वयं के साथ निरंतर संघर्ष में न रहे।

हममें से अधिकांश को इस बात का अहसास ही नहीं है कि मन किस हद तक गुलाम है, बाहरी और भीतरी तौर पर; और मुझे नहीं लगता कि मन के लिए इस गुलामी से खुद को मुक्त करना तब तक संभव है जब तक उसे अपनी गुलामी का एहसास न हो। मन परंपरा का, अनुभव का, आदत का गुलाम है, और आदत कैसे मन को गुलाम बनाती है, इसकी पूरी प्रक्रिया को समझे बिना, केवल मन को किसी विशेष आदत से मुक्त करने का प्रयास करने का कोई मूल्य नहीं है।

कृपया इसे थोड़ा ध्यान से सुनें, कम से कम कुछ समय के लिए, क्योंकि हम आगे बढ़ते हुए उन कई सवालों से निपटेंगे जो इन वार्ताओं के दौरान आपके मन में अनिवार्य रूप से उठेंगे। जब तक हम शुरू से ही यह देखने के महत्व को नहीं समझ लेते कि क्या है, यानी अपने मन की वास्तविक स्थिति को नहीं समझते, तब तक केवल प्रश्न पूछना और उत्तर खोजने का प्रयास करना पूरी तरह से व्यर्थ है। ये कई समस्याएँ हैं - भुखमरी की समस्या, स्वतंत्रता की समस्या, रिश्ते की समस्या, सत्य, वास्तविकता का अस्तित्व है या नहीं की समस्या, ध्यान की समस्या, और सृजन की असाधारण समस्या, की गति ज़िंदगी।

ये सभी समस्याएँ हमें सतही तौर पर या सबसे गहराई से प्रभावित करती हैं, और यदि हम वास्तविक तथ्य को नहीं समझते हैं तो हम इनमें से किसी का भी उत्तर नहीं पा सकते हैं । हममें से अधिकांश लोग इस तथ्य का सामना करने को तैयार नहीं हैं कि क्या है; हम इससे बचना चाहते हैं और ऐसे कई पलायन हैं जो पारंपरिक हो गए हैं।

इसलिए, महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि मन को कैसे मुक्त किया जाए - साधन, विधि, अनुशासन और बाकी सब क्या है - बल्कि अपनी खुद की आदत की गुलामी के तथ्य को समझना है। इस तथ्य का बोध ही मन को मुक्ति दिलाने वाला है, न कि मन को मुक्त करने का संकल्प या संकल्प।

हममें से अधिकांश लोग भयभीत हो जायेंगे यदि हम वास्तव में इस बात से अवगत हों कि हम किस आदत के गुलाम हैं। हम अच्छी आदतें अपनाना चाहते हैं, जिन्हें गुण कहा जाता है, लेकिन आदत यांत्रिक है, और जब कोई गुण आदत बन जाता है, तो वह गुण नहीं रह जाता है। जो मन नम्रता का अभ्यास करता है, और इसकी आदत बना लेता है, वह नम्र होना बंद कर देता है; इसने विनम्रता नामक उस अजीब चीज़ का गुण खो दिया है। और फिर भी, यदि आप अपने मन की गतिविधियों को बहुत ध्यान से देखें, तो आप देखेंगे कि मन लगभग हमेशा अपने लिए आदत का एक पैटर्न बनाता है, और फिर उस आदत में यंत्रवत् कार्य करता है।

हम आदत को अच्छे और बुरे में बांटते हैं, जो अच्छा है वह सम्मानजनक है, जिसे समाज द्वारा गुण के रूप में मान्यता दी जाती है; लेकिन जो सद्गुण समाज द्वारा मान्यता प्राप्त है, जो सम्माननीय बन गया है, वह अब सद्गुण नहीं है।

मन सदैव गतिविधि के एक ऐसे तरीके की तलाश में रहता है जो पूरी तरह से यांत्रिक हो, और जब उसे ऐसी स्थिति मिलती है, तो वह संतुष्ट हो जाता है क्योंकि यांत्रिक कार्यप्रणाली, यांत्रिक सोच की उस स्थिति में, न्यूनतम घर्षण, संघर्ष होता है। इसीलिए आदत मन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है, और मन आदत का गुलाम क्यों बन जाता है।

दरअसल, आदत ही मन है, जैसे समय ही मन है। आख़िरकार, हम समय का परिणाम हैं, न केवल कालानुक्रमिक अर्थ में, बल्कि आंतरिक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से हम कई शताब्दियों के समय का परिणाम हैं। हम परंपरा के गुलाम हैं, न केवल हजारों साल की परंपरा के, बल्कि कल की परंपरा के भी। पुनः, यदि आप स्वयं में जाएं, अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि परंपरा के अनुसार ऐसी कार्यप्रणाली हमेशा यांत्रिक होती है, चाहे परंपरा प्राचीन हो या हाल ही में वर्तमान की, तात्कालिक मांगों के अनुसार स्थापित की गई हो।

महोदय, क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आप केवल बातें न सुनें बल्कि वास्तव में अपने बारे में जागरूक रहें। बातचीत केवल आपके अपने दिमाग की कार्यप्रणाली को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण के रूप में उपयोगी है। यदि विवरण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, और आप केवल विवरण को स्वीकार या अस्वीकार कर रहे हैं, तो आप अपने मन का अवलोकन नहीं कर रहे हैं; और यदि आप अपने मन का अवलोकन नहीं कर रहे हैं, तो ये बातचीत पूरी तरह से व्यर्थ और समय की बर्बादी है। वर्णन, प्रतीक कभी भी वास्तविक नहीं होते। मन शब्द मन नहीं है, और यदि आप केवल शब्द से चिपके रहते हैं, तो मन की असाधारण गुणवत्ता, सूक्ष्मता, गहरी गति आपके सामने से गुजर जाएगी।

तो, आप वास्तव में क्या कर रहे हैं? आप सुन रहे हैं, निश्चित रूप से, अपने स्वयं के मन को कार्य में देखने के लिए, और अपने स्वयं के विचार की प्रकृति से अवगत होने के लिए। इस प्रकार अपने मन और उसकी गतिविधियों के प्रति जागरूक होने पर, आप न तो स्वीकार करते हैं और न ही इनकार करते हैं। किसी न किसी रूप में कोई दृढ़ विश्वास नहीं है। आप केवल तथ्य का अवलोकन कर रहे हैं, और किसी तथ्य का अवलोकन किसी पूर्व निष्कर्ष की मांग नहीं करता है।

जैसा कि मैंने कहा, हमारा दिमाग समय का परिणाम है। हमारा दिमाग प्रभाव का परिणाम है, चाहे वह साम्यवादी प्रभाव हो या कोई अन्य। हमारा दिमाग परंपरा से बंधा हुआ है, जो प्रभाव का एक रूप है। हमारा दिमाग अनुभव का परिणाम है, और अनुभव परंपरा बन गया है। इन सबके प्रति हमारा मन गुलाम है। तथाकथित प्रगति, संस्कृति और शिक्षा के माध्यम से, राजनीतिक गतिविधियों के माध्यम से, प्रचार के माध्यम से, समायोजन और अनुरूपता के विभिन्न रूपों के माध्यम से, स्वतंत्रता का मार्जिन संकीर्ण और संकीर्ण होता जा रहा है। मैं नहीं जानता कि क्या आप इस बात से अवगत हैं कि हमारे पास कितनी कम स्वतंत्रता है। राजनेता, विशेषज्ञ, विभिन्न पेशे, रेडियो और टेलीविजन, किताबें और

अखबार जो हम पढ़ते हैं - ये सभी चीजें मन को प्रभावित कर रही हैं, अनुकूलित कर रही हैं और इस तरह हमें स्वतंत्रता की इस असाधारण भावना से वंचित कर रही हैं। यह तथ्य है, और हम इस तथ्य से चिंतित हैं, न कि इस बात से कि मुक्त होने के लिए हमें क्या करना चाहिए। हम समझेंगे कि क्या करना है जब हम जो है उसके प्रति संवेदनशील हैं, और जो है उसके प्रति संवेदनशीलता मन की गुणवत्ता पर निर्भर करती है जो जो है उस पर ध्यान देता है। कोई कह सकता है, "हाँ, मैं गुलाम हूँ, लेकिन मैं बदल नहीं सकता क्योंकि मैं अपनी नौकरी से बंधा हुआ हूँ; मेरा पूरा अस्तित्व प्रतिबद्ध है।" निश्चित रूप से, यह एक बहुत ही सतही अवलोकन है। या कोई कह सकता है, "इस तरह से जीना स्वाभाविक है, अपरिहार्य है।" फिर, ऐसा बयान बहुत सतही है। तो, आपके मन की संवेदनशीलता पर निर्भर करता है कि आप उस तथ्य को कितनी गहराई तक समझते हैं।

देखिए श्रीमान, मान लीजिए कि मुझे युवावस्था से ही नौकरशाह बनने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। मैं अब उस पेशे में कुछ हद तक आसानी से लेकिन यंत्रवत् काम करता हूं- और मैं पिछले चालीस वर्षों से इसका गुलाम हूं। हममें से अधिकांश लोग उस स्थिति में हैं, और हममें से बहुत कम लोग अपनी गुलामी के बारे में जानते हैं। एक डॉक्टर जो एक विशेषज्ञ के रूप में प्रैक्टिस करता है वह अपनी विशेषज्ञता का गुलाम है; वह उसका स्वर्ग है जिसे उसने अपने जीवन के कई वर्ष दिये हैं। हमें जो करने के लिए शिक्षित किया गया है हम उसके गुलाम हैं। हम अपने व्यवसायों, अपने व्यवसायों के गुलाम हैं। यह वास्तविक तथ्य है, और मन इस तथ्य को देखने के विरुद्ध विद्रोह करता है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि वह कैसे तथ्य को एक तरफ धकेलना चाहता है।

अब, मैं सुझाव दे रहा हूं कि आप केवल इस तथ्य को देखें, यानी कि जागरूक रहें कि आप गुलाम हैं, और तब आप पाएंगे कि ऐसी जागरूकता, ऐसी धारणा, अपनी स्वयं की कार्रवाई लाती है।

लेकिन इससे एक और मुद्दा खड़ा हो जाता है. हममें से अधिकांश लोग, जब किसी समस्या का सामना करते हैं, तो उसके बारे में कुछ करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, एक विचारक है जो समस्या पर कार्य करता है। लेकिन विचारक स्वयं ही समस्या है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं स्वयं को स्पष्ट कर रहा हूँ?

आप देखिए, श्रीमान, मुझे लगता है कि स्वतंत्रता नितांत आवश्यक है - सशर्त स्वतंत्रता नहीं, बल्कि संपूर्ण स्वतंत्रता। क्योंकि केवल स्वतंत्र मस्तिष्क ही रचनात्मक होता है; केवल एक स्वतंत्र मन ही जान सकेगा कि प्रेम क्या है; केवल एक स्वतंत्र दिमाग ही अच्छाई की उस अवस्था में होता है जो कि एक विकसित गुण नहीं है। इसलिए आज़ादी ज़रूरी है. लेकिन यदि आप ध्यान दें, तो आप देखेंगे कि प्रत्येक मनुष्य को ज्ञान के माध्यम से, अनुभव के माध्यम से, आदत के माध्यम से, हमारे द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यों के माध्यम से स्वतंत्रता से वंचित किया जा रहा है।

अब, क्या मन का स्वतंत्र होना संभव है?—जो गुलामी के विपरीत नहीं है। क्या तुम समझ रहे हो? विपरीत सदैव एक प्रतिक्रिया ही होती है, है न? हिंसा का विपरीत अहिंसा है। यह एक प्रतिक्रिया है; इसलिए, यह है

हिंसा की गुणवत्ता. लेकिन अगर मन अपनी हिंसा को समझ लेता है, तो वह हिंसा से मुक्त हो जाता है, जो कि अहिंसा से बिल्कुल अलग स्थिति है।
इसी तरह, जब मन गुलामी की इस पूरी प्रक्रिया में जाता है, जब उसे समझ आता है कि वह किस तरह से और किस हद तक गुलाम है, तो कोई प्रतिक्रिया नहीं होती क्योंकि वही समझ एक ऐसी आजादी लाती है जो गुलामी के विपरीत नहीं है।

महोदय, मुझे समस्या को अलग तरीके से रखने दीजिए। निःसंदेह, प्रेम घृणा का विपरीत नहीं है। प्यार में कोई ईर्ष्या नहीं, कोई प्रतिस्पर्धा नहीं. जहाँ महत्त्वाकांक्षा है, वहाँ प्रेम नहीं; जहां मन सत्ता, पद, प्रतिष्ठा की तलाश में है, वहां प्रेम नहीं है। जिसे सकारात्मक कहा जाता है, उसके निषेध के माध्यम से ही कोई प्रेम की गुणवत्ता को समझ सकता है। दूसरे शब्दों में, प्रेम की स्थिति को पाया, समझा, महसूस किया जा सकता है, या वह स्थिति तभी होती है, जब मन महत्वाकांक्षी न हो, ईर्ष्या के द्वंद्व में न फँसा हो। और यदि हम यह समझेंगे कि स्वतंत्र होना क्या है, या उस अनुभूति की स्थिति में होना जो स्वतंत्रता है, तो हमें समझना होगा, हमें गुलामी के निहितार्थों के बारे में पूरी तरह से जागरूक होना चाहिए।

महोदय, मुझे डर है कि हम एक-दूसरे के साथ तालमेल में नहीं हैं। क्या आप जानते हैं कि दूसरे के साथ संवाद करने का क्या मतलब होता है? एक-दूसरे से प्यार करने वाले दो लोगों के बीच अक्सर शब्द अनावश्यक होते हैं। जब वे एक-दूसरे को देखते हैं, तो उस क्षण एक सामान्य ध्यान होता है जो समग्र होता है; शब्द अनावश्यक हैं क्योंकि एक ही समय में, एक ही स्तर पर तत्काल संवाद होता है। अब, आप और मैं उस साम्य की स्थिति में नहीं हैं क्योंकि आप वास्तव में यह नहीं देखते हैं कि यह समस्या आपकी समस्या है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे मैं आप पर थोप रहा हूँ।

मैं तो बस इसकी ओर इशारा कर रहा हूं. आप में से कुछ लोग अपनी गुलामी से अवगत हो सकते हैं, लेकिन आप में से अधिकांश इसे देखना नहीं चाहते हैं, इसलिए एक अलगाव है, एक दरार है; वक्ता और आपके बीच एक दूरी है क्योंकि आपके लिए स्वतंत्रता का मतलब बिल्कुल अलग है। आप इसे अपने शब्दों में, उस परंपरा के अनुसार अनुवाद करते हैं जिसमें आप पले-बढ़े हैं, और इस तरह आप जो कहा जा रहा है उसके महत्व को पूरी तरह से भूल जाते हैं। यदि समस्या के संबंध में हमारे बीच संवाद होता, तो मन हर समय अपनी गहनतम गहराई पर ध्यान की स्थिति में होता।

आप समझे की मेरा आशय क्या है?

देखिये श्रीमानों, हमारा जीवन बहुत क्षुद्र, बहुत संकीर्ण, कलह और दुःख से भरा हुआ है।
हम जो कुछ भी छूते हैं, हाथ से या मन से, वह नष्ट हो जाता है, विकृत हो जाता है, भ्रष्ट हो जाता है। हमारे बारे में हर चीज़ भ्रष्टाचार का संकेत देती है। छोटा होने के कारण हमारा मन हर समय संघर्ष करता रहता है, संघर्ष करता रहता है, संघर्ष करता रहता है। इस समस्या को समझने के लिए, आपको इस पर अपना पूरा ध्यान देना होगा; आपको केवल इतना ही नहीं, बल्कि ईमानदार होना चाहिए

इस क्षण, लेकिन जीवन भर सही। मेरा मानना है कि ईमानदारी और गंभीरता में अंतर है। एक निष्कर्ष पर पहुंचने वाला, हठधर्मी विश्वास वाला व्यक्ति बहुत गंभीर होता है, और ऐसा ही एक व्यक्ति कुछ हद तक असंतुलित होता है। लेकिन मैं उस मन की ईमानदारी के बारे में बात कर रहा हूं जो जीवन की हर समस्या में यथासंभव गहराई से प्रवेश करना चाहता है, और इसलिए सभी पलायन को काट देता है। निश्चय ही ऐसे मन के लिए आज़ादी और गुलामी का यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

हर तरफ सरकारें हमारी आज़ादी को ख़त्म कर रही हैं। शिक्षा हमें संस्कारित कर रही है, और तथाकथित प्रगति, अपने बड़े पैमाने पर उत्पादन के साथ, हमें गुलामी की ओर भी ले जा रही है। हालाँकि आप इसे एक समस्या नहीं मान सकते, लेकिन समस्या मौजूद है। दुनिया में अत्याचारी, तानाशाह, शासक हैं जो मनुष्य के दिमाग को नियंत्रित करना चाहते हैं। यह एक ऐसी समस्या है जिसका हममें से प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन सामना कर रहा है। गीता या उपनिषदों की व्याख्या कैसे की जाए, यह प्रश्न कोई समस्या नहीं है। गंभीर मन के लिए यह कोई समस्या नहीं है। किसी ने क्या कहा है - चाहे वह मार्क्स हो या बुद्ध या ईसा मसीह - यह महत्वपूर्ण नहीं है।

जो महत्वपूर्ण है वह यह है कि जिन चीज़ों का हम सामना कर रहे हैं उन्हें स्वयं समझें, न कि उन्हें अतीत के संदर्भ में अनुवादित करें; और इसके लिए हमारे ध्यान, हमारी पूरी ईमानदारी की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता का यह प्रश्न एक बहुत बड़ी समस्या है जो वास्तव में हममें से प्रत्येक के सामने खड़ी है; यह दार्शनिक या राजनेता द्वारा चर्चा की जाने वाली मात्र सैद्धांतिक समस्या नहीं है जो हमेशा स्वतंत्रता और शांति के बारे में बात करता रहता है। यह उस गंभीर मन के लिए एक समस्या है जो खुद को दुख से अलग करना चाहता है, लेकिन अगर आप इसके बारे में गहराई से जागरूक नहीं हैं, अगर यह आपके लिए सीधी चुनौती नहीं है तो आप इस पर अपना ध्यान नहीं दे सकते।

मुझे नहीं पता, श्रीमान, क्या आपको एहसास है कि आदमी किस निराशा की स्थिति में है। उसने हर कोशिश कर ली है; उसने स्वयं को विभिन्न गतिविधियों, विभिन्न आंदोलनों, विभिन्न दर्शनों, धर्मों के प्रति समर्पित कर दिया है और अंत में उसे कुछ नहीं मिला। वह विश्वास कर सकता है, वह अटकलें लगा सकता है, लेकिन यह सब बिना समझ के है, इसलिए निराशा है। क्या आप समझते हैं श्रीमान? निराशा तब होती है जब मन अत्याचार को फैलता हुआ देखता है, जब उसे पता चलता है कि राजनीति सर्वोपरि हो गई है, जब उसे लगता है कि संगठित धर्म मनुष्य के विचारों को नियंत्रित कर रहा है। आप जहां चाहें मुड़ें, आपको निराशा की इस भावना का सामना करना ही पड़ेगा। जिनकी पीठ दीवार की ओर होती है, वे दर्शन का अविष्कार करते हैं और अपनी चतुराई से दूसरे लोगों को निराशा के जाल में फंसा लेते हैं।

तो, इस पूरी प्रक्रिया जो कि जीवन है, के प्रति जागरूक रहते हुए, एक इंसान के रूप में आपको इसका सामना करना होगा; आप यह नहीं कह सकते, "यह मेरी समस्या नहीं है।" यह आपकी है

समस्या, और आप समस्या को पूरी तरह से तभी हल कर सकते हैं जब आप अपने मन की गुणवत्ता, गति, असाधारण गतिविधि को समझना शुरू कर देंगे। यदि आप अपने आप को नहीं समझते हैं, तो आप चाहे जो भी हों - चेतन या अचेतन रूप से - आप निराशा की स्थिति में हैं; और आप जितने अधिक बौद्धिक होंगे, आपकी निराशा उतनी ही गहरी और व्यापक होगी। बेशक, उथले दिमाग वाले लोग मंदिर जाकर या किताब पढ़कर या रेडियो चालू करके या कुछ व्यर्थ शब्दों को दोहराकर अपनी निराशा को बहुत जल्दी भूल जाते हैं, लेकिन निराशा अभी भी है।

अब, क्या मन बिना निराशा के इस बड़ी समस्या का सामना कर सकता है?
निश्चय ही निराशा तभी उत्पन्न होती है जब मन समस्या के समाधान की आशा से चिपक जाता है। मुझे लगता है कि आशा और निराशा की प्रक्रिया से गुज़रे बिना, समस्या को समझना संभव है - यानी, मन को समझना, स्वयं को समझना, लेकिन यह वही है जो हममें से अधिकांश लोग नहीं करना चाहते क्योंकि इसमें काम शामिल है , यह ध्यान, हर विचार और हर भावना की निरंतर धारणा की मांग करता है। फिर भी आत्म-ज्ञान के बिना, जो चाहो करो, कोई स्वतंत्रता नहीं हो सकती। आत्म-ज्ञान से मेरा तात्पर्य पल-पल विचार और भावना की प्रत्येक गतिविधि के प्रति जागरूकता और समझ से है। मैं उच्च स्व और निम्न स्व की बात नहीं कर रहा हूं, आत्मा की बात नहीं कर रहा हूं, वह स्व जो सर्वोच्च माना जाता है, और वह सब व्यवसाय। मैं उस मन के बारे में बात कर रहा हूं जो रोजमर्रा की जिंदगी में काम करता है, वह मन जो गुलाम है, जो ईर्ष्यालु है, महत्वाकांक्षी है, क्रूर है, वह मन जो खुशी और दुख को जानता है, जो एक विधि में, एक प्रतीक में, एक भ्रम में फंसा हुआ है। जो मायने रखता है वह है अपने मन को समझना, वह मन जो दिन के हर पल आपके अंदर काम कर रहा है क्योंकि केवल उस समझ की स्पष्टता के माध्यम से ही स्वतंत्रता है। मैं कहता हूं कि मन पूरी तरह से स्वतंत्र हो सकता है, और केवल पूरी तरह से स्वतंत्र मन ही जानता है कि क्या वास्तविकता है, क्या ईश्वर है, एक ऐसी स्थिति जिसे मन द्वारा नहीं मापा जा सकता है।

14 फ़रवरी 1960

दूसरी वार्ता नई दिल्ली में

हममें से अधिकांश लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। हम बहुत सारी समस्याओं का सामना कर रहे हैं, और इन सभी समस्याओं से निपटने का एक अलग तरीका होना चाहिए - शायद एक बिल्कुल अलग तरीका। और मुझे ऐसा लगता है कि जब तक हम इस परिवर्तन की आंतरिक प्रकृति को नहीं समझेंगे, केवल सुधार, सतह पर क्रांति, बहुत कम होगी

महत्व। जो आवश्यक है, वह निश्चित रूप से कोई सतही परिवर्तन नहीं है, कोई अस्थायी समायोजन या किसी नए पैटर्न के अनुरूप नहीं है, बल्कि मन का एक मौलिक परिवर्तन है - एक ऐसा परिवर्तन जो पूर्ण होगा, न कि केवल आंशिक।

परिवर्तन की इस समस्या को समझने के लिए सबसे पहले सोचने की प्रक्रिया और ज्ञान की प्रकृति को समझना आवश्यक है। जब तक हम इसमें गहराई से नहीं जाते, किसी भी बदलाव का बहुत कम अर्थ होगा, क्योंकि केवल सतह पर बदलाव का मतलब उन चीजों को कायम रखना है जिन्हें हम बदलने की कोशिश कर रहे हैं। सभी क्रांतियाँ मनुष्य-मनुष्य के संबंधों को बदलने, एक बेहतर समाज, जीवन जीने का एक अलग तरीका बनाने के लिए निकलीं; लेकिन समय की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से, क्रांति को जिन दुर्व्यवहारों को दूर करना था, वे लोगों के एक अलग समूह के साथ दूसरे तरीके से दोहराए जाते हैं, और वही पुरानी प्रक्रिया चलती रहती है। हम परिवर्तन करना शुरू करते हैं, एक वर्गहीन समाज की स्थापना करते हैं, और पाते हैं कि समय के साथ, परिस्थितियों के दबाव के माध्यम से, एक अलग समूह नया उच्च वर्ग बन जाता है। क्रांति कभी भी आमूल-चूल, मौलिक नहीं होती।

इसलिए, मुझे ऐसा लगता है कि जब हम इतनी सारी समस्याओं का सामना कर रहे हों तो सतही सुधार या समायोजन निरर्थक है, और एक स्थायी और महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने के लिए, हमें यह देखना होगा कि परिवर्तन का तात्पर्य क्या है। हम परिस्थितियों के दबाव में, प्रचार के माध्यम से, आवश्यकता के माध्यम से, या किसी विशेष पैटर्न के अनुरूप होने की इच्छा के माध्यम से सतही तौर पर बदलते हैं। मुझे लगता है कि हर किसी को इसके बारे में पता होना चाहिए। एक नया आविष्कार, एक राजनीतिक सुधार, एक युद्ध, एक सामाजिक क्रांति, अनुशासन की एक प्रणाली - ये चीजें मनुष्य के दिमाग को बदलती हैं, लेकिन केवल सतह पर। और जो व्यक्ति ईमानदारी से यह जानना चाहता है कि मौलिक परिवर्तन में क्या निहित है, उसे निश्चित रूप से सोचने की पूरी प्रक्रिया, यानी मन और ज्ञान की प्रकृति की जांच करनी चाहिए।

इसलिए, यदि संभव हो तो मैं आपसे इस विषय पर बात करना चाहूँगा कि मन क्या है, ज्ञान की प्रकृति क्या है और जानने का क्या अर्थ है, क्योंकि यदि हम यह सब नहीं समझते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि इसकी कोई संभावना है। हमारी कई समस्याओं के प्रति नया दृष्टिकोण, जीवन को देखने का एक नया तरीका।

हममें से अधिकांश लोगों का जीवन बहुत बदसूरत, घिनौना, दयनीय, क्षुद्र है। हमारा अस्तित्व संघर्षों, विरोधाभासों, संघर्ष की एक प्रक्रिया, दर्द, क्षणभंगुर खुशी, क्षणिक संतुष्टि की एक श्रृंखला है। हम बहुत सारे समायोजनों, अनुरूपताओं, प्रतिमानों से बंधे हुए हैं, और कभी भी स्वतंत्रता का एक क्षण भी नहीं आता है, कभी भी पूर्ण अस्तित्व की भावना नहीं होती है। हमेशा निराशा होती है क्योंकि हमेशा पूरा करने की चाहत होती है। हमारे पास मन की शांति नहीं है, लेकिन हमेशा रहती है

विभिन्न मांगों से प्रताड़ित किया गया। इसलिए, इन सभी समस्याओं को समझने और उनसे परे जाने के लिए, यह निश्चित रूप से आवश्यक है कि हम ज्ञान की प्रकृति और मन की प्रक्रिया को समझकर शुरुआत करें।

ज्ञान का तात्पर्य संचय की भावना से है, है न? ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, और अपनी प्रकृति के कारण, ज्ञान हमेशा आंशिक होता है, यह कभी भी पूर्ण नहीं होता है; इसलिए, ज्ञान से उत्पन्न होने वाली सभी क्रियाएं भी आंशिक, अपूर्ण हैं। मैं समझता हूं कि हमें इसे बहुत स्पष्ट रूप से देखना चाहिए।

मैं आगे बढ़ने में झिझक रहा हूं क्योंकि अगर हमें आगे बढ़ते हुए समझना है, तो हमें एक-दूसरे के साथ संवाद करना होगा, और मुझे यकीन नहीं है कि हमारे बीच कोई संवाद है। साम्य का तात्पर्य न केवल शब्दों के महत्व को समझना है, बल्कि शब्दों से परे के अर्थ को भी समझना है, है न? यदि आपका मन और वक्ता का मन एक साथ समझदारी, संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तो एक दूसरे के साथ वास्तविक जुड़ाव की संभावना है। लेकिन यदि आप केवल बातचीत के अंत में यह जानने के लिए सुन रहे हैं कि ज्ञान से मेरा क्या मतलब है, तो हम एकता में नहीं हैं। आप केवल एक परिभाषा की प्रतीक्षा कर रहे हैं, और परिभाषाएँ, निश्चित रूप से, समझने का तरीका नहीं हैं।

तो प्रश्न उठता है: समझ क्या है? समझने वाले मन की स्थिति क्या है? जब आप कहते हैं, "मैं समझता हूं," तो इससे आपका क्या मतलब है? समझ केवल बुद्धि नहीं है; यह तर्क-वितर्क का परिणाम नहीं है, इसका स्वीकृति, अस्वीकार या दृढ़ विश्वास से कोई लेना-देना नहीं है।

इसके विपरीत, स्वीकृति, इनकार और दृढ़ विश्वास समझ को रोकते हैं।
समझने के लिए, निश्चित रूप से, ध्यान की एक ऐसी स्थिति होनी चाहिए जिसमें तुलना या निंदा की कोई भावना न हो, हम जिस चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं उससे सहमत या असहमत होने के लिए उसके और विकास की प्रतीक्षा न हो। सभी प्रकार की राय, निंदा या तुलना की सभी भावनाओं का स्थगन या निलंबन है; आप सिर्फ जानने के लिए सुन रहे हैं। आपका दृष्टिकोण जांच-पड़ताल का है, जिसका अर्थ है कि आप किसी निष्कर्ष से शुरुआत नहीं करते हैं; इसलिए, आप ध्यान की स्थिति में हैं, जो वास्तव में सुनना है।

अब, क्या इतनी बड़ी भीड़ में, एक-दूसरे के साथ बातचीत करना संभव है? मैं ज्ञान की इस समस्या में जाना चाहूँगा, चाहे वह कितनी भी कठिन क्यों न हो, क्योंकि यदि हम ज्ञान की समस्या को समझ सकते हैं, तो मुझे लगता है कि हम मन से परे जाने में सक्षम होंगे; और स्वयं से परे जाने या अतिक्रमण करने में, मन बिना किसी सीमा के हो सकता है, अर्थात बिना प्रयास के, जो चेतना पर एक सीमा लगाता है। जब तक हम मन की यंत्रवत प्रक्रिया से परे नहीं जाते, वास्तविक रचनात्मकता स्पष्ट रूप से असंभव है, और जो आवश्यक है, वह निश्चित रूप से एक ऐसा दिमाग है जो रचनात्मक हो ताकि वह इन सभी बढ़ती समस्याओं से निपटने में सक्षम हो सके। यह समझने के लिए कि ज्ञान क्या है और आंशिक से परे जाना है

सीमित, जो रचनात्मक है उसका अनुभव करने के लिए केवल एक पल की अनुभूति की आवश्यकता नहीं है, बल्कि निरंतर जागरूकता, निरंतर जांच की स्थिति है जिसमें कोई निष्कर्ष नहीं है - और यह, आखिरकार, बुद्धिमत्ता है।

इसलिए, यदि आप सुन रहे हैं, न केवल अपने कानों से, बल्कि उस दिमाग से जो वास्तव में समझना चाहता है, एक ऐसा दिमाग जिसके पास कोई अधिकार नहीं है, जो किसी निष्कर्ष या उद्धरण से शुरू नहीं होता है, जिसमें सही साबित होने की कोई इच्छा नहीं है, लेकिन इन असंख्य समस्याओं से अवगत हैं और उन्हें सीधे हल करने की आवश्यकता को देखते हैं - यदि आपके मन की यही स्थिति है, तो मुझे लगता है कि हम एक-दूसरे के साथ संवाद कर सकते हैं। अन्यथा आपके पास केवल ढेर सारे शब्द ही रह जायेंगे।

जैसा कि मैं कह रहा था, सारा ज्ञान आंशिक है, और ज्ञान से उत्पन्न कोई भी कार्य भी आंशिक है, और इसलिए विरोधाभासी है। यदि आप अपने बारे में, अपनी गतिविधियों के बारे में, अपनी प्रेरणाओं के बारे में, अपने विचारों और इच्छाओं के बारे में ज़रा भी जागरूक हैं, तो आप जान लेंगे कि आप आत्म-विरोधाभास की स्थिति में रहते हैं - "मैं चाहता हूँ" और साथ ही "मैं नहीं चाहता" चाहना; मुझे यह करना चाहिए, मुझे वह नहीं करना चाहिए," इत्यादि इत्यादि। मन हर समय विरोधाभास की स्थिति में रहता है।

और विरोधाभास जितना तीव्र होगा, आपका कार्य उतना ही अधिक भ्रम पैदा करेगा। अर्थात्, जब कोई ऐसी चुनौती होती है जिसका उत्तर दिया जाना चाहिए, जिसे टाला नहीं जा सकता है, या जिससे आप बच नहीं सकते हैं, तब आपका मन विरोधाभास की स्थिति में होता है, उस चुनौती का सामना करने का तनाव एक कार्रवाई को मजबूर करता है; और इस तरह की कार्रवाई और अधिक विरोधाभास, और अधिक दुख पैदा करती है।

मैं नहीं जानता कि क्या हममें से प्रत्येक को यह स्पष्ट है कि हम विरोधाभास की स्थिति में रहते हैं। हम शांति की बात करते हैं, और युद्ध की तैयारी करते हैं। हम अहिंसा की बात करते हैं और मूलतः हिंसक हैं। हम अच्छे होने की बात करते हैं, और हम अच्छे नहीं हैं। हम प्यार के बारे में बात करते हैं, और हम महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धात्मकता, निर्मम दक्षता से भरे हुए हैं। इसलिए विरोधाभास है. जो कार्य उस विरोधाभास से उत्पन्न होता है वह केवल निराशा और आगे विरोधाभास लाता है।

ज्ञान अधूरा होने के कारण उस ज्ञान से उत्पन्न कोई भी कार्य विरोधाभासी ही होगा। तो, हमारी समस्या, कार्रवाई का एक स्रोत ढूंढना है जो आंशिक नहीं है - इसे अभी खोजना है, ताकि एक तत्काल कार्रवाई बनाई जा सके जो समग्र हो और यह न कहें, "मैं इसे किसी सिस्टम के माध्यम से, किसी भविष्य के समय में ढूंढूंगा। "

आप देखिए, श्रीमान, सभी विचार आंशिक हैं; यह कभी भी समग्र नहीं हो सकता। विचार स्मृति की प्रतिक्रिया है, और स्मृति हमेशा आंशिक होती है क्योंकि स्मृति अनुभव का परिणाम है, इसलिए विचार मन की प्रतिक्रिया है जो अनुभव से अनुकूलित होता है। सारी सोच, सारा अनुभव, सारा ज्ञान अनिवार्यतः आंशिक है; इसलिए, विचार हमारी कई समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता। आप इन अनेक समस्याओं के बारे में तार्किक रूप से, समझदारी से तर्क करने का प्रयास कर सकते हैं, लेकिन यदि आप अपने मन का निरीक्षण करेंगे तो आप देखेंगे कि आपकी सोच

आपकी परिस्थितियों से, उस संस्कृति से जिसमें आप पैदा हुए थे, आपके द्वारा खाए जाने वाले भोजन से, जिस जलवायु में आप रहते हैं, आपके द्वारा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों से, आपके दैनिक जीवन के दबावों और प्रभावों से। आपको एक कम्युनिस्ट, या एक समाजवादी, एक हिंदू, एक कैथोलिक, या जो भी आप चाहते हैं, के रूप में अनुकूलित किया गया है; आप विश्वास करने या न करने के लिए बाध्य हैं। और चूँकि मन अपने विश्वास या अविश्वास से, अपने ज्ञान से, अपने अनुभव से अनुकूलित होता है, इसलिए सारी सोच आंशिक होती है। ऐसी कोई सोच नहीं जो स्वतंत्र हो।

इसलिए हमें यह स्पष्ट रूप से समझना चाहिए कि हमारी सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है, और स्मृति यंत्रवत है। ज्ञान हमेशा अधूरा होता है, और ज्ञान से पैदा हुई सभी सोच सीमित, आंशिक, कभी मुक्त नहीं होती है। अतः विचार की कोई स्वतंत्रता नहीं है। लेकिन हम एक ऐसी स्वतंत्रता की खोज शुरू कर सकते हैं जो विचार की प्रक्रिया नहीं है और जिसमें मन अपने सभी संघर्षों और उस पर पड़ने वाले सभी प्रभावों के प्रति बस जागरूक रहता है।

मुझे आशा है कि मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं।

आख़िरकार, शिक्षा का उद्देश्य क्या है जैसा कि हम अभी जानते हैं? आवश्यकता के अनुसार मन को ढालना है ना? वर्तमान समय में समाज को बड़ी संख्या में इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, भौतिकविदों की आवश्यकता है; इसलिए विभिन्न प्रकार के पुरस्कार और दबाव के माध्यम से, मन को उस मांग के अनुरूप प्रभावित किया जाता है, और इसे ही हम शिक्षा कहते हैं। हालाँकि ज्ञान आवश्यक है, और हम शिक्षित हुए बिना नहीं रह सकते, क्या ज्ञान होना और उसका गुलाम न होना संभव है? ज्ञान की आंशिक प्रकृति से अवगत होने के नाते, क्या यह संभव है कि मन को ज्ञान में फंसने न दिया जाए ताकि वह पूर्ण कार्रवाई करने में सक्षम हो, जो कि कार्रवाई है जो किसी विचार, विचार पर आधारित नहीं है?

चलो मुझे इसे इस तरह से रखने दें। क्या ज्ञान और जानना में अंतर नहीं है? ज्ञान, निश्चित रूप से, हमेशा समय का होता है, जबकि जानना समय का नहीं होता है। ज्ञान एक स्रोत से, एक संचय से, एक निष्कर्ष से होता है, जबकि जानना एक गति है। एक मन जो लगातार जानने, सीखने की गति में रहता है, उसके पास कोई स्रोत नहीं है जिससे वह जानता हो। क्या मैं इसे और अधिक जटिल बना रहा हूँ?

महोदय, आइए हम दूसरा तरीका आजमाएं। सीखने से हमारा क्या तात्पर्य है? जब आप केवल ज्ञान संचय कर रहे हैं, जानकारी एकत्र कर रहे हैं तो क्या सीखना संभव है? यह एक प्रकार की सीख है, है ना? इंजीनियरिंग के एक छात्र के रूप में, आप गणित इत्यादि का अध्ययन करते हैं; आप सीख रहे हैं, अपने आप को विषय के बारे में सूचित कर रहे हैं। आप उस ज्ञान को व्यावहारिक तरीकों से उपयोग करने के लिए ज्ञान संचय कर रहे हैं। आपका सीखना संचयात्मक है, योगात्मक है।

अब, जब मन केवल कुछ सीख रहा है, जोड़ रहा है, प्राप्त कर रहा है, तो क्या यह सीख रहा है?
या कुछ सीखना बिल्कुल अलग है? मैं जो योगात्मक प्रक्रिया कहता हूं

अब हम कहते हैं कि सीखना बिल्कुल भी सीखना नहीं है। यह महज़ स्मृति की खेती है, जो यांत्रिक हो जाती है; और जो दिमाग मशीन की तरह यंत्रवत काम करता है, वह सीखने में सक्षम नहीं है। एक मशीन कभी भी सीखने में सक्षम नहीं होती, सिवाय योगात्मक अर्थ के। सीखना बिल्कुल अलग चीज़ है, जैसा कि मैं आपको दिखाने की कोशिश करूँगा।

सीखने वाला मन कभी नहीं कहता, "मुझे पता है," क्योंकि ज्ञान हमेशा आंशिक होता है, जबकि सीखना हर समय पूर्ण होता है। सीखने का मतलब एक निश्चित मात्रा में ज्ञान के साथ शुरुआत करना और उसमें और ज्ञान जोड़ना नहीं है। वह बिल्कुल भी सीखना नहीं है; यह पूर्णतः यंत्रवत प्रक्रिया है। मेरे लिए, सीखना बिल्कुल अलग चीज़ है। मैं पल-पल अपने बारे में सीख रहा हूं, और 'मैं असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हूं; यह जीवित है, गतिमान है; इसकी कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है. जब मैं कहता हूं, "मैं स्वयं को जानता हूं," संचित ज्ञान में सीखना समाप्त हो गया है। सीखना कभी संचयी नहीं होता; यह जानने की एक गति है जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत।

महोदय, समस्या यह है: क्या मन के लिए ज्ञान नामक इस यंत्रवत संचय से खुद को मुक्त करना संभव है? और क्या कोई सोचने की प्रक्रिया से इसका पता लगा सकता है? क्या तुम समझ रहे हो? आपको और मुझे एहसास है कि हम संस्कारित हैं। यदि आप कहते हैं, जैसा कि कुछ लोग करते हैं, कि कंडीशनिंग अपरिहार्य है, तो कोई समस्या नहीं है; तुम गुलाम हो, और यही इसका अंत है।

लेकिन अगर आप खुद से पूछना शुरू कर दें कि क्या इस सीमा, इस कंडीशनिंग को तोड़ना बिल्कुल संभव है, तो एक समस्या है; तो आपको सोचने की पूरी प्रक्रिया की जांच करनी होगी, है ना? यदि आप केवल यह कहते हैं, "मुझे अपनी कंडीशनिंग के बारे में पता होना चाहिए; मुझे इसके बारे में सोचना चाहिए, इसे समझने और नष्ट करने के लिए इसका विश्लेषण करना चाहिए," तब आप बल प्रयोग कर रहे हैं। आपकी सोच, आपका विश्लेषण अभी भी आपकी पृष्ठभूमि का परिणाम है, इसलिए अपने विचार के माध्यम से आप स्पष्ट रूप से उस कंडीशनिंग को नहीं तोड़ सकते जिसका यह एक हिस्सा है।

पहले समस्या को देखो, यह मत पूछो कि उत्तर क्या है, समाधान क्या है। तथ्य यह है कि हम संस्कारित हैं, और इस संस्कार को समझने के बारे में सोचा गया सारा विचार हमेशा आंशिक होगा; इसलिए, कभी भी पूर्ण समझ नहीं होती है, और केवल सोचने की पूरी प्रक्रिया की पूर्ण समझ में ही स्वतंत्रता होती है। कठिनाई यह है कि हम हमेशा मन के क्षेत्र के भीतर कार्य कर रहे हैं, जो विचार का साधन है, उचित या अनुचित; और जैसा कि हमने देखा है, विचार हमेशा आंशिक होता है। मुझे उस शब्द को दोहराते हुए खेद है, लेकिन हम सोचते हैं कि यह विचार हमारी समस्याओं का समाधान करेगा, और मुझे आश्चर्य है कि क्या यह होगा।

मेरे लिए, मन एक संपूर्ण चीज़ है। यह बुद्धि है; यह भावनाएँ हैं; यह निरीक्षण करने, भेद करने की क्षमता है; यह विचार का वह केंद्र है जो कहता है, "मैं करूंगा" और "मैं नहीं करूंगा" यह इच्छा है; यह पूर्णता है. यह संपूर्ण चीज़ है, भावनात्मक से अलग कोई बौद्धिक चीज़ नहीं। हम अपनी समस्याओं को हल करने के साधन के रूप में विचार का प्रयोग करते हैं। लेकिन विचार हमारी किसी भी समस्या को हल करने का साधन नहीं है क्योंकि विचार स्मृति की प्रतिक्रिया है, और स्मृति अनुभव के रूप में संचित ज्ञान का परिणाम है। यह समझकर मन क्या करे? क्या आप समस्या समझते हैं?

मैं महत्वाकांक्षा, सत्ता, पद, प्रतिष्ठा की इच्छा से भरा हुआ हूं, और मुझे यह भी लगता है कि मुझे पता होना चाहिए कि प्यार क्या है; इसलिए मैं विरोधाभास की स्थिति में हूं. जो व्यक्ति सत्ता, पद, प्रतिष्ठा के पीछे है, उसके पास कोई प्रेम नहीं है, भले ही वह इसके बारे में बात करे; और दोनों का कोई भी एकीकरण असंभव है, भले ही वह इसकी कितनी ही इच्छा क्यों न करे। प्रेम और शक्ति एक साथ नहीं मिल सकते। तो क्या करने का मन है?

हम देखते हैं कि विचार, केवल और अधिक विरोधाभास, और अधिक दुख ही पैदा करेगा। तो, क्या मन इस समस्या पर विचार किए बिना इसके बारे में जागरूक हो सकता है? क्या आप समझते हैं, या मैं ग्रीक बोल रहा हूँ?

महोदय, मुझे इसे दूसरे तरीके से कहने दीजिए। क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है - मुझे यकीन है कि ऐसा हुआ है - कि आपको अचानक कुछ महसूस हुआ हो, और उस एहसास के क्षण में आपको कोई समस्या नहीं हुई हो? जिस क्षण आपको समस्या का आभास हुआ, समस्या पूरी तरह समाप्त हो गई। क्या आप समझते हैं श्रीमान? आपके पास एक समस्या है, और आप इसके बारे में सोचते हैं, इसके साथ बहस करते हैं, इस पर चिंता करते हैं; आप इसे समझने के लिए अपने विचार की सीमा के भीतर हर उपाय का प्रयोग करते हैं। अंततः आप कहते हैं, "मैं और कुछ नहीं कर सकता।" तुम्हें समझने में मदद करने वाला कोई नहीं है, कोई गुरु नहीं, कोई किताब नहीं। आप समस्या से बचे हुए हैं, और कोई रास्ता नहीं है। अपनी क्षमता की पूरी सीमा तक समस्या की जांच करने के बाद, आप इसे अकेला छोड़ देते हैं। आपका मन अब चिंतित नहीं है, अब समस्या पर ध्यान नहीं दे रहा है, अब यह नहीं कह रहा है, "मुझे उत्तर खोजना होगा" तो यह शांत हो जाता है, है न? और उस शांति में तुम्हें उत्तर मिल जाता है। क्या आपके साथ कभी-कभी ऐसा नहीं हुआ है? यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है. यह महान गणितज्ञों, वैज्ञानिकों के साथ होता है और लोग रोजमर्रा की जिंदगी में कभी-कभी इसका अनुभव करते हैं। जिसका मतलब क्या है? मन ने सोचने की अपनी क्षमता का पूरा उपयोग किया है, और बिना कोई उत्तर पाए सभी विचारों के किनारे पर आ गया है; इसलिए, यह शांत हो जाता है - थकावट से नहीं, थकावट से नहीं, यह कहकर नहीं, "मैं शांत रहूंगा और इस तरह उत्तर ढूंढूंगा।" उत्तर खोजने के लिए पहले से ही हर संभव प्रयास करने के बाद, मन अनायास ही शांत हो जाता है। बिना किसी विकल्प के, बिना किसी मांग के एक जागरूकता है, एक ऐसी जागरूकता जिसमें कोई चिंता नहीं है; और उस मनःस्थिति में

धारणा है. यह धारणा ही हमारी सभी समस्याओं का समाधान करेगी।

फिर से, मैं समस्या को अलग ढंग से रखता हूँ। जब हम मन से चिंतित होते हैं, तो हमें चेतना के बारे में पूछताछ करनी होगी, है न, क्योंकि मन ही चेतना है। मन न केवल बुद्धि, भावना, इच्छा, हताशा, तृप्ति, निराशा है, बल्कि चेतना की समग्रता भी है, जिसमें अचेतन भी शामिल है। हममें से अधिकांश लोग सचेतन स्तर पर सतही तौर पर कार्य करते हैं। जब आप दिन-ब-दिन 10 से 5 बजे तक, या जो भी हो, साल-दर-साल कार्यालय जाते हैं, तो बोरियत की भयानक भावना के साथ, आप स्वचालित रूप से, एक मशीन की तरह, चेतना की ऊपरी परतों में काम कर रहे होते हैं, क्या आप हैं नहीं? आपने कोई व्यापार या पेशा सीखा है, और आपका चेतन मन उस स्तर पर कार्य कर रहा है, जबकि नीचे अचेतन मन है।

चेतना एक गहरी, चौड़ी, तेजी से बहने वाली नदी की तरह है। सतह पर बहुत सी चीजें घटित हो रही हैं, और बहुत सारे प्रतिबिंब हैं, लेकिन जाहिर तौर पर यह पूरी नदी नहीं है। नदी एक समग्र चीज़ है; इसमें वह भी शामिल है जो नीचे है और जो ऊपर है वह भी शामिल है। चेतना के साथ भी ऐसा ही है, लेकिन हममें से बहुत कम लोग जानते हैं कि नीचे क्या हो रहा है। हममें से अधिकांश लोग संतुष्ट हैं यदि हम कुछ सुरक्षा और सतही तौर पर थोड़ी सी खुशी के साथ काफी अच्छी तरह से रह सकते हैं। जब तक हमारे पास थोड़ा भोजन और आश्रय, थोड़ी पूजा, थोड़े देवता और थोड़ी खुशियाँ हैं, तब तक सतह पर हमारा खेलना हमारे लिए काफी अच्छा है। क्योंकि हम इतनी आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं, हम कभी गहराई में नहीं जाते; और शायद शीर्ष पर जो कुछ हो रहा है उसकी तुलना में गहराई अपनी मांगों में अधिक मजबूत, अधिक शक्तिशाली और अधिक जरूरी है। इसलिए सतह पर जो चल रहा है और नीचे जो चल रहा है, उसके बीच विरोधाभास है। हममें से अधिकांश को इस विरोधाभास का एहसास तभी होता है जब कोई संकट आता है क्योंकि सतही दिमाग ने खुद को पर्यावरण के साथ पूरी तरह से समायोजित कर लिया है। सतही दिमाग ने नई पश्चिमी संस्कृति, अपने सांसदवाद और उस सारे व्यवसाय के साथ हासिल कर ली है, लेकिन नीचे अभी भी प्राचीन अवशेष, नस्लीय प्रवृत्ति, मूक प्रेरणाएं हैं जो लगातार मांग कर रही हैं, आग्रह कर रही हैं। ये बातें इतनी गहरी हैं कि हम आम तौर पर इन्हें महसूस नहीं कर पाते हैं, और हम इनके बारे में पूछताछ नहीं करते हैं क्योंकि हमारे पास समय नहीं है। उनके संकेत अक्सर चेतन मन में सपनों के रूप में प्रक्षेपित होते हैं - जिनके बारे में मैं फ़िलहाल नहीं जा रहा हूँ।

तो, मन ही वह संपूर्ण चीज़ है, लेकिन हममें से अधिकांश सतह पर कार्य करने से अधिक कुछ नहीं करने में संतुष्ट हैं। बड़े संकट के क्षणों में ही हमें अपने भीतर के इस गहरे अंतर्विरोध का एहसास होता है, और तब हम इससे बचना चाहते हैं, इसलिए हम मंदिर जाते हैं, किसी गुरु के पास जाते हैं, या रेडियो चालू करते हैं,

या कुछ और करो. सभी पलायन, चाहे ईश्वर के माध्यम से या रेडियो के माध्यम से, मूल रूप से एक जैसे हैं।

तब, चेतना में एक विरोधाभास है; और उस विरोधाभास को हल करने या उससे बचने का कोई भी प्रयास चेतना पर एक और सीमा लगाता है।

महोदय, मैं हर समय एक ही चीज़ के बारे में अलग-अलग तरीकों से बात कर रहा हूं। हम मन से चिंतित हैं, और कैसे मन, आंशिक रूप से ज्ञान में शिक्षित होने के कारण, समग्र के बारे में जागरूक होता है, क्योंकि केवल जब मन समग्र के बारे में जागरूक होता है, तभी समझ आती है कि समस्या क्या है

समाप्त हो जाता है.

क्या मैं इसे पर्याप्त रूप से स्पष्ट रूप से समझा रहा हूं, ताकि हम इसके बिना आगे बढ़ सकें इस बिंदु पर और अधिक परिश्रम करना?

सारी सोच सीमित है क्योंकि सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है - स्मृति अनुभव के रूप में, स्मृति ज्ञान के संचय के रूप में - और यह यंत्रवत है। यंत्रवत सोच रखने से हमारी समस्याएँ हल नहीं होंगी।

इसका मतलब ये नहीं कि हमें सोचना बंद कर देना चाहिए. लेकिन एक बिल्कुल नया कारक आवश्यक है। हमने विभिन्न तरीकों और प्रणालियों को आजमाया है, विभिन्न तरीकों से - कांग्रेस का तरीका, समाजवादी तरीका, धार्मिक तरीका - और वे सभी विफल रहे हैं।

मनुष्य अभी भी दुःख में है; वह अभी भी टटोल रहा है, निराशा की यातना में तलाश कर रहा है, और उसके दुःख का कोई अंत नहीं दिख रहा है। तो अवश्य कोई बिल्कुल नया कारक होगा जो मन द्वारा पहचाना न जा सके। आप समझे?

आप नहीं समझते, श्रीमान, इसलिए कृपया अपना सिर न हिलाएं।

निश्चित रूप से, मन पहचानने का साधन है, और जो कुछ भी मन पहचानता है वह पहले से ही ज्ञात है; इसलिए, यह नया नहीं है. यह अभी भी विचार, स्मृति के क्षेत्र में है, और इसलिए यंत्रवत है। तो मन ऐसी स्थिति में होना चाहिए जहां वह पहचानने की प्रक्रिया के बिना ही अनुभव कर सके।

अब, वह अवस्था क्या है? इसका विचार से कोई लेना-देना नहीं है; इसका मान्यता से कोई लेना-देना नहीं है. मान्यता और विचार यंत्रवत हैं। अगर मैं इसे इस तरह से कहूं तो यह धारणा की एक अवस्था है और कुछ नहीं-यानी अस्तित्व की एक अवस्था।

क्या मैं इसे केवल और अधिक जटिल बना रहा हूँ?

देखिए, श्रीमान, हममें से अधिकांश लोग बहुत ही उथले दिमाग वाले छोटे लोग हैं, और एक संकीर्ण, उथले दिमाग की सोच केवल और अधिक दुख का कारण बन सकती है। उथला दिमाग खुद को गहरा नहीं बना सकता; यह हमेशा उथला, क्षुद्र, ईर्ष्यालु होगा। वह जो कर सकती है वह यह है कि इस तथ्य को महसूस करें कि यह उथला है, और इसे बदलने का प्रयास न करें। मन देखता है कि वह संस्कारित है और उसे उस संस्कार को बदलने की कोई इच्छा नहीं है क्योंकि वह समझता है कि ऐसा करने की कोई बाध्यता है

परिवर्तन ज्ञान का परिणाम है, जो आंशिक है; इसलिए, यह धारणा की स्थिति में है। यह जो है उसे समझ रहा है। लेकिन आम तौर पर क्या होता है? ईर्ष्यालु होने के कारण, मन ईर्ष्या से छुटकारा पाने के लिए विचार करता है, जिससे गैर-ईर्ष्या के रूप में विपरीत उत्पन्न होता है, लेकिन यह अभी भी विचार के क्षेत्र में है। अब, यदि मन ईर्ष्या की स्थिति को उसकी निंदा या स्वीकार किए बिना, और परिवर्तन की इच्छा का परिचय दिए बिना अनुभव करता है, तो वह धारणा की स्थिति में है; और वही धारणा एक नई गति, एक नया तत्व, अस्तित्व का एक बिल्कुल अलग गुण लाती है।

आप देखिए, श्रीमान, शब्द, स्पष्टीकरण और प्रतीक एक चीज हैं, और अस्तित्व पूरी तरह से अलग चीज है। यहां हमारा संबंध शब्दों से नहीं है, हमारा संबंध उस अस्तित्व से है - जो हम वास्तव में हैं, न कि खुद को आध्यात्मिक संस्थाओं, आत्मा और उस सभी बकवास के रूप में सपने देखना, जो अभी भी विचार के क्षेत्र में है, और इसलिए आंशिक है। जो मायने रखता है वह यह है कि आप क्या हैं - ईर्ष्यालु - और इसे पूरी तरह से समझना, और आप इसे पूरी तरह से केवल तभी समझ सकते हैं जब विचार की कोई गति नहीं होती है। मन विचार की गति है - और यह वह अवस्था भी है जिसमें विचार की गति के बिना, पूर्ण बोध होता है। धारणा की वह स्थिति ही हमारे सोचने के तरीकों में आमूल-चूल परिवर्तन ला सकती है और तब सोच यंत्रवत नहीं रहेगी।

तो, निश्चित रूप से, हमारी चिंता मन की इस पूरी प्रक्रिया के प्रति, उसकी सीमाओं के प्रति जागरूक रहने की है, और उन सीमाओं को हटाने का प्रयास न करने की है - जो है उसे पूरी तरह से देखने के लिए । आप पूरी तरह से नहीं देख सकते कि क्या है जब तक कि सारी सोच स्थगित न हो जाए। जागरूकता की उस अवस्था में कोई विकल्प नहीं होता और केवल वही अवस्था हमारी समस्याओं का समाधान कर सकती है।

17 फ़रवरी 1960

तीसरी वार्ता नई दिल्ली में

यदि संभव हो तो मैं न केवल वर्तमान में, बल्कि भविष्य में भी "क्या करना चाहिए" के बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा, और आपके साथ कार्रवाई के संपूर्ण महत्व पर विचार करना चाहूँगा। लेकिन इसमें जाने से पहले, मुझे लगता है कि हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि मैं आपको किसी विशेष प्रकार की कार्रवाई करने, ऐसा करने या वैसा करने के लिए मनाने की कोशिश नहीं कर रहा हूं; सभी अनुनय के लिए, जो प्रचार है, चाहे इसे अच्छा या बुरा माना जाए, अनिवार्य रूप से विनाशकारी है। तो आइए हम यह स्पष्ट रूप से ध्यान में रखें कि आप और मैं मिलकर समस्या पर विचार कर रहे हैं, और हमें किसी विशेष प्रकार की कार्रवाई से कोई सरोकार नहीं है।

या तो कल क्या करना है या आज क्या करना है; लेकिन अगर हम कार्रवाई के संपूर्ण निहितार्थ को समझ सकें, तो शायद हम विवरण पर काम कर पाएंगे।

क्रिया के पूर्ण महत्व को व्यापक रूप से समझे बिना, केवल क्रिया के एक विशेष रूप के बारे में चिंतित होना मुझे बहुत विनाशकारी लगता है। निश्चित रूप से, यदि हम केवल भाग के बारे में चिंतित हैं और संपूर्ण के बारे में नहीं, तो सभी कार्य विनाशकारी कार्य हैं। लेकिन अगर हम कार्रवाई को एक संपूर्ण चीज़ के रूप में समझ सकते हैं, अगर हम इसमें अपना रास्ता महसूस कर सकते हैं और इसके महत्व को पकड़ सकते हैं, तो कुल कार्रवाई की वह समझ विशेष रूप से सही कार्रवाई लाएगी। यह एक पेड़ को देखने जैसा है। पेड़ सिर्फ पत्ती, शाखा, फूल, फल, तना या जड़ नहीं है। यह पूरी बात है. किसी पेड़ की सुंदरता को महसूस करने का मतलब उसकी संपूर्णता से अवगत होना है - उसका असाधारण आकार, उसकी छाया की गहराई, हवा में उसके पत्तों का फड़फड़ाना। जब तक हमें संपूर्ण वृक्ष की अनुभूति नहीं होगी, केवल एक पत्ते को देखने का अर्थ बहुत कम होगा। लेकिन अगर हमें पूरे पेड़ की अनुभूति है, तो हर पत्ती, हर टहनी का अर्थ है, और हम इसके प्रति संवेदनशील हैं। आख़िरकार, किसी चीज़ की सुंदरता के प्रति संवेदनशील होने का मतलब उसकी समग्रता को समझना है। जो मन एक भाग के रूप में सोचता है वह कभी भी पूर्ण का अनुभव नहीं कर सकता। संपूर्ण में अंश समाहित है, लेकिन अंश कभी भी संपूर्ण, समग्र नहीं बनेगा।

उसी तरह, आइए देखें कि क्या हम कर्मठतापूर्वक और विनम्रता की भावना के साथ इस पूरे प्रश्न पर विचार कर सकते हैं कि कार्रवाई क्या है। कार्रवाई इतना संघर्ष क्यों पैदा करती है? कार्रवाई विरोधाभास की स्थिति क्यों लाती है? और कार्रवाई की समग्रता क्या है? यदि हम संवेदनशीलता और झिझक के साथ समग्र क्रिया की प्रकृति को समझना शुरू कर सकें, तो शायद हम विशेष तक पहुंच सकेंगे।

लेकिन हममें से बहुत कम लोग संवेदनशील हैं - सूर्यास्त के प्रति संवेदनशील, सड़क पर एक बच्चे के प्रति संवेदनशील, चेहरे की सुंदरता के प्रति संवेदनशील, किसी विचार के प्रति संवेदनशील, शोर के प्रति संवेदनशील, जीवन की हर चीज़ के प्रति संवेदनशील। निश्चित रूप से, यह केवल एक विनम्र मन है, एक ऐसा मन जो इनकार या स्वीकार नहीं करता है - यह केवल ऐसा मन है जो समग्र के प्रति संवेदनशील है।
यदि मन में विनम्रता नहीं है तो वह संवेदनशील नहीं है, और विनम्रता के बिना कोई जांच, अन्वेषण, समझ नहीं है। लेकिन विनम्रता कोई विकसित करने वाली चीज़ नहीं है. संवर्धित सद्गुण भयावह है; यह अब कोई गुण नहीं है. तो, अगर हम विनम्रता की उस स्वाभाविक भावना के साथ, जिसमें संवेदनशीलता है, कार्रवाई के इस पूरे प्रश्न पर विचार कर सकें, तो शायद बहुत कुछ पता चल जाएगा।

अब हम अनजान हैं.

आप देखिए, हममें से अधिकांश के साथ कठिनाई यह है कि हम एक परिभाषा, एक निष्कर्ष, एक उत्तर चाहते हैं; हमें अंत नजर आ रहा है। मुझे ऐसा रवैया लगता है

पूछताछ को रोकता है. और कर्म की जांच निःसंदेह आवश्यक है, क्योंकि सारा जीवन कर्म है। कार्रवाई विभागीय या आंशिक नहीं है; यह पूरी बात है.
क्रिया हर चीज़ से हमारा रिश्ता है: लोगों से, प्रकृति से, विचारों से, चीज़ों से। कर्म के बिना जीवन नहीं हो सकता। भले ही आप किसी मठ से सेवानिवृत्त हो जाएं, या संन्यासी बन जाएं, या हिमालय में संन्यासी बन जाएं, फिर भी आप कार्य में हैं क्योंकि आप अभी भी रिश्ते में हैं।

और कार्रवाई, निश्चित रूप से, सही और गलत का मामला नहीं है। जब कार्य आंशिक होता है, समग्र नहीं, तभी सही और गलत होता है।

महोदय, इसे न तो स्वीकार करें और न ही नकारें। हम इसमें जा रहे हैं.

तथाकथित सही कार्य समाज की प्रतिष्ठा से संबंधित है, और समाज हमेशा भ्रष्टाचार की स्थिति में रहता है। जिसे यह अच्छा मानता है वह आंशिक है; और जिसे वह बुरा मानता है वह भी आंशिक है।

मुझे नहीं पता कि आपने कभी ऊर्जा के बारे में सोचा है या नहीं। सारा जीवन ऊर्जा है, है ना? सोच, भावना, भूख, वासना, महत्वाकांक्षा, निराशा और दुःख की छाया से पूरा करने की इच्छा - यह सब ऊर्जा की प्रक्रिया है। एक केंद्र से ऊर्जा आती है, और ऐसी ऊर्जा जिसका कोई केंद्र नहीं होता। जिसे हम क्रिया कहते हैं वह हमेशा एक केंद्र से विस्तारित होने वाली ऊर्जा के रूप में होती है - केंद्र विचारों, ज्ञान, अनुभवों, यादों, निष्कर्षों, परिभाषाओं और कार्रवाई के पैटर्न का एक बंडल होता है; "मैं करूंगा" और "मैं नहीं करूंगा।" हममें से अधिकांश के लिए, कार्रवाई उस केंद्र से होती है - जो हमारी बुनियादी समस्याओं में से एक है।

और ऐसा क्यों है कि, चाहे हम कितने भी सक्रिय क्यों न हों - योजना बनाना, लिखना, जांच करना, अन्वेषण करना, नए विचार बनाना, नए आविष्कार करना - मन लगातार गिरावट की स्थिति में है? और यदि मन गिरावट की स्थिति में है, तो उस स्थिति से उत्पन्न होने वाला कोई भी कार्य अनिवार्य रूप से विनाशकारी होता है। तो मन हमेशा गिरावट की इस लहर में क्यों फंसा रहता है?

मुझे नहीं पता कि क्या आपने इस समस्या के बारे में सोचा है, या क्या आपने अपने मन की जांच की है। जब आप बहुत युवा होते हैं, जीवन शक्ति, उत्सुकता, मासूमियत से भरपूर होते हैं, तो हर चीज में आनंद होता है; सभी सामान्य चीज़ों का अर्थ होता है। लेकिन जैसे-जैसे आप बड़े होते हैं आपका दिमाग सुस्त हो जाता है क्योंकि उसे समाज के संदर्भ में जीवन को स्वीकार करने और खुद को उसी पैटर्न में समायोजित करने के लिए शिक्षित किया गया है। ये तो हम सब जानते हैं. हममें से बहुत कम लोग कभी किसी पेड़ या शाम के आकाश को चुपचाप देखने के लिए रुकते हैं। हमारा दिमाग हर समय बकबक करता रहता है, बिगड़ता रहता है।

क्यों? वहाँ कोई मासूमियत क्यों नहीं है - एक चतुर दिमाग की विकसित मासूमियत नहीं जो निर्दोष होना चाहता है, बल्कि मासूमियत की वह स्थिति है जिसमें कोई इनकार या स्वीकृति नहीं है, और जिसमें मन सिर्फ वही देखता है जो है ? मासूमियत की इस अवस्था में गतिमान, असीमित ऊर्जा होती है। लेकिन हम समाज की महत्वाकांक्षाओं, निराशाओं, खुशियों, दुखों के साथ बूढ़े हो जाते हैं; हमारा

मन अधिकाधिक सुस्त हो जाता है, और जब बुढ़ापा हम पर आता है, तो हम नष्ट हो जाते हैं। क्यों?

अब, हम उत्तर खोजने के लिए यह नहीं पूछ रहे हैं कि क्यों, बल्कि जब हम समस्या की जांच करेंगे तो हमें सच्चाई का पता चल जाएगा। समस्या कभी भी उत्तर से अलग नहीं होती; समस्या ही उत्तर है. यदि मैं समस्या की जांच करता हूं, यदि मैं समस्या के प्रति सहानुभूतिपूर्ण हूं, संवेदनशील हूं, यदि मैं इसे देखता हूं, इसकी खोज करता हूं, तो मैं इसे समझना शुरू कर देता हूं; और समस्या को समझना ही समस्या का समाधान है। लेकिन जब मन उत्तर ढूंढ़ता है, तो वह समस्या से दूर चला जाता है—जो कि हममें से अधिकांश लोग करते हैं। तब इसका उत्तर केवल समस्या से पलायन है, और इसलिए समस्या हमारा पीछा करती है। इसलिए, जब हम पूछते हैं कि क्यों, तो यह केवल समस्या की जांच करने के लिए होता है, जिसमें मन का अध्ययन करना होता है

आंदोलन।

ऐसा क्यों है कि हममें से अधिकांश लोगों का दिमाग लगातार क्षय की स्थिति में रहता है?
कोई भी बढ़िया मशीन जो अच्छी तरह से तेल से सना हुआ हो और अच्छी तरह से ट्यून किया गया हो, न्यूनतम घर्षण के साथ काम करता है और जल्दी खराब नहीं होता है। लेकिन जहां घर्षण है, जहां संघर्ष है, संघर्ष है, वहां गिरावट है। संघर्ष गिरावट है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि हममें से अधिकांश विरोधाभास की स्थिति में हैं, जो संघर्ष है, कि हम हमेशा गिरावट की लहर में फंसे रहते हैं। और क्या इस संघर्ष, इस गिरावट के बिना जीना संभव है? यदि आप कहते हैं कि संघर्ष स्वाभाविक है, मानवीय है, और इसलिए अपरिहार्य है, तो कोई समस्या नहीं है; आप संघर्ष स्वीकार करते हैं और बिगड़ते चले जाते हैं। लेकिन जैसे ही आप इस पर सवाल उठाते हैं, एक समस्या सामने आती है जिसके बारे में आप पूछताछ करना शुरू कर देते हैं।

जैसा कि हमने देखा, सारा जीवन क्रिया है; जीना भी कर्म है, सोचना भी कर्म है और न सोचना भी कर्म है। और हम यह भी देखते हैं कि केंद्र से कोई भी कार्रवाई संघर्ष पैदा करती है। जब मन एक केंद्र से बंधा होता है, तो स्वाभाविक रूप से वह स्वतंत्र नहीं होता है; वह केवल उस केंद्र की सीमा के भीतर ही गति कर सकता है।

महोदय, इन वार्ताओं का कार्य आपको नए विचार एकत्र करने में सक्षम बनाना नहीं है - क्योंकि मुझे नहीं लगता कि नए विचार कभी भी मनुष्य को मौलिक रूप से बदलते हैं - बल्कि आपके अपने दिमाग का अवलोकन करने के महत्व को इंगित करना है। यदि आप जिस तरह से सोच रहे हैं, जिस तरह से आप महसूस कर रहे हैं, अपने पूरे अस्तित्व के तरीके के बारे में, चाहे वह कुछ भी हो, लगातार जागरूक रहते हैं, तो वही अवलोकन पर्याप्त है। क्या आप जानते हो मेरे कहने का क्या मतलब है? यदि आप किसी चीज़ को समग्रता से देखते और समझते हैं, तो कोई वास्तविक समस्या नहीं है। यह एक मानचित्र का अध्ययन करने जैसा है। एक बार जब आप जान जाते हैं कि सभी सड़कें कहां हैं और किसी विशेष गांव या कस्बे की दूरी क्या है, तो वहां पहुंचना एक गौण समस्या है। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि आप मानचित्र को अवश्य देखें, उसका ध्यानपूर्वक अध्ययन करें। उसी तरह हमें उस पर विचार करना चाहिए जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं क्योंकि जो हो रहा है उसकी बौद्धिक स्वीकृति या खंडन मात्र है

कहा गया तथ्य इस तथ्य को नहीं बदलता है कि, हम में से अधिकांश के लिए, कार्रवाई उस केंद्र से उत्पन्न होती है जिसके प्रति हम प्रतिबद्ध हैं और इसलिए यह चिरस्थायी विरोधाभास, संघर्ष का उत्पादक है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या हमने कभी इस पर विचार किया है कि अधिकांश मनुष्य किसी चीज़ से क्यों जुड़ना चाहते हैं, वे खुद को किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध क्यों करना चाहते हैं, या किसी चीज़ का हिस्सा क्यों बनना चाहते हैं? हममें से अधिकांश के लिए किसी संगठन या समूह से संबंधित होना, किसी विशेष दर्शन या कार्य पद्धति का पालन करना बाध्यता है।
क्या आपने कभी अपने अंदर की इस मजबूरी की जांच की है? क्या आप इस बात से बिल्कुल भी परिचित हैं कि इसका अस्तित्व क्यों है, आपको किसी चीज़ के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने की इच्छा क्यों है?
उदाहरण के लिए, आप सभी स्वयं को भारतीय मानते हैं और आप उस विचार के प्रति प्रतिबद्ध हैं। क्यों? या आप कहते हैं कि आप ईसाई हैं, बौद्ध हैं, मुस्लिम हैं, कम्युनिस्ट हैं, या कुछ और हैं। क्यों? किसी चीज़ के प्रति, किसी दर्शन के प्रति, किसी अनुशासन के प्रति, किसी विश्वास के प्रति प्रतिबद्ध होने का आग्रह क्यों है? क्या यह सुरक्षित होने की इच्छा पर आधारित नहीं है? कृपया इसे अस्वीकार या स्वीकार न करें; बस इसे देखो. किसी चीज़ से संबंधित होना, किसी चीज़ के लिए खुद को प्रतिबद्ध करना आपको एक ऐसी गतिविधि देता है जिसमें आप सुरक्षित, संरक्षित महसूस करते हैं, क्योंकि अन्य लोग भी उस गतिविधि में भाग ले रहे हैं; यह आपको महसूस कराता है कि आप अलगाव की स्थिति में नहीं हैं। तो यह उस केंद्र का हिस्सा है जहां से आप अभिनय कर रहे हैं।

जैसा कि यदि हम निरीक्षण करें तो हम देख सकते हैं, हमारी सारी गतिविधि एक केंद्र से उत्पन्न होती है। जैसा कि मैंने अभी बताया, कोई व्यक्ति किसी समूह, किसी उद्देश्य, किसी विश्वास या विचारधारा के प्रति स्वयं को समर्पित करते हुए एक केंद्र से कार्य कर रहा है; और क्रिया का केंद्र भी है जो ज्ञान है - अनुभव के रूप में ज्ञान, जो हुआ है उसका ज्ञान और कोई क्या सोचता है कि क्या होगा।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आप इसका पालन कर रहे हैं, न केवल शब्दों का, बल्कि क्या आप वास्तव में देख रहे हैं कि आपने खुद को किसी चीज़ के लिए प्रतिबद्ध किया है, और उस प्रतिबद्धता से आपके सभी कार्य उत्पन्न होते हैं? वह प्रतिबद्धता हमेशा विरोधाभास, संघर्ष पैदा करती है, क्योंकि आप ऊर्जा को सीमित कर रहे हैं। जीवन रिश्ता है, और रिश्ता कर्म है। कोई भी इंसान ऐसा नहीं है जो अलग-थलग हो. यदि वह अलग-थलग है, तो वह मर चुका है; वह अपने ही विचारों के किले में पंगु हो गया है। चूँकि सभी रिश्ते क्रिया हैं, और क्रिया जीवन की गति है, तो कार्य करने के लिए एक केंद्र का होना क्यों आवश्यक है? क्या आप अनुसरण करते हैं, श्रीमान, मेरा क्या मतलब है? मुझे लगता है कि इसे समझना ज़रूरी है.

हम आम तौर पर एक विचार से कार्य करते हैं, है ना? आइए हम इसकी थोड़ी जांच करें।
हम एक विचार से कार्य करते हैं। पहले विचार है, और फिर उस विचार के अनुरूप कार्रवाई; या यों कहें कि, विचार के अनुरूप कार्रवाई का प्रयास किया जाता है, या उनके बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया जाता है - विचार एक प्रतिक्रिया है, अनुभव, ज्ञान, परंपरा आदि की पृष्ठभूमि से एक प्रतिक्रिया है।

अब, हम खुद से पूछ रहे हैं: क्या बिना किसी विचार के कार्य करना संभव है? कृपया, यह काफी पागलपन भरा लगता है - लेकिन मुझे बिल्कुल यकीन नहीं है कि एक विचार के साथ काम करने वाला व्यक्ति पागल नहीं है क्योंकि वह संघर्ष पैदा करता है, और जो संघर्ष में है वह अपना विनाश लाता है। जब आपके पास कोई विचार होता है जिस पर आप कार्य कर रहे होते हैं, तो विरोधाभास होता है क्योंकि विचार कार्य से अलग होता है। आपका मन द्वंद्व की स्थिति में है, और द्वंद्व में पड़ा हुआ मन बिगड़ने की प्रक्रिया में है। और फिर भी हममें से अधिकांश लोग अपना पूरा जीवन किसी विचार के अनुरूप कार्य करने में बिता देते हैं, जिसे आदर्श कहा जाता है।

इसलिए, यदि आप इसकी बारीकी से जांच करेंगे, तो आप देखेंगे कि आदर्श गिरावट का एक कारक है - जिसे आप में से कोई भी देखने को तैयार नहीं है क्योंकि आपको आदर्श को स्वीकार करने के लिए बचपन से प्रशिक्षित किया गया है। लेकिन केवल आदर्श को नकारना अभी भी विपरीत के क्षेत्र में है, और वह भी एक विचार से उत्पन्न होने वाली कार्रवाई है।

मुझे नहीं पता कि आप इसका अनुसरण कर रहे हैं या नहीं. निश्चित रूप से, एक मन जो किसी आदर्श का अनुसरण कर रहा है, चाहे वह कितना ही महान या हास्यास्पद क्यों न हो, वास्तव में वह अपने स्वयं के प्रक्षेपण का अनुसरण कर रहा है। ऐसा मन स्वयं के साथ विरोधाभास में है, और स्वयं के साथ विरोधाभास में रहने वाला मन मौलिक रूप से गिरावट की स्थिति में है।

अब, क्या आप इस तथ्य को बिल्कुल निष्पक्षता से देख सकते हैं? क्या आप इस सत्य को समझ सकते हैं कि एक आत्म-विरोधाभासी मन, द्वंद्व में फंसा हुआ मन, गिरावट की स्थिति में है? यह स्पष्ट रूप से एक तथ्य है, हालाँकि आप इसका विभिन्न तरीकों से अनुवाद या व्याख्या कर सकते हैं। और क्या मन, जिसे किसी आदर्श को स्वीकार करने और उसके करीब पहुंचने के लिए प्रशिक्षित किया गया है - जो संघर्ष, विरोधाभास पैदा करता है - देख सकता है कि वह गिरावट की स्थिति में है? क्या आप उस तथ्य को देख सकते हैं और उसकी सच्चाई को समझ सकते हैं?

निश्चित रूप से, सभी संघर्ष, किसी भी स्तर पर, किसी भी रूप में, विनाशकारी होते हैं, चाहे वह लोगों के बीच संघर्ष हो, इच्छाओं के बीच या विचारों के बीच। और यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि मन, जो संघर्ष की आदत में विकसित हो गया है, को इस सत्य को देखना चाहिए क्योंकि मुक्ति कारक जो सत्य है उसकी धारणा है, न कि जो सत्य है उसका अभ्यास करना। सत्य को समझना एक बात है, और सत्य का अभ्यास करना दूसरी बात है। जो सत्य है उसका अभ्यास कभी भी मन को गिरावट से मुक्त नहीं करेगा क्योंकि ऐसा अभ्यास एक यांत्रिक प्रक्रिया है जिसमें कार्रवाई खुद को एक विचार के करीब लाती है - जो संघर्ष का मूल कारण है। लेकिन अगर आप इस सच्चाई को समझते हैं कि किसी भी स्तर पर सभी संघर्ष विनाशकारी हैं, तो एक बिल्कुल अलग प्रक्रिया हो रही है; तब कोई केंद्र नहीं है जहां से आप किसी विचार के अनुसार कार्य कर रहे हों।

मुझे नहीं पता कि हम मिल रहे हैं या नहीं. मुझे लगता है कि इस मामले पर आपके और मेरे लिए एक-दूसरे से बातचीत करना और इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है। हमारा

शिक्षा, हमारी नैतिकता, हमारा गुण, हमारी ईश्वर की खोज, और बाकी सब, प्रयास, अनुशासन, नियंत्रण, अधीनता पर आधारित है, जो स्वयं को यातना देने की एक प्रक्रिया है; और एक मन जो प्रताड़ित है, अनुशासन से विकृत है, होने या बनने के प्रयास से भ्रष्ट है, वह उस विशाल ऊर्जा को प्राप्त या समझ नहीं सकता है जो प्रयास के बिना है, जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है।

इसलिए हममें से प्रत्येक के लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि सत्य क्या है। और किसी चीज़ की सच्चाई को समझने का क्या मतलब है? मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी कोई चीज़ बिना नाम बताए देखी है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी किसी पक्षी को बिना यह कहे देखा है कि यह तोता है या गौरैया। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी किसी चेहरे को बिना यह कहे देखा है कि यह आपकी पत्नी है, या आपका दोस्त है, या आपका चाचा है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी अपने आप को किसी गुण का श्रेय दिए बिना, यह कहे बिना देखा है, "मैं आईसीएस में हूं, एक बड़ा आदमी हूं," या "मैं एक छोटा आदमी हूं, और मुझे कुछ और होना चाहिए।"

निश्चित रूप से, सौंदर्य और सौंदर्य की अनुभूति मन की वह स्थिति है जिसमें केंद्र का पूर्ण अभाव या त्याग होता है। जब आप आकाश के सामने एक खूबसूरत पहाड़ को उसकी पूरी भव्यता में देखते हैं, तो एक पल के लिए केंद्र दूर चला जाता है, और आप किसी जबरदस्त, शानदार चीज़ के आमने-सामने होते हैं, जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। उस अवस्था में जो सुंदर है उसकी व्यापक सराहना होती है। यह धारणा की एक अवस्था है जिसमें सभी अर्थ, सभी गुण, सब कुछ है। मन पूरी तरह से अनुभव करता है, और यही मुक्ति है - यही बुद्धि का सार है।

लेकिन मन पूरी तरह से यह नहीं समझ सकता कि या तो स्वीकृति है या इनकार, या तो निंदा या पहचान। मैं जो कह रहा हूं उसे सुनें, न केवल मौखिक रूप से, बल्कि इसे अपना दिल दें ताकि आप अपने पूरे अस्तित्व के साथ सुन रहे हों, केवल तभी आप उस अर्थ में धारणा के महत्व को समझ पाएंगे जिसमें मैं शब्द का उपयोग कर रहा हूं। वह मन जिसने खुद को व्यवहार के किसी पैटर्न, किसी राजनीतिक दल, किसी देश, किसी परंपरा के प्रति प्रतिबद्ध नहीं किया है, बल्कि इन सभी चीजों से पूरी तरह बाहर है - केवल ऐसा मन ही यह समझ सकता है कि क्या सच है। सवाल यह नहीं है कि एक नासमझ दिमाग कैसे समझना सीख सकता है; ऐसी कोई प्रथा नहीं है, कोई विधि नहीं है, कोई प्रणाली नहीं है जिसके द्वारा बोध को जगाया जा सके। मन बस यही कह सकता है, "मुझे समझ नहीं आ रहा," पूर्ण विराम। यदि आप जानते हैं कि आप अनभिज्ञ हैं, तो प्रश्न यह है: क्यों? ऐसा नहीं है कि आप उत्तर ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं, बल्कि आप अपना पूरा ध्यान दे रहे हैं; बस इतना ही। आप अपना पूरा ध्यान दे रहे हैं, जिसका मतलब है कि आपका दिमाग जीवित है, हर चीज़ के लिए खुला है।

तो आप यह देखना शुरू कर देते हैं कि आपका मन आदर्शों के प्रति अनुकूलित है, एक केंद्र से सोचने, कार्य करने, महसूस करने के लिए अनुकूलित है। इस प्रकार जीने से एक स्थिति का निर्माण होता है

विरोधाभास, संघर्ष और ऐसा मन अनिवार्य रूप से ख़राब हो जाता है। अब, यदि आप इसे एक तथ्य के रूप में देखते हैं, तो तथ्य ही पर्याप्त है। आप जानते हैं, किसी तथ्य के बारे में राय रखना किसी तथ्य को समझने से बहुत अलग है। जो मन किसी तथ्य को समझता है, उसके बारे में उसकी कोई राय नहीं होती—ऐसा ही है। लेकिन जो दिमाग किसी तथ्य के बारे में एक राय रखता है वह उस तथ्य को कभी नहीं समझ पाएगा।

इस देश में क्या हो रहा है उसे ही लीजिए: भुखमरी, भयावह गरीबी, पूर्ण पतन, मानवीय गरिमा का पूर्ण अभाव। विभिन्न दलों से जुड़े सभी राजनेता कहते हैं कि वे इन समस्याओं को हल करना चाहते हैं, और प्रत्येक पार्टी का अपना तरीका है, उनके अपने नेता हैं जो कहते हैं, "हम इन समस्याओं को अपने तरीके से हल करेंगे।" उनके लिए व्यवस्था भुखमरी से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वे सिस्टम के प्रति प्रतिबद्ध हैं और उस प्रतिबद्धता के आधार पर वे कार्य करते हैं। पार्टी, सिस्टम उनकी कार्रवाई का केंद्र होने के कारण, वे अपनी कुरूप, भ्रष्ट महत्वाकांक्षाओं और उन सभी भयावहताओं को भूलने में असमर्थ हैं जो भुखमरी की समस्या के समाधान को रोकते हैं। यदि हम सब एक साथ मिलें और कहें, "आइए हम इस समस्या का समाधान करें," इसे हल किया जा सकता है। लेकिन हम राष्ट्रवादी हैं, यूरोपीय हैं, एशियाई हैं, कम्युनिस्ट हैं, पूंजीवादी हैं, इसलिए भुखमरी चलती रहती है।

इसलिए, यदि हम इस तथ्य को बिना पर्दे के देख सकें कि हम किसके लिए प्रतिबद्ध हैं, तो तथ्य स्वयं ही उस बुद्धिमत्ता को जागृत कर देगा जो सही कार्रवाई करेगी। हम इस तथ्य को उस मन से नहीं देख सकते जो किसी आदर्श के प्रति प्रतिबद्ध है, और इसलिए द्वंद्व में है, भ्रष्टाचार की स्थिति में है। तथ्य को देखने के लिए, हमारी कोई प्रतिबद्धता नहीं होनी चाहिए, और फिर धारणा ही बुद्धिमत्ता है; और बुद्धि अपने तरीके से, सही समय पर, सही विधि से कार्य करेगी।

इसलिए, हम कार्रवाई को लेकर चिंतित हैं।' जब क्रिया एक केंद्र से होती है, तो ऊर्जा सीमित होती है, और इसलिए विरोधाभास की स्थिति में होती है। जब क्रिया केंद्र के बिना होती है, तो ऊर्जा असीमित, अपरिवर्तनीय, अमर होती है; यह उस वास्तविकता की गति है जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत। जो मायने रखता है वह है बिना किसी विकल्प के केंद्र के बारे में जागरूक होना, अर्थात, केवल अपनी प्रतिबद्धताओं के प्रति जागरूक रहना - राजनीतिक दल के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, ज्ञान, अनुभव, इच्छा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता - बिना किसी संघर्ष के, बिना किसी इनकार के कि हम क्या कर रहे हैं के लिए प्रतिबद्ध हैं. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, जिस केंद्र से कोई कार्य कर रहा है उसके प्रति जागरूक होना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है और इससे छुटकारा पाने या संशोधित करने की इच्छा से कहीं अधिक शक्तिशाली है। आप देखिए, जो मन विरोधाभास की स्थिति में नहीं है वह एक निर्दोष मन है क्योंकि उसे केंद्र का कोई एहसास नहीं है। निश्चित रूप से, मासूमियत उस मन का गुण है जिसमें 'मैं', स्वयं, संचयी कारक नहीं है; और केवल ऐसा मन ही उस ऊर्जा को प्राप्त कर सकता है

जिसकी न कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत, वह असाधारण चीज़ - इसे वास्तविकता कहें, भगवान कहें, या आप जो चाहें, नाम बहुत मायने नहीं रखता।

तो फिर, हमारी समस्या यह समझने की है कि कैसे ऊर्जा एक ऐसे केंद्र में फंस जाती है जहां से सभी क्रियाएं होती हैं, जिससे विरोधाभास और दुख पैदा होता है।

समस्या को समझना ही समस्या का समाधान है। और तब आप पाएंगे, जैसे-जैसे आप इसमें गहराई से जाएंगे, कि बिना किसी विचार के एक कार्य होता है, एक कार्य जो धारणा से पैदा होता है; और इसकी खूबसूरती यह है कि इसमें पहले या बाद में कोई नहीं है; यह एक कालातीत, अथाह अवस्था है।

21 फ़रवरी 1960

चौथी वार्ता नई दिल्ली में

यदि संभव हो, तो मैं आपके साथ अधिकार, भय, आनंद और प्रेम के बारे में ज़ोर से सोचना चाहूँगा और इन सब पर गहराई से और व्यापक रूप से विचार करने का प्रयास करूँगा। शायद इस प्रक्रिया में हममें से हर कोई अपने डर और सुख के बारे में, और जिसे वह प्यार कहता है, उसके बारे में जागरूक होगा, ताकि हम एक साथ मिलकर यह पता लगा सकें कि इन चीजों में क्या निहित है और क्या डर से मुक्त होना संभव है। . क्योंकि डर, जिसके प्रति कोई सचेत या अचेतन हो सकता है, वास्तव में एक भयानक चीज़ है; यह अत्यंत विनाशकारी, विक्षिप्त करने वाला और निरंतर दुख की ओर ले जाने वाला है।

लेकिन इससे पहले कि हम इसमें आगे बढ़ें, मुझे लगता है कि हमें इन चीजों की जांच में अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण के संबंध में अपने आप में बहुत स्पष्ट होना चाहिए।

दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण है - हम किसी समस्या को कैसे देखते हैं, हम उसे कैसे समझते हैं। निश्चित रूप से, सच्ची परीक्षा, सच्ची खोज तभी संभव है जब हम केवल शब्दाडंबर से परे चले जाएं। यदि हम शब्दों तक सीमित हैं, तो हम वास्तव में अन्वेषण करने में सक्षम नहीं हैं, और फिर शब्द पूर्ण समझ में बाधा डालते हैं।

तो हमें यह जांचना चाहिए कि इस शब्द से हमारा क्या मतलब है, क्या हमें ऐसा नहीं करना चाहिए? शब्द तो प्रतीक मात्र है; यह किसी वस्तु या ऐसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करता है जिसे हम सोचते और महसूस करते हैं। शब्द और वस्तु दो अलग-अलग चीज़ें हैं, लेकिन हममें से अधिकांश के लिए शब्द अनजाने में ही वस्तु बन जाता है। हिंदू या मुस्लिम जैसा शब्द एक प्रतीक है जो आपके दिमाग में एक खास तरह के इंसान का प्रतिनिधित्व करता है, और आपके लिए यह शब्द व्यक्ति से अलग नहीं है; अपने नाम की तरह, वह शब्द आपके मन में कुछ खास गुणों और विशेषताओं वाले व्यक्ति की छवि जगाता है और वह शब्द व्यक्ति बन जाता है।

अब मैं समझता हूं कि यह समझना आवश्यक है कि शब्द वस्तु नहीं है।

वृक्ष शब्द वृक्ष नहीं है; यह केवल एक प्रतीक है जो विचार व्यक्त करता है

पेड़। लेकिन हममें से अधिकांश के लिए, शब्द ही चीज़ है, और इसलिए शब्द ने बहुत महत्व मान लिया है। हम शब्दों, प्रतीकों की भाषा में सोचते हैं; और मुझे आश्चर्य है कि क्या हम कभी शब्दों के बिना, प्रतीकों के बिना सोचते हैं?

अगर हमें डर की इस समस्या की जांच करनी है और यह पता लगाना है कि क्या मन वास्तव में डर से मुक्त होने में सक्षम है - जिसका अर्थ है मन के उन अनछुए स्थानों में गहराई से जाना जहां डर छिपा है - मुझे ऐसा लगता है, हमें शुरुआत करनी होगी यह समझना कि शब्द वस्तु नहीं है।

भय, या प्रेम, या अधिकार शब्द वह चीज़ नहीं है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

हममें से अधिकांश लोगों में अनुसरण करने की तीव्र इच्छा होती है, और या तो हम इस इच्छा से अनजान होते हैं या हम सोचते हैं कि यह स्वाभाविक, अपरिहार्य है। किसी भी मामले में, यह हमारे जीवन में एक असाधारण कारक बन गया है, और जब तक हम किसी चीज़ या किसी व्यक्ति का अनुसरण नहीं कर रहे हैं, हम खोया हुआ महसूस करते हैं। हम किसी गुरु, किसी आदर्श, किसी नेता या किसी राजनीतिक दल का अनुसरण करते हैं और अनुसरण करने की यह इच्छा ही सत्ता का आधार है, है ना? "मैं नहीं जानता, लेकिन आप जानते हैं, इसलिए मैं आपका अनुसरण करूंगा।" मेरे लिए आप उस चीज़ का अवतार हैं जिसे मैं ज्ञान या बुद्धिमत्ता मानता हूं, और इसलिए मैं आपका अनुसरण करता हूं। या मैं सत्ता, पद, प्रतिष्ठा चाहता हूं - राजनीतिक या धार्मिक - इसलिए मैं उस समूह में शामिल हो जाता हूं जो मुझे ये चीजें प्रदान करता है और उसके नेता का अनुसरण करता हूं, जो शांति के नाम पर जो मैं चाहता हूं उसे हासिल करने में मेरी मदद करेगा, और बाकी सब। . इसलिए, जब तक हम इस आग्रह को नहीं समझते - अनुसरण करने का आग्रह, सही होने का, सफल होने का, परिणाम प्राप्त करने का आग्रह - हम डर को नहीं समझ पाएंगे; और आग्रह शब्द से भिन्न है।

महोदय, जब तक आप वास्तव में इसे अपने ऊपर लागू नहीं करेंगे, आप डर की समस्या में बहुत गहराई तक प्रवेश नहीं कर पाएंगे।

अब, कोई अपने बारे में किसी तथ्य को कैसे देखता है? क्या आपने कभी अपने बारे में किसी परेशान करने वाले तथ्य का सामना किया है? या क्या तुमने इसका खंडन किया है, इसे छिपाया है, इसके लिए बहाने ढूंढे हैं, इससे दूर भागे हो? क्या आपने कभी अपने आप से कहा है, "मैं झूठा हूं," या "मैं काफी मूर्ख व्यक्ति हूं," बिना किसी बाहरी बहाने, औचित्य या निंदा के? अपने आप से यह कहना, "मैं यही हूं," और वहीं रुक जाना-निश्चित रूप से, यह इस तथ्य का सामना करना है कि आप क्या हैं। लेकिन हममें से अधिकांश के लिए यह पूरी तरह से अस्वीकार्य है क्योंकि हम आदर्शीकरण, रूमानियत, कुछ ऐसा बनने की कोशिश की स्थिति में रहते हैं जो हम नहीं हैं। इसलिए, अपने बारे में किसी परेशान करने वाले तथ्य का सामना करना एक असाधारण कठिन समस्या बन जाती है।

आप जानते हैं, हम एक भयानक रूप से मूर्ख समाज में रह रहे हैं और एक बेहद गरीब आदमी को देखकर, जब आपने स्वयं अच्छे कपड़े पहने हों, तो आपको, यदि आप जरा भी संवेदनशील हैं, अपराध की भावना महसूस होनी चाहिए। और आप जितने अधिक संवेदनशील होंगे, वह भावना उतनी ही तीव्र होगी। अब, क्या यह संभव है

अपराध की उस भावना से अवगत रहें, तथ्य का सामना करें और इसके सभी निहितार्थों को देखें, और इससे दूर न देखें या इसके बारे में कुछ करने का प्रयास न करें? क्योंकि तथ्य के संबंध में कोई भी कार्रवाई तथ्य की समझ से बचना है।

कृपया, यह समझना महत्वपूर्ण है। मुझे उम्मीद है कि आप इसका पालन कर रहे हैं और मैं खुद को स्पष्ट कर रहा हूं। क्योंकि, जब तक हम किसी तथ्य को देखने में सक्षम नहीं होते, तब तक उस तथ्य द्वारा अपना सही कार्य करने की कोई संभावना नहीं है।

आप जानते हैं, जैसा कि हमने आज सुबह कहा था जब हममें से कुछ लोग चर्चा कर रहे थे, किसी सामग्री का अपना अनुशासन होता है। क्या तुम समझ रहे हो? जब आप किसी सामग्री के साथ काम कर रहे होते हैं, तो उस सामग्री का अपना अनुशासन होता है। आप घड़ा तो बना सकते हैं, लेकिन मिट्टी से चित्र नहीं बना सकते। उसी तरह, यदि आप तथ्य को नहीं समझते हैं, लेकिन इसके बारे में कुछ करने का प्रयास करते हैं, तो आप एक ऐसे कारक का परिचय दे रहे हैं जो तथ्य में अंतर्निहित नहीं है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसे और अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे।

हममें से अधिकांश के लिए, किसी व्यक्ति या वस्तु का अनुसरण करना - एक आदर्श, एक उपदेश, एक लक्ष्य, एक राजनीतिक या धार्मिक नेता - बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। हम बिना सोचे-समझे अनुसरण करते हैं, और हमें कभी पता नहीं चलता कि हम अनुसरण क्यों करते हैं। तथ्य को देखे बिना, हम कहते हैं, "यह स्वाभाविक है, यह मानवीय है, इसका पालन करना अपरिहार्य है; यह मुझे सफलता की ओर ले जाता है। इसके अलावा, यदि मैं किसी का, या किसी आदर्श का अनुसरण न करूँ तो मेरा क्या होगा? मैं खो जाऊँगा।" इस तरह की व्याख्याएँ हमें केवल उस तथ्य को देखने से रोकती हैं जिसका हम अनुसरण करते हैं। लेकिन अगर हम जिस तथ्य का पालन करते हैं, उसे उचित ठहराए या निंदा किए बिना देखें, तो तथ्य, जो भौतिक है, का अपना अनुशासन और अपनी कार्रवाई है।

सर, मुझे लगता है कि मन भय से पूरी तरह मुक्त हो सकता है। और डर सबसे विनाशकारी, भ्रष्ट करने वाला तत्व है, है न? मैं इसे केवल एक तथ्य के रूप में बता रहा हूं, निंदा के रूप में नहीं। जब मन डरता है, तो वह स्पष्ट रूप से सोचने, गहराई से महसूस करने में सक्षम नहीं होता है; यह धारणा करने में सक्षम नहीं है। यह विभिन्न अवरोधों, संघर्षों और विनाशकारी प्रतिक्रियाओं को जन्म देता है। यदि मन वास्तव में भय से मुक्त नहीं है, तो अनुसरण करने की इच्छा, जो अधिकार की मांग है, स्थापित हो जाती है; इसलिए, मन किसी चीज़ का गुलाम बन जाता है - किसी नेता का, किसी राजनीतिक संगठन का, किसी धार्मिक विश्वास का, इत्यादि।

महोदय, जब तक आप सचेत होकर अपने मन का निरीक्षण नहीं करेंगे, जो कहा जा रहा है वह बहुत जटिल और बहुत कठिन लगेगा; लेकिन यह नहीं है। वास्तविक कठिनाई यह है कि हममें से अधिकांश लोग बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं हैं। हम सतही तौर पर जीते हैं - कार्यालय जाना, सेक्स पर झगड़ना, आकस्मिक सुखों का पीछा करना - और इससे हम संतुष्ट हैं। लेकिन अगर हम यह जानना चाहते हैं कि मन को भय से कैसे मुक्त किया जाए, तो हमें अधिकार के इस प्रश्न को समझना होगा - हर स्तर पर अधिकार, चाहे वह उस पुलिसकर्मी का अधिकार हो जो आपसे ऐसा करने के लिए कहता है।

बाईं ओर रखें, या सरकार का अधिकार, या पुजारी का अधिकार, या अपने मन का अधिकार, जिसने अनुभव और ज्ञान संचित किया है, और उस पृष्ठभूमि के निर्देशों के अनुसार कार्य करता है। जब तक मन अधिकार का गुलाम है, थोपा हुआ या स्वयं निर्मित है, तब तक वह भय की पूरी गहराई को समझने और उससे मुक्त होने में असमर्थ है।

अब डर क्या है? आइये इसे थोड़ा एक्स्प्लोर करें। मैं किसी एक विशेष डर की बात नहीं कर रहा हूं - अंधेरे का डर, किसी की नौकरी खोने का डर, सांप का डर, परंपरा का डर, सार्वजनिक राय का डर, मौत का डर, दर्द का डर, इत्यादि। ये सभी डर किसी विशेष चीज़ से संबंधित हैं, क्या ऐसा नहीं है? लेकिन मैं हर चीज़ के संबंध में डर की बात कर रहा हूं, किसी एक खास चीज के संबंध में नहीं। यदि हम भय के केंद्रीय तथ्य को गहराई से समझ लें, तो हम हर चीज के संबंध में भय से मुक्त हो सकते हैं और इस तरह एक बुद्धिमान दिमाग ला सकते हैं।

अधिकांश लोग मृत्यु से डरते हैं, है न? और जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, डर का यह दुःस्वप्न उतना ही अधिक होता है। मैं मृत्यु पर चर्चा नहीं कर रहा हूँ - हम उसके बारे में फिर कभी बात करेंगे। लेकिन मृत्यु के तथ्य का डर कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसका आप विश्लेषण कर सकें और उससे मुक्त हो सकें। आप समझे की मेरा आशय क्या है?

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी अपना विश्लेषण किया है, अपनी भावनाओं और विचारों का विश्लेषण किया है। यदि आपके पास है, तो आपको पता चल जाएगा कि विश्लेषण में क्या निहित है - किसी पेशेवर मनोचिकित्सक या मनोवैज्ञानिक द्वारा किया गया विश्लेषण नहीं, बल्कि आत्म-विश्लेषण। स्वयं का विश्लेषण करने की प्रक्रिया में, जैसा कि यदि आपने कभी किया है तो आपने पाया होगा, हमेशा विश्लेषक और विश्लेषण करने वाला होता है, विश्लेषक अधिकार की स्थिति को उस व्यक्ति के रूप में मानता है जो जानता है।

क्या यह सब काफी जटिल होता जा रहा है? मुझे आशा नहीं है। लेकिन अगर हम इस दुःस्वप्न को - भय की इस काली छाया को - समझेंगे तो मुझे डर है कि हमें इस सब से गुजरना होगा। भय से मुक्त होना कोई बच्चों का खेल नहीं है; यह केवल यह कहने की बात नहीं है, "मैं नहीं डरूंगा।" आपको डर नामक चीज़ की असाधारण जटिलताओं को देखना और समझना होगा, और मैं केवल यह इंगित कर रहा हूं कि विश्लेषण इसका तरीका नहीं है। मैं स्वयं का विश्लेषण कर सकता हूं और देख सकता हूं कि मैं अनुसरण करना चाहता हूं क्योंकि, किसी का या किसी चीज़ का अनुसरण किए बिना, मुझे डर है कि मैं भटक जाऊंगा। लेकिन भटक जाने का डर विश्लेषण की प्रक्रिया से कहीं अधिक प्रबल है, और खुद का विश्लेषण करने के बाद मुझे पता चला कि मैं अभी भी डरा हुआ हूं। इसलिए विश्लेषण, चाहे स्वयं द्वारा किया गया हो या किसी अन्य द्वारा, केवल भय को गहरे या अलग स्तर पर बनाए रखता है। फिर, विश्लेषण डर को हल करने का तरीका नहीं है।

अब डर क्या है? निश्चित रूप से, डर हमेशा समय के दायरे में होता है। मैं मरने से डरता हूं—अगले ही पल मरूंगा, या दस साल बाद मरूंगा। का विचार

कल, अपनी अनिश्चितता के साथ, और कल का विचार, अपने सुखों और अपने दुखों के साथ, भय का एक जाल बनाता है। महोदय, क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि आप किसी ऐसी चीज़ से डरते नहीं हैं जिसका सामना आप तुरंत कर देते हैं? यदि किसी कोने में चक्कर लगाते समय अचानक आपकी मुलाकात सांप से हो जाए, तो शरीर तुरंत प्रतिक्रिया करता है, वह सहज रूप से छलांग लगा देता है; कोई डर नहीं है क्योंकि सोचने का समय नहीं है। लेकिन जैसे ही आप सोचना शुरू करते हैं, डर अस्तित्व में आ जाता है।

निश्चित रूप से, हममें से अधिकांश लोगों ने झूठ बोलने, सच न बोलने का अनुभव किया है - और हम ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि हम नहीं चाहते कि हमारी पहचान उजागर हो, हम खुद को आलोचना के घेरे में नहीं लाना चाहते, इसलिए डर हमारी गलत बातों के मूल में है कथन।
अर्थात्, मन पहले से ही अनुमान लगा लेता है कि उससे क्या पूछा जाने वाला है और जिस बात को स्वीकार करने से वह डरता है उसे छुपाने के लिए वह झूठ बोलने के लिए तैयार रहता है। यदि आप स्वयं का निरीक्षण करें तो आप देखेंगे कि भय हमेशा, सभी परिस्थितियों में, समय, कल और आने वाले कल को शामिल करता है - वह चीज़ जो कल हो सकती है, या वह चीज़ जो कल की गई थी, जिसे किसी भी क्षण खोजा और निंदा किया जा सकता है। तो, डर मूलतः समय की एक प्रक्रिया है।

महोदय, नोट्स लेने या शब्दों को याद करने के बजाय, मेरी इच्छा है कि आप वास्तव में अपने दिमाग को काम करते हुए देखें। तुम सब डरते हो ना?
यदि आप नहीं होते, तो आप यहां नहीं बैठे होते। मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं, लेकिन वास्तव में खुश आदमी डरता नहीं है - वह आदमी नहीं जो खुश है क्योंकि उसके पास कुछ चीजें हैं, बल्कि एक परम खुश आदमी है जो आंतरिक रूप से शाश्वत गुणों से समृद्ध है, जो कभी नहीं ईश्वर को खोजता है, कभी मंदिर नहीं जाता। लेकिन दुर्भाग्य से हममें से अधिकांश लोग उस स्थिति में नहीं हैं। हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी तरह से, सतही स्तर पर या बहुत गहराई से डरते हैं। और क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आप अपने डर पर गौर करें, चाहे वह आपके बॉस का डर हो, आपकी पत्नी या पति का, जनता की राय का, अपनी नौकरी या अपने स्वास्थ्य को खोने का, मृत्यु का, महत्वपूर्ण मंत्रियों में से एक न होने का डर हो , या आप क्या करेंगे। बस अपने स्वयं के डर पर नजर रखें और आप देखेंगे, यदि आप बहुत ध्यान से देखेंगे, तो इसमें समय शामिल है - यह भावना कि आप कुछ नहीं हो सकते हैं या नहीं बन सकते हैं, कि आपको बदलना होगा और हो सकता है कि आप ऐसा करने में सक्षम न हों, इत्यादि। तो समय भय का कारक है: समय कल, आज और कल के रूप में; समय अतीत की तरह वर्तमान में कार्य कर रहा है और भविष्य ला रहा है; घड़ी के हिसाब से समय, साथ ही आंतरिक रूप से, मनोवैज्ञानिक रूप से भी समय।

इसलिए, मन भय से तभी मुक्त हो सकता है जब वह खुद को समय से मुक्त करने में सक्षम हो - यानी तथ्य को देखना, तथ्य का सामना करना, न कि तथ्य को बदलने की कोशिश करना। कृपया, इसे समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप इस बातचीत के अंत में भय से मुक्ति की भावना के साथ उठ सकें, तो आपको पता चल जाएगा कि प्यार क्या है। तब तुम्हें पता चलेगा कि आनंद क्या है, और तुम एक इंसान बन जाओगे

गरिमा और स्पष्टता और चरित्र के साथ परिपक्व। चरित्र स्पष्टता है. जो मन डरता है वह कभी स्पष्ट नहीं होता। इसीलिए यह समझना महत्वपूर्ण है कि किसी तथ्य को कैसे देखा जाए, और यह पता लगाया जाए कि क्या कारण है कि मन तथ्य को समय की गुणवत्ता देता है। तथ्य यह है कि आप डरते हैं, और आप उस तथ्य को देखते हैं, लेकिन आपने यह कहकर समय की गुणवत्ता का परिचय दिया है, "मुझे तथ्य बदलना चाहिए, मुझे इसके बारे में कुछ करना चाहिए, मुझे साहसी होना चाहिए।" ऐसी सभी सोच समय के कारक का परिचय देती है क्योंकि परिवर्तन समय में होता है। इसलिए, स्पष्टीकरण, औचित्य या निंदा के बिना किसी तथ्य को देखना समय की समाप्ति का तात्पर्य है।

कृपया इसे जरूर सुनें. यह जटिल नहीं है. यह ध्यान की मांग करता है और ध्यान का अपना अनुशासन होता है। आपको अनुशासन की कोई व्यवस्था लागू करने की ज़रूरत नहीं है. आप जानते हैं, महोदय, इस दुनिया को राजनेताओं या अधिक इंजीनियरों की नहीं, बल्कि स्वतंत्र इंसानों की जरूरत है। इंजीनियर और वैज्ञानिक आवश्यक हो सकते हैं, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि दुनिया को ऐसे इंसानों की ज़रूरत है जो स्वतंत्र हों, जो रचनात्मक हों, जिनमें कोई डर न हो; और हममें से अधिकांश लोग भय से ग्रस्त हैं। यदि आप डर में गहराई से जा सकते हैं और वास्तव में इसे समझ सकते हैं, तो आप मासूमियत के साथ बाहर आएंगे, ताकि आपका दिमाग साफ हो जाए। हमें इसी की आवश्यकता है, और इसीलिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि किसी तथ्य को कैसे देखा जाए, अपने डर को कैसे देखा जाए। यह पूरी समस्या है - यह नहीं कि डर से कैसे छुटकारा पाया जाए, यह नहीं कि साहसी कैसे बनें, यह नहीं कि डर के बारे में क्या किया जाए, बल्कि पूरी तरह से तथ्य के साथ रहें।

सर, आप पूरी तरह से आनंद की लहर में डूबना चाहते हैं, है न?
और आप कर रहे हैं। जब आप आनंद के क्षण में होते हैं, तो कोई निंदा नहीं होती, कोई औचित्य नहीं होता, कोई इनकार नहीं होता। आनंद का अनुभव करने के क्षण में समय का कोई कारक नहीं होता; शारीरिक, कामुक रूप से, आपका पूरा अस्तित्व इससे स्पंदित होता है। क्या ऐसा नहीं है? जब आप अनुभव के क्षण में होते हैं, तो कोई समय नहीं होता है, है ना? जब आप अत्यधिक क्रोधित होते हैं, या जब आप वासना से भरे होते हैं, तो कोई समय नहीं होता है। समय आता है, अनुभव के क्षण के बाद ही विचार आता है, और फिर आप कहते हैं, "जोव द्वारा, कितना अच्छा," या "कितना भयानक।" यदि यह अच्छा था, तो आप इसे और अधिक चाहते हैं; यदि यह भयानक, डरावना था, तो आप इससे बचना चाहेंगे; इसलिए, आप व्याख्या करना, औचित्य देना, निंदा करना शुरू करते हैं और ये समय के कारक हैं जो आपको तथ्य को देखने से रोकते हैं।

अब, क्या आपने कभी डर का सामना किया है? कृपया प्रश्न को ध्यान से सुनें।
क्या आपने कभी डर को देखा है? या, भय के प्रति जागरूक होने के क्षण में, क्या आप पहले से ही तथ्य से भागने की स्थिति में हैं? मैं इसमें थोड़ा गहराई से जाऊंगा और आप समझ जायेंगे कि मेरा क्या मतलब है।

हम अपनी विभिन्न भावनाओं को नाम देते हैं, उन्हें एक शब्द देते हैं, है ना? यह कहते हुए, "मैं क्रोधित हूँ," हमने एक विशेष भावना को एक शब्द, एक नाम, एक लेबल दिया है।
अब, कृपया अपने मन को स्पष्ट रूप से देखें। जब तुम्हें कोई एहसास हो,

आप उस भावना को नाम देते हैं—आप उसे क्रोध, वासना, प्रेम, आनंद कहते हैं। क्या नहीं?
और भावना का यह नामकरण बुद्धि की एक प्रक्रिया है जो आपको तथ्य यानी भावना को देखने से रोकती है।

आप जानते हैं, जब आप किसी पक्षी को देखते हैं और अपने आप से कहते हैं कि यह तोता है या कबूतर है या कौआ है, तो आप उस पक्षी को नहीं देख रहे हैं। आपने तथ्य को देखना पहले ही बंद कर दिया है क्योंकि आपके और तथ्य के बीच तोता या कबूतर या कौआ शब्द आ गया है।

यह कोई कठिन बौद्धिक उपलब्धि नहीं है बल्कि मन की एक प्रक्रिया है जिसे समझना होगा। यदि आप डर की समस्या या अधिकार की समस्या या आनंद की समस्या या प्रेम की समस्या में जाएंगे, तो आपको यह देखना होगा कि नामकरण, एक लेबल देना आपको तथ्य को देखने से रोकता है। क्या तुम समझ रहे हो?

आप एक फूल देखते हैं और उसे गुलाब कहते हैं, और जैसे ही आपने उसे यह नाम दिया, आपका मन विचलित हो जाता है; आप अपना पूरा ध्यान फूल पर नहीं दे रहे हैं। इसलिए, नामकरण, नामकरण, मौखिकीकरण, प्रतीकीकरण तथ्य की ओर पूर्ण ध्यान देने से रोकता है। ठीक है, महोदय? क्या हम आगे बढ़ें? ठीक है। हम वही जारी रख रहे हैं जिसके बारे में हम शुरुआत में बात कर रहे थे। हम अभी भी खुद से पूछ रहे हैं कि क्या किसी तथ्य के बारे में विकल्पहीन रूप से जागरूक होना संभव है, और तथ्य डर है।

अब, क्या मन - जो प्रतीकों का आदी है और जिसका स्वभाव ही शब्दाडंबर करना है - शब्दाडंबर करना बंद कर सकता है और तथ्य को देख सकता है? यह मत कहो, "मैं यह कैसे कर सकता हूँ?" लेकिन सवाल अपने आप से पूछिए. मुझे एक एहसास है और मैं इसे डर कहता हूं। इसे एक नाम देकर मैंने इसे अतीत से जोड़ दिया है, इसलिए स्मृति, शब्द, प्रतीक, मुझे तथ्य को देखने से रोक रहे हैं। अब, क्या मन - जो अपनी विचार प्रक्रिया में ही शब्दों का उच्चारण करता है, नाम देता है - बिना नाम लिए तथ्य को देख सकता है? क्या तुम समझ रहे हो? महोदय, इसका पता आपको स्वयं लगाना होगा, मैं आपको नहीं बता सकता। यदि मैं तुम से कहूं और तुम वैसा ही करो, तो तुम अनुसरण करते रहोगे, और भय से मुक्त न होगे। जो मायने रखता है वह यह है कि आपको भय से पूरी तरह मुक्त होना चाहिए, और आधे मरे हुए इंसान नहीं बनना चाहिए - भ्रष्ट, दुखी लोग जो हमेशा अपनी ही छाया से डरते हैं।

डर की इस समस्या को समझने के लिए आपको इसकी गहराई तक जाना होगा क्योंकि डर केवल मन की सतह पर नहीं होता है। डर का मतलब सिर्फ अपने पड़ोसी से डरना या नौकरी खोने का डर नहीं है; यह उससे कहीं अधिक गहरा है, और इसे समझने के लिए गहरी पैठ की आवश्यकता है। गहराई से प्रवेश करने के लिए आपको बहुत तेज़ दिमाग की आवश्यकता होती है, और दिमाग केवल तर्क-वितर्क या टाल-मटोल से तेज़ नहीं होता है। समस्या को चरण दर चरण समझना होगा और इसीलिए इस पूरी प्रक्रिया को समझना बहुत महत्वपूर्ण है

नामकरण। जब आप लोगों के एक पूरे समूह को मुसलमान कहकर, या आप जो भी कहें, उनका नाम लेते हैं, तो आपने उनसे छुटकारा पा लिया है; आपको उन्हें व्यक्तियों के रूप में देखने की ज़रूरत नहीं है, इसलिए नाम, शब्द ने आपको अन्य मनुष्यों के साथ संबंध में एक इंसान होने से रोका है। उसी तरह, जब आप किसी भावना का नाम लेते हैं, तो आप उस भावना को नहीं देख रहे होते हैं, आप पूरी तरह से तथ्य के साथ नहीं होते हैं।

आप देखिए श्रीमानों, जहां भय है वहां प्रेम नहीं है। जहां डर है, वहां आप जो कर सकते हैं वह करें - दुनिया के सभी मंदिरों में जाएं, सभी गुरुओं का अनुसरण करें, हर दिन गीता दोहराएं - आपको कभी वास्तविकता नहीं मिलेगी, आप कभी खुश नहीं होंगे, आप अपरिपक्व इंसान बने रहेंगे। समस्या डर को समझने की है, न कि डर से छुटकारा पाने की। अगर आप सिर्फ डर से छुटकारा पाना चाहते हैं तो एक ऐसी गोली लीजिए जो आपको शांत कर देगी और सो जाइए। डर से बचने के असंख्य रूप हैं, लेकिन अगर आप बचेंगे, भागेंगे, तो डर हमेशा आपका पीछा करेगा। भय से मौलिक रूप से मुक्त होने के लिए, आपको नामकरण की इस प्रक्रिया को समझना होगा, और यह महसूस करना होगा कि शब्द कभी भी वस्तु नहीं है। मन को शब्द को भावना से अलग करने में सक्षम होना चाहिए, और शब्द को भावना की प्रत्यक्ष धारणा में हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहिए, जो कि तथ्य है।

जब आप इतनी दूर चले गए हैं, इतनी गहराई से प्रवेश कर गए हैं, तो आप पाएंगे कि अचेतन में, मन की अस्पष्ट गहराइयों में, पूर्ण अकेलेपन की भावना, अलगाव की भावना छिपी हुई है, जो डर का मूल कारण है।

और फिर, यदि आप इससे बचते हैं, यदि आप यह कहकर इससे बचते हैं कि यह बहुत भयावह है, यदि आप इसे नाम दिए बिना इसमें नहीं जाते हैं, तो आप कभी भी इससे आगे नहीं बढ़ पाएंगे।
मन को पूर्ण आंतरिक अकेलेपन के तथ्य का सामना करना पड़ता है और खुद को उस तथ्य के बारे में कुछ भी करने की अनुमति नहीं देनी होती है। वह असाधारण चीज़ जिसे अकेलापन कहा जाता है, वह स्वयं का सार है, 'मैं', अपनी सभी चालाकियों, अपनी चालाकियों, अपने प्रतिस्थापनों, अपने शब्दों के जाल के साथ जिसमें मन फंस जाता है। केवल जब मन उस परम अकेलेपन से परे जाने में सक्षम होता है तभी मुक्ति होती है - भय से पूर्ण मुक्ति।

और केवल तभी आप स्वयं जान पाएंगे कि वास्तविकता क्या है, वह अथाह ऊर्जा जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। जब तक मन समय के संदर्भ में अपने भय पैदा करता है, तब तक वह उस चीज़ को समझने में असमर्थ है जो कालातीत है।

24 फ़रवरी 1960

पांचवी वार्ता नई दिल्ली में

मैं चाहूंगा कि इस शाम कई चीजों के बारे में बात की जाए, खासकर प्रयास, अनुशासन और ध्यान के बारे में। लेकिन, दुर्भाग्य से, हममें से अधिकांश लोग सिद्धांतों से संतुष्ट हैं; हमें होने की चिंता नहीं है. हम दयालु होने के बजाय करुणा के बारे में बात करना पसंद करेंगे। हम अच्छाई के बारे में बात करना पसंद करेंगे और समझाएंगे कि हम अच्छाई में फूल की तुलना में अच्छे क्यों नहीं हैं। हम प्रतीकों, आदर्शों और चतुराईपूर्ण व्याख्याओं से इतनी आसानी से संतुष्ट हो जाते हैं कि जब बारीकी से जांच की जाती है, तो वे केवल हवा में उड़ाए गए शब्द प्रतीत होते हैं।

मुझे लगता है कि यह एक बड़ी गलती होगी अगर हम अब केवल शब्दों और स्पष्टीकरणों का सहारा लें, क्योंकि हम जिस पर चर्चा करने जा रहे हैं वह एक जटिल मुद्दा है। वर्तमान में हमारा जीवन बहुत उथला, खाली है, और हम उस उथलेपन, उस खालीपन के बारे में दार्शनिकता से बहुत शोर मचा रहे हैं। हम इसके बारे में किताबें पढ़ते हैं - जाने-माने आधुनिक दार्शनिकों की किताबें, या हमारी अपनी पारंपरिक किताबें, गीता, उपनिषद और बाकी सभी किताबें - और सोचते हैं कि हमने जीवन के संपूर्ण महत्व को, उसकी संपूर्ण विशालता, उसके साथ समझ लिया है। सौंदर्य, इसकी जटिलताएँ। जब हमने केवल स्वतंत्रता के बारे में पढ़ा है तो हम सोचते हैं कि हम आश्चर्यजनक रूप से स्वतंत्र हैं - जो कि मौखिक संतुष्टि की बचकानी भावना को दर्शाता है।

इसलिए मैं आज शाम को यह सुझाव देना चाहूँगा कि यदि संभव हो तो हम कुछ ऐसी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास करें जिनका सामना हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं। हम प्रयास, रोजमर्रा के प्रयास से चिंतित हैं - हमारे भीतर की निरंतर लड़ाई, कुछ बनने या न होने का संघर्ष, हर दिन कार्यालय जाने में शामिल प्रयास, रिश्तों में संघर्ष और हमारे जीवन में विभिन्न विरोधाभास। यह कहना कि रोजमर्रा के प्रयास से हमें कोई सरोकार नहीं है, कि यह धार्मिक जीवन का हिस्सा नहीं है, मुझे बिल्कुल गलत लगता है। इसलिए मुझे लगता है कि हमें प्रयास के बारे में चिंतित होना चाहिए, जिस पर हम वर्तमान में चर्चा करेंगे।

अनुशासन की यह पूरी समस्या भी है - कम्युनिस्टों और विभिन्न अन्य राजनीतिक दलों द्वारा मांग किया गया अनुशासन, यदि आप आलसी हैं तो आप खुद पर जो अनुशासन थोपते हैं, एक तकनीक सीखने का अनुशासन, और पुस्तकों द्वारा जोर दिया गया अनुशासन। , शिक्षक, गुरु। वह सब हमारे जीवन का हिस्सा है.

और यह हमारे जीवन का भी हिस्सा है, निश्चित रूप से, यह पता लगाना कि चिंतन, मनन करने वाले मन की स्थिति क्या है। अपने मन की गुणवत्ता को जाने बिना जो ध्यान करता है, जो चिंतन की स्थिति में है, हम जीवन का एक बड़ा हिस्सा चूक जाते हैं, क्योंकि मन की यह चिंतनशील स्थिति, अपने सार में, सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता है, न कि केवल एक के प्रति संवेदनशीलता। अस्तित्व की पूरी प्रक्रिया का एक भाग।

और हमें पूरे जीवन की चिंता करनी चाहिए, केवल एक हिस्से की नहीं, क्या ऐसा नहीं करना चाहिए? राजनीति केवल एक हिस्से से संबंधित है; सामाजिक क्रांति का संबंध समग्र के केवल एक खंड से है। हमारी सभी गतिविधियों में, चाहे नौकरशाही हो, वैज्ञानिक हो, या आप जो भी कहें, हम आंशिक रूप से चिंतित हैं, संपूर्ण से नहीं। और यदि हम समग्रता को नहीं समझते हैं, तो हम दूसरों के साथ और स्वयं के साथ चिरस्थायी संघर्ष में रहेंगे। इसलिए मुझे यह बहुत महत्वपूर्ण और सबसे जरूरी लगता है कि हमें यह पता लगाना चाहिए कि ध्यान की स्थिति में मन की गुणवत्ता क्या है।

अब, हम ध्यान के तथाकथित चरणों का पता नहीं लगाने जा रहे हैं क्योंकि सभी अभ्यास यांत्रिक हैं। हम यह नहीं कहने जा रहे हैं कि ध्यान क्या है और यह क्या नहीं है। पहले हमें मन को समग्र रूप से समझना होगा, और फिर हम ध्यान की प्रकृति पर आएंगे या उसकी खोज करेंगे; हम पता लगाएंगे कि अनुशासन आवश्यक है या नहीं, और सच्चा प्रयास क्या है। यह सब स्पष्ट हो जाएगा यदि हम समझ सकें कि सोचने का तरीका क्या है। क्योंकि वह वास्तव में हमारी समस्या है, है न?—कैसे सोचें। सोचना निश्चित रूप से तभी संभव है, जब दिमाग में अवलोकन के लिए जगह हो। हमारे पास सोचने के लिए जगह होनी चाहिए. विचारों में स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए मस्तिष्क का खुला होना आवश्यक है।

क्योंकि सीमित दिमाग स्वतंत्र रूप से नहीं सोच सकता। एक स्वतंत्र दिमाग स्वतंत्र रूप से सोच सकता है, लेकिन इसके विपरीत नहीं। जब मन में अवलोकन के लिए खुला स्थान होता है तो चिंतन होता है। लेकिन हमारा दिमाग सीमित है, विभिन्न तकनीकों और अनुभवों से बंधा हुआ है, ज्ञान से बंधा हुआ है, और अवलोकन के लिए हमारा स्थान बहुत संकीर्ण है। इसलिए, निश्चित रूप से, चेतना की प्रकृति को समझना बहुत महत्वपूर्ण है - न केवल चेतन मन, बल्कि अचेतन, जो प्रतीकों की दुनिया है। प्रतीकों, शब्दों, वृत्ति की इस दुनिया को समझे बिना, मन निरीक्षण करने के लिए स्वतंत्र नहीं है, और इसलिए चिंतन के लिए कोई जगह नहीं है।

अगर मैं एक पल के लिए अलग हट जाऊं, तो मुझे लगता है कि यह समझना महत्वपूर्ण है कि सुनने का क्या मतलब है, क्योंकि तब, शायद, जो कहा जा रहा है उसका शब्दों से परे एक अर्थ होगा। मुझे ऐसा लगता है कि हममें से बहुत कम लोग कभी सुनते हैं।
हम नहीं जानते कि कैसे सुनना है. मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी सचमुच अपने बच्चे, अपनी पत्नी या पति या किसी पक्षी की बात सुनी है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी सूर्यास्त देखते हुए मन की बात सुनी है, या क्या आपने कभी सुनने की मनोवृत्ति के साथ कोई कविता पढ़ी है। यदि हम सुनना जानते हैं, तो वही सुनना एक ऐसी क्रिया है जिसमें समझने का चमत्कार घटित होता है। यदि हम जानते हैं कि जो कहा जा रहा है उसे कैसे सुनना है, तो हमें पता चल जाएगा कि यह सच है या गलत। और जो सत्य है, उसे स्वीकार करना नहीं पड़ता—ऐसा ही है। यह तभी है जब वहाँ है

असत्य और असत्य के बीच यह विवाद है कि स्वीकृति और अस्वीकृति, सहमति और असहमति है।

इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि कैसे सुनें। अनुशासन के बारे में, प्रयास के बारे में, ध्यान के बारे में आपके कुछ निश्चित विचार हैं; आपके पास पारंपरिक या आधुनिक दृष्टिकोण और आपके द्वारा प्राप्त अनुभवों के आधार पर विभिन्न छवियां हैं; और ये सभी, निश्चित रूप से, आपको सुनने से रोकते हैं। जब मन जो कहा जा रहा है उसकी तुलना गीता, बाइबिल या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कही गई बातों से करता है, तो कोई वास्तविक श्रवण नहीं होता है। जब तुलना होती है, तो कोई समझ नहीं होती क्योंकि तुलना करने वाला मन तथ्य को देखना बंद कर देता है।

इसलिए सुनना काफी कला है—अपने संपूर्ण अस्तित्व के साथ सुनना। और जब आप किसी चीज़ में अत्यधिक रुचि रखते हैं तो आप उस तरह से सुनते हैं। अगर बात ज्यादा पैसे कमाने या मशहूर होने की हो तो आप पूरे दिल से सुनते हैं, है न? जब आप अपने लिए कुछ पाने की आशा करते हैं, तो आप इतने उत्सुक होते हैं कि आप सभी तुलनाओं को एक तरफ रख देते हैं। इसलिए आप तब सुनें जब यह आपके लिए लाभदायक हो - और आप शायद अब भी उसी तरह से सुन रहे हैं। लेकिन फिर, दुर्भाग्य से, आप व्यर्थ ही सुनते रहेंगे क्योंकि जो कहा जा रहा है वह आपके लिए लाभदायक नहीं है; आप इससे न तो इस दुनिया में और न ही अगली दुनिया में पैसा कमा पाएंगे। आपको बस पता लगाना है, उजागर करना है, खोजना है; और इसके लिए न केवल सुनने की बल्कि ध्यान देने की भी आवश्यकता है जो केवल एकाग्रता नहीं है।

क्या आप ध्यान और एकाग्रता के बीच अंतर जानते हैं? एकाग्र मन एकाग्र मन नहीं है, लेकिन एक मन जो ध्यान की स्थिति में है वह ध्यान केंद्रित कर सकता है। ध्यान कभी भी अनन्य नहीं होता; इसमें सबकुछ शामिल है. यदि आप जो कहा जा रहा है उसे सुनते समय चौकस हैं, तो आप पक्षियों की आवाज़, सड़क पर शोर, अपनी मुद्रा, अपने हावभाव और साथ ही अपनी गतिविधियों के बारे में भी जानते हैं। दिमाग। लेकिन यदि आप ध्यान केंद्रित करने के लिए ध्यान केंद्रित कर रहे हैं - जिसमें तनाव, बहिष्कार शामिल है, तो आप पाएंगे कि ऐसी एकाग्रता समझने के लिए अनुकूल नहीं है। मैं फिलहाल उस सब में नहीं जा रहा हूं.

मैं जो बताना चाहता हूं वह यह है कि मन प्रतीकों का क्षेत्र है, स्मृति का क्षेत्र है, ज्ञान का क्षेत्र है; और जब तक मन अपने क्षेत्र में रहता है, तब तक वह स्वतंत्रता से कार्य नहीं कर सकता। तो मुझे ऐसा लगता है कि ध्यान प्रयास, अनुशासन और ध्यान की इस प्रक्रिया के माध्यम से चेतना पर लगाई गई सीमाओं को स्वयं खोजने और समझने की पूरी प्रक्रिया है, जो मन को अपनी सीमाओं के बिना, व्यापक रूप से, गहराई से कार्य करने के लिए स्थान देती है। अपनी चिंताएँ और भय।

हमें निश्चित रूप से यह देखकर शुरुआत करनी होगी कि जीवन अनंत रूप से व्यापक है, इसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है। जीवन की शुरुआत और अंत तभी होता है जब यह 'आपका' होता है, यानी जब आप एक केंद्र से कार्य करते हैं। यह केंद्र वह 'आप' है जो आनंद का पीछा करता है, वह 'आप' जो झगड़ा करता है, वह महत्वाकांक्षी है, व्यर्थ है, मूर्ख है, वह 'आप' है जो पैदा हुआ था और मरने वाला है। इस केंद्र से कार्य करने वाला मन उस व्यक्ति की तरह है जिसने एक विस्तृत, गहरी बहती नदी के तट पर अपने लिए एक छोटी सी जगह बना ली है, और अपने शेष जीवन के लिए वह इस छोटी सी जगह में रहता है - जो कि अधिकांश है हम करते हैं. इस छोटी सी जगह में हम मिलते हैं, इस छोटी सी जगह में हम सद्गुण विकसित करते हैं, इस छोटी सी जगह में हम वासनापूर्ण होते हैं, हम व्यर्थ होते हैं, और बाकी सब कुछ, और हम कभी भी जीवन की पूरी धारा में प्रवेश नहीं करते हैं। हमारी सभी महत्वाकांक्षाएं, आदर्श, अनुशासन, नियंत्रण, समायोजन इस छोटे से आश्रय में हैं जिसे हम अपना जीवन कहते हैं - और इसके ठीक परे वास्तविक जीवन है, वह जीवन जो निरंतर गति में है, जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत।

अब, हमें उस जीवन को एक तथ्य के रूप में देखना होगा, न कि इसे एक सिद्धांत के रूप में मानना, या कहना, "यह बहुत अच्छा लगता है, लेकिन यह व्यावहारिक नहीं है।" हमें हर दिन इसका चिंतन करना है, इसे जीना है; अन्यथा, हम उसी दुख की स्थिति में बने रहेंगे जिसमें हम अभी हैं। हम विरोधाभास की स्थिति में हैं, हम भ्रमित हैं, हम दुख से भरे हुए हैं, आंतरिक रूप से गरीब हैं; हमारी खुशियाँ बहुत खोखली हैं क्योंकि हमने खुद को जीवन की उस असाधारण गति से अलग कर लिया है, और हमारा उससे बहुत कम संपर्क है। यह कोई काव्यात्मक उपमा नहीं है और जो कहा जा रहा है वह रूमानी भावुकता नहीं है. मैं एक ऐसे तथ्य के बारे में बात कर रहा हूं जिसे हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में सीधे अनुभव करना चाहिए, न कि किसी ऐसी चीज के रूप में मानना चाहिए जिसके लिए हमें प्रयास करना है। इसलिए हमें प्रयास को समझना होगा।

प्रयास क्या है? मुझे नहीं पता कि आपने कभी इसके बारे में सोचा है या नहीं. हम निरन्तर पुरूषार्थ करते हैं ना? सुबह आपको आलस महसूस होता है, लेकिन जब घंटी बजती है तो आप प्रयास करते हैं और बिस्तर से उठ जाते हैं। थोड़ी देर बाद तुम ऑफिस चले जाते हो, वहाँ फिर मेहनत करते हो। स्कूली छात्र एक पाशविक परीक्षा उत्तीर्ण करने का प्रयास करता है। इसमें सद्गुणी बनने का प्रयास, अपने मन को नियंत्रित करने का प्रयास, रिश्ते में तालमेल बिठाने का प्रयास, किसी लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास इत्यादि शामिल हैं। हममें से अधिकांश के लिए, जीवन प्रयास करने, प्रयास करने की एक प्रक्रिया है - एक निरंतर संघर्ष। क्यों? क्या आपने इस बारे में कभी सोचा?

निश्चित रूप से, हममें से अधिकांश लोग प्रयास करते हैं क्योंकि हम डरते हैं कि यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम और अधिक आलसी हो जायेंगे, या अपनी नौकरियाँ खो देंगे, या स्थिर हो जायेंगे। इसलिए प्रयास के पीछे भय है। अपने स्वयं के प्रयासों पर ध्यान दें, स्वयं का निरीक्षण करें और आप देखेंगे कि यदि आप प्रयास नहीं करते हैं तो शारीरिक, मानसिक, आंतरिक रूप से सो जाने का डर रहता है। और हम कहते हैं कि यह स्वाभाविक है, कि इस तरह जीना हमारे अस्तित्व का हिस्सा है। हमारे आस-पास की हर चीज़ प्रयास करती है। पेड़ को एक बनाना होगा

बढ़ने का प्रयास, इत्यादि; इसलिए, प्रयास अपरिहार्य है. लेकिन आइए इसमें थोड़ा और आगे बढ़ें और पता लगाएं कि क्या प्रयास वास्तव में अपरिहार्य है।

पुरूषार्थ का तात्पर्य संघर्ष है ना? यदि कोई संघर्ष न हो तो क्या आप प्रयास करेंगे? कृपया इस पर विचार करें, मेरे साथ इसमें शामिल हों, क्योंकि मैं एक ऐसी स्थिति को उजागर करना चाहता हूं जिसमें मन बिना प्रयास के काम करता है और जिसमें वह प्रयास करने वाले दिमाग की तुलना में कहीं अधिक जीवंत, कहीं अधिक बुद्धिमान होता है।

प्रयास का तात्पर्य, निश्चित रूप से, भीतर और बाहर संघर्ष से है। संघर्ष स्वयं में विरोधाभास के कारण उत्पन्न होता है। यदि कोई आत्म-विरोधाभास नहीं होता, तो आप वही होते जो आप हैं: मूर्ख, क्षुद्र, हिंसक, ईर्ष्यालु। आप जो हैं उसकी खोज कभी भी संघर्ष पैदा नहीं करती। ऐसा तभी होता है जब आप जो हैं उसे किसी और चीज़ में बदलना चाहते हैं तभी आत्म-विरोधाभास होता है और इसलिए संघर्ष होता है।

प्रयास का तात्पर्य सदैव द्वंद्व से है, क्या ऐसा नहीं है? - अच्छा और बुरा, सुख और दुख, और बाकी सब कुछ। द्वंद्व विरोधाभास है, और जब तक मन स्वयं के साथ विरोधाभास में है, तब तक संघर्ष होना ही चाहिए, जो प्रयास में प्रकट होता है। तो हमारी समस्या यह नहीं है कि क्या कोई प्रयास के बिना जी सकता है, बल्कि यह है कि क्या आत्म-विरोधाभास की इस स्थिति को पूरी तरह से खत्म करना संभव है। यह एक समस्या है, जिस पर हम थोड़ी देर बाद विचार करेंगे।

अब, अनुशासन से हमारा क्या तात्पर्य है? बचपन से ही हमें बड़ों के अनुरूप चलने, परंपरा का पालन करने, एक उदाहरण, एक नायक का अनुकरण करने, स्थापित पैटर्न के अनुसार खुद को समायोजित करने के लिए अनुशासित किया जाता है। और पैटर्न, नायक, परंपरा हमेशा सम्मानजनक होती है - सम्मानजनक वह है जिसे समाज द्वारा सार्थक माना जाता है।

कृपया इसका अनुसरण अवश्य करें, क्योंकि यह आपके स्वयं के जीवन का वर्णन है।

प्रत्येक राजनीतिक या धार्मिक संगठन में अनिवार्य रूप से प्रतिक्रिया का बीज होता है, और आप देख सकते हैं कि क्यों। नेताओं का निहित स्वार्थ है; वे अपने संगठन या पार्टी में कुछ लोग हैं, और वे नहीं चाहते कि यह टूटे। वे शांति के नाम पर, भाईचारे के नाम पर और बाकी सभी बकवास जो वे करते हैं, अपनी महत्वाकांक्षाएं पूरी कर रहे हैं। इसलिए, हर प्रकार के धार्मिक और राजनीतिक संगठन हमेशा प्रतिक्रिया के केंद्र होते हैं। वे चाहते हैं कि चीज़ें वैसे ही चलती रहें जैसे वे चल रही हैं, केवल थोड़े से बदलाव के साथ।

इसी प्रकार, एक मन जो संगठित है, अनुशासित है - अनुशासन है दमन, अनुरूपता, नकल, भय - चाहे वह राजनीतिक क्षेत्र में हो या तथाकथित धार्मिक क्षेत्र में, एक प्रतिक्रियावादी दिमाग है। यह परिवर्तन से डरता है, यह नए विचारों के आने को लेकर चिंतित है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि एक अव्यवस्थित दिमाग एक स्वतंत्र दिमाग है। यदि आप संगठित मन का विरोध अव्यवस्थित मन से करेंगे तो आप समझ नहीं पायेंगे कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। मैं हूँ

केवल एक ही चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं, जो कि संगठित मन, अनुशासित मन है - वह मन जो अनुकरण करता है, अनुरूप होता है, अनुसरण करता है - इसके विपरीत नहीं। ऐसा मन अनिवार्य रूप से भय को आमंत्रित करता है और इसलिए हर प्रकार के परिवर्तन, परिवर्तन, क्रांति का विरोध करता है। मैं क्रांति शब्द का प्रयोग आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक अर्थ में नहीं कर रहा हूं। उस स्तर पर क्रांतियाँ केवल आंशिक होती हैं; इसलिए, वे बिल्कुल भी क्रांतियाँ नहीं हैं। क्रांति आंशिक नहीं हो सकती; यह कुछ समग्र है. इसका धार्मिक या राजनीतिक मान्यताओं या आर्थिक उथल-पुथल से कोई लेना-देना नहीं है। क्रांति, जो हमेशा समग्र होती है, मन में होती है, सोचने की गुणवत्ता में होती है, अस्तित्व की गुणवत्ता में होती है।

हममें से अधिकांश को अनुशासित किया गया है, अनुरूप बनाया गया है। यदि आप किसी राजनीतिक दल से हैं, तो सचेतक, नेता आपको पार्टी लाइन के अनुरूप बनाते हैं। यदि आप आलोचना करते हैं, तो आप चले जाइये। यदि आप पोप या शंकराचार्य या किसी बड़े, प्रभावशाली धार्मिक नेता की आलोचना करते हैं तो धार्मिक संगठनों के साथ भी ऐसा ही है। इसलिए एक अनुशासित दिमाग स्वतंत्रता का विरोध करता है क्योंकि उसका विचार एक पैटर्न के अनुरूप कार्य करने के लिए व्यवस्थित होता है। एक अनुशासित दिमाग पूछताछ करने में असमर्थ है क्योंकि उसके पास पता लगाने के लिए जगह, स्वतंत्रता नहीं है।

अनुशासन के दायरे में ईश्वर के बारे में आपकी पूछताछ कोई पूछताछ नहीं है; यह सिर्फ परंपरा की बड़बड़ाहट है। लेकिन अगर आप यह पता लगाएंगे कि वास्तविकता है या नहीं, वह ऊर्जा जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है, जो किसी भी विश्वास या संगठित धर्म से संबंधित नहीं है - अगर आप यह पता लगाएंगे, तो आपके दिमाग को होने की इस प्रक्रिया को समझना होगा अनुरूप करने के लिए अनुशासित. आपको यह भी समझना होगा कि विचारक और विचारक के बीच संघर्ष क्यों होता है।

यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि अनुभवकर्ता और अनुभवी के बीच, विचारक और विचारक के बीच संघर्ष है। विचारक सेंसर है, न्यायाधीश है जो कहता है, "मुझे यह नहीं होना चाहिए, मुझे वह होना चाहिए; यह आनंददायक है, और मुझे इसका अनुसरण करना चाहिए; यह दर्दनाक है और मुझे इससे बचना चाहिए।" तो विचारक और विचारक के बीच एक विभाजन है।

यह रोजमर्रा का तथ्य है जिसे आप जानते और मानते हैं, है न? विचारक हमेशा हावी होने, विचार की गति को बदलने की कोशिश कर रहा है, और यह विभाजन, इसके संघर्ष के साथ, आप कहते हैं, अस्तित्व का एक अपरिहार्य हिस्सा है।

अब, हम जिस चीज से चिंतित हैं वह संघर्ष का पूर्ण उन्मूलन है क्योंकि संघर्ष में रहने वाला मन एक मूर्ख मन है। यह एक ऐसी मशीन की तरह है जो खराब काम करती है। यह अपने संघर्ष में बहुत चतुर हो सकता है, यह महान किताबें बना सकता है, शानदार भाषण दे सकता है, ऐसी कविताएँ लिख सकता है जो इसके संघर्ष और तनाव को प्रतिबिंबित करती हैं, लेकिन यह ऐसा दिमाग नहीं है जो अच्छाई में खिलता है; यह विरोधाभास और दर्द में खिलता है। इसलिए, हम संघर्ष के पूर्ण उन्मूलन को लेकर चिंतित हैं। ऐसा तभी होता है जब

मन इस द्वंद्व से मुक्त है कि वह जो है वही हो सकता है, और फिर वह सृजन की एक असाधारण भावना में सक्षम है - जिस पर हम वर्तमान में नहीं जाएंगे।

जब तक विचार से अलग कोई विचारक है, तब तक द्वंद्व है। इस विभाजन को, इसके द्वंद्व सहित, तुमने अपरिहार्य मान लिया है; लेकिन क्या ऐसा है? आप कहते हैं, "यह मेरा व्यावहारिक अनुभव है।" लेकिन भले ही शंकर, बुद्ध और बाकी सभी ने ऐसा कहा है, क्या मैं सुझाव दे सकता हूं कि आप इन अधिकारियों, साथ ही अपने अनुभव के अधिकार को अलग रख दें, और इसकी जांच करें।

क्या विचार से अलग भी कोई विचारक है? या फिर केवल विचार ही है, जो विचारक बनाता है? यदि कोई विचार नहीं है, तो जाहिर तौर पर कोई विचारक भी नहीं है।

कृपया, महोदय, यह कोई मौखिक चाल नहीं है; यह आपके लिए स्वीकार या अस्वीकार करने का तर्क नहीं है। यदि आप स्वीकृति या अस्वीकृति के संदर्भ में सोचते हैं, तो आप एक झूठी दुनिया में रह रहे हैं। मैं एक प्रश्न पूछ रहा हूं, जो यह है: यदि कोई विचार नहीं है, तो विचारक कहां है? क्योंकि विचार क्षणभंगुर है, क्षणभंगुर है, निरंतर प्रवाह की स्थिति में है; यह एक स्थायी इकाई की मांग करता है, इसलिए विचार विचारक का निर्माण करता है। क्या आप नहीं चाहते कि सब कुछ स्थायी हो? आपकी नौकरी, आपकी संपत्ति, आपका बैंक खाता, आपकी पत्नी या पति के साथ आपका रिश्ता- क्या आप नहीं चाहते कि ये चीजें स्थायी, टिकाऊ हों? आप चाहते हैं कि आपकी आत्मा परलोक में भी बनी रहे; आप चाहते हैं कि आपके सोचने का तरीका, आपके जीने का तरीका, आपकी सुख-सुविधाएं, आपकी शान-शौकत हमेशा कायम रहे। तो आपका विचार एक स्थायी इकाई बनाता है जिसे आप विचारक कहते हैं, और आप विचारक को विभिन्न गुण देते हैं, इसे आत्मा, उच्च स्व और इसके बाकी सभी गुण कहते हैं। लेकिन यह सब विचार के क्षेत्र में है, और विचार समय है क्योंकि विचार स्मृति की प्रतिक्रिया है - ज्ञान या अनुभव के रूप में स्मृति।

तो विचार विचारक, सेंसर, पर्यवेक्षक का निर्माण करता है। और क्या सेंसर के बिना सोचना संभव है? क्या तुम समझ रहे हो? क्या पर्यवेक्षक के बिना निरीक्षण करना संभव है? सहमत या असहमत मत होइए श्रीमान। कृपया, आपको पता लगाना होगा। आपका स्वयं का एक प्रत्यक्ष अनुभव सभी पुस्तकों की तुलना में अधिक मूल्यवान है। यदि आप स्वयं पता लगा सकें कि सत्य क्या है, तो आप सभी वेदों, उपनिषदों, गीता और बाइबिल को जला सकते हैं; वे देखने लायक नहीं हैं

पर।

अब, आपको सीधे तौर पर स्वयं यह पता लगाना होगा कि क्या विचारक के बिना सोचने की, अनुभवकर्ता के बिना अनुभव करने की उस स्थिति में रहना संभव है। कृपया महोदय, यह जटिल नहीं है। आपके तीव्र क्रोध के क्षण में, क्या कोई पर्यवेक्षक है? भावनात्मक उथल-पुथल होने के बाद ही आप कहते हैं, "बाय जोव, मैं क्रोधित था।" फिर पहचान आती है, और निंदा की प्रक्रिया शुरू होती है; इसमें विरोधाभास है, द्वंद्व है, समाज द्वारा सम्मानजनक माने जाने वाले पैटर्न के अनुरूप होने का प्रयास है। क्या आप

समझे श्रीमान? पैटर्न को सम्मानजनक माना जाता है; अन्यथा, आप इसके अनुरूप बनने का प्रयास नहीं करेंगे। और सम्माननीयता एक भयावह, एक कुरूप चीज़ है क्योंकि यह सामान्यता का द्वार खोलती है।

तो, हमारी समस्या मन की उस स्थिति को समझने की है जो ध्यान में होती है क्योंकि ध्यान आवश्यक है - लेकिन वह ध्यान नहीं जिसका अभ्यास ज्यादातर लोग एक कमरे में बैठकर करते हैं और बहुत सारे शब्दों को दोहराते हैं; वह ध्यान नहीं है. दोहराव केवल दिमाग को सुला देता है, और आप ट्रैंक्विलाइज़र लेकर यह काम बहुत आसानी से कर सकते हैं। मुझे पता है कि जो कहा जा रहा है वह आपको नापसंद होगा क्योंकि आपने पाया है कि कुछ शब्दों और नामों को दस मिनट तक दोहराने से आपका मन धीरे-धीरे शांत हो जाता है, लेकिन वह केवल सो जाता है, और इसे ही आप ध्यान कहते हैं। जब आप अपने लिए, अपने देश के लिए, अपनी पार्टी के लिए, या अपने परिवार के लिए कुछ मांगते हैं, प्रार्थना करते हैं, याचना करते हैं तो आप इसे ध्यान भी कहते हैं। आप आंतरिक गरीबी का भीख का कटोरा सामने रखते हैं और किसी से इसे भरने के लिए कहते हैं। वह ध्यान नहीं है.

जैसा कि आप देखेंगे, ध्यान बिल्कुल अलग चीज़ है। ध्यान की स्थिति तभी संभव है जब मन में अवलोकन के लिए जगह हो, और उस जगह को उस मन को नहीं दिया जाता है जो एक पैटर्न के अनुरूप दबा हुआ, अनुशासित है। ध्यान, चिंतन की स्थिति में मन कुछ भी बनने का प्रयास नहीं कर रहा है।

महोदय, मैं केवल वही बात अलग-अलग शब्दों में कहने का प्रयास कर रहा हूं जो पहले कही जा चुकी है। यदि आपने पिछले चालीस मिनट या उससे अधिक समय से बातचीत का अनुसरण नहीं किया है, तो आप यह नहीं समझ पाएंगे कि अब क्या कहा जा रहा है।

चिंतन में मन प्रतीकों से मुक्त होता है; इसमें कोई दृष्टि नहीं है क्योंकि दृष्टि उस पृष्ठभूमि के प्रक्षेपण हैं जिसमें इसे अनुकूलित किया गया है।

चिंतन में डूबा मन अब प्रयास नहीं कर रहा है, जैसा कि आमतौर पर प्रयास समझा जाता है; इसलिए, कोई पर्यवेक्षक नहीं है, कोई सेंसर नहीं है। चिंतन में एक मन, जो ध्यान की स्थिति है, पूरी तरह से शांत होता है, और वह मौन प्रेरित नहीं होता है। आप अपने मन को चुप रहने के लिए अनुशासित कर सकते हैं, लेकिन यह केवल आप जो चाहते हैं उसे पाने की आशा में एक पैटर्न के अनुरूप है; इसलिए, यह मौन नहीं है. ध्यान में मन बिल्कुल शांत होता है, और उस मौन को प्रक्षेपित नहीं किया जाता, न इसकी कामना की जाती है, न ही विकसित किया जाता है। वह मौन क्षण-क्षण है, उसमें कोई सातत्य नहीं है; इसलिए, इसका अभ्यास नहीं किया जा सकता, इसे तब तक विकसित नहीं किया जा सकता जब तक आप विनम्रता विकसित नहीं कर सकते। क्या तुम समझ रहे हो? यदि आप खेती करते हैं, विनम्रता विकसित करते हैं, तो आप अब विनम्र नहीं हैं; आप नहीं जानते कि विनम्रता का मतलब क्या होता है. विनम्रता की खेती संतों, नेताओं पर छोड़ दें, जो घमंड से भरे हुए हैं और इसलिए इसके विपरीत खेती करते हैं, इस उम्मीद में कि वे और भी अधिक सम्मानजनक बन जाएंगे। की खेती

सद्गुण सीमित करने का प्रयास है, इसलिए मौन का यह गुण विकसित करने लायक नहीं है।

ध्यान में मन ऐसी स्थिति में होता है जहां विचार की कोई गति नहीं होती है, और इसलिए उस पृष्ठभूमि का कोई प्रक्षेपण नहीं होता है जिसमें वह रहता है।
केवल मन ही वह सब कुछ समझता है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं - तथ्य को समझने के अर्थ में समझा जाता है, न कि केवल शब्दों, स्पष्टीकरणों को स्वीकार कर लिया है, जो कि राख हैं - और इसलिए एक चुप्पी के साथ पूरी तरह से चुप है जो प्रेरित नहीं है साँस लेने से या किसी अन्य युक्ति से - केवल ऐसा मन ही है जो अथाह, शाश्वत को जान सकता है, जिसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है।

28 फ़रवरी 1960

छठी वार्ता नई दिल्ली में

क्रांति और धर्म के बारे में पूछताछ करने से पहले, जिसके बारे में मैं आज शाम बात करना चाहूंगा, मुझे लगता है कि हमें यह समझना चाहिए कि सीखने से हमारा क्या मतलब है। यह केवल तभी होता है जब हम तथ्यों को वैसे देखते हैं जैसे वे वास्तव में हैं तभी हम उनके बारे में जान सकते हैं। लेकिन हममें से अधिकांश लोग तथ्यों की व्याख्या करने या उनके बारे में कुछ करने की कोशिश किए बिना उन्हें वैसे ही देखने में असमर्थ हैं। जब हमारा सामना किसी तथ्य से होता है, तो हममें से अधिकांश इसे पूर्वाग्रह के साथ, मनमौजी पूर्वाग्रह के साथ, अपने विशेष ज्ञान या अनुभव के साथ देखते हैं, चाहे वह वैज्ञानिक, नौकरशाही, व्यवसायिक, धार्मिक, या आप जो चाहें; इसलिए हम कभी भी तथ्य पर गौर नहीं करते। और मुझे ऐसा लगता है कि हम जीवन में किसी भी चीज़ के बारे में तभी सीख सकते हैं जब हम निष्कर्ष, विचार और राय के साथ तथ्य तक पहुंचना बंद कर देते हैं, क्योंकि केवल तभी तथ्य अपना महत्व प्रकट करना शुरू करता है।

इसलिए मैं आज शाम को सुझाव दूंगा कि हम धर्म की समस्या और क्रांति की समस्या को सबसे पहले यह देखने के इरादे से देखें कि तथ्य क्या हैं, जिसका अर्थ है कि हमें उन्हें अपनी कंडीशनिंग के बिना देखना चाहिए। यह बहुत कठिन होने वाला है क्योंकि हम बहुत अधिक अनुकूलित हैं - हिंदू के रूप में, मुस्लिम के रूप में, ईसाई के रूप में, राजनीतिक रूप से, तकनीकी रूप से और अन्य तरीकों से अनुकूलित। लेकिन अगर हम अपने विभिन्न संस्कारों को एक तरफ रख सकें और तथ्यों को देख सकें, तो मुझे लगता है कि हम असीम रूप से सीखने में सक्षम होंगे।

यह असाधारण गति, जिसे हम जीवन कहते हैं, सीखने योग्य चीज़ है और सीखने में न तो कोई शुरुआत होती है और न ही कोई अंत। हम तभी सीखना बंद करते हैं जब हम जीवन को अपने संकीर्ण पूर्वाग्रहों और पूर्वाग्रहों के साथ देखते हैं।

जीवन तो विशाल है ना? अपनी सारी सुंदरता, अपने दुखों, कष्टों और विरोधाभासों, अपनी गरीबी, पतन और भय, अपनी चिंताओं, आशाओं और निराशाओं के साथ, जीवन वास्तव में अथाह है; और यह सब समझने के लिए, हमारे पास निश्चित रूप से एक ऐसा दिमाग होना चाहिए जो अथाह समझने में सक्षम हो। लेकिन दुर्भाग्य से, हममें से अधिकांश को ऐसी कोई समझ नहीं है, और जब हम किसी महत्वपूर्ण समस्या का सामना करते हैं, तो हमारी प्रतिक्रिया हमेशा हमारी कंडीशनिंग, हमारे पूर्वाग्रहों आदि से निर्धारित होती है।

तो, आज शाम आइए देखें कि क्या हम गंभीरता से, पूरे इरादे के साथ, वह सब जो हम जानते हैं या सोचते हैं कि हम जानते हैं, उन सभी चीज़ों को जिनसे हम परिचित हैं, एक तरफ रखकर वास्तविक तथ्यों को नहीं देख सकते हैं। तब, शायद, हम सीखने में सक्षम होंगे, और सीखना क्रिया है। क्रिया और सीखना अलग-अलग नहीं हैं। सीखने की गति का तात्पर्य समस्या के महत्व को देखते हुए समझना है - इसकी चौड़ाई, इसकी गहराई, इसकी ऊंचाई। समस्या की अनुभूति ही क्रिया है। क्रिया और धारणा अलग-अलग नहीं हैं। लेकिन जब हमारे पास समस्या के बारे में कोई विचार होता है, तो विचार क्रिया से अलग हो जाता है, और तब आगे की समस्या यह उत्पन्न होती है कि विचार के अनुरूप क्रिया कैसे की जाए। इसलिए, जो मायने रखता है वह यह है कि हम समस्या को बिना किसी डर, बिना चिंता, बिना अपने स्वभाविक मूल्यांकन के देखें, तभी हम सीखने में सक्षम होंगे, और सीखने की वह गति ही क्रिया है।

मुझे लगता है कि आगे बढ़ने से पहले हमें इसे बहुत स्पष्ट रूप से देखना चाहिए क्योंकि हमें कार्य करना चाहिए, हमें अपनी सोच में, अपनी नैतिकता में, अपने रिश्तों में एक जबरदस्त क्रांति लानी चाहिए। जाहिर तौर पर हमारे जीवन के सभी तरीकों में आमूल-चूल परिवर्तन, संपूर्ण क्रांति होनी चाहिए। लेकिन हम क्रांति की उस स्थिति में नहीं हो सकते हैं यदि हम इस मूलभूत तथ्य को नहीं देखते हैं कि जहां समझ है वहां कार्रवाई है। क्रिया समझ या धारणा से अलग नहीं है। जब मैं किसी समस्या को समझता हूं, तो उस समझ में कार्रवाई भी शामिल होती है। जब मैं गहराई से अनुभव करता हूँ, तो वही अनुभूति स्वयं में एक क्रिया लाती है। लेकिन अगर मैं केवल अनुमान लगाता हूं, अगर मेरे पास समस्या के बारे में कोई विचार है, तो विचार कार्रवाई से अलग है, और आगे की समस्या यह आती है कि विचार को कैसे क्रियान्वित किया जाए। तो आइए हम यह स्पष्ट रूप से ध्यान में रखें कि समझ क्रिया है, समझ क्रिया से अलग नहीं है।

अब, तथ्य क्या हैं? एक प्रमुख तथ्य यह है कि दुनिया भर में धार्मिक और राजनीतिक नेता भी उतने ही भ्रमित हैं जितने उनके अनुयायी।
धार्मिक नेता कह सकते हैं, “हम भ्रमित नहीं हैं; हमारा विश्वास है, हमारा विश्वास है; हम जानते हैं, हम समझते हैं कि क्या सत्य है।” लेकिन धार्मिक नेता ईसाई या हिंदू या मुस्लिम हैं; उनके दिमाग एक पैटर्न के अनुसार आकार लेते हैं, उस संस्कृति से अनुकूलित होते हैं जिसमें वे रहे हैं

परवरिश। उन्हें उनकी कंडीशनिंग से हटा दें, और वे पूरी तरह से खो जाएंगे। प्रत्येक धार्मिक नेता के पास अनुयायियों का एक समूह होता है जो उसके अधिकार को स्वीकार करते हैं, और वह अधिकार उनकी आपसी कंडीशनिंग पर आधारित होता है। कोई भी हिंदू पोप का अनुसरण नहीं करेगा, और कोई भी कैथोलिक हिंदू गुरु का अनुसरण नहीं करेगा - हालांकि एक हिंदू जो परेशान है, निराश है, ईसाई प्राधिकरण में शरण ले सकता है, और इसके विपरीत भी।

इसलिए, राजनीतिक नेताओं की तरह, धार्मिक नेता भी मौलिक रूप से भ्रमित हैं। वे सभी विरोधाभास की स्थिति में हैं। यद्यपि राजनीतिक नेता शांति, विश्व एकता के बारे में बात कर सकते हैं, और उन सभी आसान शब्दों को दोहराते हैं जिनका उपयोग वे लोगों का शोषण करने के लिए करते हैं, वे भ्रम में हैं, विरोधाभास की स्थिति में हैं। यह एक तथ्य है. दूसरा सच ये है कि इन्हें फॉलो करने वाले आप भी भ्रमित हैं. आप अपने नेताओं को अपने भ्रम से चुनते हैं, और जिन्हें आप अपने भ्रम से चुनते हैं वे भी उतने ही भ्रमित होंगे। जो मन अपने आप में बहुत स्पष्ट है, जो हर चीज़ को पूर्णता से, सही अनुपात में देखता है, उसका अनुसरण नहीं करता और नेता नहीं बनता।

यह एक बड़ा तथ्य है कि हम सभी भ्रमित हैं। हममें से बहुत कम लोग इस संपूर्ण भ्रम के बारे में जानते हैं - संपूर्ण इस अर्थ में कि हमारा संपूर्ण अस्तित्व भ्रमित है।
हममें से अधिकांश लोग कहते हैं, "हम केवल आंशिक रूप से भ्रमित हैं। हमारे अंदर ऐसे क्षेत्र हैं जो बहुत स्पष्ट हैं, और इस प्रकाश के माध्यम से हम अपने आंशिक भ्रम को समाप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन एक भ्रमित मन केवल भ्रम के संदर्भ में ही सोच सकता है। यह स्पष्टता के विचारों को प्रस्तुत कर सकता है, लेकिन यह अभी भी भ्रमित है, और जहां भ्रम है, वहां गिरावट निश्चित है। हो सकता है कि आपके पास बेहतर कृषि पद्धतियाँ हों, चंद्रमा तक जाने वाले रॉकेट हों, और बाकी सब कुछ हो, लेकिन अंदर से गिरावट का एहसास होता है। हमने अस्तित्व की समस्या से निपटने के विभिन्न तरीके आज़माए हैं, और वे सभी विफल रहे हैं।

धर्म विफल हो गया है, शिक्षा विफल हो गई है, और राजनीति वास्तव में बहुत कम समझ में आती है क्योंकि राजनेता हमेशा मनुष्य की समग्रता के साथ नहीं, बल्कि आंशिक रूप से व्यवहार करते हैं। राजनेता को तात्कालिकता की चिंता होती है, संपूर्ण समय की नहीं। इसलिए भ्रम और गिरावट की भावना है; वहाँ अव्यक्त दुःख और अपार, अथाह निराशा है।

मैं नहीं जानता कि क्या आप निराशा के इस तथ्य, इस भावना से अवगत हैं कि कोई रास्ता नहीं है। मनुष्य ने अनेक प्रकार से प्रयत्न किये हैं। उन्होंने ज्ञान की कोशिश की है, उन्होंने संगठित धर्म की कोशिश की है, उन्होंने दर्शन की विभिन्न प्रणालियों की कोशिश की है, और इन सबके बाद वह एक खाली दीवार पर आ गए हैं, इसलिए निराशा की भावना है। मनुष्य अपने बंधन के अंत तक पहुँच गया है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपको इसके बारे में कुछ भी पता है! शायद आप निराशा को केवल अपने जीवन के संदर्भ में ही जानते हों। निराशा तब होती है जब आप किसी चीज़ को बहुत शिद्दत से चाहते हैं और वह आपको नहीं मिल पाती;

जब आपकी पत्नी या पति, आपका बेटा या भाई मर जाता है तो निराशा होती है। यदि आप एक छोटे कद के व्यक्ति हैं जो अमीर और प्रसिद्ध होना चाहते हैं, तो आप जो चाहते हैं उसे हासिल करने में निराशा हो सकती है। यह सब एक व्यापक, गहरी निराशा का हिस्सा है जिसमें कार्रवाई ने अपना अर्थ खो दिया है, जिसमें मंदिरों, दर्शन, गुरुओं का कोई महत्व नहीं रह गया है। बेशक, मनोरंजन, मनोरंजन, सतहीपन, पलायन की दुनिया है; लेकिन हमें इससे निपटना नहीं है क्योंकि हममें से जो लोग बिल्कुल भी गंभीर हैं वे पहले ही इसे समझ चुके हैं।

तो, जब हम भ्रम, गिरावट, भ्रष्टाचार और निराशा की भारी भावना का सामना कर रहे हैं, तो हम क्या करें? हममें से अधिकांश लोग अपनी समस्याओं को हल करने के साधन के रूप में आस्था की ओर रुख करते हैं - धार्मिक प्राधिकार में आस्था, या राज्य की सत्ता में आस्था।

कृपया इन सबका पालन करें क्योंकि हमें मन की एक नई गुणवत्ता लानी है; एक मौलिक क्रांति, एक गहन उत्परिवर्तन घटित होना है, और यह घटित नहीं हो सकता यदि हम इन सभी तथ्यों से अवगत नहीं हैं।

जैसा कि मैं कह रहा था, वर्तमान संकट का सामना करते हुए, हममें से अधिकांश लोग आस्था की ओर मुड़ते हैं - ईश्वर के विचार में आस्था, या राज्य में आस्था, या भविष्य के यूटोपिया में आस्था, कम्युनिस्टों द्वारा बनाई जाने वाली एक अद्भुत नई दुनिया, समाजवादी, राजनेता। विश्वास एक असाधारण चीज़ है, यदि आप इसका अवलोकन करें, क्योंकि यह इंगित करता है कि हम उस चीज़ से चिपके रहना चाहते हैं जो हमारे लिए किसी नेता, किसी विशेषज्ञ, राजनेता या पुजारी द्वारा बनाई गई है। अर्थात्, भ्रमित, अनिश्चित, निराशा की स्थिति में, हम कुछ ऐसा चाहते हैं जिससे हम चिपके रह सकें, इसलिए या तो हम एक मृत धर्म के पुनरुद्धार की ओर मुड़ते हैं या हम राजनेताओं की मदद से एक नया राज्य बनाने का सपना देखते हैं। अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, इत्यादि की सहायता। पुजारी के माध्यम से, एक संगठित धर्म के माध्यम से, या एक तथाकथित नए समाज को लाने के लिए काम करके भगवान की पूजा करके, हम कुछ ऐसा पाने की उम्मीद करते हैं जिस पर हम अपनी सभी समस्याओं को हल करने के लिए भरोसा कर सकते हैं। तो, आस्था का तात्पर्य निश्चित रूप से अधिकार से है, है ना? - वह अधिकार जो आशा पैदा करता है।

कृपया इसका पालन करें - न केवल शब्दों का, बल्कि, यदि आप चाहें, तो अपने मन का भी निरीक्षण करें। क्योंकि आज शाम हम क्या कर रहे हैं? हम एक-दूसरे के साथ संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं। ज़ोर से सोचने में, मैं नैतिकता नहीं बना रहा हूँ - यह एक भयानक, बदसूरत चीज़ है। न ही मैं कानून बना रहा हूं, जो तथाकथित नेताओं का एक और आतंक है। हम इन कठिनाइयों के बारे में एक-दूसरे से बातचीत करने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए आपको अपने मन पर नजर रखनी होगी, आपको अपने जीवन का निरीक्षण करना होगा, आपको अपनी खुद की कंडीशनिंग के प्रति जागरूक होना होगा। मैं हूँ

केवल वर्णन करना, और यदि आप केवल वर्णन से संतुष्ट हैं, तो जो कहा जा रहा है उसका बहुत कम अर्थ होगा।

अब, हममें से अधिकांश, जब हम भ्रमित होते हैं, निराशा में होते हैं, तो किसी का अनुसरण करना चाहते हैं, इसलिए हमें किसी नेता पर विश्वास होता है, चाहे वह धार्मिक हो या राजनीतिक। लेकिन जब एक भ्रमित, निराश मन दूसरे का अनुसरण करता है, तो यह केवल अधिक दुख, अधिक भ्रम पैदा करता है। आप अपने भ्रम से नेता चुनते हैं, इसलिए नेता स्वयं भ्रमित होता है; इसलिए, आपके अनुसरण का कोई मूल्य नहीं है।

इसकी सच्चाई देखकर कोई क्या करे?

जिस धर्म को हम जानते हैं, जिस धर्म के प्रति हम संस्कारित हुए हैं, वह वास्तविक समाधान नहीं है, यद्यपि वास्तविक धर्म ही समाधान है। आइए हम उसमें चलते हैं. हम देखते हैं कि, हमारे अपने जीवन की तरह, दुनिया भी अराजक दुख की स्थिति में है, और हम इसे समझ नहीं पाते हैं; इसलिए, हम जीवन को समझने की आशा में, सत्य को, ईश्वर को, या आप जो चाहते हैं उसे समझने की आशा में धर्म की ओर मुड़ते हैं और क्या होता है? धर्म, अपने सभी अंधविश्वासों, अपनी मान्यताओं और प्रतिबंधों के साथ, हमें बताता है कि एक ईश्वर है, कि हमें यह होना चाहिए, हमें वह नहीं होना चाहिए, इत्यादि इत्यादि। दूसरे शब्दों में, हम उस धर्म से संस्कारित होते हैं जिसमें हम पले-बढ़े हैं, या समाधान पाने की आशा में हम जिस धर्म की ओर रुख करते हैं। यह कंडीशनिंग एक सचेत प्रक्रिया नहीं है; यह आम तौर पर अचेतन है, लेकिन जिस क्षण हम अपनी कंडीशनिंग के प्रति सचेत हो जाते हैं, हम देखते हैं कि धर्म, जैसा कि यह है, इसका उत्तर नहीं है।

धर्म, जैसा कि है, मूलतः विचारों पर, आस्था पर, अधिकार पर आधारित है। एक व्यक्ति जो प्रतिदिन मंदिर जाता है, जो गीता, बाइबिल या नमाज पढ़ता है, जो कुछ अनुष्ठान करता है, जो कुछ शब्दों को हमेशा दोहराता है, कृष्ण, राम, यह या वह नाम, जो ऐसा पहनता है- जनेऊ कहलाता है और किसी तीर्थयात्रा पर जाने की इच्छा रखता है—उसे आप धार्मिक व्यक्ति मानते हैं। लेकिन निश्चित रूप से, वह धर्म नहीं है। यह एक कुरूप, भयानक, मूर्खतापूर्ण बात है। लेकिन हममें से ज्यादातर लोग इसमें फंस जाते हैं और बाहर नहीं निकल पाते।

बाहर निकलने के लिए, अपनी कंडीशनिंग को तोड़ने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो हमारे पास नहीं है क्योंकि हमारी ऊर्जा आजीविका कमाने और किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करने में चली जाती है। समाज के विरुद्ध जा रही मांगों को बदलना है ना? और यदि हिंदू समाज में आप हिंदू नहीं थे, या यदि आप ब्राह्मण समाज में ब्राह्मण नहीं थे, या प्रोटेस्टेंट या कैथोलिक समाज में ईसाई नहीं थे, तो आपको नौकरी पाना मुश्किल हो सकता है।

तो, हमारी कठिनाइयों में से एक यह है कि स्वयं में क्रांति लाने के लिए जबरदस्त ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो हममें से बहुत कम लोगों के पास है क्योंकि ऊर्जा, इस अर्थ में, धारणा का तात्पर्य है। किसी भी चीज़ को बहुत स्पष्ट रूप से देखने के लिए, आपको अपना पूरा ध्यान उस पर देना होगा, और यदि वहाँ है तो आप अपना पूरा ध्यान नहीं दे सकते

भय की कोई छाया - आर्थिक भय या सामाजिक भय, जो जनमत का भय है। डर की स्थिति में होने के कारण, हम वास्तविकता या ईश्वर को कुछ दूर, अलौकिक, कुछ ऐसी चीज़ के रूप में सोचते हैं जिसके लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है, टटोलना पड़ता है - आप जानते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन के संघर्ष से बचने के लिए उन सभी युक्तियों का उपयोग करते हैं जो हम शांति, अच्छाई, ईश्वर कहते हैं। यही हमारी वास्तविक स्थिति है, है न?

फिर, हम देखते हैं कि संगठित धर्म, अपने अंधविश्वासों, विश्वासों और हठधर्मियों के साथ, बिल्कुल भी धर्म नहीं है और न ही कभी रहा है। हमें बचपन से इन चीज़ों को धर्म के रूप में स्वीकार करने के लिए केवल शिक्षित किया गया है, संस्कारित किया गया है, इसलिए संगठित धर्म वास्तव में सच्चा धार्मिक जीवन क्या है, इसकी खोज में बाधक है।

फिर संगठित क्रांति है, जो पृथ्वी पर एक नया और अद्भुत राज्य लाने वाली है - लेकिन जो वास्तव में एक प्रतिक्रियावादी आंदोलन है क्योंकि जो लोग इसे संगठित करते हैं वे स्वयं पुजारियों की तरह ही वातानुकूलित हैं। वे मार्क्सवादी, कम्युनिस्ट, समाजवादी हैं; वे भी किसी चीज़ से संबंधित हैं, और उनके पास भी विचार और कार्य का एक पैटर्न है जिसके अनुसार वे चाहते हैं कि आप उनके अनुरूप हों।

क्या आपको एहसास है, श्रीमान, दुनिया में क्या हो रहा है? मनुष्य अपनी स्वतंत्रता खो रहा है, और वह एक बेहतर आर्थिक समाज की आशा में अपनी स्वतंत्रता खोने को तैयार है। साम्यवाद या तथाकथित समाजवाद के किसी अन्य रूप की आड़ में अत्याचार फैल रहा है, और आपको इसकी परवाह नहीं है क्योंकि आप कहते हैं, "कम से कम मेरे बच्चे मुझसे बेहतर होंगे, और गरीबों को खाने के लिए कुछ मिलेगा। ” जब तक आपके पास भोजन, वस्त्र और आश्रय है, तब तक आपको गुलाम बने रहने में कोई आपत्ति नहीं है; इसलिए आप बहुत सतही जीवन जीते हैं, और उसी से आप संतुष्ट रहते हैं। लेकिन मनुष्य सब कुछ सतह पर नहीं है; वह एक असाधारण रूप से जटिल इकाई है, और इस जटिल इकाई को समझे बिना, केवल सतह पर सुधार लाने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि यह केवल और भी अधिक दुख, और भी अधिक भ्रम और गुलामी पैदा करेगा। कृपया इसे समझें. हम अब एक विश्वव्यापी संकट में हैं, और आप यह कहकर इस संकट का सामना नहीं कर सकते कि हमें हिंदू धर्म, या इस्लाम, या ईसाई धर्म में वापस जाना चाहिए। यह एक मूर्खतापूर्ण उत्तर है; यह कोई परिपक्व प्रतिक्रिया नहीं है.

इन सबकी सच्चाई देखकर कोई क्या करे? कृपया यह प्रश्न अपने आप से पूछें। किसी के करने के लिए क्या है? आप किसी भी संगठित धर्म में शामिल नहीं हो सकते, आप किसी सामाजिक सुधार समूह, किसी राजनीतिक दल से संबंधित नहीं हो सकते, क्योंकि वे सभी केवल आंशिक रूप से काम कर रहे हैं। कोई धार्मिक या राजनीतिक नेता नहीं है, जो तुम्हें बचाएगा। किसी नेता का अनुसरण करने से आपको रोटी तो मिल सकती है, लेकिन आप रोटी से संतुष्ट नहीं होंगे। आप भी महत्वाकांक्षी हैं, चाहते हैं

शक्ति, पद, प्रतिष्ठा. मुक्त होने के लिए, आपको संपूर्ण जटिल इकाई को समझना होगा जो कि आप स्वयं हैं और किसी राजनीतिक या धार्मिक नेता की आंशिक प्रतिक्रिया को स्वीकार नहीं करना है।

तो, किसी को क्या करना है? निराशा में होना, भ्रमित होना और दुख की स्थिति में होना, जीने और मरने दोनों से भयावह रूप से भयभीत होना, किसी को क्या करना चाहिए? मुझे आश्चर्य है कि क्या हमने कभी खुद से यह सवाल पूछा है? हम सभी को अपने जीवन में छोटी-मोटी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, साथ ही छोटी-मोटी प्रतिक्रियाएँ भी मिली हैं।
लेकिन ये चुनौती कोई छोटी-मोटी नहीं है. आप समझे की मेरा आशय क्या है?
गरीबी को देखकर, आप कहते हैं, "मुझे इसके बारे में कुछ करना चाहिए," और तब आपकी कार्रवाई एक छोटी सी चुनौती की छोटी सी प्रतिक्रिया होती है। या, निराशा में होने के कारण, आप किसी आशा की ओर मुड़ते हैं जो फिर से एक छोटी सी प्रतिक्रिया है। हम सभी के जीवन में ये छोटी-मोटी चुनौतियाँ और छोटी-मोटी प्रतिक्रियाएँ आई हैं। और उस सब की निरर्थकता को देखते हुए, अब हम अपने आप से यह प्रश्न पूछ रहे हैं: किसी को क्या करना है? इसलिए यह एक बड़ी चुनौती है जिसका हम मामूली तरीके से जवाब नहीं दे सकते। क्या तुम समझ रहे हो?

महोदय, हमने अपनी मुस्कान खो दी है, हमने अपनी हँसी खो दी है, हम अब सुंदरता नहीं देखते हैं। हमारी दुनिया भारतीय और चीनी, पूंजीवादी और साम्यवादी, जर्मन और अंग्रेजी, रूसी और अमेरिकी, हिंदू और इस्लामी में विभाजित है।
परन्तु पृथ्वी तो हमारी है; यह कम्युनिस्टों या पूंजीपतियों, हिंदुओं या ईसाइयों का नहीं है। यह हमारी, आपकी और मेरी धरती है, जिस पर रहना है, समृद्ध होना है। हाय पृथ्वी विस्तृत और सुंदर है, देखने में एक सुंदर चीज़ है - और हमने इसे विभाजित कर दिया है। राजनीति के माध्यम से, स्वामित्व की भावना के माध्यम से, महत्वाकांक्षा और धार्मिक कट्टरता के माध्यम से, हमने इसे संकीर्ण बना दिया है। हम उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम, आपके देश और मेरे देश, आपकी संपत्ति और मेरी संपत्ति के संदर्भ में सोचते हैं; और हम सभी सत्ता, पद, प्रतिष्ठा की तलाश में हैं।

अब, जब कोई यह सब भयावहता, यह दुख, यह पतन, भ्रष्टाचार और हिंसा देखता है, तो उसे क्या करना चाहिए? मेरा मानना है कि एक संपूर्ण उत्तर है, और एक संपूर्ण उत्तर आवश्यक है क्योंकि आंशिक उत्तर अब अच्छे नहीं हैं। गुरु, तथाकथित धार्मिक व्यक्ति कहते हैं, "भगवान की तलाश करो, और तुम्हें सभी उत्तर मिलेंगे।" यह बिल्कुल बकवास है क्योंकि आपको इस दुनिया में रहना है। अब आप हिमालय या किसी मठ की ओर भाग नहीं सकते हैं या क्रॉस या क्रिसेंट या किसी अन्य प्रतीक में खुद को खो नहीं सकते हैं। वह दिन अब लद गए। आपको स्वयं ही यह पता लगाना होगा कि क्या करना है क्योंकि बचने का कोई रास्ता नहीं है। तर्क अब तुम्हारे लिए द्वार नहीं खोल सकता; किसी भी प्रकार की बौद्धिक चालाकी आपको शांति, शांति, प्रेम की भावना नहीं दिलाएगी। बुद्धि बंजर हो गई है, और जो कुछ बुद्धि से उत्पन्न होता है वह बंजर है। आप भरोसा नहीं कर सकते

ज्ञान के मामले में आप गीता, बाइबिल या किसी अन्य पुस्तक पर भरोसा नहीं कर सकते क्योंकि अधिकार पर भरोसा करने का कोई मतलब नहीं है। कृपया इसका एहसास करें.
आपने अपने पूरे जीवन में अधिकार पर भरोसा किया है, और आप अभी भी दुखी हैं, भय, चिंता, निराशा से ग्रस्त हैं।

तो, किसी को क्या करना है? जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगता है कि एक संपूर्ण उत्तर है, लेकिन पहले हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि कोई भी आंशिक उत्तर कभी भी संपूर्ण चुनौती का सामना नहीं कर सकता है। एक हिस्से पर विशेष एकाग्रता के माध्यम से, आप कभी भी संपूर्ण को नहीं समझ सकते। संपूर्ण सत्य है. जीवन केवल आनंद नहीं है, न ही यह केवल सूर्यास्त, या शाम के तारे, या पंख पर एक पक्षी की सुंदरता है। जीवन कुरूपता और निराशा भी है; यह भयावह चिंता और हताशा है जिसे हम सभी जानते हैं। इसलिए हमें अपने आप से एक प्रश्न पूछना होगा जो इस पूरे मामले का संपूर्ण उत्तर जागृत करेगा। क्या आप समझते हैं श्रीमान? यदि आप पूछें, "मुझे क्या करना है?" केवल इसलिए कि आपका अपने बॉस से झगड़ा हो गया है या आपकी पत्नी भाग गई है, यह एक बहुत ही सतही प्रश्न है जिसका सतही उत्तर मिलेगा।

इसका और हर दूसरे प्रश्न का पूर्ण उत्तर तभी मिलता है जब हम समस्या पर समग्रता से विचार करते हैं - जो कि अपने स्वयं के अत्यधिक अकेलेपन और अस्तित्व की गरीबी को समझना है। इसलिए हमें बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि हम किस तरीके से यह सवाल खुद से पूछ रहे हैं।

यदि कोई उत्तर संपूर्ण नहीं है, तो वह कोई उत्तर ही नहीं है; और मैं कहता हूं कि इन सभी समस्याओं का संपूर्ण उत्तर मौजूद है। जीवन को उसकी सभी समस्याओं के साथ देखने का एक संपूर्ण तरीका है, और वह है ऐसे दिमाग से जिसने स्वयं को समझ लिया है। जब कोई आत्म-ज्ञान नहीं है, विचार के तरीकों की कोई समझ नहीं है - किसी और के विचार नहीं, बल्कि आपके अपने - तो जीवन की मांगों के प्रति आपकी सभी प्रतिक्रियाएँ आंशिक, आत्म-विरोधाभासी और इसलिए आगे दुख पैदा करने वाली होंगी। . आत्म-ज्ञान से मेरा तात्पर्य स्वयं की समझ, अपने व्यवहार, अपने उद्देश्यों, पूर्वाग्रहों, भय की समझ से है। मेरा तात्पर्य आत्मा, उच्चतर स्व और उस सभी व्यवसाय के बारे में आपके विचारों से नहीं है, जो अभी भी विचार के क्षेत्र में, आपकी कंडीशनिंग के क्षेत्र में है।

अब, ज्ञान एक बात है, और जानना दूसरी बात है। कृपया, यह थोड़ा कठिन हो सकता है, लेकिन बस इसका पालन करें। ज्ञान समय का है. ज्ञान संचयी होने के कारण सदैव आंशिक होता है; इसकी शुरुआत और अंत है।

ज्ञान, या संचित अनुभव, स्मृति है; और उस स्मृति की प्रतिक्रिया को हम विचार कहते हैं - शब्दों में व्यक्त विचार, या शब्दों के बिना विचार। यह पूरी प्रक्रिया ही ज्ञान है.

फिर जानने की अवस्था या गति है। एक मन जो जानने, सीखने की गति में है, उसकी कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है - वह है

कालातीत. इसलिए हमें ज्ञान और जानने के बीच के अंतर के बारे में बहुत स्पष्ट होना होगा।

ज्ञान समय का है. मैं जानता हूं, और मैं और भी जानूंगा; मैं हिंसक हूं और अहिंसक ही रहूंगा. इसका तात्पर्य समय में एक योगात्मक प्रक्रिया से है। जो व्यक्ति कहता है, "मैं जानता हूं," वह हमेशा समय के क्षेत्र में होता है। लेकिन जानना कालातीत है।

कृपया इसे समझें; अन्यथा, आप यह नहीं समझ पाएंगे कि आगे क्या होगा।

सारा ज्ञान समय के क्षेत्र में है, इसलिए ज्ञान उत्तर नहीं है। यह ज्ञान ही है जिसने ऐसे लोगों को पैदा किया है जो कहते हैं, "हम जानते हैं, आप नहीं जानते।" हमने भगवान की आवाज सुनी है. हम नेता हैं, आप हमारा अनुसरण करें।" ऐसे लोग समय से संबंधित होते हैं, जो ज्ञान है, और ज्ञान स्पष्ट रूप से हमारी गंदगी से बाहर निकलने का रास्ता नहीं है।

अब, मुझे लगता है कि यह जानने, सीखने का एक आंदोलन है, जिसका समय से कोई लेना-देना नहीं है। जब आप सीख रहे हैं तो समय नहीं है, है ना? उस गति का न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत। तुम्हें पता नहीं; तुम सीख रहे हो। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप अंतर देखते हैं! जब आप सीखने की गति में होते हैं, तो ऐसी कोई इकाई नहीं होती जो ज्ञान संचय कर रही हो और इस प्रकार संचय के अंतर और उनके बीच संघर्ष पैदा कर रही हो।

देखिए सर, जब आप सीख रहे होते हैं तो समय का कोई मतलब नहीं होता है, है ना? क्योंकि सीखना या जानना अनंत है; इसकी कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है. उसी प्रकार संचय की भावना के बिना स्वयं का ज्ञान होना चाहिए। शब्द असाधारण रूप से कठिन हैं. मैं तुम्हें जान रहा हूं, मैं खुद को जान रहा हूं। जानने में कभी विरोधाभास का क्षण नहीं होता, द्वंद्व का कोई क्षण नहीं होता। जब मन जानने की गति में होता है, तो उसने संघर्ष के स्रोत को हटा दिया है; और जब आप संघर्ष के स्रोत को हटा देते हैं, तो आप जीवन पर पूरी तरह से प्रतिक्रिया करने में सक्षम हो जाते हैं।

तो, स्वयं के बारे में जानना स्वतंत्रता की शुरुआत है क्योंकि यह एक ऐसे दिमाग को जन्म देता है जो समय में नहीं पकड़ा जाता है। जिस मन में कालातीतता का यह गुण है वह हमारी सभी मानवीय समस्याओं का उत्तर दे सकता है क्योंकि वह सृजन की स्थिति में है; और केवल ऐसा मन ही उसे प्राप्त करने के लिए खुला होता है जिसे ज्ञान द्वारा मापा नहीं जा सकता।

2 मार्च 1960

सातवीं वार्ता नई दिल्ली में

मैं चाहूंगा कि इस शाम को समय और मृत्यु के बारे में बात की जाए, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि सबसे पहले यह समझना महत्वपूर्ण है कि सुनने से हमारा क्या मतलब है। आप

जाहिर है, जो कहा जा रहा है उसे सुन रहे हैं और जो कहा जा रहा है वह एक चुनौती है। लेकिन क्या आप उत्तर खोजने के लिए सुन रहे हैं, या आप चुनौती ही सुन रहे हैं? मुझे लगता है कि चुनौती को सुनने और यह पता लगाने की कोशिश करने के बीच कि चुनौती का जवाब कैसे दिया जाए, अंतर है। हममें से अधिकांश, जब हमारे सामने कोई चुनौती, कोई समस्या आती है, तो तुरंत उत्तर, समस्या से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढना शुरू कर देते हैं, इसलिए समस्या कभी भी महत्वपूर्ण नहीं होती। हममें से अधिकांश के लिए, जो महत्वपूर्ण है वह समाधान है, लेकिन समाधान समस्या में है - यह समस्या से दूर नहीं है।

इसलिए, हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम केवल उत्तर, समाधान खोजने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, बल्कि चुनौती, समय और मृत्यु से जुड़े मुद्दों को भी सुन रहे हैं। यदि आप केवल उत्तर ढूँढ़ने के बारे में चिंतित हैं, तो मुझे डर है कि आप निराश होकर लौट जाएँगे क्योंकि इन वार्ताओं का उद्देश्य उत्तर देना नहीं है। लेकिन हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह समस्या का एक साथ पता लगाना है, और किसी भी अन्वेषण में, कोई कैसे अन्वेषण करता है यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यदि आप उत्तर खोजने के लिए अन्वेषण करते हैं, तो आपका अन्वेषण केवल अंत का एक साधन बन जाता है, और इसलिए अन्वेषण का अपने आप में कोई मूल्य नहीं है। जिस क्षण आपका ध्यान समस्या का समाधान खोजने की ओर चला जाता है, अन्वेषण और खोज का कोई खास महत्व नहीं रह जाता है।

यदि आप चाहें तो कृपया इसे थोड़ा ध्यान से अवश्य सुनें। जब हम किसी समस्या का सामना करते हैं, तो हममें से अधिकांश की तत्काल प्रतिक्रिया उससे छुटकारा पाने की कोशिश करने की होती है; हम उत्तर खोजना चाहते हैं, और हम कहते हैं, "मैं क्या करूँ?" लेकिन समय और मृत्यु तो बहुत बड़ी समस्या है ना? वे एक असाधारण रूप से जटिल समस्या हैं, जिसमें भव्यता, एक निश्चित वैभव और सुंदरता की भावना है। लेकिन अगर हम समस्या की सराहना नहीं करते हैं या उसके प्रति संवेदनशील नहीं हैं, तो केवल समाधान ढूंढना इतना खोखला, एक नियमित मामला है जिसका बहुत कम महत्व है।

इसलिए, यह बहुत मायने रखता है कि आप कैसे सुन रहे हैं। जैसा कि मैंने कहा, उत्तर खोजने के लिए सुनने और समस्या, चुनौती को सुनने के बीच बहुत अंतर है। यदि आप उत्तर ढूंढ़ रहे हैं तो आपका मन विचलित है, लेकिन यदि आप समस्या को समझने का प्रयास कर रहे हैं तो आपका पूरा मन उसी पर ध्यान दे रहा है; और निश्चित रूप से इसी तरह से आपको समय और मृत्यु के बारे में पूछताछ करनी चाहिए क्योंकि ये दो कारक हमारे जीवन में असाधारण रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन आप समाधान ढूंढते हैं या चुनौती पर अपना पूरा ध्यान देते हैं, यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है।

जब कोई जिसे आप प्यार करते हैं उसकी मृत्यु हो जाती है और आप दुख के बादलों में घिर जाते हैं, तो आपकी एकमात्र चिंता इस दुख से मुक्त होने का रास्ता ढूंढना है।

ये आँसुओं का बोझ; आप आमतौर पर मृत्यु नामक असाधारण चीज़ को समझने में रुचि नहीं रखते हैं। क्या ऐसा नहीं है? और समय की यह समस्या है, जिसमें हम में से प्रत्येक शामिल है - न केवल कालानुक्रमिक समय, बल्कि आंतरिक समय भी, समय की मनोवैज्ञानिक भावना जो एक दिमाग द्वारा विकसित होती है जो कहती है, "मैं था, मैं हूं, और मैं होगा।" हम सभी किसी न किसी रूप में समय से चिंतित हैं। ट्रेन पकड़ने या कल क्या करेंगे या कहाँ जायेंगे इसकी व्यवस्था करने की आवश्यकता है। समय किसी सद्गुण को विकसित करने में भी शामिल होता है - जो निश्चित रूप से पूरी तरह से बेतुका है - किसी महत्वाकांक्षा को पूरा करने में, किसी समस्या पर विचार करने की कोशिश करने में, इत्यादि।

अब, समय को समझने के लिए, आपको समग्र रूप से मन की गतिविधियों को समझना होगा, और उस समझ में आप समय की समग्रता को समझ पाएंगे।

महोदय, क्या मैं बता सकता हूं कि आप न केवल मेरी बातें सुन रहे हैं। शब्द तो मात्र प्रतीक हैं, उनका अपने आप में बहुत कम अर्थ होता है। आप अपने मन का भी अवलोकन कर रहे हैं - या यूं कहें कि मन स्वयं का अवलोकन कर रहा है, जिसका अर्थ है कि उसे पता है कि जो कहा जा रहा है वह उसे कैसे सुन रहा है। कृपया, मैं इस बिंदु पर परिश्रम कर रहा हूं क्योंकि यदि हम सही नींव नहीं रखेंगे, तो हमारी संरचना सतही और बहुत घटिया होगी। लेकिन अगर हम जानते हैं कि नींव को गहराई से, सही तरीके से कैसे रखना है, तो हम वास्तव में निर्माण कर सकते हैं। अब हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह सही नींव रखना है ताकि जांच की प्रक्रिया सही हो और वह जांच आप पर निर्भर हो, मुझ पर नहीं। इन शब्दों को सुनने में, तुम्हें अपने मन की सभी गतिविधियों के प्रति जागरूक रहना होगा। मैं मन की गतिविधियों का वर्णन करने के लिए शब्दों का उपयोग कर रहा हूं, लेकिन यदि आप केवल शब्दों को सुनते हैं और मन की गतिविधियों को नहीं सुनते हैं, तो शब्द बहुत कम व्यक्त करेंगे।

समय की समग्रता ही सक्रिय वर्तमान है। क्रिया अपने सार में सक्रिय वर्तमान है, है न? होने वाली क्रिया में "रहा है," "होना" और "होगा" शामिल है - जो था, जो है, और जो होना है। लेकिन हममें से अधिकांश लोग जो था, जो है उससे लेकर जो होगा, उसकी प्रगति को लेकर चिंतित हैं। यह हमारा जीवन है, और हम कार्य कर रहे हैं, उन शर्तों के अनुसार कार्य कर रहे हैं - अतीत खिल रहा है और वर्तमान द्वारा संशोधित हो रहा है, जिससे भविष्य का निर्माण हो रहा है। हमारा कार्य, जो पहले से ही कल से निर्धारित होता है, आज संशोधित हो जाता है और आने वाले कल को आकार देता है। दूसरे शब्दों में, हममें से अधिकांश के लिए कारण और प्रभाव एक अंतराल से अलग हो जाते हैं, एक अंतराल जिसमें कारण अनिवार्य रूप से प्रभाव बन जाता है, और जिसे भारतीय आम तौर पर कर्म कहते हैं।

अब, यदि आप कारण-और-प्रभाव की इस श्रृंखला की बहुत बारीकी से जांच करते हैं, तो आप पाएंगे कि हमारी कार्रवाई पूरी तरह से मूल कारण पर निर्भर नहीं है, बल्कि किसी पूरी तरह से अलग चीज़ से उत्पन्न हो सकती है। यानी, आम के बीज से हमेशा आम का पेड़ ही पैदा होगा, ताड़ या इमली कभी नहीं। आम के बीज की प्रकृति में ही कारण निश्चित होता है और वह निश्चित प्रभाव उत्पन्न करता है। यह आम का पेड़ पैदा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। लेकिन हमारे साथ स्थिति बिल्कुल अलग है क्योंकि जो प्रभाव था वह कारण बन जाता है, जो वर्तमान में विभिन्न प्रभावों के माध्यम से लगातार संशोधित हो रहा है और इसलिए मूल कारण से पूरी तरह से अलग प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। तो, मनुष्य के साथ कारण कभी भी निश्चित नहीं होता है; यह हमेशा परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, और यह परिवर्तन भविष्य की कार्रवाई में परिलक्षित होता है। इस तथ्य की समझ ही क्रिया की सम्पूर्ण समझ है।

समय, हम में से अधिकांश के लिए, अतीत से वर्तमान से भविष्य तक की प्रगति है, यह एहसास कि मैं था और मैं हूं; और क्योंकि मैं था और मैं हूं, मैं रहूंगा। समय के इस क्षेत्र में हम कार्य करते हैं।

अब समय तो ज्ञान है ना? कल मैंने ऐसा कुछ किया या सोचा या अनुभव किया, और मैंने जो किया या सोचा या अनुभव किया उसके ज्ञान के साथ, मैं वर्तमान चुनौती का सामना करता हूं - मेरी पत्नी या पति का गुस्सा, राजनीतिक मालिकों की निंदा, या जो भी हो है। मैं जो कुछ भी जानता हूं उसके साथ वर्तमान में रहता हूं, और ज्ञात, वर्तमान चुनौती के जवाब में, भविष्य का निर्माण करता है। तो मन हमेशा समय के क्षेत्र के भीतर, संशोधित ज्ञात के क्षेत्र के भीतर काम कर रहा है। समय से परे कार्य करने की संभावना केवल एक सिद्धांत, आस्था या विश्वास का विषय है, जो स्वयं समय के क्षेत्र के भीतर ज्ञात का एक प्रक्षेपण है। यह इसका एक पहलू है.

फिर समय का वह पहलू है जिसे मन स्मृति के रूप में निर्मित करता है।
आपका हर अनुभव, चाहे वह कितना भी छोटा या बड़ा, कितना भी छोटा या शानदार हो, स्मृति के रूप में मन की मिट्टी में जड़ें जमा लेता है, है न? मन वह मिट्टी बन जाता है जिसमें अनुभव जड़ें जमा लेता है।

मुझे आशा है कि आप इन सबका अनुसरण कर रहे हैं ताकि, बातचीत के अंत में या अब भी, हम सभी समय और मृत्यु की असाधारण गुणवत्ता को महसूस कर सकें। उस मन के लिए जो समझता है, जो डरता नहीं है, मृत्यु कुछ आश्चर्यजनक, विशाल होनी चाहिए; यह उतना ही भव्य, उतना ही सुंदर होना चाहिए जितना जीवन है। लेकिन, आप देखिए, हम नहीं जानते कि मृत्यु क्या है; यह अज्ञात है, और इसलिए यह सोचने योग्य, अनुमान लगाने योग्य चीज़ बन जाती है। महोदय, जब तक मन अपने कार्यों को नहीं समझेगा, तब तक मृत्यु का कोई अर्थ नहीं होगा।

इसलिए हममें से प्रत्येक के लिए सैद्धांतिक रूप से नहीं, बल्कि वास्तव में जांच की इस प्रक्रिया से गुजरना बहुत महत्वपूर्ण है, ताकि मन धारणा की स्पष्टता के साथ इससे बाहर आ सके। हममें से अधिकांश लोग सोए हुए हैं और अपनी मांगों, आग्रहों, मजबूरियों, महत्वाकांक्षाओं के दु:स्वप्न से पीड़ित हैं। हम हमेशा अत्याचार, संघर्ष के उस क्षेत्र में काम कर रहे हैं, जो उन सभी चीजों का क्षेत्र है जिनसे हम हर दिन गुजरते हैं। और समस्या, चुनौती यह है: क्या मन वास्तव में खुद को ज्ञात से अलग कर सकता है और अज्ञात को प्राप्त करने की स्थिति में हो सकता है, जो कि मृत्यु है? क्या आप समझते हैं श्रीमान?

हममें से अधिकांश के लिए मृत्यु निराशा है। मृत्यु अंतिम है, जो उस व्यक्ति के लिए एक भयानक चीज़ है जो जीवन शक्ति से भरा है, जो महत्वाकांक्षी है, रचनात्मक है, जो काम कर रहा है, प्राप्त कर रहा है, कर रहा है। इस सब के अंत में - मृत्यु। किस लिए? और निराशा से भरा हुआ, ऐसा व्यक्ति एक दर्शन का आविष्कार करता है या एक विश्वास की ओर मुड़ता है - पुनरुत्थान या पुनर्जन्म में विश्वास - जो उसे संतुष्ट करता है, उसे आशा देता है।

जैसा कि मैं कह रहा था, आपका हर अनुभव स्मृति के रूप में मन में जड़ जमा लेता है। यदि मैं आपकी चापलूसी करता हूँ या आपका अपमान करता हूँ तो वह अनुभव आपके मन में घर कर जाता है, है ना? आप इसे कभी नहीं भूलेंगे. तो मन वह मिट्टी बन गया है जिसमें अनुभव, विचार लगातार जड़ें जमाते रहते हैं - मन अचेतन के साथ-साथ चेतन भी है - और स्मृति की उस पृष्ठभूमि से, संचित विचार और अनुभव की, हम कार्य करते हैं, हम सोचते हैं, हम हैं।

वह पृष्ठभूमि ज्ञात का कारक है, ज्ञात का निर्माता है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप इसका अनुसरण कर रहे हैं?

देखिए, श्रीमान, आप हर दिन कार्यालय जाते हैं क्योंकि आपने एक निश्चित तकनीक सीख ली है जिसके द्वारा आप अपनी आजीविका कमाते हैं। वह तकनीक एक यांत्रिक स्मृति बन गई है। आप जानते हैं कि क्या करना है और कैसे करना है, और उस पृष्ठभूमि से आप कार्य करते हैं, उसी पृष्ठभूमि से आप हैं। तो आप जो हैं और जो करते हैं वह मूलतः यांत्रिक है, दोहराव वाला है, यहां-वहां थोड़े-बहुत संशोधनों के साथ। लगभग हम सभी के साथ ऐसा ही है. ज्ञान के रूप में अनुभव ने मन में जड़ें जमा ली हैं, और हम हमेशा ज्ञात के क्षेत्र के भीतर कार्य करते हैं, क्योंकि ज्ञात से हम विपरीत बनाते हैं और उस विपरीत से कार्य करते हैं, जो अभी भी ज्ञात के क्षेत्र, समय के क्षेत्र के भीतर है।

तो, कल, आज और कल के रूप में समय है; और समय स्मृति के रूप में, जो ज्ञात का कारक है। समय होने की क्रिया है - वह जो रहा है, वह जो है, और वह जो होगा। अब, यदि आप उस क्रिया पर विचार करते हैं, तो आप देखेंगे कि वह जिस स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है, वह जो है, जो है और जो होगी उसे गले लगाते हुए, हमेशा सक्रिय रूप से मौजूद रहती है। इसी तरह, केवल मन की एक अवस्था है जो सक्रिय रूप से मौजूद है, हालांकि हम इसका अनुवाद कल, आज और कल के रूप में करते हैं।

अब, समस्या, चुनौती यह है: क्या उस मन के लिए मृत्यु के महत्व को समझना संभव है जो समय की इस पूरी प्रक्रिया से अवगत है, जिसने इसे खोजा और समझा है? मृत्यु अज्ञात है; यह केवल शरीर का विघटन नहीं है, और हमारी मृत्यु का डर निरंतरता न होने का डर है, जो स्वाभाविक रूप से स्मृति की मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है, जिसका आग्रह समय में जारी रहना है। मुझे इसे अलग ढंग से कहने दीजिए.

मृत्यु के बारे में ऐसा क्या है जिससे हम डरते हैं? मूलतः यह न होने का डर है, है ना? मैं था, और मैं हूं; परन्तु जब मृत्यु आएगी, तो मैं न रहूँगा।
मुझे इसी बात का डर है क्योंकि मैं इसे जारी रखना चाहता हूं। हालाँकि अलग-अलग लोगों द्वारा इसे अलग-अलग नाम दिए गए हैं, किसी न किसी रूप में जारी रहना हर किसी का आग्रह है, और निरंतरता हमेशा समय के क्षेत्र में होती है।
समय के बिना, स्मृति के बिना, "मैं था" और "मैं रहूंगा" जैसी कोई निरंतरता नहीं है। लेकिन भय का कारक तब सामने आता है जब अस्तित्व की इस निरंतरता के बारे में कोई संदेह होता है, और इसलिए मन आरामदायक सिद्धांतों का आविष्कार करना या उनसे चिपकना शुरू कर देता है, जिसे वह यह कहकर मजबूत करने की कोशिश करता है, "इसके लिए बहुत सारे सबूत हैं मृत्यु के बाद मानव निरंतरता,'' इत्यादि इत्यादि।

विचार निरंतरता है; विचार ही समय है. स्मृति के बिना कोई सोच नहीं है, कोई शब्दाडंबर नहीं है। स्मृति अनिवार्य रूप से समय के क्षेत्र के भीतर कार्य करती है, और इसलिए स्मृति यांत्रिक है। यदि मैं आपसे कुछ पूछता हूं जिससे आप पूरी तरह परिचित हैं, तो आप तुरंत उत्तर देते हैं। लेकिन यदि प्रश्न अधिक जटिल है, तो आपको थोड़ा अधिक समय लगेगा; चुनौती और प्रतिक्रिया के बीच एक अंतराल है। उस अंतराल में दिमाग सक्रिय रहता है, स्मृति के गलियारों की खोज करता है, या यह सोचता है कि उत्तर क्या होना चाहिए। अत: चिन्तन में निरन्तरता है।

महोदय, यह वास्तव में महत्वपूर्ण है, और यदि आप चाहें, तो कृपया मेरे साथ इस पर थोड़ा विस्तार से विचार करें। आइए हम साथ मिलकर इसकी यात्रा करें क्योंकि अगर हम सोचने की प्रक्रिया को नहीं समझेंगे, तो हम नहीं जान पाएंगे कि मरना क्या होता है। हममें से अधिकांश के लिए, मृत्यु से डरना एक अंतिम बात है क्योंकि हम इसे जारी रखना चाहते हैं। लेकिन अगर हम सोचने की पूरी प्रक्रिया की जांच और समझ कर सकें, तो मृत्यु कोई भयावह अंत नहीं है क्योंकि इसे जारी रखने की कोई इच्छा नहीं रह गई है। हम इसमें जाएंगे, साथ मिलकर इस पर विचार करेंगे।

तथ्यात्मक रूप से, आप क्या हैं? कृपया सैद्धांतिक रूप से यह कहते हुए प्रतिक्रिया न दें कि आप आत्मा हैं, कि आप ईश्वर के पुत्र हैं, और बाकी सब कुछ। तथ्यात्मक रूप से, आप क्या हैं? आप अपने पर्यावरणीय प्रभावों का परिणाम हैं, क्या आप नहीं हैं? आप उस संस्कृति, शिक्षा, सामाजिक वातावरण का परिणाम हैं जिसमें आपका पालन-पोषण हुआ है। मैं जानता हूं कि आपको ऐसा सोचना पसंद नहीं है, लेकिन यह सच है। आप स्वयं को एक असाधारण आध्यात्मिक इकाई के रूप में सोचना पसंद करते हैं

प्रभावित करने योग्य नहीं. लेकिन सच तो यह है कि आप वही हैं जो आपको सिखाया गया है। आप परंपरा के, अंधविश्वास के अवतार हैं। आप वह इकाई हैं जिसने एक तकनीक सीखी है और जो एक निश्चित पैटर्न में मशीन की तरह काम करती है। तुम दुःखी हो, तुम कामी हो, तुम शक्ति चाह रहे हो। यह सब वही है जो आप वास्तव में हैं, और इसके शीर्ष पर आप एक असाधारण आध्यात्मिक स्थिति की अवधारणा को आरोपित करते हैं जो अभी भी उस संस्कृति का परिणाम है जिसमें आप पले-बढ़े हैं, चाहे वह हिंदू, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई, या क्या हो आप करेंगे।

अब, अनिवार्य रूप से आप चाहते हैं कि कंडीशनिंग का वह बंडल जारी रहे, यहां-वहां थोड़े से संशोधनों के साथ। आप बहुत अधिक दुःख नहीं चाहते हैं, आप स्वयं के साथ निरंतर संघर्ष में नहीं रहना चाहते हैं, आप थोड़ी अधिक शांति चाहते हैं, लेकिन आप मूल रूप से वैसे ही बने रहना चाहते हैं जैसे आप हैं। आप जो हैं वह विचार है - विचार संचित अनुभवों का परिणाम है, जो स्मृति है। आप ज्ञात की पृष्ठभूमि से कार्य करते हैं, और वही पृष्ठभूमि है जिसे आप जारी रखना चाहते हैं। इसलिए मृत्यु आपके लिए एक अंतिम बात है, एक भयावह द्वार है जिससे गुजरना होगा, इसलिए आप अपने आप से कहें, "निरंतरता का कोई न कोई रूप अवश्य होना चाहिए।"

अब, जिसमें निरंतरता है वह यांत्रिक है। महोदय, कृपया इसे अवश्य सुनें। जिसमें निरंतरता है वह यांत्रिक है। यदि आप सही तरीके से तेल लगाना जानते हैं, तो मशीन बहुत लंबे समय तक चलती रहेगी। यदि आप घर्षण के बिना एक मशीन बना सकते हैं, तो यह अनिश्चित काल तक काम करती रहेगी, जैसे उपग्रह कर रहे हैं। लेकिन यह पूरी तरह से मैकेनिकल होगा. और आप इस यांत्रिक अर्थ में कार्य जारी न रख पाने से भयभीत हैं। मुझे लगता है कि आप डरे हुए हैं क्योंकि आप बस इतना ही जानते हैं - समय पर यांत्रिक रूप से कैसे कार्य करना है। एक ऐसी दुनिया में, जिसे आप नहीं जानते, जो मृत्यु है, यंत्रवत् कार्य करना बंद करने का विचार आपके लिए भयावह है, और भयभीत होकर, आप कहते हैं कि पुनर्जन्म या किसी अन्य प्रकार की निरंतरता होनी चाहिए - आप सभी काल्पनिक, आशावादी जानते हैं मन जिन सिद्धांतों का आविष्कार करता है।

कृपया ध्यान रखें कि हम इस बात पर चर्चा नहीं कर रहे हैं कि निरंतरता का कोई रूप है या नहीं। यह पूरी तरह से अप्रासंगिक है. यह एक मूर्ख मन है जो कहता है, "मुझे जारी रखना चाहिए," और यह मूर्ख ही रहेगा। यह जारी रह सकता है, लेकिन यह अभी भी यांत्रिक ही रहेगा।

तो, हमारी समस्या, निश्चित रूप से, यह है: क्या यह अपरिहार्य है कि हम समय के क्षेत्र के भीतर, ज्ञात के क्षेत्र के भीतर कार्य करें? और क्या ज्ञात के प्रति मरना संभव है? क्या किसी की ख़ुशी के लिए मरना संभव है? हम सभी अपने दर्द से मरना चाहते हैं। लेकिन क्या किसी की खुशी के लिए मरना संभव है? क्या मरना संभव है

वह सब कुछ जो किसी ने जान लिया है ताकि मन केवल एक मशीन न रह जाए? आप समझे?

जिसमें निरंतरता है वह समय में कल, आज और कल के रूप में कार्य करता है। इसमें हर मिनट बदलाव होता रहता है, लेकिन इसमें एक निरंतरता होती है, और जिसमें भी निरंतरता होती है वह यांत्रिक है; इसलिए, यह रचनात्मक नहीं हो सकता. एक मशीन कभी रचनात्मक नहीं हो सकती. ये इलेक्ट्रॉनिक दिमाग अविश्वसनीय गति से कार्य कर सकते हैं, लेकिन वे आविष्कार नहीं कर सकते, वे कभी भी सृजन की स्थिति में नहीं हो सकते। हम में से अधिकांश के लिए, जीवन एक मशीन की तरह है, यांत्रिक क्रियाओं की एक लंबी श्रृंखला है, और इसलिए हम इससे ऊब चुके हैं, और अस्तित्व की इस भयानक दिनचर्या से, हम भगवान के माध्यम से, मंदिरों, चर्चों में जाकर, घूमने के माध्यम से बचना चाहते हैं। रेडियो पर और ध्यान भटकाने के हर दूसरे तरीके का पीछा करते हुए।

जैसा कि मैंने बातचीत की शुरुआत में कहा था, हम जवाब नहीं मांग रहे हैं क्योंकि गंभीर मामलों में जीवन के पास कोई जवाब नहीं है। जीवन, जो विशाल और गहरा है, में छोटी-छोटी लहरें हैं जो गड़बड़ी पैदा करती हैं, और इन सतही गड़बड़ी से हम उत्तर के माध्यम से बचने की कोशिश करते हैं। यदि आप उत्तर खोज रहे हैं क्योंकि आप परेशान हैं, तो आप ईश्वर के बारे में सोच सकते हैं, आप सत्य, अनंत काल के विचार के साथ खेल खेल सकते हैं, लेकिन आपका दिमाग अभी भी उथला, मूर्ख, क्षुद्र होगा। तो, क्या उन चीज़ों के प्रति मरना संभव है जिन्हें कोई जानता है, जिन चीज़ों में मन निहित है? यदि कोई कर सकता है, तो केवल मरने की स्थिति है, मृत्यु की अंतिम स्थिति नहीं।

महोदय, मानवीय प्रयास, मानवीय निरंतरता के माध्यम से मन यांत्रिक हो गया है। हम पूरी तरह से क्रियाशील मशीनें भी नहीं बल्कि आधी-अधूरी मशीनें हैं; हमारा मस्तिष्क केवल पच्चीस प्रतिशत क्षमता पर कार्य कर रहा है, या उससे भी नहीं। हम पूरी तरह से, संपूर्ण रूप से कार्य नहीं कर रहे हैं। हम कम्युनिस्ट, उसके मार्क्सवादी सिद्धांतों और तथाकथित धार्मिक व्यक्ति, उसकी मान्यताओं, उसकी हठधर्मिता के बीच फंस गए हैं, और हम एक राक्षसी दुनिया का निर्माण कर रहे हैं। हालाँकि हर राजनेता की ज़ुबान पर शांति शब्द रहता है, लेकिन उसके कार्य और उसका अस्तित्व ही इसे नकारता है। हम एक भयानक दुनिया में रह रहे हैं, और हमें एक नए दिमाग की ज़रूरत है - संशोधित पुराने दिमाग की नहीं, बल्कि एक बिल्कुल नए दिमाग की। और आपके पास एक नया दिमाग नहीं हो सकता, एक ऐसा दिमाग जो युवा, निर्दोष, ताज़ा हो, जब तक कि निरंतरता की कोई इच्छा हो।

तो, क्या कल के पूरे दिन मरना संभव है? कृपया इसे सुनें. यह मेरी समस्या नहीं है, यह आपकी समस्या है। क्या आप पूरे कल के लिए मर सकते हैं? अब, यह एक चुनौती है, है ना? और क्या आप चुनौती सुन रहे हैं - या यह जानने के लिए सुन रहे हैं कि कल के लिए कैसे मरना है? दुःख, सुख, क्षणभंगुर खुशियाँ, दिनचर्या, आपकी कुरूप क्रूरता

अस्तित्व, आपकी सोच का भयावह उथलापन—क्या आप इन सबके कारण मर सकते हैं? यदि आप यह जानने के लिए सुन रहे हैं कि कैसे मरना है, यह तय करने का प्रयास कर रहे हैं कि कितना रखना है और कितना त्यागना है, तो आपको कोई उत्तर नहीं मिलेगा। लेकिन अगर आप चुनौती सुन रहे हैं तो वही सुनना मरने का अनुभव है।

जैसा कि मैंने कहा, हमें एक नए दिमाग की जरूरत है क्योंकि पुराने दिमाग ने भयानक समस्याएं पैदा की हैं जिनका उसके पास कोई जवाब नहीं है। यह जो कुछ भी सुधारता है वह एक और दुख पैदा करता है; यह जो कुछ भी बनाता है वह एक और छाया, एक और संघर्ष पैदा करता है। इसलिए, यदि हमें एक नई पीढ़ी, एक अलग दुनिया का निर्माण करना है तो एक ताज़ा दिमाग आवश्यक है।

अब, क्या आपका मन उस हर चीज़ के प्रति मर सकता है जिसे उसने जाना है—निरंतरता या महत्वाकांक्षा के संदर्भ में? क्या आप उस सब के प्रति मर सकते हैं—और यह नहीं पूछ सकते कि यदि आप इसके साथ मर गये तो क्या होगा? यह पूछना कि क्या होगा, चुनौती को सुनना नहीं है, बल्कि केवल उस समस्या का उत्तर खोजना है जिसका आप सामना कर रहे हैं। चुनौती यह है: क्या आप अपनी महत्वाकांक्षा, अपने भ्रष्टाचार, अपनी ईर्ष्या, अपनी अधिग्रहणशीलता के कारण मर सकते हैं? और यदि आप चुनौती सुनते हैं, तो सुनने का वह कार्य ही उस चीज़ के प्रति मरने का अनुभव है जिसमें निरंतरता है।

क्या आप नहीं देखते श्रीमान? आपको एक निर्दोष मन, एक ताजा दिमाग, एक ऐसा दिमाग चाहिए जो ज्ञात से अव्यवस्थित न हो। एक निर्दोष मन वह मन है जो अज्ञात में कार्य करता है, और ज्ञात के प्रति मरना अज्ञात का द्वार है। अज्ञात को ज्ञात से नहीं मापा जा सकता। समय उस कालातीत, शाश्वत, उस विशालता को नहीं माप सकता जिसका न कोई आरंभ है और न ही कोई अंत। लेकिन हमारा दिमाग कल, आज और कल के पैमाने से बंधा हुआ है, और उस पैमाने के साथ हम अज्ञात की जांच करने की कोशिश करते हैं, उसे मापने की कोशिश करते हैं जो मापने योग्य नहीं है। और जब हम किसी ऐसी चीज को मापने की कोशिश करते हैं जो मापने योग्य नहीं है, तो हम केवल शब्दों में फंस जाते हैं।

तो यह केवल एक मन है जिसने मृत्यु की चुनौती को सुना और समझा है - यह केवल एक ऐसा मन है जो अपने स्वयं के दुखों से मर सकता है और इसलिए निर्दोषता की स्थिति में हो सकता है; और निर्दोषता की उस अवस्था से एक बिल्कुल अलग क्रिया होती है। ऐसी क्रिया सदैव वर्तमान में होती है; यह सक्रिय वर्तमान है. एक मासूम मन यह नहीं सोचता कि वह कल कुछ था, जिसे वह कल कुछ हासिल करने के लिए आज संशोधित कर रहा है। मुझे लगता है कि हममें से प्रत्येक के लिए स्वयं इसका पता लगाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि, जैसे हम अभी हैं, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक भयानक दुनिया बना रहे हैं। जब तक हम स्वयं पुरानी पीढ़ी के प्रति समर्पित नहीं हो जाते, तब तक हम नई पीढ़ी को अस्तित्व में नहीं ला सकते। जब तक मन समय के क्षेत्र में रहता है और कार्य करता है, तब तक वही करो जो वह करेगा-असंख्य मंदिरों में जाओ, अजीब पूजा करो

देवता, हर तरह की प्रार्थना दोहराते हैं, बलिदान करते हैं, बहुत सारे शब्द बुदबुदाते हैं - यह उसे कभी नहीं जान सकता जो शाश्वत है, अथाह है। केवल वह मन जो सक्रिय वर्तमान की शांति में पूरी तरह से रहता है, अज्ञात को प्राप्त करने के लिए खुला है, और केवल ऐसा मन ही एक नई दुनिया ला सकता है क्योंकि केवल ऐसा मन ही सृजन की स्थिति में होता है।

6 मार्च, 1960

आठवीं वार्ता नई दिल्ली में

यह आखिरी बातचीत है, और मैं चाहूंगा कि आज शाम, यदि संभव हो, तो मैं आपके साथ सदाचार, संवेदनशीलता और जिसे हम प्रेम और सौंदर्य कहते हैं, उसके बारे में जोर-जोर से सोचें। मैं नहीं जानता कि क्या हमने कभी अपने आप से पूछा है कि ऐसा क्यों होता है कि हम अपनी संवेदनशीलता खो देते हैं, किसी विशेष चीज़ के प्रति नहीं, बल्कि हर चीज़ के प्रति यह असाधारण संवेदनशीलता - खुले आसमान के प्रति, सड़क पर बारिश के प्रति, विशाल, हिलते-डुलते बादल, पानी पर चाँदनी, चेहरे पर मुस्कान, गाड़ी खींचता थका हुआ बैल। ऐसा क्यों है कि हम चीज़ों से निकटता का यह गुण खो देते हैं? ऐसा क्यों है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम मासूमियत की सारी भावना खो देते हैं, जो संवेदनशीलता का सार है? हम जीवन की पूरी प्रक्रिया में जो सुंदर है उसकी सराहना, विस्मय, विस्मय, आश्चर्य की भावना क्यों खो देते हैं?

मुझे लगता है कि यह अच्छा होगा अगर हम इस समस्या को बहुत ध्यान से और झिझक के साथ देख सकें, ताकि हम खुद पता लगा सकें कि हमारा दिमाग सुस्त क्यों हो जाता है। मूल रूप से, मुझे ऐसा लगता है, मन की इस नीरसता का एक कारण उसका सद्गुणों का विकास है - कृपया सुनें, मैं समझाने जा रहा हूँ। और नीरसता तब भी आती है जब मन स्वयं को किसी कार्य के लिए प्रतिबद्ध कर लेता है, जब कोई व्यक्ति किसी विशेष समूह से संबंधित होता है और उसे उस प्रतिबद्धता के ढांचे के भीतर कार्य करना होता है। इसी प्रकार शक्ति प्राप्त करने, प्रभुत्व स्थापित करने की इच्छा से मन भी सुस्त हो जाता है। मैं सोचता हूं कि मन की नीरसता के ये तीन प्रमुख कारण हैं।

निश्चित रूप से, जो आवश्यक है वह एक बहुत ही संवेदनशील, सतर्क दिमाग है - एक ऐसा दिमाग जो तीव्र होने के कारण, अपनी दक्षता बनाता है - और वह संवेदनशीलता, वह तीव्रता उस दिमाग से वंचित है जो केवल सद्गुणों की खेती कर रहा है। एक गुण ऐसा है जो मन की उपज नहीं है। जिन्हें हम आम तौर पर गुण कहते हैं - नैतिक प्रतिबंध, पेशेवर नैतिकता, धार्मिक व्यवहार के कोड, और इसी तरह - सभी एक विशेष समाज की रचनाएं हैं, क्या वे नहीं हैं? वहीं, सद्गुण में

सच्चा अर्थ मन की उपज नहीं है, और यह समाज द्वारा सद्गुण के रूप में पहचाने जाने योग्य नहीं है।

मेरा मानना है कि किसी को यह स्पष्ट रूप से देखना होगा कि जब आचरण का एक तरीका सम्मानजनक हो जाता है और इसलिए उसे सदाचारी के रूप में पहचाना जाने लगता है, तो वह सद्गुणी नहीं रह जाता है। अहिंसक होना, दयालु होना, विनम्र होना इत्यादि जैसे गुण, जब समाज या स्वयं द्वारा गुण के रूप में पहचाने जाते हैं, तो वे गुण नहीं रह जाते हैं और केवल सम्माननीयता बनकर रह जाते हैं। जब मन किसी विशेष गुण को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है, चाहे वह विनम्रता हो, सहानुभूति हो, अहिंसा हो, या आप जो चाहें, वह निश्चित रूप से गुण नहीं है; यह केवल प्रतिरोध का एक रूप है जिसमें मन स्वयं को एक पैटर्न के अनुरूप ढाल रहा है।

कृपया जो कहा जा रहा है उस पर अपना प्रभाव डालें - लेकिन स्वीकार करने या अस्वीकार करने के लिए नहीं क्योंकि जो मन केवल स्वीकार करता है या अस्वीकार करता है वह वास्तव में एक तर्कहीन मन है; यह एक विचारशील, बुद्धिमान दिमाग नहीं है क्योंकि यह पहले से ही एक रुख अपना चुका है जिससे यह निर्णय लेता है, और इसलिए यह अन्वेषण, पूछताछ करने में असमर्थ है।

हम सद्गुण की प्रकृति के बारे में पूछताछ कर रहे हैं। मन स्पष्ट रूप से सदाचारी होना चाहिए क्योंकि केवल एक सदाचारी मन ही व्यवस्थित, संवेदनशील, अपनी स्पष्टता से कार्य करने में सक्षम होता है। लेकिन जिस मन को सद्गुणी बनने के लिए प्रेरित, प्रभावित, अनुशासित किया जाता है वह सद्गुणी मन नहीं है क्योंकि वह केवल प्रतिरोध, सम्माननीयता की मांगों के लिए निरंतर समायोजन जानता है। सदाचारी होने का कोई भी प्रयास, नैतिक होने का कोई भी प्रयास, जो कोई है उसके अलावा कुछ और बनने का कोई भी प्रयास स्वाभाविक रूप से वह जो है उसके प्रति एक प्रतिरोध पैदा करता है, और यह प्रतिरोध यह समझने से रोकता है कि वह क्या है; फिर भी ऐसा प्रयास, जो वास्तव में एक परिहार है, व्यक्ति जो है उससे पलायन है, आम तौर पर सद्गुण माना जाता है।

एक बहुत ही साधारण सी बात लीजिए. इस देश में अहिंसा की बहुत चर्चा होती है. सभी राजनीतिक और तथाकथित धार्मिक नेता अहिंसा की बात करते हैं, लेकिन सच तो यह है कि मनुष्य हिंसक है। आप हिंसक हैं, और आपकी हिंसा न केवल रोजमर्रा की महत्वाकांक्षा के माध्यम से व्यक्त होती है, बल्कि अपने आप को नियंत्रित करने, अनुशासित करने, खुद को एक विशेष पैटर्न के अनुरूप होने के लिए मजबूर करने के इस जबरदस्त प्रयास के माध्यम से भी व्यक्त होती है। हिंसा तो अनेक प्रकार की होती है ना? दूसरों के प्रति क्रूरता के रूप में हिंसा है, और आत्म-संतुष्टि का सार भी हिंसा है। अहिंसा की साधना हिंसा का ही एक रूप है। यह एक तथ्य है, और फिर भी आप अहिंसा का पालन करते हैं जैसे कि यह एक जबरदस्त गुण था। अहिंसा को आदर्श के रूप में स्वीकार करना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा आप समाज द्वारा एक सदाचारी व्यक्ति के रूप में पहचाने जाकर सम्मानित बनते हैं। सम्मानजनक होने के लिए, आपके पास होना ही चाहिए

अहिंसा के लक्षण; आपको यह दिखाना होगा कि आप अहिंसक हैं, आपका गुण आपके आस-पास के लोगों द्वारा, समाज द्वारा पहचाना जाना चाहिए।

इसलिए, जिसे हम सद्गुण कहते हैं, उसमें मान्यता बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। लेकिन जो सद्गुण मन द्वारा विकसित किया जाता है, जो समाज द्वारा मान्यता प्राप्त और स्वीकार किया जाता है और इसलिए सम्मानजनक बन गया है, वह बिल्कुल भी सद्गुण नहीं है। मुझे लगता है कि इसे समझना बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह उन प्रमुख कारकों में से एक है जो दिमाग को सुस्त बना रहा है। निस्संदेह, जो मायने रखता है, वह इस तथ्य को देखना है कि कोई हिंसक है, इसमें जाना, इसे समझना, और इसका विरोध नहीं करना - जिसका मतलब यह नहीं है कि आपको हिंसक होना चाहिए और किसी को मारना चाहिए! महत्वपूर्ण बात हिंसा की भावना को गहराई से समझना है, जो खुद को कई तरीकों से व्यक्त करती है। यदि आप यह समझना शुरू कर दें कि तथाकथित सद्गुण का हर रूप, जो प्रयास, प्रतिरोध, दमन के माध्यम से अस्तित्व में लाया जाता है, संवेदनशीलता के लिए विनाशकारी है, तो आप देखेंगे कि एक गुण है जो पूरी तरह से अलग है क्योंकि यह नहीं है शातिर दिमाग की उपज.

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी विनम्रता की भावना महसूस की है? मुझे यकीन है कि हममें से अधिकांश ने सम्मान महसूस किया है और जहां सम्मान है, वहां अनादर भी है। आप अपने बॉस का, देश के महान लोगों का, उन लोगों का सम्मान करते हैं जिनके पास शक्ति, पद, अधिकार है। आप बदले में कुछ पाने के लिए सम्मान दिखाते हैं; आशीर्वाद लेने के लिए माला देते हो। आप अपने ऊपर वाले व्यक्ति के सामने बहुत झुकते हैं और दूसरों को किनारे कर देते हैं जो आपके लिए कोई मायने नहीं रखते - वे नौकर हैं, मातहत हैं, दलित हैं। अब, एक ऐसा गुण है जिसमें न तो सम्मान का कोई तत्व है और न ही अपमान का, और वह है विनम्रता की भावना। विनम्रता की स्थिति में मन न तो सम्मानजनक होता है और न ही अपमानजनक। लेकिन बदले में कुछ चाहने वाला मन आदर और अनादर से भरा होता है। अनादर होने से सम्मान पैदा होता है, जो अनादर का प्रतिरोध है, इसलिए अनादर मन में घाव की तरह पनपता रहता है और सम्मान भी। लेकिन जिस मन में विनम्रता की भावना होती है वह बिल्कुल अलग स्थिति में होता है।

अब अगर हम, जैसा कि हम आज शाम सुन रहे हैं, विनम्रता की उस स्थिति के प्रति संवेदनशील हो सकते हैं और सीधे अनुभव कर सकते हैं, तो हमने कुछ ऐसा छू लिया होगा जिसे पहचाना नहीं जा सकता। क्या तुम समझ रहे हो? आप यह नहीं कह सकते, "ठीक है, मेरा मन विनम्र है, और मुझे पता है इसका क्या मतलब है।" जिस क्षण पहचानने की प्रक्रिया होती है, विनम्रता की स्थिति नहीं रह जाती है। कृपया इसे समझें. प्यार पहचान में नहीं आता. जब हम कहते हैं कि हम किसी से प्यार करते हैं, तो हम एक भावना को व्यक्त करने के लिए एक शब्द का उपयोग कर रहे हैं, लेकिन जिस क्षण हमने उस भावना को पहचाना और व्यक्त किया है, उसकी गुणवत्ता पहले ही बदल चुकी है। जिसे हम

निश्चित रूप से, हम स्वयं यह देख सकते हैं कि जब तक मन सम्मान और अनादर की स्थिति में है, तब तक उसमें विनम्रता का गुण नहीं है।

जैसा कि मैं कह रहा था, विनम्रता का गुण पहचानने योग्य नहीं है। जो कुछ भी मन विनम्रता के रूप में पहचानता है वह विनम्रता नहीं है। इसलिए व्यक्ति को अपने बोलने के तरीके, अपने होने के तरीके के प्रति जागरूक रहना होगा; किसी को यह पता लगाना होगा कि शब्दों, इशारों, कार्यों के पीछे क्या है। नकार के माध्यम से व्यक्ति सकारात्मकता की ओर आता है, जो विनम्रता है। यद्यपि विनम्रता पहचानने योग्य नहीं है, वर्णन करने योग्य नहीं है, जैसा कि सम्मान और अनादर है, इसमें एक सकारात्मक गुण है जिसे तब महसूस किया जा सकता है जब अन्य अवस्था नहीं होती है। एक मन जो स्वयं के सदाचारी होने के प्रति सचेत है वह वास्तव में एक अनैतिक मन है, और चाहे वह कितना भी सद्गुण, नैतिकता विकसित कर ले, वह अभी भी अनैतिक है। अब, इसे वहीं छोड़ दें।

आइए अगली बात पर चलते हैं, जो है: हममें से अधिकांश लोगों में किसी चीज़ के लिए खुद को प्रतिबद्ध करने की चाहत, मजबूरी क्यों होती है? हम एक पार्टी के हैं, एक समूह के हैं, एक संप्रदाय के हैं; हम खुद को विचारों के एक ढांचे, विश्वासों के एक समूह, दर्शन की एक प्रणाली के प्रति प्रतिबद्ध करते हैं; हम स्वयं को कम्युनिस्ट, समाजवादी, साम्राज्यवादी, पूंजीपति, एक विशेष गुरु के अनुयायी और इसके बाकी सभी लोगों के रूप में मानते हैं। क्यों? कृपया, मैं प्रश्न का उत्तर देने जा रहा हूं, लेकिन यदि आप, जो किसी चीज से संबंधित हैं, यह जान लें कि, जैसा कि मैं बात कर रहा हूं, आप क्यों संबंधित हैं, तो मेरे स्पष्टीकरण का एक अर्थ, एक महत्व होगा।

अब, दुनिया भर के राजनेता शांति की बात करते हैं, और हम सभी शांति चाहते हैं। युद्ध की तरह संघर्षरत मन स्पष्ट रूप से विनाशकारी होता है, और हमें एहसास होता है कि शांति होनी चाहिए। तो हम क्या करें? हम तुरंत संगठनों में शामिल होना शुरू कर देते हैं, हम खुद को कम्युनिस्टों या किसी अन्य समूह के प्रति प्रतिबद्ध कर देते हैं जो कहता है कि यह विश्व शांति लाएगा। और क्या होता है?

आप एक समूह के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और मैं दूसरे समूह के प्रति, इसलिए अनिवार्य रूप से हम एक-दूसरे के साथ संघर्ष में हैं। यदि मैं पूंजीपतियों के खेमे में हूं, तो मैं कहता हूं कि विश्व शांति के बारे में कम्युनिस्टों की बातें दोहरी बातें हैं, और इसके विपरीत। इसलिए, जैसे ही हम एक ऐसे समूह से जुड़ते हैं जो शांति का वादा करता है, हम पहले से ही एक अन्य समूह के साथ संघर्ष में हैं जो एक अलग तरीके से शांति का वादा करता है, और नतीजा यह है कि हम सभी संघर्ष को कायम रखते हुए शांति के बारे में बात करते हैं।

निश्चित रूप से, हमें यह समझकर शुरुआत करनी होगी कि हम खुद को क्यों प्रतिबद्ध करते हैं, हम किसी न किसी चीज़ से क्यों जुड़े होते हैं। आप स्वयं को भारतीय, मुस्लिम, बौद्ध, ईसाई या कम्युनिस्ट क्यों कहते हैं? जाहिर है, एक बहुत ही साधारण कारण से. आप एक समूह के साथ पहचाने जाने, किसी चीज़ से संबंधित होने की इच्छा रखते हैं क्योंकि यह आपको सुरक्षा की भावना देता है। आप कहते हैं, "कार्रवाई आवश्यक है; इसलिए, हमें एक साथ जुड़ना चाहिए।" और जैसे ही आप शामिल होंगे

एक साथ मिलकर एक समूह बनाते हैं, तो आप दूसरे समूह से जूझ रहे हैं जो उसी तरह से कार्य करना चाहता है। दूसरे शब्दों में, जो कार्य किसी पार्टी, किसी राजनीतिक या धार्मिक समूह, किसी विशेष समाज, गुरु, संस्कृति या जीवन शैली के प्रति प्रतिबद्धता से आता है, वह हमेशा संघर्ष की ओर ले जाता है - जो वर्तमान समय में दुनिया में काफी स्पष्ट है। .

अब, मुझे लगता है कि जब मन किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं होता है, किसी समूह के प्रति प्रतिबद्ध नहीं होता है तो एक बिल्कुल अलग तरह की कार्रवाई होती है। लेकिन पहले आइए जांच करें कि हमारे पास यह बाध्यता क्यों है।

यह मजबूरी न केवल छोटे आदमी की होती है, बल्कि महान बुद्धिजीवी, संत की भी होती है - वे सभी किसी न किसी चीज से जुड़ना चाहते हैं। क्यों? स्वयं का निरीक्षण करें और आप देखेंगे कि यदि आप किसी चीज़ से संबंधित नहीं हैं, तो आप असुरक्षित महसूस करते हैं। असुरक्षा का अर्थ है डर, असुरक्षा का अर्थ है आर्थिक हानि, और किसी चीज़ का होना स्वयं को विस्तार की अनुभूति देता है। एक कम्युनिस्ट, या कैथोलिक, या किसी अन्य बड़े, व्यापक संगठन से संबंधित होना - इसमें शामिल सभी निहितार्थों के साथ - आपको सुरक्षा की एक विशाल भावना देता है। यह आपको महत्व की भावना भी देता है, और इस महत्व की भावना से ऐसी कार्रवाई उत्पन्न होती है जो हमेशा दूसरों के साथ संघर्ष पैदा करती है।

कृपया दुनिया में चल रही घटना पर नजर डालें। सबसे पहले हम राष्ट्रवाद नाम की इस कुरूप चीज़ का निर्माण करते हैं, और इस प्रकार स्वयं को परस्पर विरोधी समूहों में विभाजित करते हैं; और फिर, अभी भी अपने राष्ट्रवाद पर कायम रहते हुए, हम कहते हैं कि अंतर्राष्ट्रीयता, भाईचारा और वह सब बकवास होनी चाहिए। जो चीज़ दुनिया में शांति लाएगी वह वास्तव में व्यापक कार्रवाई है, यानी, लोगों को विभाजित करने और संघर्ष पैदा करने वाले पैटर्न के बाहर की कार्रवाई। जब आप और मैं किसी चीज़ से संबंधित नहीं होते हैं, जब हम भारतीय, अमेरिकी, ईसाई, बौद्ध नहीं होते हैं, जब हम उन सभी राजनीतिक और धार्मिक विभाजनों को एक तरफ रख देते हैं जो लोगों को नष्ट कर रहे हैं - केवल तभी हम इंसान के रूप में मिल सकते हैं , गरिमा के साथ, और हमारी कई समस्याओं को हल करने में लग गए। कम्युनिस्ट हमारी समस्याओं का समाधान नहीं करने जा रहे हैं; आपके और मेरे अलावा कोई भी उन्हें हल नहीं कर सकता है - जब हमने खुद को किसी भी समूह, कार्रवाई के किसी भी पैटर्न के लिए प्रतिबद्ध नहीं किया है। फिर एक ऐसा कार्य होता है जो कहीं अधिक गतिशील, कहीं अधिक रचनात्मक, कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है। हममें से अधिकांश ने खुद को प्रतिबद्ध किया है, हम किसी न किसी चीज से जुड़े हैं, और यही हमारे दिमाग के इतने मूर्खतापूर्ण सुस्त होने का एक प्रमुख कारण है - एक तथ्य जिसे हम नहीं देखते हैं, हालांकि यह हमारी नाक के ठीक नीचे है।

सर, इस पर विचार करें, सिर्फ मेरी बात से सहमत न हों। आपकी सहमति या असहमति का बहुत कम महत्व है. जिसका महत्व है वह है शुद्ध करना

आपकी सोच, आपका पूरा सिस्टम, किसी चीज़ से जुड़ने की चाहत। आप उस आग्रह से तब तक मुक्त नहीं हो सकते जब तक कि आप स्वयं इसके बारे में जागरूक नहीं होते, जब तक आप इसकी जांच नहीं करते, इसमें नहीं जाते, इसे नहीं समझते। यदि आप इसकी निंदा नहीं करते हैं या इसे उचित नहीं ठहराते हैं, यदि आप यह नहीं कहते हैं कि यह स्वाभाविक है, कि हर कोई किसी न किसी चीज़ से जुड़ना चाहता है, इत्यादि, लेकिन इसे समझें, वास्तव में इसकी सच्चाई को समझें, तो आप पाएंगे कि आप पूरी तरह से स्वतंत्र हैं इसका तुरंत. यह सत्य के बारे में अजीब चीज़ों में से एक है। किसी समस्या में जो सत्य है उसका बोध मन को समस्या से मुक्त कर देता है। आपको कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है.

उसी तरह, किसी को भी इस तथ्य को देखना होगा कि किसी भी समूह से संबंधित होना, किसी भी धार्मिक या दार्शनिक प्रणाली के प्रति प्रतिबद्ध होना, किसी भी कार्य पद्धति के प्रति प्रतिबद्ध होना विनाशकारी है क्योंकि यह लोगों को विभाजित करता है और दिमाग को सुस्त बनाता है। जब आप प्रतिबद्ध होते हैं, जब आप किसी चीज़ से जुड़े होते हैं, तो आप निर्धारित पैटर्न से परे सोचना बंद कर देते हैं क्योंकि जिस क्षण आप ऐसा करते हैं, आप आलोचनात्मक हो जाते हैं, और फिर आपको बाहर निकाल दिया जाता है, आप असुरक्षित बना दिए जाते हैं। किसी समूह में शामिल होने से बहुत प्रभावी, कुशल कार्रवाई हो सकती है, लेकिन वह कार्रवाई विनाशकारी होती है। आप इस तथ्य को देखने का विरोध करते हैं क्योंकि आप एक ऐसे कार्य को नहीं जानते हैं जो किसी चीज़ से संबंधित प्रतिबद्धताओं का परिणाम नहीं है। लेकिन ऐसा तभी होता है जब आप किसी भी चीज़ से, किसी संगठन से, किसी समूह से संबंधित नहीं होते हैं, कि उस नकार की भावना के माध्यम से, एक सकारात्मक कार्रवाई की खोज करने की संभावना होती है जो समग्र होती है। कृपया इसे समझें.

तो हम देखते हैं कि सद्गुण, जैसा कि हम जानते हैं और विकसित करते हैं, उन कारकों में से एक है जो मन को सुस्त, यांत्रिक बना देता है। एक और कारक जो मन को सुस्त बनाता है वह है किसी चीज़ से जुड़े होने का एहसास। और एक तीसरा कारक है जो मन को सुस्त बनाता है - शक्ति की इच्छा।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी अपने अंदर सत्ता की इस चाहत को नोटिस किया है।
आप प्रमुख, प्रसिद्ध होना चाहते हैं; आप चाहते हैं कि आपकी राय जानी जाए, चाहे वह लोगों के एक छोटे समूह के लिए हो या विश्वव्यापी स्तर पर हो। हममें से प्रत्येक में कुछ बनने, समाज द्वारा एक सफल व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने की तीव्र इच्छा होती है। यदि आप अपने मन का निरीक्षण करें, तो आप देखेंगे कि कैसे, छोटे रूप में या बड़े रूप में, आप पहचान के लिए तरसते हैं।

कृपया श्रीमानों, इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि, जैसा कि आप देखेंगे, जो मन सत्ता में स्थापित है वह एक दुष्ट मन है। सारी शक्ति बुरी है, चाहे वह राजनीतिक शक्ति हो या तथाकथित धार्मिक शक्ति। जिस क्षण आपने शक्ति, पद, सफलता हासिल कर ली है, आपका दिमाग पहले ही अपनी कोमलता, अपनी सतर्कता, अपनी तेजी, प्राकृतिक विकास की अपनी असाधारण गुणवत्ता, सौम्यता खो चुका है।

आप जानते हैं, गुमनाम रहना सबसे कठिन काम है। हममें से कई लोगों को गुमनाम रहने की लालसा होती है, एक बिंदु पर पहुंच जाते हैं जब हम गुमनाम रहना चाहते हैं, क्योंकि पूर्ण गुमनामी में सुंदरता होती है, और व्यक्ति हमेशा असाधारण रूप से स्वतंत्र महसूस करता है। तो हम क्या करें? हम एक लंगोटी पहनते हैं या किसी मठ में प्रवेश करते हैं या कोई दूसरा नाम लेते हैं, लेकिन अंदर से हम अभी भी एक अलग तरह की महत्वाकांक्षा से भरे होते हैं। अब हम एक आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में जाने जाना चाहते हैं, इसलिए हमने केवल एक कपड़ा त्याग दिया है और दूसरा ले लिया है, एक नाम से छुटकारा पा लिया है और दूसरा धारण कर लिया है। बाहरी तौर पर हम गुमनामी का दिखावा कर रहे हैं, लेकिन अंदर से हम घमंड से जल रहे हैं और शक्ति का पीछा कर रहे हैं। हमारी "विनम्रता" में लंगोटी, या बागा पहनना, या दिन में केवल एक बार भोजन करना शामिल है, जो सभी समाज द्वारा सम्मानजनक माने जाते हैं।

मैं जानता हूं कि आप सभी मुस्कुराते हैं और सहमत होते हैं, लेकिन आप सभी बिल्कुल एक ही चीज़ के पीछे हैं। (हँसी) इस पर हँसो मत, महोदय। आप सभी सत्ता चाहते हैं, आप सभी पद, प्रतिष्ठा चाहते हैं, हालाँकि एक या दो अपवाद हो सकते हैं। और जो मन शक्ति की तलाश में है, यह सोचकर कि यह अच्छा करेगा, वह बहुत विनाशकारी मन है क्योंकि वह स्वयं से चिंतित है। महोदय, सत्य तब तक नहीं पाया जा सकता जब तक कि मन पूरी तरह से गुमनाम न हो। मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने ध्यान दिया है कि प्यार गुमनाम होता है! मैं अपनी पत्नी, अपने बच्चों से प्यार कर सकता हूं, लेकिन उस प्यार की गुणवत्ता गुमनाम है। सूर्यास्त की तरह, प्यार न तुम्हारा है न मेरा।

तो बुराई है, भ्रष्टाचार है, जब मन सत्ता में डूब जाता है, और सत्ता की इच्छा मिटाना सबसे कठिन चीजों में से एक है। किसी का न होना, आंतरिक रूप से गुमनाम रहना आसान नहीं है। आप कह सकते हैं, "मंच पर बैठकर बात करने में, क्या आप स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर रहे हैं?" बाहरी तौर पर कोई बात कर सकता है, लेकिन अंदर से कोई पूरी तरह से गुमनाम हो सकता है। और जब पूर्ण गुमनामी की यह भावना होती है, तो आप पाएंगे कि एक व्यापक कार्रवाई आती है जिसका अतीत से कोई लेना-देना नहीं है, या सत्ता की प्यास से कोई लेना-देना नहीं है जो दुनिया में ऐसी दुश्मनी और बुराई पैदा करता है। सारी शक्ति बुरी है, चाहे वह राष्ट्रों की शक्ति हो, नेताओं की शक्ति हो, पत्नी की अपने पति पर शक्ति हो, या पति की अपनी पत्नी और बच्चों पर शक्ति हो। यदि आप स्वयं का निरीक्षण करें जब आप पोज़ नहीं दे रहे हों, तो आप अपने मन के गुप्त स्थानों में देखेंगे, कि आप भी चाहते हैं कि शक्ति हावी हो, प्रसिद्ध हो, आपका नाम समाचार पत्रों में छपे; और जब कोई मन शक्ति की तलाश में होता है, तो यह एक विनाशकारी मन होता है, यह कभी भी दुनिया में शांति नहीं ला सकता है।

तो, ये ऐसे कारक हैं जो मन को सुस्त बनाते हैं: वह गुण जो मन द्वारा विकसित किया जाता है और समाज द्वारा गुणी के रूप में मान्यता प्राप्त है, मन के विचार और कार्य जो एक विशेष पैटर्न के लिए प्रतिबद्ध हैं

विचारों की, और शक्ति, पद, प्रतिष्ठा की खोज। ये सब एक स्व-केंद्रित गतिविधि, एक आत्म-महत्व, एक आत्म-विस्तार का संकेत देते हैं, क्या ऐसा नहीं है? यही वह प्रक्रिया है जो मन को सुस्त बना देती है और सुस्त दिमाग अपनी सारी संवेदनशीलता खो देता है।

अब, मुझे नहीं पता कि आपने कभी इस पर विचार किया है कि सुंदरता क्या है। मैं अचानक किसी बिल्कुल अलग चीज़ के बारे में बात नहीं कर रहा हूं क्योंकि यह उस सब से संबंधित है जो आज शाम कहा गया है। मुझे आश्चर्य है कि क्या आप कभी किसी शाम आसमान की ओर देखने के लिए रुके हैं? यहां आते समय, क्या आपने तूफानी बादलों, उनके आकार, उनके अंधेरे, उनकी गहराई, उनके पीछे शक्ति की असाधारण भावना पर ध्यान दिया? यदि आपने वह सारा सौंदर्य देखा, तो क्या आपके मन में उस पर कोई प्रतिक्रिया हुई, या केवल संपूर्ण बोध की भावना थी जिसमें कोई प्रतिक्रिया नहीं थी?

कृपया, मुझे डर है कि मौखिक अर्थ में यह काफी कठिन होगा, लेकिन यदि आपने कभी सुंदरता की गुणवत्ता को महसूस किया है, तो आप जो कहा जा रहा है उसके महत्व के बारे में तुरंत जागरूक हो जाएंगे। हममें से लोग आकाश के प्रति, सड़क के प्रति, राहगीर के प्रति, मृत्यु के प्रति असंवेदनशील हैं। लेकिन मैं उस मन की बात कर रहा हूं जो संवेदनशील है; मैं उस मन की प्रकृति के बारे में पूछताछ कर रहा हूं जो सुंदरता को समझता है। निश्चित रूप से, जब आप किसी चीज़ को समग्रता से अनुभव करते हैं, तो कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है।

आप इसे शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं, कह सकते हैं, "यह कितना सुंदर सूर्यास्त है," लेकिन पूर्ण धारणा का क्षण वह क्षण होता है जब आपका पूरा अस्तित्व स्मृति के माध्यम से पहचान न होने की स्थिति में होता है।

महोदय, मैं आपसे अलग होकर बात नहीं कर रहा हूं; मैं आपके साथ जोर-जोर से सोच रहा हूं और इससे आगे जाने के लिए आपको शब्दों के साथ खेलते हुए मेरे साथ चलना होगा। जो मन सौंदर्य के प्रति संवेदनशील नहीं है वह अत्यंत घिनौना मन है। यह बड़े बाँध बना सकता है; यह किसी भी पंचवर्षीय योजना को पूरा करने में मदद कर सकता है। वह यह और वह कर सकता है, लेकिन जो मन सुंदरता के प्रति असंवेदनशील है वह मूलतः एक मूर्ख मन है, और वह जो यांत्रिक है उसके अलावा कुछ भी नहीं बना सकता है।

हम बात कर रहे हैं खूबसूरती की. जहां किसी चीज़ का पूर्ण अनुभव होता है, वहां स्मृति की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है, और इसलिए प्रतिक्रिया के माध्यम से स्मृति को आगे नहीं बढ़ाया जाता है। ऐसा मन सौंदर्य की स्थिति में होता है, और सौंदर्य का संबंध प्रेम से होता है। सर, प्यार एक जुनून है.

अब शब्दों के प्रयोग में भी स्पष्टता रखनी होगी। हममें से अधिकांश लोग जुनून शब्द से डरते हैं क्योंकि हम ऐसे समाज में रहते हैं जो जुनून को बदसूरत मानता है, सम्मानजनक नहीं। लेकिन वासना जुनून से अलग है. प्यार हमेशा जुनून के साथ होता है, वासना के साथ नहीं। आपने जुनून को नष्ट कर दिया है, सावधानीपूर्वक इसे जड़ से उखाड़ दिया है क्योंकि आपने कहा है कि जुनून एक बदसूरत चीज है, और आप भावुक इंसान नहीं हैं। आप कामुक हो सकते हैं, और संभवतः आप हैं- यौन रूप से कामुक और शक्ति, पद के पीछे वासनापूर्ण-लेकिन आप भावुक नहीं हैं

मनुष्य। और यदि आत्म-परित्याग नहीं है तो आप भावुक नहीं हो सकते।

क्या तुम समझ रहे हो? तपस्या की वह आंतरिक भावना अवश्य होनी चाहिए जिसका स्वभाव ही सरलता है। लेकिन आप तपस्या नहीं विकसित कर सकते। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह एक ऐसा गुण बन जाता है जो पहचानने योग्य है और इसलिए सम्मानजनक है - एक भयानक चीज़। आप जानते हैं, श्रीमान, जुनून के बिना, कोई जुनूनी कार्य नहीं होता है।

अधिकतर, वर्तमान में हमारे पास जो कार्य है वह आवेशपूर्ण नहीं है; यह एक सोची-समझी, धूर्ततापूर्ण कार्रवाई है।

तीव्रता, या जुनून, आत्म-त्याग का परिणाम है - वह त्याग नहीं जो इस और उस का खंडन है, बल्कि पूर्ण आत्म-त्याग है जो तपस्या की स्थिति लाता है। तपस्या की इस अवस्था में मन सरल होता है और ऐसा मन भावुक मन होता है। केवल भावुक मन ही प्रेम को जानता है, और केवल वह मन जो प्रेम को जानता है वह समझ सकता है कि सुंदरता क्या है - वह कलाकार नहीं जो चित्र बनाता है और अपनी अहंकारिता से भरा है।

प्रेम भावुक है; इसलिए, प्रेम सौंदर्य है. सुंदरता के बिना कोई प्रेम नहीं है, और प्रेम के बिना कोई सुंदरता नहीं है। केवल मन ही शाश्वत से शाश्वत तक का अनुभव करता है - केवल ऐसा मन ही दुख पैदा किए बिना कार्य कर सकता है।

कृपया जो कहा जा रहा है उसे दिल से सुनें और इसे किसी विषय पर दी जा रही बातचीत न समझें। यह आपका अपना मन है जिसके प्रति आपको जागरूक रहना होगा। यह आपका अपना कार्य है जो मायने रखता है, न कि राजनीतिक या धार्मिक नेताओं का कार्य। आप क्या हैं, आपका मन क्या है, यह मायने रखता है। वह मन जिसने खुद को प्रतिबद्ध नहीं किया है, जो किसी भी चीज़ से संबंधित नहीं है, वह मन जो सद्गुणों की खेती के माध्यम से अपनी स्वयं की अहंकेंद्रितता को मजबूत नहीं कर रहा है, वह मन जो अब शक्ति की तलाश नहीं कर रहा है - यह केवल ऐसा मन है जो प्रेम को जानता है और इसलिए सुंदरता। ऐसा मन, निश्चित रूप से, समग्रता है; इसकी कोई शुरुआत और कोई अंत नहीं है, और इसका कार्य एक आशीर्वाद है, अभिशाप नहीं। केवल ऐसा मन ही वास्तविक को प्राप्त कर सकता है, जो अथाह है।

9 मार्च, 1960

ओजाई, कैलिफ़ोर्निया, 1960

ओक ग्रोव में पहली बातचीत

मेरा मानना है कि शुरू से ही हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि हम इन बैठकों में क्यों एकत्रित होते हैं। मुझे लगता है कि अगर आप इन बातों को मनोरंजन का साधन मानेंगे, दोपहर या सुबह की कोई चीज़ मानेंगे जब आपके पास करने के लिए कुछ बेहतर नहीं होगा तो यह पूरी तरह से समय की बर्बादी होगी। और मुझे लगता है कि यह आपके और मेरे समय की भी बर्बादी होगी, अगर आप केवल ऐसे सुनते रहें जैसे कि आप कुछ जानकारी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहे हों। क्योंकि मुझे लगता है कि ये बैठकें केवल विचारों के संचार के लिए नहीं हैं, बल्कि सोचने की प्रक्रिया की जांच के लिए हैं और इसके लिए आपकी ओर से बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। ध्यान से मेरा तात्पर्य केवल एकाग्रता से नहीं है, बल्कि एक चौकस मन से है जो खोज करने, परखने और खोजने के लिए इच्छुक है।

चूँकि ये बैठकें किसी भी रूप में मनोरंजन नहीं हैं, मुझे लगता है कि यह बहुत लाभदायक होगा यदि हम इस विचार से भी दूर रहें कि हम किसी भी प्रकार का प्रचार कर रहे हैं। मैं आपको किसी भी चीज़ के बारे में आश्वस्त करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ - सोचने के किसी विशेष तरीके के बारे में या जीवन जीने के नए तरीके के बारे में, कार्रवाई के नए पैटर्न के बारे में, क्योंकि मैं प्रचार में विश्वास नहीं करता हूँ। विचार मौलिक रूप से मन की गुणवत्ता को नहीं बदलते हैं। हम चर्चा करने, मन की गुणवत्ता, सोच की प्रकृति का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं - और यदि संभव हो तो उन क्षेत्रों से परे जाने की कोशिश कर रहे हैं, उन क्षेत्रों में जहां विचार प्रवेश नहीं कर सकते। आख़िरकार, विचार बहुत सीमित है। सभी तर्कों की अपनी-अपनी कंडीशनिंग होती है। व्यक्ति को तर्क करना चाहिए, व्यक्ति को स्पष्ट रूप से, निश्चित रूप से, सकारात्मक ढंग से सोचना चाहिए; लेकिन सोच, चाहे कितनी ही व्यापक, कितनी ही गहरी, कितनी भी विशाल हो, फिर भी सीमित है। सारी सोच ज्ञान, या ज्ञान के संचय से शुरू होती है; यह ज्ञान की पृष्ठभूमि से उत्पन्न होता है; और ज्ञान, निश्चित रूप से, बहुत सीमित है।

इसलिए, यदि हम एक साथ मिलकर अपने मन का अन्वेषण कर सकें, तो मुझे लगता है कि ये बैठकें बहुत सार्थक होंगी। लेकिन स्वयं के बारे में पूछताछ करना बहुत कठिन है, बहुत कठिन है, क्योंकि हममें से अधिकांश लोग इसके आदी नहीं हैं। हममें से अधिकांश लोग उपयोग में हैं

बताया जा रहा है कि क्या करना है, क्या सोचना है; हम विचारों की एक निश्चित श्रृंखला, आचरण के नियम का अनुसरण करने के आदी हैं, लेकिन चेतना की संपूर्ण प्रक्रिया का पता लगाना, इस संपूर्ण इकाई की जांच करना, जिसे हम मन कहते हैं, बिल्कुल अलग बात है। इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण होगा यदि, बिना किसी अनुनय के, बिना किसी निर्देश या प्रभाव के, हम मिलकर अपने मन की जांच कर सकें।

हम इस दुनिया में चाहे कितनी भी प्रगति कर लें, चाहे हम आकाश में कितनी भी दूर चले जाएँ - चाँद, शुक्र और उसके बाकी सभी स्थानों पर जाएँ - हममें से अधिकांश का जीवन अभी भी बहुत उथला, सतही है; वे अभी भी बाहर की ओर हैं। और भीतर जाना कहीं अधिक कठिन है; इसके लिए कोई तकनीक नहीं है, इसे पढ़ाने के लिए कोई प्रोफेसर नहीं है, कोई प्रयोगशाला नहीं है जहां आप भीतर यात्रा करना सीख सकें। ऐसा कोई शिक्षक नहीं है जो आपका मार्गदर्शन कर सके - और कृपया मुझ पर विश्वास करें - किसी भी प्रकार का कोई अधिकार नहीं है जो आपको मन नामक इस जटिल इकाई की जांच करने में मदद कर सके।

आपको किसी चीज़ पर निर्भर हुए बिना, इसे पूरी तरह से स्वयं ही करना होगा। और जैसे-जैसे आधुनिक सभ्यता अधिक से अधिक जटिल, अधिक से अधिक बाह्य, प्रगतिशील होती जा रही है, हम सभी में और भी अधिक सतही रूप से जीने की प्रवृत्ति होती जा रही है, है न? हम अधिक संगीत समारोहों में भाग लेते हैं, हम अधिक चतुर किताबें पढ़ते हैं, हम अंतहीन सिनेमा जाते हैं, हम बौद्धिक रूप से चर्चा करने के लिए इकट्ठा होते हैं, हम विश्लेषकों की मदद से मनोवैज्ञानिक रूप से खुद की जांच करते हैं, इत्यादि; या, क्योंकि हम ऐसा सतही जीवन जीते हैं, हम चर्चों की ओर रुख करते हैं और अपने दिमागों को उनके अनुचित और उचित दोनों तरह के हठधर्मियों से, उन मान्यताओं से भर देते हैं जो लगभग बेतुकी हैं; या हम किसी प्रकार के रहस्यवाद में भाग जाते हैं। दूसरे शब्दों में, यह महसूस करते हुए कि हमारी रोजमर्रा की जिंदगी उथली है, हममें से ज्यादातर लोग इससे दूर भागने की कोशिश करते हैं। हम अपने मन को काल्पनिक दर्शन में या जिसे हम ध्यान, चिंतन कहते हैं, उसमें संलग्न करते हैं, जो आत्म-सम्मोहन का एक रूप है; या, यदि हम बिल्कुल बौद्धिक हैं, तो हम अपना खुद का एक विचार-संसार बनाते हैं जिसमें हम संतुष्ट, बौद्धिक रूप से संतुष्ट रहते हैं।

इस पूरी प्रक्रिया को देखकर, मुझे ऐसा लगता है कि समस्या यह नहीं है कि क्या करें, या कैसे रहें, या जब हम युद्ध का सामना करें, दुनिया में वास्तव में होने वाली तबाही का सामना करें तो तत्काल कार्रवाई क्या करें। , बल्कि स्वतंत्रता की जांच कैसे करें। क्योंकि स्वतंत्रता के बिना सृजन नहीं होता। आज़ादी से मेरा मतलब वह करने की आज़ादी नहीं है जो आपको पसंद है - कार में बैठना और सड़क पर गाड़ी चलाना, या जो आपको पसंद है उसके बारे में सोचना, या किसी विशेष गतिविधि में खुद को व्यस्त रखना। मुझे ऐसा लगता है कि आज़ादी के ऐसे रूप वास्तव में आज़ादी हैं ही नहीं। लेकिन क्या मन की स्वतंत्रता है? चूँकि हममें से अधिकांश लोग रचनात्मक स्थिति में नहीं रहते हैं, मुझे लगता है कि यह किसी के लिए भी अनिवार्य है

इस प्रश्न पर बहुत गहराई से और बहुत गंभीरता से पूछताछ करने के लिए विचारशील, गंभीर व्यक्ति।

यदि आप ध्यान दें तो आप देखेंगे कि स्वतंत्रता का अंतर बहुत ही संकीर्ण होता जा रहा है; राजनीतिक, धार्मिक, तकनीकी रूप से हमारे दिमाग को आकार दिया जा रहा है, और हमारा रोजमर्रा का जीवन स्वतंत्रता की गुणवत्ता को कम कर रहा है। हम जितना अधिक सभ्य होते जाते हैं, स्वतंत्रता उतनी ही कम होती जाती है। मुझे नहीं पता कि आपने ध्यान दिया है या नहीं कि सभ्यता हमें कैसे तकनीशियन बना रही है, और जो दिमाग एक तकनीक के इर्द-गिर्द बना है वह स्वतंत्र दिमाग नहीं है। एक मन जो चर्च, हठधर्मिता, संगठित धर्म द्वारा आकार लेता है वह स्वतंत्र मन नहीं है। जो मन ज्ञान से अंधकारमय हो गया है वह स्वतंत्र मन नहीं है। यदि हम स्वयं का निरीक्षण करें, तो यह जल्द ही स्पष्ट हो जाता है कि हमारे दिमाग पर ज्ञान का बोझ है - हम बहुत कुछ जानते हैं। हमारा मन उन विश्वासों और हठधर्मिताओं से बंधा हुआ है जो दुनिया भर में संगठित धर्मों ने उन पर थोपे हैं। हमारी शिक्षा मोटे तौर पर बेहतर आजीविका कमाने के लिए अधिक तकनीक प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है, और हमारे बारे में सब कुछ हमारे दिमाग को आकार दे रहा है, हर प्रकार का प्रभाव हमें निर्देशित और नियंत्रित कर रहा है।

इसलिए, आज़ादी का दायरा लगातार कम होता जा रहा है। सम्मान का भयानक भार, जनमत की स्वीकार्यता, हमारे अपने डर, चिंताएँ - ये सभी चीजें, निश्चित रूप से, अगर कोई इनके बारे में थोड़ा भी जागरूक है, तो स्वतंत्रता की गुणवत्ता को कम कर रही हैं। और शायद, हम आने वाली बातचीत के दौरान इस पर चर्चा और समझ सकते हैं: कोई मन को कैसे मुक्त कर सकता है, और फिर भी अपनी सभी तकनीकों, ज्ञान, अनुभवों के साथ इस दुनिया में कैसे रह सकता है? मुझे लगता है कि यह समस्या है, केंद्रीय मुद्दा है, न केवल इस देश में, बल्कि भारत में, यूरोप में और पूरी दुनिया में। हम रचनात्मक नहीं हैं, हम यांत्रिक होते जा रहे हैं। रचनात्मकता से मेरा तात्पर्य केवल एक कविता लिखना या कोई चित्र बनाना या किसी नई चीज़ का आविष्कार करना नहीं है। ये महज़ एक प्रतिभाशाली दिमाग की क्षमताएं हैं। मेरा अभिप्राय उस अवस्था से है जो स्वयं सृष्टि है।

लेकिन यदि संभव हो तो हम उस सब में तब जाएंगे, जब हम केंद्रीय मुद्दे को समझ लेंगे - कि हमारा दिमाग अधिक से अधिक वातानुकूलित होता जा रहा है, कि स्वतंत्रता का मार्जिन कम और कम होता जा रहा है। हम या तो अमेरिकी हैं, झंडे के पीछे सभी भावनात्मक, राष्ट्रवादी गुणों के साथ, या हम रूसी, भारतीय, यह या वह हैं। हम सीमाओं के कारण, हठधर्मिता के कारण, सोचने के परस्पर विरोधी तरीकों के कारण, संगठित धार्मिक विचारों की विभिन्न श्रेणियों के कारण अलग-अलग हैं; हम राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से अलग हो गए हैं। और यदि आप हमारे चारों ओर होने वाली इस पूरी प्रक्रिया की जाँच करें, तो आप देखेंगे कि व्यक्तिगत मनुष्य के रूप में हम बहुत कम महत्व रखते हैं; हम लगभग कुछ भी नहीं हैं।

हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अनेक समस्याएँ हैं।
व्यक्तिगत रूप से, शायद, हम उनमें से कुछ को हल करने में सक्षम होंगे, और सामूहिक रूप से हम वह करेंगे जो हम कर सकते हैं। लेकिन ये सभी समस्याएं, निश्चित रूप से, मुख्य मुद्दा नहीं हैं। मुझे ऐसा लगता है कि मुख्य मुद्दा मन को मुक्त करना है, और कोई भी मन को मुक्त नहीं कर सकता है, या मन खुद को तब तक मुक्त नहीं कर सकता जब तक वह खुद को नहीं समझ लेता। इसलिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है - स्वयं को जानना। इसके लिए जागरूकता की एक निश्चित गुणवत्ता की आवश्यकता होती है क्योंकि यदि कोई स्वयं को नहीं जानता है, तो तर्क के लिए, विचार के लिए कोई आधार नहीं है। लेकिन जानना और जानना दो अलग चीजें हैं। जानना एक सतत प्रक्रिया है, जबकि ज्ञान सदैव स्थिर रहता है।

मुझे नहीं पता कि वह बात स्पष्ट है या नहीं; यदि नहीं, तो शायद आगे बढ़ते हुए मैं इसे स्पष्ट कर सकूँ। लेकिन आज शाम मैं जो करना चाहता हूं वह केवल कुछ बातें बताना है, और बाद में होने वाली बातचीत के दौरान हम उनकी जांच कर सकते हैं। हमें समग्र तस्वीर को देखकर शुरुआत करनी होगी - किसी विशेष बिंदु, किसी विशेष समस्या या कार्रवाई पर ध्यान केंद्रित नहीं करना, बल्कि अपने संपूर्ण अस्तित्व को देखना, जैसे वह था। एक बार जब हम अपनी इस असाधारण तस्वीर को देख लेते हैं, तब हम स्वयं की पुस्तक ले सकते हैं और उसमें अध्याय दर अध्याय, पृष्ठ दर पृष्ठ देख सकते हैं।

तो, मेरे लिए केंद्रीय समस्या स्वतंत्रता है। आज़ादी किसी चीज़ से नहीं है; वह केवल एक प्रतिक्रिया है. मुझे लगता है कि आज़ादी बिल्कुल अलग चीज़ है। अगर मैं भय से मुक्त हूं तो यह एक बात है। भय से मुक्ति एक प्रतिक्रिया है जो केवल एक निश्चित साहस लाती है। लेकिन मैं उस आज़ादी की बात कर रहा हूँ जो किसी चीज़ से नहीं है, जो कोई प्रतिक्रिया नहीं है और जिसके लिए बहुत अधिक समझ की आवश्यकता होती है।

मैं यह सुझाव देना चाहूंगा कि जो लोग इन बैठकों में नियमित रूप से आ रहे हैं, उन्हें जब यहां से दूर हों तो उन्हें इस पर विचार करने के लिए कुछ समय देना चाहिए कि हम क्या चर्चा कर रहे हैं। हम किसी भी बात का खंडन या स्वीकार नहीं कर रहे हैं क्योंकि मैं किसी भी तरह से आपका प्राधिकारी नहीं हूं; मैं स्वयं को एक शिक्षक के रूप में स्थापित नहीं कर रहा हूँ। मेरे लिए, कोई शिक्षक नहीं है, कोई अनुयायी नहीं है - और कृपया मुझ पर विश्वास करें, मैं यह बात बहुत गंभीरता से कह रहा हूं। मैं तुम्हारा शिक्षक नहीं हूं, इसलिए तुम मेरे अनुयायी नहीं हो. जिस क्षण आप अनुसरण करते हैं, आप बाध्य हो जाते हैं, आप स्वतंत्र नहीं होते। यदि आप किसी सिद्धांत को स्वीकार करते हैं, तो आप उस सिद्धांत से बंधे हैं; यदि आप किसी भी प्रणाली का अभ्यास करते हैं, चाहे वह कितनी भी जटिल, कितनी भी प्राचीन या आधुनिक क्यों न हो, आप उस प्रणाली के गुलाम हैं।

हम जो करने की कोशिश कर रहे हैं वह जांच करना है, एक साथ पता लगाना है। आप केवल वही नहीं सुन रहे हैं जो मैं बता रहा हूं, बल्कि सुनने में आप स्वयं को खोजने का प्रयास कर रहे हैं ताकि आप स्वतंत्र हों। जो व्यक्ति बोल रहा है वह का है

कोई मूल्य नहीं है, लेकिन जो कहा जाता है, जो उजागर किया जाता है, जो स्वयं खोजा जाता है वह सर्वोच्च महत्व का है। यह सब व्यक्तिगत पंथ, यह व्यक्तिगत अनुसरण, या किसी व्यक्ति को सत्ता में स्थापित करना पूरी तरह से हानिकारक है। महत्वपूर्ण बात यह है कि मन को कैसे मुक्त किया जाए, इसकी जांच में आप क्या खोजते हैं, ताकि एक इंसान के रूप में आप रचनात्मक हों।

आख़िरकार, वास्तविकता, या जो शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, उसे उस दिमाग से नहीं पाया जा सकता जो अवरुद्ध है, बोझ से दबा हुआ है। मैं सोचता हूं, एक ऐसी स्थिति है - चाहे आप इसे कुछ भी कहें - जो कि किसी संत, किसी साधक, किसी भी व्यक्ति का अनुभव नहीं है जो इसे खोजने का प्रयास कर रहा है क्योंकि सभी अनुभव वास्तव में अतीत की निरंतरता है। अनुभव केवल अतीत को मजबूत करता है; इसलिए, अनुभव मन को मुक्त नहीं करता है। मुक्त तत्व मन की वह स्थिति है जो अनुभव करने वाली इकाई के बिना भी अनुभव करने में सक्षम है। इसके लिए फिर से एक निश्चित स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, और हम आगामी वार्ता में इस पर विचार करेंगे।

आज शाम मैं जो कहना चाहता हूं वह यह है कि न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि दुनिया में भी बहुत अधिक अशांति, बहुत अधिक अनिश्चितता है; और इस अशांति, इस अनिश्चितता के कारण, हर तरह का दर्शन उत्पन्न हुआ है - निराशा का दर्शन, तत्काल में जीने का दर्शन, अस्तित्व को उसके स्वरूप में स्वीकार करने का दर्शन। परंपराओं से मुक्ति, स्वीकार्यता और प्रतिक्रिया की दुनिया का निर्माण हो रहा है। अथवा एक धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म में चले जाओ; यदि आप कैथोलिक हैं, तो आप कैथोलिक धर्म छोड़ देते हैं और हिंदू बन जाते हैं या किसी अन्य समूह में शामिल हो जाते हैं। निश्चित रूप से, इनमें से कोई भी प्रतिक्रिया किसी भी तरह से मन को मुक्त होने में मदद नहीं करेगी।

इस स्वतंत्रता को लाने के लिए, आत्म-ज्ञान होना चाहिए - आपके सोचने के तरीके को जानना और उस प्रक्रिया में मन की संपूर्ण संरचना की खोज करना। आप जानते हैं, तथ्य एक बात है और प्रतीक दूसरी बात है; शब्द एक चीज़ है और शब्द जिसका प्रतिनिधित्व करता है वह दूसरी चीज़ है। हममें से अधिकांश के लिए, प्रतीक - ध्वज का प्रतीक, क्रॉस का प्रतीक - असाधारण रूप से महत्वपूर्ण हो गया है, इसलिए हम प्रतीकों द्वारा, शब्दों द्वारा जीते हैं; लेकिन शब्द, प्रतीक, कभी महत्वपूर्ण नहीं होता। और शब्द को, प्रतीक को तोड़ना, उसके पीछे जाना आश्चर्यजनक रूप से कठिन कार्य है। मन को इन शब्दों से मुक्त करना - आप एक अमेरिकी हैं, आप एक कैथोलिक हैं, आप एक डेमोक्रेट हैं, या एक रूसी, या एक हिंदू हैं - बहुत कठिन है। और फिर भी, यदि हम यह जानना चाहेंगे कि स्वतंत्रता क्या है, तो हमें प्रतीक, शब्द को तोड़ना होगा। मन की सीमा हमारी शिक्षा द्वारा, उस संस्कृति की स्वीकार्यता से निर्धारित होती है जिसमें हम पले-बढ़े हैं, उस प्रौद्योगिकी द्वारा जो हमारी विरासत का हिस्सा है; और घुसना

हमारी सोच को प्रभावित करने वाली इन सभी परतों के लिए एक बहुत ही सतर्क, गहन दिमाग की आवश्यकता होती है।

मुझे लगता है कि शुरू से ही यह समझना सबसे महत्वपूर्ण है कि ये बातचीत किसी भी तरह से आपकी सोच को निर्देशित या नियंत्रित करने या आपके दिमाग को आकार देने के लिए नहीं है। हमारी समस्या इतनी बड़ी है कि इसे किसी संगठन से जुड़कर, या किसी वक्ता को सुनकर, पूर्व से किसी दर्शन को स्वीकार करके, या ज़ेन बौद्ध धर्म में खोकर, ध्यान की एक नई तकनीक खोजकर, या नए दर्शन प्राप्त करके हल नहीं किया जा सकता है। मेस्कलीन या किसी अन्य दवा का उपयोग। हमें एक बहुत ही स्पष्ट दिमाग की आवश्यकता है - एक ऐसा दिमाग जो जांच करने से डरता नहीं है, एक ऐसा दिमाग जो अकेले रहने में सक्षम है, जो अपने अकेलेपन, अपनी खालीपन का सामना कर सकता है, एक ऐसा दिमाग जो पता लगाने के लिए खुद को नष्ट करने में सक्षम है।

इसलिए, मैं आप सभी को वास्तव में गंभीर होने का महत्व बताऊंगा; आप इन वार्ताओं में मनोरंजन के लिए, या जिज्ञासावश, या सिर्फ इसलिए नहीं आ रहे हैं क्योंकि मैं पाँच साल बाद वापस आया हूँ। यह सब समय की बर्बादी है. कुछ बहुत गहरा, व्यापक है, जिसे हमें स्वयं खोजना है: अपनी चेतना की सीमाओं से परे कैसे जाएं।

क्योंकि, सारी चेतना एक सीमा है और चेतना के भीतर होने वाला सारा परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है। और मुझे लगता है कि यह संभव है - रहस्यमय तरीके से नहीं, भ्रम की स्थिति में नहीं, बल्कि वास्तव में - उन सीमाओं से परे जाना जो मन ने निर्धारित की हैं। लेकिन कोई ऐसा तभी कर सकता है जब वह मन की गुणवत्ता की जांच करने और स्वयं के बारे में वास्तव में गहन ज्ञान रखने में सक्षम हो। स्वयं को जाने बिना, आप बहुत दूर तक नहीं जा सकते क्योंकि आप एक भ्रम में खो जाएंगे, आप काल्पनिक विचारों में, किसी नए प्रकार के संप्रदायवाद में फंस जाएंगे।

जितना अधिक हम सांसारिकता में आगे बढ़ते हैं और जितनी अधिक प्रगति होती है, हमारी गुलामी उतनी ही अधिक होती है - जिसका अर्थ यह नहीं है कि कोई प्रगति नहीं होनी चाहिए। जितना अधिक हम तकनीकी रूप से तथाकथित रूप से शिक्षित होते हैं, और जितना अधिक हम अपने आप को ज्ञान से पंगु बनाते हैं, जो मन को अंधकारमय बनाता है, हमारी स्वतंत्रता उतनी ही संकीर्ण होती जाती है। जितना अधिक ज्ञान है, उतना अधिक भय है; भय कम नहीं होता क्योंकि ज्ञान मन को अंधकारमय कर देता है, क्योंकि अनुभव मन पर बोझ डाल देता है।

तो, हमारे जीवन के इन सभी पहलुओं पर विचार करते हुए, हमारी मुख्य समस्या, जैसा कि वक्ता ने देखा, स्वतंत्रता का प्रश्न है। क्योंकि यह केवल स्वतंत्रता में ही है जिसे हम खोज सकते हैं; केवल स्वतंत्रता में ही रचनात्मक मन हो सकता है; जब मन मुक्त होता है तभी अनंत ऊर्जा होती है - और यही ऊर्जा वास्तविकता की गति है।

इस पहली बातचीत को समाप्त करने के लिए, मैं सुझाव दूंगा कि जब तक हम कल सुबह न मिलें, आप अपने मन की दासता पर विचार करें, निरीक्षण करें और जागरूक रहें। और शायद हम इनमें से किसी एक बैठक के दौरान चर्चा कर सकते हैं, विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। जैसा कि मैंने कहा, यह पहली बातचीत पुस्तक की सामग्री की एक रूपरेखा मात्र है, और यदि आप रूपरेखा, शीर्षकों, कुछ विचारों से संतुष्ट हैं, तो मुझे डर है कि आप बहुत दूर तक नहीं जाएंगे। यह स्वीकार करने या नकारने का मामला नहीं है, बल्कि अपने आप में जांच करने का मामला है - जो किसी भी प्रकार के अधिकार की मांग नहीं करता है। इसके विपरीत, यह मांग करता है कि आपको किसी का अनुसरण नहीं करना चाहिए, कि आपको स्वयं के लिए प्रकाश बनना चाहिए; और यदि आप आचरण के किसी विशेष तरीके, किसी भी प्रकार की गतिविधि के प्रति प्रतिबद्ध हैं, जिसे सम्मानजनक, धार्मिक होने के रूप में निर्धारित किया गया है, तो आप स्वयं के लिए प्रकाश नहीं बन सकते हैं। बहुत दूर तक जाने के लिए बहुत करीब से शुरुआत करनी पड़ती है, और यदि कोई स्वयं को नहीं जानता तो बहुत दूर तक नहीं जा सकता। स्वयं को जानना किसी विश्लेषक पर निर्भर नहीं करता। कोई व्यक्ति हर दिन, हर प्रकार के रिश्ते में स्वयं का निरीक्षण कर सकता है; और उस समझ के बिना मन कभी मुक्त नहीं हो सकता।

21 मई 1960

ओक ग्रोव में दूसरा व्याख्यान

यदि संभव हो तो मैं आज सुबह अधिकार, ज्ञान और स्वतंत्रता के बारे में बात करना चाहूंगा। मुझे ऐसा लगता है कि मन जितना अधिक यांत्रिक होता जाता है, दृढ़ता से महसूस करने, गहराई से अनुभव करने, व्यापक धारणाएं, अंतर्ज्ञान और अंतर्दृष्टि रखने की हमारी इच्छा उतनी ही अधिक होती है। और हममें से अधिकांश लोग इन तीव्र भावनाओं, इन गहन अनुभवों, धारणाओं को प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की उत्तेजनाओं का सहारा लेते हैं। मुझे लगता है कि किसी ने इस तथ्य को देखा होगा, बिल्कुल लापरवाही से भी। मन जितना अधिक उथला और यांत्रिक होता जाता है, और जितना अधिक यह एक दिनचर्या से बंधा होता है, उतनी ही अधिक व्यापक, गहरी, अधिक गहन भावनाओं की इसकी मांग बढ़ती है। तो आप उत्तेजना के हर रूप का सहारा लेते हैं: शराब पीना, सेक्स करना, और बाहरी और आंतरिक उत्तेजना के विभिन्न अन्य रूपों का। आप मास का आनंद लेने के लिए चर्च जाते हैं, जो उत्तेजना का एक रूप है, या आप कुछ दवाओं जैसे मेस्कलीन, एलएसडी का सहारा लेते हैं, ताकि आप एक फूल की सुंदरता को अधिक गहराई से देख सकें, उसके रंग को अधिक तीव्रता से देख सकें, अधिक गहराई से महसूस कर सकें पहाड़ियों की सुंदरता और एक शाम की शांति। और मुझे लगता है कि उत्तेजना पर यह निर्भरता तब तक अपरिहार्य है जब तक मन सभ्यता की प्रक्रिया द्वारा अनुकूलित हो रहा है।

इससे पहले कि मैं इन सब में जाऊं, मैं कहना चाहूंगा कि यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आप और मैं आपस में सही संवाद स्थापित करें क्योंकि, आखिरकार, इन बातचीत का उद्देश्य एक-दूसरे के साथ संवाद करना है, न कि आप पर कोई बात थोपना है। विचारों की निश्चित शृंखला. विचार कभी मन को नहीं बदलते, कभी मन में आमूल-चूल परिवर्तन नहीं लाते। लेकिन अगर हम एक ही समय और एक ही स्तर पर एक-दूसरे के साथ व्यक्तिगत रूप से संवाद कर सकें, तो शायद एक समझ बनेगी जो महज़ प्रचार नहीं है। मेरा उद्देश्य आपको किसी भी दिशा में, किसी विशेष दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करना नहीं है, क्योंकि जितना अधिक हम प्रचार के प्रभाव से प्रेरित होते हैं, हम उतना ही कम महसूस करने में सक्षम होते हैं, और हम उतने ही कम तीव्र होते हैं। इसलिए ये बातचीत आपको किसी भी तरह से वास्तविक या अचेतन रूप से हतोत्साहित करने या मनाने के लिए नहीं है।

संवाद करने के लिए, हमें एक-दूसरे को सुनने का अवसर मिलना चाहिए।
सुनना अपने आप में एक कला है. हममें से बहुत कम लोग सुनते हैं - हवाओं की, अपने मन की मूक क्रियाओं की। हम वास्तव में कभी भी दूसरे की बात, या संकेत, अचेतन की सूचनाएं नहीं सुनते हैं। हम दैनिक गतिविधियों, दैनिक दिनचर्या, अपनी चिंताओं, चिंताओं, क्रोध, ईर्ष्या में इतने व्यस्त हैं कि कोई जगह नहीं बची है जहां मन शांत होकर सुन सके, पता लगा सके, समझ सके।

इसलिए मैं सुझाव दूंगा कि आप सुनें, किसी भी तरह से इनकार या स्वीकार करने के लिए नहीं, बल्कि ऐसे जैसे कि आप कुछ तथ्यों को सुन रहे हों, क्योंकि किसी तथ्य को सुनना ही अपने आप में कार्रवाई है। यदि मैं सुनना जानता हूँ, तो वह सुनना ही अपने आप में एक क्रिया है। लेकिन अगर मैं नहीं जानता कि कैसे सुनना है, और केवल आंशिक रूप से सुनता हूं, तो विचार को कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। सुनना अपने आप में सामंजस्यपूर्ण क्रिया का एक रूप है जिसमें विचार और क्रिया के बीच कोई अंतराल नहीं होता है। अगर आप इस पर विचार करेंगे तो आपको पता चलेगा कि यह कितना सच है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि किसी भी तरह से मेरा इरादा आपको किसी विशेष दर्शन, ध्यान के किसी विशेष रूप या क्रिया के तरीके के लिए राजी करने का नहीं है, आइए, एक-दूसरे के साथ संवाद करते हुए, खुद को बहुत निश्चित रूप से और स्पष्ट रूप से देखें कि मन कैसा हो रहा है अधिक से अधिक यांत्रिक, कैसे आधुनिक सभ्यता मन को ज्ञान के साथ, अधिकार के साथ और अधिक सीमित कर रही है। हमारा जीवन यंत्रवत होने के कारण, हम हमेशा किसी न किसी प्रकार की उत्तेजना की ओर रुख करते हैं, चाहे वह धार्मिक हो या सतही, और ये उत्तेजनाएं अनिवार्य रूप से मन को और अधिक मृत कर देती हैं।

इसलिए मैं सत्ता के सवाल पर आपके साथ बात करना चाहता हूं, क्योंकि सत्ता दिमाग को भ्रष्ट कर देती है। अधिकार मन की गहराई को सीमित करता है। सत्ता सभी विचारों को पंगु बना देती है; यह एक सीमा तय करता है

दिमाग। समाधान केवल सत्ता से अलग होने में नहीं बल्कि सत्ता की जटिल समस्या को समझने में है। सत्ता की समझ सत्ता से मुक्ति है।

जैसा कि हम सभी सरकारों के मामले में देख सकते हैं, साथ ही शिक्षा और विज्ञान में, अधिकार का प्रयोग होता है, मांग होती है कि आप नकल करें, अनुकरण करें, अनुसरण करें, पालन करें। सभी संगठित धर्म अपने सिद्धांतों, अपनी मान्यताओं के साथ, न केवल मठों में, बल्कि आम आदमी से भी आज्ञाकारिता की मांग करते हैं; वे आपको एक स्थापित पैटर्न के अनुरूप बनाने के लिए अपने प्रभाव का प्रयोग करते हैं। और मन अधिकार चाहता है - न केवल विशेषज्ञ का, डॉक्टर का, तकनीशियन का, बल्कि पुजारी का, शिक्षक का, गुरु का, मास्टर का भी अधिकार; या यह किसी पुस्तक का अधिकार चाहता है, चाहे वह बाइबिल हो, गीता हो, या स्वास्थ्य पर नवीनतम पुस्तक हो।

मन अधिकार क्यों चाहता है? मुझे नहीं पता कि क्या आप इसमें गए हैं, क्या आपने इस पर विचार किया है। मुझे लगता है कि मन अधिकार चाहता है क्योंकि वह सुरक्षित रहना चाहता है। हम अनिश्चित होने के विचार से घृणा करते हैं - हमारे रिश्तों में अनिश्चितता, पहुंचने, सफल होने, खोजने की हमारी क्षमता में अनिश्चितता; इसलिए हम किसी प्रकार के अधिकार की तलाश करके उस डर को दूर रख देते हैं जो अनिश्चितता पैदा करती है, मन की चिंता जो निश्चित नहीं है।

कृपया जो कहा जा रहा है उसका पालन करें, न केवल मौखिक या बौद्धिक रूप से, बल्कि इस तथ्य को अपने दिमाग में काम करते हुए देखें - सुरक्षित होने की मांग, सही काम करने की, नकल करने की, सफल होने के लिए नकल करने की, सफल होने की सुरक्षित, पहुंचने के लिए, पूरा करने के लिए। तो प्राधिकरण का निर्माण होता है.

सत्ता की समझ काफी जटिल है क्योंकि सत्ता कई रूप लेती है। वहां पुलिसकर्मी का, समाज के कानूनों का अधिकार है; वहाँ एक समुदाय का, जनमत का अधिकार है; वहाँ प्रकृति का अधिकार है, इत्यादि। कहाँ अधिकार सही है, और कहाँ अधिकार पूर्णतया गलत है? इसका पता लगाने के लिए बहुत अधिक जांच और समझ की आवश्यकता होती है। समाज के नियमों का पालन करने के लिए सड़क के दाहिनी ओर रहना आवश्यक है। लेकिन सत्ता मन को यंत्रवत कहां बना देती है?

निश्चित रूप से, यह केवल तभी होता है जब मन स्वतंत्र, स्पष्ट, अधिकार से, नकल से, सुरक्षित होने की इच्छा से मुक्त होता है - केवल तभी मन, स्वतंत्र होने के कारण, बिना उत्तेजना के, बिना दवाओं के तीव्रता से महसूस कर सकता है।

तो अधिकार की यह जटिल प्रक्रिया है - चर्च का अधिकार, पुस्तक का अधिकार, कानून का अधिकार, विशेषज्ञ का अधिकार; और जब तक हम सत्ता को उसकी नकल, उसके भ्रष्ट प्रभाव सहित नहीं समझते, तब तक कोई स्वतंत्रता नहीं है।

और जब मन मुक्त होता है तभी सृजन की स्थिति होती है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या आपने कभी अनुभव किया है कि सृजन करना या सृजन की स्थिति में रहना क्या होता है? क्योंकि मुझे लगता है कि ईश्वर, या आप जो नाम देंगे, वह सृष्टि की अवस्था है; और केवल एक स्वतंत्र मन ही उस पूर्ण स्थिति की खोज कर सकता है। इसलिए सत्ता की पूरी समस्या को समझना जरूरी है.

समझ स्वयं ही अपना फल लाती है। पहले कोई समझ नहीं है, और बाद में स्वतंत्रता है। जब आप अधिकार की जटिल समस्या को समझते हैं, तो वही समझ मन को अधिकार से मुक्त करने की एक प्रक्रिया है। समझ मन को प्रयास से मुक्त कर देती है। पुरूषार्थ का अर्थ है अनुरूपता, है ना? विचार के एक विशेष पैटर्न के अनुसार होने या जीने का प्रयास है, और ऐसा प्रयास अनिवार्य रूप से, अधिकार के पूरे प्रश्न को दर्शाता है। प्रयास और कुछ बनने की कोशिश में फंसे मन की क्रिया और इच्छा ही अधिकार और अनुरूपता की मांग करती है।

हालाँकि हम सभी विवरणों में नहीं जा सकते हैं, लेकिन अगर किसी को दिमाग दिया जाए तो वह तुरंत समझ सकता है कि अधिकार के इस प्रश्न में मूल रूप से क्या निहित है।

फिर ज्ञान की समस्या है. मैं जानता हूं कि यह अब फैशन है, और शायद हमेशा से यह सोचने का चलन है कि आप जितना अधिक विद्वान होंगे, जितनी अधिक किताबें पढ़ेंगे, जितना अधिक ज्ञान आपने संचित किया होगा, आप उतने ही अधिक स्वतंत्र होंगे। और मुझे आश्चर्य है कि क्या ज्ञान मन को मुक्त करता है? मैं अज्ञानता की वकालत नहीं कर रहा हूँ; मैं ये नहीं कह रहा कि आपको नहीं पढ़ना चाहिए. लेकिन मैं ज्ञान की इस पूरी समस्या पर सवाल उठाना चाहता हूं।

ज्ञान से हमारा क्या तात्पर्य है? निश्चित रूप से, ज्ञान का तात्पर्य पहचान की प्रक्रिया से है, और पहचान की प्रक्रिया अनुभव पर आधारित है, है न? तो अनुभव ज्ञान की शुरुआत है, और क्या अनुभव मन को मुक्त करता है? अनुभव आपको कार्य में एक तकनीक दे सकता है, और संभवतः यह आवश्यक भी है। यदि आप इंजीनियर या कुम्हार या वायलिन वादक या लेखक या किसी न किसी प्रकार के तकनीशियन हैं, तो ज्ञान आवश्यक है। लेकिन ज्ञान कब मन को अंधकारमय बना देता है? ज्ञान और अंधकार के बीच अंतर कहाँ है? ज्ञान से मन कब पंगु हो जाता है? और मन कब मुक्त होता है? ज्ञान कब मन को पंगु नहीं बनाता?

इस प्रश्न को समझने के लिए हमें अनुभव की समस्या में जाना होगा, है ना? हम सोचते हैं कि हमारे पास जितना अधिक अनुभव होगा, हम उतने ही अधिक स्वतंत्र, अधिक प्रबुद्ध और अधिक सक्षम होंगे। हमारे पास जितना अधिक अनुभव होगा, जाहिर तौर पर हम एक निश्चित दिशा में उतने ही अधिक सक्षम होंगे। हमारी तकनीक जितनी अच्छी होगी, हम अपने हाथों में जितने कुशल होंगे, हम अपने यांत्रिक, तकनीकी ज्ञान में जितने निपुण होंगे, आजीविका कमाने में हमारी क्षमता उतनी ही अधिक होगी। यह स्पष्ट है, हमें इस पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन हमें निश्चित रूप से यह पता लगाना होगा कि क्या ज्ञान, अनुभव से मन अंधकारमय हो गया है। वह

क्या मन, ज्ञान के माध्यम से, स्वयं को सुरक्षित नहीं बनाता है? क्या तुम समझ रहे हो? मेरे पास जितना अधिक ज्ञान है, मैं उतना ही अधिक सुरक्षित हूं। ज्ञान के संचय में मन अपने लिए आश्रय बनाता है, स्वयं को सुरक्षित बनाता है; और जो मन सुरक्षित है वह मृत मन है। क्या आपने उन लोगों पर ध्यान नहीं दिया है जो बहुत धार्मिक हैं, जो धार्मिक आचरण के कपड़े पहने हुए हैं, जो अपनी हठधर्मिता, अपने विश्वास के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त हैं - वे कितने मृत हैं, हालांकि वे खुद को धार्मिक, रहस्यमय और बाकी सब कुछ कहते हैं ? पूरी तरह से सुरक्षित होने की इच्छा ही ज्ञान के माध्यम से अंधकार को जन्म देती है, और ऐसा मन कभी भी मुक्त नहीं हो सकता।

इसलिए, यदि आप इसमें बहुत गहराई से जाते हैं, तो आप पाएंगे कि ज्ञान वास्तव में एक बहुत ही जटिल चीज है, जिसमें हमारी संपूर्ण चेतना शामिल है - न कि केवल वह चेतना जिससे हम परिचित हैं, वह चेतना जो प्रतिदिन कार्यालय जाने में व्यस्त रहती है। , एक तकनीक सीखना, इत्यादि, लेकिन अचेतन, मन का छिपा हुआ हिस्सा भी। यदि आप चेतना की इस पूरी प्रक्रिया में जाते हैं, जिसमें अचेतन भी शामिल है, तो आप पाएंगे कि इसका कोई भी कोना ऐसा नहीं है जहां ज्ञान ने प्रवेश न किया हो और उसे अनुकूलित न किया हो।

या तो नस्लीय विरासत के रूप में, या आधुनिक शिक्षा की स्वीकृति के माध्यम से, ज्ञान ने हमारी चेतना को ज्ञात का माध्यम बना दिया है; और मन शानदार ढंग से, बहुत बौद्धिक रूप से कार्य कर सकता है, लेकिन जब तक यह ज्ञान के संचालन को नहीं समझता है, तब तक यह अंधेरे में ही कार्य कर रहा है। अगर आप अनुभव की जांच करेंगे तो पाएंगे कि हर अनुभव पहचान को मजबूत करने वाला है।

मुझे आश्चर्य है कि क्या मैं कुछ भी बता रहा हूँ? आप देखिए, हम मन की मुक्ति पर विचार कर रहे हैं ताकि मन सृजन की उस स्थिति में रह सके जिसका अभिव्यक्ति से कोई सरोकार नहीं है, भले ही अभिव्यक्ति उससे आ सकती है। एक रचनात्मक दिमाग का कभी भी अभिव्यक्ति से सरोकार नहीं होता; इसका संबंध कार्रवाई से, सुधार से नहीं है। सृजन एक शाश्वत आंदोलन है - एक आंदोलन जो कभी भी तात्कालिकता से चिंतित नहीं होता है, और केवल तात्कालिक सुधार से संबंधित होता है।

मैं नहीं जानता कि, जंगल में या सड़क पर अकेले चलते हुए, क्या आपने कभी ऐसा क्षण देखा है जब आपके भीतर सब कुछ शांत, पूरी तरह से शांत हो। एक अप्रत्याशित, बिन बुलाए क्षण है जिसमें मन, अपनी सभी चिंताओं, अपनी सभी चिंताओं और गतिविधियों और मजबूरियों के साथ, पूरी तरह से समाप्त हो गया है। उस अप्रत्याशित, सहज क्षण में, समय पूरी तरह से समाप्त हो गया है। और यदि आपको एक चित्रकार, एक लेखिका, या एक गृहिणी के रूप में प्रतिभा प्राप्त होती है, तो आप उस क्षण को कार्य में व्यक्त कर सकते हैं; लेकिन कार्रवाई वह क्षण नहीं है. चित्रकारी का कार्य आपको प्रसिद्धि, पैसा, पद, दिला सकता है।

प्रतिष्ठा; और मनुष्य, इन चीजों की तलाश में, तकनीक के पीछे चला जाता है और दूसरे को खो देता है। वह क्षण हममें से अधिकांश के जीवन में कभी न कभी अवश्य घटित हुआ होगा, और तब हम उस क्षण को कैद करना, पकड़ना, जारी रखना चाहते हैं। तो, उस क्षण का अनुभव उस क्षण के ज्ञान के साथ दिमाग को अंधकारमय कर देता है और इस तरह आगे अनुभव करने से रोकता है। इसीलिए ज्ञान के रूप में अनुभव नये के लिए विनाशकारी है।

कृपया, यह जीवन को देखने का मेरा विशेष तरीका नहीं है। ये तथ्य हैं.
जितना अधिक अनुभव होता है, मन उतना ही अधिक सुस्त हो जाता है; मन की कोई मासूमियत नहीं है; ऐसा कोई क्षण नहीं है जब मन ज्ञान में न फँसा हो, जो मूलतः समय का ज्ञान है। इसलिए, यदि आप ध्यान दें, तो आप देखेंगे कि ज्ञान - जानना, अभ्यास करना, धारण करना - मन को अंधकारमय कर देता है; और मन, अंधकारमय होने के कारण, अधिक, व्यापक उत्तेजना की तलाश में है, इसलिए यह धर्मों, दर्शन, धर्मशास्त्रों, अटकलों, या नवीनतम दवाओं की ओर मुड़ जाता है।

जो मन स्वतंत्रता से चिंतित है, उसे ज्ञान के साथ-साथ अधिकार के प्रश्न का भी पता लगाना चाहिए, क्योंकि ज्ञान और अधिकार एक साथ चलते हैं। दुर्भाग्य से, आप में से अधिकांश शायद मेरी बात इसलिए सुन रहे हैं क्योंकि आपको लगता है कि मेरे पास किसी प्रकार का अधिकार है। आप शायद सोचते होंगे कि मैं जानता हूं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं। (हँसी) नहीं, नहीं, महोदय, कृपया इसे हँसी में न उड़ाएँ; अवश्य सुनें. प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि और उन सबमें यह बेतुकापन है; लेकिन असल में आप मामले की सच्चाई खुद जानने के लिए सुन रहे हैं, है न?

और यदि आप अनुभव की इस पूरी समस्या की जांच करते हैं, तो आप देखेंगे कि अनुभव का हर रूप जो मन की मिट्टी में जड़ें जमा लेता है, हानिकारक है क्योंकि यह मन की स्वतंत्रता को नष्ट कर देता है; यह सुरक्षा की भावना पैदा करता है, और इसलिए मन में कोई मासूमियत, कोई ताजगी नहीं होती है। ऐसा मन खुद को नवीनीकृत नहीं कर सकता, सिवाय आगे के अनुभव के - जो कि पहचानने की प्रक्रिया है; यह अतीत का परिणाम है और इसलिए अतीत की निरंतरता है, चाहे वह कितना भी संशोधित क्यों न हो।

इसलिए, एक मन जो स्वतंत्रता की समझ से चिंतित है, उसे सतही तौर पर पूछताछ नहीं करनी चाहिए, बल्कि अधिकार की संरचना और संरचना की खोज के लिए अपने भीतर गहराई से उतरना चाहिए। एक दिमाग जो केवल अधिकार का अनुसरण करता है वह कभी नहीं जान सकता कि रचनात्मक होना क्या है। एक मन जिसने स्वयं को कार्य के एक पैटर्न के अनुसार अनुशासित कर लिया है, वह स्वतंत्र मन नहीं है। अनुशासन से मन कभी मुक्त नहीं हो सकता। अनुशासन की इस पूरी समस्या को समझकर ही मन मुक्त हो सकता है - अंत में नहीं, बल्कि अनुशासन के अभ्यास की शुरुआत में ही।

आप देखिए, ज्ञान जैसी समस्या को समझने के लिए पूर्ण ध्यान की आवश्यकता होती है, और वह ध्यान अपना स्वयं का अनुशासन है। मुझे इसके लिए किसी अनुशासन की आवश्यकता नहीं है

ज्ञान को समझो. जिस क्षण मैं समस्या का पता लगाना शुरू करता हूं, वह अन्वेषण यह मांग करता है कि मन स्वयं को अनुशासित करे। क्या तुम समझ रहे हो?
किसी भी सामग्री का अपना अनुशासन होता है। लकड़ी के टुकड़े के साथ कुछ भी करने के लिए, आपको एक निश्चित तरीके से काम करना होगा। सामग्री की प्रकृति अपना अनुशासन थोपती है। इसी प्रकार, ज्ञान और अधिकार की इस समस्या की समझ में, जिसमें अनुशासन, अनुभव और समय निहित हैं, एक अनुशासन है जो थोपा नहीं जाता है। उस अनुशासन में कोई द्वंद्व या विरोधाभास नहीं है।

तो, समझने की प्रक्रिया ही अपना अनुशासन और अपनी स्वतंत्रता है। जिस मन ने जांच नहीं की है, जिसने स्वयं ज्ञान और अधिकार की सच्चाई की खोज नहीं की है, वह कभी भी मुक्त नहीं हो सकता है। यह सभी चर्चों में जा सकता है, यह असंख्य किताबें पढ़ सकता है, यह सुबह से रात तक खुद को अनुशासित कर सकता है, लेकिन यह स्वतंत्र दिमाग नहीं है।

मैं मन के बारे में एक समग्र वस्तु के रूप में बात कर रहा हूं, न कि केवल विचार की मशीनरी के रूप में - वह मन जो सफल होता है, जो विफल होता है, जो प्यार करता है, जो याद रखता है, जो पहचानता है, जो पीड़ित होता है, जो दया, आनंद जानता है। मैं उस समग्रता की बात कर रहा हूं। और मन की उस समग्रता को किसी भी भाग के माध्यम से नहीं देखा जा सकता है।
तुम्हें इसे समग्रता से समझना चाहिए, समग्रता से महसूस करना चाहिए; और फिर आप मन की अलग-अलग चीज़ों पर विचार कर सकते हैं। मन अचेतन भी है और चेतन भी; दोनों के बीच कोई विभाजन नहीं है, और मन की संपूर्ण प्रकृति, उस समग्रता की गुणवत्ता को महसूस करना आवश्यक है, यदि आप समझेंगे कि मुक्त होना क्या है और सृजन की उस स्थिति में क्या होना है न कोई शुरुआत और न ही कोई अंत.

यह रहस्यवाद का मूर्खतापूर्ण, निराशाजनक अर्थ नहीं है। यह बहुत अधिक ध्यान देने और विचार के अनुप्रयोग की मांग करता है - या बल्कि, विचार नहीं, बल्कि सोचने, महसूस करने, होने की प्रक्रिया में एक आग्रहपूर्ण जांच की मांग करता है। और जैसे-जैसे कोई समझना शुरू करता है, वह स्वयं ही खोज लेगा - स्वाभाविक रूप से, बिना किसी दबाव के, बिना किसी आग्रह के - मुक्त होना क्या है, और वह अवस्था क्या है जो समय की नहीं है और जिसे मन द्वारा मापा नहीं जा सकता है।

22 मई, 1960

ओक ग्रोव में तीसरी वार्ता

जब मैं वार्ताओं की यह शृंखला देने आया, तो मेरा पूरा इरादा आठ वार्ताओं को पूरा करने का था; लेकिन दुर्भाग्य से, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं केवल ये चार ही दे सकता हूं—और इसलिए आखिरी बातचीत कल सुबह होगी। जैसा कि आपमें से बहुतों के पास है

उन्हें सुनने के लिए बहुत दूर-दूर से आते हैं, मुझे इस बात का बहुत अफसोस है कि मैं शारीरिक रूप से सारी बातें जारी नहीं रख पाता। मुझे माफ़ करें।

मैं आज शाम आपके साथ एक जटिल समस्या - चेतना, क्रांति और धर्म - पर बात करना चाहूंगा। जीवन भर, हमारी शिक्षा कितनी भी व्यापक क्यों न हो, हम कितने भी बुद्धिमान क्यों न हों, हमारे साथ दुर्घटनाएँ होती हैं, हम गलतियाँ करते हैं; जीवन सुचारू रूप से नहीं चलता, जैसा हम चाहते हैं।

और हम अपने जीवन को बदलने के लिए, बदलने के लिए बहुत प्रयास करते हैं; हम खुद को सुधारने, आचरण के एक निश्चित ढांचे के अनुरूप बनने, नैतिक कार्रवाई के खांचे में फिट होने का प्रयास करते हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि, चाहे कितना ही आवश्यक क्यों न हो, इस तरह का प्रयास आपके भीतर आमूल-चूल परिवर्तन नहीं लाता है। हम सही काम करने, सही व्यवहार करने, सरल, नैतिक जीवन जीने के लिए व्यक्तिगत रूप से कितना भी संघर्ष करें, ये गतिविधियाँ, हालांकि आवश्यक हैं, इतनी निरर्थक, इतनी खोखली लगती हैं जब पूरी दुनिया इतनी भयानक, विनाशकारी स्थिति में हो ; और मुझे यकीन है कि आप में से अधिकांश ने खुद से पूछा होगा कि इस पूरी भयानक गड़बड़ी के बारे में एक व्यक्ति क्या कर सकता है? मुझे लगता है कि यह पूरी तरह से एक गलत प्रश्न है, और एक गलत प्रश्न का सही उत्तर नहीं मिलेगा। मेरा मानना है कि किसी को सही प्रश्न पूछना चाहिए, और सही प्रश्न यह नहीं है कि क्या किसी व्यक्ति का परिवर्तन समाज, संपूर्ण मानवता को प्रभावित करेगा। अब एक ज़बरदस्त संकट है, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक या धार्मिक रूप से नहीं, बल्कि चेतना में ही संकट है।

मुझे लगता है कि यह वास्तविक मुद्दा है, न कि केवल व्यक्ति का परिवर्तन। यदि कोई समझ सके, तो उसे चेतना के इस संकट को पूरी तरह से समझना होगा; और ऐसा करने के लिए, व्यक्ति को चेतना की पूरी प्रक्रिया की जांच करनी होगी।

मैं चेतना के बारे में बहुत ही सरल शब्दों में बात करने जा रहा हूँ, सामान्य शब्दों का उपयोग करते हुए, न कि मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक या जटिल शब्दों का। मैं चेतना शब्द का उपयोग हमारी सोच, भावना के सभी स्तरों के अर्थ में कर रहा हूं - हमारे अस्तित्व की समग्रता, न केवल व्यक्तिगत अस्तित्व की समग्रता, बल्कि सामूहिक, मानव की समग्रता भी। और मुझे आशा है कि आप केवल शब्दों को नहीं सुनेंगे, जो कि केवल एक बौद्धिक प्रक्रिया होगी, बल्कि जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, मेरे साथ इस पर विचार करेंगे। सुनने की कला बहुत महत्वपूर्ण है—यह समझने के लिए कि सुनना क्या है। मुझे लगता है कि हममें से बहुत कम लोग वास्तव में सुनते हैं। जब हम सुनते हैं, तो हम जो सुनते हैं उसका अपनी सोच के अनुसार अनुवाद या व्याख्या करते हैं, या हम इसे पूरी तरह से अस्वीकार कर देते हैं। समग्रता से सुनने का अर्थ है स्वीकार, अस्वीकार, तुलना या खंडन किए बिना सुनना; और मुझे लगता है कि अगर कोई पूरी तरह से सुन सकता है, तो सुनने की क्रिया ही तत्काल धारणा, समझ लाती है। तो फिर आप

यदि आप इन बातों को लेकर बिल्कुल गंभीर हैं, तो क्या मैं सुझाव दे सकता हूँ कि आप इसे सुनें
ढंग।

हम सभी को दुनिया में इस असाधारण संकट के बारे में पता होना चाहिए - जिससे मेरा मतलब रूस और अमेरिका के बीच, या पूर्व और पश्चिम के बीच संघर्ष से नहीं है, क्योंकि यह कोई संकट ही नहीं है। यह महज़ एक राजनीतिक उथल-पुथल है, जिसे दुनिया भर के राजनेताओं ने कायम रखा है। मैं जिस संकट की बात कर रहा हूं, वह राजनेताओं ने पैदा नहीं किया है और तथाकथित धार्मिक लोग जितना संकट पैदा करते हैं, उससे कहीं ज्यादा राजनेता शांति के लिए प्रयास नहीं करते हैं। यदि हम वास्तविक, मूलभूत संकट को गहराई से समझेंगे, तो मुझे ऐसा लगता है कि हमें इस पूरे प्रश्न की नए सिरे से जांच करनी होगी कि चेतना क्या है क्योंकि क्रांति होनी है, न कि आर्थिक, सामाजिक या नैतिक स्तर पर, या विचारों का स्तर, लेकिन चेतना में ही। मुझे लगता है कि संकट है.

तो, यह कौन सी चीज़ है जिसे हम चेतना, मन कहते हैं? मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी चेतना की समग्रता का अनुभव किया है, जो कि काफी कठिन है - समग्रता, न कि केवल चेतना का वह खंड जो हर दिन होने वाले विभिन्न अनुभवों से अवगत होता है, और जो उनकी व्याख्या करता है, प्रतिक्रिया करता है, उन पर प्रतिक्रिया करता है। अनुभव. वह तो चेतना का ही एक भाग है। सपनों की दुनिया है, और उन सपनों की व्याख्या, जो आज भी चेतना का हिस्सा है। फिर विचार की, ज्ञान की, अनुभव की, याद की गई चीज़ों की पूरी दुनिया है - अतीत वर्तमान के साथ मिलकर, जो भविष्य का निर्माण करता है। वह भी चेतना का हिस्सा है. इसमें परिवार का, समूह का, उस अचेतन कंडीशनिंग का भी प्रभाव होता है जो नस्लीय विरासत है, चाहे जाति कितनी भी युवा हो, या कितनी भी बूढ़ी हो - निश्चित रूप से, यह सब इस चेतना का हिस्सा है जिसके बारे में मनोवैज्ञानिक बात करते हैं, और जिसके बारे में हम अपने मन के संदर्भ में भी, बल्कि आसानी से और सहजता से बात करते हैं। तो, चेतना ज्ञात और अज्ञात है - मन का वह हिस्सा जिसके बारे में कभी सोचा नहीं गया है।

अब, हममें से अधिकांश लोग चेतना के सतही स्तर पर रहते हैं, दिन-ब-दिन थके हुए रहते हैं, एक निश्चित मात्रा में ऊब, हताशा के साथ, कभी-कभी खुशी और तृप्ति के स्पर्श के साथ, दुःख, परेशानी, पीड़ा और के साथ। वे सभी संघर्ष जिनके हम उत्तराधिकारी हैं; और चेतना के उस क्षेत्र में, हम परिवर्तन का प्रयास करते हैं। जब हमें क्रोध आता है, तो हम क्रोध न करने का प्रयास करते हैं; जब हम ईर्ष्यालु, ईर्ष्यालु, लालची होते हैं तो हम खुद को नियंत्रित करने, सुधारने की कोशिश करते हैं। लेकिन यह सब ज्ञात के क्षेत्र में है, और ज्ञात की समस्या का उत्तर पहले से ही ज्ञात है। मुझे लगता है कि इसे समझना ज़रूरी है. जब मन अपने सामने कोई समस्या रखता है, तो मन पहले से ही

उत्तर जानता है क्योंकि समस्या ज्ञात है। यानी जब आपको समस्या पता होती है, चाहे वह आर्थिक क्षेत्र में हो, इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में हो, या कहीं और हो, तो जवाब भी पता चल जाता है। जिस क्षण आप किसी समस्या को शब्दों में व्यक्त करते हैं, उस समस्या का उत्तर पहले से ही ज्ञात होता है, हालाँकि आपको इसे खोजने में समय लग सकता है। अगर आपने इसके बारे में सोचा है तो आप खुद ही इसकी सच्चाई देख सकते हैं।

इसलिए, बदलाव का हमारा सारा प्रयास, आंतरिक और बाह्य रूप से आमूल-चूल क्रांति लाने का, चेतना के क्षेत्र के भीतर है; और चेतना, जैसा कि आप देखेंगे यदि आप वास्तव में इसमें जाते हैं, प्रतीकों की दुनिया है।

हम प्रतीकों से जीते हैं। प्रतीक एक शब्द है; ईसाइयों के लिए प्रतीक क्रॉस है; प्रतीक वह छवि है जिसे मन अपने अनुभवों से बनाता है, और जिससे वह दृष्टि, विचार प्रस्तुत करता है। हम प्रतीकों की दुनिया में रहते हैं, और प्रतीक हमेशा ज्ञात होता है। प्रतीक अज्ञात का प्रतिनिधित्व करने वाला ज्ञात है, जिसे मन स्वयं महसूस नहीं कर सकता है।

कृपया, मैं केवल वही शब्द कह रहा हूँ जो हम पहले से जानते हैं। यदि हमने इन विषयों पर जरा भी विचार किया है, तो हम यह सब पहले से ही जानते हैं। और हम स्वयं भी बहुत गहराई से जानते हैं कि चेतना के इस क्षेत्र में, ज्ञात के क्षेत्र में कोई भी परिवर्तन कोई क्रांति नहीं है; यह केवल व्यवहार के स्वरूप, विचार के स्वरूप में परिवर्तन है। एक व्यक्ति ईसाई धर्म छोड़ सकता है और ज़ेन बौद्ध बन सकता है, या हिंदू धर्म छोड़ सकता है और कैथोलिक बन सकता है, लेकिन उसका कार्य अभी भी चेतना के क्षेत्र में है; यह केवल उस पैटर्न में बदलाव है जो उसे पिंजरे के भीतर रखता है। और हम सब यही कर रहे हैं - हम हमेशा ज्ञात के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं।

जो कहा जा रहा है उस पर अवश्य विचार करें; यह कहकर इसे अस्वीकार न करें, "मैं नहीं समझता।" इसे समझना बहुत आसान है. मैं इसे अलग ढंग से रखकर स्पष्ट करने का प्रयास करूंगा।

जैसा कि मैंने कहा, जिस क्षण हम किसी भी समस्या को शब्दों में व्यक्त करने, उसे ध्यान में लाने, चेतना के क्षेत्र में लाने में सक्षम होते हैं, ऐसी समस्या - चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी या नैतिक हो - पहले से ही एक उत्तर है; इसलिए, अब यह कोई समस्या नहीं है। जिस क्षण आपके पास उत्तर हो, यह कोई समस्या नहीं है। उत्तर की जांच करने और काम करने में कई महीने लग सकते हैं, लेकिन दिमाग उत्तर जानता है क्योंकि वह समस्या को शब्दों में बताने में सक्षम है। मुझे लगता है कि इसे समझना महत्वपूर्ण है, खासकर यदि आप मैं जो कहने जा रहा हूं उसका पालन करेंगे। मन पहले से ही किसी भी समस्या का उत्तर जानता है जिसे वह शब्दों में व्यक्त कर सकता है, चाहे वह कितनी ही जटिल, कितनी ही सूक्ष्म, कितनी ही नाजुक क्यों न हो; इसलिए, यह बिल्कुल भी कोई समस्या नहीं है। मन सोचता है कि यह एक समस्या है, लेकिन ऐसा नहीं है। यदि आप इसे समझते हैं, तो अगला प्रश्न मैं पूछूँगा

सामने रखना पसंद है: क्या कोई ऐसी समस्या है जिसे मन - क्योंकि यह हमेशा ज्ञात के क्षेत्र में कार्य करता है - कभी भी शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम नहीं है, सचेत रूप से या अनजाने में, और इसलिए संभवतः उत्तर नहीं दे सकता है? मुझे लगता है कि एक ऐसी समस्या है - एक ऐसी समस्या जिसका समाधान मन नहीं कर सकता, जिसका चेतना के पास कोई उत्तर नहीं है। इसलिए, यही असली समस्या है.

यदि आप चाहें तो कृपया उस पर थोड़ा ध्यान दें जो मैं कहना चाह रहा हूं।

जैसा कि मैंने कहा, संकट चेतना में है; क्रांति, जैसा कि हम सभी सोचते हैं, आर्थिक, सामाजिक या बौद्धिक स्तर पर नहीं है। यदि वहां कोई "क्रांति" है, तो यह केवल पैटर्न में बदलाव, विचारों में बदलाव, नए सिद्धांतों का निर्माण है। यदि संकट ज्ञात क्षेत्र के भीतर है, तो हम अमेरिकी, रूसी, हिंदू या आप जो भी चाहें, अपने अनुकूलित दिमाग के अनुसार इसका उत्तर देंगे। लेकिन एक मन जो इस तथाकथित क्रांति से गुज़रा है, जिसने इन सभी विभिन्न समस्याओं को, उनके उत्तरों के साथ समझा है - ऐसे मन को एक बिल्कुल अलग मुद्दे का सामना करना पड़ता है क्योंकि वह देखता है कि क्षेत्र के भीतर किसी भी मौलिक परिवर्तन की कोई संभावना नहीं है। ज्ञात का. तो फिर क्रांति कहां होनी है?

क्या मैं यह बात कुछ हद तक स्पष्ट कर रहा हूँ? कृपया मुझसे सहमत न हों क्योंकि यह सहमति या असहमति का मामला नहीं है; यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप अस्वीकार कर सकते हैं क्योंकि आप इसे नहीं समझते हैं, या स्वीकार कर सकते हैं क्योंकि आप एक घंटे की बातचीत के दौरान कुछ शब्द समझते हैं। यह एक ऐसी समस्या है जिस पर वास्तव में विचार किया जाना चाहिए और इसके लिए गहन सोच, या ध्यान, चिंतन की आवश्यकता है।

तो एक क्रांति होनी चाहिए, एक ज़बरदस्त क्रांति - लेकिन ज्ञात के क्षेत्र के भीतर नहीं क्योंकि उसका अब कोई अर्थ नहीं है। चाहे आप कम्युनिस्ट हों, समाजवादी हों, डेमोक्रेट हों, रिपब्लिकन हों, अमेरिकी हों, हिंदू हों— ओह, कौन परवाह करता है? यदि आप कम्युनिस्ट होते हैं, तो आप सत्ता पाने के मामले में अधिक क्रूर, अधिक क्रूर होते हैं; लेकिन तुम किसी न किसी तरह शरारत करते हो।

और यदि आप किसी विशेष संगठित धर्म से संबंध रखते हैं, तो आप ईश्वर, ईसा मसीह, चर्च और इसके बाकी सभी हिस्सों के नाम पर मालिकों द्वारा समान रूप से निर्देशित होते हैं। संगठित धर्म जितना पुराना है, वह स्वयं को वर्तमान परिस्थितियों के अनुरूप ढालने और मन पर प्रभुत्व स्थापित करने के नये तरीकों में उतना ही चतुर है।

ये सब हम जानते हैं. लेकिन दुर्भाग्य से, हालांकि हम यह जानते हैं, हममें से ज्यादातर लोग किसी न किसी चीज से जुड़े होते हैं, या हम इस से उस में बदल जाते हैं, यह सोचते हुए कि हम जबरदस्त प्रगति कर रहे हैं। और जब हम उस पूरी प्रक्रिया को समाप्त कर लेंगे - मैं किसी भी तरह से इसके बारे में संरक्षणात्मक बात नहीं कर रहा हूँ - कब

हमने वह सब समाप्त कर लिया है, फिर प्रश्न उठता है: व्यक्ति को क्या करना चाहिए?
क्या तुम समझ रहे हो? आप बदल गए। आप किसी संगठित धर्म से संबंध नहीं रखते. आपने यह विश्वास, वह विश्वास छोड़ दिया है - यदि आपने छोड़ा है। अब आप अमेरिकी या हिंदू या रूसी या जर्मन नहीं हैं - आप एक इंसान हैं। आप किसी एक देश के नहीं हैं. तुम संसार के हो; दुनिया आपकी है, हालांकि राजनेताओं ने इस खूबसूरत पृथ्वी को अमेरिकी, रूसी, चीनी के रूप में विभाजित किया है। आप उस सब से गुज़र चुके हैं, और फिर भी मन, चेतना, अभी भी अपनी सीमाओं के भीतर संघर्ष कर रहा है।

मुझे आशा है कि आप समझ गये होंगे कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ?

यह समझकर मनुष्य को क्या करना चाहिए? मुझे लगता है कि यही समस्या है, यही संकट है, हालाँकि हम नहीं जानते कि इसे कैसे व्यक्त किया जाए, इसे शब्दों में कैसे पिरोया जाए। यह समस्या न केवल बुद्धिजीवियों की है, बल्कि धार्मिक व्यक्ति की भी है जो कमोबेश गंभीर है। जो लोग चर्च जाते हैं, जो कुछ अनुष्ठान करते हैं, किसी मठ में शामिल होते हैं, या कुछ निश्चित विश्वास रखते हैं - वे बिल्कुल भी धार्मिक लोग नहीं हैं। हम अभी उस पर आएंगे।

तो, मन उस ऊर्जा को कैसे उत्पन्न करेगा जो चेतना द्वारा दूषित नहीं है? क्या तुम समझ रहे हो?

चलो मुझे इसे इस तरह से रखने दें। हम सभी, अत्यंत दुर्भाग्यवश, स्वयं से अधिक महान किसी चीज़ की ओर देखते हैं; हम सभी चाहते हैं कि नेता हमें बताएं कि क्या करना है। जब हम राजनीतिक नेताओं से तंग आ जाते हैं, तो हम धार्मिक नेताओं की ओर रुख करते हैं, या हम ध्यान करने के लिए किसी मठ में चले जाते हैं, इसलिए धर्म, हम में से अधिकांश के लिए, अस्तित्व की वास्तविकता से पलायन बन गया है - चेतना से पलायन नहीं, बल्कि रोजमर्रा के अस्तित्व की वास्तविकता से पलायन है। आपके पंथ और हठधर्मिता, आपके चर्च और संगठित मान्यताएँ मन को आराम देने का एक साधन मात्र हैं। ईश्वर में आपका विश्वास उतना ही निरर्थक है जितना कि दूसरे का ईश्वर में अविश्वास।

दोनों के बीच कोई बुनियादी अंतर नहीं है. तुम्हें विश्वास करना सिखाया गया है, और दूसरे को विश्वास न करना सिखाया गया है; या आप विश्वास करते हैं क्योंकि आप तर्कसंगत बनाते हैं, यह आपकी कंडीशनिंग पर निर्भर करता है।

अब, जब आपने प्रतीकों, विचारों और शब्दों के इस सारे भ्रम को देख लिया है, तो आप इंग्लैंड के एंग्री यंग पुरुषों और इस देश के बीटनिकों की तरह निंदक या कटु हो सकते हैं, जो करना काफी आसान है; लेकिन जब आप निंदक, कटु, निराश नहीं रह जाते हैं, तो आपको अनिवार्य रूप से पूछना चाहिए, "उत्तर खोजने के लिए धार्मिक दिमाग कहां है?" किताबें आपको उत्तर नहीं दे सकतीं; ऐसी कोई किताब नहीं है जो आपको कुछ दिखा सके। किताबें समझा सकती हैं, वे आपको ज्ञान दे सकती हैं, लेकिन ज्ञान केवल मन को अंधकारमय बनाता है, और मन के लिए ज्ञान के माध्यम से उत्तर खोजने का कोई मतलब नहीं है। तो, जब आपने सभी धर्मों, सभी व्यवहार पैटर्न, जिन्हें समाज कहता है, को त्याग दिया है

नैतिकता, तुम्हें क्या करना है? मैं यह नहीं कह रहा हूं कि कोई नैतिक कार्य नहीं है- मुद्दा यह नहीं है। जब आप देखते हैं कि मन कैसे विचारों का गुलाम बन जाता है, समृद्धि का गुलाम बन जाता है - जब मन इन सबके बारे में पूरी तरह से जागरूक हो जाता है, तो उसे वास्तविक क्रांति लाने के लिए क्या करना है, चेतना के क्षेत्र के भीतर नहीं, बल्कि एक क्रांति जो ज्ञात से दूषित नहीं है? इसे अलग ढंग से कहने पर, क्या मैं इसे स्पष्ट करने में मदद कर रहा हूँ, या क्या मैं इसे केवल और अधिक जटिल बना रहा हूँ?

देखिए, महोदय, मुझे इसे दूसरे तरीके से कहने दीजिए। आप देखिए, हममें से अधिकांश के लिए जीवन एक भयानक बोरियत है। हमारा जीवन नियमित है। हम किसी भी स्तर पर पूरा करने का प्रयास करते हैं, और हर पूर्ति में निराशा की अपनी छाया होती है; हर खुशी, हर फूटने का अपना दुख और अपना पतन होता है। हम यह सब जानते हैं, लेकिन यह जानना हमें उसी रास्ते, उसी दिशा में आगे बढ़ने से नहीं रोकता है। और हम यह भी जानते हैं, जैसे ही हम अपने भीतर के इस संघर्ष की जांच करना शुरू करते हैं, कि अच्छा बनने, महान बनने, सही आदर्श को आगे बढ़ाने के सभी व्यक्तिगत प्रयास और इसके बाकी सभी प्रयास निरपवाद रूप से अहंकारी मुक्ति की एक प्रक्रिया है, जो अंतहीन संघर्ष पैदा करता है . यदि आप इस प्रयास की जांच करें, जिसमें हममें से अधिकांश लोग फंसे हुए हैं, तो आप देखेंगे कि यह मूलतः आत्म-विरोधाभास से पैदा हुआ है। जो मन आत्म-विरोधाभास की स्थिति में नहीं है, वह प्रयास नहीं करता-करता है। प्रयास एक मन की, एक हृदय की स्थिति है जो स्वयं के साथ संघर्ष में है क्योंकि वह कुछ बनने के लिए निरंतर संघर्ष कर रहा है, और वह जो बनता है वह उसके अपने विरोधाभास का परिणाम है, और इसलिए और भी अधिक विरोधाभास पैदा करता है।

तो, हमारा सारा प्रयास - बौद्धिक, नैतिक, आर्थिक - बहुत ही प्रतिबंधात्मक, सीमित, समयबद्ध है, और इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। इस तथ्य को देखकर कोई भी अपने आप से पूछने लगता है: कहां है वह क्रांति जो नई है? ऐसी मनःस्थिति कहाँ है जो पुराने से दूषित न हो? वह मासूमियत कहां है जो महज इनकार या बौद्धिक फार्मूला नहीं है? वह मन कहां है जो इस पूरी प्रक्रिया से गुजरा है, जिसने सीमा के इन सभी क्षेत्रों की यात्रा की है, और जो जानता है कि उस शब्द के अंतिम अर्थ में रचनात्मक होना क्या है? रचनात्मकता चित्र बनाना या कविताएँ लिखना नहीं है - मेरा मतलब यह नहीं है। मैं सृजन की उस स्थिति का जिक्र कर रहा हूं जो बिना शुरुआत और बिना अंत वाली ऊर्जा है, जिसे अभिव्यक्ति की आवश्यकता नहीं है - जो कि है।

ये सभी सवाल आपने खुद से जरूर पूछे होंगे. लेकिन आप हमेशा एक उत्तर खोजना चाहते हैं, आप उस स्थिति को प्राप्त करना चाहते हैं, इसलिए आप एक गलत प्रश्न पूछ रहे हैं, और अनिवार्य रूप से आपके पास एक गलत उत्तर होगा। आप उस अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकते. आप जो चाहें वह करें—सभी मठों में जाएँ, सभी किताबें पढ़ें, इनके सहित सभी वार्ताओं में भाग लें, हर शिक्षक की तलाश करें—आप कभी नहीं कर सकते

सृजन की उस स्थिति को प्राप्त करें। यह तभी अस्तित्व में आ सकता है जब आपने अपने मन के सभी अंधेरे रहस्यों को समझ लिया हो या महसूस कर लिया हो, ताकि मन पूरी तरह से शांत हो और कुछ भी मांग न कर रहा हो। क्या आप नहीं देखते कि आप अपने भीतर क्या कर रहे हैं, और इसलिए बाहर भी? आप मन की एक ऐसी स्थिति की तलाश कर रहे हैं जिसमें आप समझने में सक्षम होंगे, जिसमें आपको कोई समस्या नहीं होगी; आप परमानंद की सतत स्थिति में रहना चाहते हैं, जहां आपको पता चलेगा कि प्यार क्या है, और इसके बाकी सब कुछ। आप हमेशा पूछते रहते हैं.

आपकी समस्याएँ ज्ञात हैं, और आपके उत्तर भी ज्ञात हैं; इसलिए, आपने एक चित्र बनाया है, जो इस बात का प्रतीक है कि आपको क्या होना चाहिए और क्या नहीं।

तो, मन में उस ज्ञान को याद रखने, त्यागने, जानने और उपयोग करने की शक्ति होती है; इसमें निर्णय लेने, तुलना करने, निंदा करने, मूल्यांकन करने की शक्ति है। यह मन निरंतर क्रियाशील है; यह सदैव निर्णय करता रहता है, तौलता रहता है, निरीक्षण करता रहता है, व्याख्या करता रहता है; और मुझे लगता है कि संकट मौजूद है। यदि मन इस संकट से अवगत होकर अपने प्रश्न को ज्ञात के दायरे में रखता है, तो उसके पास अपने ज्ञान के अनुसार उत्तर होगा; इसलिए, समस्या बनी रहती है.

जबकि, क्या कोई बिना मकसद के समस्या का सामना कर सकता है? क्या कोई स्वयं देख सकता है - वास्तव में, केवल मौखिक रूप से नहीं - कि संकट मौजूद है, बिना यह जाने कि इसका उत्तर कैसे दिया जाए? क्या तुम समझ रहे हो? क्योंकि आप वास्तव में नहीं जानते कि इसका उत्तर कैसे देना है, है ना? आप इस या उस धर्म से गुजरे हैं, आपने योग या ध्यान की कोई अन्य प्रणाली आजमाई है, आपने सामान्य किताबें पढ़ी हैं, इस चर्चा, उस बातचीत में भाग लिया है, और वे सभी चीजें की हैं जो हर इंसान उत्तर की तलाश में करता है -और आपको यह नहीं मिला।

शायद समस्या स्वयं आपके लिए स्पष्ट नहीं है क्योंकि आपने कभी भी चेतना की समग्रता को महसूस नहीं किया है; आप इसके केवल कुछ भागों को ही जानते हैं।
लेकिन आज शाम आप इस विशाल चीज़ की समग्रता को महसूस करने में सक्षम हो सकते हैं।

आप जानते हैं, जब आप अचानक किसी असाधारण रूप से सुंदर चीज़ को देखते हैं - एक पहाड़, एक पेड़ की छाया में एक झरना, या एक बच्चे का चेहरा - तो आपका पूरा अस्तित्व शांत हो जाता है, है ना? आप यह नहीं कहते, "यह इतना सुंदर क्यों है?" आपका मन, आपका पूरा अस्तित्व, कम से कम एक पल के लिए, पूरी तरह से शांत है क्योंकि कोई उत्तर नहीं है। लेकिन वह महज़ एक थोपना है.

किसी चीज़ की सुंदरता ने क्षण भर के लिए आपके मन को झकझोर कर रख दिया है। यह आपको शांत करने के लिए किसी दवा पर निर्भर रहने, एलएसडी लेने जैसा है ताकि आपको अद्भुत दर्शन मिलें।

हम जिस बारे में बात कर रहे हैं उसका कोई उत्तर नहीं है, इसलिए हमारे पास उत्तर के बिना केवल संकट है। लेकिन आपने कभी भी उन शर्तों पर संकट का सामना नहीं किया है। आप उस संकट में कभी भी उत्तर खोजे बिना नहीं रहे-
क्योंकि उत्तर है

कोई जवाब नहीं। ज्ञात के क्षेत्रों को एक त्वरित धारणा में पार किया जा सकता है, या ज्ञात के क्षेत्रों को पार करने में कई साल लग सकते हैं। लेकिन जब आप उस बिंदु पर आ गए हैं जहां आप वास्तव में उस संकट का सामना कर रहे हैं जिसका कोई उत्तर नहीं है, और मन एक ऐसी चुप्पी के साथ चुप है जो थोपी नहीं गई है, तो आप देखेंगे, यदि आपके पास धैर्य है, तो एक क्रांति हुई है - एक जबरदस्त क्रांति जिसमें ज्ञात की मृत्यु के माध्यम से मन को निर्दोष बनाया जाता है; और केवल ऐसा मन ही उसे खोज सकता है जो शाश्वत है।

28 मई, 1960

ओक ग्रोव में चौथा व्याख्यान

मुझे डर है कि यह वर्तमान शृंखला की आखिरी बातचीत होगी। मेरा इरादा चार और भाषण देने का था, लेकिन दुर्भाग्य से मेरी शारीरिक स्थिति मुझे जाने की इजाजत नहीं देगी। तो यह आखिरी बातचीत होगी, और क्या आप कृपया अपने दोस्तों को भी बता देंगे कि आज के बाद यहां कोई बातचीत नहीं होगी।

यदि हो सके तो मैं चाहूंगा कि आज सुबह समय, मृत्यु और ध्यान के बारे में बात करूं। मैं आपके साथ इन जटिल प्रश्नों पर चर्चा करना चाहूंगा, लेकिन केवल बौद्धिक या मौखिक रूप से नहीं, क्योंकि बौद्धिक रूप से इन समस्याओं से जूझना बहुत कम महत्व रखता है। इससे बुद्धि का मनोरंजन हो सकता है, लेकिन यदि हम केवल शब्दों से खेलते हैं, तो हम राख के ढेर में ही रह जाते हैं। चूँकि हममें से अधिकांश लोग इन समस्याओं से गहराई से चिंतित हैं, हमें तथ्य पर विचार करना चाहिए और शब्दों से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। तथ्य शब्द से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। समय एक असाधारण तथ्य है, और यह बहुत दिलचस्प और महत्वपूर्ण होगा यदि हम समय की पूरी प्रक्रिया को समझ सकें। हमारा पूरा जीवन समय पर निर्भर करता है, और हममें से अधिकांश के लिए मृत्यु का अत्यधिक महत्व है। या तो हम मृत्यु से भयभीत होते हैं या हम इसे तर्कसंगत बनाते हैं, या हम कुछ निश्चित मान्यताओं से चिपके रहते हैं जो हमें आशा देती हैं और हमारे डर और निराशा को खत्म कर देती हैं।

ध्यान करना भी बहुत जरूरी है. जो मन नहीं जानता कि ध्यान करना क्या होता है, वह कभी जीवित ही नहीं रहता; यह एक सुस्त, मूर्ख, अप्रासंगिक दिमाग है।

इसलिए, मैं आपसे इन बातों पर चर्चा करना चाहूंगा। यदि आप कृपया जो कहा जा रहा है उस पर अपना ध्यान देंगे और अंत तक इसका पालन करेंगे तो मैं मौखिक रूप से बोलूंगा। ध्यान से मेरा तात्पर्य ज़बरदस्ती एकाग्रता से नहीं है, क्योंकि जिस मन को एकाग्र करने के लिए मजबूर किया जाता है वह समझने में सक्षम नहीं होता है। लेकिन अगर मन विचारों को स्वीकार या अस्वीकार किए बिना, सुधार या अनुवाद किए बिना विचारों के साथ प्रवाहित हो सके, तो शायद हमारी सोच महज मौखिकीकरण से आगे निकल जाएगी।

हममें से अधिकांश लोग किसी निष्कर्ष से, अनुभव की पृष्ठभूमि से, याद किये गये अतीत से सोचते हैं। हमारी सोच अतीत की प्रतिक्रिया के रूप में उभरती है। हमारी सारी सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है। यदि हमारे पास स्मृति नहीं होती, तो कोई सोच भी नहीं होती। मन की क्षमताओं में से एक उन सभी चीजों को ज्ञान के रूप में याद रखना और समन्वय करना है जिन्हें उसने अनुभव किया है, और कंडीशनिंग की उस स्थिति से, ज्ञान के रूप में अनुभव की उस पृष्ठभूमि से, मन किसी भी चुनौती, किसी भी प्रश्न, किसी भी चीज़ का जवाब देता है। संकट। इस प्रतिक्रिया को हम सोच कहते हैं, और हमारी सोच, जैसा कि आप देखेंगे यदि आप इसे बहुत ध्यान से देखेंगे, तो यह समय की प्रक्रिया है। मैं अभी उसमें जाऊंगा.

जब तक हम सोच की यांत्रिक प्रतिक्रिया को नहीं समझेंगे, मुझे ऐसा लगता है कि हम समय के महत्व को नहीं समझ पायेंगे। हमारी सोच केवल रोजमर्रा की प्रतिक्रियाएं और जिम्मेदारियां, काम की दिनचर्या वगैरह नहीं है, बल्कि यह अमूर्त, आंतरिक, व्यापक रूप से सोचने की प्रक्रिया भी है, अनुभव, ज्ञान के हर रूप को सहसंबंधित करने के लिए फ़ैसला।

इसलिए, सोच के तंत्र को समझना और इसकी सीमाओं को देखना महत्वपूर्ण है। सारी सोच सीमित सोच है; सोचने में कोई स्वतंत्रता नहीं है.
सोचना उस मस्तिष्क की प्रक्रिया है जिसने ज्ञान संचित किया है और उस पृष्ठभूमि से प्रतिक्रिया करता है; इसलिए, सोच कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकती, वह हमेशा सीमित होती है। और यदि हम किसी भी मानवीय समस्या का जवाब देते हैं, चाहे वह कितनी भी गहरी या सतही क्यों न हो, केवल सोचने की प्रक्रिया के माध्यम से, हम इसे हल करने में सक्षम नहीं होंगे, बल्कि इसके विपरीत, हम और अधिक समस्याएं, अधिक भ्रम, अधिक दुख पैदा करेंगे। इसलिए सोचने की क्रियाविधि को समझना नितांत आवश्यक है।

जब आपसे कोई परिचित प्रश्न पूछा जाता है, तो आपकी प्रतिक्रिया तत्काल होती है, है न? यदि आपसे पूछा जाए कि आप कहाँ रहते हैं, या आपका नाम क्या है, या आपका पेशा क्या है, तो आपकी प्रतिक्रिया तत्काल होगी क्योंकि आप इन चीज़ों से बहुत परिचित हैं। लेकिन यदि आपसे अधिक गंभीर या जटिल प्रश्न पूछा जाता है, तो प्रश्न और आपके उत्तर के बीच अंतराल होता है। उस समय अंतराल में आपका दिमाग तेजी से काम पर होता है, उत्तर खोजने के लिए अपनी संचित यादों को देखता है; और बाद में, जैसा कि हर स्कूली छात्र जानता है, उत्तर आता है।

यदि आपसे बहुत अधिक जटिल प्रश्न पूछा जाता है, जिसमें बहुत अधिक स्मृति और पूछताछ का तंत्र शामिल होता है, तो मस्तिष्क को उत्तर देने से पहले और भी अधिक अंतराल, अधिक समय का अंतराल होता है। और यदि कोई ऐसा प्रश्न पूछा जाए जिसका उत्तर स्मृति के गलियारों में खोजने पर भी आपका मस्तिष्क न पा सके, तो आप कहते हैं, "मुझे नहीं पता।" लेकिन "मैं नहीं जानता" केवल एक मन की स्थिति है जो इंतजार कर रहा है, उम्मीद कर रहा है, फिर भी उत्तर खोजने की कोशिश कर रहा है।

मुझे आशा है कि आप इसका अनुसरण कर रहे हैं क्योंकि अगला कथन समझना महत्वपूर्ण है। ये तीन स्टेप्स देखते हो ना? किसी प्रश्न पर मस्तिष्क की तत्काल प्रतिक्रिया होती है, एक निश्चित अवधि या समय के अंतराल के भीतर इसकी प्रतिक्रिया होती है, और अंत में, स्मृति के गलियारों में उत्तर खोजे बिना, यह कहता है, "मुझे नहीं पता।" लेकिन जब मन कहता है, "मुझे नहीं पता," तो वह प्रतीक्षा कर रहा है, उम्मीद कर रहा है, उत्तर की तलाश में है। हममें से अधिकांश के मन की यही स्थिति है। विचार करने, खोजने, जानने के बाद हम कहते हैं, "मैं नहीं जानता।" लेकिन "मैं नहीं जानता" कहने में मन प्रतीक्षा कर रहा है, उम्मीद कर रहा है।

अब, एक ऐसी स्थिति है जिसमें मन कहता है, "मुझे नहीं पता," लेकिन वह अपेक्षा नहीं करता, उत्तर की प्रतीक्षा नहीं करता। कोई उत्तर नहीं है, कोई खोज नहीं है—वह पूरी तरह न जानने की स्थिति में है। आपको फर्क दिखता हैं?

सर, क्या मैं कुछ कह सकता हूँ? कृपया, भलाई के लिए नोट न लें।
यह कोई व्याख्यान नहीं है. जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं आप और मैं खोजने, अनुभव करने का प्रयास कर रहे हैं; हम अपना रास्ता महसूस करने की कोशिश कर रहे हैं। जब आप घर जाते हैं तो उस पर विचार करने के लिए आप यहां-वहां कोई वाक्यांश कैप्चर नहीं कर रहे हैं। आप इसे अभी कर रहे हैं - जिसका अर्थ है कि आप वास्तव में सुन रहे हैं, और इस प्रकार वास्तव में अनुभव कर रहे हैं कि क्या कहा जा रहा है। यह कोई सुझाव नहीं है; आप किसी भी तरह से प्रभावित नहीं हो रहे हैं। यह महज़ एक तथ्य का बयान है. मैं एक ही विषय पर शुरू से अंत तक अलग-अलग तरीकों से बात करने जा रहा हूं, और यदि आप नोट्स ले रहे हैं, या अन्यथा अपना पूरा ध्यान नहीं दे रहे हैं, तो आप इसका सही से पालन नहीं कर पाएंगे। आपको अपना पूरा, बिना किसी दबाव के ध्यान देना होगा। जिस क्षण आप जबरदस्ती ध्यान आकर्षित करते हैं, आप धारणा को अवरुद्ध कर रहे हैं क्योंकि जो कुछ भी जबरदस्ती किया जाता है वह अप्राकृतिक है, वह सहज नहीं है।

तो कृपया, आपमें से जो लोग गंभीर हैं, अपना पूरा ध्यान दें, और कुछ बिखरे हुए शब्दों को लिखने से विचलित न हों जिनका बहुत कम अर्थ है।

जैसा कि मैं कह रहा था, सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है। प्रतिक्रिया तत्काल हो सकती है, या इसमें समय लग सकता है; और मन अंततः कह सकता है, "मुझे नहीं पता।" लेकिन जब मन कहता है, "मुझे नहीं पता," तो वह उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है, या तो अचेतन में अपने स्वयं के गहरे अनुभवों से या अपने स्वयं के संज्ञान से परे किसी स्रोत से। और मन ही है जो जानने और उस ज्ञान के अनुसार प्रतिक्रिया देने की इस पूरी यांत्रिक प्रक्रिया से गुज़रा है और इसमें शामिल समय-अंतराल के साथ इसे पहचानता है।

जब ऐसा मन कहता है, "मुझे नहीं पता," तो वह उत्तर की प्रतीक्षा नहीं कर रहा है या समाधान की उम्मीद नहीं कर रहा है; इसने खोज करना पूरी तरह से बंद कर दिया है, और इसलिए यह न जानने की स्थिति में है।

तो, सारी सोच स्मृति की प्रतिक्रिया है, ज्ञान के रूप में अनुभव की प्रतिक्रिया है, चाहे वह ज्ञान व्यक्तिगत हो या सामूहिक।
ज्ञान या अनुभव का अर्थ है संचय, और संचय का अर्थ है समय - वह चीज़ जो थी और वह चीज़ जो होगी, पहले और बाद में, कल का आज से कल में जाना, समय जो स्थिर है और समय गति के रूप में। समय हजारों कल के अनुभव की तरह स्थिर है, और यद्यपि यह वर्तमान में चलता है, भविष्य के रूप में आने वाले कल में खुद को पूरा करता है, यह अभी भी स्थिर है, केवल संशोधित है। यानी जो था, उसमें जुड़ गया। यह एक योगात्मक, संचयी प्रक्रिया है; और जो जमा हुआ है, और जमा हो रहा है, वह सदैव समय के क्षेत्र में है। इस संचय केंद्र से हम यंत्रवत कार्य करते हैं। सभी इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क वैसे ही कार्य करते हैं जैसे हम करते हैं, केवल बहुत तेज़, बहुत अधिक शानदार ढंग से, बहुत अधिक सटीकता से; लेकिन यह मूलतः हमारी सोच जैसी ही प्रक्रिया है।

तो हमारी सोच यांत्रिक है; हम निष्कर्ष से निष्कर्ष तक, ज्ञात से ज्ञात की ओर, और हमेशा समय के क्षेत्र के भीतर कार्य करते हैं - जो काफी स्पष्ट है जब आप इसे भावनात्मक रूप से जांचना शुरू करते हैं, जैसा कि आपको करना चाहिए, क्योंकि हम भावनात्मक रूप से जो कुछ भी जांचते हैं वह विकृत होता है। यह केवल तथ्य की धारणा की मांग करता है; तथ्य यह है कि आप इसे पसंद करते हैं या नापसंद करते हैं, यह अप्रासंगिक है।

तथ्य को उसके वास्तविक रूप में समझने के लिए मन की एक ऐसी स्थिति की आवश्यकता होती है जिसमें कोई भावना, कोई संवेदना न हो - और फिर वह धारणा होती है जो उच्चतम तीव्रता की होती है।

तो, सोचना, यांत्रिक होना, उस जीवन का रास्ता नहीं है जो यांत्रिक नहीं है। जीवन यांत्रिक नहीं है, ऊर्जा यांत्रिक नहीं है। लेकिन हम चाहते हैं कि उस ऊर्जा को यंत्रीकृत किया जाए ताकि हमारा दिमाग सुविधानुसार समय के क्षेत्र में खुशी से, आसानी से, आराम से काम कर सके; इसलिए, हम जीवन को, उसकी संपूर्ण असाधारण विशालता और गहराई के साथ, सोचने की एक प्रक्रिया तक सीमित कर देते हैं, जो यांत्रिक या बौद्धिक है; और फिर, अपनी समस्याओं का उत्तर न ढूंढ पाने पर, हम निंदक, भयभीत हो जाते हैं, या निराशा की स्थिति में आ जाते हैं। हम जितने अधिक बौद्धिक हैं, हमारा अस्तित्व उतना ही अधिक निराशाजनक है, और निराशा से हम दर्शन का आविष्कार करते हैं; हम कहते हैं कि हमें जीवन को वैसे ही स्वीकार करना चाहिए जैसा वह है और इसका सर्वोत्तम उपयोग करना चाहिए, कि हम अभी मौजूद हैं, और केवल अभी ही मायने रखता है। समय की समग्रता को समझने में सक्षम न होने के कारण, हम अतीत और भविष्य को काटकर केवल वर्तमान में जीने का प्रयास करते हैं - जो नहीं किया जा सकता क्योंकि कोई वर्तमान नहीं है। अस्तित्व तो है, लेकिन पृथक वर्तमान नहीं; और वर्तमान के इस सूत्र से एक दर्शन का निर्माण करना पूरी तरह से अपरिपक्व, भौतिकवादी, सीमित है।

व्यक्ति यह देखना शुरू कर देता है कि सोचने की यांत्रिक प्रक्रिया, जिसमें समय शामिल है, उत्तर नहीं है; और फिर भी हमारे सारे दिन, हमारी रातें, हमारे सपने—हमारे बारे में और हमारे भीतर सब कुछ विचार पर आधारित है। हम कभी भी उस स्थिति में नहीं आते हैं जिसमें मन यह सब झेलने के बाद कहता है, "मुझे नहीं पता।" वह निर्दोषता की अवस्था है; यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन कुछ नया खोज सकता है, कुछ ऐसा जो उसकी अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, भय, लालसाओं, निराशाओं द्वारा प्रक्षेपित नहीं होता है।

तो, कोई बहुत स्पष्ट रूप से मानता है कि सोच, चाहे कितनी भी चतुर, कितनी भी बुद्धिमान, कितनी भी चालाक, कितनी भी दार्शनिक, काल्पनिक या धार्मिक क्यों न हो, अभी भी मूलतः यंत्रवत है। दुनिया भर के धर्मशास्त्री किसी निष्कर्ष से शुरू करते हैं - "यीशु ही उद्धारकर्ता है," पूर्ण विराम - और वहीं से काल्पनिक दर्शन की पूरी संरचना का निर्माण करते हैं। इसी प्रकार, मन वर्तमान अस्तित्व की अवधारणा के आधार पर एक विशाल बौद्धिक अधिरचना का निर्माण करता है, या उसके बाद के बारे में काल्पनिक सिद्धांतों में खो जाता है। और जब हमें सोच की यंत्रवत प्रकृति का एहसास होता है, तो यह समस्या उत्पन्न होती है कि इसे कैसे समाप्त किया जाए - अतीत के प्रति कैसे मरें। क्या आप प्रश्न समझते हैं?

मुझे नहीं पता कि आपने कभी मौत के बारे में सोचा है या नहीं. आपने इसके बारे में सोचा होगा, लेकिन क्या आपने वास्तव में मृत्यु का सामना किया है? क्या आप अंतर समझते हैं? मृत्यु के बारे में सोचना एक बात है, और वास्तव में मृत्यु का सामना करना दूसरी बात है। यदि आप मृत्यु के बारे में सोचते हैं, तो निश्चित रूप से चीजों के अपरिवर्तनीय, अपरिवर्तनीय अंत में निराशा की भावना के साथ भय उत्पन्न होता है।

लेकिन अगर आपका सामना मौत से हो, तो कोई जवाब नहीं है, कोई रास्ता नहीं है, कोई उपाय नहीं है जो आपको आराम दे, सुरक्षा दे-यह एक सच्चाई है। शारीरिक और मानसिक रूप से पूर्ण समाप्ति के अर्थ में मृत्यु का सामना करना पड़ता है। इसे नकारना, स्वीकार करना या तर्कसंगत बनाना नहीं है - यह मौजूद है। और मरना एक असाधारण अनुभव होना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पूरी तरह से जीना भी एक असाधारण अनुभव होना चाहिए। चूँकि हम यह नहीं समझते हैं कि बिना किसी संघर्ष के, इस शाश्वत आंतरिक विरोधाभास के बिना, समग्रता से जीना क्या है, शायद हम कभी नहीं जान पाएंगे कि मृत्यु की समग्रता का अनुभव क्या होता है। हम जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, हम मृत्यु से उतना ही अधिक भयभीत होते जाते हैं। मृत्यु से भयभीत होकर हम डॉक्टरों के पास जाते हैं, नई दवाएँ, नई औषधियाँ आजमाते हैं और शायद हम बीस या तीस वर्ष और जीवित रह सकते हैं; लेकिन वहाँ यह, अनिवार्य रूप से, कोने के आसपास है। और उस तथ्य का सामना करने के लिए - इसका सामना करने के लिए, इसके बारे में सोचने के लिए नहीं - एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो अतीत के प्रति मर चुका हो, एक ऐसा दिमाग जो वास्तव में न जानने की स्थिति में हो।

भविष्य, आख़िरकार, कल, अभी भी समय के दायरे में है। और मन हमेशा कल और कल के बीच सोचता और कार्य करता रहता है

कल, आज को जोड़ने वाले मार्ग के रूप में। वह बस इतना ही कर सकता है—अतीत पर निर्भर करते हुए, वर्तमान के माध्यम से भविष्य के लिए तैयारी करना। हम क्या था और क्या होगा, पहले और बाद में, के बीच फंसे हुए हैं और हम उस क्षेत्र में यंत्रवत् कार्य करते हैं। और क्या समय की उस संपूर्ण समझ के साथ मरना संभव है - वास्तव में मरना, और यह नहीं पूछना कि कैसे मरें? मौत आपसे यह नहीं पूछती कि क्या आप मरने को तैयार हैं। आप मौत से समझौता नहीं कर सकते, आप उससे सवाल नहीं पूछ सकते। मृत्यु सबसे निरपेक्ष चीज़ों में से एक है, अंतिम चीज़ है। आप इससे मोलभाव नहीं कर सकते. मैं जानता हूं कि हममें से अधिकांश लोग ऐसा करना चाहेंगे। हम उससे उपहार, उपकार, मुक्ति का वरदान माँगना चाहेंगे; लेकिन मृत्यु अदम्य है, अविनाशी है।

तो, क्या मन अपने कई कलों के प्रति, ज्ञान के रूप में अनुभव की सुखद और अप्रिय दोनों यादों के प्रति मर सकता है? क्या यह उन चीज़ों के प्रति मर सकता है जो उसने इकट्ठी की हैं—जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है मर जाता है? मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी ऐसा प्रयोग किया है - अपनी सभी चिंताओं को ख़त्म करने के लिए - इसलिए नहीं कि आप अधिक शांतिपूर्ण जीवन जी सकें या अधिक व्यवसाय कर सकें या अपने कार्यालय में पुराने अतीत के साथ नए सिरे से पहुँच सकें, और इस तरह अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। किसी और के ऊपर, या किसी स्थिति के ऊपर। मेरा मतलब उस तरह की बकवास नहीं है। बिना किसी भविष्य के मरना; यह जाने बिना मरना कि कल क्या है—आखिरकार, वह मृत्यु है। और इसके लिए एक ऐसे दिमाग की आवश्यकता होती है जो बहुत तेज, स्पष्ट हो, हर विचार, चेतन या अचेतन, को समझने में सक्षम हो, एक ऐसा दिमाग जो हर सुख के प्रति जागरूक हो और उस आनंद को स्मृति के रूप में जड़ न जमाने दे। और क्या ऐसा मरना संभव है कि कोई कल न हो?—जो निराशा की स्थिति नहीं है। जिस क्षण आप आशा और निराशा के संदर्भ में सोचते हैं, आप फिर से समय के, भय के क्षेत्र में आ जाते हैं। मरने के उस बहुत ही अजीब अनुभव से गुजरना, शारीरिक मृत्यु के अंतिम क्षण में नहीं जब कोई बेहोश हो जाता है, या उसका दिमाग सुस्त हो जाता है, बीमारी या दवा या दुर्घटना से बेवकूफ बन जाता है, बल्कि कई कल तक पूरी चेतना के साथ मरना होता है। पूर्ण जीवन शक्ति और जागरूकता - निश्चित रूप से यह एक ऐसे मन का निर्माण करती है जो न जानने की स्थिति में है, और इसलिए ध्यान की स्थिति में है।

यदि समय हो तो मैं ध्यान के इस विषय पर विस्तार से बात करना चाहूँगा। ध्यान जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों में से एक है, जैसे प्रेम है, जैसे मृत्यु और समय हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि हममें से बहुत से लोग जानते हैं कि ध्यान करना क्या है। हम जानते हैं कि कैसे ध्यान केंद्रित करना है, जैसा कि हर स्कूली छात्र और छात्रा करता है, किसी चीज़ पर अपना ध्यान कैसे केंद्रित करना है; और हम यह भी जानते हैं कि जब कोई चीज़ बेहद दिलचस्प होती है, तो वह मन को उसी तरह लीन कर लेती है, जैसे एक बच्चा किसी नए खिलौने को लीन कर लेता है। तब मन एकाग्रता की स्थिति में होता है, जो पूर्ण अवशोषण और बहिष्कार की स्थिति है, लेकिन यह ध्यान का तरीका नहीं है।

ध्यान महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आत्म-ज्ञान का द्वार खोलता है। लेकिन आत्म-ज्ञान बहुत सतही और उबाऊ हो जाता है यदि यह केवल आपके बारे में जानकारी है जिसे आपने इकट्ठा किया है और अपने दिमाग में रखा है।

आप कह सकते हैं, "ठीक है, मैं खुद को जानता हूं, और जानने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है।"
वहाँ नहीं है. एक लालची, महत्वाकांक्षी, हिंसक, कामुक और बाकी सब कुछ है; तो आप कहते हैं, "हाँ, मैं स्वयं को जानता हूँ।" लेकिन उससे आगे जाना स्वयं का ज्ञान है, स्वयं का ज्ञान नहीं। मुझे आशा है कि मैं इसे स्पष्ट कर रहा हूं।

स्वयं को जानना स्वयं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया से बिल्कुल अलग है, क्योंकि जानना एक निरंतर गति है। जानने, सीखने का कोई अंत नहीं है, और इसलिए ऐसा कोई क्षण नहीं है जो असाधारण रूप से महत्वपूर्ण और प्रकट न हो। लेकिन अगर, कुछ किताबें पढ़ने के बाद और अपने आप को यहां-वहां, कभी-कभार थोड़ा सा देखने के बाद, आप कहते हैं, "मैं खुद को जानता हूं," तो वह ज्ञान केवल योगात्मक, संचयी है; और यह दमघोंटू, घातक है, यह केवल अंधकार लाता है। जबकि जानना एक अनिश्चितकालीन आन्दोलन है।

तो, ध्यान स्वयं को जानने की प्रक्रिया है, और यही वह द्वार है जिसके माध्यम से आप ब्रह्मांड को जानेंगे, क्योंकि आप सिर्फ आप नहीं हैं, एक नाम और एक बैंक खाते या पेशे के साथ। आप संपूर्ण मनुष्य का परिणाम हैं, चाहे वह रूस में रहता हो या अमेरिका में, भारत में रहता हो या चीन में। हम मनुष्य हैं, लेबल नहीं, और प्रत्येक मनुष्य के भीतर मानवता की, पीड़ा की, विचारों की, महत्वाकांक्षाओं की संपूर्ण चेतना है - जैसा कि भारत या चीन में है। परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं, स्थितियाँ अलग-अलग होती हैं, लेकिन लोगों के पास एक ही दुख, एक ही खुशी, एक ही तरह की बातें, एक ही तरह के नारे और एक ही खुशी के पल होते हैं।

ध्यान करना किसी वस्तु के बिना मन की प्रक्रिया की जांच करना है।
जिस क्षण आपके पास कोई वस्तु होती है जिसे आप खोज रहे हैं, आपकी खोज एक कारण का परिणाम होती है, और वह कारण संचय लाता है जिसे आप ज्ञान कहते हैं, और इसलिए वहां ज्ञान का अंधकार होता है।

मुझे नहीं पता कि क्या आपने कभी देखा है कि कोई ऐसी शक्ति है जिसका कोई कारण नहीं है। हमारी अधिकांश ताकत किसी कारण का परिणाम है, जो दृढ़ संकल्प है, कुछ होने या न होने की इच्छा। होने या न होने की यह चाहत बदले में व्यक्ति की विभिन्न विरोधाभासी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, पूर्तियों, दुखों का परिणाम है। कुछ बनने की हर चाहत की जड़ें एक कारण में होती हैं, और यही वह कारण है जो प्रतिरोध, दृढ़ संकल्प के रूप में एक निश्चित ताकत को प्रोजेक्ट करता है, बनाता है या विकसित करता है। जब आप कारण को हटा देते हैं, तो दृढ़ संकल्प समाप्त हो जाता है, लेकिन जल्द ही दूसरा कारण अस्तित्व में आ जाता है, और एक अलग संकल्प उत्पन्न हो जाता है। वहीं, अगर मन ने जांच की है और

इस पूरी प्रक्रिया को समझ लिया है और इसलिए ध्यान का अर्थ जान लिया है, तो वह एक ऐसी शक्ति की खोज करेगा जिसका कोई कारण नहीं है, एक ऐसी शक्ति जो समय की नहीं है।

इसलिए, ध्यान आवश्यक है - लेकिन किसी विशेष प्रणाली का पालन करने वाला तथाकथित ध्यान नहीं। वह मात्र आत्म-सम्मोहन है; यह बहुत अपरिपक्व है, पूरी तरह से बहुत मूर्खतापूर्ण है। ध्यान पूर्ण जागरूकता की स्थिति में होना है ताकि मन दिन के हर पल खुद को खाली कर रहा हो और इसलिए लगातार खोज कर रहा हो, क्योंकि केवल वही प्राप्त कर सकता है जो खाली है। यह केवल खाली दिमाग है जिसमें चिंतन करने के लिए जगह है - ऐसा दिमाग नहीं जो होने या न होने, पहुंचने, खुद की रक्षा करने, भागने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। ऐसा मन खाली नहीं हो सकता. ऐसा तभी होता है जब मन कल से, समय से खाली होता है, और उस असाधारण चीज़ के बारे में जानता है जिसे मृत्यु कहा जाता है - केवल तभी, इस प्रकार खाली होने पर, वह प्राप्त कर सकता है - वह प्राप्त नहीं कर सकता जो आप चाहते हैं। जो मन चाहता है और खोजता है वह खाली मन नहीं है। एक खाली दिमाग सिर्फ खाली नहीं होता है, यह सिर्फ खाली नहीं होता है - यह एक बहुत सक्रिय दिमाग होता है। यह इस पूरी प्रक्रिया के माध्यम से हुआ है जिसके बारे में मैंने बात की है, और इसलिए यह महत्वपूर्ण, स्पष्ट है, बिना किसी स्वीकृति, इनकार, अपेक्षा या अस्वीकृति की भावना के। और मन की इस महत्वपूर्ण शून्यता के बिना, हमारा जीवन बहुत नीरस है। आप बहुत चतुर हो सकते हैं, आप किताबें लिखने, चित्र बनाने में सक्षम हो सकते हैं, या आप बहुत कुशल वकील या राजनीतिज्ञ हो सकते हैं, लेकिन यह जाने बिना कि ध्यान करना क्या है, जीवन बेहद सतही, नीरस हो जाता है; और एक सुस्त दिमाग हमेशा अपनी सुस्ती से बाहर निकलने का रास्ता खोजता रहता है, और इस तरह अपने लिए और अधिक सुस्ती पैदा करता है।

भीतर और बाहर चीजों की इस अराजक स्थिति को देखकर, व्यक्ति को मौखिक, बौद्धिक रूप से नहीं, बल्कि वास्तव में ज्ञात से खुद को शुद्ध करना होगा; हर चीज़ के लिए मरना पड़ता है। और जब मन खाली होता है - जो वास्तव में एक अच्छा शब्द नहीं है - लेकिन जब मन खाली होता है, जैसे आकाश खाली होता है, तब जो मनुष्य द्वारा मापा नहीं जा सकता वह अस्तित्व में आता है।

29 मई, 1960

प्रशन

बनारस, 1960

मुझे लगता है कि आप जिन बदलावों की बात कर रहे हैं - सामाजिक, आर्थिक और 1. राजनीतिक - वे सभी एक एकीकृत सिद्धांत की अभिव्यक्ति हैं।

2. मैं महसूस करता हूं कि विश्व में, संपूर्ण सृष्टि में एक एकीकृत सिद्धांत काम कर रहा है।

3. परिवर्तन आएंगे, और कोई भी उनका विरोध नहीं कर सकता।

4. एकीकृत सिद्धांत क्रांति पर आधारित है।

5. यदि परिवर्तन अपरिहार्य हैं, तो कौन सी चीज़ हमें उनका विरोध करने के लिए प्रेरित करती है?

असंतुष्ट लोग बहुत आसानी से किसी भी तरह के बदलाव में फंस सकते हैं 6. जो उन्हें नापसंद के विपरीत दिखाया जाता है।

7. आप कहते हैं कि वास्तविक परिवर्तन विचार के क्षेत्र से बाहर होना चाहिए। लेकिन क्या हमें पहले उन सभी संभावित तथ्यों को नहीं जानना चाहिए जो किसी चीज़ के बारे में दिमाग द्वारा एकत्र किए जा सकते हैं, और फिर उस जानकारी को हम पर तब तक प्रभावित नहीं होने देना चाहिए जब तक कि हमारी भावनाएं हमें यह न बताएं कि यह सही है?

8. मुझे लगता है कि भावना कमोबेश अचेतन होती है। हमें अपने चेतन विचारों का उपयोग अपनी अचेतन भावना, जो कि अचेतन मन है, को प्रभावित करने के लिए करना चाहिए।

9. कोई व्यक्ति चेतना के क्षेत्र के बाहर परिवर्तन कैसे ला सकता है?

10. यह तभी संभव है जब हम आपके बीच के विभाजन को भूल सकें मुझे।

11. क्या यह सच नहीं है कि हम परिवर्तन को कुछ मूर्त, कुछ ऐसा जिसे महसूस किया जा सकता है, अनुभव किया जा सकता है, के रूप में सोचते हैं?

12. वहाँ एक सीढ़ी है, और हम उसके सहारे छत पर पहुँचते हैं। जब तक हम वहां नहीं पहुंच जाते, हमें नहीं पता कि यह किस प्रकार की छत है। क्या हम कह सकते हैं कि छत सीढ़ी से बाहर कुछ है? यदि सीढ़ियाँ नहीं होंगी तो क्या छत होगी?

13. आप कहते हैं कि हिंदू धर्म से कैथोलिक धर्म में परिवर्तन कोई परिवर्तन नहीं है। लेकिन जब हम सीढ़ियाँ चढ़ते हैं तो हम एक अलग स्तर पर होते हैं।

14. जो पुरूष सीढ़ियों से चढ़ रहा हो, उसने छत नहीं देखी; अंतिम चरण तक उसे पता नहीं चलता कि छत कैसी है, और फिर यह एक सहज बात है।

15. प्रत्येक मनुष्य ने कभी न कभी कोई ऐसा कार्य अवश्य व्यक्त किया होगा जिसने जीवन के प्रति एकता की भावना को न तोड़ा हो। गहरी भावना से मनुष्य कार्य करता है, बिना किसी समझ के कि उसका कार्य एक अलग केंद्र से उत्पन्न होता है। लेकिन ऐसे मामले में भी, जहां कर्म की सहज, मौलिक अनुभूति होती है जो जीवन को समृद्ध बनाती है, उस कर्म की गति ही एक अलग केंद्र का निर्माण करती प्रतीत होती है।

16. क्योंकि अन्यथा हमारा जीवन खोखला है। लेकिन दूसरे राज्य में वापस जाने का यही प्रयास केंद्र को मजबूत बनाता है.

17. क्या सम्पूर्ण कर्म की स्मृति न होना संभव है? क्या आप हमें इसका कुछ सुराग दे सकते हैं?

18. हमें ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ.

19. यह मेरा प्रश्न है, जिसका उत्तर नहीं दिया गया है। क्या उस अनुभव की स्मृति से चिपके रहना संभव नहीं है?

20. क्या यह भी एक प्रथा नहीं बन जायेगी?

21. आपने हमारी कठिनाई के बारे में कुछ कहा जो एक निश्चित आंतरिक सुस्ती है जो हमें जीवन के प्रवाह के साथ तालमेल बिठाने से रोकती है। मैं

काश आप थोड़ा सा उस सुस्ती में चले जाते।

22. लेकिन हम स्थापित आदतों वाले वयस्क लोग हैं।

23. तीन साल के उस बच्चे की मानसिक स्थिति क्या है, जिसके पास कोई याददाश्त नहीं है?

24. क्या उस व्यक्ति के लिए स्वयं का विश्लेषण करना संभव है जिसकी चेतना अनुभवों से भरी हुई है?

25. हम सुरक्षा क्यों चाहते हैं?

26. आत्मा और शरीर में क्या अंतर है?

27. आपने कहा कि जीवन का एक पैटर्न है जो सहमति और असहमति पर आधारित है, और जो दिमाग इस पैटर्न के अनुरूप होता है वह अच्छा दिमाग नहीं है। केवल एक अच्छा दिमाग ही समझने में सक्षम है, और एक अच्छा दिमाग कभी भी एक पैटर्न के अनुरूप नहीं होता है। लेकिन क्या अस्तित्व के किसी भी तरीके में कोई ऐसा है, जो किसी पैटर्न के अनुरूप नहीं है? आप भी एक पैटर्न के अनुरूप हैं, श्रीमान, यह कहते हुए, "यह एक अच्छा दिमाग है, और वह एक बुरा दिमाग है।"

28. मेरा एक प्रश्न है. जब तक मैं अहंकारी हूं, मेरा जीवन एक के बाद एक चीज को आगे बढ़ाने में ही व्यतीत होगा। क्या मैं अपने आप को इससे बाहर निकाल कर सोच सकता हूँ?

29. अचेतन मन को कैसे समझा जाए?

30. जब हम क्रांतिकारी नहीं हैं तो हम क्रांतिकारी कैसे हो सकते हैं?